प्रभास समग्र

(उपन्यास)

प्रभास समग्र

(उपन्यास)

'दोसर खेप' मनेमे रहलनि, आब तँ यैह–

प्रभास समग्र

(उपन्यास)

सम्पादन

डॉ. वन्दना चौधरी

प्रकाशक

ज्योत्स्ना प्रकाशन

पिण्डारुच (दरभंगा)

प्रकाशक : ज्योत्स्ना प्रकाशन
पिण्डारुच, जिला- दरभंगा

सर्वाधिकार : डॉ. वन्दना चौधरी

प्रथम संस्करण : 22 फरवरी 2017
(प्रभास कुमार चौधरीक उनैसम पुण्यतिथि)

मूल्य : एक हजार टाका

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

Prabhās Samagra (Upanyās) – Maithili
Complete works of Prabhas (Novels)
Edited by **Dr. Vandana Chaudhary** ₹ 1000/-

ई पोथी

साहित्यक सूर्य-चन्द्रमा अस्त होयबा लेल नहि उगैत अछि। आधुनिक युगक प्रवर्तक कवीश्वर चन्दा झा आइयो विद्यमान छथि तथा समकालीन साहित्यक एक प्रकाश-स्तम्भ प्रभास कुमार चौधरी सेहो वर्तमाने छथि। आइसँ उनैस वर्ष पूर्व जनिक निधन भेल छलनि, से सीमित परिवारक ककरो पुत्र भाइ पिता पितामह मातामह छलथिन जे चल गेलथिन; मुदा अपन विराट परिवारक जनिक ओ आत्मीय बन्धु छलथिन, से तँ छथिनहे । रहबे करथिन- आगाँ बहुत-बहुत दिन धरि । अक्षर जगतक ई परिवार जँ-जँ बढ़ल जयतनि तँ-तँ प्रत्येक सदस्यक आर निकट, आर आत्मीय भेल जयथिन। प्रभास जी केवल शरीरेसँ भारी-भरकम नहि रहथि, कृतित्वसँ सेहो रहथि। हुनक कृतिओ ओजनदार, ओकर प्रकृतिओ गम्भीर । जेहने सहज, तेहने व्यापक आ तेहने प्रभासमान ।

प्रभास जीक साहित्य एम्हर दुष्प्राप्य भेल जा रहल अछि। नवका लोक, जे जागल अछि से ओकरा तकैत अछि, बहुत व्यग्रतासँ तकैत अछि। बड़ प्रयासेँ थोड़बे वस्तु भेटैत छैक। कथा तँ एतऽ-ओतऽसँ पढ़ियो लैत अछि, उपन्यास लेल बेलल्ला भऽ जाइत अछि। हुनक सुयोग्य सन्तान लोकनि यद्यपि साहित्यकर्मी नहि भेलथिन, मुदा साहित्यक बीज तँ छनिहेँ। अवचेतनमे ई बात अयलनि आ अपन पिताक साहित्य फेरसँ लोकक सोझाँ आनब ठनलनि। हुनक जेठ सन्तान डॉ. वन्दना चौधरी आगाँ अयलीह आ आइ प्रभास जीक पाँचो उपन्यास एक जिल्दमे अपनेक हाथमे अछि। पोथीक शीर्षक **प्रभास समग्र** थिक। कथा सेहो हुनक कम नहि छनि आ कम महत्त्वपूर्ण तँ एकदम नहि छनि। मुदा, पहिने एकर स्वागत तँ करियनि हमरा लोकनि।

आइ प्रभास जीक पुण्यतिथि थिकनि, बरखी सेहो। एहिसँ सार्थक पिण्डदान आर की भऽ सकैत छनि? मैथिली संसार आयुष्मती श्रीमती वन्दना जीक कृतज्ञ छनि। अरे देखू तँ, ओइ कोनमे प्रभास जी अपन सन्तानक एहि सद्बुद्धिपर गौरवपूर्वक कोना मुस्किया रहल छथि!

22.02.2017 —भीमनाथ झा

सेकेण्ड इनिंग

बढ़ियाँसँ बाइण्ड कयल चारि सय पन्नाक एकटा रजिस्टर, जाहिपर एकटा लेबल सेहो लागल अछि। पूरा रजिस्टर खाली अछि– कतहु एकोटा शब्द नहि लिखल अछि। लेबलपर लाल स्याहीसँ लिखल अछि– "'दोसर-खेप' बिचला भाग- खिल्त-मिल्त"। रजिस्टर बेस भारी अछि- खूब मोट गत्ता लागल छैक। ई खाली रजिस्टर हमरा लग उनैस सालसँ राखल अछि- पापाक बाँकी पोथी आ पाण्डुलिपिक संग। जहिया कहियो मोन बेसी उद्विग्न होइत अछि, कोनो काज करबाक इच्छा नहि होइत अछि, हम बैसि जाइत छी पापाक अल्मीरा खोलिकऽ। पापाक पोथी, फाइल, अलबम सभकेँ झाड़ैत छी- किछु देखैत छी, किछु पढ़ितो छी आ आपस फेर सभटा राखि दैत छी। सभ बेर अइ खाली रजिस्टरकेँ देखि सोचैत छी– "एकर की करू? एहिमे तँ आब किछु लिखल नहि जायत। ई आब खालिए रहत।" एकर अछैतो एकरा फेकबाक हिम्मति हम कहियो नहि जुटा पौलहुँ। पापाक हाथक लिखल अछि— फेकबा वा जरयबाक कल्पनो नहि कऽ सकैत छी। आपस ई रजिस्टर अल्मीरामे रखा जाइत अछि। आइ पापाक गेलाक उनैस साल बाद हुनक उपन्यासक 'समग्र' प्रकाशित भऽ रहल अछि। एहि नामक 'दोसर खेप'क चर्चा सेहो भरिसक अन्तिमे बेर भऽ रहल अछि। एहि नामसँ आब कोनो उपन्यास तँ प्रकाशित नहि होयत। मुदा आब हमरा ई खाली रजिस्टर बेसी तंग नहि करत।

की सोचि पापा अपन उपन्यासक ई नाम सोचने छलाह, जखन कि हुनक कहब छलनि जे जीवनक साठि वसन्त हम पार नहि करब । पापाक दादा (पिता) सेहो साठि बरखसँ पहिने चलि गेलथिन । पापाकेँ पहिल हार्ट अटैक 1989 मे भेल छलनि । तकर बाद तँ हुनकर ई सोच आर सुदृढ़ होइत गेलनि । ओना दीदी (हमर माय) हरदम पापापर बरसैत रहैत छल- "रिटायरमेंटक बाद कतऽ रहब ? बड़का अफसर छी, एकटा झोपड़ी तँ एतेक सालमे बना नहि सकलहुँ !" पापा हँसैत कहैत छलथिन- "हमरा घरक कोन कमी ? चारिटा भाइ छथि । सभ अपन-अपन घर बनौताह । दूनू बेटीक घर अछिए । आ रिटायरमेंटक बाद तँ गामपर रहब । जेनरेटर लगबायब । टी.वी., फ्रिज, गाड़ी सब राखब । दू-दू बेटी दरभंगेमे बसैत छथि आ पटना तँ घरे अछि । खूब लिखब आ जखन मोन करत पटना-दरभंगा घूमैत रहब ।"

'रिटायरमेंटक बाद कतऽ रहब ?'- ई पूछैत-पूछैत दीदी पहिनहि चलि गेलि आ एहि सवालपर सेहो पूर्ण विराम लागि गेल । सवाल पूछऽबाली चलि गेली तँ जवाबक जरूरते कोन ? पापा सेहो निश्चिन्त भऽ गेलाह । जवाब तँ हुनका अपने बूझल छलनि । दिदवलक बिना कोनो 'सेकेण्ड इनिंग' नहि ।

पापाक घरक नाम 'हड़बड़' छलनि । हमर बाबी कहैत छलीह- "हिनका धरतीपर अयबाक बड़ हड़बड़ी छलनि । बाड़िएमे जनम लऽ लेने रहथुन तोहर पप्पा । ताहि लेल नाम पड़ि गेलनि हड़बड़ ।" नाम रखनिहार सभकेँ ई कनेको आभास नहि भेलनि जे पापा अपन नामक अनुरूप अपन जीवन जीता । स्कूलेसँ कहानी लिखब शुरू कयलनि । एम.ए. करैत-करैत विवाह कयलनि । मात्र चौबीस सालक उमिरमे बाप बनलाह आ पहिल कथासंग्रह 'नव घर उठय पुरान घर खसय' सेहो प्रकाशित भेलनि । पचासम पूरा करैत-करैत नाना बनलाह । संगहि पाँचटा उपन्यास आ तीनटा कथा-संग्रह सेहो प्रकाशित भऽ गेलनि । पचपन सालमे पत्नीक संग छुटलनि आ अठावनमे अपने चल गेलाह । अयबामे हड़बड़ी कयलनि तँ जयबामे पाछू किएक ? सेकेण्ड इनिंग नहि शुरू भऽ सकल- ने उपन्यासक, ने जीवनक ।

दादा, बाबी, बड़का कका, माय, गाम-घर- ई सभ किछु शब्द नहि अछि । ई सभ छथि रचनाकार प्रभास आ व्यक्ति प्रभासक जीवनक किछु ठोस स्तम्भ । पापाक कोनो पोथीक प्रकाशन हिनकर सभक उल्लेखक बिना पूर्ण नहि होइत छल । आइ 'प्रभास समग्र'क प्रकाशनपर हिनका सभकेँ बिसरि जयबाक धृष्टता हम नहि कऽ सकैत छी ।

"आ मोन पड़ैत छथि स्नेही भीम भाइ जनिक सहयोग अविस्मरणीय रहल ।" —ई पंक्ति पापाक लिखल अछि- पहिल उपन्यास अभिशप्तक लेखकीयमे । आइ 'प्रभास समग्र'क प्रकाशनक अवसरपर सेहो ई पंक्ति ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि- एकर सत्यता आइयो वैह अछि जे शायद पापाक समयमे होइतनि । बहुत दिनसँ पापाक पोथी सभक पुनःप्रकाशनक इच्छा छल मोनमे । किछु दिन पहिने एहि संदर्भमे पापाक आदरणीय भीम भाइसँ सम्पर्क कयलहुँ । हुनक प्रस्ताव आयल उपन्यासक समग्र छपयबाक । नतीजा सभक समक्ष अछि 'प्रभास-समग्र'क रूपमे ।

आइ एकटा बड्ड पुरान गप्प मोन पड़ैत अछि । पटनाक गप्प अछि- तहिया हम स्कूलेमे पढ़ैत रही । बेसी काल साँझमे पापा भीम भाइक संग आफिससँ घुरैत छलाह । हमसभ (दीदी सहित) खिड़की सँ दुनू गोटेकेँ संग देखि हँसैत छलहुँ । अनमन 'मोटू-पतलू'क जोड़ी छल । पापा जतबे विशालकाय, भीम भाइ ओतबे दुब्बर-पातर । ओ हँसी तँ आब सपना भऽ गेल । आब तँ भीम भाइ जखन क्लिनिक अबैत छथि, हुनकर संगे ठाढ़ पापाक कल्पना करैत रहैत छी- मुदा आब हँसी नहि लगैत अछि । **प्रभास समग्र (उपन्यास)**क प्रकाशनमे जे सहयोग आ स्नेह आदरणीय भीम भाइसँ भेटल, एहि लेल धन्यवाद एकटा तुच्छ शब्द अछि । हुनक एहि आत्मीयताक लेल हमसभ सदा ऋणी रहबनि ।

माता-पिताक जीवनक दूटा खेप होइत अछि । पहिल खेपमे माता-पिता अपन सन्तानक परवरिश करैत छथि । बाल-बच्चाकेँ पालि-पोसिकऽ पैघ बनयबाक, नीक इन्सान बनयबाक जिम्मेदारी प्रायः सभ माता-पिताक होइत

छनि । जीवनक दोसर खेपमे पारी उनटि जाइत अछि । बाल-बच्चा पैघ भऽ जाइत अछि आ माता-पिता बुढ़ापा दिस अग्रसर होइत छथि । आब सन्तानक दायित्व होइत छनि अपन माय-बापक देखभाल करबाक । हुनकर सभक जीवनमे खुशी भरबाक । हमर पापा दीदी मुदा 'स्पेशल केस' छथि । अपन सभ जिम्मेदारीक निर्वाह कयलनि दूनू गोटे । खाली बेटे-बेटी नहि, भाइ बहिन, नाति सभकेँ पालऽपोसऽमे आगू रहलाह । आइ हमसभ स्वावलम्बी छी—अपन-अपन घरमे, जीवनमे खुश छी । गर्वसँ कहैत छी जे हम सभ प्रभास कुमार चौधरीक सन्तान छी । मुदा ई गर्व हमर सभक जीवनक रिक्तताकेँ नहि भरि सकैत अछि । पापा-दीदी अपन काज कऽ चलि गेलाह, संगहि मुक्त कऽ गेलाह हम छौ भाइ-बहिनकेँ अपन दोसर खेपक दायित्वसँ ।

हमर सभक जीवनक सभ खुशी अधूरे रहैत अछि । हताशा-निराशा दुखक समय बोझिल आ लम्बा भऽ जाइत अछि । जीवनमे अनेको समय एहन अबिते रहैत अछि जखन पापा-दीदीक कमी खलैत अछि । अपन जीवनक सेकेण्ड इनिंग संग हमरो सभक बहुत-किछु अपना संग लेने गेलाह दूनू गोटे । हमरो सभक हिस्सामे 'दोसर खेप'क खालिए पन्ना आयल...

—वन्दना चौधरी

क्रम

अभिशप्त

सामनेक मकानक किरायादार मोहल्लाक एक टा अनेरुआ कुकूरकेँ बासि भात रोटी खुआ-खुआ पोसुआ बना लेने अछि । एहि अप्रत्याशित दुलारसँ ओकर मिजाज बढ़ि गेल छैक आ ओ अकारणेँ प्रत्येक आबऽजायवलापर ओकरे दलानमे बैसल भुकैत रहैत छैक । मुदा, एखन एहि उदास दुपहरियामे, दलानमे राखल एक टा चौकीक तरमे दुबकल ओहो ओंघा रहल छैक ।

प्रकाशक कोठलीक खिड़की खूजल छैक आ पड़ोसीक दलानमे एक टा कुकूर ओंघा रहल छैक । बाँकी कतहु किछु नहि । सौंसे मोहल्ला सुन्न पड़ल छैक– सभ टा खिड़की-दरबज्जा बंद ! एहि उदास जरैत दुपहरियामे खिड़कीसँ बाहर तकैत प्रकाशकेँ कतेको बेर भ्रम भेलैक अछि जे दुपहरिया नहि, राति बीति रहल छैक आ सौँसे मोहल्ला पसरल इजोरियामे बेसुध पड़ल छैक । मुदा खिड़कीक छड़केँ नांघिकऽ अबैत रौदक धाही प्रत्येक बेर ई भ्रम तोड़ि देलकैक अछि– इजोरियामे एतेक धाह नहि भऽ सकैत छैक, विरही प्रेमियोक हेतु नहि । आ, एहि अनुभूतिक संग उदास आ सुन्न दुपहरिया किछु आर उदास, किछु बेसी सुन्न लागऽ लगैत छैक । रोशनदानपर कचबचाइत बगड़ाक अनवरत कोलाहलो एहि सुन्नकेँ भरबामे असमर्थ रहि जाइत छैक । मुदा ओकर कचबचाहटि सुनि एक टा दुष्ट विचार बेर-बेर ओकरा तंग करैत छैक– मीरा आइ एतऽ नहि अछि । किएक ने एकर खोँताकेँ आइये उजाड़ि-पुजाड़ि कतहु फेकि दिऐक ? मीराक उपस्थितिमे जखन कखनो एहन विचार करैत अछि, ओ झट टोकि दैत छैक– ''रहऽ ने दियौक । अहाँक की बिगड़ैत अछि ? दिन भरिमे दस-पाँच खढ़क टुकड़ी खसा दैत अछि, बहारिकऽ फेकि दैत छिऐ । मात्र एतबे लेल ककरो बनल-बनाओल खोँता उजाड़ि देबैक ?'' आइ ओ नहि छैक तँ इच्छा होइत छैक जे मौकासँ फायदा उठाबी । मुदा नहि जानि किएक कतेको बेर सोचियो कऽ ओ नहि उठैत अछि आ रोशनदानपर बड़ मेहनतिसँ जमा

कयल गेल खढ़क ढेरीकेँ देखैत रहैत अछि– बड़ी काल धरि । आ फेर बिना खोँताक रोशनदानक कल्पना कऽ अकारण सहमि जाइत अछि ।

सहमि जाइत अछि आ ओम्हरसँ दृष्टि हँटा फेर खूजल खिड़कीसँ बाहर ताकऽ लगैत अछि । चौकी तर ओंघाइत कुकूर आब नीक जकाँ पसरिकऽ सूति रहल छैक । ओना सूतल देखि ओकरा ईर्ष्या होइत छैक– कोना निश्चिन्त सूति रहल अछि गाढ़ निन्नमे ! मुदा तत्क्षण 'श्वान-निद्रा'वला श्लोक मोन पड़ैत छैक आ अपन ईर्ष्यापर अपने हँसी लगैत छैक– कुकूरक निन्न कतहु गाढ़ होइ ?

ओ अपन दृष्टि सिकोड़ि लैत अछि आ देहकेँ बिछौनपर ढील छोड़ि दैत अछि । कनेक काल सूति ली, मोनमे सोचैत अछि । मुदा आँखि बन्द करिते खूजल खिड़कीसँ अबैत रौदक धाही असह्य लागऽ लगैत छैक । देहपर पसेनाक चुहचुही बुझाइत छैक, अपस्याँत नचैत पंखोक तरमे । हाथ बढ़ाकऽ खिड़कीक पल्ला ठेलिकऽ बन्द करऽ चाहैत अछि । मुदा हाथ ओतऽ धरि नहि पहुँचैत छैक । ऊठिकऽ खिड़की बन्द करबाक बात सोचियोकऽ बिछौनसँ नहि उठैत अछि ।

मुदा अपन एहि असफल चेष्टापर मिनी मोन पड़ि जाइत छैक । ओहो फर्शपर ठाढ़ि भऽ अपन छोट-छोट हाथ बढ़ा खिड़कीकेँ छूबऽ चाहैत अछि । मुदा हाथ नहि पहुँचैत छैक । ओ ओकरा उदास होइत देखैत छैक आ झट कोरामे उठा खिड़कीपर ठाढ़ कऽ दैत छैक आ तखन ओ बड़ी कालधरि छड़ पकड़ने खुशीसँ छरपैत रहैत छैक ।

मिनी मोन पड़ैत छैक आ उदास दुपहरिया आरो उदास भऽ जाइत छैक । मिनी-गुड्डूकेँ रहलासँ कतेक हुल्लड़ मचल रहैत छैक ! मीरा तँ दुनूकेँ सम्हारैत-सम्हारैत अपस्याँत भऽ जाइत छैक । सोचैत अछि– साँझखन जाकऽ दुनूकेँ लऽ अनतैक । मुदा लऽ अनबाक विचारक संगे मीराक एना चल जयबाक बात मोन पड़ि जाइत छैक । रोकियो ने सकलैक ओकरा । बुझयबा-सुझयबाक कोशिशो ने कयलकै । बुझाकऽ हारि गेल अछि । मीराक अपन दु:ख सभसँ ऊपर छैक, अनकर बात ओ सुनऽ नहि चाहैत छैक, बुझबाक चेष्टो ने करैत छैक । ओ मात्र एतबे जनैत छैक जे 'ओकर घर' (अपन घर ओ आइ धरि नहि बुझलकै अछि) मे ओ अस्वीकृत छैक । घरक इच्छाक विरुद्ध, अपन पसिन्नसँ विवाह कयने अछि प्रकाश, ई गप्प एहि घरमे आबऽसँ पूर्वेसँ ओ जनैत छैक, एक्को दिन लेल बिसरल नहि छैक आ टूटल गृहस्थीक बिगड़ल आर्थिक अवस्था आ सुदीर्घ बीमारीसभक फेरामे ओझरायल घरक लोकक असमर्थताकेँ अपन उपेक्षा मानि-मानि ओ अपन धारणाकेँ

आरो पुष्ट करैत गेल छैक । एक्के घरमे, एक्के छतक नीचाँ वर्षो संग रहियोकऽ मीरा ओहि घरक कहियो नहि भऽ सकलैक जकरा ओ 'ओकर घर' कहैत छैक आ मात्र एही आशापर जीवि रहलि छैक जे कहियो प्रकाश समर्थ भऽ 'अप्पन घर' बनौतैक, जे 'ओकर घर'सँ भिन्न, जाहिमे मीराक किछु स्थान रहतैक, जकरा ओ यत्नपूर्वक सजाओत आ ओहन बनाओत जेहन ओ सपना देखैत रहलि अछि ।

आ समर्थ प्रकाश भऽ गेल अछि, मीरा बुझऽ लागलि छैक । बहुत रास आरो लोकसभ बुझऽ लागल छैक । किएक तँ नीक नोकरी करैत अछि । नीक कमाइत अछि । प्रशिक्षणक हेतु जखन ओ वर्ष भरि ओकरासँ दूर छलैक तँ मीरा कनियोँ उदास नहि भेलि छलैक । एक-एक दिनकेँ उत्साहपूर्वक कटैत गेलि छलैक– नव जिनगीक शुभारम्भक आशामे । एक-एक टा बितैत दिनक संग एक टा नव प्रात:क प्रकाश ओकर समीप अबैत जा रहल छलैक, जकरा बाँहि पसारिकऽ मीरा समेटि लेबऽ चाहैत छलि । प्रकाश लग सुरक्षित ओहि प्रशिक्षण-कालक पत्रसभमे ओहि नव प्रातक इजोत आइयो बन्दी बनल अहुरिया काटि रहल छैक ।

प्रशिक्षणसँ घुरलापर घर ओकरा भेटल छलैक आ मीरा रहऽ लागलि छलैक संगमे । मुदा मीराक सभ टा उत्साह, सभ टा स्वप्न एहि अनुभूतिक संग छिड़िआय लागल छलैक जे ओ एकसर नहि छल । ओकर संग 'ओकर घर' छलैक जे मीराक घर नहि छलैक । ई नवको घर 'हमर घर' नहि बनि सकलैक जाहिमे मीरोक किछु हिस्सा होइ, जकरा ओ अपन इच्छासँ सजाबय । ओ बुझि गेलैक जे प्रकाश एकसर नहि भऽ सकैत छैक, ओकर संग 'ओकर घर' रहतैक– सभ दिन । मीरा उदास भऽ गेलैक, हरदम उदासे रहैत छैक ।

ओ बुझाबऽ चाहैत छैक, मुदा हारि जाइत अछि । भरिसक ठीकसँ बुझाइए नहि पबैत छैक । भरिसक मौके नहि भेटैत छैक । भोरसँ डाक्टर, दबाइक हेतु भागम भाग, दिन भरि आफिस, आ आफिसक बाद फेर बितल राति धरि घर-गृहस्थी, पथ्य-परहेज आ दवा-दारुक व्यवस्था । बितल रातिमे जखन मीरा बगलमे पड़ि रहैत छैक तँ थाकल-ठेहिआयल रहलोपर किछु कहबा-सुनबाक इच्छा होइत छैक । मुदा दोसर बिछौनपर ओकर छोट भाइ लल्लन आ सपन तथा छोट बहिन लिली आ नीली जागलि रहैत छैक । जा धरि ओ सभ सुतैत छैक, गुड्डू जागि जाइत छैक । मात्र डेढ़ वर्षक छैक, मायक दूध चाहिऐक । दूध पिअबैत-पिअबैत मीरा अपनो सूति रहैत छैक । मुदा ओकर आँखिसँ निन्न हेरा जाइत छैक । बगलमे सूतलि मीरा सय-हजार मील दूर बुझाइत छैक– दिन-दिन दूर होइत । ओ डेरा जाइत अछि । आ, रातुक ओहि डेरायल एकसरपनीमे बड़ी काल धरि जागल रहैत अछि ।

आ भोरे मीरा उदास रहैत छैक । दिन भरि उदास रहैत छैक । ककरोसँ किछु कहैत नहि छैक । मुदा ओकर मौनक भाषा सभ अपन-अपन ढंगसँ बूझि रहल छैक । ई बिनु-कहल भाषा जेहन प्रकाश बुझैत छैक, आर क्यो नहि बूझि रहल छैक। मुदा अपन बात दोसरकेँ बुझयबामे प्रकाश सभ दिन असमर्थ रहल अछि ।

मायकेँ कैंसर आफ ब्रेस्ट्सक सन्देह छैक । दू माससँ इलाज भऽ रहल छैक । आब डाक्टरसभ कहि रहल छैक- कैंसर नहि, यूनिलेटरल एक्जिमा थिक । मुदा दर्द एखनो छैक । एहि दर्दसँ ओ ओतेक चिन्तित नहि छैक । सहबाक अभ्यास भऽ गेल छैक । तैयो चिन्तित रहैत छैक माय । बाबूजीकेँ डायबेटीज आ ब्लडप्रेशर तोड़िकऽ राखि देने छनि । मुदा तत्काल तंग कयने छनि औंठापरक एक टा छोटसन घाव । दू मासक इलाजक बादो ठीक नहि भऽ रहल छनि । मुदा ओ तऽ डेड टिशू छैक, ओहिमे दर्द नहि होइत छनि । दर्द होइत छनि एक-एक टा जीवित टिशूमे- सदिखन । आ ओहो चिन्तित रहैत छथिन । उमा पन्द्रह दिन पहिने एक टा शिशुकेँ जन्म देलकैक अछि, कमजोर छैक एखन । मुदा भौजीक मुँह देखिकऽ प्रायः ओ आरो कमजोर भऽ जाइत अछि । ओकरासँ पैघ इला स्वस्थ छैक, दिन भरि माय आ भौजीक संग भनसाघर आ अन्य काजमे व्यस्त रहैत छैक । मुदा भनसाघरमे गुमसुम फुलकी छनैत वा तरकारी कटैत भौजीक मुँह देखिकऽ ओहो रोगिआहि जकाँ भऽ जाइत छैक । छोट बच्चासभ कखनो-कखनो दुपहरियामे आइसक्रीम खयबाक जिदपर माय-बाबूजीसँ डाँट सुनि ओतेक नहि सहमैत अछि जतेक ओहन जिद्द करैत काल भौजीक उपस्थित रहलापर । मीराक मौनक अर्थ सभकेँ लागि गेल छलैक आ प्रकाश डेरायल रहैत छल ।

मुदा मात्र डेरायल रहलासँ प्रकाश ओहि स्थितिकेँ नहि टारि सकल जकर आशंका पछिला दू माससँ ओकरा आक्रान्त कयने छलैक । छुट्टीक दिन नहि जानि कतेक आलस ओकरा दबा लैत छैक । से नहि जानि । बिछौनसँ ऊठिकऽ हाथ-मुँह धोबाक इच्छो धरि नहि होइत छैक । अनेरो बिछौनपर पड़ल रहैत अछि । मिनी जाधरि ओहि घरमे रहैत छैक, कतहु नहि जाइत छैक । तखनो ओकरासँ चिपकल छलैक कि भनसाघरसँ माय जोर-जोरसँ बाजऽ लगलैक- "हमरालोकनि सभ दिन एहिना पाथर जकाँ अहाँक छातीपर बैसऽ नहि आयलि छी कनियाँ ! साढ़े तीन हाथक पुरुष ठाढ़ छथि एखन कमायवला । बीमारीक कारणेँ नचार पड़ल छी, नहि तँ एनामे क्यो एक्को क्षण रहत ?" मायक चिचिआयब क्रमशः कनबामे बदलि गेलैक आ फेर सभ टा निःशब्द । ओ साँस रोकि प्रतीक्षा करऽ लागल । हरदम बकबक करऽवाली मिनी सेहो दम साधि ओकर मुद्रा निहारैत रहलैक । किछु काल

उपरान्त मीरा दौड़लि अयलैक आ बिछौनपर पेटकान दऽ देलकैक । ओकरा किछु पुछबाक साहस नहि भेलैक । मायकेँ एना पड़लि देखि मिनी कानऽ-कानऽ सन भऽ गेलैक आ ओकर मुँह ताकऽ लगलैक । ओकर प्रश्न करैत आँखिसँ बचबाक हेतु प्रकाश बाथरूम जा हाथ-मुँह धोबाक विचार करऽ लागल । तखने दोसर कोठलीसँ बाबूजीक स्वर सुनाइ पड़लैक- "भेल ने सेहन्ता पूर ! दुखिते रही, मरि तऽ नहि गेल रही । बड़ सेहन्ता रहय जे बेटाक संग जाकऽ रही ।" एकाएक नहि जानि कोना ओ बाबूजीक समक्ष पहुँचि गेल आ कहलकनि- "ई अहाँक घर अछि- अपन घर । बीमारी द्वारे नचार नहि रहितौँ तँ एतऽ नहि अबितौँ, ई बात कोना बजलहुँ अहाँ ?" अपन बातक प्रतिक्रिया उपस्थित लोकसभक आकृतिपर बिन-देखने आ फेर अपन कोठलीमे घुरि बिछौनपर पड़ि रहल ।

आ एहि जरैत उदास दुपहरियामे खूजल खिड़कीसँ बाहर अकारण बेर-बेर तकैत बिछौनपर पड़ल अछि आ पड़ोसियाक मकानक बरण्डामे एक कुकूर ओंघा रहल छैक । रोशनदानपर बगड़ाक कचबचाहटि ओहिना जारी छैक, मुदा तीन पैघ-पैघ कोठलीवला डेरामे पूर्ण निस्तब्धता छैक । ओकर पन्द्रह दिनक भगिनियो आइ एको बेर नहि कनलैक अछि । एक टा मनहूस चुप्पी पसरल छैक । मीरा जेना-तेना दू कौर कण्ठक नीचाँ उतारि गुड्डू-मिनीकेँ संग लऽ चल गेलैक- एही शहरमे अपन बापक डेरा । ओ नहि रोकलकै । मुदा तैयो एहि डेरामे पन्द्रह आदमी छलैक- ओकर आठ भाइ-बहिन, माय-बाप, दुनू बहिनोइ, नोकर, दाइ आ एक टा पन्द्रह दिनक भगिनी । मुदा लागि रहल छलैक जेना क्यो ने होइ डेरामे, ओ एकसरे रहैत होअय ।

अपन बिछौनपर पड़ल अछि आ बाहर उदास दुपहरिया धधकि रहल छैक । रौदक धाही बिछौन धरि पहुँचि गेल छैक- मुदा तैयो ओ नहि उठैत अछि । पेटकुनियाँ भऽ जाइत अछि आ गेरुआमे मुँह गाड़ि लैत अछि ।

नहि जानि कतेक काल एना पड़ल रहैत अछि कि दरबज्जा खटखटाइत छैक । माय हेतै चाह लेने । सभ रविकेँ माय पाँच बजे चाह लऽ स्वयं उठबैत छलैक । ओ लपकिकऽ दरबज्जा खोलैत अछि । माय नहि, नोकर चाह लेने ठाढ़ छैक । चाह ओकरा हाथसँ लऽ ओ फेर बिछौनपर बैसि रहैत अछि । चाह एकदम ठण्ढा छैक, भरिसक बड़ी कालसँ दरबज्जा लग ठाढ़ छलैक । नोकरकेँ बजा फेरसँ चाह गर्म कऽ अनबाक बात सोचियोकऽ ओकरा नहि बजबैत छैक । एक्के घोँटमे सभ टा पीबि, खाली पियाली पलंग तरमे राखि दैत छैक ।

ऊठिकऽ दोसर कोठलीमे अबैत अछि । माय ओकर भगिनीकेँ दूध पिया रहलि छैक । लिली-नीली ओतहि बैसलि छैक । उमा बिछौनपर पड़लि छैक । इला प्रायः भनसाघरमे होयतैक आ लल्लन-सपन केम्हरो खेलाय निकलल छैक- ओ अन्दाज करैत अछि । माय ओकरा दिस ध्यान नहि दैत छैक आ उमा पड़ले-पड़ल आँखि बन्द कऽ लैत छैक । ओ किछु काल अनेरो ओहि कोठलीक चौखटिपर ठाढ़ रहैत अछि । फेर बाहरवला कोठलीमे अबैत अछि । ओकर दुनू बहिनोइ कोनो बातपर गरमागरम बहस कऽ रहल छलथिन, मुदा ओकरा देखिते दुनू चुप्प भऽ गेलाह । ओतहु किछु काल अनेरो ठाढ़ रहल । क्यो किछु नहि बजलैक । ओ बाहर बरण्डामे आबि गेल । बरण्डामे राखल अखड़ा चौकीपर पड़ल बाबू किछु पढ़ि रहल छलथिन, जोर-जोरसँ, भरिसक ओकरे शेल्फक कोनो अंग्रेजी उपन्यास । बाबूकेँ पढ़बाक शौक छलनि, मुदा समये ने भेटैत छलनि । तैयो जखन समय भेटैत छनि, एहिना जोर-जोरसँ पढ़ैत छथिन ।

ओ बरण्डामे राखल एक टा कुर्सीपर बैसि रहैत अछि । साँझ झलफला रहल छैक, मुदा बरण्डाक बल्ब नहि जरल छैक । बाबूक आँखि ओहिना कमजोर छनि, चश्माक लेन्स सेहो बेकार भऽ गेल छनि । डाक्टर ओकरा बदलबाक हेतु कतेको बेर कहि चुकल छनि । ओ ऊठिकऽ बल्ब जरा दैत छैक । बाबू एक बेर चौंकिकऽ देखैत छथिन आ फेर ओहिना पढ़ऽ लगैत छथिन ।

ओ फेर कुर्सीपर बैसि रहैत अछि । दू-चारि पाँती सुनिकऽ लगैत छैक जेना बाबू 'डाक्टर जिबागो' पढ़ि रहल छथिन । एक बेर फेर एकरा पढ़ब- ओ सोचैत अछि ।

भरि दुपहरिया चौकी तर ओंघाइत कुकूर कतहु मोहल्लामे पड़ा गेल छैक आ मकान-मलिकिनीक व्याकुल स्वर साँझक झलफलमे औना रहलि छनि ।

बाहर अन्हार जमकल जाइत छैक । ओ ऊठिकऽ फेर अपन कोठलीमे आबि जाइत अछि, मुदा लगैत छैक जेना कोठलीमे एखनो एक टा जरैत दुपहरिया बन्द छैक ॥

आफिससँ लंचरूममे चहल-पहल होबऽ लगैत अछि । अपन-अपन डिपार्टमेंटसँ डेढ़ बजिते सभ लंचरूम दिस पड़ाइत अछि । बनर्जी दूरेसँ हल्ला करैत

अबैत अछि- ''रिमेम्बर, एनी आफिसियल टाक पेनाल्टी फाइभ रुपीज ।'' चारू कातसँ समवेत स्वर उठैत अछि- येस...येस... ।

प्रकाश अपन कुर्सीपर मौन बैसल रहैत अछि । सभ दिन जकाँ आइयो एहि समवेत येस...येस... मे ओ सहयोग नहि दैत छैक । किएक तँ ओकरा बूझल छैक जे पन्द्रह मिनट पुरैत-पुरैत सभकेँ ई शर्त बिसरि जयतैक आ फेर वैह बोनस, डी.ए. आ प्रमोशनक गप्प- अन्तहीन ।

बनर्जी अपन कुर्सीपर बैसिते भट्टाचार्यक हाथसँ टिफिनक डिब्बा छीनि लैत छैक- ''देखी, आज के बौदी की दिये छे ?'' आ झट डिब्बाक दू टा पराठामेसँ एक टाकेँ मोड़ि-माड़ि मुँहमे राखि दैत अछि । भट्टाचार्यक मुँह लटकि जाइत छैक । मुदा बाहरसँ ओ शुष्क हँसी हँसैत रहैत अछि । बनर्जी बिना ओहिपर ध्यान देने जल्दी-जल्दी मुँह चला, ऊपरसँ एक घोँट पानि पीबि सभ टा गीड़ि जाइत अछि आ तखन भट्टाचार्यसँ कहैत छैक- दादा, यू आर ग्रेट ।

बनर्जीक ई सभदिना आदति छैक । अपने कहियो किछु नहि अनैत अछि । मुदा सभक डिब्बासँ लूझि-लाझि सभसँ नीक लंच ओकरे भऽ जाइत छैक । नहि जानि, आब ओ कोम्हर लुधकत, ताही डरेँ सभ अपन-अपन डिब्बा खोलि जल्दी-जल्दी कौर उठबऽ लगैत अछि । मुदा बनर्जी कहाँ मानऽवला ? श्रीवास्तवक डिब्बामेसँ एक टा अंडा उठा लैत छैक आ कहैत छैक- ''बौदी रोज आपको अण्डा खिलाता है, इसीसे तो इस उमेरमे भी लड़का निकाल दिया ।''

श्रीवास्तवकेँ अण्डा जयबाक अफसोस तँ होइत छैक, मुदा अपन मर्दानगीक तारीफसँ फूलिकऽ कुप्पा भऽ जाइत अछि आ सगर्व हँसैत अछि । श्रीवास्तव रिटायरमेंटक करीब पहुँचि रहल अछि, मुदा एहू साल एक टा बेटा भेल छैक । अवस्थामे बनर्जी ओकर बेटोसँ छोटे होयतैक, मुदा संगतुरिया जकाँ हँसी-मजाक होइत छैक दुनूमे ।

एक टा अण्डासँ बनर्जीकेँ संतोष नहि भेल रहैक । ओकरा उपाय सूझि गेलैक । लंचरूममे अबैत काल श्रीवास्तव नेङरा रहल छल, सभक ध्यान गेल रहैक । ओ झट पूछि बैसलैक- ''आज किया बात है दादा ? नगड़ा के चल रहा है ?''

श्रीवास्तव अपन पाजामानुमा पैण्टकेँ झट ऊपर उठा ठेहुन देखबैत कहैत छैक- ''क्या बताऊँ भाइ ! कल आफिस से लौटते वक्त सीढ़ी से उतरते हुए घुटने में मोच आ गयी । देखो न, नी-कैप भी पहन रखा है ।''

एक टा दुष्ट हँसी बनर्जीक ठोरपर पसरि गेलैक– ''सीढ़ी से उतरने में या कहीं और... ठीक-ठीक बोलो दादा.... ब्लफ नहीं...''

मतलब बूझि श्रीवास्तव तेना हँसैत छथि जेना लजायल स्वीकृति दऽ रहल होथि । सभ भभाकऽ हँसैत अछि । आ मौकासँ फायदा उठा श्रीवास्तवक डिब्बासँ एक टा पूरी उठा बनर्जी अपन मुँहमे धऽ लैत अछि ।

तखने शुक्ला लंचरूममे अबैत अछि– मुँहमे पान, ठोरपर मुस्की । बनर्जी ओकरे पाछू पड़ि जाइत अछि– ''की दादा ! फुरसत मिल गिया ?''

''कथीक फुरसति ?'' –शुक्ला कनेक अकचकाकऽ पुछैत छैक ।

''हम से नहीं उड़ो दादा ! हम सब देखा । आजकल डिक्टेशन बहुत हो रहा है स्टोनों को– उसी से फुरसत ! थोड़ा हमलोगों के लिए भी छोड़ दो दादा !''

''अरे क्या बकता है । दरबज्जा ठीक से बन्द करो । बाहर से किरानी लोग झाँक रहा है । सुन लेगा तो जान आफत में आ जायगी ।'' शुक्ला डेराइत, मुदा प्रसन्न होइत कहैत छैक ।

बनर्जी उठल आ दरबज्जा नीक जकाँ बन्द कऽ आयल । फेर शुक्लाक बगलमे कुर्सीपर बैसैत बाजल– ''अब सुनाओ दादा ! लोण्डिया फँसी की नही ? 'ए वन' माल है ।''

शुक्लाक जीह चटपटा उठलैक जेना कोनो चहटगर चीज सामने पड़ि गेल हो ! थूक घोँटैत बाजल– ''सौ तो है भाई ! लिफ्ट भी बहुत देती है, मगर हिम्मत ही नहीं पड़ती, कैसे आगे बढ़ूँ ?''

''अरे हिम्मत करो पट्ठे ! वे सबकी सब एक-सी होती है । पर हमे भूल नहीं जाना । और अगर तुमसे नहीं होता, तो हमारे सेक्शन में भेज दो ।'' –एकाउण्ट्स सेक्शनक प्रधान चोपड़ा चपचपाइत बाजल ।

तखने मिश्रा मुँह धूआँ कयने लंचरूममे पयर देलक । चुपचाप अपन कुर्सीपर आबि बैसि गेल । प्रकाशोक ध्यान ओम्हर गेलैक । अबस्से कोनो अप्रिय घटना भेलैक अछि ।

'क्या हुआ यार ?'' एक संग कतेको स्वर फुटलैक ।

–''होयत की ? वैह पुरना रोग- यूनियन । काज करऽ कहियौक तँ यूनियन, कोनो गलती लेल पुछियौक तँ यूनियन । ऊपर रिपोर्ट करियौक तँ बड़ा

साहब कहताह जे अहाँ अयोग्य अफसर छी । नहि रिपोर्ट करियौक तँ नित्य अपने किरानी जकाँ खटू आ गारि सुनू । मोश्किलसँ एक घण्टा अपन कुर्सीपर बैसैत जायत, ताहूमे गप्प, चाह, सिकरेट । तखन काज कोना हो ? बड़ा साहबकेँ कहियनु तँ कहताह जे अहाँमे टैक्ट नहि अछि, टैक्टसँ काज निकालू । टैक्ट माने बेइज्जति सहू । आब हमरासँ नहि पार लगैत अछि ई रोज-रोजक बेइज्जति ।

बात सभकेँ जँचलैक । सभक विभागमे यैह समस्या छलैक । कहियो 'गो स्लो' अभियान, कहियो 'वर्क टु रूल' । वर्क टु रूल माने वर्क एकार्डिङ्ग टु रूल नहि, माने नो वर्क । काज नहि करब । अहाँ अफसर छी, किछु बाजब ? बाजिकऽ देखि लियऽ तँ ! आफिसेमे नरेटी धऽ लेब । सड़कपर ठोकि देब ।

सभ चारू कात मिश्राकेँ घेरैत बाजल– ''आखिर हुआ क्या ?''

–''बात तँ किछु नहि छलैक मुदा भऽ गेलैक बतङ्गर । टाइपिस्ट सिनहाकेँ तीन दिनसँ एक टा जरूरी चिट्ठी टाइप करऽ देने छलिऐक । आइयो ओहिना पड़ल छलैक । पुछलिऐक तँ बहस करऽ लागल जे टाइम नहि भेटैत अछि । हम पुछलिऐ जे दिन भरिमे कैक टा चिट्ठी टाइप करैत छी तँ बाजल चारि टा पाँच टा । हम कहलिऐक जे इन्टरव्यूमे तँ अपन स्पीड खूब बढ़ाकऽ लिखने रही । तँ कहऽ लागल जे तहिया ओ स्पीड रहय । आब घटि गेल अछि । जतबे पाइ भेटत, ततबे ने स्पीड रहत । हम कहलिऐक जे काजकेँ अनठबियौक नहि, टाइप कऽ चिट्ठी पठा दियऽ । बस एहीपर अड़ि गेल । कहऽ लागल जे अहाँ हमर अपमान कयलहुँ अछि, माफी माङू । हमरा आश्चर्य भेल जे उनटे चोरा मारामारी । तावत सभ टा नेता जुमि गेल । बड़ो साहेब अयलाह । आ सभ टा सुनि ओहो यैह कहलनि जे अहाँ अपन बात आपस लऽ लियौक आ माफी मङियौक । आब एनामे कोना काज होयत ?''

शुक्ला छड़पिकऽ ठाढ़ भऽ गेल– ''ई तँ सरासरि अन्याय थिकनि बड़ा साहेबक । गारि सुनू आ उनटे माफियो माङू । एना तँ खूब एडमिन्सट्रेशन चलतनि !

मिश्रा क्षुब्ध होइत बाजल– ''घास अफसर छी हमरालोकनि ! हमरालोकनिसँ तँ चपरासी नीक अछि । आइ.ए.एस.मे कम्पीट कयने रही, मुदा ज्वाइन नहि कयलहुँ । एतऽ ज्वाइन कयलहुँ जे हर-हर खट-खट नहि छैक । नीक पाइ भेटैत छैक, चैनसँ रहब ।''

वर्मा गरजल– ''खाक अच्छे पैसे मिलते हैं ! न मकान की सुविधा, न सवारी की । चपरासी है भी तो पान तक लाकर नहीं देगा । ऐसी अफसरी से तो किरानीगिरी भली ।''

प्रकाशक कानमे झुकिकऽ मिश्रा बजलैक– "देखै छिऐक एकरसभक नाटक ? एखन सभ 'हँ-मे-हँ' मिलबैत अछि आ एतऽसँ जाकऽ बड़ा साहेब लग चुगलखोरी करत, मुफ्तक वाह-वाही लेत ।"

प्रकाशक मोन औना उठलैक । चुपचाप लंचरूमक दरबज्जा खेलि बाहर आयल । घड़ीमे दूसँ ऊपर भऽ रहल छैक । किछुए मिनटमे लंच-टाइम समाप्त होयतैक । मुदा आफिसमे चारू कात हल्ला मचल छलैक– कतहु ताश, कतहु शतरंज ! कतहु जोर-जोरसँ गप्प आ ठहाका । ओ एकर अभ्यस्त भेल जाइत अछि आब । शुरू-शुरूमे केहनदन लागल रहैक । चुपचाप अपन सेक्शनमे आबि जाइत अछि ।

लंच-टाइम खतम भऽ गेल छैक मुदा ओहिमे सभक डिब्बा दराजेमे बन्द छलैक । आब सौंसे सेक्शनमे टिफिनक डिब्बा टेबुलपर परसल छैक । ई क्रम तीन बजे धरि चलतैक । प्रकाश अपन दृष्टि अनेरे खिड़कीसँ बाहर सुदूर आकाशपर फेकि दैत अछि जाहिपर कारी-कारी मेघ बौआ रहल छैक । वर्षाक संभावना छैक ।

मुदा ठनका ओकरे सेक्शनमे खसैत छैक । सिंह जोर-जोरसँ गरजि रहल अछि– आब देखबैक अहाँलोकनि जे कोना मैनेजमेन्टक धज्जी उड़ैत छैक । बड़ लोकक आँखिमे धूरा झोँकलकैक, मुदा आब नहि चलतैक । इंदिरा जी, प्रधानमंत्रीक रंगति देखिए रहल छिऐक– पूरा झुकाव छैक कम्यूनिज्म दिस आ आब तँ नवका प्रेसीडेण्टो यूनियने नेता भेलाह अछि । पूजीवादीसभकेँ आब देखा देतैक । की कामरेड ?

सभ हँ-मे-हँ मिलबैत छैक । प्रकाशकेँ इच्छा होइत छैक जे सिंहसँ एक बेर कम्यूनिज्मक परिभाषा पुछैक ? पुछैक जे प्रधानमंत्री कम्यूनिस्ट कोना छथि ? मुदा तत्काल एहि इच्छाकेँ ओ दबा लैत अछि । आफत आबि जयतैक । सभ मिलि दस टा गारि देतैक आ ओ मुँह बाबि सुनैत रहत ।

सिंहक प्रवचन जारी छैक– "एहि सारसभकेँ देखा देबैक हमहूँ सभ जे एकतामे कतेक शक्ति छैक ! एक-एक कऽ एहि बिल्डिंगसँ खिड़कीक बाहर सड़कपर फेकि देबैक । सभ टा अफसरी निकलि जयतैक ।

एतबा कहलाक बाद ओकर ध्यान प्रकाश दिस गेलैक जे सभ टा सुनियो कऽ बाहर खिड़की दिस ताकि रहल छल । कनेक व्यंग्यपूर्ण हँसी हँसैत ओ प्रकाशकेँ कहलकैक– "अहाँ अधलाह नहि मानब झा बाबू ! हमरालोकनि जेनरल बात कऽ रहल छी, व्यक्तिविशेषक नहि ।"

प्रकाशकेँ जबर्दस्ती ओकर हँसीमे संग देबऽ पड़लैक– "नहि-नहि, अधलाह किएक लागत ?'

मुदा ओकर आत्मामे क्यो चीत्कार कऽ उठलैक– नपुंसक ! कनेको पुंसत्व बाँचल छौक तँ रिजाइन कर आइये । एहि हल्लामे आर कतेक दिन जीबेँ ? मुदा तत्क्षण लगलैक जे रिजाइन करब सोचब संभव छलैक, मुदा वस्तुतः रिजाइन करब मोस्किल । रिजाइन कऽ ओ कतऽ जायत ? पचीस पूर भऽ गेलैक । आब आर कोन नोकरी भेटतैक ? आ यदि भेटियो जाइक तँ की होयतैक ? ई समस्या दोसरो ठाम आबि सकैत छैक । कतेक ठाम त्यागपत्र देत ? ककरा-ककरासँ लड़त ? ई समस्या संस्थाविशेष वा वर्गविशेषक नहि छैक, ओ जनैत छल । ई तँ मूल समस्याक एक टा छोट-छीन अंग छैक । असल समस्या छैक– राष्ट्रिय अनुशासनहीनता, राष्ट्रिय नैतिक ह्रास– सभ स्तरपर, सभ समाजमे, सभ व्यक्तिमे, एक टा अभिशप्त पीढ़ीमे जन्म लेने अछि जकर सम्पूर्ण अस्तित्व 'ट्रायल एण्ड एरर' पद्धतिमे तबाह भऽ रहल छैक । सभ व्यक्तिमे, सभ स्तरपर असन्तोष छैक । ओ कहाँ-कहाँ बौआयत ?

फेर लगलैक जेना एना सोचब कायरता छैक, पराजय-बोधक छैक । स्थितिकेँ यथावत स्वीकार कऽ लेब सामर्थ्यहीनताक द्योतक छैक । संघर्ष कयलासँ सभ टा बदलि सकैत छैक, एक टा नवीन क्रान्ति आबि सकैत छैक ।

'क्रान्ति' शब्द दिमागमे अबिते ओकरा हँसी लगलैक । 'क्रान्ति'क गप्प तँ सभ ठाम भऽ रहल छैक आइ-काल्हि । मुदा ई भ्रामक क्रान्ति तँ मात्र राजनीतिक क्षेत्रमे लेन-देनक हेतु एक टा लाभदायक शब्द छलैक– सर्वथा अर्थविहीन । कमसँ कम ओकरा सैह लगैत रहलैक अछि । ओ सभ दिनसँ निराशावादी अछि । घोर निराशाक क्षणमे ओकर तीव्र इच्छा भेलैक अछि जे अराजकता, अशान्ति, राजनीतिक अस्थिरता, असुरक्षा, उपद्रव, हिंसा आर बढ़ौक, ततेक बढ़ौक जे मनुष्यताक नाम-निशान नहि बचौक आ प्रायः तखन ओहि घोर अंधकारमे, ओहि सम्पूर्ण अराजकतासँ एक टा नव विधान, एक टा नव समाज जन्म लेतैक ।

मुदा, से नहि होयतैक । एहिना आस्ते-आस्ते ह्रास होयतैक, आ एक टा दू टा नहि, अनेको पीढ़ी एहिना एकरासँ त्रस्त रहतैक । ओकरा कालेजक जमानामे पढ़ल एक टा दार्शनिकक कथन मोन पड़लैक जे जनतंत्रमे विशेष आस्था नहि रखैत छल । ओ कहने छलैक जे जनतंत्रक एक टा एहनो रूप औतैक जाहिमे मनुष्यकेँ सड़कपरसँ हँटा जानवर राज करत, विद्यालयमे शिक्षककेँ भगा छात्र राज करत, आफिसमे आफिसरकेँ भगा कर्मचारी राज करत, घरमे स्वामीकेँ भगाकऽ स्त्री राज

करतीह आ नोकरसभ मालिककेँ मारि-पीटिकऽ बैसा स्वयं राज करत । ओहि दिनमे ओ आदर्शवादी छल । जनतन्त्र आ समतामे पूर्ण विश्वास रखैत छल । ओहि दार्शनिकक कथन पढ़ि ओकरा हँसी लागल रहैक । मुदा आइ सोचैत अछि जे किछु अतिशयोक्तिक संग ओकर कथन आइ चरितार्थ नहि भऽ रहल छैक ?

एक सप्ताहक बाद मीराकेँ लेबऽ अबैत अछि प्रकाश ! आइयो छुट्टीक दिन छैक– रवि । मिनी-गुड्डी ओकरा देखिते प्रसन्न भऽ जाइत छैक । दुनूकेँ दुनू हाथे एक संग कोरामे उठा ओ दुनूक गालपर लगातार चुम्मा लैत छैक । मीराक आँखिमे व्यंग्यक रेखा स्पष्ट झलकि जाइत छैक– ''एतेक दिनमे एक्को बेर घुरिकऽ हालो पुछऽ नहि अयलिऐक आ आइ बड़ प्रेम उमड़ि रहल अछि !'' ओ ओहि दृष्टिक भाषा पढ़ियोकऽ अनठा दैत छैक ।

दुनू गोटे एहिना किछु क्षण मौन रहैत अछि । प्रकाश अयबाक मन्तव्य प्रकट करैत अछि– ''चलब ?''

''कोन फायदा ?'' मीरा जवाब दैत छैक ।

प्रकाशक लेल ई उत्तर अप्रत्याशित नहि छलैक मुदा तैयो सुनिकऽ आश्चर्य भेलैक । आगू किछु बाजब निरर्थक लगलैक । कनेक काल बाद मिनी-गुड्डूकेँ अपनासँ फराक करैत उठैत बाजल– ''तखन चलैत छी ।''

–''माय कहलक अछि खाकऽ जाय लेल ।'' ई कहि बिनु उत्तरक प्रतीक्षा कयने मीरा चल जाइत छैक । प्रकाश किछु क्षण ओहिना ठाढ़ रहैत अछि । फेर जूता उतारि बिछौनपर पड़ि रहैत अछि । मौका पाबि मिनी छातीपर चढ़ि जाइत छैक । ओ जिद्द करऽ लगैत छैक– पप्पा, खिस्सा कहू ।

जल्दीमे कोनो खिस्सा मोन नहि पड़ैत छैक, मुदा मिनी मानऽवाली कहाँ ? जिद्द लागि गेल छैक । नचार प्रकाश किछु कहऽ लगैत छैक– ''एक टा रहय राजकुमारी, दूध सन उज्जर, मोती सन चकमक आ... देख, राजकुमारी एतहि आबि गेलौक ।''

मिनी हड़बड़ाकऽ छातीपरसँ उठि बैसैत छैक । प्रकाशो बैसि जाइत अछि। खूजल दरबज्जासँ मंजूकेँ अबैत ओ देखि लेने छलैक । सामने हाथ जोड़ने ठाढ़ि छलैक मंजू– मंजू दासगुप्ता ।

आ हाथ जोड़ने ठाढ़ि मंजूकेँ देखि ओकरा ओ दिन मोन पड़ैत छैक जहिया ओकर बरियाती एहि दरबज्जापर आयल छलैक । स्त्रीगणसभक झुण्डमे सभसँ आगू ठाढ़ि– गुलाबी साड़ी पहिरने एक टा मांसल चंचल छौंड़ी । बुट्टी-बुट्टीसँ तेजी झलकैत । सभ टा बीध करैत काल ओकर दृष्टि ओकरेपर गड़ल रहलैक जतऽ एक टा स्वच्छ हँसी हरदम ओकर दृष्टिक स्वागत कयलकैक । आन सभकेँ ओकर ई चेष्टा हल्लुक आ आपत्तिजनक लागल होयतैक संभवतः । मुदा ओम्हर ध्यान नहि देलकैक ।

आ तकर बाद नित्य बगलक क्वार्टरमे ओकर अड्डा जमऽ लगलैक । युवा हृदय, असंख्य असंबद्ध गप्प । ओकर अर्थ नहि, मुदा ओकर उत्साह, उमंग अजीव सन । बेर-कुबेर कथुक ध्यान नहि । कौखन टेगौरक कविता, आ कौखन सस्वर गीत– 'सात भाइ चम्पा जागो री जागो'वला आ 'निझुम संध्या, पंथ पाखिरा... ।' मंजूक सामीप्य ओकरा प्रिय लगैत छलैक ।

आ एहि सामीप्यक कारण नित्य पोस्टमैनक अयलापर ओकर बेचैनी, पत्र भेटलापर प्रसन्नता आ नहि भेटलापर उदासी ओकर दृष्टिमे आबि गेलैक आ जेना कोनो रहस्य बूझि जयबाक प्रसन्नता भेलैक ।

एक दिन टोकलकैक– 'परदेसीक पाती नहि आयल आइ ?''

ओ चौंकलि । फेर लजायलि । मुदा कनियेँ काल । फेर झट सम्हरैत बाजलि– ''अहाँ देखबै, देखाउ ?'' आ ओकर उत्तरक प्रतीक्षा नहि कऽ झट दौड़िकऽ भीतर गेलि आ हाथमे एक टा फोटो लेने आयलि– लियऽ, देखि लियौ, अछि ने एकदम 'उत्तम कुमार' सन ?

बंगला-रजतपटक लोकप्रिय नायकक संगे अपन प्रेमीक तुलना ओ गर्वपूर्वक कयलकैक । फोटो देखि ओकरो किछु साम्य बुझना गेलैक । ओकर पसिन्नपर बधाइ देलक । मुदा ओ प्रसन्न नहि भेलैक । एकाएक एकदम उदास भऽ गेलैक । बिनु पुछने कहऽ लगलैक– 'बाबा' ई विवाह नहि होबऽ देताह । हम कतेको बेर कहि चुकलियनि, मुदा नहि जानि किएक, हुनका पसिन्न नहि छनि ।

ओकरा प्रसन्न करबा लेल प्रकाश कहलकै– ''अहाँ चिन्ता किएक करैत छी, ब्राह्मण कुमार तँ उपस्थिते छी, जहिया कहब झट मंत्र पढ़ा बियाह करा देब ।''

आशाक अनुरूपे ओ भभाकऽ हँसलि आ लगातार हँसैत रहलि । ओहि दिन लगातार अनेको गीत अपन पसिन्नसँ सुनौलकैक, एतेक आत्मीयतासँ जे सासुकेँ चिन्ता भेलनि आ ओकरा बजाकऽ लऽ गेलथिन । बाटमे बुझौलथिन जे मंजू नीक

'लड़की' नहि अछि, एकर चालि-चलन ठीक नहि छैक, एकरासँ बेसी मेलजोल ठीक नहि । ओ बौक विद्यार्थी जकाँ सभ टा भाषण सुनैत रहल ।

मुदा वैह मंजू दासगुप्ता आइ कोठलीमे हाथ जोड़ने ठाढ़ि छलैक, माङमे सिन्दुर, देह आर अधिक मांसल, किछु-किछु स्थूल भऽ गेल छैक । आकृतिपर पूर्ण सन्तोषक भाव । दू वर्ष पूर्व विवाह भेल छलैक– ओ अनुपस्थित छल । हाथ जोड़ने ओकरे उलहन दैत रहलैक– "आखिर ब्राह्मण-कुमारक दक्षिणा अहाँ पचाइये गेलहुँ ? एतेक बैमानी ?"

आ एहि परिहास मात्रसँ ओकर आकृतिपरक सन्तुष्टिक भाव बिला जाइत छैक आ तेहन उदासी पसरैत छैक जेहन कुमारि मंजूक मुँहपर फोटो देखौलाक बाद भविष्यक आशंकासँ पसरि गेल रहैक । दुनू आँखि डबडबायल ।

ओकरा अपनापर क्रोध होइत छैक । निरर्थक बेचारीकेँ कना देलिऐक ? भूतक गड़ल मुर्दा सामने राखि देलिऐक ? बात सम्हारैत पुछलक– "खूब सुखी छी ने ?"

ओ मूड़ी डोलबैत अछि, बजैत किछु नहि अछि । आँखि ओहिना डबडबायल ।

आगू किछु नहि फुरलैक । चुप्प बैसल रहल । एहि बेर वैह टोकलकै– "कने हमरा संग आयब ?"

प्रकाश अकचकायल ओकर मुँह देखैत रहि जाइत अछि । ओकरा एना अकचकायल देखि मंजू हँसी कयलकैक– चिन्ता जुनि करू । अहाँक संग कतहु पड़यबाक योजना नहि अछि । लजाकऽ प्रकाश झट ठाढ़ भऽ जाइत अछि । मिनीकेँ देहसँ फराक करैत अछि आ मंजूक संग ओकर क्वार्टरमे अबैत अछि । ओकरा एक टा कुर्सीपर बैसा, मंजू भीतर जाइत छैक आ एक टा मोट सन लिफाफ लेने बाहर अबैत छैक । लिफाफ ओकरा हाथमे दैत कहैत छैक– "अहाँक दक्षिणा बाँकी रहि गेल छल ने, लियऽ ।" सामने ठाढ़ि मंजू हँसबाक चेष्टा कऽ रहलि छलैक मुदा एक-एक टा शब्द तेना थरथरा गेल रहैक, जेना बजबामे कष्ट भऽ रहल होइ ।

लिफाफकेँ तरहत्थीपर तौलैत प्रकाश पुछैत छैक– "बेस भरिगर बुझाइत अछि । ब्राह्मण कुमार प्रसन्न भेलाह, अखण्ड सौभाग्यक आशीर्वाद दैत छथि ।"

मुदा एहि बेर मंजू नहि हँसैत छैक । प्रकाशकेँ अपन तरहत्थीपर राखल लिफाफ रहस्यमय लगैत छैक । मंजू ओहिना स्तब्ध ठाढ़ि छैक । प्रकाश लिफाफकेँ हाथमे डोलबैत प्रश्न करैत छैक– "खोलिकऽ देखि सकैत छी ?"

"देखि लियऽ ।" मंजूक स्वर ओहिना थरथरायल छैक ।

प्रकाश लिफाफ फाड़ैत अछि । भीतरसँ बहराइत छैक नीक जकाँ तहिआयल बहुत रास पुरान पत्रसभ । सभक ऊपर प्रेम-सम्बोधन "आमार सोना....आमार.... !" ओकरा आगू नहि पढ़ल जाइत छैक । चिट्ठीक गड्डीकेँ पलटि दैत छैक । मुदा गड्डी पलटिते एक टा फोटो ऊपर आबि जाइत छैक । प्रकाश नीक जकाँ चिन्हैत छैक ओ फोटो– मंजूक 'उत्तम कुमार' ।

ओ आश्चर्यमे पड़ल मंजूसँ प्रश्न करैत छैक– "हम ई सभ लऽकऽ की करब ?"

मंजू बड़ अधीरतासँ बाजि उठैत छैक– "तँ हमहीँ ई सभ राखिकऽ की करू ? फाड़ि देबाक वा जरा देबाक साहस नहि होइत अछि । संग रखबाक क्षमता सेहो नहि अछि । घुरा देब सोचलो ने जाइत अछि । तखन की करू एकर हम ? एहि गुप्त इतिहासक अहीँ टा साक्षी छी; ई अहीँ लग रहय, सैह नीक ।"

प्रकाशकेँ ओहि काल मंजू बड़ असाधारण लगैत छैक– शरतक कोनो नायिका सन । ओ लिफाफ लेने घुरि अबैत अछि । मिनी ओहिना बिछौनपर ओकर प्रतीक्षामे बैसलि छैक । ओ फेर बिछौनपर पसरि जाइत अछि । फेर ओकर छातीपर सवार भऽ जाइत छैक– "राजकुमारीवला खिस्सा कहू पप्पा !"

आ एहि बेर प्रकाश अनायास कहऽ लगलैक– ओहि दूध सन राजकुमारीकेँ एक दिन एक टा सुन्नर राजकुमार भेटलैक । दुनूक विवाह ठीक भऽ गेलैक, मुदा बीचमे एक टा जादूगर देखि लेलकैक ओहि राजकुमारीकेँ । ओ अपन जादूसँ राजकुमारीकेँ सुग्गा बना पिजरामे बन्द कऽ उड़ि गेलैक । राजकुमार कनैत देखैत रहि गेलै आ राजकुमारी पिजड़ामे बन्द तरफड़ाइत रहलि । राजकुमार आइयो रने-वने कनैत राजकुमारीकेँ ताकि रहल छैक आ राजकुमारी आइयो पिजड़ामे बन्द तरफड़ा रहलि अछि ।

भोजनक उपरान्त प्रकाश चलबाक उपक्रम करैत अछि मुदा बड़की सारि पुष्पा बाट छेकि लैत छैक– "एतेक रातिकेँ कोना जायब ? बाबूजी मना करैत छथि ।"

पुष्पा अनेरो मुसकिया रहलि छैक । प्रकाश ओहि मुसकीक अर्थ बुझैत

छैक आ एक बेर मूड़ीसँ तरबा धरि पुष्पाकेँ निहारैत छैक । ओकरा ई देखि विस्मय भेलैक जे साभिप्राय मुस्कियबाक वयस भऽ गेल छैक पुष्पाक । ओकर विवाहमे पुष्पा 'फ्राक' पहिरैत छलैक आ कोरामे बैसैत छलैक । समय कोना ससरि जाइत छैक ?

अपना दिस एना टकटकी लगाकऽ तकैत देखि पुष्पा लजा गेलैक– ''एना की देखैत छी !''

प्रकाश हँसी करैत कहलकैक– ''देखै छी जे अहाँ सन क्यो बाट छेकि कहय जे राति भरि नहि जाउ, भोरे जायब, तँ कोना जा सकब ? मुदा जाय तँ पड़बे करत । डेरापर माय-बाबूजी चिन्ता करताह ।''

–''तकर चिन्ता नहि करू । डेरापर खबरि दऽ देलथिन अछि बाबूजी । आब अहाँ भोरे जायब ।''

प्रकाश बिछौनपर पसरि जाइत अछि । हाथ पकड़ि पुष्पाकेँ लग बैसा लैत छैक– ''एक टा गीत सुनाउ ।''

एहि प्रस्तावसँ पुष्पा बड़ उत्साहित भऽ जाइत छैक । गयबाक ओकरा बड़ सऽख छैक । कंठ सेहो बड़ मधुर एवं लोचपूर्ण छैक । खाली समुचित प्रोत्साहन एवं परीक्षणक अभावमे अपेक्षित प्रगति नहि भऽ रहल छैक । प्रकाशे टा समय-समयपर ओकरा उत्साहित करैत रहैत छैक । ओकर प्रिय प्रस्तावपर उत्साहित होइत पुष्पा पुछैत छैक– ''कोन सुनब ?''

–''कोनो सुनाउ, अहाँ अपने पसिन्नसँ ।''

–''आइ अपन पसिन्नवला गीत नहि सुनब ?'' पुष्पा दुष्टतापूर्ण हँसी हँसैत छैक ।

–''हँ-हँ, ओ तँ सुनयबे करू पहिने ।''

पुष्पाकेँ ओ एक टा शास्त्रीय रागपर आधारित फिल्मी गीत सिखौने छलैक– 'पिया तो से नैना लागे रे !' आ जहिया कहियो मौका लगैत छलैक, ओ गीत अबस्से सुनैत छल । आइयो पुष्पा वैह गीत शुरू करैत छैक– पिया तो से नैना लागे रे !

ओकर स्वर सुनि दोसर कोठलीसँ अंजू आ प्रभा सेहो आबि जाइत छैक । प्रभा सबसँ छोट सारि छैक– मात्र आठ बरखक । आबिकऽ झट कोरामे बैसि जाइत

छैक । अंजू पुष्पासँ डेढ़ बरख छोट छैक, मुदा देखबामे दुनू एकतुरिये बुझाइत छैक । पुष्पा पिण्डश्याम छैक मुदा अंजू धपधप गोर, सभ बहिनसँ बेसी । प्रकाश ओकर नाम रखने छैक– 'मेम साहब ।'

बड़ी काल धरि ई संगीत-कार्यक्रम चलैत छैक । प्रकाश फरमाइश करैत जाइत छैक, आ पुष्पा गबैत छैक । तखने सासु कोठलीमे अबैत छथिन । प्रकाश धड़फड़ाकऽ उठैत अछि आ प्रणाम करैत छनि । ओ प्रकाशकेँ मोने-मोन किछु आशीर्वाद दैत बेटीसभकेँ डँटैत छथिन– ''भरि राति संगीते सभ चलतैक ? सुतहो देबहुन कि नहि ?''

प्रकाश झट टोकैत छनि– ''एखन कोन राति भेलैक अछि ! 'दादाजी'केँ आबऽ देथुन ।'' सासु विरोधकेँ अस्वीकारैत कहैत छथिन– ''हुनकर कोन ठीक छनि ? कखन औताह । भोरमे गप्प कऽ लिहथि, एखन आराम करथु । चलै चल ।''

सभ विदा होइत अछि मुदा जाइत काल पुष्पा-अंजूक ठोरपर अर्थपूर्ण हँसी प्रकाश साफ देखैत छैक ।

प्रकाश बिछौनपर एकसर पड़ल प्रतीक्षा करैत अछि मीराक अयबाक । मीरा अबैत छैक आ बत्ती मिझा ओकरा दिस पीठ फेरि निःशब्द पड़ि रहैत छैक । ओहो पड़ल रहैत अछि बड़ी काल । फेर अनायास ओकरे हाथ मीराकेँ छूबऽ-दुलारऽ लगैत छैक । मुदा मीरा जेना बर्फ-सन सर्द भऽ गेलि छैक । ओकरा छुबैत ओकर आङुर ठिठुरैत छैक । मुँह अपन दिस फेरऽ चाहैत छैक तँ स्पष्ट विरोधक अनुभव होइत छैक । जबर्दस्ती अपना दिस झीकैत छैक तँ ततेक तेजीसँ आ तेना आबिकऽ देहसँ लागि जाइत छैक जेना कहि रहल हो– ''अहीँ लेल अयलहुँ अछि ने, लियऽ ।''

ओकर सभ टा शक्ति लुप्त भऽ जाइत छैक । देहसँ सटलि मीराकेँ कसिकऽ पकड़बाक सामर्थ्य हेरा जाइत छैक । अशक्त हाथ लोथ जकाँ ओकर सेरायल देहपर पड़ल रहैत छैक । ओहि लोथक बोझ मीराकेँ अखरैत छैक, ओ फेरसँ पलटि बिछौनक दोसर छोरपर चल जाइत छैक । फेर वैह छोट मुदा अजेय दूरी, कटाह, मौन आ असह्य अन्हार । दू प्राणी ओहिमे औनाइत अछि आ जागल रहितो सुतबाक लाथ करैत अछि– राति भरि ।

आफिससँ डेरा पहुँचिते प्रकाश देखैत अछि जे मोटा-चोटा बान्हल राखल

छैक आ सभ क्यो तैयार बैसल छैक । ओ अकचकायल सभक मुँह देखऽ लगैत अछि ।

–''हमरालोकनि आइ गाम जा रहल छी ।'' बाबूजी ओकर अकचकायल दृष्टिक अर्थ बूझि स्थिति स्पष्ट करैत छथिन ।

प्रकाश चिन्तामे डूबि जाइत अछि । ओकरा एहि बातपर ध्यान नहि जाइत छैक जे मीराक एहि डेरासँ गेलाक बाद आइ प्रथम बेर बाबूजी ओकरासँ बाजल छथिन । ओ ईहो नहि कहैत छनि जे अहाँक घाव एखन ठीक नहि भेल अछि, एखन कोना जायब ? ने ई कहि रोकबाक चेष्टा करैत छनि जे उमाक बच्चा एखन बड़ छोट छैक । ओ तँ दोसरे चिन्तामे डूबि जाइत अछि ।

बाबूजी ओकर ई त्रिन्ता बूझि जाइत छथिन । ओकरा ओहि स्थितिसँ उबारैत जकाँ कहैत छथिन– ''तोँ चिन्ता जुनि करह । गाम चिट्ठी लिखने छलिऐक । किरायाक टाका आबि गेल अछि मनिआर्डरसँ ।''

प्रकाश निश्चिन्त होइत अछि । मुदा सभक बीच अपनाकेँ बड़ अपरिचित सन पबैत अछि । सभक लग अकारण उपेक्षित जकाँ किछु काल बैसल रहैत अछि । समय होइत छैक आ सभ महेन्द्रू घाट आबि जाइत अछि । रिक्शासँ उतरिते बाबूजी अपन पाकिटसँ निकालि मोड़ल-माड़ल मैल सन किछु नोट दैत छथिन जकरा ओकर लजायल हाथ मुट्ठीमे लऽ लैत छैक आ ओ टिकटघर दिस दौड़ैत अछि । ओतुक्का लम्बा लाइन देखि ओ हतोत्साहित भऽ जाइत अछि । प्रथम-द्वितीय श्रेणीक खाली खिड़कीकेँ ललचायल तकैत ठाढ़ रहैत अछि । तखने ओहि लम्बा 'क्यू'सँ निकलि ओकरे आफिसक एक टा कर्मचारी लग आबि पुछैत छैक– ''कतऽ जायब सर ? लाउ, हम आनि दैत छी ।''

–''आठ टिकट दरभंगा ।'' एतबा कहि ओ मोचरल मैल नोट ओकर हाथमे राखि दैत छैक । ओ झट खिड़की दिस जाइत अछि । ओकर व्यवहार बड़ शालीन छलैक मुदा तैयो प्रकाशकेँ भ्रम होइत छैक जे मोचड़ल-माचड़ल नोट लैत काल ओ मुसकिया रहल छलैक ।

जहाजपर सभक बीच ओकर स्थिति पूर्ववत असामान्य भऽ जाइत छैक । सभ बड़ औपचारिक सन, जेना कोनो दूरस्थ सम्बन्धीकेँ विदा करऽ आयल हो । सभ गुमसुम रहैत छैक आ ओकरो बजबा लेल किछु नहि फुराइत छैक । जहाज खुजबाक घंटी होइते ओ माय-बापक पयर छूबि जल्दीसँ नीचाँ उतरि जाइत अछि ।

जहाज चल गेलाक बादो ओ बड़ी काल ओहिना ठाढ़ आँखिसँ अदृश्य होइत जहाज आ सामने पसरल गंगाक हिलकोर देखैत रहैत अछि आ ओकरा बेर-बेर मोन पड़ैत छैक पयर छूबाकाल बाबूजीक विदा दैत आँखिमे टूटल-टूटल स्वप्नक हिलकोर ।

हँ, एक टा स्वप्न हुनको टूटल छलनि– समर्थ बेटाक कान्हपर सभ टा बोझ दऽ बुढ़ारी शान्तिसँ बितयबाक स्वप्न । आ, समर्थ ओ भऽ गेल अछि से सभ जनैत छैक । नीक कमाइत अछि, नीक नोकरी करैत अछि ।

ओकर मोनमे किछु जोरसँ थरथरा उठैत छैक जेना एखने एक टा बड़का जहाज चल गेल हो आ पानि थरथरा रहल हो । ओ ओही ठाम जेटीपर हताश बैसि जाइत अछि आ दूर धरि पसरल गंगाक छातीपर छिड़िआयल अन्हारकेँ देखैत रहैत अछि । मुदा लगैत छैक जेना जाहि जेटीपर ओ बैसल अछि से धसल जाइत होइ । ओ ऊठिकऽ पड़ाइत अछि आ बेर-बेर पाछू घूरिकऽ तकैत अछि, जेना क्यो खेहारने अबैत हो ।

आफिससँ निकलबाक पहिने प्रकाश निर्णय कऽ चुकल छल प्रमोदक डेरा दिस जयबाक । पाँच बजिते आफिससँ बाहर निकलल आ एक टा रिक्शापर बैसि कालोनी दिस विदा भेल ।

रिक्शा जखन किछु दूर आबि गेलैक तँ ध्यान गेलैक जे पहिने टेलीफोनसँ पूछि लेब ठीक रहितैक । नहि जानि, डेरापर होयतैक कि नहि ? व्यस्त लोक छैक, साँझ भेने डेरा घुरिए आयब आवश्यक नहि छैक ओकरा लेल । डेरापर नहि होयतैक तँ हरानी व्यर्थ । मुदा, से समय आब बीति चुकल छैक । विदा भऽ गेल तँ आब घुरत किन्नहु नहि । जे होयतैक, देखल जयतैक । बूझत जे ओतेक दूर ओहिना टहलि अयलहुँ । आ, भऽ सकैत छैक जे प्रमोद नहि तँ कमसँ कम हेमा भौजीसँ भेँट भऽ जाइ । यद्यपि व्यस्त ओहो कम नहि रहैत छथि, मुदा भऽ सकैत छैक जे आइ घुरि आयलि होथि । बहुत दिन भऽ गेलैक भेँट भेना हुनकासभसँ । प्रकाशकेँ ई सोचि बड़ आश्चर्य होइत छैक जे आइ प्रमोदसँ भेँट भेना लगभग एक मास भऽ गेलैक । एहि बीच ततेक व्यस्त रहल जे प्रमोदोक ध्यान नहि अयलैक, जकरासँ कमसँ कम एक बेर भेँट होयब एहि दस वर्षक नियम रहलैक अछि ।

मुदा ओ व्यस्त छल तँ प्रमोद किएक ने भेँट कयलकैक ? कमसँ कम

टेलीफोनो तँ करितैक ? आइ फेर एक टा सन्देहक साप ओकर मोनमे अपन फेँच काढ़िकऽ ठाढ़ होइत छैक, ठीक ओहि राति जकाँ जहिया उमाकेँ अस्पताल लऽ गेल छलैक । मुदा ओहि दिन ओहि सन्देहक सापक फेँच नीक जकाँ थूरि देने छलैक प्रकाश । मुदा ओकर थकुचलहा फेँच फेर सुगबुगा रहल छैक आ प्रकाशकेँ ओहि दिनुका सभ टा घटना आइ फेर मोन पड़ि रहल छैक ।

रातिक दू बजे माय ओकरा उठौने छलैक– ''उठह । अस्पताल लऽ चलबाक बेर भऽ गेलह ।''

माय हड़बड़ायलि छलैक । मुदा प्रकाश निश्चिन्त छल । प्रमोद कहने छलैक जे बेर-कुबेर जखन काज होउ, टेलीफोन कऽ दिहेँ, हम आबि जयबौक ।

–''तोँ चिन्ता नहि कर माय !'' प्रकाश मायकेँ आश्वस्त करैत कहलकैक– ''प्रमोदकेँ टेलीफोन करैत छिऐक । सभ टा व्यवस्था कऽ देतौक ।''

बिछौनसँ ऊठि, बगलक किरायादारकेँ उठा, हुनकासँ असमयमे कष्ट देबाक हेतु क्षमा माङि, प्रकाश प्रमोदकेँ टेलीफोन कयलकैक । बड़ी काल 'रिंग' कयलाक बाद ओम्हरसँ ओंघायल-खौंझायल स्वर अयलैक– 'हलो' ।

–''हम प्रकाश बाजि रहल छी । जल्दी गाड़ी लऽकऽ आबि जो । उमाकेँ अस्पताल लऽ जयबाक अछि ।''

–''एम्बुलेन्सकेँ टेलीफोन कऽ बजा ले । मौसीवला गाड़ी सर्विसिंगमे गेल छैक । हम एम्हरेसँ अस्पताल आबि जयबौक ।'' प्रमोद ओम्हरसँ बजलैक ।

प्रमोदक स्वर सुनि ओ निश्चिन्त भऽ गेल छल । मुदा ओकर उत्तर सुनि चिन्तामे पड़ि गेल । किछु काल 'रिसीवर' राखि गुमसुम ठाढ़ रहल । फेर 'मेडिकल इमरजेन्सी'मे 'एम्बुलेंस'क हेतु टेलीफोन कऽ डेराक पता कहि देलकैक आ एम्बुलेंसक प्रतीक्षा करऽ लागल सड़कपर आबिकऽ । एम्बुलेंस जखन आबि गेलैक तँ प्रकाश दौड़िकऽ माय लग पहुँचल– ''तैयार भऽ जो माय ! एम्बुलेंस आबि गेल छौक ।''

''एम्बुलेंस ?'' माय चौंकलैक– ''प्रमोदसँ गप्प नहि भेलौक ?''

–''ओ ओम्हरेसँ अस्पताल पहुँचि जयतौक । ओकर मौसीवला मोटर खराब छैक । सर्विसिंगमे गेल छैक, तेँ एम्हर नहि आबि सकलौक ।'' प्रकाश सफाइ देलकैक ।

–''मुदा आर गाड़ी सभ की भेलैक ? ओकरा तँ तीन टा मोटर छैक ।'' मायकेँ जेना प्रकाशक बातपर अविश्वास भेलैक ।

–''होयतैक किछु गड़बड़ी । जाय दही । जल्दी चल, एम्बुलेंस ठाढ़ छौक ।''

मायक बात ओ टारि देलकैक, मुदा शंकाक साप एक बेर ओकरो मोनमे फनफना उठलैक । उमाकेँ स्ट्रेचरपर उठा एम्बुलेंसमे सुता देलकैक, मायो आवश्यक सामान लऽ बैसि गेलैक तँ प्रकाश सेहो आबिकऽ बैसि गेल आ एम्बुलेंस बिदा भऽ गेलैक ।

अस्पतालक लेबर-रूमक बाहरी कक्षमे एकदम सन्नाटा छलैक । ने डाक्टर-डाक्टरनी, ने कोनो नर्स । दरबान धरि नदारद । कोनो उपाय नहि देखि प्रकाश अपने धड़धड़ाइत लेबर-रूमक बाहरी कक्ष होइत भीतर घोसिया गेल । भितरका कोठलीमे दू टा नर्स सूतलि छलैक– एक टा टेबुलपर आ दोसर दू टा कुर्सी जोड़िकऽ । ओकर बगलवला कोठलीमे प्राय: कोनो आसन्नप्रसवा किकिया रहलि छलैक !

प्रकाश दुनू नर्सक लग पहुँचि जोरसँ पयर पटकलकैक । मुदा कोनो असरि नहि भेलैक । लग जा 'सिस्टर' कहि सोर पाड़लकैक । तैयो कोनो असरि नहि । अन्तमे कुर्सीपर सूतलि नर्सक कुर्सी पकड़ि हिला देलकैक । ओ एकदमसँ चेहाकऽ ऊठि गेलैक– ''क्या है ? कोन है तुम ?''

प्रकाश धुरिआयले पयरे बाहर दिस घुरैत कहलकैक– ''साथ आइये, मरीज है ।''

उमा 'एडमिट' भऽ गेलैक । मुदा कोनो डाक्टर-डाक्टरनीकेँ उपस्थित नहि देखि मायक मोन हताश भऽ गेलैक । उमाक पहिल बच्चा नष्ट भऽ गेल छलैक, तेँ ओ डेरायलि छलि, नहि तँ एहिसँ बेसी सुविधा तँ गाममे होइतैक । प्रकाशो प्रमोदक भरोसे लऽ अनने छलैक । मुदा एहि कुबेरमे ओहो अथाहमे पड़ल छल आ प्रमोद एखन धरि नहि आयल छलैक ।

प्रकाश भरि राति बाहर बरण्डामे टहलैत रहल । एक-दू बेर बाहर फुटपाथपरसँ चाहो पीबि आयल, जनाना अस्पतालक सामने फुटपाथपर भरि राति चाहक दोकान खुजल रहैत छैक । मुदा माय अपस्याँत भीतर-बाहर दौड़ैत रहलैक– एको मिनट चैनसँ नहि बैसलैक । आ भोरे छौ बजे उमा जखन एकटा बेटीकेँ जन्म देलकैक, ओकरा लगमे खाली माये टा उपस्थित रहैक, जेना अस्पतालमे नहि, अपन डेरेमे प्रसव भेल होइ ! ने डाक्टर, ने नर्स । खाली अस्पताली कोठली आ अस्पताली गंध । मुदा साढ़े आठ बजैत-बजैत प्रमोद पहुँचि गेलैक । अपन वार्ड जाइत काल

प्रकाशोसँ भेँट करैत गेलैक । उमाक ध्यान रखबा लेल डाक्टर आ नर्सकेँ कहि गेलैक । एकदम बी.आइ.पी. ट्रीटमेन्ट शुरू । मुदा मायक मोनसँ रातुक दृश्य नहि गेलैक आ एहि अतिरिक्त अनावश्यक सुविधासँ ओ प्रसन्न नहि भऽ सकलैक ।

प्रकाश नहि पुछलकैक, मुदा प्रमोद स्वयं कहऽ लगलैक– ''नहि जानि केहन निन्न जोर मारलक राति । तोरासँ गप्प कऽ सोचलहुँ जे तुरत विदा होयब, मुदा बैसले-बैसल फेर टगि गेलहुँ आ तेहन टगलहुँ जे भोर आठ बजे निन्न खुजल । कोनो असुविधा तँ नहि भेलौक ?''

प्रकाश मूड़ी डोला देलकैक आ ओ आश्वस्त होइत बाजल– ''रच्छ रहल ! भोरे उठिते पहिल ध्यान एम्हरे गेल जे नहि जानि राति कतेक असुविधा भेल होयतैक ? अपनापर क्रोध भेल जे घरमे डाक्टर अछैत एहन फेरीमे पड़ि गेलेँ तोँ । मुदा आब क्रोध कयलासँ लाभे की ?''

प्रमोदक आकृतिपर स्पष्ट पश्चात्तापक रेखा देखि प्रकाशक मोनक कोनो कोनमे कसमसाइत सन्देह एकदम थकुचा भऽ शान्त भऽ गेलैक ।

मुदा आइ फेर रिक्शापर जाइत काल ओ मुर्दा संदेह जीवित भऽ रहल छलैक– ओकर बाद फेर कहियो बच्चा-जच्चाक हाल पूछऽ नहि अयलैक प्रमोद । आब तँ उमा चलो गेलैक ।

इच्छा भेलैक जे रिक्शा घुरा लेअय । मुदा अपन एहि इच्छापर अपने क्रोध भेलैक आ मोनेमोन अपन भर्त्सना कयलक जे अपन एहन अभिन्न मित्रक प्रति एहि प्रकारेँ अविश्वासकेँ जन्म दऽ रहल छल । निश्चय कोनो व्यस्तताक कारण ओ नहि आबि सकल होयतैक ।

रिक्शा कालोनीमे प्रवेश कऽ रहल छलैक । चारू कात जगमग प्रकाश । पैघ-पैघ सजल-सजाओल मकान आ सुन्दर-सज्जित फुलबाड़ी । ओकरा अनायास ध्यान गेलैक जे पवनक डेरा लगसँ जा रहल छल । सामने ओकर बापक नेमप्लेट लागल छलैक । बंगलाक लानमे कुर्सीसभ राखल छलैक, मुदा सभ टा खाली । प्रकाशक इच्छा भेलैक जे उतरिकऽ देखय जे पवन छैक वा नहि । मुदा अपन इच्छा ओकरा अपने अर्थहीन लगलैक । एक्के शहरमे पछिला तीन बरखसँ रहियोकऽ जकर सम्बन्धमे ओकरा कोनो आनेक मुँहसँ कहियो किछु सुनबामे भेटि जाइत छलैक, तकरा मित्र मानि जिज्ञासा करबाक की अर्थ भऽ सकैत छैक ? रिक्शा जखन ओहि बंगलाक सामनेसँ आगू बढ़ि गेलैक तँ ओकरा मोन पड़लैक जे दस वर्ष पूर्व ई मोहल्ला साँझोकेँ डेराओन लगैत छलैक । सड़कपर दूर-दूर पर बिजलीक

रोशनी । दूर-दूर पर दू-चारि टा मकान बनल । किछु निर्माणक क्रममे । पवनक ई बंगला सेहो बनिये रहल छलैक । बाहरवला कोठली तैयार भऽ गेल रहैक । पवन प्रस्ताव कयलकैक– ''चल, ओहीमे चलिकऽ रहब । परीक्षाक तैयारी लेल नीक रहत । प्रकाशोकेँ प्रस्ताव पसिन्न पड़लैक । आइ.एस-सी.क परीक्षा निकट आबि गेल रहैक । दुनू ओहीमे रहऽ लागल । नोकर खेनाइ पुरना डेरासँ लऽ अनैक । एकाध बेर माँजी (पवनक माय) आबिकऽ हाल पूछि जाथिन । मधुर आ नीक-नीक अचार दऽ जाथिन ।

आ, परीक्षाक तैयारी लेल दुनू गोटे चौबीसो घंटा ओहि डेरामे रहय । पवन परीक्षाक तैयारीक तँ खाली बहाना कयने रहैक । असलमे ओकरा अपन अगनित प्रेमप्रसंगक एक टा श्रोता चाहैत छलैक । भोर-साँझ किस्सा तोता-मैना शुरू । ने आदि, ने अन्त । कोर्सक किताब हकन्न कनैत । आगाँमे दोसर किताब खूजल– कखनो कमलेश, कखनो प्रीति बनर्जी, कखनो शीला सिंह आ यदि सभ खतम तँ सोफिया लारेन, सुचित्रा सेन आ मधुबाला । पवनक प्रेमिकाक लिस्टमे देश-विदेशक पैघ-पैघ 'हस्ती' सम्मिलित छलैक । सोफिया लारेनसँ लऽकऽ दरबानक कनियाँ धरि, जे पछिलुका कोठलीमे अपन पतिक संग रहैत छलि आ जकरा देखबा लेल पवन अनेरो दरबानकेँ बाहर पठा देल करैत छलैक ।

मुदा आइ से सभ किछु नहि छैक । एक टा सुन्दर कालोनी जगमगा रहल छैक । नहि जानि कतेक ब्लैकमनीक जगमगाहटि छैक एकरामे । शहरक गण्यमान्य व्यक्तिक आवास, विशिष्टताक सूचक । आ एहि कालोनीमे आब रहैत छैक पवन कुमार मिश्र, सेल्स मैनेजर, अपन विजातीय पत्नीक संग । ओकरासँ भेंट कऽ हालचाल पुछबाक इच्छाकेँ अर्थहीन कहब अधिक उपयुक्त होयतैक वा मूर्खतापूर्ण, से प्रकाश नहि सोचि सकल ।

मुदा कालोनीक क्लब लग आबिकऽ अनायास पवनसँ भेँट भऽ गेलैक । गेटपर ठाढ़ छलैक । देखा-देखी भऽ गेलैक तँ उतरब आवश्यक भऽ गेलैक । उतरिकऽ हाथ मिलौलक दुनू ।

–की हाल-चाल ? सुनैत छी, बड़का अफसर भऽ गेल छेँ ।

पवन हाथ झकझोरैत कहलकैक ।

–''सुनबामे तँ हमरो आयल छल जे दुनू हाथेँ कमा रहल छेँ आ रखबामे जगहक अभाव छौक तेँ क्लबमे जुआ खेलाकऽ एहि चिन्तासँ निश्चिन्त भऽ जाइत छेँ ।'' पवन हँसैत छैक ।

—''कमाइत छें तँ नीक जकाँ रह । ई रिक्शा-फिक्शा छोड़ । एक टा गाड़ी ले । क्लब एटेण्ड कर । आब बाधा कोन छौक ?''

—''बाधा तँ कोनो ने आ बड़का टा बाधा एतबे जे एखन धरि अपन लोकक हाल अनकासँ सुनबाक अभ्यास नहि भेल अछि । एतबा अभ्यास लागि जाय तँ फेर पैघ लोक बनबामे कतेक देरी ?''

पवन बात नहि बूझि ओकर मुँह ताकऽ लगैत छैक आ फेर मूर्ख जकाँ ठठाकऽ हँसैत छैक– ''तों रहि गेलें फिलासफरक फिलासफरे । आबो धरतीपर आ । आ, भीतर आ, दू हाथ फ्लश खेला ले ।''

—''नहि भाइ, हमरा माफ कर । काज अछि, एखन चलैत छी ।''

—प्रकाश अपन रिक्शा आगाँ बढ़बौलक ।

प्रमोदक दुमंजिला बंगलाक बड़का लानमे बहुत रास कुर्सी राखल छलैक आ एकसरि हेमा भौजी ओतऽ बैसलि छलीह । प्रकाशकेँ अबैत देखि ठाढ़ि भऽ गेलीह– ''धन्यभाग ! आइ सूर्य पश्चिममे कोना ?''

हुनकर उलहन प्रकाश हँसिकऽ स्वीकार कयलक आ पुछलकनि– ''प्रमोद नहि अछि ?''

हेमा भौजी कृत्रिम रोषसँ बाजि उठलीह– ''अहाँक यैह पक्षपात तँ नहि सोहाइत अछि हमरा । अबैत देरी आफन तोड़ऽ लगलहुँ– प्रमोद नहि अछि ! हम छी, एतबे यथेष्ट नहि ?''

प्रकाश हुनकर ई आरोप स्वीकारैत बाजल– ''यथेष्ट अछि, पूर्णतया यथेष्ट अछि । मात्र जिज्ञासा लेल पुछल जे गृहपति छथि वा नहि । गृहस्वामिनीक उपेक्षा करब अभीष्ट नहि छल । ई तँ अहाँक मोनक पूर्वाग्रह अछि जे हम सभ बातमे प्रमोदक पक्ष लैत छिऐक । अहाँ अपन पक्ष लेबाक अवसर दियऽ, ओहूमे एहने तत्परता रहत ।''

—''मौका देल नहि जाइत छैक, छीनल जाइत छैक । इच्छा रहलासँ ई तत्परता अहाँ कखनो देखा सकैत छी । मुदा से अहाँ किएक करब ? आइ धरि नहि कयलहुँ अछि, आगुओ नहि करब, हम जनैत छी ।''

—''ई तँ सरासरि अन्याय थिक अहाँक हमरापर ।''

—''नहि, सत्य थिक । अहाँ अपने निर्णय करू । हमर उपस्थिति अहाँ लेल कहियो कोनो महत्त्व नहि रखलक अछि । एक्के कालेज युनिभरसिटीमे छौ बरख संगे रहलहुँ । कतेको बेर आमने-सामने गुजरलहुँ, परिचयक सूक्ष्म रेखाधरि नहि उभरल कहियो अहाँक आकृतिपर । जेना कतेक अपरिचित होइ हम ! यदि परुकाँ सामाजिक मान्यताक संग साधिकार एहि घरमे नहि आयलि रहितहुँ तँ प्रायः कहियो गप्पो करबाक सुयोग नहि भेटैत अहाँसँ । युनिभरसिटीक शिक्षा समाप्त भेलाक बादो विवाहमे तीन बरख अनावश्यक विलम्ब भेल, तकरो अहाँ अपन तर्कसँ उचित प्रमाणित कऽ दैत छी । एकरा हम पक्षपात नहि तँ आर की कहू ?'' हेमा भौजी एक्के साँसमे बाजि गेलीह ।

—''नहि भौजी ! अहाँक कथन एकतरफा अछि । ई सत्य जे नौ वर्ष धरि अहाँसँ परिचित रहियोकऽ परिचयक कोनो तेहन प्रमाण हम नहि दऽ सकलहुँ । मुदा विश्वास करू जे अपरिचित अहाँ कहियो ने छलहुँ । जहिया पहिल बेर छौंड़ीसभक झुण्डमे अहाँकेँ देखा प्रमोद कहलक– 'देखि ले अपन भौजीकेँ' तहियेसँ अहाँ नितान्त अपन, नितान्त परिचित लगैत रहलहुँ अछि । ई सत्य जे हमर परिचय कहियो मुखर नहि भेल, मुदा ओहिमे अनुभूतिक प्रमुखता सभ दिन छलैक । ईहो सत्य जे अहाँकेँ 'मिस हेमा त्रिवेदी' कऽ कहियो नहि चीन्हि सकलहुँ अछि, शुरूहेसँ अहाँ 'मिसेज हेमा चतुर्वेदी' लगैत रहलहुँ अछि । अहाँकेँ देखिते एकटा परिचित आ आत्मीय चेहरा अहाँक आकृतिक संग जुटि जाइत छल आ फेर सभ टा नितान्त अपन, नितान्त आत्मीय लागऽ लगैत छल । आइयो लगैत अछि । प्रमोदक बातकेँ उचित मानैत छिऐक तँ यैह बूझि जे अहूँक उचित ओहीमे सम्मिलित अछि । अहाँ-दुनूकेँ फराक-फराक एकाइ देखबाक हमरा कहियो अभ्यास नहि रहल अछि । यदि ई हमर पक्षपात वा अपराध थिक तँ हम स्वीकार करैत छी ।'' —प्रकाशो पैघ सन भाषण दऽ गेल ।

ओकर सफाइपर हँसैत हेमा भौजी कहलथिन– ''पक्षपात तँ अछिए अहाँक । प्रेम करबाक ई अर्थ नहि जे हमर वैयक्तिकता एकदम नष्ट भऽ जाय । प्रेमिकाक अतिरिक्त हमर कोनो अस्तित्वे नहि रहि जाय । आब पत्नीत्व प्राप्त भेल अछि तकर ई अर्थ तँ नहि जे हमर एकाइ नष्ट भऽ गेल ।''

प्रकाशकेँ एहि हँसीमे गम्भीरता बुझयलैक । टोहियबैत पुछलकनि– ''यैह पत्नीत्व तँ अहाँक चिर-आकांक्षा छल, जे दस बरखक कठिन एकाग्रता आ परीक्षाक बाद प्राप्त भेल अछि । तखन एहिसँ एतेक 'एलरजी' किएक ?''

—"नहि, एलरजी नहि । मात्र एक टा रिक्तता । कालि्ह धरि लगैत छल जे भीतरमे बहुत-किछु अछि, भरल छी, मुदा आइ एकाएक एकदम खाली भऽ गेलि छी । मनचाहल घर-वर भेटि गेल अछि, पहिनेसँ बेसी मानितो छथि, सभ तरहक सुख-सुविधा प्राप्त अछि, तैयो जेना भीतर कोनो रिक्तता भरल जा रहल अछि, जेना कहबा-सुनबा लेल किछु रहिए नहि गेल हो । नोकरी आ घरक काजमे हरदम व्यस्त रहैत छी, मुदा जहाँ फुरसतिक कोनो क्षण भेटैत अछि, रिक्तताक अनुभूतिसँ भरि जाइत छी । नहि जानि किएक ? आइए अहाँक अयबाक पूर्व एक टा विचित्र खालीपन अनुभव भऽ रहल छल । अहाँ आबि गेलहुँ तँ जेना ओहि अनुभूतिसँ निष्कृति भेटल ।"

हेमा भौजी जेना सभटा उगलि देबऽ चाहैत छलीह ।

प्रकाश कोनो आश्वासन देबऽ चाहैत छलनि तावत प्रमोदक मोटर गेटमे पैसलैक । गाड़ी रोकिते उतरिकऽ प्रकाश दिस लपकल— "कखन अयलेँ ?"

—"बड़ी काल भेल ! बैसल-बैसल भौजीक उलहन सुनैत छलहुँ ।"

प्रमोद एक बेर पत्नी दिस ताकिकऽ बाजल— "उलहन तँ ठीके देलथुन अछि । एक मासपर ई बाट धयने छेँ । मुदा खाली उलहने टा देलथुन अछि की किछु चाहो-पानि...

हेमा भौजी चिहुँकि कऽ उठलीह— "जाह, से तँ ध्याने ने रहल । अहाँलोकनि बैसू, हम अबैत छी ।"

हेमा भौजी लपकल भीतर चल गेलीह । प्रमोद प्रकाशक बगलमे एक टा कुर्सीपर बैसि गेल— "आर की हाल छौक ? बाबूजीक मोन केहन छनि ? उमाक बच्चा कोना छैक ?"

ई चर्चा नहि जानि किएक प्रकाशकेँ मात्र औपचारिक लगलैक । तैयो ओ सहज ढंगसँ उत्तर देलकैक— "ओ लोकनि तँ चल जाइत गेलाह गाम ।"

प्रमोद एकदम अफसोच करऽ लगलैक— "की सोचने होयताह हमरा दऽ ? ओहि दिनुका बाद एको दिन हालो पूछऽ नहि जा सकलियनि । ततेक ने फँसल रही एहि बीच जे दम लेबाक फुरसति नहि छल । आ तोहर डेरो तेहन ने कुडोरिमे छौक जे बिनु नियारने जयबो कठिन । तोँ डेरा किएक ने बदलि लैत छैँ ?"

ओकर एहि अप्रत्याशित प्रस्तावपर प्रकाशकेँ आश्चर्य भेलैक । टारबाक मतलबसँ कहलैक— "एतेक जल्दी डेरा कतऽ भेटत ?"

—"डेरा तँ ताकिकऽ राखल छौक । हमरसभवला पुरना डेरा । बाबूजी उपरका 'पोरशन' ककरो देबऽ चाहैत छथिन । नीचाँ ड्राइंगरूम एखन ओहिना रहतैक । तोहूँ उपयोग करिहेँ आ कखनो-कखनो हमहूँ सभ आबि जायब । टेलीफोनो रहतौक । किराया लेल चिन्ता नहि कर, जे तोहर डेराक लगैत छौक, ततबे दऽ दिहुन बाबूजीकेँ । तोरासँ किरायाक कोन गप्प !"

ई सुविधाजनक प्रस्ताव प्रकाशोकेँ पसिन्न पड़लैक । झट सहमति दऽ देलकैक— "बेस, तोँ कहैत छेँ तँ एहि मासक बाद आबि जायब ।"

तावत नोकर संग हेमा भौजी बाहर अयलीह । नोकर टेबुलपर 'ट्रे' राखि देलकैक आ हेमा भौजी अपनेसँ चाह बना एक-एक प्याला प्रकाश आ प्रमोदकेँ दऽ अपन कप हाथमे लऽ बैसि गेलीह । एक टा 'प्लेट'मे किछु नमकीन बिस्कुट छलैक ।

प्रकाश बड़ी राति धरि ओहिना बैसल गप्प करैत रहल । ततेक बेर धरि जे रिक्शा-बस भेटब कठिन भऽ गेलैक । गाड़ी तँ छलैक मुदा ड्राइवर नहि । प्रमोद स्वयं ई कष्ट करैक, से प्रस्ताव हेमा भौजी कयलथिन, मुदा प्रकाश ओकरा अस्वीकृत कऽ देलकनि आ गेटसँ बाहर निकलि पयरे डेरा दिस विदा भऽ गेल । एगारहसँ ऊपर भऽ गेल छलैक आ प्रकाशक आगाँमे कालोनीसँ अपन डेराक सात मीलक दूरी नाचि रहल छलैक ।

मीरा एखन धरि नहि घुरलि छैक । ओहि दिनुका बाद फेर प्रकाश आनऽ नहि गेलैक । सोचलक— क्रोध शान्त भेलापर अपने पाँच-सात दिनमे चल औतैक । मुदा आब मास पूरऽ जा रहल छैक । काजक दिन तँ कहुना कटि जाइत छैक । आफिसक बादो जतऽ-ततऽ बौआ अबैत अछि । राति बितलापर डेरा घुरैत अछि । नोकर खेनाइ झाँपि टेबुलपर राखि देने रहैत छैक । कहियो खाकऽ, कहियो बिनु खयने बिछौनपर पसरि जाइत अछि आ निन्नमे डेराक शान्त एकसरपन, कटाह शून्य ओकरा ततेक नहि तंग करैत छैक । मुदा जहिया चेष्टा कयलोपर निन्न नहि होइत छैक, मिनी-गुड्डूक अभावमे सौंसे डेरा डेराओन लागऽ लगैत छैक आ इच्छा होइत छैक जे कतहु भागि पड़ाय । कतेको बेर सोचलक जे एक बेर फेर जाय आ जोर दऽकऽ मना आनय मीराकेँ । मुदा जोर दऽकऽ अनबाक नहि जानि किएक इच्छा नहि होइत छैक । ओकरा मीरापर क्रोध नहि होइत छैक, खाली दया होइत छैक ।

एक टा निरर्थक जिद्दक हेतु कष्ट उठा रहलि अछि । एक टा जिद्द जे 'ओकर घर' ओकर नहि छैक । ओकरा 'अपन घर' चाहिऐक जाहिमे मिनी-गुड्डू आ ओकर अतिरिक्त दोसर नहि हो । आनक संग तँ ओ मात्र सामाजिकता निमाहैत अछि । ओकर स्वप्नमे एक टा छोटछीन बंगला, ड्राइंग रूम आ मोटर आ छोट सन परिवार छैक आ वास्तविकतामे छैक– विशाल परिवार, आठ भाइ-बहीन, वृद्ध माय-बाप जकरासभसँ पृथक होयबाक आ पृथक सुख भोगबाक प्रकाशकेँ कोनो आकांक्षा नहि छैक । एक बेर मीरा बूझि जाइक जे जेहन सुख एहि वास्तविकतामे छैक, ओकर स्वप्नमे नहि, तँ फेर ओकर सभ टा जिद्द टूटि जयतैक ।

मुदा एखन धरि, ओकर जिद्द टुटबाक प्रतीक्षामे प्रकाश स्वयं टूटल जा रहल अछि । माय-बाबूजी सभकेँ गेना पन्द्रह दिनसँ ऊपर भऽ गेलनि, एक्को टा पत्र धरि नहि आयल छैक । मीरा एक माससँ मिनी-गुड्डूकेँ लऽ नैहरक डेरापर बैसलि छैक । आ प्रकाश एक टा गुमसल, औनाइत एकसरपनीमे दिन काटि रहल अछि ।

आइयो छुट्टीक दिन छैक– रवि ! ई छुट्टीक दिन तँ जेना आर जनमारा भऽ जाइत छैक । पहाड़ सन दिन आ समुद्र सन राति जकर असीम विस्तारमे प्रकाश बौआइत-बौआइत थाकि जाइत अछि । भोरसँ मात्र दू घंटा बितलैक अछि मुदा लगैत छैक जेना कतेक समय बीति गेल हो ! भोरे अखबार उठौलक आ उनटा-पुनटा गेल । वैह सभदिना समाचार । एसेम्बलीमे थुक्कम-फज्झति, पार्लियामेन्टमे जूताबाजी । दस पाँच अनावश्यक खून । राजनीतिक उद्देश्य लेल पचीस-पचास निरपराध आ अबोध जनताक बलिदान । हड़ताल ओ घेराव । टीयर गैस आ फायरिंग । दल-बदल आ मंत्रिमंडलक पतन । अन्तरराष्ट्रिय प्रतियोगितामे पराजय आ पराजयक चोट बिसरबा लेल दस तरहक 'दलील' । राज्यमन्त्रिमण्डल सभक अस्थिरता आ केन्द्रक डमाडोल स्थिति । सत्ता लेल भाव-तोल । मोन औना जाइत छैक । अखबार पढ़बाक इच्छे नहि होइत छैक आइ-काल्हि । तैयो सभ टा पढ़ि जाइत अछि ।

कालेजिया विद्यार्थी रहय तँ अखबार हाथमे अयलापर अनायास सभसँ पहिने छठम पृष्ठ उलटि जाइ– स्पोर्ट्स कालम । युनिभरसिटी छोड़लक तँ सभसँ पहिने दोसर पृष्ठ उलटि जाइक– वान्टेड कालम । कम्पीटिशन सभमे बैसऽ लागल तँ पहिल पृष्ठसँ अन्तिम पृष्ठ धरि घोखऽ लागल । नहि जानि की पूछि बैसत । मुदा आब तँ अखबार हाथमे लऽ उलटा-पुलटाकऽ हेडलाइन्स देखबाक अतिरिक्त आर किछु पढ़बाक इच्छे नहि होइत छैक । कोनो-कोनो अखबारक सम्पादकीय नीक रहैत छैक, मोनसँ पढ़ैत अछि । नहि तँ ओहो नहि ।

मुदा आइ समय कटबा लेल पहिल पृष्ठसँ अन्तिम पृष्ठ धरि अनेक आवृति कऽ गेल आ तैयो समय देखलक तँ मात्र नौ बाजि रहल छलैक । नहि जानि, कोन पाथर बान्हल छलैक समयक गतिमे ।

समय कटबा लेल फेर एक कप चाह पीबाक इच्छा भेलैक । नोकरकेँ हाक देलकैक– ''कृष्णा !'' कृष्णा दौड़ल अयलैक । ''एक कप चाह बना !'' आर्डर भेटिते कृष्णा गायब भऽ गेलैक । प्रकाश कोठलीसँ बहार भऽ बरण्डामे आबि गेल । कुर्सी धयल छलैक, ओहिपर पयर पसारि बैसि गेल आ हाथक अखबारकेँ फेरसँ उनटाबऽ-पुनटाबऽ लागल ।

किछु आहटि पाबि दृष्टि उठौलक तँ सामने सीढ़ीपर सत्येन ठाढ़ छलैक । ओकर पाछूमे मधुकर आ निखिल । अखबार एक कात रखैत ओ स्वागत कयलकैक– ''आउ-आउ !'' आ कृष्णाकेँ हाक देलकैक– ''तीन टा कुर्सी आर बहार कर कृष्णा !'' कृष्णा झट कुर्सी राखि गेलैक आ सभ क्यो बैसैत गेलाह । प्रकाश कृष्णाकेँ पुनः आदेश देलकैक– ''चाह चारि कप ला !'' कृष्णा आदेशपालनक हेतु चल गेलैक, तखन प्रकाश आगन्तुकसभ दिस घूमल– ''की खबरि ? बहुत दिनपर ऊपर होइत गेलहुँ अछि– त्रिमूर्त्ति । कोनो नव आयोजन ?'' सत्येन जेना प्रश्नक प्रतीक्षेमे छलाह, झट सोत्साह बाजऽ लगलाह– ''आयोजन नहि, एक टा अभियान कहू, एक टा आन्दोलन कहू जे बड़ आवश्यक भऽ गेल अछि । अपन मातृभाषाक रक्षाक हेतु, मैथिलीकेँ बचयबाक हेतु ई आन्दोलन बड़ आवश्यक भऽ गेल अछि ।''

प्रकाशक आकृतिपर कोनो तेहन उत्साह नहि देखि मधुकर बीचमे कुदलाह– ''अहाँ किछु मास पहिने दिनमान नहि देखलिऐक ? ओहिमे मैथिलीक प्रति केहन विष-वमन कयल गेल ? की मैथिलीभाषीकेँ जुटिकऽ एकर विरोध नहि करबाक चाहिऐक ? की हमरालोकनि एहिना सूतल रहब ?''

प्रकाशकेँ तैयो उत्तेजित नहि होइत देखि निखिलेश छड़पलाह– ''ओ हालेमे जे नवमन्त्रिमण्डलक राज्यमन्त्री मैथिलीकेँ बोली कहि ओकर अपमान कयलक, तकर विरोध की नहि होयबाक चाही ? कोना ओहि प्रहारकेँ मैथिलीभाषी बिसरि जयताह ? जकरा साहित्य अकादमी मान्यता देने छैक, जकरा संविधानक अष्टम सूचीमे मान्यता देअयबाक हेतु हम मैथिलीभाषी प्रयत्नशील छी, जकर बजनिहार एतेक लोक छथि, ओहि महान भाषाक प्रति टुटपुजिया नेतासभक ई अन्याय चुपचाप कोना सह्य करब हमरालोकनि ?''

प्रकाश तैयो ओहिना बैसल रहल, कोनो प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया नहि भेलैक ।

एहि लेल नहि जे हुनकालोकनिक कथ्य झूठ छलनि वा मैथिलीक प्रति ओकर मोनमे कोनो सम्मान नहि छलैक । ओकरा एक टा दबल आश्चर्य मात्र भेलैक । आश्चर्य एहि लेल जे सत्येन, मधुकर आ निखिलेशक मोनमे मैथिलीक प्रति एहन सम्मान, एतेक श्रद्धा कहियासँ उपजि गेलैक ? ओकरा तीन-चारि बरख पहिलुका एक टा घटना मोन पड़ि गेलैक । तीन-चारि टा उत्साही नवयुवकलोकनिक संग मिलिकऽ ओ एक टा पत्रिका प्रकाशित कयने रहय । ओकरे ग्राहक बनाबऽ जखन सत्येन लग पहुँचल रहय तँ जवाब भेटल रहैक– "देखू प्रकाश जी ! अहाँलोकनिक प्रयास सराहनीय अछि । मुदा मैथिलीक पत्रिका के खरीदत ? के पढ़त ? हम अपने 'माया' 'नीहारिका' लैत छी, फिल्मफेयर आ माधुरियो खरीदैत छी । मिथिला मिहिर सेहो खरीदैत छी मुदा पढ़बा लेल नहि, कनियाँकेँ आ धीयापूतासभकेँ नीक लगैत छैक, तेँ । अहाँ कहब तँ अहाँक पत्रिकाक ग्राहक बनि जायब, फोटो जिल्द-तिल्द नीक रहत तँ धीयापूता खेलायत । मैथिली पढ़त के ? अहाँ तँ केहन बढ़ियाँ हिन्दीमे लिखैत-छपैत छी, ई मैथिलीक फेरामे की पड़ि गेलहुँ ?"

प्रकाश चुपचाप ऊठिकऽ चल आयल । ने ओ उपदेश ग्राह्य भेलैक आ ने ओहन ग्राहके बनायब पसिन्न भेलैक ।

मधुकर ग्राहक बनबाक प्रस्तावपर आर बेसी स्पष्ट उत्तर देने छलैक– "ओना ग्राहक बनबामे कोनो हर्ज नहि । मात्र छौ टका सालमे अहाँ लेब । बूझब जे एक दिन होटलमे चाह-पान भऽ गेल । मुदा पत्रिका पढ़बा लेल मैथिली पत्रिकाक ग्राहक के बनत ? कोनो स्तर रहैत छैक ओहिमे ? एक दिस हिन्दीक 'नीहारिका'क स्तर देखियौक ।

स्तरक उदाहरण देखि प्रकाशकेँ हँसी लागि गेलैक । ओकरा हँसैत देखि मधुकर रुष्ट होइत बजलाह– "एहिमे हँसबाक कोन गप्प छैक ? हम तँ सत्य कथा कहि रहल छी । अहीँक उदाहरण लियऽ ने ! अहाँक हिन्दी कथासभमे जे स्तर रहैत अछि तकर दशांशो मैथिलीमे रहैत अछि ?"

प्रकाश जेना अपन प्रशंसासँ गदगद होइत कहलकनि– "सत्ते ! अहाँ हमर दुनू भाषाक कथा खूब ध्यानसँ पढ़ैत छी । ने तँ एतेक नीक तुलना कोना संभव होइत ?"

मधुकरकेँ प्रकाशक कथनमे किछु व्यंग्य बुझना गेलनि । कनेक तिलमिलाइत बजलाह– "की मतलब ?"

–"मतलब साफ !" एहि बेर प्रकाश एकदम रुच्छ होइत कहलकनि–

"अहाँकेँ ने हमर हिन्दी-कथा पढ़ल अछि, ने मैथिलीक । यदि पढ़ने रहितहुँ एक्को दू टा, तँ बुझा जाइत जे दुनू भाषामे हमर एके कथा छपैत अछि । प्रत्येक हिन्दी-कथा मैथिलीसँ अनूदित रहैत अछि । एहन लोककेँ हमरा अपन पत्रिकाक ग्राहक नहि बनयबाक अछि । नमस्कार !" प्रकाश ऊठिकऽ चल आयल छल ।

निखिलेशसँ आरो नीक उत्तर भेटल छलैक– "खरीदबा लेल तँ खरीद लेब अहाँक पत्रिका, मुदा राखब कतऽ ? घरमे ड्राइंग रूममे लाइफ, मिरर आ इलस्ट्रेटेड वीकलीक संग मिथिला मिहिर राखब तँ केहन लागत ? गाड़ीमे यात्रा-काल सारिका, कहानीक संग सोनामाटि, आखर हाथमे देखत तँ आन यात्री की सोचत हमर स्टैण्डर्डक विषयमे ? एहिसँ बरु ओहिना चन्दा लऽ लियऽ । मुदा पत्रिका नहि पठायब ।"

प्रकाशकेँ ओहन ग्राहक बनायब पसिन्न नहि भेलैक । ऊठिकऽ चल आयल । मुदा किछुए दिन बाद एहि त्रिमूर्तिसँ एक टा सार्वजनिक सभामे जमिकऽ झगड़ा भऽ गेलैक । ई त्रिमूर्ति एक टा राजनीतिक मैथिली-संस्थाक कर्त्ताधर्त्ता छलाह जकर सार्वजनिक सभामे मनोरंजन-कार्यक्रम सेहो छलैक तेँ शहर आ दूर-दूरसँ प्राय: सभ मैथिल आयल छलाह । ई अवसर नीक देखि प्रकाश आ ओकर संगीसभ ओहि सभामे अपन सद्य:प्रकाशित पत्रिकाकेँ बेचऽ लागल । लोक दिससँ उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया भेटि रहल छलैक । मुदा ई त्रिमूर्ति बीचमे छड़पि गेलाह– "ई की कऽ रहल छी अहाँलोकनि ? एहन सभामे ई मैथिली पत्रिका-तत्रिका की बेचि रहल छी ? एहन-एहन पैघ नेता आयल छथि । तकरो तँ किछु विचार करू । लाजक विषय थिक ।"

प्रकाशकेँ नहि रहि भेलैक– "लाजक विषय कोन थिक से तँ निर्णयक वस्तु थिक । मैथिली पत्रिका बेचब वा मैथिलीक मूर्धन्य साहित्यकारक जयन्तीक अवसरपर बजाओल गेल सभामे नौटंकीक नाच ? हमरालोकनि मैथिली पत्रिका बेचि रहल छी कि कोकशास्त्र जे लाज होयत ?"

प्रकाशक उत्तरपर तीनू छटपटा गेलाह मुदा कोनो उत्तर नहि फुरबाक कारणेँ पयर पटकैत दोसर दिस ससरि गेलाह ।

मुदा तकर वर्षो बीति गेलैक । प्रकाशक मोनमे ने आब ओ उत्साह छैक आ ने ओतेक समय । आब अपन पढ़ाइक रुपैयासँ पैसा बचाकऽ अपन कथा-संग्रह नहि छपबैत अछि आ ने सार्वजनिक सभामे घूमिकऽ मैथिलीक पत्रिकाकेँ बेचैत अछि । अपन लेखकक प्रति सेहो एक टा उदासीन भाव क्रमश: जागि रहल छैक । किछु साल पूर्व ओकर एक टा कथाकार-गुरु मैथिली साहित्यमे 'स्टेगनेशन'क

स्थितिक चर्चा कयने रहथिन तँ ओ जोरसँ छड़पल रहय आ पैघ सन लेख लिखने रहय विरोधमे । मुदा आइ ओकरा स्वयं अनुभव होइत छैक जेना 'स्टेगनेशन'क स्थिति आबि गेल होइक, एकदम गत्यवरोध । फेर लगैत छैक जेना ई ओकर अपन सामर्थ्यहीनताक द्योतक हो, वास्तविक गत्यवरोध नहि । स्वयं ओकर भीतरक 'लेखक' मरि गेल हो आ ओ अनकापर ओ सम्पूर्ण साहित्यपर गत्यवरोधक आरोप कऽ रहल हो । एहि प्रसंगमे ओकरा भीतरक मुइल लेखककेँ जीवित रखबाक प्रचलित नुस्खा मोन पड़ैत छैक । मैथिली लेखकक बीच एक टा फैशन (प्रायः आनो भाषामे) छैक जे अपन छोड़ि अनकर ककरो प्रकाशित रचना नहि पढ़ी । एक बेर ओकरा मैथिलीक एक टा तथाकथित पैघ लेखकसँ भेंट भेल रहैक तँ ओ कहने रहथिन– ''आइ-काल्हि 'मिथिला-मिहिर' पढ़ैत छी कि नहि ? कतेक बिलोस्टैंण्डर्ड भेल जाइत अछि दिन-दिन ! पढ़बाक इच्छा नहि होइत अछि ।'' प्रकाश सेहो हँ-मे-हँ मिला देलकनि हुनका प्रसन्न करबाक लेल ।

किछु मासक बाद फेर ओही साहित्यकारसँ भेंट भेलैक । देखिते कहऽ लगलथिन– ''आइ-काल्हि 'मिथिला-मिहिर' पढ़ैत छी कि नहि ? अपूर्व स्तर भेल जाइत छैक ओकर ।'' ओकरा एहि स्तरक प्रगतिक रहस्य तुरत बुझबामे आबि गेलैक । तीन माससँ ओहि लेखकक एक टा लेख-माला धारावाही प्रकाशित भऽ रहल छलनि ।

एहने स्तर-बोधक एक टा खिस्सा आकाशवाणीमे काज कयनिहार ओकर दोस्त कहने रहैक । एक बेर एक टा दिग्गज साहित्यकार, केन्द्रनिर्देशक लग पहुँचलाह आ शिकाइत कयलथिन जे कार्यक्रमक स्तर दिन-दिन निम्न भेल जाइत अछि । केन्द्रनिर्देशक विभागीय अधिकारीकेँ निर्देश कयलथिन आ विभाग-अधिकारी ओकर ओहि मित्रकेँ बजौलथिन जे कार्यक्रम चयन आ प्रस्तुत करैत छल । सभ टा आरोप सूनि ओकर मित्र जवाब देलकनि जे श्रीमन्, निश्चिन्त रहल जाओ, एहि तिमाहीमे कार्यक्रमक स्तर निश्चित रूपसँ प्रगति करत । ओही तिमाहीमे ओहि दिग्गज साहित्यकार, हुनकर भाइ आ भातिजक नाम एक-एक टा अनुबंध पठा देलकनि । तिमाहीक अन्तमे केन्द्रनिर्देशककेँ पत्र अयलनि– ''कार्यक्रमक स्तरमे अभूतपूर्व प्रगति भेल अछि ।''

आइ एहि त्रिमूर्त्तिकेँ मैथिलीक रक्षाक हेतु आन्दोलनक एतेक उत्साहपूर्ण भाषण करैत देखि, ओकरा पछिला एतेक रास गप्प अनायासे मोन पड़ि गेलैक । मुदा ओकरा एना मौन आ उत्साहहीन देखि त्रिमूर्त्तिक उत्साहपर जेना पानि पड़ि गेलनि ।

तावत कृष्णा ट्रेमे चारि कप चाह लऽ अनलकैक आ भीतरसँ टेबुल बाहर कऽ चाह राखि देलकैक । चाहक चुस्कीपर जेना सेरायल उत्साह फेर फनफना उठलनि आ सत्येन बजलाह– ''हँ, तँ आब असल बात भऽ जाय । हमरालोकनि निर्णय कयलहुँ अछि जे एहि धाँधलीक विरोधमे, नेता, मंत्री आ हिन्दीवला सभक एहि कुचक्रक विरोधमे...

प्रकाश बीचेमे टोकलकनि– ''एहिमे हिन्दीवला कहाँसँ आबि गेल ? हिन्दी राष्ट्रभाषा थिक आ मैथिली मातृभाषा । मातृभाषा ओ राष्ट्रभाषामे कोन विरोध ?''

''विरोध छैक'' –मधुकर बीचेमे गरजलाह– ''अहाँ नहि बुझैत छिऐ ? विरोध नहि रहितैक तँ दिनमानवला एना जहर उगिलैत ?''

प्रकाश फेर विरोध कयलकनि– ''ओ तँ व्यक्तिविशेषक विचार छलैक वा यदि रिपोर्टरक संग सम्पादकोकेँ सानि ली, तँ बेसीसँ बेसी पत्रिकाविशेषक विचार । एहि कारणेँ समस्त हिन्दीपर आरोप करब अनुचित ।''

आब निखिलेश चुप नहि रहि सकलाह । क्रोध पीबैत कहुना बजलाह– ''अहाँ तँ मैथिलीद्रोही जकाँ गप्प करैत छी । एना तँ अहाँसँ गप्पे करब निरर्थक ।''

प्रकाशकेँ इच्छा भेलैक जे ओ पत्रिका-सम्बन्धी घटना मोन पाड़ि देअय आ पूछनि जे मैथिलीद्रोही के अछि ? ईहो पूछनि जे अहाँक जे मैथिली संस्था अछि तकर उत्सवमे कैक टा लेखककेँ निमंत्रण जाइत अछि आ कैक टा नेता-मंत्री आ पछुलगुआकेँ ? मुदा एहि इच्छाकेँ दबाकऽ ओ बाजल– 'अच्छा रहऽ दियऽ एहि गप्पकेँ । असल योजना की अछि, से कहू ।''

एहि बेर सत्येन उत्साहित होइत बजलाह– ''असल योजना ई अछि जे एहि प्रपंचक विरोधमे एक टा मोर्चा बनाबी । असलमे ओ मोर्चा बनियो चुकल– हम सभापति छी, मधुकर मंत्री आ निखिलेश कोषाध्यक्ष । कार्यक्रम ई अछि जे हमरालोकनि सम्पूर्ण मैथिली क्षेत्रक भ्रमण करी, हुनकालोकनिकेँ जगाबी । मुदा खाली भाषण के सुनत ? तेँ एक टा मण्डली संग चाही जे ठाम-ठाम सांस्कृतिक कार्यक्रम करत । कवि राकेशकेँ तँ अहाँ चिन्हिते छियनि । केहन सुन्दर स्वर छनि । हुनकर संगियो खूब गबैत छथिन । ओहो दुनू हमरालोकनिक संग जयताह । एतेक पैघ कार्यक्रमक हेतु फण्ड चाही, तेँ हमरालोकनि घूमि-घूमिकऽ पहिने फण्ड जमा कऽ रहल छी ।''

मोनक भाव दबाकऽ प्रकाश कहलकनि– ''उत्तम योजना । मैथिलीक रक्षाक एहिसँ नीक योजना की भऽ सकैत अछि ? पत्रिका निकालला आ ग्राहक

बनौलासँ की होयत ? कविकेँ मंचपर नचाउ । भाषाक स्वत: विकास होयत । जनता नाच देखऽ दौड़त आ मैथिलीक रक्षा लेल कटिबद्ध होयत । वाह-वाह ! खूब योजना बनौलहुँ अछि ! हमर अवश्य सहयोग रहत । हमर योग्य सेवा सूचित कयल जाय ।''

कोषाध्यक्ष निखिलेश झट पाकिटसँ रसीद-बुक निकालि लेलनि आ एक टा दस टाकाक रसीद काटि प्रकाशक हाथमे दऽ देलथिन । प्रकाश दस टका दऽ पिण्ड छोड़ौलक । तीनू धन्यवाद दैत विदा भेलाह ।

प्रकाश फेर एकसर रहि गेल । रौद नीक जकाँ पसरि गेल छलैक आ बरण्डामे बैसब आब कष्टकर लागि रहल छलैक । ओ ऊठिकऽ भीतर आबि गेल आ बिछौनपर पड़ि रहल । कोठलीमे अबिते एक टा सुन्न ओकरा फेर घेरि लेलकैक । कटाह स्तब्धता आ औना देबऽवला एकसरपनी । आइए जाकऽ मीराकेँ लऽ आनी-ओ सोचलक । भरिसक मीरा नहि मानय– ओकरा शंका भेलैक । गामोसँ चिट्ठी नहि आयल छैक । चिट्ठीक ध्यान अबिते अकस्मात एक टा कार्यक्रम मोनमे अयलैक । किएक ने ओ एक सप्ताहक छुट्टी लऽकऽ एक सप्ताह गामसँ भऽ आबय ! से कार्यक्रम ओकरा पसिन्न पड़लैक आ ओ निर्णय कऽ लेलक ।

'वन क्लब'

'वन डाइस'

'वन स्पेड्स'

'टू हार्ट्स'

''टू स्पेड्स''

''नो बिड''

''फोर स्पेड्स''

प्रकाशक 'बिड' रहि गेलैक । ओकर पार्टनर छलथिन जित्तू काका । ओ 'डमी' बनलाह । अपन पत्ती पसारि झट प्रकाशक हाथसँ ताश छीनि लेलथिन-''ला तँ बिरबा ! देखियौक, की छौ ।'' आ ताश देखि प्रसन्न होइत कहलथिन-''बनि गेलौक गेम पार्टनर !''

रघू बाबूक मुँह लटकि गेलनि । ओ लगातार हारि रहल छलाह । ताश चौकीपर पटकैत कहलथिन– ''चाह-ताहक इन्तजाम कर प्रकाश आब । मोन नहि लागि रहल अछि ओना ।''

प्रकाश अपन छोट भाइकेँ हाक दऽ चाहक फरमाइस कऽ देलकैक ।

दोसर चौकीपर बीरेन बाबू बैसल छलाह । प्रसन्न आ निश्चिन्त । प्रकाश गाम आयल छलनि आ दरबज्जापर भीड़ लागल छलनि । आइ तीन दिनसँ नित्य लागि रहल छलनि । खेलाड़ी चारि– टिप्पा आ दर्शक चालीस । भोरसँ राति धरि चौखड़ी जुटैत छलैक । चाहपर चाह आ बाजीपर बाजी ।

बीरेन बाबूकेँ अपन रोग बिसरि गेल छलनि । घरक सभ टा चिन्ता आ जंजाल बिसरि गेल छलनि । बेटा घर आयल छलनि आ सौंसे गाम दरबज्जापर उमड़ल रहैत छलनि ।

आन कथू दिस ध्यान देबाक फुरसतिए नहि छलनि जेना !

मुदा अनायास किछु मोन पड़लनि आ मोन उदास भऽ गेलनि । मोन उदास भऽ गेलनि आ सभ टा असह्य लागऽ लगलनि । चुपचाप ऊठिकऽ आङन चल अयलाह । आङनमे हड़बड़ी मचल छलनि । छौंड़ासभ दौड़ि-दौड़िकऽ चाह दरबज्जापर पहुँचा रहल छल– बड़का हण्डा चढ़ल छलैक । चालीससँ कम लोक नहि छलैक आ ई भोरसँ चारिम खेप छलैक ।

आङनसँ ओसारापर आबिकऽ चौकीपर पड़ि रहलाह । आइसँ चारि बरख पहिलुका एक टा घटना मोन पड़लनि । विद्यालयमे बीस बरखसँ प्रधानाध्यापक छलाह मुदा ओहि दिन ओहि पदसँ सस्पेण्ड भऽ गेल छलाह । मेनेजिंग कमिटीक पाँच टा सदस्य मिलि हुनका पदसँ हँटयबाक प्रस्ताव पारित कऽ देने छलथिन । हुनकर समर्थक तीनू सदस्य अनुपस्थित छलथिन । आ प्रस्ताव पारित करऽवला पाँच मतमे चारि टा मत अपन पितियौतक छलनि आ एक टा सचिवक । ओ स्वयं मीटिंगमे उपस्थित नहि छलाह, मुदा निर्णयक सूचना हुनका भेटि गेल रहनि । निर्णय अप्रत्याशित नहि छलनि, मुदा तैयो सूनिकऽ स्तब्ध रहि गेल छलाह । जीविकाक प्रश्न आ पैघ परिवार ! प्रकाश ओही साल एम.ए. पास कयने रहनि, बाँकी चारू नेना नाबालिग । दू टा कन्या छोट-छोट ।

मुदा ओहि दिन क्यो दू टा सान्त्वनाक बोल कहऽ नहि आयल छलनि । लगलनि जेना अपन गाममे नहि, कोनो अपरिचित शहरमे होथि जतऽ ककरो हुनकर

सुख-दु:खसँ कोनो ताल्लुक नहि होइनि । मुदा सत्य ई छलैक जे ओ अपन गाममे छलाह जतऽ हुनकर दु:खक साझीदार तँ क्यो नहि छलनि, मुदा सुखक दुश्मन अनेक । अपन लोकक बीच छलाह, एहन होयब स्वाभाविके छलनि, खासकऽ एहन स्थितिमे जे सम्पूर्ण गाम एके परिवारक छलनि आ सम्पूर्ण गाम अपन सम्बन्धी छलनि, मात्र समाज वा पड़ोसी नहि । दुश्मन किएक तँ एक टा साधारण मास्टर भऽ मैनेजिंग कमिटीक सदस्यक आगाँ तरबा नहि रगड़ैत छलाह । दुश्मन किएक तँ गाममे कोनो पार्टी वा दलमे नहि छलाह । तेँ भऽ गेलाह एकदम एकढ़बा । अपन चारि टा भाइ मिलि नोकरीसँ हँटयबाक फैसला कऽ अपनत्वक परिचय दऽ देलकनि आ सौंसे गाम तेना तटस्थ छलनि जेना किछु भेले नहि होइनि ।

मुदा ओ कोना तटस्थ रहि सकैत छलाह ? ई मात्र नोकरीक नहि, सम्मान आ धीया-पूताक जीवनक प्रश्न छलनि । अड़ि गेलाह । सौंसे गाम एक दिस आ एक दिस ओ एकसरे ।

मुदा इज्जति बाँचि गेलनि । कोर्टसँ निषेधाज्ञा भऽ गेलैक आ ओ अपन पदसँ एको दिन नहि हँटलाह । सचिव एवं अन्य सदस्यकेँ हस्तक्षेप करबासँ निषेध कऽ देल गेलनि ।

जहिया कोर्टक निर्णय भेलैक ताहि दिन ओ दरभंगे छलाह । सचिव महोदय गाममे हुनकर दरबज्जाक सामने खूब फनकलाह । बदला लेबाक धमकी आ भरि इच्छा अवाच्य कथा बजलाह । छोट-छोट धीया-पूता सूनिकऽ रहि गेलनि आ दरबज्जाक भीतर सुनैत स्त्री कानि-कानि कऽ अपने अधमरू भऽ गेलथिन ।

मुदा गौआँ लेखे धन-सन । ओहू दिन तहिना निर्विकार रहल जेना ओहि दिन रहल छल जहिया सस्पेन्शनक आज्ञा भेटल छलनि ।

आ ताही गामक लोक आइ दरबज्जापर उमड़ल छलनि आ फरमाइशपर फरमाइश कऽ रहल छलनि जेना सभक अपने घर होइनि । हुनका ओ दिन-राति सभ मोन पड़लनि जहिया एकसर कोर्ट-कचहरीसँ थाकल-ठेहिआयल घुरैत छलाह, पसरल अन्हारमे एकसर अपन दरबज्जापर पड़ल रहैत छलाह आ लगैत छलनि जेना गाम नहि, कोनो सुन्न भयावह जंगलमे सूतल होथि आ चारू कात भयानक जीव-जन्तु मुँह फाड़ने गिड़बा लेल बौआ रहल होइनि ।

हुनका एना चौकीपर पड़ल देखि स्त्री लग अयलथिन– ''की भेल ? मोन ठीक अछि ने ?''

पत्नीक आशंकित स्वर सुनि ओ ऊठि बैसलाह– ''ठीक अछि मोन । ओहिना पड़ल छलहुँ ।''

–''ठीक अछि मोन तँ बाहर जाकऽ बैसू । एतेक लोक आयल अछि दरबज्जापर आ अहाँ एकसर अङनामे पड़ल छी ।''

–''लोक आयल अछि, से तँ देखि आयल छी । मुदा ओतऽ जाकऽ की होयत ? काल्हि ने तँ परसूसँ फेर क्यो एम्हर हुलकियो नहि देत आ एहिना एकसर पड़ल रहऽ पड़त । तखन दू-चारि दिन लेल अभ्यास बिगाड़लासँ लाभ ?''

पतिक उदास स्वर सूनि रमा चौँकलीह । सभ टा बुझबामे आबि गेलनि । लग बैसैत कहलथिन– ''की करबै ले' ? हमसभ तँ आइयो ककरो बजाबऽ नहिएँ गेलिऐक अछि । अपन इच्छासँ आयल अछि, अपन इच्छासँ नहि आओत । हमरालोकनिकेँ तकर चिन्ता कोन ?''

बीरेन बाबू एक बेर पत्नी दिस ताकिकऽ चुप रहि गेलाह । रमाकेँ देखैत सोचऽ लगलाह जे एतेक पैघ संघर्षमे कहिया ने टूटि गेल रहितथि यदि रमाक संग नहि रहितनि । कतेक साहसपूर्वक सभ टा विपत्तिमे संग देने छलथिन ! आइ यदि हुनकर अस्तित्व बाँचल छनि तँ रमाक बलेँ । बीरेन बाबू कृतज्ञतापूर्वक रमाकेँ देखैत रहलाह ।

स्वामीक आँखिक भीजल कृतज्ञभाव रमा चीन्हैत छथि आ हाथ पकड़ि उठबैत कहैत छथि– ''एना कमजोर नहि होउ । जाउ, बाहर जा बैसू ।''

बीरेन बाबू अनिच्छापूर्वक उठैत छथि आ बाहर डेग उठबैत छथि, मुदा किछु धम्मसँ खसबाक स्वर सुनिते घुमैत छथि । रमा चौकीपर पेटकान देने पड़लि छटपटा रहलि छथि । बीरेन बाबू दौड़िकऽ लग अबैत छथि आ रमाकेँ हाथसँ सम्हारैत छथि । दर्दसँ सौंसे आकृति स्याह भऽ गेल छनि आ पेट पकड़ने छटपटा रहलि छथि रमा । रमाकेँ ओहिना छोड़ि भीतर कोठलीमे दौड़ैत छथि आ एक टा गोली आनि पानिक संग खुआ दैत छथिन । कनियेँ कालमे रमाक आकृति सहज भऽ जाइत छनि आ ओ सम्हरिकऽ बैसऽ लगैत छथि ।

बीरेन बाबू निषेध करैत छथिन– ''पड़ले रहू, एखन उठू नहि । डाक्टरकेँ खबरि दैत छिऐक । ई सभदिना दर्द ! एक दिन जान चल जायत एहिना । प्रकाशकेँ बजबैत छिऐक ।

रमा कहुना उठैत बजलीह– ''छोड़ि दियौक, खेलाय दियौक । छुट्टी नहि

भेटैत छैक काजसँ, चारि दिन गाम आयल अछि तँ ओकरो अहाँ ओहिना कष्टकर बना देबैक । खेलाय दियौक, हमरा किछु नहि भेल अछि ।''

रमा ऊठिकऽ भनसाघर दिस चल जाइत छथि । बीरेन बाबूकेँ रोकि नहि होइत छनि । फेर चुपचाप ओही चौकीपर बैसि जाइत छथि आ बैसल-बैसल आङनमे प्रवेश करैत साँझकेँ देखैत छथि– गर्मीक उदास आ गुमसल साँझ हुनकर जीवनमे पैसि गेल छनि जकर बाद खाली अन्हारे-अन्हार छैक आ भोर बहुत दूर । ई भोर कतेक लग बुझाइत छलनि हुनका किछु दिन पूर्व धरि ! लगैत छलनि जेना बस...आब बस्स । आब कोनो कष्ट नहि, कोनो चिन्ता नहि । कान्हपरसँ जूआ उतारबाक बेर भऽ गेल । मुदा आइ लगैत छनि जेना कान्हपर राखल जूआ आर भरिगर भऽ गेल होइनि आ कान्हमे धसले जाइत होइनि ।

खाली चौकीकेँ भिजाकऽ ओहिपर खाली देह चित्त पड़ल छल आङनमे। ऊपर उघरल आकाश छलैक– तरेगनसँ भरल । मुदा एक टा पातो नहि हिलि रहल छलैक । घामे-पसेने तर भेल छल प्रकाश । आइ भोरेसँ ओहिना छलैक– पात-पात शान्त, एक टा सिहकी पर्यन्त नहि । एही द्वारे आइ ताशक चौखड़ी साँझे उखड़ि गेलैक। अपस्याँत लोक बसातक लेल एम्हर-ओम्हर पड़ायल । प्रकाशो नदीक कछेर धरिसँ भऽ आयल । हवा ओहिना स्तब्ध छलैक, मुदा कछेरमे बैसलापर नीक लागि रहल छलैक।

आ कछेरमे बैसल-बैसल बहुत-किछु मोन पड़ि गेलैक । मोन पड़ि गेलैक स्कूलसँ भागिकऽ बुढ़बा बड़क गाछक दोकन्हापर सूति रहब वा बैसिकऽ मुरही फाँकब । मोन पड़लैक एही बुढ़बा बड़क गाछपर संगीसभक संग डोल-पत्ती खेलायब । आ मोन पड़लैक एहि कछेरमे बैसिकऽ बालुक घर बनायब– कोठा, महल, अटारी– मुन्नीक संग, गीताक संग, कलाक संग ! कनियाँ-वर बनब, सासु-ससुर बनब ओ आरो कतेक अज्ञात सम्बन्धक अभिनय कयनिहार सभ वास्तविक जीवनक भूमिकामे नहि जानि, कतऽ-कतऽ छिड़िया गेल छैक । कतेको वर्षसँ ककरो सम्बन्धमे किछु ज्ञात नहि छैक । मुदा आइ नदीक कछेरमे बैसल कतेको परिचित स्वर गुंगिआय लगैत छैक ओकर कानमे । बड़ी काल धरि ओहि गुंगिआइत आत्मीय सम्बोधन सभक बीच बैसल रहैत अछि ।

फेर ऊठिकऽ ऊपर अबैत अछि । बड़क गाछ लग आबिकऽ इच्छा होइत छैक जे एक बेर गाछपर जा दोकन्हापर सूति रहय । मुदा अपन ई इच्छा दबा लैत अछि । लोक देखतैक तँ की कहतैक ? मन्दिरक सामनेवला मैदान एकदम जंगलाह भऽ गेल छैक– चकौरी आ चोरकाँटीसँ भरल । मैदानक एहन स्थिति देखि ओकरा दु:ख होइत छैक । ई मैदान कतेक सुन्दर घाससँ भरल रहैत छलैक आ एहिमे फुटबाल, क्रिकेट आ कबड्डीक केहन खेल होइत छलैक ! प्रकाशकेँ स्पष्ट देखबामे अबैत छैक जे हाफपैंट पहिरने एक टा छौंड़ा एक्के साँसमे पढ़ि रहल अछि कित... कित... कित...कित... । ओकरा आश्चर्य होइत छैक जे मैदानक एहन हालत किएक भऽ गेलैक ? छौंड़ासभ आब कतऽ खेलाइत होयत ? ओकरासभकेँ खेलमे आब रुचिए नहि रहलै की ?

मुदा तखने ध्यान सामने स्कूल दिस गेलैक जकर माटिक भीतसँ ओठङिकऽ ओ आँखि मूनिकऽ पहाड़ा पढ़ैत छल । मुदा माँटिक ओ भीत आइ निपत्ता छलैक । ने एको टा कोठली, ने एको टा बेंच । स्कूल कोनो आन ठाम चल गेलैक की ? कतऽ गेल होयतैक– एही गुनधुनमे पड़ल ओ मन्दिर दिस विदा होइत अछि । नहि जानि कतेक दिन भऽ गेल होयतैक मन्दिर गेला । जहियासँ गाम छोड़लक, प्राय: कहियो नहि गेल होयत । ओ नास्तिक नहि अछि, मुदा मन्दिर जयबाक प्रयोजन ओकरा कहियो अनुभव नहि होइत रहलैक अछि । मुदा जा धरि गामक स्कूलमे पढ़ैत छल, नित्य गामक मन्दिर जाइते छल । आइ फेर वैह अभ्यास ओकरा मन्दिर दिस खीचि लैत छैक । ओकरा आश्चर्य होइत छैक जे आइ तीन दिनसँ गाममे रहियोकऽ एम्हर किएक ने आयल छल एको बेर ?

मन्दिरक बुढ़बा पुजेगरी ओकरा देखिते प्रणाम करैत छैक । ओ भगवानकेँ प्रणाम कऽ चरणोदक लैत अछि । मुदा मन्दिरक हालति देखि ओकरा दु:ख होइत छैक । राधा-कृष्णक मन्दिरमे चारू कात झड़िकऽ खसल प्लास्टरक ढेर । सौँसे मन्दिर ढहि जयबाक क्रममे । ओकरा मोन पड़लैक जे ई मन्दिर कोना चमचम करैत रहैत छलैक आ एहि मन्दिरक भंडारसँ नित्य दस-पाँचकेँ मुफ्त भोजन भेटैत छलैक । आइ वृद्ध कृशकाय पुजेगरीकेँ देखि मन्दिर आ हुनकर हालतिमे साम्य बुझाइत छैक । ओ प्रश्न करैत छनि– ''मन्दिरक हालति एना किएक पुजेगरी ?''

''की कहू बाउ ! अहाँलोकनिक नोन खाकऽ देह पोसायल अछि । किछु बाजू तँ कोना बाजू ? ई गाम आब ओ पुरना गाम कहाँ रहल जाहिमे मासमे एक बेर मन्दिरमे पैघ जलसा आ नाच होइत छलैक । आब तँ मन्दिरोमे पटीदारी भऽ गेल। ई भगवान हमर आ ई तोहर । राधा-कृष्ण हमर आ महादेव तोहर । ई पुजेगरी

किएक ने प्रयास करैत छी ? गाममे चन्दा किएक ने करैत छी ?" प्रकाश फेर

हमर आ ई तोहर । मन्दिरक उद्धार करबा दिस ध्यान आब ककरो छैक ? आब तँ ध्यान छैक जे मन्दिरक पुजेगरी फुलबाड़ीक सभ टा आम-लीची आ बेल अपने खा जाइत अछि । कहुना ओकरो फाँट लागि जाइत । आब तँ यैह मोन होइत अछि जे सभ टा छोड़ि-छाड़िकऽ कोम्हरो निकलि जाइ । मुदा ध्यान अबैत अछि जे राधा-कृष्णकेँ भोग देनिहार आ आरतियो कयनिहार क्यो ने रहतनि । हमर देवता भूखल अन्हारमे पड़ल रहताह– सैह मोन बान्हिकऽ रखने अछि एतऽ ।"

पुजेगरी बजैत-बजैत विह्वल भऽ जाइत छथि । प्रकाश कोनो बोल-भरोस वा आश्वासन नहि दैत छनि । एहि गाममे कोनो टूटल चीजक मरम्मति संभव नहि छैक । कारण सम्बन्ध टूटि गेल छैक । सभसँ पहिने ओकर मरम्मति चाहिऐक जे प्रायः संभव नहि छैक आब । ककरो ध्यानो नहि छैक ओम्हर ।

मन्दिरसँ जहिना बाहर होबऽ लगैत अछि, स्कूलक पुरना गुरुजीकेँ अबैत देखि ठाढ़ भऽ जाइत अछि । ओकरो भट्ठा धरौने छथिन, पाँच वर्ष पढ़ौने छथिन। पयर छूबि प्रणाम करैत छनि ।

–"के ? प्रकाश ! जीबऽ-जीबऽ । नीके रहऽ । कहिया अयलह ?"

–"तीन-चारि दिन भेल गुरुजी !"

–"सभ टा समाचार बढ़ियाँ ने ?"

–"सभ टा अहाँ लोकनिक आशीर्वाद ।"

–"रहबऽ किछु दिन ?"

–"नहि गुरुजी ! दू-तीन दिनमे चल जायब । छुट्टी नहि अछि ।"

–"हँ-हँ, काजकेँ प्राथमिकता देबाक चाही । एखन तँ छह ने दू दिन। फेर भेँट होयत । बड़ प्रसन्नता होइत अछि तोरालोकनिकेँ देखलासँ ।"

गुरुजी भगवानकेँ प्रणाम करऽ भीतर चल गेलथिन । मुदा प्रकाश तैयो ओहिना ठाढ़ छल जेना कोनो सोचमे पड़ि गेल हो । गुरुजी प्रणाम कऽ घुरलाह तँ प्रकाशकेँ ठाढ़ देखि टोकलथिन– "की बात छैक ? एना कथीक सोचमे पड़ल छऽ ?"

–"सोचमे नहि गुरुजी ! हमरासभक स्कूल की भेल ? ओतऽ तँ किछु नहि देखैत छिऐक ?

–"देखबह ओ स्कूल ? आबह ।"

प्रकाश गुरुजीक पाछाँ लागि जाइत अछि । गुरुजी मन्दिरसँ बहार भऽ स्कूलक डीहक पछबारी कात एक टा बड़का बेलक गाछ तर आबि कहैत छथिन– "दैखि लैह, यैह छह गामक नवका स्कूल । पुरना मकान ढहि गेलैक । आब एतहि पढ़ाइ होइत छैक ।"

प्रकाशकेँ बड़ दुःख आ ग्लानि होइत छैक । जाहि गाममे एतेक पढ़ल-लिखल लोक, जाहि स्कूलसँ पढ़ि-पढ़िकऽ विद्यार्थीसभ आइ सभ क्षेत्रमे धाख जमा रहल अछि, तकर नेनाक पढ़ाइ बेल तरमे ?

–"पुरना ढहि गेलैक तँ की भेलैक ?" प्रकाश गुरुजीसँ प्रश्न करैत छनि– "नव बनि सकैत अछि । गाममे चन्दा करू, सरकारसँ अनुदान लियऽ । एहन पुरान स्कूलक ई हालति ?"

–"से तँ अहाँ ठीक कहैत छी बाबू ! जहिया अहाँ पढ़ैत रही, हम एकसर मास्टर रही आ आइ तीन-तीन टा मास्टर संग छथि । विद्यार्थीक संख्या सेहो बेसी अछि, आनो गामक विद्यार्थी अबैत अछि । ओहि दिनमे तीसरा धरि रहय तँ तीन टा कोठली रहय आ आइ पचमा धरि पढ़बैत छिऐक तँ विद्यार्थी-संग बेल तर बैसैत छी । बरिसातमे पड़ाकऽ मन्दिरमे चल जाइत छी । गर्मीमे गाछक छाँहसँ नहि काज चलैत अछि तँ रौद धिपबासँ पहिने छुट्टी दऽ दैत छिऐक । मुदा, एना कतेक दिन ?"

–"मुदा, हमर गप्पक जवाब नहि देलहुँ गुरुजी ! सरकारी अनुदान लेल किएक ने प्रयास करैत छी ? गाममे चन्दा किएक ने करैत छी ?" प्रकाश फेर टोकैत छनि ।

–"आब की जवाब दियऽ हम ? एतबे बुझू जे सभ कऽ चुकल छी, एको टा रस्ता नहि बाँचल अछि । सभ तरहेँ निरुपाय भऽ एना बेल तर बैसल रहैत छी धीया-पूताक संग । अनुदान भेटल छलैक, कच्चा नहि, पक्का मकानक लेल । मुदा से रहि गेलैक जग्गू बाबू लग । दस बरखसँ हुनके लग छैक । न्योँ सेहो नहि पड़लैक दस बरखमे । गाममे ककरो साहस नहि छैक जे पंचैती करत आ हुनकासँ टाका ओसूलत । कोनो उपाय नहि देखि चन्दा कयल जे भीतकेँ मरम्मति करा देबैक जे बरिसातमे ढहैक नहि । सभ चन्दा देलक । पाँच सय टाका भेल । मुदा ओहिसँ कल्लू बाबूक बुतात चललनि, स्कूलक देबाल मरम्मति नहि भऽ सकलैक । बरिसातमे सभ टा खसि पड़लैक । कल्लू बाबूसँ लोक टाका माङऽ गेलनि तँ उनटे कथा कहऽ लगलथिन । हारिकऽ फेर चन्दा करैत गेलहुँ जे फूसेक दू टा कोठली ठाढ़ कऽ देबैक । एहू बेर पाँच सय टाका जुटल । मुदा स्कूलक घर नहि बनि

सकलैक । ओहिसँ बनलनि मणि बाबूक बंगला । आब ने क्यो चन्दा देबऽ लेल तैयार अछि ने मदति करबा लेल । सरकार कहैत अछि जे पहिने पहिलुका अनुदानक हिसाब देखाउ, तखन दोसरक गप्प होयत । गौंआँ कहैत छथि जे पहिने पुरना रुपैयासभ ओसूल करू, तखन नव चन्दा देब । मुदा स्वयं ओ बकियौता ओसूल करबा लेल क्यो आगाँ नहि बढ़ैत छथि । एहि बूढ़ गरीब गुरुजीक के सुनत ? चुपचाप एहि बेल तर बैसल रहैत छी । अहाँक पिता तँ अपने भुक्तभोगी छथि, हाइ स्कूलक हालत जनिते छिऐक । एहि गाममे आब इमानदारी आ सत्यक गप्प करबे निरर्थक । चलू, अन्हार भऽ गेल । घर जाउ !''

गुरुजी अपन घर दिस चल गेलाह आ प्रकाशकेँ भरि बाट मोन पड़ैत रहलैक बाबूजी द्वारा कयल गेल दस वर्षक संघर्ष, गामक गोलैसी आ एकसर बाबूजीपर कयल गेल निराधार दोषारोपण, अपमान, लांछना आ पद-निष्कासन, मुदा तैयो बाबूजी एकसर संघर्ष करैत ओकरा सभकेँ सभ टा सुख-सुविधा देलथिन अछि, एक टा मास्टरक बेटाक सुख-सुविधा नहि, एक टा जमींदारक बेटाक सुख-सुविधा । विशेषकऽ प्रकाशकेँ तँ कहियो अनुभवे नहि भेलैक जे बाबूजी एहन पैघ मानसिक आ आर्थिक संघर्षसँ गुजरि रहल छलथिन । मुदा आब ई सभ टा अनुभव भऽ रहल छलैक । गामक अपर प्राइमरीक दुर्दशा देखि हाइ स्कूलक सभटा घटना मोन पड़ऽ लगलैक जतऽ पढ़ाइ कम, राजनीति बेसी होइत रहलैक अछि पछिला दस वर्षसँ ।

आङनमे आबि चौकीपर पड़ि रहल प्रकाश । तीन घण्टासँ पड़ल अछि । बसातक सिहकी धरि नहि छैक आ कछमछ करैत पसेनासँ लथपथ भेल अछि । फे[illegible]

मुदा ओहू गर्मीमे माय भनसाघरमे बैसलि छैक । पहिने सभक जलखै, [illegible] भोजनक व्यवस्था आ तखन बाबूजीक परहेजी भोजनक व्यवस्था । चौकीपर पड़ल-पड़ल प्रकाश ई सभ टा देखि रहल अछि आ ओकरा मोन पड़ैत छैक एक टा बिसरल घटना । बारह वर्षक एक टा किशोर भनसाघरमे अपस्याँत मायक माथक पसेना ओकरे आँचरसँ पोछैत आश्वासन दऽ रहल छैक– ''तोँ चिन्ता नहि क[illegible] माय ! हमरा पैघ होबऽ दे । फेर तोरा लेल एक टा ऊँच मचान बना देबौक जाहिप[illegible] बैसलि-बैसलि तोँ खाली हुकुम करिहेँ । बैसल-बैसल जखन तोहर देह दुखाय लगतौ[illegible] तँ तोरा नीचाँ उतारि पुतोहु सौंसे देह मालिश करतौक आ फेर ओहिना उँच[illegible] मचानपर बैसा देतौक ।'' सूनिकऽ माय हँसऽ लगैत छैक मुदा ओ झट टौकैत छैक– ''हँस नहि, हम सत्ते कहै छियौक । खाली हमरा पैघ भऽकऽ कमाय-खटाय दे[illegible]

मुदा ओ पैघ भऽ कमा रहल अछि तैयो माय ओहिना खटि रहलि छैक । आइ पचीस बरखसँ खटि रहलि छैक । भोर पाँच बजेसँ 12 बजे राति धरि अनवरत । नित्य दू बजे दिनमे मुँहमे दतमनि लेने स्नान करबाक हेतु धार दिस जाइत छैक आ रातिकेँ बारह बजे सभकेँ खुआ-पिया, चौका-बर्त्तन साफ कऽ रोगीकेँ पथ्य-दवाइ खुआ बिछौनपर जाइत छैक– जेना एक टा मशीन होइ, हाड़-मांसक मनुक्ख नहि ।

प्रकाशकेँ इच्छा होइत छैक जे मायकेँ कहैक जे छोड़ ई जंजाल, चल किछु दिन आराम करऽ हमरासभक संग । फेर तुरत मोन पड़ैत छैक जे एखने तँ ओकर डेरासँ आराम कऽ घुरलि छैक । मोन एक टा अपराध-भावसँ त्रस्त भऽ जाइत छैक आ ओकरा भनसा दिस तकबाक साहस नहि होइत छैक जतऽ कचाह जारनिक धुआँ आ डिबियाक टिमटिमाइत इजोतमे मायक आकृति झलफल कऽ रहल छैक ।

धीयापूता सभ खा लैत छैक तखन माय ओकरा हाक दैत छैक– अयबह एम्हर कि ओतहि खयनाइ लेने अबियौ ।' फेर अपने उत्तरो दैत कहैत छैक– ''एम्हर कथी लेल अयबह ? एम्हर बड़ गर्म छैक । ओतहि लेने अबैत छियह ।''

ओकर इच्छा भेलैक जे चिचियाकऽ कहैक 'ओही भट्ठीमे तँ तोँ भोरसँ झोँकल छेँ ।' मुदा कंठ फँसि गेलैक आ किछु बाजि नहि भेलैक । माय थारी आगूमे राखि गेलैक तँ बैसिकऽ खाय लागल । मुदा पहिल कौर मुँहमे रखिते नहि जानि किएक ओकर स्वाद नोराइन लगलैक ।

प्रकाशक माथमे बड़ दर्द छलैक । लगैत छलैक जेना माथ फाटि जयतैक । आँखि एकदम कुटकुटाइत आ सौंसे देहमे तोड़-मरोड़ । राति नीक जकाँ निन्न नहि भेलैक । अनदिनो बिना बारहसँ ऊपर भेने निन्न नहि होइत छलैक गर्मीक द्वारे । मुदा राति बितलापर जखन हवा सिहकैत छलैक तँ झट निन्न भऽ जाइत छलैक ।

मुदा राति ने हवा सिहकलैक आ ने निन्न भेलैक । भरि राति कछमछ करोट फेरैत रहल । जखने लगैक जे आब आँखि लगतैक, बुझाइक जेना आङनमे क्यो कुहरि रहल छैक । शुरूमे भेलैक जे ओकर कानक भ्रम छैक । के कुहरतैक एतेक रातिकेँ ? मुदा जखन बेर-बेर एहिना भेलैक तँ ऊठिकऽ बैसि रहल । कोठलीक दरबज्जा खोलि आङनमे आयल तँ लगलैक जेना ककरो कुहरब सहस्रमुखी भऽ आङनक कोन-कोनसँ गोंङिया रहल छैक । आङनमे एक टा चौकीपर माय

निश्चेष्ट पड़लि छलैक आ कुहरि रहलि छलैक, नहि जानि कखनसँ ? ओकरा इच्छा भेलैक जे लग जाकऽ मायकेँ उठा दैक आ पुछैक जे की होइत छैक । मुदा तखने दोसर चौकीपरसँ बाबूजी बाजि उठलथिन– ''सुनैत छी, एना कुहरि किएक रहलि छी ?''

कोनो उत्तर नहि पाबि बाबूजी आर विह्वल होइत बजैत छथिन– ''बजै किएक ने छी ? जवाब दियऽ ? एना कुहरि किएक रहलि छी ?'' तैयो कोनो उत्तर नहि । अनवरत कुहरबाक स्वर आङनक कोन-कोनसँ प्रतिध्वनित होइत ।

बाबूजी अपन बिछौनपर पड़ल-पड़ल जेना प्रलाप करऽ लगैत छथि– ''मरब एक दिन एहिना । खटैत-खटैत प्राण जायत तखन बूझब । लाख मना करैत छी, अपन जानक दुश्मन नहि बनू । आखिर देहे अछि, मुदा के सुनैत अछि ?... मुदा सुनियोकऽ की होयत ? दोसर के अछि करऽवला ? अहाँकेँ तँ मरिकऽ सभ जंजालसँ फुरसति भेटि जायत । मुदा तखन के देखत हमरालोकनिकेँ ?''

बाबूजीक एहि आत्मसम्भाषणक भनकी जेना निश्चेष्टावस्थोमे मायक कानमे पड़ि जाइत छैक आ कुहरब बन्द भऽ जाइत छैक । उठैत पुछैत छनि– ''किछु लेब ? की कहैत छलहुँ ?''

बाबूजी जेना लोहछिकऽ बड़बड़ा उठैत छथि– ''हाय रे कपार ! एखनो पुछैत छथि जे किछु चाही ! दू घण्टासँ कुहरि रहल छी अपने, तकरो कोनो होश अछि ? एना जानक दुश्मन नहि बनू ।''

माय अपन बिछौनपर पड़ि रहैत अछि । कोनो जवाब नहि दैत छनि । दुनू गोटे जेना स्थितिसँ पराजित, हताश, रातिक गुमसल अन्हारमे चुप्प, मुदा अशान्त जागल रहैत छथि ।

प्रकाश कोठलीमे घुरि अबैत अछि । कुहरब आब बन्द छैक आङनमे । मुदा लगैत छैक जेना ओकर भीतर किछु कुहरि रहल हो– अनवरत आ कोनो भीषण यंत्रणासँ छपटाइत राति बीति जाइत छैक ।

मुदा भोरे माथ भारी लगैत छैक, जेना भरि राति क्यो हथौड़ासँ पिटने हो ! आँखि मूनि पड़ल रहब स्नान आ मालिशक बादो माथ ओहिना टनकैत रहैत छैक । माय-बाबूजीकेँ किछु नहि कहैत छनि जे अनेरो चिन्तामे असम्भव बुझाइत छैक । माय-बाबूजीकेँ किछु नहि कहैत छनि जे अनेरो चिन्तामे पड़ि जयताह । आइ ताश-मण्डलीक प्रतीक्षा सेहो नहि करैत अछि । चुपचाप टहलऽ लगैत अछि गाममे, निरुद्देश्य ।

कतेको वर्ष बीति जयबाक अतिरिक्त आर कोनो परिवर्त्तन नहि भेल छैक गामक नक्शामे । वैह चीन्हल-जानल घर, वैह धाङल रस्ता । कुम्भी पोखरि आ बूढ़ भालसरीक गाछ । पुबारि ड्यौढ़ी, पछबारि ड्यौढ़ी । भगिनमान टोल आ दछिनबारि टोल । सौंसे चक्कर लगा अबैत अछि, मुदा ककरो दर्शन नहि होइत छैक, जेना सभ गाम छोड़ि चल गेल हो ! पहिने जकाँ आइ धड़धड़ाकऽ आङन पैसि नहि देखि होइत छैक । कतेक वर्ष बीति गेलैक ! नहि जानि कोन आङनमे कोन नव लोक आबि गेल हो ! ओहिना बाटपर बौआइत रहल ।

घूरिकऽ फेर पोखरिक उतरबारि भीड़पर अबैत अछि तँ आङनसँ निकलि गीताक माय ओकरा सोर पाड़ैत छथिन– ''एना चुपचाप नुकाकऽ किएक पड़ायल जाइत छी ? आउ, अङना आउ, अहींक घर अछि । गरीबक गूड़ा-खुद्दी खा लियऽ । पहिने तँ एही आङनमे घण्टो खेलाइत छलहुँ । आब कथी लेल हुलकी देब !''

आङनमे पयर दैत देरी प्रकाशक दृष्टि अड़रनेबाक गाछपर चल जाइत छैक आ हँसी लागि जाइत छैक । ओकरा हँसैत देखिकऽ गीताक माय हँसैत पुछैत छथिन– ''मोन पड़ि गेल ?''

आब प्रकाश भभाकऽ हँसैत अछि । ओ घटना मोन पड़ि जाइत छैक जहिया मामूली गप्पपर बिगड़िकऽ अङनाक सभ टा लत्ती-फत्ती उजाड़ि देने रहैक आ सभ टा अड़रनेबा झाँटि देने रहैक । तैयो क्रोध शान्त नहि भेलैक तँ टाट-फड़क उजाड़ऽ लागल रहैक । समधिनक सम्बन्धसँ गीताक माय प्रकाशक नानीकेँ हँसीमे किछु गारि देने छलथिन आ प्रकाश बिगड़िकऽ सौंसे आङनकेँ तहस-नहस कऽ देने रहनि ।

एक टा पाकल अड़रनेबा काटिकऽ रिकबीमे प्रकाशक आगू राखि जाइत छथिन– ''खा लियऽ । गरीबक ओतऽ आर की जुड़त ?''

प्रकाश अड़रनेबा मुँहमे दैत बात बदलैत कहैत छनि– ''गीता कोना अछि बाबी ? धीयो-पूता भेल होयतैक ?''

गीता ओकर बालसंगी छलैक । गामक दूरक सम्बन्धे पीसी । मुदा समवयस्क छलैक । संगे खेलाइत छलैक । नदीक कातमे बालुक महल बनबैत छलैक आ वर-कनियाँ खेलाइत काल ओकर कनियाँ बनैत छलैक ।

–''हँ बाउ, खूब सुखी अछि । चारि टा सन्तानो छैक । दू टा बेटा आ दू टा बेटी । आब एहि बूढ़ीकेँ कोन चिन्ता ? एक टा बेटी छलि, सासुरमे राज करैत अछि । आब तँ भगवान बजा लेथि, ताहीमे नीक ।''

एखन तँ आर कतेक जीयब ?

—"नहि बाबी ! एना जुनि बाजू ? एखन तँ आर कतेक जीयब ? नाति-नतिनीक बियाह देखब ।"

गीताक माय प्रसन्न भऽ जाइत छथिन । प्रकाश ऊठिकऽ विदा भऽ जाइत अछि । ओ आग्रह करैत छथिन– "फेर आयब बाउ !'

बाहर अयलापर आब प्रकाशकेँ माथ हल्लुक बुझाइत छैक । प्रसन्न मन दछिनबारि टोल दिस विदा भऽ जाइत अछि । मुदा बाटेमे देखैत अछि जे एक टा स्त्री एक टा बच्चाकेँ कोरामे लेने एम्हरे आबि रहलि छैक । मुँह किछु चीन्हल बुझाइत छैक । लग चल अबैत छैक तैयो नीक जकाँ मोन नहि पड़ैत छैक । कतहु देखने छैक ।

—"एना अकचकायल किएक छें ? हमरा नहि चीन्हैत छें ?" ओ कनेक आहत होइत टोकैत छैक ।

—"अरे तों छें पद्मा ! चिन्हबौक किएक ने !"

ओकर स्वर चीन्हि प्रकाश स्थिति सम्हारैत अछि । मुदा ओकरा बड़ आश्चर्य होइत छैक । पद्मा ओकरे संगतुरिया छैक मुदा देखलासँ लगैत छैक जेना कोनो प्रौढ़ा हो ! एकदम स्थूल आ सेरायल । ओकरा ओ पद्मा मोन पड़ैत छैक जकरामे खाली चिनगी छलैक– लहलह करैत । एतेक जल्दी मिझा कोना गेलैक ?

—"की सोचि रहल छें ?"

—"किछु नहि । तोरे बच्चाकेँ देखैत छलियौक । बड़ सुन्दर छौक ।" प्रकाश बच्चाक गालकेँ छुबैत कहैत छैक ।

—"छठम छैक– सभसँ छोट ।"

पद्मा एकदम सहज भावेँ कहैत छैक मुदा ओकरा अविश्वास होइत छैक । छठम ? फेर लगैत छैक जेना अविश्वासक कोनो कारण नहि छलैक । पद्मा झूठ किएक कहतैक ? दस-बारह बरखमे छौ टा सन्तान होयब असम्भव त' नहि छैक ?

—"एखन रहबें ?" ओ प्रश्न करैत छैक ।

पद्मा स्वीकृतिमे मूड़ी डोला दैत छैक ।

—"बेस तँ फेर भेँट होयत ।" प्रकाश बिनु उत्तरक प्रतीक्षा कयने आगू बढ़ि जाइत अछि । ओकरा एहि पद्मा लग बेसी काल ठहरल नहि जाइत छैक । ओकरा ओ पद्मा मोन पड़ैत छैक जकर बुट्टी-बुट्टी सदिखन नचैत रहैत छलैक,

जकरासँ सभ संगतुरिया डेराइत छलैक । प्रकाशोकेँ डर होइत छलैक । आ डर आरो बढ़ि गेलैक जखन पद्माक विवाह भेलैक । प्रकाश नवममे पढ़ैत छल । मुदा पद्मा जेना आर किछु पढ़बऽ चाहैत छलैक । नहि जानि की धधकैत देखैत छलैक ओकर आँखिमे जे प्रकाश डेरा जाइत छल । मुदा पद्मा जेना ओकरा तंग करबाक सप्पत खा लेने रहैक । शनि-रविकेँ छुट्टी भेलापर दरभंगासँ गाम आबय तँ ताश-पचीसी खूब चलैक पद्माक अङनामे । ओहि दिन भोरेसँ टिप-टिप करैत रहैक तैयो प्रकाश गेल जे खेलाड़ीसभ जुटले होयतैक । मुदा क्यो ने रहैक अङनामे । एकसरि पद्मा बैसलि रहैक– केश छिड़ियौने पीठपर । देहपर एक टा साड़ी मात्र । ऊपर कोनो वस्त्र नहि । प्रकाश घूरऽ लागल ।

पद्मा टोकलकैक– "हम खा जयबौक ? एना पड़ायल किएक जाइत छें ? बैस ।"

प्रकाश बैसि गेल ।

—"ताश खेलयबें ?" पद्मा ताश फेंटैत कहलकैक ।

आ बिन उत्तर सुनने ताश बाँटऽ लगलैक । बँटिते चल गेलैक आ हारैत चल गेलैक । अन्तमे एक बेर ओकर हाथसँ ताश छीनैत कहलकैक– "हम तोरासँ नहि जीति सकैत छियौ । तों बैमानी कऽ रहल छें ।"

प्रकाश ताश छिनबाक चेष्टा करैत कहलकैक– "दे, ताश दे हमर । हारै छें तँ झूठ-मूठ बैमानीक दोष दैत छें ।"

पद्मा अपन ताशवला हाथ दुनू ठेहुन आ छातीक बीचमे कऽ हँसऽ लगलैक– "ले, छीनि ले' ।"

प्रकाश लपकल । ताशवला हाथ झिकबाक चेष्टा कयलक । मुदा ओ तँ जेना सटि गेल रहैक । टस्ससँ मस्स नहि भेलैक । हारिकऽ ओहो हाथ घुसिया देलकैक ठेहुन-छातीक बीच । पद्मा ओकरो दुनू हाथ ठेहुनसँ नीक जकाँ दबा देलकैक । प्रकाशक हाथकेँ तप्त मासुक स्पर्श झुनझुनाबऽ लगलैक । देह सिहरऽ लगलैक आ नस-नसमे सनसनाहटि पसरि गेलैक ।

डेराकऽ हाथ खीचऽ लागल तँ हाथक संग पद्मा स्वयं कण्ठ धरि आबि गेलि । ठोर लग ठोर, साँससँ साँस मिलल, देहसँ देह सटल । प्रकाशक लेल सर्वथा नव अनुभव छलैक, एकदम उत्तेजक आ असह्य । ओ जोरसँ पद्माकेँ अपन छातीसँ साटि लेलकैक । पद्मा आरो बेगसँ चिपकि गेलैक ।

प्रकाश उत्तेजनासँ हाँफऽ लागल । पद्मा देहसँ सटलि छलैक आ नस-नस झनझना रहल छलैक । मुदा ओ आगाँ किछु सोचिए ने पाबि रहल छल । खाली एक टा प्रश्न ओकर मोनमे गनगना रहल छलैक– आब... ? आब...?

पद्माक बंधन क्रमशः ढील भऽ गेलैक । ओ चुपचाप मूड़ी खसौने चौकीपर बैसि गेलैक । मुक्त होइते प्रकाश पड़ायल । लगलैक जेना कोनो अग्निकुण्डसँ ऊठिकऽ पड़ायल जाइत हो !

ओहि पद्माकेँ आइ एतेक सेरायल आ ढहल देखि ओकरा लगलैक जेना समय सत्ते बड़ बीति गेल छैक ! खाली ओकरा अनुभव नहि भेल छैक जे एतेक बीति गेलैक । ओकरा इच्छा होबऽ लगलैक जे दौड़िकऽ अङना पहुँचय आ अयनामे देखय जे कतेक समय ओकर आकृतिपरसँ बीति गेल छैक । ओकरा भय होइत छैक जे कतहु ओकरो आकृति पद्मे सन सेरायल आ पस्त ने होइ !

एहि परिचित शहरक बिसरल गली-मोहल्लामे बौआइत प्रकाशकेँ बहुत रास बिसरलहा मोन पड़ैत छैक । प्रायः बिसरल किछुओ नहि छलैक, मात्र ओहिपर समयक परत चढ़ि गेल छलैक । आइ जेना समयक एक-एक टा परत उघरल जा रहल छलैक– अनायास, आ प्रकाश छोट भेल जाइत छलैक– छोट....पन्द्रह बरखक... किशोर । एक टा उज्जर हाफपेण्ट आ उज्जर शर्ट पहिरने स्कूल दिस दौड़ल जाइत। अकस्मात कानमे एक टा स्वर अबैत छैक– "गुड मार्निङ्ग मिस्टर जिट"

प्रकाशकेँ लगैत छैक जेना ओकरे सम्बोधित कयल गेल होइक । आइ एक सप्ताहसँ सूनि रहल छल ई सम्बोधन । नित्य सूनि रहल छल । मुदा सभ दिन जकाँ अपन मकानक खिड़की लग ओ तेरह वर्षक किशोरी ओहिना ठढ़ि छलैक जेना किछु भेले नहि हो । प्रकाशकेँ तामस भेलैक । इच्छा भेलैक जे कहैक– "उपनाम देबा लेल धन्यबाद कुमारी... कुमारी फैशन !' प्रकाश यद्यपि प्रकट किछु नहि कहलकैक मुदा ओहि अगत्ती छौंड़ी लेल एक टा उपनाम ताकि लेबाक कारणेँ मोने-मोन प्रसन्न भऽ गेल । ओ स्कूल दिस दौड़ल मुदा ओकरा बुझयलैक जेना खिड़कीपर ठाढ़ि छौंड़ी दुष्टतापूर्वक मुसकिया रहलि होइ !

शोभा सेहो मुसकिया रहलि छलैक– लगातार । प्रकाशक ध्यान पढ़ाइ नहि जा रहल छलैक । बेर-बेर शोभाकेँ एना मुसकियाइत देखि ओ भीतरसँ अस्थि

भेल जा रहल छल । की बात छैक ? एना किएक मुसकिया रहलि छैक ? ओकर दृष्टि अनायास डेस्कक नीचाँ अपन जांघ धरि खीचल हाफपेन्टपर चल जाइत छैक । लगैत छैक जेना शोभा लगातार ओम्हरे देखि रहलि हो । लगैत छैक जेना नाङट भऽ गेल हो सभक सामने । पेण्टक निचला कोर पकड़िकऽ आर नीचाँ खिचबाक असफल प्रयास करैत अछि । ओकर एहि प्रयासकेँ शोभा देखैत छैक । ओकर मुसकी आर स्पष्ट भऽ जाइत छैक । एहि बेर ओकर मुँह देखैत देरी अनायास प्रकाशो मुसकिया उठैत अछि । प्रकाश मुसकिया उठैत अछि आ शोभा लजा जाइत छैक । प्रकाश आर मुसकियाइत अछि । शोभा आरो लजायलि जाइत छैक । प्रकाश सोचैत अछि जे काल्हिसँ हाफपैन्ट नहि पहिरत ।

मुदा ई लेन-देन सभदिना भऽ जाइत छैक । मुसकिया उठब आ लजा जायब । लजा जायब आ मुसकिया उठब । सभ टा ततेक स्पष्ट भऽ जाइत छैक जे ककरो दृष्टिसँ नुकायल नहि रहैत छैक । हिन्दीक अध्यापक सुरेश बाबू तँ खुल्लम-खुल्ला एक दिन क्लासमे टोकि दैत छथिन– "क्या बात है प्रकाश ! आजकल बहुत मुस्कुराने लगे हो ?"

प्रकाश एहि अप्रत्याशित प्रश्नपर अकचका गेल छल– "कोई बात नहीं है सर ! कोई बात नहीं है ।"

सुरेश बाबू एक टा कुत्सित हँसी हँसैत कहलथिन– "बात तो जरूर कुछ है । मैं कई दिनो से ये खेल देख रहा हूँ ।"

प्रकाश ओ हँसी आ बजबाक ओहि अश्लील चेष्टासँ बिगड़ि जाइत अछि । कनेक उद्दण्ड जकाँ उत्तर दैत छनि– "ये तो आज मालूम हुआ सर ! क्या आप पढ़ानेमे कम और खेल-वेल देखने में ज्यादा ध्यान देते हैं ?"

सुरेश बाबू बिगड़ि गेलथिन । प्रधानाध्यापक लग शिकायति गेलैक । प्रधानाध्यापक ओकरा बड़ मानैत छलथिन । बजाकऽ बुझबैत कहलथिन– तोँ होनहार विद्यार्थी छह । बड़ आशा अछि हमरालोकनिकेँ तोरासँ । तोहर खानदानो कतेक पैघ छह, इलाकामे प्रसिद्ध । हमर कहबाक ई तात्पर्य नहि जे तोँ स्कूलक प्रतिष्ठा वा खानदानक प्रतिष्ठाक प्रतिकूल कोनो काज कऽ रहल छह । हमर संकेत मात्र संभावना दिस अछि । एहन कोनो संभावनाकेँ जन्म देब ठीक नहि जकर फल प्रतिकूल भऽ सकैत हो ।

प्रकाश हुनक स्नेहसँ गद्गद् होइत कहलकनि– "अहाँ विश्वास राखू सर,

कहियो अहाँकेँ शिकायतिक अवसर नहि देब । कहियो एहन काज नहि करब जाहिसँ विद्यालयक प्रतिष्ठापर धब्बा लागय।''

हेडमास्टर साहेब प्रसन्न होइत कहलथिन– ''जाह, क्लासमे जाह । गुरुजनक बातकेँ अन्यथा नहि ली, ओ सतत शुभकामनासँ प्रेरित रहैत छैक।''

आ, तकर बाद जेना ओही दिनसँ सभ टा स्वीकृत भऽ गेलैक । मुसकीक अदल-बदल, गप्प-सप्प, कापी लेब-देब, बिना किछु कहने, बिना निवेदन कयने जेना सभ ठाम, स्कूल आ स्कूलक बाहर एक टा तथ्य, स्वीकृत भऽ गेलैक– प्रकाश आ शोभामे प्रेम छैक ।

आ एहि बिनकहल प्रेमक स्वीकृतिसँ जेना सभ किछु बदलि गेलैक । वैह स्कूल, वैह शिक्षक । वैह छोटछीन रहबाक कोठली– ओकिल काकाक बाहरवला घर, वैह छोटछीन मोहल्ला आ वैह छोटछीन शहर । मुदा प्रकाशकेँ लगलैक जेना सभ-किछु आरो छोट भऽ गेल छैक– स्कूल, मोहल्ला आ शहर । सौंसे स्कूलमे, सौंसे मोहल्लामे, सौंसे शहरमे मात्र दू प्राणी छैक– शोभा आ प्रकाश । स्कूलक छौ घण्टा जेना छौ पलमे बीति जाइक आ बाँकी समय ओ एक टा उन्मादक स्वप्नमे बौआयल रहय– दिन-राति । अनायास मुसकिया उठय, कोनो गीत गुनगुना उठय, अयनामे अपने आकृति बेर-बेर देखय आ रस्ता-बाजारमे आन कोनो छौंड़ीकेँ अपना दिस तकैत देखि उपेक्षापूर्वक हँसय– 'नो वेकेन्सी ।' दिन-राति सैकड़ो नव सम्बोधन ताकय आ काल्पनिक पत्र लिखि जाय शोभाक नाम... ।

मात्र शोभाक नाम ।

एही सभ स्वप्नमे उधिआइत एक दिन स्कूल दिस जल्दी-जल्दी दौड़ल जाइत रहय कि कानमे फेर एक टा परिचित स्वर अयलैक– ''क्या बात है मिस्टर जिट ? बहुत खुश नजर आते हैं आजकल ?''

प्रकाशकेँ इच्छा भेलैक जे पुछैक– ''अहाँकेँ कोनो आपत्ति अछि ?'' मुदा प्रकाश ततेक प्रसन्न रहैत छल एहि बीच जे कोनो कटाह उत्तर नहि दऽ भेलैक। खिड़कीपर ठाढ़ि अरुणाकेँ देखलकैक आ जोरसँ हँसैत स्कूल दिस चल गेल ।

अरुणा । हँ, अरुणे नाम छलैक ओकर । प्रकाशकेँ ओकर नाम बूझल भऽ गेल छलैक आ ईहो बूझल भऽ गेल छलैक जे ओकरे क्लासमे ओहो पढ़ैत छैक। गर्ल स्कूलमे । ओकरा आश्चर्य खाली एहि बातपर होइत छलैक जे सभ दिन स्कूल जयबा काल तँ ओ खिड़कीपर ठाढ़ि रहैत छैक, स्कूल कखन जाइत छैक ? फेर

ध्यान गेलैक जे शोभाकेँ देखबाक जल्दीमे वैह सभ दिन एक घण्टा पहिने स्कूल दौड़ि जाइत छल ।

ओहि दिन अरुणा फेर टोकलकैक– ओ अन्तर्विद्यालय प्रतियोगितामे एक टा नाटकमे मुख्य अभिनय कयने छल । किसानक भूमिका छलैक । खूब प्रशंसा भेल छलैक आ इनामो भेटल रहैक । जहिना घूरिकऽ डेरा लग आयल, खिड़कीपर ठाढ़ि अरुणा बाजि उठलैक– 'बेचारा जिट' बहुत गरीब हो गया है । खेती-वेती करने लगा है । बड़ी तकलीफ होती होगी ।''

प्रकाशकेँ फेर हँसी लागि गेलैक । एहि बेर एकदम प्रत्यक्ष सम्बोधन करैत कहलकैक– ''देख अरुणा, हमर नाम 'जिट' नहि, प्रकाश अछि । अपन आदति छोड़ खिड़कीपर ठाढ़ रहबाक । पढ़-लिख, खाली अनकर बातमे टाङ नहि अड़ा ।''

अरुणा ओहिना ठाढ़ि हँसैत रहलैक, तमसयलैक नहि । अनायास प्रश्न कऽ बैसलैक– ''अच्छा 'जिट' ! ई शोभा कोन छौंड़ीक नाम छैक ?''

प्रकाशकेँ आश्चर्य भेलैक । ई शोभाक नाम कोना जनैत छैक ? तामसो भेलैक । क्यो छैक शोभा, एकरा मतलब ? मुदा अपनाकेँ सम्हारैत पुछलकैक– ''तोँ कोना चीन्हैत छही ?''

–''ई लियऽ । चिन्हबैक किएक ने ? बगलेक स्कूलमे तँ पढ़ैत छी हमहूँ। तोहर स्कूलक सभ छौंड़ीकेँ चीन्हैत छिऐक । मुदा ई शोभा...

–''की शोभा ?'' प्रकाश बीचेमे बाजि उठलैक– ''की भेलैक अछि शोभाकेँ ?''

अरुणा एहि बेर बेस बुझनुक जकाँ बजलैक– ''शोभाकेँ की होयतैक ? होयतौक तोरा । ई शोभा नीक छौंड़ी नहि छैक.... पहिनो कैक टा छौंड़ा...

प्रकाश एकदम गरजि उठल– ''चुप रह । तोरा ई कहबाक साहस कोना भेलौक ? कथीक डाह छौक शोभासँ तोरा ? तोँ अपने खराब हेबेँ... तेँ ओकरा खराब कहैत छहीक ।''

प्रकाश अपन बातक प्रतिक्रिया बिनदेखने ओतऽसँ हँटि गेल । तामसे देह थरथर करैत रहलैक । एहि छौंड़ीक ई मजाल ? हमर शोभाकेँ अपशब्द कहत ?

प्रकाश ओ रस्ते छोड़ि देलक । ओहि बाटे स्कूल जायब बन्द कऽ देलक। घूरिकऽ जाय लागल । अरुणा एखनो ठीक साढ़े नौ बजे खिड़कीपर आबि जाइत

छलैक मुदा प्रकाश ओ बाट छोड़ि देने छल । दूरसँ अरुणाकेँ अपन कोठली दिस तकैत देखैत छलैक । मुदा ओकर उपेक्षा कऽ ओ दोसर दिस ताकऽ लगैत छल ।

मुदा स्कूलमे ओ शोभा दिस तकिते रहि जाइत छल । तकिते रहि गेल । दसमा पास कयलक । मैट्रिकमे सेन्टअप भेल । परीक्षा नजदीक आबि गेलैक । स्कूल जायब बन्द भऽ गेलैक । प्रकाश छटपटाय लागल । शोभासँ कोना भेंट होयत ? मुदा रस्ता स्वयं शोभा निकालि देलकैक । प्रकाश नीक विद्यार्थी छल, तकर सिफारिश कऽ अपन मददि लेल प्रकाशकेँ अपन डेरेपर बजाबऽ लगलैक । प्रकाश प्रसन्न भऽ गेल । आरो अधिक सामीप्य । आरो एकान्त आ एकान्तमे शोभा । आ शोभाक आँखिमे लहरैत स्वप्न ।

मुदा स्वप्न टूटि जाइत छैक, खण्डी-खण्डी भऽ जाइत छैक । एक राति प्रकाश शोभाकेँ पढ़ाकऽ घुरल अबैत छल कि तीन-चारि गोटे घेरि लेलकैक ओकरा । प्रकाश दू टाकेँ चीन्हैत छलैक– शहरक प्रसिद्ध गुण्डा । पहिने ओकरे स्कूलमे छलैक, प्रकाशसँ दू-तीन वर्ष आगाँ । मुदा हेडमास्टर साहेब स्कूलसँ निकालि देने छलथिन ।

ओहि गुण्डासभकेँ एना बाट छेकैत देखि प्रकाश डेरा गेल– ''की बात छैक ?''

चारूक सरदार आगू बढ़ि बजलैक– ''हमर संग आ । तोरासँ काज अछि ।''

डरक लेल प्रकाश पाछाँ लागि गेल । ओ सभ ओकरा एक टा बदनाम होटलमे लऽ गेलैक आ एक टा टेबुलपर बैसैत ओकरो बैसबाक आदेश देलकैक । प्रकाश डरेँ थरथराइत बैसि गेल ।

–''कतऽ गेल छलेँ ? शोभा ओतऽ ?'' सरदार प्रश्न कयलकैक ।

प्रकाश स्वीकृतिमे मूड़ी हिला देलकैक ।

–''के होयतौक ओ तोहर- प्रेमिका ?'' दोसर अट्टहास कयलकैक ।

–''प्रेमिका नहि, दोस्त ।'' प्रकाश डेराइत बाजल ।

–''छौँड़ी दोस्तकेँ प्रेमिके कहल जाइत छैक ।'' तेसर आगू अबैत कहलकैक ।

–''तोँ ओकर पिण्ड छोड़ि दहिक, नहि तँ ठीक नहि होयतौक । ई चक्कू देखि ले' ।'' सरदार एक टा चक्कू टेबुलपर रखैत कहलकैक ।

प्रकाश डरेँ चुप रहल । किछु बाजि नहि भेलैक ।

–''काल्हिसँ एम्हर नहि टपिहेँ । टपबेँ तँ टाङ-हाथ तोड़िकऽ राखि देबौक ।'' दोसर बजलैक ।

–''मुदा अहाँ लोकनिकेँ एहिसँ कोन मतलब अछि ?''

–''कोन मतलब ?'' सरदार गरजल– ''ओ हमरसभक प्रेमिका अछि । तोँ बीचमे टाङ अड़ायब छोड़ि दे । ओकरा अपने कहैत डर होइत छलैक तेँ हमरासभकेँ पठौलक अछि ।''

–''शोभा पठौलकौक अछि तोरा सभकेँ ?'' –प्रकाश आश्चर्यसँ चिचिआइत कहलकैक । सरदार खाली एक टा कुटिल हँसी हँसैत रहलैक । जवाब नहि देलकैक । प्रकाश ऊठिकऽ विदा भेल– ''हम जाइत छी ।''

–''मुदा मोन रखिहेँ । एहि बाटपर फेर कहियो टाङ नहि दिहेँ ।'' सरदार चक्कूक धार छुबैत कहलकैक ।

प्रकाश बाहर निकलि जल्दी-जल्दी डेरा दिस पड़ायल । देह पसेनासँ भीजल छलैक । कोँढ़ धड़धड़ कऽ रहल छलैक । बेर-बेर पाछू घूरिकऽ तकैत रहल जे क्यो खेहारने ने अबैत हो !

अपन कोठलीमे अयलापर डर किछु कम भेलैक । खिड़की, दरबज्जा नीक जकाँ बन्द कऽ लेलक । आ बिछौनपर पड़ि रहल । लगले निन्न भऽ गेलैक, मुदा निन्नोमे बेर-बेर डेराकऽ चेहाइत रहल ।

पाँच दिन धरि शोभाक घर दिस नहि गेल ।

अपनापर ग्लानि भेलैक– कायर ! चारि टा गुण्डाक डरेँ बाट छोड़ि देत ? शोभाकेँ छोड़ि देत ? मुदा गुण्डासभ तँ कहलकैक जे शोभा पठौने छैक, ओ स्वयं ओकरा बाटसँ हँटाबऽ चाहैत छैक ? प्रकाशक मोनमे एकटा प्रश्न उठलैक । मुदा ई प्रश्न अपने अर्थहीन बुझयलैक । शोभा ओकरा पाछू गुण्डा किएक लगौतैक ? ओकरा मना करबाक रहितैक तँ अपने कहि दितैक । प्रकाश जबर्दस्ती तँ नहि करितैक । अबस्से गुण्डासभ अपन मतलब लेल गप्प गढ़ने होयतैक । गुण्डासभ शोभाक प्रेमी कोना होयतैक ?

साहस कऽ छठम दिन प्रकाश विदा भेल शोभाक घर दिस । चौराहा लग अबिते फेर चारूकेँ ठाढ़ देखलकैक । डरेँ भागि पड़ायल । ओम्हर जयबाक साहस

नहि भेलैक । भय आ उदासीमे आइ ईहो ध्यान नहि रहलैक जे अरुणाक खिड़की लग दऽ जा रहल छल जाहि बाटे गेना ओकरा दू वर्ष भऽ गेल छलैक ।

—"आइ एहि बाटे कोना जिट ?" अरुणाक स्वर बदलल रहलोपर ओ चीन्हि गेलैक ।

प्रकाश कोनो उत्तर नहि देलकैक । अरुणाक स्वर ओकरा थरथरायल बुझयलैक । ऊपर तकलक तँ अरुणाक आँखिमे थरथराइत किछु देखि चौंकि गेलि ।

—"बड़ उदास छी आइ ?" अरुणा फेर टोकलकैक ।

प्रकाशकेँ तैयो किछु बाजि नहि भेलैक । आश्चर्य भेलैक जे ओकर उदासी कोना चीन्हि गेलैक अरुणा ? बिनु उत्तर देने आगू बढ़बा लेल डेग उठौलक तँ पाछूसँ अरुणाक स्वर अयलैक— "हम कहने रही ने, शोभा नीक छौंड़ी नहि अछि ।"

प्रकाश चौंकिकऽ घुरल । अरुणा खिड़कीपर नहि छलैक । आइ नहि जानि किएक ओकरा अरुणाक बातपर तामस नहि भेलैक । इच्छा भेलैक जे अरुणा खिड़कीपर रहितैक तँ ओ किछु आर गप्प करैत । नहि तँ कमसँ कम ओकरे गप्प सुनैत । मुदा खिड़की खाली छलैक आ अरुणा अदृश्य भऽ गेलि छलैक ।

अपन कोठलीमे घूरिकऽ प्रकाश निश्चय कऽ लैत अछि जे ई शहर छोड़ि देत । इम्तहानक सेन्टर बदलबा लेत आ फेर घूरिकऽ एहि शहरमे पयर नहि देत । ओ झट अपन सामान बान्हि लैत अछि । आ बान्हल सामानपर चित्त पड़ल-पड़ल बड़ी कालधरि कनैत रहैत अछि ।

आ आइ दस वर्षक बाद एहि परिचित शहरक परिचित आ धाङल बाटमे बौआइत बहुत रास बिसरलाहा मोन पड़ैत छैक । निरुद्देश्य बौआइत अपन मोहल्लामे आबि जाइत अछि । ओकिल काकावला मकान ढहिकऽ जमीनपर खसल छैक आ अरुणाक खिड़की बन्द छैक । नहि जानि कतऽ होयतैक अरुणा ? ओ बड़ी कालधरि ओहि बन्द खिड़कीकेँ देखैत ठाढ़ रहैत अछि एहि आशामे जे एखने खिड़की खुजतैक आ अरुणा बाजि उठतैक— "कब आये जिट ?"

मुदा खिड़की बन्दे रहलैक । अरुणा नहि अयलैक । प्रकाश भारी डेगे मोहल्लासँ विदा भेल । शोभा मोन पड़लैक । एक बेर ओकरो डेरा दिस जयबाक इच्छा भेलैक । आब तँ कोनो गुण्डा चौबट्टीपर ओकर बाट छेकने नहि बैसल होयतैक ? बैसलो होयतैक तँ ओकरा चिन्हबो नहि करतैक । फेर अपने ध्यान गेलैक जे कोन मुँह लऽकऽ शोभासँ भेँट करतैक । कहतैक जे गुण्डाक डरेँ दस वर्षसँ

नुकायल छलहुँ, अयबाक साहस नहि छल । फेर शोभा बैसले होयतैक ओकरा लेल ? ओकरो अपन 'घर' भेल होयतैक, धीया-पूता होयतैक । दस वर्ष कनेक समय होइत छैक ?

प्रकाश जल्दी-जल्दी क्लिनिक दिस घुरैत अछि जतऽ मायकेँ बैसा गेल छलैक । डाक्टरसँ देखाबऽ अनने छलैक आ देखौलाक बाद मायकेँ क्लिनिकमे बैसाकऽ अनेरो बोआइ ले' निकलि गेल छल । ट्रेन भेटऽमे देरी छलैक । मुदा आब समय भऽ गेल छलैक । प्रकाशकेँ देखिते माय चिन्तित होइत बजलैक— "कतऽ चल गेल छलह ? गाड़ियो छुटि जयतह ।"

प्रकाश झट रिक्शा लऽ अनैत अछि । गाड़ी भेटि जाइत छैक । गाड़ी विदा होइत छैक ।

प्रकाशकेँ गुमसुम देखि माय टोकैत छैक— "बड़ गुमसुम छह । डाक्टर कोनो तेहन बात तँ नहि कहलकऽ ?"

—"नहि, नहि ।" प्रकाश चौंकैत कहैत छैक— "तोरा तँ अपनो बुझले छौक । पेटमे एलसर छौक । परहेज राखऽ पड़तौक । जाड़मे आपरेशन करा देबौक ।"

—"तखन एना चिन्तित किएक छह ? की भेलह अछि ?" माय चिन्तित होइत कहैत छैक ।

—"किछु नहि, होयत की ?" प्रकाशकेँ अपने स्वर अविश्वसनीय लगैत छैक । ओ फेरसँ सोचऽ लगैत अछि एक टा छूटल शहरक विषयमे जकर बिसरल लोक आइ फेर मोन पड़ि गेल छलैक आ ओकर संग जा रहल छलैक । भरिसक ओकरा भ्रम भेल छलैक । ओ तँ हरदम ओकर संगे छलैक, मात्र समयक परतक नीचाँ दबि गेल छलैक । आइ सभ टा परत एक-एक कऽ खुजि गेल छलैक आ समय दस वर्ष पाछू चल गेल छलैक ।

पन्द्रह दिन बाद गामसँ विदा होइत काल माय कहलकैक— 'अपन बाबूजीपर ध्यान दैह । एहन असाध्य रोगसभ ! कोना बचथुन ?" बाबूजी सेहो किछु तेहने गप्प कहने छलथिन— "अपन मायपर ध्यान दैह । ई जनमारा दर्द आ दिन-रातिक खटनी । आर कतेक दिन खेपथुन !"

मुदा प्रकाशकेँ किछु नहि कहि भेलैक । चुपचाप पयर छूबि विदा भऽ गेल । छोट भाय-बहिनसभ संग-संग अरियातऽ अयलैक । कुम्भी पोखरिक दछिनबरिया भीड़पर दऽ होइत, मन्दिर लग दऽ नदी कात धरि अयलैक सभ आ ओतऽसँ पयर छूबि सभ घूरि गेलैक । मोटरी-बक्सा लऽ मखना पहिने स्टेशन चल गेल छलैक । नदी पार करबा लेल नावक मांगीपर पयर दैत काल प्रकाशकेँ लगलैक जेना पटना नहि जा रहल हो, कतहु दूर– बहुत दूर चलल जा रहल हो आ गाम छूटल जाइत हो । मांगीपर ठाढ़ भेल गाम दिस एकटक तकैत रहल अन्हारमे मुदा अन्हारोमे सभ टा सुझैत रहलैक– आङनक कोनटा लग कनैत माय, दरबज्जापर हताश, भीजल आँखि लेने बैसल बाबूजी आ सहमल उदास धीया-पूतासभ ।

मुदा मलहा टोकि दैत छैक– ''घाट आबि गेल मालिक !''

प्रकाश उतरैत अछि आ पाकिटसँ चौअन्नी बहार कऽ मलहाकेँ दैत छैक । ओ प्रसन्न होइत पुछैत छैक– ''फेर कहिया आयब मालिक ?''

ओकर प्रश्नक उत्तर नहि दऽ ओ आगू बढ़ैत अछि । उत्तर देब आवश्यक नहि बुझाइत छैक । मुदा जेना-जेना आगाँ बढ़ैत अछि, मलहाक प्रश्न बेर-बेर मोनमे गूंजि उठैत छैक– 'फेर कहिया आयब ? फेर कहिया आयब ?' आब स्पष्ट बुझाइत छैक जे सभक मोनमे यैह प्रश्न छलैक । कोनटा लग कनैत ठाढ़ि मायक आँखिमे, दरबज्जापर उदास बैसल बाबूजीक मोनमे आ नदी कात धरि अरियातैत भाइ-बहीनक मोनमे । प्रकाश जेना सभकेँ उत्तर दैत बाजि उठैत अछि– ''आयब, जल्दीए आयब ।''

फेर अपने हँसी लागि जाइत छैक । एना एकसरे बाटपर जाइत ओ ककर प्रश्नक उत्तर दऽ रहल छैक ! क्यो सुनतैक आ देखतैक तँ बताह कहतैक । ओ डेग जल्दी-जल्दी बढ़बैत अछि ।

ट्रेनमे नीक बर्थ भेटि जाइत छैक । राति भरि आरामसँ सुतैत अछि आ भोरे स्टीमरक जलहवा खाइत यात्राक स्वाभाविक थकनीकेँ झाड़बाक चेष्टा करैत अछि । जहाजक उपरका तल्लामे, रेलिंग लग ठाढ़ जलहवाक शीतल स्पर्श अपन चेहरापर अनुभव करैत अछि । बड़ी काल धरि एही अनुभवक सुख प्राप्त करैत ठाढ़ रहैत अछि ।

चाह पीबाक इच्छा होइत छैक । टी-स्टाल दिस जयबा लेल घुरैत अछि । सामनेसँ आबि रहल स्त्रीकेँ देखि चौंकैत अछि । एक टा परिचित आकृति । ओहो अवाक् ठाढ़ि छैक । दस वर्षक अन्तरालक बाद दुनू अप्रत्याशित रूपेँ सामने छल

–''तोँ...अहाँ...शोभा...'' प्रकाश एकाएक दस वर्षक बाद उचित सम्बोधन निश्चित नहि कऽ पबैत अछि ।

–''हँ, हमही छी । आब चिन्हबो ने करैत छैँ ?'' शोभाक समक्ष प्रायः एहन कोनो दिक्कति नहि छलैक ।

–''चिन्हबौक ने किएक ? खाली आश्चर्य भऽ रहल एहि संयोगपर । दस वर्षक पश्चात्, एना अकस्मात् । विश्वासे नहि भऽ रहल अछि हमरा जे तोँही छैँ !'' शोभाक स्वाभाविक स्वर सुनि प्रकाशो सहज होइत बाजल ।

फेर दुनू चुप्प, जेना आगू बजबा लेल किछु बचले नहि हो ! एक बेर प्रकाश नीक जकाँ शोभाकेँ देखैत छैक– भरल सीथ, भरल देह आ दुनू हाथक दू टा आङुर पकड़ने दू टा बच्चा । प्रकाशकेँ हँसी सुझैत छैक । बच्चासभ दिस संकेत करैत पुछैत छैक– ''आरो छौक ?''

शोभा सेहो हँसऽ लगैत छैक– ''नहि । यैह दुनू अछि ।''

–''बस !'' प्रकाश जेना हतोत्साह होयबाक भंगिमा बनबैत कहैत छैक आ दुनू भभाकऽ हँसैत अछि । हँसैत-हँसैत एहि बेर शोभा टोकैत छैक– ''तोरा कै टा छौक ?''

–''दू टा हमरो । पछुआयल हमहूँ नहि छी ।'' प्रकाशक उत्तरसँ दुनूकेँ फेर हँसी लागि जाइत छैक । फेर चुप्प, जेना आगू गप्प करबा लेल किछु नहि बाँचल हो, एमदम खाली भऽ गेल होअय दुनू ।

–''पटनेमे छैँ ?'' प्रकाश फेर प्रश्न करैत छैक ।

–''हँ, एतै नोकरी छनि हुनकर ।'' शोभाक उत्तर पूर्ववत् स्वाभाविक छैक ।

प्रकाश फेर चुप्प भऽ जाइत अछि । शोभा सेहो चुप्प छैक । खाली जहाजक गति आ भारसँ गंगामे दूर-दूर धरि हिलकोर ऊठि रहल छैक । सामने महेन्द्रू घाट देखाइ देबऽ लगैत छैक ।

–''एक टा बात कहियौ ? अधलाह तँ नहि लगतौक ?'' एहि बेर शोभाक स्वर बदलल छैक ।

–''एक टा किएक, दस टा कहऽ । अधलाह किएक लागत ?'' प्रकाशकेँ एक टा सुखद अनुभव होबऽ लगैत छैक संभाव्य प्रश्नक सम्बन्धमे ।

–''बड़का लेखक भऽ गेल छेँ तोँ, हमरा बूझल अछि । एना खिस्सा लिखिकऽ हमर सुखी जीवनमे संशयक जहर घोरलासँ की भेटैत छौक तोरा ? एक टा विवाहित स्त्री छी हम । दू सन्तानक माय छी । किछु दायित्व अछि हमर । खाली खिस्सा लिखि-लिखिकऽ बहादुरी देखौने की होयतौक : एतेक बहादुर छलेँ तँ गुण्डासभक डरेँ भागि किएक पड़यलेँ ? ओही दिन बहादुरी देखबितेँ ? आब अपन कायरताकेँ खिस्सा-पिहानीक आदर्शवादी भावुकतासँ झँपबाक चेष्टा नहि कर । अपन छोट-छीन दुनियाँमे सुखसँ रहऽ दे हमरा ।''

प्रकाशकेँ कोनो उत्तर नहि फुरैत छैक । शोभा उत्तरक प्रतीक्षो नहि करैत छैक । दुनू बच्चाक आङुर पकड़ने घुरैत छैक आ जहाजक दोसर दिस चल जाइत छैक । विदाक कोनो औपचारिकता नहि । दस वर्ष पूर्वक विदा जेहन नाटकीय आ अकस्मात् भेल छलैक, आजुक भेँटक अन्त सेहो तेहने नाटकीय होइत छैक । प्रायः ई अन्तिम विदा । एकर बाद भेँट भेलोपर कहबा-सुनबा लेल की रहि गेल छैक ? अपन-अपन सीमामे घुरि गेल अछि दुनू आ भविष्यमे भेँट भेलोपर प्रायः आजुक सन स्वाभाविक गप्प नहि भऽ सकतैक, जेना दस वर्षक अन्तराल आइधरि नहि पुरल छलैक, मुदा आइ एक्के क्षणमे दस वर्ष बीति गेल छलैक । आजुक बाद भेँट भेलापर प्रायः दुनू अपरिचित जकाँ आगू बढ़ि जायत ।

जहाज घाटपर लागि रहल छैक । अपन सामान कुलीकेँ दऽ सीढ़ीसँ नीचाँ उतरैत काल प्रकाशकेँ इच्छा होइत छैक जे शोभाकेँ ताकिकऽ कहैक जे तोहर जिनगीमे शंकाक जहर घोरब हमर कथाक उद्देश्य कहियो नहि छल । पछिला हप्ता प्रकाशित जाहि कथाक तोँ संकेत कयने छेँ, ओ तँ मात्र अभिव्यक्ति छल बहुत रास ओहि बिन-कहल बातक जे कहियो तोरा नहि कहि सकलियौक । ओ तँ मात्र स्वीकृति छल एक टा अपराधक जे तोहर समक्ष भेल छल, आइसँ दस वर्ष पूर्व जहिया गुण्डासभक कथनकेँ सत्य मानिकऽ ओकर डरेँ हम भागि पड़ायल रही । तोरापर लांछना लगायब, तोहर सुखमे बाधक होयब कहियो अभीष्ट नहि छल । आइयो नहि अछि । प्रतिज्ञा करैत छियौक जे आइसँ कोनो कथामे प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ, कहियो तोहर चर्चा नहि करबौक । आइसँ अपन जीवन-कथाक ओ अंश फाड़ि रहल छी जाहिसँ तोँ सम्बद्ध छेँ । ओ कथा आब हमर नहि रहल जाहिमे तोहर चर्चा छौक ।

मुदा प्रकाशक ई गप्प सुनबा लेल शोभा कतहु नजरि नहि अबैत छैक । भीड़मे कतहु अदृश्य भऽ गेलि छैक । प्रकाशक कुली आगाँ भागि गेल छैक । सामान हेड़ा जयबाक आशंकासँ ओहो जल्दी-जल्दी रिक्सा-पड़ाव दिस बढ़ैत अछि ।

प्रकाश अपन डेरा दिस नहि जाकऽ सासुरक डेरा दिस बढ़ैत अछि । सोचैत अछि जे मीराकेँ लऽ कऽ अपन डेरा जायत । बहुत दिन भऽ गेलैक मिनी-गुड्डूकेँ देखना । आ मीराकेँ मानऽ पड़तैक, आइ कोनो बहाना नहि सुनतैक ।

डेरा पहुँचिते हल्ला मचि जाइत छैक । मिनी दौड़िकऽ कोरामे चढ़ि जाइत छैक । अंजू उलहन दैत छैक– ''आब तँ बड़का लोक भऽ गेल छी अहाँ ! दर्शनो दुर्लभ !''

छोटकी प्रभा सेहो बुढ़िया जकाँ बाजि उठैत छैक– ''हमरासभसँ अहाँकेँ मतलबे की ?''

प्रकाश प्रभाक गाल थपथपा दैत छैक आ अंजूकेँ हँसबैत कहैत छैक– ''एतेक तामस नहि मेम साहेब, सभ टा तामस हमरेपर झाड़ि देब तँ 'हुनका ले' की बाँचत ? किछु बचाकऽ राखू, बेर-कुबेर काज देत ।'

अंजू लजाकऽ कहैत छैक– ''जाउ, हम अहाँसँ नहि बजैत छी !''

पुष्पा गुमसुम ठाढ़ि मुसकियाइत छैक । प्रकाश ओकरो टोकैत छैक– ''की बात छैक ? पुष्पा रानी बड़ प्रसन्न छथि... ।''

पुष्पासँ पहिने अंजू टपकि पड़ैत छैक– ''बाते तेहने छैक । खुशी तँ होयबे करतैक ।'

पुष्पा अंजूकेँ डँटैत छैक– ''मारबौ । चुप रह ।''

मुदा अंजू चुप्प नहि रहैत छैक– ''बस, एक मास ! तकर बाद बरियाती आ रशनचौकी ! बुझलिऐक ?''

प्रकाशकेँ प्रसन्नता होइत छैक । पुष्पाकेँ खौँझबैत कहैत छैक– ''तेँ एतेक हँसी छिड़िया रहलि छथि पहिनेसँ ! मुदा हमरा तँ भारी मोश्किल भेल । आब हमर फरमाइशपर 'पिया तोँ से नैना लागे रे' के सुनाओत ? आब तँ 'पियाजी' सँ फुरसति कहाँ ?

–''जाउ, अहाँ तँ बड़ खराब छी !'' पुष्पा लजाकऽ पड़ा जाइत छैक ।

प्रकाश भीतर आबि सासु-ससुरकेँ प्रणाम करैत अछि । ससुर अस्पष्ट किछु आशीर्वाद दैत छथिन मुदा सासु स्पष्ट उलहन दऽ बैसैत छथिन– ''बुझनुक भऽकऽ एहनो क्यो काज करैत अछि ? बिना कोनो खबरिकेँ गाम चल गेलाह । हमरालोकनि कतेक चिंतामे रही !''

प्रकाश एहि उलहनकेँ स्वीकार करैत भीतर ओहि कोठलीमे अबैत अछि जाहिमे ओकर कोबर बनल छलैक । मीरा पलंग लग ठाढ़ि छैक । प्रकाश चुपचाप ओतऽ बैसि जूताक फीता खोलऽ लगैत अछि ।

–'हुनकालोकनिक जयबाक काल हमरा खबरि कऽ बजा नहि सकैत छलहुँ ?'' मीराक प्रश्नमे स्पष्ट आक्रोश छैक ।

–''कोन फायदा ? प्रकाशक मुँहसँ मीरेक मुँहसँ एक दिन सुनल उत्तर बहार भऽ जाइत छैक अनायास । मीरा छटपटा उठैत छैक आ एक बेर आहत दृष्टिएँ ओकरा दिस ताकि कोठलीसँ बाहर चल जाइत छैक ।

प्रकाश झगड़ा करऽ नहि आयल छल मुदा तीर छूटि गेल छलैक, जे मीराक अन्तरकेँ बेधि गेल छलैक । एहि 'शीत-युद्ध'क अन्त आब आइ नहि भऽ सकलैक । एखन ई आर चलतैक– एहिना । प्रकाश बूझि गेल छल । थाकल आ पस्त भेल बिछौनपर पड़ि रहल ।

मीरा एक कप चाह लेने फेर कोठलीमे अयलैक । ऊठिकऽ चाह लऽ एक घोँट पीबैत प्रकाश पुछलकैक– ''चलब ?''

मीरा कोनो उत्तर नहि देलकैक । मुदा ओकर मुद्रासँ स्पष्ट छलैक जे ओकरा कोनो विरोध नहि छलैक ।

मीरा बदहवास भऽ गेल छलैक मिनी आ गुड्डूकेँ सम्हारैत-सम्हारैत । दुनू एक्के सुरे कानि रहल छलैक– लगातार । पहिने मनौलकैक-पुचकारलकैक, कोरामे घण्टो टङने रहलैक आ फेर लोहछिकऽ दुनूकेँ छरपिटा देलकैक तड़ातड़ । कानब आर तेज भऽ गेलैक आ एखनधरि ओहिना चलि रहल छैक । मीराकेँ प्रकाशपर क्रोध होइत छैक, एना कतहु डेरा बदलल गेलैक अछि, सेहो साँझकेँ ? ने कोनो व्यवस्था, नें सुविधा । सामानक संग झट आगू पठा देलकैक दू घंटा पहिने आ अपने नहि जानि कतऽ लटकल छैक एखनधरि ! अबोध धीया-पूताक कोन कसूर ? गर्मियेँ जनमारा छैक । मीराक अपन माथ सेहो चनकि रहल छैक । मुदा तकरा बिसरि दुनू बेटीकेँ सम्हारबामे अपस्याँत भेलि अछि आ ओही चेष्टामे अपनो पसेनामे तर-बतर भेलि अछि । मिनी-गुड्डू पसेनासँ भीजल छैक । सभ टा कपड़ा खोलिकऽ फेकि देने छैक । तैयो पसेनाक तराड़ा चलि रहल छैक । सामान सभ ओहिना

जकथक पड़ल छैक । कोनो वस्तु सरिअयबाक कोन कथा, खोलिकऽ पर्यन्त नहि रखने छैक । फुरसतिए नहि भेलैक अछि । दुनू तखनसँ प्राणघात कऽ रहलि छैक आ मीरा ओहिमे व्यस्त अछि ।

एहिसँ तँ पहिले डेरा नीक छलैक । सभ टा व्यवस्था छलैक । दोस्तीक झोँकमे झट फैसला कऽ लेलनि । ने आगू देखलनि, ने पाछू । एक टा पंखा किरायापर छलनि तकरो घुरा देलथिन जे एहि कोठलीमे पंखा लगले छैक । तेहन निश्चिन्त भऽ गेलाह जेना अपने कीनिकऽ लगा गेल होथि ! कहैत-कहैत हारि गेलियनि जे कमसँ कम एक टा पंखा कीनि लियऽ, मुदा के सुनैत अछि ! 'किरायापर काज चलिए जाइत अछि !' वाह रे काज चलौनिहार ! सभ चीज उधार, सभ चीज किरायापर । मीरा मोनेमोन प्रकाशपर लोहछैत रहलि ।

मुदा एकरो सभकेँ अगुताइ देखियौक । एक दिन ठहरि जैतैक तँ कोन एहन अन्हेर भऽ जैतैक ! पंखा लैए जयबाक छलैक तँ लऽ जाइत भोरे । हमरालोकनि जबर्दस्ती थोड़े रोकि लितिऐक ? मीरा तँ खोलहि कालमे रोकने छलैक मिस्त्रीकेँ जे ''एखन नहि खोल, हुनका आबऽ दहुन ।'' मुदा के सुनैत छैक ?

–''मालिकक हुक्म छनि ।'' मिस्त्री कहलकैक ।

–''कोन मालिक ? प्रमोद बाबू ?'' मीरा प्रश्न कयलकैक ।

–''नहि, हुनकर बाबू जी !'' मिस्त्री पूर्ववत् अपन काज करैत कहलकैक ।

मीराकेँ अपमान जकाँ लगलैक । एक टा मामूली पंखा अनुरोध कयलोपर खोलिकऽ लऽ गेलैक । जखन एहि डेरामे आयल रहय, प्रमोदकेँ देखने रहैक नीचाँमे । मुदा तकर बाद ओ निपत्ता भऽ गेलैक । भेटितैक तँ ओकरे पुछितैक जे ई तँ नीक स्वागत कऽ रहल छी !

मुदा प्रमोद कतहु चल गेल छलैक ? भऽ सकैत छैक, जानि-बूझिकऽ टरि गेल हो । ओकर माँ-बाबू जी सेहो जा चुकल छथिन अपन नवका डेरा । आब ओ एहि नव डेरामे एकसरि रहि गेलि अछि आ दुनू बेटी गर्मीसँ छटपटा कऽ जान दऽ रहलि छैक । आठ बाजऽ जा रहल छैक आ एखनधरि प्रकाशक पता नहि छैक । सामान ओहिना जकथक पड़ल छैक आ चूल्हि धरि नहि पजरल छैक ।

नीचाँ किछु आहट बुझाइत छैक । चारि टा रिक्शापर बाँकी सभ सामान लेने प्रकाश आ कृष्णा आबि गेल छैक । कृष्णा सभ टा सामान ऊपर आनिकऽ रखैत छैक आ अन्तमे प्रकाशो ऊपर अबैत छैक ।

—''एहिना लोक डेरा बदलैत अछि ?'' प्रकाशकेँ देखिते मीरा बमकि उठैत छैक, ईहो बिसरिकऽ जे दुनूकेँ नीक जकाँ मुँहाबज्जी नहि छैक ।

—''की भेल ?'' अकचकाइत प्रकाश पुछैत छैक ।

—''होयत की ? तीन घण्टासँ उसनल जा रहल छी बाल-बच्चा समेत । अपने निश्चिन्तसँ आबि रहल छी आ हमरा तीन घण्टा पहिने जबर्दस्ती आगू ठेलि देलहुँ । कमसँ कम देखि तँ लितिऐक जे घर रहबा जोगर छैक वा नहि !'' मीरा ओहिना बमकैत रहलैक ।

—''घरकेँ की भेलैक अछि ? हम तँ सभ टा देखि-सुनि, ठीक-ठाक कऽ गेल रही भोरे ।''

—''खूब ठीक कऽ गेल रही ! एक टा पंखा घरमे छल, तकरो घुरा देलिऐक जे नाहक किराया लागत । ओहि कोठलीमे पंखा लगले छैक । खूब लागल अछि पंखा ! धीया-पूता एकदम उसना गेल तखनसँ !''

—''पंखा नहि छैक ? प्रमोद तँ कहने छल जे पंखा लगले रहत । लगयबाक नहि काज ।'' प्रकाश अकचकाइत पुछलकैक ।

—''लागल तँ ठीके छलैक । मुदा हमर अयलापर खोलि कऽ लऽ गेल ।''

—''के ? प्रमोद ?''

—''प्रमोद नहि, मिस्त्री । कहलक जे प्रमोदक बाबूजीक आज्ञा छनि ।'' मीरा सभ टा सूचना दैत कहलकैक ।

—''प्रमोदो छल ?'' प्रकाश एक टा कष्टकर आश्चर्यमे पड़ि प्रश्न करैत छैक ।

—''देखने तँ छलिऐक । मुदा एम्हर नहि आयल ।''

प्रकाशक मोनमे एक टा मूइल साँप फेर फनफना उठलैक । ई व्यवहार अप्रत्याशित छलैक । पंखा नहि देबाक छलैक, तँ स्पष्ट कहितैक । ओ अपन पंखा नहि घुरबितैक । बड़ आवश्यक छलैक तँ भोरे खोलिकऽ लऽ जैतैक । मुदा एना ओकर अनुपस्थितिमे पंखा खोलिकऽ लऽ जायब ओकरा एकदम अपमानजनक लगलैक । इच्छा भेलैक जे फेर एखने एहि डेरासँ पुरना डेरामे घूरि जाय । मुदा ए[illegible] कयलासँ स्थिति आर हास्यास्पद भऽ जयतैक, तेँ मोनक बातकेँ दबा गेल[illegible] कृष्णाकेँ सामान सरिअयबाक तथा किछु खयबा-पीबाक व्यवस्था करबाक आदे[illegible]

दऽ ओ मिनी-गुड्डूकेँ कोरामे उठबैत कहलकैक— ''आउ, हमर संग नीचाँ आउ ! 'ड्राइङ्ग रूम'मे पंखा छैक । ओतहि बैसिकऽ ठण्ढा लियऽ ।''

मीरा संगे-संग नीचाँ अयलैक । मिनी-गुड्डूकेँ नीचाँ उतारि, दरबज्जा ठेलऽ लागल 'ड्राइङ्ग रूम'क तँ किछु अवरोध बुझयलैक । नीचाँ आङनमे अन्हार छलैक । हाथसँ टोहियाकऽ देखलकैक तँ दरबज्जाक जिंजीरमे एक टा ताला लटकल बुझयलैक ।

प्रकाश एक बेर क्रोधसँ ऊपरसँ नीचाँ धरि थरथरा भेल । एकदम असह्य व्यवहार । एक प्रकारक धोखा । एही ड्राइंग रूमक संयुक्त उपयोगक आश्वासन छलैक बेर-कुबेर । ऊपर मात्र एके टा कोठली आ भनसाघर छलैक । उपयोगक बात तँ दूर जाय, कमसँ कम आइ राति तँ एहि गर्मीसँ रक्षा होइतैक ? अन्हारमे मीराक आकृति प्रकाश नहि देखि पबैत छैक । नहि जानि, की सोचि रहलि छैक ? मुदा मिनी-गुड्डू अन्हारमे नीचाँ ठाढ़ि भेल-भेल अगुता कऽ फेर कानऽ लगैत छैक, जकरा चुप्प करबा लेल प्रकाश फेरसँ कोरामे उठा लैत छैक ।

प्रकाश आब सभ तरहेँ निरुपाय पबैत अछि अपनाकेँ । अन्हारमे मीराकेँ सम्बोधित करैत कहैत छैक— ''जाइ छी पुरने 'डीलर' लग । भरिसक वैह पंखा फेर किरायापर भेटि जायत ।''

—''ओ भेटियो जायत तँ एतेक रातिकेँ पंखा 'फिट' के करत ? राति भरि लेल एक टा टेबुल-फैन लऽ आनू ओकरेसँ ।'' मीरा सुझाव दैत छैक ।

—''बेस, जाइ छी लऽ आबऽ । ताबत अहाँ मिनी-गुड्डूकेँ छतपर लऽ जैयौक । कनियो हवा तँ लगतैक, चिचियाकऽ प्राण दऽ रहलि अछि दुनू ।''

प्रकाश चलबाक उपक्रम करैत अछि । मुदा मीरा टोकि दैत छैक— ''बुझाइत अछि जेना टेलीफोन बाहरे राखल अछि, ओही कोनमे 'स्टैण्ड' पर । एक टा उपकार करैत गेल छथि । पहिने टेलीफोनसँ पूछि तँ लियौक जे दोकान फूजल छैक वा नहि आ यदि खूजल छैक तँ पंखा भेटत कि नहि !''

प्रकाश गौर कऽ देखैत अछि तँ कोनमे 'स्टैण्ड' पर राखल टेलीफोन देखाइ पड़ि जाइत छैक । एहि अप्रत्याशित कृपापर गदगद होइत झट आगू बढ़ैत अछि । अन्हारेमे 'रिसीवर' उठा अन्दाजसँ डायल करऽ लगैत अछि । मुदा हाथमे किछु ठेकैत छैक । छूबिकऽ देखैत अछि तँ छोटछीन ताला बुझाइत छैक । अर्थात् एतऽ मात्र आबऽवला टेलीफोन रिसीव कऽ सकैत छैक, एतऽ सँ टेलीफोन नहि कयल जा

सकैत छैक । प्रकाश चुपचाप रिसीवर राखि दैत छैक । आब कोनो वस्तुपर आश्चर्य नहि होइत छैक । ओ चुपचाप बाहर जाय लगैत अछि ।

–"की भेल ?" मीरा टोकैत छैक ।

–"ताला !" प्रकाश संक्षिप्त उत्तर दैत छैक ।

मीरा बूझि जाइत छैक । फेर कोनो प्रश्न नहि करैत छैक । कनैत गुड्डूकें कोरामे लऽ मिनीक हाथ पकड़ने ऊपर चल जाइत छैक । प्रकाश शीघ्रतासँ बाहर लपकैत अछि ।

भाग्यवश दोकान खूजल भेटैत छैक । एक टा पेडस्टल फैन किरायापर भेटि जाइत छैक जकरा रिक्शापर लादिकऽ प्रकाश शीघ्रतापूर्वक डेरा घुरैत अछि । नीचेसँ कृष्णाकें हाक दैत छैक । कृष्णा आबिकऽ पंखा ऊपर लऽ जाइत छैक । प्रकाश सेहो पाछू-पाछू भीतर अबैत अछि । दरबज्जा नीक जकाँ बन्द कऽ जहिना सीढ़ी दिस बढ़ैत अछि, अन्हारमे पयरसँ किछु ठेकि जाइत छैक । प्रकाश चेहाकऽ पाछू हँटि जाइत अछि । गौरसँ देखलापर पता चलैत छैक जे क्यो आङनक फर्शपर पटिया बिछाकऽ सूतल छैक । प्रकाश झुकिकऽ चेहरा देखैत छैक तँ चीन्हि जाइत छैक । शिवेन्द्र छैक– प्रमोदक पितियौत । प्रमोदक पित्ती गाममे खेती-बाड़ी करैत छैक । शिवेन्द्रकें कोनो आफिसमे छोटछीन नोकरी भेटि गेल छैक, सैह ज्वाइन करऽ आयल छैक । भोरे प्रमोद अपने कहने छलैक प्रकाशकें । ओकरा एना फर्शपर सूतल देखि प्रकाशक सभ टा आक्रोश जेना बिला जाइत छैक आ अन्हारमे ओकर ठोरपर एक टा विचित्र मुसकी पसरि जाइत छैक ।

पुष्पाकें सभ टा बीध करबैत काल मीरा एक-एक क्षणकें फेरसँ जीबैत रहलि । आइसँ छौ वर्ष पूर्व यैह मकान छलैक, एही ठाम मण्डप छलैक आ मण्डपमे कनियाँ बनलि पुष्पा नहि, मीरा स्वयं छलैक आ सभ टा बीध आ मंत्र पढ़बामे गामवाली काकी ओकर मदति कऽ रहलि छलैक । आइ, मीरा अनुभवी जकाँ स्वयं पुष्पाकें सभ टा बीध करा रहलि छैक आ तकर संग-संग छौ बरख पहिलुक प्रत्येक क्षणकें फेरसँ जीबि रहलि अछि । एहि बीतल क्षणक जीबाक प्रक्रियामे ओकर आकृतिपर पाँच-छौ माससँ ठहरल तनावक रेखा एक-एक कऽ बिलायल जा रहल छैक आ ओकर आकृति सहज भेल चल जाइत छैक । जेना वयसक छौ वर्ष फेरसँ

घटि गेल होइ आ ओ पुनः नवकनियाँ भऽ गेलि हो ! नहि, छौवे वर्ष नहि, आरो बेसी । किएक तँ एहि छौ वर्षमे मीरा जेना बारह वर्षक यंत्रणा भोगि चुकल अछि, मुदा आइ ओ सभ टा वर्ष एक-एक कऽ घूरि गेल छलैक आ एक टा नवकनियाँ मण्डपमे बैसलि छलैक– स्वप्नक हिलकोरमे उधिआइत आ भविष्यक सुखद कल्पनासँ आह्लादित । आइ फेर पुष्पाक हाथ वरक हाथमे दैत काल, गठबन्धन कऽ अग्निक फेरा लगबैत काल, वैह सिहरन, वैह आह्लाद मीराकें छूबि रहल छैक आ ओकर आँखि बेर-बेर भीड़मे प्रकाशकें ताकऽ लगैत छैक । मुदा प्रकाश नहि जानि कोम्हर व्यस्त छैक । ओठंगर कुटबा काल प्रकाश आयल छलैक तँ वेदी तर पुष्पाक बगलमे बैसलि मीराक सहज आकृतिपर एक टा लजायल भाव पसरि गेल छलैक । मुदा प्रकाश भरिसक किछु नहि देखलकैक । मीरा दिस तकबे नहि कयलकैक । बीध समाप्त कऽ चुपचाप बाहर चल गेलैक आ मीराक सहज आकृतिपर फेर तनावक रेखा जनमऽ लगलैक । घुटन, तनाव आ आक्रोश सभ अपन-अपन स्थानपर घुरऽ लगलैक । मुदा आइ, आइ भरि मीरा आन किछुओ मोन नहि राखऽ चाहैत छलि । चाहैत छलि एकदम सहज, स्वप्नयुक्त किछु क्षण जीयब । एतबा अधिकार ओकरासँ क्यो नहि छीनि सकैत छैक । प्रकाशो नहि । भविष्यक ओ स्वप्न सत्य नहि भऽ सकलैक, प्रायः होयबो नहि करतैक । मुदा ओ स्वप्न जे आइ जरिकऽ, सड़िकऽ मात्र एक टा दुर्गन्ध पसारैत छैक ओकर जीवनमे, ताहि स्वप्नकें पुनः ओकर जीवित आ सुगन्धित क्षणमे जीबाक जे अवसर भेटैत छैक आइ, तकरा कोना छोड़ि देतैक मीरा– मीरा, प्रकाशक पत्नी मीरा नहि, मिनी-गुड्डूक माय मीरा नहि, कुमारि मीरा मण्डपमे घोघ काढ़ने बैसलि अछि, गामबाली काकी ओकर अंग-अंगकें नीक जकाँ झाँपि देने छथिन मुदा तैयो जेना ओकर रोम-रोम सभ टा सुनि रहल छैक ।

–"वर सुन्नर छैक !"

–"पढ़ऽमे बड़ तेज छैक । एम.ए. मे छैक !"

–"खानदानो पैघ छैक । बड़ भागवाली अछि मीरा ।"

आ बड़का भागवली मीरा ई सभ टा गप्प अपन रोम-रोमसँ पीबैत रहलि, सुख-स्वप्नक झूला झुलैत रहलि । आइ फेर सभ टा बिसरि मीरा ओहि झूलामे झूलि रहलि अछि । आइ आर किछुओ मोन नहि राखऽ चाहैत अछि ।

मुदा तखने माय दौड़लि अबैत छैक आ मीराक कानमे कहि जाइत छैक– "सभटा बीध-बाध जल्दी खतम कर । मंजूक बाबूजीक हालति बड़ खराब छैक, कहुना राति खेपि जाथि । पड़ोसवला गप्प छैक ।

आ मीरा फेर वर्तमानमे घुरि अबैत अछि । जल्दी-जल्दी सभ टा बीध समाप्त करबैत अछि । वर-कनियाँकेँ घर कऽ पाहुन-परककेँ खुआ-पिया निश्चिन्त होइत अछि । बरियाती पहिने खा चुकल छैक । चहल-पहलसँ भरल आङन जखन थाकल-ठेहिआयल सूति रहैत छैक, तँ मीराक आँखि थकनीसँ चूर बन्द होबऽ लगैत छैक । मुदा तकरा जबर्दस्ती खूजल रखैत अछि मीरा आ बगलवला 'क्वार्टर'मे अबैत अछि । माय-बाबूजीक संग प्रकाशो पहिनेसँ ओतऽ उपस्थित छैक । मंजू, मंजू दीदीक पिता, बनर्जी साहेब, राखाल बनर्जी जीवनक अन्तिम साँस गनि रहल छथि आ हुनकर तीन संतान कनैत, आशंकासँ त्रस्त बिछौन लग ठाढ़ छनि । सभसँ पैघ नीना– सतरह-अठारह बरख, अविवाहित, तकरासँ छोट सपन– मैट्रिकक विद्यार्थी आ सभसँ छोट खोकन– मात्र बाहर वर्षक । सभसँ जेठ मंजू सासुर छनि ।

मीराकेँ बनर्जी मौसाक जीवनक एक टा सुनल घटना फेर मोन पड़ऽ लगैत छैक । मंजू दीदीक माय, ओकर मायकेँ दीदी कहैत छलैक, तेँ मीरा सभ बहीन, मौसी-मौसाक सम्बन्ध रखने छलैक बच्चेसँ । मुदा मौसी एक दिन सभ टा सम्बन्ध तोड़ि चल गेल छलैक– नहि जानि कोन बातपर । सभ कहैत छलैक– जूआ । हँ, बनर्जी मौसा जुआ खेलाइत छलैक । सभ टा दरमाहा जूआमे हारि अबैत छलैक । अपन मौसी सहैत गेलैक, मुदा एक दिन सहबाक सभ सीमा समाप्त भऽ गेलैक । अपन मौसी सहैत गेलैक, मुदा एक दिन सहबाक सभ सीमा समाप्त भऽ गेलैक आ सभसँ छोट बेटा खोकनक हाथ सन्तानकेँ भूखल छटपटाइत नहि देखि भेलैक आ सभसँ छोट बेटा खोकनक हाथ पकड़ि ओ घरसँ चल गेलैक सदाक लेल ।

मौसा-मौसीक प्रेम-विवाह छलैक । सौंसे मोहल्लासँ सूनिकऽ मीरा सेहो ई गप्प जनैत छलैक । बनर्जी मौसा एहि प्रेम-विवाह लेल अपन प्रतिष्ठित परिवार, धन-सम्पत्ति छोड़ि देने छलैक– ईहो सुनने छलैक मीरा । मुदा मौसी घर छोड़िकऽ चल गेलैक आ बनर्जी मौसा ओकरा नहि रोकि सकलैक । जूआ नहि छोड़ि सकलैक, मौसीक देल धीया-पूताक सप्पत सेहो तोड़ि देलकैक ।

मौसी फेर घूरिकऽ नहि अयलैक । दोसर शहरमे छोटछीन नोकरी कऽ लेलकैक । खोकन संग रहलैक । बनर्जी मौसा सेहो भरिसक मनाकऽ आनऽ नहि गेलैक । मान कऽ बैसलैक । जकरा लेल अपन परिवार घर-द्वार सभ छोड़ि देने छलैक तकर एतेक निर्मम उपेक्षा ओ सह्य नहि कऽ सकलैक । मौन साधि लेलकैक । जूआ छूटि गेलैक, दोस्त-महिम छूटि गेलैक । मुदा मौसी घुरिकऽ नहि अयलैक । मंजू दीदीक विवाहोमे नहि अयलैक । मंजू दीदी वरक संग ओतहि जा आशीर्वाद लऽ अयलैक ।

मौसीकेँ घूरऽ पड़लैक । मुदा मौसा ओकरा मना नहि सकलैक । खोकन स्कूल गेल छलैक । घूरिकऽ अयलैक तँ मायकेँ बिछौनपर शान्त पड़लि देखलकैक । देह हिला-डोलाकऽ थाकि गेलैक, मुदा माय किछु नहि बजलैक । डेरायल खोकन जोर-जोरसँ कानऽ लगलैक । अगल-बगलक लोक दौड़लैक । सेरायल, मुर्दा देहकेँ खाटसँ उतारि बीच आङनमे राखि देलकैक । मात्र छौ मास पहिनेक घटना छैक ।

आ, मौसी घूरि अयलैक । चारि टा पड़ोसी एक टा टैक्सीसँ लाश एतऽ पहुँचा देलकैक । खोकन बापक कोरामे आर्त्तनाद करऽ लगलैक । मुदा बनर्जी मौसाक आँखिसँ एको बुन्द नोर नहि खसलैक जेना सभ टा जमिकऽ पाथर भऽ गेल होइ ! सौंसे देह पाथर भऽ गेल होइ ! सभ टा संस्कार कयलकैक अपने हाथे आ चुपचाप बैसि रहलैक । कहबा लेल जेना किछु बाँचले नहि होइ । जेना वाक् छिनने चल गेल होइ ।

आ छौ मासक बाद मौसा स्वयं जयबाक तैयारी कऽ रहल छैक । साँस जोर-जोरसँ चलि रहल छैक । सहमल, कनैत धीया-पूताक नोर सेहो नहि देखि रहल छैक । आइ क्यो रोकि नहि सकतैक जेना ! आइ जेना ओ मौसीकेँ मना लेतैक, ओकर संग भऽ जयतैक । मीरा सोचैत अछि आ भीतरसँ कानि उठैत अछि । नीनाकेँ अपन लग खीचि पीठपर हाथ फेरऽ लगैत छैक । नीना ओकर छातीमे मूड़ी गोँति कानऽ लगैत छैक ।

बाबूजी बेर-बेर नाड़ी देखि रहल छथिन । चेहरापर स्पष्ट चिन्ताक रेखा जागल छनि मुदा तैयो जबर्दस्ती चेहरापर आशापूर्ण भाव देखयबाक चेष्टा कऽ रहल छथि । सपन आ खोकन भयभीत ठाढ़ छैक । माय सिरहना लग बैसलि एकटक बनर्जी मौसाक मुँह देखि रहलि छनि आ आँखिसँ अनवरत नोर खसि रहल छैक ।

अकस्मात् बनर्जी मौसा आँखि खोलि दैत छैक आ चारू कात तकैत छैक जेना ककरो ताकि रहल होइ । माय हुनकर चेहरापर झुकि पुछैत छनि– "ककरा तकैत छिऐ ?"

–"नीना कोथाय ? नीना कोथाय ?" मौसाक आँखि ओहिना चारू कात ककरो तकैत रहैत छैक ।

नीना लग आबि जाइत छैक– 'आमि आची, ऐइ खाने आची बाबा !'

–"चोललाम माँ ! तोमार माँ डाक चे । देखबी, तुइ सबके देखबी ।"

बनर्जी मौसाक गरदनि एक दिस टगि जाइत छनि आ आँखि उनटि जाइत छनि । नीना चीत्कार कऽ छातीपर खसि पड़ैत छनि । बाबूजी नाड़ी छोड़ि ऊठिकऽ ठाढ़ भऽ जाइत छथिन आ धोतीक खूटसँ आँखि पोछऽ लगैत छथिन । सपन दुनू पयर पकड़ि जोर-जोरसँ चिचिआय लगैत छैक । माय अपनो कनैत नीनाकेँ बापक देहपरसँ उठयबाक चेष्टा करैत छैक । मीराकेँ अपन आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छैक । मुदा ओकरा ई देखि आश्चर्य होइत छैक जे बारह वर्षक खोकन, सभसँ छोट खोकन, एकदम नहि कानि रहल छैक । खाटपर मुर्दा पड़ल बापक दिस ताकियो नहि रहल छैक । ओ तँ विचित्र दृष्टिएँ ताखपर राखल भगवानक मूर्त्तिकेँ ताकि रहल छैक । नहि जानि केहन विचित्र भाव छैक ओकर आँखिमे जे मीराकेँ डर होबऽ लगैत छैक । लगैत छैक जेना खोकनक आँखिमे कोनो आगिक लहास ऊठि रहल हो ! अकस्मात् ओ दौड़िकऽ तक्खा दिस जाइत छैक आ ओहिपर राखल मूर्त्तिकेँ उतारि जोरसँ जमीनपर पटकि दैत छैक आ चारू कात छिड़िआयल शीशाक कुन्नीक बीच पड़ल ओहि कागतक फोटोकेँ आग्नेय दृष्टिएँ तकैत रहैत छैक । एतबोसँ सन्तोष नहि होइत छैक । दौड़िकऽ ओहि कुन्नीक बीच पड़ल भगवानक छविकेँ लात लऽकऽ रगड़ऽ लगैत छैक । सौंसे पयर कुन्नी गड़ि जाइत छैक । शोणिते-शोणिताम भऽ जाइत छैक, मुदा तैयो ओ फोटोकेँ ओहिना पयरसँ रगड़ैत रहैत अछि । बाबूजी दौड़िकऽ ओकरा पकड़ि लैत छथिन आ पकड़िकऽ अपना दिस झीकि लैत छथिन । एतेक काल बाद जेना खोकनकेँ होश होइत छैक आ दौड़िकऽ बापक देहपर खसि हिचुकि-हिचुकिकऽ कानऽ लगैत अछि ।

आफिससँ लंच-रूममे सभ प्रकाशकेँ घेरने छलैक । आइए परिणाम निकलल छलैक आ प्रकाश उत्तीर्ण भऽ गेल छल । इंगलैण्डक एकटा इन्स्टीच्यूट द्वारा आयोजित परीक्षाक प्रथम भाग समाप्त कयने छल । दुनू भाग कऽ लेलापर एक टा अतिरिक्त योग्यता भऽ जयतैक जे संभवत: प्रमोशन आदिमे विचार कयल जाइत छैक ।

प्रकाश प्रसन्न छल । मुदा सभ पार्टीक तगादा कऽ रहल छलैक । बनर्जी सभक अगुआ छल– ''तुम तो छिपे रुस्तम निकले यार ! किसी को खबर भी नहीं और इतनी बड़ी बाजी मार दी । हो जाय एक ग्रैण्ड पार्टी ।'

–''पार्टी तँ अहाँ जहिया कही, भऽ जायत बनर्जी साहेब !'' प्रकाश

कहलकनि– ''मुदा एहि परीक्षामे उत्तीर्ण होयब कोनो तेहन उपलब्धि नहि छैक । की होयत एहिसँ ! प्रमोशन लेल सभसँ बेसी की जरूरी छैक, अहाँ सभ जनिते छिऐक ।''

–''पोलसन ।'' शर्मा जोरसँ छड़पिकऽ बाजल ।

सभकेँ हँसी लागि गेलैक मुदा फेर तुरत सभ उदास भऽ गेलैक । शर्माक वाक्यक यथार्थकेँ हँसिकऽ नहि उड़ाओल जा सकैत छलैक ।

–''ये साली 'सुटेबिलिटी क्लौज' अपनी समझमे नहीं आती ।'' वर्मा बाजल– ''बौस खुश तो सुटेबुल, नहीं खुश तो निकम्मा ! ये तो साली एसेसमेण्ट ही पूरी सबजेक्टिव है, आबजेक्टिव हो ही नहीं सकती । फिर हम क्या करें ?''

–''हरदम डिब्बा रखो मक्खन का पाकिटमे ।'' पान चिबबैत शुक्ला कहलकैक आ एक बेर फेर सभकेँ भभाकऽ हँसी लागि गेलैक ।

प्रकाशकेँ अपन कालेजक एक टा प्रोफेसर मोन पड़ि गेलैक, जकरा सभ सनकी कहैत छलैक– मुदा छलैक ओ बड़ तेज । एक दिन भरल क्लासमे कहऽ लगलैक– 'ओ. एण्ड एम. मेथड' का अर्थ जानते हो ? नहीं जानते होगे । इसका अर्थ है– 'वाइल एण्ड मसाज मेथड' । तरक्की का अक्सीर नुस्खा । अमल करोगे तो तरक्की करोगे ।' मुदा ओ प्रोफेसर स्वयं ओहि नुस्खाक इस्तेमाल नहि करैत छलैक । आइ.ए.एस. कम्पीट कऽ छोड़ि देने छलैक जे आत्माक विरुद्ध काज करऽ पड़त । खाली पढ़ैत आ पढ़बैत छलैक । डिपार्टमेंटक अन्य प्रोफेसर ओकरासँ बड़ खिसिआयल रहैत छलैक, हेड ऑफ डिपार्टमेंड सेहो । मुदा ओ ककरो परवाहि नहि करैत छलैक । एक दिन एक टा विभागीय सभामे कहऽ लगलैक– ''पच्चीस साल की उम्र तक आदमी 'आइडियलिस्ट' रहता है– पूरा आदर्शवादी । अपना नुकसान उठाकर भी दूसरों का भला करता है । पचीस से पचास तक आदमी 'हेडोनिस्ट' हो जाता है– पूरा उपयोगितावादी । सिवा अपने भले के और कुछ नहीं सोचता । मगर पचास के बाद आदमी 'सैडिस्ट' हो जाता है । अपना नुकसान उठाकर भी दूसरों का बुरा करना चाहता है ।''

विद्यार्थीसभकेँ बड़ आनन्द भऽ रहल छलैक, मुदा सीनियर प्रोफेसर लोकनिक चेहरा स्याह भऽ गेल छलनि । एकरा लक्ष्य कयलापर अपन बात सम्हारैत ओ बाजल छलैक– ''आपलोग मेरा मतलब नहीं समझ रहे हैं । यानी जो आदर्शवादी हैं, अपना नुकसान उठाकर भी दूसरों का भला करते हैं, वे हमेशा जवान

रहते हैं, पचीस से अधिक उनकी उम्र होती ही नहीं, चाहे उनकी सही उम्र पचास क्यों न हो। इसी प्रकार जो उपयोगितावादी हैं, सिर्फ अपनी भलाई में विश्वास रखते हैं, वे हमेशा प्रौढ़ हैं– पचीस से पचास की उम्रवाले, चाहे उनकी उम्र बीस ही बरस क्यों न हो। सैडिस्ट लोग हमेशा पचास से ऊपरवाले होते हैं। बूढ़े और जिन्दगी से हारे हुए, चाहे उनकी उम्र पच्चीस ही क्यों न हो।''

आइ 'मक्खनबाजी' आ 'पोलसन'क गप्पपर प्रकाशकें अनायास ओहि प्रोफेसरक 'ओ. एण्ड एम. मेथड' तथा आरो गप्पसभ मोन पड़ि गेल छलैक जे अतिशयोक्ति होइतो यथार्थक निकट छलैक।

लंच-टाइम खतम भऽ जाइत छैक। सभ मिलि जल्दी-जल्दी प्रकाशक लेल पार्टीक दिन निश्चित कऽ दैत छैक– अगिला शनि दिन। 'मेनू' बादमे निर्णय कयल जयतैक से फैसला कऽ सभ अपन-अपन विभाग दिस विदा होइत अछि।

विभागक स्थिति आइ-कालिह तनावपूर्ण छैक। सभ विभागक एक्के हालति छैक। कर्मचारी यूनियनमे फूट भऽ गेल छैक आ ताहिसँ मैनेजमेंट फायदा उठा रहल छैक। विभागसभ ऊपरसँ शान्त छैक मुदा भीतरे-भीतर आगि सुनगि रहल छैक। कहियो विस्फोट भऽ सकैत छैक। काज पूर्ववत् उपेक्षित छैक। खाली हल्ला-हंगामा शान्त छैक। कर्मचारी अपन टेबुलपर बैसल रहैत छैक आ काज नहि करैत छैक।

प्रकाशकें लगैत छैक जे आइ देशक प्रधान समस्या यैह छैक। अपन काजक प्रति क्यो प्रतिबद्ध नहि छैक। अपन काज छोड़ि आन सभ काज ओकरा सहज लगैत छैक। टाइपिस्टकें किरानीक काज आसान लगैत छैक आ किरानीकें टाइपिस्टक। ई समस्या खाली वर्गविशेषक नहि छैक। आफिसर हो वा मंत्री, किरानी हो वा इंजीनियर, चपरासी हो वा कुली-मजदूर। मंत्रीकें दोसर मंत्रीक कुर्सीमे विभाग नीक आ लाभदायक बुझाइत छैक आ आफिसरकें दोसर विभागक कुर्सीमे चानीक खजाना सुझैत छैक। इंजीनियरकें आफिसमे मोन नहि लगैत छैक, फील्ड चाहिऐक, फील्ड माने बाहरी आमदनी। डाक्टरकें सरकारी नोकरीक संग प्राइवेट प्रैक्टिसक आज्ञा चाहिऐक, जाहिसँ दुनूकें मिज्झर कऽ सकय। नन-प्रैक्टिसिंगक माने उपास पड़ब। से के लेत बिना विवशताक? मजदूर काज कम करत आ भाषण अधिक। किरानीकें अपन अतिरिक्त आर सभ प्राणी सुखी आ आनन्दित बुझाइ पड़ैत छैक। कारण? अपन काजक प्रति प्रतिबद्धता नहि, कमिटमेन्ट नहि। दोष नोकरीमे नहि, नोकरीक श्रेणीमे नहि, वर्गविशेषमे नहि; दोष मनुक्खमे, मनुक्खक

मात्रमे जे कोनो अतिरिक्त सुविधा लेल तँ प्रस्तुत अछि मुदा कर्त्तव्यपालन हेतु नहि। सिद्धान्त बनाबऽ लेल सभ प्रस्तुत अछि, मुदा पालन लेल क्यो प्रस्तुत नहि। अधिकार चाही, कर्त्तव्य नहि। सुविधा चाही, काज नहि। काज किएक करब, जतबा भेटैत अछि, ओतबामे जे करैत छी सैह बहुत अछि। प्रकाशकें लगैत छैक जेना विशाल भारतीय जनतंत्रक आधारशिले कमजोर पड़ि गेल हो। स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद जनतांत्रिक बनि जयबाक घोषणा। जेना जनतांत्रिक बनबा लेल घोषणा मात्र पर्याप्त हो। जनतंत्र तँ क्रमिक विकाससँ अबितैक, इवोल्युशनसँ अबितैक, एना लदलासँ तँ जनतंत्र नहि आबि सकैत छैक। पार्लियामेंट आ विधानसभामे दिनमे दू बेर 'फ्लोर क्रासिंग'सँ जनतंत्र नहि औतैक। मंत्रिपद लेल सौदाबाजीक संयुक्त मोर्चा बनौलासँ जनतंत्र नहि औतैक। जनतंत्रक लेल तँ चाहिऐक जागरण। अपन अधिकार आ कर्त्तव्यक ज्ञान। मास कन्शसनेस। जकर कोनो लक्षण नहि देखना जा रहल छैक।

फेर प्रकाशकें लगैत छैक जेना बेसी निराशावादी भेल जाइत अछि। वर्तमान उथल-पुथल, राजनीतिक अस्थिरता प्रगतिक चरण सेहो भऽ सकैत छैक। एहि अस्थिरताक बाद एक टा स्थिर आ प्रिय स्थिति आबि सकैत छैक– वास्तविक जनतंत्र। जनतंत्रक वास्तविक मूल्यक प्रति सचेत जनता। वर्गभेद आ सामाजिक विषमताक अन्त करऽवला जागरण।

मुदा फेर लगैत छैक जेना ओ स्वप्नद्रष्टा भऽ रहल अछि। वास्तविक स्थिति एकदम प्रतिकूल दिशामे जा रहल छैक। एहि स्थितिसँ जनतांत्रिक मूल्यक प्रति आस्था आ विश्वासक जन्म होयब असंभव। ई तँ घोर अराजकताक स्थिति छैक, सम्पूर्ण सिद्धान्त, सभ टा मूल्यकें अस्वीकारबाक स्थिति छैक, निराशा आ पराजयबोधसँ उपजल आक्रोशक स्थिति छैक। एहिमे सभ टा समाप्त भऽ जयतैक। समाप्ते भऽ जायब नीक होयतैक। कमसँ कम ओहि समाप्तिक भग्नावशेषपर एक टा नव निर्माणक क्षीण आशा तँ रहतैक।

अपन कुर्सीपर बैसल-बैसल प्रकाश बहुत-किछु सोचि जाइत अछि। बहुत समय बीति जाइत छैक। फेर लगैत छैक जे ओ स्वयं अपन कथनपर अमल कऽ रहल अछि। तखनसँ काज नहि होयबापर एतेक सोचि गेल, मुदा काजमे हाथ नहि लगौलक। असल समस्या यैह छैक। काज नहि होयबापर सोचल आ बाजल बेसी जाइत छैक, कयल बहुत कम जाइत छैक। प्रकाश एक टा फाइल उठा ओहिमे ध्यानस्थ भऽ जाइत अछि।

प्रकाश जखन आफिस छोड़ि डेरा दिस विदा भेल तँ फेर ओकरा मोनमे एक टा तर्क-वितर्क चलि रहल छलैक । ओकरा अपन चिन्तनपर अपने आश्चर्य भऽ रहल छलैक । ओ एना अनार्किस्ट जकाँ किएक सोचऽ लागल छल आइ-काल्हि ? ओ तँ छात्र-जीवनसँ शान्ति, अनुशासन आ व्यवस्थाक पक्षपाती रहल अछि । व्यवस्थाहीन स्थितिक कल्पना ओकर मोनमे कतऽसँ आबि गेलैक ? हिंसक क्रांतिक कल्पनोसँ दूर रहल अछि । रक्तहीन 'ग्लोरियस क्रान्ति' ओकरा सभ दिन बेसी आकर्षित करैत रहलैक अछि ।

फेर लगैत छैक जेना ई विचार अराजकतावादी सिद्धान्तमे विश्वासक कारणेँ नहि, चारू कात पसरल अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार आ हिंसासँ त्राण पयबाक इच्छासँ उपजल छैक । एहि असह्य स्थितिसँ छुटकारा पयबा लेल सम्पूर्ण विनाशक कल्पनो ओकरा आतंकित नहि करैत छैक, किएक तँ ओहि विनाशमे ओकरा नवनिर्माणक आशा आ संभावना देखाइ दैत छैक ।

एही गुनधुनमे डेरा पहुँचि जाइत अछि । डेरा पहुँचिते एकदम प्रसन्न भऽ जाइत अछि– गामसँ बाबूजी आयल छथिन । पयर छूबि प्रश्न करैत छनि– "कखन अयलहुँ ?"

–"तोहर आफिस गेलाक कनियेँ कालक बाद । हमरो किछु काजसभ छल बोर्ड आफिसमे । सभ टा समाप्त कऽ एखने घूरल छी । आठ बजेक जहाजसँ जयबाक विचार अछि ।"

–"से कोना होयत ? आइ जायबाक एतेक जल्दी किएक ? आइए अयलहुँ, आ आइए जायब । जयबेक होयत तँ काल्हि जायब । आइ आराम करू ।"

–"बेस, काल्हिए जायब । तेहन कोनो जल्दी नहि अछि । किछु थाकनियो बुझाइत अछि ।"

बाबूजी बिछौनपर पड़ि रहैत छथिन । प्रकाश कृष्णाकेँ बजा देह-हाथ जतबाक आदेश दैत छैक । कृष्णा देह जाँतऽ लगैत छनि । प्रकाश कपड़ा बदलि फेर लगमे बैसि जाइत छनि । आइ बड़ हल्लुक मोन लागि रहल छैक । पछिला बे माय-बाबूजी सभकेँ डेरासँ गाम चल गेलाक बादेसँ छातीपर एक टा बोझ बुझाइत छलैक । एक टा अपराध-बोधसँ ग्रस्त रहैत छल हरदम । गामसँ पन्द्रह दिन भऽ आयल तैयो ई अपराध-बोध कम नहि भेलैक । मुदा आइ बाबूजीक आबि गेलासँ जेना छातीपरक ओ बोझ उतरि जाइत छैक आ खूब प्रसन्न आ हल्लुक अनुभव करैत अछि ।

–"आफिसक की हाल-चाल छह ?" अकस्मात् बाबूजी प्रश्न करैत छथिन ।

–"ठीके छैक । सभ टा पूर्ववत् ।" प्रकाश उत्तर दैत छनि । मुदा तत्काल आइ परीक्षोत्तीर्ण होयबाक बात स्मरण अबैत छैक । उत्साहित होइत कहैत छनि– "आइ एक टा परीक्षाफल आयल अछि । इंगलैण्डक इन्स्टीच्यूटसँ आयोजित परीक्षा छैक । दू पार्ट छैक । पहिल पार्ट हम पास कऽ गेलहुँ । दूनू पार्ट पास कयलासँ संभवतः प्रमोशन आदिमे किछु सहायता हो ।"

बाबूजी प्रसन्न होइत कहैत छथिन– "तँ दोसरो पार्ट खतम कऽ लैह । कहिया परीक्षा छैक ?"

प्रकाश किछु चिन्तित होइत कहैत छनि– "परीक्षा तँ नवम्बरमे छैक, मुदा फीस एही मासमे जमा करबाक छैक । 500 रुपैया लागत । एखन सभक पछिला बकाया-उधार नहि सधल छैक । सोचैत छी, अगिला साल देब परीक्षा । कोनो खास फर्क नहि पड़त ताहिसँ ।"

बाबूजी सेहो जेना कोनो चिन्तामे डूबि जाइत छथिन । प्रकाशकेँ ई नीक नहि लगैत छैक । विषय बदलबा लेब पूछि दैत छनि– "गामपर की हालचाल ? माय कोना अछि आब ?"

बाबूजी विस्तारपूर्वक सभक विषयमे सुनाबऽ लगैत छथिन आ प्रकाश सुनैत रहैत अछि– बड़ी रातिधरि ।

आफिससँ निकलिकऽ प्रकाश अनायास आकाशवाणी दिस विदा भऽ जाइत अछि । कोनो पूर्व योजना नहि छलैक । मुदा पाँच बजे आफिससँ बहराइत काल इच्छा भेलैक जे कोम्हरो टहलि-घुरि आबी । पयरे टहलैत-टहलैत आकाशवाणी दिस आबि गेल । आकाशवाणीक बोर्ड देखलकैक तँ अनायास विकाससँ भेँट करबाक इच्छा भऽ अयलैक । बहुत दिन भऽ गेल छलैक एम्हर अयना । हातामे पैसिते विकासपर दृष्टि गेलैक, बाहर घासपर बैसल दू टा सहयोगी कर्मचारीक संग चाह पीबि रहल छलैक । हाथक इशारासँ प्रकाशकेँ ओम्हरे बजौलकैक । प्रकाश लग जाकऽ ओकर दुनू संगीकेँ नमस्कार कयलकैक । दुनू परिचित छलैक– श्रीमती

अंजलि सिन्हा आ प्रफुल्ल शर्मा । प्रत्युत्तरमे नमस्कारकेँ स्वीकार करैत प्रकाश लगमे बैसि गेल ।

–"चाह मङबियौक ?" विकास पुछलकैक आ बिना उत्तरक प्रतीक्षा कयने सामनेक फुटपाथी होटलक वेराकेँ हाक देलकैक– "रे गुलटेनमा, एक कप आर ला ।" फेर प्रकाश दिस घुरैत कहलकैक– "बहुत दिन बाद ?"

–"हँ, किछु ओझरा गेल रही । बीचमे गामो गेल रही । अवसर नहि भेटल ।" प्रकाश सफाइ देलकैक ।

–"किछु नव बात आ कि वैह पुरना शीतयुद्ध ?"

विकासकेँ सभ टा बूझल छैक ।

प्रकाश हँसिकऽ रहि जाइत अछि । 'शीत-युद्ध गर्मयुद्धसँ उत्पन्न परिणाम नहि छैक ।' ओ सोचैत अछि– ई तँ ओकर सब्स्टीच्यूट छैक– गर्मयुद्धसँ बेसी भयावह आ कष्टदायक ।

–"की सोचऽ लगलेँ ?" विकास टोकैत छैक ।

–"किछु नहि । सोचैत छलहुँ जे 'शीतयुद्ध'क उचित परिभाषा की होयबाक चाही ?" प्रकाशक बातपर उपस्थित तीनू गोटे हँसऽ लगैत छैक ।

–"किछु लिखबो कयलेँ एम्हर ?" विकास प्रश्न करैत छैक ।

अंजलि सिन्हा बीचेमे बाजि उठैत छैक– "हँ, एम्हर अहाँक कोनो कथा प्रसारित नहि भेल ? पत्रिकोसभमे नहि देखलहुँ ?"

–"देखब कोना ? किछु लिखब तखन ने छपत ! एहि बीच घोर अनास्था उपजल अपनापर । होइत छल जेना किछुओ लिखब संभव नहि अछि । चारू कातसँ लिखल-छापल जा रहल अछि, से पढ़ैत रहलहुँ अछि । हिन्दी वा अन्य भारतीय भाषा टामे नहि, अन्य विदेशी भाषामे सेहो । एहि संक्रमण कालमे प्रचलित मान्यताक संग समझौता करब असंभव जकाँ भेल जा रहल अछि । नीक कथा कहब वा लिखब जेना भूतक गप्प भऽ गेल हो । एक टा पैघ महत्त्वपूर्ण वक्तव्यक संग एक टा फिसड्डी रचना । वक्तव्य सर्वत्र भेटि रहल अछि, रचना कतहु नहि । जेना वक्तव्य वा नाराबाजी साहित्य बनि गेल हो !"

–"अहाँ एकतरफा गप्प कऽ रहल छी ।" अंजलि सिन्हा आपत्ति करैत

छथिन । ओ नव पीढ़ीक लेखिका छथि– "संक्रमण-कालमे निश्चित मूल्य नहि रहैत छैक, निश्चत होयबाक प्रक्रियामे रहैत छैक । मुदा तेँ ओकर सम्पूर्ण साहित्यकेँ एना नकारि नहि सकैत छिऐक अहाँ । यदि दिशाहीनता मूल्यहीनता आ कनफ्यूजन छैक, तँ ओ कहाँसँ अयलैक ? ई कुत्सित यथार्थ, ई कुण्ठा, ई पराजय-बोध, ई धुरीहीनता एहि अभिशप्त युगक देन छैक, एकरा हेतु रचनाकारकेँ कोना दोषी ठहरा सकैत छिऐक अहाँ ?"

–"हम बहसक लेल नहि, मात्र अपन आस्थाहीनताक गप्प कऽ रहल छलहुँ श्रीमती सिन्हा !" प्रकाश बात टारैत कहलकनि– "हम स्वयं अनिर्णयक स्थितिमे छी । जे लिखल जा रहल छैक से पूर्णतः ग्राह्य नहि भऽ रहल अछि । जे लिखि रहल छी तकरो प्रति पूर्ण आस्थावान नहि छी जे यैह वास्तविक प्रतिनिधित्व कऽ सकत युगीन समस्याक । प्रत्येक युगकेँ रचनाकारसँ किछु अपेक्षा रहैत छैक ।"

–"मुदा ई अपेक्षा कोना पूर्ण होयतैक ? युग हमरा की दऽ रहल अछि ? बेकारी, सामर्थ्यहीनता आ दोगला सन्तान । विष पीबि अमृत कतऽसँ देबैक ? महादेवक कण्ठ ककरा उधार भेटतैक ? युग जे देतैक, रचनाकार ओकरे ने बाँटत ?"

विकास जेना मध्यस्थता करैत कहलकैक– "भऽ गेल दू पीढ़ीक मान्यतामे संघर्ष शुरू । ई भोगल यथार्थक गप्प तँ जेना हमरो माथमे नहि अँटैत अछि । एकर अर्थ जे डुबैत व्यक्तिक 'हॉरर'केँ अभिव्यक्त करबा लेल स्वयं पानिमे डूबब आवश्यक । तखन ओहि भोगल यथार्थकेँ अभिव्यक्त के करत ? हमरा जनैत तँ जे डूबि क्यो रहल हो, मुदा डूबैत व्यक्तिक आतंक छूबि ककरो जाइक, हाथमे सुइ ककरो गड़ैक आ दर्द ककरो भऽ जाइक, वैह असल यथार्थ छैक, भोगल यथार्थ छैक । वैह साहित्यकेँ शाश्वत बनबैत छैक, दर्दकेँ भाषा आ आतंककेँ अभिव्यक्ति दैत छैक । मुदा आजुक लोक से किएक मानत ?"

–ठीक कहैत छेँ भाइ !" प्रकाश विवादकेँ हल्लुक करैत कहैत छैक– "हमरालोकनि तँ बीचक पीढ़ी छी । पुरनासभ अगत्ती कहि नकारैत अछि आ नवका लेल 'आउट आफ डेट', एक्झॉस्टेड, रिक्त । की श्रीमती सिन्हा ?"

सभकेँ हँसी लागि जाइत छैक । तावत होटलक छौंड़ा चाह राखि जाइत छैक । विकास दूरेसँ मधुकर, सत्येन, आ निखिलकेँ अबैत देखि छौंड़ाकेँ तीन टा आर चाह अनबाक आदेश दैत छैक । आ प्रकाश दिस तकैत कहैत छैक– "आबि रहल छथुन मैथिलीक उद्धारकर्त्ता त्रिमूर्ति ।"

प्रकाश श्रीमती सिन्हाकेँ फुसफुसाकऽ कहैत छैक– "मैथिलीमे हमरालोकनि एहि नव-पुरान विवादसँ मुक्त छी । पुरान चाउर पथ्य, तँ नवको वाह-वाह । 'यात्री'जी नीक तँ षट्शास्त्रियोजी बेजाय नहि । छपि जायब पर्याप्त, अधलाह क्यो नहि लिखैत अछि– सुरसुर-मुरमुर दुनू बेस । मैथिलीमे एम.ए. आ पी-एच.डी. छी तँ कथा-कविता लिखबाक पहिल अधिकार अछि । सम्पादक नहि छपताह तँ बूड़ि छथि, पी-एच.डी. की घास छीलिकऽ भेटल अछि ?"

श्रीमती सिन्हा हँसऽ लगैत छैक । तावत विभूति लग आबि जाइत छथि आ नमस्कारक आदान-प्रदानक संग बैसि जाइत छथि । फुटपाथी होटलक छौंड़ा तीन टा चाह राखि जाइत छैक । चाह तीनू दिस बढ़बैत विकास पुछैत छैक– "आइ कोना कृपा कयल ?"

–"नहि-नहि, कृपा की ? ओहिना भेंट-घाँट करऽ चल अयलहुँ ? ओना हमर ई उपन्यास तँ देखने होयबैक– 'सूतल समाज' । झोरीसँ एक टा पुस्तक बाहर कऽ विकासक हाथमे दैत मधुकर कहैत छथिन– "सभ युनिभरसिटीमे आनर्सक पढ़ाइक लेल स्वीकृत भेल छैक ।" फेर प्रकाशकेँ सम्बोधित करैत कहैत छथिन– "अधलाह नहि मानब । एक्के टा प्रति बाँचल अछि । दोसर संस्करण प्रेसमे छैक, अहाँकेँ फेर दऽ जायब । दहेजक समस्यापर लिखने छिऐक ।"

–"वाह ! की सुन्दर आ सामयिक विषय चुनल अछि !"

प्रकाश श्रीमती सिन्हा दिस ताकि मुसकियाइत अछि । मुदा मधुकर प्रायः ओकरा लक्ष्य नहि करैत छथिन । झोरासँ दोसर पुस्तक बहार करैत प्रश्न करैत छथिन– "ई नवका प्रकाशन देखलिऐक अछि अपने लोकनि ? –मैथिली साहित्यक इतिहास । बड़ सुन्नर लिखलनि अछि, हमरो पोथीक उल्लेख आयल छैक । फेर कनेक सहानुभूति देखबैत कहैत छथिन– "मुदा एक टा आश्चर्य होइत अछि । अहाँ दुनू गोटेक चर्च नहि कयने छथि ।"

प्रकाश हँसैत छनि– "नहि कयने छथि तँ जाय दियौक । नाममे दम होयतैक तँ फेर दोसर इतिहासकारसँ लिखा लेब । आ मानि लियऽ जे ओतहु पिछड़ि जायब तँ अपन पैसा खर्च कऽ एक टा किरायाक साहित्यकारसँ खूब चर्चा करबा लेब । मानि लियऽ, ओहो नहि लहल तँ हम अपन इतिहासमे विकासक चर्चा कऽ देबैक आ विकास अपन इतिहासमे हमर झण्डा गाड़ि देत ।"

मधुकर एकदम अप्रतिभ भऽ जाइत छथि । दुनू सहयोगीक मुँह तमतम

जाइत छनि । झोरा-झपटा उठा विदा होइत विकासकेँ कहैत छथिन– "एहि सप्ताह अपन कार्यक्रममे एहि पोथीक समीक्षा कऽ देबैक नीक सन । ओना ई पोथी एहि बेर अकादमी-पुरस्कार लेल सेहो प्रस्तावित भऽ रहल छैक ।"

तीनूकेँ गेलाक बाद विकासकेँ हँसी लगैत छैक जोरसँ– "एकदम लोहछा देलहिक आइ तोँ । एतेक कटाह कहियासँ भऽ गेलेँ ?"

–"देंगे वही जो पायेंगे तेरे जहाँ से हम । की श्रीमती सिन्हा ?" प्रकाश श्रीमती सिन्हा दिस ताकि मुसकियाइत अछि आ फेर तीनू भभाकऽ हँसि पड़ैत अछि । बड़ी काल धरि हँसैत रहैत अछि ।

आ डेरा घुरैत काल प्रकाश बड़ उत्साहपूर्ण अनुभव करैत अछि, एक टा तनावरहित सुखद संध्याक स्मृतिसँ भरल । डेरामे पयर रखिते मीरा किछु टाका हाथमे राखि कहैत छैक– "घरसँ आयल अछि ।"

प्रकाशकेँ आश्चर्य होइत छैक । मीरा खाली घरसँ आयल अछि कहलकैक– 'अहाँक घर' नहि कहलकैक । मोनमे किछु हुलसैत छैक जकरा तत्क्षण दबाकऽ प्रकाश रुपैया गनऽ लगैत अछि । पाँच सय छैक आ पचासो दसटकियाक ऊपरमे राखल मनीआर्डर-कूपनपर लिखल छैक– पाँच सय टाका पठा रहल छियऽ ! परीक्षाक 'फीस' अबस्से जमा कऽ लिहऽ ! कनियाँ आ बच्चा सभकेँ आशीष– वीरेन !"

प्रकाश पत्र पढ़ि मीरा दिस तकैत अछि । ओ मूड़ी झुकौने ठाढ़ि छैक । मुदा ओकरा लगैत छैक जेना एखने मीरा किछु कहतैक जकरा सुनबाक ओ कहियासँ प्रतीक्षा कऽ रहल अछि ।

मुदा मीरा किछु नहि कहैत छैक । भनसाघर दिस चल जाइत छैक । प्रकाश कपड़ा बदलऽ लगैत अछि । मिनी झट खीचिकऽ बिछौन दिस लऽ जाइत छैक– "पप्पा, खिस्सा कहू ।"

बिछौनपर पड़ैत देरी नहि जानि किएक प्रकाशकेँ ओ खिस्सा मोन पड़ैत छैक जे ओकर बाबी बच्चामे ओकरा सभ दिन कहैत छलैक । प्रकाश वैह खिस्सा कहऽ लगैत छैक– "एक टा रहय भिखारि । ओकरा एक टा देवताक शाप रहैक । एक गाम माङय तँ तैयो एक तामा आ सात गाम माङय तँ एक्के तामा । ओ भिखारि गामेगाम बौआयल फिरय आ..."

खिस्सा सुनैत-सुनैत मिनी सुति रहैत छैक । मुदा ई पुरना खिस्सा एतेक

दिनका बाद अपन मुँहसँ कहैत काल प्रकाशकेँ एक टा नव अर्थ-बोध होइत छैक जेना ई अभिशाप ओहि भिखारिक नहि, समस्त नोकरीपेशा निम्नमध्यवर्गीय लोकक हो– एक गाम माङय तँ एक तामा, सात गाम माङय तैयो एके तामा।

मीरा खयनाइ लऽ अनैत छैक। ऊठिकऽ खाय बैसि जाइत अछि प्रकाश। मुँहमे कओर दैत-दैत एक बेर अनायास दृष्टि ऊपर उठैत छैक। मीराक आँखिमे नोर भरल छैक। ओ बामा हाथेँ ओकरा लग घीचैत छैक। मीरा अनायास एकदम समीप आबि ओकर पीठपर मुँह नुकाकऽ कानऽ लगैत छैक– निःशब्द। ओकर पीठपर अपनत्वक स्पर्श दैत प्रकाश मोन पड़बाक चेष्टा करैत अछि जे बाबी अपन खिस्सामे ओहि भिखारिक शाप-मुक्त होयबाक कोन उपाय कहने छलैक ?

●

युगपुरुष

माय औखन कहियो-कहियो पूछि बैसैत अछि–"बनारस मोन पड़ैत छऽ ? तोरा तँ ऐ कोनसँ ओइ कोन धरि धाङल छलऽ !" हमरा किछुओ मोन नहि पड़ैत अछि जकरा शहरक नक्शा कहल जा सकय । मोन पड़ैत अछि दू-चारि टा स्थान–एक टा छोट-छोट सीढ़ीवला मकान, नीलकण्ठ मन्दिर, मणिकर्णिका आ दशाश्वमेध घाट, जेना कोनो नोचल-नाचल चित्रमे बाँचल कतहु एक टा आँखि, एक टा हाथ, आ लाल साड़ीक कोर । मुदा हमरा लाल साड़ी नहि, एक टा लाल फ्राक मोन पड़ैत अछि । बनारसक चर्चा अयलापर सभसँ पहिने मोन पड़ैत अछि लाल फ्राक पहिरने ठाढ़ि एक टा छौंड़ी । मुदा लाल फ्राक आ गुलाबी गालबाली ओहि छौंड़ीक मुँह उदास छैक । सीढ़ीपर ठाढ़ि बजैत अछि–"हमसभ काल्हि चल जायब ।"

–"चल जयबेँ ? कतऽ ?" उज्जर हाफपैण्ट आ हाफशर्ट पहिरने ठाढ़ दस बरखक छौंड़ा पुछैत छैक– जेना विश्वास नहि भऽ रहल होइक ।

–"दोसर शहर । बाबूजीक बदली भऽ गेल छनि ।" छौंड़ीक स्वर आर उदास भऽ जाइत छैक ।

–"काल्हिए चल जयबेँ ? सत्ते ?"–छौंड़ाकेँ जेना तैयौ विश्वास नहि होइत छैक ।

–"हँ । काल्हिए जयबैक ।..."

छौंड़ाकेँ आर किछु नहि सुनाइ पड़ैत छैक । लगैत छैक, जेना पयर तरक सीढ़ी ससरि गेलैक । सौँसे संसार नाचऽ लगैत छैक आ फेर एक टा कोनो सक्कत चीजपर खसैत जोरसँ चीत्कार कऽ उठैत अछि–'माय गय...'

नहि जानि कतेक समय बीति जाइत छैक । आँखि खुजलापर देखैत छी जे

माय-बाबू, रघू झा भनसीया सभ घेरने छथि । माय सिरमामे अछि आ बाबू पौथानमे । आँखि खोलैत देखि माय चेहरापर झुकि जाइत अछि–"केहन मोन छऽ ?"

माय, बाबू, रघू झा सभक मुँह देखि मोन पाड़बाक चेष्टा करैत हम पुछैत छिऐक–"हमरा की भेल अछि ?"

मुदा बजिते माथमे चनक बुझाइत अछि । हाथ उठा माथ टोबऽ चाहैत छी तँ हाथ भरिगर बुझाइत अछि । हाथ-पयर सभ ठाम पट्टी बान्हल । हमरा सभ टा मोन पड़ऽ लगैत अछि । हम माय दिस तकैत छी ।

माय कानऽ लगैत अछि–"भगवान नव जीवन देलथुन अछि । छत्तीस घण्टापर होश भेल छऽ ।"

छत्तीस घण्टा ? हम चौंकैत छी । ध्यान जाइत अछि जे अपन डेरामे नहि, अस्पतालमे छी । छत्तीस घण्टा ? ओ तँ प्राते जाय लेल अछि ! हम बड़बड़ा कऽ ऊठऽ चाहैत छी । सौंसे देह दर्दसँ छटपटा उठैत अछि । माय लपकिकऽ पकड़ि लैत अछि आ नीक जकाँ गेरुआपर सुता पुछैत अछि–"की लेबऽ ?"

हम कोनोना कष्टसँ आँखि खोलि पुछैत छिऐक–"चम्पा कहाँ छौ ?" माय बाबूक मुँह ताकऽ लगैत अछि । फेर हमरा दिस तकैत कहैत अछि–"ओ तऽ चल गेलौ काल्हिए । बड़ कनैत छलौ तोरा लेल । बारह घण्टा अस्पतालेमे छलौ । मुदा ओकरसभक टिकट कटाओल छलैक । ओकर मायो तोरा लेल बड़ कनैत छलौक ।"

हम फेर आँखि मूनि लैत छी । माथ फेर बरकैत अदहन जकाँ टभकऽ लगैत अछि । देहमे जेना सौंसे सीसाक कुन्नीसभ गड़ि गेल होअय । बड़ी काल धरि आँखि बन्द कयने ओहि दर्दसँ छटपटाइत रहैत छी । माय हाथसँ माथ सोहरबैत अछि– अनवरत । ओकर ममत्व-भरल स्पर्शसँ दर्द क्रमशः घटैत अछि आ सौंसे देह सहज भऽ स्थिर भऽ जाइत अछि । बन्द आँखिक आगाँ बहुत रास चित्र पसरैत अछि । लगैत अछि, जेना चम्पा गेलि नहि अछि, हमर संग कंसार दिस दौड़लि जा रहलि अछि, हमर हाथ पकड़ने । हमरा संग चोरबा-नुक्की खेला रहलि अछि, हमरा संग छतपर ईंटक घर बना ओकरा माटिसँ लेबि रहलि अछि । हमहूँ लेबऽ चाहैत छी मुदा सभ टा थोपल-थापल भऽ जाइत अछि । ओ नीक जकाँ हाथ फेरि सभकेँ मिलबैत कहैत अछि– "तोँ किएक हाथ लगबैत छेँ ? छोड़ि दे । हम तोहर घर चिक्कन-चुनमुन बना देबौक ।"

अस्पतालसँ घुरलापर छत सुन्न लगैत अछि । कंसारक दड़रल बूटक भू

आ पकाओल अल्हुआ कुस्वाद लागऽ लगैत अछि । बाबू एक दिन मायकेँ कहैत छथिन–"चलू, दोसर मोहल्ला चली । ऐ मकानक सीढ़ी बड़ कम चाकर छैक । हरदम कोँढ़ धड़कैत रहैत अछि ।"

माय कहैत छनि–"अलच्छो बड़ अछि । जल्दीसँ ताकू कोनो दोसर । आब ऐमे कनेको मोन नहि लगैत अछि ।"

मकान बदलि जाइत अछि । संगियो बदलि जाइत अछि । मुदा मोन ओहिना उदास-उदास । नव संगीमे मोन नहि रमैत अछि । चुपचाप अपन नवका मकानक छतपर ठाढ़ नीलकण्ठ मन्दिरक त्रिशूल देखैत रहैत छी, लोकक भीड़ देखैत छी, कीर्त्तन सुनैत छी । तखने कानमे क्यो बाजि उठैत अछि– चल, दुनू गोटे 'बाबा'क दर्शन कऽ आबी ।"

माने विश्वनाथक मन्दिर । हम कहैत छिऐक–"ओतऽ बड़ भीड़ रहैत छैक । कतहु हेड़ा जयबेँ तँ...?"

ओ विश्वासपूर्वक बजैत अछि— "नीक जकाँ हमर हाथ पकड़ि लिहेँ, हेड़ायब कोना ?"

मुदा ओ हेड़ा गेलि छलि– हम हाथ पकड़ि बचा नहि सकल छलिऐक । नहि जानि कतऽ होयति ? 'बाबा'क मन्दिरमे जा नीलकण्ठक त्रिशूल देखि कतेको बेर पुछलियनि, मुदा क्यो जवाब नहि दऽ सकलाह । बाबाक मन्दिरो जायब छूटि गेल । खाली बेर-बेर पुरना मकानक चक्कर काटि अबैत छी– कहीं चम्पा घूरि आयलि हो !

एक दिन साँझ भऽ गेल रहैक । गलीसभमे बत्ती जरि रहल छलैक, मुदा छतपर झलफल अन्हार छलैक । हम ओही अन्हारमे बैसल रही कि बाबू ऊपर आबि बजलाह–"एतऽ की भऽ रहल छैक ?"

हम कने डेराइत जकाँ कहलियनि–"कहाँ किछु, किच्छो नहि ।"

–"तँ नीचाँ चलह कोठलीमे । एतेक पैघ भऽ गेलाह, मुदा स्कूलो नहि जाइत छह । डेरोपर नीक जकाँ पढ़ैत नहि छह आइ-काल्हि । काल्हिसँ स्कूल जाह आ साँझकेँ किताब लऽकऽ बैसह हमरा लग ।"

हम स्कूल जाय लगैत छी, साँझकेँ किताब लऽ बैसैत छी बाबू लग । मुदा मोन कथूमे नहि लगैत अछि । पाठ सभ दिन बिसरि जाइत अछि । बाबू बिगड़ैत नहि

छथि, मुदा हुनका दु:ख होइत छनि आ आर मोनसँ पढ़बाक इनाम भेटैत अछि बाबू दिससँ– सभ दिन एक टाका । टाका जमा भेल जाइत अछि– दस...पचीस...एक सय...डेढ़ सय... । हम पूर्ववत् हँसऽ-खेलाय लगैत छी, माय-बाबूजी निश्चिन्त भऽ जाइत छथि ।

मुदा ओहि राति फेर हुनक चिन्ता बढ़ि जाइत छनि । राति भरि दुनू गोटे जगले रहैत छथि । ओ 'धमाका' बेर-बेर होइत छैक । सौंसे मकान हिलि जाइत छैक । पहिने लगैत छनि, जेना डाकूसभ मकानक दरबज्जा तोड़ि रहल होइक वा कोनो बौआइत साँढ़ दरबज्जामे ढाही मारि रहल होअय । रग्घू झा बेर-बेर ठेललापर ऊपर छतपरसँ नीलकण्ठ मन्दिरक पंडाकेँ सोर पाड़ैत छथिन– पुलकित...पुलकित...! डेरायल आवाज ततेक घिघिआयल छनि जे प्रायहे मन्दिर धरि पहुँचल होयतनि । कोनो उत्तर नहि अबैत छनि । मुदा ओ 'धमाका' बन्द भऽ जाइत छैक । किछु काल अँटकर लगौलाक बाद जहिना आँखि लागऽ लगैत छनि कि फेर वैह धमाका । राति भरि जगले बीति जाइत छनि ।

मकानक सभ किरायेदार सभ राति ओ धमाका सुनबाक अभ्यस्त भऽ जाइत अछि । अँटकर बहुत लगैत अछि– जेना क्यो नोट छपैत अछि, क्यो बम बनबैत अछि, कोनो चोर-डाकू अछि, मुदा कोनो तथ्य नहि भेटैत छैक ककरो । आ सभ दिन धमाका आब सूतलमे लोककेँ चौंकबैत नहि छैक, सभ अभ्यस्त भऽ जाइत अछि जेना !

अभ्यस्त आरो बातक भऽ जाइत अछि लोक । जेना बानरक उपद्रव । एक दिन खुट्टीपरसँ बाबूक सभ टा धोती-कमीज उठा छतपर बैसि जाइत छनि । लाख नेहोरा-विनती कयलोपर नहि छोड़ैत छनि । एहि छतसँ ओहि छत । अन्तमे केरा-गुड़ आदि देलापर कपड़ा छोड़ैत छनि तँ सभ टा तीरी-तीरी भेल । काजोपर जाय लेल कपड़ा नहि । कोनोना नव धोती आ रेडीमेड कमीज पहिरि काजपर जायबा लेल तैयार होइत छथि तँ रग्घू झा भनसीया तमाशा करैत छथि । खयनाइ परसि आगूमे दैत कहैत छथिन–"की कहू मालिक ! आइ दालि जे बढ़ियाँ मिलल अछि । छौंको तेहने देलिऐक अछि । देखियौक तँ केहन स्वाद भेलैक अछि !" बाबू बाटीक दालि भातपर ढारैत छथि तँ छुच्छ पानि, घी देल, छौंकल ! पुछैत छथिन–"एहिमे दालि कहाँ अछि औ ?"

–"सैह तँ कहलहुँ जे आइ तेहन मिलल अछि जे स्वादि-स्वादि खायब !" माय झट दौड़िकऽ भनसाघर जाइत अछि आ चूल्हिक पाछाँसँ सुपतीमे राखल दालि उठौने घुरैत अछि–"दालि भेटत कतऽसँ ? दालि तँ ओहिना पड़ल अछि । खाली पानिकेँ छौंकिकऽ मिलल दालिक वर्णन कऽ रहल छथि ।"

बाबू छुच्छ भात-तरकारी खा काजपर चल जाइत छथि । रग्घू झाकेँ किछु कहब व्यर्थ । सभ हुनक एहि प्रकारक बुधियारीक अभ्यस्त भऽ गेल अछि । तीन टा थारी । माय-बाबू आ हमसभ खा लैत छी, तँ चुमकीसँ अपन खयनाइ लोहियेमे परसि बैसि जाइत छथि । क्यो टोकैत छनि तँ चोट्टे कहि बैसैत छथिन–"आहि ! थारी माँजऽ धरि के बैसल रहत ? लोहिये कोन खराब अछि ? एक्के बेर सभ टा बर्त्तन माँजि लेब ।' टोकबो लोक छोड़ि दैत छनि । मुदा ओहि दिन हम कानऽ लगैत छी । बाबू हमरा रग्घू झाक संग विदा कऽ दैत छथि– "जा, केश छँटा आबह ! कानपर लटकल जाइत छह ।"

रग्घू झा हमरा सैलूनमे बैसा कैंचीसँ सभ टा केश कटबाक आज्ञा दऽ दैत छथिन । हम विरोध करैत छियनि । ओ हमरा डाँटि दैत छथि– "अहाँ चुप्प रहू ! मालिकक आडर अछि ।" हम चुप्प भऽ जाइत छी । सभ टा केश कटा जाइत अछि । अपन दकचल माथ देखि कानऽ लगैत छी आ कनिते डेरा अबैत छी । बाबू रग्घू झाकेँ डँटैत छथिन तँ निर्विकार बजैत छथि–"अहीँ तँ कहने रही ।"

तहिना माय ओहि दिन कहने रहनि–"आब चलू गाम । एतऽ नीक नहि लगैत अछि । अशुभपर अशुभ । शंकर कोठासँ खसला, अहाँकेँ ओहन टायफायड आ ताहिपर ई अपशकुन ।"

बाबूक सभ टा बुझायब व्यर्थ जाइत छनि । मायक मोनमे डर पैसि जाइत छैक । ओ सभ दिन जिद करऽ लगैत छनि । ओ अपशकुन ओकरा नहि बिसरैत छैक । ओहि दिन काजपर जयबा काल कान्हपर कारकौआ बैसि गेल रहनि । भय बाबुओकेँ भेल रहनि, मुदा दबा गेल रहथि । माय मुदा नहि मानैत छनि । गाम जयबा लेल राजी कऽ लैत छनि । दिनक निर्णय भऽ जाइत अछि । गाममे काजो बाबूजी लेल ठीक भऽ जाइत छनि ।

ओहि दिन हमरा आशंका होइत अछि । गाम चल जायब तँ चम्पासँ भेँट कोना होयत ? ओ फेर घूरिकऽ एहि शहरमे आओति, हमरा ताकति तँ कोना भेटबैक ? हम दौड़ल-दौड़ल पुरना मकान लग जाइत छी । बड़ी काल एम्हर-ओम्हर चक्कर कटैत छी । फेर एक टा कोइला उठा मकानक प्रवेश-द्वारपर लिखि दैत छिऐक– "हमसभ गाम जा रहल छी... हमर पता... गाम-अलकपुर, पोस्ट-अलकपुर, जि.-दरभंगा— शंकर"

हम निश्चिन्त भऽ घूरि अबैत छी । आब चम्पाकेँ खबरि भऽ जयतैक । घूरिकऽ आओति तँ अबस्से हमरा चिट्ठी लिखति । पता लीखि देने छिऐक । प्रात

भेने फेर चिन्ता होइत अछि– कहीं ओहि मकानमे नहि आबय, तखन कोना खबरि होयतैक ? हम कोइलाक टुकड़ी उठा सौंसे शहर घूमि जाइत छी... मणिकर्णिका घाटक सीढ़ीपर, विश्वनाथ मन्दिरक गलीक देबालपर, दशाश्वमेध घाटक सीढ़ीपर सभ ठाम लिखि दैत छिऐक– हम गाम जा रहल छी... हम गाम जा रहल छी...हमर पता...

तखन निश्चिन्त भऽ जाइत छी । आब अबस्से चम्पाकेँ खबरि भऽ जयतैक । डेरा घूरि मायकेँ पुछैत छिऐक–"बनारससँ गाम चिट्ठी कय दिनमे पहुँचैत छैक ?"

–"दू-तीन दिनमे । तोँ ककरा लिखबही ?" माय पुछैत अछि ।

–"ककरो ने । ओहिना पुछलियैक अछि ।" मायकेँ हम टारि दैत छिऐक, मुदा मोने-मोन सोचैत छी जे चम्पा घुरति तँ दू दिनक भितरे खबरि कऽ देति । हमहूँ चिट्ठी लिखबैक ।

हम प्रसन्नतापूर्वक गाम जयबा लेल तैयार भऽ जाइत छी ।

कतेक ठाम गाड़ी बदललाक उपरान्त जखन हमरालोकनि यात्राक अन्तिम चरणमे पहुँचलहुँ आ जेना-जेना गाम लग अबैत गेल, सभक मोन उदास होइत चल गेल । किछु छूटि जयबाक उदासी । छौ-सात बरख कतहु एक ठाम बिता लेलापर ओ गामे-घर सन भऽ जाइत छैक । ओकर छुटबाक दुःख गामसँ परदेस जयबाक दुःखसँ कम नहि होइत छैक । कमसँ कम हमरा तँ ओ दुःख बड़ पैघ लागि रहल छल । माय-बाबूजीक मोनमे किछु छुटबाक संग-संग छूटल गाम-घर घुरबाक भितरिया उल्लास प्रायः रहल होइनि । मुदा हमरा तँ अपन गाम-घरक कोनो स्मरण नहि छल । बनारसे घर-आङन सन लगैत छल । ओ बहुत पाछू छूटि गेल छल आ जे लग आबि रहल छल तकर कोनो स्वरूप हमर मोनमे नहि छल । 'गाम' शब्द हमरा लेल अपरिचित छल । एहि अपरिचित-परिचित स्थानक यात्रामे कोनो उत्साह अनुभव नहि भऽ रहल छल ।

गामक स्टेशन प्रायः बड़ लग आबि गेल छलैक । सौंसे डिब्बामे अपने भाषा बजनिहार यात्रीसभ भरि गेल छलैक । धक्कमधुक्की मचल छलैक मुदा ताही बीच एकटा मधुर स्वरक गीत सूनि सभ संचमंच बैसि गेल । जे ठाढ़ छल सेहो शान्त भऽ ओकरे ताकऽ लागल । एक टा छौंड़ा, सतरह-अठारह बरखक, कन्हासँ झोरा लटकौने, हाथमे गीतक किताबसभ लेने गाबि रहल छल–'भोर भेलै हे पिया भिनसरबा भेलै हे !' ओकर स्वर बड़ मधुर छलैक, चेहरा एकदम कारी आ नाक-नक्श नीक । लोक दम सधने सुनैत रहल । गीत खतम भेलापर फरमाइश होबऽ लगलैक– क्यो गजल सुनऽ चाहैत छल, क्यो फिल्मी गीत । लागल जेना अधिकांश यात्री ओकरा पहिनेसँ चिन्हैत छलैक आ सभ अपन-अपन पसिन्दक फरमाइश कऽ रहल छलैक । दोसर स्टेशन जा धरि लगिचयलैक नहि, ओ सभक फरमाइश पूरा करैत रहल । स्टेशन लग अबैत देखि ओ झोरासँ किताबसभ निकालि बेचऽ लागल । एक आना दाम । बड़ लोक किनलकैक । हमहूँ बाबूजीकेँ कहलियनि–"एक टा हमरो कीनि दियऽ ।"

बाबूजी मना करैत छथि–"की करबह एहन-ओहन गीतक किताब ?"

माय हमर सिफारिश करैत अछि–"कीनि दियौ ने ! बच्चाक मोन छै, छोट भऽ जयतैक ।"

बाबूजी एक टा किताब कीनि दैत छथि । स्टेशन अबिते ओ छौंड़ा उतरिकऽ दोसर डिब्बा दिस चल जाइत अछि । हम ओहि गीतक किताबक पन्ना उनटबैत छी, मुदा सभ टा उटपटांग लगैत अछि । हमरा जे प्रभावित कयने छल से तँ ओहि किताबक गीत नहि छलैक, ओ तँ छलैक ओहि छौंड़ाक कण्ठ । किताबकेँ उनटा-पुनटाकऽ हम ओहिना सीटपर राखि दैत छिऐक । ईहो ध्यान नहि रहैत अछि गामक स्टेशनपर उतरैत काल जे ओ किताब गाड़ियेमे छूटि गेल ।

गामक स्टेशनपर अन्हार छलैक । साँझ भेलापर गाड़ी पहुँचल रहैक । स्टेशन अन्हार, बाट अन्हार, सौंसे गाम अन्हार । कतहु-कतहु डिबिया-लालटेमक भुकभुकी, जेना सौँसे गाम एक टा अन्हारक टीला होइक जकर कात-कातमे कतहु भगजोगनी चमकैत होइक । हमरा गाम नीक नहि लगैत अछि ।

मुदा प्रात भेने दिनक इजोतमे वैह गाम नीक लागऽ लगैत अछि । दरबज्जापर फुलबाड़ी— गुलाब, गेना, तीरा, ओढ़ूल आ करोटन । नारिकेर आ सुपारीक गाछ । बाड़ीमे लताम-शरीफा । सामनेमे पोखरि, पोखरिक भीड़पर चारू कात घर आ दछिनबरिया भीड़पर विशाल भालसरीक गाछ । हमरा सभ टा नीक

लागऽ लगैत अछि । भरि दिन गाममे बौआइत छी आ बौआइत-बौआइत धारक कात धरि चल जाइत छी । बागमतीक धार आ ऊपरमे मन्दिर । मन्दिरक कातमे बड़क झमटगर गाछ आ गाछपर डोल-बाती खेलाइत धीया-पूता, संगतुरिया । हमहूँ सभक संग बड़क डारि पकड़ि एम्हरसँ ओम्हर कूदऽ लगैत छी । पहिने डर होइत अछि, मुदा फेर निधोख खेलाय लगैत छी ।

मुदा रातिमे फेर डर होबऽ लगैत अछि । साँझेसँ घरसभ अन्हार । बाबी लग सूतल रही । घरमे डिबियो नहि । मिझा गेल छलैक । डरेँ बाबीक कोँढ़मे सटल रही आ बाबी नीक जकाँ अपन जर्जर शरीरसँ साटि लेने रहय । हमर शरीरक थरथरी आ स्पर्शसँ ओ बूझि जाइत अछि । पुछैत अछि–"डर होइत छौ ?"

–"हँ ।" हम आर नीक जकाँ ओकर देहकेँ जकड़ैत कहैत छिऐक–"चारमे किदन सरसराइत छैक ।"

–"होयतैक कोनो मूस, छुछुन्नरि । एकाध टा साँखड़ो छैक । एक बेर बिछौनेपर खसल रहय ।"

–"बिछौनपर साप ?" हम आर डेराइत पुछैत छिऐक ।

–"चारमे साँखड़ एकाध टा कहियो आबिए जाइत छैक । मुदा तोँ डेरो जुनि । खिस्सा सुनबेँ ?"

–"हँ, कह ने !" हम अपन ध्यान हँटयबाक चेष्टा करैत छी, मुदा बेर-बेर चारक सरसराहटि दिस ध्यान जाइत अछि ।

बाबी खिस्सा कहैत अछि–"ताइ दिनुका खिस्सा कहैत छियौक । तोरा तँ खिस्से लगतौक । किछुओ ने देखलेँ । की छलौ ई घर आ की भऽ गेलौ ! जतऽ ई झाँझनवला फुसही घर छौक, ततऽ तिनमहला छलैक । सौंसे झाड़-फानूस लागल । मुख्य दरबाजापर दरबज्जासभ तेहन पैघ जे हाथीपर चढ़ि हाथी घर पैसि जाय । सोनाक दू टा कलश राखल ।

–"सोनाक कलश ?" हम जिज्ञासा करैत छिऐक ।

–"हँ रे, सोनाक कलश । भनसीया, नोकर, खबासिनक ढेर, आइ ने सभ बिला गेल अछि ! ओहि दिन तँ राज छल । हमर आँखिक सोझाँक गप्प । ससुर राज छलाह, इलाकामे डंका बजैत छलनि । मुदा छलथुन बड़ा कंजूस ।"

–"कंजूस ? से कोना ?" हमर जिज्ञासा बढ़ल जाइत अछि ।

–"सभ तरहेँ । घैलक घैल घी । सैकड़ो घैल मचान बान्हिकऽ राखल रहैत छलनि आ ककरो एक्को छिटकाक दर्शन नहि । बोराक बोरा मखान भड़ारमे फेकल रहैत छलनि आ सभ फुटहा फकैत छल । राहड़िक दालि सड़ैत रहैत छलनि आ खेसाड़ीक दालि खाइत-खाइत सभ तंग रहैत छल । मुदा बेरपर तेहन शाहखर्च बनि जाइत छलथुन जे जुनि पूछ । तोहर बाबाक उपनयनमे पचाढ़ीक महन्थ भड़ार देखऽ गेलथिन तँ दस बोरा मरीच राखल देखि फटकेपरसँ घूरि गेलथिन । हमर बियाहमे, गाममे सौंसे राउटी खसबा देलथुन । बाप दरिद्र छलाह । मुदा सभ टा वस्तु-जात आ कार्यकर्ता संग लेने गेलथुन । तेहन बियाह भेल जे एखनो इलाकामे लोक चर्चा करैत अछि । जेँ ओना नाग बनि सभपर बैसल रहैत छलाह तेँ ने धन छलनि, इलाकामे धाख छलनि, जमींदारीक तरक्की छलनि । मुदा तोहर बाबा तेहन ने बहरयलथुन जे सभ टा साफ । शाहखर्ची ! नीक खयनाइ, नीक रहन-सहन, साहेबी ढंगक धीयापूताक पढ़ाइ-लिखाइ, कर-कुटुम्बक भरण-पोषण । औंठा बोरैत चल गेलाह । बाँट-बखरा भेलनि तँ अथाह समुद्रमे पड़ि गेलाह । अपने तँ खेपि गेलाह, मुदा तोहर बाप-पित्तीकेँ अथाहमे छोड़ि गेलथिन ।.... सूति तँ नहि रहलेँ !'

–"नै गय, कह ने ! तखन की भेलै ?"

–"तखन अयलै भूकम्प । सभ टा ढाहैत चल गेलैक । कोठा-बङ्ला सभ पस्त । तोहर काकी आ पितियौत भाइयोकेँ संग लेने गेलैक– ऐ अभागलिकेँ ओहो दिन देखबाक छलैक । ओही भूकम्पक बाद ई फूसक घर बनलौ, डरक लेल । खाली फूसक आ टीनक घर । टीन गर्मीमे जरऽ लगैत छैक आ फूसक चारमे साँखड़ सरसराइत छैक । तेँ कहलियौक अछि ताहि दिनुका खिस्सा । तोरा तँ सभ टा खिस्से लागल होयतौक । कतहु सिक्कड़ो ने जोगाकऽ राखल छौक जे देखबितियौक जे तीन-तीन टा हाथी झुमैत छलौक दरबज्जापर आ बाप बग्घीमे बैसिकऽ स्कूल जाइत छलथुन ।"

बाबी ताइ दिनुका खिस्सा कहैत जाइत अछि । हमरा मोनमे अन्हार आ चारमे सरसराइत कोनो वस्तुक भय बिला जाइत अछि । हमहूँ ताइ दिनुका गप्पमे हेरा जाइत छी । आ ओही बीच कखनो आँखि लागि जाइत अछि ।

स्कूलमे पहिले दिन अकचका जाइत छी । नाम लिखा जहिना क्लासमे पयर

दैत छी, गाड़ीमे किताब बेचऽवला ओहि छौंड़ाकेँ एक टा बेंचपर बैसल देखैत छिऐक । प्रायः ओहो चिन्हैत अछि हमरा । हाथसँ लग अयबाक इशारा करैत अछि । हम ओकर बेंच लग जा ठाढ़ भऽ जाइत छिऐक । ओ टोकैत अछि–“बैस ने !” हम ओही बेंचपर बैसि जाइत छी आ डेस्कपर झोरा रखैत पुछैत छिऐक–“मुदा तोँ तँ ओइ दिन गाड़ीमे किताब बेचि रहल छलेँ ?”

ओकर मुँह तमतमा जाइत छैक–“तँ की भेलै ? हम नहि पढ़ि सकै छी ?”

–“पढ़ि किएक ने सकै छेँ ?” हम बात सम्हारैत पुछैत छिऐक— “हम तँ ओहिना पुछने छलियौक । की नाम छौ तोहर ?”

–“रत्नेश्वर झा । मुदा सभ हमरा रतना कहैत अछि ।”

–“तँ हमहूँ रतना कहबौ । हमर नाम शंकर अछि ।”

–“तँ दोस्ती पक्का । ला, हाथ बढ़ा ।” ओ हाथ बढ़बैत अछि ।

–‘तँ दोस्ती पक्का । ला, हाथ बढ़ा ।” हम हाथ बढ़बैत कहैत छिऐक–“पक्का । मुदा एक टा शर्तपर ।”

–“केहन शर्त्त ?”

–सभ दिन टिफिन आ छुट्टीमे गीत सुनाबऽ पड़तौक । मंजूर छौक ?”

–“मंजूर ।” ओ हँसैत अछि ।

–तँ ला हाथ ।” हम ओकर हाथ पकड़ि लैत छिऐक ।

यद्यपि ओकर अवस्था क्लासक सभ छौंड़ासँ बेसी छलैक, हमरोसँ पाँच-सात बरख पैघे छल, मुदा गीत सुनबाक लोभमे झट दोस्ती कऽ लेबामे हमरा कोनो तारतम्य नहि भेल । शुरूमे सम्बोधन किछु कृत्रिम बुझाइत छल, अवस्थाक फर्कक कारण। मुदा फेर सभ टा सहज भऽ गेल । क्लास छोड़ि-छोड़िकऽ हमरा लोकनिक जमघट होबऽ लागल– कौखन आमक छाहरिमे, कौखन-कौखन इनारपर, डिस्ट्रिक्ट बोर्डक सड़कक कातमे । गीत, गजल, कौवाली, कीर्तन सभ-किछु रतनाक कण्ठसँ नीक लगैत छल आ ओ मस्त भऽकऽ झूमि-झूमि गबैत छल । कौखन दुइये गोटे, कौखन आरो श्रोता। एहिना एक दिन दुनू गोटे एकसरे रही, गीत बहुत भेलैक तँ एक टा प्रश्न फेर ओहि दिन उठल मोनमे आ पूछि बैसलिऐक–“तोँ गीतक किताब किएक बेचैत छलेँ ?”

–“जाय दहीक । की करबेँ पूछिकऽ ?” रतना टारऽ चाहैत अछि।

–“नै, आइ नहि मानबौ । सभ दिन टारि दैत छेँ, आइ कहऽ पड़तौक।” हम जिद्द करैत छिऐक ।

–“नहि मानै छेँ, तँ सूनि ले । मुदा सुनिकऽ हमरासँ घृणा नहि करिहेँ । हम नीक लोक नहि छी, भैयो कोना सकैत छलहुँ ? हमर बापो तँ नीक लोक नहि अछि । ओ ताड़ी आ गाजाक निशामे बुत्त रहैत छल । घरमे जकरा-तकरा उठा लबैत छल । माय मना करैत छलैक तँ कूटिकऽ थौआ कऽ दैत छलैक । ताड़ी-गाजाक निसाँमे ओकरा ईहो ध्यान नहि रहैत छलैक जे घरमे धीयापूता सूति रहल वा जगले अछि । आर भाइ-बहीन तँ छोट-छोट छल, मुदा हमरा निन्न नहि होइत छल । दिन भरि देहमे किदन-कहाँदन होइत छल । आखिर एक दिन तंग भऽ एकसर दुपहरियामे हमहूँ अपन हरबाहक बेटीकेँ पकडि़ लेने छलिऐक । तखने हमर कसाइ बाप नहि जानि कहाँसँ आबि गेल । माल-जाल जकाँ डेङा देलक, राति भरि खुट्टासँ बान्हिकऽ रखलक । अन्न-पानि नहि देलक । माय नेहोरा-विनती कयलकैक तँ भोरे खोलि देलक । हाथ-पयर खुजिते हम जे पड़यलहुँ से घूरिकऽ नहि अयलियनि ।”

–“भागिकऽ तोँ कतऽ चल गेलेँ ?” हमर उत्सुकता बढ़ले जाइत छल ।

–“ओ बड़ कष्टक दिन छल । भूखल-पियासल, एम्हर-ओम्हर बौआइत रहलहुँ । फेर एक टा जंक्शनपर पहुँचि गेलहुँ । ओतहि अपने वयसक छौंड़ासभकेँ लेमनचूस-टाफी बेचैत आ पालिस करैत देखलिऐक । पालिसवला धंधा हमरा पसिन्न नहि पड़ल । लेमनचूसवला छौंड़ासभसँ दोस्ती कयलहुँ आ गाड़ीमे घूमि-घूमिकऽ लेमनचूस बेचऽ लगहुँ– सिमरियासँ नरकटियागंज धरि ।”

–“फेर तोँ किताब कोना बेचऽ लगलेँ ?”

–“गाड़ियेमे बल्लू मिसरसँ भेँट भऽ गेल । ओ गीत बनाकऽ ओकरा छापिकऽ गाड़ीमे बेचैत छल । मुदा ओकर गला फाटल बाँस सन छलैक । क्यो डिब्बामे घुसऽ नहि दैत छलैक ओकरा । हमर गीत सुनलक तँ पाछू लागि गेल । हमरो काज पसिन्द पड़ल । गीत गायब आ अढ़ाइ रुपैया रोज होटलक खयनाइ, कैंची सिकरेट, मदनानन्दमोदक आ सिनेमा । खूब मजा कयलौं !”

रतना बजैत-बजैत बीतल दिनक स्मृतिसँ आनन्दित भऽ उठल ।

–“तँ फेर छोड़ि किएक देलेँ ओ काज ?” हम फेर प्रश्न कयलिऐक ।

–“तोँ नहि बुझबहीक भाइ ! ओइ धंधामे बड़ लफङा छैक । सार पुलिसवला आ टी.टी. सभ बड़ तंग करैत छैक । बिन-टिकटक बहाना कऽ पकड़ि लैत छैक आ दुर्गति कऽ दैत छैक । नहि बुझलहिक ? कोना बुझबहीक ? कहियो राति बितलापर कोनो घरसँ भागल जुआन छौंड़ी वा कमसिन छौंड़ाकेँ स्टेशनपर उतरैत देखहिक तखन ने बुझहीक जे कोना ओकर सभक लेर टपकऽ लगैत छैक !”

हमरा किछु बुझबामे नहि आयल । बकर-बकर ओकर मुँह तकैत रहलिऐक । ओ हमर भाव बूझि बाजल–"असल बात ई छलैक जे हमरा पढ़बाक छल । घरसँ भागऽसँ पहिने अपर पास कऽ गेल रही । ऐ बीच हमर बाप कैक बेर मनबऽ गेल, मुदा हम घुरा देलिऐक । फेर सोचलौं– मैट्रिक कमसँ कम जरूर पास करबाक चाही । बस, फैसला कऽ लेलहुँ आ घूरि अयलहुँ ।"

हम जेना किछु सोचैत कहलिऐक–"मुदा एक टा बात हमरा बूझऽमे नहि आयल । तोँ अपन हरवाहक बेटीकेँ पकड़ि लेलहिक, तै लेल तोहर बाप किएक एतेक मारलकौ जे तोरा घर छोड़ि भागऽ पड़लौक ?"

रतना ठठाकऽ हँसऽ लागल । बड़ी काल धरि हँसैत रहल । ततेक हँसल जे हमर मोन तमसा गेल । हमरा तमसाइत देखि ओ बाजल–"बिगड़ जुनि । तोँ नहि बुझबहीक ओ बात एखन । बच्चा छेँ । तोँ बारह वर्षक छेँ आ हमर अठारहम अछि । सभ टा बूझि जेबहिक जखन अठारहममे पहुँचबेँ ।"

हमर तामस तैयो कम नहि भेल । एहन कोन बात छैक जाहि लेल हमरा छौ वर्ष ठहरऽ पड़त ? अबस्से किछु नुका रहल अछि । मुदा रतना हमरा परी-कथाक नायक जकाँ रहस्यमय आ आकर्षक लागऽ लागल । ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व अद्‌भुत छलैक– एकदम आबनूसी रंग, आँखि, नाक सभ टा निखरल, हाथमे कड़ा, गरामे हनुमानी चकती आ पायजामापर पैघ-पैघ छापवला बुशर्ट । अपन मोछ ओ खूब नोकगर करा लेने छल जकरा ओ 'रंजन-कट' कहैत छलैक आ बेर-बेर माथपर लटकि आयल केशकेँ खूब अन्दाजसँ ऊपर झटकि लैत छल । चलैत काल दुनू पंजापर जोर दैत, सभ डेग झूमि-झूमिकऽ चलैत छल आ बेर-बेर अपन भंगिमापर अपने मुसकिया उठैत छल । रतना हमरा लेल ईर्ष्याक वस्तु भऽ गेल । ओकर अठारहक बयस ईर्ष्याक वस्तु भऽ गेल । हम एकदम अधीरतापूर्वक अठारहम वयसक प्रतीक्षा करऽ लगलहुँ ।

चाहलासँ छौ वर्ष छौ पलमे नहि बीति सकल । मुदा समय बितैत रहल । ओ तँ बितबे करैत अछि, ओकरा रोकब, जमा करब वा बढ़ाकऽ, ठेलिकऽ जबर्दस्ती आगू लऽ जायब कखनो संभव नहि होइत छैक । कौखन लागि जाइत छैक जे समय

घसकियो ने रहल अछि आ कौखन समय भागल जाइत सन लगैत छैक । मुदा ओकर गति तँ सभ दिन एक्के रंग रहैत छैक ।

मुदा ई सभ बात हम कहाँ बुझैत छलिऐक ओहि दिन ? बहुत रास बात नहि बुझैत छलिऐक । खाली एतबे बुझैत छलिऐक जे बेसीसँ बेसी समय रतनाक संग बिताबी, ओकर गप्प सुनी, ओकर गीत आ गजल सुनी ।

एक दिन रतना पुछलक–"हमर गाम चलबेँ ?"

रतनाक गाम धारक ओहि पार छलैक । धारक पार दूर धरि कोनो घर नहि छलैक, खाली बँसबिट्टी आ गाछी । ओहि गाछीसभक बाद सघन बस्ती छलैक । मुदा से हम नहि देखने छलिऐक । ओम्हरुका लोकसँ खान-पान वा आवागमन नहि छलैक हमरसभक परिवारमे । हम किछु द्विविधामे पड़ि गेलहुँ । बाबूजी सुनताह तँ की कहताह ?

रतना हमर द्विविधा देखि बाजल–"जायमे की हर्जा छैक ? खैहेँ नहि ।"

हम अतिरिक्त उत्साह देखबैत कहलिऐक–"चलबो करबौक आ खयबो करबौक । नहि खुअयबेँ तँ नहि जयबौ ।"

रतनाक घर गामक एकदम दोसर छोरपर छलैक । गाममे बेसी घर फूसेक छलैक, एकाध टा खपरैल आ कच्चा ईंटाक घर आ गामक बीचमे एक टा पक्का ईंटाक कोठा । सभ दरबज्जापर बैसल लोकसभ हमरा जाइत देखि चिन्हबाक चेष्टामे गरदनि नमराबऽ लागल । किछु गप्पो-सप्प हमरे प्रसंग जे हम नहि सुनि सकलिऐक । मात्र एतबे लागल जे हमर आयब एक टा महत्त्वपूर्ण घटना छल ।

रतनाक घर फूसेक छलैक– तीनू कात घर आ एक कात टाटसँ घेरल । दरबज्जा नहि । हमरा अङने लऽ गेल । ओकर मायक पयर छुअलियनि तँ गदगद होइत बजलीह– "सुदामाक घर कृष्ण अयलाह अछि । धन्य भाग ! कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग..."

ओ ततेक आदर-सत्कार कयलनि जे हमरा लाज होबऽ लागल । खूब ठूसि-ठूसिकऽ चूड़ा-दही खयलहुँ आ रतनाक संग एक-दू अङना आर घूमि अयलहुँ । एक टा प्रौढ़ा हमर बड़ सत्कार कयलनि आ अपन ज्ञानक प्रदर्शन करैत बजलीह–"हमरालोकनि तँ अहाँक माय-काकी जकाँ पढ़लि-लिखलि नहि छी । मुदा अनपढ़ नहि छी । हनुमान-चालीसा, किस्सा तोता-मैना, सचित्र कोकशास्त्र सभ पढ़ि चुकल छी ।"

हम हुनकर ज्ञानक समक्ष नतमस्तक भऽ गेलहुँ । कतेको बरख बाद जखन हुनक सूचीमे सम्मिलित पुस्तकसँ हमर परिचय भेल तँ भभाकऽ हँसी लागि गेल । आइ सोचैत छी जे आब यदि कहियो हुनकासँ भेँट होयत आ ओ अपन ज्ञान-भण्डारक सूची बाँचऽ लगतीह तँ हमर आकृतिपर पहिल बेर सन निर्दोष भाव नहि रहि सकत ।

रतनाक घरसँ घुरैत काल साँझ भऽ गेल— एकदम झलफल । जल्दी-जल्दी डेग झटकारने घूरल अबैत रही कि बाटमे एक ठाम रतना हाथ घीचि ठाढ़ कऽ देलक । एक टा पुरुष अपनासँ एक हाथ पैघ लाठी लेने जा रहल छल–"देखि ले ! यैह हमर बाप अछि । सोझे चिलम फूकिकऽ आबि रहल अछि । आँखि देखैत छहीक !"

हम एकदम सिटपिटा गेलहुँ । अन्हारोमे दू टा आँखि चिनगी जकाँ चमकि रहल छलैक । आर जल्दी-जल्दी डेग बढ़ौलहुँ ।

धारसँ चैलमे पानि लेने एक टा पनिभरनी छौंड़ी जा रहलि छलैक । रतनाकेँ देखि ठिठिआय लगलैक । हमरा क्रोध भेल– "अनेरो ठिठियाइत अछि !"

रतना हँसैत बाजल–"अनेरो नहि, छैक एक टा बात । मुदा आइ नहि । आइ क्यो नहि । आइ लाल भौजी बजौने अछि । मौगीक देहसँ उठैत सुगन्ध चिन्हैत छहीक ? नहि ? तोँ एकदम बुद्धू छेँ ।

हमरा बड़ जोर तामस होइत अछि । कने जोरसँ पुछैत छिऐक–"की बजलेँ ?"

रतना ओहिना हँसैत बाजल–"खिसियो जुनि । हमर मतलब अछि जे तोँ खाली पढ़ाकूजी छेँ । खाली क्लासमे फस्ट अयलासँ की होयतौक ? ई सभ नहि बुझबहीक एखन, बच्चा छेँ ।"

ओकर बच्चा कहब हमरा अपमानजनक लागल । तेरहम बीति रहल छल, मोछक पम्ही देने जा रहल छल, हाथ-पयर मजगूत छल, क्यो बच्चा कहय से पसिन्न नहि छल । हम धार पार कऽ अपन घर चल अयलहुँ । मुदा रतनाक हँसी हमर देहपर छहलैत रहल । मोनमे एक टा हीनभाव जन्म लैत रहल जेना हम किछु नहि होइ, किछु बुझिते नहि होइ ।

नीक जकाँ अन्हार भऽ गेल छैक । गामक बथानसभसँ धुआँ उठि-उठि एखनो आकाश दिस छिड़िआयल जा रहल छैक । दरबज्जा सभपर राखल लालटेन

आ कौखन सम्मिलित अट्टहास वा घोंघाउज । मुदा हमर ध्यान ओहि सभपर नहि छल । आइ रतनाक हँसी हमर मोनमे ओ सभ जनबाक उत्सुकताकेँ बढ़ा गेल छल, जकरा बारहम वयसमे नहि बूझल जा सकैत छलैक । हम बाहर दलानमे बैसल एक टा अज्ञात अनुभवक असफल कल्पना करैत रहलहुँ ।

–"बैसल की करै छैँ ?" कोम्हरोसँ आबि नीरा टोकलक ।

नीरा हमरे संगतुरिआ अछि । बयसमे एक-डेढ़ बरख जेठे । गामक सम्बन्धे बहीन । ओना तँ बड़ खटखटाहि, मुदा हमरासँ खूब पटैत छलैक ।

–"किछु नै ।" हम जवाब दैत छिऐक ।

–चल चोरा-नुक्की खेलाय । प्रमोद आ गीताकेँ सेहो बजा लैत छिऐक ।"

–"चल ।"

हम तैयार भऽ जाइत छिऐक । प्रमोद हमरासँ बेस पैघ अछि, नीरोसँ दू वर्ष पैघ, मुदा खेलमे अधिक काल सन्हिया जाइत अछि । गीता हमरे बतारी अछि ।

अन्हार घरमे नुकाइत काल, सन्नूक वा केबाड़ीक दोगमे पकड़ैत काल कतेको बेर नीरा वा गीता देहसँ लपटि जाइत अछि; मुदा प्रमोद जखन ककरोसँ लपटैत अछि, बेसी काल लपटल रहि जाइत अछि, अन्हारमे नीराक संग किछु फुसफुसाइत अछि । हम देखियोकऽ बेसी ध्यान नहि दैत छिऐक । मुदा कनेके काल बाद नीराक कक्का लालटेम लेने ओम्हरसँ गरजैत अबैत छैक–"के सभ अछि ? के सभ एना अन्हारमे हुड़दंग मचौने अछि ?"

–"हम छी शंकर ।" हम निधोख सामने ठाढ़ भऽ जाइत छी ।

–"आर के छौक ?" कक्का फेर पुछैत छथि ।

–"प्रमोद अछि । अरे ! कतऽ निपत्ता भऽ गेल ?"

लालटेमक इजोतमे लगैत अछि, जेना नीराक कक्काक आँखि धधकि उठलनि । ओ नीराक डेन पकड़ि घिचने दोसर दिस लऽ गेलथिन– "चल, आइ तोहर सभ टा गर्मी झाड़ि दैत छियौक ।"

हमरा एहि काण्डक कोनो अर्थ नहि लगैत अछि । चोरबा-नुक्की तँ सभ दिन खेलाइत छी, आइ की भेलैक ? गीतो डेरायलि सन एक दिस सटकि गेलि । हम गुनधुन करैत अपन आङन चल अयलहुँ । माय देखलक तँ पूछि बैसलि–"नीराक संग खेलाइत छले ँ ?"

–"हँ ।" हम संक्षिप्त उत्तर दैत छिऐक ।

–"ओकरा संग जुनि खेलो ।" मायक ई आदेश अप्रत्याशित छल ।

–"किएक ने खेलाउ ? वैह तँ पक्का दोस्त अछि हमर ।" हम जिद्द करैत

छिऐक ।

–"नै, छौंड़ी संग दोस्ती नहि होइ छै । ओकर तँ बिआह भेल छैक । वर

आयल छैक । लोक दस तरहक बात गढ़तौक ।"

–"लोक किएक गढ़त गप्प ? हम तँ अबस्से खेलायब ।"

"नहि, तोँ नहि खेलयबेँ ।" मायक स्वर कठोर भऽ जाइत छैक ।

–"ओ नीक छौंड़ी नहि छैक । काल्हिए ओकर वर एक टा चिट्ठी

पकड़लकैक, तामसे आगि भेल छैक, तोहर नाम लपेटतौक ।"

–"हमर नाम कथीमे लपेटत ? चिट्ठी पकड़लकै तँ की भेलैक ?

सातममे पढ़ैत छैक आ चिट्ठी लिखऽ नहि औतैक नीराकेँ ?"

माय हँसऽ लागलि–"तोँ नहि बुझै छहीक । बात मान, ओकरा संग नहि

खेलो । किएक, से एखन नहि बुझबहीक, बच्चा छेँ ।"

हमरा मायक हँसी नीक नहि लागल । रतनो एहिना हँसैत छल । एहन कोन

बात छैक ? हम किएक नहि बूझि सकै छिऐक ? ओहि दिन बड़ी राति धरि निन

नहि भेल । बिछाओनपर जागल, रातिक अन्हार आ निस्तब्धतामे हम बेर-बेर एतबे

सोचैत रहलहुँ– ओ कोन बात छैक ?

पढ़ुआ कक्का आ बंगट कक्कामे अधिक काल गरमा-गरम बहस भ

जाइत छनि । बंगट कक्का छथि व्यावहारिक लोक, सिद्धान्त आदि लेल जा

देबऽवला नहि । हरदम कहैत छथिन–"हम तँ नओक बदलामे छओ खर्च करैत छी

गामक हाट छोड़ि शहरक बजार नहि जाइत छी ।" पानक एक पातक चारि टुकड़ा

कऽ चारि खिल्ली बनबैत छथि आ चारि आदमीक परिवारमे तीन पाव कत्था

चाउरसँ सँझुका बेरहटक इंतिजाम सेहो करैत छथि । पढ़ुआ कक्काकेँ देखिते कहऽ लगैत छथिन–"राज तँ छल अंगरेजक ! कोनो वस्तुक कमी नहि । एहि देशी राजमे तँ बज्जर पड़ि गेलैक सभ वस्तुपर । एहन स्वराज्य लऽकऽ कि चाटब ?"

पढ़ुआ कक्का उत्तेजित भऽ जाइत छथि–"अहाँ स्वराज्यक अर्थ नहि बुझैत छिऐक । कतेक बलिदान आ तपस्यासँ ई उपलब्ध भेल अछि। स्वतन्त्रताक पाँच बरखक बादो एहन गप्प कयनिहार देशमे महजूद छथि, से देखि आश्चर्य होइत अछि ।"

–"आश्चर्य तँ हमरा होइ अछि स्वतन्त्रताक गीत गौनिहार लोकनिपर । एकरे नाम स्वतन्त्रता छैक तँ हम गुलामे नीक । चारि पाइ सस्त भेटत वस्तुसभ..." बंगट कक्का अपने सुरमे छथि ।

पढ़ुआ कक्का एकदम छड़पि उठैत छथि–"अहाँ सन व्यक्तिकेँ स्वतंत्र देशमे रहबाक अधिकार नहि अछि । खाली चारि पाइ बचति लेल प्राण देने छी । औ प्रचण्ड, आजादी रक्त-तर्पणसँ भेटैत छैक आ ओही बलेँ टिकैत छैक ।"

–"से तँ बुझलहुँ बाबू ! मुदा लोक कथीपर टिकत ? खाली आजाद हवामे साँस लेलासँ पेट भरि जयतैक ? ई कङरेसिया सभ चीजकेँ डुबा देलक । आचार-विचार, संस्कृति सभकेँ डुबा देलक आ आब कहैत अछि जे खालीपेट खुशी रहू ।"

पढ़ुआ कक्का कट्टर कांग्रेसी छथि, एकदम छड़पि उठैत छथि–"मुँह सम्हारिकऽ बाजू । अहाँ की जानऽ गेलिऐक जे कांग्रेस की कयलक अछि देशक लेल ? कहियो जहल गेल छी ?"

ई पढ़ुआ कक्काक ब्रह्मास्त्र छनि । बेयालीसक आन्दोलनमे जहल गेल रहथि । पत्नी रुग्ण रहथिन, मरि गेलथिन । पढ़ुआ कक्का जहलेमे छलाह । तहियासँ गाम-इलाकाक लोक हुनका पक्का कांग्रेसी नेता मानि लेने छनि । पढ़ुआ कक्काक नामोक इतिहास बड़ मनोरंजक छनि । बड़ इन्तिजामक संग पढ़बा लेल शहर गेल छलाह– नाम पड़ि गेल छलनि पढ़ुआ कक्का । मुदा मिडिल पास करबासँ पहिनहि घूरि आयल छलाह । गाममे बेकार बैसल छलाह । बेयालीसक आन्दोलनमे एक टा अंग्रेज दारोगाकेँ बान्हिकऽ रखने छलाह गाममे, जहल भेल छलनि आ नेता भऽ गेल छलाह ।

ई सभ बात हमरा बादमे सुनल छल । मुदा पढ़ुआ कक्का आ बंगट कक्काक झगड़ा बरोबरि सुनऽमे अबैत छल । देयादीमे छलाह, सटले घर छलनि ।

दुनूक बहसमे खूब मजा अबैत छल । यद्यपि आजादी आ स्वराज्यक अर्थ हमरा एतबे अबैत छल ओहि दिनमे जे पन्द्रह अगस्तकेँ स्कूलमे झण्डा फहराओल जाइत छैक आ गामोपर बाबूजी अपन मकानक ऊपरमे तिरंगा टाङि दैत छथिन ।

मुदा ओहि बेर एक टा आर अर्थ लागल । भोरे रतना पहुँचि गेल– "चल, बरौनीसँ भऽ अबैत छी ।"

–"किएक ?" हम अकचका गेलहुँ ।

–अरे, एतबो नहि बूझल छौक ? आइ पन्द्रह अगस्त छैक । आइ गाड़ी फ्री । जेम्हर मोन हो, घूमि आ । हम तँ सभ साल चारूकात बौआ अबैत छी । ऐ बेर तोहूँ चल । खूब मजा होइ छैक ।"

हमरा उत्सुकता भेल आ डरो । बाबूजी सुनताह तँ की कहताह ? तैयो ओकरा संग स्टेशन अयलहुँ । खाली मायसँ दस टाका माङि लेलिऐक बेर-कुबेर लेल । स्टेशनपर खूब भीड़ छलैक, जेना कोनो मेला होइ । हम टाका रतनाकेँ दैत कहलिऐक–"हमर टिकट लऽ आ, हम बिनटिकटे नहि जयबौक ।"

रतना नोट घुरबैत बाजल–"बताह भेल छैँ ? अजुका दिन टिकट ? हम तँ अनदिनो नहि कटबैत छी । मुदा आइ तँ सभकेँ फ्री पास छैक ।"

गाड़ी आबि गेलैक । भीड़सँ लदल । सैकड़ो आदमी छतपर बैसल, पौदानपर लटकल । बच्चा, जुआन, अधबयसू सभ तरहक लोक । हमरा साहस जबाब दऽ गेल । हम रतनाकेँ कहलिऐक–"तोँ जो, हम नहि जा सकबौ एहन भीड़मे ।"

रतना जिद कयलक । मुदा हम ओकरा एकसरे बिदा कऽ देलिऐक । ओ सभकेँ ठेलि-ठालि एक टा पौदानपर लटकि गेल । गाड़ी जखन खुजलैक, सम्मिलित स्वरसँ सभ चिकरल– स्वतंत्र भारत की– जय !

गाड़ी 'स्वतंत्र भारत' गांधी-नेहरूक नारा लगबैत चल गेल आ हम प्लेटफार्मपर एकसर रहि गेलहुँ । नौ बाजल छलैक, मुदा रौद खूब तिक्ख छलैक । गाम घूरऽसँ पहिने सोचलहुँ जे कनेक शेखपुरा बजारसँ होइत चली आ 'आजाद केबिन'क चाह पीबि ली । रतनाक संग दोस्ती भेलासँ आजाद केबिनक चाह आ शेखपुरा बजारक चक्कर लगयबाक लुतुक हमरो लागि गेल ।

ओहुना शेखपुरा बजार इलाकाक एकमात्र आकर्षण-केन्द्र छलैक । स्टेशनक लग, पहिले गुमतीसँ जे रस्ता पश्चिम दिस जाइत छैक आ एकटा चौबटियापर आबि

चारूकात चल जाइत छैक, ओहि सड़कक दुनू कात बजार छैक— गुमतीसँ चौबटिया धरि । चौबटियासँ एक रस्ता उत्तर दिस रेलवे पुल पार करैत ब्राह्मण सभक बस्ती दिस चल जाइत छैक आ दोसर रस्ता पश्चिम दिस मुसलमान सभक बस्तीमे । दछिनबरिया रस्ता खादी भण्डार होइत दरभंगा शहर दिस चल जाइत छैक । आ पुबरिया रस्ता गुमती धरि जाइत छैक । गुमतीसँ चौबटिया धरि दू-तरफी दोकान छैक– मंगनू मिसरक भाङक बरफीक दोकान, मिथिला डिसपेन्सरी, आजाद केबिन, अनीस टेलर मास्टर आ सरकारी फेयर प्राइस सोप एक कात, आ दोसर कात आँटाक चक्की, फैन्सी स्टोर्स, सेठ बनवारीक कपड़ाक दोकान, किरानाक दोकान, आ ठीक चौबटियापर पानबाली गुलबिया । कहियो गुलाब सन रहलि होयति, मुदा एखन काँट सन सुखायलि छलि, मुदा बारह बरखक बेटीकेँ एखनेसँ रङि-ढौरिकऽ दोकानपर बैसबैत छलि । कहैत छैक जे हरामीसभ बेसी सुन्नर होइत अछि से गुलबियाक बेटीकेँ देखिकऽ विश्वास होइ छलैक । 'हरामी'क माने ओहि दिनमे हम नहि बुझैत छलिऐक । तखनो ने किछु बुझने छलिऐक जखन रतनाक संग पहिल बेर शेखपुरा बजार गेल रही आ गुलबियाकेँ देखा रतना कहने छल– 'ऐ आफतकेँ देखि ले । बुढ़ारीमे ई टीम-टाम छैक । जुआनीमे ककरो संग भागि पड़ायलि छलि आ दू बरख बाद सनेस दऽ 'यार' पड़ा गेल छलैक । सनेसक संग एही चौबटियापर घूरि आयलि छलि । देख ने ओहि हरामी छौंड़ीकेँ, एखनेसँ हाथ-पयर निकालि रहलि छैक । यैह तँ ऐ चौबटियाक 'रौनक' छैक ।"

मुदा हमरा हिसाबेँ चौबटियाक असल 'रौनक' छलैक आजाद केबिनमे । इलाकाक छोट-पैघ सभ श्रेणीक लोकक पहिल पसिन्न– आजाद केबिनक चाह आ घुघनी । साहित्यकार-राजनीतिज्ञ, तरुण बाबू, डाक्टर घोष, हीरोक सरदार रतना आ जोड़ीदार पूरन, विद्यार्थी आ शिक्षक, नेना आ पछुलगुआ, बूढ़ आ बच्चा सभक लेल आजाद केबिनक चाह आवश्यक । शनि आ बुधकेँ पेठियाक दिन तँ आरो चहल-पहल रहैत छैक । पेठियामे बौआइत गस्सल-गस्सल देहबाली छौंड़ी-मौगीकेँ देखबा लेल सभसँ उपयुक्त स्थान– आजाद केबिन (ई हम बादमे बुझलिऐक) । भाषण आ साहित्यिक चर्चा लेल सभसँ श्रेष्ठ स्थान– आजाद केबिन (ई किछु पहिनो बुझलिऐक, किछु बादोमे) आ सभसँ नीक चाह लेल सभसँ नीक स्थान– आजाद केबिन (ई हम पहिले दिन बूझि गेलिऐक ।)

मुदा शेखपुरा बजारक 'रौनक' दू व्यक्तिक कारणेँ आर बढ़ल-चढ़ल छलैक । एक टा सफल ज्ञान-विज्ञान कलामर्मज्ञ श्याम बाबू आ दोसर रत्नेश्वर झा उर्फ रतना । श्याम बाबूक ज्ञान स्कूल कालेजक नामपर मिडिल स्कूल धरि सीमित

कौपीकेँ सादा जमा करैत लिखने छलथिन–'हे कौपी तू
छलनि, जकर परीक्षामे कौपीकेँ सादा जमा करैत लिखने छलथिन–'हे कौपी तू जाइयो, श्रीमान् के पास, पूरा नम्बर लाइयो, कर जाइयो पास ।' परीक्षक सहृदय छलनि । कौपीपर श्याम बाबूक लेल अमूल्य सुझाव लिखि देने छलनि–"इडिल-मिडिल की छोड़ो आस, खुरपी लेकर छीलो घास ।" श्याम बाबू आज्ञाकारी छात्र जकाँ शिक्षकक परामर्श मानि लेलथिन आ खुरपी लऽकऽ घास छीलऽ लगलाह । महींस कीनि लेलनि । पानिमे दूध मिला बेचऽ लगलाह । रुपैया सूदिपर आबऽ लगलनि, मूल सुरक्षिते रहलनि । आब हुनका कोनो चिन्ता नहि छनि । घास आब चरबाह छिलैत छनि । अपने चौबटियापर खेहारि-खेहारिकऽ सूदि असूलैत छथि । जे आयबे छोड़ि देलक तकरा घर धरि खेहारि मारैत छथिन । मुदा जे सूदिपर रुपैया नहि लेने छनि तकरो कल्याण नहि छैक । अकारण कोनो बातमे टाङ अड़ाकऽ झगड़ा मोल लेबऽमे पारंगत छथि श्याम बाबू । विषय कोनो होअय, व्यक्ति क्यो होथि, चोट्टे बीचमे सन्हिया जयताह । यदि सामनेवला पार्टी मुँहदब्बू अछि, ओकरा प्रेमसँ एक घण्टा बेइज्जति करथिन आ यदि सामनेवला मुँहगर अछि तँ प्रेमसँ घण्टो बेइज्जति होइत रहताह । चोट्टे एक टा डायलाग–'हमसे

रतनाकेँ बेइज्जति करब मोस्किल । मंगनू मिसरक दोकानसँ चारि टा भाङक टकराने बाला धूल में मिल जायगा ।' गरामे हनुमानी चकती आ बरफी, आजाद केबिनमे उधारक चाह आ घुघनी खाकऽ, कौखन पसिनियाँक घरसँ चौठी ताड़ी चढ़ा, ओ हाथमे सरदारजीवला कड़ा पहिरि, घूमैत-फिरैत अछि आ धाराप्रवाह भाषण दैत रहैत मस्त साँढ़ जकाँ शेखपुरा बजारमे । कोनो आश्चर्य नहि जे भोरमे जकर पक्षमे बाजि अछि कोनो विषयपर, ककरो पक्षमे । ताधरि बजैत रहय जा धरि शेखपुरा रहल हो, साँझमे ओकर विपक्षेमे बाजऽ लागय । सड़क सुन्न नहि भेल छैक । तखन बजारमे एक्को टा श्रोता उपस्थित छैक आ ओकरासँ केबिन बन्द करबाक अनुमति आजाद केबिनक प्रोप्राइटर हाथ जोड़िकऽ माथपर लटकि लैत छैक आ रतना अपन मस्त चालिसँ दुनू पंजापर बेरा-बेरी झुमैत, अपन गाम दिस बिदा होइत अछि । ओहू अबैत केशकेँ बेर-बेर ऊपर झटकैत 'सागर से सुराही टकराये हालतिमे जखन कखनो मस्तीमे ओ गाबऽ लगैत अछि, बादल को पसीना आ जाये' तँ बाट चलनिहार ठाढ़ भऽ जाइत छैक आ गामक कनियाँ-बहुरिया, बियाहलि-बिनबियाहलि टाट-फरकीसँ हुलकी मारऽ लगैत छैक ।

बाबू एक दिन टोकने छलाह– ''तोँ रतनाक गाम गेल छलह ? ओकर घर खयलह-पीलह ?''

हम स्वीकृतिमे मूड़ी डोला देने छलियनि । बाबूक आकृतिपर एक टा आहत सन भाव आबि गेल छलनि– ''हम तोरा सभ तरहक स्वतंत्रता देने छियह । मुदा हमरा ई आशा नहि छल जे तोँ परिवारक मर्यादा आ परिपाटीकेँ एना तोड़ि देबह । तोरा बुझल नहि छलह जे हमरालोकनि हकारो-तिहारमे ओहि गाम नहि जाइत छी ? वैहलोकनि एकतरफा अबैत-जाइत छथि, खयबो करैत छथि, हमरालोकनिक घर नोत भेलापर । सौंसे गाम चर्चा भऽ रहल छह । ककरा-ककरा जबाब दियौक ?''

हमरा तामस भऽ जाइत अछि– ''ककरो जबाब देबाक काज नहि । हम कोनो चोरि वा अपराध कयने छी ? परिपाटी तँ बदलबे करैत छैक, एक्के परिपाटी सभ दिन कोना चलतैक ? ओहि गाम जयबा-अयबामे कोन हर्ज छैक ?''

बाबू कनेक तमसाइत आ तमसायलो तँ बेसी आर दुखित होइत बजलाह– ''हर्ज छैक, तोँ नहि बुझबहक । हमरालोकनिक धन चल गेल, आब एक टा इज्जति बाँचल अछि इलाकामे । आइयो ओसभ, धन-सम्पत्ति भेलोपर अपनाकेँ छोट बुझैत अछि । हमरासभकेँ महत्त्व दैत अछि, हमरे गामक नाम लऽकऽ बाहर महत्त्व पबैत अछि । तोँसभ एना ओकर घर अयबह-जयबह तँ फेर कतऽ रहतह अन्तर ? कोना देतह आदर ?''

हमहूँ अपन बातपर अड़ल रहैत छी– ''कोन काज छैक अन्तर रहबाक ? दोस्तीमे अन्तर किएक ? हमरा तँ ओहू गामक लोक नीक लगैत अछि, रतना नीक लगैत अछि ।''

बाबू बुझबैत कहने छलाह– ''तोँ जिद्द कऽ रहल छह, मुदा परिणाम नहि सोचैत छहक ? नीक लोक ओहू गाममे छैक, मुदा ओकरासभक सामाजिक प्रतिष्ठा हमरालोकनिसँ कम छैक आ रतना तँ एकदम बदनाम छौंड़ा अछि । ओकरा संग रहलासँ तोहूँ बदनाम भऽ जयबह । ओकर संग छोड़ि दैह ।''

ओहि दिन बाबूजीक बात हम नहि मानैत छियनि । रतनाक संग नीक लगैत अछि आ ओकर व्यक्तित्व परीक नायक जकाँ आकर्षित करैत अछि ।

मुदा आकर्षण टूटऽ लगैत अछि । ओकर खलनायकी व्यक्तित्व चिन्हार होबऽ लगैत अछि आ दसमा क्लासमे अबैत-अबैत एकदम असह्य भऽ उठैत अछि ओकर काजसभ । सोलहममे पयर दैत छी हम आ रतनाक ई व्यक्तित्वक सम्मोहन

टूटि जाइत अछि आ एक-एक कऽ बहुत रास घटना ओकर असली रूप हमर सामने स्पष्ट कयने चल जाइत अछि ।

एक दिन ओ स्कूलक सभ टा कागत-पत्तर चोराकऽ रद्दीक भाव बेचि दैत छैक । चोरी पकड़ा जाइत छैक, मुदा डरे ककरो ओकरा किछु कहबाक साहस नहि होइत छैक । हमरा ज्ञात होइत अछि तँ बड़ क्षोभ होइत अछि । टोकैत छिऐक तँ सहज भावसँ बजैत अछि– ''रुपैयाक काज छल, रद्दी बेचि देलिऐक । एहिमे कोन बेजाय बात छैक ?''

फेर एक दिन ओ स्टेशनपर मारि-पीट कयलक, छोटा बाबूक कपार फोड़ि देलकैक । मोकदमा भेलैक आ तीन मास जहलसँ भऽ आयल । जहलसँ घूरिकऽ आयल तँ टोकलिऐक तँ बड़ शानसँ बाजल– ''एहिमे लाजक कोन गप्प ? जहल तँ बड़का-बड़का नेतासभ जाइत छथि ।'' ओहि राति रेलक फर्स्ट क्लासक डिब्बासँ सभ टा गद्दावला सीट उखाड़ि कऽ लऽ अनलक ।

तखन ओकर 'लाल भौजी'कें सेहो देखलिऐक । चालीसक वयस, पैघ-पैघ धीयापूता । देखिकऽ हमरा आश्चर्य भेल । हम तमसाइत पुछलिऐक– ''तोहर मायक बयस छैक । झूठ-मूठ खिस्सा बना बदनाम करैत लाज नहि होइत छौक ? तोरा सन-सन तँ धीयापूता होयतैक ओकरा ।''

ओ हँसैत बाजल– ''पढ़ाकू जी ! सोलहम बयस भेने की होयत ? एखन आरो बहुत रास बात अहाँ नहि बुझबैक । प्रेममे बयस नहि देखल जाइत छैक । ओकर देह देखैत छिऐक ? –केहन कस्सल-कूसल छैक । एकदम मजगूत काठी । फेर स्वामी परदेसिया छैक, साल-दू सालमे एक बेर अबैत छैक । बुझलिऐक किछु ?''

हम एकदम उत्तेजित होइत कहलिऐक– ''हम सभ टा बूझि गेलिऐक । ई सभ काज तों छोड़ि दे । बड़ लाज होइत अछि हमरा तोहर कृत्यपर ।''

ओकर आकृति एकदम कठोर भऽ गेलैक– ''दुनियाँमे सभसँ सस्त चीज की छैक, तोरा बूझल छौक ?

हम ओकर मुँह ताकऽ लगलिऐक ।

–''उपदेश ।'' ओ ओहिना कठोरतासँ बाजल– ''आ उपदेशकसँ हमरा एकदम घृणा अछि, खाहे ओ जे हो ।'' ओ पिचसँ जमीनपर थुकैत, ओहिना दु पंजापर बेरा-बेरी झुमैत चल गेल आ हम अपमानित जकाँ ठाढ़ रहि गेलहुँ ।

दू दिन बाद घूरनसँ भेँट भेल– रतनाक जोड़ीदार, पक्का दोस्त । देखिते हमरा घेरि लेलक– ''अहाँ कनेक रतनाकेँ बुझा दियौक शंकर बाबू !''

–''की बुझा दियौक ?''

–''कहितो कोनादान लगैत अछि, मुदा बिनकहने उपायो नहि अछि । हमर कनियाँ दोस्तीक लेहाजे हँसि-बाजि लैत छैक, बस्स, बातकेँ बतंगड़ बना देलक । सभ ठाम हमर स्त्रीकेँ बदनाम करैत फिरैत अछि ।''

–''तँ एहिमे हम की करू ? अहाँक तँ पक्का दोस्त अछि...''

–''दोस्ती गेल चुलहामे ।'' घूरन उत्तेजित होइत बाजल– ''जखन ओ बैमन्ना दोस्तीपर लात मारि देलक तँ हमहूँ थुकैत छिऐक ओकर दोस्तीपर । मुदा ई हमर इज्जतिक प्रश्न अछि । अहाँ कनेक बुझा दियौक ।''

हम कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलिऐक घूरनकेँ । 'लाल भौजी'वला गप्प हमरा मोन छल । रतनाक उत्तर हमरा बूझल छल । तैयो भेँट भेल तँ टोकि देलिऐक– ''आइ घूरन भेटल छल । किदन-सभ कहैत छल तोरा दऽ ।''

ओ उपेक्षासँ बाजल– ''की कहैत छलौक ओ हिजड़ा ?''

हमरा एक टा दोस्तक लेल ओकर ओ सम्बोधन अपमानजनक लागल– ''एना कहैत छहीँ अपन दोस्तक लेल ? ओकर स्त्रीकेँ बदनाम करैत छहीँ ?''

रतना ओहिना उपेक्षासँ बाजल– ''तँ रोकि लेलओ अपन स्त्रीकेँ । डाँड़मे दम्म नहि तँ स्त्री बौअयबे करतैक । हमरा छोड़ि देलासँ की होयतैक, क्यो आर मजा करतैक ।''

हमरा ओकर गप्प असह्य लागऽ लागल । एकदम बिगड़ैत कहलिऐक– ''तोहर गप्प-सप्प आ आचरण आब सभ टा सीमा लँघने जाइत छौक ।''

ओहो ओहिना कठोरतासँ बाजल– ''तोहूँ सभ टा सीमा लँघने जाइत छेँ । हमर व्यक्तिगत जीवनमे हस्तक्षेप करैत छेँ । से अधिकार हमर मायो-बापकेँ नहि छैक । हम कहि चुकल छियौक, उपदेशसँ हमरा एकदम घृणा अछि ।''

हमहूँ उत्तेजित होइत कहलिऐक– ''आ हमरा तोहर प्रत्येक आचरण आ अभिव्यक्तिसँ घृणा अछि । अपन आचरण सुधार, नहि तँ ई दोस्ती निमहब मोश्किल भऽ जयतौक ।''

ओ एकदम लापरवाहीसँ बाजल– ''एहन दोस्तीक चिन्ते ककरा छैक ? राख अपन दोस्ती आ उपदेश अपने लग, हमरा नहि चाही । हमर तोहर दोस्ती केहन ? हम सिंह छी, तोँ गीदड़ ।''

हमरा आँखिमे नोर आबि गेल । ओकरा लेल माय-बाबू, समाजक प्रत्येक व्यक्तिक विरोध कयने रही । आशा छल जे एक दिन सुधरि जायत । मुदा हमर दोस्तीक ई मूल्य छैक ओकर दृष्टिमे से नहि बूझल छल । आहत-अपमानित घर घूरि अयलहुँ ।

मुदा घर अबैत-अबैत लागल जेना मोन हल्लुक भऽ गेल होअय । ओकर दोस्ती एम्हर अपमान आ शंकाक कारण बनि गेल छल लोकक दृष्टिमे । स्वयं हमरो मोनक कोनो कोनमे एहि दोस्तीकेँ तोड़ि-ताड़ि फराक भऽ जयबाक इच्छा नुकायल छल आ ई अनायास सभ टा समाप्त भऽ गेलापर जे क्षणिक दुख भेल छल से बिला गेल । लागल जेना एक टा दाग धोआ गेल हो आ कोनो अप्रिय लोकसँ पिण्ड छूटि गेल होअय, एक टा अशोभन, अप्रीतिकर घटना टरि गेल होअय । मोन प्रसन्न आ हल्लुक भऽ गेल ।

मुदा फेर लागल जेना गाममे रहि, एक्के स्कूलमे पढ़ि एहि सभसँ एना फराक भऽ सकब संभव नहि होयत । ओ अपन लाइन नहि छोड़त आ ओकर कुकीर्ति लेल सभ हमरा टोकबे करत– अहाँक दोस्त आइ ई कयलक... आइ ओ कयलक । एहि दागकेँ छोड़ायब एतेक सोझ नहि होयत ।

तखने हमरा दिमागमे एक टा उपाय सूझि गेल । ई विचार ततेक तेजीसँ दिमागमे आयल जे हमरा स्वयं आश्चर्य भेल । मुदा ओहि आश्चर्यमे एक टा प्रसन्नता निहित छल । हम ओही क्षण बाबूक समक्ष ठाढ़ भऽ कहलियनि– ''गाममे साइन्सक पढ़ाइ ठीक नहि होइत छैक । हमरा दरभंगा स्कूलमे नाम लिखा दियऽ ।''

शुरू-शुरूमे बड़ उदास आ सुन्न लागय । यद्यपि शहरमे बेसी चहल-पहल बेसी रौनक आ मनोरंजनक साधन रहय तैयो सदिखन उदास आ सुस्त रही । लागय जेना किछु छूटि गेल होअय । स्कूलक सभ विद्यार्थी अपरिचित, शिक्षक अपरिचित आ सौंसे वातावरण अपरिचित । समय काटब मोश्किल भऽ जाय । मुदा ताहि दिन हमरा लागय जे गामक दिन आ शहरक राति नीक होइत छैक । साँझक बाद शहर

समय काटब आसान भऽ जाय । आर नहि किछु तँ सिनेमा आ रोशनीक बाढ़िमे डूबल शहरमे एम्हर-ओम्हर बौआयब ।

मुदा एकसर सिनेमा देखब आ घूमब बेसी दिन नहि चलल । एक टा दोस्त भेटि गेल । अरुण– माने अरुण कुमार बनर्जी । शुरू-शुरूमे ओकरासँ हमरा डर होइत छल । कनेक हुड्ड सन छल । क्लासमे अनेरो हंगामा कयने रहय । मास्टरोसभकेँ नहि गुदानैक । हम गामसँ आयल एक टा दब्बू छौंड़ा रही– सभसँ पछिला सीटपर दबकल बैसल रही, शिक्षक आ सहपाठी सभक दृष्टिसँ उपेक्षित । मुदा एक दिन अरुण हमर बेंचपर आबिकऽ बैसि रहल । हम डेरा गेलहुँ । अबस्से कोनो उत्पात करत । आर घोकचिकऽ बैसि गेलहुँ । मुदा ओ नहि मानलक । कानमे मुँह सटबैत बाजल– ''देख, तोरे देखैत छौक ।''

–''के ?'' हम ओहिना डेराइत पुछलिऐक ।

–''आर के ? वैह छौंड़ी, देखि ले ।''

हमर कनपट्टी लाल भऽ गेल । क्लासमे दू टा छौंड़ी सेहो पढ़ैत छलैक । मुदा हम लाजक लेल कखनो ओम्हर तकितो ने छलिऐक । गामक स्कूलमे छौँड़ीसभ नहि पढ़ैत छलैक । गाममे छौँड़ीसभक संग हम खूब हँसि-बाजि लैत रही । मुदा ई दुनू छौँड़ी गामक छौंड़ी सन नहि छलि । नहि जानि किएक ओकरासभ दिस तकिते कनपट्टी गरम आ लाल भऽ जाइत छल । खासकऽ शोभाकेँ देखलापर । आ ओकरे विषयमे अरुण कहि रहल छल जे हमरे ताकि रहलि अछि । हमर कनपट्टी गरम भऽ गेल । हम कनेक गरदनि घुमा ओम्हर देखलिऐक तँ लागल जे सत्ते एम्हरे देखि रहलि अछि आ दुष्टतापूर्वक मुसकिया रहलि अछि । हम लजाकऽ फेर दोसर दिस ताकऽ लगलहुँ ।

''देखलहीक ?'' –अरुण फेर कानमे मुँह सटबैत बाजल– ''अबिते बाजी मारि लेलेँ, शाबास !''

हम तैयो कोनो जवाब नहि देलिऐक । मुदा अरुण ओहि दिन हमरे बेंचपर धसना खसौने रहल । साँझखन अपन घरो लऽ गेल । माय-दीदी सभसँ भेँट करौलक आ सभकेँ एतबे कहलकैक– ''क्लासक एक टा छौंड़ी एकरासँ प्रेम करैत छैक ।''

ओकर घरसँ घुरैत काल हमरा लागल जेना हम सत्ते प्रेममे छी । हमरा लागल जेना ई सम्पूर्ण शहर हमरे सम्बोधित कऽ रहल अछि– 'तोँ प्रेममे छेँ', तोँ

प्रेममे छे ँ ।' आ सौंसे शहर संगीतमय भऽ उठल । अपन कोठलीक अन्हारमे भोजनक लेल मेस जाइत काल बाटक सुन्न एकसरपनमे सभ ठाम, सभ अवसरपर कानमे किछु गुनगुनाइत रहल, पयरक गति बदलि गेल, आँखिक भंगिमा आ दृष्टि सेहो बदलि गेल ।

आ दोसर दिनसँ चोरा-चोराकऽ शोभाकें देखैत रहब नियम जकाँ भऽ गेल । जखन दृष्टि मिलि जाय, विश्वास आर मजगूत भऽ जाय जे अबस्से ओ हमरा दिस आकृष्ट अछि । आब हमर सीट बदललापर हमरा दिस तकैत अछि वा नहि । आ अपन धारणाक पुष्टि हमरा प्रत्येक बेर सीट बदललापर भेटि जाय जे शोभा हमरा तकैत अछि । किएक तकैत अछि ? ई प्रश्न अपनेसँ पूछि आ स्वयं उत्तर दऽ हम अपन धारणाकें पुष्ट बनबैत गेलहुँ ।

आ दिन-राति बदलि गेल । धरती आ आकाश बदलि गेल । एक टा एहन उन्माद आ तरंगमे समय बीतऽ लागल जाहिमे सभ-किछु बहि जाय– सभ टा निषेध, सभ टा औचित्य । चलैत गाड़ीक संग जे किछु बजैत अछि, लोककें तकरे प्रतिध्वनि इंजिनक शब्दमे बुझाइत छैक, तहिना प्रत्येक स्वर, प्रत्येक बात हमरे मोनक धारणाक प्रतिध्वनि जकाँ बुझाय । मुदा एक टा आर पुष्टि एखन बाँकी छल– स्वयं शोभाक मुँहसँ प्रेमक स्वीकृति । प्रेम ककरा कहैत छैक, प्रेम की होइत छैक, से हमरा नहि बूझल छल । मुदा जे किछु हमरा आ शोभाक बीच भऽ रहल छल, प्राय: ओकरे नाम प्रेम थिकैक । हम एहि अपरिचित अनुभूतिक गुदगुदीसँ ततेक अस्थिर भऽ उठलहुँ जे एक टा चिट्ठी लिखि देलिऐक ओकर नाम । चिट्ठी लिखि टिफिनमे ओकर किताबक बीच दबा देलिऐक आ चुपचाप क्लास छोड़ि डेरा आबि गेलहुँ । ओहि दिन आर क्लासमे बैसबाक साहस नहि भेल । राति भरि कल्पनामे मगन रही जे शोभा अबस्से जवाब देत, हमर प्रेमक प्रतिदान देत, अपन हृदय खोलिकऽ राखि देत पत्रमे ।

ओहि दिन भोरमे नहायमे बेसी काल समय लागि गेल । कपड़ा कोनो पसिन्ने ने आबय । बड़ गुनधुनक बाद उज्जर पैंट आ उज्जर शर्ट पहिरि, केशकें नीक जकाँ सरिया, मुँहमे खूब पाउडर मलि स्कूल दिस विदा भेलहुँ । क्लासमे शोभा नहि आयलि छलि । हम अधीरतापूर्वक प्रतीक्षा करऽ लगलहुँ । तखने हेडमास्टर साहेबक चपरासी आबिकऽ कहलक– "अहाँकें बजबैत छथि ।"

हमरा लागल जेना काल्हि क्लास छोड़ि भागि जयबाक 'रिपोर्ट' मोनिटर कऽ देने होयत, तकरे बजाहटि अछि । हम डेरायल आ कोनो नीक बहाना सोचैत

हेडमास्टर साहेबक आफिसमे पहुँचैत छी । हेडमास्टर साहेब बड़ी काल धरि मूड़ी नहि उठबैत छथि । एक टा कागत सामने टेबुलपर राखल छनि । किछु काल बाद हेडमास्टर साहेब ओ कागत उठा हमरा हाथमे दऽ दैत छथि– "ले, अपने पढ़ि ले ।"

हम कागत खोलैत छी । हमरे लिखल चिट्ठी शोभाक नाम । हमर हाथ थरथराय लगैत अछि । लाजे मूड़ी गोँति लैत छी । मोन होइत अछि जे धरती फाटि जाय आ हम ओहीमे नुका रही । मुदा हम आफिसक सक्कत सीमेन्टपर ठाढ़ रही आ हेडमास्टर साहेबक चेहरा दुखी, मुदा एकदम कठोर छलनि ।

–"की कहबाक छह ?" किछु काल बाद हेडमास्टर साहेब टोकैत छथि ।

–"किछु नहि मास्टर साहेब ! हमरा सजाय दियऽ । तकरे पात्र छी ।" हम ओहिना मूड़ी गोँतैत कहैत छियनि ।

–"की सजाय होयबाक चाही ?" हेडमास्टर साहेब हमरेसँ पूछैत छथि ।

–"हमरा सभक सामनेमे पचास बेँत लगा स्कूलसँ निकालि दियऽ ।" हमरा अपन ग्लानिसँ निस्तार नहि भेटैत अछि ।

–"ठीक । तँ तैयार भऽ जाह । छुट्टीक बाद सभकें जमा करबैक, नोटिस कऽ दैत छिऐक । एखन क्लासमे जाह ।"

हम ओ चिट्ठी ओहिना हाथमे लेने बरबराइत छी । बाहर अयलापर ध्यान अबैत अछि जे ई चिट्ठी तँ हेडमास्टर साहेबकें देबाक चाही । घूरिकऽ ओ चिट्ठी ओहिना टेबुलपर राखि दैत छियनि आ क्लासमे चल अबैत छी । हमर आकृति निश्चित रूपसँ एकदम निष्प्रभ आ हताश रहल होयत, कारण क्लासमे सभ हमरे देखऽ लागल । हम चुपचाप पछिला सीटपर बैसि जाइत छी । सभक उठल दृष्टिक हमरा उनटा अर्थ लागल छल । भेल जेना सभकें हमर नीचताक खबरि भऽ गेल छैक आ चिट्ठीवला काण्ड सभ बूझि गेल अछि । हम एकदम घृणासँ भरि शोभाकें देखैत छिऐक । ओहो हमरे दिस ताकि रहलि छलि । मुदा हमरा आँखिक उत्कट घृणा देखि ओ सहमि गेलि । दोसर दिस ताकऽ लागलि । ओ दिन जेना पहाड़ सन रहय । बितबाक नामे ने लेअय । बड़ मोश्किलसँ साँझ भेल । छुट्टीक घंटी बाजल आ सभ अपन घरक बाट धयलक । हमरा आश्चर्य भेल जे किएक सभ आफिसक आगूमे जमा नहि भेल ? हेडमास्टर साहेबक आफिसमे पहुँचलहुँ । हमरा देखिते बजलाह– "हम बहुत सोचि-विचारिकऽ फैसला कयलहुँ अछि जे तोँ एतहि रहबह । तोरा सन तेज विद्यार्थीकें एक टा गलती माफ भऽ सकैत छैक यदि मोनसँ

ओकर प्रायश्चित्त करऽ लेल तैयार हो । तोरामे प्रायश्चित्त करबाक दृढ़ता छह, तें हम ई चिट्ठी तोरे आपस करैत छियह ।''

हम हेडमास्टर साहेबक हाथसँ ओ चिट्ठी लऽ लैत छी । आँखि डबडबा जाइत अछि । ओहि चिट्ठीक टुकड़ी कऽ हेडमास्टर साहेबकेँ पयरपर राखि हम कानऽ लगैत छी । बड़ी काल धरि कनैत रहैत छी । ता धरि कनैत रहैत छी जा धरि मोन एकदम हल्लुक नहि भऽ जाइत अछि । मास्टर साहेब हमरा नहि टोकैत छथि। कानिकऽ जखन शांत होइत छी, हमरा पीठपर हाथ फेरैत कहैत छथि– ''जा, आब जा, आ सभ टा बिसरि जाह जेना किछु भेले ने होअह ।''

हम बाहर चल अबैत छी । बाटमे सभ किछु, सभ टा वातावरण, जे एक दिन हमरा संगीतमय लागल छल, मुँह दुसैत लागल । लागल जेना ई शहर आब फेरसँ उदास आ सुन्न भऽ जायत, जेना चम्पाक गेलापर बनारस भऽ गेल छल । मुदा चम्पाकेँ हम नहि बिसरल छिऐक । शोभाकेँ बिसरऽ पड़त । ओ एक टा दाग थिक जकरा रगड़ि-रगड़ि कऽ मेटाबऽ पड़त । ओ एक टा शाप अछि जकरासँ मुक्त होबऽ पड़त । हृदय आ शरीरक प्रत्येक अंशकेँ काटि देबऽ पड़त जतऽ शोभाक नाम उगल छल । हेडमास्टर साहेबक विश्वासक रक्षा करऽ पड़त । एहि निश्चयक संग हमर डेग बाटपर बेसी जोर-जोरसँ बजरऽ लगैत अछि ।

–''तोँ हमरा दिस एना किएक तकैत छेँ ?'' ओहि दिन हमरा एकस पाबि शोभा टोकि बैसलि ।

हम फेर डेरा गेलहुँ । शोभा पहिल बेर बाजलि छलि आ सेहो एक ट आक्षेपक संग । अबस्से कोनो काण्ड होयत फेर ।

–''हम किएक ताकब अहाँकेँ ? झुट्ठे सन्देह भेल अछि ।' हम बा टारबा लेल कहलिऐक ।

–''झूठ नहि बाज ! एतेक अबोध नहि छी हम । आँखिक भाषा बुझै छिऐ । पहिने तँ तोँ एना नहि तकैत छलेँ ? कहाँ चल गेलौ ओ दृष्टि ?''

हमरा मोनमे किछु धधकऽ लागल । आगि लगाकऽ धाही उठबाक कारण पूछि रहलि अछि । ओहि दृष्टिकेँ ताकि रहलि अछि जकरा टाकु घोपि अपने अन्हरा चुकलि अछि । अबस्से कोनो चालि होयतैक एहूमे ? हम ओकर आकृतिपर अपन दृष्टि गाड़ि दैत छिऐक । ओ एकदम अस्थिर होइत बाजि उठैत अछि— नहि ताक एना हमरा दिस । लगैत अछि जेना कोनो लहास हमरा अपनामे लपेटि जरा देत । एहन कोन अपराध भेल अछि हमरासँ ?''

हमर मोनमे घृणाक बाढ़ि आबि जाइत अछि । यदि एक टा नीक छौंड़ी जकाँ हमर पत्र हेडमास्टरकेँ दऽ हमर शिकाइत कयलक, तँ ओहिमे ओकर कोनो दोष नहि छलैक । मुदा ओ काण्ड कऽ फेर जे नाटक कऽ रहलि छलि ताहिसँ हमरा ओकर चरित्रपर सन्देह होबऽ लागल आ मोनक घृणा तीव्र भेल चल गेल ।

हम हाथ जोड़ैत कहैत छिऐक– ''अपराध अहाँसँ नहि, हमरासँ भेल अछि, मुदा तकर आर कतेक सजाय देब ? पहिनहि पूर्ण सजाय पाबि चुकल छी हम ।''

ओकर मुँह कनौन सन भऽ जाइत छैक– ''हम की सजाय देलियौक अछि तोरा ? अनेरो हमरापर लांछना लगबैत छेँ । हमहीँ बेकूफ छी जे तोरा दिस दोस्तीक हाथ बढ़ौलियौक । तोरा आब घमण्ड भऽ गेल छौक, क्लासमे फर्स्ट करैत छेँ, डिबेट आ खेल-कूदमे सभसँ आगू रहैत छेँ !''

–''मुदा ओ चिट्ठी ?'' हमरा मुँहसँ अनायास बहरा जाइत अछि ।

–''कोन चिट्ठी ?'' तेना अकचकाइत अछि जे हमरा विश्वास करऽ पड़ैत अछि जे ओकरा चिट्ठीक विषयमे किछुओ नहि बूझल छैक । ओकरा ओतहि छोड़ि हम दौड़ल हेडमास्टर साहेबक कोठली दिस जाइत छी । चपरासीक हाथ पुर्जा पठायब सेहो मोन नहि रहैत अछि । धड़धड़ायले हुनक आफिसमे पैसि जाइत छी– ''सर, एक टा बात पुछबाक अछि अहाँसँ ।''

–''हमरा बूझल अछि । हमरा तऽ आश्चर्य भऽ रहल छल साल भरिसँ जे तोँ किएक ने ओ सबाल पूछऽ आयल छेँ ?''

–''अहाँकेँ बूझल छल सर ? तखन तँ अहाँकेँ ईहो बूझल होयत जे हमर ओ चिट्ठी के अहाँकेँ दऽ गेल छल ?''

–''हमरा बूझल अछि । मुदा तोँ हमर प्रिय छात्र छह, स्कूलकेँ तोरासँ बड़ आश छैक, तेँ कहैत छियह जे ई जनबाक चेष्टा नहि करह जे ओ चिट्ठी कोना हमरा लग पहुँचल ।''

—"अहाँ विश्वास करू सर, जे वचन हम अहाँकेँ देने छी, ओकर पालन अबस्से करब । खाली छातीपरक एक टा बोझ हल्लुक भऽ जायत ।" हम जिद्द करैत छियनि ।

—"तोहर मोनक सान्त्वनाक हेतु एतबे पर्याप्त होयतह जे चिट्ठी हमरा ओ नहि देने छलि, जकरा तोँ देने छलहक । ओकरा तँ ओ भेटबो नहि कयलैक । किताबसँ कम्पाउण्डमे खसि पड़लैक । क्यो पौलक आ हमरा दऽ गेल ।"

—"मुदा के देलक सर ओ चिट्ठी ? अहाँकेँ के देलक ?" हम एक टा अप्रत्याशित प्रसन्नतासँ भरल जिद्द करऽ लगलियनि ।

—"ई बुझबाक तोरा कोन काज छह ? क्यो पाबि सकैत अछि । के देलक से जानि मात्र प्रतिशोधक अतिरिक्त आर कोन मंतव्य सिद्ध होयतह तोहर ? जा, जिद्द जुनि करह ।"

हम हेडमास्टर साहेबक अफिससँ चल अबैत छी, प्रसन्न हवामे उड़िआइत । एतेक दिनसँ राखल पाथर छातीपरसँ हँटि गेल छल आ स्वाभाविक रूपसँ साँस लऽ रहल छलहुँ । शोभा ओहिना, ओही स्थानपर ठाढ़ि छलि जतऽ छोड़िकऽ गेल छलिऐक । हम दौड़ल ओकरा दिस बढ़लहुँ । मुदा फेर पयर थकमका गेल । की कहबैक ? कहबैक जे तोरा एक टा चिट्ठी लिखने छलियौक जे तोरा नहि भेटलौक । कहबैक जे ओहिमे लिखने छलियौक जे हम तोरासँ... हम तोरासँ... नहि, हमरा नहि कहि होयत । ई अध्याय आब एतहि समाप्त भऽ जाय तँ नीक । एकर खोललासँ आर अधिक कष्टसँ बेसी कथूक संभावना नहि अछि । शोभा निर्दोष भावेँ दोस्तीक हाथ बढ़ौलक अछि, ओकरा फेर सभ टा पुरना बात सुना घुरा देब उचित नहि होयत । ओकर दोस्तियोकेँ स्वीकार कऽ लेबाक चाही ।

शोभाक लग आबि हम हँसऽ लगैत छी । हमरा प्रसन्न देखि ओहो हँसबाक चेष्टा करैत अछि– "की भेलौ ?"

—"भेल किछु नहि । खाली तोहर गप्प मोन पड़ैत अछि । तोँ कहलें जे हम बड़ घमंडी भऽ गेल छी ! घमण्डीक कोन लक्षण देखलें तोँ हमरामे ?" हम बात बदलैत कहैत छिऐक ।

—"बात नहि बना । तोँ कोनो चिट्ठीक गप्प करै छलैँ, ककर चिट्ठी छलैक ?" शोभा उत्सुकतासँ पुछैत अछि ।

—"छलै एक टा चिट्ठी । कोनो उकट्ठी हमरा विषयमे अण्ट-सण्ट लिखि देने छलैक हेडमास्टर साहेबकेँ । तोरो नाम छलैक, तेँ हमरा भेल जे तोँ लिखने होयबेँ ।" हम फूसि बाजि जाइत छी ।

शोभा हमर बातक प्रायः विश्वास कऽ लैत अछि । दुखसँ ओकर मन एकदम उदास आ छोट भऽ जाइत छैक– "तोँ हमरा एतेक नीच बुझैत छलेँ ?"

हम बात टारैत कहैत छिऐक– "आब छोड़ ओ बात । आब तँ दोस्त भऽ गेल छी हमरालोकनि ।"

हमरालोकनिक दोस्ती एकदम पक्का भऽ जाइत अछि । स्कूलमे फेर तरह-तरहक चर्चा होबऽ लगैत अछि । अरुण सभ दिन टोकैत अछि– "वाह ओस्ताद, किला फतह ।" मुदा आब ओकर शाबासी हमर मोनमे पहिल बेर सन तरंग नहि उत्पन्न करैत अछि । लगैत अछि जेना किछु छल मोनमे जे मरि गेल अछि । हम अपने हाथेँ मारि देने छिऐक, ओकरा फेरसँ जिआयब संभव नहि होयत ।

जिआयब संभव होइतो नहि अछि । समय ससरि जाइत अछि । हमरालोकनि दोस्तीसँ आगू नहि बढ़ैत छी । मैट्रिकक परीक्षा समाप्त भऽ जाइत अछि । गाम जयबाक तैयारी करऽ लगैत छी । जाहि दिन गाम जयबाक छल, ताहि दिन तेहने लागल जेना बनारस छोड़ैत काल लागल छल । बनारसक गली-देबालपर चम्पाकेँ अपन पता दऽ आयल छलिऐक, मुदा कोनो पत्र नहि आयल । दरभंगाक शोभा अछि, मुदा ओकरा किछु कहि सकैत छिऐक । हम जनैत छी जे ई शहर प्रायः छूटि रहल अछि, शोभा छूटि रहलि अछि । फेर भेंट प्रायः संभव नहि हो । मुदा हमरा मोनमे कहबा लेल की सत्ते किछु नहि अछि ? एक दिन शोभाकेँ जे पत्र लिखि कहऽ चाहने छलिऐक, से की आब सत्ते मरि गेल अछि ? तखन ई शहर छोड़ऽ काल एतेक दुःख किएक भऽ रहल अछि ? मात्र दू वर्षक सम्पर्कक कारण, वा आर किछु ?

हमर मोनसँ किछु बाहर आबऽ लेल औनाइत रहल । मुदा जेना बाट अवरुद्ध छल । प्रायः मोनक चतुर पक्ष छल जे सावधान कऽ रहल छल जे खतम होइत कथाकेँ फेरसँ शुरू कयलापर अन्तहीन दुःखक अतिरिक्त आर किछु उपलब्ध नहि होयत । प्रायः हमर कौलिक संस्कार छल जे एक दिन एकटा तरंगमे बहि गेल छल आ पत्र लिखि बैसल छल । मुदा आब ओ जागि उठल छल । हम ई कोना करब ? गामपर बाबू सुनताह तँ की कहताह ? वा मोनक डर छल जे फेर ओ पत्र पहिले बेर जकाँ उपेक्षित नहि भऽ जाय आ जे दुःख एक बेर सह्य कऽ गेल छी से दोबारा सहल नहि होअय ।

मुदा बहुत सतर्कताक बादो शहर छोड़ैत काल एक टा घटना घटित भऽ

जाइत अछि । गाड़ी छुटबासँ पूर्व एक टा आठ-दास बरखक छौंड़ा एक टा पुर्जा दऽ
जाइत अछि– ''हमरा बूझल अछि, तोँ हमरा एकटा पत्र लिखने छलेँ । ओ हमरा
नहि भेटल । हम बहुत दिन प्रतीक्षा कयलहुँ, मुदा आइ निर्लज्ज भऽ लिखैत छियौक,
हमर ओ चिट्ठी तोँ हमरा घुरा नहि सकैत छेँ ? –शोभा ।''

हम चलबासँ पूर्व शोभाकेँ ईहो नहि कहि सकलिऐक जे ओ चिट्ठी तँ
ओही दिन फाड़िकऽ हेडमास्टर साहेबक पयरपर अर्पित कऽ देने छलिऐक ।

कक्कासँ जीवनमे बहुत-किछु सिखने छी– ब्रिज आ शतरंज खेलायब,
अखबार आ ग्रन्थ पढ़ब । मुदा हुनक एक टा चीज हमरासँ नकल नहि भऽ सकल।
माने बंसी खेलायब । मोन साधिकऽ दिन भरि टकटकी लगौने तरेड़ा दिस तकैत रहब
कहियो संभव नहि भेल । क्यो पैघ माछ फँसा लेअय आ घिरनीसँ ओकरा खेलाबय
तँ देखबामे हमरो नीक लगैत अछि । कक्काकेँ कतेक बेर आध-आध मोनक रोहु
घिचैत देखने छियनि, ओहि कालमे कक्काक रुग्ण कंकालक फुर्ती देखि आश्चर्य
होइत छैक लोककेँ । मुदा हमरा आश्चर्य होइत अछि तरेड़ापर टकटकी लगौने रौदमे
बैसल खेलाड़ीकेँ देखिकऽ । एहिसँ छोटका बंसीमे पोठी-टेङड़ा मारब हमरा नीक
लगैत अछि, सेहो जल्दी-जल्दी तरेड़ा घिचय आ धड़ाधड़ घिचने जाइ ।

परीक्षाक बाद किछु दिन कक्काक
बैसारीमे मोन अकच्छ भऽ गेल छल । ''लैह, पढ़ने
'स्टौक'पर खेपि गेलहुँ । सभ दिन एक टा पुस्तक दऽ देथि हाथमे–
छह ?'' हम पढ़लोकेँ दोहरा-तेहरा जाइ, समय काटऽ लेल । कक्काक तँ संगिनी
किताब, ताश-शतरंज आ बंसी छनि । पत्नी तीस बरख पहिने छोड़ि गेल छथिन।
एक टा बेटा, सेहो जुआन, स्त्री-सन्तानवला । कक्का एकदम एकाकी । कौखन
ताश-शतरंज आ नहि क्यो जुटल तँ बंसी । आ यदि बंसीक सेहो समय नहि रहलैक
तँ पुस्तक, जासूसीसँ लऽ वेदान्त-महाभारत धरि, कालिदास, शेक्सपियरसँ लऽकऽ
स्टार आ माया सीरीज धरि ।

पुरना 'माधुरी' आ
बैसारीमे हम कक्काक सभ स्टौक चाटि गेल रही । रिजल्ट
'सुधा'क फाइलसभ सेहो उनटा गेल रही । मुदा समय कटिते ने छल ।

बेर लगिचायल छल, मुदा प्रकाशनक कोनो तिथि घोषित नहि भेल छलैक । प्रतीक्षामे
कछमछी बढ़ि गेल छल ।

बेर-बेर शोभा मोन पड़ैत छलि । एकान्तमे, रातुक एकसरमे, ओकर प्रथम
आ अन्तिम चिट्ठी (एक टा पुर्जी) बेर-बेर पढ़ि जाइत छलहुँ । मुदा तकर बाद आगू
किछु नहि सुझैत छल । शोभाकेँ की लीखि सकै छलिऐक आब ? संग छूटि गेल
छल । साल-दू सालमे सासुर चल जायति ओहो । बिसरि जायत जे कहियो ककरो
एक टा पुर्जी लिखने छलैक । मुदा हम ओकर ई पुर्जी जीवन भरि संग रखबैक ।
ओ हमरा सदिखन मोन देआओत जे कहियो एक टा निर्दोष प्रेम हमरा भेटल छल
आ तकर स्मृति सदिखन हमरा जीवनमे किछु करबाक प्रेरणा दैत रहत, जेना
चम्पाक स्मृति । एक टा निर्दोष फूलक स्मृति जकरा हम अपन घर-आङनमे सजा
तँ नहि सकलहुँ; मुदा जकर गमक जीवन भरि हमर मन-प्राणमे बसल रहत, हमर
एकान्तकेँ, हमर व्यस्तताकेँ सुवासित कयने रहत । कौखन लगैत छल जेना हम
कायर छी, आगू बढ़िकऽ ओकर प्रेमकेँ स्वीकार किएक ने करैत छी ? मात्र एक
टा आदर्श कल्पनामे किएक भेतिआयल छी ? जे उपलब्ध अछि, समर्पित अछि
तकरा हाथ बढ़ा घीचि किएक ने लैत छी अपना दिस ? हम अपन मोनकेँ बुझबऽ
चाहैत छलिऐक जे एहिमे कायरताक नहि, वास्तविकताक प्रश्न छैक । वास्तविकता
यैह छैक जे ओ विजातीय अछि, ओकरा हम ग्रहण कऽ घर नहि आनि सकैत
छिऐक ? तखन मात्र चारि दिन लेल स्नेह बढ़ौलासँ लाभ ? मोनक ओ असंतुष्ट
कोण हमर तर्कपर हँसैत छल– ''प्रेममे जातिक प्रश्न ? विलक्षण ? आ फेर जेना
घृणासँ बाजऽ लगैत छल... कायर... कायर.... कायर... ।

ओहू दिन हम मोनक ओही असंतुष्ट कोणक भर्त्सनासँ घबड़ा गेल रही ।
समय कटबा लेल कोनो पुस्तको नहि छल । पुरान कोनो हाथमे लऽ बैसबो कयलहुँ
तँ भीतरक ओ आवाज आर तीव्र भऽ गेल । हम घबड़ाकऽ घरसँ बहरा गेलहुँ ।
अनिद्राक रोगी जकाँ भरि गाम बौआ अयलहुँ । कतहु क्यो नहि अभरल । निराश
घुरैत काल पोखरिक घाटपर पढ़ुआ कक्का भेटलाह– छोटकी बंसी लेने बैसल ।
एक टा पितरिया लोटामे छलबलाइत तीन-चारि टा पोठी आ घाटपर पाथल दू टा
बंसी । हमहूँ लग जा एक टा बंसी उठबैत कहलियनि– ''लाउ, हम खेला दैत छी ।''

पढ़ुआ कक्का कनेक बोर हमरा हाथमे दऽ दैत छथि । हम बंसी दोसर
दिस पाथि दैत छिऐक ।

–''एखन किछु दिन रहबह गाममे ?'' पढ़ुआ कक्का टोकैत छथि ।

–"रिजल्टक लेल ठहरल छी, आब तँ अबेर भेल जाइत अछि ।" हम बंसी छिपैत कहैत छियनि ।

एक टा छोटकी पोठी ऊपर अबैत अछि । पढ़ुआ कक्का पोठीकेँ बंसीसँ छोड़ाकऽ लोटामे रखैत कहैत छथि– "एहि राजमे कोनो काज बेरपर होइत छैक जे रिजल्ट होयतैक ?"

हमरा आश्चर्य होइत अछि । पढ़ुआ कक्काक मुँहसँ अपन राजक विषयमे एहन गप्प ? हमरा नहि रहि होइत अछि, टोकि दैत छियनि– "मुदा पढ़ुआ कक्का, ई तँ अहाँक अपन राज थिक !'

पढ़ुआ कक्का पैघ साँस लैत बजैत छथि– "अप्पन राज अछि, तेँ तँ दुःख अछि । विदेशीसँ अपेक्षे कहाँ छल ? अपेक्षा तँ अछि अपन राजसँ । मुदा कहाँ किछु देखैत छी ! एक युग बीतऽ जा रहल अछि स्वतंत्र भेना, मुदा प्राप्त की भेल अछि ? मात्र मौखिक आश्वासन, कल्हुका सपना । धर्मशास्त्री जेना स्वर्गक लोभमे जनताकेँ परतारैत रहलथिन, तहिना ई नेतासभ काल्हिक सपना देखा जनताकेँ ठकि रहल छथि ।"

–"मुदा पढ़ुआ कक्का, बिन सपना देखने तँ किछुओ नहि उपलब्ध होइत छैक । स्वाधीनताक स्वप्न यदि शहीदलोकनि नहि देखितथि तँ ई स्वतन्त्रता भेटैत ?"

–"से तँ ठीके कहैत छह । सपना देखऽ पड़ैत छैक । ओकरा साकार करबा लेल सभ किछु अर्पण करऽ पड़ैत छैक । सपना तँ हमहूँ देखने रही, अपन सुखो-शान्तिकेँ अर्पण कऽ देने रही । की भेटल ? आइयो ओहिना अशान्त छी । पेट नहि भरैत अछि तेँ बुढ़ारीमे बंसी लेने पोखरिमे बैसल छी, चारियो टा पोठी होयत तँ झोसकऽ काज चलि जायत ।...हे... हे...हे...कतऽ ध्यान छह... तरेहा गोतिकऽ लऽ गेलह....छीपह....छीपह... ।

हम हड़बड़ाकऽ छीपि दैत छिऐक । एक टा पोठी पानिसँ ऊपर ऊठि फेर पानियेमे खसि पड़ैत अछि । पढ़ुआ कक्काक मोन उदास भऽ जाइत छनि– "च् च् च्, केहन पैघ पोठा छल !"

हमरा बड़ दुःख होइत अछि । माछ छूटि जयबाक नहि, पढ़ुआ कक्काक टूटि जयबाक । क्रान्ति आ स्वतन्त्रताक गप्प करैत-करैत एकदम पोठी छूटि जयबाक दुःखपर आबि गेल छलाह, आ स्वाधीनता आ त्यागक बात एकदम बिसरि गेल छलाह । ई पढ़ुआ कक्का हमरा लेल अपरिचित छलाह । हम तँ ओहि पढ़ुआ

कक्काकेँ चिन्हैत छलियनि जे क्रांति आ स्वाधीनताक गप्प करैत काल बाँकी सभ किछु बिसरि जाइत छलाह, अन्न-पानि घर-द्वार आ अपनाकेँ बिसरि जाइत छलाह । एक टा पोठी छूटि गेलासँ हताश भऽ जायवला पढ़ुआ कक्कासँ पुरना आशावादी पढ़ुआ कक्काक तुलना करैत हमर मोनमे किछु कचकैत अछि ।

हम एकदम ध्यानस्थ भऽ जल्दी-जल्दी दस टा पोठी मारि दैत छियनि । पढ़ुआ कक्काक आकृति चमकऽ लगैत छनि जेना कोनो भारी दुश्चिन्तासँ मुक्ति भेटि गेल होइनि ! बेर-बेर लोटा हिला-डोला कऽ माछकेँ गनैत छथि । हमर मोन कोनादन करऽ लगैत अछि । हम बंसी पढ़ुआ कक्काकेँ हाथमे दैत कहैत छियनि– "आब जाइत छी कक्का !'

–"जाइत छह ?" पढ़ुआ कक्काक मोन फेर उदास भऽ जाइत छनि– "खूब तँ खा रहल छह तोहर घाटपर ! कनेक काल आर बैसह ने !"

हम पढ़ुआ कक्काक आग्रह नहि सुनैत छियनि । बंसी दऽ घाटसँ ऊपर चल अबैत छी । दिन खसल जा रहल छलैक । सूर्यक गोला खूब लाल-लाल पश्चिममे धधकि रहल छलैक । कनियेँ कालमे ई अस्त भऽ जायत– ठीक पढ़ुआ कक्का जकाँ । हम सोचैत छी आ आङन दिस डेग बढ़बैत छी ।

दरबज्जा लग अबिते एकदम चौंकि उठैत छी । दरबज्जापर रतना बैसल अछि– दू वर्षक बाद । गाम छोड़लाक बाद फेर कहियो ओकरासँ गप्प नहि भेल छल । दूरोसँ देखादेखी नहि । आइ फेर ओकरा बैसल देखि कोनो अनिष्टक आशंकासँ कोँढ़ काँपि जाइत अछि । मुदा शिष्टाचारवश पूछऽ पड़ैत अछि– "कखन अयलेँ ?"

हमर प्रश्नपर ओ उत्साहित भऽ उठैत अछि– "बस्स, आबिए रहल छी । मुदा तोँ तँ अपन एहि अयोग्य दोस्तकेँ एकदम बिसरिए गेलेँ ? हमरासँ गलती भेल, मुदा हम तँ पहिने कहने रहियौक जे हम नीक लोक नहि छी । फेर हमरासँ दोस्ती कयलाक बाद एना मुँह किएक मोड़ि लेलेँ ? फेर ककर बलपर हम सुधरितहुँ ? मुदा तोँ विश्वास कर, तोरा सामने जे ई रतना ठाढ़ छौक से ओ रतना नहि छौक, जकरासँ तोरा घृणा छलौक । ई तँ एक टा नव रतना छौक, ओहन रतना जेहन तोँ चाहैत छलेँ । हमर विश्वास कर, हम झूठ नहि कहैत छियौक ।"

रतना फेर अपन परिचित, नाटकीय अंदाजमे बाजि रहल छल । बेर-बेर अपन माथक केश ऊपर झटकि रहल छल आ हाथसँ गरदनिक हनुमानी चकती

एम्हर-ओम्हर ससारि रहल छल । मुदा आब ओकर जादूक असरि खतम भऽ गेल छलैक । अट्ठारहक वयस आब अपरिचित नहि छल हमरा लेल आ एहि परिचयक संग ओकर खलनायकी व्यक्तित्व आकर्षक नहि, डेराओन आ घृणास्पद भऽ उठल छलैक । हम ओहिना निर्विकार ओकर गप्प सुनैत रहलिऐक ।

ओ फेर बाजऽ लागल– ''तोरा विश्वास नहि भऽ रहल छौ हमर बातपर ? एतेक घृणा भऽ गेल छौक हमरासँ ?''

हम ओकर मोन राखऽ लेल कहलिऐक– ''नहि-नहि, घृणा किएक करबौक ? छोड़ पुरना बात । कह, परीक्षा केहन भेलौक ?''

ओ फेर उत्साहित होइत बाजल– ''एकदम फर्स्ट क्लास यार ! हमर 'सेन्टर'मे खूब छूटि छलैक । सभ टा किताबसँ उतारि देलिऐक । पास तँ करबे करब । तोरा जकाँ फर्स्ट डिवीजन नहि, मुदा 'रॉयल' डिवीजन तँ भेटिए जायत ।''

ओ हँसऽ लागल । ओकर 'रायल' डिवीजनवला बातपर हमरो हँसी लागि गेल । ओ ऊठिकऽ ठाढ़ होइत बाजल– ''एखन जाइत छियौक । काल्हि साँझमे अबिहें आजाद केबिन दिस । तों तँ रस्ते बिसरि गेलें ओम्हरुका !''

रतना चल गेल । ओकर निमंत्रणक तखन हम कोनो जवाब नहि देलिऐक । ओकर संग छुटलाक बाद शेखपुरा बजारक बाट हम छोड़ि देने रही । दू वर्ष भऽ गेल छल । मुदा दोसर दिन साँझमे हम अनायास शेखपुरा बजार दिस बिदा भऽ गेलहुँ । दू बरखक पहिलुक स्मृति जोर मारलक आ एक बेर आजाद केबिनक चाह पीबाक इच्छा जबर्दस्ती हमर डेग ओम्हर घिसिआबऽ लागल ।

शेखपुरा बजारक कतेको परिचित आकृति हमरा देखि मुस्किआयल । कतेको नमस्कार कयलक । तरुण बाबू दूरेसँ देखि लपकल अयलाह– ''कहिया अयलहुँ गाम ? कुशल छैक ने !''

–''दया अछि अपनेक । अप्पन कहू ?'' हम शिष्टाचारवश पुछलियनि ।

तरुण बाबू प्रायः एही प्रश्नक प्रतीक्षामे छलाह, झट शुरू भऽ गेलाह– ''अपन की कहू ? अहीँक दोस्त रतना एकदम बेहाल कयने अछि । अहाँके प्रायः बुझल नहि होयत । अहाँक गेलाक बाद हम कतेक मदति कयलिऐक ओकर । रुपैया-पैसा किताब-कौपी– सभ तरहें । तकरे बदला दऽ रहल अछि । सौँसे चौराहापर हमर इज्जतिकें घिसिया रहल अछि । हमर धीया-पूताक संग अपन नाम जोड़ि हमरा बाट चलब मोस्किल कऽ देने अछि । अहाँक पुरान दोस्त अछि, कनेक बुझा दियौक ।''

हम कोनो आश्वासन नहि दैत छियनि । रतना आजाद केबिनसँ हमरा तरुण बाबू लग ठाढ़ देखि लैत अछि, हाक देबऽ लगैत अछि । तरुण बाबू एक दिस ससरि जाइत छथि । रतना लपकल बाहर अबैत अछि– ''चल, केबिनमे चल । कोन अशुद्ध लोकक मुँह लागि गेलें अबिते ? की कहैत छलौक ?''

हम ओतहि ठाढ़ कहैत छिऐ– ''आर की कहताह, तोरे गुणगान कऽ रहल छलथुन । खूब बदला दऽ रहल छहुन तों उपकारक !''

रतनाक आकृति एकदम कठोर भऽ जाइत छैक । हमरा ओ दिन मोन पड़ैत अछि जहिया एहने एक टा प्रसंगपर हमर दोस्ती टूटि गेल छल– अनमन ओहने आकृति, किछु आर कठोर । हमरा दिस ओही दृष्टिएँ तकैत कहैत अछि– ''अबिते फोड़ि लेलकौ तोरा । सार, एकदम हरामी अछि । कोनो दिन खून पीबि जयबैक एकर । आ तोहूँ चट सभ बातक विश्वास कऽ गेलहीं ! कनेक पुछितहीं जे हमर मदति किएक करैत छल ? ककरा जबर्दस्ती सभ राति अपन बिछौनपर सुतबैत छलैक आ सौंसे देहपर हाथ फेरैत छलैक ? हमहूँ सारकें तेहन ने बदला देलिऐक अछि जे जीवन भरि मोन रहतैक !''

हमरा लागल जेना नेनाक दोस्तसँ नहि, एक टा व्यवसायी गुण्डासँ गप्प कऽ रहल होइ । हम पाछाँ घुमैत कहलिऐक– ''हम जाइत छी !''

ओ दौड़िकऽ आगू आबि गेल– ''चाह पीबिकऽ जो ।''

–''नहि, हम जायब । बाट छोड़ि दे ।''

हम दृढ़तापूर्वक कहलिऐक । ओ बाट छोड़ि देलक ।

पटनासँ असफलता आ निराशाक संग घूरऽ पड़ल । साइन्सक पढ़ाइ रुचिक अनुकूल नहि रहबाक कारणें मोन पढ़ब-लिखब दिससँ हँटैत गेल आ मैट्रिकक प्रथम श्रेणी आइ.एस-सी. मे कोनो काज नहि आबि सकल । लज्जित आ पराजित योद्धा जकाँ परीक्षा छोड़ि गाम आबि गेलहुँ । अपन ई असफलता मोनमे शूल जकाँ भोँकऽ लागल आ पढ़ाइक उपेक्षाक परिणाम सामने अयलापर पश्चात्ताप आ ग्लानिक अतिरिक्त आर कोनो उपाय नहि रहल ।

तकर ई अर्थ नहि जे दू वर्षक साइन्स कालेजक पढ़ाइक स्मृति मात्र ग्लानि आ पराजय-बोध टा छल । ई दूनू वर्ष बड़ उल्लास आ आनन्दसँ कटल छल– उमंग आ उत्तेजनासँ भरल दू वर्ष । मित्रमण्डलीमे सभ तेहने छल जे सभ बैसि जाय तँ मात्र हँसी आ आनन्दक आर कोनो चीज अगल-बगल सेहो नहि फटकि सकय ।

एहि मण्डलीमे सभसँ पहिल नाम करुणेशक अबैत छैक । ओहि गम्भीर आ कठिन आकृतिक पाछू ओतेक हास्य आ सूक्ष्म व्यंग्यक स्रोत बहैत होयतैक से जानब कठिन छलैक लोकक लेल । हमरो नहि लागल छल । सभ दिन क्लासमे देखैत छलिऐक । कोनो खास आकर्षण नहि बुझाइत छल । मुदा ओहि दिन जखन पहिल टरमिनलक कौपी बाँटल गेलैक, अनायास सम्पूर्ण क्लास ओकरा चीन्हि गेलैक । ओकरा परीक्षामे कोनो प्रश्नक उत्तर नहि अबैत छलैक, मुदा सादा कौपी देब अपमानजनक लगलैक । खूब बेसी नम्बरसँ पास कऽ आयल छल, झट एक टा पैघ निबन्ध लिखि गेल सम्पूर्ण कौपीमे– "महाराज करुणेश कुमारक राज्याभिषेक !" शिक्षक महोदय ओकरा 'वार्निंग' दैतो काल हँसने बिना नहि रहि सकलाह ।

ओकरो हमरेवला बीमारी छलैक, विषयक प्रति अरुचि । फैशन आ चौतरफा दबाबमे ओहो साइंस लऽ लेने छल, मुदा मोन ओकरा साहित्य आ दर्शनक पुस्तक पढ़ऽमे लगैत छलैक । हमरा दुनू गोटेक दोस्ती अनायास मजगूत होइत चल गेल ।

एक दिन ओ होस्टल भेट करऽ आयल । आग्रह कयलिऐक तँ भोजनपर बैसि गेल आ खयबामे हमरासँ बाजी लगा बैसल । हमर खोराक सामान्यसँ अधिक अछि । मुदा पराजय स्वीकार करब ओकर स्वभावमे नहि छलैक, जिद्दमे खाइत चल गेल । ओकर क्षीण काया देखि सभक आँखिमे विस्मय आ आश्चर्यक भाव पसरि गेलैक । ओकर तीक्ष्ण दृष्टिमे ओ भाव आबि गेलैक । झट बाजल– "अहाँसभकेँ आश्चर्य किएक भऽ रहल अछि ? हम एक बेरक खिस्सा कहैत छी । हम एक टा डाक्टरसँ खून जाँच कराबऽ गेल रही । डाक्टर स्लाइडकेँ माइक्रोस्कोपसँ देखलक तँ देखिते रहि गेल । कनेक काल बाद आश्चर्यसँ मूड़ी उठाकऽ बाजल– "अहाँक खून तँ विचित्र अछि ! ने आर.बी.सी. ने डब्लू.बी.सी. । खाली भात दालि तरकारी भरल अछि ।""

सभकेँ हँसी लागि गेलैक । ओकर प्रत्युत्पन्नमतिक प्रशंसा सभकेँ करऽ पड़ैत छलैक । मुदा ओकर 'विट', ओकर तीक्ष्ण बुद्धि, किछुओ संग नहि दऽ सकलैक । ओकरो परीक्षा छोड़ऽ पड़लैक ।

मित्रमण्डलीमे दोसर नाम आनन्दक अबैत अछि । क्लास छोड़ि 'देवानन्दक

सिनेमा देखब आ होटलमे बैसि डोसा-कचालू खायब ओकरा पसिन्न छलैक । हमहूँ संग दैत छलिऐक । देखबा-सुनमामे बड़ सुन्नर छल, तेँ एक टा अतिरिक्त बीमारी छलैक । प्रत्येक तेसरा दिनपर एक टा प्रेम भऽ जाइत छलैक । कखनो ककरो नाम हाथपर खोधबा लैत छल, तँ कखनो रुमालपर ककरो नाम लिखि छातीसँ सटने रहैत छल । प्रत्येक बैसकीमे ओकर कोनो नवीनतम प्रेम-समस्याक समाधान हमरालोकनिकेँ ताकऽ पड़ैत छल । मुदा एक बेर पैघ आफत आबि गेल । आनन्दक सूचीमे सभसँ नव नाम जे छलैक ताहिसँ मित्र मण्डलीमे कपरफोड़ौअलिक स्थिति आबि सकैत छलैक । आनन्दक घोषणाक अनुसार ओकर नवीनतम प्रेमिका रमणक जेठकी बहिन छलैक । रमण डंटासँ आनन्दक कपार फोड़बा लेल तैयार छलैक मुदा ओकर बहिनकेँ पता लागि गेलैक । ओ आनन्दकेँ चिन्हैत छलैक । रमणकेँ आ हमरा बजाकऽ कहलक– 'तोँ लोकनि अनेरे मारि-पीट लेल उद्यत छेँ ! दस दिन थम्हि जो, ओकर सूचीसँ हमर नाम उतरि जायत । ओकरा ककरोसँ प्रेम नहि छै, ने होयतैक । ओकरा तँ प्रेमिकाक एकटा पैघ सूची चाहिऐक जकरा ओ कोनो प्रदर्शनक वस्तु जकाँ सभकेँ देखा-सुना सकय ।" सत्ते, दोसर सप्ताह आनन्दक सूचीमे दोसर नाम आबि गेलैक– 'प्रीति बनर्जी ।'

रमण एहि मण्डलीमे सभसँ संयत आ व्यवहार-कुशल छल । क्लास ओ छोड़ैत छल, सिनेमोमे संग भऽ जाइत छल, गंगाक चक्कर सेहो लगा अबैत छल, मुदा ओकरा वस्तुतः एहि सभमे बेसी मतलब नहि छलैक । ओकर रुचि छलैक राजनीतिमे । बेसीसँ बेसी लोकक परिचय आ सद्भाव प्राप्त करब ओकरा पसिन्न छलैक आ ओहिमे ओकरा सफलतो भेटैत छलैक ।

मुदा परीक्षामे ओकरो असफलते भेटलैक । आनन्द परीक्षो ने दऽ सकल । मुदा रमणक बाप पैघ डाक्टर छलैक आ आनन्द छल आइ.ए.एस.क बेटा । बीचमे एक टा गरीब, एक टा शिक्षकक बेटा हम फँसि गेल रही । करुणेश सेहो घरक सम्पन्न छल । बाबू हमरा बड़ मानैत छलाह, ककरोसँ कम ठाठ नहि रहैत छल हमर । मुदा घरक असली हालत तँ नुकायल नहि छल हमरासँ ।

परीक्षा छोड़लाक बाद हमरालोकनि एक-दोसरसँ नुकाइत रहलहुँ । सभ दिन अपन असफलताक लेल एक दोसरकेँ उत्तरदायी मानि रहल छल मोने-मोन । मात्र रमणपर आशा छल, ओकरो परिणाम प्रतिकूले भेलैक । एहन परिस्थितिमे गाम जायब छोड़ि आर कोनो उपाय नहि रहल । परीक्षा छोड़लाक बाद गाम जयबासँ डेराइत रही– बाबूजीकेँ कोना मुँह देखयबनि ? मुदा पटनामे आर रहबाक कोनो बहाना नहि छल । बोरिया-बिस्तर लऽकऽ गाम चल अयलहुँ ।

अयला कतेको दिन बीति गेल छल । मुदा बाबू किछुओ नहि पूछि रहल छलाह । हुनक चुप्पी हमर अपराधबोधकेँ आर बढ़ा रहल छल । माय खाली नोर खसा बाजलि– "कतेक आस छल तोरासँ !"

एक दिन हमहीँ साहस कऽ बाबू लग ठाढ़ भऽ गेलहुँ– "हम आब साइंस नहि पढ़ब । मोन नहि लगैत अछि । प्राइवेटसँ आइ.ए. देब ।"

बाबू किछु नहि बजलाह । मात्र एतबे कहलनि सभ टा सुनलाक बाद– "बेस, आर्टो कोनो बेजाय नहि । जाहीमे मोन लागह, सैह करह ।"

मुदा बाबूक टूटल हृदयक अनुमान ओहि दिन लागल छल जहिया महेन्द्र आबि गोड़ लगने छलनि । महेन्द्र गामक स्कूलमे हमरे संग पढ़ैत छल, कहियो हमरासँ बेसी नम्बर नहि अबैत छलैक । ओ आइ.एस-सी. फर्स्ट डिबीजनमे पास कयने छल । इंजीनियरिंग कालेजमे नाम लिखा आयल छल । ओकर चमकैत ब्लेजरपर बाबूक दृष्टि अँटकि गेल छलनि आ आशीर्वाद दैत काल आँखि डबडबा गेल छलनि । हम लगमे ठाढ़ ई सभ देखने छलियनि आ लज्जा तथा अपराध-बोधसँ गरदनि झुकि गेल छल । ओही दिन मोनमे संकल्प कयने रही जे बाबूक आँखिमे डबडबाइत नोरकेँ चमकैत हँसीमे बदलऽ पड़त ।

मुदा गाममे सभ ठाम हमर असफलता आ अकर्मण्यताक डिगडिगिया पिट रहल छल । सान्त्वना वा सहानुभूति देनिहार क्यो नहि । मात्र अपमानजनक उक्ति प्रत्येक तेसरा दिन कानमे पड़ि जाय– "बुड़िया गेलथिन मास्टर साहेबक राजकुमार । बेसी दुलार कयलासँ यैह होइत छैक । 'सेन्स' छोड़ि देलथिन । गामसँ प्राइवेट देथिन आ मास्टरे साहेब जकाँ कतहु मास्टरीमे लागि जयताह ।"

सुनियोकऽ कतेक बेर अनठाबऽ पड़ल । उपाये कोन छल ? हारल व्यक्तिकेँ बजबाक अधिकार नहि होइत छैक । हम बेसी काल घरेमे नुकायल रही ।

नहि जानि कोना रतनाकेँ पता लागि गेलैक । एक दिन घरपर पहुँचि गेल– "एना नुकायल किएक रहैत छेँ ? घरसँ बाहर आ । फेल कऽ गेलेँ तँ की भेलैक ? फेर पास भऽ जयबेँ ।"

ओकर सहानुभूति हमर जरल मोनपर नोन सन लागल । हम किछु जवाब नहि देलिऐक । ओ एकदम मित्रतापूर्वक बाजल– "छोड़ ई घरघुसना प्रवृत्ति । चल हमर गाम चल । अपन भौजीसँ भेट नहि करबेँ ?"

हमरा मोन पड़ल जे परुकाँ रतनाक विवाह भऽ गेल छलैक । पटनेमे सुन रही । ओकर आग्रहकेँ टारैत कहलिऐक– "आइ नहि, फेर कहियो ।"

रतना फेर बहुत दिन निपत्ता रहल । मुदा लगभग दू मास बाद एक दिन तमतमायल आबि हमरा लगमे बैसि गेल– "हम ओकर खून कऽ देबैक !"

हम एहि अप्रत्याशित घोषणासँ चौंकैत कहलिऐक– "ककर ?"

रतना ओहिना तमतमाइत बाजल– "आर ककर ? ओही कमीनाक ! कहितो लाज होइत अछि जे ओ कमीना हमर बाप थिक । आइ चेथड़ी कऽ लाशकेँ गामक चौराहापर टाँगि देबैक !"

रतनाक जीवनक ततेक रास विचित्रतासँ हमर परिचय रहल अछि जे ओकर कोनो बातसँ हमरा आश्चर्य नहि होइत अछि । मुदा आइ जेना दनादन गारि दैत अपन बापक सम्मान कऽ रहल छल, ताहिसँ किछु आश्चर्य भेल । ओकरा शान्त करबाक उद्देश्यसँ कहलिऐक– "केहन गप्प करै छेँ ! होशमे आ !"

ओ अपन परिचित नाटकीय अन्दाजमे बाजल– "होश बाँकी कहाँ अछि दोस्त ? ओ कमीना काजे तेहन कयलक अछि ! आब तोरा कोना कहियौ ? कोना कहियौ जे हमर बाप हमर स्त्रीकेँ भोगऽ चाहैत अछि ?"

हम एकदम सन्न रहि गेलहुँ । ई बात एकदम अप्रत्याशित छल । ओकरा डँटैत कहलिऐक– "की अण्ट-सण्ट बाजि रहल छेँ ? तोरा लाज होयबाक चाहियौक ।"

–"लाज तँ होइत अछि दोस्त ! मुदा अपनापर नहि, ओहि कमीनाक काजपर । हम दू दिन लेल बाहर गेल रही, मायो नैहर गेलि छलि । बस्स, मौका भेटि गेलैक । लागल एक राति पुतोहुक घर पैसऽ । ओ बाहर निकालि देलकैक तँ भरि राति केबाड़ पीटैत रहल आ ओ बेचारी डरेँ थरथर करैत रहलि । आइ हमर अयबाक खबरि सूनि कोम्हरो भागि पड़ायल अछि । मुदा भागिकऽ जायत कतऽ ? काल्हि भोरे सभ देखतैक चौराहापर टाङल ओकर लाश ।"

बजैत-बजैत ओकर साँस फूलऽ लगलैक । कारी चेहरा तमतमाकऽ ललाओन भऽ गेलैक आ नाकक पूड़ा फलकऽ लगलैक । आङुर हाथक कड़ापर सक्कत भऽ गेलैक आ गरदनिक चकती फुलैत साँसक संग ऊपर-नीचाँ करऽ लगलैक । ओ घृणासँ ठोर उनटिकऽ तमाकूसँ पचपचाइत मुँहसँ एक बेर 'पिच्च' दऽ बाहर थुकलक आ ऊठिकऽ ठाढ़ होइत बाजल– "एखन जाइत छियौक ।"

हमर किछु कहबासँ पूर्व ओ बाहर जा चुकल छल । हमरा आशंका भेल जे आइ कोनो काण्ड भऽकऽ रहतैक । हमर डेरायल दृष्टि ओकर अनुसरण कयलकै ।

हमरा ई देखि आश्चर्य भेल जे एहि तमसायलो हालतिमे ओ अपन परिचित 'स्टाइल'मे चलल जा रहल छल— दुनू पंजापर बेराबेरी झुलैत आ माथपर लटकि आयल केशकें बेर-बेर ऊपर झटकैत ।

हमरा हँसी लागि गेल ।

एहि बेर पटनामे बहुत रास परिवर्त्तन भेटैत अछि ।

आनन्द नहि अछि, ओ आइ.एस-सी. कहुना पास कऽ गेल छल मुदा ओकर बापक बदली कलकत्ता भऽ गेल छलैक आ ओ चल गेल अछि । ओतहि सेन्ट जेबियर्स कालेजमे नाम लिखौने अछि । एक दिन होस्टलमे आबि गेल छल, संगमे एक टा बंगाली छौंड़ा छलैक । दुनू रहल दू दिन । दुनूक अयबाक उद्देश्य बादमे बुझबामे आयल । कलकत्तामे ओकर प्रेमिकाक सूची आर पैघ भऽ गेल छलैक, तकरे सुनाबऽ आयल छल । प्रायः ओकरा सन्देह छलैक जे हमरालोकनि अविश्वास करबैक, तेँ एक टा गवाही संग लेने आयल छल । दुनू गोटेक कलकत्ता विशेष कऽ रमण । तेँ एक टा गवाही संग लेने आयल छल । दुनू गोटेक कलकत्ता घूरि गेलाक बाद हमरा कतेक दिन धरि ओकर यात्राक उद्देश्यपर हँसी लगैत रहल । ओ एहू बे

मुदा करुणेशकें देखि कानऽ-कानऽ सन मोन भऽ गेल । ओ एहू बे

मुदा करुणेशकें देखि कानऽ-कानऽ सन मोन भऽ गेल मुदा ओकरासँ असफल भऽ गेल छल । हमरा नाम लिखौला कतेक दिन भऽ गेल मुदा ओकरासँ भेंट नहि भेल । डेरोपरसँ कतेक बेर घूरि अयलहुँ— हरदम ताला लटकल । ओकर परिवारक लोकसभ गाम चल गेल छैक, डेरामे ओ एकसर रहैत अछि— से पता लागि गेल छल । एक दिन खूब राति बितलापर केबाड़ खटखटौलिऐक । कोनो उत्तर नहि । हम लगातार बड़ी काल धरि पीटैत रहलिऐक । तखन ककरहु ओंघायल सन स्वर आयल—"के ?"

आ कनेक काल बाद दरबज्जा खूजल । भीतर एकदम अन्हार, किछु देखा नहि पड़ल । तखन क्यो दियासलाइ खड़रिकऽ हमरा मुँह दिस उठौलक आ चौंकि बाजल—"तों छें ? आ भीतर आ ।"

मुदा हम करुणेशकें ओहि क्षणिक इजोतमे नहि चीन्हि सकलिऐक । दा

बढ़ल, आँखि धँसल, केश ओझरायल आ कपड़ा-लत्ता एकदम मैल । ओ दू-तीन टा काठी खड़रि हमरा बाट देखौलक । कहुना एक टा चौकी लग पहुँचि बैसि गेलहुँ । फेर एकदम अन्हार भऽ गेल । मात्र छाया टा देखि सकैत छलिऐक । दुनू गोटे मौन अन्हारमे बैसल रही ।

अन्तमे मौन तोड़ैत ओ बाजल—"कहैत किएक ने छें, जे कहऽ आयल छें ? मुदा हम जनैत छियौक । अखबार हमहूँ पढ़ने रही, फर्स्ट डिवीजनसँ पास भेल छें । आरो किछु कहबाक छौक ?"

हम दुःखसँ बौक भऽ जाइत छी । हमर अयबाक ई अर्थ छैक ओकर दृष्टिमे ? हम उठैत कहलिऐक—"जाइत छी ।"

ओ अन्हारेमे हाथ पकड़ि लेलक—"अधलाह लागि गेलौक ? माफ कर भाइ ! मुँहे खराप भऽ गेल अछि । कोनो सोझ कथा बहराइते नहि अछि ।"

हम बैसि जाइत छी । मोन कोनादन करऽ लगैत अछि । एकदम भरभरायल स्वरमे पुछैत छिऐक—"ई की हाल बनौने छें ?"

ओ फेर कटु भऽ जाइत अछि—"बस-बस, आगू नहि, ई नहि चाही । ई दया आ सहानुभूति नहि चाही । कोनो आर गप्प कर ।"

हम फेर चुप्प भऽ जाइत छी । ओ अन्हारमे किछु गीड़ैत अछि पानिक संग— प्रायः कोनो गोली । कनेक काल मौन रहलाक बाद स्वाभाविक कोमल स्वरमे पुछैत अछि—"अयलाक पश्चात्ताप होइत होयतौक ?"

—"नहि-नहि, पश्चात्ताप किएक होयत ? खाली दुःख भऽ रहल अछि । कहियो सोचनहुँ नहि रही जे तोरा एहि हालमे देखबौक ।"

—"हमहूँ कहाँ सोचने रही शंकर ! कहाँ सोचने रही जे कहियो जीवनमे एतेक अन्हार भऽ जायत ? कहाँ सोचने रही जे अन्हारे हमर नियति भऽ जायत आ प्रकाशसँ डर होबऽ लागत ? मकानक काटल लाइन तँ लागि सकैत अछि मुदा ताहिसँ मोनमे इजोत होयत ? तें छोड़ि देने छिऐक— एकाकार कऽ देने छिऐक— बाहर-भीतर सभ— अन्हार । आ निन्न ! मुदा सेहो कहाँ होइत अछि ? नहि जानि कौं सोचैत रहैत छी अन्हारमे टकटकी लगौने ? आब तँ गोलियो सभ काज नहि करैत अछि ।"

हम ओकरा बुझबैत कहलिऐक— "मुदा तेहन कोन अन्हेर भऽ गेलैक

अछि दुइए बर्षमे ! जाय दही । फाड़ि दे रद्दी पन्ना जकाँ जीवनक ई दू वर्ष, ई साइंसक झंझट आ दऽ दे प्राइवेटसँ आइ.ए. । अबस्से नीक रिजल्ट होयतौक ।"

ओ फेर कटु भऽ उठल– "परामर्शक हेतु धन्यबाद । प्रत्येक सफल व्यक्तिकेँ परामर्श देबाक अधिकार होइत छैक । ओना तँ ई बात हमहूँ सोचि सकैत छी । मुदा नहि, असफल लोककेँ सोचबोक अधिकार नहि होइत छैक ।"

–"एक टा बात कहैत छियौक करुणेश ! असफलता जीवनमे हमरो भेटल अछि, ओकर क्लेशसँ हम परिचित छी । मुदा ओहिमे हमरा अपन-आनमे अन्तर करबाक विवेक बाँकी छल ।" एहि बेर हमहूँ कटु होइत कहलिऐक ।

ओ हँसऽ लागल । ओहि अन्हारमे ओकर ओहि हँसीमे हमरा कोनो टूटल शीशाक झनझनाहटि लागल । हँसिते बाजल–"तोँ ठीक कहैत छेँ । हम अविवेकी आ दुराचारी भऽ गेल छी । आब नीक लोककेँ हमरा संग चलबोमे लाज होइत छैक । तोँहू भागि जो अन्हारेमे, क्यो देखि लेतौक ।"

ओ बिछौनपर मुँह झाँपिकऽ पड़ि रहैत अछि । देह हिलैत छैक– निःशब्द । हमरा बुझबामे नहि अबैत अछि जे ओ हँसि रहल अछि वा कानि रहल अछि । फेर लगैत अछि जे दुनूमे कोनो अन्तर नहि छैक करुणेशक हेतु । हमरा अपन उपस्थिति अकारण आ उपेक्षित बुझाइत अछि । भारी डेगे आ भारी मोन लेने हम ओहि अन्हार घरसँ चल अबैत छी ।

रमणकेँ देखलासँ लगैत अछि जे पटनामे किछुओ नहि बदलल छैक । ओहिना हँसमुख आ मिलनसार । मेडिकल कालेजमे आबि गेल अछि । अपन क्लाससँ छुटलापर बाँकी समय रमणक संग नीक जकाँ कटि जाइत अछि ।

आ रमणक संगमे एहि बेर बहुत रास नव तथ्यक ज्ञान होइत अछि । बहुत रास एहन बात जकरा हम देखियोकऽ नहि बुझैत छलिऐक, आस्ते-आस्ते ओकर अर्थ खूजऽ लगैत अछि हमरा समक्ष ।

रमणकेँ राजनीतिमे खूब रुचि छैक । पहिनो छलैक । मुदा आब ओ सक्रिय

भाग लेबऽ लागल अछि । छात्र-यूनियनक काउन्सिलरक पदक हेतु उमेदवार भऽ जाइत अछि । हमरा राजनीतिमे, खाहे कोनो स्तरक हो, कोनो रुचि नहि छल । मुदा रमणक खातिर प्रचारमे घूमऽ पड़ैत अछि, मीटिंग आदिमे सम्मिलित होबऽ पड़ैत अछि ।

पहिले मीटिंगमे एक टा नव गप्प सुनबामे अबैत अछि हमरा । एक टा नेता ठाढ़ भऽ बाजऽ लगैत अछि–"हमरा सामने हमर बैकवार्ड छात्रबंधुक समस्या अछि । हम हुनक पाँच सय वोट अहाँकेँ देआय सकैत छी, यदि अहाँ हुनक हितक रक्षाक आश्वासन दी ।"

हमरा ई बात बड़ विचित्र लागल । हम किछु कहऽ जा रहल छलिऐक, रमण हाथ दबा फुसफुसाइत बाजल–"चुपचाप सुनैत जो । बैकवार्डक हितक माने बुझैत छहिक, एकरो एक टा सीट चाहिऐक, ई वाइस-प्रेसिडेण्ट लेल ठाढ़ होयत ।"

तहिना राजपूत नेता, कायस्थ नेता, ब्राह्मण नेता, यादव नेता सभ बाजि गेल। छात्र नेता एक्को टा ठाढ़ नहि भेल । सभ अपन-अपन वर्ग-विशेषक हितक रक्षाक गप्प कयलक, माने सभकेँ एक-एक टा सीट चाहिऐ कार्यकारिणीमे ।

हमर मोन अकच्छ भऽ गेल पहिले मीटिंगमे । रमण हमर कछमछी देखि रहल छल । बाहर अयलापर बाजल–"तोँ बोर भऽ रहल छलेँ ? मुदा सूनऽ पड़ैत छैक, सामाजिक क्षेत्रमे उतरलापर सभक बात सूनऽ पड़ैत छैक । आ सभ राजनीतिमे भितरिया बात एतबे रहैत छैक । ई छात्र-राजनीतिक अपन प्रान्तीय राजनीतिक एक टा छोटछीन रूप छौक । ओहू ठाम यैह होइत छैक–"सभक आधार जाति ओ गुट । जनताक हित आ आदर्शक गप्प मंचे टा पर होइत छैक, अंतःपुरक बैसकमे तँ यैह हिसाब-किताब आ जोड़-तोड़ होइत छैक ।"

रमणक बातमे यथार्थता छैक । मुदा ओ यथार्थवाद हमरा प्रीतिकर नहि लगैत अछि । हम एखनो आदर्शवादी रही— उदात्त भावनामे भसिआइत एहन संकीर्णताक गप्प हमरा नहि रुचैत अछि ।

रमण हमर अरुचिकेँ बूझि जाइत अछि, मुदा रुकैत नहि अछि । कहिते जाइत अछि–"तोरा प्रायः बूझल नहि होयतौक जे ई छात्र-राजनीति सेहो प्रन्तीय आ राष्ट्रिय नेता द्वारा संचालित होइत छैक । प्रत्येक नेताकेँ बेर-कुबेरमे हल्ला-फसाद, हड़ताल-हंगामा आदि लेल किछु समर्थक चाहिऐक । छात्र-राजनीतिमे हस्तक्षेप कयलासँ ओकरा ओहन व्यक्तिक समर्थन भेटि जाइत छैक । तेँ देखि ले, एही यूनियन-चुनावमे बैकवार्ड उमेदवार लेल बैकवार्ड नेतासभक गाड़ी घूमि रहल छैक

आ अन्य जातिक उमेदवार लेल ओहि जातिविशेषक मंत्रीक कार । एतेक खर्च जे भऽ रहल छैक एहि चुनावमे से बुझल छौक कतऽसँ अबैत छैक ? विद्यार्थी लग एतेक टाका कतऽसँ औतेक ? काल्हिए हमरासभकेँ एक टा मंत्रीसँ एक हजार टाका भेटल अछि एहि चुनाव लेल ।

रमण जे कहि रहल छल तकर अनुमान एकदम नहि छल हो हमरा, से नहि । मुदा जाहि नग्न रूपमे ओ ओकरा राखि रहल छल आ जतेक प्रामाणिक ढंगसँ ओ कहि रहल छल, तकर बाद ओहिपर अविश्वासक कोनो प्रश्न नहि छल ।

रमण आगू कहऽ लागल–"खाली विद्यार्थिए टा किएक, शिक्षक-प्राध्यापक वर्गमे सेहो सैह हाल छैक । ओकरो आधार जाति । ब्राह्मण परीक्षक होयतौक तँ तोरा बेसी नम्बर देतौक । मुदा ताहू लेल ओकर डेराक चक्कर लगाबऽ पड़तौक, बेर-कुबेर बजारसँ तर-तरकारी खरीद कऽ आनि देबऽ पड़तौक । से नहि कऽ रहल छेँ, तँ भविष्य खतरामे छौक । अपन प्रियपात्रकेँ शिक्षकगण पहिने सभ टा प्रश्न 'आउट' कऽ दैत छथिन, तैयो नहि सम्हरलैक तँ कापीमे जोड़-तोड़ । तेँ तँ तोरो कहैत छियौक जे आयल-गेल कर । एक्जामिनर के सभ होयतौक से तँ बुझले होयतौक ?"

रमण जीवनमे सफल होयत, ताहिमे ओहू दिन हमरा कोनो सन्देह नहि छल । मुदा ओकर परामर्श हम नहि मानि सकलिऐक । क्लासक अतिरिक्त कहियो कोनो शिक्षकसँ कोनो सम्पर्क नहि रहल ।

रमण काउन्सिलर चुना गेल । अगिला वर्ष छात्र-संघक प्रेसीडेण्ट सेहो भऽ गेल । सफलता ओकर बोलीमे छलैक, व्यवहारमे छलैक । अपन भविष्यक प्रति ओ सभ दिन आश्वस्त छल ।

मुदा जेना-जेना परीक्षा लग अबैत गेल, हम आशंकित होइत गेलहुँ । ओ गप्प फेर पटनासँ पछिला बेर बड़ अपमानित आ असफल भऽ घुरल रही । मुदा परीक्षा लग दोहरयबाक नहि चाही । हम मोने-मोन दृढ़संकल्पित रही । कौखन अपनापर अयलापर एक टा डर पैसि गेल । रमणक गप्प मोन पड़ऽ लागल । कौखन प्राध्यापक लोकनिक डेराक चक्कर तामस होअय जे किएक ने रमणक बात मानि प्राध्यापक लोकनिक डेराक चक्कर लगौलहुँ ? एहि 'स्पेशल पेपर' लेल कोनो तैयारी नहि छल, ओना आर सभ पेपरमे अपना पूरा विश्वास छल । मुदा निर्णायक तँ वैह 'स्पेशल पेपर' होयत, से बूझल छल । परीक्षा निकट अयलापर आर नीक जकाँ बुझा रहल छल । 'डिप्रेशन' बड़ बढ़ि गेल । सभ टा पढ़लो बिसरऽ लागल, घचपच होबऽ लागल एक-दोसरमे । रमणकेँ कहलिऐक । ओ एक टा डाक्टर लग लऽ गेल । किछु दवाइ देलक । किछु कम

भेटल, डिप्रेशन किछु कम बुझायल । हम मोने-मोन भगवानसँ प्रार्थना करऽ लगलहुँ जे कहुना ई संकट टरि जाय, परीक्षा भऽ जाय आ पुरान गप्पक पुनरावृत्ति रोकल जा सकय । खाहे जेना हो ।

भगवान हमर प्रार्थना सूनि लेलनि ।

आनन्द फेर पटने आबि गेल । रिजल्टसँ पहिने ओकरा एक टा पैघ फर्ममे सेल्स मैनेजरक नोकरी भेटि गेल छलैक । नीक दरमाहा, फ्री फर्निश्ड क्वार्टर, टेलीफोन आ कार । देखिकऽ ककरो ईर्ष्या भऽ सकैत छलैक । मुदा हमरा पतो नहि छल ।

परीक्षा भऽ गेल छल, तेँ निरुद्देश्य बौअयबाक अतिरिक्त कोनो काज नहि छल । एक दिन एहिना सड़कपर बौआइत काल, पटना मार्केट लग आनन्दसँ भेंट भऽ गेल छल । ओ गाड़ीमे बैसऽ जा रहल छल । हमरा देखलक तँ थम्हि गेल— "की रे ! की हाल छौक ?"

–"अपन सुना । बेस चकचकी देखि रहल छियौक ?"

हम ओकर मोटर दिस देखैत कहलिऐक । मोटर दिस देखलापर ध्यान गेल जे अगिला सीट-पर एक टा युवती सेहो बैसलि छैक– उन्नैस-बीसक वयस, कारी रंग, मांसल देह, आँखिपर चश्मा आ मुँह-कान रङल-ढौरल । लक्षण हमरा नीक नहि बुझायल ।

आनन्द हमरा मोटर दिस तकैत देखि बाजल–"कम्पनीसँ भेटल अछि, क्वार्टर, टेलीफोन आदि सभ किछु । आ ने कहियो डेरापर । ई ले हमर कार्ड ।" आनन्द हमरा हाथपर कार्ड राखि 'टाटा' करैत गाड़ी स्टार्ट कऽ देलक । हम ठाढ़े रहि गेलहुँ । हमरा लागल जेना कतहु-किछु अपरिचित सन होअय । ई आनन्द, कार्ड दऽ निमंत्रण देबऽवला आनन्द तँ हमर परिचित नहि छल । नहि जानि कहियासँ एहि शहरमे अछि । कलकत्तासँ आबि, हमर होस्टलमे रुकनिहार आनन्द तँ ई कथमपि नहि छल । हम बड़ी काल धरि अपन तरहत्थीपर पड़ल ओहि कार्डकेँ उनटबैत-पुनटबैत रहलहुँ जाहिपर लिखल छलैक– ए.के. झा, सेल्स मैनेजर ।

हम ओही गुनधुनमे लागल रहितहुँ मुदा हमर पीठक पाछू होइत चर्चा हमर ध्यान तोड़ि देलक–"ओहि गाड़ी महँक युवतीकेँ चिन्हलेँ ?" एक टा विकृत पुरुष-स्वर ।

–"अरे चिन्हबैक किएक ने ? एकरा के नहि चीन्हैत छैक ? सोसायटी-गर्ल । एक रातिक पचास टाका, आइ गाड़ीवला छौंड़ाक चानी छैक"–दोसर विकृत स्वर ।

हमरा घूमिकऽ पाछू देखबाक इच्छा नहि भेल । बजनिहार क्यो भऽ सकैत अछि । एहिसँ तथ्यमे कोनो अन्तर नहि पड़तैक । ओकर आकृतिए देखिकऽ किछु-किछु आभास हमरा भेटि गेल छल ।

मुदा दुःख हमरा एहि बातक नहि छल जे आइ ओकर गाड़ीमे एक टा बजारू छौंड़ी छलैक । युवती सभक प्रति ओकर दुर्बलता सभ दिनसँ छलैक । कोनो एहन-ओहन छौंड़ीक संग जीवन भरि हेतु बन्हा जाय तँ कोनो आश्चर्य नहि । मुदा आश्चर्य आ दुःख तँ एहि बातक छल जे आइ एतेक दिनपर भेँट कयलापर आनन्द हाथमे मात्र एक टा औपचारिक कार्ड दऽकऽ चल गेल । एही शहरमे एतेक दिनसँ रहिकऽ आइ धरि भेंट नहि कयलक ।

मुदा आनन्दक व्यवहारपर दुखित होइत काल एकाएक करुणेश मोन पड़ल । ओहो तँ एही शहरमे अछि । आइ एक वर्षसँ एक्को बेर ओकर खबरि लेलिऐ हम ? रमणो नहि गेल होयतैक प्रायः ? हमरा अपन एहि व्यवहारपर लाज होइत अछि आ तुरत करुणेशक घर दिस बिदा होइत छी ।

ओकर घरमे पयर दैत काल संकोच होइत अछि । मुदा डेरामे भीड़भाड़ देखैत छिऐक । ओकर माय-बाप, दुनू जेठ भाय सभ उपस्थित । सभक आकृति क्लान्त आ हताश । हम भयभीत होइत पुछैत छिऐक– "करुणेश कतऽ अछि ?"

ओकर माय हमरा दिस तकैत कहैत अछि–"तोरा किछु ने बुझल छौक ? आ, हमरा संग आ !"

हम हुनक संग दोसर कोठलीमे अबैत छी । एक टा चौकीपर करुणेश पड़ल अछि, दाढ़ी किछु आर बढ़ल, शरीर किछु आर कृश, मुदा आँखि एकदम भकभक जरैत जेना कतेक रातिसँ सूतल नहि होअय । हमरा देखिते जोरसँ अट्टहास करैत अछि–"आबि गेलेँ ! एकसरे किएक आयल छेँ ? तोहर ओ डाक्टर कतऽ गेलौ ? आ सेल्स मनेजर साहेब ? सभक संग किएक ने अयलेँ ?'

हमरा आश्चर्य होइत अछि ओकर बातपर । जे बात हमरा आइ धरि नहि

बुझल छल, सेहो एकरा बुझल छैक । कहैत छिऐक–"ओहो सभ औतौक मुदा तोँ किएक एना भेल छेँ ?"

–"से एकरासँ पुछही" । इह, नोर कोना चुबा रहल अछि जेना सत्ते दुःख होइ ! बड़ दुःख छौक तँ आ खोल हमर हाथ-पयर । खाली नोर चुबौलासँ नहि मानबौक ।" ओ अपन पयरकेँ जोरसँ झटकारलक आ तखन हमर ध्यान गेल जे ओकर हाथ-पयर बान्हल छैक । एक बेर गौरसँ ओकर आकृति देखलिऐ । भकभक जरैत आँखि । सभ टा स्पष्ट भऽ गेल ।

हमरा अपन बान्हल हाथ-पयर दिस देखैत देखि ओ फेर जोरसँ हँसल–"यैह देखऽ आयल छेँ, देखि ले ? बताह भऽ गेल छी हम । हाथ खोलबेँ तँ तोरा हबकि लेबौक । भाग, जल्दी भाग एतऽसँ ।''

हमरा ओहि कोठलीमे ठाढ़ नहि रहि होइत अछि । दोसर कोठलीमे आबि जाइत छी । करुणेशक बाप-भाइक बीच अपराधी जकाँ ठाढ़ रहैत छी । लगैत अछि जेना करुणेशक एहि हालक हेतु आंशिक अपराधी हमहूँ छी । हमसभ मिलि ओ दुनू साल नष्ट कयने रही । ओ क्षति हमरालोकनि भरि लेलहुँ, मुदा करुणेश ओकरा भरबाक चेष्टामे टुटैत गेल । अपनाकेँ बिसरबाक चेष्टामे टेबलेट आदिक मदति लैत रहल । मुदा ओ ओकरा आर तोड़ैत चल गेलैक आ एक टा खण्डित व्यक्तित्वक झनझनाहटिसँ आइ ई सम्पूर्ण घर झनझना रहल छैक । हमर मोनमे सेहो वैह झनझनाहटि पैसि जाइत अछि आ सम्पूर्ण शरीरकेँ सुन्न कयने चल जाइत अछि । बड़ी काल अवसन्न ओहि कोठलीमे बैसल रहैत छी ।

फेर साहस कऽ ओकर कोठलीमे जाइत छी । ओ हाथसँ आँखि मुनने पड़ल अछि । हमरा लग जयबाक साहस नहि होइत अछि । ओ आँखिपरसँ हाथ हटबैत अछि–"आ, हमरा लग आ । डर किएक होइत छौक हमरासँ ? हम तँ असमर्थ लोक छी, तोँ सभ सामर्थ्यवान छेँ । फेर हाथो-पयर बान्हल अछि । डेरा जुनि, लग आ ।" करुणेशक स्वर बदलल छैक ।

हम ओकर सिरमामे बैसि जाइत छिऐक । लगैत अछि जेना ओकर आँखिमे बहुत-किछु डगडग कऽ रहल छैक । हम ओम्हर ताकऽ चाहैत छिऐक तँ ओ झट आँखि बंद कऽ बजैत अछि–"तोरा लोकनिक कोनो दोष नहि छौक । सभ तँ हमर संगे ओंघरायल छलेँ, मुदा झट ऊठिकऽ ठाढ़ भऽ गेलेँ । मुदा हमरासँ मात्र एक बेर खसि पड़बाक अपमान सहन नहि भेल । तेँ बेर-बेर खसैत रहलहुँ आ मोनसँ ई मानियोकऽ जे दोषी मात्र हमहीँ छी, अनका दोषी मानि सभकेँ अपनासँ दूर भगबैत

ई नव आ अप्रत्याशित सूचना छल हमरा लेल । किछु आर जनबाक इच्छा सँ पुछलिऐक– "मुदा पछिला बेर तँ तोँ किछु आर कहि रहल छलेँ ?"

–"ओ हमर आँखिक धोखा छल । मतिये फेरि देने छलि ओ कुलटा । नाहक ओहन भ्रष्ट स्त्री लेल अपन बापकेँ बदनाम कयलहुँ, ओकर जान लेबऽपर तुलि गेलिऐक । मुदा आस्ते-आस्ते ओहि दुष्ट स्त्रीक सभ चालि खूजऽ लगलैक । विवाहसँ पहिनेसँ चालि-चलन ठीक नहि छलैक । कतेको गोटेसँ सम्पर्क छलैक । एतऽ हमर अनुपस्थितिमे हमर बापेकेँ फँसाबऽ लागलि, ओ नहि मानि डाँट-डपट कयलथिन तँ हमर डरक लेल उनटे खिस्सा गढ़ि लेलक । हमहूँ ओकर बातमे आबि गेलहुँ ओहि दिन । मुदा चालि-प्रकृति कतहु बदलैक ? आरो लोक सभपर वैह चालि खेलायलि । सभ टा बात खुजि गेलैक । एक दिन बेँतसँ चमड़ी उधेड़ि देलिऐक तँ अपने सभ टा कबूलि गेलि । ओही राति लात मारि घरसँ निकालि देलिऐक ।"

हमरा निर्णय करब कठिन भऽ गेल ओहि दिन जे ओ कहने छल से सत्य छलैक वा आइ जे कहि रहल अछि से सत्य छैक । मुदा एकटा बात सत्य छलैक जे ओ अपन स्त्रीकेँ घरसँ निकालि चुकल छल । हम आगू किछु नहि पुछलिऐक ।

जाइत काल ओ फेर बाजल–"तोरा तँ प्राय: ईहो नहि बूझल होयतौक जे परुकाँ साल हम दोसर विवाह कऽ लेलहुँ !... मुदा आइ साँझमे अबिहेँ जरूर... मन रहतौक ने ?"

ओहि दिन अपनो मोनमे आजाद केबिनक चाह पीबाक इच्छा फेर जोर मारि देलक । साँझ होइत देरी शेखपुरा दिस बिदा भऽ गेलहुँ । मुदा ओतऽ पहुँचिते जे काण्ड देखलहुँ तँ अयबाक पश्चात्ताप होबऽ लागल । पूरन आ रतना दुनू एक-दोसरपर आक्रमण करबा लेल कूदि रहल छल । एक गोटेक हाथमे टेङारी छलैक आ एक गोटेक हाथमे कोदारि । दुनू गोटेकेँ पाँच-पाँच गोटे पकड़ने छलैक, मुदा तैयो दुनू जोर मारि रहल छल । आखिर छोड़ौनिहारसभ दुनू गोटेक हाथसँ हथियार छीनि फराक-फराक कऽ देलकैक ।

पूरन हमरा देखिते लपकल आयल–"देखलिऐक कमीनाक भलमनसाहति ! एकर पहिल स्त्री बाट-घाट बौआयलि फिरैत छलैक । भिखमङनी सन हालति भऽ गेल छलैक, ई घरसँ निकालि देलकैक । बाप-भाय छैक नहि, भाइ-भाउज घरमे टपऽ नहि देलकैक । एक टा पीसी लग चल गेल । ओ कोनो देयादनीक संग लगा देलकैक । ओतऽ गुजर नहि भेलैक । कतेको ठाम बर्त्तन-बासन मजलक, भानस कयलक, मुदा समर्थि स्त्रीक गुजर होयब केहन कठिन छैक से तँ बुझिते छिऐक ?

हम एक ठाम सड़कक कातमे भिखमङनी जकाँ बैसलि देखलिऐक तँ दया भऽ गेल । संग लेने अयलिऐक । आइ दुपहरियामे अपन छोट भाइक संग आङन पठबा देलिऐक । हम तँ एहि कमीनासँ बजितो ने छिऐक आइ कतेको वर्षसँ, मुदा ई किएक अपन चालिसँ बाज आओत ? हमर भाइ पहुँचाबऽ गेल छलैक तँ ओकरा दस हजार गारि देलकैक, अपन स्त्रीकेँ तुरत लतिया-जुतियाकऽ भगा देलक । नहि जानि फेर कतऽ गेलैक बेचारी ? सैह पुछलिऐक एतऽ जे यैह भलमनसाहति थिकैक, उपकार कयलियौक तँ गारि सुनलहुँ । बस्स, ऐश-तैश देखबऽ लागल । हमरो मिजाज रङि गेल । ओ तँ लोकसभ बचा देलकैक, नहि तँ आइ ओहि टेङारीसँ दू फाँक कऽ दितिऐक ।

पूरन सभ टा काण्ड सुनाकऽ चल गेल । ओकर जाइते रतना आयल– "की सभ कहैत छलौक ई हिजड़ा ? अपन स्त्रीक बदला लऽ रहल छल, नहि जानि कतऽसँ उठा अनलक, कहाँ-कहाँ अपन संग रखलक आ फेर आइ उपकार जनबऽ आयल छल । आइ बचा देलकैक लोकसभ, ने तँ ओही कोदारिसँ दोखरि दितिऐक ।"

हमरा भेल जे कोनो डेराओन आ वर्जित जगहमे आबि गेल होइ । झट घूरि गाम दिस बिदा भेलहुँ । रास्तामे दोबारा सप्पत खयलहुँ जे एहि चौराहापर फेर पयर नहि देब ।

तीन टा पैघ-पैघ वर्ष ससरि जाइत अछि । एम.ए.क डिग्रीक कतेको सत्यापित प्रतिलिपि एम्हर-ओम्हरक यात्रा करऽ लगैत अछि । देशक लाखो बेकार नवयुवक जकाँ हमहूँ 'बेकारी-कर' दैत चल जाइत छी– कतहु पोस्टल ऑडर, कतहु आवेदन-पत्रक दाम । यातायात ऊपरसँ । देशक रहनुमा अन्य जरूरी काजमे व्यस्त छथि । बेकारी सन गैर-जरूरी समस्यापर माथ खपयबाक अवसर हुनकालोकनिकेँ कम्म भेँटैत छनि । जरूरी समस्या भेल कुर्सीक रक्षा आ तकरा लेल बरसाती बेङ जकाँ अपन क्षेत्रमे निर्वाचन-कालमे राग अलापि लैत छथि । बाँकी समय राजधानीक सुविधाजनक जीवनमे कुर्सी हथिअयबाक जोड़-तोड़मे व्यस्त । कहियो-कहियो जनताक आकुल आग्रहपर अनुगृहीत करैत कोनो विशाल जनसभामे बेकारी, भूख

आदि सन गैर-जरूरी मसलापर अपन गैर-मामूली वक्तव्य दऽ ओ फेर कुर्सीक चिन्तामे व्यस्त भऽ जाइत छथि ।

कौखन हमरा लगैत अछि जेना हमरासभकेँ कोनो उद्देश्यहीन-लक्ष्यहीन यात्रामे भोतिया देल गेल अछि जानि-बूझिकऽ आ भोतिआयल लोककेँ बचयबाक आश्वासन दऽकऽ किछु शक्ति आ सम्पत्तिक लोभी लोकसभ देशक भाग्यक नियंत्रण कऽ रहल छथि । कौखन आश्चर्य होइत अछि जे देशक की होयतैक जतऽ आक्रमणकेँ वरदान मानल जाइत छैक, 'ब्लेसिंग इन डिसगाइज ।' चीनी आ पाकिस्तानी आक्रमण मोन पड़ैत अछि । एकता हमरालोकनिमे मात्र विदेशी आक्रमणक कालमे अबैत अछि, सेहो कतेक प्रचार लेल आ कतेक वास्तविक, से कहब कठिन । हमरालोकनि, हमरा लगैत अछि, जन्मेसँ देशद्रोही छी । पहिने जाति, गाम, फेर जिला-जयबार, फेर प्रान्त आ अन्तमे देश । प्रत्येक नागरिक पहिने ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र अछि, फेर बिहारी, बंगाली, पंजाबी आ मद्रासी । आ अन्तमे भारतवासी । देशकेँ अन्तिम स्थान दैत छिऐक हमरालोकनि । ओना मंचपर अनेकतामे एकताक गप्प सुनबामे नीक लगैत अछि । मुदा कतहु स्वदेशी तिरंगाक अग्नि-संस्कार, कतहु राष्ट्रभाषा हिन्दीक पोस्टरक दाह-क्रिया आ कतहु क्षेत्रीय स्वार्थक रक्षा लेल अनशन आ प्राणत्याग । जे किछु करबाक अछि, जे किछु बजबाक अछि, से सभ हमरालोकनि घरे-आङनमे बाजि लैत छी, बाहर बकार बन्द भऽ जाइत अछि । अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिमे पैघ शक्तिशाली देशक मुँह देखैत रहबाक अतिरिक्त कोनो काज नहि करैत छी । 'सहअस्तित्व'क सिद्धान्त मोन पड़ैत अछि जेना सापक मुँहमे बेङ । सहअस्तित्वक एहने स्थिति छैक देशक लेल ।

मुदा हमहूँ तँ एही देशक वासी छी । देश कहियो काल मोन पड़ैत अछि । अपने चिन्तामे सापक मुँहमे दबल बेङ जकाँ कोँकिआइत रहैत छी, सिम्मरक तूर जकाँ हवामे उधिआइत रहैत छी । 'इन्टरव्यू'क नामपर रचल गेल नाटकक एकटा असहाय पात्र जकाँ मंचपर एम्हर-ओम्हर गुड़कैत रहैत छी ।

पहिल बेर इन्टरव्यू दैत काल बड़ उत्साह छल— एक टा प्राध्यापक पद छलैक । मुदा इन्टरव्यू लेल पहुँचैत देरी उत्साह ठण्ढा भऽ गेल । प्रत्याशी उमेदवारक विशाल भीड़ आ भीड़मे सभ ठाम पैरवीक चर्चा । फल्लाँ व्यक्तिक हेतु ई स्थान रजिर्व छैक । इन्टरव्यूमे जयबासँ पहिने उत्साह मरि गेल । तीन बजे दिनमे (दस बजे बजाओल गेल छल) जखन बजाहटि भेल, भूखे-प्यासे कण्ठ सुखायल छल आ ठोरपर पपड़ी जमि गेल छल । हॉलमे बैसल पाँचो व्यक्तिकेँ नमस्कार करैत काल लागल जेना पाँचो 'जल्लाद' जकाँ हमर वध करबा लेल प्रतिबद्ध छथि । एकदम असहानुभूतिपूर्ण दृष्टि आ रुच्छ प्रश्न । प्रश्नपर प्रश्न । उत्तर की देलियनि वा नहि देलियनि से कोनो तेहन महत्त्वपूर्ण नहि लागल । जेना मात्र प्रश्न फेकि देब कर्तव्य होइनि । उत्तर सुनब ओतेक आवश्यक नहि । हॉलसँ बहराइते काल परिणाम ज्ञात छल ।

दोसर इन्टरव्यू देबऽ एकटा मोफस्सिल कालेजमे पहुँचल रही । मोस्किलसँ पुछारी कयलापर कालेजक पता लागल । छोट-छीन आफिसक बाहर पैघ भीड़ । बाहर मैदानमे चारू कात छिड़िआयल लोक । रौदमे पसेनासँ तर-बतर । सूट-बूटवलाक हालति आरो खराब । मुदा सभक हालति खराब छलैक एहि समाचारपर जे ई इन्टरव्यू एक टा फार्स छलैक, कोनो स्थान खाली नहि छलैक । एक टा पुरने प्राध्यापकक अनियमित नियुक्तिकेँ नियमित करबा लेल ई आयोजन भेल छलैक । रौदमे चनकैत सभक माथ आस्ते-आस्ते गरम होबऽ लगलैक । दू-चारि टा बमकिकऽ आगू बढ़ल आ आफिसक सामने आबिकऽ चिचिआय लागल— "निकल, निकल बाहर । कहाँ गेल प्रिन्सिपल, सेक्रेटरी दुनू ? लोककेँ नाटक कऽ ठकैत छैक ? माल-जाल जकाँ सभकेँ मैदानमे ठाढ़ कऽ देने छैक आ अपने भीतर पंखामे बैसल अछि ।" हो-हल्ला मचि गेलैक । आफिसक केबाड़ बन्द भऽ गेलैक । इन्टरव्यू स्थगित । तमसायल उमेदवारसभ बिनबिनाइत कालेजक कम्पाउण्डमे बौआइत रहल ।

हमर मोन अकच्छ भऽ गेल । आर प्रतीक्षा करब व्यर्थ बुझायल । नहि जानि फेर कखन इन्टरव्यू शुरू होयतैक ? स्टेशन दिस बिदा भऽ जाइत छी । हल्ला-हंगामासँ ओहुना हमरा बड़ डर लगैत अछि । एकटा टमटमवला भेटैत अछि, ओहीपर बैसि जाइत छी । टमटमवला रस्ता साफ पाबि तेना घोड़ा दौड़बैत अछि जे हमरा डर होबऽ लगैत अछि । ओकरा टोकैत कहैत छिऐक— "एना नहि हाँकह । कतहु एक्सीडेण्ट भऽ जयतह ।"

टमटमवला रफ्तार कम करैत बजैत अछि—"अहाँ तँ एकदम डेरबुक छी बाबूजी !"

ई बात ओ बड़ सहज ढंगसँ कहैत अछि । मुदा बात हमरा लागि जाइत अछि । रतनो एक दिन गीदड़ कहने छल । सत्ते हम कायर आ भीरु छी ? कोनो वस्तुकेँ अधिकारपूर्वक हथिया लेब, कोनो समस्याक साहसपूर्वक समाधान ताकब हमरा अबिते नहि अछि । आइए बाँकी उमेदवारसभ डँटल रहल आ हम घूरि अयलहुँ । ओसभ कमसँ कम हंगामा तँ कयने होयत, प्रिंसिपल-सेक्रेटरीकेँ दस टा गारि तँ देने होयतैक । मुदा हमरासँ तँ सेहो पार नहि लागल । चुपचाप खसकि गेलहुँ । हमरा सभ-किछु शान्तिपूर्वक आ सुविधासँ चाही । तखन बैसल रहू हाथपर

हाथ राखि, कहियो अपने भट दऽ आगाँमे खसि पड़त । एना बौअयबाक कोन काज अछि ?

आइ फेर मोनक भर्त्सना उत्कट भऽ जाइत अछि । एक दिन यैह मोन शोभाक आह्वानकेँ मात्र सामाजिक आ पारिवारिक भये अनठा देबापर 'कायर' कहि दुतकारने छल । आइ फेर दुतकारि रहल अछि । शक्तिहीन नपुंसक । भाग्यक इशारापर हिजड़ा जकाँ नचैत । ई हिजड़ाक नाच कहिया धरि देखायब ? पुरुषार्थकेँ जगाउ । जे नहि भेटैत अछि, तकरा छीनि लियऽ । नहि तँ खेलाइत रहू यैह खेल । झिझिर कोना झिझिर कोना कोन कोना जाउ ? बेल तर मारलक, बबूर तर जाउ ।

मोनक एहि दुतकारकेँ हम फेर अनठा दैत छिऐक । एना करब कानून आ व्यवस्थाक खिलाफ होयत । सभ चीजक हेतु समय होइत छैक । समयसँ पहिने छिछिअयलासँ की होयत ? तोड़-फोड़, हल्ला-हंगामासँ ककरो काज नहि होइत छैक । मात्र अव्यवस्था आ उपद्रवक प्रसार होइत छैक, जान-मालक हानि होइत छैक।

मोनक भर्त्सना फेर चीत्कार करैत अछि–"सैह कह ने ! तोरा अपना प्राणक भय होइत छौक । जानवर जकाँ जीयब तोरा मंजूर छौक, मुदा मनुक्ख जकाँ संघर्ष करैत, अधिकार लेल लड़ैत मरि जायब तोरा मंजूर नहि छौक । तोरा चाहियौक भीख । सभ ठाम हाथ पसार आ सभ दिन हजारो मृत्यु मर...नपुंसक, हिजड़ा !

हम कान मूनि लैत छी ।

तीन टा वर्ष ओहूसँ पैघ-पैघ, ओहूसँ लम्बा ।

बहुत-किछु भऽ गेलैक एहि बीच । जे टुटपुजिया छल से पूजीपति भऽ गेल । जे घरक भगौआ छल से नेता भऽ गेल । एक टा कांग्रेस दू टा भऽ गेल। दिल्लीमे राजनीतिक सरगर्मी छल ।

मुदा हमर जीवनमे कोनो परिवर्तन नहि भेल छल । जतऽ तीन बरख पहिने छलहुँ, ताहिसँ एक्को डेग आगू नहि जा सकलहुँ । नहि जानि कतेक सय कोस पाछू ठेला गेलहुँ, हिसाब करब कठिन । पटना शहरक जीवनमे आब केवल घुटन, ऊब

आ अपमानक आर किछु नहि रहि गेल छल । आनन्द एक्के शहरमे होइतो अपरिचित भऽ गेल छल । करुणेशक पता नहि छलैक, एक दिन बतहपनीमे घरसँ बहरा गेल– नहि जानि कोन यात्रा-पथपर । रमण डाक्टर भऽ गेल छल– सफल आ व्यस्त, व्यावसायिक ।

हमरा शहरमे रहबा लेल एक टा आश्रय भेटि गेल छल कहुना । दीपक हमर संग पढ़ैत छल एम.ए. मे । एकटा छोटछीन नोकरी आ छोटछीन कोठली । मुदा कलेजा बड़ पैघ छलैक— आ पैघ कलेजा रहलापर एक टा छोटछीन कोठलीमे सौंसे संसार अँटि सकैत छैक । एक टा दोस्तो अँटि गेल छलैक ।

भोरे ओ आफिस चल जाइत छल । तालाक एकटा कुंजी ओकरा लग रहैत छलैक आ एक टा हमरा लग । ओ चल जाइत छल आ हमर दिनचर्या शुरू भऽ जाइत छल । फुटपाथी होटलक चाह आ सस्ता होटलक रोटी-तरकारी । मासमे एकाध कथा-कविता छपि जाइत छल । कहुना पेट भरि लेबा जोग भऽ जाइत छल । नहि रहल, तँ भरि पेट पानि पीबि शहरक परिक्रमा– अगणित । एक आफिससँ दोसर आफिस, एक सड़कसँ दोसर सड़क, एक विभागसँ दोसर विभाग । एक बेर एक टा छोट-छीन नोकरी भेटल छल । मुदा तीन दिनमे छुट्टी । काज छलैक नकली दबाइक व्यापारक नकली लेबुल सटबाक । हमरा तेसरे दिन पता लागल आ छोड़ि-छाड़िकऽ भागि पड़यलहुँ ।

ओहि दिन दीपक हमरापर एकदम रुष्ट भऽ गेल । डटैत बाजल– "दुनियाँ कतहुसँ कतहु चल गेल आ तोँ अपन स्थानपर टूटल पाथर जकाँ गड़ल-अड़ल छेँ ! कतेक मोस्किलसँ एक टा नोकरी भेटल छलौक, ओकरो छोड़ि अयलेँ ?"

हम ओकरा शान्त करैत कहलिऐक–"तोरा नहि बूझल छौक ? ओ काज एकदम गैरकानूनी छलैक ।"

ओ ओहिना क्रोधमे बाजल–"पेट भरबा लेल सभ काज कानूनी छैक । ओ जकर पेट भरल छैक सोना-चानीसँ, तकरा लेल किछुओ गैरकानूनी नहि छैक, आ जकर पेट जरि रहल छैक तकरा लेल पेट भरबाक साधनो गैरकानूनी । देखैत नहि छैँ जे जमाना कतहुसँ कतहु चल गेलैक । पहिने लोक घुसहा किरानी आ अफसरकेँ देखाकऽ कहैत छलैक–"देख, ई घुसहा अछि ।" आब बात उनटा छैक । जे घूस नहि लैत अछि, तकरेपर आङ्गुर उठा लोक कहैत छैक–"देख रे, ई घूस नहि लैत छैक !' भ्रष्टाचार हमरालोकनिक राष्ट्रिय चरित्र भऽ गेल अछि । यदि कोनो दिन ऊठिकऽ देखबैक जे भ्रष्टाचार नहि रहल, तँ विश्वास करब कठिन भऽ

जायत जे हम जीवित छी । मुदा तोँ जीवित कोना रहबेँ ? एहिना साल-पर-साल बितैत जयतौक आ तोँ आदर्श धो-धोकऽ चटैत रहबेँ ।"

हम दीपकक बातक कोनो उत्तर नहि दैत छिऐक । चुपचाप सभ टा सूनि लैत छी । ओ शान्त होइत बाजल–"हमर बात अधलाह लगलौक ?"

हम ओकरा कोना कहितिऐक जे आब हमरा किछुओ अधलाह नहि लगैत अछि । ओ सीमा हम लांघि गेल छी जतऽ किछु नीक आ किछु अधलाह लगैत छैक । आब सभ टा सुन्न भऽ गेल अछि– संवेदनहीन !

ओ हमरा चुप्प देखि बाजल–"आब जे भेलैक से भेलैक ! ठीके ओहिमे खतरा छलैक, नीके कयलेँ जे छोड़ि देलेँ । एक टा इन्टरव्यू छौक ने परसू, कलकत्ता चल जो !"

हमरा मोन पड़ि जाइत अछि जे एक टा इन्टरव्यूकार्ड आयल छल । मुदा हम मोड़ि-माड़िकऽ राखि देने छलिऐक । सरकारी नोकरीक तँ 'एज' खतमे भऽ गेल छल, प्राइवेटोमे इन्टरव्यू दैत थाकि गेल रही । पछिला बेर इन्टरव्यूमे झगड़ा जकाँ भऽ गेल । इन्टरव्यू लेनिहार प्रश्न पूछि दोसर कोठलीमे चल गेल । हम जबाब ककरा दितिऐक ? कनेक काल बाद घुरिकऽ आयल तँ पुछलक- "अहाँ चुप्प बैसल छी ! जबाव नहि देलहुँ प्रश्नक ?"

हमहूँ कटुतासँ कहलिऐक- ''जवाब ककरा दितिऐक ? एहि टेबुल-कुर्सीकेँ ?''

ओ नाक-भौँ सिकोरैत बाजल– "की मतलब ? अहाँ इन्टरव्यू देबऽ आयल छी कि जवाब-सवाल करऽ ?"

हमहूँ ओहिना रुच्छतासँ कहलिऐक–"आयल तँ रही इन्टरव्यू देबऽ ! मुदा जतऽ सामान्य शिष्टाचारो नहि छैक, ततऽ काज नहि करबाक अछि हमरा ।"

हम ऊठिकऽ चल आयल रही । तहियासँ फेर इन्टरव्यू देबाक इच्छा नहि होइत छल । मुदा दीपक जिद्द करऽ लागल तँ जाय पड़ल । एक टा भाइ छलाह ओतऽ, हुनके डेरापर ठहरि गेलहुँ ।

इन्टरव्यूक बाद घूमऽ-फिरऽ बहराय लगलहुँ तँ भाइ टोकि देलनि- "कनेक सम्हरि कऽ जैहह ! चिराग-बातीसँ पहिने घूरि अबिहह । आइ-कालि सुरक्षित नहि छैक, खासकऽ साँझक बाद घूमब-फिरब । तोरा तँ आरो खतरा छह । हृष्ट-पुष्ट देह देखि झट पुलिस बूझि जयतह आ ऊपरसँ एक टा बम खसा देतह ।"

हम डेरा जाइत छी । घुमबाक उत्साह ठंढा भऽ जाइत अछि । भाइ लग बैसैत पुछैत छियनि–"एना किएक छैक ? युवावर्ग एतेक हिंसक किएक भऽ गेल अछि ?"

भाइ कहऽ लगैत छथि–"कारण बहुत रास छैक, सभ सुनाबऽ लगबह तँ समय लागत । आफिसो छूटि जायत । मुदा एक टा कारण तँ एकदम स्पष्ट छैक । एही कलकत्तामे कतेक लाख बेकार नवयुवक अछि । ओ आखिर की करत ? भूखल पेट, बेकार उपेक्षित कतेक दिन सभटा सहत ? व्यवस्थाक प्रति हिंसक विद्रोह भोतिआयल लोकक हाथमे आबि गेल छैक । व्यवस्थाक प्रतीक मानि ककरा मारैत अछि ? अपने सन निरीह अल्प वेतनभोगी सिपाही वा प्राध्यापककेँ, कोनो निरीह छात्र आ बूढ़ अभिभावक आ उपकुलपतिकेँ । मुदा एहि हिंसक वर्गकेँ भड़कबैत के छैक ? कतऽसँ एकरा सुरक्षा आ प्रोत्साहन भेटैत छैक ? छात्र-अनुशासनहीनता आ युवा-संतोषक बात तँ सभ ठाम सुनैत छहक । मुदा असल समस्या कतऽ छैक ? असल समस्या छैक राष्ट्रिय अनुशासनहीनताक– सभ क्षेत्रमे, सभ स्तरपर । घरमे बापक अनुशासन नहि छैक, स्कूल-कालेजमे शिक्षकक अनुशासन नहि छैक, समाजमे मुखियाक अनुशासन नहि छैक, देशमे प्रधान मंत्रीक अनुशासन नहि छैक । सभ स्तरपर ई अनुशासनहीनता, कमजोर योजना आ गलत व्यक्तिक नेतृत्व युवापीढ़ीक असंतोष बढ़ा रहल छैक । फलस्वरूप सभ ठाम हिंसा, तोड़फोड़ आ खून-खराबी । सभ दिन आफिस जाइत काल लगैत अछि जेना युद्ध-क्षेत्रमे जा रहल होइ, घूमिकऽ आयब वा नहि, सेहो ज्ञात नहि ।"

भाइ आफिस चल जाइत छथि । हमहूँ घरमे बैसल-बैसल अकच्छ भऽ जाइत छी । बाहर आबि निरुद्देश्य बौआय लगैत छी । महानगर ऊपरसँ एकदम सामान्य बुझाइत अछि, ओहिना चहल-पहल आ जीवनसँ परिपूर्ण । हमरा आश्चर्य होइत अछि जे एहि लवालव जिनगीक बीच कतऽसँ बम विस्फोट भऽ जाइत छैक आ महानगरक लोक घोंघा जकाँ अपन कोष्ठमे नुका जाइत अछि । एकदम प्राणहीन, सुन्न आ भयावह । खाली धुआँ आ धमाका । रक्त आ आगि । लहास आ उत्तेजना । कतऽसँ आबि जाइत छैक ईसभ ?

आ फेर कतऽ बिला जाइत छैक ईसभ ? प्रात भेने महानगर फेर सामान्य भऽ जाइत अछि– ओहिना जिनगीसँ लबालब, चहल-पहलसँ परिपूर्ण । भरल ट्राम, बसमे लटकल लोक, फुटपाथपर ठेलमठेल । एहि भीड़मे कोना मृत्यु सन्हिया जाइत छैक ? एतेक जनसमूहक बीच कोना दस-पाँच उपद्रव कयनिहार अपन काज कऽ सफलतापूर्वक भागि पड़ाइत अछि ?

जवाब हमरा अपने मोनसँ भेटि जाइत अछि । एहि देशक भीरु आ नपुंसक

जनता । एक टा बसमे चारि टा गुंडा एक टा छौड़ीकेँ बेइज्जति कऽ दैत छैक आ एक सय यात्री तमाशा देखैत रहैत अछि । गुण्डाक हाथमे छूरा छैक । कहीं हमरे भोंकि देलक ? तखन के देखतैक हमर विधवा आ बिनबापक धीयापूता सभकेँ ? होबऽ दियौक जे होइत छैक से । हमरा कोन मतलब ? हमरा लोकनि अपन-अपन तथाकथित भद्रताक शाल ओढ़ि संच-मंच बैसल रहैत छी आ किछु असामाजिक तत्त्व जे मोन होइत छैक से कऽ जाइत अछि । नपुंसकक सन्तान छी हमरालोकनि, एक टा सम्पूर्ण नपुंसक समाज । हिजड़ा जकाँ नचैत छी आ भीड़ तमाशा देखैत अछि । कौखन हम स्वयं तमाशा, कौखन तमाशबीन ! खेल एक्के ।

हमरा अपन एहि तरहेँ सोचबापर आश्चर्य होइत अछि । हम तँ स्वयं एक टा कायर आ भीरु लोक छी । हम कोना एतेक बहादुरीसँ सभकेँ कायर आ पुंसत्वहीन कहि रहल छिऐक ? फेर लागल जे यैह तँ कायरक लक्षण थिकैक । कायर आदमी किछु करैत नहि अछि, खाली तमाशा देखैत अछि आ अपना छोड़ि बाँकी सभकेँ बकलेल आ कायर बुझैत छैक ।

मुदा एहनो तँ भऽ सकैत छैक जे हमरे सन कोनो शान्तिप्रिय आ व्यवस्थापसन्द लोकक हाथमे एक दिन पाथर आ मशाल आबि जाइक । ओ पाथरसँ एहि महानगरक सभ टा शीशा तोड़ैत जाय आ मशालसँ सभकेँ आगि फुकने जाय । ओकरा पाछू पुलिस दौड़ैक, गोली आ डन्टा दौड़ैक । ओ सौंसे शहरमे पाथर फेकैत मशाल लेने दौड़ल जाय ।

एना किएक भऽ जाइत छैक ? किताब पढ़ऽवलाक हाथमे पाथर कतऽसँ आबि जाइत छैक ? सृजनक हाथमे विध्वंस कहाँसँ आबि जाइत छैक ? के दऽ दैत छैक ? हमरा कोनो उत्तर नहि भेटैत अछि ।

सामने एक टा सिनेमाघरमे भीड़ देखैत छिऐक । पोस्टर देखैत छिऐक- सत्यजित रायक 'प्रतिद्वन्द्वी' ! हमहूँ एक टा टिकट कटा भीतर बैसि जाइत छी ।

पाँच वर्ष बाद गाम आयल छी । आयल की छी, आबऽ पड़ल अछि ।

कलकत्तोवला नोकरी नहि भेटल । मासमे एकाध कथा-कविता जे छपि जाइत छल सेहो बन्दे जकाँ । सधन्यवाद आपस । दीपकक कोठलीमे राति बितयबाक स्थान तँ सुरक्षित छल, मुदा पेटमे चारि टा अन्न देबाक उपाय सेहो बन्द । गाम घूरि अयबाक अतिरिक्त कोनो उपाय नहि रहल ।

बाबी हमरा देखि कानऽ लागलि– "आब भरि जिनगी पढ़िते रहबेँ ? बियाह-दान कहिया करबेँ ?"

हम हँसिकऽ रहि जाइत छी । बाबीक लेल हम एखन धरि पढ़िए रहल छी । ओ तँ मात्र दू टा श्रेणी जनैत छैक– जे कमौआ नहि से पढुआ ।

माय चुपचाप नोर पोछैत बाजलि– "आब तोरा देखबो लोककेँ सेहन्ता भऽ गेलैक । पाबनियोँ-तिहारमे तँ लोक गाम चल अबैत अछि !"

हम ओकरो कोनो उत्तर नहि दैत छिऐक । ओकरा कोना कहितिऐक जे पाबनि-तिहारक नामो हमरा मोन नहि अछि आब ? मोन तँ एतबे अछि जे प्रत्येक वर्षमे तीन सय पैंसठि दिन होइत छैक आ प्रत्येक दिन पहाड़ सन । हम ओहि पहाड़केँ ठेलैत थाकि गेल छी । हाथ-पयर, सभ अंग शोणिते-शोणताम भऽ गेल अछि ।

मुदा बाबू लग पहुँचि हम आश्चर्यसँ अवाक् रहि जाइत छी । कहियो ने सोचने रही जे एक दिन एहनो बात हुनक मुँहसँ सुनब । मुदा ओ सामने ठाढ़ बाजि रहल छलाह– "की फायदा भेल तोरा एतेक पढ़ा-लिखाकऽ ? एतेक पैघ संसारमे एक टा छोट-छीन काज नहि छह तोरा लेल ? आ काज नहि छह तँ घर बैसह, खेत-पथार देखह । अपन पेट भरबा जोग जमीन तँ अपना छह । बुढ़ारीमे आब ई जंजाल नहि सम्हरैत अछि हमरासँ ।"

हम ध्यानसँ बाबूक मुँह देखैत छियनि । रंग जरिकऽ झामर भऽ गेल छनि, कन्हा झुकल आ चेहराक घोकचल चाममे उभरल हड्डी । लगैत अछि जेना बाबूजी एहि पाँच वर्षमे किछु बेसी बूढ़ भऽ गेल होथि ।

बाबू जेना अपनेसँ बाजि रहल होथि– "कतेक आस छल तोरासँ ! बड़ पैघ-पैघ स्वप्न । मुदा तोरासँ नीक तँ रतने बहरायल । तोरासँ कतेक आगू बढ़ि गेल अछि !"

बाबूक एहि बातपर हम तिलमिला जाइत छी । रतनाक गाम जहिया गेल रही, तहियाक बाबूजीक गप्प मोन पड़ैत अछि । आइ बाबूजी ओही रतनाक गुणगान कऽ रहल छथि । कोन बड़का तीर मारलक अछि ओ ?

हम बाबू लगसँ ऊठिकऽ चल अबैत छी । कोनो उत्तर नहि दैत छियनि ।

मुदा रतनासँ अपन तुलना हमरा बड़ अपमानजनक लगैत अछि, खासकऽ बाबूजीक मुँहसँ । हम ओही चोटसँ दिन भरि छटपटाइत रहैत छी ।

मुदा साँझखन हमरा पता लागि जाइत अछि जे बाबूजीक कथनमे वस्तविकता छलनि । रतना हमरा पाछू छोड़ि गेल छल ।

चर्चा कयलापर हमर छोट भाइ शंभू बाजल– ''अहाँकेँ सेहो नहि बूझल अछि ? रतना अपन गामक मुखिया भऽ गेल अछि ।''

हमरा आश्चर्यमे पड़ल देखि ओ विस्तारपूर्वक सभ टा कहऽ लगैत अछि– ''पछिला चुनावमे एकटा लहरि आयल छलैक । विरोधी शक्ति सम्मिलित छलैक । ठाम-ठाम उपद्रव भेलैक । नेतालोकनिकेँ कोनो उपाय नहि सूझि रहल छलनि । तखने नहि जानि कोना हुनकासभकेँ रतनाक पता लागि गेलनि । दोसरे दिनसँ रतनाक साइकिलपर झंडा फहराय लगलैक आ ओ गामे-गाम प्रचार करऽ लागल । ओकरा टोकबाक साहस ककरो नहि भेलैक । लोकसभ कहैत छैक जे ओकर प्रचारक झोरामे नीचाँ खाली नोट भरल रहैत छलैक । से तँ जे छलैक से छलैक । मुदा एतबा तँ सामने छैक जे ओहि चुनावक बाद रतनाकेँ धड़ाधड़ ठीका भेटऽ लगलैक । लाखो कमयलक । उपरका दवाबपर गामक मुखियाजी त्यागपत्र दऽ हँटि गेलथिन मैदानसँ आ रतना गामक मुखिया भऽ गेल । सुनैत छी, एहि बेर एसेम्बलीक हेतु ठाढ़ होयत ।''

शंभू विस्तारपूर्वक सभटा खिस्सा कहैत जाइत अछि । हमर आश्चर्य कम होइत चल जाइत अछि । सभटा हमरा स्वाभाविक लागऽ लगैत अछि । आब एहि बातपर आश्चर्य होइत अछि जे किएक तखनसँ रतनाक तरक्कीक इतिहासपर आश्चर्य भऽ रहल छल ।

शंभू अन्तमे बजैत अछि– ''पछिला बेर एसेम्बलीक सीट संसोपा लऽ गेल आ पार्लियामेन्टक कांग्रेस । मुदा एहि बेर कांग्रेस विभाजित भऽ गेल अछि । संसोपाक हालत खराब छैक । जनसंघ एहि बेर दुनू सीट अबस्से लऽ लेतनि ।''

शंभू कट्टर जनसंघी भऽ गेल अछि, से हम सूनि चुकल छलहुँ । मुदा ओकर बात आ उत्साह देखि हमरा आश्चर्य होइत अछि । हमर घरमे तँ कहियो ककरो राजनीतिमे रुचि नहि रहलैक अछि, फेर एकरा कोना ई चस्का लगलैक ? पढ़ऽ-लिखऽसँ ध्यान हँटल जाइत छैक ।

मुदा प्रात भेने रतनाकेँ देखि निश्चित धारणा मोनमे बैसि जाइत अछि जे उन्नति करबा लेल पढ़ब-लिखब कोनो जरूरी नहि छैक । रतनाक संग एकटा पूरा

झुण्ड छलैक पछुलगुआ सभक । सभक बीचमे सगर्व मुसकाइत ओ हमरा देखि बाजल– ''कहिया अयलेँ ?''

– 'भेल किछु दिन । की हाल छौक ?' हम पुछलिऐक !

– 'चलि रहल अछि कोनहुना ।'' ओ एक टा पुरान अखड़ियल नेता जकाँ विनीत भावसँ बाजल– ''बस जनता-जनार्दनक सेवामे लागल छी । तोँ अपन सुना । सुनैत छी, एखन धरि बेकारे बैसल छैँ !''

हम कोनो उत्तर नहि दैत छिऐक । ओ स्वयं बाजि उठैत अछि– ''तोँ चिन्ता नहि कर आब । सभ ठीक भऽ जयतौक । कनेक ई संविद सरकार टूटऽ दही, अपन सरकार जहाँ बनल कि मुख्यमंत्रीसँ कहि कोनो नीक काज धरा देबौक ।''

ओ ओहिना बड़प्पनसँ मुसकिआइत चल गेल आ हम ओकर उदारता आ महानताक समक्ष बौन भेल ठाढ़ रहि गेलहुँ ।

गाममे बेसी दिन रुकब संभव नहि भेल । माय-बाबूक उदास चेहरा, बाबीक आकुल आग्रह, काकाक स्नेहपूर्ण चिन्ता । सभसँ ऊपर गामक लोकक विरूपता भरल जिज्ञासा– ''की करैत छिऐक औ शहरमे ? एखन धरि बेकार बैसल छिऐक ?''

पाँचे दिन बाद हम विदा होबऽ लगैत छी । बाबू मौन रहैत छथि । खाली माय कानऽ लगैत अछि– ''बापक बातकेँ लोक एतेक अधलाह मानैत अछि ! कनेक हुनकर मोनमे हुलकिकऽ देखहुन, केहन स्नेह भरल छनि तोरा लेल ! खटैत-खटैत मोन-शरीर दुनू पस्त रहैत छनि । दिन-दिन कमजोर भेल जाइत छथुन । तेँ कौखन तामस भऽ जाइत छनि । आ फेर तोरा नहि कहथुन तँ ककरा कहथिन ? तोँ सभसँ जेठ छह, चारि टा छोट भाइ छह, दू टा बिनबियाहलि बहीन । सभकेँ तोँही ने देखबहक ! बाप सभ दिन बैसल तँ नहि रहथुन !''

हम कोनो तरहेँ ओकरा विश्वास नहि देआ सकलिऐक जे बाबूक बातक हमरा मोनमे कोनो दुःख नहि छल । ओ मानि लेने छलि जे हम रूसिकऽ गामसँ जा रहल छी । आब ओकरा कोना विश्वास दियबितिऐक जे गामसँ रूसिकऽ नहि, एक टा संकल्पक संग जा रहल छी जे किछु अबस्से करब । बैसल नहि रहब ।

विदा होइत काल माय किछु टाका हाथमे दैत बाजलि– ''कोनहुना किरायाक इन्तजाम भेल छह । मुदा एना कतेक दिन चलतह ? काज शुरू कऽ दैह, कोनो काज । एना बैसल रहलासँ चलब कठिन छह आब ।''

हमहूँ एही निश्चयक संग गामसँ विदा भेलहुँ । काज करब, खाहे केहनो काज, कोनो काज, ककरो काज । सोचबा-विचारबाक अवसर नहि छल ।

मुदा पटना आबि फेर सोचमे पड़ि गेलहुँ । एहि छोट अनुपस्थितिमे हमर रैन-बसेरा उजड़ि गेल छल । दीपक गामसँ अपन स्त्रीकेँ लऽ अनने छल । एम्हर ओकर आमदनी बढ़ि गेल छलैक, डिपार्टमेण्ट बदललासँ बाइली आमदनीक बाट खुजि गेल छलैक । आब ओकरा खानाबदोशी जिनगीमे कष्ट होबऽ लागल छलैक। मुदा एतेक जल्दी ओ अपन कष्ट-निवारणक उपाय सोचि लेत, से हमरा नहि बूझल छल । पटना आबि एकाएक अथाहमे पड़ि गेल छलहुँ ।

ओ हमर चिन्ता देखि सहानुभूतिसँ बाजल– ''दू-चारि दिन लेल कोनो बात नहि छैक । कोनहुना एहीमे अँटावेश कऽ लेब । मुदा तोँ तँ बुझिते छेँ, एक कोठलीक मकानमे परिवारक संग आन ककरो राखब संभव नहि छैक । अधलाह नहि मानिहेँ ।''

हम हँसैत कहलिऐक– ''अधलाह मानबाक एहिमे कोन बात छैक ? ई तँ खुशीक बात छैक । तोँ आब बाकायदा गृहस्थ भऽ गेल छेँ । ला, एक कप चाह पिया, भौजीक हाथक । साँझ धरि कोनो इन्तजाम कऽ लेब हम अपन ।''

कहबा लेल तँ हम कहि देलिऐक, मुदा एतेक जल्दी कोन उपाय भऽ सकैत छल ? कोनो नव डेराक एडवांस देबा लेल टाका नहि छल । एहि राजधानीमे कमयनिहार परिचित-सम्बन्धी सभकेँ जगहक असौकर्य छलैक । हमरा अनायास रमण मोन पड़ल ।

रमण अपन क्लीनिकमे व्यस्त छल । खूब भीड़ छलैक । हमरा प्रसन्नता भेल । ओ हमरा देखि भीड़केँ ठेलैत बाहर आयल । अपन बगलमे बैसौलक । किछु काल कम्पाउण्डरकेँ रोगीकेँ भीतर पठयबासँ मना कयलकैक ।

– ''कहिया अयलेँ गामसँ ? बहुत दिनसँ नहि देखलियौक !''

– ''आइये आबि रहल छी । सुना हाल ।''

ओ उत्साहसँ बाजल– ''सभ-किछु ठीक-ठाक जा रहल अछि । किछु दिनमे रोगी ततेक बढ़ि गेल अछि जे ई क्लिनिक आ मकान छोट पड़ि रहल अछि । पर्याप्त एक्सटेनशन करऽ पड़त । पर्याप्त घाटा भऽ रहल अछि । आइ-कालि तँ

डाक्टरीमे बुझबे करैत छेँ, कोना टाउटसभ लागल रहैत छैक । झट रोगीकेँ टपा लैत छैक । मुदा छोड़ ओसभ, तोँ अपन सुना !''

–''सुनबऽ जोग की अछि जे सुनबियौक ? खाली कहऽ आयल छलियौक जे तोहर जान-पहचानमे कोनो काज होउक तँ कह । आब हम किछुओ करऽ लेल तैयार छी । तोरा कहलासँ कोनो काज भऽ सकय, तँ हम तैयार छी ।

ओ प्रसन्न होइत बाजल– ''आब आयल छेँ तोँ रस्तापर । हम तँ कहियासँ कहि रहल छलियौक । तोँही नै मानैत छलेँ । आदर्श आ मेरिटक गप्प करैत रहलेँ । देखलेँ मेरिटक किम्मति ? मेरिटक मतलब छैक पैरवी । पैघ लोक लग पहुँच । से हम करबा देबौक । तोँ घबड़ो जुनि । सभ ठीक भऽ जयतौक । तोँ जखने कोनो भेकेन्सी देखिहेँ, आवेदन कर आ पता लगा जे ककरा कहलासँ काज होयतैक । बाँकी इन्तिजाम हम कऽ देबौक ।''

हमरा लागल जेना रमण किछु अगुता रहल होअय । रोगीक भीड़ बढ़ि रहल छलैक । व्यवसायक समय छलैक— क्षति भऽ रहल छलैक । हम ओकरासँ बिदा लैत छी ।

रमण जे रस्ता देखौने छल, ताहिमे मासो लागत । हमरा लग अजुका गप्प छल । दीपकक मकान खाली करबाक अछि । रमणकेँ मकानक एक्सटेंशन करबाक छैक, रोगी अँटि नहि रहल छैक । जगहक बात हम कहियो नहि सकलिऐक ।

मुदा बाहर आबि फेर अथाहमे पड़ि गेल रही । उबरबाक कोनो बाट नहि सूझि रहल छल । ओहि निराश क्षणमे आनन्द मोन पड़ल । एही शहरमे अछि । अपरिचित भऽ गेल अछि । मुदा नीक ओहदापर अछि । काज आबि सकैत अछि । मान-अपमानक स्थिति हम पार कऽ गेल छी । आब हम अपमानित नहि होइत छी, तिरस्कृत नहि होइत छी, मात्र अस्वीकृत होइत छी । कतहु स्वीकृत होयबाक सभ चेष्टा निष्फल भऽ रहल अछि ।

आनन्दक डेरा लग खूब राति बितलापर पहुँचल रही । साँसे मकान इजोतमे जगमगा रहल छलैक आ लगैत छलैक जेना कोनो विशेष आयोजन होइक भीतर । हम बड़ी काल धरि गेटपर असमंजसमे ठाढ़ रही । एक टा नोकर ओम्हरसँ गेल । ओकरा बजाकऽ एकटा कागतपर अपन नाम लिखि आनन्दकेँ पठबा देलिऐक । तैयो पन्द्रह मिनट धरि क्यो नहि बहरायल । एक बेर लागल जेना आनन्द केबाड़ लगसँ हुलकी दऽ हमरा देखि गेल अछि । बेसी विलम्ब होइत देखि, रुकब व्यर्थ मानि घूरऽ लगलहुँ कि आनन्द धड़फड़ायल पहुँचल–''बड़ उकड़ू समयमे आबि गेलेँ शंकर ! भीतर

लोकसभकेँ 'डान्स' आ 'डिनर' पर बजौने छिऐक । पैघ-पैघ लोक आयल छथि । तोँ काल्हि आफिसमे भेँट कर । अधलाह नहि मानिहेँ, एखन कनेक व्यस्त छी ।''

हमरा किछु कहबासँ पूर्वे आनन्द भीतर चल गेल । सूतल आ मुइल आत्मा एक बेर चीत्कार कयलक– ''भेटि गेलौक मूड़ी नुकयबाक लेल जगह ? एतेक संघर्षक बाद अन्ततः यैह भीख माङब आ दुर्गति भोगब लिखल छलौक भाग्यमे– सेहो अपन कहियोक निकट मित्रसभ द्वारा। एहिसँ तँ तोँ मोटा उठा लितेँ, कुली-मजदूर किछु भऽ जैतेँ, से नीक छलौक ।''

हम एक टा आगिमे झरकैत एम्हर-ओम्हर शहरमे बौआइत रहलहुँ । पार्क, सिनेमा, बजार सभक चक्कर काटि गेलहुँ । पयर थाकि गेल, मुदा राति नहि बीतल । एतेक रातिकेँ परिवारवला दीपककेँ जगा ओकर अप्रसन्नता मोल लेबऽसँ नीक छल शहरक सुन्न रस्तापर बौआयब, कोनो पार्कक बेंचपर राति काटि देब ।

बाट सुन्न भऽ गेल छलैक । दोसर 'शो'क पसिंजर उठा रिक्शोवलासभ कतहु सड़कक कातमे रिक्शा ठाढ़ कऽ थाकल, मुदा सुखद निन्नमे पड़ि रहल छल । हमर मोनक अशांति कतहु एक ठाम स्थिर नहि बैसऽ देलक । एक सड़कसँ दोसर सड़क, एक मोहल्लासँ दोसर मोहल्ला बौआइत रहलहुँ जेना आइ भोर होयबासँ पूर्व शहरक चौहद्दी एक बेर आर नापि जायब ।

रातिक अन्तिम पहरमे एकटा मोटरगाड़ी हमर समीप रुकैत अछि । घूमिकऽ पाछू नहि देखैत छिऐक । गाड़ी फेर 'स्टार्ट' भऽ पाछुएसँ घूमिकऽ चल गेल । कनेक काल बाद हमर पाछाँसँ एकटा नारीकण्ठ फूटल— 'हलो'...

हम घूरिकऽ पाछाँ देखलहुँ । एकटा कारी सन छौड़ी ठाढ़ि छलि । चेहरा परिचित सन लागल, जेना कहियो देखने होइऐक । कनेक जोर देलापर झट मोन पड़ल– एही छौड़ीकेँ पटना मार्केट लग आनन्दक गाड़ीमे बैसलि देखने छलिऐक । अन्तर एतबे छलैक जे ओहि दिन साँझमे ओकर चेहरापर मेक-अप छलैक, कारी चेहरापर स्वस्थ आकर्षण छलैक । मुदा एखन राति बितलापर ओ मेक-अप झड़ि गेल छलैक आ ओ एकदम बासि आ चूसल सिट्ठी सन लागि रहलि छलि । हमरा हँसी लागि गेल आ हम उनटिकऽ अपन खाली पाकेट देखबैत कहलिऐक–''सौरी, रोंग नम्बर, मिस !''

ओ एक क्षणक लेल अप्रतिभ भेलि । मुदा फेर अपनाकेँ सम्हारि हँसैत बाजलि–''नम्बरसभ हमरा चीन्हल अछि, अहाँ चिन्ता जुनि करू । मालवला असामीकेँ नहि चीन्ही, तँ एहि लाइनमे काज कोना चलत ? मुदा अहाँ आउ ने हमरा संग, दामक चिन्ता नहि करू ।''

रातिक तीन अंश सड़क आ पार्कमे बिताकऽ हम क्लान्त भऽ गेल रही । विशेष निषेध करबाक शक्ति नहि छल । कमसँ कम एक टा कोठली तँ भेटि जायत बाँकी रातिक हेतु । हम ओकर संग लागि जाइत छी । दू-तीन चक्करक बाद ओ एकटा छोटछीन मकानक ताला बाहरसँ खोलि भीतर चल अबैत अछि । इजोत बारि दैत छैक । हमहूँ भीतर आबि जाइत छी । ओ बिनु हमरा दिस घुरने बजैत अछि– ''अहाँ एहि कोठलीमे बैसू । हम अबैत छी ।''

ओ दोसर कोठलीमे अदृश्य भऽ जाइत अछि । हम कोठलीमे चारूकात नजरि दौड़बैत छी । एकटा छोटछीन चौकीपर उज्जर चादरि, कोनमे रैकपर किताबसभ, एकटा टेबुलपर एकटा छोट सन लैम्प आ एकटा फ्रेम कयल फोटो । दोसर टेबुलपर क्राइस्टक मूर्त्ति— सूलीपर लटकल क्राइस्ट आ तकर आगाँमे एक टा पोथी । हमरा कोठलीमे तेहन किछु ने भेटल जकरा असर्ध वा कुत्सित कहिऐक । हम बिछौनपर बैसि जाइत छी ।

दोसर कोठलीसँ एकटा स्वर, पुरुष-स्वर आयल— ''एखन फुरसति भेलौक अछि तोरा ? अनलेँ हमर चीज ?''

–''लियऽ !'' ओ छौंड़ी किछु दैत छैक प्रायः ।

कनेक काल फेर निस्तब्धता । तखन फेर वैह पुरुष-स्वर— ''हम एकसर किलोल करैत रहैत छी आ तोँ एकसरि मजा करैत रहैत छैँ !''

–''पाप्पा !'' जेना ओ तड़पि उठैत अछि– ''खबरदार जँ एको बेर एहन बात बजलहुँ । अहीँ लेल सभटा करैत छी हम । माय तँ आत्महत्या कऽ छुट्टी पाबि गेलि आ हम भोगि रहलि छी । राति-बिराति बौआइत रहैत छी । मुदा अहाँकेँ तँ बोतल चाही । कोना अबैत अछि ओ बोतल ताहिसँ अहाँकेँ की ? आइ छोड़बे ने करैत छल ओसभ, कोना अबितहुँ ?'' युवती प्रायः कानऽ लगैत अछि । फेर निस्तब्धता । हम बड़ी काल धरि प्रतीक्षा करैत छी । फेर नहि जानि कखन आँखि लागि जाइत अछि ।

भोरे अकचकाकऽ उठैत छी तँ ओ सामने ठाढ़ि अछि । नहायल, कारी-कारी पैघ-पैघ केश पीठपर छिड़िआयल, एकदम स्वस्थ आ पवित्र । रातुक युवतीसँ एकर कोनो मेल नहि छलैक । हम बिछौनसँ उतरैत कहलिऐक–''माफ करब ! थाकल रही, नहि जानि कोना आँखि लागि गेल राति । अहाँकेँ असुविधा भेल ।''

ओ हँसैत बाजलि–''मुदा अहाँ किएक चिन्तित होइत छी ? हम तँ पहिने कहि देने रही जे दाम नहि लागत ।''

हम लज्जित होइत कहलिऐक–''हमरा माफ करू । राति हम अपमान कयने रही अहाँक ।''

ओ गम्भीर भऽ गेलि— ''एहन अपमान तँ हमर नित्य होइत अछि, कहाँ क्यो माफी मङैत अछि ?'' ओ फेर हँसऽ लागलि–''अहाँ माफी मङनिहार पहिल व्यक्ति छी, जाउ, माफ कयलहुँ ।''

ओकर निर्मल हँसी देखि रातुक गप्प आ वार्तालाप हमरा असह्य लागऽ लगैत अछि । हम पूछि बैसैत छिऐक–''राति अहाँ हमरा टोकने किएक रही ?''

ओ ओहिना हँसैत बाजलि— ''गाहक बूझि तँ कथमपि नहि टोकने रही। हमरा बूझल अछि जे अहाँ आनन्द बाबूक मित्र थिकियनि । ओहि दिन पटना मार्केट लग देखने रही । काल्हि ओहि 'डांसपार्टी'मे सेहो हम रही । अहाँकेँ गेटपर ठाढ़ देखने रही । फेर रातुक दू बजे सुन्न सड़कपर ठाढ़ देखि लागल जेना अबस्से कोनो विपत्तिमे छी अहाँ । मोन नहि मानलक, टोकि देलहुँ । कोनो अपराध कयलहुँ ?''

–''नहि तँ, अपराध तँ हमरासँ भेल । अहाँकेँ अण्ट-सण्ट कहि देलहुँ । बेर-बेर लज्जित नहि करू हमरा ।''

ओ खूब हँसलि । हँसिते बाजलि— ''अहाँ तँ तेना गप्प कऽ रहल छी हमरासँ जेना कोनो कुलीन कन्याक सामने बैसल होइ ! हमर असली रूपसँ तँ अहाँ परिचिते छी ।''

–''परिचित तँ नहि छलहुँ, मुदा राति परिचय भेटि गेल ।'' हम ओकरा विस्मित देखि बात बदलैत कहैत छिऐक–''ई फोटो ककर राखल अछि टेबुलपर ?''

ओ स्नेहसँ फोटो उठा लैत अछि । कनेक काल देखैत रहलाक बाद फोटो स्थानपर रखैत बजैत अछि–''हमर छोट बहीन थिक । राँचीमे पढ़ैत अछि । होस्टलमे राखि देने छिऐक । एहि वातावरणसँ दूरे रहय सैह नीक ।''

हम ऊठिकऽ ठाढ़ होइत विदाक नमस्कार करबा लेल हाथ जोड़ैत-जोड़ैत एकाएक पूछि बैसलिऐक–''अहाँक नाम तँ पुछबे नहि कयलहुँ मिस !''

ओ बीचेमे टोकैत बाजलि— ''मिस नहि, खाली रोजी ।''

हम कहलिऐक–''मिस नहि, तँ रोजी सेहो नहि, हम अहाँकेँ चम्पा कहब।''

ओ हँसैत पुछैत अछि–''हिन्दू बनायब की ? क्रिस्तान महिला पसिन नहि ? मुदा चम्पा किएक, गुलाब किएक नहि ?''

–''चम्पा हमर नेनाक दोस्त छलि ।'' हम कहलिऐक ।

ओ गम्भीर भऽ गेलि–''आब कतऽ अछि ?''

–''दुनियाँक भीड़मे कतहु हेड़ा गेलि अछि ।''

–''केहन छलि ?'' ओ पूर्ववत गम्भीर छलि ।

–''केहन छलि से तँ हमरा नीक जकाँ मोनो नहि अछि । भऽ सकैत अछि नीक रहलि होअय । मुदा हमरा बड़ नीक लगैत छलि ।''

रोजीक मुँहपर कुमारि कन्याक मुँह सन लाली आबि जाइत छैक आ ओ एकटक हमर मुँह देखैत अछि ।

हम नमस्कार कऽ बाहर चल अबैत छी ।

ओही दिन एकाएक गाम आबऽ पड़ि जाइत अछि । दीपकक डेरापर घूरिकऽ देखैत छी जे एकटा तार प्रतीक्षामे पड़ल अछि । दीपक पढ़ि चुकल छल । तार हमरा दैत बाजल–''एखने चल जो । साँझेसँ ताकि रहल छियौक । कतऽ चल गेल छलेँ ?''

बाबी नहि रहलि । अन्तिम समय देखियो नहि सकलिऐक । मुदा ओकर काजमे नहि पहुँचब तँ लोक की कहत ? जाय तँ पड़बे करत । ओही दिन गाम विदा भऽ जाइत छी ।

काज यथासाध्य बाबीक मर्यादाक अनुकूले होइत छैक । सौंसे गाम तीन दिन धरि कचरिकऽ खाइत अछि । खूब दान-दक्षिणा होइत छैक । कतहु अभाव नहि ।

मुदा काज खतम होइते देरी काका-बाबूजी दुनू चिन्तामे पड़ि जाइत छथि । महाजन नीक जमीनक लोभमे टाका दऽ देने छलनि । आब ओकरा रजिस्ट्री चाहिऐक । ओहो काज सम्पन्न भऽ जाइत छैक ।

हम गाममे निरर्थक बैसल रहैत छी– अकर्मण्य । दुनू साँझ खाइत छी, जलखै करैत छी आ बिछौनपर पड़ल-पड़ल किताबकेँ उनटबैत रहैत छी । पटना जयबाक साहस नहि होइत अछि । दीपकक डेरामे आब जगह नहि, दोसरो कोनो व्यवस्था नहि । कतऽ जायब ? कोना रहब ? साहस नहि होइत अछि ।

कौखन अपनापर बड़ लज्जा होइत अछि । रोजी मोन पड़ैत अछि । शराबी बाप आ अबोध बहिनक हेतु शरीर बेचिकऽ एकसरि ओहि शहरमे रहि लैत अछि, तीन गोटेक पेट भरि लैत अछि, बहिनकेँ पढ़ा लैत अछि आ बापक हेतु शराबो लऽ अबैत अछि । हम एतऽ बूढ़ बापक छातीपर बैसल मुफ्तक रोटी खा लैत छी । शरीर बेचि ककरो पालन कऽ लेब की एहिसँ अधम काज छैक ?

दिनमे कतेको बेर निश्चय करैत छी बिदा भऽ जयबाक । मुदा सभ दिन साँझ होइत-होइत ओ निश्चय बदलि जाइत अछि । सोचैत छी कल्हिसँ खेते-पथार देखब, सेहो संभव नहि होइत अछि । एकटा निश्चियहीन अकर्मण्यतामे दिन कटैत रहैत छी ।

गाम शान्त अछि । कोनो खास उथल-पुथल नहि । नियमित दिनचार्यमे बान्हल लोकसभक जीवन । ककरो कोनो व्यतिक्रम नहि । मुदा शान्त गाममे एक दिन सनसनी पसरि जाइत अछि– चारू कात एहि कोनसँ ओहि कोन एक्के टा चर्चा– 'घूरन मिसरक बियाह भऽ गेलै । बियाह-दुरागमन संग-संग ।'

हमरो भेँट होइत छथि । आकृतिपर प्रसन्नता अँटैने ने अँटि रहल छलनि। हम हँसी कयलियनि– ''की औ ! एहि बेर सभा धारि गेल ।''

ओ हाथ जोड़ैत बजलाह– ''सभ भगवानक आ अपनेलोकनिक कृपा । साक्षात् लक्ष्मी भेटि गेलि छथि ।''

हम मोने-मोन हँसैत छी । एहि वयसमे आ सभ तरहेँ निराश भऽ गेलाक बाद, अनायास जे उपलब्ध भऽ गेल छलथिन, से तँ लक्ष्मी-सरस्वती दुनू एक्के संग लगबे करथिन ।

मुदा घूरन मिसरकेँ लक्ष्मीक छाया आफद भऽ गेलनि । प्राते भेने भरि गाम हल्ला मचि गलैक । कोनो स्त्रीगण देखिते चीन्हि गेलैक आ भरि गाम हल्ला कऽ देलकैक । हल्ला ओहि पार रतनाक गाम धरि पहुँचि गेलैक ।

आ घूरन मिसरक जीवन आफतमे पड़ि गेलनि । कहियो चारिटा पाथर

आङनमे खसि पड़नि, कहियो काँट-कूस । मुदा सेहो खेपि गेलाह । सभ-किछु पूर्ववत शान्त भऽ गेलैक । लोक ओहि बातकेँ स्वीकृत विस्मृत कऽ देबऽ लगलैक ।

हमरा शुरूहेसँ ओहि घटनामे तेहन आश्चर्य नहि भेल छल । ई नहि होइतैक तँ एहने किछु अबस्से होइतैक, किछु एहूसँ बेसी अधलाह । मुदा एहि काण्डक पटाक्षेप बाँकी रहि गेल छल ।

हम पटना जयबाक निश्चय कऽ चुकल रही । मोनक भर्त्सना असह्य भऽ गेल छल । गाम छोड़ि देबाक अतिरिक्त कोनो बाट नहि सुझाइत छल । नहि जानि किएक एतेक अभाव भऽ गेल छल आत्मबलक जे निश्चयपूर्वक किछु सोचि सकी आ कऽ सकी ? एहि विश्वासक संग पटना बिदा भऽ सकी जे एकटा दीपकक घर नहि रहल तेँ की, हजार टा घर ताकि लेब । रमण आ आनन्द नहि काज देलक तेँ की, अपनेसँ गुजर करबाक जोगाड़ किछु कऽ लेब । किछु कऽ सकब जीबाक अनिवार्य शर्त थिकैक । ओकरा पूरा नहि कऽ अकर्मण्य भेल मृतक जकाँ कतेक दिन पड़ल रहब ?

मोटा-चोटा बन्हा गेल छल । मोटा-चोटा की, एकटा बैग आ शतरंजीमे लपेटल एकटा गेरुआ । काँख तर दबा अपनहुँ विदा भऽ सकैत छलहुँ । मुदा गाममे एखनो क्यो कहबैत छलहुँ हमरालोकनि । अपने कोना मोटा उठायब ? चरबाह संग जाय लेल तैयार अछि ।

माय-बाबूजी, कक्काकेँ गोड़ लागि जहिना बिदा होबऽ लगलहुँ, घूरन मिसर अपस्याँत दौड़ल अयलाह– ''कने चलू शंकर बाबू ! नहि तँ काण्ड भऽ जायत हमर आङनमे । रतन मुखिया काण्ड करऽपर तुलल छथि ।''

हम बात टारैत कहैत छियनि— ''हमर गाड़ी छूटि जायत । देखैत नहि छी, लखना मोटा लेने ठाढ़ अछि ।''

—''से हम नहि मानब ।'' घूरन मिसर घिघिआय लगलाह– ''कने हमरे आङनक बाटे चलू । गाड़ी नहि छूटत ।''

ओ किन्नहुँ नहि मानैत छथि । नचार लखनाकेँ मोटा लऽ स्टेशन दिस बिदा कऽ दैत छिऐ । घूरन मिसरक संग हुनक आङन दिस बिदा होइत छी । हुनक आङनक चारूकात खूब भीड़ बुझाइत अछि । खाली स्त्रीगण सभ, टाटसँ आङनमे हुलकैत । दू-चारि टा पुरुष दूर-दूरपर ठाढ़ तमाशा देखि रहल छथि । एक्केटा घर छनि घूरन मिसरकेँ, आ टाटसँ घेरल आङन । बीच आङनमे ठाढ़ रतना गरजि रहल छल– ''जे क्यो अछि एहि घरमे, बाहर निकलओ, हम देखऽ चाहैत छिऐक ।''

ओकर गर्जना चारू कात प्रतिध्वनित होइत छैक । मुदा घरसँ क्यो नहि बहराइत छैक ।

रतना फेर गरजैत अछि– ''हम आखिरी बेर कहैत छिऐक, जे क्यो अछि एहि आङनमे, बाहर निकलि आबओ नहि तँ हम घरमे पैसि जयबैक ।''

मुदा एहि बेर रतनाक गर्जना समाप्त होयबासँ पूर्वे एकटा युवती घरसँ बहराकऽ आङनमे आबि जाइत छैक आ झट अपन मुँहपरसँ आँचर हँटा कहैत छैक– 'ले, देखि ले आ चीन्हि ले । की देखऽ चाहैत छेँ, देखऽ चाहैत छेँ तोहर स्त्री छियौक, कि मिसरक ? ले, फेर देखि ले, आ बाज, छियौक तोहर स्त्री ? लऽ चलबेँ अपन घर ?''

ओहि स्वस्थ पिण्डश्याम स्त्रीक साहसपर आशंकित भऽ उठलहुँ । रतना कोनो काण्ड कऽ दैतैक आइ एहि आङनमे । सभक सामने बलात्कार कऽ दैतैक वा घिसियाकऽ आङनसँ बाहर लऽ जयतैक ।

मुदा से सभ किछु नहि भेलैक । रतना मूड़ी आ कन्हा झुकौने ठाढ़ रहल। जीवनमे पहिल बेर हम ओकरा लज्जित आ पराजित देखि रहल छलिऐक ।

कनियेँ काल बाद ओ घूरल । हमरा घूरन मिसरक संग ठाढ़ देखि हँसऽ लागल— ''तोहूँ आबि गेल छेँ ? अनेरे लोकसभ गप्प उड़ाकऽ माथ खराब कऽ देने छल । एहनो कतहु संभव छैक ? अनेरे एकरा सभकेँ तंग कयलिऐक । माफ करब घूरनजी !'' आ बिदा भऽ गेल जेना किछु भेले नहि होइ । ओ फेर अपन परिचित चालिसँ जा रहल छल— दुनू पंजापर बेराबेरी झुलैत आ माथपर लटकि आयल केशकेँ बेर-बेर ऊपर झटकैत ।

हम स्टेशन दिस बिदा भेलहुँ । हम बूझि गेलिऐक जे रतना एखन आर तरक्की करत । ओ आब आर बुझनुक भऽ गेल अछि । ओ एसेम्बलीक लेल अगिला चुनाव अबस्से जीति जायत ।

मुदा हम ? हम की करब ? एहिना गाम आ पटनाक बीच डोलैत रहब पेण्डुलम जकाँ । कहियो स्थिर नहि भऽ सकब । आनन्द, रमण, रतना सभ तँ आगू बढ़ल जा रहल अछि । हमहीँ ठाढ़ भेल तमाशा देखि रहल छी ।

एकाएक जेना सभ टा नस तड़तड़ा उठैत अछि, रक्तक वेग तेज भऽ जाइत अछि आ सौंसे देह उत्तेजनासँ काँपऽ लगैत अछि । हम लाइनपरसँ पाथर उठा-उठाकऽ बताह जकाँ बिजलीक खम्भापर मारऽ लगैत छी । मारने चल जाइत छी— अनधुन।

●

हमरा लग रहब ?

पहिल भाग

रूसल जाइत सुग्गी रानी

सभसँ पहिने मामी। एहि लेल नहि जे माय नहि छलैक, मामिए पोसि पालिकऽ पैघ कयलकै। एहि लेल जे अपन सम्पूर्ण जीवनमे स्नेहक छाहरि लेल घुरिकऽ तकलापर प्रणवकेँ एक्केटा नाम भेटैत छलैक। अइ लेल जे मोन पाड़बा लेल जे पहिल नाम ओकर दिमागमे अबैत छलैक, मामिएक छलैक। ओकर बितलाहा जिनगीकेँ कहुना, कतहुसँ शुरू कयल जाय, पहिल नाम हरदम मामिएक रहतैक। ओकर कथा मामे-गामसँ शुरू होइत छैक।

मामा-गाम माने विलासपुर गाम जकर पूब, उत्तर आ दक्षिणमे बागमतीक धार छलैक आ पश्चिममे छलैक रेलवे लाइन। रेलवे स्टेशन नहि, ओ तऽ छलैक धारक ओइ पार— एक मीलसँ कम्मेपर, दक्षिण दिस। धारक कछेरक टिल्हापरसँ स्टेशन तऽ नहि, मुदा सिगनल ओहिना देखाइत छलैक। सोझ ठाढ़ तऽ यात्रीक डेग असकतायल आ नीचाँ खसल तऽ खसैत-पड़ैत धार पारकऽ यैह ले, वैह ले...! सिगनल लग दौड़िकऽ पहिने पहुँचि गेल तऽ पौ बारह, आ गाड़ी पहिने सिगनल पार कऽ गेलैक तऽ इंजिन जकाँ धक-धक करैत करेजकेँ शान्त करबा लेल हताश यात्री गुमतिएपर बैसि जाइत छल— अगिला गाड़ी फेर साँझे! दिन भरिमे दुइये टा गाड़ी छलैक दरभंगा लेल— नौ बजे भोर कि पाँच बजे साँझ। गुमती लग झंडा लेने ठाढ़ बिहारी मण्डल लोटाक लोटा पानि पिआ जरैत कण्ठकेँ शान्त करैत छलैक।

मुदा प्रणवकेँ कोन मतलब छलैक ट्रेन वा दरभंगासँ! ओ तऽ गाड़ीपर

चढ़लो नहि छल ताधरि । ओ तऽ भोरे महीँस खोलि पछबारी बाधमे निकलि जाइत छल— मामा-मामी सुतले रहैत छलथिन, तखने ! पस्सरक बेर, झलफल इजोत आ भुतहा बाध । मुदा बाधसँ पहिने छलैक मुर्दघट्टी, गामक पछबरिया-दछिनबरिया कोनपर, एकदम बागमतीक धारसँ सटल । तकर उत्तरमे कच्ची सड़क आ सड़कक उत्तरसँ पसरल भुतहा बाध । मुर्दघट्टीमे दू टा पीपरक, एक टा बड़क झमटगर गाछ आ एक टा आमक विशाल सुखायल गाछ छलैक । जखन कखनो मुर्दा जराबऽ लोक मुर्दघट्टी अबैत छलैक, अही गाछसँ जारनि काटि लैत छलैक । अइ मुर्दघट्टी लग दने महीँस लेने सड़कपर जाइत प्रणव सभ दिन सिहरि जाइत छल । झट महीँसकेँ सड़कसँ उतारि बाधमे टपा लैत छल । मुदा सड़कक कातमे बाधसँ पहिने कल्लू चौधरीक बड़का गाछी छलनि— सुच्चा कलमी आमक । आ अइ गाछीमे मुनराकेँ भूत पटकि देने छलैक । लुकरासँ चुड़ैल चून-तमाकू मँगने छलैक । भुट्टाकेँ तऽ बान्ह तक खेहारने रहैक भूत, बान्हेपर बेहोश भऽ गेल छल । रौद उगलापर चरबहबासभ उठाकऽ गाम अनने छलैक आ घूरन मिसर झाड़-फूक कयने छलथिन।

मुदा मुर्दघट्टीमे तऽ अड्डे छलैक— भूत-चुड़ैलक । घूरन मिसर कहैत छलथिन सभकेँ जे अन्हरिया रातिमे पीपर आ बड़क गाछपर भूत-जिन आसन जमौने रहैत छैक आ नीचाँ श्मशानमे डाइन चुड़ैलसभ नँगटे नचैत छैक । पयरक उन्टा पंजा आ नकियाइत स्वर । घूरन मिसर तऽ महाष्टमीक राति सेहो श्मशान सधैत छलाह— डाइन-जोगिन वशमे छलनि, भूत डरे बाट छोड़ि दैत छलनि । हुनके डरे गामोक बेशी लोककेँ तंग नहि करैत छलैक भूत-प्रेत ।

मुदा प्रणवकेँ बड़ डर होइत छलैक । बेशी अन्हारमे महीँस नहि खोलैत छल । झलफल इजोत भेलापर महीँस खोलि पहिने सड़के-सड़क मुर्दघट्टी धरि आस्ते-आस्ते लबैत छल, आ मुर्दघट्टी लग अबिते महीँसकेँ जोरसँ दौड़ा दैत छलैक बाधमे । तैयो सभ टा रोइयाँ भुलकि जाइत छलैक, लगैत छलैक जेना क्यो पाछाँसँ खेहारने अबैत होइ !

मुदा बाधमे अबैत देरी निश्चिन्त भऽ जाइत छल । मुर्दघट्टीसँ सटल रहबाक कारणेँ भुतहा-बाध नाम पड़ि गेल छलैक, मुदा छलैक एकदम सुद्धा बाध— ने भूत-प्रेतक डर, ने चोर-डाकूक खतरा । एकसर रखबार खोपड़ी बना रातिमे रहि लैत छल । कहियो किछु ने अभरैत छलैक । जे किछु डर से मुर्दघट्टी आ कल्लू चौधरीक गाछीमे । प्रणव दुनूसँ पड़ायले रहैत छल ।

मुदा सभसँ बेशी डेराइत छल ओ स्कूलसँ । भूतोसँ बेशी रोइयाँ भुलकै

छलैक ओकरा नेंगरा गुरुजीक नामसँ । एकदम कसाइ छलैक गुरुजी । खजूरक मोटका छड़ीसँ सौंसे देह दागि दैत छलैक, ललबिट्ठुआसँ सौंसे देह चकता जकाँ उगि जाइत छलैक, बिसबिसाइत रहैत छलैक । देहमे ने गंजी, ने अंगा, उघार देह ! मैल-फाटल पैण्टकेँ सेहो समेटि कऽ पोनोपर चकता उगा दैत छलैक गुरुजी । आ ओ छनछनाइत देह लेने घरमे मामीसँ नुकायल फिरैत छल । मुदा मामी देखिए लैत छलैक—"आइ फेर कसैया मारलकौ तोरा, हरहरी बज्र खसतैक ओकरापर ! गरीबक आहि जरा देतैक निर्दैयाकेँ । कोना कसाइ जकाँ नेनाकेँ मारलक-ए हौ दैव !" मामी ओकरा करेजसँ सटा लैत छलैक । हाथ लगलासँ फूटल देह आर छनछना उठैत छलैक, मुदा मामीक आँखिक नोर आ देहक शीतलता सभ टा छनछनीकेँ लगले कम्म कऽ दैत छलैक ।

आ नाहक डँटा जाइत छलाह बेचारे मामा ! आँगनमे पयर दितहि मामी बमकि उठैत छलथिन—" अहाँ अइ कसैया गुरुजीकेँ किछु कहबैक से नहि होइए ? सभ दिन नेनाक देह फुला दैत अछि आ मौनी बाबा जकाँ अहाँ हमर बात सुनि गुम्म रहि जाइत छी । आइ नहि जायब अहाँ तऽ हमहीँ कहबै ओइ राक्षसकेँ । एक टा टांग टुटले छैक, दोसरो तोड़ि देबैक ।"

"एना नहि बाजी"—कोनो दिन मामाक बकार फुटैत छलनि—"गुरु देवताक रूप होइत छैक, पिता-समान होइत छैक । ओकरा लेल अपशब्द नहि बाजी । नेनाक नीके लेल मारने हेथिन ।"

मामी चिकरि उठैत छलीह—"ओइ कसैयाकेँ देवता कहैत छिऐक ? कथीलेल मारैत छैक, हम नहि बुझैत छिऐक ? शनीचरी नहि लऽ जाइत छैक, तकर तामस सबकक नामपर उतारैत छैक । आ सबक कोना याद करौ हमर नेना ? एक्को टा किताब छैक ? एक टा फुटलाहा सिलेट आ गाबिश लऽकऽ आइ पाँच बरखसँ स्कूल जाइ-ए । तैयो ककरोसँ कम्म अछि हमर नेना ? करथिन क्यो मोकाबिला बाबू-भैयाक नेना जिनका एक झोरा कौपी-किताब रहैत छनि ? अइ गुरुजीक कप्पार फोड़ि देबैक हम एक दिन खापरिसँ ।"

प्रणवकेँ कपार फोड़बाक बातपर हँसी लागि जाइत छलैक आ ओकरा हँसैत देखि मामियोक क्रोध बिला जाइत छलनि । ओहो हँसऽ लगैत छलथिन । मामा मौका देखि किम्हरो ससरि जाइत छलाह ।

मुदा मामी ओकरा नहि छोड़ैत छलैक । अपने हाथे खुआ-पिआ संग सुता लैत छलैक । देहमे सटौने सौंसे देहपर आस्ते-आस्ते हाथ फेरैत छलैक । बहुतरास

खिस्सासब कहैत छलैक, मनियरबा दैत्यवला खिस्सा, हक्कलि डाइनवला खिस्सा । मुदा प्रणवकेँ निम्न नहि होइत छलैक । ओ कहैत छलैक–"सुग्गी रानीक खिस्सा कहू मामी !"

आ मामी कहैत छलैक–

सुग्गी रानी सुग्गी रानी कतऽ जाइ छी ?
सायँ-पूत मारलक-ए रुसल जाइ छी ॥
हमरा लग रहब ?
रहब ने किएक ?
खाय की देब ?
सुक्खा रोटी ।
सूतय की देब....?
शीतलपाटी ।

सुग्गी रानी नहि रुकैत छलीह, सुक्खा रोटी खेनाइ आ शीतलपाटीपर सुतनाइ हुनका मंजूर नहि होइत छलनि । मुदा मामीक संग शीतलपाटीपर पड़ल प्रणव सुक्खो रोटी खाकऽ सुग्गी रानीक खिस्सा सुनैत सूति रहैत छल । निभेर सुतैत छल आ झलफल इजोतमे महीँस खोलि भुतहा बाधमे निकलि जाइत छल ।

बाधसँ घुरि पोखरिसँ नहा अबैत छल आ हाथमे सिलेट गाबिश लऽ मामीकेँ कहैत छलनि— स्कूल जाइ छी मामी !

मामी दौड़िकऽ बाहर अबैत छलथिन आ ओकर पैण्टक पाकिटमे कहिओ मकैक लाबा, तऽ कहियो तमहा चूड़ा, आ कहिओ-कहिओ मुरही दऽ दैत छलथिन आ ओ फँकैत स्कूल दिस दौड़ि जाइत छल ।

मुदा कोनो-कोनो दिन ओ दू बेर-तीन बेर चिचिआइत छल–"मामी, जाइ छी ।" मुदा मामी घरसँ नहि बहराइत छलथिन । ओ बुझि जाइत छल आ फेर चिचिआकऽ कहैत छलनि–"आइ हम जलखै नहि करब, भूख नहि अछि ।"

मुदा स्कूलसँ घुरलोपर मामी सामने नहि अबैत छलथिन । सामने पड़लोपर दोसर दिस चल जाइत छलथिन । मामा घरसँ निपत्ता । दूधक उठौनावला सभ पाइ नहि देलकनि कहिकऽ । तगेदामे बौआइत हैताह । आ, जा धरि मामा किछु लऽकऽ नहि घुरथिन, मामी ओकरासँ नहि बजतैक, ओकरा दिस नहि तकतैक ।

एक टा मौनी लऽकऽ प्रणव दौड़िकऽ चुन्नूक पुतऽहु लग चल जाइत छल– थोड़े मुरही दे चुन्नूक पुतऽहु !

चुन्नूक पुतऽहु मोलायम स्वरमे कहैत छलैक–"कोनो बेचा हउ बौआ ?"

–"नहि, आइ किछु नहि अछि । ओहिना दे । दोसर दिन दऽ देबौक । मामीकेँ नहि कहियहिक ।" –प्रणव कने अधिकारसँ कहैत छलैक । चुन्नूक पुतऽहु ओकरा मानैत छलैक । अपन छोटकी मौनीसँ दू-तीन मौनी मुरही दैत छलैक आ प्रणव भागिकऽ आँगन अबैत छल । मौनी मामीक आगू बढ़ा कहैत छलैक-'मामी !' तखन मामी घुरिकऽ तकैत छलैक ओकरा दिस । मुदा दुनू आँखि नोरसँ भरल ! भटभट खसऽ लगैत छलैक ओकरा अपने हाथे मुरही खुअबैत काल ।

मुदा गुरुजीकेँ कनियो दया-माया नहि होइत छलैक ओकरा डेंगबऽ काल ! शनि दिनकेँ सभ चटिया लाइनमे ठाढ़ होइत छलैक । एक टा चटिया आगू-आगू पढ़ैत छलैक आ सभ दोहरबैत चलैक—

गणेश जी महाराजा चढ़िये तुरंग
नौ सौ मोती झलके अंग
एक मोती हरि तालम ताला
गुरु पढ़ावे पण्डित बाला
पण्डित बाला देहु आशीष
जिओ लड़का लाख बरीस !

मुदा गुरुजी लाख वर्ष जीबाक आशीष देबाक बदला खजूरक मोटका छड़ी लऽ लाइनमे ठाढ़ चटियासभक मुँह देखैत नेंगरा टाँगकेँ इम्हरसँ उम्हर घिसियबैत छलैक । जिनकर शनिचरी कम्म रहलनि हुनका चट एक छड़ी–"ठीक से पढ़ो !" आ प्रणव लग आबि आँखि रँगि जाइत छलनि, कारी झरकल मुँह लाल भऽ जाइत छलनि– सभ शनिक वैह हाल ! ने एक्को टा पाइ, ने एक्को कनमा चाउर ! लाइनसँ घीचि लैत छलथिन बाहर आ चटपट छड़ी मारि देह फुला दैत छलथिन–"ठीक से लाइनमे खड़ा होना नहीं आता ?' उच्चारण एकदम भ्रष्ट ! कौपी किताब किधर है ?" असहाय मारि खाइत प्रणव आ डेरायल ठाढ़ बाँकी चटियासभ । मुदा दू गोटे खिलखिलाकऽ हँसैत छलैक प्रणवकेँ मारि लगलापर सभ दिन । जेना बड़ आनन्द आबि रहल होइ– खिल-खिल खिल-खिल ।

गुरुजीकेँ साहस नहि छलनि जे दुनूकेँ टोकथिन–"एना हँसैत किएक

छैँ ?" उघार देहपर अनवरत छड़ी बरिसैत छलैक– चटचट-चटचट आ दुनू छौंड़ी लगातार हँसैत छलैक– खिलखिल...खिलखिल...

ओ हँसी मालाक छलैक, शीलाक छलैक ! कल्लू चौधरीक बेटी– माला आ शीला ! पुरखा अइ स्कूलक घर आ मैदान लेल जमीन देने छलथिन । माँटिक ई भीत आ फूसक चार कल्लुए चौधरीक दिआओल छलनि । गुरुजी कल्लू चौधरीक संग हुनकर दुनू बेटियोकेँ सरकारे कहैत छलथिन । दुनूक सीट फराक लगैत छलैक- एक कात । घरसँ आसन अबैत छलैक । बस्ता लेने नौकर अबैत छलैक आ आसन बिछा जाइत छलैक । कतेको दिन गुरुजी अपनेसँ आसन बिछा अपन मैलका गमछासँ ओकर गर्दा झाड़ि दैत छलथिन । शनि दिनकेँ सेर भरि शनिचरी भेटि जाइत छलनि ।

गामक पूब धारक कछेरमे स्कूलक घर छलैक–राधाकृष्णक मन्दिरोसँ पूब । अइ मन्दिरक पश्चिममे महादेवक मन्दिर छलैक । दुनू मन्दिर कल्लुए चौधरीक पुरखाक बनाओल छलनि । तकर एबजमे मन्दिरक पुजेगरी आइयो हुनका सरकार कहैत छलनि । पुजेगरीकेँ भगवानक भोग लेल दान कयल जमीन छलैक आ मन्दिरक चारू कात फुलबारी, जाहिमे लताम अरड़नेबाक संग आम-लीची आ बेलक गाछ सेहो छलैक । भगवानक मन्दिरक भीतरी गेटपर कल्लू चौधरी आ हुनकर बापक फोटो सेहो टाँगल छलैक ।

आ गामक बीचोबीच कल्लू चौधरीक हवेली छलनि–दुमहला । पहिने तिनमहला छलनि । 1934क भूकम्पमे उपरका हिस्सा ढनमना गेलनि, दू-तीन टा जानो लेलकनि, मुदा बाँकी हिस्सा आइयो सुरक्षित छलनि । पलस्तर जहाँ-तहाँ झड़ि गेल छलैक, मुदा हवेलीक भव्यता अखनो बरकरार छलैक ।

हवेलीक आगूमे एक टा बड़की पोखरि आ पोखरिक भीड़पर चारूकात बसल लोकसभक घर । किछु खपरैल आ बाँकी सभ पक्का, कल्लू चौधरीक देयाद सभक । गामक बाँकी लोकसभ आन-आन टोलमे । उतरबारि टोल आ दछिनबारि टोल हिनकेसभक भगिनमानक आ पछबारि टोलमे किछु दियाद आ बेशी पुरना जमींदारीक लगुआ-भिड़ुआ लोकसभक परिवार, भनसिया-जिरतिया सभक । ओही टोलमे प्रणवक मामाक टाटक एक टा घर । घरमे एक टा कोठी, दू चारि टा

थारी-बाटी ! ओसारापर एक टा दुचुल्हिया भानसक लेल । बाड़ीमे एक टा लताम, एक टा अरड़नेबा, एक टा दाड़िम । आ एकटा बिज्जू आमक खूब झमटगर गाछ । ओही बाड़ीमे छाँह तर बान्हल महीँस आ करचीक टाटसँ घेरल आँगनमे एक टा तुलसीक गाछ, बीचमे आ टाटक कातेकात गेना आ बेलीक गाछ । टाटपर किछु लत्ती । आँगन ओसारा खूब चिक्कन, नीक जकाँ नीपल ।

अइ घर-घराड़ीक अलावा मुन्नर झाकेँ, प्रणवक मामकेँ, दस कट्ठा जमीन छलनि बाधमे, सेहो कल्लू चौधरीक बापेक देल । मुन्नर झाक बाप दरबारमे भनसिया छलथिन; सवा बीघा जमीन भेटल रहनि । हुनकर मुइलाक बाद पन्द्रह कट्ठा छीनि लेलथिन कल्लू चौधरी, आ आब बचलोहो दस कट्ठापर आँखि गड़ल छलनि ।

मुदा दुनू बहिनिक आँखि तऽ ओइसँ बेशी गड़ल छलैक प्रणवपर । स्कूलमे पाँच बरखसँ ओकरे क्लासमे छलैक दुनू, आ ओकर उपहास करबाक कोनो अवसर छोड़ऽ नहि चाहैत छलैक । खलिए देहे स्कूल आओत प्रणव, दुनू बहिन आँखि चिआरिकऽ देखतैक आ फेर खिलखिलाकऽ हँसतैक । आरो कैक टा छौंड़ा खाली देहे स्कूल अबैत छलैक मुदा कहाँ क्यो हँसैत छलैक ओकरापर ? मुदा माला-शीला तऽ ओकरा हीन भावसँ ग्रस्त कऽ देने छलैक । दुनूसँ पड़ायल फिरैत छल प्रणव, मुदा ओ दुनू अरबद्धि कऽ ओकर सभटा गतिविधिकेँ ठिकियौने रहैत छलैक । किताब लेल मारि लगौक– तऽ खिलखिल, शनीचरी ले' मारि लगौक–तऽ खिलखिल !

मुदा काज पड़लापर दुनू एकदम मोलायम बनि जाइत छलैक । स्कूलक हातामे जखन मोंछ तोड़बाक हेतैक, दुनू बहिन संगहि घेरि लेतैक–"थोड़े हमरो ले' तोड़ि दे...।" आ प्रणवकेँ सभ बिसरि जाइत छलैक आ कटहरक फुनगीपर चढ़िकऽ दुनू लेल मोंछ तोड़ि दैत छलैक, स्कूलक पछुआड़मे जे तेतरिक गाछ छलैक, ताहिपर चढ़ि तेतरि तोड़ि दैत छलैक । मुदा काज निकलैत देरी दुनू छौँड़ी ढंगे बदलि लैत छलैक ? एक बेर हाथमे तेतरि दैत काल बाँहि छुआ गेलैक मालाक । एकदम गोरि आ मोलायम गोल-गोल हाथ-पयरवाली छलैक माला— मक्खन सन चिक्कन ! बाँहि छुआइत देरी चटाक दऽ चाट मारि देलकै गालपर– सऽख ने देखू ! हमर देह छूता ! मखानक पातसँ मुँह पोछि आ पहिने ।"

तहियासँ डेरा गेल प्रणव । माला तऽ चण्ठ छलैके, शीलो कम्म नहि । ओना देखबामे दुब्बरि-पातरि छलैक शीला, रंगो कने बड़की बहिनसँ कम्मे आ हाथो-पयर ओहन गुलगुल नहि । पातर-छरहर हाथ-पैर, मुदा आँखि बड़ पैघ-पैघ, कोआ सन डगडग करैत । पातर ठोर आ कनेक उठल सन नाक ! बड़की बहिनक

केश छोट-छोट मुदा घुघरू सन, आ छोटकीक केश बेश घनगर आ पैघ ! लग अयलापर गमकौआ सुगन्धि लगलापर कतेको बेर प्रणवक इच्छा भेलैक जे पुछैक जे की लगबै छै केशमे ? मुदा फेर गालपर लागल चाट मोन पड़लैक आ डर भेलैक जे दोसर बचलोहो गालपर छोटकियो तेहने चाट लगा देतैक ।

राधाकृष्णक मन्दिरक पुबारि कात ठीक स्कूलक हाताक बाहर दक्षिणमे एक टा बड़का बड़क गाछ छलैक– एकदम चतरल । क्यो ऊपर चढ़िकऽ भीतर झोंझमे बैसि रहय तऽ पतो भेटनाइ मस्किल । बीचोबीच, ठीक जड़िक सोझमे एक टा दुकन्हा छलैक– छोट-छीन स्नानी चौकी जकाँ । जखन कखनो प्रणवक मोन उदास होइत छलैक आ एकसर सुतबाक मोन होइत छलैक, ओही दुकन्हापर सूति रहैत छल । ओहू दिन ओतहि जा पड़ि रहल । मुदा आन दिन जकाँ निन्न नहि भेलैक । आँखि मुनने पड़ल रहल । कतेक बेर कनबो कयलक । अपनो कोनो कारण नहि बुझयलैक । एक चाटमे कोन एहन दुनिया उनटि गेलैक ? गुरुजी तऽ सभ दिन खलड़ी ओदारबे करैत छलथिन ।

दस बरखक प्रणव लेल ओहि दिन मात्र एकान्तमे नुकाकऽ कानि लेबाक अतिरिक्त आर कोनो उपाय नहि छलैक । गुरुजीकें कहलापर एक चाटक संग पचीस-पचास छड़ी सेहो सहऽ पड़तैक । मामा सऽ कहलापर सेहो किछु नहि हेतैक । सभ टा सुनि मामा बौक बनल ठाढ़ रहथिन, कल्लू चौधरीक दरबज्जापर जा उपराग देबाक साहस नहि हेतनि– बचलो-खुचल दस कट्ठा उसराह जमीन जे देने छथिन सेहो छिना जयतनि, गाममे रहब मस्किल भऽ जयतनि । मामी सुनिकऽ छाती पिटथिन, चुप्पो ने रहथिन, कल्लू चौधरीक समस्त खानदानकें गारि-सरापसँ तर कऽ देथिन, मुदा अपने अंगनासँ ! अइसँ नीक तऽ यैह छलैक जे चाट खाकऽ चुपचाप बड़क गाछक दुकन्हापर सूतल रहय, मोनक तामस आ आगिकें मिझबैत रहय !

मुदा मामी भरि गाम घोल मचा देलथिन–"नहि जानि नेना कतऽ चल गेल ? अबस्से कसैया गुरुजी फेर डेंगौने हेतैक आ हमर नेना दुखसँ बताह भेल किम्हरो पड़ा गेल हैत ।" अपनो घरे-घर तकलथिन आ मामोकें चारू कात दौड़ौलथिन । धारो कात धरि अयलथिन मामा । हुनका गेलापर ओ चुपचाप गाछपरसँ उतरल आ अपन आँगनमे जा ठाढ़ भऽ गेल मामीक सोझाँ–"कहाँ गेल छलैं दिन भरि ?" मामीक चिन्ता तामसमे बदलि गेल छलनि । प्रणव चुप्प, घेँट झुकौने ठाढ़ ।

"आइयो मारलकौ नेंगरा ?" मामी लग आबि गेलैक ।

प्रणव जोरसँ मूड़ी झँटलक । मामीक स्वर आर तमसा गेलनि– ''तखन कहाँ छलैं दिन भरि भूखल-पिआसल ? अन्देशासँ अखनो कोंढ़ धड़धड़ा रहल अछि ।''

प्रणव बौक ठाढ़ रहल । आब मामीकें बेसी चिन्ता भेलनि । एकदम सटि हाथसँ देह छुबैत पुछलथिन– मोन खराब छौ ?

"नै" अइ बेर प्रणवक बोल फुटलैक– "एक टा संगीक संग धारक ओहि पार चल गेल रही, ओ अपन घर बजौने छल । ओतहि खा लेलिऐ आइ ।" नहि जानि किएक झूठ बाजि गेल ओ ? मुदा मामीकें जेना विश्वास नहि भेलनि । जिरह करैत पुछलथिन–"खयने-पीने छैं तऽ एना मुँह किएक सुखायल छौ ?"

प्रणव जबर्दस्ती हँसल–"दिने खेलिऐ से की पेटमे धयले अछि ? साँझ भेलै । किछु दिअऽ ने खाय ले' !''

ओकरा हँसैत देखि मामीक चिन्ता जेना दूर भऽ गेलैक । जलखै देलकै आ भानस-भातमे लागि गेलैक । मुदा प्रणवक मोन ओहि दिन कथूमे नहि लगलैक । गरमी मास छलैक । अँगनेमे पटिया बिछा इजोरियामे पड़ि रहल । हवो सिहकैत रहैक । तैयो प्रणव कछमछाइत रहल । ओकरा बेर-बेर मोन पड़ैत रहलैक अपन देहपर बजरैत छड़ी आ आर्त्तनादक स्वरकें दबा पसरैत खिल-खिल हँसी । आ तकर बाद गालपर एक टा समधानल चाट आ चाटक संग आगि सन बोल–"सऽख ने देखू, हमर देह छूता, पहिने मखानक पातसँ मुँह पोछि आ !"

ओना प्रणवक मुँह एकदम पोछल-पाछल आ चिक्कन छलैक । भुभुक्का गोराइ आ नमगर देह । मुँह-कान खूब निखरल । मामी कहैत छलथिन– रंगल-ढौरल, लिखल-पढ़ल मुँह । टेमीसँ लिखल ।

ओना मुन्नर झाक मुँह सेहो रंगले-ढौरल छलनि– एकदम पकिया रंगसँ । कारी आ चाकर मुँह । नाक सेहो चतरल । गस्सल बाँहि आ चौड़ा छातीमे सौँसे केश, एकदम कण्ठ धरि आ पीठपर सेहो दुनू कात । कान आ हाथ-पैरक आंगुरपर सेहो पैघ-पैघ केश । मुदा माथक केश अधिक काल अस्तुरासँ मुड़बा लैत छलाह । कारी-कारी झमटगर केश छलनि, गर्मी माससे सौंसे माथोमे घम्हौरी भऽ जाइत छलनि, देहक कथे कोन ? देहक उपाय नहि छलनि, मुदा माथ छिलबा लैत छलाह ।

मुन्नर झाक बहिन, प्रणवक मायो एकदम गोर भुभुक्का छलैक । देखबामे सेहो तेहने सुन्दरि । पन्द्रह वर्ष छोट छलैक मुन्नर झासँ, मुदा बिआह पहिने ओकरे भेलैक; चौदहम बरखमे । धनिक घर आ सुन्नर वर । जमींदारक खनदान छलैक, कल्लू चौधरीक कोनो नोत-पतापर आयल छलथिन प्रणवक बाप । मुन्नर झाक बहिनकेँ देखलथिन आ अपन जेठ भाइ लग जिद धऽ लेलथिन । कल्लू चौधरीक भनसियाक बेटी, मुन्नर झाक बहिन चम्पा एक टा बड़का घरमे पुतऽहु बनि गेलीह– कल्लू चौधरीसँ पैघ जमींदारक घर ।

मुदा भोग नहि भेलनि । छबे मासक बाद बिधवा भऽ गेलीह । कनिये ज्वर भेलनि आ वैह काल भऽ गेलनि । उपचार-इलाज, झाड़-फूक किछुओ नहि सुनलकनि आ चम्पा पाँच मासक पेट लेने सीथ पोछि नैहर घुरि अयलीह । घुरि नहि अयलीह, जबरदस्ती निकालि देल गेलीह । भैंसूरकेँ मौका भेटि गेलनि– अलच्छ डाइन कहि नैहर बिदा कऽ देलथिन ।

बूढ़ बापकेँ ई दुख बर्दास्त नहि भेलनि आ ओहो दुइए मासमे अइ लोकसँ विदा भऽ गेलाह । तकर तेसरे मास प्रणवक जन्म भेलैक । मुन्नर झा दौड़ल कुसुमपुर गेलाह–चम्पाक सासुर । दरबज्जोपर नहि चढ़ऽ देलथिन श्रीमन्त चौधरी, चम्पाक भैंसुर–"साहस कोना भेल गाममे पयर देबाक अहाँक ? नहि जानि ककर पापकेँ हमर कुलक नाम देबाक लोभमे दौड़ल आयल छी ! दू मास पहिने नेना भेल आ आइ खबरि देबऽ आयल छी । आ विवाहक आठमे मास नेना भेल कोना ? अही पापकेँ लादऽ लेल तऽ हमर मदनकेँ फँसौने छलियनि अहाँसभ । प्राणसँ प्रिय छलाह हमरा, जिद मानि लेलियनि । मुदा हुनके संग ओ खिस्सा खतम । फेर नाम लेब अइ कुलक कहियो तऽ जीह काटि लेब ।"

अपमानित आ हताश मुन्नर झा घुरिकऽ अपन गाम अयलाह । ककरो किछु नहि कहलथिन, चम्पोकेँ नहि । मुदा चम्पा सभ बूझि गेलैक । सौरीसँ बहार नहि भेलैक, छठिहारो नहि देखलकै नेनाक ।

मुन्नर झाक काकी पोसलथिन बिन मायक नेनाकेँ पाँच वर्ष । मुन्नर झा सभ साल सभा दौड़लाह, मुदा कोनो कन्यागत ध्यान नहि देलकनि । पाँच वर्ष बाद चम्पाक सभ गहना बेचि दू हजार गनलनि आ पन्द्रह वर्षक मीनाकेँ विआह-द्विरागमनक बाद अँगना अनलनि । पैंतीस वर्षक मुन्नर झाक पन्द्रह वर्षक कनियाँ मीना । कमलपुरवाली कनियाँ– मीना । जे देखलकै अकचका कऽ रहि गेल । कारी-भुजुंग, भृट्ट आ चाकर मुन्नर झाक आँगनमे एहन सोन सन कनियाँ । सोन सन रंग आ चान

सन मुँह । मुदा हाथ-पयर फूल सन होइतो ओहन कोमल नहि छलैक, एकदम सक्कत आ कर्मठ छलैक । अबैत देरी सभ टा सम्हारि लेलकै– उजड़ल घर-गृहस्थी आ बिन मायक प्रणव । गहना बेचलासँ बाँचल किछु टाका छलनि, जकरा मुन्नर झा हरदम डाँड़मे खोसने रहैत छलाह । टाका देखा नबकनियाँक मनौन करैत छलाह–साड़ी आ गहनाक प्रलोभन दैत छलथिन । सभ टा टाका लऽ लेलकनि मीना आ कीनि देलकनि एकटा लगहरि महीँस । मुन्नर झाकेँ चारि कैंचा कमैबाक ब्योंत भेलनि तऽ आँखि खुजलनि । खूब मेहनति करऽ लगलाह– बाड़ी-झाड़ी आ दस कट्ठा खेतमे आ महीँसक पोसमे ।

आ मीना ओइ उजड़ल-बिलटल आँगनकेँ फेरसँ चमका लेलनि । पोछि-पाछि नीपि-नापि ओइ टाटक घरकेँ चमकौलनि आ हरदम पोटा बहबैत माटि-कादोमे ओंघराइत प्रणवकेँ सेहो तेल-कूड़ दऽ अपन ममता-भरल हाथसँ चमका देलथिन ।

प्रणव तऽ मामी लेल जान देबऽ लागल । हरदम ओकरे लग सटल रहय । मुन्नर झा खौंझाइतो छलथिन । मुदा मीना हरदम सटौने रहैत छलैक अपना संग । मुन्नर झाक खौंझी बढ़ऽ लगलनि आ प्रणव छौ बरखक भऽ गेल, तऽ एक दिन स्कूल पठा देलकै ओकरा । गामक अपर प्राइमरी स्कूल, जकरा गामक छौंड़ासभ नेंगरा गुरुजीवला स्कूल कहैत छलैक । नेंगरा गुरुजीक ललबिठुआ आ छड़ी नामी छलनि । जकरा एक ललबिठुआ दैत छलखिन, सात दिन तक ओतुक्का माँउस आ चमड़ी लहरैत रहैत छलैक आ खजूरक छड़ी हरदम हाथेमे रहैत छलनि । मारि सटकीसँ देह फुला दैत छलथिन ।

मीनाकेँ पहिने किछु नहि बूझल छलैक । जहिया पहिल दिन कनैत घर अयलैक प्रणव, तहिए बुझलकै ओ । बिशनपुरवाली काकी आ भोजपरौलवाली दियादनी कहलकै ओकरा जे केहन कसाइ छैक नेंगरा गुरुजी ! एक बेर एक टा छौंड़ाक मुँहमे कण्ठ तक छड़ी घुसिया देने रहैक आ एक बेर गलफरमे आंगुर दऽ चीरि देने रहैक । मीना सुनिकऽ डरे बेहाल भऽ गेल । प्रणवकेँ स्कूल पठौनाइ बन्न कऽ देलकै । मुदा मुन्नर झा बिगड़ि गेलथिन– ''एना तऽ छौंड़ा अबण्ड भऽ जायत । चारि आखर पढ़ऽ दिऔ, नै तऽ हमरे जकाँ महीँस चरबैत रहि जायत इहो ।"

बात मीनाकेँ लागि गेलैक । महीँस चरा घरे-घर दूध बेचैत छलथिन मुन्नर झा से ओकरो पसिन्न नहि छलैक । मुदा ओ अपने महीँस कीनि देने रहनि, बाट सुझौने रहनि । बाप कल्लू चौधरीक भनसिया छलथिन । भरि गाम भोज-भातमे मोनक मोन अन्न रान्हि दैत छलथिन । आइयो-काल्हि मुन्नर झा पकड़ा जाइत

छलाह। तीमन-तरकारीक लूरि तेहन नहि छलनि, मुदा भात तऽ पसा लैत छलाह, कठमस्त देह छलनि। मुदा से सभ मीनाकें नीक नहि लगैत छलैक। प्रणव स्कूल जयतैक, अबस्से पढ़तैक, एहन सोन सन छौंड़ा भनसिया नहि बनतैक, महींस नहि चरौतैक... किन्हु नहि...

आ प्रणव स्कूल जाइत रहल, मामीक स्नेहक छाहरितर बढ़ैत रहल। क्यो पुछैक– "बिआह करबैं प्रणव ?"

झट कहैक–'हँ'।

–"ककरासँ ?"

"मामीसँ।" प्रणव सभ बेर एक्के जवाब दैत छलैक। सुनिकऽ मीना हँसऽ लगैत छलैक आ फेर हँसैत-हँसैत गम्भीर भऽ दुनू हाथे ओकर मुँह धऽ कहैत छलैक–"अबस्स करब अहाँ संग बिआह। एहन राजकुमार सन बर हमरा कतऽ भेटत ?" आ फेर हँसिकऽ कहैत छलैक "कने जल्दी-जल्दी पैघ होउ नहि तऽ बूढ़ भऽ जायब हम। तखन बुढ़िया कनियाँसँ बिआह करऽ पड़त।"

आ सत्ते जल्दी-जल्दी बढ़ि गेल प्रणव। दस वर्षक होइत-होइत, पँचमा क्लासमे पहुँचैत-पहुँचैत एकदम सचेष्ट भऽ गेल ओ। तखन मामी पुछैक–"हमरा संग बिआह करब ? आब तऽ मोछो पम्ह देने जाइऐ !"

"धत्" प्रणव एकदम लजाकऽ कहैक–"मामीक संग कतौ बिआह भेलै–ए !"

''देखू, आब अपन बात बदलि रहल छी अहाँ ? बुढ़िया कनियाँ मुदा पिण्ड नहि छोड़त।''

आ प्रणव हँसऽ लागय आ हँसैत देखय जे अइ पाँच बरखमे मामीक रंग जेना आर चमकि गेल होइ, देह आर गमकि गेल होइ ! ओइ आंगनवाली नानी हरदम कहैक प्रणवकें–"तोहर माय एहने छलौक, अनमन तोरे मामी सन, एहने सुन्नर आ एहने बुझनुक।" प्रणव मामीक चेहरामे मायकें तकैत बाजय–"माय-बेटाक कतौ बिआह भेलै–ए ? अहाँ मामी थोड़े छी हमर– अहाँ तऽ माय छी...

आ मीना करेजसँ सटा लैक ओकरा। ओइ स्पर्शक नरमी आ ओइ देहक सुगन्धिमे डूबल प्रणव ठाढ़ रहि जाय। जोरसँ धड़धड़ाइत मामीक छातीक स्वर ओकर कानमे बजैक, मुदा कोनो अर्थ नहि लगैक।

मुन्नर झा देखि लेथिन तऽ डँटबो करथिन कतेक बेर–"किएक एना दूरि कऽ रहल छिऐ एकरा ? कोनो बच्चा अछि आब जे एना कोरामे लेने रहैत छियैक !"

मीना हँसिकऽ टारि दैक।

मुदा माला तऽ अतत्तह कऽ देलकै ओइ दिन। कने हाथ छुआ गेलैक तऽ समधानिकऽ चाट लगा देलकै–"सौऽख ने देखू ! हमर देह छूता ? मखानक पातसँ मुँह पोछि आ पहिने।"

आ प्रणव दिन भरि दुकन्हापर सूतल रहि गेल। रातियोकें आंगनमे पटियापर पड़ल-पड़ल मालाक चाट आ ओकर बात ओकरा अशान्त कयने रहलैक। नेंगरा गुरुजी कतेको बेर बेंतसँ देह फुला देने छलैक, ललबिठुआसँ सौंसे देह लहरा देने छलैक, मुदा मालाक चाट आ बातक लहरि ओहिसँ बढ़िकऽ छलैक। किएक मारलक एना हमरा ? मामीक देहसँ चिक्कन देह छैक ओकर ? बेशी सुन्नर अछि मामीसँ ? आ हमर हाथ कोनो कारी खोरनाठ अछि जे दाग लागि जेतैक ? बड़का लोकक बेटी अछि तऽ अपना घर। कोनो हम खुशामद करऽ गेल छलिऐक ? अपने मोंछक झक्का आ तेतरिक चटनी लेल जान देत, हाथ-पैर जोड़त आ काज निकललापर एहन ऐंठी ? आब हमहूँ मजा चिखा देबनि दुनू बहिनकें। लाख मनौन करतीह, नहि देबनि तोड़िकऽ, नहि चढ़बनि गाछपर। बजबो नै करबैक दुनूसँ। दुनू ऐंठिलाहि अछि। जेहने पढ़ऽमे भुसकौल, तेहने लूरिमे। गोबरक चोत अछि दूनू। हमरा कथीक खुशामद ? देखा देबनि आब ! नेंगरा गुरुजीक बलें खिलखिलाइत छथि– खिलखिलाइत रहथु। परवाहि ककरा छैक ? जे दुनूसँ बाजय से गीदड़क नेंड़ी खाय...

सत्ते, नहि बजलैक दुनू बहिनसँ पाँच वर्ष। अपर प्राइमरीसँ हाइ स्कूलमे आबि गेल, दसमा पास कऽ मैट्रिकक तैयारीमे लागि गेल, मुदा अपन सप्पंत मोन रहलैक प्रणवकें। माला तऽ तीने वर्षक बाद स्कूल छोड़ि देलकैक। नवेंमे छलैक कि बिआह भऽ गेलैक। वर एकदम बुढ़ाँठ छलैक— चालीस-पैंतालीस वर्षक, माथक आधा केश पाकल। कारी रंग आ एक टा दाँत ऊँच। कोनो बड़का जातिवाला छलैक– महादेव झा पाँजि– बादमे ओ बुझलकै। जाति लेल ओइ दरिद्र आ कुरूप वरकें उठा अनने छलथिन। कतबो क्यो मना कयलकनि, नहि मानलथिन–"पुरुषक कतहु रूप देखल गेलैक अछि ! आ सम्पत्ति हम दऽ देबैक, सय-पचास बीघाक कोन गणना छैक ? मुदा केहन वरकें अनलहुँ अछि से ने देखू ! महादेव झा पाँजि...।"

मुदा प्रणवकें ओहि वरकें देखि हँसी लागि गेलैक। जोरसँ हँसल। इच्छा भेलैक जे ओतबे जोरसँ खिलखिला कऽ हँसय जतेक जोरसँ ओकर देहपर बेंत लगलापर माला हँसैत छलैक। मुदा ओकर हँसी बिला गेलैक। मोन पड़लैक जे बेँत लागल देह कोना ओहि खिलखिल हँसीसँ लहरि उठैत छलैक ! भेलैक जे आइ माला ओहिना छटपटा रहल हेतैक। एहन वरकें देखि ओकर मोन आ देह अहिना छटपटा रहल हेतैक। ओकरा मोन भेलैक जे आइ अप्पन सप्पत तोड़ि दिअय आ मालासँ पुछैक– "तोरो दर्द होइत छौक ?"

मुदा माला हवेलीक भीतर कनियाँ बनलि बैसलि छलैक। दरबज्जापर बरियातीक संग दँतउच्चू बुढ़ाँठ वर बैसल छलैक। आ बेहाल अपस्याँत कल्लू चौधरी छलाह। ओकर साहस नहि भेलैक जे भीतर जा कने मालाकें देखैक। कतेक दिन धरि उदास रहि गेल प्रणव।

मुदा विवाहक किछु दिनुका बाद मालाकें देखलकै तऽ अवाक् रहि गेल। विवाहक बाद स्कूल गेनाइ छोड़ि देने छलैक माला। ओइ दिन मन्दिर लग देखलकै प्रणव तँ अपनापर तामस भेलैक। अही माला लेल उदास छल ओ ! ओ तऽ जेना खुशीसँ आर गुदगरि भऽ गेल छलैक। रङल ठोर आ मुँह-कान आ सौंसे देह गहना। जड़ीदार साड़ीमे खुशीसँ चमकैत आकृति। आँखिमे वैह दुष्टताभरल हँसी आ ओइ हँसीमे मिलि गेल एक टा आमंत्रण। प्रणवकें अपन भावुकतापर क्रोधक संग-संग लाजो भेलैक।

आ बिआहक बाद लाज-धाखकें एकदम ताखपर राखि देलकैक माला। बाट-घाट भेँट भेलापर तेना मुसकिया उठैत, ततेक आक्रामक मुद्रामे झपटैक जे प्रणवकें पहिनेसँ बेशी डर भऽ जाइक ? गाममे अधिक काल बौआइते रहैत छलैक माला आ ओकर छाँहसँ छीह कटैत रहैत छल प्रणव। नहि जानि कतेक डर पैसि गेलैक ओकर मोनमे ?

मुदा शीला स्कूल जाइत रहलैक। कहुना पास करैत मैट्रिक धरि पहुँचि गेलैक। बीचमे माला एक बेर द्विरागमनमे नाम लेल सासुर गेलैक आ नवे दिनमे घुरिकऽ जे अयलैक से फेर सासुर जयबाक नाम नहि लेलकै। बहुत रास खिस्सा पसरि गेलैक ओकर बारेमे ! प्रणवोक दोस्त-महिम, सभ टा गामेक छौंड़ासभ, छौंड़े नहि, जुअनको-बुढ़बोसभ अइ खिस्सामे रस लेबऽ लगलैक। खिस्सा नमरैत गेलैक।

मुदा शीला दोसरे रंगक बहरैलैक। प्रणवसँ वर्ष-दूवर्ष छोटे छलैक ओ। माला ओकरे बतारी रहैक। मुदा देहसँ दुब्बरि-पातरि भैयोकऽ शीला अपन बयससँ

पैघ लगैक। एकदम गम्भीर आ शान्त। पिण्डश्याम मुदा चमकैत रंग। पातर लाल ठोर, कनेक उठल सन छोट नाक। पैघ-पैघ डबडब करैत आँखि। हँसैक तऽ एकदम छोट नेना सन भऽ जाइक आकृति, मुदा अधिक काल ठोरसँ ठोर सटल। शलवार-फ्राकक बदलामे हाइ स्कूल अबैत देरी साड़ी पहिरऽ लागल रहैक, से आर पैघ लगैक।

प्रणवकें ओहिसँ बेसी नीक तऽ वैह शीला लगैत छलैक जे ओकर पीठपर बेंत लगलासँ खिलखिला कऽ हँसैत छलैक। ओहि शीलासँ ओतेक डर नहि होइत छलैक ओकरा। मुदा अइ शान्त गुमसुम शीलासँ ओकरा बड़ डर होइत छलैक। क्लासमे ओकरा दिस तकबाक साहसे नहि होइ छलैक।

ओना कखनो काल धोखा-धोखीसँ यदि ओम्हर दृष्टि चलि जाइक तऽ कैक बेर लगैक जेना ओ ओकरे देखि रहल छलैक आ ओकर सटल ठोरपर कने मुस्की छलैक। मुदा फेर गऽरसँ देखलापर लगैक जेना ओकर भ्रम छलैक, ओ तऽ ओहिना गम्भीर आ शान्त छलैक आ ठोरपर ठोर साटल छलैक !

ओना प्रणवकें देखिकऽ हँसबाक आब कोनो कारण नहि छलैक। मोटे कपड़ाक मुदा देह झँपबा जोगर पाजामा-कुरता देहपर रहैत छलैक हरदम। कपड़ा उघारिकऽ बेंतसँ देह फुलबऽवला नेंगरा गुरुजी नहि छलैक आब ! क्लास टीचर मिर्जा साहेब आ हेडमास्टर साहेब दुनू बड़ मानैत छलैक ओकरा। स्कालरशिप भेटैत छलैक, फीस माफ छलैक। क्लासमे फर्स्ट करैत छल, मुनीटर छल। सभपर धाख छलैक ओकर। मुदा कम्मे वयसमे शीलाक जे धाख ओकर मोनपर जमलैक से आइयो छलैक। भरिसक से नहि छलैक। ओकर अहंकारे ओकरा रोकैत छलैक। दुनू बहिनसँ नहि बजबाक जे सप्पत खयने छल से ओकरा बिसरल नहि छलैक। गीदड़क नेंड़ी खयबाक सप्पत खयने छल ओ।

मुदा सप्पत तोड़ि देलकै शीला एक दिन। मैट्रिकक टेस्ट परीक्षा होमऽवला छलैक। स्कूलसँ घुरैत काल शीला टोकि देलकै ओकरा–"कने अपन अंग्रेजीक कौपी दियऽ तऽ !''

प्रणवकें विश्वास नहि भेलैक जे ओकरे टोकने छलैक ! मुदा लगपास आर क्यो नहि छलैक। तैयो पुछलकै–'हमरा कहैत छी ?' शीला हँसलैक–"आर दोसर के ठाढ़ अछि एतऽ ?"

प्रणवकें ओ हँसी आ हँसैत शीला नीक लगलैक। मुदा दोबारा सोझ देखबाक साहस नहि भेलैक। कौपी दऽ देलकै।

किछु दिनक बाद हिन्दीक, फेर विज्ञानक कौपी मँगलकै शीला । गप्प-सप्प होबऽ लगलैक कखनो काल, दू-चारि दिनपर । मुदा प्रणवकें सभ दिन प्रतीक्षा रहऽ लगलैक जे आइ फेर टोकतैक । कौपीसभ सजाकऽ लिखऽ लागल जे फेर मँगतैक ।

एक बेर एक सप्ताह धरि नहि किछु मँगलकै शीला । प्रणवकें कोनादन लागऽ लगलैक । ओइ दिन स्कूलसँ घुरैत काल वैह माँगि बैसलैक–"कने रैपिड रीडिंगवला किताब देब 'दी गुड एण्ड दी ग्रेट' हमरा नहि अछि ।"

शीला किताब नहि अनने छलैक । ओकरा गामेपर बजौलकै साँझमे । प्रणवकें नहि जानि किएक खुशी भेलैक । गामपर अपन कौपी-किताब राखि साँझ होइते दौड़ल कल्लू चौधरीक घर दिस । शीला दरबज्जेपर ठाढ़ि छलैक किताब लेने । मुदा प्रणवक हाथमे किताब देबा लेल हाथ उठले छलैक कि आंगनसँ बहराइत कल्लू चौधरी टोकलथिन– के अछि ?

"हम छी प्रणव, मुन्नर झाक भागिन ।" सकपकाइत बाजल ओ आ शीला डरे सिकुड़िकऽ ठाढ़ि भऽ गेलैक ।

"एना अन्हारमे किएक आयल छें, कोन काज छौ ?" कल्लू चौधरीक स्वर रुच्छ छलनि । प्रणव आरो सकपकाइत बाजल–"किताब लेबऽ आयल रही, शीला बजौने छलि !"

"चुप्प निर्लज्ज ! बजैत लाज नहि होइत छौ ! आ तों की ठाढ़ छैं एतऽ, भाग अँगना ।" कल्लू चौधरी गरजलाह । शीला अँगना पड़ा गेलैक । प्रणव काठ भेल ठाढ़ रहल । अपमान आ भयसँ मुँह स्याह भऽ गेलैक आ डेग लोथ ।

"एना गाछ जकाँ ठाढ़ किऐ छें ? भाग जल्दी । आ खबरदार जे फेर दरबज्जापर पयर देलैं, हाथ-पयर तोड़बा देबौ ।" कल्लू चौधरी फेर गरजलाह ।

प्रणव भारी डेग उठबैत बिदा भेल । किम्हरो क्यो नहि छलैक, नहि तऽ लाजे आरो मरि गेल रहैत । पूब मुँहक दरबज्जासँ हँटिकऽ हवेलीक पछुआर दने अपन पछबारि टोल दिस बिदा भेल । मुदा बाड़ीक पछिला गेटपर क्यो टोकलकै–"किताबे बदला-बदलीमे डाँट सुनि गेलैं च च्च च...!"

अन्हारोमे मालाक स्वर चिन्हलकै प्रणव । बाड़ीक दरबज्जाक चौखटिपर डाँड़पर दुनू हाथ रखने ठाढ़ि छलैक । ओकरा डेग आगू बढ़बैत देखि फेर टोकलकै– "अहू घरसँ अजीब सम्बन्ध छौक तोहर ! कने देह छूलापर हम चाट मारि देने रहियैक आ आइ कने किताब मँगलापर बाबूजी दरबज्जेसँ खेहारि देलथुन ।"

प्रणव तैयो कोनो उत्तर नहि देलकै । आगू बढ़ऽ चाहलक तऽ माला आर लग सहटि अयलैक–"मुदा आइ चाट नहि मारबौक हम । छू ले ! छू कऽ देख ने ! हल्लो ने करबौक । ककरो ने कहबैक । आ ने...!"

प्रणवकें लगलैक जेना हाथ पकड़ि खीचि लेतैक माला । कल्लू चौधरीक डाँट सुनि जे डेग लोथ भऽ गेल छलैक, फेरसँ जोर मारलकै ! पड़ायल-पड़ायल अपन अँगनेमे आबिकऽ ठाढ़ भेल !

दौड़ल हकमैत अबैत देखि मामी टोकलकै–"की भेल बाउ ? एना पड़ायल किएक अयलौं ?"

प्रणव कोनो जवाब नहि देलकै । की जवाब दितैक ? चुप्पे रहल ।

मुदा गामक लोक चुप्प नहि रहलैक । सभ टोलमे फुसफुस, फुसफुस । फेर घोल मचि गेलैक– माला पड़ा गेलैक । तीन दिन भऽ गेलैक ! झाँप-तोप कयने छैक, तक्का-हेरी भऽ रहल छैक ।

रूदल चौधरी तऽ दलानमे सभक सामने पूछि बैसलथिन–"किदन सभ सुनैत छी भाइ ? मालाक कोनो पता लागल ?"

कल्लू चौधरीक मुँह लाल भऽ गेलनि तामसे । दियादी काटक लेल रूदलकें यैह अवसर भेटलनि । बेटी-पुतऽहुक इज्जति झँपबाक चीज थिकैक, ओकर एना बजारमे इश्तहार नहि बाँटल जाइत छैक । पुछबेक छलनि तऽ एकसरमे पूछि लितथि । कोनो आन तऽ नहि छथि रूदल, अपने पितिऔत थिकाह । बेटी सन छनि माला...

मुदा मालाक नाम मोन पड़ैत देरी तामसक स्थान लाज आ ग्लानि लऽ लेलकनि । एहन बेटीक बाप भेलासँ आइ सभक सोझाँ गरदनि झुकि गेलनि । जनमिते मरि गेलि रहितनि तैयो एहन क्लेश नहि होइतनि । बेटाक अभावमे कहिओ मुँह मलिन नहि भेलनि । माला आ शीलेकें सभ दिन बेटा जकाँ रखलथिन । सासुरो नहि जाय पड़ैक तें दरिद्र आ कुलीन जमाय तकलनि जे गामेमे जथा आ बासक जमीन दऽ बसा देथिन । मुदा माला तऽ सभटाकें अजाड़ि, सभपर करिखा पोति निपत्ता भऽ गेलि छलनि ।

सोमना अहिल्या स्थानक मेलामे बदरीक संग देखने छलैक । मुदा बदरिया दोसरे दिन मेलासँ घुरि आयल । कतबो डेरा-धमकाकऽ क्यो पुछलकै, किछु नहि गछलकै । नम्बरी पाजी आ लम्पट अछि बदरिया ! ओकर थाह भेटब मस्किल ।

मुदा पुलकितकेँ थाह लागि गेल छलनि–"सभ टा बूझि गेलियऽ हौ भाइ ! ई बदरिया भारी हीरो अछि । छौँड़ीकेँ फुसलाकऽ मेला लऽ गेलैक आ फेर ककरो हाथ बेचि अपने घुरि आयल ।"

बेसी लोककेँ ई बात संगत बुझयलैक । मुदा बदरिया चुप्प बैसऽवला लोक नहि छल । ओहो अपना दिससँ प्रचार शुरू करबौलक–"हम किएक बेचबै ककरो ? कोनो कमी देने छथि भगवान ! ओकर कोनो हमहीं टा छलिऐक ? एक छौँड़ीक सात लगवार ! नहि जानि ककर संग अलोपित भेल ।"

मुदा गामक आ अगल-बगलक गामक क्यो लापता नहि छलैक । आ माला एकसर गामसँ बहरायति से क्यो मानऽ लेल तैयार नहि छलैक । अबस्से क्यो फुसला कऽ गामसँ बाहर लऽ गेलैक आ ककरो हाथे बेचि-बिकिन लेलकै ।

भगिनमान टोलमे मालाक संगी छलैक रेणू— पलटू झाक बेटी । ओ स्त्रिगण सभकेँ जोर दऽकऽ कहलकै जे बदरियेक संग भगबाक प्रोग्राम छलैक–हमरो कहने छलि मेला चलऽ । मुदा हम नहि गेलिऐक । दक्षिणबारि टोलमे मालाक संगी छलैक मंगला । ओकरा बदरीपर नहि, इन्नरपर सन्देह छलैक । दुनूकेँ धारक कातमे, बाड़ी-झाड़ीमे फुसुर-फुसुर करैत देखने छलैक मंगला । अधिक काल चौकीदारीमे वैह ठाढ़ि रहैत छलैक । किम्हरोसँ कोनो आहटि होइ कि खखसि दैक ।

खाली शीला चुप्प छलैक । ओकरा जेना किछुओ नहि बूझल छलैक ! दुनू बहिनमे बड़ कम्म गप्प होइत छलैक, कोठलियो फराक-फराक छलैक । किताबवला घटनाक बाद शीलोक स्कूल गेनाइ बन्न करबा देने छलथिन कल्लू चौधरी । खाली टेस्ट परीक्षा दिया देलथिन आ फेर दरभंगा सेन्टरसँ मैट्रिकोक परीक्षा दिया देलथिन। मुदा ओइ दिनुका घटनाक बाद ओहिना शान्त रहऽवाली शीला आर अधिक गम्भीर आ शान्त भऽ गेलि छलि । दिन-भरिमे दू-एक शब्द बाजय । फेर अप्पन कोठलीमे बन्न । माय छलैक नहि । घरमे खाली नौकर-चाकर आ दलानपर कड़ा पहरा देने बैसल बाप ।

मुदा मालाक लेल ओ पहरा बेकार छलैक । दिन-रातिमे जखन मोन होइ लापता भऽ जाइ, शीला कहिओ ध्यान नहि दैक । ध्यान जयबो करैक कखनो तऽ कोनो महत्त्व नहि दैक–गेल हेतैक किम्हरो !

एक दिन शीलाक कोठलीमे आबि गेलैक माला–"की हरदम घरमे गुमसुम घुसिआयल रहैत छैँ ? चल किम्हरो घूमऽ !"

–"नै, तोँही जो ! हमरा नै नीक लगैत अछि ।"

–"तऽ जे नीक लगैत छौक तकरे लग जो !" माला मुसकिया उठलैक ।

शीला तेना तकलकै जेना किछु नहि बुझने होइ । माला साफ-साफ कहि देलकै–"प्रणवसँ भेँट कऽ आ, ओ तोरा नीक लगै छौ ने ! ओकरा बाबूजी डँटलथिन से तोरा अधलाह लगलौक । मुदा तोँ निश्चिन्त भऽकऽ जो, बाबूजीकेँ भनकियो नहि लगतनि ।"

शीला बड़की बहिनकेँ डाँटि लेलकै–"एहनो बात बजै-ए क्यो ? क्यो सुनत तऽ अटल-बिटल अर्थ लगाओत । हम किएक जयबै ककरो लग ? एहन निर्लज्ज हम नहि छी ।"

माला ओहिना कहलकै–"माला ठीक बात बाजलि तऽ निर्लज्जि भेलि ! तऽ रहऽ घरमे मुँह फुलौने बैसल ! अइ हवेलीमे आबिकऽ तोरासँ भेँट करतौक तेहन बहादुर आ साहसी नहि छौक तोहर हीरो !" शीला आरो खिसिया गेलैक–"आब बेजाय बात भऽ जेतौक जौँ एक्को शब्द बजलैँ । हमर हीरो किएक रहत क्यो ? हमरा ककरोसँ कोन मतलब...? तोरा बड़ अखरैत छौक तऽ तोँही चल जो !"

"हम तऽ दौड़ले चल जयबौ, मुदा तोहर ओ आदर्श-चरित नायक हमरा दिस आँखियो उठा नै तकतौ । ताकि तऽ ओकरा तोरो दिस नहि हेतैक मुदा हम जनैत छियौ, ओकरा नीक लगैत छही तोँ ।" माला ओकर क्रोधपर बिन ध्यान देने कहैत गेलैक आ मुसकिआइत रहलैक । आ फेर एकाएक गम्भीर होइत बजलैक–"हमर पसिन्न आ नापसिन्नक कोन अर्थ छैक गे ? जखन ऊँच दाँत आ भभकैत मुँह आ खुरदुर हाथ-पैरवाला तोहर करिलुट्टू ओझोकेँ पसिन्न करऽ पड़ैए तखन आर के नापसिन्न हैत ? जैह भेटि जाय...."

शीला एकदम बिगड़ि उठलैक–"ओझाजी लेल एहन बात बजैत लाज नहि होइ छौ ? तोहर स्वामी छथुन ।"

माला फेर हँसऽ लगलैक–"स्वामी छथि, तेँ मास-दू-मास, कहियो दसो दिनमे आबिकऽ अपन हिस्सा लऽ जाइ छथि–एकदम अधिकारपूर्वक ! हमहूँ विरोध करैत छियनि ? कतबो असह्य हो सभ टा सहि जाइ छी–ओ दुर्गन्ध, ओ खुरदुर स्पर्श आ ओ थाकल चुकती भेल पौरुष । जाहि दिन पहिल बेर ओ सभ सहने रही, सौंसे

आत्मा आ देह विद्रोह कऽ देने छल । फेर सभ टाकें अभ्यास भऽ गेल, सभ टा सहि जाइ छी आब ! जहिया नहि सहि हैत, किम्हरो बिदा भऽ जायब, किम्हरो, ककरो संग ।"

शीलाकें डर भेलैक । अपन अइ पैघ बहिनकें भरिसक ओ नहि चीन्हि सकलैक । ओकरा होइत छलैक जे अइ सुन्न आ पैघ हवेलीमे मात्र वैह टा दुखी अछि । आब लगलैक जेना माला ओकरासँ बेसी एकसरि आ दुखी छलैक, मोनमे एक टा बड़का बिरड़ोकें दबौने छलैक ।

"एना नहि बाज माला ! कतहु जयबाक गप्प नहि कर, हमरा डर होइ-ए । बाबूजी लेल सोचहुन । तोरा कतहु जाय नहि पड़ौ, तें ने एहन जमाय अनलनि जे तोरा एतऽ रहऽ दौक–अपन घर लऽ जयबाक जिद नहि करौक ! एतेक सम्पत्ति छनि बाबूजीक, सभ तोरे सभक छौक, अही गाममे बसबैं, नव गाम, नव लोकक बीच कहियो जाय नहि पड़तौक । बिआहो भेलापर सासुरक अनुभव नहि हेतौक ।"

–"ठीके कहलैं तों, बिआह भेलोपर हमरा सासुरक अनुभव नहि हैत ! हमरा वरक काज नहि छल, बाबूजीकें जमाय चाहैत छलनि, बड़का पाँजि वला, से लऽ अनलनि ! आ तोरो ओझाजीकें घर-गृहस्थी चलबऽ लेल कनियाँ नहि चाहियनि— ने घर छनि ने गृहस्थी । एक टा मौगीक देह चाहियनि आ चाहियनि जातिक दाम, से भेटि जाइत छनि । मासे-मास आबि जाइत छथि । खोआक संग हमरो सिसोहि लैत छथि आ फेर एक मासक खर्च-वर्च लऽ किम्हरो ससरि जाइत छथि । घी-मलिदो खा यदि चाम कनेक चिक्कन होइतनि...पानो-इलाइचीसँ यदि मुँहक दुर्गन्ध कनियो कमितनि...तों नहि बुझबहिक शीला, अखन तों किछु नहि बुझबहिक..."

माला चल गेलैक । मुदा शीला बुझलकै— सभ टा बुझलकै, आ ओकरा डर होबऽ लगलैक । आब मालाक बाहर आबऽ-जायपर ओ ध्यान देबऽ लगलैक, कहिओ कनिओ देरी होइ घुरबामे तऽ डरे कोँढ़ धड़कऽ लगैक । हरदम एक टा आशंकासँ त्रस्त रहऽ लागलि । बहिन लग बेसी सटल रहऽ लागलि !

माला बूझि गेलैक आ एक दिन हँसि कऽ कहलकै– ई पहरा बेकार छौ शीला ! हमरा जयबाक मोन हैत तऽ क्यो रोकि नहि सकत । गेलापर घुरि आबी तेहन कोन आकर्षण छैक एहि घरमे ? खाली तोरा लेल दुख हैत । तों मोन पड़बैं । तोरा एकसर अइ कालकोठलीमे छोड़ि जयबाक अपराध-भावनो रहत । मुदा अपन अइ बहिनकें, अइ दुखी संगीकें माफ कऽ दिहैं, ओकरासँ घृणा नहि करिहैं..."

आ सत्ते माला जखन चल गेलैक, तऽ शीलाकें कोनो तामस नहि भेलैक, घृणो नहि भेलैक । दिन भरिक तक्का-हेरीक बाद जखन बापकें चिन्तामे निमग्न कारी-झामर भेल मुँह देखय तऽ दुख होइक आ इच्छा होइ जे कहनि छोड़ू ई तक्का-हेरी ! जाय दियौक ओकरा अपन बाटपर...। मुदा कहि नहि होइ । बाबूजी लेल दुख होइ, मुदा बाबूजी अपन सुख-दुख ककरो संग बँटबाक अभ्यासिये नहि छलथिन । किछुओ भऽ जयतनि, नहि कहथिन । मुदा दलानमे आ कोठलीमे एकसर, अपमानित आ दुखसँ कातर भेल बापकें देखि कऽ ओकर इच्छा होइ जे लगमे बैसय, कोनो बात करय । मुदा साहस नहि होइ । बाबूकें चिन्ता आ दुख, माला लेल नहि, अपन इज्जति आ मर्यादा लेल छलनि–सेहो ओ बुझैत छलि । मालाक लेल ओकर चिन्ता बेसी छलैक, नहि जानि ककरा संग गेलैक, कोम्हर गेलैक ! एहन स्थितिमे कोनो ठेकनगर लोक नहिये भेटतैक, सभ ओकर स्थितिक फायदा उठा छोड़ि देतैक...! मुक्तिक लेल घरसँ बाहर पैर देलक अछि... भगवान करैक, ओ मुक्त भऽ जीबि सकय...!

मुदा गामक लोक आ स्त्रिगणसभ प्राण आजिज कऽ देलकै । किम्हरो जाय, वैह चर्चा–"माला घुरलौ ?" जेना सभकें बड़ चिन्ता होइ ! मुदा असलमे सभ आनन्द लैत छलैक । जहिया पित्ती भऽ रूदल चौधरी दरबज्जा पर सभ टा घोषणा कऽ गेलथिन तहियासँ एहन-एहन घोषणा सभ ठाम सभ टोलमे होइत रहैत छलैक । रूदल चौधरी जकाँ सामने आबि ओकर बाबूजीकें क्यो नहि पुछैत छलैक, मुदा शीलाकें तऽ जकरा मोन होइ छलैक, टोकि दैत छलैक । ओहो बाबूजीसँ किछुओ नहि कहैत छलनि, अनेरो काण्ड भऽ जयतैक । स्कूल गेनाइ छुटले छलैक, दरभंगा जा परीक्षो दऽ आयलि छलि । दिन भरि कोनो काज नहि रहैत छलैक । एकसरि घरमे पड़लि-पड़लि आरो गुम्मा भऽ गेलि शीला ! बापसँ कै कै दिन गप्पो नहि होइत छलैक । सोझा-सोझी भेलि आ फेर अपन-अपन कोठली चल गेलि । घरक वातावरण मालाकें चल गेलासँ एकदम दमघोंटू आ भयावह भऽ गेल छलैक ।

आ एक दिन प्रणवोकें गाम छोड़िकऽ जाय पड़लैक ।

जाय नहि पड़लैक, ओ स्वयं जयबाक निश्चय कयलक । मैट्रिकक परीक्षामे जखन स्कूलक संग ओ जिलोमे फर्स्ट आबि गेल तऽ हेडमास्टर साहेब गदगद भऽ छातीसँ लगा लेलथिन–"हमर स्कूलक मान बढ़ौलैं तों । आरो आगू

बढ़ ! हमरालोकनिक माथ ऊँच रहत ।" हरदम शान्त आ कठोर सन लागऽवला हेडमास्टर साहेबक आकृति एकदम कोमल भऽ गेलनि आ आँखि सेहो गील । मुदा क्लास टीचर मिर्जा साहेब तऽ नीक जकाँ कानऽ लगलथिन–"मैं जानता था, तुम जरूर हमारा नाम रौशन करेगे बेटे ! हमारी दुआयें तुम्हारे साथ है, आगे की मंजिल भी आसान होगी ।"

मुदा मामीकेँ मनायब आसान नहि भेलैक । सुनितहि अन्न-पानि त्यागि देलथिन–"नहि, किन्नहुँ ने जाय देबैक गामसँ ।"

मुन्नर झा स्नेहसँ डँटलथिन–"एना क्यो बताहि जकाँ गप्प करय ? बाहर नहि जैत तऽ आगू पढ़त-लिखत कोना ? ...एनाहे सभ दिन गाममे अपना लग रखने रहबैक आ आगू लिखत-पढ़त नहि तऽ मैट्रिक धरि पढ़लक किएक ? गाममे रखबाक छल तऽ थम्हा दितियैक हमरे जकाँ नेन्नेमे भानसक कड़छु आ पैघ भेलापर महीँसक पगहा ।

बात मीनाकेँ लगलैक । अही दिन लेल तऽ लड़ि-झगड़िकऽ प्रणवकेँ स्कूल पठबैत छलैक । ओकरे इच्छा छलैक जे प्रणव पढ़य-लिखय, बड़का लोक बनय । मुदा ताहि लेल एतेक दूर कलकत्ता ! नहि ! किन्नहु नहि !

कलकत्ताक बात तऽ प्रणवोक मनमे नहि अबितैक । मुदा पछिला साल कामेश्वर भाइ गाम आबि ओकरा एक टा बाट देखा देलथिन । मैट्रिक पास कऽ कामेश्वर भाइ कलकत्ते चल गेलाह आ बीस वर्षसँ ओतहि छथि । दिन-राति ट्यूशन । बड़ा-बजारमे एक टा कोठलीमे तीन गोटे संग बास आ खा-पी कऽ मासमे पाँच-सात सयक बचत । मुदा प्रणवकेँ कामेश्वर भाइ जकाँ बचत नहि करबाक छलैक, ओकरा तऽ आगू पढ़बाक छलैक । बचतैक तऽ सय-पचास गामो पठा देतैक मामा-मामीकेँ ।

सुनिएकऽ भड़कि गेलैक मीना–"नहि चाही तोहर सय-पचास । एतेक दिन नहि कमाकऽ देलैं तऽ गुजर भेल की नहि हमरालोकनिक ? ओहिना सोलह वर्षक भऽ गेलैं, आइ पढ़ि-लिखिकऽ बड़का-बड़का बात करऽ जोगर भेलैं । से सभ किछु नहि हेतौक...दरभंगेमे पढ़बैं...सभ दिन गामसँ जयबैं...

प्रणव मामीक मनौन करऽ लागल–"एतऽसँ सभ दिन कालेज गेलापर सभ दिन क्लास छूटत...पढ़ाइ-लिखाइक बदला सभ दिन खाली ट्रेनक सवारी हैत । आ डेरा लऽकऽ दरभंगामे रहब तऽ कमसँ कम सय सवा सय चाही रहबाक लेल । स्कालरशिपक टाकाक कोनो ठेकान नहि, जतबो भेटत, सेहो समयपर नहि । साल-छओ मासमे एक बेर । दरभंगामे ट्यूशनक कोनो तेहन सुविधा नहि छैक...जे छैको तकरा लेल पैरवी चाहिऐक । हमर पैरवी के करत ? कलकत्तामे...

मुदा मीना तैयो अड़लि रहलैक सात दिन धरि । प्रणवसँ बजबो नहि करैक । प्रणवो उदास रहय...दोसर कोनो बाट नहि सुझैत रहैक । मुदा एक दिन मामी अपनेसँ कहलकै–"एना सदिखन मुँह की बिधुओने रहैत छैँ ? जयबाक सभ टा ब्योत भऽ गेल छौ । किरायाक टाका, नाम लिखैबाक फीस आ एक मासक खर्च । ओतऽ जाइत देरी क्यो काज लेने बैसल तऽ नहि छौक ? ओ काज भेटबो करतौक तऽ मास पूरऽसँ पहिने के टाका देतौक ? कहिया जयबैं ? ठक्कू पण्डितजी परसुक्का दिन नीक कहैत छथुन...फेर एक बेर सौराठवला पण्डितजीसँ देखा ले, हुनकर ताकल दिन नीक होइत छनि । ठक्कू पण्डितक कोनो भरोस नहि ।"

प्रणव अवाक् मामीक मुँह देखैत रहि गेल । ई मुँह जेना कहिओ पुरान नहि होइत छलैक...सभ दिन नवे भेल जाइत छलैक । जहिना रूप छिड़िआइत छलैक चारू कात, तहिना स्नेह आ कर्मठता । छब्बीस वर्षक मामी आइयो ओहिना छलैक जेना दस वर्ष पूर्व एहि गाममे अयलापर छलैक । एहि दस वर्षक भीतर मुन्नर झा एकदम बुढ़ाँठ भऽ गेल छलाह । पैंतालिसमे वर्षमे साठि सन लगैत छलाह । केश लगभग सभ टा उज्जर, तमाकूक कृपासँ अगिला दूनू दाँत निपत्ता आ कारी देहक चिकनै एकदम रुक्ख आ असर्ध सन भऽ गेल छलनि । मुदा मामीकेँ तकर कोनो चिन्ता नहि । कखनो मुँह मलिन नहि होइत छलनि ।

मुदा मामीक चमकैत आकृति देखैत काल प्रणवक आकृति पहिने खुशीसँ चमकि फेर एकदम मिझा गेलैक । मामीक गरा एकदम सुन्न छलैक । जहियासँ प्रणव मामीकेँ देखलकै, गरामे एक टा मटरमाला सेहो झुलैत देखलकै । दू-एक बेर तऽ झिक्का-तीरीमे ओकरा तोड़िकऽ छिड़ियाइओ देने छलैक । मामा फेर गँथबा अनने छलथिन । मुदा से मटरमाला गरासँ निपत्ता छलैक ।

ओकरा ओना गरदनि दिस तकैत आ मुँह म्लान होइत देखि मामी बजलैक– "एना की तकैत छैँ रे ? तोरे मायक तऽ छलौक...कोनो हमर बाप देने छलाह की तोहर मामा कीनि देने छलाह ? आ फेर आब एतेक टा बेटावाली बुढ़ियाकेँ ई गहना-गुड़िया कोनो नीक लगैत छल ? ओनाहो तऽ तोरे कनियाँ केँ दितिअनि एक दिन । कमाकऽ मुँहदेखाइ देबऽ ले' एकटा दोसर कीनि दिहैं आब...।

प्रणव अंगनासँ पड़ा आयल । लगलैक जेना अंगनामे रहत तऽ कानऽ लागत । अपनो कानत आ मामियोकेँ कना देतनि संग-संग ।

मुदा गाममे जेना सभ क्यो ओकरा कनैबाक ओइ दिन नियार कयने छलैक। टोलेमे 'ओइ आंगन वाली नानी' देखितहिँ टोकलथिन– "आब अइ पाकल आमक कोन भरोस, नहि जानि कहिया तूबि जायत। फेर देखबो करबौ कि नहि...?"

अपन कोरामे खेला पोसने छलथिन नानी। बालविधवा नानी। देऔरक परिवारक संग रहली नानी सभ दिन। अप्पन क्यो नहि छलनि। नैहरमे हेबो करनि तऽ ककरो बूझल नहि छलैक। सभ दिन एहिना देखलकनि नानीकेँ लोक। देहपर एक टा कोरा धोती मात्र ! आर कोनो वस्त्र नहि। जाड़, गरमी, बारहो मास ! बारहो मास प्रातःस्नान, मुदा देहपर एक धोती छोड़ि आर कोनो वस्त्र नहि ! ओइ धोतीमे तीन-चारि चिप्पी ! माथमे कैंचीसँ काटल छोट-छोट केश। गोर दीप्त आकृति। कहियो कोनो उलहन-उपराग नहि— ने अप्पन कप्पारक, ने लोकक व्यवहारक ! अप्पन आंगनक भानस-भात, लोकक आंगनमे अवसरपर सभ टा काज, गीत-नाद, अरिपन-चुमाओनक इन्तजाम ! नानीक बिना ककरो काज नहि चलैत छलैक। आ सभक घर सभ टा काज करैत, सभ टा भार उठबैत नानी सदिखन हँसैत रहैत छलीह– कखनो कोनो निराशा नहि ! मुदा सैह नानी प्रणवकेँ कहलथिन–फेर देखबो करबौक कि नहि...।

आ तकर बाद चुन्नूक पुतऽहु। के छलैक चुन्नू आ कोना ओ ओकर पुतऽहु छलैक आ किएक लोक ओकरा चुन्नूक पुतऽहु कहैत छलैक– से प्रणवकेँ कहियो बूझल नहि भेलैक। चुन्नूक पुतऽहुक स्वामी छलैक रोगिआह–दिन राति पड़ल हकमैत रहैत छलैक। धीया-पूता छलैक पैघ-पैघ, मुदा से रहैत छलैक धारक ओइ पार, इस्लामपुर बजार लग। कहियो माय-बापकेँ देखऽ आयल होइ ओकर दुनू बेटा–से गाममे ककरो मोन नहि छलैक। मुदा चुन्नूक पुतऽहु अपन आ अपन रुग्ण स्वामीक खर्च अपने चला लैत छलि। बोलीमे मधु छलैक आ हाथमे गुण। जेहने नीक मुरही, तेहने स्वादिष्ट झिल्ली-कचरी। गामक चरबाहसभ हरदम भीड़ कयने रहैत छलैक आ धीया-पूता सभ दौड़ि-दौड़िकऽ आंगनसँ बेचा आनि वस्तु-जात लऽ जाइत छलैक।

मुदा चुन्नूक पुतऽहु प्रणव लेल कहिओ बेचाक हिसाब नहि कयलकै। देलकै तेयो ठीक, नहि देलकै तैयो ठीक। कलकत्ता जयबाक बातपर जेना एकदम कातर भऽ उठलैक–"बड़ दूर चल जाइछी बौआ, ई दुखनी बुढ़िया मोन रहत ?"

मोन कोना नहि रहतैक प्रणवकेँ ? बिसरबाक अर्थ हेतैक अइ गामकेँ बिसरब। अइ नग्रकेँ बिसरब। बिसरि जायब नदीक कछेर आ बागमतीक स्वच्छ

जलक धारकेँ। बिसरि जायब धारक बालुपर लेटायल नेनपन आ स्कूलक माटिपर बितल शैशवकेँ। बिसरि जायब नेनपन आ शैशवक कौतुकपूर्ण खेल आ ओइ खेलक संगीकेँ...।

खेलक संगी छलैक ओकर मुरली। जखन अपर प्राइमरीमे रहय तऽ दुनू खूब क्रिकेट खेलाय। मन्दिरक कातवला मैदानमे तीनटा सौंस ईंटा जोड़ि विकेट बनाओल जाइक आ टेनिसक गेंदसँ बौलिंग कयल जाइ। बौलिंगमे तेज रहैक कमलू। हाथ ऊपर उठा गेंद फेकऽवाला बौलिंग नहि। हाथकेँ नीचे राखि जोरसँ फेकल गेंद ! एकदम घास धऽ लैक ओ गेंद आ झट विकेट खसा दैक। मुदा प्रणव आ मुरलीक आगू ओकर बौलिंग फीका भऽ जाइक। कतबो घास धैने बौल अबैक, एकदम चौका मारि दैक ! गेंद मैदान-पारक बागमतीक पानिमे चल जाइक– बालुमे घुसिया जाइक। आ यदि कोनो बौल कने घास छोड़ि दैक तऽ एक्के बेर छक्का– एकदम पीपरक गाछक ओइ कात अकाशे दने...।

मुदा से छलैक अपर प्राइमरी स्कूलक गप्प, नेंगरा गुरुजीक स्कूलमे। हाइ स्कूल अबैत देरी दूनूक सौख बदलि गेलैक। दूनू फुटबौल खेलाय लागल। मुरली खेलाइ लेफ्ट आउटसँ। गेंद भेटैत देरी लुत्ती जकाँ पड़ाइ गोल दिस आ बीचमे सेन्टर फारवर्ड प्रणव। तेहन ने जगह लैक जे मुरलीक फेकल गेंद चाहे माथसँ हो, चाहे पयरसँ किक आ गोल। दूनू पयर एक्के रंग चलैक आ हवामे माछ जकाँ कूदि लपकिकऽ हेड कऽ दैक। सौंसे इलाकामे जोड़ी नामी भऽ गेलैक....कमतौल स्कूलकेँ हरौलक...महिसाजानकेँ हरौलक, दरभंगाक नामी स्कूलसभकेँ हरौलक।

मुदा मुरली छलैक पढ़ऽमे भुसकौल। कहुना घीचि-घाचि कऽ मैट्रिक धरि तऽ पहुँचलैक मुदा परीक्षामे फेल ! विवाह नवमे क्लासमे पढ़ैत छलैक तहिये भऽ गेल छलैक। बाप एक टा छोट-छीन दोकान खोलि देलकै इस्लामपुर बजारमे। ओही ठाम बैसऽ लागल मुरली। कलकत्ता जयबाक बातपर जेना ओहो बड़ भावुक भऽ उठलैक–"संग तऽ छुटबैक छल। तूँ पढ़ाकू आ हम भुसकौल। मुदा दरभंगे रहितैं तऽ होइत जे लगेमे छैं, हमहूँ संग छिऔक।"

बताह छलैक मुरली ! दूर भेलासँ कतहु संग छुटैक ? मोन लग रहबाक चाहिऐक–दूरी कोना व्यवधान बनतैक ? मुदा मुरली तऽ मुरली, सौंसे गाम जेना बताह भऽ गेल छलैक। जैह सुनलकै सैह उदास भऽ गेलैक। भरि गाम संगिये छलैक प्रणवक– अप्पन टोलक भोलू, दक्षिणवारि टोलक कालू, दक्षिणवारिये टोलक सुन्दर आ उतरवारि टोलक बिलट आ बिलास।

मुदा सभसँ आफत केलकै दुसधटोलीक मुनेसरा ! ओहो पढ़ैत छलै प्रणवक संग– मैट्रिकमे फेल भऽ गेलै । मुदा मैट्रिको फेल, आ साक्षर वैह टा छल अप्पन टोलमे । बाप छलैक चौकीदार । जिद ठानि देलकै– बेटाकेँ अबस्स पढ़ायब । मैट्रिक धरि पहुँचि गेलैक मुनेसरा । मुदा अंग्रेजीमे सभ दिन कमजोर छलैक, मैट्रिक पास नहि कऽ सकलैक । प्रवणक कलकत्ता जयबाक गप्पपर एकदम कानऽ लगलैक– "नहि जाय देबौक तोरा । फेल भऽ गेलहुँ तऽ संगी छूटि गेल । दरभंगेमे ट्यूशनक जोगार भऽ जयतौक ।"

मुदा सभसँ पहिने जिद ठानऽवाली आ रुसिकऽ मुँहाबज्जी बन्द करऽ वाली मामी सभसँ पहिने मानि गेलैक । किराया आ फीसक इन्तजाम कयलकै । एक टा नव पैजामा–कमीज बनबौलकै, संग ले' चूड़ा–आदिक व्यवस्था केलकै आ पण्डितजीसँ दिन तका जयबाक दिनो निश्चित कऽ देलकै । तेइस तारीख !

23 जून 1957 ।

प्रणवक डायरीमे ओ दिन लिखल छलैक– गाम छोड़बाक दिन । डायरी लिखबाक प्रणवकेँ कहियो अभ्यास नहि छलैक । मुदा जहिया गाम छोड़ि कलकत्ता आयल, एकटा डायरी कीनि अनलक आ सभसँ पहिल पेजपर जतऽसँ लिखब शुरू कयलक, लिखल छलैक–23 जून 1957 । छओ मास धरि लिखैत रहल । फेर डायरी भरि गेलैक आ डायरी लिखबो छुटि गेलैक !

23 जून 1957 ।

ओ दिने जेना बड़ उदास छलैक । भोरेसँ मामीक आँखि रहि-रहि झहरऽ लगैत छलैक । चीज-वस्तु सरिअबैत काल, मानस-भात करैत काल कखनो बरसि जाइत छलैक । सोलह-सतरह वर्षक प्रणव पाँच वर्षक नेना जकाँ मामीक कोरामे नुका हिचुकि–हिचुकिकऽ कानऽ चाहैत छल । मुदा नहि जानि किएक से नहि कऽ भेलैक ? आ जखन अँगनामे रहि मामीकेँ देखबाक साहस नहि भेलैक, तऽ अँगनासँ बाहर चल आयल ।

बाटपर नेंगरा गुरुजी भेटलथिन । कान्हपरक मैलका गमछाक छोरमे कने टा पोटरी लटकल छलनि । नाँगड़ पयरकेँ जबर्दस्ती घिसटैत आबि रहल छलाह । प्रणवकेँ देखि ठाढ़ भऽ गेलथिन–"आइये जाइ छैं ? जो...खूब तरक्की कर...।"

एतबा कहि गुरुजी जेना आगू बढ़ऽ चाहलनि । मुदा नहि जा भेलनि जेना ! ठाढ़े रहि गेलथिन । किछु काल चुप्प रहलाक बाद कहलथिन– अइ अभागल गुरुजीकेँ माफ कऽ दिहैं बौआ ! पेटक लेल...लोभक लेल...बड़ अन्याय कयने छौक तोरा संग ! गुरुजी माने की ? आठ टाका मास कमायवला जानवर । मुदा ओहो आठ टाका नीक छल बाउ ! स्वतंत्रता बादक चालीस टाका तऽ ओहूसँ बत्तर ! भरोस दरमाहाक नहि । ओहो चालीस टाका कहिया भेटत, कोनो भरोस नहि । भरोस शनीचरीक चाउरक, आना दू–आना कैंचाक । आ ओही लोभमे शिक्षा देबऽवाला गुरु, बापक दर्जा राखऽवाला गुरु, राक्षस बनि जाइत छल । ओकरा माफ कऽ दिअहिक बाउ...किछु मोन नहि रखिहैं । ओकरा सजाय भेटि गेलैक । शनीचरीक मोटगर मोटरीक लोभी राक्षसकेँ आब भिक्षो नहि भेटैत छैक ।" गुरुजी गमछामे बान्हल नन्हिकी पोटरी डोलाकऽ देखबऽ लगलथिन ।

गुरुजी रिटायर भऽ गेल छलथिन । दुनू बेटी सासुर बसैत छलनि आ एकमात्र बेटा पटनामे नौकरी करैत छलनि । अपन परिवारक संग रहैत छलनि । ओइ परिवारमे गुरुजीक लेल स्थान नहि छलनि । गुरुजी गामे-गाम माँगि–चाँगि गुजर करैत छलाह । गुरुजीक पैर छुबैत प्रणव कहलकनि–"आशीर्वाद दियऽ गुरुजी ! अहीँक आशीर्वादसँ मनुक्ख हैब । पहिला अक्षर सिखौने छी अहाँ ।"

कल्लू चौधरीक हवेली लग आबि ओकर पयर थकमका गेलै । बड़ इच्छा भेलैक शीलाकेँ देखबाक, ओकरासँ गप्प करबाक । मैट्रिकक परीक्षा देने छलैक आ पासो भऽ गेल छलैक शीला । मुदा लड़की सभक सेन्टर दोसर छलैक । जाहि दिन किताब लेबऽ जाऽकऽ कल्लू चौधरीसँ डँटायल छल प्रणव...तहियासँ कहिओ गप्प नहि भेलैक । टेस्ट परीक्षामे देखने छलैक प्रणव, मुदा लग जा गप्प करबाक साहस नहि भेलैक । शीला सेहो कहिओ चेष्टा नहि कयलकै । ....आँखि उठा देखबो नहि कयलकै कहिओ ।

मुदा गाम छोड़ि जाइत काल बड़ इच्छा भऽ रहल छलैक प्रणवक जे शीला बाहर अबैक आ ओकरा देखैक आ गप्प करैक । मुदा कल्लू चौधरीक हवेलीक ऊँच देबालक पाछाँ नहि जानि कतऽ निपत्ता छलैक शीला ! हवेलीक बड़का फाटक बन्न छलैक । ओहि बन्न फाटक लग अनेरो किछु काल ठाढ़ रहल ओ आ फेर आगू बढ़ि गेल ।

मुदा रूदल चौधरीक बेटा बंकू देखि लेलकै । आगू आबिकऽ बाट छेकि लेलकै । बंकू अपर प्राइमरीमे संगे पढ़ैत छलैक, मुदा अपरो पास नहि भऽ सकलैक । छोड़ि देलकै पढ़ाइ । जा धरि स्कूलमे रहलैक, प्रणवकेँ अनेरो मारि बैसैक ।

मालिकक बेटा, कल्लू चौधरीक दियादक बेटा-बंकू...। गाम भरि डेराइत छलैक । कने पैघ भेलैक तऽ आर उद्दण्ड भऽ गेलैक– रस्ता-पेड़ा बाड़ी-झाड़ी...घाट-खरिहान कतहु अवंच नहि रहलैक ओकर उत्पात सँ ! कोनो छौंड़ी एकसर कतहु अभरि गेलैक तऽ आफत ! बंकू बाज जकाँ दबोचि लैत छलैक । जे धनक लोभे चुप्प रहलैक से बड़ बढ़ियाँ, नहि तऽ आतंके । मजाल जे क्यो हल्ला करतैक ! पितिऔते बहिन तऽ छलैक माला, ओकरो छोड़लकै ? बेसी लोक आब कहैत छलैक जे बंकूये कतहु छोड़ि-बेचि आयल छलैक ओकरा ।

–"हबेली लग की हुलुक-बुलुक करै छैँ रे ?" बंकू बाट छेकैत कहलकै ।

"तोरा मतलब ?" प्रणवो कने रुच्छ स्वरमे कहलकै ।

"अबस्स मतलब अछि हमरा। हमर काकाक आँगनमे तोँ एना हुलुकी-बुलकी देबैं, आ हम देखिकऽ छोड़ि देबौ ! पहिने जेठकी बहिनकेँ भगौलही आ आब छोटकीपर आँखि गड़ल छौ ।"

प्रणवक इच्छा भेलैक जे तेहन चाट दैक मुँहपर जे सभ दिनक ओलि सधि जाइ, फेर दोबारा एना उटपटांग बजबाक अभ्यासे छुटि जाइ । मुदा गामसँ जयबाक दिनमे ओ कोनो अप्रिय घटना नहि करऽ चाहैत छल– सेहो कल्लू चौधरीक हवेलीक सामने । लोक दस तरहक अँटकर लगौतैक आ पचास तरहक खिस्सा पसारतैक । ओ आगू बढ़ि गेल ।

बंकू पाछाँसँ सुनाकऽ बजलैक "मैट्रिक पास कयलासँ कोनो ओहदा नहि बढ़ैत छैक । खबरदार जे एम्हर टपलैं तऽ टांग तोड़ि देबौक ।"

प्रणवक मोन तीत भऽ गेलैक ! गामसँ जाइत काल एहन अप्रिय घटनाक स्मृति संग लऽ जयबाक कोनो इच्छा नहि छलैक । मुदा जतेक ओइ बातकेँ अनठाकऽ, ओकरा बिसरिकऽ कोनो आर बात सोचबाक चेष्टा कयलक, ततबे बंकूक बात ओकरा पछुअबैत रहलैक आ ओ अकच्छ भऽ आंगन घुरि आयल । मुदा तैयो अपन अकारण अपमानक दंश ओकरा छटपटबैत रहलैक ।

ओही राति मामीकेँ कनैत छोड़ि ओ कलकत्ता बिदा भऽ गेल ।

मुदा मुन्नर झा तऽ जाइत काल कानहो नहि देलथिन मीनाकेँ ।

एकदम प्रसन्न मोने बहरायल छलाह घरसँ । प्रणवकैं कलकत्ता गेना चारि बरख लगिचियलैक, कहियो कोनो छुट्टियोमे गाम नहि अयलैक । ओकरा टाकाक चिन्ता छलैक, अपन पढ़बाक संग गाममे बैसल मामा-मामीक चिन्ता छलैक– मासे-मास पचास टाका मनीआडरो करैत छलैक । मीना कतेको बेर लिखलकै मुदा प्रणव सभ बेर एक्के जबाब लिखलकै । आब तऽ पढ़ाइयो लगचिआयल छलैक... बी.ए.क परीक्षा दऽ गाम ओतैक अगिला मास । चिट्ठी आयल छलैक ।

मुन्नर झा गुमसुम रहऽवला लोक । चिट्ठी भेटलोपर किछु बाजल नहि छलाह । मुदा मोनक प्रसन्नता आकृतिपर पसरि गेल छलनि । मीना तऽ भरि राति खुशीसँ जगले रहि गेल छल, मुन्नरो झाकेँ सूतऽ नहि देलकनि ।

मुदा रतिजग्गाक बादो भोरे प्रसन्न छलाह मुन्नर झा आ प्रसन्न मोने बहरायल छलाह अन्हरोखे महीँस लऽ । भोरुकवामे एकसरि मीनाक आँखि लागि गेलैक । स्वामी चल गेल छलैक आ अन्हरोखे दोसरकेँ उठा तंग कयलापर गारि-सराप सुनऽ पड़ितैक । चुपचाप पड़ि रहल आ झट आँखि लागि गेलैक ।

आंगनमे गर्द सुनि आँखि खुजलैक । नीक जकाँ रौद पसरि गेल छलैक आ सौंसे आंगनमे सेहो लोक पसरि गेल छलैक । ककरो बीच आंगनमे सुतौने छलैक आ चारू कातसँ लोक ओतहि मुड़िआरी दऽ रहल छलैक । मीनो कोठलीसँ निकलि ओसारापर आयल, कने माथपर आँचर खिचलक । आंगनमे सभ तरहक लोक छलैक ।

ओकरा ओसारापर देखितहि ओइ आंगनवाली बाबी हाक्रोश करैत लग अयलथिन आ अपन बूढ़ हाथे ओकर दुनू हाथक चूड़ी फोड़ऽ लगलथिन । मीना अवाक् आ सन्न ! लाज-धाख छोड़िकऽ आंगन आयल । सभकेँ ठेलि देखलक– बीच आँगनमे स्वामी पड़ल छलैक; चित्त आ पपनी बन्न कयने । जेना राति भरिक जगरनाक कारणे अंगनामे सूति रहल होथि ! सिरमा आ पौथान दिस गामक दुनू प्रसिद्ध मती महगू चमार आ सटहा धानुक बैसल छलैक एकदम हताश आ थाकल । चाटी मारि-मारिकऽ पैर फुला देने छलैक दुनू मिलिकऽ आ हारिकऽ बैसि गेल छल । जहर सौंसे देह पसरि गेल छलैक आ निर्जीव देह आंगनमे पड़ल छलैक । मीनोक देह सुन्न भऽ ओही ठाम आंगनमे ओंघरा गेल छलैक ।

होश भेलैक तऽ किछु स्त्रिगण सभ घेरने छलैक— टोलक दू चारिटा स्त्रिगण ! मुन्नर झाकेँ लोक उठाकऽ लऽ गेल छलनि ! आंगनमे एक्कोटा पुरुष नहि छलैक । आंगन एकदम सुन्न छलैक आ रौद माथपर आबि गेल छलैक ।

मीनाक हाथ महँक बचलो-खुचल चूड़ी क्यो फोड़ि देने छलैक आ माथक केश छिड़िआयल छलैक ।

मीना उठिकऽ बैसि रहल । सुन्न आँखिये चारू दिस तकलक । ओकरा उठिकऽ बैसैत देखि टोल-पड़ोसक स्त्रिगण फेरसँ कानऽ लगलैक । मुदा मीनाक आँखिमे एक्को ठोप नोर नहि छलैक । एकदम सुखायल आँखि, आ पथरायल आकृति ! स्त्रिगण सभ अपन नोर निरर्थक जाइत देखि बेराबरी ससरि गेलैक । मीना ओहिना बैसलि रहल एकदम पाथरक आकृति सन !

लोक सभ श्मशानसँ घुरलैक । भातिजक गरामे उतरी छलैक । अपन भाइ तऽ छलनि नहि, पितिऔतक बेटा बीरन । लोक सभ दरबज्जापर पैर धोलकै, लोह छुलकै, की की सभ भेलैक, मीनाकेँ जेना कथुक सुधि नहि रहैक । ने आँखिमे नोर आ ने मुँहमे बकार ।

मुदा गामक लोककेँ सभ बातक चिन्ता रहैक । भातिजक गरामे उतरी छलैक, ओ कोना मुक्त हैत ? ओकरो घरक हालति तऽ तेहने छलैक, एगारहोटा खुआओत तकरो जुटान असंभव छलैक । आ जुटबो करतैक तऽ से किएक करत ? स्त्री जीवित छथिन, सभटा हुनके करऽ चाहियनि ? स्वामी नहि रहलथिन मुदा दस कट्ठा जमीन छलनि, तीन कट्ठाक बाड़ी-झाड़ी छलनि । कोनो तेहन बेजाय हालति तऽ नहि छलनि ! आ भागिन मासे-मास पचास टाका पठबैत छलनि, ताहू महक टाका हेतनि । फेर लिखथुन, काजसँ पूर्व टाका-पैसा लऽ पहुँचि जयतनि । मुदा पहिने बाजथु तऽ जे विचार की छनि ? भरि गाम वा पुरुखे दिस आ कि एगारहेटामे उतीर्ण भऽ जयतीह ! स्वामी तऽ हुनके छलथिन । सभटा सोचऽ तऽ हुनके पड़तनि ।

मुदा मीना किछु बाजय तखन ने ! ओ तऽ स्वामीक लाश आंगनमे देखि जे गुम्म भेल से गुम्मे छल । लोक सभमे फुसुर-फुसुर गप्प होमऽ लगलैक–केहन कठोर करेज छनि, स्वामी चल गेलथिन आ आँखिमे एक्को बुन्न नोर नहि । चूड़ी फूटि गेलनि, सींथ धोआ गेलनि– तैयो एक्को बुन्न नोर नहि ! धन्न कही एहन करेजकेँ !

मुदा मीना ककरा की कहितैक ? के छलैक गाममे जे सुनितैक ? प्रणवकेँ लिखितैक ? परीक्षा छलैक, छोड़ि-छाड़ि चल औतैक । साल बरबाद । नहि, ओ ओकरा किन्नहु नहि लिखतैक । अपने कोनो जोगार करऽ पड़तैक ।

पहिल गप्प रूदल चौधरीक कनियाँसँ भेलैक । जिज्ञासामे आँगन आयल छलथिन । मीनाक दशा देखि दया आबि गेलनि । दसो कट्ठा जमीन भरना लेबऽ लेल तैयार भऽ गेलथिन— पचास रुपैए कट्ठा । 'कहुना काज निबहि जाउ, हम

की करब जमीन भरना लऽ कऽ, कोनो कमी अछि ? अहाँ लेल मना लेब हुनका, नहि तऽ ओ एहि भरना-तरनाक झंझटमे नहि पड़ैत छथि कहिओ ।'

आ सत्ते ओ अपना स्वामीकेँ मना लेलथिन । भरना मुदा रजिस्ट्री हैत । काज भरि तऽ मीना नहि जा सकतीह कमतौल रजिस्ट्री आफिस । मुदा द्वादशाहक प्रात सभटा लिखि देबऽ पड़तनि । काज लेल टाका ताबे दऽ देथिन ।

मुदा रूदल चौधरीक टाकासँ पहिने खेतमे कल्लू चौधरीक हरबाह पहुँचि गेलनि भोरे । कल्लू चौधरी दरबज्जेपरसँ गरजलाह-"हमर जमीन भरना लेताह रूदल, एहन मजाल ? मुन्नरक स्त्री के छथि जमीन भरना राखऽवाली ? गाम महराजी आ बाँट करय बक्खो ! जमीन हम्मर बाप मुन्नरक बापकेँ देने छलथिन— जा जिलाह भोग कयलनि । मुन्नरक दशा देखि हम बापक मुइलोपर पन्द्रहे कट्ठा लेलियनि, दस कट्ठा भोग करऽ देलियनि, कहुना गुजर करथु । मुदा आब हुनकर स्त्री हमर जमीन भरना रखतीह से हम कोना बर्दास्त करबनि ?"

सभटा खेत जोताकऽ तैयार करा लेलथिन कल्लू चौधरी आ भरि गाम चुप्प रहल । निसाफक बात छलैक, न्याय कल्लू चौधरीक पक्षमे छलनि । तीस बरख धरि हुनकर बापक भनसिया छलथिन मुन्नरक बाप, दस बरख हुनको अमलदारीमे रहलथिन । दरमाहा नहि छलनि एक्को पाइ । बुतात आ सवा बीघा जमीन । मुदा कोनो पकिया रजिस्ट्री तऽ नहि छलनि, ओहिना देने छलथिन । जा जीलाह सोलहो आना भोग कयलनि । बेटोकेँ दस कट्ठा छोड़ि देलथिन । दया-मायाबला छलाह । आब भरना कोना राखऽ देथिन ? निसाफक बात छलैक ।

मुदा मीना ककरासँ निसाफ माँगैत ? जाहि जमीनकेँ अपन बुझैत छल, जकरा दऽ स्वामियो नहि कहियो कहलथिन जे ककरो कृपापर भोग कऽ रहल छथि, सेहो अप्पन नहि रहलैक । यदि भीखे छलनि तऽ सेहो भीखदाता वापस लऽ लेलथिन । निसाफक बात छलैक । ओ ककरासँ मदति माँगैत ?

स्वामी हँसैत घरसँ गेलथिन आ घुरिकऽ नहि अयलथिन । अयलनि मुर्दा देह । प्रणवकेँ ओ बजबऽ नहि चाहैत छल आ गामक लोककेँ निसाफ पसिन्न छलैक–ओकर मदति किएक करितैक ? बेर पर सभ मदति कम्म नहि करैत छलैक । मुदा ई तऽ स्वामीक परलोकक प्रश्न छलैक । एगारहोटा ब्राह्मण नहि खयतैक से कोना हेतैक ?

आ मीनोक चिन्ता तऽ सैह छलैक । कोना उऋण हैत ? स्वामी नहि

रहलथिन मुदा गामक लोक आ रीति-रिवाज तऽ छलैक । दसो-बीस लोक मुँह नहि ऐंठौतनि आँगनमे, किछुओ दान-पुन्न नहि हेतनि से कोना हेतैक ? मुदा उपाय ? एकटा रास्ता छलैक सेहो कल्लू चौधरि बन्न कऽ देलथिन । एकटा बुढ़िया महीँस छलैक आ दू टा पड़रू, मुदा तकरा एखन के लेतैक ? लैयो लेतैक तऽ के उचित दाम देतैक ? आ फेर अपना लेल की हेतैक ? उठौनावला सभकेँ दूध जाइत रहतैक तऽ चारि पाइक आस रहतैक । कोनो दोसरे इन्तजाम करऽ पड़तैक ।

आ ओही इन्तजामक चेष्टामे मीना ओइ राति घरसँ बहरायल । राति कोनो बेशी नहि भेल छलैक । मुदा साँझ बीति गेल छलैक आ अन्हरियामे डूबल गामक लेल राति भऽ गेल छलैक ।

आ मीनाक डेग ओही अन्हारमे आगू बढ़ि रहल छलैक । नवम दिन छलैक । काल्हि नह-केश हेतैक । परसू हेतैक एकादशाह । कोनो इन्तजाम भेनाइ जरूरी छलैक । बीरनक बाप लोहछल छलैक । भैंसुरो-भावहुक ध्यान नहि रहैत छलैक । बेर-बेर अँगना आबि सुना जाइत छलैक– "हमर बीरन तऽ गरामे फाँसे लगा लेलक । ई तऽ खूब भेल ! परोपकार करू आ दण्ड भरू ।"

कल्लू चौधरीक दलानमे एकदम अन्हार छलैक । आब क्यो नहि रहैत छलैक आँगनमे । मालाक तऽ पते नहि लगलैक, निपत्ता भेलैक से अलोपे भऽ गेलैक । दू वर्षसँ शीलो सासुरे छलैक । एकसर कल्लू चौधरी दलानमे पड़ल रहैत छलाह आ हबेलीक फाटकपर ताला लटकल रहैत छलैक । नौकर-चाकर सभकेँ छुट्टी भेटि गेल छलैक । दलानेमे एकटा छोट-छीन कोठली छलैक, ताहीमे भानस कऽ दैत छलथिन फूदन, भोर-साँझ ।

मुदा तखन दलानमे एकदम अन्हार छलैक आ हवेलीक फाटक खूजल छलैक । अन्हारमे ठाढ़ छायापर दलानक कुकुर भुकलैक आ डेरायल मीना खूजल फाटकसँ हवेलीमे पैसि गेल ।

सामनेक कोठलीसँ इजोत आबि रहल छलैक । मीना ओम्हरे लपकल । कोठलीमे पलंगपर पड़ल किछु पढ़ि रहल छलाह कल्लू चौधरी । मीना एकदम चौखटि लग जा ठाढ़ भऽ गेल ।

कल्लू चौधरीकेँ जेना आहटि लगलनि । डेराकऽ चौंकलाह– के...के अछि ?

मीना आर आगू बढ़ि आयल । मुँहपर घोघ छलैक— हम छी... परसू श्राद्ध हमरे आँगनमे अछि ।

कल्लू चौधरीक स्वर अपन स्वाभाविक हुंकारीक संग बहरयलनि–"ओ, मुन्नरक स्त्री थिकहुँ ! एना एतेक रातिमे एकसर ? ड्योढ़ीमे पहिने तऽ नहि आयल छलहुँ कहिओ ?"

मीना बीचहिमे बाजलि–"आब आर कोनो उपाय नहि रहि गेल तेँ संकोच छोड़ि आबऽ पड़ल । परसूए श्राद्ध छैक, कोनो व्यवस्था नहि भेल अछि । अपनेसँ कोन लाज ? पितातुल्य छी । ससुरक जिनगी भरि परवरिश कयलियनि । हमरो सभपर एतेक दिन दया रखलहुँ । मुदा आइ हुनकर नहि रहलापर अइ अभागलि विधवापर अपने किएक एतेक कठोर भऽ गेलिऐक ? भरनादार टाका लऽ उपस्थित छल आ अपने खेत जोतबा लेलिऐक । यैह अवसर भेटल अपनेकेँ अधिकार जनैबाक ?"

कल्लू चौधरी बमकलाह–"अहाँ मदति मांगऽ आयल छी कि उलहन देबऽ ? आबहुँ चुप्प रहितहुँ तऽ दोसर कोन अवसर भेटैत अपन हक लेबाक ? भरनादार जमीन लऽ बैसि जाइत । छोड़ैत कहिओ आ सेहो रूदल ! चिन्है नहि छियनि हम ?"

–"तऽ अपनहि दया कयल जाओ । अपनेक जमीन अपने लग रहत, हमरा पाँच सय टाका दऽ देल जाओ ।"

–"इहो बेस कहल । अपन जमीन अपने भरनापर लियऽ आ तकर पाँच सय टाको गनू । एहन बुधियारी तऽ क्यो ने सिखौने छल हमरा !"

–हम तऽ भीख माँगऽ आयल छी, अपनेकेँ हम की सिखायब ?

कल्लू चौधरी किछु क्षण चुप्प रहलाह, जेना सोचमे पड़ि गेल होथि ! फेर बजलाह–"टाका अहाँकेँ भेटि सकैत अछि । भरना हम राखि लेब, मुदा अपन जमीन नहि, अहाँक घर-घराड़ी । अहाँकेँ अइ संकटसँ बचेबाक हेतु हम ई निरर्थक जंजाल लऽ लेब । मंजूर अछि ?"

मीना किछु सोचमे पड़ल । 'स्वामी गेलाह, दस कट्ठाक आस छल, सेहो नहि रहल । आ आब घर-घराड़ी सेहो ।' मुदा बेसी सोचबाक अवसर नहि छलैक । मूड़ी उठा कहलकनि–"मंजूर अछि, दियऽ टाका ।"

कल्लू चौधरी एकटा सादा कागज आगू बढ़ा मोसि देखबैत कहलथिन–"पहिने औँठा-छाप दऽ दियऽ । काज पक्के रहय सैह नीक । भरना रजिस्ट्री भऽ जायत तऽ ई कागज घुरा देब ।"

मीनाक मोनमे भेलैक जे कागज फेकि घुरि जाय । नहि हेतैक ब्राह्मण भोजन । कऽ दौक लोक अजाति । एहन समाजमे रहले पर की हेतैक ? मुदा मोन मारिकऽ मोसि औँठापर लगा कागजपर छाप दऽ देलकै ।

तखने लालटेन नहि जानि कोना जमीनपर खसि मिझा गेलैक । एकदम अन्हार-गुज्ज । मीना डरे थरथरा गेल । मुदा साहस करैत बाजल–"टाका दियऽ । गामेपर गनि लेब, नहि तऽ दियासलाइ दियऽ, लालटेन बारि दैत छी ।"

मुदा तखने एकटा मजबूत पंजा ओकर मुँह दबा देलकै । जोर लगा चिचिआय चाहलक मुदा शब्द नहि बहरयलैक । अन्हारमे जेना छिटकिल्ली लगैबाक ध्वनि भेलैक । मीना जोरसँ छुटबाक प्रयास कयलक, मुदा दोसर बलिष्ठ हाथ ओकरा समेटिकऽ बिछौनपर धऽ देलकै । बड़ी काल धरि ओकर मुँहसँ गों-गों शब्द बहराइत रहलैक आ ओ हाथ-पयर पटकैत रहल । फेर सौँसे शरीर क्लान्त आ सुन्न भऽ निश्चेष्ट भऽ गेलैक !

बाहर दलान लग कुकुर कानि रहल छलैक ।

प्रणव दौड़िकऽ अँगना पहुँचि मामीक पैर छूबऽ चाहैत छल । मामाक आशीर्वद लेबऽ चाहैत छल । गामक लोकक आशीर्वाद लेबऽ चाहैत छल ।

ट्रेनमे लोक कोच्चल छलैक । भरि राति एक्के टाँगपर ठाढ़ रहल । मुदा तैयो देह ने थाकल लगैत छलैक, ने अलसायल । ओ तऽ उल्लास आ उमंगमे दौड़ऽ चाहैत छल ।

मुदा दौड़िकऽ आब जयबाक बयस नहि छलैक । गाम भरिक लोक अकचका कऽ देखतैक— एक्कैस वर्षक जवान नेना कोना दौड़ल जा रहल छलैक ! सभकेँ हेतैक जे कलकत्तामे रहिओकऽ रहि गेल प्रणब्बा भुच्चरक भुच्चरे ।

ओना ओ पूरा बाबू बनल छल । देहपर नीक पैण्ट-कमीज आ पयरमे कीमती मोजापर चमकैत जूता । हाथमे बैग । आगू-आगू सूटकेस आ बेड होल्डर लेने कुली । स्टेशनपर तऽ कतेको चिन्हारो लोक ओकरा देखिकऽ आगू बढ़ि गेलैक । चिन्हबे नहि कयलकै ।

मुदा ओ तऽ सभकेँ चीन्हि रहल छलैक । कुलीकेँ सोर पाड़लकै— रे मण्टू, सामान उठा ।"

मण्टू अकचकयलैक आ फेर चिन्हैत बजलै– "अहाँ छी बौआ ! हम तऽ चिन्हबे नहि कयली ।" नहि जानि किएक ओ गुम्म भऽ गेलैक आ गुम्मे ठाढ़ रहलैक ।

ओ फेर टोकलकै–"एना गुम्म किए भेलेँ ? उठा सामान आ चल आंगन । सभ ठीक छैक ने गाममे ?"

"सभ ठीके है बौआ, चलू ।"

मण्टू सामान उठा आगू बढ़लैक । ओ चाहैत छल जे कने संग चलैक आ ओ गप्प करैत रहय । मुदा ओ आगुए-आगुए चलि रहल छलैक, गुम्म-सुम्म, नहि जानि किएक ?

गुमतीपर बिहारी मण्डल चिन्हलकै–"बहुत दिनपर गाम मोन पड़ल बौआ !" नहि जानि किएक ओहो एतबे बाजि गुम्म आ उदास भऽ गेलैक । प्रणवकेँ मोन आशंकित होमऽ लगलैक । नहि जानि की बात छैक ?

धारमे हेलाव पानि छलैक, नाव नहि छलैक । मण्टू पार भऽ गेलैक आगू । ओकरा जूता-मोजा खोलिकऽ पार करऽमे समय लगलैक । मन्दिर लग पहुँचल तऽ मण्टू ओतहि ठाढ़ छलैक । प्रणव खौँझाइत कहलकै– "एना किएक ठाढ़ छैँ, अंगना नहि देखल छौक की ?"

मण्टू आगू गेलैक । ओ राधाकृष्ण मन्दिर आ शिव मंदिर दुनू ठाम गोड़ लागि आयल । सामने मखना धानुखक दलानमे चुन्नू-पुतऽहुक दोकान छलैक । मुदा बाँसक फट्टक लागल छलैक आ ओतऽ क्यो नहि छलैक । फेर कखनो– यैह सोचैत प्रणव आगू बढ़ल ।

गामक लोक सभ अभरऽ लगलैक– प्रणव सभकेँ गोड़ लगलकै । मुदा जेना सभक मोन उदास भऽ जाइत होइ ओकरा देखि । ककरो मुँहमे बकार नहि । प्रणव एकदम डेरायले जकाँ अपन घरक बाट धयलक ।

सामने मण्टू ठाढ़ छलैक । मुदा घर कहाँ छलैक ? ई तऽ जोतल खेत छलैक । ने आमक गाछ, ने अँगनाक टाट । कहाँ गेलैक सभटा ? प्रणवक कोँढ़ आशंकासँ धड़धड़ाय लगलैक ।

मण्टू बजलैक– "कहाँ चलू बौआ ? किनका हियाँ ठहरब ?"

किनका हियाँ ठहरब ? दोसरक ओहि ठाम किएक ठहरब हम ? हमरा

मामा-मामी छथि-अपन घर अछि। प्रणव मण्टूक हाथ पकड़ैत बाजल-"मामा कहाँ गेला मण्टू ? बाज नहि तऽ बेजाय बात भऽ जेतौक।"

"आब की बाजू बौआ हम ? मामाकेँ साँप कटलक आ काल भऽ गेल। आब तऽ महीनासे ऊपर हो गेल...।"

"आ मामी...?" प्रणव जोरसँ हाथ दबबैत पुछलकै। मुदा मण्टू चुप्पे रहलैक। प्रणव ओकरा जोरसँ झकझोरैत कहलकै-"बाज ने मण्टू, कहाँ गेल हमर मामी ?"

"आब से हम की जाने गेली बौआ ? नह-केश से एक दिन पहिले रातिमे निपत्ता हो गेलन। कल्लू बाबूकेँ हाथ घर-घराड़ी बेचि हजार रुपया लेलनि आ राते-रात निपत्ता हो गेलन। मुदा नीमन नै कयलनि बौआ ! श्राद्धो ने भेल रहै अहाँक मामाक...आ ओ...

"चुप्प !" प्रणव जोरसँ गरजल। "के बजैत अछि एना ? कने हमर सामने तऽ बाजौ। छाउर लगा जीह घीचि लेबैक।"

-"ककर-ककर जीह घिचबहिक प्रणव ?" बगलक आँगनसँ बीरन बहरेलैक। "हमरे गरामे तऽ उत्तरी छल। पित्तीक उतरी गरामे आ पितिआइन निपत्ता, की की ने कहलक लोक। ऊपरसँ दण्ड। एगारहटा लोककेँ खुऔलियैक हम आ घराड़ी दऽ गेल छलथिन कल्लू चौधरीकेँ। सभटा पहिनेसँ ठीक कयने छलीह ककरो सङ्ग।"

"चुप्प रह बीरन ! लाज नहि होइत छौक ? कहैत छहुन पितिआइन आ हुनका लेल एहन गप्प !"

"लाज तऽ होइत अछि बाउ ! मुदा सत्तकेँ के छिपा सकैत छैक ? आब तऽ सभ जानि गेल छैक।" ओइ आँगनवाली नानी बहरयलथिन। प्रणव पयर छूबैत कहलकनि-"अहूँ सैह कहैत छी नानी ! हमर मामी एहन कऽ सकैत छथि, अहाँ विश्वास करै छी ? सभ झूठ बाजि रहल अछि। अहीँ तऽ कहने रही जे तोहर मामी देवी छथुन-साक्षात् लक्ष्मी। तोहर मायो एहने छलथुन' आ आइ कहैत छी जे हमर सैह मामी स्वामीक मृत्युक नवमे दिन घर छोड़ि ककरो संग पड़ा गेलीह ! नै नानी, नै, एहन बात कमसँ कम अहाँ नहि कहियनु नानी !"

"कोना ने कहियनु बाउ ! यदि सभ टा झूठ छैक तऽ कतऽ अलोप भऽ गेलीह ? स्वामीक श्राद्धो भरि नहि रुकलीह ? रातुक अन्हारमे नहि जानि किम्हर मुँह कारी कयलनि। छिः छिः छिः ...!

प्रणव आगू किछु नहि बाजल। बजबा लेल किछु छलैको नहि। चारू कातसँ लोक जुटि गेल छलैक। मण्टू मोटरी जमीनपर राखि ठाढ़ छलैक। एक बेर सभकेँ देखि मण्टूकेँ कहलकै-"उठा मोटरी मण्टू ! चल फेर स्टेशने।"

ओइ आँगनवाली बाबीक झुकल डाँड़ जेना एक्के बेर सोझ भऽ गेलनि-"की बजले तोँ ? स्टेशन जयबेँ ? मामी नहि छौक, तेँ ? मुदा, तहिया छलौक मामी जहिया पाँचे दिनुका छोड़ि माय चल गेलौक ? के पोसने छलौक तहिया ? यैह बुढ़िया नानी ने ! गरीब छौक, मुदा तेँ की तोरा लेल दू मुट्ठी अन्न नहि जुटा सकैत छौक ? अपन घर नहि छैक ओकरा, मुदा ओकरा कोरामे जगह छैक तोरा लेल।"

प्रणव दौड़िकऽ हुनका भरि पाँज पकड़ि कानऽ लागल, फेरसँ पाँच दिनुका नेना बनि गेल। एतेक कालसँ रुकल नोरक धार बहि गेलैक। टूगर छल, माय-बाप नहि छलैक, मामा-मामी पोसलकै, आइ ओहो नहि रहलैक। दुनियामे एकदम एकसर भऽ गेल।

नहि जानि मुरलीकेँ कोना खबरि लागि गेल छलैक ? बिगड़ले अयलैक-"खूब दोस्त बहरयलेँ तोहूँ ? बाबी नहि रोकितथुन, तऽ हमरालोकनि देखबो नहि करितियौक तोरा। बाबी, आइ हमरे ओहि ठाम रहऽ दियौक एकरा, चारि वर्ष पर आयल अछि, आइ हमरो दोकान बन्न। दुनू दोस्त खूब घूमब, गप्प-सप्प करब, लऽ जइयौक बाबी ?"

बाबी हँसिकऽ मूड़ी डोला देलथिन आ मुरली मण्टूकेँ धयलक "उठा, जल्दी चल हमरा ओइठाम।"

मुरलीयोक बाप मारि गेल छलैक, अपने मालिक छल आब। अपन बाहरवला कोठलीमे ओकर रहबाक इन्तजाम कऽ आँगन गेल। लगले चाह, फेर जलखइ, फेर भोजन। मुरली एकदम मोस्तैद छलैक सभ तरहेँ। प्रणवकेँ लगलैक जेना अखनो क्यो छलैक गाममे— ओकर नानी छैक, मुरली छैक आ मुनेसरा।

मुनेसराक ध्यान अबिते टोकलकै मुरलीकेँ— "मुनेसराकेँ खबरि नहि देलहिक मुरली ?"

-"ओ कहाँ छौक गाममे ? रेलबेमे नौकरी करैत छौक" मुरली जवाब तऽ देलकै मुदा प्रणवकेँ लगलैक जेना ओकर प्रश्न मुरलीकेँ नीक नहि लगलैक।

अपने बजलैक मुरली-"तोहीँ दोस्त बनौने रहैत छलहिक ओकरा। छोटका लोककेँ एतेक चढ़ायब नीक नहि होइत छैक। चारि पाइ कमाइत अछि तऽ

नेता बनि गेल अछि– दुसधटोलीक लोक सभकेँ भड़कबैत रहैत छैक, जन-मजदूर भेटब लोककेँ मस्किल भऽ गेल छैक । शहरक रेट चाहिऐक, बेगार नहि करत, रेटसँ मजदूरी दियऽ ।

प्रणव अनठा देलकै, जवाब नहि देलकै । लगलैक जेना एहिमे मुरलीक कोनो दोष नहि छलैक । शिक्षाक अभावक दोष छलैक । पढ़ि-लिखि नहि सकलैक मुरली । बनियागिरी सीखि गेल छलैक । नफा-नोकसान खूब बुझैत छलैक । मजदूरक उचित मजदूरीसँ ओकरा कोनो सरोकार नहि छलैक । ओकरा तऽ चारि कैंचा बचयबासँ मतलब छलैक, से चाहे कनमा-आध कनमा कम जोखिकऽ होइ, तेलमे फेंट-फाँट कऽकऽ होइ वा ककरो मजदूरी काटिकऽ होइ । दुनियाँमे सभ सुखी-सम्पन्न लोक एहिना सोचैत अछि । अलाय-बलाय सोचबा लेल तऽ बहुत रास लोक छैक ? ओकरा कलकत्ताक अपन मोहल्ला आ ओइ मोहल्लाक मजदूर आ बेकार नौजवान सभ मोन पड़लैक, ओकर सभक गप्प मोन पड़लैक । मुदा ओ चुप्पे रहल ।

ओकरा चुप्प देखि मुरली बजलैक "मुनेसराक निन्दा तोरा अधलाह लगलौक ? खास दोस्त छौक तोहर । मुदा तोँ गाममे नहि रहैत छेँ, गामक समस्या नहि जानल छौक तोरा । पुछही सभसँ, केहन उत्पात कयने अछि मुनेसरा !"

"मुनेसरा की की उत्पात करैत छौ, से तऽ हम सत्ते नहि जनैत छियौ, मुदा गाममे आरो लोक सभ छौक जे नित्य उत्पात करैत छौक, तकरापर क्रोध नहि होइत छौ ?" प्रणव मुरलीकेँ कनेक उकसौलकै ।

मुदा मुरलीपर कोनो असरि नहि भेलैक । ओ आक्रामक फुटबौल खिलाड़ी, आब बुझनुक दुनियादार लोक भऽ गेल छलैक । क्रोध आ प्रतिक्रिया नफा-नोकसानक हिसाबसँ व्यक्त करऽ लागल छलैक । गाममे दस बीघा खेती छलैक, दोकान छलैक । खेतीमे बेगार चाहिऐक, सस्त मजदूर चाहिऐक, मुनेसरा सभकेँ भड़कौतैक तऽ की हाल हेतैक ? क्रोध वाजिब छलैक । मुदा कल्लू चौधरी कोनो मोसम्मातक घराड़ी जोति लेलथिन ताहिमे ओ किएक बाजत ? चाहे ओ मोसम्मात नेनपनक दोस्त प्रणवक मामियेक किएक ने होथुन ? आ फेर कोनो जबर्दस्ती दखल तऽ छलैक नहि । सादा कागजपर औंठा-छाप । हजार टाका लऽ नहि जानि किम्हर निपत्ता भऽ गेलीह ?

मुदा प्रणव आर उकसौलकै–"हम कल्लू चौधरीक गप्प करैत छियौक । घराड़ी जोतिकऽ राहड़ि उपजा लेलनि आ तोँ सभ चुप्प रहलैँ ! ओ सादा कागजक निशानक कोन भरोस ? नहि जानि ककर छैक ?"

मुदा मुरली ओहिना तटस्थ रहलैक–"सैह तऽ हमहूँ कहैत छियौक जे निशान ककर छैक से के कहतैक ? कहाँ छथुन तोहर मामी ? के फैसला करतैक ? जे कहथिन जे हमर निशान नहि अछि, पहिने हुनके ताकि ला ने !" प्रणव चुप्प भऽ गेल । मुरलियो कने सकपका गेल । भरिसक बेशी अधलाह बात बजा गेलैक । चारि वर्षसँ ऊपरपर बालसंगी गाम आयल छलैक, एहन अप्रिय बात ओकरा नहि कहबाक चाही । बात टारबाक लेल कहलकै–"आब छोड़ ओ गप्प । एहि गाममे बसबेँ तऽ हम तोरा घराड़ीक जमीन देबौक । तोँ गुणी छेँ, एहन-एहन कतेक घराड़ी कमाकऽ खरीद लेबैं । छोड़ ओकर गप्प, किछु काल आराम कर । हमहूँ आँगनसँ भेने अबैत छी ।"

मुरली आँगन चल गेलैक । मुदा प्रणव ओहिना बैसल रहल । पड़बाक वा आराम करबाक कनियो इच्छा नहि भेलैक । मोन उद्विग्न छलैक, भीतर किछु कछमछा रहल छलैक । ओ कोठलीक दरबज्जा भिड़कबैत बाहर बाटपर चल आयल । दुपहरिया बीति गेल छलैक । मुदा रौदमे तैयो धाही छलैक । प्रणवक मोनक धाही सभसँ जोरगर छलैक । ओ बिना कोनो बातपर ध्यान देने आगू बढ़ल गेल । डेग अनायासे कल्लू चौधरीक दलान दिस बढ़ि गेलैक ।

विशाल हवेली किछु आर पुरान आ बदरंग भऽ गेल छलैक । दूरसँ दुमहलाक सभ टा कोठलीक बन्द दरबज्जा-खिड़की देखि लगैत छलैक जेना ऊपर क्यो नहि रहैत होइ । हवेलीक अहाताक छहरदेबाली ततेक ऊँच छलैक जे आँगन आ दुमहलाक हिस्सा देखब मस्किल छलैक । हवेलीक फाटकपर ताला लटकल छलैक ।

मुदा छहरदेवालीक बाहर दलानमे चौकीपर एक टा बड़का मसलंगक संग ओंगठल बैसल छलाह कल्लू चौधरी । प्रणव धड़धड़ायल दलानपर चढ़ि गेल आ चौकी लग पहुँचि गेल ।

ओकर मुँह देखिते जेना डेरा गेलाह कल्लू चौधरी । मुदा अपन घबराहटिकेँ नुकबैत कनेक रुच्छ स्वरमे बजलाह–"तोँ फेर किएक अयलैँ एतऽ ? तोरा एक दिन मना कयने छलियौक । अइ दलानपर चढ़बाक साहस कोना भेलौक ?"

प्रणव आरो लग अबैत बाजल–"अहाँकेँ एक टा विधवाक घराड़ी जोति लेबाक साहस भेल, अहाँकेँ एक टा नकली औंठाछाप देखा गाम भरिकेँ ठकबाक साहस भेल, तऽ हमरा सुपत बात लेल अहाँक दलान वा कोनो ठाम जयबाक साहस किएक नहि हैत ? तेँ अहाँकेँ कहि दैत छी जे ओ घराड़ी छोड़ि दियऽ ने तऽ हम किछुओ उठा नहि राखब, सत्त-झूठ के देखार कऽ छोड़ब ।"

प्रणवक रंग-ढंग देखि जेना सकपका गेलाह कल्लू चौधरी । मुदा ऊपरसँ

ओहिना कड़कैत बजलाह–"बेश, तऽ कऽ लिहैं सत्त-झूठक फैसला जेना करबाक होउ । मुदा एखन निकल एहि दरबज्जासँ आ फेर दोबारा पयर नै दिहैं एतऽ ।"

प्रणवकेँ नहि जानि किएक माला मोन पड़लैक । कहने छलैक-'विचित्र सम्बन्ध छौक तोरा अइ हवेलीसँ । एक दिन कने हाथ छूलैं हमर तऽ चाट मारि देलियौ । आइ किताब मँगलहिक शीलासँ, दरबज्जेसँ खेहारि देल गेलैँ ।" आइ ओ रहितैक तऽ फेर खिलखिलाकऽ हँसितैक–"फेर निकालल गेलैं । आइ मामा-मामीक घराड़ी माँगऽ आयल छलैं । बिसरि गेलौ जे एहन-एहन कतेक घराड़ी जोतिकऽ ई बड़का हवेली आ जमींदारी ठाढ़ भेल छलैक ? जमींदारी चल गेलैक तेँ कि दलानपर चढ़िकऽ क्यो हक मँगतैक ?" मुदा तखन खिलखिलाकऽ हँसऽवाली माला वा गम्भीर गुमसुम शीला क्यो नहि छलैक ।

ओकरा गुमसुम देखि कल्लू चौधरीक जोश बढ़लनि–"हद निर्लज्ज छैँ तोहूँ ! एतेक कहलोपर दरबज्जेपर ठाढ़ छैँ । बजाउ लोकसभकेँ की जयबैँ अपने !"

प्रणवक ध्यान टुटलैक । ई की सोचऽ लागल ओ ? ओ तऽ अपन जोतल घराड़ी आ निपत्ता मामीक खोज लेबऽ आयल छल । ई माला-शीला कहाँसँ आबि गेलैक बीचमे ? ओ दलानसँ नीचाँ उतरैत कठोर स्वरमे बाजल–"एकर परिणाम ठीक नहि हैत । अइ घराड़ीकेँ ओना नहि छोड़ब हम, से कहि दैत छी । आइ जाइत छी हम, मुदा एक दिन अधिकारपूर्वक ई घराड़ी अहाँसँ लेब आ संगहि लेब ओइ सभ अपमानक बदला जकर हिसाब हमरा लग अछि । दिन गनैत रहू ।"

प्रणव गामक पश्चिम दिस बढ़ल । ओकर डेग तेज भऽ गेलैक । ओ झगड़ा करबाक नेयारसँ हवेली दिस नहि गेल छल । मुदा कल्लू चौधरीकेँ देखि आ हुनकर बात सुनि क्रोध आबि गेलैक । ओकर दुनू गोटेक गप्प सुनि अगल-बगलसँ लोक जमा भऽ गेल छलैक, मुदा प्रणव बिनु ककरो देखने आगू बढ़ि गेल ।

धनुकटोली आ दुसधटोलीक धीया-पुता आ स्त्रिगण सभ ओकरा चिन्हबाक चेष्टा करैत निहारऽ लगलैक । पुरुषसभ चीन्हिकऽ हाथ जोड़लकै आ प्रत्युत्तर दैत आगू बढ़ैत गेल प्रणव । मुनेसराक घर लग आबि सोर पाड़लकै । कोनो उत्तर नहि भेटलैक । ओकर स्वर सुनि अगल-बगलसँ बदरा, हजरा आ सिबुआ बाहर आबि गेलैक । बदरा कहलकै–"मुनेसरा तऽ खाली रविएकऽ गाम अबै है ! ओकरा रेलबइ के नौकरी हइ । अहाँ की करै छियै बौआ ?"

"पढ़ै छी, कलकत्तामे" प्रणवक उत्तरपर तीनूकेँ बड़ आश्चर्य भेलैक

"अभीले पढ़िते छियै बौआ ? अहाँक संगी मुनेसरा त चारि सालसँ कमाइ है...खूब पाइ होइ छै...।

"आ तोहर सभक की हाल छौ ?"

"हमरा सभकेँ की हाल रहत बौआ ? जेहिनती रहली, ओहिनती छी । दुनिया बदलि गेलै, मुदा हमरा सभकेँ कुच्छो ने बदलल । अढ़ाइ सेर मड़ुआ काल्हियो बोनि मिलै छल, आइयो मिलै है । धान नहि, गहूम नहि– खाली मड़ुआ, खेसारी आ अल्हुआ । गरीबकेँ तऽ इहे जान है बौआ, एकरे आस । हप्तामे तीन दिन ओहीनती बुलाहट हवेली सभसँ, कने बाड़ी कमा दे, कने हाट जो । ने बोनि ने बुतात । तीन दिन-चारि दिन काज कयली घूम-फिरिकेँ, ताहू लेल नाराज मालिक । सभ दिन बेगारी करू तऽ खाउ की ? आ बोलू तऽ खाल खिचा जायत । हे देखि लू बेंतक निशान, काल्हिये रूदल बाबू बेकसूर छड़पिटा देलनि ।

सिबुआ एतेक काल चुप्प छल । बाजल-"देहक मारि, भूखक मारि तऽ सहिते छी बौआ ! ऊपरसे इज्जतिपर हमला । हमरा आरके बहु-बेटीकेँ इज्जति नहि है–जखन मोन भेल घोंकि देलौं । काल्हिये साँझमे हमर बहिन इमिरतीकेँ बंकू बाबू छूरा देखा देलन गाछी लग । भगमान रच्छा कयलकै, स्कूलिया छौँड़ासभ ओही बाटे जाइत रहलै । भागि गेला । मुदा कहिया धरि बौआ हम सब एहिना सहबै ? रमेसरा ठीक कहै है, हमरा आर जानवर छी, हमरासभकेँ एहिना जोतल जैत, पीटल जैत । हमरा सभक बहु-बेटीकेँ गाछी-बिरछीमे पटकल जैत ।"

मुरलियो यैह कहने छलैक । मुनेसरा लोक सभकेँ किछु कहैत छैक । सिबुओ कहैत छैक– "मुनेसरा ठीके कहने छल ।" मुनेसरा बुझनुक भऽ गेल अछि– गामक दस लोक ओकर चर्चा करैत छैक । ओकरासँ भेँट करबाक बड़ मोन भऽ रहल छलैक प्रणवकेँ । मुदा तकर कोनो उपाय नहि छलैक ।

प्रणव एक बेर फेर दुसधटोली दिस तकलक । टोलक नक्शामे कोनो परिवर्तन नहि भेल छलैक । करीब पचासेक घर, छोट-छोट सटल-सटल । मस्किलसँ तीन हाथ ऊँच । घरक टाटक फाँकसँ सभ-किछु झलकैत । एकाध टा घर माटिसँ लेबल । बाकी नांगट टाट आ उजड़ल सन चारपर लत्तीसभ । दरबज्जा सभपर कतहु-कतहु गाय-महीँस ।

कारी-कारी धीया-पुता दसो-बारह बरखक छौंड़ासभ नांगट बाटपर ओंघराइत । मुनेसराक घर सभसँ फराक आ चिक्कन लागि रहल छलैक । फूसेक, मुदा दू टा

पैघ-पैघ घर । बाहरक ओसारा चाकर आ नीपल । आगूमे गाय-महीँस दुनू । बाड़ी दिस केरा आ लतामक गाछ । टोलक पहिल मैट्रिक फेल नौकरिहाराक घर । रेलवेक सरकारी नौकरी ।

प्रणव स्कूल दिस बढ़ि गेल । हेडमास्टर साहेबक पैर छुलकनि तऽ गद्‌गद् भऽ गेलथिन । मिर्जा साहब तऽ दौड़िकऽ छातीसँ लगा लेलथिन । बाँकिओ मास्टर सभ आबि गेलथिन । छुट्टी भऽ गेल छलैक ।

–"और क्या सब हो रहा है बेटे, कुछ हमें भी सुनाओ ।"

प्रणव सभ टा कहलकनि । आइ.ए. मे नीक फर्स्ट डिवीजन आबि गेल छलैक । अंग्रेजीमे आनर्स रखने छल । परीक्षा नीक भेल छलैक । फर्स्ट क्लास भेटबाक चाहिऐक । एम.ए. करत, प्रतियोगितामे बैसत ।

हेडमास्टर आ मिर्जा साहेब एक संग कहलथिन– "तोँ अबस्स कम्पीट करबेँ । हमरा विश्वास अछि । तोहर सन विद्यार्थी ने पहिने छल ने तोहर बाद आयल ।" प्रणव बड़ी काल धरि स्कूलेमे रहि गेल ।

साँझ भऽ गेल छलैक । झलफल अन्हार । इजोरिया तावत नहि छिटकल छलैक । स्कूलसँ घुरैत काल फेर ओकर मोन अशान्त आ उद्विग्न भऽ गेलैक– मामा नहि रहलाह, मामी नहि जानि कतऽ छथि ? घराड़ी कल्लू चौधरी जोति लेलनि । आब अइ गाम आ अइ गामक लोकसँ सभ टा सम्बन्ध छूटि जायत । भरिसक ई अन्तिम यात्रा थिक अइ गामक ।

तखने चुन्नूक पुतऽहु मोन पड़लैक । भोरमे अबैत काल ओकर दोकान खाली देखने छलैक । मुरलीक घरसँ अबितो काल ओकर दोकान खाली देखने छलैक । मुरलीसँ पुछबो बिसरि गेलैक–एक बेर भेँट करबाक चाही । देखी चिन्हैत अछि कि नहि ?

मुदा ओइ घरक फट्टक ओहिना बन्न छलैक । ने कोनो चिरागबत्ती, ने कोनो उचाबच्च । एकदम शान्त छलैक घर, जेना क्यो नहि होइ । भीतर अँगना दिससँ किछु इजोत आ स्वर आबि रहल छलैक । मुदा ककरा पुछितैक ? क्यो नहि अभरि रहल छलैक ।

ओ आगू बढ़िकऽ शिव-मन्दिरक प्रांगणमे आयल । अन्हारमे किछुओ नहि सुझैत छलैक । सामने राधा-कृष्णक मन्दिरक भनसाघरमे इजोत छलैक । बाँकी सभ अन्हार । धारक कछेर, मन्दिरक प्रांगण— सभ अन्हारमे डूबल । प्रणव घुरऽ लागल ।

तखने लगलैक जेना शिवमन्दिरक चबूतरापर क्यो होइ, कोनो वस्तु हिललैक । प्रणव कनेक लग अबैत पुछलकै–"के अछि ?"

बड़ी काल धरि कोनो उत्तर नहि भेटलैक । प्रणव फेर टोकलकै । अइ बेर थरथरायल स्वर अयलैक–"हमरा नहि चीन्है छी ?" आर के रहत एतऽ अन्हारमे ?

ई तऽ चीन्हल स्वर छलैक– चुन्नूक पुतऽहु ! एतऽ अन्हारमे की कऽ रहल छलैक एकसरि ? प्रणव एकदम लग जा बैसि गेलैक–"हमरा नहि चिन्हलैँ ? हम छी प्रणव ।"

चुन्नूक पुतऽहु कसिकऽ पकड़ि लेलकै ओकर देह–"सेहे तऽ कहली जे ई के आबि गेल नव अइ गाममे जे हमरा टोकि रहल है । कहिआ अयलहुँ बौआ ? अहाँकेँ तऽ भगमान सर्वनाश कऽ देलनि । की करबै ? ओहे फेर सभ ठीक कऽ देता । मुदा गामवलाकेँ बातपर नै जैब, अहाँक मामी देवी छली । ओ मरि जयती मुदा कहीँ ऐन्ने-ओन्ने नहि जयती ।"

प्रणवकेँ नीक लगलैक । चुन्नुक पुतऽहु मामीकेँ चिन्हैत छलैक । गाममे खाली वैह टा चिन्हैत छलैक । ओ धाही जे भोरसँ ओकर मोनकेँ धधकौने छलैक, शान्त भऽ गेलैक । गाममे क्यो छलैक जे ओकर मोनक बात बुझैत छलैक, ओकर मामीकेँ चिन्हैत छलैक ।

प्रणव बड़ी राति धरि ओही ठाम चुन्नूक पुतऽहुक सङ्ग शिव-मंदिरक चबूतरापर बैसल रहि गेल । बुढ़बा मरि गेलै, रोगियो छलैक तऽ पुरुष छलैक । आसरा छलैक । एकसर छोड़ि गेलैक । बापक क्रियाकर्ममे बेटा सभ अयलैक मुदा माय तऽ बोझ छलैक, ओकरा क्यो नहि लऽ गेलैक । चून्नूक पुतऽहु ओतहि रहि गेल । मुदा आब ओकर मुरही आ झिल्ली-कचरी लोककेँ स्वादिष्ट नहि लगैत छलैक । गाममे नव-नव दोकान खुजि गेल छलैक– चाह बिस्कुट भेटैत छलैक, प्लेटमे कचरी आ मसाला मिलाकऽ मुरही भेटैत छलैक । चुन्नूक पुतऽहु माँगि-चाँगिकऽ गुजर करैत छल । भिखमंगनीकेँ के घर दितैक ? मन्दिरक ओसारापर पड़ल रहैत छल । आब तऽ गाममे भीखो नहि भेटैत छलैक, गामे-गाम बौआइत छल, थाकल-ठेहिआयल साँझ कऽ मन्दिरक ओसारापर पड़ि रहैत छल । एक दिन भोला बाबा शरण देथिन, तकरे आस छलैक ।

प्रणव सुनिते रहि गेल । मामी नहि रहलैक । मामीकेँ चिन्हऽवाली चुन्नूक पुतऽहु सेहो नहि रहतैक बेसी दिन । एक दिन अही चबूतरापर शान्त पड़ि रहतैक ।

गामवला सभ ओहि पार बेटासभकेँ खबरि करतैक । भरिसक कोनो बेटा आगि दऽ दैक, भरिसक गामक लोकसभ मिलि धारमे बहा दैक । के देखतैक ?

प्रणवकेँ लगलैक जेना चारि वर्ष पहिने गाम छोड़बाक ओकर निश्चये अइ सभक जड़िमे छलैक । ने ओ गाम छोड़ैत, ने ई सभ होइतैक । ओ गाममे रहैत, मामीक रक्षा करैत...चुन्नूक पुतऽहुकेँ देखितैक । आब ओ की करत पढ़ि-लिखिकऽ ? ककरा लेल पढ़त, ककरा देतैक कमाकऽ ?

चुन्नूक पुतऽहु बड़ी राति धरि ओकरा बुझबैत रहलैक । ओकर संग कनैत रहलैक । नहि जानि कतेक राति बितलैक । सौंसे गाम निसबद्ध भऽ गेल छलैक । प्रणव चुन्नूक पुतऽहुक बूढ़ देह चबूतरापर पसरि गेलैक, आँखि लागि गेलैक । प्रणव उठल । पाकिटमे किछु टाका छलैक, मामीकेँ दितैक । मामी नहि छलैक, आब ककरा देतैक ? ओ सभ टा टाका चुन्नूक पुतऽहुक खूँटमे बान्हि देलकै ।

इजोरिया उगि गेल छलैक । ओ गाम दिस नहि गेल । फेर धारक कातेकात बान्हपर दने पश्चिम दिस बढ़ल । घाटपर मलाह नावमे सूतल नहि छलैक । खाली नाव बान्हल छलैक । घाटपरक ठुट्ठ पीपरक डारिपात इजोरियामे एक टा विचित्र आकृति बना रहल छलैक, जेना गाछपर एकटा विशाल आकृति ठाढ़ होइ ! रामबाबू-गाछीक भीतर इजोरियोमे अन्हार छलैक– तेहन झमटगर गाछी छलनि । लग दने जाइत काल लोककेँ डर होइत छलैक, जेना क्यो गाछीक अन्हारसँ बहरा नरेटी दबा देतैक ! सामने ओइ पार बँसबिट्टी छलैक । हवामे बाँस हिलैत छलैक आ बँसबिट्टीसँ किछु आवाज होइत छलैक आ देह सिहरि जाइत छलैक । चारूकात पसरल इजोरियामे एकटा भयावहता छैक । श्मशानक गाछक पातसभ हवामे सिहकैत छलैक आ रोइयाँ भुलकैत छलैक । एही ठाम मामाक सारा हेतनि । प्रणव चिन्हबाक चेष्टा कयलक । मुदा चारू कात सारासभ छलैक– नव-पुरान । चिन्हब कठिन भऽ गेलैक । ओही ठाम श्मशान लग बान्हपर बैसि गेल ओ ।

किम्हरोसँ हवामे कोनो ध्वनि भेलैक आ सभटा रोइयाँ ठाढ़ भऽ गेल छलैक । यत्र-तत्र हड्डी आ मुण्डसभ पड़ल छलैक । ओकरा घूरन मिसरक बात मोन पड़लैक । अही श्मशानक गाछपर भूत-प्रेत आ अही जमीनपर डाइन-जोगिन नँगटे नचैत छलैक । कहाँ गेलैक ओसभ ? यदि ओ सभ एकाएक सामने आबि जाइ ? सोचिए कऽ देह सर्द होबऽ लगलैक । उठबाक चेष्टा कयलक, मुदा लगलैक जेना मुण्ड सभ हिलऽ लागल होइ ! ओ जोरसँ चिचिआय लागल, मुदा कण्ठसँ बकार नहि फुटलैक ॥

तखने एकटा उज्जर नूआ पहिरने मौगी धारक घाट लग नहि जानि कहाँसँ आबि गेलैक ? अबस्से पंजा उनटल हेतैक, ककरो घेरिकऽ चून-तमाकू मंगतैक । मुदा ओ तऽ नाव लऽ ओहि पार विदा भऽ गेलैक । ओइ पार पहुँचैत देरी नाव लग भुक्क दऽ इजोत उगलैक आ फेर मिझा गेलैक । फेर भुक्क दऽ उगलैक, फेर मिझा गेलैक । फेर उगलैक आ फेर सभ मिझा गेलैक । ओ उज्जर साड़ियो निपत्ता भऽ गेलैक । राकस आ डाइन !

प्रणवक सर्द हेमाल देहमे ठाढ़ हेबाक ताकति सेहो नहि छलैक । लागि रहल छलैक जेना क्यो बेर-बेर सोर पाड़ि रहल होइ ! अबस्से कोनो भूत हेतैक । ओकरा घुरियोकऽ देखबाक साहस नहि भऽ रहल छलैक ।

ओ स्वर समीप आबि गेलैक । लालटेन लेने मुरली आ ओकर हरबाह मंगना छलैक । ओकरा श्मशानमे बैसल देखि मुरली आतंकित भऽ गेलैक– "की भेलौ रे ? एना एतऽ किएक बैसल छेँ ? हम तऽ सौंसे गाम ताकिकऽ हारि गेलियौक । एम्हर कोना अयलैँ ?"

प्रणवक बकार फुटलैक "नहि जानि किएक अयलहुँ, आबिकऽ बैसियो रहलहुँ । फेर उठले नहि गेल । बैसिले रहि गेलहुँ ।"

मुरली पुछलकै– "किछु देखलहिक ?" प्रणव सभ टा कहलकै । इहो कहलकै जे कोना घाटपर एकटा नूआवाली आ फेर एक टा भुकभुक करैत इजोत अयलैक । कोना दुनू निपत्ता भऽ गेलैक ।"

मुरली जोरसँ हँसलैक–"तखन तऽ तोँ सत्ते राकस आ डाइन देखलेँ । ओ डइनियाँ छलौ–मधु । नहि चिन्हलहिक ? भोला झाक बेटी माधुरी, आ राकस छलौ मिसर । ओइ पारक पलटू मिसर । राति भरि दुनू एहिना बुलैत अछि धारक कातमे । चल-चल, भरि घर अन्देसामे पड़ल अछि ।"

ओइ राति प्रणवक आँखि एक्को मिनटक लेल बन्न नहि भेलैक । भरि राति जगले रहि गेल । दू बजे रातिमे तऽ श्मशानेसँ घुरल छल । मुरली पकड़ि अनने छलैक । खयबाक कनियो इच्छा नहि छलैक मुदा ओ नहि मानलकै ।

आ फेर घर भरि सूति रहलैक । मुदा प्रणव जागल रहल । मोन भऽ रहल

छलैक जे भरि गाम फेर बौआय, के जानय यैह अन्तिम होइ ! आब के रहि गेल छैक गाममे, ओ तऽ भोरे घुरि गेल रहैत । मुरली नहि मानलकै ।

मुदा मिसर आ मधुक जे खिस्सा श्मशानसँ घुरैत काल मुरली कहलकै सेहो मानि लेबाक ओकरा इच्छा नहि भऽ रहल छलैक । यद्यपि अइमे ओकर इच्छा-अनिच्छाक प्रश्न नहि छलैक । सत्य छलैक, मुरली जनैत छलैक, गामक सभ लोक जनैत छलैक ।

आ, प्रणव की नहि जनैत छलैक ? चारिये वर्ष तऽ गाम छोड़ना भेल छलैक आ मधुक खिस्सा तऽ बड़ पुरान छलैक । बारहमेमे विवाह भेलैक आ पन्द्रहममे माय बनि गेल । प्रणवसँ पाँच वर्ष पैघ छलैक मधु । जहिया प्रणवकेँ होश भेलैक, मधुक कोरामे एकटा बेटी छलैक । मुदा मधुक देह ओहिना कुमारि लगैत छलैक आ आकृति छलैक एकदम गोर-दकदक आ सुन्नर । जे देखैक, देखिते रहि जाइ ।

मुदा प्रणव ओकर वरकेँ देखिते रहि गेलैक । गाममे रहैत छलैक- घरजमैया जकाँ । बड़ धनिक नहि छलथिन मधुक बाप, मुदा गरीबो नहि छलथिन। दस बीघा धनहर जमीन छलनि, आ छलनि एकटा सोन सन बेटी मधु । मुदा जमाय लऽ अनलाह एकदम असर्ध । बयसमे मधुसँ बीस बरख जेठ, रंग कारी, आकृति बेढंग । प्रणव मालाक वरकेँ देखि जतेक नहि चौँकल छल, ओइसँ पहिने मधुक वर देखि दुःख भेल छलैक । माला सुन्नरि छल, मुदा मधु तऽ छल एकदम अद्वितीय। जेहने रङ्ग, तेहने देह, तेहने गढ़नि ।

लोक सभ नहि जानि की सभ कहैत छलैक ? दस वर्षक छल प्रणव तऽ गामक एकटा भौजी मामीकेँ कहैत रहथिन जे मधु वर लग नहि जाइत छलैक । चतुर्थियो राति नहि गेलैक । जे सभ घर देबऽ गेलैक, सभकेँ दाँते काटि लेलकै । वर हाथ पकड़ि भीतर घिचलकै तऽ ओकर धोती फाड़ि देलकै । धकेलि कऽ भागि गेलैक । मुदा आब सन्तान होनिहारी छलैक ओकरा ।

नहि जानि की भेलैक जे सन्तान हेबाक बात सुनि जे ओकर वर निपत्ता भेलैक, से निपत्ते रहलैक । पहिल बेटी भेलैक । दू बरखक बाद बेटा भेलैक आ तकर तीन बरखक बाद बेटी । वरक कोनो पता नहि छलैक ।

मुदा गामवलाकेँ सभ पता छलैक । पहिलक बाप छलैक रतन । कल्लूए चौधरीक भातिज । जमींदारक बेटा । भाग भोला झाक, नतिनी भेलनि । जमाय निपत्ता छलथिन, तैयो लोक किछु नहि कहलकनि ।

दोसर छलनि नाती, दुइये वर्षक बाद आ जमाय अढ़ाइ वर्षसँ निपत्ता छलथिन । पता ओहू बेर लोककेँ छलैक । बसन्त बेशीकाल ओम्हर जाइत छल, राति-बिराति एकसरुआ छल, ने जोरू ने जाता । गाममे कने-मने कलमल भेलैक मुदा फेर शान्त । एना तऽ होइते रहैत छैक । गर्द भेलासँ आर बदनामी, चुप्पे नीक ।

मुदा तेसर बेर हँगामा भऽ गेलैक । पाँच बरखक बाद दोसर बेटी भेल छलैक आ वर साढ़े पाँच बर्षसँ निपत्ता छलथिन । पता अहू बेर लोककेँ छलैक, मुदा बजरंगी बिआहल छल । तीनटा धीयापुता छलैक । कनियाँ गर्द मचा देलकै आ भोला झाक आंगन पैसि तीन पुश्तक उद्धार कऽ देलकनि ।

मधुओ किछु उठा नहि रखलकनि । ककरोसँ दबऽवाली नहि छल । मुदा भोला झा चुप्प भेलाह से चुप्पे रहलाह । जेना बकझर लागि गेलनि । दोसरे मास ओहिना गुमसुम विदा भऽ गेलाह- दरबज्जापर भोरमे ठण्डा देह पड़ल छलनि ।

मुदा मधु लहकैत चल गेल । संख्या बढ़ैत गेलैक लोक सभक । प्रणवकेँ आश्चर्य होइ मधुकेँ देखि । बीस बरखक वयसमे तीन सन्तानक माय बनि गेल छलैक, पाँच बरख जेठ छलैक ओकरासँ । मुदा लगैक जेना पन्द्रह वर्षक छौंड़ी होइ, ओकरोसँ छोट । एकदम सुकुमारि आ अक्षत ।

मुदा डर तऽ ओकरो होमऽ लागल छलैक । गाममे तीनिए टा मौगीसँ डर होइत छलैक ओकरा । एकटा माला जे विवाहक बाद तेहन घातक भऽ गेल छलैक जे जहाँ भेटैत छलैक बाज जकाँ झपटैत छलैक । दोसर मधु जे ओकरा सहटिकऽ जाइत देखि बाट छेकि लैत छलैक-"हमरासँ डर होइ छौ, खा जेबौ ?" प्रणव निरीह जकाँ हँसैत छल आ मधु बाट छोड़ि दैत छलैक । तेसर चुमकी । स्कूल जाइत काल धनुकटोली लग सभ दिन बाट घेरि लैक-"अहाँ नहि बजबै छी कहियो ! लाज होइ-ए ?"

-"लाज किएक हैत गे तोरासँ ? मुदा कथी ले' बजैबो तोरा ? कोन काज अछि हमरा ?" प्रणव खिसियाकऽ कहैत छलैक ।

चुमकी खूब हँसैत छलैक आ कहैत छलैक-"अहाँ तऽ तेना काज पुछै छी जे हमरे लाज होइ-ए । काज तऽ सभकेँ एक्के रहैत छै, अहाँकेँ नहि अछि ?"

प्रणव बुझलक । तामस भेलैक आ डाँटिकऽ कहलकै-"लाज नहि होइ छौ ? जे बजबै छौ, सभ लग चल जाइ छैँ । तोरासँ नीक तऽ कुकुरो-बिलाड़ि अछि ।" चुमकी एकदम गम्भीर भऽ गेलैक-"ठीक कहलौँ अहाँ । हम तऽ

पिलिओसँ गेल गुजरल छी– सभ लग अपने मोने पसरि रहै छी । मुदा नहि पसरब तऽ की हैत ? उठाकऽ लऽ जैत, घिसियाक लऽ जैत । ई गाम मालिक-मोख्तारक छैक, रैयतकें के पुछतैक ? चाहे मोनसँ जाइ, चाहे जबर्दस्ती, फर्क की छैक ?"

प्रणवकें चुप्प आ अवाक् देखि चुमकी हँसऽ लगलैक–"मुदा अहाँ जबर्दस्तियो उठाकऽ लऽ जायब तऽ हम किछु नहि बाजब, सप्पत खाइ छी ।"

तहियासँ प्रणवकें आरो डर होबऽ लगलैक ओकरासँ ।

प्रणवक जिनगीमे तहिया दुइये तरहक स्त्री छलैक । मामी, ओइ आंगनवाली नानी, चुन्नूक पुतऽहु । कारी खोरनाठ वयसाहु मामक स्त्री मामी, बालविधवा ओइ आंगनवाली नानी, रोगिआह स्वामीक लेल दिनराति व्यस्त चुन्नूक पुतऽहु । एहि तरहक स्त्री सभ प्रणवकें स्नेह करैत छलैक । प्रणवकें हिनका सभसँ डर नहि होइत छलैक । हिनका सभक कोरामे ओ अपनाकें सुरक्षित अनुभव करैत छल । दोसर तरहक स्त्री छलैक माला, मधु आ चुमकी । इहो सभ प्रणवकें मानैत छलैक, मुदा प्रणवकें एकरा सभसँ डर होइत छलैक । हरदम पड़ायले रहैत छल एकरा सभसँ ।

आ एकटा छैक शीला । नेनपनमे ओकरोसँ डर होइत छलैक । मुदा समयक संग ओ बदलैत गेलैक । ओ प्रणवक लेल मामी, ओइ आंगनवाली नानी आ चुन्नूक पुतऽहुवला श्रेणीमे चल अयलैक । ओकरासँ ओकर डर खतम भऽ गेलैक । मुदा ओ प्रणवकें मानैत छलैक की नहि, से ओ नहि बूझि सकल । आब बुझियो नहि सकत । फेर कहियो भेंटो नहि हेतैक भरिसक ।

मुदा जे-किछु मुरलीसँ बूझि सकल प्रणव, ताहिसँ ग्लानिसँ भरि गेल मधुसँ घृणा नहि भेल छलैक कहियो । डर होइत छलैक । गाम छोड़बासँ पूर्व ई बुझबा जोगर तऽ भैये गेल छलै प्रणवकें जे मधुक सन्तानक पिता के छलैक । मुदा तैयो नहि जानि किएक ओकर मोन ओकरासँ घृणा नहि कयने छलैक । मुदा आइ घृणा भऽ रहल छलैक । दस-बारह वर्षक बेटी छलैक, विवाह जोगरि छलैक । सात-आठ बरखक बेटा आ पाँच वर्षक छोट बेटी छलैक आंगनमे । सभकें छोड़ि धारक कातमे अनगौंआक संग राति-बिराति बौआइत छल मधु । आ मिसरक हाल देखू । बेटाक विआह भेलैक, पुतऽहु बसैत छलैक । ओना देहसँ कठमस्त छल पलटू मिसर । देहमे एक्कोटा रोइयाँ नहि, एकदम चिक्कन रंग, पिण्डश्यामो नहि, कारिये सन ! माथपरक केश उड़ल आ कप्पारपर बड़का त्रिपुण्ड । किछु दिन पहिने धरि मोटका धोती ठेहुन धरि आ जोलहा कपड़ाक जेबीवाला गंजी देहपर रहैत छलैक । पयर खाली मुदा गप्प तैयो पैघ-पैघ करैत छल मिसर । फेर नहि जानि कतऽसँ रुपैया

हाथ लगलैक ! गामक कोनो मौगीक कोशलिया परि लगलैक कि कतौ खसल-पड़ल पूजी भेटि गेलैक, पलटू मिसर पलटू सेठ बनि गेल । बड़का दोकान खोलि लेलक आ गाम भरिक लोकक उधार-खाता खुजि गेलैक ओइ दोकानमे, जाहिमे प्रत्येक मास प्रत्येक पन्नापर सूदि जोड़ा जाइत छलैक । बड़का-बड़का लोकक बैसारी होबऽ लगलैक दोकानमे ।

आ ताहीमे एकटा बैसारी मधुक भेलैक । उधार-खाता खुजलैक तऽ खुजले रहि गेलैक । खाता नमरैत गेलैक आ दोकानमे मधुक बैसारो नमरैत गेलैक— दुपहरिया-राति-विराति कखनो । आ मिसरक दुनिया बदलि गेलैक । ठेहुन तक ऊँच धोती नमरिकऽ माटिपर ओँघराय लगलैक । जोलहा जेबीवला गंजीक बदला मलमलक कुर्ता, कुर्तामे सोनाक बटन । हाथमे छड़ी, पैरमे चमकैत चप्पल आ हाथमे दामी घड़ी । चानन-ठोप कनेक बेसी ध्यानसँ कयल । चेहरो जेना पालिस कयल-एकदम चमकैत !

मुदा जवान बेटा सभ हल्ला मचा देलकै । एकटा मौगीक राति-बिराति दोकानपर बैसनाइ, ओ सभ नहि सहलकै । मायकें कहलक । माय आँगनमे अट्ठाबज्जर खसा देलकै, मिसरकें आँगन पयर देनाइ मस्किल भेलनि तऽ मधुयेक आँगनमे डेरा जमा देलनि । गामक लोक मधुकें छोड़ि देने छलैक, मुदा एकटा अनगौआँक एना खुल्लम-खुल्ला घरमे रहब लोककें अखरऽ लगलैक । टोलक लोक बजलैक आ फेर सौँसे गाम बाजऽ लगलैक । मिसरकें रंगढंग नीक नहि बुझयलनि । आब बितली रातिमे धारक कात एकटा टार्च भुक्क दऽ बरैत छलैक आ एकटा मौगी नाव लऽ ओइ पार चल जाइत छलैक ।

प्रणवकें मोन भेलैक जे भेंट कऽ मधुसँ कहैक–"जिनगी भरि एहिना रहबैं ? आबो तऽ थम्ह ।"

मुदा ओकर रोकलासँ मधु रुकतैक ? ओ तऽ सभटा बान्ह पहिने तोड़ि चुकल छलैक । जेना माला तोड़ि चुकल छलैक । नहि जानि कोन हालमे हेतैक माला ? नहि जानि किएक बेर-बेर दुनू बहिन मोन पड़ि रहल छलैक ओइदिन ।

आ फेर मोन पड़लैक मामी । ओ तऽ सभ दिन मर्यादामे रहलैक, कहिओ कोनो बान्ह नहि तोड़लकै । मोनक कोनो बात कहिओ बाहर नहि आबऽ देलकै । ओकरा तऽ चिन्हैत छलैक प्रणव । चुन्नूक पुतऽहु चिन्हैत छलैक ओकरा । ओइ आंगनबाली बाबी चिन्हैत छलथिन ओकरा । कहैत छलथिन– अनमन तोरे माय सन छौक ।

प्रणव तऽ नहि देखने छलैक मायकें, नहि जनैत छल बापकें । ओकर तऽ सभ किछु मामे-मामी छलथिन । मामा गेलथिन, भगवानक यैह फैसला छलनि । मुदा मामी कतऽ चल गेलथिन, कहाँ छलथिन मामी ?

नीक जकाँ भोर भऽ गेल छलैक । प्रणवक दुनू पलक टांगल छलैक । देबालक ओइ कात मुरली अपन स्त्रीकें उठा रहल छलैक "उठू, कने चाह बना दियौ प्रणव ले', ओकरा भोरका आदति हेतैक ।"

स्त्री-स्वर एकदम खौंझायल आ निन्नसँ भरिआयल छलैक-"आर कै दिन रहता अहाँक ई दोस्त ? रातिकें श्मशानसँ ताकि भोजन करैबनि दू बजे आ भोरे पाँच बजे चाह आ दिनमे दोकान बन्न कऽ अहाँ एहन दास बनल रहबनि तऽ भरिसक महीनोमे नहि जयताह । आइ जाउ दोकानपर अहाँ, बहुत भेल दोस्ती ।"

सड़कपर जाइत बसक आवाज क्षणे-क्षण कोठलीमे अबैत छलैक । कहियो कहियो बीच-बीचमे बड़का धमाका सेहो भऽ जाइत छलैक । कोनो बेकार नौजवान अपन कारीगरीक जाँच करैत छल, देबालपर फोड़िकऽ छोट-छीन बमकें टेस्ट करैत छल । कनेक काल हंगामा होइत छलैक, फेर सभ अपन-अपन काजमे लागि जाइत छल, जेना किछु भेले नहि होइ ! मोड़ परक चाहक केबिनमे जुटान रहैत छलैक । दस पैसाक चाह आ सेहो उधार । बेशी शिक्षित बेकार । पैघ-पैघ गप्प, क्रान्ति आ सृजनक गप्प । पुलक नेता छल अइ गिरोहक- प्रणवकें बुझल छलैक । अइ मोहल्लामे कतऽ की होइत छलैक, सभ खबरि रहैत छलैक प्रणवकें ।

मुदा आइ ई कोठली छुटि जयतैक- सामान सरियबैत प्रणव सोचि रहल छल ।

अही कोठलीमे प्रणव छौ सालसँ अधिक बितौने छल । मजदूर सभक बस्तीक बीच एकटा कनेटा कोठली— पाँच हाथ लम्बा, चारि हाथ चौड़ा । ऊपरसँ खपरैल आ बिजलीक लाइन देल । डेढ़ हाथ चौड़ा ओसारा जाहिपर दूटा सँ अधिक कुर्सी नहि राखल जा सकैत छलैक । बीचमे पार्टीशन— ओइ कात एतेबेटा एकटा कोठली आ ओसारा जाहिमे एकटा बंगाली परिवार रहैत छलैक, पाँच गोटेक- माय बाप आ दूटा जवान बेटी आ एकटा जवान बेटा ।

आ पार्टीशनक इम्हर, प्रणवे दिस कनेकटा आँगन छलैक, आ आँगनमे

देबाल लागल एकटा कल जाहिसँ सटल एकटा सीमेन्टक हौज सन बनाओल छलैक— नहाय-सुनाय लेल पानि अही हौजमे जमा करऽ पड़ैत छलैक । ओहूसँ बेसी दिक्कति होइत छलैक-पीबऽवला पानि लेल । कलमे दू तरहक पानि अबैत छलैक-मीठ पानि, भोर छौसँ आठ धरि, आ दुपहरिया तीनसँ पाँच धरि । तहिना भोर दू घंटा खारा पानि आ साँझ दू घण्टा खारा पानि । मुदा दू घण्टा कहबाक लेल । पानिमे कनियो धार नहि- टिप-टिप, बुंदे-बुंदे पानि । बगलक चटर्जी महाशयक बेटी-बहु सभ पाइप लगा पानि जमा करैत छलैक । पीबा लेल एक सुराही पानि तँ भोरे लऽ लैत छल प्रणव । मुदा जहिआ कहिओ छुट्टीक दिन डेरामे रहि जाइत छल, पानिक लेल अँगनामे मचल महाभारत देखबा जोगर होइत छलैक । अगल-बगलमे ओहनो टिपटिपाइत कल नहि छलैक । पानि लेल पाँच-सात घरक बाल्टी एतहि लगैत छलैक । जहिया कहियो चटर्जी महाशयक स्त्री-बेटीसँ ककरो खटपट भेलैक की काण्ड शुरू भऽ जाइत छलैक । आ प्रणव मध्यस्थतासँ पड़ायल फिरैत छल, विशेषकऽ बगलबाली झरना आ अंजलिसँ ! दुनू कालेजिया छौंड़ी छलैक, प्रणवक समवयस्क । चटर्जी महाशयक बड़की बेटी मणिका सेहो बतारिये जकाँ छलैक, छोटकी स्कूलमे पढ़ैत छलैक । जहिआ बिगड़िकऽ पानिपर रोक लगबैक मणिका, पहिने खूब चिल्ला-चिल्ली होइ आ अन्तमे झरना आ अंजलि प्रणवकें पकड़ैक-"आपना के न्याय करते हवे प्रणव दा । जल केनो नीते देबे ना ? आमरा की मानुष नेइ ?"

प्रणव की जबाब दितैक ? चुप्पे रहैत छल । ओकरा मोन पड़ैत छलैक ओ दिन जहिआ ओकरा ई डेरा भेटल छलैक- कामेश्वर भाइ दौड़-धूप कऽ ठीक कऽ देने छलथिन । चारू कात बंगाली परिवारक बीचमे एकसर प्रणव, परिवार-विहीन। ओकरा लोक बड़ विचित्र दृष्टियें देखैक जेना मनुक्ख नहि होअय । महीनो धरि ककरोसँ गप्प नहि भेलैक, चुपचाप कोठली बन्न करय आ बाहर चलि जाय, आ फेर घुरिकऽ रातिमे आबय आ पड़ि रहय । कैक बेर डेरा बदलि लेबाक इच्छा होइ । मुदा अट्ठारह रुपैयामे आर कतऽ एकटा कोठली भेटितैक, तें चुप्प रहि जाय ।

चुप्प तऽ आरो कतेक बात लेल रहि गेल । आंगनक ओइ कात छोट-छीन घर छलैक— भनसाघर ! दू टा चुल्हि छलैक-दुनू किरायेदारक लेल । प्रणवसँ पहिने जे रहैत छल ओहो खेनाइ बनबैत छल आ एकटा चूल्हिपर चटर्जी महाशयक भानस होइत छलनि । मुदा प्रणवक अबितहि दुनू चूल्हि दफानि लेलथिन चटर्जी महाशय । प्रणव पहिने विचारने छल जे कमसँ कम एक साँझ खेनाइ अपने पका

लेत— मुदा सेहो विचार छोड़ऽ पड़लैक । एकटा स्टोव राखि लेलक कोठलियेमे आ भोर-साँझ चाह बना लिअय ।

मुदा सभ सँ असुविधा होइ पाखानाक लेल । पाखाना बाहर छलैक– दू टा आ परिवार दस । स्त्रिगण-पुरुष सभक लेल वैह दू टा पाखाना । भोरेसँ लाइन लागि जाइ । कतबो भोर चेष्टा करय प्रणव, लाइन लागिये जाइक आ शुरू-शुरूमे मोन बड़ खौंझा जाइक ।

मुदा आस्ते-आस्ते सभ बातक अभ्यास भऽ गेलैक, पाखाना लेल लाइनक– भोरे-भोर पानि लेल आँगनमे चिल्ला-चिल्लीक आ बगलक कोठलीमे हरदम होइत पति-पत्नीक कलहक । चटर्जी महाशय बंगाल पौटरीजमे टाइम आफिसमे छलाह । डेढ़ सय टाका भेटैत छलनि । पाँच गोटेक परिवार । हरदम तंगी । जेठकी मणिका तऽ हाइ स्कूलो पास नहि कऽ सकलनि । छोटकी शिप्रा स्कूले जाइत छलैक मुदा देखलासँ बेश पैघ लगैत छलैक । बेटा पुलक एकदम बेकार भऽ गेलनि । पढ़नाइ-लिखनाइ नहि भऽ सकलैक । नहि जानि कोन संगति मे छल— राति-राति भरि लापता रहैत छलनि, पैघ दाढ़ी आ लाल-लाल आँखि, जेना हरदम नशामे रहय । प्रणवक बतारिये जकाँ छलैक पुलक, शिप्रा किछु छोट छलैक आ मणिका पुलकसँ एक वर्ष पैघ । मुदा से सभ प्रणव बहुत बादमे बुझलैकै ।

सभसँ पहिने बुझलकै ओहि राति । वर्षा भऽ रहल छलैक । बेश अधिक राति भऽ गेल छलैक । क्यो दरबज्जा पिटलकै । खोलिकऽ देखलक— मणिका ठाढ़ छलैक, भीजिकऽ बोदरि भेल । बेधड़क भीतर आबि बजलैक–"आमी एइ खाने सोबो । बाहर बृष्टि पोड़छे ।"

प्रणव सकपका गेल । ई कोना सुततैक ओकरा कोठलीमे ? मुदा मणिका ओकरा किछु सोचबाक मौका नहि देलकै । ओकर एकटा धोती खुटरी परसँ उतारि भीजल साड़ी बदलि लेलकै आ अपन चपता नीचाँ बिछा लेलकै । ओही चपतापर सभ दिन बाहर डेढ़ हाथ चौड़ा बरण्डापर सुतैत छलैक ओ अपन कोठलीक सामने आ प्रणवक कोठलीक सामने पुलक ।

दरबज्जा खूजल रहलासँ कोठलियोमे पानि आबि रहल छलैक । मणिका दरबज्जा बन्न कऽ देलकै आ अपन चपतापर पड़ि रहलैक–"आपनियो सुइयेपड़ुन । बृष्टि थामबे ना ।"

प्रणव तैयो सकपकायल ठाढ़े रहल । ओकरा ओना ठाढ़ देखि मणिका बजलैक–"आपनी किच्छु चिन्ता कोरबेन ना । पुलक घुरबे ना । माँ-बाबा जाने ।"

प्रणव आर डेरा गेल । ओकर माय-बाप कोना बुझलकै, दरबज्जा तऽ बन्न छलैक । आ मणिका की किछुओ नहि बुझैत छलैक ? जवान छलैक मणिका आ सुन्नरो । ठेहुन धरि छिड़िआयल पैघ-पैघ केश छलैक, मोलायम आ घनगर । पैघ-पैघ आँखिमे एकटा विचित्र मादकता छलैक, कोमल त्वचा आ मांसल देहमे आकर्षण छलैक । सभटा जनैत छलैक प्रणव आ लोको जनैत छलैक । फेर एना रातिकऽ किएक ओकर कोठलीमे आबि गेलैक ? मुदा जवाब के दितैक ? मणिका तऽ निश्चिन्त सूति रहलैक । ओ भोर धरि जगले रहि गेल ।

कनेक आँखि लगलैक आ फेर धड़फड़ा कऽ उठल तऽ मणिका जा चुकल छलैक । क्यो नहि देखलैक । निश्चिन्त भेल ।

मुदा निश्चिन्त नहि भऽ सकल । आरो कतेको राति आबऽ लगलैक मणिका । जहाँ कनेको वर्षा-झक्कड़ होइ, ओ अपन चपता उठा ओकर कोठलीमे चल अबैक ।

मुदा ओइ राति अतत्तह कऽ देलैक मणिका । जाड़क मास छलैक— शीतलहरि सेहो छलैक । मणिका कोठलीमे आबि गेलैक । प्रणवोकेँ अभ्यास भऽ गेल छलैक, सूति रहल । मुदा निन्नमे लगलैक जेना क्यो ओकर तुराइक भीतर सूतल होइ । आँखि खोलि अन्हारेमे लगलैक जेना मणिका ओकरासँ सटल सूतल छलैक । ओकरा उठैत देखि रोकलकै–"चोललेन कोथाय ?"

प्रणव बिगड़ैत बाजल–"नहि, आब हद भऽ गेल । हमहूँ मनुक्खे छी ।

मणिका शान्त स्वरमे बजलैक–"ना, आपनी मानुष नेइ । मानुषेर मोतन कोनो व्यवहार आपनी कोनो दिन कोरेचेन आमार संगे ? मानुष छिलो सेन, मानुष छिलो दासगुप्ता । ओरा सवाइ एइ वेर छिलो । आमी एका ओर काछे गिये छिलाम । ओरा सभ मानुषेर मोतन छिलो.... नेइ मानुश नेइ–पशुर मोतन...

प्रणव स्तब्ध रहि गेल । मणिका ओकरासँ पहिने सेन आ ओहूसँ पहिने दासगुप्ता लग आयल छलैक— अही कोठलीमे । ओहूसँ पहिने क्यो हेतैक । आब ओकर नम्बर छलैक ।

प्रणव कने रुच्छ स्वरमे कहलकै–"आ अहाँकेँ ई सभ नीक लगैत अछि ? अपन इच्छासँ करै छी ई सभ ?"

मणिका ओहिना शान्त छलैक– ''आमार इच्छेर प्रश्न कोथाय ? आमाकेँ कोरतेइ हबे । बृष्टि हबे, आमी आपनार रूमे आसबो । अपनी बदि किछु टाका देबेन

बाबा-माँ बेशी खुशी हबे । रोज आस्ते बोलबे । सेन दितो, दासगुप्ता दितो । कतो महीना पाय बाबा, चलबे केमन कोरे ?"

आब प्रणवक क्रोध शान्त भऽ गेलैक । मणिकापर दया भेलैक । तुराइमे सूतल ओ पूर्ण स्वस्थ आ युवा-स्त्री ओकरा निरीह शिशु सन लगलैक । इच्छा भेलैक जे ओकरा थपथपा कऽ सुता दैक । मुदा ओ लगले सूति रहलैक— एकदम निश्चिन्त जेना कोना भय नहि होइ । प्रणव बड़ी काल धरि ओकर सूतल निष्कलंक आकृतिकेँ निहारैत रहल ।

प्रणवक मान मोहल्लामे बढ़ि गेल छलैक । आइ.ए.मे फर्स्ट क्लास भेटलापर झरना दास आ अंजलि बोस सौँसे मोहल्लामे हल्ला कऽ देलकै । ओकरे कॉलेजमे छलैक दुनू । मोहल्लामे सब चीन्हि गेलैक । अधिक काल दुनू ओकर कोठलीमे आबि जाइ, दुनू अंग्रेजीमे कमजोर छलैक, बंगला आनर्स रखने छलैक । अंग्रेजीमे मदति लेल प्रणवकेँ पकडि़ लैक ।

मुदा प्रणवकेँ मणिकाक चिन्ता छलैक । शिप्रा मैट्रिकमे पहुँचि गेल छलैक । मुदा मणिका तऽ पढ़ाइयो-लिखाइ छोड़ने छलैक । ओकर की हेतैक ?

एकदिन प्रणव कहलकै—"हमहूँ टाका देबौ तोरा, लेबैँ ?" मणिका आश्चर्य सँ तकलकै जेना विश्वासे नहि भेल होइ ! ओकर चकित दृष्टिक अर्थ बुझैत प्रणवकेँ हँसी लागि गेलैक—"हमहूँ मँगनीमे नहि देबौक । हमरो खेनाइ बना दे । बाहर बड़ दिक्कति होइत अछि । मुदा एक सयसँ बेशी नहि देबौक । दुनू साँझ जे तोँ सभ खेबैँ, खुआ दिहैँ । माँ-बाबासँ पूछि ले ।"

मणिकाकेँ बड़ खुशी भेलैक । ओही दिनसँ व्यवस्था भऽ गेलैक । प्रणवकेँ चारिटा ट्यूशन छलैक, दू सय भेटि जाइत छलैक । पचास टाका मामीकेँ गाम पठा दैत छलनि आ डेढ़ सयमे अट्ठारह टाका किराया आ बाँकीमे गुजर । किछु स्कालरशिपो भेटऽ लगलैक, फीस माफ भऽ गेलैक तऽ आर सुविधा भऽ गेलैक । सय टाका पहिली तारीख कऽ मणिकाक हाथमे राखि दैक ।

मुदा ताहिसँ निश्चिन्त नहि भेल प्रणव । मणिकाक लेल किछु आर सोचऽ पड़लैक । बहुत सोचि-विचारि एकदिन कहलकै—"तोहूँ पढ़ मणिका ! शिप्राक संग तोहूँ मैट्रिक परीक्षा दऽ दे ।"

मणिका हँसऽ लगलैक जेना कोनो मजाक होइ । मुदा प्रणव गम्भीर होइत कहलकै "हम हँसी नहि करैत छियौक, तोँ पढ़ । स्कूल जयबाक काज नहि

छौक । हमहीँ पढ़ा देबौक । प्राइवेटसँ परीक्षा दिहैँ । ई ले हमर कोठलीक चाभी । हम तऽ दिनभरि निपत्ते रहैत छी । दुनू बहिन ओहीमे पढ़ । समय भेटत तऽ हम पढ़ा देबौक ।"

आ मणिका पढ़ऽ लगलैक । कोठलीक एकटा डुप्लीकेट चाभी हरदम ओकरा लग रहैक । परीक्षा देलकै आ पासो भऽ गेलैक मैट्रिक दुनू बहिन । शिप्रा कॉलेज जाय लगलैक मुदा मणिका ओहिना प्रणवसँ पढ़ैत रहल ।

एकदिन प्रणव कहलकै—"हम तोरा एना मँगनीमे नहि पढ़बै छियौक । फीस लगतौ ।"

मणिका हँसी बूझि मुसकिआइत बजलैक—"की लेब ?''

प्रणव कहलकै—"ई शिक्षा, हम तोहर आत्मविश्वास आ सम्मानकेँ जगबै लेल दैत छिऔक । हमर गेलाक बाद फेर कोनो बरसाती रातिमे ककरो कोठलीमे पैर नहि दिहैं, दिनक इजोतमे विश्वासक संग अपन बाट चलिहैं ।" मणिकाक आँखि डबडबायल छलैक—"कथा देबो ? विश्वास कोरबेन ?"

आ जहिआ गामसँ टूटल आ अपमानित मोन लऽ घूरल छल, मणिकाक आँखि ओहिना डबडबायल छलैक । आब रातिक एकान्तमे ओना नहि अबैत छलैक मणिका । मुदा ओइ राति फेर आयल छलैक । चुपचाप तुराइमे सूतल नहि छलैक, सिरमामे बैसि माथपर हाथ फेरऽ लागल छलैक—"की होयेछे ? आमा के बोलबेन ना ?"

आ प्रणव कहलकै । सभटा कहलकै ओकरा । अपन जन्म आ अपन मायक गप्प । माय नहि, मामीक गप्प । मामाक गप्प । मामा-गामक गप्प । मणिका हाथ घुमबैत रहलैक । प्रणव नहि जानि कखन सूति रहल ।

मुदा समय बीति गेलैक । प्रणवकेँ ओ कोठली छोड़ऽ पड़लैक । पटना कॉलेजमे अंग्रेजीमे लेक्चररक बहाली भऽ गेल छलैक । ज्वाइन करबाक छलैक । चौबीस बरखक भऽ गेल प्रणव मुदा सर्टिफिकेटमे बाइसे छलैक । दू वर्ष समय भेटतैक, कम्पीटीशन देत ।

जहिआ चिट्‌ठी भेटलैक, काण्ड भऽ गेलैक । मणिकाकेँ चिट्‌ठी देखबैत कहलकै—"परसूसँ ई कोठली तोहर । हमरे नाम रहत । मासे-मास अट्‌ठारह टाका पठा देबैक । कोठली हमरे नाम रहत । जखन एतऽ आयब, रहब । अही बहाने तोँ सभ मोन रखबैं ?"

मणिका एकदम बिगड़ि गेलैक–"ठीक बोलछेन । आमरा सब किछु टाकार जन्येकरी । आपनी टाका पाठाबेन, एकटी खोली देबेन, ताइ जन्ये आपनाकेँ आमरा मोने राखबो । आर किछु की आमरा जानी ?"

मणिकाक क्रोध वाजिब छलैक । प्रणवक जायब ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक । प्रणव बुझबैत कहलकै– "एक बातक मुदा हमरा अफसोच रहत । आइ.ए. कऽ गेलैँ तोँ । छोटकी बहिन पढ़ब छोड़ि घर बसा लेलकौ ओइ मैकेनिक पालक संग । मुदा तोँ अबस्स पास करिहैं बी.ए. । हमरा लिखिहैं । मधुर लऽकऽ अयबौ । अपन विवाहोमे बजबिहैं, बिसरि नहि जैहैं" मणिका एकदम बिगड़िकऽ बाजि उठलैक–"आमार कतो बिये होये छे, आर कतो हबे, सब लिखबो अपना के...

प्रणव बीचहिमे रोकैत कहलकै–"फेर वैह बात ? तोँ वचन देने छैँ, बिसरि गेलौ ?"

मणिका चुप्प भऽ गेलै मुदा सौसेँ मोहल्ला घोल भऽ गेलैक । पहिल बेर प्रणवकेँ लगलैक जे सभ लोक ओकरा कतेक मानैत छलैक । पानवाला गणेश, बरही घूटर, कण्डक्टर मण्टू...सभ अयलैक बेरा-बेरी । झरना दासक परिवार, अंजलि बोसक परिवार ! मासी माँ जे पाछूमे रहैत छलथिन, खाली देखा-देखी होइत छलैक, सेहो कानऽ लगलथिन । झरना आ अंजलि तऽ बहस शुरू कऽ देलकै । एतऽ किएक नहि ज्वाइन करैत छी ? एतऽ सँ कम्पीटीशन देबामे आर सुविधा हैत, कोचिंग क्लासक सुविधा रहत । बड़ मस्किलसँ दुनूकेँ शान्त कयलक । एकसरमे झरनाकेँ कहलकै– पुलकक ध्यान रखियहिक, छोड़ि नहि दियहिक ।"

झरना पुलककेँ मानैत छलैक आ पुलक झरना लेल पागल छलैक । एक दिन ई बात अनचोकेमे बुझलकै प्रणव । बी.ए.क रिजल्टक बाद जखन सभ ओकरा घेरने रहैक, बधाइ दैत रहैक, एकसरमे पुलक कहलकै– "आपनी खूब भागवान । सब चाय आपनाके, खूब मान करे । झरना...अंजलि...दीदी...सब ।"

प्रणवकेँ आश्चर्य भेलैक । पुलकक स्वरमे सहजता नहि छलैक । ओना बड़ तटस्थ छौँड़ा छलैक– भितरे-भीतर चाहे जेहन ज्वाला होइ । फेर की बात भेलैक ? एक दिन विक्टोरिया मेमोरियलक पार्कमे झरनाक संग बेंचपर बैसल देखलकै–बड़ी राति धरि । फेर सभटा स्पष्ट भेलैक । दोसर दिन झरना ओकर कोठलीमे अयलैक तऽ प्रणव टोकलकै–"पुलकसँ पुछने आ । एकसर आइ कोठलीमे देखतौक तऽ तामस हैतैक ।

पहिने तऽ भड़कलै झरना । फेर सब मानि लेलकै मुदा कहलकै–"किन्तु

खूब भय होये कखनो । पुलक लिखा-पढ़ा जाने ना । कोनो काजो कोरे ना, किछु आतंकवादी लोकेर संग राखे । माँ–बाबा किछु तेइ राजी हबे ना ।"

मुदा एम.ए.पास छल झरना । अपन प्रेम लेल माय-बापसँ लड़ि सकैत छल, समाजसँ लड़ि सकैत छल । तेँ कहलकै प्रणव–"पुलककेँ छोड़ि नै दियहिक ।"

मुदा जकर ओकालति कऽ रहल छलैक तकर कतहु पते नहि छलैक तीन दिनसँ । प्रणवकेँ विदा करबा लेल टोलक सभ लोक हावड़ा जंक्शनपर जमा भऽ गेलैक– चटर्जी दम्पति, मणिका, शिप्रा आ ओकर वर, झारना आ अंजलि, गणेश, घूटर आ मण्टू । मुदा पुलकक कोनो पता नहि छलैक । मुदा गाड़ी छुटबासँ दू मिनट पहिने नहि जानि किम्हरसँ दौड़ल अयलैक पुलक आ ओकरा एक कात घीचिकऽ लऽ गेलैक– "आपनी चोलेलेन किन्तु आमरा फेर असहाय होय जाबो । आपनी छिलेन, आमी निश्चिन्त छिलाम । बाबा जे पिता होय करते पारलेन ना, आमि जे भाइ होय करते पारी ना, से आपनी कोरेछेन । दीदी आमा केँ सब बोले छे, आमी सब जानी । आमी जानी जे आपनी झरनाकेँ की बोलेछेन । आमि कृतज्ञ चिर-कृतज्ञ थाकबो ।"

मुदा प्रणव टोकलकै–"खाली कृतज्ञ भेने तऽ काज नहि चलतौ । तोँ असहाय रहबैँ तऽ दीदीकेँ के बचौतैक, झरनाकेँ के बचौतैक ? तोरा समर्थ होबऽ पड़तौक, सभकेँ बचाबऽ पड़तौक भाइ !"

प्रणवक हाथ अपन दुनू मुट्ठीमे कसिकऽ दबा लेलकै पुलक–"आमी बाँचाबो, आमी कथा दिच्ची । आमी दीदीके, झरनाकेँ...

गाड़ी ससरऽ लागल छलैक । प्रणव दौड़िकऽ चढ़ि गेल । प्लेटफार्मपर सभ हाथ हिला रहल छलैक– मुदा मणिकाक हाथ खसल छलैक, ओ खाली कानि रहल छलैक । कनिते जा रहल छलैक ।

पटना आबि एतेक तेजीसँ सभ घटित हैतैक, प्रणव कल्पनो नहि कयने छल । सभटा अप्रत्याशित ।

सभसँ पहिने शीलासँ भेँट । अनायासे । प्रोफेसर झाक डेरा लग आबि ओइ दिन प्रणव कहलकनि— "सभ दिन बाहरेसँ विदा कऽ दैत छी अहाँ । आइ चाह अबस्स पीअब अहाँक डेराक । अहाँ तऽ हमरा जकाँ एकसर नहि छी ।"

प्रोफेसर झा ओकरे विभागमे छलथिन । नीक प्रोफेसर । यश छलनि । विचारोमे बेश सोझरायल । प्रणवक संग अधिक काल स्टाफ रूममे गप्प होइत छलनि । बेशी काल अपने गाम-घरक, मिथिला-मैथिलक । प्रोफेसर झा यद्यपि बेशी सम्पर्कमे रहल छलाह अपन माटि-पानिक, मुदा हुनकामे आधुनिकताक आग्रह बेशी छलनि । अधिक काल कहथिन प्रणवकेँ– हमरा-अहाँक गाममे आइयो, आजादीक सत्तरह-अट्ठारह वर्षक बादो, कैकटा पढ़ल-लिखल स्त्रिगण अछि ? बेशी वैह 'पराननाथ केँ परनाम लिखऽवाली' स्वामीक नाम नहि लेबऽवाली, पर्दावाली पतिव्रता सभ । मैट्रिको पास कतेक गाममे आ कैक टा भेटत ?"

प्रणव टोकने रहनि–"मैट्रिके पास केने लोक शिक्षित आ आधुनिक नहि होइत अछि । हम बंगालमे एतेक दिन छलहुँ । कम्मो पढ़ल-लिखलमे कम्म-बेश वैह संस्कार, वैह शालीनताक संग आधुनिकता छलैक । फेर अपने सभक गाम-घरक स्त्रिगणकेँ लियऽ । कतेक कम्म पढ़ल-लिखल रहैत छथि, मुदा कम पढ़ल-लिखल सभ स्त्रिगण पिछड़ले दृष्टिकोणक रहय से आवश्यक नहि । हमरे मामी छलीह, कहुना घसीटकऽ दस्तखत करैत छलीह, मुदा के कहितनि हुनका अपनढ़ आ पिछड़ल ? अध्यवसायमे, प्रगतिशील विचारमे सबसँ आगू छलीह । जे किछु बनि सकलहुँ हुनके प्रयासेँ ।"

मुदा प्रोफेसर झा सहमत नहि होइत छलथिन–"अपने अपवादक गप्प करैत छी । मुदा शिक्षाक अभावमे ई एकटा अपवाद नगण्य रहि जाइत अछि । ई स्त्रिगण सभ आइयो एकबट्टी कऽ खेबाक थारी लऽ जाइत छथि, आन जातिक हाथमे फेकिकऽ रोटी आ खेनाइ दैत छथिन, स्वामी आ श्वसुरसँ परदा करैत छथि, मुदा मेला-ठेलामे मुँह उघारि टहलैत छथि, गीतक नामपर अश्लील गारि प्रेमसँ गबैत छथि, सार्वजनिक स्थानमे बेपर्द भऽ नहाइत छथि ।"

प्रणव हुनका फेर टोकलकनि–'ई तऽ विवशता भेलैक । आर्थिक विवशता । गामक पचास-पचहत्तरि प्रतिशत घरमे ने शौचालय छैक, ने कल । ओ अन्हारमे बाहर मैदान जाइत अछि आ सार्वजनिक स्थानपर स्नान करैत अछि । ओकरा अहाँ पिछड़ापन कोना कहबैक ? धर्मक नामपर अहाँक तथाकथित आधुनिको लोकनि सार्वजनिक स्थानपर डूब दैत छथि, फैशनक नामपर समुद्र-पोखरिमे स्वीमिंग सूट पहिरि किलोल करैत छथि । ओ किएक नहि अखरैत अछि अहाँकेँ ?"

मुदा प्रोफेसर झा सहमत नहि होइत छलथिन । हुनकर हिसाबे सम्पूर्ण मैथिल समाजे अखनो पछुआयल छल, वर-कनियाँक खरीद-विक्री, जाति-पाँजिक फड़िछौट आ ऊँच-नीचक हिसाबमे बाझल छल ।

प्रणव हुनकर तर्क सभ अधिक काल काटि दैत छलनि । मुदा हुनकासँ तर्क करब ओकरा नीक लगैत छलैक । कौखन बड़ श्रद्धा होइत छलैक जे प्रोफेसर झा नारी-उत्थान लेल हरदम चिन्तित रहैत छथि । ओकर विकासक बात सोचैत छथि । समाजमे कतेक लोक एना सोचैत अछि ?

मुदा प्रोफेसर झा सभ विषयपर सोचैत छलाह । ओइ दिन मैथिली साहित्यपर गप्प चला देलथिन–"आइ धरि की लिखल गेल अछि मैथिलीमे ? घूमि-फिरि कऽ वैह विद्यापति । खाली एकटा नामक डिगडिगया । आइ की लिखि रहल छथि मैथिलीक साहित्यकार ? वैह अनमेल विवाह आ तिलक-दहेजक खिस्सा । वैह पंचकोशी मैथिलक खिस्सा । कतऽ अछि ओइमे सामान्य लोकक खिस्सा, आदमीक संघर्ष आ नग्नयर्थाथक चित्रण ?"

प्रणव किछुओ नहि बाजल । ओकरा मैथिलीक नव वा पुरान साहित्यक कोनो अध्ययन नहि छलैक । ओ चुपचाप सुनैत रहल ।

प्रोफेसर झा आगू बजलाह–"अइमे दोष मैथिलीक रचनाकारकसँ बेसी मिथिलाक स्थितिक छैक । मिथिलाक लोक आइ कतेको वर्षसँ कोनो तेहन ऐतिहासिक मोड़ नहि देखने अछि— ने युद्ध, ने क्रान्ति । ने कोनो तेहन पैघ राजनीतिक उथल-पुथल, ने कोनो तेहन आकस्मिक सामाजिक परिवर्तन । एकटा वैवाहिक समस्या, आर किछु नहि । एकर विपरीत पश्चिमक छोट-छोट देशकेँ लियौक । नहि जानि की सभ भऽ गेलैक ओइ छोट-छोट भूखण्डमे आ कैकटा अमर साहित्यक रचना भऽ गेलैक । जासूसियो साहित्य लिखलकै तऽ सेहो 'क्लासिक्से' जकाँ ओहदा पाबि गेलैक आ हमरालोकनि सामा-चकेबाक गीत गबैत रहि गेलहुँ ।"

प्रणवकेँ मैथिली साहित्यिक अध्ययन नहि रहलोपर ई कथन अतिरंजित लगलैक । मिथिलामे युद्ध नहि भेलैक मुदा स्वाधीनता संग्राममे मिथिलाक भूमिका ककरोसँ पछुआयल छलैक ? क्रान्ति नहि भेलैक, मुदा आब गाम गाम कहाँ रहलैक ? सभ घरमे बूढ़-बच्चाकेँ छोड़ि बाँकी सभ नौकरिआहा भऽ गेलैक, शहर चल गेलैक । माय-बाप, भाइ-बहिन, स्त्री-पुरुष, मनुक्ख-मनुक्खक सम्बन्ध बदलि गेलैक आ बदलिते आबि रहल छलैक । सम्बन्धक नव कोण, समाजक नव वर्ग, मानवताक नव उत्कर्ष, अइ सभक कोन अभाव छैक मिथिलामे ? की मैथिलीक रचनाकार आइयो अइ सबसँ अपरिचिते छथि ? आइयो वैवाहिके समस्यामे ओझरायल छथि ?

मुदा प्रोफेसर झा आधिकारिक रूपसँ बाजि रहल छलथिन आ प्रणव ओकर खण्डन नहि कऽ सकलनि । मुदा मैथिली साहित्येटा नहि, मिथिला-मैथिल-मैथिलीक

सम्बन्धमे सेहो प्रोफेसर झाक धारणा एहने छलनि, ताही कारणे कालेजमे मैथिल प्रोफेसर आ मैथिलीक प्रोफेसर हुनकासँ बिगड़ल रहैत छलथिन । मुदा प्रणवकेँ नीक पटरी बैसि जाइत छलैक, यद्यपि हुनकर विचारसँ ओहो सहमत नहि होइत छल ।

पटरी बैसबाक एकटा आरो कारण छलैक । दुनू गोटेक डेरा एक्के दिस छलैक । अबैत काल प्रणव रिक्शा लेने अबैत छल दस बजे आ गेटपर प्रोफेसर झा ठाढ़ रहैत छलथिन । घुरैत काल प्रणव हुनका डेरापर उतारि अपन डेरा चल जाइत छल ! मुदा ओइ दिन प्रणवो हुनके डेरापर उतरि गेल—"आइ तऽ अहाँक डेराक चाह पीबियेकऽ जायब ।"

नहि जानि किएक प्रोफेसर झा ओतेक उत्साहित भऽ भीतर नहि लऽ गेलथिन । ड्राइंग रूम साधारण मुदा नीक जकाँ सजायल, सुरुचिपूर्ण । सोफापर पसरि गेल प्रणव ।

प्रोफेसर झा भीतर गेलाह आ फेर आबिकऽ दोसर सोफापर बैसि गेलाह । प्रणव एकटा मैगजीन उनटबैत रहल । ट्रैमे चाह-बिस्कुट लेने श्रीमती झा प्रवेश कयलथिन । हुनका ओतऽ देखि जेना प्रोफेसर झा हड़बड़ा गेलाह—"अहाँ किएक अयलहुँ ? हमरा सोर कऽ लितहुँ ।" आ झट ट्रे हाथसँ छीनि लेलथिन ।

प्रणवकेँ ई हड़बड़ी कोनादन लगलैक । श्रीमती झाकेँ नमस्कार करबा लेल हाथ जोड़ैत ऊपर तकलक तऽ तकिते रहि गेल— "तों...अहाँ...शीला..."

ओहो अकचका गेलैक— प्रणव ?

आ एकदम अकचकायल प्रोफेसर झाकेँ सहज करबा लेल प्रणव कहलकनि —"अहाँ कोन चिन्तामे पड़ि गेलहुँ ! हद भऽ गेल । एतेक दिनसँ संग छी मुदा भनकियो ने लागय देलहुँ जे जमींदार साहेबक जमाय छिअनि । शीला हमरा संग पढ़ैत छल, संगे पास कयलहुँ मैट्रिक ।"

—"ओ, अच्छा !" कनेक अनमनस्क जकाँ बजलाह प्रोफेसर झा ।

—"आब जाउ अहाँ, घरमे काज हैत ।"

शीला चल गेलैक । जाइत-जाइत ओकर आकृतिपर किछु झलकल छलैक, प्रणव स्पष्ट देखलकै । प्रोफेसर झाक व्यवहार ओकरा विचित्र लगलैक । जानियोकऽ जे दुनू एक्के गामक अछि, संगे पढ़ने अछि, शीलाकेँ भीतर पठा देलथिन । यदि अनचिन्हारो रहितैक तऽ सामान्य शिष्टाचार लेल बैसऽ दितथिन । बड़-बड़ पैघ गप्प करैत छलथिन नारीशिक्षा आ मुक्तिपर ।

प्रणवो जल्दिये उठि गेल । ओकर बड़ इच्छा भऽ रहल छलैक शीलासँ गप्प करबाक, गाम-घरक गप्प सुनबाक । आब तऽ तेसर वर्ष पुरतैक गाम गेना । मुदा ओ दोसर कोठलीमे छलैक आ ड्राइंग रूममे प्रोफेसर झा गुम्म-सुम्म बैसल छलथिन । प्रणवकेँ सभटा बात विचित्र लगलैक । शीला एतेक दिन बाद भेँट भेलोपर कोनो गप्प नहि कयलकै । विदा करऽ बाहरो नहि अयलैक ।

दोबारा प्रोफेसर झाक डेरापर जयबाक इच्छा रहितो ओ जा नहि सकल । ओइ दिनुका बाद भेँट भेलापर प्रोफेसर झा ओतेक उत्साहक संग बहसो आ गप्पो-शप्पमे शामिल नहि भेलथिन । एकदम उखड़ल-उखड़ल । प्रणवकेँ बड़ विचित्र लगलैक ।

ओहूसँ विचित्र घटना ओहिदिन पटनासिटीमे भेलैक । एकटा प्राध्यापक अपन डेरापर भोजन लेल बजौने छलथिन । घुरैत काल राति भऽ गेलैक बेसी । रिक्शा तकैत चौकसँ आगू बढ़ल तऽ बढ़ले गेल । रिक्शा भेटबे नहि कयलैक । ओ पयरे बढ़ैत गेल मुदा लगलैक जेना क्यो पछोड़ धयने होइ । डर भेलैक । ओना आब तऽ लोक तेहन बात नहि सुनैत छलैक, मुदा पहिने तऽ कहाँदन बड़ बदनाम इलाका छलैक । उपरका मकान सभमे अखनो गायिकाक तख्ती लागल छलैक ।

पाछूसँ अबैत लोक एकदम लग आबि गेलैक । विचित्र सन बगय-बाना छलैक । लुंगी आ गोलगला गंजी । नोकगर मोछ आ पैघ-पैघ केश । गलामे रूमाल बान्हल-"चलो बाबू । बाइ बुलाती है ।"

जकर डर छलैक सैह भेलैक । कोनो गुण्डा पछोड़ धयने छलैक । मुदा साहस करैत कहलकै प्रणव—"मुझे नहीं जाना है कहीं ।"

"जाना तो पड़ेगा ही बाबू ! बाइ का हुक्म है, मर्जी से नहीं तो जबर्दस्ती ।"

रंगढंग अधलाह लगलैक मुदा कोनो उपाय नहि छलैक । दोकान सभ बन्न भऽ गेल छलैक आ बाट सुन्न छलैक । फेर एहन ठाम गुण्डा बदमाशक संग भिड़बो ठीक नहि होइतैक । ओ चुपचाप ओकर पाछाँ बिदा भेल । देखी की होइत छैक ? संगमे कोनो तेहन टाका-पैसा नहि छलैक । लेबे की करतैक ?

ओ गुण्डानुमा लोक ओकरा एकटा मकानक पछुआर दने होइत, सीढ़ी दने ऊपर लऽ गेलैक । एकटा छोट-छीन कोठली– जेना हरदम बन्ने रहैत होइ तेहन गन्ध

कोठलीमे । एकटा मामूली सन पलंगपरक मैल बिछौनपर क्यो पड़ल छलैक । सौंसें चेहरापर पैघ-पैघ चकता सभ छलैक ओइ स्त्रीक मुँहपर । देखिकऽ घृणा भेलैक प्रणवकें ।

ओ स्त्री ओकर चेहराक भाव देखि हँसलैक "घृणा भऽ रहल छौ ! छीहे ताही जोगर हम ।"

एतेक कालपर चिन्हलकै प्रणव । ई तऽ माला छलैक । कोना एहन सन हाल भेल हेतैक से जनैत छलैक प्रणव, मुदा तैयो ओकरा ओहि हालतमे देखि बड़ दुःख भेलैक । किछुओ बाजल नहि गेलैक । माला अपने बजलैक–"साँझे तोरा अइ बाटे जाइत देखने छलियैक । तखनेसँ रहीमकें ठाढ़ कऽ देने छलिऐक जे तोरा कहुना अबस्स लाबौ एतऽ । कोनो अपमान तऽ नहि कयलकौ ?"

प्रणव तैयो चुप्पे रहल । आर कोनो बात ओकर दिमागमे नहि घुसि रहल छलैक । ओ खाली बिछौनपर घिनौन चेहरा आ सड़ल देह लेने पड़ल मालाकें देखि रहल छलैक आ ओकर बकार बन्द छलैक ।

माला फेर टोकलकै–"माला पापिन अछि, ओकरासँ अबस्स घृणा करक चाही । जिनगी भरि करिहैं । मुदा अखन बाज । तोरा देखि नहि जानि किएक किछु बात करबाक, गाम-घरक सभक बात करबाक बड़ इच्छा भेल । कोना छथि बाबूजी आ शीला ?"

आब प्रवणक बकार फुटलैक–"शीला अही शहरमे छौक । वर हमरे संग प्रोफेसर छैक । बाबूजी गाममे छथुन आ नीकें हेबे करथुन । हुनका किछु होबऽवाला नहि छनि ।"

कल्लू चौधरीक स्मरण मात्रसँ ओकर मोन तीत भऽ गेलैक ।

मुदा बाप-बहिनक खबरि सुनि माला उल्लसित भऽ उठल– "अही शहरमे शीला अछि, तखन तऽ हमहूँ भेंट करबैक ।"

मुदा फेर अपने चुप्प भऽ गेल । जेना अपने बाजल गप्पपर सोचमे पड़ि गेल हो । ओ कोना भेंट करतैक शीलासँ ? कोन मुँहे ?

प्रणव टोकलकै– भेंट कऽ लियहिक । मुदा तोहर ई की हाल देखैत छियौक ? एतऽ कोना पहुँचि गेलैं ?

माला हँसलैक–"जाहि बाटपर चलल रही से अही सभमे कतहु पहुँचा देत, से तऽ बुझलै छल । मुदा एतेक जल्दी, से नहि बूझल छल । सोचलहुँ जे सभ दिनुका नर्कसँ छूटि किछु दिन जीबि ली । जिनगीकें भोगि ली, फेर नर्को भोगि लेब । मुदा ई कहाँ बुझलियैक जे एक नर्कसँ दोसर नर्कमे जा रहल छी ? जिनगीकें भोगबाक लालसा रहिये जायत, संगे जायत । आब तऽ बेरो लगचिआयल अछि ।"

माला जेना कष्टपूर्वक बाजि रहल छलैक ! ई कष्ट खाली मानसिक नहि छलैक, ओइमे ओकर शारीरिक कष्ट सेहो शामिल छलैक । प्रणव ओकरा बोल-भरोस दैत कहलकै– "एना किएक बजैत छें ? अखन समय किएक पुरतौक तोहर ? अखन वयसे की भेलौक अछि ?"

माला ओहिना कष्टसँ हँसलैक–"हमर वयस ? लगैत अछि जेना सय वर्ष भेल हो, जेना यातनाक अवधि अनन्त भऽ गेल हो ! आब तऽ कहुना मुक्त होइ जिनगीसँ, सैह कामना अछि ।"

"मुदा तोहर ई हाल कयलकौ के ? ककरा संग गामसँ पड़ायल छलैं ? के छलौ ? बंकू...?"

"बंकूआ रहैत छल हमर आगू-पाछू । एक दिन ओकरे कोठलीसँ बहराइत ओकर बाप देखि लेलक । बापक डरे बंकूआ पड़ायल आ तखन ओही कोठलीमे ओकर बाप बन्न कऽ लेलक । गामोसँ वैह भगौने छल जे शहरमे नीक ठाम राखि देबौक, चैनसँ रहबैं ? आ फेर दलालक हाथे बेचि निपत्ता भऽ गेल ।"

प्रणवकें अपना कानपर विश्वास नहि भेलैक–"तोहर दिमाग खराब भऽ गेल छौ माला ! ककर नाम लऽ रहल छहिक ? रूदल चौधरी— तोहर पित्ती... बंकूआ तऽ आवारा अछिये, पितिऔत छौक तें की ? मुदा रूदल चौधरीक एहन करनी ? सत्त बजैत छैं तों ?"

माला ओहिना कष्टसँ रुकि-रुकिकऽ बजलैक–"करनी तऽ सभटा हमर अपन छल । अइमे अनकर कोन दोष ? सम्बन्ध आ वयसक कोन लेहाज छल हमरा ? मोनमे एकटा ज्वाला छल...प्रतिक्रिया छल ? बाबूजी एकटा बूढ़ असर्ध वर लऽ अनलनि । हमहूँ अपन मनमानी कऽ बदला लेबऽ चाहैत छलियनि । मुदा ककरासँ बदला लेलिऐक ? बेलसँ छूटिकऽ बबूरमे फँसि गेलहुँ ।"

माला चुप्प भऽ गेलैक । प्रणवो चुप्पे रहल । बजबा लेल किछु नहि फुरयलैक । किछु काल बाद उठैत कहलकै–"आब हम जाइ छी । बड़ राति भेलैक ।"

माला हँसलैक–"राति भेलैक तऽ के प्रतीक्षामे बैसल हेतौक ? एकसरे तऽ छैँ अखनो । किछु काल हमरा लग बैसबैँ तऽ दूरि नहि भऽ जयबैँ ?"

प्रणव बैसि गेल । माला कहलकै–"असलमे तोरा एकटा स्वार्थसँ बजौलियौक अछि । एकटा काज करऽ पड़तौक, करबैँ ?"

प्रणव ओकर मुँह तकैत रहलैक । किछु कहलकै नहि । माला हाथक इशारा कोठलीमे दोसर कात एकटा खटोली पर सूतल बच्चा दिस कयलकै–"ओकरा देखैत छहिक ? हमर बेटा अछि अमित । सात वर्षक भेल । मुदा ओ खाली हमर बेटा अछि । ओकर क्यो बाप नहि छैक । ओकर भार तोरा लेबऽ पड़तौक ।"

ओही अधिकारसँ बाजि रहल छलैक माला जाहि अधिकारसँ झक्खा लेल मोंछ आ चटनी लेल तेतरि तोड़बाक अनुरोध करैत छलैक । दुनू बहिन ई बात, ओकर ई कमजोरी जनैत छलैक– प्रणव ओकर बात टारि नहि सकैत छलैक ।

–"चुप्प छैं !" हमर बात नहि मानबैं ? हम आइ नहि कहैत छियौक । मुदा कहिओ यदि हम नहि रही आ क्यो अइ नेनाकेँ तोरा लग पहुँचा दौक तऽ ओकरा अनाथालयमे नहि दियहिक । बाबूजी एकरा नहि रखथिन । शीलोमे हमरा सन्देह अछि । मुदा तोरापर विश्वास अछि हमरा । तोँ राखि सकैत छहिक । तोँ साधारणसँ फराक सभ दिन छलैं, आइयो हैबेँ, हम जनैत छी । तेँ तोरा जबर्दस्ती बजबौने छियौक ।"

प्रणव कोनो जबाब नहि देलकै । मुदा ओकर मौनसँ जेना मालाकेँ स्वीकृति भेटि गेलैक, ओ फेर जिद नहि कयलकै । प्रणव उठिकऽ ठाढ़ भेल आ धड़धड़ाइत सीढ़ीसँ नीचाँ उतरि सड़कपर आबि गेल । रिक्शा दूर जाकऽ भेटलैक आ अपन डेरा आबि गेल ।

मुदा एक्को क्षण लेल पलक नहि खसलैक, भरि राति जगले रहि गेल । भोर होइतहि दौड़ल गेल शीलाक डेरा । प्रोफेसर झा नहि छलथिन । छुट्टीमे गाम गेल छलाह ।

प्रणव बड़ी काल ड्राइंग रूममे बैसल रहल । क्यो बहरयबे नहि करैक । अन्तमे प्रणव जखन भीतर कोठलीमे पैसबा लेल उद्यत भेल तऽ हड़बड़ायल शीला सामने आबि गेलैक–"फेर किएक अयलौं अहाँ ? ओइ दिनक अपमान यथेष्ट नहि छल ?"

प्रणव हँसिकऽ कहलकै–"अपमान ? अहाँ दुनू बहिनिक मामिलामे हम मान-अपमानक हिसाब नहि रखैत छी ।"

शीला कने चौंकैत कहलकै–"आइ फेर दोसर बहिनिक प्रसंग कोना आबि गेल ? ओ प्रकरण तऽ कहिया ने समाप्त भऽ चुकल अछि ।"

–"समाप्त नहि भेल अछि अखन । आब तऽ शुरू हैत । माला अही शहरमे अछि । हमरा भेटल छल ।"

शीला उल्लसित होइत कहलकै— ''कतऽ भेटल अहाँकेँ ? बाजू ने जल्दी, कतऽ अछि माला ?"

प्रणव शान्त स्वरमे कहलकै–"स्थानक नाम जानि अहाँकेँ प्रसन्नता नहि हैत । लाइसेंस आब सैह भेटैत छैक तेँ गायिकाक मोहल्ला कहबैक, रण्डीक नहि ।''

"आ ओही मोहल्लामे अहाँकेँ भेटल माला !'' आइ काल्हि ओहने मोहल्ला सभक चक्कर लगबैत छी अहाँ !"

–"तऽ अइमे हर्ज की ? एकसर छी हम । किम्हरो जाइ, ककरो की फर्क पड़तैक ? के रोकत हमरा ? कथी लेल रोकत ?" प्रणव हँसैत कहलैक ।

मुदा शीला लोहछि गेलैक–"से जतऽ इच्छा होअय जाउ, के रोकत अहाँकेँ ? मुदा अखन एतऽसँ जाउ । ओ नहि छथि । क्यो देखत आ अयलापर हुनका कहतनि तऽ अनर्थ भय जायत । हाथ जोड़ैत छी हम, अहाँ जाउ ।"

प्रणव उठैत कहलकै– ''एना विकल जुनि होउ । हम जाइत छी । मुदा जाइत-जाइत एकटा बात पुछैत छी । प्रोफेसर झा तऽ उदार दृष्टिकोणवला लोक छथि । नारीमुक्तिपर पैघ-पैघ प्रवचन दैत छथि । तखन एतेक बन्हेज किएक ? ई खाली व्यक्ति-विशेष लेल, खाली हमरे लेल, की सबहक लेल ?"

शीला कोनो जबाब नहि देलकै । प्रणव फेर प्रश्न दोहरौलकै तऽ बिगड़ि कऽ बजलैक–"से बूझि अहाँ की करब ? अहाँक लेल एतबा यथेष्ट नहि जे अहाँ एतऽ बिन-चाहल लोक छी, अहाँकेँ नहि अयबाक चाही ।"

–"स्पष्ट कथा लेल धन्यवाद । हमरासँ गलती भेल । आगू ध्यान रहत ।" नहि जानि एतेक कालसँ सहज प्रणव एकाएक बड़ भावुक भऽ गेल आ धड़धड़ाकऽ सीढ़ी उतरि बाहर चल गेल ।

मुदा ओ ध्यान नहि राखि सकल । सातमे दिन रहीम एकटा सात वर्षक छौंड़ाकेँ लऽ उपस्थित छलैक–"कल बाइ चल बसी । ये उनका लौण्डा है । आप तक पहुँचाने की मेरी जिम्मेवारी थी, खुदाहाफिज !"

आ प्रणव ओइ सात वर्षक छौँड़ाकेँ लऽ आफतमे पड़ि गेल । कहाँ रखतैक ? लोककेँ की जवाब देतैक ? माला ओकरासँ वचन लेने छलैक, अनाथालयमे नहि देतैक । मुदा अपना लग कोना रखतैक ? ओ बच्चाकेँ लेने शीलाक डेरा पहुँचल । प्रोफेसर झा अखनो गामसँ नहि घुरल छलाह । शीला ओहिना रुच्छ व्यवहार कयलकै—"अहाँ फेर आबि गेलौँ ?"

—"आबऽ पड़ल शीला ! दोसर कोनो उपाय नहि छल । अहाँ दुनू बहिन हमरा बेर-बेर लाचार कऽ दैत छी ।"

—"फेर दुनू बहिनिक गप्प ! छोड़ू ओकर गप्प आ जाउ अपन डेरा । हमर जीवनकेँ एना नष्ट नहि करू ।"

—"अलबत्त अछि अहाँक जीवन शीला जे एकटा पुरुषसँ बात कयलापर नष्ट भऽ जाइत अछि ! सेहो कोनो आन पुरुष नहि, अपन गामक चिन्हार लोक । मुदा छोड़ू तकर गप्प । अखन अहाँक जिनगीपर गप्प कयलासँ असल बात रहि जायत । आइ अइ छौँड़ाक गप्प करू । ई अमित । एकर की हेतैक ?" प्रणव असल गप्प कहलकै ।

"के अछि ई छौँड़ा ? किएक अनने छियैक एकरा एतऽ ?" शीला डेराइत पुछलकै ।

"एना डेराउ नहि । ई कोनो आन छौँड़ा नहि अछि । अहीँक परिवारक अछि । मालाक बेटा छैक । माला काल्हि मरि गेल ।"

"नीक भेलै, उद्धार भऽ गेलै ।" शीला एकदम कठोर स्वरमे बजलैक । —"आ मालाक कोनो धीया-पुता नहि छलैक, ओ घरसँ एकसरि बहरायल छल ।"

—"से हमरो बूझल अछि शीला ! आ इहो बूझल अछि जे ई मालेक बेटा छैक । ओकरा हम वचन देने छलियैक जे एकरा हम अनाथालयमे नहि देबैक । कतऽ रखियौक एकरा ?"

शीला आरो डेरा गेलैक—"से हम की जानऽ गेलियैक ? हम नहि रखबै एकरा ।"

—"अहाँकेँ हम राखऽ नहि कहैत छी । अहाँ पहिनेसँ डेरायल छी । मुदा चलू, एकरा सही स्थानपर पहुँचा दियैक । अहाँक बाबूजी एकसर छथि, हुनका एकटा खेलौना चाहियनि । कहबनि जे माला एकरा पेटमे लेने घरसँ पड़ायल छल । एकटा अस्पतालमे एकरा जन्म दऽ मरि गेल ।"

शीला बात काटि देलकै—"असंभव गप्प । बाबूजी कहिओ विश्वास नहि करताह ।"

"चलू, चेष्टा तऽ करी । आगू अइ छौँड़ाक भाग्य । नैँ क्यो रखतैक तऽ हम तऽ छीहे, मालाकेँ वचन देने छिऐक । मुदा पहिने एकर उचित स्थानपर तऽ चेष्टा कऽ देखियैक ।"

माला बजलैक—"तऽ जाउ । हम किएक जायब आ कोना जायब ? ओ नहि छथि । बुझताह तऽ दोसरे काण्ड भऽ जायत ।"

प्रणव मनबैत कहलकै—"कोनो काण्ड नहि हैत । आइ जायब आ परसू भोरे चल आयब । क्यो नहि बुझतैक, प्रोफेसर झाओ केँ नहि कहबनि । आ फेर कोनो अनका लेल करबैक ? अपने शोणित थिक, मालाक बेटा । कने मुँह देखियौक ने ? केहन सुन्नर छैक । देखियेकऽ सभ कहि देतैक जे मालाक बेटा छैक ।"

तखन शीला ओइ छौँड़ाक मुँह देखलकै । एतेक काल ओ छौंड़ा सभटा गप्प सुनैत चुप्प छलैक । प्राय: बूझि रहल छलैक जे सभटा झंझट ओकरे लऽ कऽ छलैक । मुदा जखन शीला हाथ धऽ लग घीचि लेलैक आ देहसँ सटा लेलकै तऽ सभटा डर बिला गेलैक आ ओ सहज भऽ अपन मौसीक गरासँ लपटि गेल । शीलो ओकरा बड़ी काल कोरामे लेने रहलैक ।

रतुका स्टीमरसँ शीला आ अमितक संग गाम विदा भऽ गेल प्रणव ।

आ गाममे बड़का काण्ड भऽ गेलैक ।

प्रणवक संग शीलाकेँ देखितहि भड़कि उठलथिन कल्लू चौधरी-"तोँ किएक अयलेँ एकर संग ? लाज-संकोच सब पीबि गेलेँ ? ओझा कतऽ छथुन ?''

हुनकर चीत्कारपर सहमैत मुदा तैयो साहस करैत कहलकनि शीला—"आस्ते बाजू बाबूजी ! लोक सब सुनत तऽ अनेरो भीड़ जमा करत । प्रणव कोनो आन नहि, अपने लोक अछि । ओकर संग गाम अयबामे कोन अनर्थ भऽ गेलैक ?"

कल्लू चौधरी पहिनेसँ बेशी जोरसँ गरजलाह—"बेशी ज्ञान नहि बघार । जो भीतर आ तोँ तुरत निकल अइ ठामसँ निर्लज्ज ! बेर-बेर निकालल जाइत छेँ, तैयो सूगर जकाँ थुथुन उठौने इम्हरे चल अबै छैँ ।"

"यदि ककरोसँ बचनबद्ध नहि रहितहुँ हम तऽ एकर जबाब ककरो थुथुन तोड़ि कऽ दितहुँ । मुदा हम शीलाकेँ पहुँचाबऽ नहि, दोसर काजसँ आयल छी । पहिने ओकरा सुनि लिअऽ ।"

फेर अमितकेँ आगू करैत कहलकनि–"अइ बच्चाकेँ देखियौ, चिन्हैत छिऐक ?"

कल्लू चौधरी फेर गरजलाह–"हम किएक चिन्हबैक एकरा ? ककरा उठा अनने छेँ हमर दरबज्जापर ? निकल एतऽसँ जल्दी ।"

साहस कऽ शीला आगू बढ़ल–"कने ठीकसँ देखियौक बाबूजी ! अपन सन नहि लगैत अछि ई ? माला दीदीक मुँह मोन पाड़ू, ओकरे बेटा छैक ई ।"

अइ बेर जेना ठनका खसलैक–"ककर नाम लेलेँ तोँ ? ओ तऽ ओही दिन मरि गेल जहिया घरसँ बाहर पैर देलक ।"

शीला तैयो साहस कऽ ठाढ़ रहल–"माला दीदी सत्ते मरि गेल बाबूजी ! बहुत दिन भेलैक । ओकरे बेटा छैक, गाम छोड़ैत काल पेटमे छलैक । एकरा जन्म दऽ मरि गेलीह, बड़ दुख उठौलनि माला दीदी...।

"चुप्प रह शीला ! बड़ बड़बड़ करै छेँ तोँ। घर छोड़ि बाहर डेग देबऽवाली स्त्री दुःख नहि उठाओत तऽ की चैनसँ जिनगी गुजारत ? अपन करनीक फल भोगलक ओ । हँटा अइ पापक मोटरीकेँ हमरा सामनेसँ ।"

प्रणव बुझयबाक चेष्टा कयलकनि- "ई पापक मोटरी नहि, अहाँक कुलक दीपक जछि, अहाँक नाति अछि, एकरा अपन स्नेहक आश्रय दियौक ।"

शीलो नेहोरा कयलकनि–"हँ, बाबूजी ! एकरा अपन हबेलीक इजोत बनबियौक । हमरा सभक जिनगीक अभाव आ अन्हारकेँ दूर करत ई ।"

कल्लू चौधरीक क्रोध आब जेना बेसम्हार भऽ गेलनि । चिकरैत बजलाह–"निकल दुनू बेहया अइ पापक मोटरीक संग अइ ठामसँ । दुनू सुरमे सुर मिला बाजि रहल छेँ । तोहर दुनूक पहिनेसँ साँठ-गाँठ छौक । तोरे लेल एकरा हम अइ हवेलीमे टपबासँ रोकने छलिऐक । मुदा ई अपन बदला सधा कऽ रहल । एकरे संग तोँ पटनामे बौआयल फिरैत छेँ, तैँ ने ओझाकेँ तोरापर अविश्वास छनि । हमरा सभ बूझल अछि । मुदा तोँ एतेक निर्लज्ज भऽ जयबैं जे स्वामीकेँ छोड़ि अइ लफंगाक संग हमरा ठकऽ अयबैं से नहि सोचने रही कहियो । ई एना करत से तऽ बूझल छल हमरा ! एकरा पुरान कानि छैक । एक दिन एकर मामीकेँ हम...।

प्रणव छड़पिकऽ कल्लू चौधरीक लग आबि गेल— "की कयलौं हमर मामीकेँ बाजू, बाजू नहि तऽ नरेटी दबा देब आइ । हमरा पहिनेसँ विश्वास छल, अबस्से अहीँक चालि अछि । आइ अपने कबूल कयलहुँ । कहाँ अछि हमर मामी ? बाजू...जवाब दियऽ ?"

कल्लू चौधरीक घेँट झुकि गेलनि । कोनो जवाब नहि देलथिन । क्रोधावेशमे जे बाजि गेल छलाह, तकर बाद बजबा लेल किछु फुरिये नहि रहल छलनि । दलानक चारू कात गामक लोक जमा भऽ गेल छलनि– बड़का भीड़ ।

आ प्रणव कंठपर चढ़ल छलनि–"बाजु, कतऽ अछि हमर मामी ? नहि तऽ आइ काण्ड भऽ जायत ।"

मुदा प्रणवक काण्ड करबासँ पहिने दोसरे काण्ड भेलैक । लगलैक जेना हवेलीक भीतरसँ क्यो दरबज्जा पीटि रहल होइ । फाटकपर बाहरसँ जिंजिर लागल छलैक । मुदा लगातार दरबज्जा पीटि रहल छलैक क्यो आ ओइ दरबज्जा पिटबाक ध्वनिक संग कल्लू चौधरीक झुकल घाड़ आर झुकैत गेलनि, आ आकृति कारी झाम होइत गेलनि ।

मुदा प्रणव ओहिना गरजैत रहल– "बाजू, कतऽ अछि हमर मामी ? जवाब दियऽ ।"

तावत क्यो फाटकक जिंजिर खोलि देलकै आ फाटक खुजैत देरी एकटा स्त्री दौड़िकऽ दलान लग पहुँचि गेलैक, एकदम प्रणवक लग–"जवाब ओ की देताह ? जवाब हम दैत छी, यैह छथि अहाँक मामी– देखथु गाम भरिक लोक ।"

भीड़मे खलबली मचि गेलैक । दलानक ऊपर प्रणवक मामी ठाढ़ि छलैक । उज्जर नूआ, खूजल केश आ विक्षिप्त सन आँखि ।

सभकेँ बेराबेरी देखैत बजलैक–"सभ क्यो नीक जकाँ देखि लियऽ । हमहीं छी ओ विधवा जे अपन स्वामीक नह-केशक राति अपन घराड़ी बन्धक राखऽ अइ बड़का हवेलीमे आयल रही । जकरासँ भरना रखबाक लेल सादा कागतपर औंठा छाप लेने छलाह । मुदा टाका देबाक बदला की देलनि ई गामक प्रतापी जमींदार ? कने पुछियनु गामक सभ लोक । सभटा लूटि कऽ छौ मास धरि हाथ-पयर-मुँह बान्हि हवेलीमे रखने रहलाह । राति कऽ एक बेर बन्हन खोलि अन्न-जल दैत छलाह । फेर बन्हन खोलि देलनि । मुदा हवेलीक बाहर कतऽ जैतहुँ, ककरा लग जैतहुँ ? ककरा देखबतिऐक ई कारी चेहरा ? अइसँ नीक तऽ यैह जे

लोक बूझय जे अभगली पड़ा गेल, कतहु मरि-खपि गेल । मुदा आइ जखन सभक सामने ई अपने उघारि देलनि ओ बात— तऽ फड़िछाकऽ बूझि लियऽ सभ । गामक एकटा विधवा पुतऽहु, एकटा विधवा बेटी मदति माँगऽ आयल छलनि आ बाप ओकरा कुलटा बना देलथिन ।"

प्रणव मामीकेँ भरि पाँज पकड़ि लेलकनि–"मुदा बेटा जीबैत छल अहाँकेँ ? ओकरापर विश्वास करितहुँ । किएक रहलहुँ अइ कालकोठरीमे एतेक दिन ? एतेक पैघ अविश्वास हमरापर ?"

मीना प्रणवक छातीपर मूड़ी पटकैत बाजल–"अविश्वास अहाँपर नहि, अपन भाग्यपर । अहाँक भविष्य बनबऽ अपनासँ दूर पठौने रही आ ई अपमान-कथा, ग्लानि-कथा अहाँक संग जोड़ि दितहुँ तऽ अपने हाथे अहाँक भविष्य अन्हार कऽ दितहुँ । हमरा बुते से पार नहि लागल । हम थोड़े ओइ काल-कोठरीमे रही ! हम तऽ तहिये मरि गेलौं जहिआ अइ हवेलीमे पैर देलहुँ । मुर्दाकेँ एतऽ राखू वा ओतऽ, कोन फर्क पड़ैत छैक ?"

हवेलीक नाम अबैत देरी प्रणवकेँ जेना करेण्ट लगलैक । कूदिकऽ कल्लू चौधरीक छातीपर सवार भऽ गेलनि । चारू कातसँ लोक दौड़लैक । पकड़िकऽ दूर हँटौलक ओकरा ।

मुदा कल्लू चौधरी ओहिना घाड़ झुकौने बैसल रहलाह । ने एको बेर कड़कलाह, ने अपन लठैत सभकेँ सोर पाड़लथिन । एकटा भनसियाक नाति, गामक एकटा ऐरे-गैरे लोक दरबज्जा चढ़ि बेइज्जति कयलकनि, हाथ तक उठा देलकनि, मुदा हुनकर बकार नहि फुटलनि । सम्पूर्ण संज्ञा जेना लुप्त भऽ गेल छलनि !

प्रणवक क्रोध शान्त भेलैक । मामीक हाथ पकड़ैत बाजल–"चलू मामी !" मीनाकेँ जेना अविश्वास भेलैक–"हम चलू ? कतऽ ?" प्रणव हुनकर हाथ झिकैत कहलकै–"हमर घर, आर कतऽ ? ककरो देल घर-घड़ारी नहि चाही हमरा । हमरा मामी भेटि गेलीह— बस्स, चलू ।"

अमित सहमल ठाढ़ छलैक । प्रणवकेँ विदा होइत देखि दौड़िकऽ पैरसँ लपटि गेलैक । प्रणव ओकरा कोरामे लैत कहलकै–"तोँ नहि डेरो । तोँ हमरे लग रहबैं । तोहर मायकेँ वचन देने छियौक । आ फेर अमितकेँ मामीक कोरामे ओकरा दैत कहलकनि–"लियऽ मामी ! अहाँक कोरामे फेर एकटा मातृहीन प्रणव । एकरो मनुक्ख बना दियौक ।"

मामीक कोरामे अमित । प्रणवक हाथमे मामीक हाथ । तीनू आगू बढ़ल ।

तखन जेना एतेक कालसँ सन्न ठाढ़ शीलाकेँ होश भेलैक । कनेक लग आबि आस्तेसँ बापकेँ कहलकै— हमहूँ जाइ छी बाबूजी ! मुदा जे-किछु आइ देखलहुँ, सुनलहुँ ताहिसँ नीक तऽ यैह होइत जे माला दीदी जकाँ हमरो प्राण छूटि गेल रहैत । भगवानसँ एतबे प्रार्थना रहत जे जिनगीमे फेर कहियो अहाँक सामने नहि लाबथि । कोना देखि सकब अहाँक मुँह ?"

आ दौड़िकऽ प्रणवक संग मिलि गामक बाहरक बाट धयलक ।

पटना पहुँचि जखन प्रणव ओकर संग ओकर डेरा विदा होबऽ लगलैक तऽ रोकि देलकै–"नै, हम एकसरे जायब ।"

मामी अमितक संग डेरामे सभ दिस घूमि रहल छलथिन । शीलाक बातपर प्रणव कहलकै–"नीक होइत जे हमरा चलऽ दितहुँ । से नै तऽ मामियोकेँ संग कऽ लैत छियनि, अमितो रहत । झा साहब आबि गेल हेताह, तऽ सभटा बात स्पष्ट कऽ देबनि ।"

मुदा शीला नहि मानलकै–"ककरो जयबाक काज नहि । हमरा एकसरे जाय दियऽ ।"

–'अहाँक इच्छा' प्रणव बेशी जिद नहि कयलकै ।

साँझखन शीला घुरि अयलैक । देखियेकऽ प्रणवकेँ आशंका भेलैक–"की भेल ?"

"वैह जे एकदिन हेबैक छल । आइ सभ दिन लेल ओ घर छोड़ि आयल छी । एना कहू जे निकालि देल गेल छी ।" शीलाक आकृति देखि प्रणवक आशंका बढ़ि भेलैक ।

"कारण ?" ओ पुछलकै ।

"अहूसँ बड़का कारण आर की चाही जे हम अहाँक संग एकसरि गाम गेल रही, बिना हुनकासँ पुछने । एकटा भ्रष्ट स्त्री लेल हुनका घरमे स्थान नहि छनि ।"

"ई तऽ बड़का अन्याय छनि हुनकर । पढ़ल-लिखल लोक भऽ एहन छोट विचार ! चलू हमरा संग, आइ फड़िछाइये लैत छी ।"

"आइ सभटा फड़िछाकऽ आयल छी हम । आब ककरो जयबाक काज नहि अछि । गेल तऽ हम छलहुँ भोरे । चौखटियेपर ठाढ़ छलाह जेना भीतर जाय नहि देताह । देखितहि गरजलाह–"कतऽ गेल छलहुँ ?''

"हँटू, भीतर आबऽ दियऽ पहिने ।" हुनका धकलैत जकाँ हम भीतर पैसि गेल रही ।·मुदा अपन कोठलीमे जयबा लेल डेग उठौने रही कि ओ फेर गरजलाह– ''ओम्हर कतऽ ? पहिने बातक जवाब देने जाउ । कतऽ गेल रही, आ ककरा संग गेल रही ?"

"गाम लेल रही प्रणवक संग । एकटा जरूरी काज आबि गेल छल ।"

"केहन जरूरी काज ?" ओ ओहिना अड़ल छलाह ।

"से बादमे कहब । पहिने नहाय-सोनाय दियऽ ।"

–"नहि, बादमे नहि ? पहिने कहू । किएक गेलौं ओकरा संग, कोन काज छल ?"

–"यदि जवाब नहि दी तऽ ?"

–"तऽ अखने नंगटिया कऽ घरसँ बाहर कऽ देब । जवाब देब की अहाँ ? हमरा संग ई त्रिया-चरित्र नहि चलत ।" ओ एकदम अभद्रतापर उतरि आयल छलाह । हमरो जिद धऽ लेलक–"तऽ करू बाहर नंगटिया कऽ, हमहूँ देखी ।"

ओ झिक्का-तीरी करऽ लगलाह । सभटा नूआ तीरी-तीरी कऽ देलनि, साया सेहो । देहोपर कोनो वस्त्र नहि रहऽ देलनि । हम हाथ जोड़ैत रहि गेलहुँ मुदा ओ नंगटिया कऽ छोड़लनि ।

हमरा भेल जे आब क्रोध शान्त भऽ जयतनि । मुदा ओ तऽ एकदम प्रचण्ड भऽ गेल छलाह–"आब निकलू, एहिना घरसँ बाहर । जाउ ओकरे संग, जकरा संगे दू दिन मौज कयलहुँ ।"

हम पैरमे मूड़ी गोंति कऽ चुक्की माली बैसि गेलहुँ, मुदा ओ हाथ पकड़ि घिसिआबऽ लगलाह । लागल जेना अखने अहिना नंगटे घरसँ बाहर कऽ देताह आ हमरामे जेना एकटा विचित्र साहस आ शक्ति आबि गेल । एकदम हाथ छोड़ा तनिकऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ–"आब लगाउ तऽ हाथ देखा दैत छी । अहाँ मनुख नहि,

राक्षस छी । अपन स्त्रीकेँ नांगट कऽ घरसँ बाहर कऽ रहल छी । अहाँकेँ भगवान अइ अपमानक बदला देताह । मुदा आइ हमर स्त्रीत्व अखने अहाँकेँ किछु सबक देत । आब बढ़ू तऽ कनियो आगू ।"

ओ क्रोधे आन्हर छलाह । फेर लपकलाह । हमरा हाथमे पर्दाक डण्टा आबि गेल । वैह तानि देलियनि–"खबरदार ! हाथ लगैलहुँ तऽ कपार भाँगि देब ।"

हमर रूप देखि ओ सकपका गेलाह । दाँत कीचैत बाहर चल गेलाह–"देखबैत छी मजा अखने ।"

डर भेल । क्रोधे अन्ध छथि । बाहरसँ लोकके लऽ अनताह । नांगट आ हाथमे डण्टा लेने ठाढ़ छी हम । अपन रूपपर अपने लाज आ ग्लानि भेल । डण्टा फेंकि देह झँपलहुँ आ बिछौनपर पड़ि कानऽ लगलहुँ ।

किछु काल बाद मोन शान्त भेल तऽ लागल जे आब एना नहि चलत । ओ फेर औताह । फेर काण्ड करताह । आब बाँकिये की रहि गेल अछि ?

हम घरसँ निकलि गेलहुँ । बड़ी काल धरि गंगा कातमे बैसल रही । साहस नहि भेल प्राण देबाक, आत्महत्या करबाक । अहाँ लग आबि गेल छी, कहब तऽ फेर घुरि जायब ।"

शीला सभटा कहि चुप भऽ गेलैक । प्रणव किछु काल बाद कहलकै– "हम घुरि जयबा लेल नहि कहब अहाँकेँ । निर्णय अहाँ अपने करू । मुदा एकटा बात हम कहब । अहाँक एतऽ रहलासँ प्रोफेसर झाकेँ अपन बात प्रमाणित करबामे सुविधा हेतनि ।"

–"अहाँ ओइसँ भयभीत छी, तऽ हम घुरि जाइ ?" शीला उठऽ लगलैक । ओकरा रोकैत प्रणव कहलकै— "बात हमर भयक नहि, अहाँक निर्णयक अछि । सोचि लियऽ, बादमे पछताय ने पड़य । –"सोचि लेने छी । चाहे जान चलि जाय, आब घुरिकऽ नहि जायब ।"

प्रणव जिद नहि कयलकै । सोचलक जे दुख आ अपमानसँ अखन ओ असंतुलित भऽ गेल छैक । मोन शान्त हेतैक, तखन ओकरासँ गप्प करत ।

मुदा तैयो अपना दिस सँ ओ चेष्टा कयने छल । दोसर दिन स्टाफ रूममे प्रोफेसर झा एकसर भेटल छलथिन । ओकरा देखिकऽ घुरऽ लागल छलथिन । प्रणव रोकलकनि–"हमर बात सुनि लियऽ, तखन जायब । शीला बड़ दुखी अछि । ओकरा घर लऽ अबियौक ।"

प्रोफेसर झा ओकरापर व्यंग्यसँ हँसैत कहलथिन–"सूचना लेल धन्यवाद । मुदा हमरा स्त्री-देह लेल एतेक खगता हैत तऽ शहरमे आर वेश्या नहि छैक की ?"

प्रणव हुनकापर लपकल— "रास्कल !" यदि तत्काल स्टाफरूममे आर प्रोफेसर सब नहि आबि जइतैक तऽ प्रणव हुनकर मुँह फुलाकऽ तुम्मा अबस्स बना दितनि ।

मुदा ई घटना सुनि शीलाक मुँह अबस्स फुलिकऽ तुम्मा भऽ गेलैक–"एतेक भार लगैत छी, तऽ हमरा कहितहुँ, हम अपने चल जैतहुँ । हुनकासँ कहि फेर अपमान किएक कयलौं हमर ?"

"गप्प बोझक नहि छैक शीला, भविष्यक छैक । अहाँ रहब एतऽ, अइसँ बढ़िकऽ प्रसन्नताक गप्प आर की भऽ सकैत अछि ? अहाँ किएक बोझ लागब हमरा ? मुदा अहाँ रहि सकब ? कतेक दिन ?"

—यदि हम कही सभदिन, हमेशाक लेल, तऽ अहाँकेँ कोनो आपत्ति हैत ?"

बहुत दिनुका बाद शीलाक ठोरपर हँसी पसरलैक आ ओ एकदम भकरार भऽ प्रणवक चेहरापर छिड़िआ गेलैक ।

पहिने अमित स्कूल जाइत छलैक– साढ़े आठ बजे । ब्लू पैण्ट आ उज्जर हाफशर्टपर लाल टाइ लगा जखन ओ 'टाटा पप्पा, टाटा आण्टी, टाटा ग्रैण्ड माँ' करैत अपन बस दिस दौड़ैत छलैक, सभक आकृतिपर प्रसन्नताक लहरि आबि जाइत छलैक, विशेषकऽ शीलाक । अमित बिन-बापक नहि रहलैक । स्कूलमे बापक नाम लिखल छलैक– प्रणव कुमार चौधरी । माला दीदीक बेटा अनाथ नहि भेलैक । नाना जगह नहि देलकै, मौसी अपने दोसरक आश्रयमे पड़ल छलैक । मुदा ओकरा बाप भेटि गेलैक । एकटा बाबी भेटि गेलैक, भागमन्त अछि अमित ।

मुदा प्रणवकेँ लगैत छलैक जेना वैह भागमन्त अछि । जिनगीसँ मामी चल गेल छलैक, सभटा कोनादन लगैत छलैक । मुदा मामी भेटि गेलैक आ फेर सभटा ओहिना भऽ गेल छलैक ।

ओहूसँ बेशी कहबाक चाही । शीलो आबि गेल छलैक । शीलाकेँ नीक जकाँ ओ कहियो नहि बूझि सकलैक । लगैत छलैक जेना किछु छलैक ओकर मोनमे । मुदा स्पष्ट ने कहिओ किछु ओ बूझि सकल, ने शीले कहलकै ।

मुदा ओइ दिन शीला साफ कहि देलकै– एतहि रहतैक हरदम । आब अइसँ बेशी की कहितैक ओ ? मुदा तैयो प्रणवकेँ साहस नहि होइत छलैक । नहि जानि की बुझैक ?

ओना सभटा तऽ वैह सम्हारने छलैक । घर-गृहस्थी, रुपैया-पैसा । मामीकेँ तऽ बस्स अमित छलनि, ओहीमे लागल रहैत छलीह । दिनभरि ओ स्कूल रहैत छलनि, प्रणवो कालेज चल जाइत छल, तखन नहि जानि की गप्प करैत छलीह दुनू, प्रणवकेँ पतो नहि लगैत छलैक । ओकर सभ-किछु व्यवस्थित ढंगसँ चलि रहल छलैक । भोरे अमित स्कूल जाइत छलैक, दस बजे ओ कालेज जाइत छल । चारि बजे घुरिकऽ अबैत छल तऽ मामी आ शीलाक संग अमितो प्रतीक्षामे रहैत छलैक । भरिसक शीले ओकरा 'पप्पा' कहनाइ सिखा देने छलैक आ मामीकेँ ग्रैण्ड-माँ । मामी पहिने बुझबे नहि करथिन । बुझलथिन तऽ बड़ हँसी लगलनि ।

साँझ कऽ बाहर छोट-छीन लॉनमे सब बैसैत छल । ओतहि चाय लऽ अनैत छलैक शीला । फेर अमितकेँ पढ़बऽ लगैत छलैक अपन कोठलीमे । बगलवाला कोठलीमे प्रणव अपन प्रतियोगिताक तैयारीमे जुटि जाइत छल । मास भरि बाद परीक्षा छलैक, आइ.ए.एस.क । खा-पी कऽ अमित मामीक कोठलीमे सूतऽ लेल चल जाइत छलैक आ प्रणव आ शीला अपन-अपन कोठलीमे । तीनिये कोठलीक डेरा छलैक । ड्राइंगरूमक बदला बरण्डा छलैक आ छोट-छीन लॉन । मुदा प्रणवकेँ लगैत छलैक जेना सभ किछु राजसी ठाठसँ चलि रहल होइ ।

खाली एकटा कमी छलैक । सदिखन प्रणव सोचैत छल । कतेको बेर सोचिकऽ शीलाक कोठली तक गेल छल आ फेर बिनु कहने घुरि आयल छल । कहीँ अपन अपमान ने मानैक ? बड़ स्वामिमानिनी छलैक शीला । आश्रय स्वीकार कयने छलैक तऽ प्रेमो स्वीकार कऽ लेतैक ?

कखनो लगैत छलैक ई ओकर घमंड छलैक । ओ सब-किछु शीलेक मुँहसँ सुनऽ चाहैत छल । आगू बढ़ि हाथ पकड़ि कहैत किएक ने छलैक ? मुदा तखने मोन करैत छलैक– शीला बिआहलि छलैक, स्वामी जीवित छलैक । कानूनी रूपसँ पृथको ने भेल छलैक । ओकरासँ एहन प्रश्न करब अनर्गल आ अपमानजनक नहि हेतैक ? आ कानूनी कारवाइ सँ शीलाकेँ डाइवोर्स यदि भेटियो जाइ, तऽ अपन समाज तलाक आ पुनर्विवाहकेँ स्वीकार करतैक ? सम्पूर्ण समाजमे हंगामा मचि जयतैक ।

मुदा ताहि लेल ओ किएक डेरायत ? एतेक दिन धरि की कयलकै ई समाज ओकरा लेल ? ओकर मामीकेँ, विधवा मामीकेँ, एकटा बूढ़ प्रतिष्ठित लोक

भ्रष्ट कयलकै, की कयलकै समाज ? मालाकेँ ओकर पित्ती बेचि देलकै, कहाँ छलैक समाज ? मधु पलटू मिसर संग राति-बिराति बौआइत छलैक, कहाँ रोकैत छलैक समाज ? शीलाकेँ स्वामी नांगट कऽ घरसँ निकालि रहल छलैक, कहाँ बचौलकै समाज ?

ओ तऽ सभक सामने स्वीकार करतैक ओकरा । फेरसँ जिनगी शुरू करबाक अधिकार पुरुषकेँ भेटि सकैत छैक, तऽ स्त्री किएक वंचित रहत ? शीलाक कोन दोष छलैक ? ओ तऽ सभटा अपमान, लांछन सहि निर्वाह करैत छल । मुदा जखन बेपर्द घरसँ निकालऽ लगलैक, तखन की करैत ?

नहि, ओकरा नहि डेरयबाक चाहिऐक । साहसपूर्वक घोषणा करबाक चाहिऐक ? सभक समक्ष, सम्पूर्ण समाजक समक्ष...

मुदा शीला राजी हेतैक तखन ने ? ओकरा शीलासँ स्पष्ट पुछबाक चाहिऐक । ओइ दिन ओ कहने रहैक–"हम एतहि रहब, सभ दिन, हमेशा ।" आब प्रणव पुछतैक—"अहाँ हमरे लग रहू, हमेशाक लेल । रहब किने ?"

छौ मास ओहिना बीति गेलैक । देरी करब ठीक नहि छलैक । प्रणवकेँ जल्दिये पूछि लेबाक चाहिऐक ।

सुग्गी रानी, सुग्गी रानी, कतऽ जाइ छी ?
सायँ-पूत मारलक-ए रुसल जाइ छी ।
हमरा लग रहब ?
रहब ने किएक !
खाय की देब ?
सुक्खा रोटी ।
सूतऽ की देब...?
शीतलपाटी ।

मामी खिस्सा कहि रहल छलथिन अमितकेँ । अमित मामीक करेजसँ सटल, दम सधने खिस्सा सुनि रहल छल । बाटमे जे क्यो ठहरबाक आग्रह करैत छलनि, सुग्गी रानी एक्के प्रश्न पुछैत छलथिन– 'खाय की देब ?"

मुदा शीला तऽ जयबाक सूचना मात्र देबऽ आयल छलैक जेना– "हम जा रहल छी । आब आर एतऽ नहि रहि सकब । हमरा जाय दियऽ ।"

ओहि सुतली रातिमे अचानक कोठलीमे आबि गेल छलैक शीला । ओ सुतबाक उपक्रम करैत कान पथने दोसर कोठलीसँ अबैत मामीक स्वर सुनि रहल छल । कतेको बेर सुनल खिस्सा छलैक । सैकड़ो बेर मामी ई खिस्सा सुनौने हेतैक । प्रणवकेँ अपन नेनपन मोन पड़ि रहल छलैक । लागि रहल छलैक जेना मामी बगलमे पड़ल छलैक आ ओ आँखि मुनने खिस्सा सुनि रहल छल । निन्नसँ पपनी भरिआयल जा रहल छलैक ।

तखने लगलैक जेना क्यो बिछौना लग ठाढ़ होइ– एकदम समीप । आँखि खोलितहि अकचकाकऽ उठि बैसल । ओकरा ओना उठैत देखि शीलो दू-एक डेग पाछाँ हँटि ठाढ़ भऽ गेलैक । कोठलीक बीचो-बीच ठाढ़ छलैक शीला, एकदम शान्त, एकटक ओकरापर दृष्टि गाड़ने । प्रणवकेँ किछु असाधारण सन लगलैक । पुछलकै– किछु कहब ? शीला ओहिना शान्त-स्थिर ठाढ़ रहलैक ओकरापर दृष्टि गाड़ने । ओकर प्रश्न जेना सुनबे नहि कयलकै । बिजलीक रोशनीमे ओकर सम्पूर्ण देह एकदम स्थिर लागि रहल छलैक– स्पन्दनहीन । पलक टांगल– एक्को बेर नहि खसैत होइ जेना ! प्रणव डेराकऽ ठाढ़ भऽ गेल आ आर समीप होइत बाजल–"की बात छैक ? किछु कहबाक अछि ?"

शीला चौंकलैक । लगलैक जेना ओकर बात सुनि लेने होइक । देहमे स्पन्दन भेलैक । पपनी खसि पड़लैक आ खसले जकाँ रहलैक । ओहिना निच्चाँ तकैत किछु काल बाद बजलैक–"हम जा रहल छी । आब आर नहि रहि सकब एतऽ । हमरा जाय दियऽ ।"

प्रणव अइ सूचना लेल एकदम अप्रस्तुत छल । भेलैक जेना शीला उद्विग्न होइक, पुरना बात सभ फेर अशान्त कऽ देने होइ । कोमल स्वरमे कहलकै–"एना क्यो सोचय ? आब ई घर छोड़िकऽ आर कहाँ जायब अहाँ ?"

दप्पसँ शीलाक दुनू आँखि बरि उठलैक । फेर ओहिना दुनू आँखि ओकर चेहरापर गाड़ैत अनचिन्हार स्वरमे बाजि उठलैक–"सत्ते कहैत छी । आब ई घर छोड़िकऽ आर कोन आश्रय अछि हमर, हमरा लोकनिक ?"

प्रणवकेँ अइ बदलल स्वरपर आश्चर्य आ दुख भेलैक, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत शान्त स्वरमे बाजल–"ई आश्रय नहि, अधिकार थिक अहाँक शीला ! हाथ बढ़बिते पाबि सकैत छी एकरा ।"

"सैह तऽ हमहूँ कहैत छी जे हाथ बढ़बिते ई आश्रय भेटि सकैत अछि, भेटल अछि । अहाँक दया आ सामर्थ्य असीम अछि । हमरा सन-सन लोकके अहाँ अबस्से आश्रय दऽ सकैत छिऐक । अहाँक अइ सामर्थ्यपर रत्ती भरि अविश्वास नहि अछि हमरा ।"

प्रणवकेँ लगलैक जेना व्यंग्य कऽ रहल होइक शीला । मुदा आकृति एकदम शान्त छलैक, एकटा दृढ़ निश्चयक शान्ति पसरल छलैक चेहरापर । किछु आहत होइत बाजल-"गप्प सामर्थ्यक नहि छैक शीला, स्नेह आ समर्थनक छैक, विश्वास आ प्रेमक छैक । विश्वास आ प्रेमसँ स्वीकार भेल आश्रय सुखद होइत छैक आ मात्र सामर्थ्यक भरोसपर स्वीकार आश्रय बन्धनो लागि सकैत छैक ।"

"सैह तऽ हमहूँ कहैत छी । दयाकेँ प्रेम बूझि ककरो आश्रय देलापर बादमे पछतायलो जा सकैत अछि ।" शीलाक स्वर ओहिना शान्त छलैक ।

"दया !" प्रणवकेँ लगलैक जेना कानमे पघिलल शीशा पड़ि गेल होइ । चोटायल दृष्टि शीलाक चेहरापर गाड़ैत बाजल-"जे किछु हम कयलहुँ अछि से मात्र दयावश, यैह सोचैत छी अहाँ ?"

"अहाँकेँ अधलाह लागि रहल अछि"-शीला बीचहिमे बाजि उठलैक-"मुदा आइ अधलाह लगलासँ जीवन भरि एकटा अनिच्छित बोझ ढोबासँ बाँचि जायब, तेँ हमर बात अधलाहो लगलापर सुनि लियऽ । हम जनैत छी जे अहाँ बहुत-किछु कयलहुँ अछि हमरा लेल, माला दीदी आ अमित लेल । मुदा ताहिसँ हमरा ई भ्रम भऽ जाय जे अहाँ हमरासँ प्रेम करैत छी, ततेक बकलेल आ दुखसँ आन्हर हम आइयो नहि भेल छी । बिआह करबा लेल तऽ अहाँ मालो दीदीसँ तैयार भऽ सकैत छलियनि, एकटा पतिताक उद्धार— अहाँक आदर्श व्यक्तित्वकेँ ई विचार प्रेरित करैत । आइ शीला लांछित अछि, समाज आ परिवार द्वारा तिरस्कृत आ बहिष्कृत अछि, ओकरो उद्धार करब अहाँकेँ नीक लागि रहल अछि, आर अहाँ तैयारो छी । मुदा वस्तुतः अहाँ हमरा दुनू बहिनसँ घृणा करैत छी, अहाँक दया एकटा प्रतिशोधक रूप थीक ।"

शीला एक्के साँसमे बाजि गेलैक । मुदा तैयो शान्त लागि रहल छलैक । प्रणवकेँ सभटा असह्य लागि रहल छलैक । शीलाक आरोप ओकर हृदयकेँ मथि रहल छलैक, एकटा आदर्शवादी हृदयहीन कहि रहल छलैक ओकरा । बड़ मस्किलसँ ओकर मुँहसँ शब्द बहरेलैक-"हम हृदयहीन आदर्शवादी छी । मात्र प्रतिशोध लेबाक हेतु अहाँ सभपर दया-माया देखा रहल छी । आरो किछु कहब बाँकी रहि गेल अछि ?"

"कहबाक तऽ बहुत-किछु अछि आ आइ सभटा कहियेकऽ जायब । फेर दोबारा मौका भेटय वा नहि भेटय । धीया-पूतामे अहाँक गरीबी आ अभाव पर हम दुनू बहिन बड़ हँसैत छलहुँ । कने हाथ छूलापर माला दीदी अहाँकेँ चाट मारि देने छलीह । शनीचरी नहि अनलापर जखन अहाँक उघार देहकेँ गुरुजी खजूरक छड़ीसँ फुला दैत छलाह, हम दुनू बहिन आह्लादित भऽ हँसैत छलहुँ । अहाँकेँ बिसरि गेल हैत ओ सभ ? ओकरा जाय दियऽ । धीयापुताक गप्प छलैक ओ । मुदा ई कोना बिसरल हैत अहाँकेँ जे एकटा किताब माँगऽ आबिकऽ हमर घरमे हमरा सोझाँमे अपमानित भेल रही अहाँ ? तहिया बच्चा नहि रही हम आ किताब देबा लेल हमहीँ बजौने रही अहाँकेँ । बकार खूजल हमर ? अहाँकेँ अपमानित करबाक षड्यंत्रमे साझी भेल रही हम । इहो बिसरि गेल हैत ? अहाँक स्थानपर हमहूँ रहितहुँ तऽ किछुओ नहि बिसरैत हमरा । एक-एक बातक गीरह बान्हिकऽ रखितहुँ हम । माला दीदीक बौआइत आत्माकेँ शान्ति देबा लेल हुनकर सन्तानकेँ सही स्थान पहुँचाबऽ गेलियनि, की भेटल अहाँकेँ ? आइ तऽ अहाँकेँ सभ-किछु भेटि सकैत अछि, इच्छा करितहिं अपन अपमान करऽवलासँ बदला लऽ सकैत छी अहाँ । मुदा अहाँ से सभ नहि कयलहुँ, नहि करब, हम जनैत छी । मुदा सभटा बिसरि कोना जायब अहाँ आ अहाँ बिसरियोकऽ संग राखियो लेबैक अमितकेँ, हमरो, तैयो कोना बिसरत हमरा सभटा बात ? अमित बच्चा अछि, ओ रहि सकैत अछि, पैघ भेलापर जखन सभटा सुनत-बुझत तखन चाहे जेहन लगैक । भऽ सकैत अछि जे ओ कहियो किछु नहि जानय । भगवान करथुन नहि जानय । मुदा हम कोना सभटा जानिकऽ, सभटा बिसरिकऽ एतऽ रहि सकब ?"

प्रणव अवाक् भेल सभटा सुनैत रहल । शीलाक आकृतिपर प्रमादक कोनो लक्षण नहि छलैक, नहि तऽ ओकरा सन्देह होइतैक जे बताहि भऽ गेल छैक । मुदा एना किछु काल धरि ओ आर बजैत रहितैक तऽ प्रणव अबस्से बताह भऽ जाइत । शीलाकेँ जयबाक अनुमति चाहियैक, ओकरा देबऽ पड़तैक । नहि, अनुमति देबाक कोनो अधिकार ओकरा नहि छलैक । शीला सूचना देबाक औपचारिकता निबाहऽ आयल छलैक । ओकर स्वीकृति-अस्वीकृति अर्थहीन छलैक । शीलाक निर्णय बदलल नहि जा सकैत छलैक ।

ओकरा चुप्प देखि शीला टोकलकै-"अहाँकेँ अधलाह लागि गेल ? लगले हैत । मुदा कतबो अधलाह लागय तऽ मोन छोट नहि करू । हमरासँ घृणा करू, अपमानित कऽ घरसँ निकालि दियऽ, मुदा एना मोन छोट नहि करू । हमरा जयबाक अनुमति दियऽ, हमरा नहि रोकू"-शीला अनुनय करऽ लगलैक ।

–"कोनो तरहे नहि रुकब अहाँ ?" अपन मुँहसँ निकलल शब्द प्रणवकेँ अपने अनचिन्हार लगलैक जेना अनचोकेमे कण्ठसँ बहरा गेल होइ ।

–"हमर रुकि जयबाक रस्ता अछि, अहाँ चाही तऽ हमरा रोकि सकैत छी । मुदा अहाँ बुते से पार नहि लागत"–शीला जेना चुनौती देलकै ओकरा ।

प्रणव उल्लसित होइत बाजल– "लागत, अलबत्त पार लागत । अहाँ जे कहब, सैह करब हम ।"

ओइ क्षणमे प्रणव एकटा भावुक प्रेमी सन लागि रहल छल– शीलाक स्वीकृतिक आशासँ हुलसल, एकटा एहन प्रेमी जकर मोनक बात वर्षोक संयम तोड़ि बहरा गेल होइ आ ओ समर्पित भावसँ स्वीकृतिक प्रत्याशामे ठाढ़ हो ।

मुदा शीलाक आकृतिपर ने लाजक लालिमा छलैक आ ने उल्लासक । ने स्वीकृतिक सहजता छलैक, ने अस्वीकृतिक कठोरता । एकटा विचित्र सन शान्त आ तटस्थ भाव छलैक । बाइस-तेइस बरखक शीला अनायास बड़ प्रौढ़, बड़ पैघ भऽ गेल छलैक । रातुक एकान्तमे अपन बालसंगीक मुँहे एकटा स्पष्ट स्वीकृति सुनियोकऽ, ओकर विकल आकृति देखियोकऽ ओकर देहमे रोमांच नहि भेलैक, मोनमे सिहरन नहि भेलैक । ओहिना शान्त स्वरमे बजलैक–"तऽ रोकि लियऽ हमरा । रातुक एकान्तमे एकसरि अहाँक कोठलीमे आयल छी हम । हमर नारीत्वकेँ अपमानित आ कलंकित कऽ दियऽ । फेर हम कहियो जयबाक नाम नहि लेब । अहाँक जबर्दस्ती सहि लेब हम, मुदा ई क्षमा सहन नहि हैत । आ अहाँक बदलो सधि जायत । एक दिन अहाँक मामीकेँ हमर बाप...'

''चुप्प भऽ जाउ । अहाँ होशमे नहि छी । चाहे बताहि भऽ गेल छी, चाहे हमरा अपमानित करबा लेल स्वांग धयने छी । अपन अपमान हम सहि लेब, मुदा अहाँक अपमान हम नहि सहि सकब । अहाँ जाउ, अहाँकेँ रोकबाक चेष्टा करब हमर मूर्खता छल ।"

आब शीला हँसलैक– एतेक कालक बाद । आ ओइ हँसीक संग ओ प्रौढ़ आ बड़की टा लगैत शीला बिला गेलैक आ एकटा बाइस वर्षक स्त्री, नहि, कुमारि कन्या सन सामने ठाढ़ भऽ गेलैक– रूपक चमचमाहटि, यौवनक मादकता आ समर्पणक स्निग्धताक संग । एकदम सहज आ चिन्हार शीला । प्रणवक बालसंगी शीला । मुदा आब प्रणव ओकरा नहि देखि रहल छलैक । ओ तमतमायल मुँह घुमौने ठाढ़ छलैक । शीलाक हँसैत आकृति क्षण भरिक लेल म्लान भेलैक । मुदा फेर तुरत सहज होइत बाजि उठलैक–"तामसोमे अहाँ दण्ड नहि दऽ सकैत छिऐक ककरो ।

जबर्दस्ती रोकि नहि सकैत छिऐक ककरो, बल-प्रयोग नहि कऽ सकैत छिऐक । मुदा जयबाक स्वीकृति दैये रहल छी, तऽ एना तमसाकऽ ठाढ़ नहि होउ मुँह घुमाकऽ । सहज भऽकऽ, हँसि कऽ बिदा करू हमरा जे मोन मे साहस रहय जे इच्छा कयलापर फेर एतऽ घुरि सकैत छी । एकटा आश्रय सुरक्षित अछि हमर ।"

एहि बीच प्रणव सहज भऽ गेल छल । शीला दिस तकैत हँसिकऽ बाजल–"आइ सत्ते बड़ चतुर आ तैयार भऽ कऽ आयल छी अहाँ । चित्त-पट दुनू अहाँक । आइ धरि, एतेक दिन धरि देखि सुनि, संग रहियोकऽ जेना चीन्हि नहि सकलहुँ अहाँकेँ । एकदम अपरिचित आ रहस्यमयी भऽ गेल छी अहाँ । पहिने हमर स्नेह अहाँकेँ दया आ आश्रय लागल, आ आब जाइत-जाइत ओ आश्रयो संदिग्ध लागि रहल अछि । हमर आश्वासनो अहाँकेँ दयापूर्ण आ देवत्वभरल लागत–तेँ अहाँकेँ आश्रय सुरक्षित रहबाक आश्वासनो नहि देल जा सकैत अछि ।"

अइ बेर शीला खिलखिलाकऽ हँसलैक, हँसैत-हँसैत घूमिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक, जेना किछु नुका रहल होइक ! फेर ओहिना हँसैत घूमि गेलैक आ बजलैक– ''हम तऽ पहिने कहलहुँ जे अहाँ तमसाओकऽ किछु छीनि नहि सकैत छियैक ककरो, किछु दैये सकैत छियैक । आ अहाँक ई आश्वासन कतेक पैघ सम्बल रहलैक ककरो से प्रायः अहाँ आइ विश्वास नहि करबैक ।" अन्तिम पाँती बजैत-बजैत जेना शब्द कण्ठमे फँसि गेलैक । कने खखसिकऽ कण्ठ साफ करैत आ आँचरसँ आँखि-मुँह पोछैत बजलैक–"एकदम अज्ञात आ अनिश्चित बाटपर नहि जा रहल छी हम । एकटा नौकरी भेटि गेल अछि हमरा । हमर पता..."

"ओकर कोन प्रयोजन ?" प्रणव बीचमे बात कटैत कनेक तीव्रतासँ कहलकै ।

कनेक आहत जकाँ भेलैक शीला, मुदा तुरत सम्हरैत बजलैक–"ठीके कहैत छी अहाँ । हमर पताक प्रयोजन अहाँकेँ नहि हैत ? प्रयोजन हमरा भऽ सकैत अछि आ अहाँक पता हमरा लग अछि, रहबे करत ।''

किछु काल चुप्पी पसरि गेलैक, जेना कहबा लेल किछु नहि रहि गेल होइ वा कहबाक कोनो बहाना नहि रहि गेल होइ । दुनू स्तब्ध ठाढ़ रहल बड़ी काल । फेर प्रणव टोकलकै–"कखन जायब ?"

"तैयार भऽकऽ आयल छी । दिनमे अमित जाय नहि देत । मामियो जिद करतीह । परसू ज्वाइन करबाक अछि । आइये रतुका गाड़ीसँ जा रहल छी । साढ़े एगारह बजे ट्रेन अछि ।" शीला जेना प्रश्नक प्रतीक्षेमे छलैक, सभटा कहि गेलैक ।

—"साढ़े दस बाजि गेल अछि । चलू, पहुँचा दैत छी स्टेशन । अहाँ तैयार होउ, हमहूँ पाँच मिनटमे तैयार भेल अबैत छी ।" प्रणव टेबुलघड़ीमे समय देखैत बजलैक ।

—"नहि, अहाँ स्टेशन नहि जायब । हमरा एकसरे जाय दियऽ । रिक्शा बजबा लेने छी हम, काज जोगर पैसो बहारकऽ राखि लेने छी, बाँकी पैसा आ हिसाब अलमारीमे राखल अछि ।"

"एकदम हिसाब साफ कऽ जा रहल छी अहाँ । बेश जाउ ।" प्रणवकेँ आगू बजबा लेल प्राय: शब्द नहि भेटलैक ।

शीला गेलैक नहि, ओहिना ठाढ़ रहलैक किछु काल । फेर एकदम लग आबि बजलैक—"अहाँक हिसाब साफ करबाक चेष्टा करी, एतेक क्षुद्र आ नीच नहि छी हम । गलती कऽ सकैत छी । भऽ सकैत अछि फेर गलतिये कऽ रहल होइ । मुदा अहाँक हिसाब साफ कऽ जयबाक दावा करबाक नीचता नहि कऽ सकैत छी ।"

शीला ततेक समीप आबि गेल छलैक जे ओकर साँस प्रणवक कण्ठमे लागि रहल छलैक । क्षण भरिक लेल ओकर इच्छा भेलैक जे एहिना, एही क्षण सभटा जड़ भऽ जाइ । मुदा दोसरे क्षण शीला घूमिकऽ कोठलीसँ बाहर जा रहल छलैक । आ ओकर किछु बजबाक पूर्व कोठलीसँ बाहरो जा चुकल छलैक ।

प्रणव जल्दीसँ खिड़की लग आबिकऽ ठाढ़ भऽ गेल । बाहर गेटपर एकटा रिक्शा ठाढ़ छलैक । रिक्शा विदा भेलैक । शीला घुरिकऽ तकलकै । प्रणवकेँ लगलैक जेना ओकरा खिड़कीपर ठाढ़ देखि लेने होइ । ओ पाछाँ हँटि गेल । अपनापर कने खौँझ आ तामस भेलैक जे किएक ऐना ठाढ़ भेल ? सभटा समाप्त भऽ गेलैक आइ, ओकरा फेरसँ शुरू करबाक चेष्टा करब व्यर्थ छलैक ।

मामीक खिस्सो समाप्त भऽ गेल छलनि, सुग्गी रानी घुरि आयल छलीह । लोलसँ खीर लाड़बाक चेष्टामे बक पाकिकऽ मरि गेल छलाह आ मोटरी-चोटरी लेने सुग्गी रानी घुरि आयल छलीह । अमित सूति गेल छल, भरिसक मामियो ।

मुदा प्रणवक आँखिमे निन्न नहि छलैक । शीला जा चुकल छलैक, ओकर घुरबाक कोनो आस नहि छलैक । ओ सुग्गी रानी जकाँ सभसँ आश्रय नहि मँगतैक; इहो नहि पुछतैक जे खाय की देब ? ओ स्वाभिमानिनी छैक आ अप्पन पैरपर ठाढ़ हेबाक क्षमता रखैत छलैक । अइ विशाल संसारमे असहाय निरुद्देश्य बौअयबा लेल नहि, एकटा उद्देश्यक संग, एकटा नौकरी पाबि घरसँ बाहर पैर देने छलैक । ओकर घुरबाक कोनो आशा नहि छलैक ।

मुदा प्रणव किएक चाहि रहल छल जे ओ घुरि अबैक ? एहन छलैक तऽ जबर्दस्ती रोकि किएक ने लेलकै ओकरा ? ओ तऽ ओकर पौरुषकेँ ललकारनो छलैक, किएक ने बढ़ल आगू ?

नहि, ओकरा घुरबाक बात नहि सोचबाक चाहिऐक । ओकर मंगलकामना करबाक चाहिऐक शीलाक लेल जे ओकर यात्रा सफल होइ, ओकर बाट निष्कंटक रहैक । ओ दुखी छैक, दुनियामे एकसरि छैक । एकटा बालसंगीक शुभकामना ओकर बाटक सम्बल रहतैक ।

मुदा ओ तऽ स्वयम् एकसर छल । ओकरा लेल कहाँ सोचलकै शीला ? ओ तऽ ओकर सभटा भावना आ स्नेहक उपहास कऽ, अपमान कऽ चलि गेलैक । ओकरा मोनसँ मंगलकामना कोना बहरयतैक ?

मुदा एकसर कहाँ छल ओ ? ओकरा लग अमित छलैक, मामी छलैक । ओकरा अपना लेल नहि सोचबाक चाहिऐक । आइ एकदम एकसर भऽ गेल छलैक शीला । ओकर मंगलकामनाक ओकरा सभ दिनसँ बेसी आवश्यकता छलैक ।

अनायास प्रणवक दुनू हाथ शून्यमे जुड़ि गेलैक । नहि जानि, ककरासँ की मंगलकै हाथ जोड़िकऽ ? ओकर मोन शान्त नहि भेलैक । ओ चुपचाप बिछौनपर पड़ि रहल । बहुत रास बात सभ मोन पड़लैक ।

पहिने मोन पड़लैक एकटा स्कूल, स्कूलमे माटिपर बैसल चटियासभ आ आसन बिछा बैसल दू टा छौंड़ी । फेर मोन पड़लैक अपन गालपर एकटा समधानल चाट—"हमर देह छूता, सऽख ने देखू ! पहिने मखानक पातसँ मुँह पोछि आ" । एकटा दोसर दृश्यमे वैह स्वर, मुदा बदलल-बदलल—"किताबे अदला-बदलीमे डँटा गेलैं । च्-च्-च् । हमरा छू कऽ देख । आइ नहि मारबौ हम, आ ने !" आ फेर एकटा तेसर दृश्यमे सौंसे मुँहपर घिनौन चकता सभ लेने फेर वैह स्वर— तोँ साधारणसँ फराक सभ दिन छलैं, तोँ राखि सकैत छहिक अमितकेँ" । ओही आकृति आ ओही स्वरक संग जुड़ल एकटा दोसर आकृति आ दोसर स्वर-"कने अपन कौपी दियऽ त" । दोसर दृश्यमे वैह स्वर एकदम बदलल—"अहाँ किएक अयलहुँ एतऽ ? अहाँकेँ बूझल नहि अछि जे अहाँ एकटा अन-चाहल लोक छी एतऽ ?"

मुदा एतऽ रहऽ लेल आयल छलैक शीला । ओहो चाहैत छल जे शीला ओकरे लग रहैक । तखन किएक चल गेलैक शीला ?

दोसर भाग

हमरा लग रहब ?

मुनेसर पासवानक जीप सरसराकऽ आगू निकलि गेलैक आ टोलक आखिरमे सड़कक कातमे टिनही बाटी लेने बैसल जलेसरी बुढ़ियाक आँखि-मुँह गर्दासँ तोपा गेलैक । किछु नांगट आ गर्दामे लेटायल छौंड़ा सभ जीपक पाछाँ मोड़ धरि ओही उड़ैत गर्दामे दौड़ि गेल ।

नाक-कान-मुँह झाड़ैत बुढ़िया जलेसरी बड़बड़ायल–"हवागाड़ीमे बैठिके मुनेसराके भुइयाँके लोक सुझबे ने करै हइ, ई भिखमंगनी बुढ़िया कोना सुझतैक ?"

सुकुर भेलैक जे एम.एल.ए. मुनेसर पासवान ओकर गप्प नहि सुनलकै, नहि तऽ जीप रोकि बुढ़ियाकेँ एक घण्टा धरि भाषण पियबितैक–"ई बात तोँ कैसे बोलले काकी ? ई हवागाड़ी ककरा लेल दौड़बै छी दिन राति ? कोनो सऽख है हमरा हवागाड़ीके ? मुदा समय बाँचत तखन ने लोक सभक काजमे लगेबै ? हमरा तऽ दिन-राति ओकरे चिन्ता है, तोहर काज, ओकर काज, सभक काज । आर कोनो चीज सुझै है हमरा ।"

ओना नहि सुझबाक वयस जलेसरी बुढ़ियाक छलैक । सुझितो नहि छलैक आ एकटा पयरो लोथ छलैक । जमीनपर घिसटैत चलैत छल बुढ़िया । मुदा सुझबो करितैक, तैयो मुनेसर पासवानक गप्प नहि मानितैक आ कहितैक–"बहुत भेलौ मुनेसरा ! आब चुप्प रह । ककर चिन्ता हऽ तोरा, हमरा खूब बूझल है । जो, अपन हवागाड़ीमे जो, देवीजी बैठल होतौ...।"

लोहछिकऽ मुनेसर पासवान विदा भऽ जाइत आ बुढ़िया ओहिना बड़बड़ाइत रहितैक । तखन जीप सरसराइत चल गेल छलैक आ जलेसरी बुढ़िया एकसरि बड़बड़ा रहल छल । मुँह-कान-आँखि झाड़ि रहल छल आ बड़बड़ा रहल छल ।

घरसँ हजरा बहरायल–"की होलौ काकी ? ककरापर बमकल छहिक ?"

जलेसरी ओहिना फुफुआइत बाजलि–"आर के हउ टोलमे रे बौआ ? उहे मुनेसरा रहली । अन्हरी बुढ़ियाक बाटीमे दू गो पाइ तऽ कहियो ने देलकौ, मुदा धूरा सभ दिन दऽ जाइ छौ । ओकरे घोर पीबिकऽ बुढ़ियाक पेट भरि जेतै ।"

हजरा अपन दुख उघारलक–"पेट ककर भरै हइ काकी ? पहिने अढ़ाइ सेर बोनि, चाहे बारह आना कैंचा मिलै छल, सभकेँ पेट भरि लैत छली । आब तीन गो टाका मिलै है । मुदा तीन टाकामे ने कोनो अन्न मिलै है दुइयो सेर, आ ने ककरो पेट भरै है । ई तऽ सभ दिनुका खिस्सा है काकी- ककरा कहबैक ?"

–"कहीक मुनेसराकेँ जकरा भोट दैत छहिक–'अपन जातिवला है ।' पेट किएक ने भरै हउ ? जातिवलाकेँ हवागाड़ी हउ...भरि टोलमे धूरा उड़ा जाइ हउ– फाँकि ले सभ क्यो ?"

"तोँ नहि बुझै छहिक काकी ! खाली मुनेसरा की करतैक ? ओ तऽ अपना सभ लै कोरशिश करबै करै है । मुदा अकेले ओकरा से की होतैक ? बड़का गो मुलुक हइ ।"

बुढ़िया एकदम तड़पि उठलैक–"सेहे तऽ हमहूँ कहै छियौ बौआ ! बड़का गो मुलुक हइ, आ बहुत रास लोक हइ । एगो मुनेसरा नहि हउ– सभ गाममे एक गो मुनेसरा हउ, ओकरा हवोगाड़ी हइ । मुदा ओ अकेला की करतौक ? कोरशिश तऽ करै हउ–।

"ठीके कहले काकी !" हजरा क्षणे-क्षणे बदलि रहल छल । कखनो जलेसरी बुढ़िया दिस, कखनो मुनेसरा दिस । "चौधरी सभके बाप-दादाकेँ हाथी-घोड़ा रहलै तऽ हमरो सभकेँ गुजर हो गेलै गाममे । आइ ओकरा सभकेँ हाथी नहि हइ, जमीदारियो नहि हइ । मुदा मुनेसराकेँ तऽ सभ-किछु हइ— कोठा, बखारी, आ हवागाड़ी । एक्को गोटेके रोजगार भेटलौक ? पहिने जहिया काम नहि रहैत छल, हवेली चल जाइत रहली । नै काम रहलै तऽ कोनो सफाइयेमे लगा देलक । गरीबक गुजर हो जाइत रहल । आइयो कहीं कुछ नहि मिलै हैऽ–तऽ के दै है रोजगार ? महीनामे पन्द्रह दिन तऽ हवेलिये सभमे बोनि मिलै है आइयो ।"

गप्प-सप्प सुनि गंगवा अपन घरसँ बहरायल । ओ मुनेसर पासवानक समर्थक छल । चारपर खऽढ़ छलैक, दूटा गाय-महींस छलैक । हजराक गप्प सुनि जोरसँ बमकल—"तोहर सभक इहै चालिपर एतेक दिन जुलुम होइत रहलौ तोरा सभपर । आइयो उहे गप्प करै छैँ तोँ ? मुनेसरा अपन लोक है, अपन जाति-भाइ है । बड़का लोकके‍ँ तरबा सभ दिन चटलैं, फेर उहे चाटै लेल मोन ललचाइ हउ ।"

हजरा शान्ते स्वरमे बाजल—"जखन तरबे चाटे के है भाइ, तऽ ई देखि के की होत जे ककर तरबा हइ—अपन जातिके, की अजातिके । ई तऽ जातियोवला नहि कहै है—"आ भाइ, हमर बराबरीमे बैठ । ऊ तऽ हवागाड़ीमे उड़ि जाइ है आ हमरा सभ धूरा फँकै छी ।"

"आ ऊ हवागाड़ी देखिकेँ तोहर करेजा फटै हउ ! ई नहि देखै छहिक जे ओकरा कहाँ-कहाँ जायके रहैत हइ ? ओकर टैमके कितना कीमत हइ ? खाली बैसल-बैसल अइ बुढ़ियाक संग पैघ-पैघ गप्प हँकै छैँ ।"

हजरा चुप्प भऽ गेल । गंगवा नहि मानतैक । आ ओ गंगवेके किएक दोष देतैक ? भोट देबऽ जखन गेल छल तऽ पक्का नियारने छल जे मुनोसराकेँ नहि देबैक । मुदा जहिना भीतर गेल, मोन डगमगा गेलैक—है तऽ आखिर अपने लोक, अपने जाति-भाइ !

ओना लोक तऽ आन बिरजूओ बाबू नहि छलैक ? छलैक तऽ आन गामक, मुदा लगैत छलैक जेना अही गामक होइ । घरे-घर जाइत छलैक, सभक दुख-सुख सुनैत छलैक । एकदम एकसरुआ लोक । ने बहु, ने बच्चा । एकदम सादा-सादी बगयबाना । मोटका पाजामा-कुरता आ कनहापर झोरा । पैघ-पैघ छितरायल केश । दू बेरसँ जितैत छलैक बिरजू बाबू । मुदा अइ बेर मुनेसरा घरे-घर घुमलैक—"ई बिरजू बाबू तऽ दू बेरसँ जितै है, की कयलकौ तोरा सभ लेल ? स्वतन्त्र उम्मीदवार हउ । कहियो मिनिस्ट्री मिलतै ? हमरा भेज अइबेर, अपन लोकके, छोटका लोक सभक प्रतिनिधिके; फेर देखा देबौ हम । की भेलौ अइ पचीस बरखमे ? आजादीक पचीस बरख पुरलौ, मुदा हमरा सभकेँ ई सभ ओहिना पिसैत रहलौक । आन-आन क्षेत्रमे तऽ खूब काज भेलै । अइ क्षेत्रमे हमरा सभ बेशी छी, मुदा भोट दैत छियै ओही बड़का जातिके । फेर के देखतौक हमरा सभकेँ ? पचीस बरखमे बिजली अयलौ गाममे ? कोनो सड़क बनलौ ? नदीमे पूल बनलौ ? अइ बेर जाय दे हमरा । फेर देखबैत छियौक ।"

मुनेसर पासवान जीतल । पूरा क्षेत्रमे साठि प्रतिशत बैकवर्ड भोट छलैक ।

मुनेसरकेँ सभ भेटलैक । मुदा दुख रहलैक जे स्टेटो मिनिस्टर नहि भऽ सकल । मुख्यमंत्री अंतमे दगा कयलथिन । मुनेसर अबस्स कहतनि हुनका ।

मुदा हजरा ककरा कहतैक जे क्यो ओकरो ठकलकै ? जलेसरी बुढ़िया ककरा कहतैक जे दिन भरि बाटी लेने टोलक बाटपर बैसलोपर दिनक दिन उपास किएक होइ छैक ? कहाँ गेल सिबुआ, ओकरे बहिन तऽ छलैक इमिरती जकरा गाछीमे छूरा देखौलकै बंकू ? आइ पुछौ मुनेसरासँ जे हवागाड़ीमे बैसल देवीजी तोहर के छौक ? कहाँ लेने जाइ छेँ एकरा ?"

मुदा हजरा चुपे रहल । गंगवाकेँ जबाब नहि देलकै । जलेसरी बुढ़िया बड़बड़ाइते रहलैक ।

सभ दिन एहने नहि छलैक बुढ़िया । कल्लावला छलैक ओकर वर बिलटा । बड़का-बड़काकेँ दबारि दैत छलैक । दू टा बेटा जवान छोड़िकऽ मुइलैक, मुदा जलेसरी बेटा-पुतऽहुक भरोसे नहि रहल कहियो । सिल्लीगुड़ी...जलपाइगुड़ी घूमि-घूमिकऽ कमाइत रहल । वर्ष दू वर्षपर गाम आबि पुतऽहुकेँ गहना देलक आ बेटाक हाथमे नगद । मुदा जखन चलती ट्रेनसँ खसि, टाँग तोड़ि आ आँखि आन्हर कऽ गाम घुरल तऽ बेटा-पुतऽहु हाथमे एकटा सुखायलो रोटी नहि देलकै, एकटा टिनही बाटी थम्हा बाटपर बैसा देलकै ।

आ न्यायी बनलैक मुनेसरा ! जखन कार्ड बँटलैक तऽ लाल कार्ड जलेसरीकेँ नहि भेटलैक । दू-दू टा जवान बेटा छलैक, ओकरा कोना भेटतैक लाल कार्ड ? लाल कार्ड देलकै सुगियाकेँ ! बेचारी एकसरि छलैक । घरवाला नहि, क्यो आगू-पाछू नहि । मुदा सक्कत देह आ हाथ पयर नहि सुझलै ककरो ? नव वयस नहि सुझलैक ? नहि सुझलैक जे बिन-घरवालाकेँ देहपर छीटवला नूआ आ माथमे गमकौआ तेल कहाँसँ अबैत छलैक ? जलेसरी सभ जनैत छलैक, आन्हरो भऽ सभ देखैत छलैक— मुनेसरा न्यायी है...एकटा विधवाक संग न्याय कयलक । सुगिया केहन पतिवरता है, घरवालाकेँ मुइला तीन बरख हो गेलै । ककरो से सम्बन्धो कयलक । मुनेसरा सभ जनै हइ । सम्बन्धोक बात जनैत हइ ।

मुदा देवीजीकेँ के नहि जनैत छलनि ? मुनेसर पासवानक संग हरदम सटल रहैत छलीह देवीजी । आ एम.एल.ए. मुनेसर पासवान, बी.डी.ओ., एस.डी.ओ., मंत्री सभ लग देवीजीकेँ आगू कऽ दैत छलथिन— "अइ इलाकाक एकमात्र समाज-सेविका ।

आ अइ समाज-सेविकाकेँ देखितहि मुनेसर पासवानक घरवाली एकदम

चण्डिका बनि जाइत छलैक । एक दिन अंगनामे झोंटा-झोंटौअलि होबऽ लगलैक । तहियासँ अँगना नहि लबैत छलैक देवीजीकेँ, बाहर जीपमे बैसल रहैत छलैक । मुदा जहिया जीपमे देखि लैत छलैक देवीजीकेँ ओकर घरवाली, टोलमे बड़का काण्ड भऽ जाइत छलैक । पहिने आस्ते-आस्ते बजैत छल दुनू प्राणी, फेर चिकरऽ लगैत छल । फेर एम.एल.ए. लतिआयबऽ लगैत छल घरवालीकेँ आ स्त्री-कण्ठ फाड़ि-फाड़ि कऽ देवीजी आ मुनेसर पासवानक सात पीढ़ीक उद्धार करऽ लगैत छलैक । मुनेसर राति-बिराति जीप लऽ किम्हरो पड़ा जाइत छल ।

ओना गाम तऽ आब कम्मे काल अबैत छल मुनेसर । अधिक काल पटना । एसेम्बली रहैत छलैक, पचास तरहक काज । दरभंगा अयबो कयल तऽ सर्किट हाउसमे ठहरल, एकाध साँझ लेल गाम । घरवाली सदिखन गामे रहैत छलैक आ देवीजी अधिक काल ओकर संगे रहैत छलथिन ।

देवीजी ओकर संग कोना छोड़थिन ? बड़का झंझटिसँ बचौलथिन ओकरा मुनेसरजी । देवीजी हरदम ओकरा 'मुनेसरजी' कहैत छलथिन । हुनका ओकर उपकार बिसरने नहि बिसरैत छलनि । नहि पड़ितनि बीचमे तऽ उद्धार होइतनि ? पलटू मिसर तऽ गराक घेघ भऽ गेल छलनि ।

मधुयेक नव नाम छलनि देवीजी । मुनेसर पासवान नाम देलथिन-देवीजी । नव जिनगी देलथिन । पलटू मिसरसँ पिण्ड छोड़ौलथिन ।

मिसरक सभटा स्वाहा भऽ गेल छलनि । दोकानक सभ पूजी साफ, लगानीक सभटा टाका ओसूल भऽ समाप्त । मिसर मधुक आँगनमे पड़ल रहैत छलाह । वर्षो धरि रहलाह । पहिने लोककेँ अखरलैक । टोक-चाल भेलनि । बारल गेलीह मधु । मुदा फेर सभ ठीक-ठाक । आबा-जाही फेर शुरू । मिसर मुँहगर आ दमगर लोक छलाह, सभकेँ उधार दऽ बाट साफ करैत रहलाह । मुदा जखन सभ समाप्त भऽ गेलनि आ दोकान बेचऽ लगलाह, तऽ बेटा गद्दी पर बैसि गेलनि-"खबरदार ! अइ दिस फेर नहि देखब ।"

डेरायल मिसर हँटि गेलाह । आँगन जायब पहिनेसँ बन्न छलनि । कनियाँ मुँह नोचऽ लेल सदिखन तैयार रहैत छलनि । मिसर निश्चिन्त भऽ मधुक आँगनमे पड़ल रहलाह । मधुक दुनू बेटीक विवाह भऽ गेल छलैक । बेटा कालेज पढ़ऽ लागल रहैक । मधुकेँ अखरऽ लगलैक । बुढ़ायल मिसर, टेंटमे टाका नहि, दिनराति आँगनमे पड़ल खों-खों करैत रहैत छलथिन । मधु अकच्छ भऽ गेल ।

आ एक दिन नहि जानि कोना मुनेसर पासवान मधुक आँगन पैसि

गेलथिन । एम.एल.ए. नहि भेल छलाह तहिया । मुखिये रहथि । आँगन पैसि गरजिकऽ बजलाह मुखिया-"अहाँकेँ लाज नै होइ-ए पलटू बाबू ! घर द्वार है, बाल बच्चा है, आ एना एकटा दोसर-आँगनमे पड़ल छी । उठू, अखने उठू, नै तऽ जबर्दस्ती उठबाकऽ आँगन पहुँचबा देब ।"

पलटू मिसर निरीह जकाँ मधु दिस तकलनि । मधु हुनका नहि देखि रहल छलनि । ओ तऽ मुनेसरजी दिस टकटकी लगौने छल । आँखिमे कृतज्ञता छलैक । मधु मरि गेल आ देवीजीक जन्म भेलनि । देवीजी मुनेसर पासवानक छाया जकाँ सभठाम चलैत रहलीह । वयससँ चालीस, कपड़ा-लत्तासँ तीस आ हावभाव आ गप्प-शप्पसँ बीसक लगैत छलीह देवीजी । सादा साड़ी, सादा कसल ब्लाउज, ठोरपर पानक लाली, आँखिपर कारी चश्मा आ पैरमे डिजाइनदार चप्पल । देवीजीकेँ देखि बड़का-बड़का डोलि जाइत छलाह, आ मुनेसर पासवान अपन गोटी स्थिर कऽ लैत छलाह ।

ओहू दिन जीपमे बैसल मुनेसर गोटी बैसा रहल छल । ड्राइवर खूब तेज हाँकि रहल छलैक आ देवीजी बेर-बेर मुनेसरक देहसँ रगड़ा जाइत छलीह, कोरामे ओंघरा जाइत छलीह, ओंघरा जाइत छलीह आ मुसकिया उठैत छलीह । मुदा मुनेसर कोनो चिन्तामे लीन छल । देवीजीकेँ नहि रहल गेलनि । ओकर कनहापर गाल रगड़ैत पुछलथिन-"कोन सोचमे पड़ल छी मुनेसरजी ?"

"अहीँक सोचमे पड़ल छी । ई नवका डी.एम. सुनैत छी जे बड़ कड़ा अछि, ककरो पैरवी नहि सुनैत छैक । अहाँक जमायकेँ राखत की नहि, ताही चिन्तामे छी ।"

देवीजी आरो ओकर देहपर लदैत बजलीह-"अइ लेल अहाँ चिन्ता किएक करै छी ? अहाँक बात नहि मानत तऽ टिकत एक्को दिन अइ जिलामे ? श्रीवास्तवकेँ कोना एक दिनमे ट्रांसफर करबा देलियैक ?"

मुनेसर प्रसन्न होइत बाजल-"से तऽ हिनको एक दिनसँ बेशी नहि लगतनि । मुदा सुनै छी बड़ टेढ़ अछि, आ फेर मुख्यमंत्रीक जाति-भाइ छनि, चुनिकऽ पठौने हेथिन ।"

"तऽ ताहिसँ की ? मुख्येमन्त्रीक जातिक छथिन, तऽ अहाँसँ बैर कऽ टिकि जयताह अइ जिलामे, से संभव छनि ? अहाँ अनेरो चिन्ता कऽ रहल छी । चुकरिकऽ करताह अहाँक काज ।"

मुनेसर पूर्ण आश्वस्त भऽ गेल । देवीजी नीक जकाँ ओकर देहसँ ओठँगि गेलीह । ड्राइवर निर्विकार जीप हँकैत रहल ।

डी.एम.क डेरा शहरक कातमे छलैक । जखन जीप ओकर हातामे पैसलैक, चिराग-बत्ती भऽ गेल छलैक । डी.एम. आफिसेमे छलाह, उठिकऽ भीतर नहि गेल छलाह । चपरासी मुनेसरकें देखितहि सलामी दगलक आ देवीजीक संग ओ आफिसक भीतर पैसि गेल ।

डी.एम. फाइलमे व्यस्त छलाह । मूड़ी नीचाँ झुकल छलनि । हिनका लोकनिकें भीतर अबैत नहि देखलथिन । मुदा भीतर आबि मुनेसर डी.एम.क मुँह देखिते रहि गेल । रोकितो-रोकितो मुँहसँ बहरा गेलैक—तों, अहाँ, प्रणव !

देवीजी सेहो चौंकलीह— सामने प्रणव बैसल छलैक । आँखिपरसँ चश्मा हँटबैत प्रणव सेहो दुनूकें देखलकै आ बाजल— "हमहीं छी । एना चौंकलें किएक मुनेसर ? एतेक अनचिन्हार सन भऽ गेल छी हम !"

मुनेसर सहज होइत बाजल– ''सत्ते आश्चर्य भेल तोरा देखि । सभदिन नाम देखिते छलिऐक 'पी के चौधरी' मुदा कहियो सन्देह नहि भेल जे तों हेबैं– एतेक बड़का हाकिम ।"

प्रणव बीचेमे टोकलकै–"बड़का के भेल अछि भाइ ? यदि क्यो भेलो अछि तऽ तों भेल छैं । आइ एम.एल.ए. छैं, काल्हि मंत्री हेबैं, मुख्यमंत्री हेबैं ।''

मुनेसर प्रसन्न होइत बाजल–"तों छें हमर पक्का दोस्त । एक्के मिनटमे मुख्यमंत्री तक बना देलैं । मुदा आइ एकटा छोटछीन काज लेल आयल छी, देवीजीकें तऽ चिन्हैत छहुन ?"

प्रणव मधुकें देखैत बाजल–"हिनका चिन्हैत छियनि, मधु छथि । मुदा ई देवीजी कहिया भेलीह, से नहि बूझल अछि ?"

मुनेसर ओकरा रोकैत बाजल–"से बादमे बूझि लिहैं । पहिने हिनकर काज बूझि लहुन । अही लेल आयल छी हम । हिनकर जमाय तोरा लग इन्टरव्यू देने छथुन, टाइपिस्टक लेल । हुनका राखि लहुन ।"

प्रणव किछु काल चुप रहि बाजल–"ओइमे तऽ विलम्ब भऽ गेलौ । ओ फैसला भऽ चुकल छैक । चिट्ठी दस्तखत भऽ गेलै बहालीक ।' मुनेसरजी अधिकार पूर्वक बजलाह–"तऽ की भेलैक ? बदलि दहिक ओ चिट्ठी । कहुना हिनकर जमायकें लऽ लहुन ।"

"से तऽ आब संभव नहि छैक भाइ ! सभ काज भऽ गेल छैक । की नाम छौ तोहर जमायक मधु !"

देवीजी नाम कहलकै । प्रणवकें जेना किछु मोन पड़लैक । एम.एल.ए. साहबक पैरबी आनो सूत्रसँ आयल छलैक । कहलकनि– "हुनका तऽ एक्को आखर टाइप करऽ नै अबैत छनि ।"

मुनेसर जोरसँ हँसल–"तोहूँ हद कयलैं प्रणव ! टाइप यदि अयबे करितनि तऽ हमर अयबाक कोन काज ? टाइप अयलेपर नौकरी हैतनि तऽ तोहर डी.एम. भेलाक कोन फायदा ?"

प्रणव चुप्पे रहल । जबाब नहि देलकै । आब देवीजी बजलीह–"तऽ काज भऽ जयतनि ?"

प्रणव स्पष्ट कहलकै–"नै मधु ! अइ बेर कोनो आशा नहि छनि । टाइपक अभ्यास करऽ कहुन, दोसर कोनो ठाम देखल जयतैक ।"

मुनेसर उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल–"चलू देवीजी ! हम तँ पहिने कहैत छलहुँ । सैह भेल ने !''

प्रणव ओकरा रोकैत कहलकै– ''बैस, खा-पी कऽ जैहैं, । आर गप्प-शप्प सुना ।"

मुदा मुनेसर नहि रुकलैक । देवीजी ओकर पछोड़ धयलथिन । ओकरा देखि प्रणवकें बड़ दुख भेलैक– अंतमे मधु एतऽ पहुँचल ?

फेर मुनेसरपर ध्यान गेलैक । रुष्ट भऽ गेलैक ओ ? अभिघात करबाक चेष्टा करतैक, राजनीतिक दबाब दियौतैक । ओ नीक जकाँ बूझि गेल ।

मुदा बड़ आश्चर्य भेलैक । बालसंगी छलैक मुनेसर । ओकरा लेल जान दैत छलैक । ओकर गाम छोड़ैत काल हपसिकऽ कानल रहैक । मुरली ओइ दिन कहैत रहैक "मुनेसराकें तों नहि चिन्हैत छहिक । सभकें तबाह करतौक । एतेक माथपर नहि चढ़बहिक ।"

ठीके, नहि चिन्हलकै मुनेसराकें ओ । अइ नेताकें ओ चिन्हैत छलैक । एहन-एहन परोपकारी एम.एल.ए. आ देवीजीकें ओ चिन्हैत छलैक । मुदा मुनेसराकें कहाँ चीन्हि सकलैक ओ ? ओ तऽ बालसंगी छलैक ओकर । आब ओकर खिलाफ प्रचार करतैक, मिनिस्ट्रीमे, विधान सभामे शिकायति करबौतैक ।

ओकरा शिकायतिक चिन्ता नहि छलैक । ओकरा आश्चर्य आ दुख छलैक जे मुनेसराकें ओ नहि चिन्हलकै ।

प्रणव बड़ी कालधरि ओहिना बैसल रहि गेल । आगूमे राखल फाइलक एक्को आखर आगू पढ़ब पार नहि लगलैक ।

कखन चपरासी पर्दा हँटा भीतर अयलैक– आ सामनेमे कखन पुर्जा राखि चल गेलैक, से प्रणव नहि बुझलकै । बड़ीकाल बाद पुरजापर ध्यान गेलैक– "श्रीमन्त चौधरी, गाम कुसुमपुर ।"

प्रणवक सौँसे दिमाग सनसना उठलैक । ई नाम-गाम ओकर सुनल छलैक, देखल-जानल नहि । मामी कहैत छलैक, मामा कहैत छलैक आ कहैत छलैक ओइ आंगनवाली नानी । ओकरे गामक नाम छलैक कुसुमपुर । बापक नाम छलैक- मदन चौधरी । प्रणव कहियो नहि मानलकै से । ओकर माय छलैक मीना, बाप छलैक मुन्नर झा । मुदा मुन्नर झा कहाँ मानलथिन ? अपनेसँ- नेंगरा गुरुजीक रजिस्टरमे लिखा अयलथिन— नाम- प्रणव चौधरी, बापक नाम- मदन चौधरी, गाम- कुसुमपुर, जन्म 1 जनवरी 1941 ।

आ प्रणव एकदम बिगड़ि गेल छलैक–"बोझ लगै छी तऽ निकालि दियऽ घरसँ । मुदा एहन बात नहि बाजू । हमर गाम घर यैह अछि, अहीं माय छी हमर ।'' आ मामी करेजसँ सटा लेने छलैक । ओकर गाम-घरक चर्चा फेर कहियो नहि कयलकै ।

मुदा आइ सामनेमे एकटा पुर्जा पड़ल छलैक–श्रीमन्त चौधरी, गाम कुसुमपुर । प्रणवक हाथ घण्टीक बटनपर गेलैक । फेर थम्हि गेलैक । किछु सोचिकऽ उठल । पर्दा उठा कोठलीसँ बाहर आयल ।

बाहर कुर्सीपर एकटा वृद्ध बैसल छलाह । प्रणवकेँ बहराइत देखि हड़बड़ाकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह । साठि-सत्तरिक बयस, माथक सभटा केश उज्जर । मुदा चमकैत कप्पार आ विशाल शरीर । लम्बा- प्रणवोसँ एक मुट्ठी ऊँच । बुढ़ारियोमे रंग एकदम उज्जर आ चमकैत । चेहरा-मोहरा अनमन ओहिना जेना प्रणवक सुदूर भविष्यक चिह्न हो । किछु क्षण ओइ आकृतिकेँ निहारलाक बाद प्रणव पैरपर झुकि गेल–"चिन्है छी काका ?"

प्रणवक अइ व्यवहारसँ जेना वृद्ध एकदम भहरि गेलाह–"नहि-नहि, अइ योग्य नहि छी हम ।" कहैत दूनू हाथे प्रणवकेँ पकड़ि उठा देलथिन । बगलमे ठाढ़ चपरासी आ ड्यूटीपर तैनात सिपाही अपन साहबकेँ एना एकटा अपरिचित वृद्धक पैर छुबैत देखि आश्चर्यसँ तकैत रहल ।

आ प्रणव वृद्ध श्रीमन्त चौधरीक थरथराइत शरीरकेँ पकड़ने भीतर आबि गेल । बूढ़ा भीतर अबितहि एकटा कुर्सीपर बैसि गेलाह आ कानऽ लगलाह । प्रायः अइ सत्कारक लेल ओ प्रस्तुत नहि छलाह । प्रणव लगमे ठाढ़ रहलनि । बूढ़ाकेँ स्थिर होबऽ मे दस-पन्द्रह मिनट लागि गेलनि । स्थिर होइतहि एकदम स्पष्ट स्वरमे बजलाह– "अबैत काल भरि बाट आ बाहर बैसल-बैसल हम लज्जासँ गड़ल छलहुँ । कोना तोहर सामने हैब ? की कहबऽ तोरा ? मुदा आब हमरा कोनो अफसोच नहि अछि । तोहर मायकेँ अपमानित कऽ निकालबाक, तोहर जन्मक खबरिकेँ लज्जाक आ अपमानक खबरि मानि तोहर मामाक अपमान करबाक आब हमरा लज्जा वा पश्चात्ताप नहि भऽ रहल अछि । तोहर माय यदि कुसुमपुरे रहि जैतथि, तोँ यदि हमरे सभ लग रहितऽ तऽ तोहर नेनपन भने नीक जकाँ बीति जैतऽ, मुदा की बनितऽ तोँ ? जे हमर सुपुत्र सभ बनल छथि—मूर्ख, शराबी आ भ्रष्ट । से यदि नहियो बनितऽ, किछु आरो बनि जैतऽ । मुदा एतेक पैघ हाकिम, नहि, हाकिम नहि, एतेक पैघ मनुक्ख नहि बनि सकितह ओइ घरमे, किन्नहु नहि बनि सकितह ।"

प्रणव कोनो उत्तर नहि देलकनि । बूढ़ो किछु काल चुप्प रहलाह । तखन प्रणव कहलकनि–"भीतरे चलू काका, राति बेशी भऽ गेलै, भोजन-विश्राम करू ।"

भीतरवला पर्दा उठा श्रीमन्त चौधरीक संग ओ डेरा दिस गेल । पहिल कोठलीमे ड्राइंगरूम छलैक । तकर बगलमे ओकर कोठली, सुतऽवला आ ओइ कोठलीसँ सटल अमितक कोठली छलैक । सभसँ अन्तमे छलैक मामीक कोठली आ ड्राइंग रूमसँ सटले दोसर कात छलैक गेस्ट रूम । प्रणव हुनका ओही कोठलीमे पहुँचा देलकनि ।

मामी भीतरेसँ सभटा बात सुनि लेने छलथिन । भानस-भातक ओरियौन करऽ लागल छलथिन । अमित अपन कोठलीमे छल । भोजनक बेरमे एकटा अपरिचित बूढ़ाकेँ देखि प्रणव दिस तकलक । प्रणव कहलकै–"गोड़ लगहुन बाबाकेँ, हमर कक्काजी ।"

आ अमित पैर छूबि बूढ़ाक मुँह गौरसँ देखऽ लगलनि आ फेर एकदम प्रसन्न होइत बाजल–"एकदम डुप्लीकेट । पापा, अहाँ तऽ एकदम बाबाक डुप्लीकेट छी ? केश पकलापर अहूँ अनमन एहने लागब ।"

प्रणव हँसऽ लागल, भनसामे ठाढ़ मामियोकेँ हँसी लगलनि । श्रीमन्त चौधरी अमितकेँ लग बैसा लेलथिन । सत्रह वर्षक अमित कालेजमे पहुँचि गेल छल, इन्टरमीडियट साइंस । स्फूर्ति आ प्रतिभासँ भरल । बोर्डक परीक्षामे जिलामे

प्रथम आयल छल अमित । श्रीमन्त चौधरीकेँ अपन पोता सभ मोन पड़ि रहल छलनि । अमित ताधरि संग रहलनि, जा धरि हुनकर आँखि मुना नहि गेलनि निन्नसँ ।

मुदा भोरे ओ जयबा लेल प्रस्तुत भऽ गेलाह । प्रणव आग्रह कयलकनि, अमित रोकलकनि, मुदा वृद्ध श्रीमन्त चौधरी अविचलित रहलाह । दुनूकेँ मना लेलथिन । मोटरमे बैसा जखन स्टेशन लेल विदा करऽ लगलनि तऽ श्रीमन्त चौधरी एक बेर फेर कानऽ लगलाह । कनिते बजलाह—"तोरा लग बड़ क्षुद्र आ नीच बनल छी हम, तोहर जन्मेसँ । आ आइ अइ नोरकेँ देखि ई नहि बूझि लिहैं जे ओइ अपराधकेँ कम करक लेल आयल रही हम । आयल तऽ हम फेर अपने स्वार्थसँ रही । आर छोट बनऽ लेल आयल रही हम...।

"नहि, छोट किएक हैब अहाँ ? कहू ने, कोन काजे आयल रही ? हमरा प्रसन्नता हैत ओकरा पूरा कयलासँ ।"

—"तोरा कतेक प्रसन्नता हेतौक सुनिकऽ, से हमरा नहि बूझल अछि । मुदा हम यदि बिन कहने गाम घुरि जायब तऽ हमर दुनू सुपुत्र हमर ठोंठ दबा देताह । तेँ कतबो छोट भऽ जाइ हम, जाइत-जाइत कहने जाइत छियौक जे किएक आयल रही । जे किछु छल सभ बेचि बिकिन खा गेलथुन तोहर भैयारी । जे बचलाहा छनि से गुजरो जोगर थोड़ छनि । ताहिपर आबि गेलैक सर्वे । सर्वेवाला सभकेँ गामक लोक कहि देलकै जे हमर एकटा भाइ छलाह । हुनकर एकटा बेटा छनि । पहिने तऽ पाइ ओसूलऽ चाहलक सर्वेवला सभ, मुदा जखन तोहर नाम सुनलकौ, पाइयो पर तैयार नहि भेलनि । बचलाहा बेशी जमीन मदनेक नाम छनि । तोहर भैयारी सभ चिन्तित छलथुन, ठेलिकऽ हमरा पठौने छलाह ।"

श्रीमन्त चौधरीक घेंट झुकल छलनि । प्रणवकेँ सभटा सुनि कऽ दुःख भेलैक । काकाकेँ देखि जे काल्हिसँ एकटा प्रसन्नता भेल छलैक से बिला गेलैक । काका एकटा उद्देश्यसँ आयल छलथिन, उद्देश्य पूरा नहि भेलासँ बेटा सभ नरेटी दबा देतनि । प्रणव हुनका निश्चिन्त करैत कहलकनि—"अहाँ कोनो चिन्ता नहि करू । हुनका सभकेँ कहि देबनि जे कोनो भय नहि । सभटा लिखा दियनु हुनके सभक नाम, क्यो विरोध नहि करतैक, सर्वेवालाकेँ सेहो कहि देबैक । कहि देबैक जे सभ झूठ अछि, मदन चौधरी निस्संतान मुइल छलाह । हुनकर कोनो बेटा नहि छनि ।"

प्रणव इशारा कयलकै । ड्राइवर आगू बढ़ौलक गाड़ी । प्रणव बड़ी काल धरि ठाढ़े रहि गेल । काल्हिसँ लागल छलैक जे ओकर एकटा गाम छलैक, घर छलैक । आइ फेर ओ सभ-किछु छिना गेलैक । एकटा गाम आ घर कल्लू चौधरी छीनि लेलथिन । घराड़ी जोति अन्न उपजा लेलथिन । दोसर घर आइ टूटि गेलैक । एकटा गाम छैक कुसुमपुर, जे प्रत्येक फार्ममे स्थायी पता लिखैत काल प्रणव भरैत छल, यद्यपि ओइ गाममे कहियो गेल नहि छल, कहिओ देखने नहि छलैक । आब ओइ गाम प्रणव कहियो नहि जायत, कहियो नहि देखत ओ गाम । आइ अपनेसँ ओ स्थायी पता उजाड़ि लेने छल प्रणव । आब जतहि धर, ततहि घर हेतैक । सौंसे संसार आब ओकर घर छलैक । आब सब गाम ओकरे गाम छलैक ।

"दीदी, हमर हिसाब देखू ।"

"दीदी हमर लिखना देखू पहिने ।"

"नहि दीदी, पहिने हमर पाठ सुनू ।"

एक्के संग सभ छौँड़ी घोल मचा देने छलैक । मुदा नवकी दीदी बड़ शान्त आ मधुर स्वभाववाली छलैक । एक्को बेर नहि लोहछैत छलैक । हँसि-हँसिकऽ बेरा-बेरी सभक सिलेट देखैत छलैक, सभक पाठ सुनैत छलैक । ने ककरो मारि, ने ककरोपर गरजब । साते दिनमे स्कूलक छौँड़ीसभ जान देबऽ लागल छलैक ।

पछिला मास्टरनी बड़ चण्ठ रहैक । अबैत छलैक घोड़ी घास ने, मुदा टीम-टाम बड़का । रंगल-ढौरल स्कूल अबै छलैक आ एकटा उपन्यास लऽ बैसि जाइत छलैक । कोनो छौंड़ी किछु पुछैक कि चटाक बगलमे राखल छड़ी बजारि दैक । डरे कोनो छौँड़ी लगमे जयबे नहि करैक । निश्चिन्त भऽ दिनभरि उपन्यास पढ़य आ बीच-बीचमे अधवयसू हेडमास्टर साहबक दिस ताकि मुसकिया दनि । गदगद हेडमास्टर साहब पाँचो क्लासक विद्यार्थीकेँ अपने पढ़बऽमे जुटि जाथि ।

पहिलासँ पाँच वर्ष धरिक गर्ल्सस्कूल छलैक, आ मास्टरक स्वीकृति छलैक तीन । हेडमास्टर आ सेकेन्ड मास्टरक संग एक टा मास्टरनी । सेकेन्ड मास्टरक बदली भेलनि तऽ जाहि मास्टरनीक पोस्टिंग भेलनि, से अयबे नहि कयलीह । रहलै दुइये टा मास्टर— एक टा अधवयसू हेडमास्टर आ टीमटामसँ छौँड़ी बनल एकटा मास्टरनी ।

मुदा मास्टरनी छलैक एकदम फालतू । नहि जानि कोना सर्टिफिकेट उपरा

लेने छलैक, नीक जकाँ ककहरो लिखऽ नहि अबैत छलैक । कोनो बड़का पैरवी छलैक । ककरो किछु बजबाक साहसे नहि होइत छलैक । हेडमास्टर तँ एकटा मुसकियेपर गील भऽ जाइत छलाह । आ सस्त बाजारू उपन्यास पढ़बाक ढंग करैत मास्टरनी बेर-बेर अनेरो मुसकिआइत रहैत छलीह ।

मुदा नहि जानि कोना शिकायति भऽ गेलैक । नौकरी तऽ नहि गेलैक, मुदा कोनो कुडोरिमे पोस्टिंग भऽ गेलैक । जाइत काल रहि-रहि नोर भरि जाइत छलैक आँखिमे आ अधवयसू हेडमास्टर हिचुकि-हिचुकिकऽ कानऽ लागल छलाह ।

मुदा जाइत मास्टरनीकेँ देखि एकोटा छौँड़ीक आँखि नहि नोरैलैक । क्यो दौड़िकऽ देहसँ नहि लपटलैक । मुदा साते दिनमे नवकी दीदीक देहपर सभ छौँड़ी लुधकल रहैत छलैक । वियोगसँ उदास हेडमास्टर एक कात बेंचपर गुमसुम बैसल रहैत छलाह आ सभ कक्षामे पढ़ैबाक भार हँसी-खुशी अपनापर लेने नवकी दीदी व्यस्त रहैत छलीह ।

स्कूलक अपन भवन नहि छलैक । मौसम ठीक रहलैक तऽ मन्दिरक प्रांगणक झमटगर अशोकक गाछक नीचाँमे आ बरखा-बुन्नी रहलैक तऽ मन्दिरक भीतर । एकटा बेंच आ एकटा कुर्सी छलैक, मन्दिरेमे रहैत छलैक, बेरपर गाछ तर चल अबैत छलैक । हाजरीबही आ कागज-पत्तर हेडमास्टर साहबक घरेमे रहैत छलनि ।

मुदा नवकी दीदीक रहबाक समस्या ठाढ़ भऽ गेलैक । पहिलकी मास्टरनी धारक ओइ पार डेरा रखने छलीह— स्टेशन लग । मुदा नवकी दीदीकेँ ओतेक दूर रहब पसिन्न नहि छलनि । मन्दिरेक बगलमे एकटा कोठली भेटि गेलनि– पुजेगरीक कोठलीक बगलमे । खालिए पड़ल रहैत छलैक । हेडमास्टर सिफारिश कयलथिन, पुजेगरीकेँ दया आबि गेलैक आ हवेलीसँ आज्ञा लऽ आयल ।

मुदा जखन नवकी दीदी मन्दिरक ओइ कोठलीमे अयलैक तऽ पुजेगरी अवाक् । तोतराइत बाजल— "अहाँ सरकार, अहाँ शीला दाइ !''

शीला रोकलकै–"नै पुजेगरी जी ! दोबारा ई नाम नहि । नवकी दीदीजी कहू । आब यैह नाम अछि हमर ।"

मुदा पुजेगरी नेहोरा करऽ लगलैक–"नै दाइ, ई पाप हमर माथ नहि चढ़ाउ । भगवानक नामपर दू पुश्तसँ अहाँक नोन खा रहल छी । ई अन्याय हमरासँ नहि कराउ । चलू, अपन आंगन चलू दाइ !"

"नै पुजेगरी जी, आब हमर कोनो घर नहि अछि अइ गाममे । हम अइ

गामक स्कूलक मास्टरनी छी, हमरा वैह रहऽ दियऽ । अहाँ जिद करब तऽ हमरा ई गाम, ई नौकरी छोड़िकऽ जाय पड़त ।" शीला एकदम अड़ल छलैक ।

पुजेगरी मानि गेलैक–"बेश दाइ, रहू । सभटा तऽ अहींक अछि । मुदा हम एकटा बात कहै छी । कहिया धरि छिपत ई बात ? गाममे के नहि चिन्हैत अछि अहाँकेँ ? स्कूलक बच्चा सभक बात जाय दियऽ । ओ सभ अहाँकेँ नहि देखने अछि । हेडमास्टरो अनगौआँ छथि, अहाँक खानदानकेँ चिन्हैत छथि, मुदा अहाँकेँ नहि देखने हैताह कहियो । मुदा गामक लोक ? जैह देखत चीन्हि जायत । दस वर्ष बड़का टा समय होइत छैक, मुदा मनुक्खकेँ एतेक जल्दी देखल चेहरा नहि बिसरैत छैक दाइ !"

तैयो शीला सात दिन निभा गेल । स्कूल दिस जखन कोनो गामक लोक ताकऽ लगैत छलैक, ओ मुँह घुमा लैत छल । मन्दिर ओना शान्त रहैत छलैक । भरि दिनमे गनल-गूथल लोक अबैत छलैक । शीलाकेँ पुरना बात मोन पड़ैत छलैक । अन्हरोखेसँ मन्दिरमे लाइन लागल रहैत छलैक । गामक बेशी स्त्रिगण प्रातःस्नान कऽ, मन्दिरमे दर्शन कऽ, महादेवकेँ जल ढारि सूर्योदयसँ पूर्व घर पहुँचि जाइत छल । बाँकी छूटल-फूटल स्त्रिगण आ बेशी पुरुषसभ दिन उगलापर बागमतीमे स्नान कऽ, मन्दिरमे दर्शन करैत छल राधाकृष्णक, फेर दोसर मन्दिर जा महादेवकेँ जल ढारैत छल, तखन घर जाइत छल । आब तऽ जेना भोरेसँ मन्दिर सुन्न रहैत छलैक । धारक घाट सेहो सुन्न । एकाध टा बुढ़िया झुकल डाँड़ आ झुर्रीभरल चेहरा लेने, बस्स । सात दिनसँ देखि रहल छलैक शीला । पुजेगरी पूजा करैत छलैक, भोग लगबैत छलैक । मुदा गामक लोककेँ जेना मन्दिरक रस्ता बिसरि गेल छलैक !

साँझोखन कऽ यैह बात लगैत छलैक । पहिने साँझ होइतहि भगवानक दर्शनक लेल गामक सभ घरक लोक, वा घरक मुखिया धरि अबस्से अबैत छलैक । आब तऽ जेना अपन बेगरते भगवानोकेँ बिसरल अछि लोक । ओना साँझ-प्रात कतबो धड़फड़ीमे जाइत अछि अइ बाटे लोक, एक बेर ठमकि दुनू दिस हाथ अबस्से जोड़ि लैत अछि । मुदा मन्दिर आबिकऽ दर्शन करबाक पलखति प्रायः लोककेँ नहि रहैत छलैक । शीला सभ दिन देखैत छलैक ।

आ सभ दिन देखैत छल जे ओकर बाप, गामक प्रतापी जमींदार कल्लू चौधरी, एक टा छड़ी लेने, मन्दिर अबैत छलाह । सभ ठाम प्रणाम करैत छलाह– राधाकृष्ण, अन्नपूर्णा, जगद्धात्री, सभ ठाम घूमि जाइत छलाह आ फेर पुजेगरी चरणामृत दैत छलनि, तुलसी पातक संग । सभ दिन एक्केटा प्रश्न करैत छलथिन–"सभटा

ठीक ने श्रीधर !" पुजेगरी ओहिना मूड़ी झुकौने कहैत छलनि–"सभ सरकारक कृपा।"

आ कल्लू चौथरी चल जाइत छलाह—ओहिना छड़ी टेकैत। ने संगमे नौकर, ने आगू-पाछू लोक। एकसर अबैत छलाह आ एकसर चल जाइत छलाह। शीला सभ दिन नुकाकऽ देखैत छलनि। देखैक आ आँखिसँ नोर बहऽ लगैत छलैक। विशाल काया क्षीण आ जर्जर भऽ गेल छलनि। सोन सन रंग जेना जरिकऽ झामर भऽ गेल छलनि ! कपड़ा-लत्ता मैल— ने ओ साँची, ने ओ कुर्त्ता। मुदा चेहराक गम्भीरता आ दृढ़ता ओहिना अक्षुण्ण छलनि। शीलाकेँ कतेको दिन मोन भेलैक जे दौड़िकऽ पयरपर खसि पड़नि। मुदा ओ ओहिना नुकाकऽ देखैत रहल आ कनैत रहल।

ओइ दिन कल्लू चौधरी अपने पूछि बैसलथिन— "ओइ कोठलीमे स्कूलक नवकी मास्टरनी रहैत छऽ ने, श्रीधर !"

"जी सरकार !" श्रीधरक झुकल माथ आशंकासँ सनसना उठलैक।

"ओकरा चिन्हैत छहक– के अछि ?"

श्रीधर चुप्प— बकार नहि फुटलैक। कल्लू चौधरी कने रुच्छ स्वरमे बजलाह–"तोरासँ ई आशा नहि छल श्रीधर ! किछु क्यो करय–तोंहू हमरा संग प्रपंच करबऽ, से आशा नहि छल हमरा। हमरे दान कयल घर-आँगनमे हमरे बेटीकेँ आश्रित बनाकऽ राखि लैत लाज नहि भेलह–"

"क्षमा कयल जाय सरकार ! हम बड़ मना कयलियनि। मुदा शीला दाइ नहि माननलि। सप्पत देबऽ लगलीह, गाम छोड़ि देबाक धमकी देलनि, तऽ चुप्प रहि जाय पड़ल।"

मुदा गाम तऽ चुप्प नहि रहल श्रीधर ! सौंसे गाममे घोल मचल अछि–"हमर बेटी स्कूलक मास्टरनी भऽ मन्दिरमे आश्रित अछि। यैह टा देखब-सुनब बाँकी रहि गेल छल।"

आब शीलाकेँ घरमे नहि रहि भेलैक। बाहर आयल, बापक पयर छूलक आ कहलकनि–"पुजेगरीपर तामस नहि करियनु बाबूजी ! ओ निर्दोष छथि। मुदा हम गाममे मास्टरी करी, मन्दिरमे रही— अइमे कोनो लाजक बात नहि छैक बाबूजी ! जे लाजक बात छैक–

"वाह, बेटी ! आइ दस वर्ष बाद अपन बापकेँ ओकर लज्जाक गप्प मोन

पाड़ऽ आयल छैँ ! गाममे ओइ खिस्साक ढोल पीटऽ लेल कम्म लोक अछि जे तोँ ओइमे नाम लिखबऽ आयल छेँ ?"

"नहि बाबूजी, ई मतलब नहि छल हमर। हम तऽ एतबे कहै छी जे नौकरी करै छी, भगवानक शरणमे रहै छी, दुनू इज्जतिक बात छैक। अइमे ककरो हेठी नहि होइत छैक।"

"ठीके कहैत छैँ बेटी ! आब तऽ कोनो बातमे हमर हेठी नहि होइत अछि। सभक पराकाष्ठा देखि चुकल छी। माला गेल, अपन बापकेँ ओकर कृत्यक सजाय देलक। भरि गामक लोक दरबज्जापर आबि हमर दानवताक खिस्सा सुनलक आ सभक संग तोहूँ हमरा छोड़ि चल गेलैं। आइ दस वर्षपर घुरल छेँ–तोरा बापक सहारा नहि चाहियौक आब।"

"नै बाबूजी– एना नहि कहू। आइ तऽ सभ दिनसँ बेशी अहाँक आशीर्वाद आ सहाराक आवश्यकता अछि, मुदा हमरा एतहि रहऽ दियऽ। घर-आंगन जायब तऽ नहि जानि की-की मोन पड़त आ बताहि भऽ जायब हम।"

"ठीके कहै छेँ–आश्चर्य तऽ अहीमे जे हम बताह नहि भेलहुँ ! एतेक घटना भऽ गेल आ हम ओही हवेलीमे एकसर एतेक दिन रहि गेलहुँ। तोँ लोकनि सभ अपन-अपन बाट ताकि लेलैं, नीक-बेजाय। एकटा बेचारी मुक्ते भऽ गेल, जिनगीमे जे फाँस ओकर गरामे लगा देलिऐक, तकरासँ मुक्त हेबाक चेष्टामे जिनगियेसँ मुक्त भऽ गेल। तोरा बेरमे बड़ साकांक्ष रही, खूब देखि-सुनिकऽ चुनलहुँ मुदा तोरो की भेटलौक ? लांछन आ अपमान। सभ हमर कर्मक फल थिक। एकटा असहाय, शरणमे आयल स्त्रीक अपमान कयलिऐक हम– आइ ओकरे श्रापसँ...

शीला बीचहिमे रोकलकनि–"ककरो कोनो श्राप नहि छैक बाबू जी ! जे बीति गेलैक, एकटा डेराओन वीभत्स स्वप्न छलैक। ओकरा बिसरिये कऽ हमरा लोकनि नव जिनगी शुरू कऽ सकैत छी।"

कल्लू चौधरी अप्रत्याशित रूपसँ कोमल स्वरमे कहलथिन–"सैह तऽ हमहूँ कहैत छियौक शीला ! जे भेलैक तकरा वीभत्स स्वप्न मानि बिसरि जो। घर चल, अपन बूढ़, दुखी बापक संग अपन दुःख बाँटि ले। चल, घर चल बेटी, अपन अभागल बापक एकटा इच्छा मानि ले।'

"मानब बाबूजी, अहाँक सभटा बात मानब, मुदा आइ चलबा लेल जिद नहि करू, हमरा सोचऽ दिय"

"सोचि ले, नीक जकाँ सोचि ले । आइ तोरा अपन आँगनमे जयबाक लेल सोचऽ पड़ि रहल छौक । हम तोरा दोष नहि दैत छियौक । ओइ घरकेँ एहन भयावह आ पतित हमहीं बना देने छिऐक । मुदा हम तऽ ओइ घरकेँ मन्दिर जकाँ पवित्र बनबऽ चाहैत रही बेटी ! तोहर माय जहिया छोड़िकऽ गेलीह, भरि गाम, सर-सम्बन्धी घेरि लेने रहय । मुदा हम तोरा सभक मुँह देखलियौक आ एकबेर जे 'नहि' कहलिऐक तऽ फेर 'हँ' नहि कहलिऐक । तोरा लोकनि पैघ भेलैँ, अपन अपन बाट धयलैँ । आ घर एक बेर ओहिना सुन्न भऽ गेल जेना तोहर मायक गेलापर भेल रहय । आ ओइ सुन्न भूतबंगलामे हमर प्रेत एकटा मानवीकेँ चिबा गेल । आ ओइ प्रेतकेँ देखि सभ पड़ा गेल । बंगलामे हम एकटा प्रेत जकाँ बौआइत रहलहुँ दस वर्ष । बाँकियो दिन एहिना बौआइत कटिये जायत ।"

शीला कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलनि । बाबू चल गेलथिन । ओ ओहिना ठाढ़ हुनकर अन्हारमे विलीन होइत कायाकेँ देखैत रहल ।

मुदा पुजेगरी चुप्प नहि रहलैक–'ई नीक काज नहि कयल दाइ अहाँ । सरकार पहिनेसँ बड़ दुखी छथि । आजुक बाद तऽ जिनगी आरो पहाड भऽ जयतनि हुनकर । माय-बापक क्रियापर सन्तान यदि एना विचार करऽ लागय तऽ भेलै ! विचार करऽवाला भगवान छथि । सभ हुनके पर छोड़ि दियनु दाइ !

भगवानपर सभटा छोड़िकऽ शीला निश्चिन्त नहि भऽ सकल । प्रात भेने, माने दोसर दिन, साँझमे बाबूजी भगवानक दर्शन करऽ नहि अयलथिन । दिनमे स्कूलोमे बेराबेरी बहुत लोक सभ अयलैक । स्त्रिगण-पुरुष । शीलाक मोन घोर भऽ गेलैक, नीक जकाँ पढ़ाइयो नहि सकलैक । आ साँझखन बाबूक मन्दिर नहि अयलासँ मोन एकदम चिन्तित भऽ उठलैक ।

पुजेगरी कहलकै–"एकदम अजगुत ! एतेक वर्षसँ हम छी, आइ धरि सरकारकेँ एक्को साँझ नागा नहि गेल छलनि गाममे रहैत ।"

शीलाकेँ अपनो बुझल छलैक । बाबूजी किएक ने अयलाह दर्शन करऽ ? ओ चिन्तामे पड़ल गुनधुन करैत रहल ।

मुदा बाबूजी दोसरो दिन नहि अयलथिन, तेसरो दिन नहि । पाँच दिन बीति गेलैक । फेर सातो । आब शीला घबरा गेल । पुजेगरीकेँ कहलकनि–"एक बेर जाउ

पुजेगरी जी ! कने बाबूजीकेँ देखि अबियनु । हमरा चिन्ता भऽ रहल अछि ।"

"हम जाकऽ की करबनि दाइ ! दुखित तऽ सरकार कहियो पड़ले नहि छथि आइ धरि आ यदि पड़लो हेताह तऽ हम जाकऽ की करबनि ? दवाइ तऽ अहाँक लग अछि । अहीं किएक नहि चल जाइत छी ?"

शीलाकेँ कोनो उत्तर नहि फुरेलैक । ओकरा चुप्प देखि पुजेगरी बजलैक–"जिद छोड़ि दियऽ दाइ ! अपन घर जाउ, बापक सेवा करू । ओ बड़ दुखी छथि । अहाँ नहि जनैत छी जे ई दस वर्ष कोना बितौने छथि अहाँक बाप ! अहाँ लोकनि गामसँ विदा भऽ गेलहुँ आ गामक लोक दरबज्जापर चढ़ि अयलनि । अगुआ छलाह अहाँक पित्ती रूदल चौधरी । सभकेँ ललकारलथिन "एहन पतितकेँ समाजसँ बहिष्कृत करऽ पड़त ।" सभक अयनाइ-गेनाइ बन्द भऽ गेलैक । राड़-रोहिआ काज केनाइ बन्न कऽ देलक । खेत-पथार पड़ल रहि गेल । मुदा सरकार अडिग रहलाह । दस वर्षसँ दरबज्जापर क्यो पयर नहि देने छनि, ककरो देबहे नहि दैत छथिन । बहिष्कारक एक सालक बाद लोक सभ फेर सटऽ चाहलकनि, सभकेँ भगा देलथिन । नहि जानि कखन खाइत छथि- की खाइत छथि, गाममे क्यो ने जनैत छनि । दस वर्षसँ हवेलीमे कोनो दोसर प्राणी पैर नहि देलक अछि । सरकार एकदम एकसरे छथि ।"

शीलाक मोन औनाय लगलैक । रूदल चौधरीपर घृणा आ क्रोध भेलैक । बाबूजीक खिलाफ गामक लोककेँ बहकौलक । आ अपन कृत्य ? भतीजी छलैक माला । बजारमे बेचि आयल बेटीकेँ आ गाममे पुरुष बनैत अछि ! ओकर चेहरासँ ई नकली चेहरा नोचऽ पड़तैक । शीला क्रोध आ आवेशसँ थर-थर काँपऽ लागल ।

पुजेगरी फेर टोकलकै— "देरी नहि करू दाइ, जाउ अपन घर, नहि तऽ बड़ अबेर भऽ जायत ।"

'नहि' शीलाकेँ चिचिअयबाक इच्छा भेलैक । ओ अबेर नहि होबऽ देतैक । ओ घर दिस दौड़ल । भोरका बेर छलैक । सभ दरबज्जापरक लोक ओकरा दौड़ल जाइत देखलकै । मुदा ओ बिन किछु देखनें अपन घर दिस दौड़ल गेल ।

मुदा घर लग आबिकऽ पयर एकदम थकमका गेलैक । बाहरक दलान ढनमनाकऽ खसल-पड़ल छलैक, नहि जानि कहियासँ ? हवेलीक छहरदेबालीक ईंटा खसल छलैक आ पलस्तर गायब छलैक । ठाम-ठाम घास-पात उगल । फाटक खूजल छलैक । ओ भीतर पैसि गेल । आंगनमे जंगल उगि आयल छलैक, उँच-ऊँच गाछ आ कूड़ाक ढेर । एकटा चौड़ा रस्ता जकाँ साफ छूटल छलैक । ओ ओही बाटे चलि ओसारापर आबि गेल । ओसाराक सभटा सीमेंट उखड़ल छलैक आ छतसँ

झोल लटकल छलैक । कोठली सभक दरबज्जा बन्न छलैक । शीलाक कोठली, मालाक कोठली, सभ दरबज्जापर झोल-झंखार लटकल छलैक । खाली एकटा कोठली खूजल छलैक । शीला हड़बड़ाकऽ ओहीमे पैसि गेलि । ओही पुरना पलंगक मैल आ फाटल चादरिपर बाबूजी आँखि मुनने पड़ल छलथिन । दाढ़ी बढ़ल छलनि, आ आँखि धँसल । अयबाक ध्वनि सुनियोकऽ आँखि नहि खोललथिन । आर चिन्तित होइत शीला सिरमामे बैसि माथपर हाथ राखि देलकनि । माथ बोखारसँ जरि रहल छलनि । हाथक स्पर्श होइते ओ बड़बड़ाय लगलाह–"अहाँ फेर आबि गेलहुँ । माफ करू हमरा । लऽ जाउ अपन घर-घराड़ी । मुक्त करू हमरा । नहि चाही अहाँक किछु । अहाँ घर जाउ, क्षमा करू हमरा ।"

शीला हाथ माथपर रखने कनेक कान लग झुकिकऽ कहलकनि–"हम छी बाबूजी, शीला ।"

आँखि खुजलनि । माथपर झुकल शीलाकेँ देखलथिन । अत्यधिक ज्वर आ प्रायः छौ दिनक उपासक कारणे शरीर कमजोर छलनि । फेर लगले आँखि झँपा गेलनि । शीला आस्ते-आस्ते माथ दबाबऽ लगलनि ।

ज्वरमे बाबूजी फेर बड़बड़ाय लगलथिन–"के ? मालाक माय ? कोना अयलहुँ एतेक दिनपर ? जाइत किएक छी ? ठहरू, हमहूँ संग चलब...।"

फेर घिघिआय लगलथिन— के...के...छैँ रौ नंगटा ? एना दरबज्जापर किएक चढ़ल अबै छैँ ? तोहर एहन मजाल...उतर... उतर नीचाँ ।

बाबूजी ओहिना अनाप-शनाप बड़बड़ाइत रहलथिन आ शीला सिरमामे बैसल रहल ! भोरसँ दुपहरिया भेलैक, आ दुपहरियासँ साँझ । ने घरमे लालटेन, ने डिबिया। एकदम अन्हार घर, अन्हार आँगन आ पलंगपर रोगी पड़ल बाप । अन्हारमे सौँसे घर-आँगन भयावह भऽ उठलैक । शीलाकेँ तकर डर नहि भेलैक । डर भेलैक जे भोरसँ एक्को बेर बाबूजीकेँ नीक जकाँ होश नहि भेलनि । ओहिना डिलीरियममे बड़बड़ाइत छथिन । ने घरमे दबाइ, ने कोनो नोकर-चाकर । डाक्टर गाममे नहि । धारक पार सेन्टरपर होइ से संभव । मुदा के बजा अनतैक ? ककरा कहतैक ? डाक्टर बजयबाक बदला एकटा दोसरे नाटक शुरू भऽ जयतैक ।

माथ छूलासँ लगैत छलैक जेना जवर 104-105 डिग्रीसँ बेशिये होनि । कपारपर राखल तरहत्थी एकदमसँ जरऽ लगैत छलैक । अन्हार द्वारे ठीकसँ ने दरबज्जा सुझैत छलैक, ने घरक वस्तु-जात ! तैयो हथोरिया देबऽ लागल । एकटा

कोनमे एकटा घैल अभरलैक, इजोतेमे देखने छलैक । बुझयलैक जे पानियो छलैक । बिछौनक फाटल चादरिसँ कनेटा टुकड़ी फाड़लक आ पानिमे भिजा-भिजा पट्टी देबऽ लगलनि । आध घण्टा धरि पट्टी देलाक बाद बुझयलैक जेना ज्वर किछु कमि गेल होनि । डिलीरियममे अनर्गल बकनाइ सेहो बन्न भऽ गेलनि ।

किछु काल बाद अन्हारमे एकटा स्वर बहरेलैक– के अछि एहि घरमे ?"

शीला झट कपारपर तरहत्थी रखैत कहलकनि–"हम छी बाबूजी, शीला ।"

किछु काल बाद बाबूजी कहलथिन–"अयलहुँ से नीक कयलहुँ बेटी ! देरी भेल, आब हम भरिसक नहि ठहरि सकब अइ घरमे अहाँकेँ फेरसँ प्रसन्न आ सुखी देखबाक लेल । मुदा अहाँ अपन घर घुरि अयलहुँ से प्रसन्नताक बात । सभटा एना ढनमनायल आ उजड़ल-उपटल देखिकऽ घबरा जुनि जायब । साहसपूर्वक सभटा ठीक कऽ लेब । हम किछुओ नष्ट नहि कयने छी, खाली दस वर्षसँ एहिना सभ उपेक्षित पड़ल अछि । मुदा अहाँ गामवलाक उपेक्षा आ अनादरसँ डेरायब जुनि, एकटा संकल्पक संग अइ घरक इतिहासकेँ फेरसँ लिखब निष्कलंक आ दीप्त आखरसँ । हम थाकि गेल छी बेटी, हम आब जायब ।"

"नहि बाबूजी ! एना नहि बाजू ? सभ ठीक भऽ जायत । अहाँ हमरा छोड़िकऽ एना कोना चल जायब ? अखन तऽ कतेक रास गप्प कहबाक अछि अहाँकेँ । नेनपन बितलाक बाद, मायक मुइलोपर कहियो कहाँ कोनो गप्प अहाँकेँ कहि सकलहुँ ? आब सभटा कहब अहाँकेँ, अपन सभ गप्प आ अहुँक सुनब । अखन जाय नहि देब बाबूजी अहाँकेँ ।"

बाबूजी कोनो जवाब नहि देलखिन । प्रायः एतेक दिनुका रोगी शरीर एक साँसमे एतेक बजलासँ फेर शिथिल भऽ गेलनि वा ज्वर फेर तीव्र भऽ गेलनि आ अर्ध-अचेतावस्थामे लऽ गेलनि । शीला फेर ओइ भयावह अन्हारमे एकसरि बैसल रहल । कखनो आंगनमे किछु खड़खड़ाइ तऽ डर होइ जे क्यो कोठलीमे पैसि रहल छै । कतेको बेर मोन पड़लैक जे हवेलीक फाटक ओहिना खूजल छलैक, क्यो भीतर पैसि सकैत छैक । मुदा अन्हार दने दरबज्जा धरि जा ओकरा बन्न करबाक साहस नहि भेलैक ।

मुदा भरि राति एहिना अन्हारमे बैसलो रहब तऽ संभव नहि छलैक । बाबूजीक चेहरो तक देखि नहि पाबि रहल छल । ओ फेर एक बेर हथोरिया देलक अन्हारमे । दिनक इजोतोमे कोठलीमे डिबिया-लालटेन कतहु अभरल नहि छलैक । तैयो अन्हारमे हथोरिया दऽ चेष्टा कयलक । कतहु किछु नहि अभरलैक । ओ

थाकिकऽ फेर बिछौनपर बाबूजीक सिरमामे बैसि गेलि आ आस्ते-आस्ते बाबूजीक माथ दबावऽ लगलनि ।

ओहिना भोर भऽ गेलैक । जखन चिड़इ-चुनमुन्नी चहचहाय लगलैक आ आंगन-घरमे रौद पसरलैक तऽ ओहिना सिरमामे बैसल शीलाक माथ एकदिस झुकल छलैक आ आँखि झँपल । ओ हड़बड़ाकऽ उठल आ एक बेर फेर बाबूजीक माथ छुलकनि । ज्वर आरो बेशी भऽ गेल छलनि आ बाबूजी बेसुध छलथिन । दिन भरिक भूखल-पियासल आ थाकिकऽ चूर भेल शीलाक मोन आशंकित भऽ उठलैक । आब एना बैसलासँ काज नहि चलतैक, ककरो बजाबहे पड़तैक । ककरा बजबियैक ? शीलाकेँ नहि जानि किएक प्रणव मोन पड़लैक । अखन यदि किम्हरोसँ ओ आबि जयतैक तऽ सभटा जिम्मेदारी ओकरा दऽ ओ निश्चिन्त भऽ सकैत । मुदा ओकर बातपर ओ ओतैक ? बड़का लोक भऽ गेल छलैक । ओकरापर रुष्ट छलैक । ओकर इच्छाक विरुद्ध ओ घर छोड़ने छलि आ तकर नीक जकाँ दण्ड भोगने छलि । मुदा से प्रणव की जानऽ गेलैक ? दस वर्षसँ शीलाक नामो नहि सुनने हेतैक ओ । मुदा ओकरा बजाबऽ पड़तैक । ओकरा लग अमित छलैक । बाबूजी अमितकेँ स्वीकार कऽ सभ किछु ओकरे दऽ जाथुन तऽ नीक । हम की करब ई हबेली आ सम्पत्ति ? जहिना एतेक जिनगी बितल, बाँकियो बीतिये जायत । मुदा प्रणवक अयनाइ आवश्यक छलैक । ओकरा लग अमित छलैक । ओ बुझनुक आ सामर्थ्यवान छलैक, आबिकऽ सभटा सम्हारि सकैत छलैक ।

मुदा ओ ओतैक कोना ? शीला जीवैत अछि की मरि गेल, सेहो नहि जनैत अछि ओ ? ओकरा सभटा जनबऽ पड़तैक, लिखऽ पड़तैक जे अइ दस वर्षमे शीला कतेक बेर मरल आ मरि-मरिकऽ जीयल । आइयो अपन जीवित लाशक संग कोना अपन घरमे अपन मरणासन्न बापक शय्यापर बैसल अछि ।

सभटा लिखऽ पड़तैक ओकरा, किछुओ नुकयबाक काज नहि छलैक । ओकर सभटा लज्जा, ओकर अपमानक गप्प, ओकरा कनियो मलिन आ कलंकित नहि कऽ सकतैक ।

अइ निश्चयक संग शीलामे नवीन स्फूर्त्ति भरि गेलैक । ओ दौड़ल मन्दिर गेल । पुजगरीकेँ डाक्टर बजबऽ धारक ओइ पार स्टेशन बजार पठौलकनि आ अपन कोठलीसँ कागज-कलम लऽ हवेलीमे मरणासन्न बापक कोठलीमे घुरि आयल । ओही कोठलीमे, ओही रोगीक शय्यापर बैसि ओ लिखऽ लागल, सभटा, शुरूसँ आखिर धरि...

–"जाइत काल अहाँ मना कयने रही, नहि मानलहुँ, अहाँक अपमान कऽ चल अयलहुँ । प्रायः से सभ अहाँ बिसरि गेल हैब ।

मुदा हमरा किछु नहि बिसरल अछि । जाहि दिन अहाँक घर छोड़ने रही, तहियो जनैत रही हम जे किछु बिसरब संभव नहि हैत । मुदा अहाँक संग रहबो संभव नहि छल । बेर-बेर प्रश्न उठैत छल जे कोन अधिकारसँ अहाँ लग छी ? सखा, बान्धवी प्रेयसी वा रक्षिता ? कथीक आसमे अहाँ लग छी ? फेरसँ नव जिनगी शुरू करबाक आसमे ? कुमारि, विधवा वा परित्यक्ता, की छी ? स्वामीक संग बहुतो दिन रहल छी । हुनकर घर छोड़लोपर विधिवत तलाक नहि भेल अछि । आ से यदि भैयो जाय तऽ की फेर अहाँ सँ विवाह कऽ लेब ? अहाँ संभवतः मानि जैतहुँ । संभव नहि, अबस्से मानि जैतहुँ । ताहीसँ हमरा डर लागऽ लागल । डेरबुक नहि छी हम । मुदा लागल जे आर बेसी दिन संग रहब तऽ कमजोर भऽ जायब ।

सत्त कहू तऽ ई कमजोरी हमरामे पहिनेसँ छल । जहिया किताब मँगबा लेल हमर दरबज्जापर आबि अहाँ अनेरो अपमानित भेल रही, तहिया हमर बकार नहि फूटल । मुदा एकसरमे बड़ कानल रही । पढ़ब-लिखब छूटि गेल । कहियो देखबो कयलहुँ अहाँकेँ तऽ दोसर दने चल गेलहुँ । मुदा नहि जानि किएक एकसरमे बैसल अधिक काल अहीँक बारेमे सोचैत छलहुँ । फेर अहाँ गाम छोड़िकऽ चल गेलहुँ । माला पहिनहि घर छोड़ि पड़ा गेल छल । ओइ सुन्न हवेलीमे अहाँक जयबाक खबरि सुनि कतेक दिन तक कानल रही हम ।

फेर विवाह भेल । सभटा बिसरि गेल । कहियो अहाँक ध्यान आयल हो हुनका संग रहैत, से मोन नहि पड़ैत अछि । ओ तऽ सभदिन ओहिना छलाह । ककरो सोझाँ देखि लेलापर, ककरोसँ बजैत देखि लेलापर अनेरो गरजऽ लगैत छलाह । मुदा हम सभ सहि जाइत छलहुँ । कहियो कोनो बातक विरोध नहि करैत छलियनि । लगैत छल जेना हुनकर कोनो दोष नहि छनि । विवाहक प्राते गामेक क्यो मालाक खिस्सा हुनका कहि देने छलथिन । विवाहक बात बाबूजी गुप्त रखने छलाह । अइसँ पहिने दू-तीनटा ठीक भेल कथा गामक लोक मालाक भगबाक गप्प सुना बिगाड़ि देने छलनि । हिनका बेरमे बाबूजी एकदम सतर्क छलाह । ककरो भनकियो नहि लागऽ देलथिन । मुदा विवाहेक प्रात हिनका क्यो सभटा कहि देलकनि । चतुर्थिएक प्रात द्विरागमन करौने जे गामसँ अनलनि से फेर घुरिकऽ जाय नहि देलनि । बाबूजीक पत्रपर पत्र अबैत रहलनि आ ओ सभ पत्रकेँ हमरे सोझाँ फाड़ि चूल्हिमे जरबैत रहलाह ।

तैयो हुनका हम कहियो दोष नहि देलियनि । सभ दिन लागल जे जतेक शक करैत छथि, ततबे मानितो छथि । आ स्वामी प्रसन्न रहथु तऽ हमरा कोन काज ककरो सोझाँ जयबाक आ गप्प करबाक ?

मुदा ओइ दिन ड्राइंग रूममे अहाँक बोली सुनि नहि जानि किएक सभटा निश्चय बहि गेल । ओइ दिन चाय लऽकऽ धोखासँ नहि आयल रही ड्राइंगरूम मे, जानि-बूझि कऽ आयल रही । अहाँकेँ देखबाक लोभ भेल छल । छौ बर्षपर बोली सुनने रही अहाँक । जानि-बूझिकऽ सोझाँ चलि आयल रही।

आ अहाँकेँ मोने हैत जे हमरा देखिते हड़बड़ा कऽ भीतर पठा देने रहथि। अहाँक गेलापर गंजन करऽ लागल रहथि । ओइ दिन नहि जानि किएक बहस करऽ लगलियनि, कथाक जवाब देलियनि । आ हुनकर सन्देह विश्वासमे बदलि गेलनि । ओही दिन ओ निश्चित रूपसँ मानि लेलनि जे विवाहक पूर्व हमरा-अहाँक सम्बन्ध छल । आ बेर-बेर ओकरे ताना देबऽ लागल रहथि ।

तैयो जखन ओइ दिन अहाँ अमितकेँ लऽ आयल रही, हम अहाँक संग गाम जयबामे मात्र नकली विरोध देखौने रही । हुनकर सभटा विचार जानियोकऽ अहाँक संग एकसरि गाम चल गेल रही । हमरा बूझल छल जे ओ ओही दिन घुरि औताह । मुदा नहि जानि किएक मोन विद्रोहपर उतरि आयल छल । हम अहाँक संग गेल रही ।

आ घुरिकऽ जे काण्ड भेल, अहाँ जनैत छी । प्राय: ओहू दिन मोने-मोन विद्रोहपर अड़ल रही । नंगटियाकऽ घरसँ निकालऽ लंगलाह तऽ मारऽपर तैयार भऽ गेलियनि । घर छोड़ि पड़ा गेलाह तऽ प्रतीक्षामे नहि रहलियनि । आत्महत्याक विचारे इम्हर-ओम्हर बौआ अहाँक घरमे चल अयलहुँ । भरिसक आत्महत्याक सोचबो हमर मनक प्रपंचे छल । हमर अन्तर्मन हुनकासँ मुक्त भऽ अहाँक लग पहुँचऽ चाहैत छल।

आ तखन ? एतहि आबिकऽ हमरा लागल जे सभटा उनटा-पुनटा भऽ गेल छल । हम स्कूलमे पढ़ऽबाली कुमारि कन्या नहि रही । ओइ दिन अहाँक अपमानपर घर छोड़ि अहाँक संग बहरा जैतहुँ तऽ संग रहबाक सोचब सार्थक होइत । मुदा हम तऽ विवाहिता रही– स्वेच्छासँ स्वामीक घर छोड़ि आयल रही । अहाँक संग कोन रूपमे रहू ? यैह प्रश्न बेर-बेर मोनमे उठैत छल ।

पत्नीक अतिरिक्त आन कोनो रूपमे राखब अहाँ सोचबो नहि करब, हम जनैत रही । मुदा ई तऽ हमर स्वार्थपरताक पराकाष्ठा होइत । अहाँक आगू उज्ज्वल भविष्य छल । संघर्ष आ अभावक चौबीस-पच्चीस वर्षक बाद जीवनमे एकटा नव

प्रात, एकटा नव बाट खूजऽ जा रहल छल, आ बीचमे हम एकटा अवरोध बनि ठाढ़ भऽ गेल रही । घर छोड़ि फेरसँ किम्हरो निकलि जयबाक अतिरिक्त आर कोनो उपाय नहि छल । फैसला हमहीँ कयने रही ।

मुदा ई नहि सोचने रही जे जाहि बाटपर जा रहल छी, से कतऽ लऽ जायत ? हमरासँ नीक तऽ माले छल, जे पसिन्न नहि भेलैक, ओकरासँ विद्रोह कयलक । जाहि ठाम पहुँचल ताहि लेल ककरो दोष नहि देलकै ।

मुदा हम तऽ अपन शिक्षा आ आत्मविश्वासक बले अहाँक सुरक्षित आश्रयकेँ छोड़ि स्वतंत्र जीवनमे डेग धयने रही । पहिले डेग खाधिमे पड़ल ।

बड़ छोटछीन शहर छलैक । कहऽ लेल सबडिवीजन शहर, मुदा रंग-ढंग ब्लौको सभसँ बत्तर । ओहीमे एकटा प्राइवेट स्कूल रहैक, लड़की सभक स्कूल, पाँचवाँ क्लास धरि ।

हेडमास्टरनीकेँ देखियेकऽ हम चौंकल रही । चालीससँ अधिक बयस, मुदा टीमटामसँ छौंड़ी बनबाक पूरा चेष्टा । रंगल-ढौरल मुँह । ठोर पर लाली लेभरल, असर्ध सन । सौंसे देहक गुदगर माँउस वीभत्स ढंगे पसरल आ जगजियार कयल । हमरा देखितहि प्रसन्नतासँ तेना हुलसल जेना कोनो शिकार फँसल होइ !

आ गिद्ध सन आँखि गड़ौलक सेक्रेटरी–"ऐहने मास्टरनीक काज छल हमरा । बहाली पत्र पठा तऽ देने रही, मुदा चिन्ता छल जे नहि जानि केहन हैब । मुदा देखिकऽ नयन जुड़ा गेल ।"

हमर भहुँ कने तनल देखि दाँत निपोरैत बाजल–"चेहरासँ लोकक आत्माक झलक भेटि जाइत छैक । अहाँकेँ देखियेकऽ लगैत अछि जे अहाँ धीयापुताक नीक ध्यान रखबैक, ओकरा नीक शिक्षा देबैक, ओकर चरित्र-निर्माणक न्योँ देबैक ।"

मुदा हमरा तखनो नहि बुझायल जे हमर विनाशक नीव पड़ि चुकल अछि । आशंका भेल । लागल जे कोनो गलत स्थानपर आबि गेल छी । मुदा पाछाँ घुरबाक बाट स्वयम् बन्द कऽ आयल रही । जिद छल अपन । विचारलहुँ जे जा धरि कोनो दोसर स्थान ठेकनगर नहि भेटि जाय, एतहि कहुना गुजर कऽ ली ।

मुदा ठेकनगर स्थान भेटबासँ पहिने हमरे स्थान बदलि गेल । रातिमे ठहरबा लेल स्कूलेमे कोठली छल । हेडमास्टरनियो ओही कोठलीमे छलीह । भरोस भेल । दुनू गोटे संगे रहब ।

मुदा पहिले राति लागल जेना दोसर क्यो बिछौनपर हो । कोठलीमे लाइट

ओहिना जरि रहल छल । आँखि खोलितहि देखल जे सेक्रेटरी बगलमे छल । चिचिअयबाक लेल मुँह खोलऽ लगलहुँ तऽ लागल दुनू हाथे क्यो मुँह जँतने अछि । हेडमास्टरनी दुनू हाथे मुँह जँतने सिरमामे बैसल छल ।

थकुचल देह आ मरल आत्माक संग भोरे अपन मोटरी-चोटरी उठा विदा भेलहुँ तऽ हेडमास्टरनी ओहिना कुटिलतासँ मुसकियाइत बाजल–"कतऽ विदा भेलहुँ ? आबो कतहु जाय जोगर रहि गेल छी ?"

हम एकदम सिंहनी जकाँ गरजल रही–"चुप्प शैतान ! आइ हम सभक भण्डाफोड़ कऽकऽ रहबौक ! अखने थाना जाइत छी आ सभकेँ हथकड़ी लगैबाक इन्तजाम करैत छी ।"

ओ कुटनी ओहिना हँसैत रहल–"अबस्स जाउ । मुदा कहबैक की ? सेक्रेटरी साहेब जबर्दस्ती कयलनि ? चिन्है छियनि के छथि ओ ? इलाकाक सर्वेसर्वा, हाकिम-हुक्काम तक डेराइत छनि । मिनिस्टरक सम्बन्धी छथि । भाग खुजि गेल अहाँक ।"

हम पिच्चसँ ओकरा मुँहपर थूकि देलिऐक । ओकर आँखि रंगलैक, मुदा फेर ओहिना हँसऽ लागल "अइ अपमानक बदला हम लऽ सकैत छी । चाही तऽ अखने दिन-देखार स्कूलक मेहतरक संगे कोठलीमे बन्न कऽ दऽ सकैत छी । क्यो मदति लेल नहि औत । मुदा नहि । अखन अहाँ होशमे नहि छी । शान्त भऽ विचारू । हम अहाँक नीके लेल कहैत छी ।"

नहि जानि किएक हम चुप रहि गेलहुँ । ओकर साहस बढ़लैक "सीथ मे सिन्नुर हमरो अछि अहाँ जकाँ । मुदा इज्जति बचेनाइ तऽ अपन हाथ अछि । मासमे एकाध बेर आबि जाइत छथि । एकाध बेर हमहूँ गामसँ भऽ अबैत छी ? अहीं स्कूलमे पन्द्रह वर्ष बिता देने छी । आयल रही तऽ अहींक वयस रहय । अहीँ जकाँ कानल रही । मुदा आब ककरो कानब देखि मोन नहि पसिझैत अछि । अहाँसँ पहिने जे आयल छल से एकदम छौंड़िये छलैक, बेहोश भऽ गेलैक । कहुना माय-बापकेँ चारि पाँच हजार दऽ सेक्रेटरी साहब झंझटसँ चैन भेलाह ।"

हेडमास्टरनी फेर निर्लज्ज जकाँ हँसऽ लागल । हमरो जेना बकार बन्द भऽ गेल । जेना अपन नियतिकेँ स्वीकार कऽ लेने रही । सेक्रेटरी साहब सभ राति अबैत रहलाह । आब हेडमास्टनी सिरमामे बैसि दुनू हाथे मुँह नहि दबौने रहैत छलीह ।

मुदा एक राति आँखि खूजल तऽ लागल जेना आन क्यो होअय । चेहा कऽ उठऽ लगलहुँ तऽ जोरसँ बिछौनपर दबबैत बजलाह–"डेराउ जुनि । हम छी ।''

डिप्टी साहब छलाह । फेर इन्सपेक्टर साहब, बड़ाबाबू, मुखियाजी, नहि जानि के के ? सभक नामो ध्यानपर नहि अबैत अछि । अलग-अलग नाम, अलग-अलग शरीर । मुदा एक्के टा खिस्सा । मुर्दा देह आ नोचि-नोचि कऽ खाइत गिद्ध । दू साल बाद जखन ओइ स्कूलसँ छूटल रही, सभटा माँउस नोचि-नोचिकऽ गिद्ध सभ खा गेल छल, खाली कंकाले बाँचल छल ।"

आ ओइ कंकालमे आब ककरो रुचि नहि रहि गेल छलैक । तेँ ट्रेनिंगमे नाम लिखबा देबऽ लेल जखन सेक्रेटरी साहबकेँ कहलियनि तऽ मानि गेलाह । आ जहिया स्कूल छोड़ि ट्रेनिंग स्कूल बिदा भेल रही, क्यो रोकबाक चेष्टा नहि कयलक । हँसी-खुशी अरियाति देलक ।

मुदा ट्रेनिंगक किछु मासमे फेर माँउस भरि गेल । चेहरापर लाली आ पानि आबि गेल । ट्रेनिंग पास कऽ जखन ब्लौकक सरकारी स्कूलमे पोस्टिंग भेल, गिद्ध सभ ओहिना मड़राय लागल ।

फेर वैह खिस्सा दोहरौअलि । ब्लौकक डाक्टर, बी.डी.ओ., भी.एल.डब्ल्यू., क्यो नहि छूटल । एकटा सार्वजनिक उपभोगक चीज भऽकऽ रहि गेलहुँ हम । जकरे खगता होइ सैह चल आबय । आत्मा आ शरीरमे जेना विद्रोह करबाक शक्तिये नहि बँचि गेल रहय । भरिसक ओकरे अभ्यस्त भऽ गेल रही हम ।

अहाँ आश्चर्य करब जे दस वर्षक बाद आइ एतेक निर्लज्जतापूर्वक किएक सभ-किछु लिखि रहल छी ? अइ अपमान आ गन्दगीक खिस्साकेँ अपने संग किएक नहि गाड़ि लैत छी ?

मुदा नहि जानि किएक आइ लगैत अछि जे ओ बेर आबि गेल अछि जखन सभ-किछु अहाँकेँ लिखि दी । अहाँकेँ बिना लिखने हमर मोन चैन नहि हैत । अहाँ हमर मान-अपमान, लज्जा-लांछन, लोक-परलोक सभसँ ऊपर छी । आइ आरो बेशी स्पष्ट रूपसँ लागि रहल अछि जे अहाँक संग हमर सम्बन्ध देहक सम्बन्धसँ कतहु उपर अछि । देह तऽ पाँच बरख धरि स्वामियो नोचलनि आ अइ दस बरखमे अनगिनत गिद्ध सभ अपन चांगुर-चोंचसँ ओकरा क्षत-विक्षत कयलक अछि । स्वामीक संग रहैत भ्रम भेल छल जे हुनकासँ प्रेमो कयलियनि । मुदा ओ तऽ मात्र कर्त्तव्यक निर्वाह छल । देहक बँटबारा भेल, ओइमे अहाँक हिस्सा किछुओ नहि रहल । ओ अपवित्र गीजल माँउस अहाँक समक्ष रखबो जोगर ने छल, ने अछि ।

मुदा मोनक बटवारा तऽ कहियो नहि भेल । ओइमे तऽ सभटा अहींक हिस्सा अछि । आइ निर्लज्ज भऽ जेना अपन अपमान, शीलहरणक कथा कहलहुँ, तहिना निसंकोच भऽ अपन मोनोक बात कहैत छी । हमरा ई बूझल अछि जे मोनक ई बात अहाँकेँ प्रायः बूझल हैत । आ नहियो बूझल हैत, तऽ आइ ई बूझि अपन अधिकारसँ हमरा लग उपस्थित नहि हैब । जे अहाँक अछि, तकरो अहाँ जोर दऽकऽ संग नहि रखबैक– हमरा बूझल अछि ।

मुदा आइ तऽ हमहीँ जोर दऽ बजा रहल छी । अहाँ आउ । जल्दी आउ । बगलमे बाबूजी मरणासन्न पड़ल छथि आ चौबीस घण्टा भूखल-पियासल हम अहाँकेँ अपन खिस्सा लिखऽ बैसल छी । गाम भरिमे सभसँ बहिष्कृत बाबूजी प्रायः आब नहि बचताह । आशा कम्मे अछि । मुदा अहाँ आउ । अहाँक रहलासँ हमरा बल भेटत ।

अइ दस वर्षमे अहाँक प्रत्येक ठेकान हमर संग रहल अछि, मुदा किछु लिखबाक, अपन कारी मुँह देखयबाक साहस नहि होइत छल । आइ सभटा लिखि देलहुँ अछि अहाँकेँ आ लगैत अछि जेना बहुत दिनसँ छातीपर राखल पाथर उतरि गेल । आब हम व्यग्रतापूर्वक अहाँक प्रतीक्षामे छी, जल्दी आउ ।

ठीक बूझी तऽ अमितकेँ संग लेने अयबैक । एक बेर ओकरा सही स्थान दिआबय अहाँ अनने छलिऐक आ अपमानित भऽ घुरि गेल रही । अइ बेर संभवतः ओ अपमान कयनिहार अहाँक आबऽ धरि नहि बँचताह । मुदा सौँसे गाम अछि । ओकरा मालाक खिस्सा बूझल छैक । शीलाकेँ ओ सभ स्वीकार कऽ लेतैक गाममे, किएक तऽ ओकर कारी इतिहास लोककेँ बूझल नहि छैक । ओकरा लोक स्वामी द्वारा परित्यक्ता, दुखिया बूझि राखियो लेतैक गाममे । मुदा माला तऽ स्वामी आ घर-द्वार छोड़ि बजारमे बैसल छल । गाममे सभकेँ बूझल छैक ।

तैयो इच्छा होइत अछि जे बाबूजीकेँ अमितक हाथे मुँहमे आगि पड़ितनि । भरिसक मालो दीदीक आत्माकेँ शान्ति भेटितैक । मुदा ताहिमे कहीं अमितक अनिष्ट नहि भऽ जाइ । हम निर्णय अहींपर छोड़ैत छी, जे उचित लागय ।"

शीला आर किछु लिखऽ जा रहल छल कि पुजेगरी डाक्टरक संग दौड़ल अयलथिन । बिछौन लग जा नाड़ी हाथमे लितहि डाक्टरक माथ झुकि गेलैक । आ ओ हाथ छातीपर राखि देलकनि आ चोट्टहि घुरि गेल । पुजेगरी जोरसँ चिचिया उठलाह । मुदा शीला ओहिना शान्त रहल जेना ओकरा पहिनेसँ आभास भेटि गेल होइ । सभटा लिखलाहा कागज पुजेगरीक हाथमे दैत बाजल— भोरके गाड़ी अछि

अखन । दौड़ले चल जाउ । ट्रेन भेटि जायत । दरभंगामे डी.एम.क कोठीपर चल जायब । प्रणवकेँ चिन्हैत छिऐक ने, मुन्नर झाक भागिन । वैह डी.एम. भऽ कऽ आयल अछि । ओकरा ई चिट्ठी दऽ कहबैक जे जा धरि ओ नहि पहुँचत, लाश एहिना पड़ल रहतैक ।"

पुजेगरी अइ आग्रहपर अवाक् रहि गेलाह । मुदा शीलाक आकृति देखि किछु कहबाक साहस नहि भेलनि । सभटा कागज लऽ स्टेशन दिस दौड़लाह ।

किछुए कालमे आंगनमे भीड़ लागि गेलैक । एतेक वर्षसँ जे सभ आँगनमे पैर नहि दैत छलैक, से सभ जुटि गेलैक । अबैत देरी दू गोटे लाशकेँ उठा आंगनमे लऽ अनलकै– हे, कहुना घरमे प्राण नहि जानि । एक गोटे अपन आँगनसँ गंगाजल लऽ आयल दौड़िकऽ आ मुँहमे एक चम्मच देलकनि जेना प्राण अखन अँटकले होनि आ जखन मुँह महक पानि टघरि गेलनि तखन सभ फेर घोल मचौलक– नहि, आब प्राण छूटि गेलनि । झट बाँस कटि आबि गेलैक आन नव कपड़ो कफन लेल । चचरी तैयार भऽ गेलनि आ रूदल चौधरी अपन बेटा बंकूकेँ आगू कयलनि– बंकूये आगि देतनि । भातिज छनि, बेटा दाखिल भेलनि ।" सभ मिलि लाश उठबऽ लेल तैयार भऽ गेल ।

एतेक कालसँ सुन्न पथरायल दृष्टिएँ तकैत शीला दौड़िकऽ आँगनमे आबि गेल–"नहि, अखन लाश नहि उठाउ । पुजेगरीकेँ दरभंगासँ आबऽ दियनु ।"

चचरीकेँ ओहिना आंगनमे राखि सभ अवाक् शीलाक मुँह ताकऽ लागल ।

बारह बजैत-बजैत एकटा मोटर हवेलीक गेटपर ठाढ़ भेलैक । प्रणव उतरिकऽ शीघ्रतासँ हवेलीक फाटक दिस लपकल । पाछाँ-पाछाँ पुजेगरी आ ड्राइवर ।

हवेलीक मुँहथरि लग एक बेर प्रणवक पयर थकमकयलैक । एही ठाम एक बेर कल्लू चौधरी ओकरा टांग तोड़बाक धमकी देने छलथिन । अइ मुँहथरियो पर ओ दोबारा पयर नहि देने छल, भीतर पैसबाक कथे कोन ? मुदा से सोचबाक आइ अवसर नहि छलैक । ओ क्षण भरि थमकि, भीतर पैसि गेल ।

आँगन सुन्न जकाँ भऽ गेल छलैक । दू-तीन गोटे लाश लग बैसल । ओही ठाम शीलो बैसल छलैक । आँगन कनिए दूर छीलिकऽ लाश रखबा लेल लोक सभ चिक्कन कऽ देने छलैक । बाँकी सभ दिस ओहिना घास-पात ।

प्रणवक मोटरक आवाजपर फेर चारूकातसँ लोक जुटलैक । पहिने एकटा साहबकेँ देखि लोक अकचका गेलैक आ फेर सभ हाथ जोड़ऽ लगलैक । प्रणवकेँ आश्चर्य भेलैक जखन रूदल चौधरी आ बंकू सेहो ओकरा हाथ जोड़ि नमस्कार कयलकै ।

शीला ओहिना निश्चल बैसल छलैक । कनेक लग जा प्रणव कहलकै–"आब उठू । भीतर जाउ । लाशकेँ जाय दियौक ।"

अइ साधिकार स्वरपर शीला चौंकलैक । गरदनि घुमा प्रणवकेँ देखलकै आ उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक । एकदम समीप आबि एकटक ओकरा किछु क्षण देखैत रहलैक आ फेर बजलैक–"आगि मुदा अहीं देबनि बाबूजीकेँ ।"

"हम ?" प्रणवकेँ आश्चर्य भेलैक । फेर आस्तेसँ कहलकै–"अमितकेँ हम नहि अनने छियैक शीला, जानि-बूझिकऽ । मुदा हमरा कहैत छी आगि देबा लेल– से ठीक हैत ?"

रूदल चौधरी आगू अबैत बजलाह–"हमहूँ तऽ सैह कहैत छलिऐक शीलाकेँ, सर, बंकू भातिज छनि, यैह आगि देतनि ।''

प्रणवकेँ 'सर' शब्दपर आश्चर्य भेलैक । ई शब्द अप्रिय होइतो ओ नित्य सुनबाक अभ्यासी भऽ गेल छल । मुदा रूदल चौधरीक मुहेँ ? ओकरा अपन कानपर अविश्वास जकाँ भेलैक ?

मुदा बंकूक स्वर तऽ आर स्पष्ट छलैक–"अहाँ चुप्प रहू बाबूजी ! शीला ठीक कहैत अछि । 'सर' सन लोक आगि देथिन तऽ काकाक आत्माकेँ शान्ति भेटतनि ।"

आब अविश्वासक कोनो कारण नहि छलैक आ ने शीलाकेँ मनयबाक कोनो उपाय । ओकर इच्छा पूरा करऽ पड़तैक ।

प्रणव तैयार भऽ गेल । लाश उठलैक आ हवेलीसँ बाहर चललैक । आगू-आगू प्रणव छलैक । भरि गामक लोक संग भऽ गेलैक । श्मशानमे भीड़ लागि गेलैक।

प्रणवकेँ नियतिपर हँसी लगलैक । अही कल्लू चौधरीक चलते ओकर मामक श्राद्ध नहि भऽ सकलैक आ आइ हुनके मुँहमे आगि देबऽ ओ श्मशानमे बैसल छल । अही कल्लू चौधरीक आँगन-दरबज्जा दस वर्ष धरि श्मशान बनल रहलनि आ आइ श्मशानमे गाम उमड़ल छलनि ।

श्मशानसँ घुरैत साँझ भऽ गेलैक । एतबा कालमे पुजेगरी ड्राइवर आ आर लोकक सहायतासँ आँगन-ओसारा साफ करबा लेने छलाह । भनसाघरकेँ ठीक-ठाक कऽ ओइमे ड्राइवर भोजनक व्यवस्था कऽ लेने छल । बाहरक ढनमनायल दलानकेँ सेहो सोझ-साझ कऽ बैसबा जोगर बना देल गेल छलैक ।

प्रणव आँगनमे गेल । बापक कोठलीमे हुनकर बिछौनपर पेटकुनिया देने शीला पड़ल छलैक । लग जा प्रणव कहलकै–"उठू, पहिने किछु खा लियऽ । दू दिन भऽ गेल निराहार ।''

शीला मूड़ी उठौलकै–"ई तऽ बेश उन्टा गप्प ! अहाँकेँ हम की पूछब, सभटा अहींपर लादि देने छी ।"

–"फेर वैह गप्प शीला ! हम एक बेर पहिनो कहने रही, ई भार नहि, सुख थिक हमर । मुदा अहाँ नहि मानलहुँ ।"

"आ आइ फेर अपन नर्कमे अहाँकेँ घीचि लेने छी । अहाँ अपन स्वर्गसँ हमरा दिस हाथ बढ़बैत छी । मुदा अहाँक हाथ पकड़ि ऊपर उठबाक बदला हम अहींकेँ अपन नर्कमे घीचि लैत छी बेर-बेर ।"

"स्वर्ग-नर्कक विवेचन रहऽ दियऽ शीला ! अखन उठू, किछु खा लियऽ । ड्राइवर भनसाघरमे की व्यवस्था कयने अछि, कने जाकऽ देखि लियौ सेहो । एना हारिकऽ बैसलासँ कोना चलत ?"

शीला आज्ञाकारी शिशु जकाँ उठिकऽ भनसाघर चल गेलैक । तहियासँ दस दिन धरि जे कहलकै प्रणव, शीला करैत गेलैक । प्रणव घर-बाहर दुनू ठाम देखैत रहलैक । वस्तु-जातक अम्बार लागि गेलैक । कोनो सम्पत्ति बेचने नहि छलाह कल्लू चौधरी, सभटा परती पड़ल छलनि । घरमे अन्न-पानि सड़ल पड़ल छलैक। सभक व्यवस्था भेलैक आ प्रणवक रहलासँ गामभरि ओहिना मोस्तैद रहलैक चौबीसो घण्टा।

मुदा एकादशाह दिन भोरे अप्रत्याशित घटना भेलैक । भोरका ट्रेनसँ प्रोफेसर झा पटनासँ आबि गेलथिन । प्रणव दरबज्जेपर छल । एकाएक अपन आँखिपर विश्वासे नहि भेलैक । मुदा प्रोफेसर झा लग आबि कहलथिन– "जखन अवसरोपर अपन लोक नहि बजबैत छैक तऽ मान-अपमानक विचार छोड़ि, बिन बजाओल आबऽ पड़ैत छैक ।"

प्रणव हुनका बैसबाक स्थान दैत ड्राइवरकेँ चाय लेल भीतर दौड़ौलकै । प्रोफेसर झा फेर अपने कहऽ लगलथिन–"जखन सुनलहुँ तऽ रहल नहि गेल । ओना

अहाँ लोकनिकेँ मुँह देखाबऽ जोगर तऽ नहि छी हम, मुदा पुरना सभ बिसरि अहाँ लोकनि हमरा प्रायश्चित्त करबाक अवसर देब, ताही आशामे आयल छी ।"

प्रणव भीतर आयल । शीला सुनितहि भयत्रस्त भऽ गेलैक–"किएक आयल छथि ओ ? घुरा दियनु ।"

प्रणव बिगड़ि गेलैक–"एहनो क्यो बात बजै अछि ! घुरा किएक देबनि ? आयल छथि तऽ देखि लियनु जे की उद्देश्य छनि, सत्ते प्रायश्चित्तक विचारसँ आयल छथि, तऽ निराश किएक घुराओल जाय हुनका ? एक बेर गप्प कऽ देखियनु ।"

हुनकासँ गप्प करबाक बदला तामसे ओकरोसँ गप्प करब छोड़ि देलकै शीला । प्रणवो मोन स्थिर होबऽ लेल छोड़ि देलकै । फेर चर्चा नहि कयलकै ।

एकादशाह-द्वादशाह धूम-धामसँ भेलैक । भरि गाम कचरिकऽ खयलकै । यश सभटा प्रणवकेँ भेटतैक । प्रोफेसर झा कहलथिन–"अपने निश्चय महान व्यक्ति छी । हम अपनेक अपमान कयने रही, तकरो बिसरि गेलहुँ अहाँ । मुदा ओ किछुओ नहि बिसरल छथि । सोझों नहि आबऽ चाहैत छथि । कने बुझा दियनु हुनका ।"

प्रणव हुनका संग लऽ हवेलीक भीतर आयल । दुनूकेँ संग देखि शीला दोसर दिस जाय लगलैक । प्रणव ओकरा रोकलकै– अहींसँ गप्प करऽ आयल रही शीला ! झाजी अहाँकेँ लऽ जाय चाहैत छथि पटना । आब तऽ काजो भऽ गेलैक । हमरो दू हप्ता छुट्टीमे दू दिन रहि गेल अछि । बड़ व्यस्त आ कठिन समय छैक अखन प्रशासनमे । अशान्ति आ उपद्रव । धरना आ हड़ताल । घेराव आ पथराव । हमरो छुट्टी दियऽ आ अपनो अपन घर जाउ ।"

शीला ठाढ़ भऽ गेलैक आ स्पष्ट स्वरमे बजलैक–"अहाँक छुट्टी बीति गेल, अहाँ जाउ । हमर स्वार्थ सिद्ध भऽ गेल । मुदा हम कतऽ जायब ? हमर तऽ घरो यैह अछि आ नौकरियो अही गामक स्कूलमे ।"

प्रोफेसर झा आगू बढ़ैत साहस कऽ बजलाह–'आब तामस छोड़ू । घर चलू अप्पन । दस वर्ष भऽ गेल ।'

"सत्ते घर चलू हम ? राखि लेब अहाँ ?" शीला आब सोझेसोझ प्रश्न कऽ देलकै ।

"ताही लेल तऽ आयल छी । चलू, अपन घर चलू ।"

"मुदा घरमे जे घरवाली बैसल छथि, से मानि जयतीह ? हुनकासँ पूछि लेलियनि ?"

आब प्रोफेसर झा तोतराय लगलाह–"ओ, ओ तऽ हें, हें, हें, पाँच वर्ष धरि अहाँक पता नहि लागल तऽ सुन्न घर काटऽ दौड़ैत छल । कोनो इच्छासँ कयलहुँ ओ विवाह ? मुदा अहाँक स्थान थोड़े ओ लेत ? पहिने अहाँ, आ बादमे ओ ।"

प्रणवक आँखि रँगि गेल छलैक । प्रोफेसर झा फेर धोखा कयने छलथिन । नहि जानि शीला कोना पता लगौलकै ? प्रणव चुपचाप दुनूकेँ तकैत रहल ।

शीला जवाब देलकै–"चलबा लेल तऽ हम प्रस्तुत छी । मुदा बहुत रास बात आइयो अहाँ नहि जनैत छी । से सुनिये लियऽ आइ ।"

प्रोफेसर झा बिना किछु जवाब देने शीलाक मुँह ताकऽ लगलाह । हुनकर आँखिमे सोझ तकैत शीला कहलकनि–"एक दिन अहाँ प्रणवक संग झूठ इलजाम लगा घरसँ निकालऽ लागल रही, नंगटिया कऽ । तहियाक ओ झूठ बादमे सत्त भऽ गेल । प्रणव नहि रहल तेँ की, आर कतेक लोक । ओइ दिन जे घरमे नंगटिऔलहुँ अहाँ, तकर बाद प्रत्येक ऐरू-गैरू हाथ हमर नूआ उनटबैत रहल, एक दिन दू दिन नहि, दस वर्ष धरि ।"

प्रोफेसर झाकेँ शीला दिस ताकल नहि गेलनि । आँखि जमीनपर गड़ि गेलनि । बजलाह–"से तऽ हमरे गलतीसँ भेल । ओकर प्रायश्चित्तो तऽ हमरे करक हैत । फेर अहाँ हमर स्त्री छी । अहाँक गुण-दोष, पाप-पुण्य सभ हमर अछि । अहाँ जेहन छी, हमरा स्वीकार छी ।"

शीला ओहिना प्रोफेसर झापर दृष्टि गड़ौने छलैक । मुदा ओ अपन आँखि जमीनपर गाड़ने छलाह । शीला मुसकिया उठल । प्रणवकेँ कहलकै–"बेश तऽ हम अपन घर जायब । अइ घरमे कागज सभ अछि, सभटा रजिस्ट्रीक कागज लिखा गेल छैक अमितक नाम । काल्हि चलू कमतौल, सम्पन्ने करा दियौक । फेर निश्चिन्त भऽ जायब एतुक्का बखेरासँ..."

अइ बेर प्रोफेसर झा चौंकलाह— के अमित ? ककर नाम रजिस्ट्री करबैक ?"

शीलाक मुसकी जगजियार होबऽ लगलैक । मुदा ओकरा नुकबैत बाजल–"आर के ? वैह अमित ? माला दीदीक बेटा । सभ टा तऽ ओकरे छैक । रजिस्ट्री कऽ परसू निश्चिन्त भऽ पटना चलू ।"

आब प्रोफेसर झा एकदम हड़बड़ा गेलाह–"नहि-नहि, हमरा तऽ आइये जाय पड़त । फेर आबिकऽ लऽ चलब अहाँकेँ । कने ओतहुक व्यवस्था देखि ली..."

प्रोफेसर झा पड़ायले बाहर चल गेलाह । शीलाक दाबल मुसकी जगजियार भऽ गेलैक । फेर भभाकऽ हँसल ! हँसैत-हँसैत आँखिमे नोर आबि गेलैक ।

प्रणव टोकलकै—"कनैत छी ?" नोर पोछैत कहलकै शीला—"आश्चर्य ! नोर कोना आबि गेल आँखिमे ? ओ तऽ कतेक वर्ष पहिने सुखा गेल छल ?" फेर हँसैत पुछलकै—"बड़ पैरबी लऽकऽ आयल छलियनि । घुरिकऽ पाछुओ तकलनि ?"

प्रणव कनेक बिगड़ैत कहलकै—"मुदा ई सभ कहबाक कोन काज छलैक ? सभटा झूठ बात ।"

"की झूठ कहलियनि हम ? सभ दिन नांगट हैबाक गप्प ? ओ झूठ छलैक ?"

"झूठ तऽ छलैक शीला ! अहाँ नांगट भेल नहि रही, क्यो जबर्दस्ती कयने छल । तेँ अहाँक भ्रष्ट हैबाक कथा झूठ अछि, ओकरा फेर नहि दोहरायब ककरो लग । आ फेर अमितक नाम रजिस्ट्रीक गप्प ? ई एकटा दोसर झूठ ।"

—"झूठ एक्को टा नहि । अहाँक नहि माननलासँ शरीरपर पड़ल एक-एकटा दाग तऽ नहि मेटा जायत, ओ तऽ झूठ नहि हैत । आ अमितक नाम रजिस्ट्रीमे कोन झूठ छलैक ? सभटा ओकरे तऽ छैक ।"

"तऽ हमर जे अछि से हमरा दऽ दियऽ । अहीँ लिखने रही ने जे मोनमे कोनो बँटबारा नहि— ओ हमर अछि सौंसे । तऽ हमर चीज हमरा दियऽ । चलू हमर संग....हमरा लग रहू ।"

शीला एकदम पैरपर खसि पड़लैक—"एहन जिद नहि करू । नहि छी ओइ जोगार हम । अहाँ जिद करब तऽ हम कमजोर भऽ जायब । दस वर्ष पहिने हमरामे साहस छल, लड़िकऽ अहाँक इच्छाक विरुद्ध चल गेल रही । आइ अहाँक इच्छाक विरुद्ध किछुओ नहि कऽ हैत । तेँ हाथ जोड़ैत छी जिद नहि करू । हमरा कमजोर नहि बनाउ !"

प्रणव हँसल—एकटा दर्दसँ भरल हँसी—"हमरा देवता बना दियऽ, मनुक्ख नहि छी हम । प्रेम-वासना, इच्छा किछुओ नहि अछि हमरामे । हम तऽ मजगूत चट्टान छी । मनुक्खक कोनो कमजोरी नहि अछि हमरामे ।"

शीलाकेँ ओहिना जमीनपर ओंघरायल छोड़ि प्रणव बाहर चल आयल, नहि जानि कोन उत्तेजनामे ? बाहर आबि ओ उत्तेजना शान्त भऽ गेलैक । किछु ग्लानि भेलैक अपन उत्तेजनापर आ पश्चात्ताप भेलैक जे किएक अनेरो रुष्ट भेलैक

शीलापर । ओ फेर घुरिकऽ भीतर आयल । शीला ओहिना ओंघरायल पड़ल छलैक । लग आबि माथकेँ हल्लुक स्पर्श करैत रहलैक-"उठू शीला ! हमरासँ अन्याय भेल । हमर जिद अनुचित छल । अहाँसँ फेर ओ जिद नहि करब ।"

शीला मूड़ी उठौलकै— दुनू आँखि डबडबायल छलैक-"अहाँसँ कोनो अन्याय नहि भेल । अन्याय अहाँ कैये नहि सकैत छी । हमहीँ अभागल छी, अहाँक इच्छापर जान देबाक साहस रखितो संग रहबाक साहस नहि जुटैत अछि हमरा । अहाँक जिद नहि मानलहुँ, मुदा अहाँक ई अनुरोध हमर बाँकी जिनगी जी लेबाक सम्बल रहत ।"

प्रणवकेँ गाममे बहुत बातक पता लागि गेल छलैक । सतरहम वर्षमे गाम छोड़ने छल । आ तकर चारि वर्ष बाद आयल रहय तऽ ने घर रहैक ने घराड़ी । मामा सर्पदंशसँ मुइल रहथिन आ मामी निपत्ता रहथिन । तकर तीन वर्ष बाद गाम आयल तऽ निपत्ता भेल मामी कल्लू चौधरीक हवेलीसँ प्रेत जकाँ अवतरित भेलथिन आ सौँसे गामक समक्ष मामी, शीला आ अमितक संग गामसँ विदा भऽ गेल छल । आ दस वर्षक बाद शीलाक चिट्ठीपर ओही कल्लू चौधरीक हवेलीमे आबि गेल छल आ श्मशानसँ घुरि उतरी पहिरने दरबज्जापर बैसि गेल छल । गाममे बहरैबाक अवसरे नहि लागल छलैक, एकादशाह-द्वादशाह धरि ।

गाममे बहरैबाक ओकरा लेल बेशी आकर्षण नहि छलैक । दरबज्जे पर बैसल-बैसल ओकरा सूचना भेटि गेल छलैक । ओइ आंगनवाली नानी नहि रहलीह । गाममे हुनका लेल ककरो सुन्न नहि लगैत छलैक । एगारह टा ब्राह्मण खुआ भातिज लोकनि निश्चिन्त भऽ गेल छलथिन— विधवा निःसन्तान नानी । मुदा प्रणवक तऽ ओहो माये छलथिन । मामी जहिआ गाम अयलथिन, पाँच वर्षक रहय प्रणव । मुदा छठिहारोसँ पहिने जखन माय आँखि मूनि लेलकै, ओइ आँगनवाली नानी अपन छातीसँ सटा रखलथिन पाँच वर्ष । ओ नानी आब नहि रहलीह, फेर एक बेर मातृहीन भेल ।

मुदा चुन्नुक पुतऽहु के छलैक ओकर ? ओ तऽ आन जातिक मुरही-कचरी बेचऽबाली मौगी छलैक । सौँसे गाममे क्यो ओकरा आदरक एक शब्द नहि कहैत छलैक— बच्चासँ बूढ़ धरि । ओ नहि रहलैक तऽ की भऽ गेलैक गाममे ?

मुरही-कचरी तऽ ओइसँ नीक आब शिवकान्तक केबिनमे भेटैत छलैक । ऊपर सँ घुघनी, चौप आ चाय । लोकके चुन्नूक पुतऽहु किएक मोन रहतैक ? किएक मोन रहतैक जे साठि वर्षसँ बेशी अही गाममे रहल छल चुन्नूक पुतऽहु आ कहियो ककरोसँ कनियों झंझ-मंझ नहि भेल छलैक । क्यो ओकर मुँहसँ कहियो कोनो गारि-सराप वा कठोर शब्द नहि सुनने छलैक । इहो सभ मोन रखबाक गप्प छलैक ? लोकके खाली एतबा मोन छलैक जे एक राति भीख माँगिकऽ घुरलापर शिव मन्दिरक चबूतरापर पड़ि रहल चुन्नुक पुतऽहु । भरि राति मुसलाधार वर्षा भेलैक । भोरमे ओही चबूतरापर चुन्नूक पुतऽहु मुर्दा पड़ल छलैक । बेटा सभके दू-तीन समाद गेलैक, मुदा भिखमंगनीक बेटा हैब कोखिक जनमलो नहि गछलकै । गामक लोक मुर्दाके बागमतीक धारमे भसिया देलकै । गामक लोकके एतबे मोन छलैक, प्रणव कतेको गोटेके पुछलकै ।

मुदा अपन बेटा नहि अयलैक । स्वामी रोगी पड़ल रहलैक बीसो वर्ष आ चुन्नुक पुतऽहु कमाकऽ खुअबैत रहलैक । स्वामी मुइलैक तऽ जेना जिनगीक सभटा संघर्ष करबाक शक्तियो समाप्त भऽ गेलैक । भीख माँगऽ लागल । प्रणवके शिव मन्दिरक चबूतरापरक ओ राति मोन पड़लैक ।

आ चुन्नूक पुतऽहुक खिस्सा कहैत रूदल चौधरीके एकटा आर बात मोन पड़लनि—"मौगी छल सुद्धी आ इमानदार । मुदा अन्तमे मति भ्रष्ट भऽ गेलैक । चोरी करऽ लागल । एक दिन पाँच सय टाका खूटमे बन्हने मन्दिरक चबूतरापर पड़ल छल । हमरे घरसँ निपत्ता कयने छल । कतबो मारलिऐक-पिटलिऐक, कबुलबे नहि कयलक । आर कतेक मारितिऐक, टाका छीनि छोड़ि देलिऐक ।

प्रणवके सभकिछु मोन पड़लैक आ दुःख आ क्रोधसँ स्वर बेसम्हार भऽ गेलैक—"ई तऽ बड़ नीक काज कयल अहाँ रूदल बाबू ! एकटा असहाय बुढ़ियाके मारि-पीटिकऽ ओकर पूजी छीनि लेलिऐक । टाका सत्ते अहींक छल ?"

रूदल चौधरी बदलल स्वर आ रंगल आँखि देखि चौंकलाह—"अपने एना किएक बजै छी, हमर नहि तऽ ककर टाका छलैक ओ ? अहाँ तऽ एना बाजि रहल छी जेना सभ बूझल हो अहाँके ।"

—"बुझल अछि तैं कहै छी । हमहीं ओ टाका ओकर खूटमे बन्हने रहिऐक । कलकत्तासँ कमा मामा-मामीक लेल अनने रही । मुदा मामा संसारमे नहि छलाह, आ मामीक पते नहि छलनि । राति ओही चबूतरापर हमहूँ रही आ सूतलमे ओकर खूटमे बान्हि देने रहिऐक ।"

दरबज्जापर चारू कात लोक बैसल छलैक । ई गप्प सुनितहि सभक कान ठाढ़ भेलैक । रूदल चौधरीक घेंट झुकि गेलनि । आस्तेसँ बजलाह—"हमरासँ अन्याय भेल, टाका हम अपनेके घुरा देब ।"

प्रणव कठोरतासँ कहलकनि—"अहाँक टाका लऽ हम की करब ? घुरैबाक अछि तऽ घुरा दियौक ओइ असहाय बुढ़ियाके जे भीख माँगि गुजर करैत छल । घुरा सकबै ?"

रूदल चौधरीक घेंट नहि उठलनि । लोक सभ आपसमे कनफुसकी करऽ लागल । प्रणवके जेना कोनो बातक ध्यान नहि रहैक । ओ ओहिना आवेशमे बजैत गेल—"आ घुरा सकबै मालाके—जकरा बजारमे बेचि आयल रहिऐक ? अपन भतीजी छल ।"

"बहुत भऽ गेल, आब चुप्प रहू । हाकिम भऽ गेलहुँ तकर ई मतलब जे, जे मोनमे हैत से लोकके कहि देबैक ।" रूदल चौधरी प्रतिवाद करैत जोरसँ बजलाह ।

"ई हम नहि कहैत छी । माला कहने छल । बजारक गाहक सभसँ तरह-तरहक रोग लऽ जखन मृत्यु-शय्यापर पड़ल छल, तऽ वैह कहने छल हमरा । ओ तऽ छोट छल, अज्ञान छल, वर पसिन्न नहि भेलाक कारणे प्रतिशोधक भावनासँ पागल छल । मुदा अहाँ तऽ बापक स्थानपर छलिऐक, एहन ठाम पहुँचा देलिऐक ओकरा ?"

दरबज्जापर बैसल सभ लोक 'राम-राम' करऽ लागल । रूदल चौधरी अपमानित क्रुद्ध चेहरा लेने उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह आ सभके हिंसक दृष्टिसँ देखैत चल गेलाह ।

तखन प्रणवक उत्तेजना सेहो कम भेलैक । किछु अफसोचो भेलैक । अनेरो ई काण्ड कयलक ? मालाक खिस्सा समाप्त भऽ गेल छलैक । ओकरा फेर उघारिकऽ सिवाय गन्दगी आ घृणाके आर किछु नहि भेटतैक । भेटतैक रूदल चौधरीक दुश्मनी आ षडयंत्र ।

मुदा बात मुँहसँ बहरा गेल छलैक आ रूदल चौधरी हनहनाइत चल गेल छलाह । लोको सभ आपसमे खुसुर-फुसुर करैत विदा भेल ।

प्रणव सेहो उठिकऽ किम्हरो विदा हैबाक सोचि रहल छल कि बंकू आबिकऽ सामने ठाढ़ भऽ गेलैक । प्रणव कने साकांक्ष भेल । बाप अपन अपमानक बदला लेबऽ पठौने हैतैक ?

मुदा बंकू बजलैक–"नीक कयल सर अहाँ । हमर बाप नीच, पापी आ कसाइ अछि । ओकरा सभक सोझाँ नांगट कऽ नीक कयल ।"

बंकूक चेहरापर व्यंग्यक कोनो लक्षण नहि छलैक, ने बोलीमे । भ्रमक कोनो गुंजाइश नहि छलैक । बंकू आगू बजैत गेलैक–"जेठ छी हम घरमे आ हमहीं ढेलमारा गोसांइ भेल छी । ढौए-ढाकी जनमा लेलक, तीन भाइ रही, तैयो मायक मरितहि एकटा नवकी बिआहि कऽ अनलक अछि । छौ सालमे पाँच बेटा । आठ भाइ आ अपन दुनू परानीक हिस्सा लगा, दसमी हमरा दऽ देलक अछि आ बाँकीमे अपने सभ मौज करैत अछि । जमीने कतेक बाँचल छैक आब– मात्र तीस बीघा, घर-घराड़ी छोड़िकऽ । बस तीन बीघा-ताहिमे डबरा, खत्ता, उसराह सभ । चारिटा धीया-पुता आ दुनू परानी हमरा लोकनि । कोना गुजर हैत, अहीं कहू ? इम्हर हमरा सभकेँ उपासक नौबति रहैत अछि आ ओम्हर बुढ़बा अखनो खोआ खा साले-साल बेटा जनमबैत अछि ।"

बंकूक भाषा ओहने छलैक । एक दिन अही हवेली लग टांग तोड़बाक धमकी देने रहैक, मैट्रिक पास करबाक ताना देने रहैक । आइ ओकर हाड़ देखाइत छलैक । गाल चोकटल छलैक आ आँखि धँसल । देहपर मात्र धोती, सेहो फाटल, मुदा आँखिमे ओहिना शिकारीवाला हिंसक भाव छलैक जेना मौका भेटितहि अपन बापोक नरेटी दबा देत ।

"ई सभ हमरा किएक कहि रहल छी अहाँ ? गामक लोककेँ कहियौक, फड़िछा देत बाप-बेटामे ।" प्रणव टारैत कहलकै ।

"गामक लोक की फड़िछाओत ? फड़िछा तऽ हम अपने लेब ओकरासँ आ ओकर नवकी मौगीसँ । एहन-एहन बहुत मौगीकेँ ठेकाना लगा देने छिऐक हम— मलिकाइन बनैत अछि ! मुदा अखन तऽ हम अपने लग आयल छी । हमरो उद्धार कऽ दियऽ ।"

प्रणवकेँ ओकर बातक स्पष्ट अर्थ नहि लगलैक । पुछलकै– ''हम की सहायता कऽ सकैत छी अहाँक ?"

बंकू कनेक आशान्वित होइत बाजल— ''अपने कऽ सकैत छी, खूब कऽ सकैत छी । पढ़ल-लिखल नहि छी बेशी हम, मुदा कोनो हाकिम-हुक्कामक पदवी लेल तऽ नहि कहैत छी । चपरासियोक जगह यदि कतहु भेटि जाय, तऽ धीयापुता अन्न बेतरे बेलल्ल नहि हैत ।"

प्रणवकेँ आश्चर्यक संग दुखो बड़ भेलैक । रूदल चौधरीक बाप मुइलोपर डेढ़ सय बीघा जमीन, कोठा-गाछी, बाड़ी–पोखरि सभ छोड़ि गेल छलथिन– एकसर छलाह भाइमे ओ । आ तिनकर बेटा अन्न लेल बेलल्ल छनि । प्रणवकेँ एक बेर फेर ओ दिन मोन पड़लैक जहिया अन्न नहि रहैक घरमे आ मामी ओकरासँ नुकायल फिरैक ।

प्रणव कहलकै–"हम अबस्स अहाँ लेल चेष्टा करब । ओना अहाँक वयस बेशी भऽ गेल अछि आ सरकारी नौकरी कठिन हैत । मुदा आने कोनो ठाम हम अबस्स प्रयास करब ।"

आश्वस्त भऽ बंकू विदा भेल । किछु डेग आगू गेल । फेर नहि जानि की मोनमे भेलैक ? घुरिकऽ प्रणवक दुनू पयर पकड़ि लेलकै–"धीयापुतामे अपन उदण्डतासँ हम बेर-बेर अहाँक अपमान कयने छी, से मोन नहि राखब भाइ ! मोन राखब जे हम संगतुरिया छी आ हमर धीयापुता अन्न बेतरेक मरैत अछि । बिआह जोग बेटी अछि घरमे । बस्स, एतबे मोन राखब, आर किछु नहि ।"

प्रणव पयर छोड़बैत कहलकै–"एतेक हताश आ विचलित नहि होउ । हमरा मोन अछि जे कहियो अहीं लोकनिक देल भरि गाम खाइत छल । इहो मोन अछि जे ई सौंसे गाम अहीं लोकनिक सम्पत्ति छल । नियम छैक प्रकृतिक । आइ प्रचुर तऽ काल्हि अभाव । जहिना राजपाट नहि रहल, तहिना ई अभावोक दिन नहि रहत । हम पूर्ण चेष्टा करब, अहाँ निश्चिन्त रहू ।"

बंकू चल गेलैक । ई परिवर्त्तन अभावक छलैक, वा समयक संग बंकू बदलि गेल छलैक, प्रणव कोनो निर्णय नहि लऽ सकल । ओकर आँखिमे अखनो वैह हिंसक भाव छलैक आ बोलीमे वैह अहंकार । दीनतासँ गिड़गिड़ाइतो काल बीचमे अहं मूड़ी उठा दैत छलैक । प्रणव स्पष्ट देखलकै ।

मुदा प्रणवकेँ ताहिसँ की ? यदि चपरासियोक काज लेल प्रस्तुत छलैक बंकू, तऽ क्यो राखिये लेतैक ओकर कहलापर । एक बेर ओकरा मौका अबस्स देबाक चाही । भऽ सकैत छैक जे अहीसँ जिनगी बदलि जाइ ।

मुदा मुनेसरा किएक एतेक बदलि गेल छलैक ? एतेक दिनसँ गाममे अछि, मुदा एक्को बेर भेंट करऽ नहि अयलैक । एकटा पैरवी नहि सुनलकै प्रणव, विलम्बसँ आयल छलैक मुनेसरा, उम्मीदवार एकदम कमजोर छलैक, ताही लेल अपन बालसंगीकेँ बिसरि जायत मुनेसरा ? नहि, मुनेसरा नहि, मुनेसर पासवान एम.

एल.ए. । आब ओ मामूली लोक नहि छलैक, सभ अफसर-कर्मचारी ओकरासँ डेराइत छलैक, ओकर खुशामद करैत छलैक । प्रणवोक भेंट ओ ताधरि नहि करतैक जाधरि प्रणव झुकिकऽ ओकर बात नहि मानतैक, पैरवी नहि सुनतैक ।

मुदा से तऽ मुनेसराक गप्प छलैक । ई मुरलियाकेँ की भऽ गेलैक ? आ इमानदार आक्रामक खेलाड़ी कतऽ बिला गेलैक ? एक बेर एकटा रेफरी गलतीसँ भिसिल बजा फौल देने रहैक ओकर, रेफरीक गट्टा उनटा बाँहियेँ तोड़ऽ लगलैक । जाधरि बैमानी गछलकै नहि रेफरी, मुरलिया गट्टा नहि छोड़लकै । मुदा से मुरली आब खादमे नून आ अन्नमे आँकड़-पाथर मिलबैत छलैक । जाहि दिन प्रणव गाम आयल छल, ओकर दोकानमे ओही दिन साँझमे छापा पड़ल रहैक आ जखन लोक कल्लू चौधरीकेँ जरा घुरि रहल छल, मुरलीकेँ पुलिस हथकड़ी पहिरा जीपपर लऽ गेलैक । मुरलीक कनियाँ लाज-धाख छोड़ि दौड़ल आयल छलैक-"कहुना बचा लियनु, हथकड़ी नहि लगनि ।" मुदा पुलिस हथकड़ी लगा लऽ गेल रहैक अपन संग, अबेर भऽ गेल रहैक । प्रणव मुरलीक स्त्रीकेँ शान्त करैत कहलकै-"लऽ गेलैक तऽ जाय दियौक भौजी, कोनो चिन्ताक प्रयोजन नहि ? यदि कोनो सबूत नहि हेतैक, निरपराध हैत, क्यो नहि किछु कऽ सकैत छैक । जमानत हेतैक आ मोकदमोमे किछु नहि हेतैक । साँच के कोन आँच ?"

मुरलीक कनियाँ तामसे चिकरि उठलैक-"बड़का सतबरता भेलाह अछि ! बनिया दू पाइ कमाय लेल कने-मने फेंट-फाट नहि करतैक तऽ कोना काज चलतैक ? आ निरपराधे रहतैक तऽ अहाँक कोन काज ? अपने छोड़ि देतैक । अहाँ बड़का दोस्त बनैत छिऐक, दोस्तकेँ हथकड़ी लागि गेल आ अहाँ न्यायपुराण बाँचि रहल छी !"

प्रणवकेँ अधलाह लगलैक, मुदा सोचलक जे अइ मूर्ख-स्त्रीपर तामस करब व्यर्थ छलैक । किछु बेशिए व्यावहारिक बुद्धिवाली बुझाइत छलैक । निर्भीक-इमानदार खेलाड़ीकेँ फेंट-फाटवला बनिया यैह बनौने हेतैक । एकरासँ बहस करब व्यर्थ छलैक ।

मुरलीक स्त्री बड़बड़ाइत, प्रणवकेँ दस हजार गंजन करैत चल गेलैक । ओ चुप्पे रहल । मुदा मुरली घुरि आयल । दारोगाकेँ टाका-पैसा देलकै आ प्रात भने घुरि आयल । प्रणव सुनलकै आ बजा पठोलकै मुदा मुरली नहि अयलैक । प्रणवकेँ आश्चर्य आ दुख भेलैक । ओकर गाममे हैबाक खबरि सुनियोकऽ, ओकर समाद पाबियोकऽ मुरली नहि अयलैक । नहि जानि ओकर स्त्री की की बुझौने हेतैक ? गरामे उतरी छलैक आ स्वयम् कतहु जा नहि सकैत छल ।

आ जखन श्राद्धोमे भोज खाय नहि अयलैक मुरली तऽ ओकरा नहि रहि भेलैक । पहुँचि गेलैक द्वादशाहक प्रात ओकर दरबज्जापर । दरबज्जेपर छलैक, ओकरा देखि भीतर ससरऽ लगलैक । प्रणव बाट छेकि लेलकै-"एना अंगना कतऽ पड़ाइ छैं निर्लज्ज ? एतेक दिनसँ गाममे छी, गरामे उतरी छल, समादो देलियौक, तैयो तोरा भेंट करबाक पलखति नहि भेटलौक ?"

"अहाँक गरामे उतरी छल, तऽ ककरो हाथमे हथकड़ी छलैक, ओकर स्त्री अहाँ लग हाथ-पयर जोड़लक, दोस्तीक नामपर मदति मँगलक, की कयलिऐक अहाँ ?"

"तोरा ठीक खबरि नहि छौक मुरली ! जावत हमरा पता लागल, पुलिस तोरा लऽ जा चुकल छलौक । देरी भऽ गेल रहैक । नहि तऽ अबस्से हम दारोगासँ कहितिऐक आ तोरा छोड़बा दितियौक ।"

"रहऽ दियऽ ई गप्प-शप्प । जीप चल गेल रहैक, तऽ अहाँक गाड़ी नहि रहय ? आगू बढ़िकऽ रोकि नहि सकैत छलिऐक ? जिलाक मालिक छी अहाँ, अहाँक इच्छाक विरुद्ध कोनो मजिस्ट्रेट-दरोगाक मजाल छलैक जे हमरा हथकड़ी लगाकऽ लऽ जाइत ? ओ तऽ धन्न कही मुनेसराकेँ, दोस्तीक लाज तऽ वैह रखलक । सभकेँ टाका-पैसा दऽ मामले साफ करा देलक, कतहु कोनो चीज दर्ज नहि भेल ।"

प्रणवकेँ बहुत-किछु कहबाक छलैक मुरलीसँ । मुदा लगलैक जे बेकार छैक कहब । ओ किछु नहि सुनतैक । सुनबो करतैक तऽ नहि बुझतैक । आब ओ मुनेसराक बोली बुझैत छलैक । एक दिन ताना देने रहैक प्रणवकेँ जे मुनेसराक तोँ मोन बढ़बैत छहिक । आइ मुरली अपने माथपर चढ़ा रहल छलैक ओकरा । आदरणीय बना रहल छलैक । प्रणव बड़ छोट आ बड़ महत्त्वहीन भऽ गेल छल मुरलीक नजरिमे ।

आ रूदल चौधरीक नजरिमे सेहो ओ गड़ि गेल छलैक । सबहक सामने कयल गेल अपमान हुनका नहि पचलनि । स्वार्थ लेल ओ प्रणवक आगाँ-पाछाँ लागल छलाह मुर्दघट्टीसँ श्राद्ध हैबा धरि । मुदा चुन्नूक पुतऽहुक आ मालाक प्रसंग सभटा उनट-फेर कऽ देने छलैक । अपमानित रूदल चौधरी हनहनाइत चल गेलाह आ बंकू बापकेँ गारि-सराप दैत नौकरीक पैरवीमे आयल ।

प्रणव अबस्से कोशिश करतैक ओकरा लेल । मधुक जमायक नहि, देवीजीक जमायक बहाली एम.एल.ए. मुनेसर पासवानक सिफारिशोपर नहि कयने रहैक, मुदा बंकूक नोकरी लेल ओ चेष्टा करतैक । आगू ओकर भाग्य ?

आ केहन भाग्य छलैक झुमकीक ? एकदम स्वतंत्र चिड़इ जहाँ आकाशमे उड़ैत छल । नित्य नव जोड़ा बना लैत छल । जे कहैत छलैक तकरे संग विदा भऽ जाइत छल । प्रणव टोकने रहैक एक बेर तऽ कहलैक–"की फायदा ? मोनसँ नहि जायब तऽ जबर्दस्ती घिसियाकऽ लऽ जैत ।"

आ ठीके घिसियाकऽ लऽ गेलैक ओकरा एक दिन । फजलू मियाँ रहैक नामी गुण्डा । कतेको डकैती केसमे नाम रहैक । दुनू गालपर आ आँखिक नीचाँ चाकूक गहींर निशान रहैक । बड़ भयावह लगैक चेहरा । गामक नेना, चेतन, स्त्री–पुरुष, सभ देखिऐ कऽ डेरा जाइ ।

ओहो एकदिन हाथ पकड़ि लेलकै झुमकीक । डरे त्रस्त भऽ गेल झुमकी । मुदा तैयो हाथ झटकि पड़ाय लागल । नोटक गड्डी देखबैत कहलकै फजलू मियाँ– "ले, सभ तोरे छौक । सभ लग जाइते छैं, फेर हमरा संग एतेक ढोंग किएक ?"

मुदा नोटक गड्डीसँ कनेको नहि लोभायल झुमकी । ओ तऽ फजलूक भयावह आकृतिए देखि डेरा गेल छल । पड़ैबाक चेष्टा करैत बाजल–"नहि, तोरा संग नहि, डर लगैए तोहर चेहरा देखिकऽ ।"

फजलूक भयावह चेहरा आर भयावह भऽ उठलैक । लपकिकऽ धऽ लेलकै आ पैसि गेलैक एकटा मकइक खेतमे । खेतमे धधरा उठऽ लगलैक, सब किछु जरऽ लगलैक ।

ओकर झरकल चेहरा देखि प्रणव सिहरि गेल छल । प्राय: ओकर सिहरब देखि लेलकै झुमकी । कहलकै–"डेरा गेलौं ? चिन्है नहि छी ?"

बोलीसँ चिन्हलकै प्रणव–"तों छें, झुमकी ? तोहर ई हाल ?"

"हम तऽ कहने रही एक दिन जे मोनसँ नहि जायब तऽ घिसियाकऽ लऽ जैत, तेँ अपने सभक संग चल जाइ छी । मुदा ओइ दिन मोनकें नहि जानि की भऽ गेल ? मानबे ने कयलक । ओकर भयावह चेहरा देखि जयबाक साहसे ने भेल । कहि देलिऐक ओकरा । आ तकर बाद, तकर बाद..."

झुमकिए ई सभ हकलकै प्रणवकें । ओकरा कोरामे उठा मकइक खेतमे पैसि गेलैक फजलू मियाँ । सभ टा कपड़ा देहसँ नोचि देलकै आ पिशाच जकाँ पाशविकताक संग बलात्कार कयलकै । फेर ओकरे नूआसँ ओकर मुँह आ हाथ–पयर बान्हि देलकै आ झोंटामे दियासलाइ लगा देलकै ।

पाकल दानावला मकइक खेत जरऽ लगलैक । चारूकात लहास उठलैक ।

सभ दिससँ लोक दौड़लैक । मुँहमे बान्हल नूआ जरलैक तऽ चीत्कार बहार होबऽ लगलैक । चिकरब सुनि लोक भीतर पैसलैक, ताबत सौंसे मुँह झरकि गेल रहैक । अस्पतालमे छौ मास रहल, कहुना जान बाँचि गेलैक ।

भोजक दिन आँगनमे ऐंठ–कूठ लेबऽ आयल रहैक झुमकी । झरकल चेहरा देखि प्रणव सिहरि गेल । झुमकी टोलककै आ प्रणव चीन्हि गेलैक ।

मुदा झुमकीकें आब क्यो नहि चिन्हैत छलैक । जे सभ कहियो ओकर आगाँ–पाछाँ लागल रहैत छलैक, आब दूरेसँ पड़ा जाइत छलैक । क्यो ओकर चेहरा दिस देखऽ नहि चाहैत छलैक । राड़िन पनिभरनीमे सेहो क्यो राखऽ नहि चाहैत छलैक । भीख मँगैत छल झुमकी । मुदा जाहि गाममे जाइत छल, धीया–पुता डेराकऽ पड़ा जाइत छलैक, लोक दरबज्जा बन्न कऽ लैत छलैक । भोज–भातमे ऐंठ–कूठ भेटि जाइत छलैक तऽ दू–चारि दिन पेटक चिन्ता नहि रहैत छलैक । सुखायलो अन्न गीड़ि लैत छल ।

ओइ दिन ऐंठो नहि उठा सकल झुमकी । प्रणवकें देखलकै आ अपन खिस्सा कहऽ लगलैक । प्रणवक दुनू आँखिमे नोर छलैक । कहलैक– ''हमरा संग आ ।"

झुमकी पाछाँ–पाछाँ अयलैक । भीतर आबि शीलाकें बजौलकै प्रणव । ओहो ओकर झकरल चेहरा देखि डेरा गेलैक– ''चिन्हलियैक ? झुमकी अछि ।"

शीलाक आँखि आश्चर्य आ दुखसँ पसरि गेलैक । प्रणव फेर कहलैक–"एकरा अहाँ लग अनने छिऐक । अपना लग राखि लियौक एकरा । डर तऽ नहि हैत ?"

शीला हँसलैक– "हमरा कोनो बातक डर नहि होइत अछि । भयावह सँ भयावह चेहरा देखियोकऽ देह नहि सिहरैत अछि । अइसँ बेशी झरकल आ वीभत्स चेहरा तऽ हमर अपने अछि । खाली लोक देखैत नहि अछि । आ ई तऽ झुमकी अछि । अइ सुन्न हवेलीमे हमर संग रहत, समय कटि जायत । रहबैं ने झुमकी ?"

झुमकी हिचुकि–हिचुकिकऽ कानऽ लगलैक, कनिते रहलैक ।

ओइ दिन शीलो कानऽ लगलैक । ओ तऽ कहने रहैक जे ओकरा आब कोनो बातक डर नहि होइत छैक । मुदा ओइ दिन तेना डेरा गेलैक जे कनिते–कनिते जमीनपर ओंघरा गेलैक–"अहाँ जाउ । बहुत दिन भेल, काजक हर्ज होइत हैत ।"

प्रणवकें कोनो ततेक आश्चर्य नहि भेलैक । अही दिनक प्रतीक्षामे छल ओ एक तरहे । भनकी ओकरा लागल रहैक । सुनिकऽ शीला एहिना कहतैक, से अनुमान ओकरा रहैक । तैयो कहलकै–"हमर काजक बड़ चिन्ता भऽ गेल आइ ! दुइये सप्ताहमे भार लागऽ लगलौं ?"

शीला ओहिना कनैत बजलैक–"सैह बूझि लियऽ । मुदा अहाँ जाउ आब । अइ गाममे रहब आब ठीक नहि अहाँक लेल ।"

प्रणव मोनेमोन हँसल । शीलाकें कथीक चिन्ता छलैक, से ओ जनैत छल । मुदा फेर लगलैक जेना कतेक असहाय भऽ जाइत अछि ओ शीला लग ! एकदिन किताब देबाक लेल घर बजौलकै आ सामनेमे बाप डाँटि देलकै, तऽ सभटा बिसरि निश्चिन्त भऽ गेलैक । बिआह-दान कऽ ओहीमे रमि गेलैक । फेर एकदिन स्वामीकें छोड़ि ओकर घर आबि गेलैक । आ तकर बाद एक दिन मना कयलोपर कोनो अनजान देशमे निपत्ता भऽ गेलैक । दस वर्षक बाद फेर साधिकार एकटा पत्र लिखि बजा लैलकै । आ आइ कहि रहल छलैक–"अहाँ जाउ, काज हर्ज होइत हैत ।"

असल बात कहियो नहि कहतैक शीला । नहि कहतैक जे भरि गाम अपवाद पसारने छलैक रूदल चौधरी । इहो कहने छलैक सभकें जे दस वर्षसँ स्वामीकें छोड़ि ओकरे लग छलैक शीला । आ बापक श्राद्ध भेला दुइयो दिन नहि भेलैक कि फेर एना खुल्लमखुला...गामक इज्जतिक सवाल छलैक ।

रूदल चौधरी चोटायल साँप छलैक । ओकर मुँह नीक जकाँ थूरि देबाक छलैक । एना विष वमन करबाक लेल ओकरा छोड़ि देब ठीक नहि भेलैक ।

मुदा असली साँप छलैक मुनेसरा । सभटा आगि ओकरे लगाओल छलैक । मदतिमे छलैक देवीजी, समाजसेविका, जे घरे-घर घुरि सभकें ई समाचार सुनौलकै, खूब नीक जकाँ नोन-मरचाइ लगाकऽ आ गाममे कनफुसकी शुरू भऽ गेलैक । गामक लोक वा कहू सभ ठामक लोक एक्के रंगक होइत अछि । मधुक स्वामी निपत्ता छलैक, साले-साल धीया-पुता भेलैक, ओहूमे कनफुसकी आ फेर सभ शान्त । पलटू मिसर स्त्री धीयापुताकें छोड़ि मधुक आँगनमे पड़ल रहलाह, ताहूमे कनफुसकी आ फेर सभ शान्त । जमाय, जवान बेटावाली देवीजी आँखिपर कारी चश्मा लगा एम.एल.ए. मुनेसर पासवानक संग पटना-दिल्ली घुमैत छलीह, ताहूमे कनफुसकी आ फेर सभ शान्त ।

आ तेहन इतिहास आ वर्तमानवाली देवीजी सेहो जखन कहैत छलथिन जे

शीला भ्रष्ट अछि, स्वामीकें छोड़ि प्रणवक संग रहैत अछि, तऽ गाममे कनफुसकी होबऽ लागल छलैक–"ठीके कहै छथि देवीजी । एना तऽ कहियो ने देखल ने सुनल ? सभ देयादक अछैत आगि देलकै प्रणव, जेना वैह बेटा-जमाय होनि कल्लू चौधरीक आ आब काजोक बाद कोन लोभमे अँटकल छैक ?"

प्रणवकें लगलैक जेना अइ कनफुसकीकें, अइ पसरैत आगिकें रोकबाक चेष्टा व्यर्थ हेतैक । ओकरा अन्देसा तऽ ओही दिन भेलैक जाहि दिन देवीजी अनेरो ओकर बाट छेकि लेलथिन–"सभपर दया-माया रखैत छिऐक । एक दिन अहू अभगलिक कुटियामे पयर दऽ पवित्र कऽ दियऽ ।"

स्वरमे छिपल व्यंग्य ओ चिन्हलकै, मुदा नहि जानि कोन भूत सवार भऽ गेलैक–"बेश, चलू ।''

मधुक संग ओकरा अंगनामे आबि गेल प्रणव । बड़ आदरभाव कयलकै मधु । लगलैक जेना आत्मा कतहु ने कतहु जीविते रहैत छैक मनुक्खक । एकदम मरैत नहि छैक । मधु पतिता छलैक, मुदा मोनमे कतहु एकटा नारी छलैक, जे ममतामयी छलैक, स्नेहमयी छलैक ।

मुदा अपन भ्रम लगले बूझि गेल प्रणव । प्राते भेने चारूकात खबरि पसरलैक–"देवीजीक नव शिकार...जिलाक हाकिम ।" खबरि प्रणवकें शीले देलकै-"काल्हि मधुक आंगन गेल रही ?''

प्रणव स्वीकृतिमे मूड़ी डोला देलकै । शीला हँसैत कहलकै— "आखिर अहूँकें नहिए छोड़लक मधु । लिस्टमे नाम जोड़िए लेलक ।"

प्रणव तमसाकऽ किछु कहऽ चाहलकै तखने दुष्टतापूर्वक हँसैत ओकर आँखिसँ आँखि मिललैक । ओहो ओहिना दुष्टतापूर्वक कहलकै–"हम तऽ अहूँ कें कहने रही एक दिन जे योगी वा महात्मा नहि छी हम । मनुक्खे रहऽ दियऽ । अहाँ नहि मानलहुँ । मधु मनुक्ख कऽ बुझलक, अपन लिस्टमे नाम जोड़लक से तऽ हमरा लेल भाग्यक बात !"

हँसैत शीला गम्भीर भऽ गेलैक–"मानैत छी, हमहूँ भ्रष्टे छी । बड़का टा सूची हमरो अछि मुदा मधुसँ हमर तुलना कऽ एना अपमान नहि करू ।"

प्रणव हड़बड़ाकऽ बीचमे रोकलकै ओकरा–"आब तऽ अहाँसँ हँसियो करब मस्किल अछि । अहाँक तुलना कखन कयलहुँ हम मधुक संग ?"

मुदा शीला जेना नहि सुनलकै । कहिते गेलैक–"तुलना कयलहुँ तऽ कोनो

अन्याय नहि कयलहुँ । ओकरासँ कोन नीक छी हम ? हमरासँ तऽ नीके अछि । घर छैक, बेटी-जमाय छैक, जे किछु कयलक से लोक बिसरि गेलैक । लोक तऽ देखैत छैक जे एकसरि भऽ समाजमे रहि सकल । बेटाकेँ पढ़ा सकल, बेटीक विवाह-दान कऽ सकल । मुदा हम ककरा लेल पतित भेलहुँ । की कऽ सकलहुँ अपन शील आ चरित्र लेल ? ओकर स्वामी निपत्ता भऽ गेलैक, हमर जीवित भैयोकऽ नहि छथि । आर के अछि जकरा लेल अपन सर्वस्व गमाकऽ अइ सुन्न हबेलीमे घुरल छी ? तेँ अइ तुलनाकेँ हम गलत नहि कहैत छी । हम तऽ एतबे कहै छी जे खाली अहाँ अपना लेल हमरा गलत नहि बुझू । सभटा अहीँक अछि मुदा जे अपन भैयोकऽ अहाँकेँ नहि भेटि सकल, तकरा लेल बेर-बेर ताना दऽ एना कमजोर नहि बनाउ हमरा ।"

प्रणव अवाक् । कहाँक गप्प कहाँ पहुँचि गेलैक ? की-की कहि गेलैक शीला ? ओकरा अखन किछु कहब ठीक नहि हेतैक । ओ चुपचाप ओतऽसँ ससरि गेल ।

बुझबामे आबि गेलैक जे मधुक ओ आदर-सत्कार कोन स्वार्थक लेल छलैक । मुनेसर पासवानसँ लऽकऽ मुरली उर्फ मुरलीधर झा धरि सभ ओइ घटनाक डिगडिगिया पिटलकै आ सभक सोझाँमे मुसकिया-मुसकियाकऽ मधु तेहन सन भ्रम उत्पन्न कऽ देलकै जेना ओइ दिन ओकर आँगनमे विशेष किछु घटित भेल होइ । लोक अनेरो नहि बजैत छलैक ?

मुदा मुनेसर पासवानक सम्बन्धमे भ्रमक कोनो गुंजाइशे नहि रहलैक । ओइ दिन जखन देवीजीक सूचीक सम्बन्धमे शीला सेहो हँसी कयलकै आ प्रणवक हँसीसँ शीला एकदम कातर भऽ उठलैक तऽ प्रणव भागि पड़ायल, शीलासँ दूर, हवेलीसँ दूर ।

स्कूल दिस नहि गेल । हेडमास्टर साहब रिटायर भऽ अपन गाम चल गेल छलथिन आ मिर्जा साहबकेँ अपन घर लगक हाइ स्कूलमे बहाली भऽ गेल छलनि । गामेक लोक सभ कहने छलैक । तकर बाद स्कूलमे प्रणवक लेल कोनो विशेष आकर्षण नहि रहि गेल छलैक । हेडमास्टर साहब आ मिर्जा साहब, दुनू प्रणवकेँ स्कूलक संग जोड़ैत छलथिन । मानैत आनो टीचर छलथिन । मुदा ओइमे ओ प्रगाढ़ता नहि छलैक, प्रणव जनैत छल । कैक टा मास्टर तऽ गुरुदक्षिणाक नामपर अपन-अपन धीयापुताक नाम लिखा गेल छलथिन । अपन शिष्यसँ नहि, जिला मजिस्ट्रेटसँ भेट करऽ आयल छलथिन ओ लोकनि ।

प्रणव अनेरो किछु काल धारक कातमे बौआयल । अइ धारक रूप जेना दस वर्षमे एकदम बदलि गेल छलैक । अइ पारक हिस्सा सभ साल बाढ़िमे भथिकऽ ऊँच भेल जाइत छलैक । धारक गहिंरका हिस्सा दक्षिणवारी कात ससरि गेल छलैक

आ ओइ पारक माटि कटि-कटिकऽ ओम्हरुका हिस्साकेँ एकदम खतरा कयने जाइत छलैक । ओना सालमे दुइये तीन मास, बरिसातमे खतरा रहैत छलैक । नहि तऽ पानि सटकिकऽ पेटीमे । हेलाव पानि रहैत छलैक ।

मोनिमे बारहो मास अथाह पानि रहैत छलैक । जाहि ठामसँ धार पूबे-पश्चिमे बहैत उत्तर दिस मुड़ैत छलैक, ओइठाम लहरि रहैत छलैक आ अथाह पानियो । सभटा पैघ-पैघ माछ बाढ़िक पानि घटलापर ओइसँ अगिला मोनिमे रहैत छलैक । ओइ मोनिमे माछ नहि टिकैत छलैक । नहायवला घाटो नहि छलैक ओतऽ । कनेक हँटिकऽ उत्तर दिस छलैक घाट । मुदा कोनो बंसीवलाकेँ कोनो माछ नहि अभरैत छलैक ओइ मोनिमे । ओना बागमतीक ई धार एकदम निरापद छलैक । बाढ़ियोमे गोहि-मगरमच्छ नहि अभरैत छलैक । खाली कहियो-कहियो बहैत धारमे सोंसि उगैत छलैक आ बेश तमाशा बनि जाइत छलैक ।

असली तमाशा लगैत छलैक बाढ़ि घटलापर अगिला मोनिमे । जतऽसँ धार फेर पूब दिस मुड़ैत छलैक, ओइ मोनिमे बाढ़िक पानि घटलापर शिकारी सभ दर्जनो बंसी पाथि दैत छलैक आ घरे-घर दू चारि फड़ी रहु-नैनी पहुँचि जाइत छलैक । तमाशबीन सभ लहरिपर कुदैत, पानिमे बंसी मुँहमे लेने नचैत माछक तमाशा देखैत छल ।

धारक कछेरमे ठाढ़ प्रणवकेँ ई सभ बात मोन पड़ल छलैक । पानि तखनो घटले छलैक । मोनिमे शिकारी सभ हेतैक । मुदा प्रणवकेँ ओम्हर जयबाक इच्छा नहि भेलैक । मन्दिरक पछबारी कात मुर्दघट्टीवला मोनि छलैक । मुर्दघट्टीक बाद धार फेर दक्षिण दिस मुड़ैत छलैक । मन्दिरसँ मुर्दघट्टी धरि आ मन्दिरसँ पहिला मोनि धरि धार पूबे-पश्चिमे बहैत छलैक । अही धारक बालुपर, बालुक उपरका ओही झमटगर गाछ लग आ बड़क गाछक बादक ओही प्राइमरी स्कूलमे प्रणवक नेनपन बितल छलैक । धारक कतबइ आ मन्दिरक प्रांगणमे सभटा पुरना बात मोन पड़लैक ।

आ ओही पुरने बातक संग फेर एकबेर मोन पड़लैक मुरली आ मुनेसर । दुनू कतेक जान दैत छलैक ओकरा लेल ! आइ मुरली ओकर बात सुनऽ नहि चाहैत छलैक आ मुनेसरा रुष्ट छलैक । ओकर पैरवी ओ नहि सुनलकै ।

नहि जानि किएक, ओकर डेग दुसधटोली दिस बढ़ि गेलैक । बाटमे जे देखलकै, नमस्कार कऽ ओकर संग धऽ लेलकै । एतेक टा हाकिम एकसरे पैदल जा रहल छलथिन ! सभकेँ आश्चर्य भेलैक आ दुसधटोलीमे पहुँचिते-पहुँचिते जेना बड़का भीड़ लागि गेलैक ।

टोल अखनो ओहिना छलैक— वैह धूरावला सड़क, ओहिना नंग-धड़ंग

लोक आ नांगट धीयापुता । एकटा बड़की टा कोठी सन बनि गेल छलैक बीचमे आ ओइ दरबज्जा तक पहुँचबाक लेल ईंटा-सुर्खीक पीटल सड़को छलैक— बेस चौरगर । प्रणवकेँ मुनेसरक घर चिन्हबामे देरी नहि भेलैक । मुदा मुनेसरक बापक तऽ मात्र दस धूरक घराड़ी छलैक, अगल-बगल छलैक बदरा, बिन्देसर आ गोलियाक घर पूबमे आ पश्चिममे तेतरी आ टुनमा । सभक घर कतऽ निपत्ता भऽ गेलैक ! मुनेसरक बास बेश फैलगर बुझाइत छलैक ।

प्रणव सिबुआकेँ पुछलकै-"मुनेसरक घरक चारूकात घर सभ छलैक, ओ सभ कतऽ गेलैक सिबुआ ?"

सिबुआ झट आगू बढ़ि कहलकै-"मुनेसरकेँ शिकस्ती रहलैक, सभकेँ कहलकै आ लोक मानि गेलैक । वैह आगूमे मोड़ लग बसल है सभ ।"

प्रणव आगू देखलक । सामने स्कूलसँ पहिने जे चौराहा छलैक, जाहि ठामसँ पुरना डिस्ट्रिक्ट बोर्डक कच्ची सड़क जाइत छलैक, तकर दुनू कात जे डबरा खत्ता छलैक, सभकेँ भरिकऽ लोकसभ बसल छलैक, दस-पन्द्रहटा घर । इम्हरेसँ उपटिकऽ गेल छलैक सभ, सरकारी नाला-खत्ता भरि गेल छलैक । मुनेसराकेँ शिकस्ती होइत छलैक, सिबुआ कहने छलैक । सरकारी जमीन दफानऽमे कोनो असुविधा नहि भेलैक- इलाकाक एम.एल.ए. संग छलैक ।

गंगबा कहलकै-"मुदा खाली घरे बनौले है मुनेसर । पाँचो दिन रहै कहाँ है अइ घरमे ? ने बिजली हइ, ने पंखा । अबितो है तऽ राति कऽ दरभंगे चल जाइ है, ओही ठाम बड़का कोठीमे रहै है । मुदा आइ घरेमे है चलू ने उहें, हम सभ कहाँ बैठायब अहाँकेँ ?"

गंगबा बड़का भक्त छलैक मुनेसराक । प्रणवकेँ बूझल छलैक । मुदा रजिन्दरकेँ नहि सोहेलैक जेना ओकर प्रस्ताव-"से किएक बजै छैँ रे गंगबा ? हमरा सभक घरमे टेबुल कुर्सी नहि है मुदा बौआके बैठाबे लेल चट्टकुन्नी तऽ है । आइ बड़का गो हाकिम हो गेल छथि, मुदा हम सभ तऽ अही चट्टकुन्नी पर बैसोने छियनि सभदिन, बैठू बौआ !"

रजिन्दर अपन घरक आगूक चिक्कन माटिपर चट्टकुन्नी बिछा देलकै । प्रणव ओहीपर बैसि गेल । बड़का भीड़ लागि गेलैक । स्त्रिगण-पुरुष-नेना क्यो नहि रहलैक टोलमे । टांग घिसयबैत सभक आगू बढ़ि जलेसरी बुढ़िया बजलैक— "हाकिम बौआ अयली है तऽ पहिने अइ बुढ़ियाक निसाफ करू । सभ दिन कमाकऽ खुऔली घर भरिके आ आइ लोथ अन्हरी हो गेली तऽ बेटाकेँ दू गो रोटी नहि जुड़ै

हइ मड़ुओके । बुढ़िया के दाँत नहि हइ मुदा गूड़ियोकऽ तऽ खा लेत । पानी संगे घोंटि लेत । घरभरि खा लै है, दूगो रोटीके कोन कथा, बासियो-तिबासियो एक्को टुकड़ियो ने दै है । आ बड़का नेता है मुनेसरा, देवीजीक संग हवागाड़ीमे फुर्र से उड़ि जाइ है, बुढ़ियाके मुफ्त राशनवला कार्ड नहि दै है । दै है जवान सकलीके । आब तऽ अहींके निसाफ करऽ पड़त हाकिम बौआ !"

भीड़मे ठाढ़ सकली मुँह बिचका लेलकै, प्रणव स्पष्ट देखलकै । जलेसरीक दुनू बेटाक आँखि रँगि गेलैक । दुनू एक्के संग बजलैक— "चुप्प रह तों...।

मुदा जलेसरी नहि मानलकै-"चुप नहि रहबौक हम । लोक सभमे लाज होइ हउ । आ अइमे नहि लाज होइ हउ जे बुढ़िया अन्हरी माय टिनही बाटी लेले सभऽसे भीख मँगै हउ ? से नै देखै हउ टोला आ गामक लोक ?"

दुनू बेटा सिटपिटाकऽ चुप्प भऽ गेलैक । जलेसरी पयर घिसियबैत प्रणव दिस अयलैक-"खाली बोलियेसँ चिन्हब बौआ ! ठीकसे चेहरो ने सुझै है ।"

प्रणव कहलकै— "की कहियौ हम ? एतेक लोक छौक टोलमे— बड़का नामी-नामी मुँहगर लोक सभ । ओकरा सभकेँ बाजि नहि होइ छैक ?"

तखने भीड़केँ ठेलैत मुनेसर पासवान आगू अयलैक-"वाह ! अहाँ तऽ हाकिमे नहि, बड़का नेतो छी । हमरे टोलमे, हमरे खिलाफ बड़का सभा जुटा लेलहुँ एक्के दिनमे !"

"तोहर खिलाफ ?" प्रणव कने आश्चर्यसँ कहलकै-"तोहर खिलाफ किएक सभा हेतौक, हम तऽ तोरे घर दिस अबैत रही । रजिन्दर नहि मानलक, बैसा लेलक । जलेसरी तऽ अपन बेटाक गप्प करैत छल ।"

-"आ अहाँ टोलक नामी आ मुँहगर लोकक गप्प करैत छलिऐक । के अछि नामी आ मुँहगर लोक दोसर टोलमे ?"

प्रणवक बजबासँ पहिने जलेसरी बाजि उठलैक-"सत्ते कहै है हाकिम बौआ ई मुनेसरा । आब एकरा छोड़िकऽ टोलमे की, सौसे गाममे दोसर नामी लोक नहि है । बड़ नाम कयने है ई मुनेसरा । हमरा सभके विसबास नहि हो तऽ एकर घरबालिएके पूछि लियौक ।"

-"चुप्प रह जलेसरी काकी, नहि तऽ बेजाय बात भऽ जेतौक । आइ-कालिह तों बड़ बड़बड़ करऽ लागल छैं । हमरा सभ खबरि रहैत है । मुदा तोरासँ हम बादमे बूझि लेब । अखन हाकिम टोलमे आयल छथि, हुनकर खातिर करऽ दे ।"

स्वरक व्यंग्य प्रणवसँ छिपल नहि रहलैक । ओकरो स्वर कनेक तीव्र भेलैक–"हम मुनेसरासँ भेंट करऽ आयल रही जे हमर संगी छल । एम.एल.ए. मुनेसर पासवानसँ हमरा किछु लेना-देना नहि अछि । कोनो नेताक नेतागिरीसँ हमर कोनो सरोकार नहि रहैत अछि, अइ जिलामे सभकें बूझल छैक ।"

मुनेसर पासवान हँसलैक–"तऽ अहाँकें जानिकऽ खुशी हैत जे बात आब जिले धरि नहि, राजधानी धरि पहुँचि गेल अछि । मुख्यमन्त्री आबि रहल छथि अगिला सप्ताह । हुनका पता छनि जे जिलाक सभ टा काज-धाज छोड़ि छुट्टी लऽ अहाँ कोन जरूरी काजमे लागल छी गाममे ।"

प्रणव कठोरतासँ कहलकै–"सूचना लेल धन्यवाद । मुदा एक टा सूचना आरो पहुँचबा दऽ सकैत छियनि अहाँ । छुट्टी लेलाक बाद हम अपन समय कोना बितबैत छी, तकर खबरि मुख्यमन्त्रीसँ सम्बन्ध नहि रखैत अछि । हुनका जनलासँ कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि हमरा लेल ।"

मुनेसर ओहिना हँसैत कहलकै–"से तऽ हुनका अयलेपर बुझायत । मुदा अखन तामस छोड़ू । एतेक दूर चलिकऽ आयल छी तऽ गरीबक कुटियोकें पवित्र करू ।"

प्रणव उठैत कहलकै– "निमन्त्रण लेल धन्यवाद । मुदा आब हम चलैत छी । ओहिना सभकें देखऽ आबि गेल रही ।"

प्रणव जहिना घुरिकऽ विदा होबऽ लागल, जलेसरी बुढ़िया लोथ पयर घिसियबैत बाट छेकि लेलकै–"हमर निसाफ हाकिम बौआ ?"

प्रणव थकमका गेल । फेर आस्तेसँ कहलकै–"हमरा क्षमा कर । लगैत अछि जेना अइ गाममे हम किछु कऽ नहि सकब । करबाक बड़ इच्छा छल । मुदा गामक पैघ-पैघ लोक बाट छेकने ठाढ़ छथि । तोहर न्याय आब भगवानेक हाथ छनि ।"

पाकिटमे जे किछु टाका छलैक से बाकुटसँ निकालि बुढ़ियाक हाथमे दैत फेर कहलकै–"तोहर न्याय भगवानक हाथ देलियौ, मुदा तोहर हाथमे अपन न्यायक कमाइ ई किछु टाका दैत छियौक, नै नहि कहि दिहैं ।"

जलेसरी आ टोल भरिक लोककें अवाक् छोड़ि प्रणव शीघ्रतासँ गाम दिस घुरल । मोन ओइसँ बेशी उद्विग्न छलैक, जतेक हवेलीसँ शीलाकें छोड़िकऽ जाइत काल छलैक । मुनेसरा अइ सीमाधरि पहुँचि गेलैक, बात एतेक दूरि धरि पहुँचा देलकै !

चिन्तित शीला दरबज्जेपर ठाढ़ छलैक । देखतहि दौड़ल अयलैक–"कहाँ

चल गेल रही ? डरे कोंढ़ धड़-धड़ करैत छल । नहि जानि की सब बजा गेल हमरा झोंकमे ।"

प्रणवकें जाय पड़लैक ।

मुदा प्रणवक जयबासँ पहिने अमित आबि गेलैक गाममे । भोरे-भोर कुली सूटकेस लेने ठाढ़ छलैक । संगमे प्रसन्न आ चंचल अमित । प्रणवक कलेजा नहि जानि किएक आशंकासँ काँपि उठलैक ।

पयर छुबैत अमितकें उठबैत प्रश्न कयलकै–"हम तऽ विदे भऽ रहल छलहुँ आइ । तों किएक अयलें ?"

अमित ओहिना प्रसन्नतापूर्वक चारूकात निहारैत कहलकै–"बाबी नहि माननलि । एतेक दिन लागि गेल तऽ एकदम चिन्तित भऽ उठलीह । हम कतबो कहलियनि मुदा नहि माननलि । गाड़ीपर चढ़ाइयेकऽ चैन भेलीह ।"

प्रणव किछु नहि कहि सकलैक आगू । अमित एकदम उत्साहसँ बजलैक–"मुदा नीके कयलनि बाबी । नहि पठबितथि तऽ गाम कोना देखितहुँ ? ओ धार आ मन्दिर, अहाँक स्कूल, सभटा चिन्हारे लागल हमरा । कतेक बेर बाबी कहने हेतीह– कोना अइ गाममे अहाँ रहैत रही, पढ़ैत रही ।"

प्रणव बात कटैत कहलकै– "एक टा आर चिन्हार लोक छथुन अइ गाममे । तों जहिया पाँचे-छौ वर्षक रहैं तऽ देखने रहुन । चल, देखियनि तोरा चिन्हैत छथुन की नहि ?"

प्रणव जल्दीसँ जल्दी अमितकें भीतर हवेली लऽ जाय चाहैत छल । ई गाम ओकरा लेल शुभ नहि छैक । पहिल बेर जखन गाममे ओकरा देबय आयल रहैक ओकर नाना लग, तऽ बड़का काण्ड भेल रहैक । नाना आइ नहि छथिन, मुदा लोककें घटना बिसरल नहि हेतैक । कहीं क्यो चिन्हिये जाइ ?"

प्रणव ओकरा लऽ जल्दीसँ भीतर हवेलीमे गेल । शीला ओकर संग एकटा अनचिन्हार नवयुवककें देखि अकचका गेलैक आ घुरिकऽ भीतर अपन कोठलीमे जाय लगलैक । प्रणव हँसैत कहलकै–"एना पड़ाइ किएक छी ? लग अबियौ, गोड़ लागऽ दियौक । अमितकें नहि चिन्हलिऐ ?"

नाम सुनिते शीला दौड़िकऽ लग अयलैक । अमितकेँ प्रणव कहलकै–"अपन शीला मौसीकेँ गोढ़ लगहुन अमित ! नहि चिन्हलहुन ?"

अमित गोड़ लागिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक । किछु बजलैक नहि । मुदा शीला जेना ओकरा देखितहि बताहि भऽ गेलैक । प्रणवोकेँ बिसरि गेलैक आ अमितकेँ संग लऽ ओकरेमे व्यस्त भऽ गेलैक । प्रणव एकसर दरबज्जापर बैसल रहल । बड़ी कालक बाद अमित बाहर अयलैक, दुपहरिया बीति गेल छलैक । प्रणवक लग आबि कहलकै–"कनेक गाम घुमने अबै छी पप्पा ! मौसी छोड़िते नहि छलीह । बड़ मस्किलसँ दू घण्टा लेल छोड़ने छथि ।"

प्रणवकेँ चिन्ता भेलैक । अमितकेँ एकसर गाममे नहि घुमबाक चाहिऐक । नहि जानि के की कहि दैक ? मुदा रोकबाक कोनो उपाय नहि छलैक । बात दोसर तरहेँ कहलकै–"एकसर भुतिया जयबैं, ड्राइवरकेँ संग कऽ ले । ओ सबतरि घूमि आयल अछि, तोरा ठीकसँ देखा देतौक ।"

अमित कूदिकऽ सड़क दिस जाइत बजलैक–"आब हम बच्चा नहि छी पप्पा जे ड्राइवर आ चपरासीक आंगुर पकड़ि गाम घूमब । हम अपने सभटा देखि लेब ।"

अमित चल गेलैक आ प्रणवक चिन्ता बढ़ि गेलैक । ओ जखन भीतर गेल तऽ शीलाकेँ कहलकै–'हमरालोकनि भोरे विदा भऽ जायब ।"

शीला जेना मर्माहत भऽ गेलैक–"आइ-काल्हि बड़ निर्मम भऽ गेल छी अहाँ । हमरे बात हमरेपर बजारि बदला लेबाक कोनो अवसर अहाँ छोड़ऽ नहि चाहैत छी । काल्हि हम कहलहुँ आ आइ अहाँ तैयार । अमितकेँ दुइयो दिन रहऽ नहि देबैक हमरा लग ?"

"नहि शीला ! ओकरा अहाँ लग एक्को दिन छोड़ब ठीक नहि । की परिचय देबैक लोककेँ ? बच्चा नहि अछि अमित । कहीं सभटा कहि नहि दैक क्यो, आ एतेक दिनुका मेहनति आ सतर्कता बेकार चल जाय । ओकरे लेल जाय पड़त शीला, अहाँपर कोनो तामस नहि । हम निर्मम नहि भेल छी । बेर-बेर हमरापर निर्ममताक आरोप लगा कतहु अन्याय कऽ रहल छी हमरा संग अहाँ ।"

शीला झट दऽ बात कटलकै–"अज्ञानी आ अविवेकी सभदिन छी हम, क्षमा कऽ दियऽ । मुदा अमितकेँ भोरे नहि लऽ जइयौक । हम सदिखन संग रहबै, एक्को क्षण नहि छोड़बैक ।"

प्रणव असहमत होइत कहलकै–"से पार नहि लागत अहाँ बुते । ओ गाम

देखबाक लोभमे आयल अछि । कहिओ गाममे रहल नहि अछि । गामक जिनगीक बारेमे खाली हमरासँ आ मामीसँ सुनने अछि । अइ बेर ओ सभक अनुभव करऽ चाहैत अछि । अहाँक बन्हेज ओ नहि मानत आ स्वतंत्रता ओकरा लेल घातक हेतैक ।"

शीला चुप भऽ गेलैक । किछु काल बाद बजलैक– ''तऽ अहाँ निर्णय कऽ चुकल छी । ओकरा नहि रहऽ देबैक हमरा लग किछुओ दिन । मुदा कमसँ कम चौबीस घंटाक समय तऽ दियऽ । जे किछु छैक ओकर, ओ सभ तऽ ओकर नाम कऽ दिऐक, काल्हिए रजिस्ट्री भऽ जाय ।''

प्रणव टोकलकै–"एहन अन्याय नहि करियौक ओकरा संग । एक दिन ओकरा घर चाहैत छलैक, ककरो नाम चाहैत छलैक परिचयक लेल । हमहीं लऽकऽ आयल रहिऐक । मुदा ओ परिचय नहि बनि सकलैक ओकर । आइ ओकरा प्रयोजन नहि छैक । सभ ठाम ओकर परिचय छैक प्रणव चौधरीक बेटा अमित चौधरी । अइसँ बेशी परिचयक ओकरा काज नहि छैक । धन-सम्पत्ति नहि छैक, मुदा शिक्षा भेटि रहल छैक । प्रतिभावान अछि, अपन स्थान बना लेत । अइ धन-सम्पत्तिक संग ओकर नाम जोड़ि ओकर भविष्य अन्धकारमय नहि करियौक । ओ नेना नहि अछि । सभटा लिखबैक तऽ प्रश्न करत–"सभटा हमरे नाम किएक ?" ओकर मोनमे पहिनेसँ शंका छैक । एतेक दिन धरि ओकर बाप काज-धाज छोड़िकऽ कहियो रहल नहि छैक । अइ बेर केहन बात भेलैक ? मामी बुझौने हेथिन । ओकरा बूझल छलैक जे हमर मातृक अछि एतऽ, पढ़ल छी हम अहाँक संग । ओकर माय अहाँक छोट बहिन जकाँ मानैत छल, बस्स । अइसँ आगू नहि । अइसँ आगू किछुओ कहब ओकरा लेल घातक हेतैक ।"

शीला नहि मानलकै–"एना डेराउ नहि हमरा । किछुओ नहि बुझतैक अमित । एकटा अभागलि मौसी छैक–ने सधवा, ने विधवा, निस्स्तान । ओ अपन सभ किछु ओकर नाम करतैक, ताहिमे सन्देहक कोन गुंजाइश छैक ? ई बोझ बड़का टा अछि हमरा छातीपर । अहाँ लोकनि सभ चल जायब । एकसर गाममे ई बोझ आन लऽ लेत हमर । सभ-किछु अमितक नाम कऽ देबैक तऽ हल्लुक भऽ जायब ।"

प्रणव तैयो अड़ल रहलैक–"जिद नहि करू शीला ! अहाँक आ अमितक नीकक लेल कहैत छी हम । फेर कखनो, अगुताइ कोन छैक ?"

"अगुताइ तऽ कोनो नहि– सभ-किछु ओकरे छैके । मुदा जिनगीक कोन भरोस ? कहीं अनचोकेमे आँखि मुना गेल तऽ क्यो देतैक ओकर हिस्सा ? अहूँकेँ लग नहि आबऽ देत । सम्बन्धक नामपर सभ नोचि-खसोटि कऽ खा लेत ।"

प्रणवो किछु भावुक भऽ गेल–"सदिखन अनके चिन्ता रहैत अछि अहाँकेँ । अनचोकेमे आँखि मूनि लेब आ सभ वस्तुसँ छुट्टी ! सभटा भोगऽ लेल छोड़ि देब हमरा लोकनिकेँ !"

शीला सेहो किछु कहऽ चाहैत छलैक । तावत अमित घुरि अयलैक । झलफल अन्हार भऽ गेल छलैक । मुदा शीला गप्पक सोहमे लालटेनो नहि बारने छल । अमित अबिते टोकलकै— "घर एहिना अन्हारे रहत मौसी !"

शीला झट लालटेन लेसलक । अमित ओकरे संग बैसि गेलैक भनसाघरमे । प्रणव दलानपर चल गेल । अमित बड़ प्रसन्न लागि रहल छलैक आ शीलाकेँ एक-एक टा सुनलाहा-देखलाहा बातक बारेमे पूछि लेबऽ चाहैत छलैक, जेना एक्के दिनमे गामक सभ गप्प बूझि कऽ रहतैक । शीलो प्रसन्न मोने ओकर जिज्ञासाकेँ शान्त करैत रहलैक ।

मुदा भरि राति प्रणवक मोन अशान्त रहलैक । भोरे जखन प्रणव चलबाक प्रस्ताव रखलकै तऽ अमित राजी नहि भेलैक–"अहाँ जाउ पप्पा ! गाड़ी लेने जाउ, ड्राइवरोकेँ । हम ट्रेनेसँ चल आयब । दू-चारि दिन देखऽ दियऽ । नीक लगैत अछि । छुट्टिये अछि, दरभंगो जाकऽ की करब एखन ?"

प्रणव बड़का असमंजसमे पड़ि गेल । ओकरा लेल आर बेसी रुकब असंभव छलैक । एतेक दिनक छुट्टीपर लोक चकित हेतैक । आइ धरि कहियो कोनो छुट्टी नहि लेने छल ओ । कतेको बेर मामी कहलकै, "चल, कोनो तीर्थसँ घुरि आबी ।" मुदा प्रणव मामीकेँ ककरो संग पठाकऽ अपने काजक बहाने रहि जाइत छल । आश्चर्य हैब स्वाभाविके छलैक ।

मुदा प्रणव लोकक ओइ आश्चर्य लेल चिन्तित नहि छल । ओकर चिन्ता अमित लेल छलैक । ओकरा गाममे एकसर कोना छोड़ि दिऐक ? कोनो काण्ड ने भऽ जाइ ? आ जखन अमित अपन मोनसँ दू-चारि दिन गाममे रहऽ चाहैत छलैक तऽ ओकरा रोकबो ठीक नहि हेतैक ।

ओ निर्णय लेलक जे ओकरा एकसरे विदा भऽ जयबाक चाहिऐक । अमित पाछाँ आबि जयतैक । शीलोक मोन छैक । ओकर निर्णय सुनि गदगद होइत शीला बजलैक–"अहाँक एतेक रास दानक कोन रूपे शोध हैत से पता नहि । खाली एकतरफा लेने जाइत छी हम, देबऽ लेल तऽ किछु अछिये नहि ।"

प्रणवो किछु विह्वल होइत कहलकै– ''जे किछु अहाँ देलहुँ अछि, तकर बाद देबा लेल सत्ते किछु नहि बँचैत छैक । हमरा चाहबो नहि करी । बस्स, जाइत

काल एतबे कहब जे एहिना निसंकोच भऽ जखन आवश्यकता हो, स्मरण कऽ लेब, हम अबस्से आयब । क्यो रोकि नहि सकत हमरा ?"

प्रणव गामसँ विदा भऽ गेल । ओकर मोटर जखन गामसँ बहरेलैक तऽ घरे-घरसँ लोक बाहर दरबज्जापर ठाढ़ भऽ गेलैक आ आश्चर्यसँ ताकऽ लगलैक जेना विश्वासे नहि भऽ रहल होइ जे ओ जा रहल अछि । मुदा क्यो ओकरा विदा करबा लेल आगू नहि बढ़लैक । ओकर मोटर सरसराइत गामसँ बहराइत गेलैक ।

साते दिन बाद प्रणवकेँ एकटा चिठ्ठी भेटलैक शीलाक, पुजेगरीक मार्फत ।

"अहाँ मना कयने रही मुदा हम जिद धऽ लेलहुँ । अहाँ तऽ सभटा संभावनाकेँ स्पष्ट देखि लेने छलिऐक । हमर जिद नहि मानऽ चाहैत छल अहाँकेँ । अमितकेँ गाममे किएक छोड़लिऐक अहाँ ? बड़का काण्ड भऽ गेल ।

अमित प्रसन्न छल गाममे । सभ ठाम बौआइत फिरैत छल । हमहूँ प्रसन्न रही । मुदा एकदिन अमित एकटा विचित्र प्रश्न कऽ देलक–"अहाँ हमर मौसी कोना भेलहुँ ? मायक संगी छलिऐक तेँ ? मुदा असल संगी तऽ अहाँ पप्पाक छियनि, एक्के गामोक छी । तखन तऽ अहाँ पीसी भेलहुँ, मौसी कोना ?"

आशंकासँ हमर कोँढ़ धड़कल, मुदा हम हँसिए कऽ कहलिऐक–"तऽ बेश, पीसिये कहू हमरा । मौसी आ पीसीमे कोन अन्तर छैक ?"

ओइ दिन फेर दोसर प्रश्न नहि कयलक अमित । मुदा हमरा लागल जेना ओकर मोनमे किछु उमड़ि रहल छलैक । मोन भेल जे कहिऐक– तोँ एखने गामसँ चलि जो ।

मुदा होनी किछु आर छलैक । दोसर दिन अमित एकटा आर विचित्र प्रश्न लऽ पहुँचि गेल–"पप्पाक बिआह कतऽ भेल छलनि ?"

हमरा तामस भऽ गेल । डँटलिऐक–"तोँ तऽ आब सत्ते बड़ बुझनुक भेल जाइ छेँ अमित ! बापक विआहक इतिहास पूछै छहिक लोकसँ ।"

हमर तामस देखि ओ चल गेल । मुदा हम स्पष्ट देखलिऐक जे हमर उत्तरसँ ओकरा सन्तोष नहि भेलैक । मोनमे जेना किछु घुमड़ि रहल छलैक, जकरा हमरासँ नुका रहल छल ओ ।

प्राते भेने बिस्फोट भेल । लागल जेना दरबज्जापर गरजा-गरजी भऽ रहल छैक । एकटा स्वर अमितक बुझायल । हम दौड़िकऽ दरबज्जापर अयलहुँ । बहुत रास लोक दरबज्जापर जमा भेल छल । रूदल चौधरी, अहाँक संगी मुरली आ

मुनेसरक संग बहुत रास लोक छल । हमरा देखितहि अमित हमरा दिस पलटल–"हम ककर बेटा छी मौसी ?"

ओकर अइ आकस्मिक प्रश्नपर हम अकबका गेलहुँ । तुरत बोल नहि खूजल । एम.एल.ए. मुनेसर पासवान आगू बढ़ैत बाजल–"हिनकासँ की पुछैत छहुन ? सौंसे गामसँ पूछि ले जे तों ककर बेटा छैं ?"

आब हमर चेतना घुरल । कनेक दृढ़तापूर्वक कहलिऐक–"हिनका सभक बात नहि सुन अमित ! तोरा अपन बापक नाम नहि बूझल छौक जे लोक सभसँ पूछि रहल छहिक ?"

रूदल चौधरी जोरसँ हँसलाह–"बापक नाम हमरा-अहाँकेँ कोन कथा, एकर मायोकेँ नहि बूझल छलैक । मुदा एकर मायकेँ सभ चिन्हैत छैक अइ गाममे । रण्डी छलैक ओ ।"

अमित एक्के बेर छड़पिकऽ रूदल चौधरीक कण्ठ धऽ लेलकै आ बजारिकऽ छातीपर चढ़ि गेलैक । लोक सभ दौड़लैक आ घीचिकऽ ओकरा एक दिस ठोँठिआबऽ लगलैक । हम दौड़िकऽ ओकरा अपन दुनू हाथे पकड़ि लेलिऐक । कहीं लोक सभ मारि नहि बैसैक ओकरा ।

मुदा मारियो खाकऽ रूदल चौधरी ओहिना हँसैत ठाढ़ भऽ गेलाह–"तामस आ बहादुरी देखौलासँ माय-बापक इतिहास नहि बदलतौक बाउ ! पूछि ले अपन मौसिएसँ । एकरे तऽ सहोदर छलैक माला, तोहर माय । पुछहिक एकरेसँ जे ककरा संग गामसँ भागल छलैक तोहर माय ? कहाँ-कहाँ बौअयलैक ? कोन बजारमे बैसैत छलैक आ कोना सड़ि-सड़िकऽ मुइलैक ?"

हम अमितकेँ घिचैत कहलिऐक–"चल, अंगना चल ।"

ओ अकड़ल ठाढ़ रहल । आँखिमे लहास उठि रहल छलैक–"हिनकर बातक जबाब दियनु पहिने । कहू जे ई झूठ बजै छथि ।"

–"सभटा झूठ बजै छथि ई सभ । तो प्रणवक बेटा छहिक ।" हम साहस कऽ कहलिऐक ।

रूदल चौधरी बड़ निर्लज्ज हँसी हँसलाह–"आ प्रणव तोहर मौसा सेहो छौक । एकदिन तोहर ई मौसी तोहर बापक संग तोरा अइ गाम पहुँचाबऽ आयल रहौक । तहिया ओ तोहर बाप बनबाक नाटक नहि कयने रहौक । एही गाममे सभक सामने तोरा खाली मालाक बेटा कहने रहौक । मुदा तोहर नाना नहि रखलकौ तोरा ।

तखन ओ तोहर बाप बनि गेलौक आ ई तोहर मौसी, तोहर असली मौसाक घर छोड़ि तोहर बापक घर आबि गेलौक । पूछि ले अपन मौसिएसँ, हम झूठ कहैत छियौक ? ई नहि कहौक तऽ चल जो पटना कालेज, प्रोफेसर झासँ पूछि लियहुन जे के तोहर मौसा छौक ? किएक सभक अछैत एकटा क्यो आन आगि देलकनि तोहर नानाकेँ ? के छलनि ओ तोहर नानाक ?"

रूदल चौधरीक बात काटि मुनेसर बाजल–"हद करै छी अहूँ रूदल बाबू ! छलथिन कोना ने ? अही हवेलीमे तीन वर्ष रखने छलथिन ओकर मामीकेँ । मामीक वर मामा, आ कि नहि...

सभ खिलखिलाकऽ हँसल आ तामसे हमर देहमे आगि लेसि देलक–"चुप्प भऽ जो मुनेसरा ने तऽ बेजाय बात भऽ जेतौक । तोहर ई मजाल जे हमर दरबज्जापर आबि ई सभ बात बाजैं ? तीन पुस्त हवेलीमे बर्तन माजि गुजर कयलकौ, सेहो बिसरि गेलौक ? मुदा ई तऽ मोन हेतौक जे एखन जाहि देवीजीक संग लऽ घुमैत छैं, से सधवा छथि, स्वामी गाम छोड़ि पड़ैलथिन से आइ धरि पता नहि छनि । मुदा बेटा छनि, बेटी-जमाय छनि । आ अहाँ रूदल काका ! अहाँकेँ कक्का कहबो मे लाज होइत अछि । अहाँकेँ अइ नीच मुनेसराक संग मिलिकऽ अपन स्वर्गीय भाइ आ भतीजीपर लांछन लगबैत मिसियो भरि लाज नहि भेल ? निर्लज्ज तऽ अहाँ पुरान छी । से नहि रहितहुँ तऽ अपने भतीजीकेँ, अइ अमितक मायकेँ, अहाँ बजारमे बेचि अबितिऐक ? मुदा आइ नीचताक पराकाष्ठा कऽ देल अहाँ सभ । सभ मिलि एकटा निष्पाप आ निष्कलंक नेनाक मोनमे जहर घोरि रहल छिऐक । निकलू अइ दरबज्जासँ अहाँ सभ क्यो, नै तऽ जन-बनिहारसँ सभहक टाँग तोड़बा देब । हमरा डर नहि अछि आब । जकर डर छल से आइ अहाँ सभ कऽ चुकलौँ । आब हमर क्रोध देखब अहाँ सभ । बाप बहुत छोड़ि गेल छथि हमरा लेल । क्यो आगाँ-पाछाँ खयवला नहि अछि हमरा । अहाँ सभक घर-घराड़ी नीलाम नहि करा दी आ अइ मुनेसराक नेतागिरी नहि घोसाड़ि दिऐक तऽ हम रण्डी, हमर सात खानदान रण्डी ।"

हमर रूप देखि सभ चुपचाप सहटि गेल । मुदा अमित ओहिना ठाढ़ छल । लग आबि कहलिऐक— "आँगन चल अमित !"

"नहि'' हमर स्पर्शसँ जेना दूर हँटैत बाजल अमित । आ एकदिस पड़ायल चल गेल । दू दिन बितल, आइ तेसर दिन अछि, घुरिकऽ नहि आयल । अन्देसासँ मोन बताह भेल अछि ।

अमित पहुँचल की नहि ? पुजेगरी चिट्ठी लऽ जा रहल छथि । हमरा लेल

चिन्ता नहि करब । आब हमरामे ओ बल आबि गेल अछि जे एकसरे अइ गाममे रहि सकी, सभहक बदला लऽ सकी । सहैत ऊबि गेल छी हम । गाममे जे तबाही हेतैक, से लोक देखतैक ।

मुदा चिन्ता अमितक अछि । सभटा सुनि-बूझि स्थिर रहबाक वयस नहि भेल छैक । कतहु टूटिकऽ छिड़िआ ने जाय । अहाँमे असीम धैर्य आ सामर्थ्य अछि । ओकरा समेटि कऽ ओकर रक्षा करियौक । ओकर आर कोनो परिचय नहि छैक, ओ अहींक बेटा अछि ।"

चिट्ठी पढ़ि प्रणव जेना सुन्न भऽ गेल । बड़ी कालधरि चिट्ठी लेने ठाढ़ रहि गेल । मामी लग आबि पुछलथिन-"की भेलौ ? अमित कहिया आओत ?"

प्रणव चिट्ठी हुनका हाथमे दऽ देलकनि । मामी पढ़ैत-पढ़ैत ओही ठाम ओंघरा गेलथिन । भरिसक बेहोश भऽ गेलथिन । मुदा प्रणवक ध्यान ओम्हर नहि छलैक । ओकर चिन्ता अमितपर छलैक । तीन दिन गाम छोड़ना भऽ गेलैक, किम्हर गेलैक ?

फुर्तीसँ बाहर निकलैत प्रणव कहलकै— "कने मामीकेँ देखबनि पुजेगरी ! हम सभठाम सूचना दैत छिऐक, शहरमे हैत तऽ अबस्से भेटि जायत । हमरा आबऽ दियऽ, तखन जायब अहाँ ।"

मुदा श्रीधर पुजेगरी बेशी दिन नहि रुकि सकलैक । सभ दिन भोरे कहैक-"आइ हमरा आब जाय दियऽ बौआ ! शीला दाइ एकसरि बेहाल हेतीह । अमितक चिन्ता आ दुश्मन सौंसे गाम ।"

मुदा प्रणव रोकि लैक-"नहि पुजेगरी ! आइ भरि रुकि जाउ । बिना अमितक समाचार लेने जायब तऽ ओकर हालत आर खराब भऽ जयतैक ।"

मुदा दिन-राति तक्का-हेरी करैत प्रणवक अप्पन हालति खराब भऽ गेलैक । अमितक कोनो पता नहि छलैक । प्रणवक आशंका बढ़ैत गेलैक । शहर ओहिना अशान्त छलैक- हड़ताल तोड़-फोड़ आ अनशन । स्कूल-कालेज बन्द । प्रशासनक लेल चिन्ता आ ताहूसँ ऊपर अमितक लेल । नहि जानि कोन ठाम छैक ? कहीं कोनो उपद्रवकारी वा असामाजिक तत्त्वक चांगुरमे ने चल गेल होइ ! ओकर मानसिक स्थिति ठीक नहि छैक । एखन ओ किछुओ कऽ सकैत अछि ।

एम्हर ओकर नाम पटना धरि पहुँचल छलैक । आन्दोलनकेँ कुचलबाक ओकर प्रयासकेँ कमजोर आ अर्थपूर्ण घोषित कयल जा रहल छलैक । आन्दोलन समर्थकसँ ओकर गुप्त सम्बन्ध आ आन्दोलनक ओकर समर्थनक खबरि सेहो सभ दिन पटना पहुँचि रहल छलैक । ओकर बदलीक खबरि सभ दिन कार्यालयमे पसरैत छलैक । मुनेसर पासवान एम.एल.ए. सक्रिय छलैक ।

ओइ दिन डाकबंगलामे बड़का काण्ड भऽ गेलैक । एकटा मंत्री महोदय तावमे आबि गेलथिन । अमितक चिन्ता आ ओकर तक्काहेरी, ओ हुनकासँ भेंट नहि कऽ सकलनि । मंत्री महोदयकेँ ई अपमान लगलनि । भेंट भेलापर अनेरो नुक्ताचीनी करऽ लगलथिन जिलाक प्रशासनक । प्रणव किछु काल चुप्प रहल, फेर नहि रहल गेलैक । किछु जबाव देलकनि कि मंत्रीजी छड़पलाह-"ठीके कहैत अछि लोक सभ ? एतेक महत्त्वपूर्ण जिलाक प्रशासन अहाँक हाथमे छोड़ब घातक अछि ।"

प्रणवोकेँ क्रोध आबि गेलैक । कहलकनि-"घातक आ नुकसानदेह अहाँ सभक लेल हैत । हमरा सभकेँ की अछि ? ई जिला नहि तऽ दोसर जिला, ओहो जिला नहि तऽ आने ठाम, सेक्रेटरियटमे । चिन्ता अपने लोकनिकेँ करबाक चाही । आइ सत्तारूढ़, काल्हि किछु नहि ।"

मंत्रीजीकेँ क्रोधसँ फुफकारैत छोड़ि ओ चल आयल छल । बादमे अफसोचो भेलैक । अखन ओहिना मन:स्थिति ठीक नहि छलैक-ऊपरसँ ई दोसर चिन्ता । मंत्रीजी चुप्प किन्नहु नहि बैसथिन । अगिला केबिनेट मीटिंगमे ओकर बदली निश्चित छलैक ।

मुदा अगिला मीटिंग जहिया हेतैक, देखल जयतैक । एखन तऽ पुजेगरी गाम घुरबा लेल अगुतायल बैसल छलथिन आ गाममे शीला अन्देसासँ अधमरू भेल हेतैक । अमितक कोनो पता नहि छलैक ।

आ मामियोकेँ जेना दीन-दुनियाँक कोनो पता नहि छलनि । ओइ दिन शीलाक पत्र पढ़ि जे बेहोश भेलीह से बेहोशे छलीह । बीचमे आँखि खुजैत छलनि मुदा जेना ककरो चिन्हबे नहि करैत छलथिन । गुमसुम पड़ल रहैत छलीह । उठिकऽ क्रिया-कर्म करैत छलीह, नाममात्र लेल किछु आहार पेटमे जाइत छलनि आ फेर ओहिना गुमसुम पड़ल रहैत छलीह । आँखिक टकटकी लागल जेना शून्यमे किछु ताकि रहल होथि !

प्रणव अमितकेँ ताकि-ताकिकऽ हारि गेल । कतहु कोनो सूत्र नहि भेटलैक । आ तखन ओ पुजेगरीकेँ नहि रोकि सकलैक । शीलाक नाम एकटा चिट्ठी देलकै-

"अमित एतऽ नहि आयल अछि । शहरोमे कतहु कोनो खबरि नहि लागल । मुदा अहाँ चिन्ता नहि करब । ओ कतहु नहि जायत । ओ हमर बेटा अछि । लोकक कहलापर ओ हमरा छोड़िकऽ कतहु नहि जायत । आइ ने काल्हि, अबस्से हमरा लग घुरत ।

हमरा बेशी चिन्ता अहाँक लेल अछि । गामक अगुआ लोकनिकेँ ललकारि देने छियनि अहाँ । अपना भरि उपद्रव करऽसँ बाज नहि औताह ओ लोकनि । हमर भगवानसँ प्रार्थना अछि जे अहाँ धैर्य आ साहसपूर्वक ओइ सभक मोकाबिला कऽ सकी ।

बस्स, एतबे धरि । कोनो प्रतिहिंसा व प्रत्याक्रमणक आगिकेँ नहि लहकऽ देबैक बेशी । सभकेँ जरैबाक चेष्टामे अन्ततः फेर अपने फोका पड़त, अपने जरऽ पड़त, तेँ लिखैत छी । हमर ई बात मानि लेब । गाममे रहब, गामसँ लड़ब नहि ।

कायर नहि छी हम । अहाँकेँ पलायनक उपदेश नहि दऽ रहल छी । खाली एकटा यथार्थक संकेत कऽ रहल छी । लड़ल समाजसँ पहिनहु रही अहाँ । स्वामीकेँ छोड़ि स्वतंत्र भऽ अप्पन पयरपर ठाढ़ होबऽ बहार भेल रही । की भेल ? शरीर आ आत्मा पर अगणित दाग लऽ घुरि अयलहुँ । फेर ओही लोकक बीच रहबाक अछि । संग रहबाक आह्वान हम पहिनो कयने रही, आइयो दोहरबैत छी । मुदा हमरा बूझल अछि जे से अहाँ नहि करब । हमरा महान घोषित कऽ अपनाकेँ दण्डित करऽ मे लागल छी । अपनाकेँ दण्ड देबाक अइ चेष्टामे हमरा कतेक दण्ड दऽ रहल छी अहाँ, से प्रायः अहाँ कहियो ने बूझि सकब ।

मुदा हम जतबा बूझि सकल छी, ताहिसँ डर लागि रहल अछि । अपन अपमान करऽबलाक फन थुरबाक लेल अहाँ किछुओ कऽ सकैत छी, हमरा बूझल अछि । मालो सैह कयने छल । अपन सुखक हनन करऽवलाकेँ दण्ड देबा लेल घरसँ बहरा गेल छल आ ओकर दण्ड अपने टा नहि भोगलक, आइ ओकर बेटो भोगि रहल छैक । अहाँ कोनो तेहन काज नहि करब । लोक बिसरि जाइत छैक सभ-किछु, इहो घटना बिसरि जयतैक । अहाँ गाममे चैनसँ रहि सकब ।

मुदा हमरा नहि बिसरब । एतबा मोन राखब जे हम छी । आवश्यकता हो, अबस्स सोर पाड़ब ।"

चिट्ठी लऽ पुजेगरी चल गेलथिन आ प्रणव व्यस्त भऽ गेल । पैघ छुट्टीक बाद आयल छल आ ऊपरसँ मानसिक तनाव । अपनाकेँ सम्हारैत फेरसँ लागि गेल काजमे । ओकरा विश्वास छलैक जे अमित अबस्स घुरतैक एक दिन । ओ ओकरा

छोड़िकऽ नहि रहि सकतैक, मामीक बिना ओकरा नहि रहि हेतैक । अखबारोमे सूचना वा विज्ञापन नहि देलकै । दस टा लोक बुझतैक, पचास तरहक बात पुछतैक । ओ चुपचाप अमितक प्रतीक्षा करऽ लागल ।

मुदा बेसी प्रतीक्षा नहि करऽ पड़लैक । एकदिन एक टा पत्र भेटलैक । अमितक हाथक अक्षर ओ चिन्हलकै आ प्रसन्नतासँ भरि गेल । मुदा चिट्ठी पढ़ैत-पढ़ैत मुँह म्लान होइत गेलैक—

"अहाँकेँ की लिखि कऽ सम्बोधन करू ? 'पप्पा' कहि एतेक दिन सम्बोधित करैत छलहुँ, अहीं सिखौने हैब 'पप्पा' कहब । एतेक पैघ झूठ एकटा छोट नेनाकेँ कोना सिखौलिऐक अहाँ ? अहाँ तऽ बड़का आदर्शवादी, आ सत्यक समर्थक छी । सभ दिन हमर आदर्श पुरुष छलहुँ अहाँ । अहीं सन बनबाक सभ दिन स्वप्न देखलहुँ हम । हर क्षण, प्रतिदिन प्रयत्नो करैत रहलहुँ । मुदा अहाँक से मूर्त्ति खण्डित भऽ गेल अछि, चूरचूर भऽ गेल अछि आ अहाँक ओइ भग्न मूर्त्तिक समक्ष ठाढ़ हैबाक हमरा साहस नहि अछि, तेँ नुकायल फिरि रहल छी, पड़ायल फिरि रहल छी ।

एकटा रण्डीक बेटा छी हम । पिता हमर के छल, ककरो जानल नहि छैक । हमर यैह परिचय अहाँ नेन्नेमे कहि दितहुँ हमरा, हम आर साहस, आर विश्वाससँ जीबि सकितहुँ । मुदा हमर असली परिचय बदलि, ओइपर एकटा नकली परिचय चढ़ा अहाँ हमर सभ-किछु छीनि गेलहुँ । हमर साहस, हमर आत्म-विश्वास आ अहाँक प्रति हमर अटूट आस्था आ आदर । यदि सत्य बात कहि अपन संग रखितहुँ अहाँ, तऽ अहुँक प्रति ओ आदर आर बढ़ि गेल रहैत । मुदा झूठपर झूठ । एकटा सत्यकेँ छिपयबाक लेल हजार झूठ । हमर अहाँक पप्पा कहब झूठ । अहाँक मामीकेँ हमर बाबी कहब झूठ । हुनका विश्वक सभसँ आदर्श नारी बूझब झूठ । हुनकर सादगी आ सरलताक प्रदर्शन झूठ । शीला मौसीक खिस्सा झूठ । अखन हम पटनामे छी । प्रोफेसर झासँ भेंट कयलियनि । अहाँ लोकनिक सभ खिस्सा कहलनि ओ । हमर माये रण्डी नहि छलि— हमर मौसियो...

मुदा माय आ मौसी लेल हमरा दुःख नहि अछि । हुनकालोकनिकेँ तऽ नहि जनैत छियनि । माय मोन नहि अछि आ मौसीकेँ मोन राखबाक इच्छा नहि अछि ।

मुदा अहाँ ! अहाँकेँ बिसरब हमरा लेल कठिन भऽ रहल अछि । किएक एतेक भारी अन्याय कयलहुँ हमरा संग ? अहाँक वास्तविक रूप एहन ? हमर सभटा स्वप्न, सभटा सामर्थ्य आ आदर्श अहाँक असली रूपकेँ देखि ध्वस्त भऽ गेल अछि । आब हम आदर्शहीन, विवेकहीन जन्तु छी । एकटा रण्डीक बेटा, एकटा

कामुक अत्याचारीक नाति जे पतिक श्राद्ध लेल मदति माँगऽ आयल स्त्रीक संग बलात्कार करैत अछि। विलक्षण वंशावली अछि हमर। नाना अत्याचारी मदान्ध कामुक, माय रण्डी आ मौसी एकटा अघोषित रण्डी। आ बाप, ओकर कोनो पता नहि...

आर अहाँ के ? बाप, मौसा, पालक ? के छी हमर ? अहाँ कहब 'पिता', पालक। गामक लोक कहैत अछि— मौसा। मुदा हम कहैत छी जे क्यो नहि छी हमर। हमर-अहाँक कोनो सम्बन्ध नहि रहि गेल। अहाँ हमर बापे नहि, हमर आदर्श रही। जखन ओ आदर्श मूर्त्तिए खण्डित भऽ गेल तऽ अहाँ क्यो नहि छी हमर...।"

प्रणव कानऽ लागल, नहि जानि कतेक वर्षक बाद। बहुत-किछु बीति गेलैक, जीवनक कतेक अनमोल वर्ष बीति गेलैक मुदा ओ कानल नहि छल। अपन बेटाक मुँहे, ओकर चिट्ठीमे अपना लेल लिखल गेल शब्द लेल दुखी नहि छल ओ। अइ लेल कानि नहि रहल छल जे अमित ओकरासँ सभटा सम्बन्ध तोड़ि लेने छलैक। ओकरा नोर तँ अमित लेल छलैक। टूटल आदर्श आ आहत मोन लेने ओ ठाम-ठाम बौअयतैक, शान्ति तकतैक। मुदा के देतैक शान्ति ओकरा ? ठाम-ठाम भटकि कोनो बाट लागि जयतैक। ओ नहि घुरतैक आ किछु नहि बनतैक। नहि घुरबाक दुख ओ सहि लेत, मुदा अमितक किछु नहि बनबाक दुःख ओकरा जीबऽ नहि देतैक। ओ तऽ ओकरा की-की ने बनबऽ चाहैत छलैक। जीवनमे ओ सभ-किछु जे अपने नहि भोगि सकल– ओकरा देबऽ चाहैत छलैक।

मुदा अमित ओकरा मौके नहि देलकै किछु कहबाक। ओ तऽ एकतरफे सुनि एतेक बात लिखि गेलैक। ओ ओकर किछु नहि छलैक, मुदा दस वर्ष धरि बेटा कहलकै ओकरा, ताहू नामपर तऽ एक बेर किछु कहबाक मौका दितैक ?

आ सरकार सेहो मौका नहि देलकै– ट्रान्सफरक आर्डर भेटि गेलैक। प्रणव एक तरहेँ प्रतीक्षेमे छल ट्रान्सफर आर्डरक। जयबाक तैयारीमे लागि गेल।

एक दिन मुनेसर फेर अयलैक देवीजीक संग। प्रणव आफिसेमे छल। मुनेसर भीतर आबि कुर्सीपर बैसि टांगपर टांग चढ़ा लेलकै। बगलवला कुर्सी पर मुसकिआइत देवीजी। प्रणव कोनो गप्प नहि कयलकै तऽ मुनेसर टोकलकै–"आर्डर तऽ भेटिये गेल डी.एम. साहेब। अपने जैब कहिया ?"

प्रणव बिन ओकरा दिस तकने कहि देलकै–"चोरा-नुकाकऽ तऽ जायब नहि, जहिया जायब सभ बुझबे करत। अहूँ बूझि लेब।"

"अरे, हमरा तऽ पहिनेसँ बूझल छल। अहीं बूझऽ लेल तैयार नहि भेलहुँ।"

प्रणव ओहिना रुच्छतासँ कहलकै– "अहाँ सन-सन लोकके दोबारा बुझबाक हमरा ने इच्छा होइत अछि, ने प्रयोजन। अहाँकेँ कोनो काज होअय तऽ कहू, अन्यथा एखन हम व्यस्त छी।"

मुनेसर पासवानक चेहरा लाल भऽ गेलनि आ आँखि रँगिकऽ बजलाह–"तऽ एखन धरि अहाँक टेढ़ी नहि गेल अछि। मुनेसर पासवानक परिचय अहाँकेँ अखनो धरि नहि भेटल अछि !"

प्रणव किछु आर रुच्छतासँ कहलकै–"मुनेसर पासवानसँ हमर पुरान परिचय छल। नव लोक छलाह मुनेसर पाससान एम.एल.ए., से हुनका हम ओही दिन चीन्हि गेलियनि जहिया पहिल दिन देवीजीक संग आयल छलाह। बाँकी परिचय गाम जाकऽ भेटि गेल। आब किछुओ जनबाक ने आवश्यकता रहि गेल अछि, ने इच्छा। अहाँ जा सकैत छी।"

तमतमायल मुनेसर पासवान ठाढ़ भऽ गेलाह— "बेश, जाइत छी। मुदा मोन राखि लियऽ, कतहु चैनसँ नहि रहऽ देब।"

"सेहो चेष्टा कऽ देखिए लेब। एकदम गलत आदमीसँ भीड़ि रहल छी अहाँ। अहाँ सन-सन लोकक लेल हमरा मोनमे ने स्नेह-सहानुभूति अछि, ने भय।"

मुनेसर पासवानक संग बाहर जाइत-जाइत देवीजी कनेक ठहरि गेलीह आ घुरिकऽ कहलथिन–"तोँ बड़ बदलि गेल छेँ प्रणव ! गाममे तोँ एहन नहि छलैं कहियो– एतेक कठोर आ रुच्छ।"

देवीजीक स्वर बदलल छलनि। ओ ओकरा फेरसँ नेनपनक सम्बोधनसँ किछु कहने छलथिन। प्रणवक मुद्रा सहज भऽ गेलैक आ ओ कहलकनि–"बदलल हम नहि छी मधु ! समय बदलि गेल छैक, लोक बदलि गेल अछि। ई मुनेसरा बदलि गेल अछि, हमरा धमकी दऽकऽ गेल अछि। एकदिन हमरा लेल जान दैत छल। मुदा तोँ बदल मधु ! लोक तोरा लेल काल्हियो जान देत छलौक, आइयो दैत छौक। मुदा कल्हुका बात आर छलैक, ओ तोहर विवशता छलौक। आइ तोँ समर्थ छैं। बेटा जवान छौक। किछु तेहन कर जे तोरो बेटा सभक बीच मूड़ी उठा चलि सकौ। अपना लेल नहि, ओकरा लेल सोच।"

मुदा देवीजीक किछु उत्तर देबाक पूर्व मुनेसर पासवान फेर भीतर आबि गेलाह– "ई ककर बातमे फँसि गेलहुँ ? ई अनकर बेटाकेँ मूड़ी उठाकऽ चलबाक उपदेश दैत छथिन। अपन बेटा किएक छोड़िकऽ चल गेलनि, से लोकके नहि कहि होइत छनि।"

—"अहाँ जाउ बाहर, हम अबैत छी" —देवीजीक स्वर अप्रत्याशित रूपे रुच्छ छलनि । मुनेसर पासवान अकचकाइत बाहर चल गेलाह ।

मधु एकदम आस्तेसँ कहलकै—"तोहर बात हमरा मोन रहत । यदि बदलनाइ हमरा पार नहियो लागत तैयो तोहर बात हमरा मोन रहत जे तोँ एकटा नीक बात कहने छलैं । ओना हम तोहर अपराधी छियौक । गाममे जे-जे काण्ड भेलैक तकर प्रचार-प्रसारमे हमरो हाथ छल ।"

"ओ बात बिसरि जो मधु ! खाली एतबा मोन रखिहें जे शीला गाममे एकसरि अछि । ओकर मदति करियहिक, ओ दुखी अछि । बस्स, आर सभटा बिसरि जैहें ।"

मधु शीघ्रतासँ बाहर चल गेलैक । प्रणवक छातीपरसँ एकटा भारी बोझ हँटि गेलैक । मधु अबस्से शीलाक मदति करतैक, शीला आब गाममे एकसरि नहि रहतैक। मुनेसर पासवान आ रूदल चौधरी आब ओकर किछु नहि बिगाड़ि सकतैक। ओ निश्चिन्त भऽ एतऽसँ जा सकत ।

मुदा प्रात भेने एकटा नव आघात लगलैक प्रणवकेँ । चलबाक तैयारी करैत काल मामी कहलथिन—"हमर सामान फराक बान्हि दे, हम काशी जायब ।"

"एना एकाएक ? कतेक दिन रहब ?" —प्रणव किछु आश्चर्यसँ पुछलकै।

"कतेक दिन नहि, आब बाँकी दिन बाबा विश्वनाथक शरणमे काटि लेबऽ दे । एकसरि एहि घरमे आब रहि नहि होइत अछि । पाँच बरखक रहैं तोँ तऽ हमर कोरामे देलकौ लोक । सतरहक भेलैँ तऽ गाम छोड़ि देलैं, हमरालोकनि नष्ट भऽ गेलहुँ । फेर तोँ दोबारा अयलैँ आ संग छलौ अमित । ओकरा संग गाम छोड़ैत काल लागल जे तोँ फेरसँ कोरामे घुरि आयल छैं । ओकरेमे लागि गेलहुँ । तोँ अपन काजमे व्यस्त रहैत छलैं आ हम ओकरेमे । आब ओ नहि अछि तऽ लगैत अछि जे कोनो काजे नहि अछि हमर अइ घरमे । हमरा आब जाय दे बाबाक शरणमे ।"

प्रणवक दुनू आँखि डबडबा गेल छलैक—"तऽ अन्तमे आब अहूँ हमरा छोड़ि रहल छी मामी ! एक-एक कऽ सभ छोड़ि देलक, तैयो टूटल नहि रही हम। मुदा आइ अहाँ चल जायब तऽ कोना ठाढ़ रहि सकब हम ?"

—रहबैं ठाढ़ तोँ, सगर्व ठाढ़ रहबैं । तोरा के हिला सकैत छौ ? मुदा हमरा माफ कऽ दे आब । जिनगीक गाड़ी बड़ झिकलहुँ एना । आब नहि झिकाइत अछि। अमित घुरि आबय ताहि लेल भगवानसँ प्रार्थनो करैत छी आ डरो होइत अछि जे घुरि

आओत तऽ कोन मुँह लऽकऽ ठाढ़ हैब ओकरा सोझाँ ? ई कलंकित मुँह...

"खबरदार मामी ! एहन बात फेर दोबारा नहि बाजब । हमर मामी कलंकित नहि छथि । यदि ओ कलंकित छथि तऽ दुनियाँमे किछुओ पवित्र नहि अछि, भगवानक नामो नहि ।"

"एना नहि बाजी प्रणव ! भगवानक संग मनुक्खक कोन मोकाबिला—सेहो हमरा सन पतित प्राणीक । हुनके शरणमे जाय दे, बाट नहि रोक हमर ।"

प्रणव बड़ दयनीय हँसी हँसल—"हमर जिनगीमे क्यो पूछिकऽ नहि आयल आ जयबाकाल जयबाक निर्णय लऽ सभ पुछैत अछि— "हम जाउ ? हमर स्वीकृति-अस्वीकृति सभदिन अर्थहीन रहल अछि अइ संदर्भमे । सभ अपन इच्छासँ आयल-गेल अछि । आइ अहूँ जाउ, हम एकसरो रहि लेब ।"

"तोँ एना करबैं तऽ हम जा नहि सकब । एतऽ वा तोरा संग कतहु आर आब रहब तँ सुन्न घर काटऽ दौड़त । अमितक प्रतीक्षा रहत आ ओकर घुरबाक डरो रहत । हमरा बचा ले प्रणव, जाय दे बाबा विश्वनाथक शरणमे ।"

आ ओही राति गाड़ीमे बैसा देलकनि मामीकेँ । संग जाय चाहैत छल प्रणव, मुदा मामी कहुना तैयार नहि भेलथिन—"एकसरे जाय दे । तो संग रहबेँ तऽ फेर मोन डोलि जायत । तोरे संग घुरि ने आबी कहीं ।"

मुदा जेना-जेना ट्रेन खुजबाक बेर नजदीक अबैत गेलैक, मामी विह्वल होइत गेलथिन । अन्तमे हिचुकि-हिचुकिऽ कानऽ लगलथिन । प्रणवो संग कनैत कहलकनि— "घुरि चलू मामी, एकसरि नहि रहि सकब अहाँ, हमरा बूझल अछि ।"

मुदा मामी ट्रेनसँ नहि उतरलथिन । खिड़की लग बैसल-बैसल कनैत रहलथिन । प्रणव कनैत लगमे ठाढ़ रहल । आ गाड़ी जखन खुजलैक तऽ पयर छूबा लेल खिड़कीसँ बढ़ल प्रणवक दुनू हाथकेँ अपन ठोरसँ छुआ छोड़ि देलथिन । जा धरि गाड़ी देखाइत रहलैक, प्रणव प्लेटफार्मपर ठाढ़ रहल । प्लेटफार्मपर अन्तमे वैह टा रहि गेल, आर कतहु क्यो नहि । ओकरा लगलैक जे ओकर जिनगियो ओही प्लेटफार्म जकाँ भऽ गेल छलैक । गाड़ी अबैत छलैक, भीड़-भड़क्का आ फेर सुन्न। ओकर जिनगीमे भीड़-भड़क्का कहियो नहि भेलैक । गनल-गूथल लोक, मुदा लगैत छलैक जेना जिनगी एकदम भरल-पूरल होइ । एक-एक कऽ सभ चल गेल छलैक, आ बाँकी बाटपर ओ एकसर अछि—नितान्त एकाकी ।

दोसरे दिन ओ अपन नव कार्यभार सम्हारऽ चल गेल ।

बदली-पर-बदली । सालमे दू-दू बेर आ अन्तमे प्रणव सचिवालयमे आबि गेल ।

एकदिन मुनेसरा आफिसमे आयल रहैक । प्रणव बेस औपचारिक ढंगसँ गप्प शुरू कयलकै । दूइये चारि टा इम्हर-ओम्हरक गप्प भेलैक कि मुनेसर पासवान एम.एल.ए.क धैर्य समाप्त भऽ गेलेक । कहलकै-"आबो सोचू, नहि तऽ एहिना एक ठामसँ दोसर ठाम फेंकाइत रहब, सचिवालयक कोनो बिना काजक विभागमे शंटिंगमे पड़ल रहब । हमर दोस्तीक हाथ बढ़ल अछि, एकबेर पकड़िकऽ देखू जे कोना चानी कटैत छैक ।"

प्रणव ओहिना औपचारिक रुच्छतासँ कहलकै-"सुझाव आ मैत्रीक निमंत्रण लेल धन्यवाद । मुदा जाइत-जाइत एकटा हमरो बात सुनने जाउ । चानी कटबा लेल गलत ठाम हाथ बढ़ा रहल छी अहाँ आ शंटिंग कयनाइ सेहो अहींलोकनिक काज अछि । हम तऽ जैह काल्हि छलहुँ, सैह आइयो छी आ काल्हियो रहब, चाहे जतऽ रही । कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि हमरा, जतबा जोर लगैबाबाक हो, लगाकऽ देखि लियऽ ।"

मुनेसर पासवान लोहछिकऽ चल गेलैक । ई मुनेसरा अनेरो पिण्ड धयने छलैक ओकर । अपन समय बर्बाद कऽ रहल छलैक । नेनपनसँ चिन्हैत छलैक प्रणवकेँ तैयो जेना अनचिन्हारे रहि गेलैक ।

ओना आब तऽ लगैत छलैक कखनो-कखनो जेना सभ अनचिन्हारे रहि गेलैक ओकरा । गनि-गूथिकऽ लोक छलैक ओकर जीवनमे आ सभ लग होइत-होइत दूर चल गेल छलैक । माला कहिओ बड़ लग नहिं छलैक जिनगीमे । जतबा दिन संग छलैक, ओकरासँ डरे होइत छलैक । मुदा एक दिन फेर ओकर जिनगीमे अयलैक आ अधिकारपूर्वक अपन नेनाक संरक्षण ओकरा सौंपि- बहुत दूर चल गेलैक, फेर कहिओ घूमिकऽ नहि औतैक । ओइ मालाकेँ कहियो चीन्हि नहि सकलैक ओ । शीला घूमिकऽ अयलैक । एक बेर ओकर जिनगीसँ निकलि पतिक घर छोड़िकऽ ओकर जिनगीमे फेर अयलैक । फेर एक दिन निष्ठुरतापूर्वक संग छोड़ि कतहु चल गेलैक । दस वर्ष धरि निपत्ता रहलैक । आ एक दिन फेर अधिकारपूर्वक

बजा लेलकै अपन जिनगीमे, तैयो अनचिन्हारे रहलैक शीला । आब आरो बेशी अनचिन्हार भेल जाइत छलैक ।

पहिल चिट्ठी पहिले बदलीक बाद भेटल रहैक-

-"अमित घुरल की नहि ? हमर हृदयमे सदिखन आगि धधकैत रहैत अछि । अहाँ कतबो उपदेश लिखि पठायब, ई ज्वाला शान्त नहि हैत । हमरे कारण अमित घर छोड़िकऽ गेल । अहाँ गाममे छोड़ऽ नहि चाहैत छलिऐक, हम जिद कयलहुँ । मुदा हमहूँ नहि छोड़बैक ककरो । ई रूदल चौधरी (कक्का कहैत ग्लानि होइत अछि तेँ नामेसँ सम्बोधित करैत छियनि आब), ई मुरली आ मुनेसरा ककरो नहि छोड़बैक हम । हमर सुख-शान्ति, माला दीदीक जिनगी, सभ नष्ट भऽ गेल छल, तैयो हम सभटा बिसरि गेल रही । बापक अपमान, हुनकर दसो वर्षक एकान्त-पीड़ा, सभकेँ बिसरि गेल रही हम । मुदा ई अपराध हम माफ नहि करबै ककरो । अमितक रूपमे सभ-किछु भेटि गेल छल । हमर माला दीदीक नष्ट जीवनक मूल्य, अपन निरर्थक कलंकित आ अपवाद बनल जिनगीक मूल्य आ जीवनमे अप्राप्त अहाँक प्रेमक मूर्तरूप— सभ टा अमितमे भेटि गेल छल हमरा । तकरा जे सभ छीनि लेलक तकर कोन हालति करबैक हम से लोक देखतैक ? अहाँ क्षमा करू हमरा, अहाँक ई बात नहि राखि सकब हम । ओकरा सभकेँ माफ नहि कऽ सकबै । भले अइ आगिमे अपनो जरि जाइ हम । मुदा हम ओकरा सभकेँ डाहिकऽ छोड़बैक । मोनसँ उठैत धधरा शान्त नहि हैत ता धरि ।"

प्रणव एक बेर फेर चिट्ठी लिखि बुझयबाक चेष्टा कयलकै । मुदा किछु दिन तक कोनो उत्तर नहि अयलैक । प्रणवक अन्देसा बढ़ैत गेलैक । अमितक कोनो पता नहि छलैक । सभटा संभव-सूत्रसँ तक्का-हेरी करबा चुकल प्रणव । मुदा ओकर कोनो पता नहि चललैक । पता भेटबो कोना करितैक ? हेरायल लोक ने ताकल जाइत छैक ? अमित हेरायल नहि छलैक । ओ तऽ बिगड़िकऽ घर छोड़ने छलैक, प्रणवक सामने नहि आबऽ चाहैत छलैक । ओकरा लग नहि रहऽ चाहैत छलैक ।

प्रणव लग कहाँ क्यो रहऽ चाहैत छलैक ? सभसँ पहिने गेलथिन मामा, सर्पदंश हुनका जीवन-यंत्रणासँ मुक्त कऽ देलकनि । पालि-पोसि कऽ पैघ करऽवाली मामी काशीमे बैसल छथिन, किन्नहु ओकरा लग नहि आबऽ चाहैत छथिन । पहिल बेर प्रणेव गेल छल काशी, छबे मासक बाद । बड़ नेहोरा कयलकनि मुदा मामी

अडिग रहलथिन । कनैत गेलथिन आ घुरबैत गेलथिन । जतेक बेर प्रणव गेल, घुरि-घुरि आयल ।

एकसर दिन कटैत गेलैक । कौखन लगैक जेना वैह अनेरो मोह पसारैत रहल अछि । ओ तऽ एकसरे रहबा ले' आयले अछि धरतीपर । पेटमे छल तऽ बाप बिदा भऽ गेलथिन । धरतीपर आयल तऽ माय बिदा भऽ गेलैक । पढ़ऽ कलकत्ता गेल तऽ मामा-मामी हेरा गेलथिन आ मामी घुरिकऽ अयबो कयलथिन तऽ फेर छोड़िकऽ चल गेलथिन । प्रणव एकसरे रहि गेल ।

मुदा एकसरे रहबाक छलैक तऽ किएक अयलैक घुरि-घुरिकऽ ओ सभ ओकर जिनगीमे ? किएक अयलैक माला ? किएक दऽ गेलैक अमितकेँ ? किएक अयलैक शीला ? किएक ओकर मोनक तहमे नुकायल बातकेँ देखार कऽ देलकै । जखन किछु लेबऽ चाहलक प्रणव, एकटा अयाचित देवत्व बीचमे ठाढ़ भऽ गेलैक आ अपन बात अपने संग लऽ ओ फेर एकसरे रहि गेल । जखन ललकारैत रहैक क्यो, ओ पड़ा जाइत छल । मधु कहैत छलैक– "हमरासँ डर होइत छौक, खा जेबौ ? चुमकी कहने रहैक ''अहाँ जबर्दस्तियो लऽ जायब तऽ हल्ला नहि करब हम ।" माला कहने छलैक– ''आ, छू कऽ देख ने ! हल्लो नहि करबौक हम ।" मुदा प्रणव पड़ा गेल छल । आ जखन ओ कहलकै शीलाकेँ जे हमरे लग रहू, तऽ पड़ा गेलैक शीला, दस वर्ष धरि पड़ायले रहलैक । दस वर्षपर घुरबो कयलैक तऽ मात्र फेर ओही बातक पुनरावृत्तिक लेल । कानिकऽ कहि देलकै- "हमरा तऽ सभटा अहींक अछि । आब बाँचले की अछि जे अहाँकेँ देब ? ई देह ? ई असर्ध आ अपवित्र देह ? एकरा तऽ अनेको राक्षस गीजि चुकल अछि, ई अहाँकेँ कोना देब हम ?"

ओ कहलकै— हमरा लग रहू आ शीला बुझलकै खाली देह । लग रहबाक अर्थ खाली देह । देहक संग तऽ ओ पतियो संगे छल, कहाँ भेल हुनकर ? देह तऽ आनो-आनो पौने छलैक । ओ तऽ शीलाकेँ बजौने छलैक अपना लग रहबा लेल, अपना संग रहबा लेल । मुदा शीला फेर नकारि गेलैक ।

आ नकारि गेलैक अमित । ओकरा पप्पा कहब, ओकरा पिता हैब, सभटा नकारि गेलैक । कहलकै सभटा झूठ आ पाप भरल प्रपंच छलैक । तखन सत्य की छलैक ? सत्य छलैक ओकर माला-पेटसँ जन्म लेब आ बाँकी सभ मिथ्या ? दस वर्ष धरि जे ओकर संग रहलैक अमित, ओकर स्नेहक छाहरि तर पैघ भेलैक आ शिक्षा लेलकैक, से सभ मिथ्या । कल्लू चौधरीक नाति हैब सत्य, मायाक पापक

सन्तान हैब सत्य आ प्रणवक बेटा हैब सत्य नहि ! मामीक हवेलीमे दू वर्ष बन्न रहब सत्य आ प्रणवकेँ आ अमितकेँ मनुक्ख बनायब सत्य नहि । बेसी बुझनुक भऽ गेल छलैक अमित आ नहि जानि आर कोन नव-नव सत्यक तलाशमे निपत्ता छलैक ।

प्रणवक चिन्ता बढ़ले जाइत छलैक । समयक संग शीलाक प्रतिशोधक ज्वाला शान्त हैबाक बदला भड़कले जा रहल छलैक । अमितक गायब भेलाक छौ मास बाद पत्र आयल छलैक—

'अमित आबो घुरल की नहि ? अहाँ ओकरा नीक जकाँ ताकि रहल छिऐक की नहि ? जा धरि ओ नहि भेटत हमर मोनक धधकैत आगि लोककेँ जरबैत रहतैक । रूदल चौधरी झरकि गेल छथि, कनियो कसरि बाँकी नहि छनि । टाका-पैसा दऽ आ मधुर बोलीसँ बंकूआकेँ सनका देने छिऐक । तेसरा दिनपर दुनू परानीक माथ-कपार फोड़ि दैत छनि । खेत-पथार दफानि लेने छनि आ पाँच कित्ता मोकदमा चलि रहल छनि–फौजदारी आ सिविल दुनू । अधिक काल पुलिस दरबज्जेपर रहैत छनि । टाका, लोक आ गवाही, तीनू जुटा दैत छिऐक बंकूकेँ । ओ निफिकिर भऽ बापकेँ तबाह करऽमे लागल अछि ।

मुदा हमरा चैन नहि अछि । आब मुरलीकेँ सुनगा रहल छिऐक । अनेरो राति-बिराति बजा लैत छिऐक । आ भोरे खबासिनसँ चुपचाप ओकर बहु लग समाद पहुँचबा दैत छिऐक । अगिला दृश्यमे विस्फोट हेतैक । सभटा तैयारी भऽ गेल छैक ।"

ओइ विस्फोटक धमाका प्रणव सुनलकै । मुरली तबाह भऽ गेल छलैक । दोकानक सभटा पूजी समाप्त भऽ गेलैक । जमीनो सभ भरना पड़ि गेलैक आ कनियाँ जहर खा मरि गेलैक । सभ टा शीला अपने लिखने छलैक । आ तमसाकऽ प्रणव ओकरा लिखलकै—

–"बड़ पैघ काज कयलहुँ अहाँ । अमितकेँ चल जयबाक, हमर अपमानक ठीके बड़ पैघ बदला लेलिऐक अहाँ । मुदा ककरासँ ? एकटा कमजोर आ निरपराध स्त्रीसँ । ओकर हत्या कऽ देलिऐक अहाँ । हमरा लग सबूत अछि, मुरलीक स्त्रीक हत्या अहीं कयलिऐक अछि । मुरलीक संग नाटक तऽ बड़ कयलिऐक । आब ओकर स्त्री नहि रहलैक, आब नाटक छोड़ि ओकरे संग रहि जाउ । अहाँक बदलो सधि गेल । बेशी असुविधो नहि हैत । पुरुषक एहन अदला-बदली तऽ कतेक बेर कऽ चुकल छी अहाँ ।"

बहुत दिन तक उत्तर नहि अयलैक । प्रणवकेँ प्रतीक्षो नहि छलैक । ओकरा अफसोच भेलैक ओहन चिट्ठी लिखबाक । क्रोधमे शीलाक अपमान कऽ देने छलैक । दोसर-दोसर चिन्ता सेहो छलैक । तावत सचिवालयमे नहि आयल छल, जिलाक प्रशासन हाथमे छलैक । आन्दोलनक नामपर बहुत रास असामाजिक तत्व सेहो सक्रिय छलैक । आ आन्दोलन तीव्रतर छलैक– महगीक खिलाफ, भ्रष्टाचारक खिलाफ । विधान सभा भंग करबाक माँग सेहो जोर पकड़ने छलैक, घेराव आ पथराव सभठाम भऽ रहल छलैक । प्रणवकेँ साँस लेबाक फुरसति नहि छलैक । संदिग्ध प्रशासकक सूचीमे नाम छलैक, आन्दोलनक प्रति समर्थक रुखि रखनिहार प्रशासकमे नाम छलैक । ओकर जिलामे गोली नहि चलल छलैक, भीड़पर लाठी नहि बरसल छलैक–अनधुन ।

प्रणव अधिक काल सोचैत छल जे कोना एकटा मासूम आ निर्दोष नेना गोली-बन्दूकक आगू ठाढ़ भऽ जाइत छैक ? एकबेर ओ सभ ठाढ़ भेल रहैक देश भरिमे सभ ठाम आ विदेशीक बन्दूक-तोपकेँ अपन बलिदानसँ शान्त कऽ देने रहैक । अपन राज आ अपन देशमे आब ककर खिलाफ ठाढ़ भेल छैक ई सभ ? निरंकुशता आ आत्याचारक खिलाफ ? भ्रष्टाचार आ अव्यवस्थाक खिलाफ ? मुदा ई जन-आन्दोलन छात्र-आन्दोलन बनिकऽ कोना रहि गेल छलैक ? आ छात्रक नामपर के-के अइ भीड़मे शामिल भऽ जाइत छलैक, एकटा सही बातक समर्थनमे केहन-केहन गलत लोक आ तत्व शामिल भऽ जाइत छलैक, से प्रणव नित्य देखैत छलैक । छात्रक भीड़मे हिंसा करयबा लेल असामाजिक तत्व । नामधारी छात्र । भ्रष्ट नेता आ अधिकारीक घेरावमे लागल ओहूसँ बेशी भ्रष्ट लोक । लोकनायकक आन्दोलन गुजरात बिहारमे जोर पकड़ने छलनि । मुदा बाँकी देश ? ओतुक्का जनता ? भ्रष्टाचार आ महगी, अव्यवस्था आ भ्रष्ट शासन मात्र दुइये प्रान्त धरि छलैक ? ई आन्दोलन जनआन्दोलन कोना बनतैक ? कहिया धरि जनआन्दोलनक नामपर मात्र छात्रकेँ बन्बूकक आगूमे देल जाइत रहतैक आ बाँकी जनता तमाशबीन बनल रहत ? गाँधी मैदानमे लोकनायकक भाषणमे लाखक लाख जमा हैत आ जखन संगीन आ बन्दूकक बीच जुलूस निकलतैक तऽ अपन-अपन आफिस आ घरसँ तमाशा देखैत रहत आ गोली चलतैक वा कर्फ्यू लगतैक तऽ अपन-अपन घरक दरबज्जो-खिड़की बन्द कऽ लेत । बन्द कोठलीमे, दफ्तरक टेबुलपर काज छोड़ि क्रान्ति आ परिवर्त्तनक जाप करत आ सभटा तमाशा देखैत अपन बाट चलत ।

जहिया आपातकालक घोषणा भेलैक, सभटा स्पष्ट भऽ गेलैक । जनआन्दोलनक दावा करऽवला देश मौन रहलैक । लोकनायक समेत आरो पैघ-पैघ आन्दोलन समर्थक विरोधी नेताकेँ जहलमे दऽ देल गेलैक आ सभ ठाम शान्ति रहलैक, जेना किछु भेले नहि होइ । मुट्ठी भरि लोक जहलक भीतर छलैक आ सम्पूर्ण देशक जनता बाहर । कतहु कोनो सुगबुगी नहि भेलैक । एकटा जनआन्दोलन भेल रहैक, विदेशीक बन्दूकक आगाँ अजस्र जन-समूहक बाढ़ि आबि गेल छलैक । बन्दूकक गोली हारि गेल रहैक । मुदा एक टा आपातकालीन घोषणा सभ-किछुकेँ शान्त कऽ देलकै, परिवर्त्तनक माँग, महगी आ भ्रष्टाचारक खिलाफ आन्दोलन शान्त भऽ गेलैक । सम्पूर्ण देशमे शान्ति छलैक ।

परिवर्त्तन भेलैक । शुरूमे बेश तीव्रताक संग— व्यवस्थामे परिवर्त्तन भेलैक, दफ्तर, फैक्टरी सभ ठाम काज होबऽ लगलैक । घेराव, आन्दोलन, पथराव बन्द भऽ गेलैक । स्कूल-कालेजमे पढ़ाइ होबऽ लगलैक, हिंसा आ उपद्रव बन्द भऽ गेलैक । आ लगलैक जेना यैह तऽ माँग छलैक आन्दोलनक । आब सभ टा भेटि जयतैक देशकेँ । आपातकालीन घोषणाक तीव्रतम विरोधियो सभ प्रारम्भिक प्रगति आ चमत्कारसँ मौन भऽ गेलैक ।

फेर सभ टा सुस्त पड़ऽ लगलैक । काजक रफ्तार, उत्पादन आ सुधारात्मक कार्य आ भ्रष्टाचार-उन्मूलन । फेर सब-किछु पूर्ववत होबऽ लगलैक जेना आन्दोलनक पूर्व होइत रहैक आ तकर बाद भेलैक ओ अप्रत्याशित घटना । सौंसे संसार चकित रहि गेलैक । जनतन्त्रक पराकाष्ठा एवं उपलब्धिक नाम देलकै ।

मुदा से सभ बादमे भेलैक । ओइसँ पहिने आरो बहुत रास घटित भेलैक, देशमे आ प्रणवक जिनगीमे सेहो ।

एक बेर कलकत्ता गेल प्रणव । बाहर वर्षक बाद । चौंसठिमे छोड़ने छल कलकत्ता आ छिहत्तरिमे दोबारा गेल । टेंगरा रोडक मजदूर सभक ओइ मोहल्लामे ओकर नाम एकटा छोटछीन कोठली सभदिन छलैक । मासे-मास किराया मनीआर्डर करैत छलैक । रसीद सब जमा छलैक । एक बेर मकान-मालिकक पत्र आयल छलैक दू वर्षक बाद । डेरा छोड़ि देबाक अनुरोध छलैक । प्रणव बुझलकै आ किराया पच्चीस टाका कऽ देलकै । फेर चारि वर्ष कोनो चिट्ठी नहि अयलैक । दोबारा तगादा अयलैक तऽ किराया पैंतीस टाका कऽ देलकै प्रणव । चारि वर्ष फेर

शान्त रहलैक । तेसर तगादामे किराया पचास टाका कऽ देलकै प्रणव, तहियासँ डेरा छोड़बाक कोनो पत्र नहि आयल छलैक ।

मुदा ओइ दिन प्रणवकेँ लगलैक जेना मणिका ठीके कहने रहैक जे खाली टाका लेल मोन रखतैक ओकरा । से सत्ते, टाका पठैबाक अतिरिक्त आर कोनो खबरि नहि लेलकै प्रणव । पटना आबि पहुँचबाक पत्र धरि नहि देलकै । स्टेशनपर कनैत ठाढ़ छलैक मणिका । विदा करबा लेल हाथो नहि उठा सकल रहैक । भरि बाट आ तकर बादो कतेको दिन धरि ओ दृश्य मोन पड़ैक आ कनैत रहैक । फेर सभ टा मणिकाक आकृति सभ ठाम, सदिखन ओकर पछोड़ धयने रहैक । फेर सभ टा धूमिल होइत गेलैक ।

एकर ई अर्थ नहि जे बारह वर्षमे कहियो मोने नहि पड़लैक मणिका । बेर-बेर मोन पड़लैक । खाली मणिके टा नहि, ओइ टोलक सभ लोक । की भेलैक मणिकाक ? बी.ए. पास कऽ सकलैक वा नहि ? झरना पुलककेँ अपना सकलैक वा नहि ? मणिकाकेँ कोनो नीक जीवनसंगी भेटलैक कि नहि ? मुदा सभटा खाली मोन पड़िकऽ रहि गेलैक । कोनो खोज-खबरि नहि लऽ सकलैक । पत्रो नहि लिखि सकलैक । कोना लिखितैक आ ककरा लिखितैक ?

मुदा ओइदिन अपन मोटर लऽ विदा भेल तऽ कलकत्तेक बाट धऽ लेलक । एक सप्ताहक छुट्टी लेने छल, एकसर रहैत तंग आबि गेल छल । किम्हरो बाहर घूमि आबऽ लेल मोन औना रहल छलैक । मोटर लऽ विदा भेल तऽ सभ टा पुरना बात मोन पड़लैक आ कलकत्ता दिस विदा भऽ गेल ।

बाटमे रुकैत जखन ओ दोसर दिन दुपहरियामे टेंगरा रोडक ओइ मोहल्लामे पहुँचल तऽ ओकरा क्यो नहि चिन्हलकै । बरही घूटर आ पानवाला गणेश बाहरेमे ठाढ़ छलैक । मोटरसँ उतरैत प्रणवकेँ अजनवी दृष्टिसँ तकैत रहलैक । नाम लऽ टोकलकै तऽ दुनू चिन्हि गेलैक आ संगे डेरा धरि अयलैक । मुदा डेरामे दुनू कोठलीमे ताला बन्न छलैक । प्रणव आशंकासँ दुनू गोटे दिस तकलकै । घूटर बजलैक—"मणिका आफिस गेल अछि, छौ बजे धरि आबि जायत ।"

आशंकाक स्थान प्रसन्नता लऽ लेलकै । मणिका अपन पयरपर ठाढ़ भऽ गेल छलैक, अपन वादा निभौने छलैक । मुदा आर लोक सभ ? एना ताला किएक बन्न छैक ?

फेर घुटरे जबाब देलकै । कलकत्तामे बसि गेल छल, मुदा ओकर घर

पण्डौल लग छलैक, मैथिली बजैत छल । कहलकै—"ओ दुनू तऽ कहिया ने मरि गेलैक । पहिने बाप मुइलैक । ट्रामसँ उतरैत काल खसि पड़लैक । छातीमे चोट लगलैक । किछुए दिन जीलैक तकर बाद । मायकेँ टी.बी. भऽ गेलैक । ऊपरसँ बेटाक मृत्युक धक्का । ओहो मरि गेलैक । आब तऽ ओकरो पाँच साल भेलैक ।"

प्रणव टोकैत बीचमे पुछलकै—"मुदा पुलककेँ की भेलैक ? ओ कोना मरि गेलैक ?"

घूटरक स्वर भीजि गेलैक बजैत काल—"ओ दृश्य नहि बिसरैत अछि आइयो । सुतली रातिमे डेरा घेरि लेने छलैक । मायक दुखित हैबाक बात सुनि आयल रहैक भेंट करऽ । बहुत दिनसँ लापता छलैक, पुलिस पाछाँ लागल छलैक, सरकारकेँ पलटबाक योजना करैत छलैक कहाँदन । हथियार रखैत छलैक, बड़का-बड़का पूजीपतिकेँ दिनदेखारे मारि दैत छलैक । मुदा ओइ दिन अपने मारल गेल । पुलिस घेरिकऽ लाउडस्पीकरसँ घोषणा कयलकै बाहर आबऽ लेल, ने तऽ घरेमे गोली बरसा देतैक । घरमे दुखिताहि माय छलैक, बहिन छलैक । पुलक बाहर आबि गेलैक, हाथ उठौने । लगलैक जेना समर्पण कऽ देतैक । मुदा बाहर अबैत देरी, चुमकीसँ पिस्तौल बाहर कऽ फायर करऽ लगलैक । एकटा इन्सपेक्टर आ चारि टा पुलिस मारल गेलैक । मुदा ओकरो देह भुजबी-भुजबी आ शोणिते-शोणिताम भऽ ओहीठाम सड़कपर खसि पड़लैक ।

प्रणवक मोन कोनादन करऽ लगलैक । आर किछु पुछबाक इच्छा नहि भेलैक । घूटरसँ आफिसक पता पूछि बिदा भऽ गेल । मुदा आफिसमे छुट्टीक समय होबऽमे तीन घण्टा देरी छलैक । प्रणव गाड़ी लेने सौंसे शहरमे बौआइत रहल । शहरक संग बारह वर्ष पुरान परिचयकेँ नव करैत रहल ।

आफिसक सामने फुटपाथपर गाड़ी ठाढ़ रखने छल प्रणव । मणिका बहरयलैक, प्रणव लगले चिन्हि गेलैक । कनियो नहि बदलल छलैक अइ बारह वर्षमे, जेना समय एकदम ठहरि गेल होइ ! देहपर किछु कीमती साड़ी, हाथमे बैग आ पैरमे डिजाइनदार चप्पल छलैक । मुदा सम्पूर्ण व्यक्तित्व ओहिना छलैक । ओहिना सौम्य आ शान्त । आकृति ओहिना आकर्षक आ देह ओहिना मांसल आ लचकदार । प्रणव गाड़ी ओकर पाछाँ लगा देलकै । किछु दूर आबि, अपेक्षाकृत जनशून्य देखि गाड़ी लग सटा कहलकै—"मैडम, घुमा लाऊँ ? मणिका बिगड़िकऽ तकलकै आ स्टीयरिंगपर हाथ देने खिड़कीसँ मूड़ी निकालने मुसकिआइत प्रणवकेँ देखि एकदम हुलसि उठलैक— तुम...आपनी ।

प्रणव नीचाँ उतरैत कहलकै–"सुकुर चिन्हि गेलैं ? नै तऽ बीच सड़क पर ठोकाइ करा दितैं तेना बिगड़िक घुड़कल छलैं । आ, बैस, तखन चैनसँ गप्प करब ।"

प्रसन्नतासँ आर आकर्षक आ स्निग्ध भेल मणिका गाड़ीमे बैसि गेलैक । गाड़ी स्टार्ट करैत प्रणव पुछलकै–"किम्हर लऽ चलू मैडम !"

मणिकाकेँ हँसी लगलैक– "कोनो दिस, कोथाउ, जेखाने आपनी चान ।"

प्रणव नकली गम्भीरतासँ कहलकै–"आ यदि भगा लऽ जैयौ ?"

मणिका ओहिना हँसैत कहलैक–"साहस आछे ? बारो बछोर होलो, एकटी चिट्ठी लिखते पारलेन ना, किडनैप कोरबार साहस कोथाय पाबेन ?"

प्रणव गम्भीर भऽ गेल । सत्ते बड़ पैघ अपराध भऽ गेल छलैक ओकरासँ । एतेक दिन धरि घुरियोकऽ पुछारी नहि कयलकै जे कोन हालमे छैक । मणिकाक उलहन वाजिब छैक ।

ओकरा गम्भीर होइत देखि मणिका बाँहिपर स्पर्श करैत कहलकै– "राग कोरेछेन ? खमा करून आमाकेँ । सुधु ठट्ठा कोरे छी आमी, किछु मोने कोरबेन ना ।"

प्रणव ओकरा बीचेमे रोकि देलैकै–"कथीक क्षमा ? तोँ कोनो झूठ नहि कहलैं । हमरासँ ठीके अपराध भेल । तोँ माफ कर हमरा । एतेक किछु बीति गेलैक आ हमरा पतो नहि लागल । मुदा तोहूँ तऽ आने बुझलैं हमरा ! किछुओ तऽ नहि लिखलैं ।"

"आमी दोषी स्वीकार कोरछी । किन्तु आपनाकैं सब लिखते चाइछी, अनेक बार लिखे छी । किन्तु पाठाते पारलाम ना, केनो जाने भय होयेछे । किन्तु छाड़ुन से कथा । आज से सब मोन राखबो ना । अपनी ऐसेचेन, एतो बड़ो आनन्देर दिन आर किछु मोने राखबो ना ।''

प्रणव ओकरा लेक दिस लऽ गेलैक । ओइ ठाम झीलक कातमे, बड़ी काल बैसल दुनू गोटे । बहुत रास गप्प कहलकै मणिका । सभसँ पहिने पुलकक गप्प । झरना अपन प्रेम लेल लड़ि नहि सकलैक । पुछलक छोड़ि देलकै । दोसरक संग चल गेलैक अपन इच्छासँ आ पुलक देखैत ठाढ़ रहलैक । झरना चल गेलैक आ पुलक आर बदलि गेलैक । पहिनहुँ लापता रहैत छलैक, आब बेसी गायब रहऽ लगलैक– मासक मास । मणिकाकेँ डर होइक । बाप पहिने मरि गेल छलैक आ भाइक कोनो पता नहि । घरमे ने अन्न-पानि, ने एक्को टा टाका । उधारो-पैंच भेटब मस्किल भऽ गेलैक । शिप्रा छलैक तऽ किछु-किछु मदति करैत छलैक, मुदा ओहो अपन पति पालसँ लड़ि-झगड़ि ककरो संग चल गेलैक बर्दवान । आब ओतहि रहैत छलैक । मणिका एकदम एकसरि पड़ि गेल छल ।

मुदा असहाय नहि भेल छल । प्रणव किताब सब दऽ गेल छलैक, बापक जीविते बी.ए. पास कऽ गेल छल । घरसँ बाहर आयल, दू-चारि ठाम निराश भेल, मुदा अन्तमे एकटा नीक प्राइवेट फर्ममे रिसेप्सनिस्टक नौकरी भेटि गेलैक । नीक पाइ भेटऽ लगलैक आ मायक दवाइ-दारू तथा अन्न-पानिक चिन्ता नहि रहलैक ।

मुदा पुलकक चिन्ता बढ़िते गेलैक । दू चारि टा उद्योगपतिक खून भेलैक आ आतंकवादी दलक अगुआक रूपमे पुलकक नाम आबि गेलैक । पहिने मासक मास निपत्ता रहैत छलैक, फेर अयनाइयो बन्ने भऽ गेलैक । कोनो ने कोनो सी.आइ. डी.क लोक सड़कपर, घरक सामने तैनात रहैत छलैक ।

तैयो ओइ राति आयल रहैक पुलक । दलक कोनो लोक मायक हालति खराब हैबाक गप्प पहुँचा देने छलैक । खतरा मोल लऽ आयल छलैक आ जल्दी घुरियो नहि सकलैक । माय पकड़ि लेलकै । आ जखन छोड़लकै, देरी भऽ गेल छलैक । टोलेक कोनो लोक लोभमे सूचना कऽ देने छलैक । दुनू दिससँ अनधुन गोली चललैक आ पुलकक देह गोली सभसँ छेदाकऽ शोणिते-शोणिताम भेल सड़कपर खसि पड़लैक ।

मुदा मणिका ओकरा लेल नहि कनलैक ओइ दिन । लगलैक जेना मुक्त भऽ गेलैक । झरनाक विवाहे दिनसँ जाहि पीड़ासँ बताह भेल बौआयल फिरैत छलैक, ताहिसँ मुक्त भऽ गेलैक । एतबे बुझलकै ओ । आर कोन ज्वाला छलैक ओकर मोनमे, आर की करऽ चाहैत छल ओ, से मणिका कहिओ नहि बुझलकै । ई सभटा प्रणवकेँ कहैत काल कानऽ लगलैक मणिका, कनिते रहलैक ।

राति बितलापर दुनू होटलमे गेल । खा-पीकऽ फेर विदा भेल । प्रणव पुछलकै–"आब किम्हर चलू ।"

मणिकाक जबाब देबासँ पूर्व फेर अपने बाजल— "डेरे चल आब, राति भेल । तोरा पहुँचा दियौक, फेर कोनो होटलमे ठहरि जायब ।"

मणिका आश्चर्यसँ बजलैक–“होटले केनो ? बाड़ी तेइ थाकबेन । आपनार निजेर रूम । केनो एतो दिन भाड़ा दियेछेन ? एक रात थाकतेउ पारवेन ना !”

प्रणव बुझबैत कहलकै–“तोँ एकसर रहैत छैं, हमरा रखबैं, तऽ अनेरो दस तरहक बात कहतौक । राति होटलमे ठहरब आ फेर दिनभरि घूमब । काल्हि छुट्टी लऽ लिहैं, बोटैनिकल गार्डन चलब ।”

मणिका बजलैक–“ना, से किछु तेइ होते पारवे ना । आपनाकेँ बाड़ी तेइ थाकते हबे । आमाकेँ बोलबे तो लोक, आमी जाबाब देबो ।”

बहस करब बेकार छलैक । मणिका मानऽवाली नहि छलैक । संगे डेरा आयल । अपन कोठलीमे, जकरा बारह वर्ष पूर्व छोड़ि गेल छल, पैर दितहि फेर बहुत रास बात मोन पड़लैक । ओ वर्षा-झक्कड़क राति आ मणिकाक पहिल रातुक आगमन । तकर बाद आ तकरो बादक गप्प सभ मोन पड़लैक । मणिका कपड़ा बदलऽ दोसर कोठलीमे गेलैक । कोठलीक नकशा बदलि गेल छलैक । ओइमे नव पलंग आ ताहिपर गुलगुल बिछौन लागि गेल छलैक । खिड़की दरबज्जापर नीक परदा लटकल छलैक । कोठलीक फर्शकेँ उखड़बाकऽ फेरसँ सीमेन्ट करबा देल गेल छलैक आ देबाल सभ डिसटेम्पर कराओल छलैक । कोठलीमे एकटा स्टीलक आलमारी, एकटा सिलाइ मशीन आ एकटा पैघ सन रेडियो सेहो छलैक । टेबुलपर किछु किताबक संग एकटा सुन्दर टेबुल घड़ी राखल छलैक । देबालसँ एकटा पैघ सन अयना टांगल छलैक आ ताखपर किछु प्रसाधनक सामान सेहो पड़ल छलैक। प्रणव सभटा निहारैत बैसल रहल । मणिका दोसर कोठलीसँ अयलैक तऽ प्रणव पुछलकै–तोँ कहाँ सुतबै ?”

मणिका दुष्टतापूर्वक हँसलैक–कोनो, ऐइ घरे सुइते पारबोना ? अनेके बार सुइये छी । भय किसेर ?’

प्रणवो ओहिना जबाब देलकै–“भय तोरा नहि, मुदा हमरा तऽ हैत । एहन ऋषि-मुनिकेँ डोला देबऽवला रूप आ देह छौक, हमहूँ तऽ मनुक्खे छी ।”

मणिका गम्भीर भऽ गेलैक–“आमार से सौभाग्य कोथाय ? आर केउ जाने वा ना जाने, आमी भालो कोरे जानी । स्त्रीर देह आपनाकेँ कोनो दिन च्युत कोरते पारबे ना....

फेर वैह विराट देवत्व । शीलो कहने छलैक । आइ मणिका कहि रहल छलैक । ई मणिका एकटा बरसाती रातिमे भीजल देह लेने ओकर घरमे एकसरि आयल छलैक, शीतलहरिमे ओकर तुराइमे सन्हिया गेल रहैक । ओ सभटा जनैत

छलैक । मुदा अही देवत्वसँ पड़ायल छल प्रणव । मनुक्ख जकाँ जीबऽ चाहैत छल । मुदा से ककरा कहतैक ?

मणिकाकेँ सभटा खिस्सा कहलकै । मामीक भेटबाक खिस्सा, मालाक मृत्युक खिस्सा, शीलाक परित्याग आ अमितक घर छोड़ि जयबाक खिस्सा, किछुओ बाँकी नहि रहलैक । मणिका भरि राति ओही कोठलीमे ओकर सिरमामे बैसल रहलैक आ प्रणव कहैत गेलैक । भोर तक कहिते रहलैक । भोरक इजोत कोठलीमे आबऽ लगलैक तऽ आँखि लागि गेलैक ।

जागल तऽ सौंसे कोठलीमे रौद पसरि गेल छलैक । मणिका चाय लऽ कऽ अयलैक । नहा चुकल छलैक मणिका । भीजल खूजल केश सौंसे पीठ पर छिड़िआयल छलैक । जागरणक बादो आँखिमे अतिरिक्त प्रसन्नता आ स्फूर्त्ति छलैक, जागरणक कोनो चिन्ह नहि छलैक । आँचर डाँड़मे नीक जकाँ कसिकऽ बान्हल छलैक, साड़ी कने ऊपर उठा खोंसल जेना कोनो काजमे व्यस्त छल होइ !

चाय पिबैत प्रणव पुछलकै– ‘‘आफिस कखन जयबैँ ?’’ मणिका जोरसँ हँसलैक- ‘‘कतो बेजे छे, किछु जानेन ?”

प्रणव हड़बड़ा कऽ हाथक घड़ी देखलक । एगारह बाजि रहल छलैक । धड़फड़ा कऽ उठि बैसल–“जल्दी तैयार हो, गाड़ीसँ पहुँचा दैत छियौक ।”

मणिका हँसलैक– ना, आजके जाबो ना । किन्तु सकाल थेके मण्टू, घूटर, मासीमाँ सबाय ऐसे जिज्ञिस कोरे छै । आमी लज्जाय किछु बोलते पारलाम ना । की बोलताम, ओराकी भाववे मोने...

प्रणव हँसी कयलकै–“ठीके तऽ सोचै छौ । राति भरि जागले छलैँ हमर संग ।” फेर गम्भीर होइत कहलकै–“तेँ तऽ कहैत छलियौक होटलमे रहऽ दे हमरा, आब सभ तंग करतौक ।”

मणिका जवाब नहि देलकै । ओकरा बिछौनपर फेर सूतहो नहि देलकै । नहैबाक व्यवस्था कयलकै–गरम पानि । जाड़ मास रहैक- दिसम्बर । नहयलाक बाद जलखइ । फेर भोजनक इन्तजाममे लागि गेलैक । प्रणव पड़ल-पड़ल मैगजीन आ अखबार उनटबैत रहल । एक-दू बेर सोरो पाड़लकै–“छोड़ ने झंझट, होटलमे खा लेब ।” मुदा मणिका नहि मानलकै । सभटा अपने हाथे बना, लग बैसि आग्रह कऽकऽ खुऔलकै । खाइत काल प्रणवकेँ अपन ओ डेरा मोन पड़लैक जाहिमे ओकर संग शीला छलैक, मामी छलैक आ अमित छलैक ।

खा-पीकऽ लग बैसलैक मणिका तऽ पुछलकै–"तों एहिना रहबै सभ दिन, एकसरे ? बिआह कऽ ले ।"

मणिका हँसलैक–"आमी सब दिन राजी । किन्तु काउके पेलाम ना । केउ राजी होलो ना बीयेर खातिर ।"

प्रणव गम्भीरतासँ कहलकै–"हम हँसी नहि करैत छियौक । कऽ लेल आब बिआह । वर हम ताकि दैत छियौक ।"

मणिका ओकर स्वरक गम्भीरता आ आकृतिक भाव देखि टकटकी लगा देखिते रहि गेलैक ।

प्रणव ओहिना गम्भीरतासँ कहलकै–"हमरा संगे चल मणिका ! बड़ एकसर छी हम । सम्हारि ले सभटा । हमरे लग रह । क्यो नहि अछि हमरा लग, तोँ चल ।"

मणिकाक आँखिसँ भटभट नोर खसऽ लगलैक ।

किछु बजलैक नहि, खाली कनैत रहलैक । प्रणव फेर अपन बात दोहरौलकै ।

अइबेर कनिते बजलैक मणिका–"आपनी कतो मान दियेछेन आमाके । किन्तु से की आमी कोरते पारी । आमी के, आमी जानी । आमार दायित्वो आमी जानी । आमी जानी जे आपनी का के भालोबासेन ? शीलाकेँ आमी कोनो दिन देखी नेइ, किन्तु जानी जे ओ आपनाके कतो भालोबासे । आपनार अशेष दया...

आर नहि सुनि सकल प्रणव । फेर वैह देवत्व बीचमे ठाढ़ छलैक । मणिका ओकरा लग नहि रहतैक, ओकर प्रेमकेँ मात्र ओकर दया आ महानता मानतैक । शीला एक दिन ओकरा प्रतिशोधक रूप कहने छलैक, संग रहबाक ओकर प्रस्तावकेँ अस्वीकृत कऽ कोनो अनजान बाटपर जा अपन सब-किछु लुटा आयल छलैक । मणिका सब-किछु गमाकऽ अपन बाट धयने छलैक, आब ओ अपन पयरपर ठाढ़ आत्म-विश्वाससँ भरल स्त्री छलैक । मुदा ओकर प्रेमकेँ ओहो स्वीकार नहि करतैक । स्वीकार करतैक ओकर देवत्व । मनुक्ख रूपमे ओकरा स्वीकार नहि करतैक, मणिको नहि ।

प्रणव हँसिकऽ बजबाक चेष्टा कयलक मुदा स्वर नहि जानि किएक फँसि गेलैक । रुकि-रुकिकऽ बड़ कष्टसँ बहरयलैक–"तोरा लोकनि स्पष्ट किएक नहि

कहैत छैं जे हमर प्रेम अस्वीकार छौक । एकटा झूठ-मूठ आदर्शक अढ़ किएक ? तोरा सन्देह छौक जे हम खाली शीलासँ प्रेम करैत छिऐक । तोरापर खाली हमर दया अछि । शीलाकेँ सन्देह छलैक जे हम दुनू बहिनसँ घृणा करैत छिऐक, हमर प्रेम प्रतिशोधक एकटा बदलल रूप अछि । मुदा कहैत छैं दुनू जे तोरालोकनि हमरा जोगर नहि छैं । साफ-साफ किएक ने कहैत छैं ?"

मणिका बीचहिमे टोकैत कहलकै– की बोलबो ? की सुनते चान आपनी ? आपनी की जानेन ना जे....

आगू बाजि नहि सकलैक ओ । फेर भटभट नोर खसऽ लगलैक आ कण्ठ बाझि गेलैक । प्रणवकेँ अपनापर तामस भेलैक । एना किएक भेल जाइत छल ओ ? सभपर आघात कऽ रहल छलैक, ओकरा सभपर जे अप्पन छलैक । मुरलीक स्त्री मुइलैक आ ओ शीलाकेँ एहन बात लिखि आयल छलैक । स्वाभामिनी छैक शीला, जवाबो नहि देलकै । फेर चिट्ठियो नहि लिखतैक भरिसक । आब मणिका कानि रहल छलैक । ओ ओकर पीठपर हाथ रखैत कहलकै–"नहि कानू मणिका, हमरासँ अन्याय भेल, अनुचित प्रस्ताव कयलहुँ हम ।"

आर जोरसँ कानि उठलैक मणिका, जेना आरो अनुचित बात कहा गेल होइ । ओहिना कनैत ओकर कोरामे पड़ि रहलैक । देह ओइ क्रन्दनकेँ रोकबाक प्रयासमे कँपैत रहलैक । पीठपर हाथ फेरैत प्रणव किछु काल बाद कहलकै–"उठिकऽ बैसू मणि, लोक सब अबैत अछि ।"

दोसरो राति मणिका ओकर सिरमामे बैसल रहलैक, ओकर कोरामे मूड़ी राखि कनैत रहलैक । भोर होइत काल रहलकै–"आपनी आमाके जे पथ देखालेन सेइ आमार सम्बल । ई घर जे खाने आमी थाकी, आपनार । ई शिक्खा जे आमाकेँ चाकरी दिये छे, आत्मसम्मान दिये छे, आपनार दान । आमाकेँ तो कोनो दिन लागलो ना जे आपनी आमार काछे नेइ । चिरदिन आपनार संगे आची आमी, सभ दिन आपनार काछेइ थाकबो, आर केउके आसते देबो ना जीवने, आपनी विश्वास करुन ।"

प्रणव एकटक देखलकै ओकरा– शरतक नारी । ओहिना महान, ओहिना स्नेह-भरल । अविश्वासक कोनो प्रश्ने नहि छलैक । स्वयं विश्वास आ प्रेमक मूर्त्ति बनल बैसल छलैक मणिका ।

सातम दिन विदा होइत काल प्रणव कहलकै– "लिखिहैं मणि, कोनो प्रयोजन भेलापर बजा लिहैं । तोँ एकसर नहि छैं, बस एतबे मोन रखिहैं ।"

मणिका, नहि, मणिक ठोरपर हँसी छलैक आ आँखिमे नोर ।

बहुत दिनुका बाद शीलाक एकटा पत्र भेटलैक । मुदा ताहिसँ पहिने भारी परिवर्त्तन भऽ गेल छलैक । चुनावक घोषणा आ परिणाम दुनू आश्चर्यजनक छलैक । जनता अपन आजादीक लेल, अधिकारक लेल फेर एक बेर निर्णायक डेग उठौलक आ जनता राज स्थापित भऽ गेलैक केन्द्रमे । तानाशाही आ जुलुमक खिलाफ सभ एकजुट भऽ लड़लैक । जाति, दल, प्रान्तीयताक सभटा छोट-छोट विचार एकटा पैघ आदर्श लेल त्यागि देलकै सम्पूर्ण देश ।

मुदा एसेम्बली निर्वाचन तक अबैत-अबैत फेर सभटा पुरना प्रवृत्ति घेंट अलगा लेलकै । फेर वैह जातिवाद, फेर वैह दलगत दाव-पेंच । टिकट लेल वैह मारा-मारी । पटनामे कोनो होटल, कोनो डेरामे जगह नहि बँचलैक । टिकटक प्रत्याशीक भीड़ लागि गेलैक ।

ताही भीड़क संग मुनेसर पटना आयल छल आ प्रणवोकें भेंट भेल रहैक । कहलकै— हमरा कोनो फर्क नहि पड़त । दल बदलि लेने छी हम । अखबारमे वक्तव्य दऽ देलिऐक, आब हमहूँ जनता । टिकट भेटबे करत, कोनो बैकवर्डकें हमरा खिलाफ ठाढ़ कराओत से मजाल छैक जनता पार्टीक ? जमानत जप्त करबा देबैक ।"

मुदा जमानत अपने जप्त भऽ गेलैक मुनेसराक । जनता पार्टी टिकट नहि देलकै । कांग्रेस छोड़िए देने छल जनता टिकटक लोभमे । मुदा तैयो ठाढ़ भेल स्वतंत्र उम्मीदवार बनिकऽ । आ जमानत जप्त भऽ गेलैक । अखबारमे देखने छलैक, मुदा असली खबरि शीलाक पत्रसँ भेटलैक । अइबेर एकटा मोटका रजिस्ट्री लिफाफ छलैक । बहुत रास कागजक संग एकटा पत्र—

"ई भरिसक अन्तिम पत्र अछि । अहाँक पत्रक जवाब तखन नहि दऽ सकल रही, आब दैत छी ।

पुरुषक अदला-बदली जिनगीमे बड़ कयने छी हम, अहाँ असत्य नहि लिखलहुँ । ओ हमरा अधलाह नहि लागल । मुदा जाहि स्थानपर अहाँकें रखने छी, ओतऽ दोसरकें राखि लेबाक बात अहाँ लिखलहुँ— तकर दुःख भेल । जनैत छी, खाली तामसमे ओहन बात लिखलहुँ । मुदा तामसोमे ओहन बात अहाँ सोचलहुँ, से

बड़ तकलीफ देलक । देहक बँटबारा कयलहुँ हम, मोनक कोनो बँटबारा नहि, से अहाँकें बूझल छल, बूझल अछि, तैयो ओहन बात लिखलहुँ । जवाब देल पार नहि लागल तत्काल ।

हमर काज भऽ गेल गाममे । रूदल चौधरी तबाह भऽ गेलाह— कर्ज आ मोकदमामे ओझरायल छथि, भुखमरीक नौबति छनि । मुरलियाक घर तबाह भेलैक, बाल-बच्चा बिलटि गेलैक । आ अपने पागल हैबामे बेशी कसरि नहि छैक । बाँचल छल मुनेसरा । ओकरो ब्योंत भऽ गेलैक । अइ चुनावमे सात ठाम मारि खयलक, जीप जरा देलकै लोक आ जमानत जप्त भऽ गेलैक । मधुकें नहि जानि की कहि देलिऐक अहाँ । एकदम बदलि गेल अछि । हमरा ऊपर सदिखन जेठ बहिन जकाँ छाया कयने रहैत अछि, ककरो कोनो कुचक्र नहि चलऽ दैत छनि । आ मुनेसराक जड़ि सेहो वैह खोदलकै । गामे-गाम घुमलैक वोटमे । सभकें मुनेसराक खिलाफ भड़कौलकै आ जमानत जप्त करा देलकै ।

गाममे हमर सभ काज भऽ गेल, सबहक प्रतिशोध पूरा भेल । मुदा मोनमे आरो बेशी अशान्ति अछि । ठीके लिखने रही अहाँ । अइ आगिमे हम अपने जरि जायब । से सत्ते जरि रहल छी । सदिखन ज्वाला धधकैत रहैत अछि । कर्ज आ मोकदमामे ओझरायल रूदल चौधरी आ ओकर अन्न बेतरे बेहाल धीया-पुता आ स्त्रीकें देखि कोनो सुख नहि होइ-ए । राति-विराति, सूतल-जागलमे मुरलीक मुइल स्त्री आ ओकर टूगर जकाँ बौआइत धीयापुताक आकृति मोन पड़ैत अछि आ मोनक बचलो-खूचल शांति हेरा जाइत अछि । अहाँ मोन पड़ैत छी, अहाँक बात मोन पड़ैत अछि । अहाँकें बेघर कयने छलाह अहाँक पित्ती मदन चौधरी आ सभटा सम्पत्ति हुनके धीया-पुताक नाम कऽ देलियनि अहाँ । हमरा बूझल अछि । हमर बाप अहाँक मामक घराड़ी जोति लेलनि, मामीकें अपन हवेलीमे बन्न रखलनि आ हुनकर अन्तिम संस्कार कयलियनि अहाँ ।

हम हारि गेलहुँ अहाँसँ । अहींक बात मानि लेलहुँ । अहाँ लिखने रही, ओकर स्त्री नहि रहलैक, ओकरे घर बसा दहिक । सैह कऽ देलिऐक हम । ओकर उजड़ल घर बसा देलिऐक । ओकर भरना घर-घराड़ी छोड़बा देलिऐक आ दस बीघा जमीन ओकर धीया-पुताक नाम कऽ देलिऐक । ओकर उजड़ल घर बसि जेतैक । रूदल चौधरीकें माफ करब सम्भव नहि भेल, मुदा हुनको स्त्रीक नाम दस बीघा लिखि देलियनि । धीया-पुता अन्न बेतरे बेलल्ल नहि हेतनि । केहन काज कयलहुँ हम ? अहाँकें नीक लागल ?

नीक लागले हैत, हम जनैत छी। हमरासँ बेशी आर के ई बात जानत? मुदा आब हमर कोनो काज नहि अछि गाममे। बाँकी दिन कतहु ईश्वरक शरणमे कटि जाय, सैह इच्छा अछि। तेँ गाम छोड़ि रहल छी। जहिया ई पत्र अहाँकेँ भेटत, हम गाम छोड़ि जा चुकल रहब। अहाँकेँ एकटा भार देने जाइत छी। अइ अन्तिमो पत्रमे एकटा भारे दऽ रहल छी अहाँकेँ, आर कहिओ किछु दऽ नहि सकलहुँ। देबा जोगर आ किछु छलो नहि हमरा लग।

सभटा सम्पत्ति आ हवेली अमितक नाम कऽ देलिऐक, सभटा कागज पठा रहल छी। सभटा ओकरे छलैक, ओकरा भेटि जाइ। अहाँ बताहि नहि बूझू। ओ घुरत, अबस्से घुरिकऽ आओत अहाँ लग। हमरा पूरा विश्वास अछि जे अहाँसँ दूर ओ बेशी दिन रहि नहि सकत। ओकरा अहाँ लग घुरहे पड़तैक। हमर अमानत अहाँ लग रहल, जहिया अमित भेटय, दऽ देबैक।

आइ फेर जा रहल छी। एक बेर गेल रही जहिया विवाह भेल छल हमर आ हमरा अपनो नहि बूझल छल जे अहाँ कतऽ छी हमर मोनमे। दोबारा छोड़िकऽ गेलहुँ तऽ बूझल छल जे खाली अहीं टा छी हमर जिनगीमे, दोसर क्यो नहि अछि। तैयो छोड़िकऽ चल गेल रही- अपने भयसँ। आइयो खाली अपनेसँ डर अछि। ईश्वरक शरणमे जा रहल छी। मुदा तैयो डर अछि जे जाहि मोनमे खाली अहीं रहैत छी, ओइमे ईश्वरक स्थान हेतनि? अहाँ प्रार्थना करब हमरा लेल जे हुनकेमे हमर मोन रमय।"

प्रणव सभ दिन प्रार्थना कयलकै शीला लेल।

मुनेसरा फेर भेटलैक पटनामे। बड़ अन्तर भेटल छलैक। अपन विभागक मन्त्री लग भेंट भेल रहैक- प्रणवोक बजाहटि रहैक। मन्त्रीसँ सटल बैसल मुनेसर अप्पन बड़प्पन देखैबाक खूब चेष्टा कयलकै। मुदा प्रणव लेखे धनसन। ओ मन्त्रीजीसँ काजक गप्प कऽ जाय लागल तऽ मुनेसरक धैर्य समाप्त भऽ गेलैक। टोकैत कहलकै- ''मन्त्रीजी खास दोस्त छथि हमर आ तोँ हमर बालसंगी। कहि देलियनि अछि, आब तोँ कोनो चिन्ता नहि कर। जे हैबाक छलैक से भऽ गेलैक। आब तोरा क्यो निरर्थक हरान नहि करतौक। हमरा लोकनि आइयो शक्तिहीन नहि भेल छी।"

प्रणवकेँ हँसी लागि गेलैक। पैतरा बदलि रहल छलैक मुनेसर। फेरसँ दोस्त बनिकऽ आयल छलैक, ओकरा बिन-माँगल आश्वासन दऽ रहल छलैक। प्रणव कोनो जवाब नहि दऽ चल आयल। मुदा बाहर अबैत काल लगलैक जेना मुनेसर ठीके कहि रहल छलैक-ओ सभ अखनो शक्तिहीन नहि भेल छलैक। अहू राज्यमे वैह नेता, वैह मुँहगर लोक सभ शक्तिवान रहतैक। जनताक अमोघ अस्त्र छलैक वोट। से ओ व्यवहार कऽ चुकल। आब फेर पाँच बरख लेल निश्चिन्त छैक नेतासभ। प्रशासन कतहु एक दिनमे सुधरलैक अछि? दाम कोना लगले कमि जायत, व्यापारीसँ अनुरोध जारी छैक, सबूर करू। जे तीस वर्षमे नहि भेल, से तीन मासमे कोना हैत?

चलती ओकरे रहतैक जकर छलैक। नाम-धाम कतहु बदललैक, कतहु नहि बदललैक। मुदा बाँकी सभ वैह। वैह चेहरा, वैह लोक, खाली नाम दोसर। वैह करनी, मुदा दावा दोसर। जनताक राज? सुनऽमे नीक लगैत छलैक।

ओइ दिन आफिससँ बहरायले छल कि ओकर दृष्टि अमितपर गेलैक। सड़कक कातमे एकटा ठेला लेने ठाढ़ छलैक। ठेलापर फल सभ छलैक। प्रणव दौड़िकऽ लग गेलैक-"चल अमित, घर चल।"

अमित ओकरा दिस तकलकै आ अपरिचित स्वरमे बजलैक-"कोन घर? कतऽ अछि हमर घर?"

प्रणवकेँ दुख भेलैक, आघात लगलैक। पत्रमे लिखने छलैक, मुदा एना मुहामुहीं जबाब देतैक से आशा नहि छलैक ओकरा। बड़ स्नेह आ महत्त्वाकांक्षासँ पोसने छलैक ओकरा। अपन मोनक बात दबबैत कहलकै-"तोहर घर छौक तोहर बापक घर। चल आब।"

"मुदा हमर बाप अछि के? माय तऽ....

"तोहर माय नहि छौक, ओकर बारेमे गप्प नहि कर। तोहर बापो हमहीं छियौक आ मायो। चल अपन घर।"

"नै, अहाँ हमर क्यो नहि छी। हमर बापक पता हमर मायोकेँ नहि छलैक। अहाँ जाउ, हमरा अपन काज करऽ दियऽ।"

"नहि, अमित! ई काज तोँ छोड़। पढ़-लिख। तोरा लेल कोन-कोन सपना अछि हमर मोनमे!"

"ओ आब सपने रहत । हम सभदिन अही ठाम फल बेचब ठेलापर । देखिकऽ लाज हैत अहाँकेँ ।"

प्रणव हँसलैक– "तोँ नहि चिन्हलैं हमरा अमित ! हमर माम महींस चरबैत छलाह आ मामी कुटाओन-पिसाओन करैत छलीह । सभदिन हम अपने महींस चरबैत रही । कहिओ लाज नहि भेल । अभिमानपूर्वक सभदिन कहलिऐक–यैह छथि हमर मामा-मामी, हमर माय-बाप । आइयो कहैत छिऐक । तोँ ठेला चलबैत छैँ, ताहिमे कोनो लाजक बात नहि छैक । मुदा अइमे तोहर आत्मविश्वास नहि, तोहर मोनक ग्रन्थि झलकैत छौक । मोनमे ई ग्रंथि राखि कहियो आगू नहि बढ़ि सकबैं । अपन पयरपर ठाढ़ हैबा लेल ठेला चला, हमरा अभिमान हैत । मुदा हमरा दुख देबा लेल एतऽ ठेला लऽ ठाढ़ हैबैँ तऽ ई तोहर मोनक ग्रंथि छौक । ई ग्रंथि जिनगीमे आगू नहि बढ़ऽ देतौक ।"

अमित कोनो जवाब नहि देलकै । प्रणव फेर कहलकै–"हम जाइ छी अखन । मुदा हमर एकटा बात मोन रखिहैं । तोँ हमर बेटा छैँ, अइसँ बेशी सत्य तोहर मालाक कोखिसँ जन्म लेनाइ नहि छौक । जहिया ई सत्य स्वीकार होउ, चल अबिहैं ।"

प्रणव चल आयल । अमित नहि अयलैक । मासो बीति गेलैक मुदा अमित नहि अयलैक । ओहिना ठेला लऽ सड़कपर फल बेचैत रहलैक ।

बेशी प्रतीक्षा नहि कऽ सकलैक प्रणव । फेर किछुए दिन बाद बदली भऽ गेलैक । नवका मुख्यमन्त्रीक कार्यभार लेबाक एवं मन्त्रिमंडलक संगठनक तीनिए मासक बाद बड़का सूची बहार भेलैक बदलीक । प्रणवो ओइ सूचीमे छल । कार्यभार देबा दिन सोचलक जे एकबेर फेर अमितकेँ कहैक । फेर निरर्थक लगैलक । अमित जिद धयने छलैक आ ओकर घुरबाक आशा कम छलैक ।

एकसर रहबाक अपन नियतिकेँ ओ स्वीकार कऽ लेने छल । जिनगीक बाँकियो दिन एकसर बीति जयतैक । अमित लेल ओकरा चिन्ता छलैक । मुदा आब ओकरो भाग्यक भरोसे छोड़ि देबाक अतिरिक्त आर कोनो रस्ता नहि छलैक ।

कार्यभार लेबासँ पहिने एक बेर बनारस गेल– मामी मानिकऽ यदि घुरि अबैक !

मुदा डेरामे पैर दितहि प्रणव थकमका गेल । मामी लग एकटा आर स्त्री बैसल छलैक । प्रणवकेँ देखि माथपर आँचर घीचि लेलकै । मामी हुलसिकऽ उठलैक— "आ ने, क्यो आन नहि छौक ।"

प्रणव गोड़ लगलकनि । मामिए लग प्रणवो बैसि गेल । ओ स्त्री ओहिना माथपर आँचर लेने मूड़ी झुकौने बैसल छलैक ।

प्रणव बदलीक गप्प कहलकै । अमितक गप्प कहलकै आ अन्तमे अपन गप्प कहलकै–"अहाँ घुरि चलू मामी ! अपन बेटाकेँ एना एकसर छोड़ि कोना रहैत छी अहाँ ?"

मामी माथपर हाथ फेरैत कहलकै–"अपन बेटाकेँ कोना छोड़ब हम ? मुदा बाबा विश्वनाथ नहि छोड़ैत छथि हमरा ? आ आब तऽ एकटा दोसरो चिन्ता अछि । अपन अइ बेटीकेँ ककरा लग छोड़ि जयबैक ? एकर भार के लेतैक ?"

–"हम लेब मामी ! अहाँ हिनको लेने चलियनु अपना संग, यदि हिनका आपत्ति नहि होनि ।" प्रणव नेहोरा कयलकनि ।

मामी हँसलैक–"तोँ अपने पूछि लहिक ने ! रहतौक तोरा लग ?"

ओ स्त्री सेहो हँसलैक । माथपरसँ आँचर ससरि गेलैक । प्रणव आश्चर्यसँ बाजल–"अहाँ ?"

मूड़ी झुकौने शीला हँसि रहल छलैक । ओकर बातक कोनो जवाब नहि देलकै । मामी उठिकऽ भीतर चल गेलैक–"आब तोँही दुनू गोटे फैसला कर ।"

किछु काल बाद प्रणव पुछलकै–"की जवाब दियनु मामीकेँ ?"

शीला सहज ढंगसँ हँसैत कहलकै–"जवाब मामीकेँ बूझल छनि । एतऽ रही वा ओतऽ, आश्रय तऽ अहींक अछि । तीर्थ रही वा गाम– आसरा तऽ अहींक अछि ।"

प्रणव चौंकि कऽ देखलकै । व्यंग्य नहि कऽ रहल छलैक शीला । चेहरा स्निग्ध आ तनावहीन छलैक । मामिए जकाँ निराभरण आ सादा-सादी पहिरन-ओढ़न । आकृतिपर व्रत-उपवाससँ उपजल एकटा पवित्र भाव । प्रणव एकटक ओकरा देखैत रहल ।

–"एना की देखैत छी ?" शीला पुछलकै । ठोरपर स्निग्ध हँसी छलैक ।

–"देखै छी जे अहाँ कतेक बेर हमर प्रस्ताव एना अस्वीकार करैत रहब ।"

–"अस्वीकार नहि, ई तऽ सम्पूर्ण समर्पण थिक । एकर बादो किछु रहि गेल अछि हमरा लग ?" शीला आर स्निग्ध आ कोमल स्वरमे कहलकै ।

प्रणवक स्वर थरथरायल छलैक–"मुदा हमरा लग रहि गेल अछि अहाँक अमानत । ओकरा आब अहींकेँ पठा देब । जकर छैक, से आब कहियो नहि घुरत । हम एकसरे रहब सभदिन ।"

शीला कनेक अधिकारपूर्ण दुलारसँ बजलैक–"एकसर किएक रहब अहाँ ? सभ तऽ अहींक लग अछि– मामी आ हमहूँ । आ अमितो अबस्स घुरत । ओ कतऽ जायत अहाँकेँ छोड़िकऽ ? हमर अमानत अपने लग राखू । जकर छैक तकरे दऽ देबैक । ओ घुरत, फेर अहाँकेँ चिन्हत, हम जनैत छी ।"

प्रणव शीलाक हाथ अपन मुट्ठीमे लैत कहलकै–"सैह होअय शीला ! प्रार्थना करब जे अहाँक विश्वास सत्य बनि सकय ।"

दूर मन्दिरमे शंख-ध्वनि भऽ रहल छलैक ।

●

नवारम्भ

(पहिल भाग)

हवेली मोहनपुर

बड़की टा गाम— अकादारुण । घनगर बस्ती धारक ओइ पार– सटले-सटल घर । करीब दू हजारक आबादी । गामक बीचोबीच बहैत कमला । उत्तरे-दक्षिणे बहैत पूबे-पश्चिमे भऽ गेल छैक गामक लग आ फेर गामक पश्चिमी सिमान लग उत्तरे-दक्षिणे भऽ जाइत छैक । घनगर बस्ती उत्तरे-दक्षिणे बहैत धारक पूबमे छैक आ धारक पश्चिममे बसल छेहर आबादीकेँ धार फेर पूबे-पश्चिमे छेकैत छैक आ तकर बाद गामक पश्चिमी सिमान लग फेर दक्षिण दिस मुड़ि उत्तरे-दक्षिणे बहऽ लगैत छैक । अइ पारक आबादी कम्म । मोस्किलसँ पाँच सय । दुनू पारक नाम एक्के छैक– मोहनपुर ! छेहर आबादीवला मोहनपुरकेँ, पछबारि पारकेँ, लोक कहैत छैक–हवेली मोहनपुर । अइ पारमे कहियो जमींदारसभ रहैत छलाह जनिकर पैघ-पैघ हवेलीसभ बिला गेल छैक आब, मुदा पुरना नाम सुरक्षित छैक–हवेली मोहनपुर । हवेली मोहनपुरक लोक पुबारि पारक नाम रखने छैक–लंका मोहनपुर । पुबारिपारक लोक पढ़ल-लिखल कम्म, बेसी लठियाकुमैत । तेँ हवेलीक लोक कहैक— लंकाटोल, माने लंका मोहनपुर, माने मोहनपुर पुबारिपार । इलाकाक लोक सेहो मोहनपुर पुबारिपार, पछबारिपार नहि कहैत छैक । प्रचलित नाम छैक हवेली मोहनपुर आ लंका मोहनपुर । लंका मोहनपुरक लोककेँ बादमे ई नाम अखरऽ लगलैक । गाममे जखन पोस्ट ऑफिस खुजलैक तँ जबर्दस्ती पहिने हबेलिएमे जगह-मकान दऽ पछबारिपारक लोक ओकरा हथियौलक । मुदा, पुबारियोपारक लोक चैनसँ नहि बैसल । जोर लगाकऽ पोस्ट ऑफिसकेँ अप्पन पार लऽ गेल आ ओइमे मोस्तैजीसँ पता लिखबौलक–मोहनपुर पुबारिपार । पछबारिपारक चिट्ठी-पत्री एखनो पुरने प्रचलित नामसँ अबैत छैक–हवेली मोहनपुर । इलाकाक लोक मोहनपुर

पुबारिपारकेँ एखनो कहैत छैक–लंका मोहनपुर । मुदा ई सभ गप्प बादमे । पहिने हबेली मोहनपुरक गप्प ।

हवेली मोहनपुरमे सभसँ पहिने धारक कात पहुँचैत छलाह उतरबारि टोलक मङनू मिसर । अन्हरोखे ओ जोर-जोरसँ मंत्र पढ़ि भरि गामकेँ जगबैत धार दिस जाइत छलाह । हुनकर मंत्रो बड़ विचित्र रहनि–'गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए ।' अइ मंत्रकेँ बेर-बेर दोहरबैत ओ धार दिस जाइत छलाह । बीच-बीचमे पंचकन्यालोकनिकेँ सेहो स्मरण करथि–'अहिल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती, मन्दोदरी...अइ मंत्रक अर्थ कहैत छलथिन नामी बाबू गाम भरिकेँ । मतलब जे कोनो वर्षी-तिथि, मूड़न, उपनयन होअय आङनमे तँ मङनू मिसरकेँ नोत होइनि ।

हुनक पीठेपर जाइत छलीह गौरी धारक कात । प्रायः सभ दिन ओ मङनू मिसरक मंत्रक प्रत्याशामे रहैत छलीह आ मंत्रकेँ भोरक आह्वान मानि झट धार दिस बिदा होइत छलीह । गौरीकेँ भरि गाम छोटकी बाबी कहैत छलनि । कम्मे लोककेँ बूझल छलैक जे हवेली मोहनपुरसँ छोटकी बाबीक कोनो सम्बन्ध नहि छलनि । सम्बन्ध एतबे जे जेठ बहिन मंगला हवेली मोहनपुरक जमींदार श्रीकान्त चौधरीक संग बियाहलि छलथिन । एकबेर अपन बाबिए कहने रहैक रविकेँ–'अभागलि अछि गौरी । दुइए वर्ष तऽ छोट अछि हमरासँ आ बियाहलियो हमरे जकाँ पचमे वर्षमे गेलि छलि । वर हमर वर जकाँ बड़का जमींदार नहि रहथिन । रहथिन बड़का जातिबला— हमर बापोसँ पैघ पाँजि । जतबे पैघ जाति, ततबे पैघ दरिद्रता । ऊपरसँ पचासम वयसमे चारिम वियाह । दसे वर्षक बाद ऊपरसँ बजाहटि आबि गेलनि ! पन्द्रह वर्षक गौरी विधवा भऽ गेलि । दुरागमनक बाद आठम वर्षमे सासुर गेलि रहय । पाँच दिन रहलि । फेर घूरिकऽ जयबाक संयोगे नहि भेलैक । नैहर दरिद्र, सासुर महादरिद्र । विधवाक गुजरक दुनू ठाममे कतहु उपाय नहि भेलैक । लऽ अनलिऐक अपने संग । आब तँ पैंतालीस वर्ष बिता लेलक अही गाममे ।'

सत्ते, छोटकी बाबीकेँ सभ गामेक लोक बुझैत छलनि । कतहु कोनो आङनमे कोनो काज होइ, छोटकी बाबी सभसँ आगू । छोटकी बाबीसँ नीक अरिपन गाममे क्यो नहि दैत छलि । छोटकी बाबी सन चुमाओनक गीत 'शुभऽभऽभऽऽऽ... हेऽहेऽऽ...' दोसर क्यो ने गबैत छलि । छोटकी बाबी सन भानस गाममे क्यो नहि करैत छलि । छोटकी बाबी सन लुरिगरि क्यो नहि छलि गाममे । एक्को टा नहि ।

छोटकी बाबी छलीह मुदा बड़ तमसाहि । बाबी जतबे शांत आ सुद्ध छलीह, छोटकी बाबी ओतबे रुच्छ आ कठोर । वस्तुतः दूनू बहिन सभ दृष्टिएँ

विपरीत छलीह । मंगला छलीह पिण्डश्याम, वयस भेलासँ ओ पिण्डश्याम रंग आर झामर भऽ गेल छलनि, देह आ चेहराक चमड़ी घोकचि गेल रहनि । देहपर रहैत छलनि मैल सन धोती मात्र आ छोट-छोट काटल केश, काँट जकाँ ठाढ़ । मंगला एकदम पातर आ नमछर छलीह । बुढ़ारी अवस्थामे सेहो देह लगभग सोझे छलनि । कने पताइत चलैत छलीह ।

गौरी रहथि छोट आ सोँटल-साटल । रंग एकदम दपदप गोर । चेहरो तेहने सुन्नर । केश पकलोपर छलछल आ मोलायम लगैत छलनि । देहपरक धोती एकदम साफ । चालिमे एक टा गरिमा । अपूर्व सुन्दरी छलीह गौरी । आँखिक दृष्टि प्रखर, जेना भीतर तक छेदि देत । मुदा, तेहने तमसाहि । एकबेर एक टा भड़ारी नव आयल रहथि हवेलीमे । भानस लेल जे बड़का टाड़ामे नित्य तेल जाइनि, से हुनका फाजिल लगलनि । एकदिन टाड़ा दैत काल किछु बाजि बैसलाह । एक्के लातमे ओ टाड़ा ओंघरा देलथिन गौरी । प्राते भेने भड़ारी निकालल गेलाह । श्रीकान्त चौधरी तक डेराइत छलखिन हुनकासँ ।

हवेली मोहनपुरक जमींदार श्रीकान्त चौधरीसँ सौँसे गाम डेराइत छलनि । तेहन कड़ा आ कट्टर रहथि जे भरि गामक लोक डरेँ थरथर करनि । अपन बेटो-बेटीकेँ लग बैसि बजबाक साहस नहि होइनि, सामने अबैत देखथिन तँ पतनुकान लऽ लेथिन । दलानमे जतबा काल बैसैत छलाह, सामनेसँ क्यो बिना माथ झुकौने, आ बिना खड़ाम खोलने नहि जाइत छल । जमींदारी तँ तीनू भैयारीकेँ रहनि, मुदा रोब रहनि खाली बड़के टाक । माने श्रीकान्त चौधरीक ।

बड़ विशाल व्यक्तित्व रहनि– छौ फीटसँ बेसी ऊँच, चौड़ा कपार आ तेहने ठाढ़ नाक । गोराइयो तेहने बेसी आ गठल बलिष्ठ शरीर । धोतीक साँची जमीनपर लेटाइत आ कुर्ता कतहुसँ कनियोँ मोचड़ल नहि रहनि । दहिना हाथमे छड़ी आ बामामे नोसिदानी ! नोकर सदिखन संग । अबैत देखि बाट चलैत लोक पतनुकान लऽ लैत छल वा माथ झुका ठाढ़ भऽ जाइत छल ।

आ, तनिका गौरी एकदमसँ डाँटि लैत छलखिन–'आइ अबेर कोना भेल ? सभदिन तऽ दस बजे स्नान कऽ भोजन लेल तैयार भऽ जाइत छलहुँ । आब अहूँ दोसरे लोकक ढाठी सिखने जाइत छी चौधरी !'

श्रीकान्त चौधरी छलाह समयक एकदम पाबन्द । भोरे पाँच बजे ऊठि टहलऽ निकलि जाइत छलाह । घूमिकऽ सात बजे अबैत छलाह । नौकर तखन घण्टो मालिस करैत छलनि । दस बजैत-बजैत स्नान कऽ भोजन लेल तैयार भऽ जाइत

छलाह आ छोटकी बाबीक भानस घड़ीक सुइ जकाँ तैयार रहैत छलनि । दुइए बेर भोजन करैत छलाह- दिनमे दस बजे आ रातिकेँ आठ बजे । जलखै एक्को बेर नहि । दुपहरियामे फल-फलहरी । राति आठ बजेक बाद ककरोसँ भेँट नहि । दिनोमे भोजनक बाद आराम । संध्या पाँचसँ आठ धरि दलानमे बैसक । सभ टा समयसँ बान्हल । तेहन श्रीकान्त चौधरीकेँ सेहो गौरी डाँटि देथिन-'आब अहूँ अनके ढाठी सिखने जाइत छी चौधरी !'

ओ हँसिकऽ रहि जाइत छलथिन । शुरू-शुरूमे मंगलाकेँ बड़ डर होइनि जे कहीँ बमकि ने जाथिन ! अपन विधवा छोट बहिनकेँ किछु कहैत माया होइनि मंगलाकेँ । बेचारी अभागलि अछि । अही आश्रममे मोन लागि जाइ तँ नीक । गौरीक मोन लगैत गेलनि । मंगलाकेँ धीया-पूता भेलनि देरीसँ, मुदा भेलनि तँ तीन टा लगले-लागल । पहिने भेलनि मीरा । गौरी सभ टा भार उठा लेलथिन ओकर । तकर बाद राम । आ, अन्तमे लाल । सभक पालन-पोषण गौरिए कयलथिन । मंगला जन्म दऽ निश्चिन्त भऽ जाइत छलीह ।

तैयो कोनो धीया-पूता लेल कोनो बेसी माया-ममता जेना नहि रहनि गौरीक मोनमे । जखन जकरापर बिगड़ि जाथिन, कोनो दशा बाँकी नहि रखथिन । मंगलोकेँ नहि छोड़ैत छलथिन-'बस्स करऽ आब ! गजर-बजर कुकूर-बिलाड़ि जकाँ बिआयब बन्द करऽ ! कहाँ तऽ होइते ने छलह, आ आब लगले-लागल तीन टा । खाली जनमा लैत छह । देखबहक तकर तऽ फुरसतिए नहि । खाली अनेरोक गप्पमे लागलि रहबऽ सभक संग । दिन-राति हमरे जानक आफत । नेनोसभ तेहने प्रचण्ड छऽ तोहर ! आ छौँड़ी तऽ सभसँ तिलबिखनी ।' मीरा बेसी तंग करनि गौरीकेँ । छूतिक हुनका बाय छलनि । जहाँ क्यो छूबि दैनि, स्नान कऽ आबथि । भनसाघरमे ककरो टपऽ नहि देथिन । अपने अन्हरोखे स्नान कऽ आबथि आ पूजा-पाठमे लागि जाथि । सात बजे धरि पूजा आ तकर बाद भनसाघर । बीचमे क्यो कनियो छूति कऽ दैनि तऽ प्रलय ! फेर स्नान, रातियोकऽ आ से माघो मासमे ।

मीरा अधिक काल तंग करनि । केम्हरोसँ दौड़लि आबनि आ गौरी हाँ-हाँ करिते रहि जाथि, ओ भनसाघरक चिनबारपर चढ़ि जाइनि । रान्हल अन्न अस्पृश्य भऽ जाइनि । आ, गौरी फेरसँ स्नान करथि, भानस करथि । हुनकर भनसामे विधवे खाइनि- मंगलाक दू टा विधवा ननदि रहथिन, बड़की दाइ आ छोटकी दाइ । श्रीकान्त चौधरी सेहो अही भनसामे खाइत छलाह । एकदम निरामिष भोजन !

माछ-मासुक भनसाघर फराक रहैक-दोसर आङनमे । ओइ लेल एक टा

भनसिया रहैक । ओइ भनसासँ रिकबीमे भात-माछ लेने मीरा गौरीक भनसामे हूलि जाइनि आ तखन चिकरा-चिकरी आ फेका-फेकी शुरू । फेर स्नान, फेर भानस !

ई पुरना गप्प भेलैक । तहिया अङना बड़ विशाल रहैक आ तेहने विशाल रहैक दलान । दलान रहैक आङनसँ बेस हँटिकऽ, दलान कोन— एक टा पैघ-सन बङला रहैक । बाहरक बैसारीक अलाबा पैघ सन सटल कोठली रहैक । ओइ कोठलीकेँ सभ कहैक कबरा । बेशकीमती झाड़-फानूस टाङल, जाजिम-गद्दी बिछाओल । कहियो काल नाच-गान होइत छलैक । नामी-नामी गबैया । प्रसिद्ध नटुआसभक नाच । रण्डी-पतुरियाक नाच नहि । बड़ कट्टर छलाह श्रीकान्त चौधरी । नवतुरियासभ कतबो लुसुर-फुसुर करय, रण्डी-पतुरियाक नाच नहि होबऽ देथिन । खाली नटुआक नाच आ नीक-नीक गबैयाक गीत । दुर्गापूजामे धमगज्जर । स्त्रीगणसभ लेल सिरकीक परदा लगैक । कबराक कातमे दोसर कोठली रहैक । ओहीमे बैसिकऽ स्त्रीगण नाच-गान देखय-सुनय । कबरामे बैसल पुरुष स्त्रीगणसभक छाया ने देखि पबैक, तेहन सिरकीसभ टाङल रहैक । सभ टा इन्तजाम श्रीकान्त चौधरी अपने करबैत छलाह, तहियो, जहिया तीनू भाइक परिवार साझी रहनि आ भानस एक्केठाम होइनि ।

ततेक दूर रहैक आङन जे आङनक कोनो स्वर दलान धरि नहि पहुँचैक । अङनो रहैक अकादारुण । बीचमे बड़का मड़बा रहैक । मड़बाक चारूकात दक्षिण आ पश्चिममे दोमहला आ पूब आ उत्तरमे सेहो पक्काक एकमहला । भूकम्पमे सभ टा ध्वस्त भऽ गेलैक । टिनक डिब्बा जकाँ ढनमना गेलैक । कोठासभक अलाबा पछबरिया-उतरबरिया खण्डमे एक टा पैघ मकान रहैक, जाहिमे रहैक भगवतीक घर, भंडार आ भनसाघर । निरामिष भनसाघर । सधवाक प्रवेश निषिद्ध । भनसाघरक बाहर आबि थारी दैत छलथिन गौरी । एकबट्टीक बादे अन्न जाइत छलैक दोसर घर वा ओसारा ।

सधवालोकनिक भनसाघर पछबरिया-दछिनबरिया खण्डमे रहैक । पैघ सन खपड़ैल कोठली । भनसिया रहथि पित्तू ठाकुर । कहियो काल सधवालोकनि अपनो बना लेथि माछ-मासु । धीया-पूताक आकर्षण अही भनसाघरमे छलैक । घरक सभ स्त्रीगण, धीया-पूता, आ श्रीकान्त चौधरीकेँ छोड़ि बाँकी भैयारी अही भनसामे खाइत छलाह ।

श्रीकान्त चौधरी सभ दिन गौरीक रान्हल अन्न खाइत छलाह । निरामिष भऽ गेल छलाह । मंगला खाइत छलीह माछ-मासु— जा धरि स्वामी जिबैत

छलथिन । मंगलोकेँ नहि छूबऽ दैत छलथिन गौरी अपन थारी-बाटी–'तोरा कोनो विचार छऽ ? खाद्य-अखाद्य सभ खाइ छऽ, पियाजो-लहसुन खाइत हेबऽ ।'

मंगला हँसिकऽ अनठा देथिन । श्रीकान्तो चौधरी हँसिकऽ अनठा देथिन । मुदा, नोकर-चाकर भनसिया-मैनेजर लोहछि जाइत छलनि । ककरोसँ सोझ-मुँह गप्प नहि करैत छलथिन गौरी । एकदम रुच्छ, कटाह बोल । मालिक-मलिकाइनक स्नेह देखि ककरो बजबाक साहस नहि होइत छलैक । सभपर शासन चलनि गौरीक ।

फेर ने ओ आङन रहलैक, ने रहलाह श्रीकान्त चौधरी, जकरा दऽ गौरी अपन जेठ बहिनकेँ कहैत छलथिन–'तोरो भाग अलबत्त छऽ मंगला ! नै तऽ तोरा सन अपरोजकिकेँ एहन स्वामी आ एतेक पैघ राजपाट ! तोरापर छोड़ि दितियऽ तऽ नोकर-चाकर सभ टा लूटि-पाटिकऽ कऽ खा जैतऽ ।'

मंगला तैयो हँसि दैत छलथिन । मंगलाक ओ हँसी अजेय छलनि । ओकरा आगू सभ हारि मानि जाइत छल–पराक्रमी आ क्रोधी श्रीकान्त चौधरी, मुँहगर आ स्पष्टवक्ता गौरी आ घर-आङन आ गाम-घरक सभ टा लोक । मंगलाक ओ अजेय हँसी ओहू दिन लुप्त नहि भेल रहनि जहिया स्वामी बिछौन धऽ लेने छलथिन । नहि जानि की भऽ गेल रहनि ! रट मारऽ लगलथिन-'कहाँ गेलौँ ? कहाँ छी ?' आ, लग जाइत मंगलाकेँ नवकनियाँ जकाँ लाज होइनि । कहियो एना भऽ सोर नहि पाड़ने छलथिन । लालक जन्मक बाद तँ हुनका घरो जायब छूटि गेल छलनि । देखा-देखी भरि होइत छलनि। से स्वामी दिन-देखार रट मारऽ लगलथिन– 'आउ, ...लग बैसू कने !'

मंगला लग जा बैसि रहैत छलीह । खाली एकटक हुनकर मुँह देखैत छलथिन आ बाजऽ लगैत छलथिन— नै, कोनो चिन्ता नहि ! अहाँ लेल चिन्ता करबाक कोनो प्रयोजन नहि । चिन्ता अहाँ धरि नहि पहुँचि सकैत अछि...अहाँ ओकर पहुँचिसँ ऊपर छी । अनेरो मोन नहि मानैत अछि । होइत अछि जे अहाँकेँ निरुपाय छोड़ने जा रहल छी । भूकम्पसँ जे बाँचल छल ताहिमे अधिक रास तऽ अपने बेचि-बिकिन समाप्त कयलहुँ । बचलाहामे एतेक पैघ परिवार अछि । भाइयोलोकनि हिस्सा बँटा फराके भऽ गेलाह । राम बुझनुक छथि–मुदा नेन्ने छथि एखन, लाल ओहूसँ छोट । मीराक धीयापूतासभ छैक आ दू टा विधवा ननदि छथि । एतेक टा जंजाल— कोना सम्हरत अहाँसँ ?'

पहिल बेर मंगलाक बकार फुटलनि स्वामीक आगाँ— 'अहाँ अनेरो चिन्ता करै छी हमरा लेल ! जखन अहाँ छी तऽ चिन्ताक कोन प्रयोजन ? अपन सभ टा चिन्ता-फिकिर अहाँकेँ सौंपि निश्चिन्त रहै छी हम ।'

—'तेँ अहाँक मोनमे एतेक शान्ति आ स्नेह अछि । कोनो कटुता नहि अछि । मुदा आब ? हमर बाद...'

मंगला स्वामीक बात काटि देलथिन–'तकरो कोनो चिन्ता नहि । भगवान छथि । अपन सभ टा चिन्ता आ अशान्ति हुनका सौंपि दियनु । हुनके ध्यान करू ।'

आ, तकर बाद श्रीकान्त चौधरीक उद्विग्न मोन जेना एकदम शान्त भऽ गेलनि । जतबा दिन जीलाह ओकर बाद, चेहरापर अपूर्व शान्ति छलनि । हुनकर ओ सुन्दर आकृति जे जिनगी भरि घमण्डसँ तनल आ क्रोधसँ तमतमायल रहलनि, अन्तिम क्षणमे खूब कोमल आ स्निग्ध भऽ गेल छलनि ।

ओइ मुँहकेँ निहारैत आङनमे तुलसी-चौरा लग बैसलि छलीह मंगला— ओहिना शान्त आ सहज ! लगेमे ठाढ़ि छलथिन छोट बहिन गौरी । स्तब्ध आ कातरि । ऊठिकऽ छोट बहिनक कान्हपर हाथ रखैत मंगला बजलीह–'एना अधीर नहि होअऽ गौरी ! हम अखन छी...हम छी अखन..."

हम किएक छी ? ककरा लेल छी ?

यैह प्रश्न गौरीक मोन ओइ दिन हौंड़ि रहल छलनि । मंगलाक मुइना एक मास बीति गेल छलैक आ बहिनक बाद, बहिनक सासुरमे ओकर धीया-पूताक आश्रममे पड़लि रहब गौरीकेँ कोनादन लागि रहलि छलनि । बहिनक मुइलोक बाद ककरो व्यवहारमे उपेक्षा वा तिरस्कारक भाव नहि आयल छलैक, मुदा गौरी सदिखन संत्रस्त रहैत छलीह । यदि कोनो आँखिमे, कतहु ओ भाव झलकि जयतैक; तँ एतेक दिनक, जीवनक पचास वर्षक साधना नष्ट भऽ जायत । ओइसँ पहिनहि अइ गामसँ चल जयबाक चाही ।

मुदा से बहुत बादक गप्प छैक । ओइसँ पहिने बहुत-किछु घटल छलैक— मंगला आ ओकर स्वामीक मृत्युक पूर्व । हवेली मोहनपुरक प्रतापी जमीन्दार श्रीकान्त चौधरीकेँ वैहसभ घटना मारि देने छलनि । शरीर तँ ओकर बहुत बाद त्यागने छलाह ।

पहिल घटना छलैक भूकम्प । सभ टा पुरना कोठा ढनमना गेल रहनि । राम आ लाल मौजेपर छलथिन, बाँचि गेलथिन । अपने परिवार आ नौकर-चाकरक संग

बाहर मैदानमे भागि आयल रहथि । मुदा जमाय रहि गेलथिन कोठेमे । जातिक नामपर गरीब भलमानुषकेँ बिआहलि गेलि रहथि मीरा । स्वामी अधिक काल सासुरेमे रहैत छलथिन । ओइ दिन ओही कोठामे समाधि बनि गेलनि । तीनू नेन्नाकेँ छातीसँ सटने मीरा बताहि जकाँ ईंटा-माँटिक ढेरीकेँ तकैत रहलीह । सात दिन धरि तकाइ होइत रहलैक आ तखन बहरयलनि पिचाकऽ विकृत भेल निर्जीव शरीर । मीरा बेहोश भऽ गेलीह । शान्त आ नियंत्रित रहऽवला श्रीकान्त चौधरीक आकृति दुःखसँ निरीह आ झामर भऽ उठलनि ।

मीरा जेठ आ दुलारू बेटी छलीह मायक । बापोक स्नेह रहनि, यद्यपि ओ बड़ कम्म मुखर होइत छलनि । से, मीरा अठारहम वयसमे विधवा भऽ गेलीह । बारहममे बियाह भेलनि आ अठारहममे विधवा । विधवा आ तीन सन्तानक माय । दू टा बेटा आ एक टा बेटी । जेठ बेटा चारि वर्षक आ कोराक बेटा छौ मासक । बीचमे दू वर्षक एक टा बेटी ! मंगला कखनो बेटीक धोअल सीथ, खाली हाथ आ उज्जर नूआ देखथि आ कखनो तीनू अबोध नेनाक मुँह ! मुदा, मंगलाक सहनशक्ति अजेय छलनि । उदास आ मरणासन्न बेटीकेँ कोरामे लऽ एक दिन कहलथिन–'कोनो चिन्ता नहि बेटी ! हम छी— हम छी अहाँसभक लेल । ...अहाँ हँसू-खेलाउ, पहिरू-ओढ़ू, अहाँक वयसे की अछि ? हँसू-खेलाउ अखन..."

आ मीरा सत्ते हँसऽ-खेलाय लगलीह । ओ वीभत्स आ उत्पीड़क अतीत जेना पिण्ड छोड़ि देलकनि । चेहराक लाली आ देहक शक्ति फेर घुरि अयलनि । सुन्दरि छलीह मीरा— एकदम बापपर गेलि छलीह । बापेक रंग, ओहने मुखाकृति आ ओहने उग्र स्वभाव । नेन्नामे गौरीकेँ अकच्छ कऽ देथिन–विधवाक भनसाघरमे माछक रिकबी लेने हूलि जाथिन–'मौसी कने भात दिअऽ ।" गौरी हाँ-हाँ करिते रहि जाथि ।

ओही विधवाक भनसाघरमे एक दिन मीरोक भानस होबऽ लगलनि । गौरीक मोन शुरू-शुरूमे बड़ करुणासँ भरि गेलनि मीराक लेल । नेन्नामे देल अपन गारि-सराप लेल कतेको बेर अफसोचो भेलनि । मुदा किछुए दिन । फेर मीरा हँसऽ-खेलाय, पहिरऽ-ओढ़ऽ लगलीह । ओकरो तीनू नेन्नाक छार-भार हुनके कप्पार । मंगला बुते अप्पन धीया-पूता पोसले ने भेलनि, नाति-नातिन की पोसितथि ? मुदा छौँड़ीक रंग-ढंग देखि गौरीक मोन फेर उनटि गेलनि । विधवाक एहन लच्छन ! एतेक सिङार पटार ! केश नहि कटौतीह ! नमरिकऽ डाँड़सँ नीचाँ चल गेलैक आ सौँसे पीठपर कोना छिड़िया लैत अछि ! जकरो ने देखबाक सेहो देखैत छैक । एहन कपड़ा लत्ता ! सादे साड़ी-आङी, मुदा आङी-तरमे पहिरबाक कोन

काज ? सेहो विधवाकेँ ? लोकक आँखिमे गड़ैत हेतैक, मौगी भऽकऽ हमरा अखरैत अछि तँ पुरुषक कोन कथा ? आ, राति-विराति कतऽ निपत्ता रहैत अछि ? पोखरि-धार अन्हारमे किएक बौआइत अछि ? गौरी मीराकेँ फेर जखन-तखन कटाह बात कहऽ लगलथिन । मंगला सूनिकऽ हँसि देथिन । गौरी आर जरि जाथि– 'बहसा ले' बेटीकेँ ! एकदिन हकन्न-नोरे कनबऽ ।'

कनली गौरी अपने आ ओहो छाती पीटि-पीटिकऽ । जे गौरी कहियो ने कानलि रहथि, से आसमर्द उठा देलनि । भरि गामक लोक सम्हारैत अपस्याँत भऽ गेल, गौरी शान्त नहि भेलीह । अन्तमे श्रीकान्त चौधरी अपने बहरयलाह आ शान्त, मुदा दृढ़ स्वरमे कहलथिन–'चुप्प भऽ जाउ गौरी दाइ ! लोककेँ मुर्दा लऽ जाय दियौक ।'

'नै ।' गौरी फेर चीत्कार कयलनि । आङनमे चचरी-बान्हल मीराक देह पड़ल छलैक आ चचरी उठबऽ लेल लोक जमा छल । आगि देबो लेल जेठका नेन्ना मोहन सेहो संग जाय लेल तैयार छल । एगारह वर्षक भऽ गेल छल मोहन । बापक मुइलाक साते साल बाद माइयो बिदा भऽ गेलैक । टूगर भऽ गेल छल मोहन आ ओकर छोट भाइ विक्रम आ बहिन गंगा ।

मुदा, हाक्रोश कऽ रहलि छलीह गौरी । मीराक मृत शरीरपर ओँघरा जाइत छलीह । श्रीकान्त चौधरी दोबारा कहलथिन–'शान्त होउ गौरी दाइ ! लोककेँ अप्पन काज करऽ दियौक ।'

गौरीकेँ जेना होश भेलनि । देहपरसँ हँटि गेलथिन । लोकसभ मुर्दा उठा बाहर बिदा भेल । श्रीकान्त चौधरी अपन कोठलीमे चल गेलाह । बाँकी स्त्रीगणो सभ अपन-अपन घर गेलि । आङनमे बैसलि छलीह मंगला— मीराक माय मंगला । आँखिमे नोर नहि छलनि, मुदा सम्पूर्ण शरीर जेना संज्ञाविहीन भऽ गेल रहनि, दृष्टि एकदम पथरायल । गौरीकेँ लग जा ऊठिकऽ घर चलबा लेल कहबाक साहस नहि भेलनि ।

प्रात भेने जहिना मोटरी-चोटरी बान्हऽ लगली गौरी कि मंगला टोकि देलथन— 'तोँ नहि जा सकैत छऽ ।'

गौरी दृढ़तापूर्वक कहलथिन— 'हम अबस्से जायब । आब कोन मुँह लऽकऽ रहब एहिठाम ? नहि जाय देबऽ, तऽ पुलिसकेँ बजाकऽ हथकड़ी लगा दैह । हम अपराधी छी । हम खून कयने छी ।'

मंगला कने स्नेहसँ डँटलथिन–'बताहि जकाँ गप्प जुनि करऽ । अपराध ककरो नहि छैक । अपराध थिक हमर पूर्वजन्मक पापक आ ओइ अभगलीक

कर्मक। एतबे जिनगी लऽकऽ आयलि छलि। तोँ निरर्थक अपनाकेँ दुख दऽ रहलि छऽ। तोरासँ बेसी ओकर दुख के बूझि सकैत छलैक ? तोँ तऽ ओकरोसँ कम्म वयसमे स्वामीकेँ गमौलह। सन्तानहीन छलीह। एतेक टा जीवन...'

गौरी बीचेमे टोकि देलथिन–'नहि। हम ओकर दुख नहि बुझलिऐक। ओकरा पापिन बुझलिऐक। हमरा भगवानो माफ नहि करताह। हमरा जाय दैह।' मोटरी लेने गौरी दनदनाइत कोठलीसँ बहराइत अङनाक मुँहथरि दिस बढ़लीह। मुँहथरिपर ठाढ़ छलथिन हबेलीक मालिक श्रीकान्त चौधरी। गौरी सकपका कऽ ठाढ़ि भऽ गेलीह।

–'कतऽ जाइ छी गौरी दाइ ?' स्वर आरो बेसी गम्भीर छलनि।

–'नहि जानि कतऽ जायब ? मुदा एहि आङनमे नहि रहि हैत आब ! हमरा जाय दियऽ।'

–'जायब तऽ एक दिन सभ क्यो। हमहूँ जायब। मुदा जाउ, अखन अपन कोठलीमे जाउ ! मीरा लेल अहाँकेँ जे दुख अछि से हम बुझैत छी। मुदा उपाय कोन ?'

–'नै, हमरा मीरा लेल दुख नहि अछि। हमहीँ मारलिऐक ओकरा, हमरा निकालि दियऽ अपना आङनसँ !' सभ दिनक शान्त आ बुझनुक गौरीक जेना मानसिक संतुलन बिगड़ि गेल छलनि।

–'अहाँ जाउ कोठलीमे गौरी दाइ, अहाँक मोन ठीक नहि अछि।' एतबा कहि मुँहथरि लगसँ घूरि गेला श्रीकान्त चौधरी। गौरी ओतहि आङनमे पड़ि रहलीह। ऊठिकऽ घर नहि जा भेलनि। घर जाइत देरी लगैत छलनि जेना चारू कातसँ घरक सभ देबाल-खिड़की-दरबज्जा हुनका कहि रहल होइनि–हत्यारिणी!

हत्या ठीके कयने छलीह ओ। हुनका सहि नहि भेल छलनि ओसभ। विधवाक ओहन पहिरब-ओढ़ब, ओना टोले-टोले बौआयब, ओना ठिठियाकऽ हँसब, माथ उघारि घूमब। ओहू दिन हँसिते आङन आयलि छलि मीरा। साँझ भऽ गेल रहैक। भनसाघरक खिड़कीसँ देखने छलथिन गौरी। पोखरिक भीड़पर हँसि-हँसिकऽ गप करैत सतीशसँ। सौँसे देह जरि गेल रहनि। आङनमे पयर दिते ओकर बाट छेकि लेने रहथिन।

–'लाज नहि होइ छौ मीरा ! विधवा भऽकऽ एहन चालि !' मीराक मुँह विवर्ण भऽ गेल रहैक–'की कयलहुँ अछि हम मौसी ? कथीक लाज हैत हमरा ?"

ओकर विवर्ण मुँहकेँ बिनु देखने कठोरता आ निर्दयतासँ गौरी बजलीह–'निर्लज्जिकेँ कथीक लाज हेतैक ? मुदा हमरालोकनि लेल तऽ लाजे मरि जयबाक गप्प थिक। जकरा-तकरा संग अन्हार-कुठाममे बौआयलि फिरै छैँ, आ पुछै छेँ जे की कयलहुँ अछि ? आब बाँकिए की छौक ? कोना बिसरि गेलौ जे अही आङनमे स्वामी देबाल तर थकुचाकऽ मुइल छलौ...हमहीँ लहठी फोड़ने रहियौक।'

बोली सूनि अपन कोठलीसँ मंगला बहरा गेलि रहथि। गौरीक उग्र रूप देखि रोकबाक साहस नहि भेल रहनि। गौरीक उग्र स्वरपर नहि जानि कोम्हरसँ आबि श्रीकान्त चौधरि सेहो ठाढ़ भऽ गेल रहथि। मौसीक भर्त्सनासँ सुन्न भऽ गेलि छलि मीरा। सम्हरिकऽ एम्हर-ओम्हर तकलक तँ लाजे मरि गेलि। झलफलो अन्हारमे स्पष्ट चिन्हलकै— एक कात माय- एक कात बाप। सामने तनलि ठाढ़ि मौसी। किछु काल ओहिना ठाढ़ि रहलि। फेर एक टा दृढ़ निश्चयक संग मूड़ी उठा बाजलि-'अहाँ ठीके कहै छी मौसी ! हमरा बिसरि गेल छल जे हम विधवा छी। हताश आ मरणासन्न रही तऽ एक दिन माय कहलक— तोँ हँस-बाज, पहिर-ओढ़, खेलो। तोहर हँसब-खेलयबाक वयस छौक। लागल, नहि हँसब-बाजब तऽ अपना संग मायो उदास रहति, घरभरि उदास रहत। विधवा तऽ आरो रहथि आङनमे-अहाँ रही मौसी, दुनू पीसी रहथि, मुदा हमरा लागल जे विधवा आ निरुपाय बेटीकेँ उदास देखि माय-बाप अनेरे कष्ट पौताह। सभ टा बिसरि हँसऽ-बाजब हमर अधिकार नहि थिक। मुदा, एक टा बात हम कहने जाइ छी मौसी ! हमरा लेल कहियो ककरो लज्जित नहि होबऽ पड़तैक। कोनो पाप नहि कयने छी कोनो दिन...'

एक झोँकमे सभ टा बाजि मीरा अपन कोठली चल गेलि। तीन स्थानपर तीनू गोटे स्तब्ध ठाढ़ रहल— गौरी, मंगला आ श्रीकान्त चौधरी।

प्रात भेने मीराक कोठलीक केबाड़ नौ बजे धरि नहि खुजलैक। दरबज्जा तोड़ल गेलैक। निर्जीव लटकल छलैक मीराक शरीर। छतक कड़ीसँ ससरफानी लगा लटकि गेलि रहैक। आत्महत्या कयने छलैक।

नहि, ओकर हत्या कयने छलैक गौरी। गौरी हत्यारिणी अछि। ओकरा पुलिसमे दौक। ओकरा हथकड़ी लगबौक। गौरी सभकेँ नेहोरा-विनती कयलथिन, हुनकर क्यो नहि मानलकनि। ओ गाम छोड़िकऽ जाय चाहलनि, जाय नहि देलकनि। ओ घरक मुँहथरि लग आङनमे पड़ि रहलीह। घूरिकऽ अपन कोठलीमे जयबाक साहस नहि भेलनि। चारूकातसँ हत्यारिणी कहि-कहि घर-आङन काटऽ दौड़ैत छलनि। ओ आङनेमे पड़लि छलीह।

नहि जानि, कतेक कालक बाद माथपर ममत्व भरल स्पर्शक ज्ञान भेलनि। आङनक अन्हारोमे बुझा गेलनि जे लगमे जेठ बहिन बैसलि छथि। ओ ऊठिकऽ बैसयबाक चेष्टा कयलथिन। बाँहि धऽ हुनका ठाढ़ होयबामे सहायता कयलथिन मंगला आ संग-संग घर दिस लऽ जाइत कहलथिन–'अनेरो अपनाकें बेसी दुख नहि दे गौरी! तों ओकरा कोना मारि सकैत छलहिक? ओ तऽ तोंही छलीह–तोरे दोसर जन्म। तों अपने तँ बहुत दिन पहिने मरि गेलि छलऽ। जहिया मीरा विधवा भेलीह, तों फेर जन्म लेलह। तोहर हँसी, तोहर श्रृंगार सभ किछु छिना गेल छलऽ, मीरोकें छिना गेलैक। ओकरा परतारऽ लेल हम ओकरा उकसौलिऐक। तोरा नहि सहि भेलऽ। ककरो खेलायब, हँसब-बाजब, सिङार-पटार करब, तोरा कहियो नहि सहि भेलऽ। तें भरि जन्म हमहूँ सादा-सादी रहलहुँ, सधवो भऽकऽ विधवे जकाँ रहलहुँ। मात्र तोरे लेल। तमसा जुनि गौरी, हम ठीके कहै छियऽ। मात्र तोरे लेल हम ओहन सादा रूप धारण कयलहुँ। तैयो तोरा नहि सहि होइत छलऽ। हमर माछ-मासु खयनाइ धरि तोरा नहि बर्दाश्त होइत छलऽ। हम जे सधवा छी! आ मीरा तऽ विधवा छलि, तोरे जकाँ। तोरा नहि सहि भेलऽ। ओकरा हम सहकौलिऐक। तोहर दुख सहि गेल रही, मुदा मीराक नहि सहि भेल। हमही हँसऽ-बाजऽ कहलिऐक ओकरा। जे तोरा नहि भेटलह से अनका भेटैत देखि तोरा सहि नहि भेलऽ। मुदा, अइमे तोहर कोनो दोष नहि। सभ टा कप्पारक दोष— मौगीक कप्पार। ओकर यैह नियति छैक। मात्र एक गोटेक नहि रहलासँ जे किछु बाँचल रहैत छैक, से सभ अर्थहीन आ अप्राप्य भऽ जाइत छैक। चाहे मोनसँ, चाहे जबर्दस्ती।'

बहिनक संग कोठली दिस जाइत गौरीक पयर लोथ भेल जाइत रहनि, ई के बाजि रहलि छलथिन? अपरोजकि मंगला, अबढङाहि मंगला! विस्मयसँ हुनकर मस्तिष्को सुन्न भेल जाइत रहनि।

मंगला फेर कहलथिन–'सहकौने हम तोरो रहियऽ गौरी! तों भरिसक बूझि नहि सकलऽ। तों विधवा भऽ गेलि रहऽ–छोट आ प्रिय बहिन। बड़ दया लागल। तोरा एतऽ अनलियैक। लबिते लागल जे पैघ गलती भऽ गेल। तोहर दर्प जागि उठलैक। तों सुन्दरि आ हम कुरूप। तों गुनगरि आ हम अबढङाहि। तों सभ ठाम हमर जगहपर अपनाकें राखिकऽ सोचऽ लगलऽ। तोहर चौधरियो बड़ सुन्नर छथुन। दुनूक स्वभावो मिलैत छऽ। हुनकर काज करबामे तोरा सुख भेटैत छलऽ। हम हुनकर सभ काज तोरे दऽ देलियऽ। हुनकर सन्तानोकें पोसबाक काज। ओइमे तोरा सुख भेटैत छलऽ। ऊपरसँ तों खौंझाइत छलीह, मुदा मोनमे

तोरा नीक लगैत छलऽ। हुनकर संग हमरा देखब तोरा नहि सहि होइत छलऽ। लालक जन्मक बाद तों स्पष्ट कहलऽ–'आब बस्स करऽ। कुकूर-बिलाड़ि जकाँ गज्जर-बज्जर नहि बिआ।' हम छोड़ि देलहुँ। तहियेसँ हुनकर घर जयबो छोड़ि देलहुँ। तैयो तोहर मोनक आगि नहि मिझयलऽ, मीरा ओइमे जरि गेलि। मुदा मीरा आइ नहि मुइल अछि। मुइल तऽ पहिने छलि। तोरापर हमरा कहियो कोनो क्रोध नहि भेल गौरी! स्त्रीजातिक यैह नियति छैक–हमरो, तोरो, मीरोक। सभ भोगलहुँ अपन-अपन भोग। तों अपनाकें अनेरो बेसी सन्ताप नहि दैह।'

गौरी जोरसँ कानि उठलीह। बहिनक छातीमे मूड़ी नुका चिकरि उठलीह जेना प्राण बाहर भऽ जयतनि। कनैत-कनैत कण्ठ बाझि गेलनि, मंगला पीठपर हाथ फेरैत रहलथिन। आस्ते-आस्ते क्रन्दनक संग हिलैत देह मंगलाक छातीपर निःशब्द स्थिर भऽ गेलनि। हुनका लगभग कोरामे उठा घरमे बिछौनपर पाड़ि देलथिन मंगला। आ, बड़ी काल धरि हुनकर देहकें ममत्वक स्पर्श दैत रहलथिन आ हाथ उठा ईश्वरकें कहलथिन–'एकर आत्माकें शान्ति दियौक दयामय!"

दयामय प्रायः नहि सुनलथिन। छौ मासक भीतर दोसर आघात। मीराक मृत्युक आघात बापकें नहि सहल गेलनि। स्वामीक मृत शरीर लग बैसलि मंगला साहस कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि छलीह आ स्तब्ध आ कातरि गौरीक कान्हपर ओहिना ममत्वभरल हाथ राखि कहने छलथिन–'हम छी अखन गौरी, अखन हम छी...'

मुदा वैह अन्त नहि छलैक। विधि बाम छलथिन जेना! आघातपर आघात। रामक कनियाँ असक्क छलथिन। पूरा मास। ससुरक श्राद्धमे जान लगा खटलीह। माछे-मासुक राति दर्द शुरू भऽ गेलनि। खा-पी सभ ऊठि गेल रहनि। घरेक लोक बाँकी रहनि। चमाइन अयलनि। रामक कनियाँक चीत्कारसँ सम्पूर्ण आङन– सम्पूर्ण गाम स्तब्ध रहि गेल। मंगला बेर-बेर पुतहुक लग जा कहथिन–'साहस करू कनियाँ, भगवानक नाम लियऽ, सभ ठीक भऽ जायत।' कनियाँकें कथूक होश नहि छलैक। चिकरब बन्दे नहि होइ, सम्पूर्ण शरीर ऐंठल जाइ। गामक सभ अनुभवी स्त्रीगण जमा रहथि। चमाइन अपन सभ अनुभव, सभ हुनर अजमा गेलि, मुदा कोनो लाभ नहि। डाक्टर लेल साइकिलसँ आदमी शहर दौड़ाओल गेल। सभ व्यर्थ। प्रात होइत-होइत एक टा नेनाकें जन्म दऽ रामक कनियाँ शान्त भऽ गेलीह।

बापक उतरी गरासँ उतरले रहनि कि स्त्रीक उतरी गरामे आबि गेलनि।

राम अपने संस्कार कयलथिन। मंगला बताहि जकाँ भऽ गेलीह। कोरामे रामक नेनाकें लेने सदिखन कनैत रहैत छलीह। श्राद्धक बाद एकदिन साहस कऽ

उठलीह आ नेनाकेँ गौरीक कोरामे दैत बजलीह— 'लहक एकरो, सभकेँ पोसलहक । एकर तऽ माइओ नहि छैक ।'

गौरी नेनाकेँ आपस मंगलाक कोरामे दैत बजलीह–'नै, आब नहि, आब थाकि गेलहुँ । तोहर तीनूकेँ पोसलियऽ । मीराक तीनू नेनाकेँ पोसि देलियनि । आब छुट्टी दैह...आब नहि पार लागत । नहि देखि हैत अइ बिनमाइक नेनाक मुँह । एकरा छोटकी कनियाँकेँ दहुन, ओ चिलकाउर छथि, ओ पोसि लेथिन एकरा ।'

मंगलाकेँ बाट सुझलनि । लालोक विवाह भऽ गेल छलैक–अठारहमेमे । बीसममे बापो बनि गेल छल । छौ मासक बेटा छलैक कनियाँक कोरामे । मंगला छोटकी कनियाँक कोरामे बच्चाकेँ दैत बजलीह— 'एकरो माय अहीँ बनियौक कनियाँ !'

नाम रखबाक गप्प उठलैक तँ राम हँसिकऽ कहलथिन–'भोरक सूर्यक संग आयल छथि । मायक जिनगीक दीप मिझा गेलनि तेँ की ? हिनक नाम रहऽ दियनु रवि...'

आ रविए नाम पड़ि गेलैक नेनाक ।

उनैस सय चौँतीसक भूकम्पक बाद हवेलीक नक्शा बदलि गेल छलैक ।

सभसँ पहिने खसल रहैक दक्षिणबरिया दोमहला । मीराक बर ओहीमे छलथिन सूतल । ऊठिकऽ पड़ाइयो ने सकलाह । तकर बाद खसलैक पछबरिया दोमहला । लोक कहैक–'लगलैक जेना कोठाक छत दू बेर झूकिकऽ जमीन छूलकै आ फेर सभ टा हड़हड़ाकऽ खसलैक ।' सभ पड़ा गेल रहैक ओहू कोठासँ, मुदा दुनू बहिन रहि गेलि रहथि— हवेलीक मालिक श्रीकान्त चौधरीक दुनू जेठकी विधवा बहिन— बड़की दाइ, छोटकी दाइ । मीरा, राम आ लाल कहथिन— बड़की पीसी आ छोटकी पीसी । रवि, मनोज कहनि— बड़की पीसी-बाबी आ छोटकी पीसी-बाबी । ओ दूनू रहि गेलीह । कोठाक भीतरे । छोटकीक जाँघपर एक टा पाया खसल रहनि– हिलि-डोलि नहि भेलनि । बड़कीकेँ कतहु कोनो चोट नहि लागल रहनि, मुदा चारूकात ईंटा माँटि सुर्खीक ढेरी लागल रहनि, कोम्हरोसँ निकलबाक बाटे नै रहनि । किलोल करैत रहि गेलीह, क्यो नहि सुनलकनि ।

ककरा सुनबाक होस रहैक ? दिनमे तारा निकलि गेल रहैक । आसमान गर्दासँ तोपल आ राति जकाँ लगैत दिन । चारूकात खसल घरक माटि, सुर्खी, ईंटाक ढेरी । मैदानसभमे दरारि फाटि गेल रहैक । दुनू दोमहले टा नहि, सभ घर खसि पड़ल रहैक । दलान-बङली सेहो भहरि गेल रहैक । सभ टा अन्न-पानि भड़ारक माँटि सुर्खीमे मिलि गेलैक । खाली चारूकात लोकक किलोल, घायलक आर्त्तनाद आ हेरायलक तक्काहेरी ।

तक्काहेरीमे पहिने छोटकी दाइक किलोल सुनलकनि लोक । कहुना ढेरी हँटा लग पहुँचल । पाया पयरसँ हँटायब मोसकिल छलैक–पूरा पाया नहि खसल रहनि, तैयो विशाल पायाक ओ टूटल अंश पर्याप्त भारी छलैक । जांघक हड्डी एकदम तोड़ि देने रहनि । फेर ऊठिकऽ नहि चलि सकलीह कहियो । घिसरी काटथि । जा धरि जिबैत रहलीह, घिसरिए कटलनि ।

बड़की दाइ मुदा एकदम बाँचि गेलि रहथि । छोटकी दाइक किलोल कम्म भेलनि तँ लोककेँ लगलैक जेना भीतर क्यो सोर पाड़ि रहल अछि । बड़ मेही सुर । आर माँटि हँटाओल गेल । बहुत भीतर जाकऽ बड़की दाइ भेटलथिन । अपन पेटार संग लेने बैसलि छलीह । भगबोकाल अपने पेटार उठा लेने रहथि आ ओही पेटारपर बैसलि किलोल कऽ रहलि छलीह ।

ओहूकालमे सभकेँ हँसी लगलैक । बड़की दाइक पेटार नामी छलनि । तहियासँ आर नामी भऽ गेलनि । ओकर कुंजी ककरो दैत नहि छलथिन । अपनो सभक सामने नहि खोलैत छलीह कहियो । नुकाकऽ एकसरमे, कने पल्ला उठा काजक चीज निकालि लैत छलीह । पेटार की रहनि, छोटछीन सन्दूकचे रहनि । ओहन भारी सन्दूकचीकेँ ओइ विपत्ति-कालमे घिसियौने अबैत रहथि बड़की दाइ । सभकेँ हँसी लागल रहैक ।

रविकेँ दुनू बहिनपर हँसी लगैक । कखनो दुनू पाकिटमे लताम भरने आबय रवि तँ दुनू बहिन घेरि लेथिन–'कने दे बौआ, एक टा पकलाहा लताम दे ।'

रवि बहाना करैक–'पाकल नहि छै । अहाँसभकेँ नहि खा हैत ।'

दुनू नेहोरा करऽ लगथिन–'दे ने तोँ, कने सिलौटपर थूरि देबैक ।'

रवि दोसर बहाना करय–'अइँठ छैक । अहाँसभ अइँठ खयबैक ?'

छोटकी दाइ घिसरी कटैत लग चल अबथिन–'कथीक अइँठ ? तोँ नेन्ना छैँ । तोहर अइँठ केहन अइँठ ?'

हारिकऽ लताम दऽ दैनि रवि । मुदा जखन कहियो माछ-मासु खाइत देखि लेथिन, घिसरी कटैत छोटकी पीसी-बाबी किलोल करऽ लगथिन— एम्हर आ रब्बी ! हमरे कोठलीमे चल आ...'

आ, लग अबैत देरी रिकबीसँ माछ उठा खाय लगथिन हब्बर-हब्बर ! रवि अवाक् । टोकैत कहनि— 'अहाँ माछ खाइ छिऐ छोटकी पीसी-बाबी ?'

—'चुप्प-चुप्प । क्यो सुनि लेतौक । ककरो ने कहियहिक ।'

कहबाक काजे नहि पड़ैक । केम्हरोसँ गंध पाबि बड़की पीसी-बाबी आबि जाथिन । हुनका टाङ छलनि, घुमै-फिरै छलीह । छोटकी जकाँ घिसरी कटैत किलोल नहि करैत छलीह । हाथसँ माछ छिनैत डँटैत छलथिन— 'अंतमे सभ मति नष्ट भऽ गेलौक तोहर ! विधवा भऽ माछ खाइ छऽ ?'

आ, घूमिकऽ बचलाहा माछ अपन मुँहमे दऽ देथि । रवि देखि लैनि— 'बड़की पीसी-बाबी, अहूँ ! अहूँ खाइ छिऐ ?'

बड़की दाइ नेहोरा करऽ लगथिन-'चुप्प, चुप्प रह बाउ ! एक टा पाइ देबौ ।' आ पेटारसँ एक टा पाइ बहारकऽ दैत छलथिन बड़की दाइ । एक टा पाइ भेटबाक लोभमे बेर-बेर माछक रिकबी लऽ ओही घर चल जाइत छल रवि ।

एक दिन गौरी पकड़ि लेलथिन-'छि:छि:छि:, बड़की दाइ छोटकी दाइ ! हद कयल अहाँसभ ! ऐना भऽ नेनासँ ठकिकऽ माछ-मासु भकोसैत छी ? बुढ़ारीमे मति हेरा गेल अहाँ दुनूक ! भरि जीवनक तपस्याकेँ एना नष्ट कयलहुँ ?'

भरि जीवन ठीके तपस्ये कयने छलीह दुनू बहिन । पहिल कहियो सासुरे नहि गेलीह । विवाहक यात्राक बाद वर घूरिकऽ दोबारा नहि अयलथिन । नहि जानि की भेलनि, क्षणमे छनाक भऽ गेलनि । सभसँ पैघ बेटी छलीह, पैघ जमींदारक । सासुर कहियो नहि जाय देलथिन बाप । भाइक राजमे आरो मान छलनि । बहिनक मुँह कखनो मलिन नहि देखऽ चाहैत छलाह श्रीकान्त । सभ सुविधा, मुदा तपस्विनीक जीवन छलनि बड़की दाइक । दूधसङ आलता मिलल रंग, पैघ आँखि, पातर ठोर आ सुरेबगर नाक । सादा कोरा धोतियोमे बड़की दाइ राजरानी लगैत छलीह— ऊँच आ बलिष्ठ काठी । जीवन मुदा तपस्विनीक छलनि— सभ टा व्रत-उपवास । सप्ताहमे मोस्किलसँ दू दिन अन्न, सेहो अछिंजलेमे रान्हल, पहिने अपने बनबैत छलीह । जहियासँ गौरी अयलथिन, ओही भनसामे इन्तजाम भऽ गेलनि । देहपर धोती छोड़ि दोसर कोनो वस्त्र नहि—जाड़-गर्मी, सर्दी-बोखार कथूमे

नहि । साँझ-परात स्नान । बारहो मास । गामसँ बाहर धारक पारो कहियो पयरो नहि देने छलीह बड़की दाइ !

छोटकी दाइ सासुर गेलि रहथि । एक टा नेन्नो भेलनि, मुदा जीलनि नहि । फेर स्वामियो नहि रहलथिन । बाप हवेलीमे बजबा लेलथिन । फेर ने कहियो क्यो सासुरसँ लेबऽ अयलनि आ ने बाप पठौलथिन । दुनू बहिनक एक्के घरमे डेरा भऽ गेलनि—एक्के रंग जीवन । संगे व्रत-उपास, संगे प्रातःस्नान, एक्के भनसामे भोजन । दुनू बहिनक नियति एक्के लिखा गेल रहनि ।

ओना, मुँह-कान फराक-फराक लिखल रहनि । छोटकी दाइ भुट्टि आ पिण्डश्याम छलीह—मायपर गेलि रहथि । बड़की दाइ अपन बापपर गेलि रहथि, श्रीकान्तो बापे सन रहथि । माय सन रहथि छोटकी दाइ आ गोवर्धन । नामी सेहो बापे सन छलाह— वैह छौफुट्टा शरीर आ पैघ ललाट, पैघ माथ आ लम्बा-लम्बा हाथ पयर । रंग ओहिना चमकैत आ आकृतिपर राजसी गरिमा । गोवर्धन भुट्ट रहथि, मुदा रहथि चाकर, बेस पहलवान । कुस्ती खेलाथि । गरदनि कन्हामे नुकायल रहनि आ डाँड़सँ ऊपर देह बेसी भारी रहनि । पाँचो भाइ-बहिनमे बड़ मेल रहनि ।

मुदा से नहि रहलनि । भूकम्पक बाद लगले बटवाराक विवाद ठाढ़ भऽ गेलनि । गोवर्धन अगुआ रहथि । हुनक स्त्री बुधियारि रहथिन, खटबास लऽ लेलथिन । गोवर्धन डेराइत भाइ लग पहुँचलाह— 'हमरा बासक दोसर जमीन दियऽ । ई डीह अलच्छ अछि, सभ टा नष्ट भऽ गेल । हम फराके बसब ।'

गोवर्धन विस्फोटक आशंकासँ सहमल छलाह । श्रीकान्त किछु काल छोट भाइक मुह तकैत रहलाह, फेर कहलथिन-'फराक बसबऽ ? बेस, अपनेसँ चुनि लैह डीह ।'

ओहो अपन डीह चुनि लेलनि । पछबारिए टोलमे, पुरान डीहसँ हँटिकऽ । बड़का बाड़ी रहैक, बेस ऊँच जमीनपर ।

सम्पत्तिक बँटबारा-बेरमे दुनू भाइ चौँकलाह । बहुत रास हैण्डनोट रहैक । महाजनसभसँ कर्ज लेने रहथिन जेठ भाइ । कहलथिन-'गोसबरिया जमीन बेचि कर्ज सधा लैह आ जे बचैत छऽ से बाँटि लैत जाह तीन ठाम ।'

गोवर्धन आ नामी गोङिआय लगलाह । दुनू भाइ कनफुसकी कयलनि । अपन-अपन कोठली गेलाह । फेर साहस कऽ संगे पहुँचलाह— 'से कोना हैत भाइ ? एतेक रास कर्ज ! हमरासभ नहि सकब । ओ तऽ अहीँ कयलिऐक, अहीँ

सधबियौक । अहाँ राजा छी । ओहने खर्चो अछि । हमरासभक खर्चे की अछि ? कथीक कर्ज हैत हमरालोकनिकेँ ?"

श्रीकान्त चौधरी विस्मयसँ अवाक् रहि गेलाह । दुनू भाइकेँ एतेक बजबाक साहस भऽ गेलनि हुनक सोझाँ ? क्रोधे बेसम्हार होइत मोनकेँ सम्हारैत कहलथिन–'बेस, कर्ज-बर्ज हमरे रहत । तोँलोकनि प्रसन्न रहऽ ।'

गाममे क्यो प्रसन्न नहि भेलनि अइ निर्णयसँ–'एना तऽ तबाह भय जयताह बड़का मालिक । एतेक रास गोसबारा कर्ज आ सभ टा ढनमनायल घर-द्वार । नव बनबऽ पड़तनि सभ ।' मुदा ककरो बजबाक साहस नहि भेलैक— ने गाममे, ने घरमे ।

नामी आ गोवर्धने डेराइत बाजल रहथि–'सभ टा तऽ भऽ गेल । मुदा बड़की बहिन, छोटकी बहिन छथि । हुनकर की हेतनि ?"

श्रीकान्त ओहिना अविचल भावसँ कहलथिन–'पूछि लहुन दुनूकेँ, जिम्हर रहबाक मोन होइनि ।'

बड़की दाइ सामने अयलीह । आँखि लाल रहनि आ शरीर आवेशसँ तनल–'ई दुनू राखत हमरा ? ई दुनू बहुक गुलाम । तोरालोकनिकेँ एहन साहस कोना भेलौक ? माय गोवर्धनक जन्म दितहि मरि गेलि रहय । दुनूकेँ पोसलियौक हम । फेर बाबूओ नहि रहलाह । जेठ भाइ बाप जकाँ रखलकौ दुनूकेँ । तकरा संग अन्याय करैत लाज नहि भेलौ दुनूकेँ ? आ, तोँ दुनू हमरा रखबेँ ? थू...!'

दुनू भाइ डरे चुप्प रहलाह— बहिनक तामस बूझल छलनि । छोटकी दाइ सुद्ध आ शान्त छलीह । बजौलकनि तँ कहलथिन–'भरिजन्म दुनू बहिन संग रहलहुँ । जतऽ बहिन रहतीह, ओतहि हमहूँ रहब ।'

श्रीकान्त प्रसन्नतासँ कहलथिन–'बेस, तखन सैह होअय ।'

गोवर्धन आ नामी प्रसन्न भऽ गेलाह । ओ दुनू अइ भारसँ बचऽ चाहैत छलाह । मुदा लोक-लाजे चर्चा करब आवश्यक छलनि । एकबेर फेर दबल स्वरेँ कहलथिन-'अहाँकेँ असगर भार भऽ जायत भाइ ! कही तऽ किछु अन्न-पानि हमरोलोकनि...'

बड़की दाइ फेर गरजलीह–'तोहर अन्न छूबौक हम ! एहन निर्लज्ज प्रस्ताव करबाक साहस कोना भेलौक तोहर ?...'

दुनू भाइ सिटपिटाकऽ विदा भेलाह ।

ओ बात सेहो बड़ पुरान भऽ गेल छैक । दुनू बहिन बड़ बूढ़ि भऽ गेलि छलीह आ मतिभ्रममे पड़लि चोराकऽ माछ-मासु खा लैत छलीह ।

गौरी पकड़लथिन तँ तीन बेर नहबौलथिन, दस हजार फज्जति कयलथिन । मुदा फेर वैह चालि । रविकेँ सेहो ओ खेल नीक लगैक । रिकबीमे माछ-मासु लऽ हुनके देखा-देखा खाय लागल आ दुनू देखिते नेहोरा करऽ लगथिन–'कने हमरो दे बाउ...ककरो कहिअहिक नहि ।'

कोठली दुनू बहिनक एक्के रहनि । पुबरिया घरक कोठली— फूसक । भूकम्पक बाद बनल रहैक । खसलाहा कोठाक नीक-नीक खम्हा लागल रहैक ओइमे आ चारमे रहैक चुनल-चुनल बाँस । दरबज्जा-चौखठि कोठे महक, खूब पैघ, तेहने मजगूत । दू टा कोठली छैक ओइ घरमे । एक टामे दुनू बहिन- छोटकी दाइ, बड़की दाइ रहैत छलीह आ दोसरमे श्रीकान्त चौधरी अपने । भूकम्पक बाद किछु दिन सभटा परिवार एही एक टा घरमे रहनि ।

फेर पछबरिया घर ठाढ़ भेलनि–पक्काक । ओहूमे दू टा कोठली रहैक–एक टामे रहथि मीरा आ दोसरमे मीराक नेनासभक संग मंगला आ गौरी । राम आ लाल दलानेमे रहैत छलाह । दलान कोन, पुबरिया घरक ओसारा ! मीरा छतक कड़ीसँ फाँसी लगा लेलनि तँ किछु दिन ओइ कोठलीमे क्यो नहि रहलैक । फेर रामक विवाह भेलनि । वैह कोठली भेटलनि । ओहो कनियाँ नहि बचलीह–तँ कोठली एकदम अलच्छ भऽ गेलैक । ओइमे वस्तु-जात राखि देल गेलैक ।

बाप आ कनियाँक मुइलाक बहुत बाद राम एक टा आर घर बनौलनि–पक्का ! पूरा पक्का नहि, देबाल पक्का रहैक, ऊपरसँ टीन । उतरबरिया कातमे । ओइमे दू टा कोठली रहैक । एक टामे राम अपने रहैत छलाह आ दोसरमे लाल आ हुनक परिवार । रवि नेन्नामे लालकाकिए लग सुतैत छल, हुनके दूध पीबि पैघ भेल आ कने पैघ होइत देरी ओकरो चौकी पछबरिया घरक कोठलीमे चल गेलैक । मोहन कालेजमे पढ़ऽ लेल दरभंगा चल गेल छल आ विक्रम हुनके डेरामे रहि स्कूलमे पढ़ैत छल, गंगाक विवाह भऽ गेलैक एगारहममे आ ओ सासुर चल गेलि । पछबरिया घरक ओइ कोठलीमे मंगला आ गौरीक संग रवि आ मनोज— लालक बेटा मनोज ! मनोजोसँ छोट तीनू बेटे छलनि–लल्लू, बौआ आ छोटकू । तीनू मायक संग सुतैत छल ।

मनोज आ रवि सभ राति कहैक–'बाबी, खिस्सा कहू ।' आ मंगलाक खिस्सा शुरू भऽ जाइनि । नहि जानि, कतेक खिस्सा अबैत छलनि । जा धरि दुनू

सूति नहि रहय, मंगला खिस्सा कहिते जाथिन । कतेको राति गौरी डँटबो करथिन–'मुँह नै दुखाइत छऽ तोहर मंगला ! धन कही अइ बकबकके ँ ! छौंड़ादुनूके ँ बहसौने जाइत छहक ।'

मंगला हँसिकऽ टारि देथिन । दुनू छौँड़ा खिसिया उठय । ओकरा छोटकी बाबी नहि सोहाइ । दिन भरि खटपट— ई नहि कर, ओ नहि कर । रातियोके ँ चैन नहि— खिस्सा बड़ भेलैक, आब सूत ! डाही बुढ़िया !

बाबीक दुलारू छल दूनू । लालकाकियो रवि लेल जान दैत छलथिन- मनोजोसँ बेसी । कतेक बेर गामक लोक टोकि दैनि–'क्यो कहत जे अहाँक अपन बेटा अछि मनोज ! प्राण अँटकल रहैत अछि रविपर । जेना वैह अपन पेटक जनमल होअय !'

पेटसँ जन्म नहि देने छलथिन लालकाकी, मुदा स्नेह अपन मायसँ बेसी देने छलथिन । पहिने रविके ँ दूध पिया तखन मनोजके ँ पियबैत छलथिन । भनसामे पहिल थारी सभ दिन रविके ँ दैत छलथिन ।

राम निश्चिन्त छलाह । कनियाँक मुइलाक बाद एक टा भारी चिन्ता माथपर रहनि– के देखतैक अइ बिनमायक नेनाके ँ ? लालक कनियाँ ओ चिन्ता दूर कऽ देने छलथिन ।

रामके ँ अधिक काल सोचिकऽ आश्चर्य होइ छलनि जे कोना कनियाँ अपन मृत्युक बात बूझि गेलि छलैक । जहियासँ रवि पेटमे अयलैक आ शरीर पसरब शुरू भेलैक, अधिक काल पेटपर हाथ फैरैत कहैक–'ई हमर जान लऽ कऽ रहत ।'

राम डाँटि देथिन–'केहन अशुभ बात बजैत छी ! पहिल सन्तान थिक अपन । ई रक्षक हैत कि अहाँक प्राण लेत ?'

ओ ओहिना हँसैत कहैक— 'सत्ते कहैत छी हम ! अहाँ तऽ सभ टा देखब । सन्तानोके ँ आ आरो बहुत-किछु । मुदा हम नहि रहब । हम नहि देखि सकब सभ किछु । अहाँ तऽ दोसर लैए आनब ।'

राम एकदम बिगड़ि जाथिन–'अल्ल-बल्ल जुनि बाजू । दोसर आनऽवला पुरुष नहि छी हम ।'

कनियाँ तैयो हँसिते कहैक–'सभ पुरुष अहिना बजैत अछि । मुदा हम अधलाह नहि मानब । लऽ अबस्से आनब । बिनमायक नेन्नाके ँ के देखतैक ?...'

'हरगिज नहि ।' राम जोरसँ चिचिया उठल छलाह ।

आ, सत्ते ओ नहि अनलनि ककरो । लालक कनियाँ माय बनलथिन रविक । ओ पूजा-पाठ आ अध्ययन-चिन्तनमे लागि गेलाह ।

मायके ँ मुदा चिन्ता रहनि । एक बेर बुझौलथिन–'एतेक कम्म वयसमे एना दुनियाँ सँ मुँह नहि मोड़ऽ राम ! वयसे की भेल छऽ एखन ? बाइसक छलऽ तऽ कनियाँ मुइलथुन । रवि तीन बरखक भेल । लालक कनियाँ सम्हारि लेलथिन । मुदा, अपना बारेमे सोचऽ, बड़की टा जिनगी सामने छऽ...। लोकके ँ बिसरैत देरी होइ छै ?"

रामके ँ मायक बातपर हँसी लगलनि । माय सभ दिन अनके बारेमे सोचैत रहलैक आ हुनका अपना बारेमे सोचऽ कहि रहलि छलनि । कहलथिन–'नै माय, आब रहऽ दे एहिना ! रविक माय नहि बिसरै छथि...। फेर रवि अछि, तो ँ सभ छे ँ, आर की चाही हमरा ?'

ओ ओहिना रहि गेला । बापक किछु स्वभाव आयल छलनि राममे । भोरे उठैत छलाह । एक घण्टा टहलि अबैत छलाह । ओहिना हाथमे छड़ी आ नोसिदानी । बाप जकाँ हुनकासँ क्यो डेराइत नहि छलनि । सभ हँसि-हँसि प्रणाम करै छलनि, दुख-सुख कहैत छलनि । टहलिकऽ घुरैत छलाह तँ स्नान कऽ पाठ करऽ लगैत छलाह- कखनो वाल्मीकि रामायण, कखनो महाभारत, कखनो गीता । गृहस्थीक चिन्तासँ लाल मुक्त कऽ देने छलथिन । खेत-पथार उपजा-बारी सभ टा देखैत छलथिन । गाम मौजे सभ ठाम वैह जाइत छलथिन । रामके ँ कोनो फिकिर नहि रहैत छलनि ।

भोजनक समय बापे जकाँ निश्चित छलनि— दस बजे नहि, बारह बजे । एक्को मिनट एम्हर-ओम्हर नहि । बाप जकाँ भोजनक उपरान्त सुतैत नहि छलाह । अपन कोठलीमे पड़ल-पड़ल पोथी उनटबैत रहैत छलाह— संस्कृत...हिन्दी...अंग्रेजी... बंगला...! सभ भाषाक पुस्तक । धर्मग्रन्थ, कथा-उपन्यास, निबन्ध-चिन्तन, सभ किछु छलनि हुनकर आलमारीमे । बाप यत्नपूर्वक बी.ए. तक पढ़ौने छलथिन । लाल तँ मैट्रिक पास नहि कऽ सकलाह ।

रवि अधिक काल बापक बिछौनपर चढ़ि जाय-'अहाँ एकसर की सब पढ़ैत रहैत छिऐ बाबू ? हमहूँ पढ़ब ।'

राम संगे सुता लैत छलाह बेटाके ँ–'अबस्स पढ़ा देब । मुदा ईसभ पढ़ऽ लेल कने पैघ होबऽ पड़त । अखन ई श्लोक पढ़ू— शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं...।'

रवि दोहराबऽ लगैत छल । स्मरण-शक्ति तीव्र छलैक । दुइए बेर दोहरयलाक बाद कहैक-'आब सुनि लियऽ बाबू !'

रामक मोन गह्वरित भऽ जाइनि । बेटा तेज छनि, नाम करतनि । एकर माय रहितैक तँ ओकरो मोन...

मुदा, रवि बेसी सोचऽ नहि दैनि-'की सोचऽ लगलहुँ ? आरो पढ़ाउ ! अंग्रेजी पढ़ब आब...'

आ बाप घोकबऽ लगलथिन-'बाबा ब्लैकशिप'

रवि बीचेमे टोकि दैनि-'ई अबैए बाबू ! ओही दिन तऽ सिखौने रही । सुनि लियऽ...'

राम फेर शुरू करथि— 'ट्विंकल-ट्विंकल लिटल स्टार...'

रवि फेर टोकि दैनि-'अहाँकें तऽ किछुओ मोन नहि रहैत अछि । ईहो तऽ सिखौने रही...सुनि लियऽ...

रामक छाती गर्वसँ फूलऽ लगनि । रविकें किछुओ नहि बिसरैत छलैक । एकबेर सुनलक कि कण्ठस्थ ।

गामक पण्डित जी तँ अवाके रहि गेलथिन । गाम भरिकें कथा कहैत छलथिन पण्डित जी । एक दिन भरल सभामे सभ गामवलाकें ललकारलथिन-'यैह श्लोक पढ़ि रावण शिवजीक पूजा करै छल । बड़ कठिन छैक एकर उच्चारण । एतेक पढ़ल-लिखल बाबू-भैया छी, करू एकर सही उच्चारण तऽ मानि जाइ ।' आ पंडितजी पढ़ऽ लगलथिन— 'जटा-कटा...'

भरि गामक लोक सकदम्म छल । रवि हाइ स्कूलमे गेले रहय तावत । ऊठिकऽ ठाढ़ भेल । कहलकनि-'हमरा दियऽ पोथी ।'

आ, धड़-धड़ तीन बेर स्पष्ट स्वरमे पढ़ि देलकनि आ फेर पोथी पंडितजीकें दैत कहलकनि-'आब ओहिना सुनि लियऽ-

'जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि...'

पंडितजी ऊठि छातीसँ लगा लेलथिन ।

से बादक गप्प छैक । तहिया रवि हाइ स्कूलमे रहय । ओकर प्रतिभा तँ बच्चेसँ स्पष्ट होबऽ लागल रहैक ।

मुदा, रहय बड़ उकट्ठी । भरि गामकें आजिज कऽ दैक । सभक बाड़ी-झाड़ीक आम-लताम सुड़रि लैक । लगासँ झाँटि दैक । दोसराइतमे रहैक कविता, उतरबारि टोलक वसन्त ठाकुरक बेटी कविता । दुनूकें धार-पोखरि साँप-बीछ कथूक डर नहि रहैक । ने कोनो समयक ठेकान । भोर-दुपहरिया-साँझ— कखनो कोम्हरोसँ प्रकट भऽ जाय दुनू कोनो टोलमे, आ टोलमे आफत मचि जाइ ।

भरि गाममे युगल जोड़ी विख्यात रहैक— रवि आ कविता । कविता आ रवि ।

भालसरीक गाछ तर कविता पहिनहिसँ ठाढ़ि रहैक— आने दिन जकाँ ।

रवि स्कूल दिससँ बस्ता लेने दौड़ल आयल । बस्ता कविताक हाथमे दऽ पैघ-पैघ ढेपा फेकऽ लागल । लाल-लाल भालसरी बड़ ऊँचपर छलैक, निशाना बहकि जाइ । दौड़िकऽ सामनेक टाटसँ झीकि एक टा झटहा बनौलक आ फेकलक जुमाकऽ पाकल भालसरी दिस । पाकल-संग काँचो झड़लैक । लाल-लाल दू टा पाकल भालसरी कविताकें दैत रवि कहलकै-'ले, खो ।'

कविता एक टा भालसरी लैत कहलकै-'एक टा तोहूँ खो ।'

रवि गप्पदऽ भालसरी मुँहमे राखि झटहा फेकऽ लागल । कविता रोकलकै-'छोड़ भालसरी आइ । आइ नामी बाबाक बाड़ीमे चल । बड़ लताम पाकल छै ।'

दुनू नामी बाबाक बाड़ीमे नुकाकऽ बैसल । डम्हायल-पाकल लताम लुधकल छलैक । पहिने कविता नीचेमे ठाढ़ि रहलि । रवि दू-चारि टा लताम खसा देलकै । बाँकी अपने पेन्टक पाकिटमे कोचऽ लागल । कविताकें नहि रहि भेलैक । ओहो गाछपर चढ़ि गेलि आ लागल दुनू डारिपर बैसि दकड़ऽ ।

कोम्हर बाटे नामी बाबू बाड़ीमे अयलथिन, से दुनूमे क्यो नहि देखलकै । नामी बाबू गाछ लग आबि गरजलाह-'के ? के अछि गाछपर ?'

रवि सकपकायल । कविता डरे ओकर पाँजरमे सटकि गेलैक । पड़यबाक बाट लग बाबा ठाढ़ छलथिन । साहस कऽ बाजल- 'हम छी बाबा रब्बी...

-'आ संगमे के छऽ तोहर ?' नामी बाबू पहिनेसँ बेसी जोरसँ गरजलाह ।

कविता डरे आर सुटकि गेलैक रविक पाँजरमे । रवि कहुना साहस करैत बाजल–'कविता छै बाबा !'

–'ओ ! दुनू युगल जोड़ी छी । उतर, उतर नीचाँ । आइ दुनूक टाङ-हाथ तोड़ि दैत छियौक । हमर बाड़ीमे पैसिकऽ हमर लताम खयबाक साहस कोना भेलौक तोरालोकनिकेँ ?' नामी बाबू हाथ महक लोटा आक्रमणक मुद्रामे तानि लेलथिन ।

रवि पाँजरमे सटलि कविताकेँ संग लेने नीचाँ दिस घुसकैत बाजल–'लतामक गाछ तऽ गोसबरिया होइत छैक बाबा, चाहे ककरो बाड़ीमे रहौक ।'

नामी बाबू हाथ महक लोटा फेकलथिन । तावत कविताकेँ संग लेने नीचाँ कूदि गेल छल रवि । गाछक डारिसँ टन्न दऽ टकराकऽ लोटा बाड़ीक कोड़लाहा माँटिपर खसलैक । नामी बाबूक झपटबासँ पहिनहि दुनू छौंड़ा-छौंड़ी लंक लगौलक ।

मैदान लग पहुँचैत कविता हकमऽ लगलैक । रवियोक साँस खूब तेज भऽ गेल छलैक आ ओ घामे-पसेने तर भऽ गेल छल । रौदक कारणेँ आ रौदमे अपस्याँत दौड़लाक कारणेँ मुँह लाल भऽ गेल रहैक । तैयो ओ प्रसन्न छल आ मैदानक घासपर बैसिकऽ जोर-जोरसँ हँसऽ लागल–'बाबाकेँ लोहछा देलियनि आइ । अखन धरि तामसे बाड़ीक चेपासभकेँ लतियबैत हेताह ।'

कविता तखनो डेरायलि छलैक–'नामी बाबा कहि देथिन बाबूकेँ । जान लऽ लेताह हमर । तोरा तऽ क्यो ने किछु कहतौक तेँ निश्चिन्त हँसै छेँ । बापक दुलरुआ छेँ ।'

रवि तमसा गेल–'वाह रे डेरबुक ! एतेक डर छलौ तऽ किएक भकोसलेँ लताम हब्बर-हब्बर ! नीचोमे रहि नहि भेलौक, झट गाछेपर चढ़ि गेलेँ । पाकल लताम देखि लेर चूबऽ लगलौक ।'

कविता तमसा गेलैक–'तोरा जकाँ जिहुलाह नहि छी हम । सभक बाड़ी-झाड़ीमे साँझ-दुपहरिया हुलुक-बुलुक करैत रहैत छेँ । अपना संग-संग हमरो चोरनी बनबैत छेँ ।'

रवि एकदम तरङि गेल–'तऽ नहि आ हम्मर संग । क्यो खोशामद करऽ जाइत छौ ? स्कूलसँ घुरबाक बेरमे किएक ठाढ़ि रहैत छेँ पहिनहिसँ बाट तकैत ? अपना तऽ ने पढ़ऽ-लिखऽसँ मतलब छौक, ने काज-धाजसँ । खाली नीक-नीक खयबा लेल परान ललचैत रहैत छौ । हम तऽ पढ़ितो छी, खेलाइतो छी, तोरा जकाँ खाली चोरिविद्यामे नहि रहैत छी हम ।'

कविताक मुँह कनौन-सन भऽ गेलैक । मुँह फुलाकऽ बाजलि–'तऽ कऽ ले ने कट्टीस ! किएक रहैत छेँ चोरनीक संग ?'

रवि बिच्चेमे तरङैत बाजल–'हँ, कट्टीस, हजार बेर कट्टीस ।' पाकिटसँ बाहर कऽ सभ टा लताम जुमाकऽ दूर फेकि देलकै आ दौड़ैत गाम दिस चल गेल ।

ओइ मैदानमे दुपहरियाक जरैत रौदमे ठाढ़ि कविता कानऽ लागलि । कनिते ओहो गाम दिस विदा भेलि । मैदानसँ दू टा रास्ता गाम दिस जाइत छलैक । एक टा मैदानक ठीक सोझे उत्तर दिस । कविता ओही बाटपर विदा भेलि । रवि दोसर बाट दने गेल छलैक । मैदानसँ रस्ता पश्चिमो दिस जाइत छलैक आ ओहो बाट सोझे गाम दिस जाइत छलैक- पश्चिम मुहेँ । रवि ओही बाटे गेल छल । ओकर घर पछबारि टोलमे छलैक ।

कविताक घर छलैक उतरबारि टोलमे । मैदानक बाद ठीक बाटक कातमे अपर प्राइमरी स्कूल छलैक । माँटिक भीत आ चारपर खढ़ । स्कूलक बाद छलैक गाछिए गाछी, खाली कलमी आमक गाछी । तकर बाद बँसबिट्टी आ बँसबिट्टीक बाद उतरबारि टोल ।

कविता कनिते घर दिस बिदा भेलि छलि । बँसबिट्टीसँ आगू अबिते अपन घघरी उठा मुँह-कान पोछि लेलक आ बड़ गम्भीर भऽकऽ आङनमे पैसलि । ओकर बाप वसन्त पुबरिया ओसारापर चौकीपर बैसल छलाह । देखिते कूदिकऽ आङनमे आबि गेलाह–'कहाँ गेलि छलेँ ?'

कविता बापक प्रचण्ड रूप देखि सकदम्म भऽ गेलि । मुँहसँ बकार नहि बहरयलैक । ओकरा गुम्म देखि बापक क्रोध बढ़ि गेलैक–'अखन देखू ने लच्छन जेना एहन सद्ध क्यो हेबे ने करय दोसर ? आ दुपहरियामे एक टा नढ़ेर छौंड़ा संगे गाछी-बिरछी बौआयति, गाछ-वृक्ष चढ़ति । आ, हमरा सभसँ गारि-सराप आ उपराग सुनाओत । आइ टाङ तोड़िकऽ घर बैसा दैत छियौक तोरा ।'

वसन्त सत्ते टाङ तोड़बाक व्योँत करऽ लगलथिन । जाहि पीढ़ीपर बैसल छलाह, तकरे उठा डेङबऽ लगलथिन । दुइए पीढ़ी लगलैक, ताहीमे किकिया उठलि कविता । तावत माय दौड़िकऽ बीचमे आबि गेलैक–'बताह भेल छी अहाँ ! दस वर्षक बेटी अछि । हाथ-पयर तोड़ि देबैक तऽ के लऽ जयतैक अपना घर ?'

वसन्तक हाथ ठमकि गेलनि । पीढ़ी हाथसँ खसि पड़लनि । किकिआइत कविताकेँ माय छातीसँ सटौने घर लऽ गेलथिन ।

पीढ़ी समधानिकऽ लागल छलैक । एक टा पीठपर आ दोसर ठेहुनपर । पीठ फूटि गेल छलैक आ शोणित छलछला गेल छलैक । ठेहुनपर बड़का टा टेटर बहार भऽ गेल छलैक । मायक संग कोठलीमे अबिते जमीनपर ओंघरा गेलि कविता ।

वसन्त ओहिना अवसन्न ठाढ़ छलाह आङनमे । कविताक माय ठीक कहैत अछि । बेटी दस वर्षक भेलि । नवम छैके, दमस शुरू होबऽमे कतेक देरी लगलैक ? कन्यादानक जोगार कहुना करहि पड़त । एना बाड़ी-झाड़ी बौआयति तँ नाक कटि जायत कहियो ।

कोठलीमे माँटिपर ओंघरायलि कविताकेँ पीढ़ीक मारिसँ बेसी रविक बातक टीस छलैक–'हमरा चोरनी आ जिहुलाहि कहलक ! जकरे ले' चोरि करू सैह कहय चोरा !'

चोर रवियोक मोनमे छलैक ।

ओइ दिन कविताकेँ डाँटि सभ टा लताम फेकि गामदिस पड़ा गेल छल। बाटेमे लागल छलैक जे अन्याय भऽ गेलैक, घूरि जयबाक चाहिऐक । मुदा, एक टा छौंड़ी लग एना हारि मानिकऽ घुरबामे ओकरा लाज भेलैक । ओ दौड़ल आङन चल गेल । लालकाकी देखिते टोलककै–'ई तोहर स्कूलसँ घुरबाक बेर छऽ ? कहाँ छलऽ एतेक काल ?'

रवि गुम्म ठाढ़ रहल । काकी लग अयलैक–'मुँह किएक एतेक लाल छऽ ? जर तऽ नहि छऽ !'

लालकाकी आरो लग आबि देह छुलकै । आश्वस्त होइत बजलैक–'देह तऽ ठंढा छऽ । खाली रौदमे बौअयलासँ माथ गर्म छऽ । चलऽ, खा पी लैह । बस्ता की भेलौक ?'

ओकरा धक दऽ मोन पड़लैक जे बस्ता तँ नामी बाबाक बाड़ीमे माँटिएपर पड़ल रहि गेलैक ! क्यो उठाकऽ लऽ गेल होयतैक ।

मुदा से नहि भेलैक । साँझ खन वैह बस्ता देखबैत बाबू पुछलथिन– 'कहाँ छोड़ने छलऽ ई बस्ता ?'

रवि निडर जकाँ बाजल–'जतऽ अहाँके भेटल ।'

राम कने तमसाइत कहलथिन–'हमरा नहि भेटल अछि, नामीकाका दऽ गेलाह । किएक तोड़लहुन हुनकर लताम ?'

रवि बापक दुलरुआ छल । कने अगराइत बाजल–'तोड़लियनि तऽ की भेलनि ? लतामे छलनि की सोना-चानी ? आ, फल-फलहारी तऽ सभक गाछीक गोसबरिये होइत छैक । सैह तऽ कहलियनि बाबाकेँ ! झट लोटा चला देलनि । लगैत तऽ कपारो फूटि जाइत ।'

रामकेँ हँसी लागि गेलनि । पीठपर दुलारसँ थापर मारैत कहलथिन–'बड़ पाजी भऽ गेल छेँ तोँ ! बाबाकेँ क्यो एहन बात कहैत छैक ?'

रवि आरो छिड़िआइत बाजल–'कोन खराप बात कहलियनि हम ? लताम गोसबरिया नहि छैक तऽ की खाली हुनके लगाओल छनि ? आ हुनके छनि तऽ की भेलैक ? दस टा खयने छियनि, अप्पन बाड़ीक बीस टा घुरा देबनि । हम्मर कप्पार फुटैत तऽ कोना घुरबितथि ओ ?'

बेटाक बुझनुक सन गप्पपर रामकेँ बड़ हँसी लगलनि । बापकेँ हँसैत देखि रविकेँ कविता मोन पड़लैक । ओ ठीके कहने छलैक–'तोरा तऽ क्यो ने किछु कहतौक, मुदा बाबू जान लऽ लेताह हम्मर ।' नहि जानि, की हाल भेलैक बेचारीक ? ओकर बाप बड़ कसाइ छैक । छड़पिटा देने हेतैक । नामीबाबा अबस्से उपराग देने हेथिन । काल्हि पूछि लेबैक कवितासँ ।

मुदा, पुछबाक अवसर नहि भेटलैक । प्रात भेने स्कूलमे छुट्टी होइते पड़ायल भालसरीक गाछ तर । कविता नहि छलैक । ढेपा-झटहा फेकैत हाथ दुखा गेलैक । काँच-पाकल भालसरीक पथार लागि गेलैक । कविता नहि अयलैक । रौदक धाहीसँ माथ चनकऽ लगलैक । भालसरीक छाया ओइ धाहीसँ बचा नहि सकलैक । तैयो ओ गाछे तर झटहा फेकैत ठाढ़ रहल । आङनसँ खबासिन अयलैक आ ओकरा पकड़ि लालकाकीक लग आङन लऽ गेलैक ।

मुदा कविताकेँ के पकड़ि कऽ लऽ गेलैक ? दिन-सप्ताह आ मासो बीति गेलैक, कविताक पता नहि लगलैक । ओकर आङन जयबाक साहसे नहि भेलैक । झगड़ा कऽकऽ गेल छलैक, कोन ठेकान, अङनामे फेर बेइज्जति कऽ दैक ! खटखटाहि छैक छौँड़ी । तामसमे बिढ़नी जकाँ बीन्हि लैत छैक ।

ओकरा बड़ असुविधा होबऽ लगलैक । भालसरीक गाछपर झटहा फेकैत छल तँ बस्ता लेने कविते ठाढ़ि रहैत छलैक । आमक गाछक यदि टिकुला तोड़ैत

छल तँ कविते बिछैत छलैक आ मन्दिरक सिलौटपर पीसिकऽ बढ़ियाँ चटनी बनबैत छलैक, घरसँ पुड़ियामे नुकाकऽ नोन-मरचाइ अनैत छलैक । जखन डबरामे हेलिकऽ भेँटक फूल बाहर करैत छल, तँ ओकर डण्टीकेँ सोहि-सोहिकऽ माला कविते बनबैत छलैक । वर-कनियाँक खेलमे ओकर कनियो वैह बनैत छलैक, रुस्सा-फुल्ली करैत छलैक, मनौन कयलापर मानियो जाइत छलैक ।

मुदा ओइ दिन जे बिगड़िकऽ गेलैक से गामेसँ जेना निपत्ता भऽ गेलैक कविता !

रविकेँ नहि रहि भेलैक । एक दिन स्कूलसँ अबिते बिनखयने-पीने कविताक आङनमे पैसि गेल । भनसाघरमे माय लग छलैक कविता । ओकरा देखियोकऽ बाहर नहि अयलैक । बाहर अयलैक ओकर माय-'की लेब बौआ ?'

-'किछु नहि काकी ! कविताकेँ बजबऽ आयल छलिऐक खेलाय बास्ते ।'

-'आब नहि जैत बौआ ओ ! अही शुद्धमे ओकर बियाह छैक । अहाँ खेलाउ गऽ । ओकरा छोड़ि दियौक । ओकरा आब खेल-कूदसँ कोन मतलब ? चारि टा लूरि सीखत तऽ यश देत लोक हमरा ।'

रवि अवाक् रहि गेल । कविताकेँ आब खेल-कूदसँ मतलब नहि छैक । बड़का पुरखिन बनि गेलि, बियाह हेतैक । ओकरे बतारी तऽ छैक ! लालकाकी कहैत छलैक जे दुनू एक्के दिन जनमल छल । भोरमे रवि आ साँझमे कविता । बारह घंटा छोट छैक ओकरासँ । आ, तकर बियाह हेतैक !

एही बातपर बाबी सङे अड़ि गेल रवि-'कविताक बियाह नहि हेतैक बाबी !'

-'किएक नहि हेतैक ? सभ टा ठीक भऽ गेलैक । सिद्धान्ते हैब बाँकी छैक । बियाह किएक रुकतैक ?'

-'हम रोकबैक !' रवि दृढ़तापूर्वक बाजल-'ओकर बियाह कोना हैतैक अखन ? हमरे बतारी तऽ अछि ! हमरा सङे के खेलायत तखन ? नै तऽ हमहूँ बियाह करब ?'

बाबी हँसऽ लगलैक-'तोहूँ बियाह करबेँ ? तोँ अखन नेन्ना छेँ, कने आर पैघ भऽ ले, खूब धूमधामसँ बियाह हेतौक ! मुदा कविता छैक छौँड़ी, दस वर्षक भेलैक, ओकर बियाह तऽ आवश्यके छैक ।'

रवि जिद करऽ लगलै-'नै, ओकर बियाह हेतैक तऽ हमहूँ बियाह करब !

हम ओकरेसँ बियाह करब । वर-कनियाँक खेलमे कतेक बेर बियाह भेल अछि ओकरा सङ ।'

'पागल !' बाबी हँसलैक-'ओ खेल छलै । तोहर ओकर बियाह कोना हेतौक ? एक्के गामक गप्प । बहिन जकाँ छौक तोहर ! आ, कहाँ तोँ आ कहाँ ओ ! ओकरासँ बियाह करबेँ तऽ कनिये जब्बर लगतौक । कने पैघ भऽ जो, बियाह बादमे करा देबौ तोहर...खूब सुन्नरि कनियाँसँ ।'

-'तखन ओकरो बियाह नहि हेतैक ! नौ वर्षक छौँड़ाक बियाह नहि हेतैक तऽ नौ वर्षक छौँड़ीक बियाह कोना हेतैक ? ओकर बियाह हमरा सन छोट वरसँ नहि हेतैक तऽ की बूढ़ वरसँ हेतैक ?

बाबी ओहिना हँसैत कहलकै-'होइ छै बौआ, बूढ़ो वरसँ होइत छैक बियाह । हम्मर बियाह भेल छल तऽ कतेक टा रही- बूझल छौ ? मात्र पाँच वर्षक । आ, तोहर बाबा छलखुन द्वितीय वर । पहिल कनियाँ मरि गेल रहनि । पचीसम वयस रहनि । कोबरमे बैसल रहथुन तऽ हमहूँ जाकऽ कोरामे बैसि रहियनि-'चौधरी, हमरो पान-सुपारी दियऽ ।' सभ पकड़िकऽ लऽ आनय । माय छाती पीटऽ लागल । लोकसभ कुचेष्टा करय । मुदा, हम बेर-बेर कोबरेमे हुनके लग जा बैसियनि ।

बाबीकेँ बड़ हँसी लागि गेलैक पुरना बात मोन पड़लापर । रवियोकेँ तहिना हँसी लगलैक । पुछलकै-'अहाँ बाबाकेँ चौधरी कहै छलियनि आ ओ अहाँकेँ की कहैत छलाह बाबी ?'

बाबी ओहिना हँसैत कहलकै- ''कहिओ की किछु कहलनि ? माय-बाप नाम देने छलाह-मंगला । सासु नाम देलनि गुणमन्ती बहुरिया । गामक लोक कहऽ लागल मीराक माय । तोहर जेठकी पीसीक नाम छलनि मीरा । हमरोसँ पहने विदा होयबाक जल्दी छलनि हुनका, तोँ तऽ देखनहुँ ने छहुन । तोहर बापोसँ जेठ छलीह । हँ, तऽ तोहर बाबाक गप्प कहैत छलियौक । हुनकासँ कहियो कि मुँहा-मुँही गप्पो भेल ! धीया-पूता भेल । समय बितैत गेल । सुतली राति घर जाइत छलियनि । मुदा बुढ़ारीमे नहि जानि की भेलनि । हरदम रट मारैत छलाह- 'सुनै छी, कतऽ गेलहुँ ?' हम तऽ कतहु नहि गेलहुँ, अपने छोड़ि गेला सभकेँ ।'' बाबीक हँसैत आकृति परिवर्तित भऽ गेलैक आ दूनू आँखिमे नोर भरि गेलैक ।

रवि अइ परिवर्तनपर अवाक् रहि गेल । बाबी नहि जानि की-सभ कहि गेलैक । ओ तऽ कविताक बियाहक गप्प करऽ चाहैत छल आ बाबी कोनदन गप्प

लऽकऽ बैसि गेलैक आ फेर कानहु लगलैक । बाबीक देह डोलबैत कहलकै रवि–'कनै किएक छी बाबी ? की भेल ?'

–'किछु ने बाउ, कहाँ किछु भेल ? आँखिमे किछु गड़ि गेल अछि, अनेरो नोराइत रहैत अछि । मुदा अहाँक तऽ हँसबा-खेलयबाक दिन अछि । जाउ, खेलाउ गऽ ।'

–'ककरा संग खेलाउ बाबी ? कविताकेँ घरसँ नहि बहराय दैत छैक ।'

–'तऽ दोसर संगी ताकि लियऽ । एतेक सङतुरिया अछि गाममे ! घरेमे मनोज अछि ।'

–'नै, अनका संग नहि खेलायब हम । कवितेक संग खेलायब । ओकरा बियाह नहि करऽ देबै, किन्नहु नहि । वर-वरियातीकेँ मारिकऽ भगा देबैक ।'

बियाहमे मुदा देरी छलैक ।

रविकेँ कवितापर तामस भेलैक । कने एक टा बात कहि देलकै तकर एतेक तामस ! चुपचाप बियाह करऽ लेल तैयार भऽ गेलैक, पड़ाकऽ किएक ने अबैत छैक ? कतेक दिन भऽ गेल, खूब खेलायब दुनू गोटे । मन्नूकाकाक बाड़ीमे फरसा लुधकल छलैक, सभ टा तोड़िकऽ देबैक खोँइछमे ।

एक दिन देखलकै तँ कविता बड़की टा लगलैक । बड़की टा नूआमे लदफद करैत । ई तँ लदगोबर भऽ गेलैक । ई कोना खेलयतैक ओकरा संग ? कोना गाछपर चढ़तैक ?

तैयो कहलकै ओइ दिन–'चल ने खेलाय लेल धारक कात ! बहुत रास घर बना देबौक— वर-कनियाँ खेलायब ।'

कविता आँखि पसारैत आश्चर्यसँ बजलैक- 'तोरा बूझल नहि छौक ? हमर बियाह ठीक भऽ गेल । तोरा संगे वर-कनियाँ कोना खेलेबौ आब ? पाप लागत।'

कविता देखहिमे पैघ नहि लगैत छलैक, गप्पो पकठायल करैत छलैक । तमसाकऽ रवि कहलकै-'कथीक पाप लगतौक ? कोनो कनियाँ पहिले बेर बनबेँ हमर ? हम कोनो तोहर ओइ बुढ़बा वरसँ खराब छी ? अगराइ कथीपर छेँ ?'

रविकेँ क्यो कहने रहैक जे कविताक होबऽवला वरक वयस बेसी छैक ।

कवितो तमसाकऽ कहलकै–'आ तोँ कथीपर अगराइ छेँ ? खाली मुँह-कान गोर-नार रहने की हेतौ, छेँ तऽ थोपले-थापल । ऊपरसँ अबण्ड आ चोर-चहार ।'

चटदऽ चाट मारि देलकै रवि । मुँहेपर लगलैक । कनलैक नहि कविता । कने काल कन्हुआयलि ठाढ़ि रहलैक । आ, फेर जाइत-जाइत कहलकै–'जाइ छियनि बाबूकेँ कहऽ । बिना उपराग देने नहि रहथुन आइ रामकाकाकेँ ।'

साँझमे सत्ते बमकल छलथिन बाबू–'किएक मारलहक ओकरा ? बियाह होइ लेल छैक ओकर । सासुरक लोक सुनतैक । हमरा कलंक लागत, भरि गामकेँ कलंक लगतैक ।'

रवि किछु बाजऽ चाहलक, मुदा बाबू बड़ क्रुद्ध छलथिन । दुनू गालमे दू चाट लगा देलथिन । एहि मारिसँ हतप्रभ भऽ गेल रवि ! बाबू कहियो मारने नहि छलथिन । आइ कोन एहन बात भऽ गेलैक ? ओइ छौँड़ीक एहन मान भऽ गेलैक ! एक चाट मारि देलिऐक तँ कोन अनर्थ भऽ गेलैक ! कतेक बेर तँ धुमधुमौनें हेबै । ओ दाँते हबकने हैत ।

रवि रूसिकऽ अपन कोठलीमे बन्न भऽ गेल । खयबो नहि कयलक ! लालकाकी दरबज्जा लग ठाढ़ि नेहोरा करैत रहलैक, मुदा ओ किल्ली ठोकने पड़ल रहल ।

ओइ खटखटाहि छौँड़ीक एहन मजाल ? हमरा थोपल-थापल कहलक ? अपने जेना महान सुन्नरि अछि ! सौँसे देह कलिकलिसँ सड़ल रहैत छैक, खाली आँखि-नाक निखरल रहने की हेतैक ? देह केहन लिकलिक आ सड़ल छैक ! ताहीपर एतेक गुमान ! परवाहि ककरा छैक !

परवाहि ओकरा छलैक । ओकर काज गड़बड़ाय लगलैक । ककरो बाड़ीसँ कटहर तोड़िकऽ अनैत छल तँ बऽर पकाकऽ देबऽवला नहि भेटैत छलैक । कविता बड़ बुझनुक छलैक- चुपचाप अपन भनसाघरमे बऽर पका लैत छलैक । अड़रनेबा आ मोँछक झक्खा बड़ बढ़ियाँ बनबैत छलैक । ओ जखन ककरो बाड़ीमे पैसैत छल, खूब नीक जकाँ पहरा करैत छलैक ओ । ककरो देखिते ओकरा सावधान कऽ कोनो झोँझमे सटकि जाइत छलैक । नहि जानि किएक ओइ दिन नामीबाबाक लतामपर अपनो चढ़ि गेलैक । तहिएसँ सभ टा गड़बड़ा गेल छलैक ।

ओकर पढ़ाइयो-लिखाइयो एकदम गड़बड़ा गेल रहैक । स्कूल जाइत छल

आ माटिक देबालसँ माथ टेकि बैसि जाइत छल । सबक याद करबाक इच्छे नहि होइत छलैक । पहिला क्लासक छौँड़ा-छौँड़ी ककहरा पढ़ैत रहैत छलैक-'क का ए ए कि की ए ए कु कू बदाम, के कै को कौ कं कः राम' आ ओ आँखि बन्न कयने बैसल रहैत छल । गुरुजी एक बेर टोकलथिन-'तोहर मोन किम्हर रहैत छऽ रवि ? सबको याद नहि करैत छऽ आइ-काल्हि ! तोरा तऽ एक्के बेरमे सभ टा याद होइत छऽ ! किताबो ने खोलै छऽ आइ-काल्हि भरिसक !'

गुरुजी ओकरा मानैत छलथिन । ओना सभकेँ मानैत छलथिन । तामस कम्मे काल होइत छलनि, ककरो बदमाशीपर जखन तमसाइत छलथिन तँ हिन्दीमे गरजऽ लगैत छलथिन-"आज नहीं मानेंगे । आज पोनपर डिगडिगिया बजायेंगे । हमारे आगे लालू जोगधर नही चलेगा !'

गुरुजीक तामसपर ओकरा सभ दिन हँसी लागि जाइत छलैक । मोन होइत छलैक जे पुछनि जे 'लालू जोगधर के छलैक गुरुजी ?' मुदा डरे नहि पुछैत छलनि। कहीँ ओकरोपर नहि तमसा जाथिन ! एकदिन तामसे प्रचण्ड भऽ गेलथिन गुरुजी। मुनरा बिन-कसूरे मल्हुआकेँ छड़पिटा देलकै । बदमाश छल मुनरा, अनेरो सभकेँ मारैत रहैत छलैक । ओइ दिन गुरुजीक पित्त लहरि गेलनि । खेहारिकऽ दुइए धौल देलथिन मुनराक पीठपर । छुलछुल मूतऽ लागल मुनरा ।

ओना, गुरुजीक सबकक डरे सभ छुलछुल मुतैत छल । बड़ भारी-भारी सबक दैत छलथिन । मिहिर आ नारायण ओकरे क्लासमे छलैक । डरे ओहो दुनू रविक खुशामदमे रहैत छलैक । गुरुजी अपने खाली रविक सबक सुनैत छलथिन। मिहिर आ नारायणक सबक रवि सुनैत छलैक । जहाँ गुरुजी दोसर दिस जाइत छलथिन, दूनू नेहोरा करऽ छलैक-'एक पेज तड़पा दे रब्बी, गुरुजी ओम्हर छथुन।'

आ, रवि पन्ना उनटा दैत छलैक आ गुरुजीकेँ सबक सूनि लेबाक रिपोर्ट दऽ दैत छलनि । मिहिर ओइ दिन टोकलकै-"की भेलौ रब्बी ? तोँ सबक किएक ने याद करै छैँ ? तोहीँ फँसि जयबेँ तऽ हमरा सभकेँ के बचाओत ?'

रवि तँ अपने फँसि गेल छल । कविताक फेरामे फँसि गेल छल ।

छौँड़ी बियाहक नामपर एकदम संग छोड़ि देने छलैक आ एकसर ओकर काजे नहि चलैत छलैक । संगे द्वारे एक बेर कविताकेँ कहने छलैक-'तोहूँ स्कूल आ कविता, पढ़-लिख ! हमरे बतारी तऽ छेँ, हम चौथामे छी आ तोरा 'अ आ इ ई' सेहो नहि अबैत छौक !'

कविता हँसऽ लगलैक-'पढ़ि-लिखिकऽ कोन नोकरी करबैक हम ? लूरि चाही । से भानस करऽ अबै-ए, सिआइ-कढ़ाइ सेहो सीखै छी मायसँ, गीत-नाद अबिते अछि । तोरा अबै छौ ई सभ ?'

रवि चुप्प भऽ गेल छल । लगलैक जेना कविताकेँ ओकरासँ बड़ बेसी चीज अबैत छलैक । ओ की करतै पढ़ि-लिखिकऽ ?

आ, से की खाली वैह नहि पढ़ैत छलैक ! स्कूलमे छौँड़ीसभ दुइए-तीन टा अबैत छलैक । सेहो सभ सप्ताहमे पाँच दिन नागा । गुरुजी अकच्छ-'काल्हि की भेलौक ?' उत्तर भेटनि-'माय नहि आबऽ देलक, भानस-भातमे लागलि छलैक, हम चिलका खेलाबऽ लगलिऐक ।' दोसरकेँ पुछथिन-'आ तोरा की भेलौ ?' -'हमरा काकी नहि आबऽ देलनि । कहलनि, माथमे बड़ ढील छौक, ताकि दैत छियौक । सभ दिन स्कूलमे पढ़िकऽ कोन मेमसाहेब बनबेँ ?'

मुदा कविताक गुमान तँ बिनपढ़ने-लिखने मेमसाहेबसँ बढ़िकऽ छलैक । कने ओइ दिन बात कहि देलिऐक तँ रोष लागि गेलैक । बियाहे करऽ लेल तैयार भऽ गेल । एक चाट मारि देलिऐ तँ उपराग दिया देलक । संग खेलायत किएक ने ? बड़ बियाहबाली भेलि अछि ! बड़की टा नूआ लपेटि लदफद करैत महतमानि बनलि अछि। हमरा संगी-साथीक कमी अछि ? सौँसे गाम पड़ल अछि । जकरे कहबैक, दौड़ले आओत । रेखा अछि, प्रतिमा अछि, मिहिर अछि, नारायण अछि । ओइ कलिकलिही छौँड़ीसँ कट्टीस— हजार बेर कट्टीस ।

हवेली मोहनपुरमे एखनो सभसँ पहिने मङनुए मिसर उठैत छलाह ।

सूति-ऊठि धार दिस विदा होइत छलाह । उतरबारि टोलसँ सोझे धार जाइत छलाह गाम बाटे— बिचला टोल होइत, आ हुनकर उच्च स्वर एखनो भरि गामकेँ सुनाइत छलैक— उतरबारि टोलसँ पछबारि टोल धरि— पूब आ दक्षिणमे कोनो टोल नहि छलैक । मात्र तीन टा टोल आ सय पाँचेक लोक । मङनू मिसरक स्वर सभ धरि पहुँचैत छलनि— प्रात ऊठिकऽ पाँच नाम-'हरि, बालि, कर्ण, युधिष्ठिर, परशुराम । गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए, गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए । सुमिरू पंचकन्या— अहिल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी । गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए..'

ई मङनू मिसरक विशिष्ट मंत्र छलनि । गौतम मुनिकेँ नोत पड़बाक अर्थ

छलनि— नोतहारीक काज होअय तँ मङनू मिसर छथि । आब मंत्रो सूनि लोक अनठा दैत छनि । नोत-पिहानमे आब लोक संकुचित भेल जाइत छल । बेसी काल घरेमे निमहि गेल, बड़ नमरल तँ टोल धरि । सत्यनारायण पूजोमे आब भरि गाम हकार नहि होइत छलैक— दुइए-चारि घरमे निमहि गेल ।

गौरीकेँ सेहो निमहि गेलनि । मङनू मिसरक धार जाइते ओहो ऊठि जाइत छलीह । बिछौनेपर प्राती शुरू भऽ जाइत छलनि-'जागिये कृपानिधान पंछी वन बोले' आ, प्राती गबैत ऊठि जाइत छलीह । क्रिया-कर्मक बाद फूल तोड़ि लैत छलीह । अबेर भेलासँ उकट्ठी छौँड़ीसभ एक्को टा कोँढ़ियो नहि छोड़ैत छलनि । फुलडाली गोसाउनिक घर राखि कान्हपर धोती आ मुँहमे दतमनि लऽ धार दिस विदा होइत छलीह— गंगा-गंगा ! जहाँ नहाइ तहाँ गंगा ! जय कमला माइ...

कमला माइक दरबारमे तकर बाद भीड़ शुरू भऽ जाइत छलनि । पहिने बड़ बेसी लोक रहनि— आब ओतेक नहि, तैयो लोक रहैत छनि । स्त्रीगण, पुरुष आ बच्चो । प्रातःस्नानक लोभे कतेक रास बच्चा भोरे ऊठि जाइत अछि । मुदा कविताक निन्ने नहि टूटैक । जहियासँ बियाह ठीक भऽ टूटि गेलैक, मायक उठबिते ओहो ऊठि जाइत छलि आ संगे धार विदा भऽ जाइत छलि । शुद्ध बीति गेलैक, बियाह नहि भेलैक । कथा क्यो मोड़ि देने छलैक । बाप शोके बिछौन धऽ लेने छलथिन । कविताकेँ हर्ष-विषाद नहि छलैक । खाली संग छुटबाक दुःख छलैक । बियाहक नामपर ओकर घरसँ बाहर निकलनाइ बन्द भऽ गेल रहैक । रविक संग बाड़िए-झाड़िए बौआयब बन्न भऽ गेल रहैक, से बन्दे रहलैक । एक बेर रवि आङन बजबऽ आयल रहैक, एक बेर बाटोमे टोकने रहैक । संग जयबाक सत्ती ओ उन्टे झगड़ा कऽ बैसलैक । फेर सभ समाप्त । रवि घूरिकऽ नहि टोकलकै । देखबो करैत छलैक तँ दोसर दिस चल जाइत छलैक । कविता भरि दिन घरेमे रहैत छलि ।

समय तैयो बीतल जाइत छलैक । भोरे माय उठा दैत छलैक आ ओ संगे प्रातःस्नान कऽ अबैत छलि । कहियो काल धारमे छोटकी बाबी टोकैत छलथिन-'तोरा देखैत नहि छियौक कविता ? रविसँ झगड़ा भेल छौ ?'

कविता हँसिकऽ रहि जाइत छलि । फेर छोटकी बाबी ओकर मायक संग फुसुर-फुसुर गप्प करऽ लगैत छलथिन । ओ बूझि जाइत छलि, ओकरे बियाहक गप्प हेतैक । भरि गामक स्त्रीगण एहिना मायकेँ टोकैत छलैक— बाट-घाट, धारक कात आ अङनोमे आबिकऽ-'की भेल ? कथा किएक टूटल ?' से की जवाब देतैक

ओकर माय ? ककरो कि बूझल छलैक ? सभ टा ठीकठाक भऽ गेलैक । सिद्धान्तक दिनो ठीक रहैक । तकर बाद नहि अयलैक । दिन बीति गेलैक ।

गामक लोककेँ बहुत रास कारण बूझल छलैक । क्यो कहैत छलैक-'गामेक लोक मोड़ि देलकै । कहि अयलैक जे छौंड़ी बड़ अगत्ती छैक...चोरनी आ छुलाहि छैक ।' क्यौ कहैक-'वसन्त गप्प नुकौने छलथिन । अपने बिकौआ छथि...पाँजि प्रथा नहि छनि, से नहि कहने छलथिन । वर पाँजिवला छलैक, पाँजिक रक्षा चाहैत छल । झूठ बजबाक फल भोगथु वसन्त ! कन्या दोषहि भऽ गेलनि, आब के करतनि जल्दी बियाह ? लोकसभ के-कहाँ उड़ा देने छनि ? बेटियो तँ तेहने सुलाक्छनि छनि !'

कविता सभ टा बूझऽ लागलि छलैक लोकक गप्प । बापक लज्जासँ झुकल घाड़ आ मायक चिन्ता । ओ सभ टा बूझऽ लागलि छलैक आ ओकर स्वभावे बदलि गेल छलैक ।

प्रातःस्नानसँ घूरि पूजा-पाठमे मायक संग दैत छलैक । फेर भनसाघर । तीन गोटेक भानस । कविता एकसरे सम्हारऽ लगलैक, मायकेँ फुरसति दऽ देलकै भनसाघरक जंजालसँ । दुनू साँझक भानस । तैयो दिन पहाड़-सन लगैक । दुपहरियामे चरखा लऽ बैसि जाय कविता । मेहीँ-मेहीँ सूत काटय । मायक सूत आ पोला मोटगर होइत छलैक । सियाइ-कढ़ाइमे सेहो कविता जल्दिए यश कमा लेलक । अङने-अङने जा लुरिगरि काकी-भौजीसँ डिजाइन सीखि लेअय आ झट नकल कऽ लेअय ।

रविक आङन नहि जा होइक । ओकरा थोपल-थापल आ अबण्ड कहने छलैक । बदलामे अपनो खूब सुनने छलि आ एक चाट मारि खा आयलि छलि । बाबू उपराग देथिन से ओकरा नहि बूझल छलैक । कनिते अङना आयलि छलि, बाबू अङनेमे बैसल छलथिन ! कोनो कारणसँ मोन पहिनहिसँ बिगड़ल छलनि । कनैत देखि गरजऽ लगलथिन-'आइ की भेलौ फेर ?'

वसन्तक तामस उग्र भऽ गेलनि । ऊठिकऽ आर चारि चाट देलथिन आ बड़बड़ाइत आङनसँ विदा भेलाह-'जाइ छियनि रामबाबूकेँ कहय । अइ छौंड़ा द्वारे हमर बेटीक जिनगी नष्ट भऽ जायत ।'

कविता अवाक् ठाढ़े रहि गेलि । कानबो बन्द भऽ गेलैक । आ, तकर बाद रविसँ भेँट करबाक बाटो बन्द भऽ गेलैक— बियाह नहि भेलैक तैयो । कखनो सोझाँसोझी होइ रविसँ तँ ओकरा अपने लाज होइ । मुदा ताहिसँ पहिने रवि दोसर

बाटे निकलि जाइ, तकबो नहि करैक ओकरा दिस । कविता मूड़ी झुकौने ठाढ़ि रहि जाय । बहुत दूर चल जाइ तँ मूड़ी उठा देखैक । मुदा, रवि तकबो नहि करैक एक्को बेर घूरिकऽ ।

चारि वर्ष बीति गेल छलैक । चारि वर्ष भऽ गेल छलैक रविसँ बजना । मुदा ओइ दिन ओकर दरभंगा जयबाक गप्प सूनि नहि रहि भेलैक । पहुँचि गेल रामकाकाक अङना । बाबी देखिते टोकलथिन– 'तोहूँ आबि गेलेँ ? नहि रहि भेलौक, बालसंगी छौक तोहर । जाइ छौ आइ, आब नहि रहतौक गाममे । राम जिद्द पकड़ने छथि, एतऽ नहि पढ़ऽ देथिन । हमरासभ बिगाड़ि देबैक नेनाकेँ ।'

बाबीक आँखिमे नोर छलनि । लालकाकीक आँखि लाल-लाल छलनि । रवि आ मनोज दुनू जा रहल छलनि, नहि रहतनि गाममे । रवि अपन चीज-वस्तु सरियबैत छल । कविता ओतहि जा ठाढ़ि भऽ गेलि आ कहलकै- 'शहर पैघ आ सुन्नर होइ छै— गामसँ बेसी बढ़ियाँ । ओतऽ बेसी मोन लगतौक ।'

रवि अवाक् । कविता तेना सहज ठाढ़ि छलैक जेना कहियो-किछु भेले नहि होइ । ओकर वैह बालसंगी कविता । मुदा ओकर बालसंगी तँ कलिकलिही खटखटाहि छौंड़ी छलैक, पातर लिकलिक आ सड़ल देह । ई कविता तँ ओकर बालसंगी नहि छलैक— शान्त, सौम्य । मुँह केहन सुन्नर जे लोक देखिते रहि जाय ! तेहने पैघ आँखि आ आँखिमे एक टा उदास हँसी । रंग जेना रवियोसँ बेसी साफ— एकदम भुभुक्का गोराइ । माथक केश पैघ आ कारी-कारी । पीठपर मोटगर चोटी बान्हल लटकल । सम्पूर्ण देहमे एक टा आभा आ मुँहपर कान्ति । रवि अवाक् देखैत रहि गेल ।

'एना अकचकायल की देखै छेँ ? चीन्है नहि छेँ हमरा ?' कविता टोकलकै ।

रविक टकटकी छुटलैक । हँसैत बाजल-'तोरा नहि चिन्हबौ ? सौंसे देहमे कैक ठाम दाँत कटने हेबेँ । देखै छलियौ जे ओहन तमसाहि-खटखटाहि छौंड़ी एना शान्त-संयत कोना भऽ गेलैक ?'

कविता हँसलैक-'से तोँ कोना बुझलहिक जे शान्त-संयत भऽ गेल छी ? एखनो दाँते काटि सकैत छियौ ।'

रवि कृत्रिम डेरायल-'बाप रे ! तहिए मासु नोचि लैत छलेँ, आब तऽ हड्डियो नहि बाँचत ।'

कवितो ओहिना हँसैत कहलकै-'तोँ तामसे धुमधुमा दैत छलेँ तऽ हम दाँतसँ भम्होरि लैत छलियौ । हिसाब बराबरि ।'

रवि हँसैत रहल । भोरसँ ओकर मोन भारी छलैक । गाम छुटबाक दु:ख छलैक । आङनमे सभ कानि रहल छलैक–बाबी, छोटकी बाबी, दुनू पीसी-बीबी आ लालकाकी । लालकाका उदास छलथिन आ बाबू गुमसुम । तैयारी सभ टा वैह करबौने छलथिन, मुदा मोन हुनको उदास छलनि । एकसरमे आँखि पोछैत देखने छलनि रवि । रविक अपनो मोन भोरसँ कानऽ-कानऽ सन भेल छलैक ।

कविता आबि हँसा देलकै । चारि सालक बन्द मुँहाबज्जी खतम भऽ गेलैक । दुनू सहज भऽकऽ हँसल-बाजल । मोन साफ भऽ गेलैक दुनूक । जाइत काल कविता कहलकै–'तोहर पुरना किताबसभ छौक, बच्चावला ।'

रवि आश्चर्यसँ पुछलकै–'की करबेँ तोँ ?' कविता सहज भावसँ कहलकै– 'पढ़ब । आब एतेक टा भऽ धीया-पूता जकाँ स्कूल जैब, से हैत नहि । तोँ कहने रहेँ, स्कूल आ पढ़ऽ, तऽ नहि मानलियौ । आब बैसल-बैसल मोन अकच्छ रहैत अछि । काजो-धंधाक बाद अफरात समय रहैत अछि । किताब रहत तऽ ककरोसँ पूछि-पूछिकऽ पढ़ि लेब ।'

रविकेँ कविताक बात नीक लगलैक । सभ टा किताब निकालि कऽ दैत कहलकै— 'सभ लऽ जो, बहुत रास किताब छैक । सभपर तोहर नाम लिखल छलौक, खाली काटि देने छिऐक ।'

कविता आश्चर्यसँ पुछलकै— 'हमर नाम !'

रवि हँसैत कहलकै–'हँ, तोरे नाम । जखन दुनूमे मेल रहय तऽ किताब सभमे जहाँ-तहाँ तोरो नाम लिखि दियौक । फेर झगड़ा भेल । तामसे नव-पुरान सभ किताब ताकि तोहर नाम काटि देलियौक । हे देखहिक, ईहो तोरे नाम काटल छौक ।'

कविता हँसलैक-'एतेक तामस रहौक हमरापर ?'

रवियो हँसैत कहलकै— 'एहन-ओहन तामस ! मोन करैत छल जे अङनामे पैसिकऽ धुमधुमा दियौक खूब । हमर खेल-कूद, घूमब-फिरब सभ मस्किल भऽ गेल । तोँ महतमानि जकाँ बियाह करऽ बैसि गेलेँ । खेल-कूद बन्द । भेलौ किने बियाह ! खेलोकूद छुटलौक आ बियाहो ने भेलौक ।

बात रवि हँसीमे कहने छलैक, मुदा कविताक मुँह विवर्ण भऽ गेलैक ।

रविकेँ लगलैक जेना किछु अनुचित बजा गेलैक । ओहो अकबकाकऽ चुप्प भऽ गेल ।

कविता गुमसुम ठाढ़ि छलैक । रवि कहुना बात सम्हारैत बुझनुक जकाँ बाजल— 'देख ने, फेर किदन झगड़ाबला बात बजा गेल । बियाह ओ नहि भेलौक तऽ दोसर हेतौक । ओइ लेल चिन्ताक कोन काज ? एहन सुन्नरि कनियाँ लेल वरक कोन कमी ?'

कविताक आँखिमे एक टा दुष्ट हँसी आबि गेलैक–'सत्ते !'

आ, ओहिना हँसैत घरसँ बहराइत काल कहलकै कविता— 'हमर-तोहर झगड़ामे नामीबाबाक खूब फायदा भेलनि । सभ टा गोसबरिया लताम एकसरे खयलनि ।'

रवि कविताक गेलाक बादो बड़ी काल धरि हँसैत रहल ।

रवि हँसैत दरभंगा नहि जा सकल मुदा ।

भोरेसँ बाबी नुकाकऽ कानिए रहलि छलैक । गाड़ीक बेर होइत-होइत बेस नीक जकाँ कानऽ लगलैक । हरदम संयत आ शालीन रहऽबाली छोटकियो बाबीक आँखिमे नोर । घिसरी कटैत छोटकी पीसी-बाबी आ छातीसँ सटौने सटौने बड़की पीसी-बाबीक आँखिसँ दहो-बहो नोर । कानि-कानिकऽ लाल भेल लालकाकीक आँखि ।

मुदा, राम अडिग छलाह । फैसला हुनके छलनि । मोहन कालेजक पढ़ाइ खतम कऽ दरभंगेमे ओकालति शुरू कयने छलाह आ हुनका संगे रहैत विक्रमक कालेजक पढ़ाइ सेहो लगिचायल छलैक–बी.ए.क आखिरी साल रहैक । मोहनक डेरा ऐल-फैल रहनि आ मोहनक गार्जियनीपर रामक आस्थो रहनि ।

मिडिलमे जिलामे पहिल नम्बर छलैक रविक । रामक महत्त्वाकांक्षा पैघ छलनि । बेटा आगाँ नाम करत । प्रान्तमे प्रथम आओत । से गामसँ नहि होयतैक । नीक स्कूलमे देबऽ पड़तैक, नीक गार्जियनक ताल्लुक देबऽ पड़तैक । मोहनपर हुनका बड़ विश्वास रहनि । जेहने पढ़बामे तेज, तेहने सुशील, आज्ञाकारी आ चरित्रवान । अपने दरभंगा जाकऽ सभ टा व्यवस्था देखि आयल छलथिन राम । रवि

आ मनोजकेँ एक्के स्कूलमे नाम लिखा सभ टा इन्तजाम कऽ आयल छलथिन ।

आङनक स्त्रीगणकेँ अइ व्यवस्थासँ कोनो मतलब नहि छलैक । ओसभ मात्र एतबा जनैत छलैक जे रवि आब गाममे नहि रहतैक । संगे मनोजो जयतैक । आङन खूब भरल-पूरल आ प्रसन्न रहैत छलैक ।

प्रसन्न नहि छलैक खाली मोहनक कनियाँ । तीन वर्षसँ दुरागमन करा सासुरेमे छलैक, मुदा मोहन रहैत छलैक हरदम दरभंगे । पहिने पढ़बा लेल, फेर ओकालति शुरू कयलकै तँ ओही लेल । गाम कम्मे अबैत छलैक । शनियो-रविकेँ अबैत लाज होइ छलैक । कनियाँ बाटे तकैत रहि जाइ छलैक ।

दरभंगा जाइत काल रवि पुछलकै–'भाइकेँ कोनो समाद कहबनि भौजी ?'

भौजी कने रुष्टे भावसँ कहलथिन— 'कोन फायदा ? हुनका ओकालतिक पोथीसँ फुर्सति होयतनि तखन ने कोनो समाद सुनताह !'

रवि हुनक तामसपर बिन ध्यान देने कहलकनि–'तऽ चिट्ठीए लिखिकऽ दऽ दियऽ ।'

भौजी बेसी तमसा गेलथिन–'हँसी करै छी अहूँ ! हमरा चिट्ठी लिखऽ अबैत तऽ एहिना अनठबितथि अहाँक भाइ ? हुनका पढ़बा-लिखबाक गुमान छनि ।'

भौजी सुन्नरि छलीह । सोलह-सत्रहक वयस छलनि । रविसँ चारि वर्ष जेठ । रविकेँ भौजी नीक लगै छलथिन । भौजी अधिक काल उदास रहैत छलथिन– गुमसुम आ दुखी । भौजीक क्रोधपर ओ ध्यान नहि देलकनि । ओकरा मोहन भाइपर तामस भेलैक ।

दरभंगा अयलापर दोसरे दिन मोहन भाइकेँ कहलकनि–'अहाँ भौजीपर बड़ अन्याय करै छियनि भाइ !'

छोट भाइक पकठोसल गप्पपर मोहनकेँ हँसी लगलनि–'से कोना रवि ?'

–'ओ सभ शनि-रविकेँ बाट तकै छथि आ अहाँ गाम जयबे नहि करै छी ।' रवि साफ-साफ बाजल ।

–'सभ शनिकेँ दौड़ करब गाम तँ मामा आ गामक लोक की कहत ?' मोहनक जवाबसँ रवि सन्तुष्ट नहि भेल । ओकरा लोककेँ कहबाक अर्थ बूझऽमे नहि अयलैक ।

गामसँ विदा होयबाकाल बाबू कहने रहथिन रविकेँ–'सभ शनिकेँ गाम अबस्स अयबऽ । एतुक्को लोककेँ देखबा ले' मोन लागल रहतैक ।'

रवि ओही बातकेँ मोन पाड़ैत बाजल–'हमरा बाबू सभ शनिकेँ आबऽ कहलनि आ अहूँ जायब तऽ किएक किछु कहताह ?'

मोहनकेँ साहस नहि भेलनि । शनिकेँ रवि गाम गेल तँ भौजीकेँ कहलकनि–'अहाँ हमरा घूस दी तऽ अहाँक काज भऽ सकैत अछि ।'

मोहनक कनियाँ विस्मित होइत बजलीह–'घूस ? हम कथी लेल घूस देब ? कोन काज करब हमर ?'

रवि बात ओहिना भरिअबैत कहलकनि–'से करब ने हम, मुदा घूस लागत ।'

भौजी हँसिकऽ कहलथिन–'बेस, देब घूस ! कहू की लेब आ कोन काज करब ?'

रवि बात ओहिना अस्पष्ट रखैत कहलकनि–'ई दुनू बादमे कहब । दोसर बेर गाम आयब तखन ।'

दरभंगासँ दोसर सप्ताह गाम लेल विदा होइत रवि मोहन भाइकेँ कहलकनि–'अहाँक काज हम कऽ दऽ सकैत छी भाइ ! मुदा घूस लागत । एक टा नवका फुलपैण्ट आ कमीज ।'

मोहन हँसिकऽ कहलथिन–'पैन्ट-कमीज तोँ लऽ लिहऽ । मुदा काज कोन करबऽ हमर ?'

रवि हुनको बात स्पष्ट नहि कहलकनि–'से बादमे कहब भाइ ! मुदा घूस भौजियो गछने छथि । हुनकर सत्ती नवका जूता-मौजा सेहो लागि जायत, मोन राखब ।'

गाम अयबा काल मनोजो संग छलैक । ओकरो नीक जकाँ पटिया लेलक । बाबू पुछलथिन–'कोनो तकलीफ तऽ नहि होइ छऽ ?' कहलकनि–'आर तऽ नहि कोनो, खाली पित्तू ठाकुर द्वारे आफत अछि । एहन कतहु भनसिया भेल-ए ! खाली मरचाइ रान्हि लैत छथि । सेहो असिद्धे । नहि जानि कोना मोहनभाइ-विक्रमभाइ एतेक दिन रखलथिन ! दुनूकेँ पेट खराब रहिते छनि अधिक काल, हमरो लोकनिकेँ गडबडी शुरू भऽ गेल अछि ।'

मनोजो समर्थन कयलकै–'हँ काका ! रवि ठीक कहैत अछि ।'

राम बाबू चिन्तित होइत कहलथिन–'ई तऽ बड़ चिन्तावला बात !'

रवि उत्साहित होइत बाजल–'अइमे चिन्ताक कोन बात ? पित्तू ठाकुरकेँ गाम बजा लियनु । नौकरीसँ हँटबियनु नहि ।'

राम बाबू पुछलथिन–'आ, तोरालोकनि लेल एतेक जल्दी भनसिया के भेटत ?'

रविकेँ कहबाक मौका भेटि गेलैक–'भनसियाक काज कोन बाबू ? भौजीकेँ हमरालोकनिक संग पठा दियनु ।'

रामकेँ आब अर्थ लगलनि–'मोहन किछु कहने छलथुन ?'

रवि मनोज दुनू संगे बाजल–'भाइ किएक किछु कहताह ? ओ एतेक वर्ष पितुए ठाकुरक संग निमाहि लेलनि । हमरासभकेँ कष्ट होइत छल, तेँ कहलहुँ । नै विचार अछि तऽ छोड़ि दियौक ।'

राम चिन्तित होइत बजलाह– 'मुदा कनियाँ शहर जयतीह से कोना हैत ? एना कहियो ने भेल छैक, माय नहि मानति ?'

मंगला झट मानि गेलथिन– 'धीया-पूताकेँ तकलीफ होइ छै तँ जाय दहुन कनियाँकेँ । आब ई सभ क्यो देखैत छैक ?'

रवि बाबीक गरदनिसँ झूलि गेल— 'बाबी ! यू आर ग्रेट ।'

गौरी एकदम तरङि उठलथिन— 'एकदम अजगुत बात ! नवकी कनियाँ शहर-बजार जयतीह, वरक संग रहतीह । समय जे ने देखाबय !'

लालकाकीकेँ बेसी असुविधा छलनि । आश्रमक सभ टा काज मोहनेक कनियाँ करऽ लागलि छलनि आब । हुनका आराम रहैत छलनि— 'गामक लोक सेहो हँसत । एना तऽ घरक कायदा-कानून नष्ट होइ छै । तखन जे बड़का बाबू कहथिन !'

घरक कायदा-कानून रहैक रामक विचार । ओ निर्णय कऽ लेने रहथिन । मनोज-रविक संग एक टा आदमी दऽ कनियाँकेँ दरभंगा बिदा कऽ देलथिन ।

गाड़ी जखन गामक स्टेशनसँ खुजलैक तँ रवि भौजीसँ बाजल–'काज भऽ गेल अहाँक । आब लाउ हमर घूस ।'

भौजी प्रसन्नतासँ निताराइत बजलीह–'अइमे हमर कोन काज ? अपना ले' एक टा भनसियेक इन्तजाम तऽ कयलहुँ अछि !'

रवि चेतबैत कहलकनि–'देखू, बैमानी नहि ! नहि तँ भनसियाकेँ हँटबऽमे

हमरा देरी नहि लागत । फेर कहि देबनि– खाली मसल्ला भरने रहैत छथि तरकारीमे...'

भौजी हारि मानैत बजलीह–'बेस, हमही हारि मानलहुँ ! बाजू, की लेब ?'

–'भाइ पैण्ट-कमीज आ जूता-मौजा गछने छथि । अहाँकेँ एक टा स्वेटर बुनिकऽ देबऽ पड़त ।'

–'बस्स, खाली एक टा स्वेटर ! अवश्य भेटत । मुदा ओ कोना गछि लेलनि पैन्ट-कमीज आ जूता ? हुनका कोन बेगरता ? अपन ओकालतिक किताबसँ फुर्सति हेतनि तखन ने !'

भौजीक अबैत देरी मोहन ओकालतिक किताबकेँ एकदम फुर्सति दऽ देलथिन । भौजी लेल अपस्याँत । भौजीक खुशीक कोनो अन्त नहि छलनि । हरदम प्रसन्न गुलाब जकाँ गमकैत रहैत छलीह । रविकेँ गामक उदास आ गुमसुम भौजी मोन पड़ैक । ओकरा तँ गामोक ओ उदास आ गुमसुस भौजी पसिन्द छलैक । प्रसन्नतासँ दमकैत आ हँसीसँ चमकैत भौजी ओकरा आरो नीक लागऽ लगलैक ।

एक दिन रवि टोकलकै– 'अहाँके हमर नजरि लागि जायत भौजी ! अहाँ तऽ दिन-दिन सुन्दरे भेल जाइ छी । नै मनोज ?' मनोजो समर्थन कयलकै ।

भौजी कृत्रिम क्रोधसँ कहलथिन– अहाँ दुनू गोटे तँ खूब पढ़ाइ करै छी ! बैसल-बैसल मौगीक सुन्दरता देखै छी !'

रवि कहलकनि–'अहाँ मौगी थोड़े छी !'

'तऽ की छी हम ?'–भौजी अकचकाइत पुछलथिन ।

–'अहाँ तँ भौजी छी ।'

भौजी खूब हँसलथिन । भौजीक ओइ हँसीसँ ओ छोटछीन डेरा सदिखन हुलसैत रहैत छलैक । चारि टा कोठली रहैक । एक टामे भैया-भौजी रहथिन, दोसरमे विक्रम आ तेसरमे रवि आ मनोज । चारिम कोठली भैयाक बैसकखाना छलनि–रैक आलमारी सभमे ओकालतिक किताबसभ आ टेबुल-कुर्सी । बरण्डामे मोअक्किलसभ सेहो सुतैत छलनि एक-दू टा कहियो काल ।

ओकालतति हिसाबे-किताबसँ चलैत छलनि मोहनक । सभ टा बन्दोबस्त आ खर्च मामेक रहनि । एकबेर लाल टोकने रहथिन अपन भाइकेँ–'पढ़ा-लिखा देलियनि, आब अपन कोनो उपाय देखितथि तऽ नीक छलनि ! कोनो भारो नहि

छनि । गंगाक बियाह-दुरागमन कराइए देलियनि, विक्रमो लाइनेपर अछि, साल-दू सालमे पढ़ाइ खतम । खाली अपनो भार यदि उठा लितथि ! ऐना जमीन-जथा आ अन्न-पानि बेचि कतेक दिन सम्हारबनि अहाँ ?'

छोट भाइक चिन्ता अकारण नहि छलनि । हुनकर परिवार पैघ रहनि, चारि टा धीया-पूता रहनि । साले-साल घटैत जथा-जमीनसँ ओ चिन्तित छलाह । राम बुझबैत कहलथिन–'करऽ पड़ै छैक सभ टा इन्तजाम हौ ! ओकालति ओना नहि चलैत छैक, ओइमे पहिने जमापूजी लगबऽ पड़ैत छैक, श्रम करऽ पड़ैत छैक, तैयो नीक कमाइ लेल प्रतीक्षा करऽ पड़ैत छैक । ऐना हड़बड़ाकऽ नहि होइत छैक ।'

रवि आ मनोजकेँ ओइ डेरापर पठयबाक एक टा उद्देश्य सेहो रहनि । लालकेँ तखन ओतेक नहि अखरतनि । अन्न-पानि, मर-मसल्ला सभ टा गामसँ जाइते छलनि सभक, बेरपर टाको-पैसा । लालकेँ नीक नहि लगैत छलनि, मुदा भाइक द्वारे चुप्प रहि जाइत छलाह ।

रवि आठममे फर्स्ट भेल । मनोजो पास कयलक । रामक उत्साह बढ़ि गेलनि । खर्च-बर्च तँ होइते रहैत छैक । एतेक टा जमींदारी चल गेल, तँ दस-बीस बीघाक कोन मोह ? रवि नवमोमे फर्स्ट भेलनि तँ रामकेँ अपन स्वप्न साकार होयबाक आशा होबऽ लगलनि ।

घर खाली होबऽ लगलनि–एकाएकी ।

पहिने गेलीह छोटकी दाइ । भूकम्पमे लोथ भेलि रहथि । ओकर बादो बाइस-तैस वर्ष जीलीह–घिसरियो काटिकऽ । ओइ दिन सुतली तँ सुतले रहि गेलीह । भोरमे निर्जीव शरीर पड़ल छलनि कोठलीमे ।

बड़की दाइ हिला-डोला थाकि गेलथिन, कोनो संज्ञा नहि । अन्तमे गर्द मचौलनि । लोक अयलनि, नाड़ी देखनिहार अयला आ सभ कहलथिन–'खाली देह छनि, प्राण नहि ।'

गौरी हल्ला मचा देलथिन–'प्राण छनि अखन ! लऽ चलहुन उठा-पुठा तुलसी-चौरा लग आङनमे । प्राण ओही लेल अँटकल छनि ।' सभ उठाकऽ आङनमे धऽ देलकनि–'मुँहमे गंगाजल दहुन ।'

बड़की दाइ ओही दिनसँ बिछौन धऽ लेलनि । ने ककरोसँ बाजब, ने किम्हरो आयब-आयब ! बहिने टा नहि, एकमात्र संगिनी छलथिन छोटकी दाइ । दुइए मास बाद एक दिन ओहो जिद पकड़ि लेलथिन–'हमरा घरसँ निकालऽ । महादेवक मन्दिरक आगाँ धऽ दैह हमरा । हमर प्राण छूटत । सावित्री जकाँ घरेमे नहि मरब हम ।' छोटकी दाइक नाम सावित्री रहनि ।

सभकेँ आश्चर्य भेलैक । नीक जकाँ बाजि-भूकि रहलि छलीह बड़की दाइ । सभ चेष्टा ठीक छलनि, तखन प्राण कोना छुटतनि ? लोकसभ अनठाबऽ चाहैत छलनि । राम अपन छोट भाइकेँ बजाकऽ कहलथिन–'लऽ चलबाक व्यवस्था करहुन, जेना बड़की पीसी कहैत छथुन !'

कहार-सबारीक इन्तजाम भेलैक । बड़की पीसीकेँ उठबाकऽ महादेव मन्दिरक सोझाँ राखल गेलनि । भरि गाम उमड़ि अयलैक । लोक अयलैक आ घुरैत गेलैक । बड़की दाइ ओहिना सभसँ बजैत रहलीह । सात दिन बीति गेलनि । मृत्युक प्रतीक्षा करैत लोक अकच्छ भऽ गेल ।

दिन भरि रौद रहै आ रातिमे बरखा होइ । फर्दमे राखब असंभव छलनि । मन्दिरक सोझाँ राउटी लगाओल गेलनि । पहिने राउटी भरल रहैक–रातियोकऽ मारि लोक । अन्तमे भीड़ कमैत-कमैत लुप्त भऽ गेलैक । रातिकेँ रहि जाथि एकसरि गौरी । ओइ राति हुनको आँखि लागि गेलनि ।

उठलीह तँ बेसी रौद भऽ गेल छलैक । बड़की दाइ ओहिना बिछौनपर पड़लि छलीह । आँखि खूजल छलनि जेना टकटकी लगा किछु देखि रहलि होथि । गौरी लग आबि सोर पाड़लथिन–'बड़की दाइ ! बड़की दाइ !' कोनो उत्तर नहि । देह छुलथिन तँ सर्द-हेमाल । बुझबामे भाङठ नहि रहलनि । हाथसँ पपनी खसा आँखि बन्द कऽ देलथिन आ एकसरे घिसिया राउटीसँ बाहर कऽ कानब शुरू कयलथिन ।

बन्हन तर प्राण छुटबाक डरे बड़की दाइ मन्दिर लग गेलि छलीह, मुदा प्राण हुनको राउटीक भीतरे गेलनि । क्यो बुझलकनि नहि ई बात ! बुझलथिन खाली गौरी ।

मुदा, बड़की दाइक पेटारक गप्प सभ बूझि गेलनि । ओ पेटार ककरो देखऽ नहि दैत छलथिन बड़की दाइ । एकसरिमे खोलैत छलीह, सभसँ नुकाकऽ । मरबो काल कुंजी डाँड़ेमे छलनि ।

चचरीकेँ श्मशान लऽ जयबासँ पूर्व ओ पेटार खोलल गेल । सभ अवाक् ! बहरयलैक किछु नहि । खाली खेलौना, धीया-पूताक खेलौना ! पुरान, टूटल-फूटल, नव– सभ तरहक खेलौना ! दू तीन टा रबरक गेन्द आ सभक नीचाँमे एक टा दुरगमनियाँ साड़ी । ओकर तह सड़ि गेल राखल-राखल । रंगो बेदरंग भेल, मुदा बेस यत्नपूर्वक चौपेतिकऽ राखल । पेटारकेँ सभ टा सामान सहित बड़की दाइक चितामे दऽ देल गेलैक ।

छोटकी दाइ बड़की दाइक बाद मंगलाक नम्बर एतेक जल्दी आबि जयतनि, से ककरो मिसियो भरि डर नहि छलैक । ओ स्वस्थ छलीह । सभ ठाम टहलैत-बुलैत छलीह । एक राति उठलनि हड्डीमे जनमारा दर्द । एहन दर्द जे एक्को क्षण चैन नहि । बाबी बिकल भऽ गेलीह । दर्दसँ रातिए भरिमे चेहरा स्याह भऽ गेलनि आ शरीर शक्तिहीन । कहुना राम कानमे कहलथिन–'सभकेँ बजा लहक । बेर आबि गेल । दर्द नै, काल छऽ ई ।'

राम सभकेँ बजबा लेलथिन । मोहन आ हुनक कनियाँ, रवि आ मनोजो आयल । विक्रमक विवाह-दुरागमन भऽ गेल छलैक । ओकरो कनियाँ छलैक । सासुरसँ गंगा अपन वर आ दुनू बच्चाक संग आबि गेलैक । जमा भऽ गेलैक बाबी लग ओकर सभ टा सखा-पात ।

मुदा, मंगलाकेँ कथूक होश नहि रहनि । दर्दसँ बेहोश भऽ-भऽ जाथि । एक बेर होश भेलनि तँ रविकेँ चिन्हलथिन । चेहरा छूबिकऽ कहलथिन–'बाबी जाइ छौ बाउ...मोन रहतौ ?'

रवि कानऽ लागल बाबीक छातीपर ओंघराकऽ । फेर दर्दसँ बेहोश भऽ गेलीह मंगला । एकदम बहिरा दर्द रहनि जेना ! हाड़-हाड़मे कनकनी । कोनो दवाइ नहि सुनलकनि । एक बेर फेर कनेकाल लेल होश भेलनि । गौरी लगमे झुकलि बैसलि छलथिन । माथपर हाथ देलथिन । चीन्हि गेलथिन मंगला । छोट बहिनक हाथ अपन कमजोर थरथराइत हाथसँ छुबैत कहलथिन–'चललियऽ आब ।'

–'नै' ओइ कमजोर थरथराइत हाथकेँ अपना मुट्ठीमे दबा गौरी चिचिया जकाँ उठलीह–'से कोना हेतऽ मंगला ? तोहीँ तऽ कहने छलीह ओइदिन–'हम छी गौरी...एखन हम छी !' फेर आइ जेबऽ कोना, हमरा एकसरि ककरा लग छोड़िकऽ जयबऽ, बाजऽ, जवाब दैह मंगला !"

कोनो उत्तर नहि । मुट्ठी ढील होइते हाथ एक कात खसिकऽ लटकि गेलनि । गौरीक संग सम्पूर्ण घर हाहाकार कऽ उठल ।

सभ टा राजरानी जकाँ भेलनि । राम जेना बताह भऽ गेल रहथि । कतबो करथि–तैयो सन्तोष नहि होइनि– आर-आर । बढ़बिते चल गेलाह । ककरो टोकबाक साहसे नहि होइक । गरामे उत्तरी लऽ जे चुप्प भेलाह से जेना बकारे बन्द भऽ गेलनि हुनकर । सभ टा व्यवस्थाक निर्देश कागजपर लिखि-लिखि देने जाथिन आ गुमसुम बैसल रहथि ।

श्राद्धक एक्के मासक बाद जखन गौरी मोटरी-चोटरीक संग लग आबि ठाढ़ि भेलथिन तँ बकार फुटलनि जेना–'ई की मौसी ?'

मौसी कहलथिन–'हमरा जाय दैह राम ! हमरा नहि रहि हैत एतऽ आब ।'

राम कने सिक्त कण्ठसँ कहलथिन–'हमरासँ कोनो अपराध भेल मौसी ? दुनू पीसी गेलीह, फेर मायो गेलि । आब अहाँ सेहो छोड़ि देब हमरा ?'

मौसी कहलथिन–'तोरासँ कोनो अपराध भैए नहि सकैत छऽ राम ! मुदा जिनका बलेँ एतेक दिन अइ घरमे रहलहुँ, जखन सैह नहि रहलीह, तऽ कोना रहब एतऽ आब ?'

राम बेसी भावुक होइत कहलथिन–'बहिन नहि रहलीह मौसी, बेटा तऽ अछि ! बेटाक घर रहबामे कोन संकोच ?'

मौसी बुझबैत कहलथिन–'संकोच नहि राम, मात्र मोनक विवशता । बिना तोहर मायकेँ अइ आङनक कल्पनो नहि सम्भव होइत अछि हमरासँ । नहि बर्दाशत होइत अछि हमरासँ । एतऽ रहब तऽ पागल भऽ जायत मोन । हमरा जाय दैह ।'

राम संयत होइत कहलथिन–'कतऽ जायब मौसी ?'

मौसी कहलथिन–'काशी पहुँचबा दैह हमरा, काली मन्दिरमे । ओतऽ अनेक विधवा रहैत छथि–हमरो गुजर भऽ जायत ।'

राम एक बेर कहलथिन–'ई मुदा अन्याय भऽ रहल अछि मौसी अहाँसँ । जकरा सभकेँ पोसि-पालिकऽ मनुक्ख बनौलिऐक, ओकरेसँ अन्तिम समयमे सेवाक अधिकार छीनि रहलिऐक अछि ।'

–"दुख नहि करऽ राम ! ओ अधिकार तोरे छऽ । भगवानक शरण जा रहलि छी । जहिया अन्तिम रूपसँ अपन शरणमे लेताह, तहिया तोरा छोड़ि के आगि देत मुँहमे ?'

राम झट कहलथिन–'से पक्का रहय मौसी, हमर ई अधिकार क्यो नहि छीनय ।'

मौसी किछु कहलथिन नहि, मुदा आँखिमे नोर भरने बड़ी काल धरि रामकेँ देखैत रहलथिन ।

गामसँ जाइत गौरीकेँ विदा करबा लेल भरि गाम जमा भऽ गेलनि । राजरानी जकाँ विदा कयलथिन राम । महफामे ओहार लागल । चारि टा कहार कान्हपर उठा लेलकनि । संग चललनि स्त्रीगण-धीया-पूता आ पुरुष । धारक कात धरि जेना गामक सभ लोक जुटि गेल होइनि ।

धारक पारो बड़ लोक गेलनि । स्त्रीगण, धीयापूतासभ घूरि गेल । राम ओहिना धारक कातमे ठाढ़ रहला । महफाक ओहार उठा मौसीक पयर छूलनि आ कने खखसिकऽ कहारसभकेँ कहलथिन–'जल्दी लऽ जाहुन, गाड़ीक बेर भेल जाइत छौक ।'

लाल मौसीकेँ बनारस पहुँचा गाम घूरि अयलाह ।

गाम एकदम उदास आ सुन्न लगलैक रविकेँ । सभ शनिकेँ गाम अबैत छल ।

बाबी नहि, छोटकियो बाबी नहि । छोटकी-बड़की पीसी-बाबीक घर सुन्न । दलानमे गुमसुम बैसल बाबू । काज आ गृहस्थीमे लालकाका आ आङन-भनसामे अपस्याँत लालकाकी । हुनके दोसराइतमे छोटकी भौजी ।

छोटकी भौजी माने विक्रमक कनियाँ । रविएक बतारी छलैक भौजी । सत्रहममे रवियो पयर देने छल, मैट्रिकमे आबि गेल छल ।

समय कोना ससरि जाइत छैक !

रवियोकेँ लगैक जेना ओ बेस पैघ भऽ गेल होअय । छोटकी भौजी लग आबिकऽ एना आरो बेसी लागऽ लगैक ! ओ रविसँ लजाइत छलथिन, बड़की भौजी जकाँ सहज भऽकऽ गप्प नहि करैत छलथिन । ठोरपर मुसकी रहैत छलनि, मुदा मुँहमे बकार नहि ।

रवि खिसियाकऽ कहनि–'अहाँ बौक छी भौजी !'

तैयो कोनो उत्तर नहि । माथपर कने आगू धरि खीचल आँचर, ठोरपर दाबल-दाबल मुस्की ! प्रथम यौवनक आभासँ दमकैत आकृति । मुदा बकार नहि ! रवि अकच्छ भऽ जाइत छल ।

एकबेर एकदम लोहछिकऽ कहलकनि– 'विक्रमो भाइसँ गप्प करैत छियनि कि नहि ?'

भौजी ककरोसँ गप्प नहि करैत छलथिन । लालकाकी भेलथिन सासु, गप्पक प्रश्ने नहि । घरमे दू टा श्वसुरे । देओरमे रवि आ मनोज छलनि । शनिकेँ गाम अबैत छल । बाजि-भूकि अकच्छ भऽ जाइत छल–भौजी ओहिना बौकक बौके । भौजी आस्ते-आस्ते गप्प करैत छलीह तीनू छोटका देओरसँ कखनो काल, माने लल्लू, बौआ आ छोटकूसँ ।

बिगड़िकऽ रवि अङनासँ बहरा जाय । एहन मौनीबाबा लग बकबक कयलासँ फायदे कोन ? सपत खाय जे फेर नहि टोकतनि छोटकी भौजीकेँ ! मुदा रहल नहि जाइ । घूरिकऽ फेर भौजी लग चल आबय । भौजीक लग बैसब आ हुनकर ठोरपरक दाबल-दाबल मुस्की ओकरा नीक लगैक । नहि जानि, किएक ?

सैह गुम्मा भौजी फागुआमे एक बाल्टी रंग माथपर ढारि पड़यलथिन ! रवियो खेहारलकनि । पड़ाकऽ घरमे नुकयलीह भौजी ! घर पैसि चुक्कीमाली भऽ ठेहुनमे मूड़ी गोँति बैसि गेलथिन भौजी । रवियो जिदिया गेल । सौँसे मुँह आ देहमे रंग आ अबीर रगड़ि देलकनि । मूड़ी उठा-उठा ठेहुन हँटा-हँटा रंग-अबीर रगड़ने गेलनि । भौजी आँखि बन्द कऽ लेलथिन । झिक्का-तिरिआ दौगा-दौगीक कारणेँ साँस खूब तेज भऽ गेल रहनि । सौँसे शरीर तप्पत । झोँक खतम भेलापर रवि आङनमे पड़ा आयल ।

ओकरा विचित्र अनुभव भेलैक । भौजी लग सभ बेर, अधिक काल बैसैत छल । मुदा एहन अनुभव कहियो नहि भेल रहैक । भौजीक तप्पत आ उखड़ल साँस आ गर्म शरीरक स्पर्शसँ ओकर देहमे जेना झुनझुनी भरि गेल रहैक । बाहर आबि आङनमे ठाढ़ भेलापर ओ झुनझुनी खतम नहि भेलैक । बड़ीकाल धरि देह एक टा अपरिचित उत्तेजनासँ झुनझुनाइत रहलैक ।

तहियासँ भौजीसँ डर होबऽ लगलैक ओकरा । गाम आबय तँ गोड़ लागि एकाध बेर टोक-चाल कऽ केम्हरो ससरि जाय ।

गाम एकदम उदास आ सुन्न लगैक रविकेँ ।

मायक मुइला आ मौसीक गाम छोड़ि गेलाक बाद राम आरो बेसी एकसर भऽ गेल छलाह । एकमात्र संगी छलनि पोथी । दिन-राति ओहीमे घोसिआयल रहैत छलाह । देखैत छलथिन जे रवि पैघ भेल जाइत अछि । ओकरा अपन संगी-साथीमे खेलायब नीक लगैत होयतैक । बेसीकाल अपना लग नहि घेरैत छलथिन रविकेँ ।

ओइ रविकेँ गामसँ जाइत काल पयर छूबि रवि कहलकनि–'अगिला शनिसँ गाम नहि आयब बाबू ! टेस्ट भऽ गेल अछि, बोर्डक परीक्षा हैत ! अनेरो दू दिन सभ हफ्तामे पढ़ाइक हर्ज भऽ जाइत अछि ।'

'अनेरो हर्ज' सूनिकऽ रामकेँ कनेक आघात लगलनि । तैयो हँसिकऽ कहलथिन –'दू दिन बूढ़ बाप लग रहैत छेँ तँ पढ़ाइ अनेरो हर्ज भऽ जाइत छौक ! बेस, नहि अबिहेँ ।'

स्वरक पीड़ाकेँ रवि चिन्हलकनि । कहलकनि–'परीक्षा नजदीक आबि गेल छैक तँ कहलहुँ ! अनेरो किएक हर्ज हैत ? सभसँ भेँट होइत अछि, गाम घुमैत छी । मुदा खबरदार ! अपनाकेँ बूढ़ नहि कहब फेर कहिओ बाबू ! चालीसे वर्षमे क्यो बूढ़ होइत अछि ! आ फेर अहाँ सन जवान ! सभ टा केश कारी, सभ टा दाँत चकचक आ मजगूत ! कैक टा जवान छथि अहाँ सन गाममे !'

बेटा बापकेँ पोल्हा रहल छलनि ! रामकेँ हँसी लगलनि । कहलथिन–'नहि अबिहेँ । परीक्षा लगिचिआयल छौक । परीक्षेपर ध्यान दे !'

रवि तैयो शनिकेँ गाम अबिते रहल । बाबुओ दोबारा चर्चा नहि कयलथिन ओकर । रविकेँ गाम उदास आ सुन्न लगैक ।

छोटकी भौजी लग बेसी नहि बैसैत छल । गोड़ लागि कोम्हरो ससरि जाइत छल । रविदिन जाइत काल कोनो बेर हँसी कऽ दैत छलनि–'विक्रम भाइकेँ कोनो समाद कहबनि भौजी !'

भौजी ओहिना गुम्म ! ठोरपर वैह दाबल-दाबल मुस्की ! ओइ मुस्कीक लोभमे रवि मुदा आब बेशीकाल हुनका लग बैसैत नहि छलनि ! पड़ायले-पड़ायले रहैत छल ।

ओइ शनिकेँ जहिना गोड़ लागि एक कात ससरऽ लागल, छोटकी भौजी टोकि देलथिन–'एना पड़ायल कतऽ जाइ छी ? हमरासँ डर होइए ?'

रवि अकचका गेल । भौजिए बाजलि छलथिन, ताहिमे कोनो सन्देह नहि छलैक । ओ डरे पड़ायल फिरैत छल, ताहूमे कोनो सन्देह नहि । मुदा गप्पकेँ हँसीमे उड़बैत थपड़ी पाड़ैत बाजल–'वाह ! अहाँ बजितो छिऐक !'

छोटकी भौजी लजा गेलथिन । मुदा तकर बाद मुहाबज्जी शुरू भऽ गेलनि । सब बातपर मौनीबाबा जकाँ गुम्मे नहि रहैत छलथिन ।

बाजऽ-भूकऽ लगलथिन तँ रविक डर कम होबऽ लगलैक । गुम्मा, ठोरपर दाबल-दाबल हँसीबाली भौजीसँ ओकरा बेसी डर होइत छलैक । ओ तप्पत आ उखड़ल साँस आ शरीरक गर्म स्पर्श मोन पड़ैत छलैक । ओ डरे पड़ा जाइत छल। बाजऽभूकऽबाली भौजीक संग ओकरा कोनो डर नहि होइत छलैक । गप्पमे सभ टा बिसरि जाइत छलैक ।

विक्रमकेँ गाम बिसरि गेल छलनि ! बी.ए.मे बढ़ियाँ रिजल्ट नहि भेलनि। एम.ए. करऽ लागल छलाह । भाइक ओकालतिमे कोनो बरक्कति नहि छलनि ! सभ टा भार मामेक माथ । गाम अबैत लाज होइत छलनि । रिजल्ट गड़बड़ आ बहु लेल गामक दौड़ा-दौड़ी ! ओ गामकेँ बिसरले रहैत छलाह !

छोटकी भौजीकेँ ओइ दिन नहि जानि की फुरलनि । एक टा लिफाफ हाथमे दैत लजाइत कहलथि–'ई 'हुनका' दऽ देबनि ।'

चिट्ठी लऽ दरभंगा जाइत काल रविकेँ उत्सुकता भेलैक । बड़ रोकलक अप्पन मोनकेँ । मुदा नहि रहि भेलैक । विक्रम भाइकेँ देबासँ पूर्व ओइ चिट्ठीकेँ पढ़ि लेलकै–टेढ़-मेढ़ अक्षरमे किछुए पाँती ! रवि अपन कोठलीमे मनोजोसँ नुकाकऽ साँस रोकि ओइ चिट्ठीकेँ पढ़लक–

प्राणनाथकेँ दासीक प्रणाम !

अहाँ सुधि बिसरा देलहुँ तऽ हमही निर्लज्जि भऽ लिखि रहलि छी।

अहाँ कहिया आयब ?

चरणक दासी- सुनयना

लिफाफकेँ बन्द कऽ रवि विक्रम भाइकेँ दऽ देलकनि । चिट्ठी देखि विक्रम चौंकलाह । फेर लिफाफकेँ तेना पाकिटमे राखि लेलनि जेना कोनो खास बात नहि होइ ।

अगिला शनिकेँ गाम जाइत काल विक्रमो एक टा लिफाफ देलथिन । नहि

जानि किएक, रविकेँ ओकर प्रतीक्षा छलैक । झट ओ लिफाफ अपन जेबीमे नुका लेलक । आ, गाम आबऽसँ पहिने, स्टेशनक बेटिंग रूममे, मनोजोसँ नुकाकऽ ओइ चिट्ठीकेँ पढ़लक–

हमर अप्पन सुनयना,

अहाँ विश्वास नहि करब जे अयबा लेल मोन कतेक छटपटाइत अछि । सभ शनिकेँ जखन रवि-मनोज गाम विदा होइत अछि, मोन करैत अछि जे हमहूँ संग लागि जाइ ।

मुदा लोकलाज पयरमे डोरी बान्हि दैत अछि । मामा की सोचताह ? पढ़ाइमे भुसकौल, अइ सभमे तेज ! तेँ मोनकेँ मारिकऽ एतहि रहि जाइ छी । किछुए दिनक तऽ गप्प छैक ! सौँसे जिनगी तऽ पड़ले अछि ! अहाँ तऽ हमरे छी, अहाँकेँ हमरासँ के छीनत ? यैह सोचिकऽ रहि जाइत छी ।

अहूँ अपन मोनकेँ बुझाउ ।

अहाँक— विक्रम

चिट्ठीकेँ फेर साटिकऽ गाममे छोटकी भौजीकेँ दऽ देलकनि । गामसँ अबैत काल भेटलैक एक टा दोसर लिफाफ । नुकाकऽ ओकरो पढ़लक रवि–

वाह रे स्वामीजी ! बढ़ियाँ उपदेश पठौने छी । अपन मोनकेँ बुझाउ ! मुदा अहाँकेँ के बुझाओत ? हम अहीँक छी आ कतहु पड़ायलि नहि जा रहलि छी । मुदा ई समय पड़ायल जा रहल अछि । ई ककरो संग नहि दैत छैक, घूरिकऽ अयबो नहि करैत छैक । हमरो अहाँक नहि घूरत ।

किछु बुझलिऐक स्वामीजी ?

दासी— सुनयना

पढ़िकऽ विचित्र गुदगुदी लगलैक रविकेँ । छोटकी भौजीक ठोरपर दाबल-दाबल हँसी मोन पड़लैक । गुम्मा छोटकी भौजी ! सत्ते, भितरघुइँया छैक ! विक्रम भाइकेँ देलकनि चिट्ठीमे पटकनियाँ ! जवाब फुरतनि ?

जवाब ठीके नहि फुरल रहनि, पढ़ल-लिखल विक्रम भाइकेँ लोअर पास कनियाँक सबालक ! हारि मानैत लिखने छलथिन–

अहाँ ठीके लिखलहुँ सुनयना ! बितलाहा समय नहि घुरैत छैक । रहि

जाइत छैक मात्र अफसोच । हमरो भऽ रहल अछि । लोकलाजे अनेरो एतेक समय गमौलहुँ ।

अगिला शनिक प्रतीक्षा करब । रविक संग हमहूँ आयब–

–विक्रम

रवि लिफाफ दऽ देने छलैक । भरि दिन खुशीसँ नचैत छलैक छोटकी भौजी ! रवि दिन जाइत काल कहलकै–'अगिला बेर एकसरे नहि आयब । 'हुनको' लेने अयबनि ।'

सत्ते आयल विक्रम । मामा डँटबो कयलथिन–'तोँ दुनू भाइ तऽ गामकेँ एकदम बिसरले जाइ छऽ ! मोहनकेँ ओकालतिसँ फुरसति नहि, आ तोरा पढ़ाइसँ। शनि-रविकेँ आयल करऽ ।'

'जो रोगी को भावे, सो बैदा फरमावे ।' विक्रमकेँ अयबा-जयबाक बाट खूजि गेलनि । सभ शनिकेँ आबऽ लगलाह ।

ओइ शनिकेँ नहि अयलाह तँ रवि दिन गामसँ घुरैत काल रवि छोटकी भौजीकेँ टोकलकनि–'भाइकेँ चिट्ठी नहि देबनि भौजी !'

छोटकी भौजी हँसलीह– एक टा तृप्त हँसी ! आब हुनकर ठोरपर दाबल-दाबल हँसी नहि रहैत छलनि । खूब मुखर भऽ हँसैत छलीह– एक टा तृप्त आ मादक हँसी ! रविक देह सिहरि गेलैक ।

हँसी रोकिकऽ कहलथिन–'आब अपने अबिते छथि तऽ चिट्ठीक कोन काज ?' फेर जेना किछु ध्यान गेलनि । दुष्टतापूर्वक हँसैत पुछलथिन–'चिट्ठीक बड़ पुछारी रहैत अछि ? चोराकऽ हमरासभक चिट्ठी पढ़ैत तऽ नहि छलहुँ !'

रवि झट कहलकनि–'आब काज निकलि गेल तऽ एहिना सन्देह करब किने ! पहिने तऽ चिट्ठी लऽ जाय लेल नेहोरा करैत रहैत छलहुँ !'

भौजी परतारैत कहलथिन–'तामस नहि करू ! फेर काज हैत तऽ के लऽ जायत चिट्ठी ? एक टा अहीँ तऽ दुलरुआ देओर छी ।'

छोटकी भौजीकेँ चिट्ठी पठयबाक काज नहि पड़लनि । विक्रम बराबरि अबैत रहल गाम । छोटकी भौजी सुनयना तृप्त आ मादक हँसी छिड़ियबैत रहलीह। ओइ हँसीकेँ देखि रविक देह सिहरि जाइ ।

आ, ओइ दिन तँ देहक सभ टा नस तनतना उठलैक ! रातिकेँ निन्न टूटि गेल रहैक । लग्घी करऽ बाहर आयल रहय । वर्षा भऽ रहल छलैक । ओसारेक कातमे बैसि गेल । उठल तँ छोटकी भौजीक कोठली दिस ध्यान गेलैक । कोठलीमे कने-कने इजोत खिड़कीसँ देखाइत छलैक । मुदा कोठलीक दरबज्जा खूजल देखि रवि चौँकल । नीक जकाँ देखलापर दू टा छाया पानिमे ठाढ़ बुझयलैक–ओसारोसँ नीचाँ, आङनमे ठाढ़ । घर भरि निद्रामे निमग्न छलैक आ विक्रम आ भौजी आङनमे पानिमे भीजि रहलि छलीह । वर्षाक फुहार देहपर लैत भौजी सिहरिकऽ विक्रमक देहसँ चिपकि जाइत छलीह ! फेर देह छोड़ि मुँह उठा वर्षाक फुहार मुँहपर लैत छलीह आ फेर सिहरिकऽ द्विगुणित वेगसँ चिपकि जाइत छलीह !

रवियोक पयर ओही ठाम जमीनमे चिपकि गेलैक आ छोटकी भौजी आ विक्रम बड़ी काल ओहिना वर्षामे भिजैत रहलथिन– आलिंगित-प्रतिआलिंगित, चुम्बित-प्रतिचुम्बित !

मनोज दोसरे काण्ड कयलक दरभंगामे । बोर्डक परीक्षा छोड़ि मातृक पड़ा गेल । रवि परीक्षा देलक आ गाम आबि गेल ! संगे मोहन आ हुनकर कनियाँ सेहो अयलथिन ।

मोहन अपराधी जकाँ लालमामा लग ठाढ़ भेलाह–'हमरा क्षमा करब छोटका मामा ! हम अपन उत्तरदायित्व नहि निमाहि सकलहुँ । मनोजक अइ कृत्य लेल हम अपराधी छी !'

लाल दुखी स्वरमे कहलथिन–'तोहर कोनो दोष नहि छऽ मोहन ! सभ टा कर्मक दोष ! हमहूँ मैट्रिक पास नहि कऽ सकलहुँ, भाइ बी.ए. धरि पढ़लनि । आशा छल जे बेटा बापसँ आगू बढ़त । मनोज एना करताह, परीक्षा छोड़ि पड़ा जयताह, से ककरा सन्देह छलैक ? तेरा सन गार्जियनक संग छलाह । तोँ अपने पढ़लह, विक्रमकेँ पढ़ौलहक आ रवि तँ इलाकेमे नाम करत । आ, हमर सुपुत्र परीक्षाक डरे पड़ा गेलाह ।'

–'मोनकेँ एना दुखी नहि करू छोटका मामा ! एहि बेर पड़ा गेलाह तेँ की ? परीक्षा देबहि पड़तनि ! सप्लीमेन्टरी हेतैक । अइ बेर हम सावधान रहब ।

समय निकालि अपने पढ़यबनि, विक्रम पढ़ौथिन । ई गल्ती दोबारा नहि हैत हमरासँ !' मोहन आश्वासन देलथिन ।

मातृकोमे काण्ड कयलक मनोज । मामा-मामीक टाका-पैसा, गहना-गुड़िया लऽ ओतहुसँ पड़ायल । ओतऽसँ बापकेँ एक टा पोस्टकार्ड लिखि देलकनि-'बम्बै जा रहल छी !! एक्टर बनब ।'

लालकाकी छाती पीटिकऽ कानऽ लगलीह । हुनका अपयशक चिन्ता नहि छलनि । भाइ-भौजीक टाका-पैसा गहना-गुड़िया घुरा देथिन । जेठ बेटा छलनि, बम्बैमे किम्हर हेरा जयतनि, घर घुरबो करतनि कि नहि ! ओ खटवास लऽ लेलनि-'ककरो पठबियौक । मनोजकेँ ताकि अनतैक ।'

सभ बुझाकऽ हारि गेलनि, लालकाकी अपन जिदपर अड़लि रहलीह । अन्तमे टाका-पैसा लऽ विक्रम विदा भेलाह बम्बै । ताकिकऽ घुरा अनथिन । गामक दू गोटे रहैत छलाह बम्बै- महेन्द्र आ गणपति । दुनू सहोदर भाइ । वैहलोकनि तकबाक कोनो व्यवस्था करथिन । चिट्ठी पहिने लिखि देल गेलनि ।

विक्रम मनोजकेँ ताकऽ गेलाह । रवि गामे रहि गेल । रिजल्टक प्रतीक्षा करऽ लागल । प्रथम श्रेणी होयबे करतैक, केहन स्थान भेटैत छैक जिला वा बोर्डमे, तकरे प्रतीक्षा छलैक । अपना तँ नीके आशा छलैक ।

रामोकेँ नीके आशा छलनि । लालकेँ कहलथिन-'एक टा सत्यनारायणक पूजाक व्यवस्था करह नीक जकाँ । मनोज अबस्से घुरि आओत ! भगवान सद्बुद्धि देथिन ।'

पूजा बड़ धूमधामसँ भेलैक । रविए पूजापर बैसल । बहुत दिनपर पूजाक एहन वृहत् आयोजन गाममे भेल रहैक । पीअर धोती पहिरने पुजेगरी रवि दिस सभक टकटकी लागि गेल रहैक ।

कवितो आयलि रहैक पूजामे । पूजाक बाद प्रसाद लऽ जाइत रहैक तँ रवि टोकलकै-'चुपचाप पड़ायलि जाइत छेँ ! आइ-काल्हि देखितो ने छियौक ! फेर विवाह द्वारे घरसँ निकलब बन्द छौक की ?'

रविक बातपर कविता हँसलैक । ओकर विवाह फेर ठीक भऽ गेल छलैक, सिद्धान्तो भऽ गेल छलैक । विवाह छलैक- तीन मास बाद । पछिला बेर विवाह ठीक भेल रहैक आठ वर्ष पूर्व तँ कविताक घरसँ बाहर निकलब, खेलायब-कूदब बन्द भऽ गेल रहैक । ओही लेल दूनू झगड़ो कयने छल आ फेर रविक दरभंगा जयबाकाल ओ झगड़ो खतम भऽ गेल रहैक चारि वर्षक बाद । रवि तहिया तेरह वर्षक छल ।

बीचमे गाम अबैत छल तँ कवितासँ कहियो-काल भेँट होइत छलैक । मुहाबज्जी जे बन्द छलैक, से शुरू भऽ गेल रहैक गाम छोड़बासँ पहिने । भेँट भेलापर किछु गप्प भऽ जाइक । नहि किछु तँ पढ़ाइएक गप्प !

रवि पुछैक-'तोहर पढ़ाइ केहन चलै छौ ?'

कविता हँसिकऽ कहैक-'ओहिना टामन-गुड़िया । कऽ टऽ कऽ अक्षर पढ़ि लैत छी आब तोरे किताबसभक बलेँ ।'

रवि कहैक-'झूठ बात ! हमर किताबसभक बलेँ नहि, अपन इच्छाशक्तिक बलेँ । ओहि बलेँ एकदिन तोँ धड़-धड़ अंग्रेजियो पढ़ऽ लगबेँ ।'

कविता हँसऽ लगैक-'अंग्रेजी पढ़िकऽ कोन बिलैँत जयबाक अछि हमरा ? कहुना दू-पाँती लिखऽ आबि जाय, सैह बहुत ।'

रविकेँ बूझल छलैक जे कविता दू पाँती लिखबासँ बहुत बेसी सीखि लेने छलैक । पुरान जिद्दी छलैक । जाहि चीजक पाछाँ पड़ि जाइत छलैक, ओकरा कऽकऽ छोड़ैत छलैक ।

चारि वर्ष बीति गेलैक । कविता सत्रह वर्षक भऽ गेलि । रविसँ बारहे घंटा छोट छलैक । रवियो मैट्रिकक परीक्षा दऽ गाम आयल । गाम आबि सुनलकै- कविताक विवाह ठीक भऽ गेलैक । सिद्धान्त भऽ गेलैक । तीन मास बाद विवाह छैक ।

सूनिकऽ रविकेँ बड़ प्रसन्नता भेलैक ! आठ वर्ष पहिने जकर विवाहपर ओ खिसियाकऽ वर-वरियातीकेँ मारिकऽ भगयबा लेल उद्यत छल, ओकर विवाहक गप्प सूनि चेतन होइत रविकेँ बड़ प्रसन्नता भेलैक । प्रसन्नता एहू लेल बेसी जे वर खूब पढ़ल-लिखल आ सुखी-सम्पन्न छलैक ! बी.ए. पास आ सुन्दर वर ! गामक लोक देखने छलैक । हरि बाबूक सार । बहिनक संग हवेली मोहनपुर आयल छलैक । नहि जानि, कतऽ कविताकेँ देखलकै आ जिद धऽ लेलकै । सभ टा प्रयास वरे पक्ष दिससँ भेलैक । वसन्त ठाकुरकेँ किछुओ करऽ नहि पड़लनि । जाहि बेटी लेल गामेगाम बौआयल छलाह, दोषाहि कहि जकरा सभ पछिला आठ वर्षसँ अस्वीकार कऽ रहल छलैक, तकरा राजकुमार सन वर समाद पठा स्वीकार कयलकै । भाग्यक बात !

ओही गप्पपर रवि पूजा-दिन हँसी कयलकै । ओकर ओइ हँसीपर कविता हँसलकै— 'की विचार छौक ? फेर मारामारी करबेँ की ?'

पुरना गप्प मोन पाड़ि रवियो हँसल । लोकसभकेँ ओम्हरे अबैत देखि कविता एक दिस ससरि गेलैक ।

समयो ससरि गेलैक । एक मास बीति गेलैक । मनोज बम्बैमे पकड़ल गेल । विक्रम अपना संग लऽकऽ घुरलैक । उपासक नौबति छलैक । स्टूडियोसभक गेटपर दरबानसभसँ धक्का खा-खा हारि गेल छल । भूखल-पिआसल एक दिन महेन्द्रक डेरापर गेल आ ओतहि विक्रम ओकरा धऽ लेलकै ।

बम्बैक भूत मनोजक माथपर चढ़ले छलैक । अजीब हुलिया बनौने छलैक ! खूब कम मोहरीवला पेन्ट आ एकदम गाढ़ रंगक लहरदार कमीज ! माथक केश झबरल, आँखि-कपार सभ झाँपल । गलामे हरदम एक टा स्कार्फ बान्हल !

लालकाकी देखिते कानऽ लगलथिन । लालकाका बिगड़िकऽ मुँहो नहि बजलथिन । मनोज लेखे धनसन ! ओही हुलियामे गाम भरि बौआय, जेना किछु भेले नहि होइ ! चोराकऽ सिगरेट सेहो पीबय । खूब दामी-दामी सिगरेट बम्बैएसँ संग अनने छल ।

रविक कोठलीमे ओकर बिछौनपर पड़िकऽ चैनसँ सिकरेट धूकऽ लगैक । धूआँक गोल-गोल औँठी बना मुँहसँ छोड़ैक आ रविकेँ कहैक— 'देखहिक, एहिना हीरोसभ सिगरेट पीबै छैक ।'

रवि डरक लेल दरबज्जा बन्द कऽ लेअय, क्यो देखि नहि लैक ।

ओइ दिन दुपहरियामे बड़ गर्मी रहैक ! बाहर आगि बरसि रहल छलैक आ कोठलियोमे चैन नहि रहैक । रवि अपन कोठलीमे कछमछ करैत छल । ताही काल नहि जानि कोम्हरसँ मनोज अयलैक आ ओकर बिछौनपर चितंग पड़ि रहलैक ! कहलकै— 'बम्बैमे गर्मीक कोनो समस्ये नहि छैक रवि ! समुद्र छैक समुद्र ! सभ साँझ-प्रात समुद्रक कातमे पड़ल रहैत अछि ! आ, एक टा बात कहियौ रवि, समुद्रमे छौँड़ीसभ नङटे नहाइत छैक !'

–'नङटे ?' रवि अविश्वाससँ कहलकै ।

–'हँ रे, नङटे । ओहो कोनो कपड़ा भेलैक ! दू आङुर चौड़ा बिस्ती डाँड़मे आ ओतबे चौड़ा एक टा ऊपरो बान्हल ! ओइसँ कतहु देह झपाइ ? की कहिऔ रवि ! बड़ मजा अबैत छल जुहूपर ! सटले-सटल मौगी-पुरुषक जोड़ा औंघरायल— एकदम नंग-धरंग । ककरो कोनो लाज-धाख नहि ! तोँ बगलोसँ चल जयबहिक तैयो कोनो चिन्ता नहि ! एक-दोसरसँ चिपटल पड़ल रहतौक !'

मनोज खिखियाकऽ हँसऽ लगलैक जेना स्मरण मात्रेसँ आनन्द आबि गेल होइ । रवियोकेँ सुनबामे मोन लागि रहल छलैक, मुदा ऊपरसँ तामस देखबैत

कहलकै–'यैहसभ देखऽ इम्तहान छोड़ि बम्बै पड़ायल छलेँ ? झुट्ठा नहितन !'

मनोज ओकर तामसकेँ अनठबैत बजलै— 'परीक्षा तऽ फेरो भऽ जयतैक । मुदा जे मजा बम्बैमे देखलिऐक से फेर जिनगीमे देखबऽ, तकर आस नहि । तोरा विश्वास हेतौक ? बाटो-घाटमे लोक उघारे चलैत छैक । बूझ जे नङटे । झाँपलसँ बेसी उघारे रहैत छैक देह । जेम्हरे जयबेँ, तेम्हरे ओकरे प्रदर्शनी । सिनेमामे ओहि प्रदर्शनीकेँ कहैत छैक-'बाक्स आफिस' !

रवि फेर कृत्रिम क्रोध देखबैत डँटलकै— 'आ ओही बाक्स आफिसक लोभमे तोँ बम्बै पड़ायल छलेँ ! आइए कहैत छियनि लालकाकाकेँ । तोहर बियाह हैब जरूरी छौक ।'

–'ना बाबा ! अइ जंजालमे के पड़त अखन ? हम तँ मौजी जीव छी । जखन जेम्हर इच्छा हैत, जायब । खुट्टासँ बन्हाकऽ के रहत ?'

मनोज मुस्किआइत चल गेलैक । रवि मनोजक वर्णित बम्बैकेँ कल्पनामे देखऽ लागल । किछु काल बाद जोरसँ मेघ गरजलैक आ तड़तड़ा कऽ वर्षा होबऽ लगलैक ।

ओही वर्षामे भिजैत क्यो दौड़ले ओकर कोठलीमे आबि गेलैक । कविता छलैक । दौड़ितो-दौड़ितो नीक जकाँ भीजि गेल छलैक । भीजल कपड़ा देहसँ सटि-सटि गेल छलैक— जहाँ-तहाँ । रविकेँ ओम्हर देखल नहि गेलैक । बाहर देखऽ लागल ।

कविता भीजल नुआ गारैत कहलकै— 'नीक जकाँ भीजि गेलहुँ । एकाएक आबि गेलैक वर्षा ।'

रवि कविताक बात नहि सुनलकै । ओकर ध्यान समुद्रमे नहाइत छौँड़ीसभपर छलैक । ओकरा वर्षामे भिजैत छोटकी भौजी आ विक्रम मोन पड़लैक । भीजल आ आलिंगित ! चुम्बित-प्रतिचुम्बित ! बिनभिजनो ओकर देहमे एक टा सिहरन व्याप्त छलैक ।

बिना कविता दिस देखनहि पुछलकै— 'एना देखतौ क्यो हमर कोठलीमे तऽ की कहतौक ?'

कविता निर्भय हँसलैक-'की कहत ? कोनो पहिल बेर आयलि छी तोहर कोठलीमे ?'

रवि आब तकलकै कविता दिस । भीजल देहसँ जहाँ-तहाँ सटल वस्त्र लग ओकरो दृष्टि सटऽ लगलैक । लुब्ध दृष्टिएँ तकैत किछु बदलल स्वरमे बाजल—'ओ बात आर छलै कविता ! तहिया हम-तोँ नेना रही । आब पैघ भऽ गेल छी हमरालोकनि । तोहर बियाह छौक दुइए मास बाद । लोक देखतौक तऽ की-कहाँ सोचतौक ?'

—'तऽ सोचऽ दहिक' कविता ओहिना निर्भय बजलैक । रविक आँखिक लुब्ध चेष्टा आ बदलल स्वरपर ओकर ध्यान नहि गेल छलैक । ओ अपन भीजल नुआ आ आङीकेँ पोछऽ-गारऽमे लागलि छलि ।

रविक मोन नियंत्रणसँ बाहर भऽ गेलैक । एक टा अनुचित अभद्र प्रश्न कऽ उठलैक—'बियाहक बाद की होइ छै कविता !'

अइ बेर कविता लजा गेलैक । प्रश्नक अनौचित्य वा अभद्रतापर ओकर तैयो ध्यान नहि गेलैक । ओ भीजल देह लेने अपन बालसंगीक कोठलीमे निर्भय ठाढ़ि छलि आ प्रत्येक प्रश्नक सहज ढंगसँ जवाब दऽ रहलि छलैक । ओइ प्रश्नपर कहलकै- 'हम की जानऽ गेलिऐक ? तोहीँ लाल-बुझक्कर छेँ, तोरे सभ टा बुझल छौक !'

विचित्र उन्मादक उत्तेजनामे आगू बढ़ि रवि कविताकेँ अपन बाँहिमे समटैत बड़बड़ा उठल—'तऽ आ, आइ हमहीँ सभ टा बुझा दैत छियौक ।'

बाहर वर्षा बन्द भऽ गेल छलैक । रवि मुँह घुमाकऽ कोठलीक एक टा कोनमे ठाढ़-छल । कविता चौकीपर मूड़ी गोँतने बैसलि हिचुकि-हिचुकि कानि रहलि छलैक ।

फेर कानब बन्द भऽ गेलैक । मूड़ी उठा रवि दिस तकलकै । रविक पीठ छलैक ओकरा दिस । कविता चौकीसँ ऊठिकऽ ठाढ़ि भऽ गेलि । रवि घूमिकऽ तकलकै । कविताक आँखिमे आगिक लपटि छलैक । ओकरा दिस ओही लहकैत दृष्टिएँ तकैत कविता तीव्र स्वरमे बजलै- 'हम कहि देबैक, सभकेँ कहबैक... रामकाकाकेँ कहबनि, सौँसे गामकेँ कहबैक...'

आ, दौड़ैत कोठलीसँ बाहर चल गेलैक । रविकेँ डर भेलैक । कविताक जिद्द आ तामस ओकरा बूझल छलैक । ओ सत्ते सभकेँ कहि देतैक । एक बेर तमसायलि रहैक तँ बाबूसँ मारि खुआ देने रहैक । जिनगीमे बापक पहिल दण्ड ।

डेरायल रवि दौड़िकऽ बाहर आयल । कविताक कोनो पता नहि छलैक ।

अबस्से बाबूक घरमे गेलि होयतैक । जे क्षण ने बाबू घरसँ बहरयथिन आ ओ लाजे मरि जायत ! सुनिते बाबूक सभ टा स्पप्न मरि गेल होयतनि । कतेक आशा छनि हुनका हमरासँ ! आ, हमर एहन कृत्य ? कोना देखा सकब बाबूकेँ अपन कलंकित मुँह ?

रवि दौड़िकऽ आङनसँ बाहर आबि गेल आ दौड़िते गामसँ बाहर दिस पड़ायल । धार पार कऽ पड़ायले चल गेल । बीच-बीचमे घुरि-घुरिकऽ पाछाँ ताकय जे क्यो खेहारने तऽ ने अबैत छैक ! कतहु क्यो ने अभरलैक । ओकरा दौड़ल चल जाइत देखि लोक कने आश्चर्यसँ तकलकै- कथीक हड़बड़ी छैक रविकेँ ! एना दौड़ल किए जा रहल छैक ?

स्टेशन लग पहुँचल । गाड़ीक कोनो बेर नहि छलैक । ओ लाइने-लाइने दौड़ऽ लागल । पयर खाली छलैक । देहपर एक टा गंजी मात्र । धोती दौड़िते काल नीक जकाँ डाँड़मे खोंसि लेने छल । लाइनक कातक पाथर-कंकड़ पयरमे कतेको बेर गड़लैक । ठेस लगलैक आ औँठा थकुचा भऽ गेलैक । पयर शोणित-शोणिताम ! तैयो रवि पड़ाइते रहल, घुरि-घुरिकऽ पाछाँ ताकय आ पड़ायल जाय ।

दरभंगा पहुँचल । ओतऽ रहब सुरक्षित नहि छलैक । चारूकात चिन्हार लोक । चारि वर्ष ओतहि पढ़ने छल । विद्यार्थी, दोकानदार आ शहरक लोक ओकरा चीन्हैत छलैक । गामोसँ लोक अबिते रहैत छैक— सभ ट्रेनसँ । रविक मोन निश्चिन्त नहि भेलैक ।

भूख-पियासक ज्ञान सेहो हेरा गेल रहैक । एक टा भय ओकर सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ आक्रान्त कऽ देने रहैक । मात्र एक टा भय— 'बाबू सुनता तऽ की सोचता ! कोना देखा हैत हुनका अपन कलंकित मुँह !' ओहि डरेँ ओ सभसँ नुकाय चाहैत छल, पड़ाकऽ सभसँ दूर जाय चाहैत छल ।

राति भेलैक तँ भूखल-पियासल एक टा गाड़ीमे बैसि गेल । जा धरि गाड़ी खूजि नहि गेलैक, धोतीक साँची खोलि अपन सौँसे मुँहकेँ झपने रहल । गाड़ी खुजलैक आ बरौनी पहुँचा देलकै ।

ओतऽ फेर दोसर गाड़ी । रवि पड़ायले चल गेल ।

रवि ऊठिकऽ बैसि गेल ।

गामक स्टेशन नजदीक आबि रहल छलैक । नीक जकाँ प्रात भऽ गेल छलैक आ गाड़ी आधा घंटा दरभंगामे रुकि आगू बढ़ल छलैक । रवि मुँह-हाथ धो, चाह पीबि आयल छल नीचाँ उतरि, आ फेर बिछौन समेटिकऽ बान्हि लेने छल ।

कोँढ़ जोर-जोरसँ धड़कि रहल छलैक । चौदह वर्षक बादो ओ भय ओतबे तीव्र आ उत्पीड़क छलैक । एतेक समय बितलोपर कनियोँ कम्म नहि भेल छलैक । भरि गाम थूकत हमरापर आ बाबूकेँ घाड़ नहि उठा होयतनि ।

गाड़ी दरभंगासँ खूजि गेल रहैक । रवि अपन धड़कैत कोँढ़केँ शान्त करबाक व्यर्थ चेष्टामे लागल रहल । स्टेशन आबि गेलैक । उतरबासँ पहिने एक बेर डिब्बाक खिड़कीसँ मूड़ी निकालि ओ चारूकात तकलक । किछुओ अपरिचित नहि भेल छलैक । जेना समय ठमकल होइ ! ओहिना स्टेशनक लाल मकान आ लम्बा प्लेटफार्म । कतहु कोनो परिवर्तन नहि भेल छलैक एतेक पैघ अन्तरालमे । रविकेँ बड़ आश्चर्य भेलैक ।

सामान उतारि प्लेटफार्मपर आबि गेल । फेर चारू कात तकलक । लोक बेसी अपरिचित, मुदा बीच-बीच परिचित चेहरासभ सेहो लग दने आगू बढ़ि गेलैक । ककरो आकृतिपर चीन्हि लेबाक कोनो भाव नहि उगलैक । दू टा कुली ओकर सामान लग ठाढ़ भेलैक । ओकरो चेहरा रवि चिन्हलकै, मुदा नाम नहि मोन पड़लैक । कुली दुनू ओकरा एकदम्मे नहि चिन्हलकै । एक बेर रविकेँ टोकलकै दुनू— 'कतऽ जयबै बाबू ?'

रवि अपने गुनधुनमे छल । कोनो उत्तर नहि देलकै । दोसर यात्रीक तलाशमे ओ दुनू कुली प्लेटफार्मक दोसर कात चल गेलैक । रवि एक बेर फेर नीक जकाँ स्टेशनक साइनबोर्ड पढ़लक— गफूरगंज ! बोर्ड नव लिखल गेल छलैक, पीरा बोर्डपर कारी अक्षर एकदम स्पष्ट छलैक । मुदा स्टेशनक भवनक लाल रंग किछु बदरंग-सन भऽ गेल छलैक जेना बरखोसँ पोचारा नहि भेल होइ !

एकाएक ओकरा अपन चेहरा देखबाक तीव्र आकांक्षा भेलैक । ओकरो चेहरा तँ अइ अन्तरालमे एहिना बदरंग भऽ गेल होयतैक, नहि तँ एतेक रास चिन्हार लोक ओकरा बिना चिन्हने कोना चल जाइत होयतैक ? ट्रेन खूजि गेल छलैक आ यात्रीसभ लपकल अपन गन्तव्य दिस चल गेल छल । किछुए यात्री प्लेटफार्मपर रहि गेल छलैक । सामान ओहिना प्लेटफार्मपर छोड़ि रवि वेटिंगरूममे गेल ।

वेटिंगरूमक हालति एकदम खराब छलैक । बीचमे राखल टेबुल एकदम चितकाबर भऽ गेल छलैक आ बड़का आरामकुर्सीक बेँत टूटिकऽ लटकि गेल रहैक– बीचमे बड़की टा धोधरि जकाँ । एक टा बेंच कातमे पड़ल छलैक । रवि बाथरूममे गेल आ अयनाक सोझाँ ठाढ़ भऽ गेल ।

अयना बीचसँ फूटल छलैक आ क्यो फोड़लाक बाद आधा टुकड़ी सेहो हँटा देने छलैक । बाँचल आधा टुकड़ी शीशामे अपन आकृति देखब एकदम मोस्किल छलैक । कहुना मूड़ी सटा अपन चेहरा देखलक रवि–चौदह वर्षसँ बेसी पैघ वनवाससँ परिवर्तित अपन चेहरा । अइ पैघ प्रवासमे सत्रह वर्षक नौजवानक आकृति कतहु हेरा गेल छलैक । ओइ नौजवानक आकृतिकेँ अयनाक प्रतिबिम्बित छविमे तकबाक रवि असफल चेष्टा कयलक । बीतल चौदह वर्षक प्रत्येक क्षण ओकर आकृतिपर अपन निशान छोड़ि गेल छलैक । गोर आकृति जरिकऽ ताम्रवर्ण भऽ गेल छलैक ओ आँखिमे एक टा कठोर उदासी पसरि गेल रहैक । केशमे असमय जहाँ-तहाँ उज्जर तार झलकऽ लागल रहैक आ छौ फीटक बलिष्ठ शरीर किछु-किछु आगू दिस झुकल सन लगैत छलैक । अयनामे अंकित अपन अस्पष्टो छवि रविकेँ तमसायल आ रुष्ट लगलैक, जेना घुरि अयबाक ओकर निर्णयपर एखनो रुष्ट होइ । बितलाहा चौदह वर्षमे अनेको बेर गाम घूरि जयबाक विचार भेल रहैक । मुदा, प्रत्येक बेर उपहास करैत, भर्त्सना करैत गाम भरिक लोकक आकृति ओकर आँखिक आगाँ नचैत छलैक आ नचैत छलैक ओइ उपहास करैत, भर्त्सना करैत आकृतिसभक बीच सहमल, अपमानित आ हताश बाबूजीक आकृति । ओकर निश्चय बदलि जाइत छलैक । कोना ठाढ़ होयत ओ सभक सोझाँ ? की जवाब देतैक जे किएक गाम छोड़िकऽ भागल छल ? जवाब देबाक प्रयोजने नहि पड़तैक । कविता सभकेँ कहने होयतैक आ सौँसे गाम ओकर नामपर थूकि देने होयतैक ।

एक बेर फेर ओकरा कवितापर क्रोध भेलैक । ई क्रोध गाम छोड़बाक दिनसँ एक्को बेर, एक्को क्षणक लेल कम्म नहि भेल छलैक । ओकर सम्पूर्ण जिनगीकेँ तबाह कऽ देलकै । एक क्षणक कमजोरीमे, एक टा एकान्तक उत्तेजनामे जीवनक सभ टा स्वप्न, सभ टा महत्त्वाकांक्षा जरिकऽ छाउर भऽ गेलैक । आइयो ओइ एकांतकेँ स्मरण कऽ सिहरि गेल रवि । गुमसल दुपहरिया आ फेर आकस्मिक वर्षा । वर्षामे भीजल कविता । ओकर कानब । फेर कानबकेँ बन्द कऽ उठैत एक टा लहकैत दृष्टि आ एक टा धमकी ।

नहि । रवि नहि मोन पाड़त ओइ धमकीकें आइ । आइ ओकरा बिसरि ओ गामक स्टेशनपर आबि गेल छल ।

रवि वेटिंगरूमसँ बहार भऽ फेर प्लेटफार्मपर आयल । ओकर निश्चय फेर डगमगा उठलैक । इच्छा भेलैक जे स्टेशन मास्टरक कोठली दिस जा बाहर टाङल बोर्डमे अंकित समय-सारणीमे घूरिकऽ जायवला ट्रेनक समय देखय । ओ गाम किन्नहु नहि जा सकत । बाबूजी दिस आँखि उठा ताकि नहि सकत । गामक लोकक उपहास आ भर्त्सना नहि सहि सकत ।

ओ समय-सारणी देखलक । ट्रेन एक्के घंटाक बाद छलैक । घूरिकऽ जा सकैत छल । मुदा, लगले गेनाइक निर्णय आरो गलत होयतैक । मात्र बाबूजीकें देखि सकबाक लालसामे सभ टा खतरा उठा एतऽ धरि आयल छल । माय जन्मे दऽकऽ मरि गेलैक । लालकाकी पोसलथिन । बाबू सभ दिन एकसरे छलथिन । जीवनक एकमात्र आशा रहनि रवि । ओकर चल अयलापर, गामसँ निन्दनीय ढंगसँ निपत्ता भऽ गेलापर, हुनकर की हाल भेल होयतनि ! नहि जानि, कोना होयताह ?

रवि शीघ्रतासँ अपन सामान दिस लपकल । एक टा कुली ओकर सामानक रखबारी करैत ठाढ़ छलैक । दोसर किम्हरो चल गेल छलैक । रवि सामान लग पहुँचल तँ कुली कहलकै–'एना सामान छोड़िकऽ किम्हरो चल जाइत छी, निपत्ता कऽ देत सभ टा सामान । आब ओ इलाका नहि छैक । ट्रेनमे बैसल यात्रीक वस्तुजात झीकि लैत छैक एतुक्का लोक । अहाँ नव बुझाइत छी, तें पहिनहि चेता दैत छी ।'

रविकें हँसी लगलैक । ओकरे जमीनमे बसल बिलटा ओकरा गाममे नव लोक कहि रहल छलैक । हँसीकें नुकबैत कहलकै–'चल, उठा सामान ।'

कुली माथपरक मुरेठा ठीक करैत बजलैक–'कतऽ जयबैक मालिक ?'

सत्ते, बिलटा एकदम नहि चिन्हने छलैक ओकरा । पुरना अभ्याससँ कहलकै रवि–'पछबारि पार । हवेली चल ।'

कुली कने अकचका उठलैक । लगलैक जेना चीन्हि गेल होइ । मुदा नहि, नहि चिन्हलकै ओकरा । कहलकै–'मजूरी मुदा तीन रुपैया लेब मालिक !'

रविकें फेर हँसी लगलैक । ओकरा परदेशी बूझि ठकि रहल छैक बिलटा । छौ आनाक बदला तीन टाका ! गामपर पहुँचि चिन्हतैक तँ अपने खूब लजा उठतैक । फेर अपने लगलैक जे एहिमे ठकबाक कोनो गुंजाइश नहि छलैक । चौदह

वर्षमे छौ आनाक तीन रुपैया । एतबा तँ वाजिबे छलैक । दाम तँ तहिना भागि रहल छैक । कहलकै–'चल । देबौ तीन रुपैया ।'

कुली खुशी भऽ गेलैक । बेडिंगपर सूटकेस रखलकै आ कहलकै–'कने हाथ लगा दियऽ मालिक !'

रवि सामान उठा देलकै । कुली दुलकी चालिए गाम दिस विदा भेलैक । रवियो पाछाँ-पाछाँ विदा भेल– डेग सहमल रहैक ।

रौद नीक जकाँ पसरि गेल रहैक । लगभग आठ बाजल होयतैक । सहमल डेग आगू बढ़ैत-बढ़ैत फेर लोथ होबऽ लगलैक । मोन आशंकासँ त्रस्त छलैक । लगैत छलैक जेना एखने क्यो चीन्हिकऽ चिचिया उठतैक– यैह अछि रवि ! चौदह वर्षपर घूरल अछि । मुदा, एकर पाप तँ चौदह जन्मोमे नहि धोआ सकतैक ।

ओ बहुत पाछाँ पड़ि गेल । कुली बहुत दूर चल गेलैक । धारमे नाव रहैक । नावपर धार पारकऽ पछबारि पार आयल तँ मैदान लग मोटरी जमीनपर राखि कुली ठाढ़ छलैक । ओकरा लग अयलापर कहलकै–'एना कोबरा डेगे चलबै मालिक तँ हमर बड़ हर्ज भऽ जायत । किनका ओइ ठाम जयबै ?'

रवि फेर सामान ओकर माथपर उठबैत कहलकै–'राम बाबू ओइ ठाम चल !'

लगलैक जेना बिलटा आब चीन्हि जयतैक । चौंकलैक अबस्स, मुदा किछु बजलैक नहि । सामान लेने आगू बढ़ि गेलैक ।

नामीबाबाकें धार दिस जाइत देखलकनि रवि । एखनो जिविते छथि बूढ़ा– रविकें आश्चर्य भेलैक । ओ सामान आ कुली आ तकर पाछाँ जाइत रविकें देखैत रहलथिन । चिन्हलथिन ककरो नहि । बहुत रास छोट-छोट धीया-पूता रविक अपरिचित आकृति, डील-डौल आ साहेबी पहिराबासँ आकर्षित भऽ पाछाँ-पाछाँ चलऽ लगलैक । रवि अपन घरक समीप पहुँचल । पुबरिया घरक ओसारा सुन्न छलैक । बाबू ओतऽ नहि छलथिन । रविक कलेजा धक्क दऽ उठलैक । फेर मोनकें बुझौलक– आङन गेल होयताह वा उतरबरिया घरक ओसारापर होयताह । कुली सामान लेने अङने चल गेलैक । आङनसँ लालकाकाक परिचित स्वर ओ सुनलकनि–'के, के आयल अछि ?'

ओकर कोँढ़ फेर धड़कऽ लगलैक । जकरा डरे, जाहि बातक डरे ओ चौदह वर्ष गाम छोड़ि पड़ायल रहल, से आइ सामने आबिएकऽ रहलैक । कोना तकतनि लालकाकाक मुँह ? किम्हर नुकाओत अपन लज्जा ?

मुदा, नुकयबाक अवसर नहि छलैक । लालकाका आङनसँ बाहर आबि गेल छलथिन । रवि आगू बढ़ि पयर छुलकनि । लालकाका अकचकाकऽ रविक मुँह देखि चिन्हबाक चेष्टा करैत रहलाह आ फेर आह्लादित होइत एक्के बेर चिकरि उठलाह–'रवि छऽ हौ ! सत्ते, रवि छऽ !'

'हँ लालकाका, हमहीँ छी !' रवि लज्जासँ मूड़ी गाड़ने बाजल । लालकाका ओकर लज्जापर ध्यान नहि देलथिन । ओकर कन्हा पकड़ि अपना दिस झीकि लेलथिन आ छातीसँ लगा कानऽ लगलथिन । रवियो कानऽ लागल । बहुत दिनक बान्हल बाढ़ि बान्ह तोड़िकऽ निकलि पड़लैक । रवि हिचुकि-हिचुकिकऽ कनैत रहल– लालकाकाक छातीसँ सटल ।

लालकाका बड़ीकाल धरि संग-संग कनैत रहलथिन–'तोँ अयबे कयलऽ रवि, मुदा अबेरसँ ! भाइ चौदह वर्ष धरि प्रतीक्षा कयलथुन । चौदह वर्ष बीति गेलापर हुनकर आस टूटि गेलनि । फेर ऊठिकऽ बैसि नहि सकलाह । दुइए मास पहिने तँ छोड़ि गेलाह हमरालोकनिकेँ ...!'

लालकाकाक बात ओकर कलेजाकेँ चीरैत गेलैक । एकरे आशंका छलैक । भरिसक फेर नहि देखि सकबनि मुँह । ओ आशंका सत्य भऽ गेलैक । बाबू ओकर मुँह नहि देखलथिन । ओकर पापकेँ क्षमा नहि कयलथिन । घृणापूर्वक ओकरासँ मुँह मोड़ि चल गेलथिन । फेर ककरा लेल घुरल अछि रवि ? के छैक गाममे ?

लालकाका तखनो कनिते छलथिन । रविक आँखिक नोर सुखा गेल रहैक । लालकाकाक बाँहिसँ छूटि ओ ओतहि दलाने लग माँटिपर बैसि गेल छल । ओकर सभ टा संज्ञा हेरा गेल रहैक । लालकाका फेर की कहलथिन, ककरा कहलथिन, किछुओ नहि सुनलकै रवि । ओहिना माँटिपर बैसल रहल । गामक लोक दरबज्जापर जुटऽ लागल रहैक । परिचित-अपरिचितक भीड़ ।

लालकाका अपनाकेँ सम्हारलनि । आङनक मुँहथरि लग ठाढ़ि लालकाकीकेँ कहलथिन–'चिन्हियौ तऽ के आयल अछि ?'

भरि गामक लोक दरबज्जापर जमा भऽ गेल छलैक । अङनोमे स्त्रीगणसभक मेला लागि गेलैक । रवि ओहिना आङनक मुँहथरि लग लालकाका आ लालकाकीक बीच ठाढ़ छल ।

ठाढ़ छल आ विस्फारित दृष्टिसँ उमड़ल भीड़क प्रत्येक आकृतिकेँ देखि

रहल छल । कोनो आकृतिपर उपहास वा भर्त्सनाक भाव नहि छलैक । कोनो कोनसँ अपमानजनक शब्द नहि उठलैक । रवि आशंकापूर्वक प्रतीक्षे करैत रहि गेल ।

बेसी आकृतिपर आश्चर्यक भाव छलैक– चौदह वर्षक बाद घुरि अयबाक बातपर आश्चर्यक भाव । जेना विश्वासे नहि भऽ रहल होइ जे आँखि जे देखि रहल छैक, से सत्ये छैक, स्वप्न नहि ! ओइ भावकेँ चीन्हैत छलैक रवि । धीयापूता आ नव वयसक तरुण-तरुणीक आकृतिपर पसरल कुतूहलपूर्ण भावकेँ सेहो ओ नीक जकाँ चिन्हलकै । मुदा, जकर आशंका छलैक, से कतहु नहि अभरलैक ।

रवि बड़ी कालधरि आशंकापूर्वक प्रतीक्षा कयलक । मुदा, प्रतीक्षे करैत रहि गेल ।

लालकाका पीठपर हाथ दैत कहलथिन–'मोनकेँ छोट नहि करऽ रवि ! भाइ नहि रहलाह । मुदा हम छी । तोहर लालकाकी छथुन । माये जकाँ दूध पिया पोसने छथुन तोरा ! तोँ कोनो चिन्ता नहि करऽ । चलऽ, आङन चलऽ पहिने ।'

रवि आङनमे आबि गेल । अङनोमे थहाथही भीड़ छलैक । खाली स्त्रीगणेक भीड़ । रविकेँ लगलैक जेना एही भीड़मे कतहु कविता छैक आ जे घड़ी ने चिचिया उठतैक–'यैह अछि ओ पापी राक्षस ! एकरापर थूकि दियौक सभ क्यो...'

मुदा कविता कतहु ने छलैक । रविकेँ अपने विचारपर विस्मय भेलैक । कविता कोना रहतैक अइ आङनमे ? ओ तँ विवाह-दुरागमन कऽ चैनसँ अपन सासुर बसलि होयतैक । आ, खाली ओकर सम्पूर्ण जीवन नष्ट भऽ गेलैक । स्त्रीगणक झुण्डमे ओकरा एम्हर-ओम्हर तकैत देखि एक टा स्त्री आगू अयलैक–'ककरा तकैत छिऐक ? हम एतऽ छी !'

रवि अवाक् भऽ देखलकै– सामने ठाढ़ि छोटकी भौजी । सुनयना भौजी ! अनमन ओहने ! समय जेना ठहरि गेल छलनि हुनका लेल । कतहु कोनो परिवर्तन नहि । वैह तृप्त मादक हँसी आ हँसीक हिलकोरसँ दलकैत मांसल देह ।

रवि गोड़ लगैत कहलकनि–'सत्ते, अहीकेँ तकैत रही भौजी ! मुदा अहाँ तऽ अवाक् कऽ देलहुँ ! अनमन ओहिना छी आइयो । आ देखू, हमर तऽ केशो पाकि गेल ।'

अपन प्रशंसा भौजीकेँ नीक लगलनि । रवि लग बैसि गेलीह । बड़ी काल बैसलि रहलीह ।

फेर सभ चल गेलैक– दरबज्जापर जमा भीड़ आ आङनमे जुटल स्त्रीगण। रवि अपन कोठलीमे एकसर रहि गेल । बाबूवला कोठली । रवि जानि-बूझिकऽ ओही कोठलीमे सामान रखबौलक ।

भौजी बहुत रास सबाल कयने छलथिन । आरो लोकसभ पुछने रहैक । 'किएक भागल रही ? कतऽ गेल रही पड़ाकऽ ? कोना रहलहुँ एतेक दिन ?' ओ ककरो असल बात कहि नहि सकलैक । प्रश्नकेँ टारैत गेलैक । मुदा ओकरा बहुत आश्चर्य भेलैक जे लोक असली बात नहि जनैत छलैक । ओ आश्चर्यमिश्रित ज्ञान बेर-बेर ओकर कलेजाकेँ रेतीसँ चीरऽ लगलैक–'तखन तऽ अनेरो ई जीवन बेरबाद भेल ! जीवनक चौदह टा अनमोल वर्ष ! बाबूजीक जान सेहो बेकारे गेलनि । अन्तिम समयमे भेँटो नहि भऽ सकल ।'

बाबूजीक कोठलीमे पड़ल-पड़ल ओ एही गुनधुनमे लागल छल । एकाएक ओकर ध्यान गेलैक जे ओ बाबूजीक कोठलीमे छल, मुदा ओइ कोठलीमे बाबूजीक कोनो निशानी नहि बाँचल छलनि । ने ओ तख्तपोश, ने ओ बिछौना, ने हुनकर नोसिदानी छलनि ताकपर, ने खुट्टीपर लटकल छड़ी ! टेबुलपर हुनकर गीता-रामायण-महाभारतक बदला जासूसी उपन्याससभ पड़ल छलैक ।

ओकर ध्यान ऊपर देबाल दिस गेलैक । देबालपरसँ बाबूजी-मायक फोटो सेहो निपत्ता छलैक । ओइ ठाम सस्त रुचिक कलेन्डरसभ टाङल छलैक जाहिमे छौँड़ीसभ उतान भेल छलैक । तीन टा फोटो छलैक– एक टा बाबूजीक एकसर छलनि, एक टा मायक एकसर छलैक । गाममे फोटोग्राफर आयल रहैक तँ सभ जबर्दस्ती खिचबा देने रहैक । नवकनियाँ जकाँ लजायलि ठाढ़ि छलैक फोटोमे माय ! रविकेँ बड़ नीक लगैक । बाबूजीक फोटो रहनि एकदम साहेबी ठाठमे । कालेजमे पढ़ैत काल खिचौने रहथि । पैन्ट-कोट-टाइ पहिरने । तेसर फोटोमे बापक संगे रवि छल– बापक कुर्सीक बाँहिपर बैसल । तीनू फोटो निपत्ता छलैक । रवि जोरसँ चिचिया उठल— 'लालकाका !'

लालकाका दौड़ल अयलथिन–'की लेबऽ रवि ?'

लालकाकाक एना दौड़ल अयबासँ रविकेँ अपन चिचिअयबापर लाज भेलैक । कहलकनि— 'किछु नहि काका ! एहि देबालपर माय-बाबूजीक फोटो रहनि, से नहि देखैत छी ?'

लालकाका लजा गेलथिन, जेना कोनो चोरी पकड़ा गेल होइनि । कहलथिन—

'अइ कोठलीक देबाल सर्द छैक । सभ टा फोटो खराब भेल जाइत छलैक तेँ उतारिकऽ बक्सामे राखि देने छिऐक । आइए टाङि देबैक फेर ।'

लालकाकाक लजयबामे रविकेँ कोनो अपराधबोधक झलक भेटलैक । लालकाकाक लजायब मोनमे एक टा शंकाकेँ जन्म देलकै । तकरा दबाकऽ फेर अपने गुनधुनमे लागि गेल रवि ।

किएक ने कहलकै कविता ओ बात सभकेँ ? झूठ-मूठ धमकी किएक देलकै ? ओकर सम्पूर्ण जीवनकेँ नष्ट कऽ चुप्प रहि गेलैक जेना किछु भेले नहि होइ ! ओ निरर्थक एक टा अपराध-बोध अपन छातीपर लदने एतेक दिन धरि वनवास लेने छल । आत्मनिर्वासित जीवनक एक-एक टा दिन ओकरा मोन पड़लैक आ मोन पड़लैक बाबूक स्वप्न ।

सामने रहितैक तँ पुछितैक कवितासँ–'घुरा दे हमर जिनगीक चौदह वर्ष ! एक टा क्षणिक आवेगक मूल्यमे जिनगीक सभ टा अनमोल वर्ष छीनि लेलेँ तोँ ! तैयो हमहीँ दोषी । हमहीँ छातीपर एक टा अपराधबोध लेने जिबै छी आ तोँ गृहस्थीक सुख चैनसँ भोगैत छेँ ।

एना किएक कयलेँ ? एना किएक कयलेँ कविता ?

दोसर दिन बहुत रास लोक अयलैक रविसँ भेँट करबा लेल ।

भोरुके गाड़ीसँ मोहन भाइ आ हुनकर कनियाँ । गोड़ लगलकनि तँ छातीसँ लगा कानऽ लगलथिन मोहन भाइ ! भौजियोक आँखिसँ दहो-बहो नोर । नोर पोछैत मोहन कहलथिन–'एहन कठोर कोना भऽ गेलेँ रवि ! बड़का मामा अन्त-अन्त धरि तोहर घुरबाक आस नहि छोड़ने छलथुन । हुनका विश्वास छलनि जे तोँ अबस्से घुरबेँ । एहन कोन बात भेलै रवि जे एना सभकेँ त्यागि विदा भऽ गेलेँ ?'

रविकेँ कोनो जवाब नहि दऽ भेलैक । अपराधी जकाँ मूड़ी झुकौने बैसल रहल । भौजी बात बदलैत कहलथिन–'अहूँ कोन चर्चा शुरू कऽ देलियनि अबिते !' फेर अपन धीयापूता सभकेँ लग बजौलथिन आ कहलथिन–'गोड़ लगहुन काकाकेँ !'

चारू बेटिए छलनि । सभसँ जेठकी तेरह-चौदह वर्षक रमा, तकरासँ छोट

उमा दस वर्षक, सात वर्षक रेखा आ तीन वर्षक गुड़िया । सभकें संग अनने छलथिन । चारू टकटकी लगा रविकें देखैत छलैक । जखन रविक दृष्टि ओम्हर जाइ तँ लजाकऽ दोसर दिस ताकऽ लगैक ।

विक्रमो संग आयल छलैक । ओना ओ गामेक स्कूलमे मास्टर छल–एम. ए. मे सेहो रिजल्ट बढ़िया नहि भेलैक । मामे गामक हाइ स्कूलमे धरा देलथिन । काल्हि ओ गाम नहि छल— भाइक डेरापर गेल छल । सुनयना भौजी काल्हिए डेरापर समाद पठबा देने छलथिन । सभ दौड़ले आयल छलैक ।

मुदा रविकें ककरोसँ किछु बजबाक-पुछबाक साहसे नहि भऽ रहल छलैक । जखनसँ आयल छल— आत्मीय जिज्ञासासभक बीच अपराधबोधसँ बौक बनल बैसल रहैत छल । अपराधक जाहि छायाक डरें चौदह वर्ष धरि गाम नहि घुरल छल, ओ छाया एखनो ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्वकें घेरने छलैक । सहज ढंगसँ ककरोसँ किछु बाजब, ककरो किछु सुनब सम्भव नहि भऽ रहल छलैक । अपनो दृष्टिमे एक टा अजूबे बनिकऽ रहि गेल छल रवि ।

मोहन जाइत काल कहलथिन–'आइ हमरे आङनमे भोजन हेतौक तोहर । छोटकी मामीकें कहि देने छियनि ।'

रवि अकचकाइत बाजल–'अहाँक आङन ? अहाँक कोनो दोसर आङन अछि मोहन भाइ !'

मोहनकें हँसी लागि गेलनि–'चौदह वर्षपर सभ टा चीज एहिना आश्चर्यजनक लगतौक । कने गाममे बहरा कऽ तऽ देखहिक ! मुदा बड़का मामाकें सभक अन्दाज पहिने लागि गेल रहनि । जिद धऽ लेलथिन— पुरना घराड़ी मोहन-विक्रमक नाम लिखि दहक । छोटका मामा कतबो नाकर-नूकर कयलथिन, नहिएँ मानलथिन बड़का मामा । हमर दुनू भाइक नाम ओ घराड़ी रजिस्ट्री कऽ अपन खर्चसँ घर बन्हबा देलनि । एकबेर हमहूँ हाथ जोड़िकऽ कहलियनि— 'रहऽ दियौक मामा ! हमरालोकनिकें घर-घराड़ीक कोन काज ?' मामा हमर बातपर हँसैत कहलनि— 'काज छैक मोहन ! तोरालोकनि बिना घर-घराड़ीक कोना रहबऽ ? अपने कमा किछु करबऽ, तकर आशा आब हमरा कमल जाइत अछि । तोहर ओकालतिक वैह हाल । विक्रम तऽ पढ़ु-लिखऽमे तेहने अछि । ओकरा बुते की हेतैक ? गामक हाइ स्कूलमे मास्टरी धरा देलिऐक, कहुना गुजर करत । मुदा घर-घराड़ी तऽ ओकरो चाहिऐक आ सभ टा हमरे सोझाँ भऽ जाय, से नीक ।' रजिस्ट्रीक बाद अपने ठाढ़ भऽकऽ सभटा घर बनबौलथिन, गृह-प्रवेशक वृहत् आयोजन कयलथिन ।

बाबूक बेर-बेर चर्चा अयलासँ रविक मोनक अपराधी आर संकोचसँ सिकुड़ि गेलैक । कण्ठसँ एको टा बोल नहि बहरयलैक ।

जाइत काल विक्रम कहलकै–'तों तऽ एना गुम्मा नहि छलें रवि ? जे भेलैक तकरा बिसर । सभसँ बाज, सभसँ भेँट करहिक ।'

तैयो ककरोसँ किछु बाजि नहि भेलैक रविकें । दिनमे मोहन भाइक आङनसँ भोजन कऽ आयल । सत्ते, नीक घर-घराड़ीक इन्तजाम कऽ देने छलथिन दुनू गोटे लेल माम । फैल-फाल जगह, चारूकात घर– सभ टा ईंटाक, आ चारपर खपड़ा । आगाँमे फुलबाड़ी, पाछाँमे बाड़ी-झाड़ी । आब कलो गड़बा लेने छलाह मोहन भाइ । अपने तँ दरभंगे रहैत छलाह । छोट भाइ गाम रहैत छलथिन । स्कूल कने गामसँ बाहर छलैक–'पछबारिए कात । गामक पछबरिया सिमानसँ किछु पहिने, बाटक कातेमे । मुदा एकदम एकोढ़ नहि छलैक । सटले दक्षिण छलैक मलाहसभक टोल– गोड़ पचीसेक घर । किछुए दूरपर उतरबारी कात दोसर टोल छलैक–धानुखसभक । ओहूमे बीस-पचीस घर ।

छोटकी भौजी सुनयना बड़ हँसी कयलथिन, मुदा रवि सहज नहि भऽ सकल । भौजी ओहिना छलथिन– कोनो परिवर्तन नहि भेल छलनि । काल्हि भोरे अपन अङनामे देखने छलनि रवि । ओकरा आश्चर्य भेलैक जे भोरे ओतऽ कोना पहुँचि गेलि रहथिन भौजी ? विदा होयबासँ पूर्व पुछियो देलकनि रवि । भौजी खिलखिलाइत कहलथिन–'सैह बुझियौक ! जादू अबैत अछि हमरा । हमरा बूझल छल जे हमर दुलरुआ देओर आबि रहल छथि, तें स्वागतमे पहिने पहुँचि गेलि रही ।'

दोबारा पुछबाक साहस नहि भेलैक । रवि भोजन कऽ घूरि आयल ।

घुरलापर मनोजसँ भेँट भेलैक । गाम अयलाक छत्तीस घंटाक बाद । रवि कने मानसँ कहलकै– 'आब फुरसति भेल छौक तोरा ? भरि गामक लोक भेँट कऽ गेल तखन ?'

मनोज झट बाजि उठलैक–'नै ब्रदर, फुरसतिक गप्प कहाँ ? गाममे रहबे ने करी । मौजेपर रही । ओतहि एक टा ज़न कहलक । दौड़ले आबि रहल छी ।'

मनोज बड़ सहज ढंगसँ कहि रहल छलैक । तैयो नहि जानि किएक ओकरा सन्देह भेलैक जे ओ फूसि बाजि रहल छैक । ओ ध्यानसँ ओकर चेहरा देखलकै । बितलाहा चौदह वर्षमे गम्भीरता वा परिपक्वताक कोनो चेन्ह मनोजक आकृतिपर नहि उगल छलैक । ओकर आकृति आ बगय-बाना ओहिना छलैक– बेस झबरल केश, ओहिना खूब गाढ़ रंगक कुर्ता । पैण्टक तंग मोहरी खूब चौड़ा भऽ

फहरा रहल छलैक । मुँहमे पान आ ठोरपर दुष्ट हँसी । आँखि कने बेसी धँसल आ ओइ कोटरमे स्याह धब्बा । हाथमे तखनो सिगरेट छलैक । कसिकऽ दम लगबैत कहलकै–'तोँ तऽ गुरुघंटाल बहरयलेँ ब्रदर ! हम पड़ायल रही तऽ मासे दिनमे घूरि अयलहुँ, तोँ तऽ वर्षक वर्ष लगा देलहिक । कोन-कोन घाटक पानि पीबिकऽ आयल छैँ ?'

बात यद्यपि मजाकमे कहि रहल छलैक मनोज, रविकेँ नीक नहि लागि रहल छलैक । बात बदलैत पुछलकै–'छोड़ हम्मर गप्प । अप्पन सुना । कोना चलि रहल छौक ?'

सिगरेटक दम लऽ धुँआ छोड़लाक बाद ओ फेर कहलकै–'एकदम फस्ट क्लास ! वही रफ्तार बेढंगी, जो पहले थी, सो अब भी है ।' बाबू बान्ह-छान्हक खूब इन्तजाम कयने छथि । एक टा लदगोबरि कनियाँ, लेर-पोटा बहबैत चारि टा कच्चा-बच्चा, मुदा हम ओहिना छियौक ब्रदर ! मौजी जीव । सत्त बात कहियौक, काल्हियो ओइ मौजेपर नव चीजक सुतारमे गेल छलियौक । बुझलहिक किछु !'

मनोज खिखियाकऽ हँसऽ लगलैक अपने प्रश्नपर, तावत लालकाका आबि गेलथिन । बापकेँ अबैत देखि मनोज बजलैक–'रंगमे भंग आबि रहल छथुन । हम चललियौ ब्रदर !'

मनोजक गेलाक बाद लालकाका दुखी स्वरमे कहलथिन–'देखलह रवि हमर सुपुत्रक लक्षण ! दस वर्षक बेटा छैक, ओकरोसँ छोट तीन टा नेन्ना । मुदा एकर करनी देखहिक ।'

रवि कोनो जवाब नहि दऽ सकलनि । लालकाका अपने कहऽ लगलथिन–'छोटजन छथि, तनिका बहुक गुलामी छोड़ि आर किछु सुझिते नहि छनि । कनियाँकेँ गाममे नीक नहि लगैत छनि, पटने रहतीह । पटनामे नीक कमाइ छथि ओकालतिमे, मुदा माय-बापकेँ के देखैत अछि ?'

रविकेँ खुशी भेलैक– लल्लू ओकील भऽ गेलैक । स्कूलेमे छलैक, जहिया ओ गाम छोड़ने छल । ओकरा बौआ आ छोटकूक बारेमे जिज्ञासा भेलैक । पुछलकनि–'बौआ आ छोटकू कतऽ अछि लालकाका !'

–'हुनकोसभकेँ गाम नहि नीक लगैत छनि बाउ ! एक टा एम.ए. मे छथि आ दोसर आइ.ए. मे । कहलियनि जे मोहनेक डेरापर रहैत जा, रवि आ मनोज ओही डेरापर छल । मुदा बूढ़क गप्प के सुनैत अछि ? दुनू होस्टलमे रहैत छथि । सभकेँ माय सहकौने छथिन ।'

रविकेँ आरो हर्ष भेलैक– लल्लू ओकील, बौआ एम.ए.मे आ छोटकू आइ.ए.मे । मनोज नहि पढ़ि सकलनि, तकर दुख नहि होयतनि लालकाकाकेँ । तीनू छोटका नीक जकाँ पढ़ि-लिखि गेलनि । कहलकनि–'ई तऽ बड़ नीक बात लालकाका ! सभ नीक जकाँ पढ़ि-लिखि गेल । आर की चाही ?'

लालकाका कने अप्रसन्ने भावसँ कहलथिन–'नीक जकाँ की पढ़त हौ, घिसरी कटै अछि । सभ परीक्षामे दू-दू बेर धक्का दऽ पार करैत अछि । तोरा सन चान्सगर कहाँ क्यो भेल ? जहिया तोहर रिजल्ट भेल रहऽ, फर्स्ट डिवीजनमे नाम देखिते भाइ कानऽ लागल रहथि । जहियासँ बुझलथुन जे जिलामे फर्स्ट भेल छह–बोर्डमे तेसर स्थान, तहिया तँ आँखिक नोर सुखयबे नहि करनि । अखबारक ओहि टुकड़ीकेँ सदिखन अपन सिरमामे रखैत छलाह, कनियो तह नहि लागऽ दैत छलथिन । जखन चितामे आन चीजक संग ओहो कागजक टुकड़ी धऽ देलियनि, तहियो ओ कागज ओहिना तहदर्ज रहैक ।'

बाजिकऽ लालकाका अपने चुप भऽ गेलाह । लगलनि जेना किछु अनुचित बजा गेलनि । मुदा रविक ध्यान ओम्हर नहि छलैक । बापक प्रसंग अबैत देरी फेर ओकर मोनपर एक टा भारी पाथर खसि पड़ल छलैक आ ओ मूड़ी झुकौने ठाढ़ छल । चौदह वर्ष बाद प्राप्त भेल अपन परीक्षाफलो ओकरा कनियो हर्षित नहि कयने छलैक ।

लालकाका टोकलथिन–'जा, बाहर दरबज्जापर जा । आइयो बड़ लोकसभ आयल छऽ । सभसँ बाजऽ-भूकऽ, जे भेलैक, तकरा बिसरि जा ।'

लालकाका चल गेलथिन । ओकरा बाहर दरबज्जापर जयबाक कोनो इच्छा नहि छलैक । लोथ भेल पयरकेँ घिसटैत बाहर विदा भेल ।

दरबज्जापर ठीके भीड़ लागल छलैक । सभक बीचमे बैसल नामीबाबा । दौड़िकऽ गोड़ लगलकनि— 'अहाँ किएक अयलहुँ बाबा ? हम तँ गोड़ लागऽ अयबे करितहुँ ।'

नामीबाबा हँसैत कहलथिन–'एतेक बेकार नहि भेल छी एखन हौ ! खाली कने ठाढ़ होयबाकाल ठेहुन कचकैत अछि । छड़ी लेलोपर सोझ होयबामे कने समय लगैत अछि, बस्स ! तकर बाद कोनो झंझट नहि । जखन जिम्हर कहऽ, जा सकैत छी । तोहर नाम सुनिलियऽ तँ रहि नहि भेल ।'

रविकेँ कविता मोन पड़लैक–'हमर-तोहर झगड़ामे नामीबाबाकेँ खूब फायदा भेलनि । सभ टा गोसबरिया लताम एकसरे खयलनि ।'

रविकें हँसी लागऽ लगलैक। एक क्षण लेल कविता बड़ आत्मीय ढंगसँ मोन पड़लैक। ओकर ऊपरक समस्त क्रोध बिला गेलैक। ठोरपरक हँसी नामीबाबा देखि ने लेथिन, तें ओ दोसर दिस गोड़ लागऽ लेल घूमि गेल। पहिने फकीरकाका। गोर लगैत रवि पुछलकनि–'नारायण कोना अछि फकीरकाका ?'

फकीरकाका सगर्व कहलथिन–'ओ तऽ बड़का इञ्जीनियर भऽ गेल अछि, सिन्द्रीमे पोस्टिंग छैक।'

रविकें गुरुजीक स्कूल मोन पड़लैक। सभ सबकमे ओ मिहिर आ नारायणकें तड़पा दैत छलैक। आइ ओ अपने ठाढ़ रहि गेल, नारायण कतेक आगू छरपि गेलैक ! रवि दोसर दिस मुड़ल, पण्डितो काका छलथिन दरबज्जापर। मिहिरक बाप। गोड़ लगैत पुछलकनि–'आ, मिहिर कतऽ अछि पंडितकाका ?' पंडितकाका सेहो सगर्व कहलथिन–'ओ तऽ बड़का हाकिम बनि गेल छौक–डिप्टी कलक्टर। सहर्षामे पोस्टिंग छैक।'

खाली रविए रहि गेल। सभ आगाँ बढ़ि गेलैक। सभक सबक सुनऽवला, ओकरासभकें छरपाकऽ गुरुजीक दण्डसँ बचबऽवला रवि अपने दण्डित भेल, अपन पिताक स्वप्न चूर कऽ हुनकर प्राण लेलक। एके क्षण पहिने जे कविता आत्मीय ढंगसँ मोन पड़ल छलैक, फेर एक टा अप्रिय, घृणित आ उत्पीड़क सन्दर्भमे मोन पड़लैक आ ओकरापर रविक तामस आर बढ़ि गेलैक।

दरबज्जापर आरो लोक छलैक— नामीबाबाक दुनू बालक– मास्टर काका आ पेशकार काका। बड़का भाइ गामक हाइस्कूलमे हेडमास्टर छलथिन आ छोटका भाइ दरभंगामे ओकालति करैत छलथिन। आइ रवि छलनि–सबहक छुट्टी। रविक घुरबाक समाचार सूनिकऽ सभ जुटि गेल रहथि। रवि हुनकोसभकें गोड़ लगलकनि।

ई क्रम चलैत रहलैक। उतरबारि टोलसँ बुधियार काका आ फनैत भाइ अयलथिन। पछबारि टोलक भजारकाका आ बालाभाइ। मुन्हारि साँझ धरि लोक अबैत रहलैक।

फेर दरबज्जा खाली भऽ गेलैक। सभ चल गेलैक। रवियो ऊठिकऽ आङन दिस जाय लागल। तखने ओकर ध्यान बेंचपर कातमे बैसल छौँड़ापर गेलैक। तेरह–चौदहक वयस। खूब गोर दपदप चेहरा। नाक कने पीचल, मुदा आँखिमे एक टा विचित्र आकर्षण। कारी–कारी पैघ केश। देहपर खाली एक टा मैल सन धोती रहैक, बाँकी देह उघार। स्वस्थ मांसल शरीर। मुदा श्रम आ

अभावसँ रुच्छ, मलिछौन भेल। ओ एकटक रविकें देखि रहल छलैक। रवि स्नेहपूर्वक कहलकै–'तों नहि गेलें अप्पन घर ?' जवाब देबाक बदला छौँड़ा एक टा उनटा प्रश्न कऽ देलकै–'अहाँ नहि चिन्हलहुँ हमरा ? माँ हारि गेलि।' रविकें ई बुझौअलि मनोरंजक लगलैक। पुछलकै–'के छौक तोहर माय ?'

छौँड़ा निधोख बजलैक–'कविता। माँ कहै छलि, अहाँ ओकर संगी छिऐक, हमरा देखिते चीन्हि जायब। हम कहलिऐक— हर्गिज नहि ! अहाँ कोना चीन्हब हमरा ? अहाँ तऽ देखनहि नहि छी। हमरा चीन्हब कोना ? दुनू गोटेमे बाजी लागि गेल। हम तऽ पहिनहि कहने रहिऐक ओकरा, तों बाजी हारि जयबें।'

रविकें ओ छौँड़ा आ ओकर गप्प नीक लगलैक। कविताक बेटा ! ओकरा कवितापर क्रोध छलैक। तैयो ओकर बेटाकें देखि ओकरा लगलैक जेना ओकर अपराधबोध कने कमि गेल होइ। वस्तुतः ओकर अन्तर्मन जनैत छलैक जे कविता निर्दोष छलैक। दोष सभ टा ओकरे छलैक। अपने पापक छायासँ पड़ायल छल ओ, कविताक धमकीक डरें नहि। मुदा एतेक वर्षसँ अपन मोनकें पतारऽ लेल ओ अपनाकें बुझबैत छल जे सभ टा दोष कवितेक छलैक, वैह ओकर जीवनकें नष्ट कऽ देलकै। आइ कविताक बेटाकें देखि ओकरा लगलैक जे ओ पापक छाया आब ओकर पिण्ड छोड़ि देतैक। आब ओ गाममे अपराधबोधसँ मुक्त भऽ सहज ढंगसँ जीवि सकत। कविताकें कोनो क्षति नहि भेलैक। ओ अपन घर बसाकऽ सुखपूर्वक छैक, ओकर कलंकक कथा क्यो नहि बुझलकै। ओ रविकें क्षमा कऽ देलकै।

रविकें गुनधुनमे देखि ओ छौँड़ा टोकलकै–'की सोचऽ लगलहुँ रविमामा ?'

रवि सम्हरि गेल। हँसैत कहलकै–'तोहर माय ठीके हमर संगी अछि। बच्चामे सदिखन हमरासँ लड़ैत रहैत छलि, हबकि लैत छलि, सैह मोन पड़ि गेल। तोहर नाम की छौ बौआ ?'

छौँड़ा कने उदास होइत कहलकै–'माय केहनेदन नाम राखि देलक–लव। भरि गामक लोक खौँझबैत रहैत अछि आ कहैत अछि–लौब, लब्ब–लब्ब !'

रवि ओकरा उत्साहित करैत कहलकै–'केहन बढ़ियाँ तऽ नाम छौक। दू अक्षरक सुन्दर नाम। लोककें कहने की हेतैक ? आ, तों पढ़ै कोन क्लासमे छें ?'

छौँड़ा बेस बुझनुक जकाँ हँसलकै–'हे लियऽ ! हम पढ़ऽ जयबैक तऽ कमेतै–खटेतै के ? गाय–महीँसकें के देखतै ? मायकें कुटाओन–पिसाओन भेटिते

कतेक छै जे ओइमे दू प्राणीक गुजर हेतैक ! महींसे-गाय लऽकऽ तऽ गुजर होइत अछि । ओकरे सेवामे लागल रहैत छी । नाना जीबैत छलाह तऽ स्कूल जाइत रही। तीसरा तक पढ़लहुँ । फेर नाना विदा भेलाह-ओही साल नानियो । सभ टा जमीन-जथा नानाक देयादसभ हथिया लेलथिन । मायकेँ एक्को धूर नहि देलथिन। कहलथिन मुन्नू मामा जे कका हमरा कर्ता कऽ गेल छथि, सभ टा हमरे हैत । माय दिससँ क्यो ठाढ़ नहि भेलैक । मुदा चिन्ता की ? हम छिऐक । दू गोटेक गुजर लेल तऽ हमहूँ कमा सकैत छी ।'

रवि ओइ छौँड़ाक गप्प आ ओकर आत्मविश्वासपर मुग्ध रहि गेल। मोनमे अनेक प्रश्न ठाढ़ भेलैक । कविता विधवा भऽ गेलैक ? यदि नहि तँ सासुर किएक नहि जाइत छैक ? ओकर कथा तँ बड़ सम्पन्न आ पढ़ल-लिखल वरसँ ठीक भेल रहैक ! हरिकाकाक साससँ । फेर अइ गाममे किएक पड़लि छैक कविता ?

ओ लवसँ पुछलकै-'अपन बापक लग किएक नहि चल जाइत छी अहाँ मायक संग ? ओतहि पढ़ब-लिखब ।'

छौँड़ा उदास भऽ गेलैक-'से हमरा नहि बूझल अछि । अहीँ किएक ने पूछि लैत छिऐक मायसँ ? ओ तऽ अहाँक संगी अछि ।'

रविकेँ छौँड़ाक एना उदास भेलासँ अपन प्रश्न लेल क्षोभ भेलैक । कहलकै-'तोँ निश्चिन्त रहऽ, हम काल्हिए पुछबैक ओकरासँ । हमरा जवाब देबऽ पड़तैक ओकरा ।'

लव खुशीसँ दमकैत आकृति लेने दौड़ल चल गेल ।

ओइ आकृतिपर हँसी पसरलैक-'नहि चिन्हलहुँ ने !'

रवि अवाक् रहि गेल । ओ कविता छलैक । वैह कविता जकरा देखि एक दिन ओकरा लागल रहैक जे ओकर बालसंगी, लिकलिकही, कलिकलिही छौँड़ी ओहन लावण्यमयी कोना भऽ गेलैक ? वैह कविता जकरा एक टा ग्रीष्मक जरैत दुपहरियाक बाद आयल वर्षाक अप्रत्याशित अछारमे भीजल देखि ओकर संयम, ओकर विवेक ओकरा धोखा देने छलैक । वैह कविता जे आँखिमे नोर लेने दौड़लि ओकर कोठलीसँ चल गेलि रहैक-'हम कहबैक, सौँसे गामकेँ कहबैक ।'

वैह कविता रविकेँ टोकने छलैक-'नहि चिन्हलहुँ ने !'

सत्ते, नहि चिन्हने छलैक रवि । फाटल, चिप्पी लागल नूआसँ झाँपल ओ पातर शरीर एकदम पीयर आ निष्प्रभ छलैक जेना देहक सभ टा शोणित सिसोहि लेल गेल होइ । रविक बतारी छलैक कविता, रवि अपनो असमय प्रौढ़ सन भऽ गेल छल, माथक केश उजरा गेल छलैक, मुदा कविता तँ जेना ओकरोसँ कतेक पैघ लागि रहलि छलैक ! मुदा हँसिकऽ टोकैत देरी सम्पूर्ण चेहराक रंगत बदलि गेल छलैक । जेना ओइ पीयर आकृतिपर क्षण भरि लेल रक्तिम आभा पसरि गेल होइ !

कहियो रवि कहने छलैक-'एहन सुन्दर कनियाँ लेल वरक कोन कमी ?' आकृतिपर कवितापर एक टा दुष्ट हँसी पसरल रहैक-'सत्ते ।'

सैह हँसी कविताक ठोरपर एखन पसरल छलैक । ओइ हँसीमे कोनो दुख वा दीनता नहि छलैक । बालसंगीक वैह परिचित हँसी आ स्वर-'नहि चिन्हलहुँ ने !'

लव जबर्दस्ती झीकि अनने छलैक । ओ दरबज्जापर बैसल छल । छौँड़ा दौड़ल आंबि गेलैक-'चलू हमरा आङन । मायकेँ पुछियौक जे किएक नहि लऽ जाइत अछि हमरा बापक घर ?'

रविकेँ संग आबऽ पड़लैक । ओइ निष्कलुष किशोरक आग्रह ओकरा टारि नहि भेलैक । मुदा आङन नहि जाय पड़लैक । दरबज्जे लग ठाढ़ि छलैक कविता। दरबज्जा कोन छलैक-घरक आगूमे पसरल सब्जीपर ठाढ़ि छलैक । सभ टा घर ढनमनायल छलैक । दरबज्जा कतहु नहि । कहुना एक टा झाझनक टाटपर फूसक चार अँटकल छलैक । चारपर किछु लत्ती- समजनि-कदीमाक । दरबज्जापरक सब्जीक कातेमे खुट्टासँ बान्हल एक टा महीस आ गाय, आ दुनू लेल बनाओल फराक-फराक नाद । ओहिमे सानी दऽकऽ ठाढ़ि छलैक कविता ।

लग अयलोपर रवि नहि चिन्हलकै । कविता हँसिकऽ टोकलकै-'नहि चिन्हलहुँ ने ?'

रवि चीन्हि गेलैक आ चीन्हिकऽ अवाक् रहि गेल !

ओकर अनचिन्हार दृष्टिसँ आहत नहि भेलि रहैक कविता, मुदा ओकर ओइ अवाक् दृष्टिसँ जेना एकदम रेता गेलैक-'बड़ बदलि गेल छी ने हम !'

रविकेँ होश भेलैक । कहलकै-'तोँ किएक बदलबेँ ओतेक, जतेक हम बदलल छी ! देखि ले, सभ टा केशो पाकि गेल । तोहर तऽ ओहिना कारी छौक सभ टा । खाली कने बेसी दुबरा गेलि छैँ तोँ, आ हम कठमस्त भऽ गेल छी ।'

कविताकेँ फेर हँसी लागि गेलैक–'खूब बात बदलैत छें तोँ ! हमरा बूझल अछि जे हम कतेक बदलल छी । मुदा तोहूँ सत्ते कम नहि बदलल छें ! लगैत अछि जेना बहुत रास समय बीति गेल होइ । चौदह वर्ष बड़की टा होइ छै ने !'

रवियो सिहरि गेल चौदह वर्ष बिति जयबाक स्मरणसँ । कविता फेर टोकलकै– 'हमरे डरे पड़ायल छलेँ ने ! एतेक डर भेल छलौ हमर धमकीक !'

बात गम्भीर भेल जा रहल छलैक । ओकरा हँसीमे उड़यबाक चेष्टा करैत रवि कहलकै–'एहन-ओहन डर ! पहिनो एक बेर बाबूसँ पिटबा देने रहें तोँ । तोहर धमकीसँ सभ दिन डेराइत रही हम ।'

लव बीचेमे टोकलकै–'ई तऽ किदन सभ गप्प करऽ लगलहुँ अहाँ । हमरवला बात कहियौक ने मायकेँ ?'

रविकेँ मोन पड़लैक जे लव ओकरा बजाकऽ अनने छलैक । कविताकेँ कहलकै– 'ठीके तऽ कहैत छौक लव । लऽ किएक ने जाइत छहिक एकरा बापक घर ?'

कविता हँसलैक–एक टा उदास हँसी–'हम तऽ जाय लेल तैयारे बैसलि छी सदिखन, बाट तकैत । लैए ने जाइत छथि ।'

रवि क्रोधपूर्वक बाजल–'लऽ कोना ने जयथुन ? एहन कोन जबर्दस्ती ! हम अपने जाकऽ कहबनि– पढ़ल-लिखल भऽकऽ ई केहन विचार ?'

कविताक हँसी आर उदास आ रहस्यमय भऽ उठलैक–'तोँ कहबहुन लऽ जाय लेल ? बेस, चेष्टा कऽ ले । हम तऽ तैयारे बैसलि छी ।'

रवि आर कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलैक । बाहरमे ठाढ़े-ठाढ़ गप्प कयने छल । घर चलबाक आग्रह कवितो नहि कयने छलैक । अगल-बगलक घरसँ किछु स्त्रीगण हुलकी मारि-मारि दुनूकेँ देखि गेलि छलैक । रविकेँ आर ठाढ़ रहब उचित नहि लगलैक । घूरिकऽ विदा होइत कहलकै–'आब जाइ छी हम । तोँ चिन्ता नहि करिहें लव ! हम लऽ जयबौक तोरा बाप लग ।'

रवि शीघ्रतापूर्वक डेग बढ़ौलक । किछु दूर आबि पाछाँ तकलक । कविता ओहिना ठाढ़ि छलैक– ओकरे तकैत- अपलक । ओ फेर मुँह घुमा आगू बढ़ल । मोन काफी हल्लुक आ मुक्त लागि रहल छलैक । कविता ओकरा क्षमा कऽ देलकै, कोनो उपराग-अलहन नहि देलकै । कष्ट आ अभावमे छैक, तैयो कोनो कटुता नहि

छैक ओकरामे । ओ अनेरो चौदह वर्ष बौआकऽ नष्ट कयलक, एक टा अपराधबोधक पाछाँ । कविता सहज भावसँ क्षमा कऽ देने छैक ओकरा । ओ एक टा नव जिनगी शुरू कऽ सकत–सभटा बिसरिकऽ ।

गामक धरतीपर ओकर डेग नव आत्मविश्वासक संग पड़ि रहल छलैक ।

रवि चल गेलैक । कविता ओहिना ठाढ़ि रहलि । ओकर दृष्टि जाइत रविक अनुसरण करैत रहलैक । फेर रवि दृष्टिपथसँ अदृश्य भऽ गेलैक ।

एक दिन ओ गामेसँ अदृश्य भऽ गेल रहैक । भरि गाममे चर्चा रहैक । रामकाका तकैक-तकैत अपस्याँत आ विक्षिप्त सन भऽ गेल छलथिन । ककरो कोनो अर्थ नहि लागि रहल छलैक । गामसँ बाहर दौड़ल जाइत लोक देखने छलैक । ककरो कोनो बातक सन्देह नहि भेल छलैक । ककरो किछु बुझले नहि छलैक । कविता सभ टा जनैत छलैक । खाली कविते टा जनैत छलैक ।

मुदा ओहो कहाँ जनैत छलैक जे एहन काण्ड भऽ जयतैक ? वर्षासँ बचबाक लेल रविक कोठलीमे चल गेलि रहैक । मोनमे कनियोँ कोनो आशंका नहि छलैक । ओकर बालसंगी रवि । रामकाका आ सम्पूर्ण गामक आशा जकरापर अँटकल छलैक, से ओना करतैक ? ककरा सन्देह होइतैक ? मुदा, भावी वैह छलैक ।

ओ कोनो विरोध किएक नहि कयलकै, से सोचि आइयो आश्चर्य होइत छैक । बादमे कानलि छलि आ कनिते धमकौने छलैक–'हम कहि देबैक, रामकाकाकेँ कहबनि, सौँसे गामकेँ कहबैक ।'

आ, रवि भागि पड़यलैक । एना गाम छोड़ि सभ दिन लेल निपत्ता भऽ जयतैक, से ओकर भागि जयबाक खबरि सुनियोकऽ नहि लागल छलैक । घूरि औतैक दू-चारि दिन बाद, डर कमि गेलापर— कविता सोचने छलि ।

दिन बितलैक, सप्ताह बितलैक, आ मासो बीति गेलैक । रविक कोनो पता नहि छलैक । लोकोकेँ कोनो पता नहि छलैक, एना किएक भेलैक ? खाली कविता जनैत छलैक ।

जनैत छलैक आ धमकौने छलैक जे ओ सभकेँ कहतैक, रामकाकाकेँ कहतनि, सौँसे गामकेँ कहतैक ।

मुदा, ओ ककरो किछु नहि कहलकै । कनैत रविक कोठलीसँ पड़ायलि आ अपन कोठलीमे आबिकऽ पड़ि रहलि । बड़ी कालधरि सम्पूर्ण देह थरथराइत रहलैक आ एक टा प्रश्न बेर-बेर मोनकेँ मथैत रहलैक–कोना भेलैक ? किएक भेलैक ?

अइ प्रश्नक उत्तर तकैत-तकैत दिन बीति गेलैक आ ओकर दरबज्जापर बरियाती आबि गेलैक । कनियाँ बनलि कविता, तैयो ओही प्रश्नक उत्तर ताकऽमे लागलि छलि आ सम्पूर्ण गामक स्त्रीगण-पुरुष ओकर भाग्यपर ईर्ष्या कऽ रहल छलैक । ओहन पढ़ल-लिखल, सुन्नर आ सुखी-सम्पन्न वर । वेदी तर बैसल, सभ टा बीध सम्पन्न करैत काल कविता ने वरक प्रसन्न आकृति देखि रहलि छलि, ने गाम भरिक प्रशंसा सुनि रहलि छलि, ओ तँ दोसरे गुनधुनमे लागलि छलि । ओकरे समाधान लेल विवाहसँ एकदिन पूर्व ओ रविक आङन पहुँचि गेलि छलि । रामकाका अपन कोठलीमे छलथिन । लग जा गोड़ लगलकनि । चीन्हिकऽ प्रसन्न भऽ उठलथिन रामकाका— 'कविता छेँ, नीकेँ रहऽ बेटी ! आशीर्वाद दैत छियौक अखण्ड सौभाग्यक । काल्हिए विवाह छौक ने ! हम तऽ आबि नहि सकबौक, कतहु जा-आबि नहि होइत अछि । माफ करिहेँ बेटी ! रवि रहितौक तऽ सभ टा भार लऽ लितौक तोहर बापक । तोहर बालसंगी छौक, तोहर विवाहक लेल, खासकऽ अइ घर-वर लेल बड़ प्रसन्नता छलैक ओकरा ।'

कविताकेँ नहि कहि भेलैक । जे ओ कहऽ चाहैत छलैक, नहि कहि भेलैक ! रामकाका रविक वियोगमे एतबे दिनमे वृद्ध आ कृश भऽ गेल छलथिन । एकदम टूटल आ हताश । ओ बात कहिकऽ हुनका आर तोड़ि देबाक साहस नहि भेलैक ओकरा ।

मुदा ओ साहस कयलक । कहलकै, सभ टा कहलकै । सीथमे सिन्दुर छलैक आ देहपर नवकनियाँक वस्त्र । हाथमे मेहदी आ पयरमे महावर । चतुर्थीक राति आ नव-पुरान संगी-बहिनपाक हँसी-मजाक । सभ मिलि ठेलि देने छलैक ओकरा कोबरघरमे । ओ दरबज्जे लग ठाढ़ि रहि गेलि छलि, एक्को डेग आगू नहि ससरलि छलि । वर उठलथिन आ ऊठिकऽ दरबज्जाक किल्ली ठोकि देलथिन । कविताक सम्पूर्ण देह सिहरि उठलैक । ओ लग अयलथिन आ लगभग कान लग मुँह सटा कहलथिन–'एतहि ठाढ़ि रहब ? बिछौनपर नहि आयब ?'

कविता किछु नहि बाजलि । ओ हँसऽ लगलथिन, पहिने आस्ते, फेर जोरसँ । हँसैत-हँसैत फेर अपने रुकियो गेलथिन आ कहलथिन–'बाहर कान

पथनिहारिसभ सोचतीह जे केहन बताह वर छैक, खाली अपने हँसने जाइत छैक । मुदा सत्ते, बड़ हँसी लागि रहल अछि हमरा । ठीक जहिना आइ दरबज्जे लग ठाढ़ि छी, ओहू दिन ठाढ़ि भऽ गेल रही अहाँ । हम बहिनक लग बैसल रही । अहाँ किम्हरोसँ धड़फड़ायलि आयलि रही आ भीतर हमरा बैसल देखि दरबज्जेपर ठाढ़ि भऽ गेलि रही । आइ जकाँ घोघ नहि छल मुँहपर । ओ उघार मुँह हम देखने रही । अहाँ झट पड़ा गेल रही । बहिन रोकिते रहि गेलीह । हम पुछलियनि–'ई के छलीह ?' ओ कहलनि–'कविता' । आ बस्स, भऽ गेल निर्णय । केहन जिद्दी छी हम, से देखि लियऽ । ककरो नहि सुनलिऐक । मुदा आइ बड़ हँसी लागि रहल अछि । जाहि मुँहकेँ देखि एक क्षणमे निर्णय लऽ लेने रही हम, ताहिपर एतेक टा घोघ ! ओ मुँह हजारोक बीच हम चीन्हि सकै छी, तकरा अइ घोघसँ नुकबऽ चाहैत छी अहाँ ! ई बेकार चेष्टा छोड़ू कविता ! एक्के बेर देखने छी हम, मुदा जन्म-जन्मान्तर धरि नहि बिसरत अहाँक ओ छवि ! मुदा अहाँ तऽ लगले बिसरि गेल हैब । मोनो ने हैत जे हम केहन छी । कने आँखि उठाकऽ देखू जे हम केहन छी ! बाजू तऽ की नाम अछि हम्मर ?'

कविता तैयो ओतहि ठाढ़ि रहलैक, किछु नहि बजलैक । ओ एक बेर फेर जोरसँ हँसलथिन– निश्छल, तृप्त हँसी ! कविता फेर सिहरि गेलि ।

ओ कहलथिन–'नहि लेब हमर नाम ? कि बुझले नहि अछि ? हमर नाम थिक–कवीन्द्र ! अहाँ कविता आ हम कवीन्द्र । केहन फिट जोड़ी बैसल ! गामक सभ बुढ़िया-नवकी कहैत छलि बेदिए तरसँ–'राम सीताक जोड़ी छैक ।' देखू अहाँक गामक लोकक बैमानी ! हम कोनो कारी छी जे राम-सीताक जोड़ी कहलक ! विश्वास नहि होअय तऽ अपने घोघ उठाकऽ देखि लियऽ !'

फेर एक टा उन्मुक्त ठहाका आ फेर कविताक सौँसे देहमे सिहरन । मुदा कविता सम्हरि गेलि । ओइ मोहक हँसीक जालमे नहि फँसलि । थरथराइत पयरकेँ स्थिर कयलक आ मुँहपरसँ घोघ उठा लेलक । मुग्ध, अपलक तकैत वरक दृष्टिसँ बँचैत कहलकै–'हमरा बहुत-किछु कहबाक अछि अहाँसँ ।'

कविता चौँकलि । पाछाँसँ लव टोकि रहल छलैक–'तोहर ध्यान किम्हर छौक माय ? तखनसँ टोकि रहल छियौक ! अही ठाम ठाढ़ि रहबेँ ? आङन नहि चलबेँ ?'

कविता लवक संग अङना आयलि । लव उत्साहित छलैक । पुछलकै–'रविमामा सत्ते हमरा बाबू लग लऽ जयताह ?'

प्रश्न अप्रत्याशित छलैक । कविता कनेक चौँकलि । फेर सम्हरैत कहलकै–'हँ, किएक नहि लऽ जयथुन ?'

लव आर उत्साहित होइत बाजल–'तऽ फेर आइयो किएक नहि कहलहुन लऽ जाय लेल ? ओ तोहर बात अबस्स मानि लितथुन, हमरा पहुँचा दितथि ।'

लवकेँ स्नेहसँ लग खीचि देहसँ सटबैत कविता कहलकै–'आइ बेर नहि भेल छलैक बेटा ! ओ एतेक वर्षपर गाम आयल छथि, लगले कोना तोरा लऽ जाय लेल कहितियनि ? बेर आबऽ दहिक, अबस्स पहुँचा देथुन तोरा ।'

लव खूब प्रसन्न नहि भेल, मुदा मायक दुलार आ आश्वासन पाबि फेर बात आगू नहि बढ़ौलक । माल-जालक सेवामे लागि गेल ।

कविता अङनेमे ठाढ़ि रहि गेलि । आइ रवि ओकरा नहि चीन्हि सकलैक। ओ कहने रहथिन जे ई आकृति जे एक बेर देखि लेत, जन्म-जन्मान्तर तक नहि बिसरि सकत । ओ यदि ओकर ई आकृति आइ देखितथिन ! केहन लगितनि ? जरिकऽ खोरनाठ भेल आकृति आ गलिकऽ कंकाल बनल शरीर ! रवि नहि चीन्हि सकलैक ओकरा, तकर दुख छलैक । बहुत दुख सहि गेलि अछि, नहि जानि, कहियासँ । एक युग बीति गेलैक ।

आर कतेक दिन ? कविताक मोनमे प्रश्न उठलैक जकर कोनो जवाब नहि पाबि ओ हाथ उठा ईश्वरसँ प्रार्थना कयलकनि–'यंत्रणाक ई अवधि आर कतेक शेष अछि भगवान !'

सत्ते, बहुत रास समय बीति गेल छलैक ।

आब हवेली मोहनपुरमे सभसँ पहिने मङनू मिसर नहि उठैत छथि । ओ तँ कहिया ने अपने दुनियाँसँ विदा भऽ गेल छलाह । आब गामकेँ भोरे-भोर उठबैत 'गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए' मंत्र क्यो नहि पढ़ैत छैक । भरि गामकेँ उठबऽवला मङनू मिसर एक दिन अपने सुतले रहि गेलाह । रौद दलानमे चौकीपर देल बिछौन धरि पहुँचि गेलनि, तैयो मङनू मिसर सुतले रहलाह । घरक लोककेँ चिन्ता भेलैक । जेठ बेटा देह धऽ उठौलकनि । मुदा ककरा ? बिछौनपर तँ मङनू मिसरक सर्द मृत शरीर पड़ल छलनि ! मङनू मिसर नहि छलाह । गामक भोरुकबा-मंत्र शान्त भऽ गेल छल।

आ ओइ मंत्रक पाछाँ-पाछाँ कमला माइक दरबारमे उपस्थित होबऽवाली छोटकी बाबी सेहो नहि रहलीह । काशीवास लेल चल गेलि रहथि– हवेली मोहनपुर छोड़िकऽ । रामक कोनो अनुनय-विनय नहि सुनने रहथिन । मुदा, एक दिन बिना कोनो सूचनाक अपने उपस्थित भऽ गेलथिन–'नहि रहि भेल राम ! रवि दऽ सुनलिऐक तऽ नहि रहि भेल । एकसर कोना रहबऽ तोँ ? अही छौँड़ाक मुँह देखि दोसर कनियाँ नहि अनलह तोँ । तकरा कोनो दया-माया नहि ! कोना छोड़िकऽ जा भेलैक ओकरा...?'

राम बिच्चेमे टोकि देलथिन–'भेल हेतैक कोनो कारण मौसी ! रवि ओना भागिकऽ पड़ायवला बेटा नहि अछि । अबस्से घूरि ऐत एक दिन । मुदा ओकरे दऽ सुनिकऽ अहाँ घूरि आयलि छी मौसी, से बड़ हर्षक बात ।'

ओ हर्षक बात बेसी दिन नहि रहलनि रामक लेल । मौसी अबिते बिछौन धऽ लेलथिन । फेर ऊठि नहि भेलनि । डाक्टर-वैद्य सभ हारि गेलनि । अन्तिम दिन मौसी कहलथिन–'वचन देने छलियऽ तोरा जे मुँहमे आगि देबाक अधिकार तोरे रहतऽ । सैह वचन आपस लऽ अनलक हमरा । हमर वचनक चिन्ता भगवानकेँ छलनि ।'

रामकेँ मुदा ककरो कोनो चिन्ता नहि छलनि । मौसियोक सभ टा काज राजरानिएँ जकाँ भेलनि । लाल कतबो बुझयबाक चेष्टा कयलथिन, राम नहि मानलथिन– मौसीक मर्यादाक प्रश्न छलनि ।

ओना, गाममे मर्यादाक प्रश्नपर आब बेसी लोक आगू नहि बढ़ैत अछि ! बढ़ैत छलाह आगाँ श्रीकान्त चौधरी । भरि गामक मर्यादाक दायित्व हुनकेपर छलनि । दू टा जेठ बहिन ! विधवा जेठ बहिन गामे रहलथिन आ सम्पूर्ण मर्यादापूर्वक रहलथिन । मौसीकेँ कहियो लोक नहि बुझलकनि जे अइ गामक नहि छलीह । मीराक विवाह उच्च कुलमे करौलथिन आ ओकर स्वामीक मृत्युक उपरान्त ओकरा सम्पूर्ण मर्यादाक संग रखलथिन ।

ई तँ घरक गप्प रहनि । घरक बाहरो ककरो साहस नहि रहैक जे बिना हुनकर अनुमति लेने कोनो काज करत । एक बेर उतरबारि टोलक कारीझा अपनासँ छोट पाँजिक जमाय उठा अनलनि । श्रीकान्त चौधरी कोनो दशा बाँकी नहि रखलथिन । अपन माय छलथिन योग्यक सन्तान, स्त्री सेहो ओही श्रेणीक, राम आ लालक विवाह महादेवझा आ पद्मझा पाँजिमे कयलथिन । नामी आ गोवर्धन दुनू जेठ बालकक विवाह सेहो अपने महादेवझा पाँजिमे करौलथिन । अपनासँ छोट पाँजिक एक्को टा जमायो नहि लाबऽ देलथिन ।

फेर गोवर्धन बुधियार भऽ गेलथिन । एक दिन बाँट-बखराक गप्प कयलथिन आ फराक भऽ गेलथिन । संगहि फराक भेलथिन नामी । दुनू अपन छोट बेटाक विवाहमे टाका गनौलनि । आशीर्वाद देबऽ लेल कहबाक अपने दुनू भाइकें साहस नहि भेलनि । समाद देने छलथिन । राम कहबो कयलथिन– 'अपन-अपन विचार छैक बाबू ! चलू, दूर्वाक्षत दऽ देबनि ।' मुदा श्रीकान्त चौधरी अडिग छलथिन–'विचार बदलबा लेल बड़ अबेर भऽ गेल आब । तोरालोकनि जा, मना नहि करैत छियऽ ।'

ओ नहि गेलथिन । कतहु नहि जाइत छलाह जीवनक किछु अन्तिम वर्षमे । सभटा बदलऽ लागल छलैक । श्रीकान्त चौधरी नहि बदललाह । दरबज्जेपर दुर्गापूजा होइत छलनि । पैघ मेला लगैत छलैक । नाच-गान आ नाटक होइत छलैक । सभ टा व्यवस्था श्रीकान्ते चौधरीक रहैत छलनि । शामियानामे सभसँ आगू स्टेज लग मसलंगसभ रहैत छलैक जाहिपर सभ कुटुम्ब आ अपन परिवारक लोक बैसैत छलनि । एक बेर सभ टा व्यवस्था करौलाक बाद नाटकक बेरमे अयला तँ देखलथिन एक टा मसलंगपर आधा नामी ओठङल छलाह आ आधापर लंका मोहनपुरक राम औतार । चोट्टे घूरि गेलथिन । दोबारा फेर कहियो शामियानामे पयर नहि देलथिन । सभ टा इन्तजाम करबा– ठीक नाच-नाटक शुरू होयबाक बेरमे अपन कोठली जा सूति रहैत छलथिन ।

समय बदलि गेल छलैक, मुदा श्रीकान्त चौधरी नहि बदलल छलाह । मर्यादाक लेल सभ किछु बेचि-बिकिन लेबाक साहस हुनके टामे छलनि । जातिक रक्षा, कुटुम्बक सम्मान । ओ जमाना आब लदि गेलैक । तहिया गामक सभ कुटुम्ब हुनके कुटुम्ब रहनि । सभकें एके मर्यादा भेटैत छलैक सम्पूर्ण गाममे ।

आब गामक लोक बेसी होशियार भऽ गेल अछि । पाहुन-परक बाँटि लेने अछि, अपन-अपन । अपने कोठलीमे, अपने पाहुन टाक चिन्ता रहैत छैक । गाम भरिसँ कोन मतलब ? कमलामे पानि कम्म छैक, कोनो स्त्रीगण वा बेटी-पुतहु जाँघ उघाड़ि हेलिओकऽ आबि गेलीह तँ कोन अनर्थ भेलैक ? प्रलय मचा दैत छलथिन श्रीकान्त चौधरी । पानि छैक वा नहि— नाव चलैत रहय । नाव चलबा जोग नहि छैक तँ घूमिकऽ पुल बाटे आबऽ । मुदा बेटी-पुतहु पैदल कोना अओति ? सवारी महफा कथी लेल छैक ? खाली अपने लेल नहि, गामभरिक बेटी-पुतहुक लेल ।

आब गामभरिक बेटी-पुतहुसँ गामक लोककें कोनो मतलब नहि । अहाँक बेटी पयरे आयलि तँ आयलि, हम अप्पन सवारी मङनी किएक देब ? बनबा किएक नहि लैत छी एतेक इज्जतिक ध्यान अछि तँ !

एक बेर खतबेटोलीक कलुआ खतबे सामनेसँ खड़ाम पहिरि चल गेल रहनि तँ खुट्टासँ बान्हि पिटबौने रहथिन श्रीकान्त चौधरी । मुदा ओही कलुआक बेटीक विवाह रहैक तँ अपन बखारीसँ अन्न देलथिन, टाका देलथिन आ वर-कनियाँ लेल कपड़ा-लत्ता देलथिन । जूता-मौजा पहिरि कलुआक जमाय गोड़ लागऽ अयलनि । अपने हाथसँ गोड़लगाइ देलथिन श्रीकान्त चौधरी ।

कलुए टा नहि, जकरा ककरो प्रयोजन होइ, हाथ जोड़ि ठाढ़ भऽ जाय, कहियो निराश नहि होबऽ पड़ैक । अपना कर्ज लेबऽ पड़नि, जमीन बिक्री भऽ जाइनि, मुदा कहियो क्यो निराश नहि घूरल । गामक मर्यादाक प्रश्न सभसँ ऊपर रहैत छलनि श्रीकान्त चौधरीक लेल ।

आब वैह प्रश्न सभसँ तर पड़ि गेल छैक । सभकें अपन-अपन चिन्ता । गामक मर्यादा लऽकऽ के चाटत ? तें गामक हालत दिनानुदिन बदतर होइत गेलैक । आजादीक पच्चीस वर्षक बादो हवेली मोहनपुरमे बिजली नहि लागल छलैक । जाहि हवेली मोहनपुरमे साँझ होइते बंगलासभसँ पैघ-पैघ पेट्रोमैक्स जरि उठैत छलैक, गरीबो लोक अपन दरबज्जापर लालटेन लेसि टाङि लैत छल, से हवेली मोहनपुर आब साँझेसँ अन्हारक टिल्हा बनि जाइत अछि । ककरो दलानपर इजोत नहि । घरे-घर बैसारी । आ, भोरे आब क्यो सौँसे गामकें जगबैत कमला माइक दरबार दिस नहि जाइत अछि । भोर होइते शुरू भऽ जाइछ घोंघाउज, गोलंजर आ कथा-कथान्तर । सम्पूर्ण दिन एहीमे बीति जाइत अछि । गाम ओहिना दुर्गतिमे पड़ल रहैत अछि । सौँसे गन्दगी पसरल । पानि-गन्दगीक बहबाक कोनो बन्दोबस्त नहि । टाट खसका-खसका आ माँटि भरि सभ सार्वजनिक नालाकें लोक अपन बाड़ीमे मिला लेने अछि । आब सभ टा पानि बाटेपर बहैत छैक–थाल, कादो, गन्हाइत विष्ठा । ऊभड़-खाभड़ कने-कने चौड़ा बाटसभ आ कुम्भी-लत्तीसँ छाड़ल पोखरि-डबरा । सभमे मच्छड़ भनभनाइत । एक टा कल गड़ल रहैक पछिला बोटमे । दुनूपर भीड़ रहैत छैक । पाइवला लोकसभ अङनेमे कल गड़ा लेने अछि । पोखरि-डबराक ककरो चिन्ता नहि छैक । दुनू सार्वजनिक कलपर तैयो भीड़ रहैत छैक । अदहनसँ लऽकऽ पीबा धरि कलेक जल चाही । एक्को टा इनार-पोखरिक पानि कोनो काजक नहि रहलैक ।

गामक सभ टा काज तैयो चलिते छैक । गोलैसीसँ लऽकऽ भतबरी धरि । गोलैसीक एक टा अड्डा गामक हाइ स्कूल । बेसी मास्टर गामेक, किछुए मास्टर अनगौआँ । गामक राजनीतिसँ स्कूल प्रभावित । स्कूलक हेडमास्टर छलथिन नामी

बाबूक जेठ बालक । गामोमे बेस चलती हुनकर । मुदा, लंका मोहनपुरक संग संधि कऽ सरपंचीक गद्दी सभ बेर हथिया लैत छलथिन अलगू चौधरीक बेटा हरिश्चन्द्र चौधरी । पितिऔते छलथिन अलगू चौधरी नामी बाबूक । मुदा काटा-काटी पुरान छलनि । राजनीतिमे अखड़ियल छलाह हरिश्चन्द्र चौधरी । तीनू बेर मुखियाक गद्दी लंका मोहनपुरकेँ दऽ सरपंची अपने हथिया लैत छलाह ।

जाहि साल पहिल बेर सरपंच भेला, ओही साल न्यायक नव मापदण्ड स्थापित कयलनि हरिश्चन्द्र चौधरी । यद्दू गुरुजीक छागर भोलीझा चोराकऽ मारि देलथिन । भरि गाम हल्ला मचि गेलैक । न्याय लेल सरपंच लग दौड़लाह यद्दू गुरुजी । तावत मासु पहुँचि गेलनि हरिश्चन्द्र बाबूक अङना । हरिश्चन्द्र बाबू झट फैसला कयलनि–भोलीझा निर्दोष प्रमाणित, मानहानिक लेल यद्दू गुरुजीकेँ बीस टाका जुरमाना ।

अपन पहिले पंचैतीसँ हरिश्चन्द्र बाबू न्यायक अइ स्तरक निर्वाह कयलनि। गामक समस्याक समाधानोमे ओ ककरोसँ पाछाँ नहि रहैत छलाह । एकबेर शुद्धमे बदरी झा अपन पाँच बरखक बेटीक लेल पचास वर्षक वर लऽ अनलनि । हरिश्चन्द्र चौधरी गामक नौजवानसभकेँ भड़कौलनि–'तोरालोकनिक अछैत एहन अन्हेर ! भगा दे वर-बरियातीकेँ ।' एक तँ राकस, दोसर नोतल । धारक पारेसँ बरियातीकेँ भगा देलक छौँड़ासभ । बदरी झा तीन हजार गना लेने छलथिन । चिन्तामे पड़लाह । पाँच सय रातिएमे हरिश्चन्द्र चौधरीकेँ पहुँचि गेलनि । प्रात भेने वैह वर-बरियाती फेर आयल । स्वागतमे सभसँ आगू सरपंच हरिश्चन्द्र चौधरी ।

मुदा गाममे असल डर होइत छलैक लोककेँ नामी बाबूक बालक महेशसँ। नहि जानि ककरासँ ककरा बझा देथिन । दिन-राति एही सुतारमे रहैत छलाह । हाइ स्कूलमे हेडमास्टर होयबाक कारणेँ बेसी लोक मास्टरे साहेब कहैत छलनि । आ मास्टर साहेबक अधिक बैसार छनि लोकक अङनामे, खासकऽ ओइ आङनमे, जकर पुरुष कमयबा-खटयबा लेल परदेश रहैत छैक । ओइ स्त्रीगणसभक चुल्हे लग मास्टर साहेबक बैसार रहैत छनि– अबेर-कुबेर कोनो नहि । अप्पन-अप्पन आङनमे प्रवेश रोकबा लेल बेसी काल परदेशी कमौआसभ अपन सलामी पहुँचा दैत छनि–पैँचक नामपर सय-दू सय टाका आ नीक-नीक चीज । मुदा सलामी दऽ जहिना परदेशी गामसँ विदा होइत छथि, मास्टर साहेब फेर आङनमे ।

नहि परि लगलनि खाली कमलाक कनियाँ । ओ अपने खेलायलि मौगी छलि । मास्टर साहेबक पैतरा बूझि गेलनि । वर ओकर परदेसिया छलैक, कानपुरमे

कमाइत छलैक । साल-छौ मासपर अबैत छलैक । ओकर स्त्री गाममे रहैत छलैक आ साले-साल जमीन कीनैत छल, भरना लैत छल । मास्टर साहेब ओम्हरो जोर मारलथिन । शुरू-शुरूमे बैसार जमलनि, किछु टाको पैँच देलकनि । फेर दुनूमे बझि गेलनि । मास्टर साहेब उपद्रवी छौँड़ासभसँ ओकर अङनामे रोड़ा बरसबा देलथिन आ ओ गामक बीचमे ठाढ़ि भऽ मास्टर साहेबकेँ खुल्लम-खुल्ला गारि देलकनि–'इह, सऽख ने देखू ! टाको चाहियनि आ इज्जतियो ! खऽख लगले रहतनि हमर संग सुतबाक...'

मास्टर साहेबक ई पुरान सऽख छलनि । कतबो वयस बितलनि, ई सऽख कम्म नहि भेलनि, बढ़ले गेलनि । जहाँ कोनो परदेसी गामसँ बाहर कि मास्टर साहेब ओकर कोठलीक भीतर ।

राम जिबैत छलाह तँ लोक बेसी काल कहैत छलैक–'दुनू पितियौते तँ छथि–महेश आ राम । एक टाकेँ स्त्री छनि, नाति-पोता छनि, तैयो चालि देखू ! दोसरकेँ स्त्री बाइसमे वर्षमे मुइलथिन, मुदा कहियो क्यो-किछु सुनलकनि ?'

मुदा ई बात सोझाँमे कहबाक साहस नहि छलैक ककरो । सभकेँ मास्टर साहेबक डर होइत छलैक । घरेमे किछु लगा देथिन । लगबऽ-भिड़बऽमे माहिर छलाह मास्टर साहेब ।

रामकेँ दुख होइत छलनि । गामक हालति देखि बड़ दुख होइत छलनि । रविक पड़ा गेलाक बाद एकदम टूटि गेल छलाह ओ । कोनो वस्तुमे कोनो रुचि नहि रहि गेल छलनि । अपन कोठलीमे पड़ल पोथीसभ पढ़ैत रहैत छलाह, वैह एकमात्र संगी छलनि सभ दिनक । मुदा लोकसभ बेर पड़लापर अबैत छलनि, सुख-दुख कहैत छलनि । सूनिकऽ छटपटा उठैत छलाह । हुनके पुरखाक बसाओल गाम छनि–ओकर मान-सम्मानमे उत्तरोत्तर वृद्धिक लेल हुनकर पिता सर्वस्व लगा दैत छलथिन । रामो अपना भरि पाछाँ नहि रहैत छलाह । मुदा, रविक एकाएक अदृश्य भऽ गेनाइ हुनका सामर्थ्यहीन कऽ देने छलनि । हुनकर वशक बात नहि रहि गेल छलनि । वस्तुत: ककरो वशक बात नहि रहि गेल छलैक आब ।

सभ-किछु बदलि गेल छलैक । मूल्य आ सिद्धान्त– सभ-किछु परिवर्तित भऽ गेल छलैक । मोहनपुरक हवेली ध्वस्त भऽ गेल छलैक आ खण्डहरमे जे किछु ठाढ़ भेल छलैक ओ लज्जास्पद छलैक । ने सामन्ती शान, शिष्टाचार, गरिमा आ शालीनता, ने जनवादी चेतनाक स्फुरण । एक टा स्वार्थ-लोलुप सभ्यता जन्म लऽ लेने छलैक गाममे देखिते-देखिते । वैह अमरबेल जकाँ पसरि रहल छलैक ।

आ, बहुत रास समय ससरि गेल रहैक ।

रविक गाम अयना दू मास बीति गेलैक ।

ओइ दिन कवितासँ भेँट भेलाक बाद ओकर गाममे रहब सहज भऽ गेल छलैक । सभ टा तनाव, सभ टा अपराधबोधसँ मुक्त भऽ गेल छल ओ ।

ताकि-ताकिकऽ बाबूक सामानसभ निकलबौने छल । तीनू फोटो जरनघरामे फेकल छलैक । रविकेँ विचित्र आ दुखदायक लगलैक ई व्यवहार मुदा ओ चुप्पे रहल । ओइ कोठलीसँ सभ टा सस्त रुचिक कलेण्डर हँटबा फेरसँ माँ आ बाबूक फोटो टङलक । बाबूक नोसिदानीकेँ सरियाकऽ तक्खापर रखलक आ छड़ीकेँ एक टा खुट्टीसँ लटका देलकै । सभटा पोथीकेँ आलमारीसँ बाहर कऽ सुखौलक आ फेर ओइ आलमारीकेँ अप्पन कोठलीमे आनि पुरने स्थानपर राखि सभ टा किताब ओइमे सरियाकऽ रखलक । एक टा आलमारीमे गोजले भेलैक, तैयो बहुतरास किताब बाहर टेबुलेपर राखऽ पड़लैक । एक टा आर आलमारी लेल तख्ता चिरबौलक अरकसियासँ आ बरही लगा देलकै ।

भोरे ऊठि नित्यकर्मसँ निवृत्त भऽ पाठ करऽ बैसि जाइत छल–बाबूक पोथीसभ छलनि । गीताक पाठ ओकरा पसिन्द छलैक । पाठक बाद मायक फोटोकेँ नित्य नव माला पहिरबैत छल । तकर बाद जलखै आ तकर बाद किछु काल फुलबारीमे काज । बाबूकेँ फूल बड़ पसिन्न रहनि । सभ तरहक फूल पसिन्द छलनि । अपने हाथे लगबैत छलथिन, पानि पटबैत छलथिन । रवियो ओही क्रियाकेँ दोहरबैत छल आ लगैत छलैक जेना बाबूक स्नेहक छाहरि तर बैसल हो ।

भोजनक बाद स्नेहक ओ छाहरि भौजीक सम्पर्कमे भेटैत छलैक । भोजनक बाद ओ विक्रम भाइक डेरापर चल जाइत छल । भाइ स्कूल गेल रहैत छलथिन आ भौजी एकसरि रहैत छलथिन । दुनूकेँ कोनो काज नहि भरि दुपहरिया । बहुतरास गप्प करैत छल दुनू गोटे । भौजी गामक गप्प कहैत छलथिन, बाबूक गप्प कहैत छलथिन । रविकेँ नीक लगैत छलैक । रवियो बहुतरास गप्प कहैत छलनि । चौदह वर्षक अपन प्रवासक कथा खाली नुका जाइत छल । भौजी बड़ जिद करैत छलथिन, मुदा रवि कहुना टारि जाइत छल ।

एक दिन भौजी दोसरे जिद धऽ लेलथिन–'आब अहाँ विवाह कऽ लियऽ ।'

रवि बात हँसीमे उड़बैत कहलकनि–'के करत हमरासँ बियाह आब ? सभ टा केश उज्जर भऽ गेल कनपट्टीपर । हम तऽ तैयारे छी । होथि कोनो बहिन तँ अहाँ करा दियऽ हमरो विवाह । जिनगी भरि उपकार मानब ।'

भौजी मुदा गम्भीर छलथिन–'एना हँसीमे उड़ौने नहि मानब हम । रहितथि कोनो बहिन हमर कुमारि तऽ अबस्से करा दितहुँ विवाह । मुदा कनियाँक कमी छैक ? सेहो अहाँ सन वर लेल ? खाली अहाँ तैयार भऽ जाउ ।'

आब रवियोकेँ गम्भीर होबऽ पड़लैक– 'मोने तैयार नहि होइत अछि भौजी ! के अइ झंझटमे पड़य ? स्वतंत्र छी, फेर जहिया मोन हैत, गामसँ विदा भऽ जायब । आब तऽ बाबुओ नहि रहलाह । के रोकत हमरा ?'

सुनयना भौजी कने दुखी होइत कहलथिन–'सत्ते कहै छी ! आर के रोकत अहाँकेँ ? आर के अछि अहाँक गाममे ? हमरा तऽ सत्ते कौखन आश्चर्य होइत अछि जे लालमामा-मामी किएक ने चर्चा करैत छथि अहाँक पलिबार बसयबाक ? हमरालोकनिक गिनतिए कोन अछि ?'

रवि अपनत्वसँ कहलकनि–'हमर बातक एना अर्थ नहि लगाउ भौजी ! अहीँ लोकनि तऽ छी सभ-किछु हमर आब । बाबू नहि रहला, आर अछिए के ? गाम छोड़बाक बात तऽ ओहिना कहने रही । हम तऽ एतऽ रहऽ आयल छी । मुदा विवाहक गप्प छोड़ू । बड़ निष्प्रयोजन बुझाइत अछि हमरा ।'

भौजी फेर हँसी कयलथिन–'आ, जखन खगता हैत ? मौगीक देहक इच्छा हैत, तखन ?'

रवियो ओहिना हँसीमे कहलकनि–'मौगी-देहक कोन खगता छैक ? इच्छे भेला उत्तर भेटि जाइत छैक । खाली टेँटमे दाम चाही । सभ तरहक देह– हम तऽ चौदह वर्षमे नीक जकाँ देखने छिऐक ।'

सुनयना भौजीक मुँह लाल भऽ गेलनि । आँखिक पपनी नीचाँ जे खसलनि से उठबे नहि करनि जेना ! रविसँ लाज भऽ रहल होइनि । रविकेँ लगलैक जेना भौजी डेरा गेलि होथिन । दुपहरिया आ डेराक एकान्त । देह-सम्बन्धी ओकर मान्यता भौजीकेँ भयभीत कऽ देने छनि भरिसक । उठैत कहलकनि–'चलै छी भौजी !'

भौजी तैयो किछु नहि बजलथिन । रविकेँ आन्तरिक पीड़ा भेलैक । भौजी ओकरा ओतेक नीच बूझि लेलथिन ? दुपहरियामे ओकर अयबाक नेतपर प्राय: सन्देह कऽ बैसलथिन ।

ओ दुपहरियामे ओम्हर गेनाइ छोड़ि देलक । तेजू ओकर बालसंगी छलैक । ओइ दुपहरियामे ओकरे ओइ ठाम गेल । मिहिर आ नारायणक संग ओहो ओकरे क्लासमे पढ़ैत छलैक । मुदा लोअरो पास नहि कऽ सकलैक । सात भैयारी छल, मुदा बेसी निरक्षरे । तेजुए स्कूलमे नाम लिखा लोअर धरि पहुँचल छल । मुदा, तकर बाद पोथीसँ बेसी गुल्ली-डंडा आ गोली खेलायपर परकि गेल । क्लास जयबे नहि करय । स्कूलसँ जखन रवि, मिहिर आ नारायण घुरय, गाछीक कातमे चिकनी माँटिवला बाटपर घुरछी खोदने बड़का-छोटका गोली लेने ठाढ़ रहैत छलैक । देखिते छेकि लैत छलै-'आबि जो, खेला ले एट्टन-दोट्टन, तखन अङना जैहें ।'

बेसीकाल अबेर भऽ जाइत छलैक । तेजू हारैत छलैक आ हारलाक बाद फेर दोसर दाव खेलयबा लेल बाध्य करैत छलैक । जखन सभक आङनसँ तकैत लोक पहुँचैत छलैक तँ सभ अप्पन-अप्पन आङन पड़ाइत छल । मुदा तेजू लेखे धनसन। ओ दोसर छौँड़ासभकेँ पकड़ि गुल्ली-डंटा आ गेलबाती खेलाय लगैत छल ।

एकदिन बुधियार काका लग तेजू अपन तेजी देखबैत बाजल-'देखू बुधियार काका, हम सभ भाइ नाथेनाथ छी-सोमनाथ, इन्द्रनाथ, रतिनाथ, सतीनाथ, कलानाथ, महेन्द्रनाथ ओ तेजनाथ ।'

बुधियार काका झट कहलथिन-'सभ मूर्खनाथ !'

तेजू लोहछिकऽ पड़ायल आ दरबज्जापर बैसल लोकसभ बुधियार काकाक गप्पपर हँसैत रहल । बुधियार काका उतरबारि टोलमे बड़का कहबैका छलाह । ककरो नहि छोड़ैत छलथिन-अपनो बेटासभकेँ नहि । एक बेर बेटा कनियाँ आ सासुकेँ हरिद्वार लऽ गेलथिन, माय-बापकेँ पुछबो नहि कयलथिन । सङतुरिया भजार कहलथिन-'की भेल भजार ? अहाँ हरिद्वार नहि गेलहुँ !'

बुधियार काका झट कहलथिन-'कोना जैतहुँ हमरालोकनि ? बाउ (बेटा)केँ देवता (स्त्री) आ कुलदेवता (सासु) दुनू संगे छथिन, तखन माय-बापक कोन काज ?'

भजार काकाक मुँह बन्द भऽ गेलनि । ओना, भजारो काका बजन्ता छलाह । मुदा बुधियार काका हुनकर बोली बन्द कऽ दैत छलथिन । बुधियार काका छलाह मिडिल फेल आ भजार काका मैट्रिक पास । मुदा, तेजी बेसी बुधियारे काकाक रहनि । दुनूक गप्प अधिक काल अंग्रेजीमे होइनि । पयखाना लेल धारक कात गेल रहथि भजार काका । एक टा पाकल आम भेटलनि-पहिल गोपी । गोपी लेने सोझे बुधियार काका लग पहुँचलाह-'भजार, आइ हैव फाउण्ड ए गोपी टुडे । इफ यू सर्टीफाइ इट टुबी ए प्यूर वन, इट बिल बी सबमिटेड टु गौड' (भजार, आइ हम एक टा गोपी पौलहुँ अछि । यदि अहाँ एकरा एक टा शुद्ध गोपीक प्रमाणपत्र दी तँ एकरा भगवानकेँ चढ़ा देबनि ।)

बुधियार काका गम्भीरतापूर्वक ओइ गोपीक निरीक्षण कयलनि-'नो भजार, लुक एट दिस स्पौट । इट इज ए कोइलपद्दू, इट केन नोट बी सबमिटेड टु गौड (नै भजार, ई दाग देखू । ई कोइलपद्दू थिक, एकरा भगवानकेँ नहि चढ़ाओल जा सकैत अछि ।)

भजार काकाक मुँह लटकि गेलनि । ओना, बाँकी सभ लग भजार काका खूब झाड़ैत छलाह । छौँड़ासभ हुनकर डरे पड़ाइत रहैत छल । अंग्रेजीक नेसफील्डक ग्रामर रटने छलाह भजार काका । रवि दसमामे फर्स्ट कयने छल । गाम आयल तँ बाबू सभकेँ गोड़ लागऽ पठौलथिन । भजार काकाकेँ गोड़ लगलकनि तँ कहलथिन-'ओ, फर्स्ट भेल छऽ ! अच्छा कहऽ तऽ- व्याट इज द थर्ड रूल ऑफ सिनटैक्स ?'

रवि लंक लगाकऽ पड़ायल । सभ छौँड़ा पड़ायले रहैत छल । भजार काकाकेँ क्यो नहि अभरैत छलनि तँ आङन जा निरक्षर काकीकेँ अंग्रेजीमे कहैत छलथिन-'नूनू माय, अहाँ जे चाहैत छी जे अहाँक तीनू बेटा— नूनू, बच्चा आ बौअन, सभ खुशी रहथि, से यू आर ए फूल । वन हू ट्राइज टु प्लीज एवरीबडी, प्लीजेज नन' (अहाँ मूर्ख छी, जे सभकेँ प्रसन्न करबाक चेष्टा करैत अछि, ककरो प्रसन्न नहि करैत अछि ।)

काकी अवाक् ! कहियो काल खौँझाकऽ कहैत छलथिन-'धुर जाउ, हम नहि बुझै छी अहाँक ई अरबी-फारसी ।'

मुदा, बिना अरबी-फारसी पढ़ने तेजू तेहन काज कयलक जे बुधियार काकाक बुधियारी धयले रहि गेलनि । सातो भाइ फराक भऽ गेल छल तेजू । सभक विवाह-दान आ धीया-पूता । हिस्सामे एक-एक टा कोठली आ दू-तीन बीघा जमीन। मोस्किलसँ गुजर होइत छलैक । मुदा, एकदिन भरिगाम चकित, जखन दरबज्जापर एक टा पैघ सन कोठली बना तेजू बड़का दोकान खोलि देलक- अन्न-पानिसँ लऽकऽ असाहनि-पसाहनि धरिक सामान । गामक लोक ओहि दिनसँ घातमे रहय आ अन्तमे सुँघिए लेलकनि । तेजूक बैसार कमलाक आङनमे होबऽ लागल रहैक, बेसी-बेसी राति धरि । कमलाक स्त्री जे मास्टर साहेब सन धाकड़ लोककेँ औँठा देखा देने रहनि, तेजूक चालिमे आबि गेलैक । मास्टर साहेबकेँ चौराहापर गारि दैत कहने रहनि-'पैसो दियनु आ संग सुतबो करियनु ! सऽख ने देखू !'

भरिगामक लोक कहऽ लगलैक जे तेजूक दुनू सऽख कमलेक स्त्री पूर करैत छथिन । आर तँ आर, आङनमे तेजूक अपने कनियाँ फसाद करऽ लगलैक, राति-बिराति गर्द मचि जाइ । तेजू भरिगाम एलान कयलक–'हिस्टीरिया होइ छनि ।' आ, झट नैहर पहुँचा अयलनि ।

गाममे आब तेजूकेँ सभ तेजू बाबू कहैत छैक–अपनासँ छोटो आ पैघो । भोर होइते ओकर दोकानक आगाँमे बेंच-चौकी रखा जाइत छलैक आ फेर ओतऽ लोकसभ जुटऽ लगैत छल— सरपंच हरिश्चन्द्र चौधरी आ हेडमास्टर महेश बाबू, बंगट मिसर आ अशर्फी झा आ आरो कतेक लगुआ-भिड़ुआ सभ ।

बीच-बीचमे हाक पड़ै छैक-'की तेजू बाबू ! फेर एक बेर चाह नहि हेतैक ?'

'आह, किएक नहि ?' तेजू गदगद होइत तुरत दोसर खेपक व्यवस्था करैत छलाह । चाहक बाद सुपारीक कतरन आ तकर संग गप्पपर गप्प ।

असली गप्प होइत छलैक मास्टर साहेबक दरबज्जापर— साँझ बितलापर सभ ओतहि जुटैत छल । बूढ़ा नामी बाबू अपन चौकीपर बैसल-बैसल बीच-बीचमे टीप दैत छलथिन । महेश बाबू भरिगामक लेखा-जोखा लैत रणनीति तैयार करैत छलाह । अन्तमे, सभक गेलाक बाद मात्र दू टा विश्वासी रहि जाइत छलथिन— गुणाकर आ गणेश । दुनू दूत आ जासूस छलथिन हुनकर ।

मुदा, कमलाक कनियाँ कोनो दूत वा जासूसकेँ अपन अङना टपऽ नहि दैत छलैक । साँझसँ ओकर अङनामे अड्डा जमैत छलैक तेजूक । रातिकेँ कखन घुरैत छल, क्यो नहि देखैत छलैक ।

गुणाकर भरिगाम बढ़ा-चढ़ाकऽ बात पसारैत छलैक आ अन्तमे सभकेँ कहैत छलैक–'ईहो मास्टरे साहेबक दाव छनि । तेजू कोनो अपना मोने कमलाक अङना जाइए ! देखबै जे तमाशा मचतैक ! मौगिया बड़ ताव देखबैत छलनि !'

रवियोकेँ ओइ दिन गुणाकरे कहने छलैक ई खिस्सा । कमलाक स्त्रीकेँ देखने नहि छलैक । ओकर गाम छोड़लाक बाद अइ गाममे आयलि छलैक । कमला ओकरे सङतुरिया छलैक । ओइ दिन अनायास ओकर डेग तेजूक घर दिस विदा भऽ गेलैक ।

तेजू बड़ अपनत्वसँ स्वागत कयलकै–'भाग्य जे आइ अहाँकेँ ई नेनपनक दोस्त मोन पड़ल । एतेक दिनसँ गाममे छी !'

तेजूक उपराग वाजिब छलैक । ओकर घुरलाक दोसरे दिन आबिकऽ भेँट कऽ गेल रहैक । मुदा, रवि आइ धरि आबि नहि सकल रहैक ओकर टोल । ओइ दिन आयलो रहय उतरबारि टोल तँ कविताक घर लगसँ घूरि गेल छल । माफी मङैत कहलकै–'गल्ती भेल भाइ ! पहिनहि आबऽ चाहैत छल !'

ओ दुपहरियामे नियमित ओम्हरे जाय लागल । वास्तवमे ओकरा लग एतेक समय छलैक जे कटने नहि कटैत छलैक । भोरुका समय कहुना नित्यकर्म आ पूजापाठमे बीति जाइत छलैक । लालकाका भोरेसँ घरसँ निपत्ता रहैत छलथिन । भोरमे देखादेखी होइत छलै, विशेष कोनो गप्प नहि । रातुक भोजन-बेर फेर देखादेखी, बस्स । मनोजक संग सेहो नहि । दिनक दिन निपत्ता रहैत छलैक । आङनमे लालकाकीसँ एकाध बेर पूछापूछी कयलक । फेर वैह अफरात असह्य समय । मनोजक कनियाँ भाउजि छलथिन, मुदा महाग लजकोटरि । बेर-बेर सौरीघर गेलासँ देहो खूब पलरि गेल छलनि आ ओकरे सम्हारऽमे अपस्याँत रहैत छलीह । रवि हँसी कयलकनि-'फेर प्रोग्राम छै भौजी ?'

भौजी तेना लजा उठलथिन जेना स्वीकृति दऽ रहलि होथिन । भौजीक रंग गोर छलनि, मुदा आकृति कने उसट्ठ । हँसलापर ओ बेस सुन्दरि लागऽ लगैत छलीह । खासकऽ जखन ओ लजाकऽ हँसैत छलीह । रवि कहलकनि–'अहाँ एहिना लजाकऽ हँसैत रहू भौजी, बड़ सुन्दर लगैत छी ।'

भौजी फूलिकऽ कुप्पा भऽ गेलथिन । हुनकर नाक पीचल रहनि आ ठोर मोट । आँखि आ कपार बेस छोट । दाँत मुँहसँ बाहर नहि, मुदा कने पैघ-पैघ । देहमे ठाम-ठाम मासु लटकि गेल छलनि । मुदा, हँसलापर ठीके हुनकर सम्पूर्ण आकृति बदलि जाइत छलनि आ बड़ आकर्षक लागऽ लगैत छलथिन ।

ई आकर्षण आ हँसी देखबाक फुर्सति मनोजकेँ नहि छलैक, से एही तीन मासमे रवि नीक जकाँ बूझि गेल रहैक । ओकर बगलेवला कोठलीमे मनोज रहैत छलैक । बेसी राति बितलापर कहियो-काल ओकर विकृत स्वर सुनाइत छलैक–'सुनै नै छी ! आउ एम्हर ।'

ओम्हरसँ भौजीक खैँझायल उत्तर सभदिन एक्के रहैत छलनि–'आब किएक बजबै छी हमरा ? जाउ ने ओही रंडीसभ लग जकर चक्करमे बौआइत रहैत छी ।'

मनोज जोरसँ हँसैत छलैक-'ओसभ रहैत तऽ अहाँकेँ के बजबैत ? अहाँ तऽ छी अभावे शालिचूर्णं वा ।'

ओ असर्ध हँसी रविकेँ विचलित कऽ दैत छलैक । मुदा, ओकरा आश्चर्य होइत छलैक जे ओइ असर्ध हँसीपर भौजीक कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छलनि । फेर कोनो शब्द नहि, जेना विरोध खतम भऽ गेल होइनि ।

आ, ओहूसँ बेसी आश्चर्य ओकरा भौजीक आकृतिपर पसरल तृप्ति आ सन्तोषकेँ देखि होइत छलैक । रातुक उलहन मात्र मान-मनौअलिक एक टा दोहरायल प्रक्रिया भरि होइत छलैक । भौजी सभ तरहेँ सन्तुष्ट रहैत छलीह । अपन पसरल देहकेँ सम्हारैत अपस्याँत रहितो कतहु कोनो दुःख वा ग्लानि नहि छलनि ।

आ, तेहन भौजी लग समय कटबाक कोनो ब्योँत नहि छलैक । ओहिना आङनमे भौजीसभ लग बैसि समय बितौलासँ कोना काज चलतैक ? ओकरा किछु करबाक चाहिऐक, अपना लेल...गामक लेल ।

लगैत छलैक जेना सभ टा सूत्रे छूटि गेल होइ । सभ ठामसँ ऊपरे-ऊपरे दहाइत चल अबैत छल, जेना गामक माँटि-पानि आ गामक लोक आ ओकर बीच चौदह वर्षक अन्तराल एतेक पैघ दरारि बना देने होइ जाहिमे कोनो पाट संभव नहि छलैक । सभक बीच बैसियोकऽ अपनाकेँ अजनबी आ कटल-कटल अनुभव करैत छल । ओइ दिन कविताक दरबज्जासँ घुरलाक बाद लागल छलैक जेना सभ टा अपराधबोध तिरोहित भऽ गेल होइ आ मुक्त आ सहज जीवन जीबि सकब संभव भऽ गेल होइ ।

बीचमे लगितो छैक जेना खूब सहज भऽ जीबि रहल अछि । फेर अपने बुझाइत छैक जे ई भ्रम थिकैक । गामक लोककेँ ओकरा बारेमे किछु नहि बूझल छैक, कोनो पूर्वाग्रह वा दुरभिसंधि नहि छैक, मुदा ओकरा लेल कोनो स्वीकृतियो नहि छैक लोकक मोनमे । ओकर उपस्थिति-अनुपस्थिति बड़ गौण भऽ गेल छैक लोकक लेल । ओकर घुरलाक किछु दिनक बाद जे जिज्ञासा छलैक सभक मोनमे, से क्रमशः शान्त भऽ गेल छैक ।

आ, एना गौण आ निरर्थक सन जीवन उघनाइ भारी लागि रहल छलैक रविकेँ–चौदह वर्षक आत्मनिर्वासनोसँ भारी । ओकरा नव ढंगसँ गामक जीवनसँ जोड़िकऽ जीवाक चेष्टा करऽ पड़तैक ।

चेष्टा ओ शुरू कयलक ।

एक दिन प्रात भेने आङनमे लालकाकाकेँ कहलकनि–'आइ कोन खेतसभमे जन जायत ? हमहूँ संग जायब ।'

लालकाकी लगेमे एक टा लोटा हाथमे लेने ठाढ़ि छलथिन । लोटा हाथसँ खसि पड़लनि आ औँठा थुरा गेलनि । मुँह एकदम्म फक्क ! रवि औँठा पकड़ैत कहलकनि–'बेसी चोट तऽ नहि लागल काकी !'

काकी पयर झीकि लेलथिन–'नै, किछु नहि भेल । मुदा, तोँ किएक जयबह खेतपर ? अखन तोहर काका छथुन, जन-बोनिहार छऽ । तोँ किएक हरान हेबऽ ?'

रवि कहलकनि–'बैसल-बैसल अकच्छ भऽ जाइत छी लालकाकी ! किछु तऽ करबाक अछि ! अपन खेत-पथार देखबासँ नीक काज आर की हैत ?'

लालकाकीक मुँह आर सुखा गेलनि । रविकेँ कोनो अर्थ नहि लगलैक ।

लालकाका कहलथिन–'से देखऽ लेल अखन तऽ हम छीहे । हमर बाद तोँही सभ ने देखबऽ ! एतेक दिनपर आयल छऽ ! एखन टहलऽ-बूलऽ, भेँट-घाँट करऽ लोकसभसँ ।'

रविकेँ विचित्र लगलैक । लालकाका-लालकाकी ओकरा खेत-पथार देखऽ नहि जाय देबऽ चाहैत छथिन । किएक ? ओकरा हरानी हेतैक ? मुदा मुँह किएक दुनूक एतेक फक्क भऽ गेल छलनि ? एहन कोन बात कहि देलियनि हम ?

कोनो काजमे लगबाक रविक पहिल चेष्टा निष्फल भऽ गेलैक ।

दोसर चेष्टा ओ स्कूलमे कयलक । ओही प्राइमरी स्कूलमे ओहो पढ़ने छल। ओकरा समयमे एक टा मास्टर रहथिन–अपने गामक । आब ओ रिटायर भऽ गेलथिन । हुनकर 'लालू जोगधर' रविकेँ सदिखन मोन रहैत छैक ।

आब स्कूल अपर प्राइमरी भऽ गेल छैक– तीन-तीन टा मास्टर । तीनू अनगौआँ । रवि एक दिन ओम्हर गेल । एक टा टुटलाही कुर्सीपर हेडमास्टर बैसल छलथिन आ बेंचपर दुनू मास्टर । कोठलीमे मोस्किलसँ दस-पन्द्रह टा छौंड़ा-छौंड़ी । रविकेँ आश्चर्य भेलैक । लग जा पुछलकनि— 'एतबे विद्यार्थी छैक स्कूलमे मास्टर साहेब ?'

अपरिचितक प्रश्न सूनि किछु चकित हेडमास्टर साहेब कहलथिन– 'रजिस्टरमे तऽ सभक नाम चढ़ा देने छिऐक, मुदा अबैत अछि यैह पन्द्रह-बीस । पाँच क्लास मिलाकऽ पन्द्रह-बीस । बढ़ा-चढ़ाकऽ नहि लिखबैक सरकारकेँ तऽ स्कूले बन्द कऽ देत । मुदा, एना कतेक दिन चलतै ई स्कूल ?'

ओतबे आश्चर्यसँ रवियो पुछलकनि–'जखन नाम छैक रजिस्टरमे, तखन पढ़ऽ अबैत किएक ने अछि विद्यार्थीसभ ?'

हेडमास्टर साहेब कहलथिन–'जेसभ कमौआ छथि, तनिकर धीयापूतासभ संगे रहैत छनि, शहरमे पढ़ैत छनि । बाँचल गाममे रहऽवला लोक । से, छौँड़ासभकेँ पढ़बाक ऊहिए ने ! घरसँ विदा हैत आ कतहु खेलाय लागत । चाहे गार्जियने कोनो दोसर काजमे पठा दैत छथिन– 'एक दिन नहि जयबेँ स्कूल तऽ की हेतौ ?' ऊपरसँ कम्पीटीशन सेहो छैक । पहिने तीन-चारि गामक धीया-पूता पढ़ैत छल स्कूलमे, आब विशनपुरमे स्कूल छैक । ओइ पारक छौँड़ासभ आब विशनपुरे जाइत अछि । रहि गेल खाली हवेली मोहनपुरक धीयापूता । सेहो एक्के वर्गक । आन जातिक धीयापूता स्कूल अबिते नहि अछि, नाम लिखि दैत छिऐक, तैयो नहि । पाँचे-सात वर्षक भेल कि घर-घर कमाय लगैत अछि । पढ़त कखन ?'

बेंचपर बैसल दुनू मास्टर ओंघा रहल छलाह । एक टाकेँ झपकी टुटलनि तँ ऊठिकऽ आँखि मलैत कहलथिन–'आब हम जाइ छी मास्टर साहेब ! डेढ़ कोस जायब । काजो अछि गामपर ।'

हुनकर गेलाक किछुए काल बाद दोसरो मास्टर उठलाह आ बिना किछु कहने विदा भऽ गेलथिन । तखन जेना हेडमास्टरोकेँ होश भेलनि । जोरसँ धीयापूतासभकेँ कहलथिन–'जाइ जो, तोरोसभकेँ छुट्टी !'

छौँड़ासभ जोरसँ किलकारी मारलक आ अपन-अपन झोड़ा आ बैसऽवला सपटा झाड़ैत विदा भेल । हेडमास्टर साहेब चुनाओल तमाकू ठोर तर रखलनि आ विदा होबऽ लगलाह । फेर रविपर ध्यान गेलनि जे ओहिना ठाढ़ छल । कने लग आबि पुछलथिन–'कोनो काज अछि ?'

रविक ध्यान टुटलैक जेना ! कहलकनि–'काज तऽ अछि आ से अहीँ सँ अछि । काल्हिसँ हमहूँ एही स्कूलमे पढ़ाबऽ आयब । ओहिना धीयापूताकेँ पढ़ा देबैक । बैसल-बैसल मोन नहि लगैत अछि ।' आब हेडमास्टर चीन्हैत कहलथिन–'अपने रवि बाबू छी ?' रवि मूड़ी डोला देलकनि ।

हेडमास्टर हर्षित होइत कहलथिन–'बेस, तऽ आउ ने काल्हिसँ ! अइमे कोन हर्ज ?' आ, अपन गाम दिस विदा भेलाह ।

रविकेँ अपन नेनपन मोन पड़लैक । एही स्कूलमे केहन वातावरण रहैक ! एकसर गुरुजी रहथिन । सभ क्लासकेँ केहन आत्मीयता आ स्नेहसँ पढ़बैत छलथिन ! केहन भुसकौल रहैक शुरूमे मिहिर आ नारायण ! से, एक टा इंजीनियर भऽ गेलैक आ दोसर डिप्टी कलक्टर । रवि ओकरसभक सबक सुनैत छलैक आ अपने सभसँ पाछाँ रहि गेल ।

प्रात भेने समयपर स्कूल पहुँचि गेल रवि— ठीक दस बजे । तीनू गुरुजीमे ककरो पता नहि । एक टा चटिया आयल रहैक । पुछलकै–'गुरुजी कखन औथून ?'

चटिया कहलकै–'से कोनो ठीक छनि ! बारहो बजे औथिन आ दुइयो बाजि सकैत छनि । थर्ड मास्टर तऽ दू बजेसँ पहिने अयबे नहि करथिन आ फेर तीन बजे विदा ! सेकेण्ड मास्टर कने पहिने अबैत छथि, मुदा तीन बजे ओहो विदा । पढ़यबामे दुनू तेहने, मुदा मारऽमे बड़ चोख ! खलरिए ओदाड़ि देताह । हेडमास्टर साहेब सुद्धा छथिन । ओ नहि मारैत छथिन ककरो ।'

रवि बात बदलिकऽ पुछलकै–'तोहर की नाम छौक ?'

'सुन्दरकान्त झा ।' –छौँड़ा तेजीसँ बाजल ।

–'कोन क्लासमे पढ़ै छेँ ?'

'चौथामे'— छौँड़ा सगर्व बाजल ।

रवि ओकर आत्मविश्वाससँ प्रसन्न होइत कहलकै–'चल गाम, बाँकी चटियासभकेँ पकड़ि लाबी । हमरा चीन्है छैँ ?'

छौँड़ा फेर ओहिना तेजीसँ बजलैक– चिन्हब किएक ने ? अहाँ तऽ रवि कका छी । जै दिन अहाँ गाम अयलिऐक, तहिए देखि लेने रही हम ।'

रवि डेग आगू बढ़बैत कहलकै–'चल आगू-आगू तोँ ।'

पछबारि टोलमे एक टा घर लग आबि छौँड़ा सोर पाड़लकै–'चल रे, लुकरा आ फुदनू ! देख ने, के आयल छौक ?'

दू टा छौँड़ा आङनसँ दौड़ले बाहर अयलैक । रविकेँ देखि थकमका गेलैक । रवि लग बजा पुछलकै–'स्कूल किएक ने जाइत छेँ ?'

लुकरा झट बजलैक–'मास्टर साहेब बड़ मारैत छथि ।'

–'आब नहि मारथुन क्यो । चल हमरा संग ।'

छौँड़ा किछु धुकचुका रहल छलैक । रवि पीठपर हाथ रखैत कहलकै–'चल ने, हम पढ़ा देबौक, केकरो कोनो डर नहि ।'

दुनू छौँड़ा संग लागि गेलैक । फेर दोसर घर, फेर तेसर । सभ संग होइत गेलैक । खाली किर्तू आ झुनकू पड़ा गेलैक गाछी दिस । ने तँ पछबारि-उतरबारि टोलमे कोनो घर बाँकी नहि रहलैक । सभ घरक छौँड़ाकेँ संग लऽ लेलक रवि । भरि गाम आश्चर्यसँ तकैत रहलैक । स्त्रीगणसभ केबाड़ी-टाटक दोगसँ तकैत रहलैक ।

तहिना, नुकाकऽ तकैत ठाढ़ रहैक लव अपन आङनक मुहथरि लग । रवि सोर पाड़लकै–'आ, तोहूँ चल स्कूल ।'

छौँड़ा लग अयलैक मुदा हिचकिचाइत बजलैक–'हम कोना जयबै अइ स्कूलमे ? एतेक टा छी हम ! ई छोटका-छोटका छौँड़ामे कोना पढ़ब ?'

रवि नहि मानलकै–'चल तोँ । अइमे लाजक कोन गप्प छैक ? शुरूसँ सभ पढ़ा देबौक हम ।'

छौँड़ा तैयो हिचकिचाइत रहलैक–'किताबो-सिलेट नहि अछि हमरा ।'

रवि ओकरा लगभग जबर्दस्ती घीचैत कहलकै–'चल तोँ, सभ टा इन्तजाम भय जयतौक ।'

लव आङन दिस तकलक । माय गप्प सूनि लग आबि गेलि छलैक । इशारासँ जयबाक अनुमति देलकै । लवकेँ संग लऽ रवि आगू बढ़ल ।

स्कूलमे हेडमास्टर आबि गेल छलथिन । बड़का पलटनक संग रविकेँ अबैत देखि अकचकाकऽ कोठलीसँ बाहर आबि गेलथिन । लग आबि रवि कहलकनि– लियऽ मास्टर साहेब ! आब विद्यार्थीक कोनो कमी नहि । काल्हिसँ सभ अपने स्कूल आओत । अयबेँ कि नहि ?

सभ एक स्वरमे कहलकै–'आयब ।'

रवि लाइनमे ठाढ़ होयबाक आज्ञा देलकै । सभ हाथ जोड़ि ठाढ़ भऽ गेलैक । रविकेँ ओ प्रार्थना मोन पड़लैक जे ओकर गुरुजी ओकरासभसँ करबैत छलथिन । रवि आँखि मूनि गाबऽ लागल–

हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान मुझको दीजिए
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर मुझसे कीजिए ।

छौँड़ासभ दोहरौलकै । रवि अगिला पाँती गौलक, फेर सभ दोहरौलकै । प्रार्थना समाप्त होइत देरी अपन-अपन जगहपर बैसि गेलैक ।

रविकेँ अपन हाइस्कूल मोन पड़लैक । ओतऽ प्रार्थना वैह शुरू करैत छल–'तमसो मा जयोतिर्गमय...'

हेडमास्टर साहेब गदगद भऽ जाइत छलथिन आ रविकेँ छातीसँ लगा लैत छलथिन । जहिया ओकर बोर्ड-परीक्षाक रिजल्ट भेल होयतैक, ओकरा कतेक तकने होयथिन ! ओकर भागि जयबाक समाचारसँ कतेक आघात लागल होयतनि हुनका ! आब तँ रिटायरो कऽ गेल होयथिन ।

ओ पुरान स्मृति रविकेँ विचलित कऽ देलकै, मुदा तुरत अपनाकेँ सम्हारि ओ पढ़बऽमे लागि गेल । दुनू मास्टर तखनो नहि आयल छलथिन । रविक उत्साह देखि हेडमास्टरो घूमि-घूमिकऽ पढ़बऽ लगलथिन ।

दोसर दिन रवि मलहटोली-धनुखटोलीमे सेहो गेल । ओतऽ काज ओतेक सहज नहि भेलैक । किछु छौँड़ासभ धूरामे खेलाइत रहैक नङटे । बेसी छोट नहि, आठो-दस वर्षक छौँड़ासभ मुदा ओकर स्कूल चलबाक बातपर क्यो ध्यान नहि देलकै । ओकरा घेरिकऽ कुतूहलसँ ठाढ़ अबस्स भऽ गेलैक, मुदा क्यो स्कूल चलबा लेल तैयार नहि भेलैक । मलहटोलीक माइंजन कल्लू सहनी कहलकै–'हमरा आरके धीयापूता स्कूल जाकऽ की करतै मालिक ? कोनो हुनर सिखत तऽ चारि सेर बोनिओ कमा लेतैक । जाले फेकत तऽ सेहो एक टा काज भेलैक । ई स्कूल जाकऽ की हेतैक मालिक ? आइ धरि क्यो नहि गेल अइ टोलसँ स्कूलमे मालिक ? बेकार समय बेरबाद कयलासँ की फैदा ?'

रवि ओकरा बुझा नहि सकलैक । अइ बीसम सदीक उत्तरार्धोमे ओइ टोलमे सभ औँठेछाप छलैक– माइंजन कल्लू सहनीसँ घटबार कलरा मलाह धरि ।

धनुकटोलीक हालति ओतेक खराब नहि छलैक । ओइ टोलक एक-दू टा छौँड़ा आब कहियो-काल स्कूल अबैत छलैक । मुदा से ओकरे घरसँ जे गामसँ बाहर कोनो पैघ शहरमे नीक कमाइत छलैक आ जकर स्त्री आ बच्चा घरे-घर अइँठ-कूठि धोबाक आ पानि भरबाक खबासी नहि करैत छलैक । बेसी घरमे छौँड़ा-छौँड़ी जनमिते कमाय जाय लगैत छलैक आ स्कूलक मुँहे नहि देखैत छलैक । ओइ टोलक माइंजन गङबा धानुक कहलकै–'मालिक, बात तऽ अहाँ नीक कहै छी । मुदा से करबाक बुत्ता कहाँ ? पेट भरबै तखन ने स्कूल पढ़ऽ लेल भेजबै !

कौपी-किताब तऽ बादमे । जखन पेटेमे अन्न नहि रहतैक, तऽ पढ़तैक-लिखतैक कोना ? जनमिते कोनो घर धरा दैत छिऐक । अइँठ-कूठि खा कहुना पोसा जाइत छैक । जीतैक तऽ कमाकऽ गुजर कैए लेतैक । मूर्खो रहतैक तैयो । हमरा आरके गुजर कोना भेल ? कहाँ पढ़ली-लिखली हमरासभ ?'

रवि ओकरा बुझबैत कहलकै– तोँ सभ नहि पढ़लेँ, तेँ गुजर नहि भेलौ, से बात नहि छैक गङबा ! मुदा तोँ चाहैत छेँ जे जहिना तोँ रहलेँ, तहिना तोहर धीयोपूता रहौक ? हाथमे ताकति छैक तऽ कमाकऽ गुजर कऽ लेत । मुदा पढ़त-लिखत नहि तऽ कोना बूझत जे आजुक दुनियाँ कहाँ पहुँचि गेल छैक, कतऽ की भऽ रहल छैक, ककरा कतेक अधिकार छैक ? तोरा ई नीक लगतौक जे तोरा जकाँ तोहर धीयोपूता अइँठ-कूठि खाइत जिनगी बिता दौक ?'

बात गङबाकेँ लगलैक । ओ अपन पोताकेँ संग कऽ देलकै । आरो तीन टा छौँड़ा संग भेलैक । पहिल दिन एतबे ।

बादमे ओइ टोलसँ बेसी छौँड़ा आबऽ लगलैक । मलहटोलीसँ पहिने एक टा, बादमे पाँच टा छौँड़ा आब लगलैक । चमरटोली, खतबेटोली, दुसधटोली आ मुसलमानटोली धारक ओइपार छलैक–लंका मोहनपुरमे । ओतुक्को धीयापूता धार पारकऽ स्कूल आबि सकैत छलैक । धारमे नाव छलैक । रवि ओइ टोलसभमे जयबाक नियार कऽ रहल छल, तावत दोसरे काण्ड भऽ गेलैक ।

ओइ दिन चटियासभक गेलाक बाद हेटमास्टर साहेब गम्भीर स्वरमे कहलथिन–'हमरा किछु कहबाक अछि रवि बाबू !'

रविक किछु बजबासँ पूर्व अपनहि कहऽ लगलथिन–'हम जनै छी जे ई हमरासँ अन्याय भऽ रहल अछि, अहाँक प्रति नहि- अइ गामक सभ छौँड़ाक प्रति, देशक नवका पीढ़ीक प्रति । मुदा आर कोनो उपाय नहि अछि । काल्हिसँ अपने पढ़बऽ नहि आउ स्कूलमे ।'

रविकेँ आश्चर्य आ दुख भेलैक । किछु तरल स्वरमे पुछलकनि–'कारण जानि सकैत छी हम ?'

हेडमास्टर अनुनय करैत कहलथिन–'अइपर जोर नहि दियऽ अहाँ । अपराध हमरासँ भऽ रहल अछि, जनैत छी । मुदा हमरो रोटीक प्रश्न अछि । सभ मिलि धमकी देने छथि जे हाकिम लग शिकाइत करताह जे हमरालोकनि मौज करैत छी आ स्कूलक सभ टा काज अपने चलबैत छी । एना तऽ हमर तीनू गोटेक नौकरी चल जायत । अपने क्षमा कऽ देब हमरा ।'

रवि हुनकर अन्तिम बातपर बिन ध्यान देने कहलकनि–'मुदा अइ दवाबक कारण ? हमरासँ कोन अनिष्ट भऽ रहल छनि गामक लोककेँ ?'

हेडमास्टर झट कहलथिन–'भारी अनिष्ट । अपने टोले-टोले जा सभ छौँड़ाकेँ बझा लबैत छिऐक । सभकेँ असुविधा भऽ रहल छनि । वैह कनटिरबा छौँड़ासभ तऽ असल काज करैत छनि सभ घरक । दिन भरि खटनी, माल-जालक देखब, हाट-बजार करब, घास-सानी करब, आ दरमाहा मात्र पाँचसँ सात टाका मास । कखनो अइँठ-कूठि दऽ देलथिन आ कखनो एक संध्या भोजन । ओकरासभकेँ बझाकऽ अपने स्कूल लऽ अनलिऐक । ई गुरुतर अपराध !'

रवि चुपचाप विदा भेल । हेडमास्टर एकबेर फेर गिड़गिड़ा उठलथिन–'हम निरपराध छी । हमर स्थिति देखि हमरा क्षमा कऽ देब ।'

रवि आगू बढ़ि गेल । हेडमास्टर साहेबकेँ कोनो जवाब नहि दऽ सकलनि । ईहो नहि देखलकै जे लव स्कूलेमे छलैक आ कि ओकर पाछाँ-पाछाँ आबि रहल छलैक । किछु दूर आबि रविकेँ टोकलकै–'काल्हिसँ अहाँ स्कूल नहि अयबैक रविमामा ?'

रवि घूमिकऽ तकलक आ लवकेँ माथपर स्नेहसँ हाथ रखैत कहलकै–'मुदा तोँ स्कूल अवश्य अबिहेँ, अहिना मोन लगा पढ़ैत रहिहेँ ।'

लव मुदा अविचलित रहलैक–'नै, हमहूँ नहि आयब स्कूल । एतेक टा भऽकऽ अइ नेन्नासभक स्कूलमे नहि आयब हम । हम तऽ अहीँ द्वारे अबैत रही । काल्हिसँ हमरो स्कूल बन्द, फेर वैह चरबाही ।'

रविकेँ लवक बातसँ बड़ पीड़ा भेलैक । लवक प्रतिभा विलक्षण छलैक । एतबे दिनमे बहुत सीखि गेल छलैक । रवि ओकरा पचमाक पोथी मङा देने रहैक । अंग्रेजीयो पढ़ा दैत छलैक आ जे एक बेर पढ़ा दैत छलैक रवि, से जेना अमिट भऽ जाइत छलैक लवक मस्तिष्कमे । कोनो चीज दोबारा पढ़ऽक काज नहि पड़ैत छलैक । अद्भुत् स्मरण-शक्ति छलैक ओकर ! ओ फेर काल्हिसँ नहि पढ़तैक से सोचबो कष्ट दऽ रहल छलैक ओकरा ।

ओ कहलकै–'नहि जेबेँ स्कूल तँ नहि जैहेँ । काल्हिसँ हमर दरबज्जेपर आबि जो । हम ओतहि पढ़ा देबौ तोरा ।'

'सत्ते !' लव खुशीसँ चहकि उठलैक–'कखन आयब ?'

रविकेँ ओकर प्रसन्नतासँ बेसी आनन्दक बोध भेलैक–'जखन तोरा फुरसति होउ । हम तऽ भरि दिन बेकारे बैसल रहब ।'

लोकसभ मुदा ओकरा चैनसँ बैसऽ नहि देलकै । प्रात भेने अनेरोक सहानूभूतिक पथार लागि गेलैक–

–'एना के कयलनि अछि ? केहन बढ़ियाँ तऽ अपने पढ़बैत छलिऐक !'

–'हमरालोकनिक काज किएक हर्ज हैत ? आनो टोलक छौँड़ासभ स्कूल जाइत अछि तऽ जाओ ।'

–'तोँ अवश्य पढ़ाबऽ स्कूलमे, देखैत छियनि जे के तोरा रोकैत छथुन !'

मुदा, रविकेँ उदास आ प्रतिक्रियाविहीन देखि आस्ते-आस्ते सहानुभूतिक ओ बाढ़ि घटऽ लगलैक। मुदा ओइ दिन गुणाकरक बातसँ चौँकि उठल छल रवि। ओ कहलकै–'किछु बुझलिऐक बाउ ? किएक एतेक काण्ड भेल ? के गुरुजीपर दवाब देलकै अहाँकेँ हँटबऽ लेल ?'

रवि ओकर मुँह देखैत रहलैक । महेशबाबूक दलाल गुणाकर । अबस्से कोनो चालि चलतैक– रवि ओकरा नेन्नेसँ चीन्हैत छलैक । मुदा ओ जे कहलकै से सूनि बिनचौंकने नहि रहल रवि–'सभ टा काण्ड अहाँक पित्ती लालबाबूक कराओल छनि । बुझलिऐक किछु ?'

चौंकिओकऽ सम्हरि गेल रवि–'की अनाप-सनाप बकैत छी ? लालकाका किएक एना करताह ?'

गुणाकर हँसलाह–'अपने नेन्ना छी अखन । दुनियाँक बात नहि बुझैत छिऐक । ओ नहि करताह तऽ आन ककरा गरज छैक ? गामक लोककेँ बेगार आ चरबाह-खबासक कोनो कमी छैक ? एक ताकब, दस भेटत । मुदा अही बहाने अपन स्वार्थ सधलनि अछि अहाँक लालकाका । आबो बुझलिऐक ?'

रवि कने रोषसँ कहलकै–'लालकाकाक कोन स्वार्थ सिद्ध हेतनि हमरा स्कूलमे नहि पढ़ौलासँ ?'

गुणाकर फेर बुझनुक जहाँ हँसलाह–'अपने ठीके शुद्धात्मा छी । छल-प्रपंच नहि बुझैत छिऐक । अरे, स्कूलमे नहि पढ़ौलासँ नहि, गाममे नहि रहलासँ । अपने कोनो काजमे लागि जायब तऽ गाममे रहि जायब । ओ नहि चाहैत छथि से । एकसर भोग करऽ चाहैत छथि सभ सम्पत्ति ।'

रवि गुणाकरकेँ जोरसँ डाँटऽ चाहै छल, मुदा नहि जानि किएक चुप्पे रहि गेल, बिगड़ि नहि भेलैक । गुणाकर हँसैत चल गेलैक । रवि गुम्म-सुम्म बैसल

रहल। माथ सनसना रहल छलैक । ओकर खेतपर जयबाक बात सूनि लालकाका आ काकीक मुँह फक्क भऽ गेल रहनि । कहुना नहि जाय देलथिन ओकरा खेतपर । फेर आइ गुणाकरक गप्प !

गुणाकर लुच्चा अछि–रवि मोनकेँ बुझबऽ चाहलक । भरि गामकेँ लड़ायब ओकर धन्धा छैक । सभकेँ लड़ाकऽ महेशबाबू माने मास्टरकाकाकेँ सर्वेसर्वा बनायब ओकर लक्ष्य छैक । हुनके एजेण्ट अछि ओ । ओकर बातक कोनो भरोस नहि ।

मुदा नहि जानि किएक, ओकर दिमाग सनसनाइते रहलैक । कलपैत हेडमास्टर मोन पड़लैक–'हमरा क्षमा कऽ देल जाय । हम नहि कहि सकब जे किएक ? मुदा अपने आयब काल्हिसँ तऽ हमरालोकनिक नोकरी नहि रहत, बड़का हाकिम लग शिकाइत भऽ जायत ।'

रवि जोरसँ माथ झाँटि सभ टा अण्टशण्ट बातकेँ दिमागसँ हँटबऽ चाहलक । मुदा माथ ओहिना सनसनाइत रहलैक आ ओ माथ पकड़ने बैसल रहल ।

लग आबि क्यो टोकलकै–'हमरा पढ़ा नहि देब रविमामा ?'

लव छलैक । रवि सहज होयबाक चेष्टा करैत कहलकै–'आ, बैस । अबस्स पढ़ा देबौक ।'

लव बैसि गेल । रवि ओकरा पढ़बऽ लगलैक गणित । किछु हिसाब लिखि देलकै सिलेटपर । छौँड़ा बनबऽ लगलैक । रवि फेर अपन गुनधुनमे लागि गेल । माथ ओहिना सनसना रहल छलैक । जरनघरामे फेकल बाबूक फोटो आ छड़ी मोन पड़लैक आ मोन पड़लैक लालकाकाक अपराधी मुद्रा ।

ओ अपनाकेँ धिक्कारऽ चाहलक । नीचतापूर्ण बात सोचि रहल छल ओ, आ सेहो मात्र एक टा गैरजिम्मेदार चुगिलाक कहलासँ । बिना कोनो ठोस आधारक पितृतुल्य लालकाकापर सन्देह कऽ रहल छल । क्यो जोरसँ ओकर नाम लेलकै आ ओ चौँकि उठल ।

लव ठाढ़ छलैक सिलेट लेने–'अहाँक मोन खराब अछि रविमामा ? एतेक कालसँ हम टोकैत छलहुँ ! अहाँक कतऽ ध्यान छल ?'

रवि सिलेट लैत कहलकै–'कतहु नहि, एहिना किछु ध्यानमे अण्टशण्ट आबि गेल छल ।'

सिलेट देखि रवि प्रसन्न भऽ उठल— सभ टा प्रश्नक हल ठीक । पीठ ठोकैत कहलकै–'तोँ तऽ बड़ तेज छेँ रौ लव ! तोरा तऽ हम दुइए वर्षमे मैट्रिक पास करा देबौक ।'

'सत्ते रविमामा !' –लव प्रसन्न भऽ उठलैक–'तखन तऽ हम आर मोनसँ पढ़ब । मुदा एक टा बात अहाँकेँ बिसरि गेल रविमामा !'

रवि स्नेहसँ पुछलकै–'कोन बात रौ !'

–'अहाँ कहने रही जे बाबूसँ भेँट करा देब । माय तऽ लैए ने जाइ-ए । एक दिन हम अपने पड़ाकऽ चल जायब । दसे कोसपर तऽ छैक ।'

रवि बुझबैत कहलकै–'एहन काज नहि करी, पड़ाकऽ नहि जाइ । एकदिन हमहीँ पहुँचा देबौक तोरा ।'

'प्रौमिस'–लव हँसिकऽ हाथ बढ़ा देलकै ।

ओकर आगू बढ़ल हाथ अपन हाथसँ पकड़ैत रवियो हँसिकऽ कहलकै–'प्रौमिस ।'

रवि मोनेमोन प्रतिज्ञा कयलक जे ओ गुणाकरक बात बिसरि जायत । लालकाका लेल कोनो तरहक संदेह अपन मोनमे नहि उपजऽ देत ।

तहिना सुनयना भौजी लेल जे संदेह ओकर मोनमे उठल छलैक सेहो निर्मूल छलैक । ओकरा लागल छलैक जेना भौजी तमसा गेलि होथिन । नारी-देह लेल कहल गेल ओकर बातसँ आहत भऽ ओकरासँ घृणा करऽ लागलि होथिन । ओ ओम्हर जयबे बन्द कऽ देने छल । ओइ दिन अपने चल अयलथिन भौजी । अबिते उपराग देलथिन– 'अहाँ तऽ बेस रुसना लोक छी यौ ! एकबेर बिनबाते रूसिकऽ गामसँ चौदह वर्ष निपत्ता रहलहुँ । अखनो धरि लोक नहि बूझि सकल जे की भेल छल । आब बिनबाते हमरासँ रूसिकऽ अबरजात बन्न कयने छी ! कोन अपराध भेल हमरासँ ?'

रविकेँ लगलैक जेना भौजी सभ टा बड़ सहज भावसँ कहि रहलि छथिन। ओइ दिन ओकर बातक अधलाह नहि मानने छलथिन । देओर-भाउजमे तँ एहन बात हँसिओमे कहल जा सकैत छैक !

ओहो सहज भावसँ हँसिकऽ कहलकनि— 'अपराध अहाँसँ नहि, हमरेसँ भेल अछि । मार्जनक अवसर देल जाय ।'

भौजी प्रसन्न होइत कहलथिन— 'देल गेल अवसर । आइ दुपहरियामे आबि जाउ ।'

रवि गेल छल दुपहरियामे । भौजी प्रतीक्षेमे छलथिन । कने बेसी सजलि-धजलि। भौजी देखबा-सुनबामे बड़ सुन्नरि छलथिन । गोराइ उस्सठ नहि, एकदम चिक्कन आ प्रिय गोराइ, ताहिमे मिलल एकटा सिनुरिया काँति । आँखि पैघ-पैघ, सदिखन जेना काजरे लागल होइनि । किछु नमगर, लिखल-रङल मुँह । पातर ठोर आ ठाढ़, मुदा छोटे सन नाक । पीठपर छिड़िआयल घनघर कारी केश— लगभग ठेहुन धरि पहुँचैत । आलतासँ रङल पयर आ हाथमे लागल मेहदी । स्वस्थ देह, खूब गदरायल आ कसल आङीमे विद्रोही मुद्रा अपनौने देहक उभार । आँखिमे एक टा आमंत्रण, ठोरपर दाबल-दाबल मुस्की ।

रविकेँ सोलह वर्ष पूर्वक ओ दाबल-दाबल मुस्कीबाली सुनयना भौजी मोन पड़लथिन । ओइ भौजीसँ ओकरा डर होइत छलैक । ओकरा लगलैक जेना आबिकऽ कोनो गल्ती भऽ गेल होइ । मुदा, घुरबाक कोनो उपाय नहि छलैक ।

ओकरा टकटकी लगौने तकैत देखि प्रसन्न होइत सुनयना भौजी कहलथिन–'एना की देखै छी एकटक !'

रवि हँसिकऽ कहलकनि–'आर की देखब ? एहि गाममे अहाँ छोड़िकऽ देखबा जोगर वस्तुए की अछि आर ? समय दौड़ल चल गेल, मुदा अहाँ ओहिना ठमकल ठाढ़ि छी । जेना आयलि रही कनियाँ बनलि, तहिना आइयो छी । कने आरो बेसी सुन्दरि भऽ गेलि छी ।'

भौजी तनिकऽ कने देहक रेखाकेँ आर जगजिआर करैत कहलथिन–'अहाँकेँ हमर सुन्दरते टा सुझैत अछि, आर किछु नहि ?'

रवि कने आँखि बचबैत कहलथिन–'आरो सुझैत अछि भौजी– अहाँक स्नेह, अहाँक आदर...'

भौजी बात कटैत कहलथिन–'आ हमर देह ! अइमे कोनो आकर्षण नहि ?'

रविकेँ कोनो जवाब नहि दऽ भेलैक । सुनयना भौजी लग सटैत कहलथिन– 'बाजू, अइ देहमे आइयो आकर्षण छैक कि नहि ? ओइ दिन तऽ अहाँ कहने रही

जे मौगीक देह लेल चिन्ताक कोन प्रयोजन ! बेगरता होइते भेटि जायत । आइ ई देह सामने अछि, ओकर आकर्षण नहि होइत अछि मोनमे ?'

रवि दृढ़तापूर्वक कहलकनि–'नहि भौजी ! एहि देहक कोनो आकर्षण नहि । आकर्षण अहाँक स्नेहक । अहाँ हमरा लेल खाली नारी-देह नहि भऽ सकैत छी । अहाँ ओइसँ बड़ ऊपर छी–पूजनीय आ...'

भौजी बीचेमे टोकि देलथिन–'रहऽ दियऽ ई पूजा, आदरक गप्प ! हम देहक गप्प कऽ रहलि छी । एहि देह लेल अहाँकेँ लोभ अछि, हमरा बूझल अछि। जहिया नीक जकाँ चेतनो नै भेल रही अहाँ, तहियो एहि देहकेँ निहारैत रही । पुरुषक ओ दृष्टि ओइ दिन अनचिन्हार नहि छल हमरा लेल ! ओ इच्छा अहाँक आँखिमे आइयो मरल नहि अछि– हम स्पष्ट देखि रहलि छी । झूठ-मूठक आदर्शक बहाना नहि करू ।'

रवि हुनक देहक सामीप्यसँ कने दूर हँटैत कहलकनि–'अहाँक देह लोभा सकबाक सामर्थ्य रखैत अछि, हम स्वीकार करै छी । मुदा, जाहि दृष्टिमे अहाँकेँ ओ लोभ देखऽमे आयल छल, ओ लोभ नहि, जिज्ञासा छलैक एक टा किशोर-मनक। ओइ दृष्टिमे प्रशंसा छैक अहाँक देह-लावण्यक लेल आइयो । एकरा अन्यथा नहि बुझू । हम कहने रही ओइ दिन अहाँकेँ–नारीदेहक भोगक अर्थमे हम ब्रह्मचारी वा आदर्शवादी नहि छी । मुदा, हमर एहन परीक्षा नहि लियऽ । खाली एक टा स्त्रीदेह भऽकऽ नहि देखि सकब अहाँकेँ कहियो...'

भौजी जेना अपमानसँ क्रुद्ध भऽ उठलथिन–'रहऽ दियऽ ई आदर्श ! हम जनैत छी अहाँक सभ टा आदर्श ! चौदह वर्ष धरि कोनो आदर्श लेल बौआइत रहल छी अहाँ ? अहाँ की बूझि लेने छी हमरा- कामान्धा स्त्री ! ई इच्छा हमर देहक नहि अछि, हमर मोनक अछि । ई सुन्न घर-आङन देखैत छिऐक...! देहक इच्छासँ हारि मानऽवाली स्त्री हमहूँ नहि छी...। से रहैत तऽ गाममे पुरुषक कमी छैक ! मुदा, एक टा रिक्तता पतिता जकाँ, निर्लज्जि जकाँ ई प्रस्ताव करबा देलक अहाँक लग जे घरक बात घरे रहत, आ हमर अवशताक तमाशा अहाँ महान बनि देखऽ चाहैत छी! निकलि जाउ एतऽसँ ! घाट-घाटक पानि पीबि आब आदर्श बघारैत छी !'

रवि प्रसन्न होइत बाजल–'हम जनैत रही भौजी, अबस्से कोनो बात छैक। हमर भौजी एहन नहि सोचि सकैत छथि । मुदा तैयो हमरा क्षमा करू भौजी ! अहाँक मोनक ओइ रिक्तताकेँ भरबाक माध्यम हम नहि भऽ सकब । अपने दृष्टिमे घृणित भऽ जायब हम ।'

भौजी ओहिना फुफुआइत रहलथिन–'अहाँ महान बनल रहू अपन दृष्टिमे । निर्लज्जि बनि जखन अपने मुँहेँ ई याचना करब तऽ पात्र भेटि जायत हमरा । अहाँ निकलि जाउ अइ घरसँ अखने ! फेर घुरिकऽ पयर नहि देब एम्हर ।'

रवि बुझयबाक चेष्टा कयलकनि–'एना आवेशमे कोनो काज नहि कऽ बैसब भौजी !'

भौजी घृणासँ ठोर उनटा कहलथिन–'रहऽ दियऽ अपन उपदेश आ निकलू अइ घरसँ !'

रवि भारी डेगे घरसँ बाहर आबि गेल–अपमानसँ नहि, दुख आ दुश्चिन्तासँ । ई कोन बाट धऽ लेलथिन भौजी ? एनामे ओ किछुओ कऽ बैसथिन ! रवि बाहर बाटपर आबि बड़ी काल धरि प्रतीक्षामे रहल जे शान्त भऽ भौजी फेर बजा लेथिन। मुदा केबाड़ बन्द भऽ गेल छलैक आ दुपहरियाक रौदमे ओ निरर्थक ठाढ़ छल ।

किछु काल बाद ओकर डेग नहि जानि, किएक हाइ स्कूल दिस बढ़ि गेलैक । स्कूलसँ पहिने खेते-खेत छलैक– पूब-पश्चिम आ उत्तरमे ! दक्षिणमे गाछीसभ छलैक । स्कूलक मकानसभ पक्का छलैक–होस्टल खपड़ैल रहैक । अइ पन्द्रह वर्षमे कोनो विशेष परिवर्तन नहि भेल छलैक । मात्र एतबे परिवर्तन जे स्कूलक भवन चितकाबर भऽ गेल छलैक आ ओ बड़ पुरान लागि रहल छलैक ।

होस्टलक आगूमे एक टा सतरंजीपर एक टा भारी देहवला मास्टर पड़ल छलाह आ दूटा छौंड़ा हुनकर मालिसमे लागल छल । बाँकी क्लास सभमे हल्ला मचल छलैक, जेना कोनोमे मास्टरे नहि होइ ! बहुत रास छौंड़ा मैदान आ बरण्डापर हल्ला मचबैत ठाढ़ छल । एतऽ किएक अयलहुँ आ आब किम्हर जाइ– ई सोचिए रहल छल रवि कि एक दिससँ दौड़ल विक्रम भाइ अयलथिन–'एम्हर कोना अयलेँ रवि ! कोनो काज छौक ?'

काज तँ ओकरा छलैक विक्रमे भाइसँ, मुदा कहतनि कोना ? कहल पार नहि लगतैक ओकरासँ । की कहतनि विक्रम भाइकेँ ? वैह तँ चिट्ठी पहुँचबैत छलनि दुनूक । वैह तँ वर्षामे, रातिक उत्तरार्धमे भिजैत ठाढ़ देखने रहनि दुनूकेँ–आलिंगित, चुम्बित-प्रतिचुम्बित । विक्रम भाइ बड़ मानैत छथिन भौजीकेँ । भौजी सेहो बड़ मानैत छथिन भाइकेँ । मुदा, हुनकर मोनमे एक टा रिक्तता प्रबल आकांक्षाक रूप धऽ रहल छनि । विक्रम भाइकेँ बूझल छनि से ? नहिओँ बुझल छनि, तेँ की ? रवि नहि कहि सकतनि ओ बात ।

ओ दोसरे बात कहलकनि–'बहुत दिन भऽ गेल छल देखना । एहिना स्कूल देखऽ चल आयल रही ।'

विक्रम कने दुखी स्वरमे कहलथिन–'देखबा जोगर किछु नहि छैक स्कूलमे । जे छैक से निन्दनीय आ घृणित । हेडमास्टर साहेब सप्ताहमे तीन दिन दरभंगा । आफिसेक काज रहैत छनि–टी.ए. भेटैत छनि । संगमे रहैत छथिन किरानी । दूनू मिलि सप्ताहमे तीन दिन काज करैत छथि, तैयो खतम नहि होइत छनि । वैह, ओइ क्लासमे देखऽ जिम्हर हल्ला भऽ रहल छैक–ओहीमे असिस्टेन्ट हेडमास्टर बैसल छथि, विश्वास हेतह ? नहि होअऽ तऽ कने लग जा देखि लैह । कुर्सिएपर बैसल-बैसल सूति रहल हेताह आ छौंड़ासभ उत्पात मचौने हेतनि । ओकर बगलवला क्लास तिवारीजीक छनि । हेडमास्टरे जकाँ ओहो नेता छथि । हेडमास्टर छथि कांग्रेसी आ तिवारीजी कम्युनिस्ट । अखनो किम्हरो नेतागिरीमे गेल हेताह आ क्लास खाली पड़ल छनि । तकरो बगलमे देखि लैह–ओ क्लास यादवजीक छनि । आब स्कूलमे ब्राह्मण-कायस्थक अलाबा, कोइरी, यादव, पटवा, धानुक आ हरिजनोक धीयापूता पढ़ऽ लागल छैक । यादवजी क्लास नहि जा स्टाफरूममे ओकर संख्या जोड़ैत हेताह जे बैकवार्डक भोट कतेक भेल आ सभकेँ सिखबैत हेथिन जे बैकवार्ड फॉरवार्डसँ ट्यूशन नहि पढ़य । आ, सभक आगुएमे देखि लैह विद्यालयक आदर्श नमूना । ओइ सतरंजीपर पड़ल छथि होस्टल सुपरिन्टेन्डेण्ड ! स्कूलक समय तेलमालिश भऽ रहल छनि । रातिओकेँ मालिश चाहियनि, से खाली निमोछिया छौंड़ासभसँ । तीन बेर मारि लागि चुकलनि मुदा कोनो फर्क नहि । कतेक स्वप्न रहल होयतनि मोनमे जखन नाना अपन जमीन-सम्पत्ति दऽ ई स्कूल खोलबौने हेताह ! सालमे तीन मास छुट्टी, तीन मास हड़ताल विद्यार्थीक आ तीन मास शिक्षकक । बाँकी तीन मासमे अघोषित हड़ताल । नै पढ़ब– खाली सर्टिफिकेट चाही । नहि पढ़ायब– ककरा पढ़ायब ? अनेरे जान किएक देब ? खाली वेतन चाही । खिस्सा खतम । आब तँ बड़के-बड़के नेता कहैत छथिन–'क्लास जुनि जो। परीक्षाक वहिष्कार कर ।' नहि जानि, की हेतैक अइ देशक !'

रविकेँ अपन हेडमास्टर मोन पड़लथिन । घण्टी बजैत देरी दौड़ले स्टाफसभ दिस जाइत छलथिन । सभ शिक्षक हुनका देखिते अपन-अपन क्लास विदा होइत छलथिन । किम्हरो कोनो हल्ला नहि, विद्यार्थीसभकेँ क्लाससँ बाहर बरण्डापर अयबाक मौके नहि भेटैत छलैक ।

एक दिससँ जोरसँ पिहकारी पड़लैक । विक्रम ओम्हरे देखबैत कहलथिन–'ई

एक टा दोसर आफत । पाँच-सात बरखसँ छौंड़ीसभ सेहो पढ़ऽ लागलि छैक स्कूलमे । वातावरण एकदम गुण्डागर्दीक । तेसरा दिनपर छूरा बाहर होइत रहैत छैक । तोँ जाह आब, साँझखन डेरापर अबिहऽ । हम कने देखैत छिऐक ओम्हर ।'

साँझखन रवि विक्रम भाइक घर दिस नहि जा सकल । सुनयना भौजीक तामस आ धमकी मोन पड़लैक । ओ कतहु नहि गेल । अपने कोठलीमे बैसल रहि गेल । मोन एक टा अन्तर्द्वन्द्वमे फँसल छलैक । गाममे आब बेसी दिन रहब कठिन भेल जा रहल छलैक । ओ फेरसँ घुरि जयबाक निर्णयपर मंथन करैत बैसल छल ।

रतुका भोजनक बादो ओ ओहिना बैसल रहल अपन कोठलीमे । बिछौनपर जयबाक वा सुतबाक प्रयास करबाक इच्छे नहि भऽ रहल छलैक । ओ निर्णय कऽ लेबऽ चाहैत छल आ मोन दुनू दिससँ तर्क-वितर्कमे लागल छलैक ।

चौदह वर्षक बाद घूरल छल । जाहि आशासँ घूरल छल, से अबिते धराशायी भऽ गेलैक । बाबूसँ भेँट नहि भऽ सकलैक । सभ टा खण्डित स्वप्न आ एकाकी जीवनक पीड़ा अपन संगे लेने चल गेलथिन ओ । रवि कनियोँ कम्म नहि कऽ सकलनि ओइ पीड़ाकेँ, नहि पूर्ण कऽ सकलनि हुनकर कोनो स्वप्न । सभ टाकेँ चूर कऽ एक दिन निपत्ता भऽ गेलनि आ घूरि अयलाक बाद किछुओ कऽ सकबाक अवसरे नहि देलथिन बाबूजी ।

चेष्टा तैयो कयलक रवि–गामे रहबाक, ओइ जिनगीसँ अपनाकेँ जोड़िकऽ रखबाक । मुदा लगैत छैक जेना सभ टा प्रयास व्यर्थ जा रहल होइ । आङनमे कोनो तेहन आत्मीयता आ स्नेहक वातावरण नहि लागि रहल छलैक । जाहि दिन घूरल छल तहिया लालकाकासँ लपटिकऽ कानल छल, लालकाकियोक आँखिमे नोर छलनि । बस्स ! तकर बाद एक टा तटस्थ उदासीन वातावरणमे ओ औना रहल छल ! भऽ सकैत छैक, ओकरे भ्रम होइ । बाबूसँ भेँट नहि होयबाक निराशाक बाद ओकरा बाँकी सभ चीज उदासीन आ निष्प्रयोजन लागि रहल होइ । आ प्रतिज्ञा कयने छल जे लालकाका लेल कोनो सन्देह अपन मोनमे नहि उपजऽ देत । मुदा संदेहक ओ अजगर ओकर सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ जकड़ि लेने छलैक । मुक्त होयबाक चेष्टामे ओ आर जकड़ले चल गेल छल ।

आ, जकर सन्देह नहि छलैक, सेहो घटलै ओकर जीवनमे । सदिखन

ओकर जीवनमे एहिना अप्रत्याशित घटित होइत रहलैक अछि । जनमिते माय बिदा भेलैक अप्रत्याशित । पढ़बा-लिखबामे नव यश आ कीर्ति स्थापित करऽमे लागल छल कि अप्रत्याशित एक टा कमजोर क्षणमे काण्ड कऽ बैसल आ जकर डरे, अपने अपराधक डरे चौदह वर्ष धरि पड़ायले रहल । फेर अप्रत्याशित एक दिन घुरिओ आयल । गाममे फेरसँ रहबाक चेष्टा कयलक । मुदा, आब लगैत छैक जेना सभ टा बाट बन्द होइक ।

मुदा जाहि बाटपर सुनयना भौजी ओकरा घीचऽ चाहैत छलथिन, से अप्रत्याशितक संग एकदम तोड़ि देबऽवला छलैक । सुनयना भौजी ओकरा प्रिय छलथिन, बड़ मानैत छलनि हुनका ! एहन प्रस्ताव लऽ कहियो उपस्थित होयथिन, से ओकरा कहियो स्वप्नोमे सन्देह नहि भेल छलैक । मुदा, भौजी प्रस्ताव लऽ सदेह उपस्थित भेल छलथिन । ओकरा अस्वीकृत कऽ ओ घूरि आयल छल, मुदा ओ प्रस्ताव ओकरा भीतर तक चीरि देने छलैक । एक दिन अपराधी बनल छल ओ, एक टा आवेशमे, नवयौवनक आवेशमे, एक टा काण्ड कऽ बैसल छल । अपन सभसँ प्रिय बालसंगीक समक्ष अपराधी बनल छल । ओइ अपराधक बोझ अपन मोनपर लदने जहाँ-तहाँ बौआइत रहल । क्रोधमे, अपन जीवन नष्ट होयबाक क्रोधमे कविताकेँ दोषी मानि ओकरापर क्रोध आ घृणा सेहो करैत रहल । मुदा गाम घुरलाक बाद लगलैक जेना ओ क्रोध आ घृणा वस्तुतः अपनेपर छलैक, कवितापर नहि । कविता निर्दोष छलैक । दोषी रविओ लेल कोनो दुर्भावना नहि छलैक कविताक मोनमे । अपन अन्तःकरणसँ क्षमा कऽ देने छलैक । आ, क्षमा भेटि गेलाक बाद रवि नव उत्साहक संग गाममे रहबाक चेष्टा कयने छल ।

कौखन कविताक स्थिति ओकरा फेरसँ सोचबा लेल बाध्य करैत छलैक । अपन एकमात्र सन्तानक संग गाममे उपेक्षित आ अभावक जिनगी बिता रहलि छलैक । कोन विवशता ओकरा एहन जीवन लेल बाध्य कयने छैक ? स्वामी सुखी-सम्पन्न छैक । चल किएक नहि जाइत अछि अपन स्वामीक लग ?

रविकेँ कोनो उत्तर नहि भेटैत छलैक । ओ लवकेँ सभबेर पुछलापर आश्वासन दैत छलैक जे ओकरा बापक लग पहुँचा देतैक । मुदा बाट ओकरा नहि सुझि रहल छलैक । कविता हँसिकऽ कहलकै– 'लैए नहि जाइत छथि ।' ओइ हँसीमे नुकायल कथाकेँ तकबाक रविक चेष्टा व्यर्थ गेल छैक । दोबारा कवितासँ पुछबाक अवसरे नहि भेटल छलैक ।

जाहि कविताकेँ ओइ दिन देखने छलैक से बेर-बेर ओकरा उद्विग्न कऽ

दैत छलैक । ग्रीष्मक ओइ दुपहरियामे ओकर कोठलीमे भीजल नूआ गारैत कवितासँ ओकर कोनो साम्य नहि छलैक । कहाँ हेरा गेल छलैक ओकर स्वास्थ्य, सौन्दर्यक आभा आ यौवनक दीप्ति ? रवि चिन्हिओ नहि सकलैक ओइ कविताकेँ ? हँसलैक तखन चिन्हलकै रवि । मुदा हँसैत कोना छलैक कविता ? रविकेँ आश्चर्य होइत छलैक सोचिकऽ जे कविता अपन वर्तमान जीवनमे हँसि कोना लैत छलैक ! स्वामी छोड़ने छैक । एक टा बेटा छैक आ अभावक जिनगी । भरिसक भविष्यक आशा छैक–अप्पन बेटाक भविष्य !

मुदा रवि कोन आसपर बैसल अछि गाममे ? कोन भविष्यक स्वप्न छैक ओकर मोनमे ? गाम आ ओकर लोकक भविष्य ? सेहो चिन्ता आ चेष्टा कऽ हारि गेल ओ । कतहु ककरो ओकर प्रयोजन नहि छलैक । निष्प्रयोजन उद्देश्यहीन जिनगी जीबि रहल छल । जतबे निरुद्देश्य ओ भयभीत पलायन छलैक, ततबे उद्देश्यहीन ई आपसी सेहो प्रमाणित भेल छैक ।

तखन किएक ने भागि चली ? –ई प्रश्न ओकर मोनमे उठैत छैक ! फेर दोसर प्रश्न ठाढ़ भऽ जाइत छैक–भागिकऽ किएक ? कहिकऽ किएक ने ? कहलोपर के रोकतैक ओकरा गाममे ? रोकतैक क्यो ? लालकाका...लालकाकी...क्यो ?

आ ई सोचब ओकरा बेर-बेर जेना आरीसँ चीरि रहल छलैक । क्यो टोकऽवला नहि छलैक ओकरा गाममे । जहिया गामसँ पड़ायल छल, तहिया रोकऽवला छलथिन । चौदह वर्षक बाद जहिया गाम घुरि रहल छल, तहियो क्यो रोकऽवला नहि छलैक गाम जयबासँ । बड़ सहज आ बिना ककरोसँ अपनाकेँ जोड़ने ओ घुरि आयल छल । आइ फेर गामसँ बिदा होयत तँ क्यो नहि टोकतैक ।

मुदा एना घुरि जयबा लेल तँ गाम नहि आयल छल । बाबूसँ भेँटक आशाक संग घुरल छल । आइयो ओ आशा करऽ चाहैत छल जे ओकर जयबाक बात सूनि क्यो कहतैक–'नै जो रवि ! ई अप्पन गाम छौक तोहर, हमसभ अप्पन छियौक । हमरासभकेँ छोड़िकऽ नहि जो ।'

अइ आशाक निर्मूल होयब ओकरा बेसी कष्ट दऽ रहल छलैक आ घूरि जयबाक अपन निर्णयपर अडिग रहबा लेल बाध्य कऽ रहल छलैक । रवि निर्णय लऽ लेलक ।

राति बड़ बेसी बीति गेल छलैक । सौँसे गाम निस्तब्ध लागि रहल छलैक । कोठलीक दरबज्जा खोलि ओ आङन दिस आयल । इजोरिया राति

छलैक ? अङनाक ओसारासँ उतरि ओ पाछाँ दिस बाड़ीमे गेल । लघुशंका कऽ घूरल तँ लालकाकाक कोठली लग काकीक स्वर ओकर कानमे पड़लैक–'ई हरहरी बज्र कोना खसल हमर धीयापूताक माथपर ? बारह वर्षक बाद तऽ लोक श्राद्धो कऽ दैत छैक ! फेर ई मुर्दा कोना घूरि आयल ?'

लालकाकाक स्वरमे निषेध नहि, एक टा आशंका छलनि– 'चुप्प रहू, जे होयबाक छल, से भेल ।'

लालकाकीक स्वर आर तीव्र भऽ गेलनि–'चुप्प कोना रहू ? अपन धीयापूताक गरदनि कटैत देखि चुप्प कोना रहू ? मुर्दा घुरि आयल आ गाममे अड्डा रोपि देलक । आब कोन आस ? आगि देलकनि मनोज, ओकरो नाम कहाँ किछु लिखलथिन बूढ़ा ? नम्बरी घुइयाँ छलाह । सभ टा कयलियनि हम, अन्त समय गूँह-मूत सभ उठौलियनि, मुदा मोन अँटकले रहनि बेटापर आ बेटोक अक्खज जान देखियौक ! चौदह वर्षक बाद नहि जानि किम्हरसँ आबि गेल । अपन जेठ जनक हाल देखिते छी, छोट जनकेँ कोनो मतलबे नहि घरसँ । दुनू छोटका छथि, सभक मुँहक आहार छिना गेल । आब कोना चुप्प रहू हम ?'

लालकाकी कानऽ लगलथिन । रवि ओहीठाम आङनमे बैसि गेल । लगलैक जेना समस्त ब्रह्माण्ड नाचि गेल होइ, ओ धरतीपर ठाढ़ नहि रहि सकल । ओकरा दूध पिऔने छलथिन लालकाकी, मुदा आइ ओकर जीवित घुरि अयलापर कानि रहलि छथिन । ओकर माय छथिन लालकाकी, वैह पोसिकऽ पैघ कयने छथिन, मुदा आइ हुनकर छातीपर बज्र बनि खसल छनि ओ ! लालकाकी कानि रहलि छथिन.. लालकाकी कानि रहलि छथिन...

रविकेँ लगलैक जेना सम्पूर्ण पुथ्वीपर कतहु हवा नहि छैक, ओकर स्वास रुकि गेलैक । आ, वायुविहीन पृथ्वी नाचि रहल छैक, मेघ तारा चन्द्रमा सभ नाचि रहल छैक आ सभक संग आङनक माटिपर बैसल रवि नाचि रहल अछि, वायुविहीन धरतीपर चाक जकाँ नाचि रहल अछि !

आ, लालकाकी कानि रहलि छथिन ।

(दोसर भाग)

लंका मोहनपुर

इलाका बड़ डकैत भऽ गेल छैक । बिलटा कहने रहैक रविकेँ । चौदह वर्ष बाद घूरल रविकेँ ओ कोनो नव लोक बुझने छलैक ।

मुदा ई गप्प ओ ककरो कहि सकैत छैक–इलाका सत्ते बड़ डकैत भऽ गेल छैक । बिलटासँ बढ़िकऽ आर क्यो नहि जनैत छैक ई बात । पछिला तीस वर्षसँ ओ एही गफूरगंज स्टेशनपर रहैत अछि । भरि इलाकाक लोक एही स्टेशनपर उतरैत छलैक, जहियासँ रेलवेलाइन बनलैक तहियेसँ । तहिया ने दक्षिणमे स्टेशन बनल छलैक, आ ने उत्तरे दिस । दक्षिणमे अगिला स्टेशन दरभंगा छलैक । तीन कोस धरिक लोक गफूरेगंजमे उतरैत छलैक आ उत्तरमे तँ दू कोस धरिक । पूब आ पश्चिममे तँ गाड़ीक लाइन गेले नहि छलैक, पाँच-पाँच कोसक लोक एही स्टेशनपर अबैत छलैक । मुदा इलाका एतेक डकैत नहि रहैक तहिया । बिलटा नीक जकाँ जनैत छैक ।

इलाकामे लाइन लगबाक खिस्सा बिलटा अपन बाबासँ सुनने छल । ओ काज कयने छलैक कुलीक, लाइन बिछबैत काल । सय साल पहिलुका गप्प । बाबा बड़ विस्तारसँ कहैत रहैक बिलटाकेँ । आब तँ बिलटो पचास वर्षक भेल । लाइन लगलापर ट्रालीपर बैसल ललमुहाँ साहेब आयल रहैक । बिलटाकेँ आइ धरि अफसोच होइत छैक–ओ नहि देखि सकल कोनो ललमुहाँ साहेब आ मेमकेँ । ओकर बाप देखने रहैक । जहिया गफूरगंज-हाटक कातमे कमलापर पुल बनल रहैक, बिलटाक बाप कुली रहैक ओइमे । पुल पहिनो रहैक, मुदा छोटका पुल । बादमे बड़का पुल बनलैक, दू वर्ष धरि बनैत रहलैक । बिलटाक बाप दू वर्षमे एको दिन बेकार नहि बैसलैक । कुलीक काजमे ओहो माहिर छल ।

बापक बाद बिलटो लागि गेल एही कुलीएगिरीमे । तीस वर्षसँ एही गफूरगंज स्टेशनसँ बन्हाकऽ रहि गेल अछि । एक टा मोह जकाँ भऽ गेल छैक

स्टेशनसँ । आ, जहिया दोसरो स्त्री पड़ा गेलैक छोड़िकऽ, बिलटा स्थायी रूपसँ स्टेशनेपर घर बना लेलक । सम्बन्ध करबाक ओकरा कोनो इच्छा नहि छलैक । पहिले स्त्रीक पड़यलाक बाद ओकर मोन टूटि गेल रहैक । दोसर करबाक इच्छे नहि रहैक । स्टेशनेपर पड़ल रहैत छल । बेर-बेर फुलकुम्मरी मोन पड़ैत छलैक । क्यो नहि रहैक ओकर फुलकुम्मरी सन सौसे धनुखटोलीमे । ओ भोरसँ राति धरि मेहनति करय । आठो ट्रेन देखि जाय– चारि टा अप, चारि टा डाउन । बारह बजे राति धरि। आ, सभ टा कमा फुलकुम्मरीक हाथमे दऽ दैक । बड़ शानसँ रहैत छलैक ओ। बिलटा अपने गुदरी लटकौने रहैत छल । टोलमे मंगलाक बहुकें पहिने बड़ शान रहैक । मंगला कानपुरमे कमाइत छल । सभ मास अपन कनियाँक नाम डेढ़ सय टाका पठबैत छलैक । फुलकुम्मरी ओकरोसँ नीक नूआ-आङी पहिरैत छलैक, तेल-फुलेल लगबैत छलैक ।

मंगलाक बहुकें नहि सहि भेलैक । एक दिन तीन सय तिहत्तरि डाउनक पसिंजर देखि दुपहरियामे खाय लेल अबैत रहय बिलटा । मंगलाक बहु बाट छेकि कहलकै–'खाली मोटा उघि-उघि टाके कमाइत रहबऽ बिलटा बौआ ! कहियो साँझे घर आबि घरोक हाल देखऽ !'

मंगलाक बहु भौजी लगैत छलैक बिलटाकें । डाही मौगी छैक, फुलकुम्मरीसँ जरैत छैक । हँसीमे बात टारैत कहलकै–'साँझे आबिकऽ की हाल देखबै भौजी ? अपने घरवाली हय, कोनो भागल जाइ हय !'

मंगलाक बहु खूब जोरसँ कहलकै–'भागे के कोन काम हइ । घरेमे सँझियेसँ मास्टरबाकें ढुकौने रहै हय ।'

बिलटा बूझि गेल । डाहे मंगलाक बहु आन्हरि भऽ गेलि छलैक आ ओकरो आन्हरे बूझि रहलि छलैक, जेना ओकरा बुझले नहि होइ ! कहलकै–'काल ले तऽ मस्टरबा तोरे घर ढूकल रहैत रहलौ भौजी ! हमरा तऽ देखले हय ।'

मंगलाक बहु लोहछिकऽ बजलैक–'हे लू, भलाइ के तऽ जमाने ने रहलै! हम चेता देलिऐ तऽ हमरे गारी पढ़िहे हय मनसा !'

बिलटा कोनो गारि नहि पढ़ने छलैक । महेश मास्टर बहुत दिनसँ ओकरा लग अबैत छलैक । बिलटा अपन आँखिसँ देखने छलैक । सटले-सटल तँ घर छैक । मंगला सालक साल कानपुर रहैत छैक । ओकर कनियाँक यैह हाल छलैक । बिलटा देखियोकऽ अनठा दैत छलैक । मुदा आइ डाहे जरिकऽ ओकर

फुलकुम्मरीपर आङुर उठा देलकै तँ ओकरा चुप्प नहि रहि भेलैक, उकटि देलकै ओकरो ।

मुदा, मोनमे जेना किछु चकरी मारिकऽ बैसि गेलैक । सदिखन फनि उठबऽ लगलैक । एक राति नौबज्जी ट्रेनक पसिंजर छोड़ि, ट्रेन आबऽसँ पहिने धार टपि अपन टोल आबि गेल विलटा । अपन घरक लग आबि ठमकि गेल ओ । घरसँ कोनो पुरुषक आवाज आबि रहल छलैक । बिलटा चीन्हि गेलनि–मास्टर साहेब छलथिन, नामी बाबूक बड़का बेटा । घरक फट्टक भीतरसँ बन्द छलैक । बाहरसँ जोरसँ चिचिआयल बिलटा–'खोल फट्टक !'

कने काल शान्त भऽ गेलैक । कोनो उत्तर नहि । फेर फाटक खुजलैक । मास्टर साहेब हँसैत बहरयलथिन–'की बात छै रे बिलटा ? आइ बड़ सबेरे आबि गेलैं ?'

मास्टर साहेब हँसैत चल गेलथिन । बिलटा बताह जकाँ भीतर पैसल आ लगलैक लाते-मुक्के ओंघराबऽ फुलकुम्मरीकें । मारैत-मारैत अपने थाकिकऽ हकमऽ लागल । फुलकुम्मरी एको बेर किलोल नहि कयलकै । हकमैत बिलटापर एकदम जहर सन बोल फेकलकै–'बस्स, समापत हो गेलैक मर्दानिगी ! मर्द हैक तऽ लगबितैक दू-चारि हाथ मस्टरबाकें । हमहूँ बुझतिऐक जे हमर घरवला आनिवाला हय । सभ टा मर्दानगी एक टा कमजोर मौगीपर !'

'चोप्प !' बिलटा गरजिकऽ एक लात देलकै ओकर थुथूनेपर आ फेर बताह जकाँ स्टेशन विदा भऽ गेल । भरि बाट फुलकुम्मरीक बातक जहर ओकरा टीसैत रहलैक । ओकरा बिसरि गेलैक जे फुलकुम्मरी ओकरा संग धोखा कयने छलैक, दोसर मर्दकें रखने छलैक अप्पन कोठलीमे । ओकरा खाली एतबे मोन रहलैक जे मस्टरबा ओकर आगूसँ हँसैत चल गेलैक आ ओ एक टा डेरबुक नेन्ना जकाँ कोठलीमे पैसि गेल । मर्दानगी देखौलक एक टा मौगीपर ! आ, कहाँ छलैक ओकर टोलक पुरुषसभ ? मस्टरबा सभ दिन मंगलाक बहुक घर पैसैत रहलैक, सभ चुपचाप देखैत रहलैक । मस्टरबा बिलटाक घर पैसलैक, तैयो ओसभ चुप्पे रहलैक । डाहे मंगलाक बहु नहि कहितैक तँ ओ बुझबे नहि करैत ! सौंसे टोल हिजरा भऽ गेल छैक ।

फेर लगले बुझयलैक जे तामसमे अनेरो टोलक लोकपर दोष मढ़ि रहल अछि । टोल तँ एहिना सभ दिन हिजड़ा छलैक । टोलक बेटी-पुतहु एहिना इच्छा-अनिच्छासँ बाबू-भैयाक मोन भरैत रहलैक अछि । ओ तँ अपने हिजड़ा जकाँ सभ दिन मस्टरबाकें मंगलाक बहुक घर जाइत देखैत रहलैक । ओ तँ अनकर घर

आ घरवाली छलैक । आइ ओकरे घर आ घरवाली लगसँ मस्टरबा फट्टक खोलि निधोख हँसैत चल गेलैक आ ओ हिजड़ा जकाँ एक टा मौगीकेँ लाते-मुक्के ओंघड़ा अपन मर्दानगी देखा लेलक ! फुलकुम्मरी ठीके तँ कहने छलैक–'लगाकऽ देखबितैक एक्को हाथ मस्टरबाकेँ...'

तीन दिन तक मुँह नहि देखा भेलैक बिलटाकेँ टोलमे । सभक सामने ओ चिचिआयल छल आ मस्टरबा जखन घरसँ बहरायल छल, टोलक लोक जमा भऽ गेल रहैक । जखन फुलकुम्मरीकेँ मारि-पीटि ओ घरसँ बहरायल छल, तखनो टोलक स्त्रीगण-पुरुषक भीड़ जमे छलैक । लाजे तीन दिन नहि घूरल बिलटा ।

जखन घूरल तँ देरी भऽ गेल छलैक । फुलकुम्मरी टाका-पैसा, गहना-गुड़िया, थारी-बाटी लऽ लापता भऽ गेल रहैक । सुन्न घरक फट्टक खूजल छलैक । बिलटा ओइ सुन्न घरमे दुख आ आघातसँ सुन्न भेल बैसल रहल । दिन भरि भूखल-पियासल बैसल रहल, फुलकुम्मरी घूरिकऽ नहि अयलैक ।

ओहो घूरिकऽ घर नहि गेल । स्टेशनेपर रहऽ लागल । ओही स्टेशन-परिवारक अंग भऽ रहि गेल ! बड़ाबाबू कहथिन–'लाइन क्लियर दे दो बिलट ! गाड़ी दरभंगा छोड़ दिया । सिनगल भी गिरा देना ।' बिलटा झट दौड़ि टाङल लोहाकेँ टनटना दैक खूब जोरसँ आ दौड़िकऽ सिनगल खसा दैक । गाड़ी आबि जाइ, बिलटा सवारी ताकऽ लेल सूरसार शुरू करय, तावत छोटा बाबू हाक देथिन–'गेटपर ठाढ़ भऽ जो बिलट ! टिकट ओसूलि ले ।' बिलट पहिने टिकट ओसूलय आ तखन प्लेटफार्मपर मोटरी आ यात्रीक तलाशमे जाय । बड़ाबाबू कहैक–'तुम तो बिलकुल रेलबइ का आदमी है बिलट !'

तहिया इलाका एतेक डकैत नहि भेल रहैक । बिलटसँ नीक जकाँ आर के जनैत छैक ई बात ?

भरि इलाकाक लोक एही स्टेशनपर उतरैत छलैक । सभकेँ टिकट रहैत छलैक । कोनो गुण्डागर्दी नहि । राति-विराति स्टेशन मास्टरक कोठली खूजल रहैत छलनि । इलाकामे बिजली नहि छलैक । स्टेशनोपर नहि । बड़का लैम्पक रोशनीमे बड़ाबाबू-छोटाबाबू टिकट कटैत छलथिन । सभ टा टाका-पैसा ओहिना रहैत छलनि । कोनो भय नहि । सभ बाहरसँ टिकट लेलक, कोनो-कोनो बाबू-भैया भीतरो जा टिकट लऽ लेलनि । कोनो उपद्रव नहि, कोनो हंगामा नहि !

एक टा बंगाली बड़ाबाबू बड़ डेरबुक आयल रहथिन । हुनका बड़ डर

होइनि । पहिने बिलटोसँ डर होइनि–'तोम् कोन हय ? भीतर काहे आता हय !' बिलटाकेँ हँसी लागि जाइ, पैटमैनकेँ बजा दैनि । कृष्णा अपन सभ काज बिलटाकेँ थम्हा निश्चिन्त रहैत छल । फेर नहि जानि कोना कृष्णासँ बेसी बिलटेकेँ मानऽ लगलथिन बड़ाबाबू ! जोर दऽ ड्रेस पहिरबा देलथिन–'ई क्या जामा पहिनता है तुम ! रेलबइ का आदमी है, ठीक माफिक रहो !' पुरना ड्रेससभ दिया देलथिन । पहिल दिन बड़ हँसी लगलैक ओ 'डिरेस' पहिरिकऽ बिलटाकेँ ।

ओहूसँ बेसी हँसी ओकरा बड़ाबाबूक डर देखि कऽ लगैक । बड़ाबाबू-छोटाबाबूक क्वाटर प्लेटफार्मक बगलेमे रहैक ! दुनूमे क्यो परिवार नहि रखैत छलाह । जहिआ छोटाबाबू गाम चल जाथिन, बड़ा बाबूक डरे हालति खराब भऽ जाइनि ! साँझे हल्ला मचा देथिन–'सभ ठो दरबज्जा बन्द करो, किसी को भीतर मत आने दो !'

आखरी बरहबज्जी ट्रेन गेलाक बाद बड़का लैम्प बिलटाक हाथमे देथिन–'चलो, घर ठो पहुँचा दो ।'

आ डेरा पहुँचाकऽ जहाँ जाय लागय बिलटा, हाथ पकड़ि लेथिन–'मत जाओ, डोर लगता है ।'

मुदा इलाका डकैत नहि भेल रहैक तहिया !

राति-विराति पसिंजर उतरैत छलैक आ अप्पन-अप्पन घर चल जाइत छलैक । रुपैया-पैसा, जनी-जाति ककरो डर ने ! बारह बजे रातिकेँ उतरि सुन्न बाट, गाछी आ श्मशान दने लोक अप्पन-अप्पन गाम चल जाइत छल । बरहबज्जी ट्रेनक पसिंजरक सामान नहि पहुँचबैत छलैक बिलटा । पता पूछि लैत छलैक आ भोरे पहुँचा दैत छलैक । इलाकाक लोक निश्चिन्त स्टेशनपर सामान छोड़ि जाइत छलैक ।

कोनो-कोनो पसिंजरे जिद्द कऽ दैत छलैक–रातियोकेँ । गिड़गिड़ाय लगैत छलैक । हवेली मोहनपुरक लोकक अपन नौकर अबैत छलनि, लालटेन टॉर्च लऽकऽ । ओम्हर कम्मेकाल जाइत छल ! लंका मोहनपुरक लोक बेसी लठियाकुमैत, अपने माथपर उठा लैत छल । कुलीक काज कम्मेकाल पड़ैत छलैक । दूर-दूरक पसिंजरकेँ कुली करऽ पड़ैत छलैक आ स्टेशनपर एकमात्र कुली छल बिलटा ।

ओइ राति एक टा पसिंजर जिद्द कऽ देलकै । गरमी मास रहैक । बरहबज्जी ट्रेनसँ उतरल छलैक । संगमे जनानी रहैक । मोटरी बेसी भारी नहि–एक टा बिछौनक मोटरी आ एक टा बक्सा रहैक । बिलटा कहलकै–'अहाँक गाम दूर

अछि–नवगामा ! दू कोससँ बेसिए हैत । एतेक रातिकेँ कोना जायब आब ? राति रहि जाउ वेटिंगरूममे । भोरे पहुँचा देब ।'

पसिंजर जिद्द धऽ लेलकै–'कहुना पहुँचा दे । जे मङबेँ से देबौक ! तोहीँ भोरे चल अबिहेँ । इजोरिया राति छैक ।'

बिलटाकेँ जाय पड़लैक । रातुक समय आ जनानीक डेग । दूसँ बेसी बाजि गेलैक । तैयो ओइ गाममे नहि रुकल । तुरन्ते विदा भऽ गेल बिलटा । इजोरिया पसरले छलैक । डेग झटकारने गीत गबैत विदा भेल ।

किछु दूर आबि लगलैक जेना क्यो पछोड़ धयने होइ । कने देह सिहरलैक । गाछिए-गाछी रास्ता । दूर-दूर तक कोनो गाम वा घर नहि । रातिक अन्तिम पहर । कोनो भूत-प्रेत पाछाँ धयने छलैक । ओ हाथ महक ठेङा कने कसिकऽ पकड़ि लेलक ।

पाछाँसँ अबैत छाया कने स्पष्ट भेलैक– एक टा स्त्रीछाया । भूत-प्रेत नहि, चुड़ैल पाछाँ धयने छैक । बिलटा डेग बढ़ौलक । घूरिकऽ पाछाँ नहि तकलक किछु काल ।

नवगामाक बाध टपि चमरटोली लग पहुँचल तँ घूरिकऽ पाछाँ तकलक । ओहिना पछोड़ धयने छलैक चुड़ैल । बिलटाकेँ तामस भेलैक–ओना नहि मानत ई । ओ ठेङा आर सरिया लेलक आ डेग छोट कऽ लेलक । ओ चुड़ैल लग अबैत गेलैक आ जहिना एकदम लग भेलैक कि ठेङा उठा लेलक पलटिकऽ बिलटा–'छोड़ैँ छेँ कि नहि हमर बाट ? भाग, अप्पन रस्ता ले ।'

भगबाक सत्ती आर लग सटि गेलैक ओ चुड़ैल । बिलटाक ठेङा उठले रहि गेलैक । इजोरियामे देखलकै– ई तँ मनुक्खजातिक छलैक– एक टा जनानी ! कपारपर एक टा पट्टी बान्हल रहैक जेना कप्पार फूटल होइ ! नवे वयसक जनाना ! कारी रंग आ कठमस्त देह । लगमे सटिकऽ ठाढ़ छलैक । बिलटा ठेङा नीचाँ करैत कहलकै–'के छेँ तोँ ? एकसरि कहाँ जाइ छैँ एतना रातिकेँ ?'

मौगी तैयो किछु नहि बजलैक । आगू बढ़लैक । बिलटोकेँ आगू बढ़ऽ पड़लैक । संगे-संग स्टेशन धरि आबि गेलैक मौगी । ओकरा स्टेशनपर बैसैत देखि बिलटा सूतऽ लेल अपन स्थानपर चल गेल । वेटिंगरूमक एक टा कुंजी ओकरा लग रहैत छलैक । रातिकेँ ओकरे खोलि ओ सूति रहैत छल । ओना वेटिंगरूम बन्द छलैक । फस्ट क्लासक पसिंजर कहिओ काल होइत छलैक तँ वेटिंगरूम खोलल जाइत छलैक । दोसर कुंजी बड़ाबाबूक संग रहैत छलनि ।

सूतिकऽ अबेरसँ उठल बिलटा । सतबज्जी गाड़ीक बेर भऽ गेल छलैक । ओ धड़फड़ाकऽ स्टेशन मास्टरक कोठली दिस पड़ायल । बाटमे ओकर डेग थकमका गेलैक । ओ मौगी ओहिना बैसलि छलैक । राति भरि बैसले रहि गेलैक भरिसक ।

कने लग जा टोकलकै बिलटा–'इहाँ बैसल की करै छैँ ? गाड़ी अबै हइ, पकड़ि लेतौ । जो जहाँ जेबाक हउ ! गाड़ीसँ जैबाक हउ, तऽ टिकट लऽ ले !'

मौगी तैयो चुप्पे छलैक । बिगड़िकऽ बिलटा कहलकै–'केहन बौकी मौगी हय ! रातिसँ कहै छिऐ, कोनो ध्याने नै दै हय । बोल ने गे, केने जयबेँ ? कहाँ घर हउ ?'

मौगी मूड़ी उठौलकै–'कोनो घर न हय हम्मर । कहाँ जयबै हम ?'

फरीछमे बिलटाक ध्यान गेलैक जे मौगीकेँ नीक जकाँ थुराइ भेल छै । कारी देहमे जहाँ-तहाँ दाग छैक । एकदम खाली देह । एक टा नूआ मात्र शरीरपर । ने कोनो मोटरी-चोटरी । अबस्से भागिकऽ आयल छै मौगी ! बिलटा कने आर जोरसँ डँटैत कहलकै–'झगड़ा कऽ पड़ाकऽ आयल छै घरसँ ? ओतना रातिमे अकेले ! भारी करेजा हउ तोरो, रात भर बैठले रह गेले एही जग ! जो आब, घर घूरि जो !' मौगी कानऽ लगलैक–'नै, नहि जयबै हम । जान लऽ लेतैक हम्मर ।'

'जो, मर'— बिलटा मोनेमोन बड़बड़ायल आ दोसर दिस चल गेल । गाड़ी अयलैक–दुनू दिससँ । पसिंजर चढ़लै-उतरलै । दुपहरियोक गाड़ी चल गेलैक । साँझ भेलै । मुदा ओ मौगी ओहिना बैसलि छलैक– भूखलि-पिआसलि । बिलटाकेँ नहि रहि भेलैक । फेर लग जा कहलकै–'जाइ किएक ने हइ ? एतै जान देतै भूखे-पियासे ? घूरि जाउ अपन घर ।'

मुदा ओ मौगी जेना सुनबे नहि कयलकै । बौक जकाँ बैसलि रहलैक । बिलटा फेर लोहछिकऽ चल गेल, मुदा ओकर ध्यान ओम्हरे लागल रहलैक । नौबज्जी गाड़ी सेहो चल गेलैक ।

हारिकऽ बिलटा बड़ाबाबू लग पहुँचल–'एक गो जनानी हय बड़ा बाबू ! अहाँ राखि लेबै ओकरा ?'

बड़ाबाबू बमकि गेलथिन–'क्या बकता है ! हम दूसरा आदमी को जनानी को काहे रखेगा ?'

बिलटा बात फड़िछबैत कहलकनि–'से नै कहै छी बड़ाबाबू ! एगो

दुखियारी हय बेचारी, भोरेसँ स्टेशनपर भूखल-पिआसल बैठल हय । कतबो भगबै छियै, भगिते ने हय । अहाँ राखि लिऔ, डेरामे खाना-ऊना बना देत । बड़ाबाबू किछु विचारि कहलथिन— 'अच्छा ले आओ ।'

प्रसन्न होइत बिलटा ओइ मौगी लग पहुँचल आ कहलकै—'उठ गे बौकी। बड़ाबाबू बजबै छथुन ।'

ओ मौगिया ऊठिकऽ अयलैक ओकर संग । बड़ाबाबू लैम्पक रोशनीमे नीक जकाँ देखलथिन ओकरा आ कहलथिन-'ना बाबा ! ई तो जोबान औरत हय, इसको अकेला कैसे रखेगा डेरामे ?'

मौगिया मूड़ी झुकौने घरसँ बाहर जा फेर ओही ठाम बैसि गेलैक । बिलटा भारी चिन्तामे पड़ि गेल । किछु सोचैत बड़ाबाबू कहलथिन—'एक ठो बात करो बिलट ! तुम रख लो इस औरत को । तुम अकेला है, तुम्हारा घर बस जायेगा ।'

बिलटकेँ बड़ाबाबूक बातक कोनो जवाब तुरत नहि दऽ भेलैक । मौगिया किछु बजिते नहि छैक । नहि जानि कोन गामक छैक । कहाँसँ पड़ाकऽ आयलि छैक । ओकरा घर लऽ जाकऽ कोनो आफतमे ने पड़ि जाय ! कोनो तिरिया चरित्तर ने पसारने होइ ! फुलकुम्मरी मोन पड़लैक ओकरा ।

मुदा जखन राति बारह बजेक डाउन ट्रेन चल गेलैक तँ बिलटाक मोन औनाय लगलैक । बड़ाबाबू अपन डेरा चल गेलथिन । प्लेटफार्मक पाछाँमे टीनक शेडक भितरे एक टा पानवाला बैसैत छलैक, सेहो दोकान बन्द कऽ चल गेलैक । चमरा पितुआ तँ साँझे चल जाइत छलैक । भोरे आठ बजे अबैत छलैक आ टीनक ओही शेडमे, टिकट खिड़कीसँ हँटिकऽ दक्षिणबारी कात बैसि जाइत छलैक अपन सपटा बिछा । फेरीवलासभ सेहो रातिकेँ नहिएँ रहैत छलैक । दुइए टा फेरीवला छलैक । सोनमा गुलाबछड़ी बेचैत छलैक आ यदुआ चिनियाबदाम । कहियोकाल पेड़ा बना कामेश्वर झा सेहो घूमि जाइत छलाह । लंका मोहनपुरक कामेश्वर झा । पेड़ामे भाङ मिलाओल रहैत छलैक । बेसीकाल हाटेपर आ गफूरगंज बजारमे बेचैत छलाह आ कहिओ कोल ट्रेनक पसिंजरकेँ सेहो ओ भाङवला पेड़ा खुआ दैत छलथिन ।

मुदा ओ मौगी तँ बिन भाङे खयने माति गेल छलैक । भोरसँ बारह बजे राति एकेठाम बैसल छलैक । हिलडोल तक नहि कयलकै । बिलटा आगू-पाछू करैत एकबेर फेर टोकलकै—'किएक एना जान दइ हइ ? घुरि जाउ अप्पन घर ।'

मौगी जेना सुनबे नहि कयलकै । लोहछिकऽ किछु आर कहऽ जाइत छलैक बिलटा, मुदा नहि जानि कोना ओ बड़ाबाबूक प्रस्ताव दोहरा देलकै—'हमर घर चलतै ? क्यो ने हय । हमहू अकेले छी ।'

जेना जादू भेलैक ! मौगी ऊठिकऽ ठाढ़ि भऽ गेलैक । नूआ सरिआ लेलकै आ आँचर नीक जकाँ माथपर राखि लेलकै । बिलटा आगू बढ़ल, ओ चुपचाप पाछाँ चलऽ लगलैक । बारहसँ ऊपरक समय, इजोरिया राति । रातिक ओइ स्तब्धतामे दुनू गोटे आगू बढ़ैत रहल । नाव घाटपर छलैक, मुदा मलाहक कोनो पता नहि छलैक । बारह बजेक पसिंजरक बाटा-बाटी देखि मलहा चल गेल छलैक । बिलटा अपने लग्गा लेलक आ नाव अइ पार अनलक ।

टोल एकदम निस्तब्ध छलैक । दुनूकेँ अबैत देखि कुकूर भूकऽ लगलैक । अपन घर लग पहुँचल । दू वर्षसँ अपन कोठलीमे पयर नहि देने छल । फुलकुम्मरीक भागि गेलाक बाद ओ टोलमे नहि घुरल छल । कोठलीक फट्टक ओहिना भिड़काओल छलैक । ओकरा ठेलिकऽ खोलैत बिलटा पुछलकै—'की नाम हइ एकर ?'

'कजरी !' —बिलटाकेँ ओ नाम आ ओ लजायल स्वर बड़ नीक लगलैक ।

इलाका तैयो डकैत नहि भेल छलैक !

बिलटा नीक जकाँ जनैत छलैक । एक टा टो.टी.सी. जाहि डिब्बामे जाइ, पड़ाहि लागि जाइ । क्यो यदि बिनटिकटे प्लेटफार्मोपर रहैक तँ ओहो पड़ाकऽ प्लेटफार्मक काँटवला तारक ओइ पार चल जाइक । जहिया चेकिंग होइ, बड़ाबाबू बिलटोकेँ हँटा देथिन—'तुम आज बाहर खड़ा रहो, कृष्णा ड्यूटी करेगा ।'

खाली कहिओ काल मारा-मारी कऽ लैक ट्रेनमे लंका मोहनपुरक लोक । सभ लठियाकुमैत रहैक ओइ गाममे । ट्रेनमे चढ़बाकाल, सीटक लेल, मोटा रखबाक लेल अनेरो झगड़ा-फसाद कऽ लैक । अन्तहिया पसिंजरकेँ मारि बैसैक कहिओ काल । तेँ हवेली मोहनपुरक लोक कहैक—लंका टोल, माने लंका मोहनपुर ।

गफूरगंज स्टेशनसँ जे लाइन उत्तर दिस जाइत छैक, तकर पहिले गुमती लगसँ एक टा कच्ची सड़क लंका मोहनपुर दिस जाइत छैक—सोझे पूब दिस नहि, कने पूबे-उतरे । ई कच्ची सड़क गुमतीक पश्चिममे गफूरगंज हाट धरि जाइत छैक ।

हाटसँ एक टा सड़क चल जाइत छैक रेलवे पुल धरि उत्तरमे आ दक्षिणमे वैह कच्ची सड़क दरभंगा चल जाइत छैक । एक टा कच्ची सड़क गफूरगंज स्टेशनसँ सोझे पश्चिम दिस सेहो जाइत छैक । ओइ सड़कक दुनू कात बेसी मुसलमानक आबादी छैक आ सड़क आगू जा गफूरगंज हाटसँ अबैत कच्ची सड़कमे मिलि जाइत छैक। ओही चौराहा लगमे खादीभंडार छैक आ खादीभंडारसँ हाट धरिक रास्ताक दुनू कात बस्ती छैक–बनिया, सोनार आ तमोलीक । बीचमे बड़का हवेली छलैक मुन्नीलाल अग्रवाल, मारवाड़ीक । सभसँ पैघ सेठ छल गफूरगंजक मुन्नीलाल । दिवालीमे जुआमे सभ हारि गेल, कंगाल भऽ गेल । ओही दुखे जान चल गेलैक, बड़का दोकान नीलाम भऽ गेलैक । धीयापूतासभ आब भूजा बेचैत छैक । आब ओइ बाटमे नामी बनिया अछि मक्खन साहु । ओकर कारबार पसरल जाइत छैक । आ ओ सालेसाल कोठा पिटने जाइत अछि । मुदा तकर गप्प एतऽ नहि । तहिया इलाका डकैत नहि भेल रहैक ।

गफूरगंजक हाट नामी छलैक । सप्ताहमे तीन दिन हाट लगैत छलैक । सोम बुध आ शनिकेँ । खद्दर भंडारसँ रेलवे पुल धरिक बाटक दुनू कात लागल हाट । चौराहासँ गुमती धरि जाइत बाटक दुनू दिस लागल हाट । बाटक कातमे खाली मैदान छलैक । ओहो भरि जाइत छलैक । सभ चीजक हाट– माछ-मासुसँ लऽकऽ लोहा-लक्कर धरि । भरि इलाकाक स्त्रिगण-पुरुष एही हाटपर अबैत छल । सड़कक कातमे स्थायी दोकानोसभ छलैक जाहिमे कपड़ा-लत्ता आ तेल-साबुन सेहो भेटैत छलैक । बारह बजैत-बजैत कुजड़नीसभ तरकारी माथपर लेने आ पैकार घोड़ीपर सामान लदने पहुँचि जाइत छलैक । मलाहसभ पतियानीसँ सामान लऽ बैसि जाइत छल । तहिया हलाली मासु कम्मे लोक खाइ, तैयो एक टा खद्दिक अपन मासुक दोकान सभ पेठियामे खोलय । बेसी बिक्री मलाहसभक होइ । सस्त माँछ । दस आने-आठ आने सेर रऽहु । बिलटाकेँ आइयो मोन छैक ।

बिलटाकेँ गफूरगंज हाट बेसी मोन पड़ैत छैक । हाटमे बेसी मौगियेसभ जाइत छलैक । बेचनिहारसभ बेसी कुजड़निए । इलाका भरिक गामक लोकसभ अपन सौदा-लुतुफ हाटमे कऽ लैत छल । साँझ भऽ गेलोपर स्त्रिगणसभ, बोनि कमयलाक बाद, पाइ भेटिते डेग झटकारैत हाट चल अबैत छलि आ निश्शंक अपन-अपन घर घूरि जाइत छलि । पैकारसभ राति-मुन्हारि साँझमे अपन सामान लदने घर घूरि जाइत छल । ककरो कोनो चीजक डर नहि होइत छलैक ।

हाटोमे किछु उपद्रव करैक खाली लंका मोहनपुरक लोक । कोनो कुजड़नी,

कोनो सौदा-लुतुफ लैत मौगीकेँ किछु कहि देलहुँ, कने देह रगड़ि देलहुँ, बस्स एतबे । सेहो खाली लंका मोहनपुरक लोक । हवेली मोहनपुरक लोक अपने हाट नहि अबैत छल, नौकर-चाकर अबैत छलैक । खाली मलहटोली आ धनुखटोलीक स्त्रिगण अबैत छलैक ।

बिलटा मना करैक कजरीकेँ–'तोँ किएक जयबैँ हाट-बजार ? हमहीँ टीशनसँ घुरती काल लेने अयबौक ।' मुदा ओ नहि मानैक । कहैक–'थाकल रहै छै । ई फेर सौदा-बजार करतै ! आ हम की करबै दिन भरि ? कतौ काजो तऽ नै करऽ दै छै । दिन भरि बैसलि खाइ छी आ मोटाइ छी ।'

बिलटाकेँ मना नहि कऽ होइ । हाट जाय दैक । बड़ मानैत छलैक कजरी ओकरा । रातिकेँ घुरलापर घण्टो ओकर देह जाँति दैत छलैक । खूब सक्कत कमासुत हाथ रहैक कजरीक ! बिलटाकेँ नीक लगैक आ ओकरा आँखि लागि जाइ । आँखि खुजलापर देखैक जे कजरी ओंघा रहलि छैक, मुदा तैयो ओकर हाथ चलि रहल छैक, आ ओकर पोर-पोरकेँ दबा रहलि छैक । बिलटा सिनेहसँ लग घीचि लैक । ओंघायल कजरी फुसफुसाकऽ मना करैक– रहऽ दौ, ई थाकल हेतैक ।

भोर भेने नव स्फूर्तिक संग स्टेशन विदा होइत छल बिलटा । कजरी खाली दैत छलैक, मङैत कहिओ ने छलैक किछुओ । कमाइक टाका-पैसाकेँ हाथो ने लगबैक–'राखौ ने अपने ! हम की करबैक लऽकऽ ? कतौ हेरा-तेरा जयतैक ।' बिलटा नहि मानैक, ओकरे खूँटमे बान्हि दैक । तकरा नीक जकाँ एक टा डिब्बामे बन्न कऽ कोठीमे राखि दैक कजरी । एक-एक टा पाइ पूछिकऽ खर्च करैक । बिलटाकेँ फुलकुम्मरी मोन पड़ि जाइ । स्टेशनसँ अबैत देरी पहिने सभ टा पाइ धरा लै । ओइसँ पहिने देहमे हाथो नहि लगबऽ दैक । कजरीक सिनेहमे ओ फुलकुम्मरीकेँ बिसरऽ चाहैत छल, मुदा लगैत छलैक जेना ओ जहर जकाँ ओकर शोणितमे मिलि गेलि छै–'सभ टा मर्दानिगी एक टा जनानिएपर ! लगबितै एक हाथ मस्टरबाकेँ तऽ बुझतिऐक जे हमरो घरवाला मर्द हय !' जखन नामीबाबूक हवेली आ ओइसँ बहराइत मास्टरकेँ देखैत छल बिलटा तँ ओकर देहमे एक टा सनसनाहटि होबऽ लगैत छलैक । नहि जानि किएक ? ओ अपनो नहि बुझैत छलैक ।

ओ तऽ ईहो नहि बुझने छलैक जे कजरियो चल जयतैक ओकरा छोड़िकऽ एक दिन । नहि, ओ छोड़िकऽ नहि गेलि छलैक ओकरा । ओ तँ शनिक पेठिया गेलि रहैक ! घूरिकऽ नहि अयलैक । क्यो ने देखलकै फेर ओकरा । पेठियामे माइंजन गङबा देखने छलैक । दू टा मोछैल पहलमान घेरने छलैक ओकरा । डेरायल

लागि रहलि छलैक । मांइजन फेर नहि देखलकै । नहि जानि, किम्हर चल गेलैक तीनू ?

बिलटा स्टेशनसँ घूरल छल । घरक फट्टक लागल छलैक—ताला बन्न । आश्चर्य भेलैक । चारू भर तकलक । मंगला-बहुकें पुछलकै, सौंसे टोलकें पुछलकै, क्यो किछु नहि कहलकै । कहलकै माइंजन गङबा, आ बिलटा बूझि गेलैक ।

एक्के वर्ष रहलैक कजरी । कहिओ ने कहलकै जे के छलैक, कतऽसँ आयलि छलैक ? बिलटो पूछब छोड़ि देलकै । कजरी ओकरा घरमे छलैक, ओकर छलैक, एहिसँ अतिरिक्त सभ बात ओकरा बिसरि गेल छलैक । कजरी घूरिकऽ नहि अयलैक । घर फेर काटऽ लगलैक बिलटाकें । घरमे सभ-किछु ओहिना छलैक । कोनो वस्तु ने लऽ गेल छलैक ओ । ओकर नूओ-आङी पड़ले छलैक । खाली देहपर एक टा वस्त्र ! जहिना आयलि रहैक, तहिना चल गेलैक ।

बिलटा फेर स्टेशने धऽ लेलक । गामसँ कोनो मतलब नहि ! आब तँ पच्चीस बरख भऽ गेलैक । पचास वर्षक भऽ गेल बिलटा !

कतेक बड़ाबाबू अयलथिन आ चल गेलथिन । सभक लेल बिलटाक स्थायी ड्यूटी–'जरा लाइन-क्लियर दे देना बिलट ! जरा सिगनल गिरा दो, दो सौ पचपन अप आ रही है ।'

एही अप-डाउनक आबा-जाही देखैत जीवनक पच्चीस वर्ष बीति गेलैक आ बिलटा नवसँ बूढ़ भऽ गेल । आ, इलाका डकैत भऽ गेलैक ।

पहिल हंगामा शुरू कयलकै विद्यार्थीसभ । नहि जानि, कहाँ-कहाँक विद्यार्थी सभ ! दस-दस स्टेशनक विद्यार्थी नित्य जाय लगलैक दरभंगा— कालेजिया छौंड़ासभ ! गामेमे खा-पी, गामेसँ ट्रेन धऽ कालेज जाइ । लंका मोहनपुर तँ पहिनेसँ नामी छल, अइ विद्यार्थीक भीड़मे ओकरो बड़का गुट शामिल भऽ गेलैक । पहिने सभ पास बनबौलकै । फेर सभ टा फ्री भऽ गेलैक । ने पासक काज, ने टिकट । सभ फस्टे क्लासमे चलऽ लगलैक । सभ दिन बन्द रहऽवला फस्ट क्लासक वेटिंगरूम ओकरसभक अड्डा भऽ गेलैक । टी.टी. आ गार्डकें ओकरासभसँ डर होबऽ लगलैक । के अनेरो मारि खाय ? जकरा जतहि मोन होइ, ट्रेन रोकि दैक । गार्डक झण्डा छीनि, गाड़ी ठाढ़ कऽ दै । ड्राइवरक डिब्बामे चढ़ि गाड़ी ठाढ़ करबा लेल विवश कऽ दैक । विद्यार्थीकें सात खून माफ !

आ, विद्यार्थीक दलक नामपर सभ स्टेशनक गुण्डा-बदमाश रोज बिना

टिकट आबऽ-जाय लगलैक । कोनो रोक-टोक नै ! फेर उत्पात शुरू भऽ गेलैक । कहिओ कोनो मौगीक चेन झीकि पड़ा जाइत छैक तँ कहिओ कोनो यात्रीकें छूरा देखा सभ टा वस्तु-जात छीनि लैत छैक । कहिओ ककरो बैग लऽ कूदि जाइत छैक तँ कहिओ ककरो सूटकेस चीरि भीतरसँ सभ टा सामान निकालि लैत छैक । बिलटा सभ जनैत छैक । इलाका भारी डकैत भऽ गेल छैक ।

रेलवे विभागमे गफूरगंज स्टेशनक नाम बदनाम भऽ गेल छैक । क्यो एहि स्टेशनपर पोस्टिंग नहि चाहैत छैक । दू बेर बड़ाबाबूकें मारि-पीटि सभ टा टाका-पैसा छीनि लेलकै लंका मोहनपुरक लोक । नरेश, शिबू, सोहन आ कन्हाइ समेत बीस टा आर लोकपर मोकदमा आइयो चलिते छैक । सभकें बान्हिकऽ लऽ गेल रहैक आ फेर सभ हँसिते जमानतपर छूटि आयल । आ, छुटलाक साते दिनक बाद छोटाबाबूकें पीटि देलकै । ट्रेनक सभ टा सीटक गद्दी उठा लऽ गेलैक आ पंखासभ उखाड़ि लेलकै डिब्बासँ । गार्ड डरक लेल गाड़ी छोड़ि पड़ा गेलैक आ गाड़ी दू घण्टा गफूरगंजेमे ठाढ़ रहलैक । फेर पुलिस, फेर गिरफ्तारी, फेर वारण्ट !

इलाका सत्ते डकैत भऽ गेल छैक ।

सभ अपन-अपन धन्धा शुरू कऽ देने छैक । टी.टी.सी., गार्ड आ ड्राइवरक अलगे धन्धा छैक । दिनुका आ रतुका दुनू ट्रेनमे अइ लाइनमे खाली कुजड़नी आ पैकारसभ चढ़ैत छैक—खाली बोरा । भोरका ट्रेनमे खाली दूधक डिब्बा स्टेशने-स्टेशने । बाँसक डण्टाक संग डिब्बा सभसँ दूधक टिन, बड़का-बड़का टिनसभ लटकाओल रहैत छैक । दूध पेराकऽ सभ टा मक्खन बहारकऽ दुद्धी दरभंगा जाइत छैक भोरका ट्रेनसँ आ बरहबज्जी ट्रेनसँ सभ घूरि अबैत छैक । एकरासभकें विद्यार्थियोक डर नहि होइत छैक । गाड़ीक ड्राइवर, सिपाही, टी.टी.सी.–सभक शेयर बान्हल छैक ।

आ, सझुका गाड़ीसँ बोराक बोरा अन्न ! बजारसँ लऽ अनैत छैक सभ आ स्टेशन पहुँचऽसँ पहिने गाड़ी स्थिर होइत छैक आ लाइनक कातमे बोरासभक पथार लागि जाइत छैक । ओहि सभ स्थानपर लोक पहिनेसँ ठाढ़ रहैत छैक ।

आ, रतुका गाड़ीमे खाली कुजड़नी आ तमोलिन । डिब्बे-डिब्बे भरल । टी. टी., गार्डकें अठन्नी-चौअन्नी धरा एम्हरसँ ओम्हर टहलि अबैत अछि । टिकटोक नै काज ! बेसी फसाद कयलकै सिपहिया आ टी.टी., तँ कने नवकी कुजड़नी हँसिकऽ हाथ दबा देलकै । बस्स !

गफूरगंजमे ई लीला चलैत छलैक । रतुका गाड़ीसँ तमोलिन आ कुजड़नी

सभ जाइत छैक– बरहबज्जी गाड़ीसँ । भोरे छओ बजे घूरि अबैत छैक । बड़ाबाबू मौस्तैज रहैत छथिन आब–'चवन्नी वसूल लो बिलट सब से ! कोई छूटने न पावे ।'

आ, गाड़ी गेलापर सभ टा असुललाहा पैसा बड़ाबाबूकेँ दऽ दैत छनि बिलटा आ कहिओ-काल प्रसन्न भऽ बड़ाबाबू एक टा चौअन्नी दैत कहैत छथिन–'मौज करो बिलट !'

बिलटाकेँ ई झमेला आब अखरैत छैक । वयस भेलैक ! भारी-भारी मोटामे आब सकैत नहि अछि । स्टेशनपर कुलीसभ मारि आबि गेल छैक, नवका-नवका छौँड़ासभ ! टिकस ओसूल करबामे आ बड़ाबाबूक पाइ ओसूल करबामे ओकर अपन हर्ज होबऽ लगैत छैक । सभ टा पसिंजर चल जाइत छैक।

मुदा सभसँ बेसी अखरल रहैक ओइ राति बिलटाकेँ ! इलाकाक गुण्डबा छौंड़ासभ एक टा दुरगमनिया कनियाँकेँ डिब्बासँ उतारि लेलकै जबर्दस्ती । गाड़ीक खतराक जिंजिरक कनेक्शन काटि देलकै । ओकर वर कतबो किलोल कयलकै आ जिंजीर खिचलकै, गाड़ी ठाढ़ नहि भेलैक । रातुक अन्हारमे ओ छौंड़बासभ ओइ चिकरैत नवकनियाँकेँ उठा पूब दिस पड़यलैक ।

नहि रहि भेलैक बिलटाकेँ । जोरसँ ललकारलकै सभकेँ–'डूबि मरै जा सभ ! एतेक लोक छें स्टेशनपर आ एक टा मौगीक इज्जति लूटि रहल छै सभ ! अबै जो सभ हमरा संग ।'

हल्ला करैत दौड़ल बिलटा । किछु लोक संग देलकै । बदमाशसभ डेरा गेलैक । ओइ दुरगमनियाँ कनियाँकेँ छोड़ि पड़ा गेलैक । ओकरा उठा सभ स्टेशनपर अनलकै, चुप्प करौलकै । हल्ला-गुल्लासँ डेराकऽ बड़ाबाबू अपन कोठलीमे नुका गेल रहथिन । सभ टा काण्ड भेलाक बाद बहरयलथिन–'शाबास बिलट, आज तो कमाल कर दिया तुमने ।'

दोसर ट्रेनसँ घूरिकऽ ओकर वर अयलैक । बेर-बेर हाथ जोड़लकै बिलटाकेँ । कनियाँ कानि-कानि कऽ पयर छुलकै । भोरे दरभंगासँ पुलिसो-दरोगा अयलैक । नाम पुछैक बिलटासँ । बिलटा चिन्हने रहैक कतेक गोटेकेँ, मुदा कहलकै–'अन्हार छलैक दरोगा साहेब ! ककरो ने चिन्हलिऐक ।'

दारोगा चल गेलैक–बिलटकेँ पीठ ठोकलकै आ कहलकै जे ओकरा इनाम भेटतैक । मुदा, बिलटकेँ इनाम भेटि गेल छलैक । ओइ कनैत नवकनियाँक आँखिक कृतज्ञता ।

ओकरा फुलकुम्मरी मोन पड़लैक । एकदिन ओकर मर्दानगीकेँ धिक्कारने छलैक । आइ कने देखितैक ओ ओकर साहस !

मुदा ने फुलकुम्मरी छलैक, ने छलैक कजरी ! बिलटा एकसर छल आ बूढ़ भऽ गेल छल । गुण्डबासभ बदला लेतैक– ओ जनैत छल । ओ चाहितैक तँ सभकेँ पकड़बा दितैक । मुदा ओकर काज भऽ गेल छलैक । ओ ओइ चिकरैत नवकनियाँकेँ बचा लेने छलैक ।

मुदा ककरा-ककरा बचौतैक बिलटा ? सौंसे इलाका तँ डकैत भऽ गेल छैक ।

सभसँ पहिल डकैत छथि मुखिया एकबाली चौधरी । जोड़ीदार छथिन सरपंच हरिश्चन्द्र चौधरी ।

एकबाली चौधरी पहिले चुनावमे मुखिया भेल रहथि । तकर बीस वर्ष भेलैक । आइयो गामक मुखिया वैह छथि ।

मुखिया होइत देरी सभसँ पहिने गफूरगंज स्टेशनक पहिल गुमती लग, जतऽसँ कच्ची सड़क लंका मोहनपुर जाइत छैक, एक टा बोर्ड एक टा खुट्टामे ठोकि गड़बौलनि–'मोहनपुर पुबारिपार अपनेक स्वागत करैत अछि ।' मुदा, ओही बोर्ड लग ठाढ़ भऽ अनगौआँ बटोही एखनो पुछैत छैक–'लंका मोहनपुर कोन बाट जाइत छैक ?' आर तँ आर, लंका मोहनपुरक लोककेँ अपनो क्यो पुछैत छनि जे कतऽ रहैत छी, तँ जबाब दैत छथिन–लंका मोहनपुर । माने मोहनपुर पुबारि पार ।

लोक कहैत छैक जे एही कच्ची सड़क द्वारे हवेली मोहनपुरक चौधरीसभ पुबारि पार छोड़ने छलाह ! ई परगन्ना श्रीकान्त चौधरीक पुरखाकेँ मुगल-बादशाहसँ पण्डिताइक जागीरमे भेटल रहनि । सौँसे इलाका जंगले-जंगल रहैक आ जंगलक बीच बहैत कमलाक धार । पहिने ठाकुर कहबैत छलाह श्रीकान्त चौधरीक पुरखा । जागीरक संग भेटलनि चौधरीक खिताब ! पहिने दुनू लिखैत छलाह–अशर्फी ठाकुर चौधरी ! फेर शुरूमे लिखऽ लगलाह–ठाकुर दिगम्बर चौधरी । आ, बादमे खाली चौधरिए रहि गेलाह जेना श्रीकान्त चौधरी ।

बहुत दिन धरि श्रीकान्त चौधरीक पुरखालोकनि पुबारिपारमे रहथिन मुदा

बड़ असुविधा होबऽ लगलनि बादमे । परगना की भेटलनि, जंजाल भऽ गेलनि । जंगल काटि बसल छलाह पुबारि पारमे । मुदा जखन-तखन एही कच्ची सड़कपर बादशाहक घोड़सवार आबनि आ लगान ले' बड़ तंग करनि । कैक बेर बेइज्जतिक नैबात आबि जाइनि । अकच्छ भऽ पुबारि पार छोड़ि दुइए पीढ़ीक बाद पछबारि पार चल गेलाह । ओम्हरका जंगल काटल गेलैक आ सभक्यो बसि गेलाह । सभक्यो माने चौधरीलोकनि ! बाँकी लोक रहि गेल पुबारिए पारमे ।

ओना, चौधराना लंका मोहनपुरमे एखनो छैक । चौधरानाक लोकसभ कहैत छथिन जे ओलोकनि ओइपारक चौधरीलोकनिक देयाद थिकाह । उपटिकऽ जखन ओइपार जाइत गेलाह तँ एक फरीक एही पार रहि गेलथिन । मुदा, हवेली मोहनपुरक लोक अइ बातकेँ नहि गछैत छथिन-'लंका मोहनपुरसँ हमरालोकनिक कोनो सम्पर्क कहियो नहि रहल । एक बेर जे पुरखालोकनि पुबारि पार छोड़िकऽ पछबारि पार अयला तऽ कोनो चीज ने छोड़लनि अपन । रहि गेलनि जमीन-जाल आ राड़-रोहिया । पूरा खतबेटोली-दुसधटोली हमरेलोकनिक जमीनमे बसल अछि । मुसलमान टोलक बासक सभ जमीन हमरेलोकनिक थिक । लंका मोहनपुरक सभक्यो बभनटोली समेत हमरेलोकनिक जमीनमे बसल छथि । ओलोकनि एकतरफा खाइत-पीबैत छथि । हमरालोकनि खाली हकार-तिहार मानैत छियनि आ पान-सुपारी लऽ लैत छियनि, सेहो खाली चौधराने भरि, बस्स ।'

बभनटोली तीन भागमे बँटल छैक-बलुआही, पीपरपाँती आ चौधराना । धारक अइ पार बालुक मैदान समाप्त होइते बलुआही टोल शुरू भऽ जाइत छैक । ठीक बालुक मैदानक बाद नहि, कच्ची सड़कक बाद । बलुआही माँटि जतऽ खतम होइत छैक ओहीठामसँ सड़क जाइत छैक- उत्तरे-दक्षिण जे सोझे गफूरगंजक रेलवे गुमती लगसँ अबैत छैक । एही सड़कक बाद पूबमे बलुआही टोल शुरू भऽ जाइत छैक । अइ टोलक सर्वेसर्वा छलाह रामौतार मिसर । बेस चतरल-चाकर लोक रहथि । रंग एकदम कारी । हिनके एक बेर नामीबाबूक संग मसलंगपर ओङठल देखलथिन तँ सामियानामे बैसब छोड़ि देलथिन श्रीकान्त चौधरी । नामी चौधरीक बेस दोस्तियाना रहनि रामौतार मिसरसँ ! हुनकर बेटोक अइ टोलमे बेस अबर-जात । मास्टर महेशकेँ अइ टोलमे खूब समर्थन छनि ।

मुदा, एकबाली चौधरीकेँ समर्थन देलथिन अलगू चौधरीक बेटा हरिश्चन्द्र चौधरी । अलगू चौधरी पितिऔत छलथिन श्रीकान्त चौधरीक, मुदा दुनू पट्टीदारमे नहि बनलनि कहिओ । तेसर पट्टीदार छलथिन बिराज चौधरी । दुनू पट्टीदारी

झगड़ासँ अलगे रहब हुनका नीक लगलनि । कहलथिन-'हम फेर पुबारिए पार चल जायब । लंका मोहनपुर दिस नहि ।' सोझे धार पार कऽ गफूरगंज स्टेशनक सोझमे स्टेशन आ रेलवे-लाइनसँ पहिनहि बड़का प्लौट छलैक, पैघ पोखरि आ गाछी रहैक । बिराज चौधरी ओतहि बसलाह । हुनकर चारू बालक फराक-फराक चारि टा घर बना लेने छलथिन ओइ टोलपर आ ओकरा लोक कहैत छलैक-'पोखरि हवेली' । श्रीकान्त चौधरी आ अलगू चौधरीक झगड़ामे बिराज चौधरी किम्हरो नहि रहथि, मुदा हुनकर बेटासभ हरिश्चन्द्रे चौधरीक समर्थक छथिन, कट्टर समर्थक । जे कहथि सरपंच भाइ !

समर्थन जुटबऽमे हरिश्चन्द्र चौधरी माहिर छथि । काँगरेसी आंदोलनमे एक बेर जहल गेल रहथि, तेँ इलाकामे पुरान काँगरेसीक इज्जति भेटैत छनि आ जहल जयबाक ओइ सार्टिफिकेटकेँ हरिश्चन्द्र चौधरी सभ बोटमे भजबैत छथि । खाली बलुआहीक लोक नहि मोजर दैत छनि ।

बलुआही टोलक बाद छैक पीपरपाँती । कहियो पतियानीसँ पीपरक गाछ रहल होयतैक, आब एक्को टा नहि छैक । तैयो टोलक नाम छैक पीपरपाँती । लाठीमे ई टोल बेश मजगूत । बलुआही टोलवलाकेँ खेहारिकऽ घर घुसा दैत छनि । रामौतार आ हुनकर देयादसभकेँ दस बीघा जोत छनि, ताही बलेँ पीपरपाँतीकेँ जाँतिकऽ रखैत छथि । कखनो मोन-दू मोन अन्न दऽ देलहुँ अगुआसभकेँ, आ कखनो नगदे । बड़ लठियाकुमैतसभ छैक अइ टोलमे । कोनो बात-विचार नहि, एक्के बेर मूर्खक लाठी माझहि कप्पार । आ, जखन चौधरानावलासभ सहका दैत छैक एकरासभकेँ तखन तँ बलुआहीक लोककेँ घर ढुका छोड़ि दैत छनि । वर्षमे दू-एक बेर ई रमन-चमन होइते रहैत छैक ।

पीपरपाँतीकेँ कतबो मदति दैत छैक बलुआहीवलासभ, ओसभ रहैत अछि चौधरानाक कब्जामे । लाठीमे पीपपाँतियोसँ मजगूत छैक चौधराना । जेहने समङगर तेहने लठैत । बेसी लोक पुलिस आ होमगार्डमे छैक । जमीन-जथा आ टाको-पैसामे सुखी । एही टोलक छलाह एकबाली चौधरी । टोलक लाठी हुनके इशारापर उठैत छलनि ।

मुदा, सभ टा लंठै घोसाड़ि देने रहनि नवगामाबलासभ ! एक बेर बान्ह काटि छोड़ि देलथिन लंका मोहनपुरवलासभ । हिनकासभकेँ लाठीक जोरक बड़ दावा । अपनामे कतबो लाठा-लठौअलि होइनि, बाहरवलासँ झगड़ा होइते सभ मिलि-जुलि जाइत छलाह । नवगामावलासभ दोसर पंचायतमे छल । गाम ओकर डूबऽ लगलैक तँ मुखिया एकबाली चौधरीकेँ कहलकनि आ फेर अपने हसेड़ी

बान्हि गाम आबि बान्ह बान्हि देलकनि । ओसभ घूरल जाइत छल कि फेर कोनो मोचण्ड बान्ह काटि देलकै, कहा-सुनी होबऽ लगलैक । लाठी चला देलथिन लंका मोहनपुरक पहलमान गामी मिसर । पीपरपाँतीक छलाह । मारि बझि गेलैक, नवगामावलासभ कम्मे छल, तैयारो भऽ नहि आयल छल, खाली लाठी रहैक हाथमे । ई सभ गड़ाँस भाला लऽ खेहारलथिन । पहिने मारि खा पाछाँ हँटि गेल ओ सभ । मुदा नामी लठैत आ खेलायल रहय ओहोसभ । एक टा गाछीमे छपकि गेल। खेहारैत-खेहारैत लंका मोहनपुरवलासभ गफूरगंज गुमती लग आबि गेलाह । गुमतीसँ पहिने गाछी छलैक बाटक दुनू कात । ओही गाछीमे छपकल छल ओसभ । निकलिकऽ नीक जकाँ थूरि देलकनि । गामी मिसरक माथा खण्डी-खण्डी, चतुर्भुज चौधरीक हाथ टूटल । आ, पीठ आ देहपर लाठीक मारि कतेको गोटेकेँ । चुमकीसँ मारि ओसभ ससरि गेलनि आ सभ टा लाठी-भाला धयले रहि गेलनि । मामिला-मोकदमा भेलैक दुनू दिससँ । पाँच वर्ष धरि चललैक, से खिस्सा फराके छैक ।

ई पुरना गप्प छैक । तहिया इलाका एतेक बदनाम नहि रहैक । कहिओ आपसमे मारा-मारी भऽ जाइ दू गाममे, तैयो बाट-घाट लोक निश्चिन्त चलय । बटोही, धीयापूता आ स्त्रीगणक जान आ इज्जति सुरक्षित रहैक ।

इज्जति एक बेर माखनोपुरवला लेने रहनि लंका मोहनपुरक । ओहो गाम दोसरे पंचायतमे छलैक । चौधरानोसँ पूब रहैक ओ गाम । जूड़शीतल दिन खरहा मारऽ विदा भेलाह लंका मोहनपुरक लोक । आ, खरहा खेहारैत-खेहारैत गामक सिमान टपि गेलाह लंका मोहनपुरवला आ एक टा खरहा मारलनि । ओइ मुइल खरहाकेँ उठबऽ जहिना बढ़लाह चतुर्भुज चौधरी कि माखनपुरवला उठा लेलकनि ओ खरहा- 'शिकार हमर थिक ।' ओइ मुइल खरहाक टाङ धयलनि चतुर्भुज चौधरि-'शिकार हमरालोकनिक थिक ।' झिक्का-तिरी होबऽ लगलनि । आ, माखनपुरवलाकेँ मारि, खरहा छीनि भगा दैत गेलथिन ।

लगले एक टा बड़का हँसेड़ी बहरयलैक माखनपुरसँ आ खेहारने-खेहारने चौधराना धरि ठेका देलकनि सभकेँ । आब ईहो गप्प पुरान भेलैक ।

चौधराना छैक सभसँ आखिरमे । पुबारि पारक सभसँ पुबारी कात । पीपरपाँतीक बाद छैक किछु गाछी आ खेत । तकर बाद दू टा पैघ सन पोखरि आ पोखरिक पुबारि भीड़पर पसरल चौधराना ! अइ टोलक लोक कहैत छथिन-'हमरालोकनि हवेली मोहनपुरक चौधरीक देयाद थिकहुँ ।' हवेली मोहनपुरमे बेसी लोक से नहिएँ मानैत छनि ।

एकरा भजौलनि हरिश्चन्द्र चौधरी । जहिना चुनावक गप्प भेलैक, झट एकबाली चौधरीकेँ पकड़लनि-'देखू दियाद ! हमरा अहाँमे कोन झगड़ा ? दुनू तऽ एक्के छी । अहीँ चुनि लियऽ । मुखिया आ कि सरपंच ?'

एही पंचायतमे गफूरगंज सेहो छलैक । पन्द्रह सयसँ बेसी लोक- लगभग दू हजार । मुदा ओकर चलऽ नहि दैत छलथिन एकबाली आ हरिश्चन्द्र मिलिकऽ । दुनूक अड्डा साँझमे गफूरेगंजमे रहैत छलनि । पाँच सय लोक रहैक मुसलमान टोलमे । खाँ साहेबकेँ सभ दिन अपना संग बैसबैत छलथिन, संगे चाह-पान । आ, तहिना संग रहैत छलनि साहुजी । माखन साहु नहि, ओकर बाप झमेली साहु । दुनूकेँ मिला लेलासँ पहिल बेर कोनो विरोध नहि भेलनि, दुनू गोटे निर्विरोध चुनल गेलाह ।

आ, हवेली मोहनपुरक लोककेँ कहलथिन हरिश्चन्द्र चौधरी 'पीठ ठोकैत जाउ, पाँच सय वोटपर कमसँ कम सरपंचक गद्दी तऽ हथिया लेलहुँ । महेशकेँ बनयबनि नेता तऽ सेहो नहि हैत । पाँच सय कोन, तीनिए सय बूझू । दू सय तऽ धनुखटोली आ मलहटोलीक लोक अछि एहि पारमे । ओकर नेता तऽ छैक झमेली साहु । जे ओ कहतैक, सैह करैत जायत ।'

मुदा, एकबाली चौधरीकेँ दोसरे बात कहैत छलथिन-'अहाँ देयाद छी, तेँ छोड़ि देलहुँ । अप्पन गामक पाँच सयक अलावा, अहूँक पारक सात सय बोट हमरे थिक । दुसधटोली खतबेटोलीक लोक हमरेसभक जऽन अछि । साहु आ खाँ हमर दोस्ते छथि-ओहो दू हजार भोट हमरे बूझू । मुदा, अहाँ संगे तकर कोन हिसाब ?'

मुखिया एकबाली चौधरी खेलायल छलाह । हरिश्चन्द्र चौधरीकेँ किछु नहि कहलथिन, मुदा गामक लोककेँ बलुआही मैदानक आगाँ बजा कहलथिन-'ई थिक हमरालोकनिक उत्कर्षक प्रारम्भ । हवेली मोहनपुरक लोक सभ दिन हमरालोकनिकेँ छोटहा आ संगतिक अयोग्य बुझलनि । आब समय आबि गेल छैक । हमरोलोकनिमे चाही जागरण- आत्मसम्मानक लेल जागरण । हमरालोकनि कथीमे कम छियनि ? धन-बीत रहनि कहिओ, आब की छनि ! पढ़ल-लिखल छथि, से हमहूँलोकनि पाछाँ नहि रहब । आब असल ताकति होइत छैक लोक आ ओकर वोटक । अहाँलोकनि हमर संग रहू, देखा देबनि हवेली मोहनपुरवलाकेँ ।'

से ठीके, दुनू पारकेँ देखा देलथिन एकबाली चौधरी । देखिते-देखिते एकबाल बढ़ैत गेलनि, पहिने ठीकासभ भेटलनि, छोट-छोट सड़क मरम्मतिक, फेर बड़का-बड़का ठीका । अपन पुरना घर बिला गेलनि आ पैघ सन अटारी ठाढ़ कऽ लेलनि ।

ओना, बोलीक बड़ मधुर छलाह एकबाली चौधरी । हाथ जोड़ि सभकें कहैत छलथिन–'ककरा लेल करैत छी हम ! अहीं सभक लेल ने ! जाहिसँ अहूँ सभक इज्जति बढ़य, इलाकामे किछु कहबी । की छनि हवेली मोहनपुरवलाकें जे सभ मान-प्रतिष्ठा हुनकेलोकनिक हेतनि ?'

लोककें नीक लगैत छलैक । हवेली मोहनपुर द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी उपेक्षित होइत रहल छल ओसभ । एतेक टा गाम छलैक, मुदा अपना पारमे किछु नहि छलैक । एक टा भगवानक मन्दिरो टा नहि । कमलामे स्नानक बाद नावपर धार पार कऽ ओइ पार राधाकृष्ण आ महादेवक दर्शन करऽ जाय पड़ैत छलैक । आ, ओइसभ उत्सवमे लंका मोहनपुरक लोक राड़-रोहियाक संग पाछाँ बैसैत छल, ठाढ़ रहैत छल । शामियानामे आगू सतरंजीपर हवेली मोहनपुरक लोकसभ आ पाछाँ घासपर लंका मोहनपुरक लोक, तकर पाछाँ आन जातिसभ । बड़ अखरैत छलैक ओइसभकें बादमे । पुरखालोकनि तँ हवेली मोहनपुरक लोककें 'सरकारे' कहैत छलथिन ।

पहिल जोर लगौलक पोस्टआफिसक बेरमे । पहिने पोस्टआफिसकें घीचिकऽ हरिश्चन्द्र चौधरी हवेली मोहनपुर लऽ गेलाह । पोस्टमास्टर भेलथिन हुनके पितिऔत– बल्लू चौधरी । आ, बल्लू चौधरी डाकबाबूक नामसँ विख्यात भऽ गेलाह । डाकबाबूक शान लगले ततेक बढ़ि गेलनि जे लोक अवाक् ! जथा-पात तँ सभ बिका गेल रहनि पहिनहिँ, पोस्ट आफिससँ कहुना गुजर होयतनि से देखि लोक विरोध नहि कयने रहनि । मुदा, देखिते-देखिते डाकबाबूक शान तेहन बढ़ल जे लोक अवाक् ! अधिक काल लोककें सुनाकऽ हुनकर भाउज कहथिन–'आइ कोनो इन्तजाम नहि भऽ सकलनि । जलखैमे खाली सेव आ किसमिसे देलियनि आ एक गिलास दूध ।' तेसरा दिनपरकें पेठियासँ ललमुहाँ रऽहु आबि जाइनि आङनमे ।

मुदा, ओइ दिन पुलिस आबि गेलनि । ओइ पारक बेसी लोक परदेसिया छल– कलकत्ता, सिल्लीगुड़ी, आसाम रहैत छल आ सभक मनीआर्डर अबैत छलैक । मासक मास ओकर परिवारसभकें पाइ नहि भेटलैक तँ हल्ला मचलैक । जाँच भेलैक आ डाकबाबू पकड़ल गेलाह । डाकबाबू मस्त लोक छलाह । जाइत काल कहलथिन–'हमरा अपना लेल चिन्ता नहि अछि । हम तँ भितरो मौजे करब ! मुदा ईलोकनि जे छथि, हमर भैयारी आ परिवार, हिनकर की हेतनि ? मुफ्तक टाकापर मौज उड़यबाक आदति जे लागल छनि !'

बादमे सभकें माया भेलैक डाकबाबू लेल । बेचारे अनके लेल जहल गेलाह । मौज आ गुलछर्रा सभ भाइ उड़ौलनि । घूरिकऽ देखहु नहि जाइत छलथिन जहलमे ।

आ, मौकाक फायदा उठौलक लंका मोहनपुरक लोक । डाकघर उठाकऽ अप्पन पार लऽ गेल । आब बड़का साइनबोर्ड लटकौलक– पोस्ट आफिस, मोहनपुर पछबारि पार । मुदा डाकखानाक मोहर एखनो पुरने छलैक–हवेली मोहनपुर । ओ नहि बदलि सकलैक ।

पोस्टआफिसक जगह फेर बदललैक । दोसरे चुनावमे हरिश्चन्द्र चौधरी चालि चलि देलथिन–एम्हर दियाद-दियाद करैत रहलथिन आ ओम्हर झमेलीसाहुकें मुखियामे ठाढ़ करबा देलथिन । एकबालियो पाछाँ रहऽबला नहि छलथिन । सरपंचमे ठाढ़ करा देलथिन खाँ साहबकें ।

फेर दुनू फेरामे पड़ि गेलाह । झमेली आ खान दुनू कहऽ लगलनि–'सभ चीज अहीं सभ बाँटि लैत छी आ गफूरगंजक लोक मुँह देखैत रहऽ ? से नहि हैत आब । पंचायत आफिस ओतहि, पोस्ट आफिस आ हेल्प सेन्टरो ओतहि ।'

कहुना दुनूकें परतारलनि एकबाली ! पोस्ट आफिसक नवका घर गफूरगंजक लगमे लेल गेलैक, एकदम गुमतीसँ सटिकऽ पूबे । पंचायतक भवनो बनलैक गफूरगंजक लगमे आ तकरे सटल हेल्थसेन्टरक भवनक शिलान्यास भेलैक ।

खान साहेब मानि गेलथिन– हरिश्चन्द्र चौधरी सरपंच आ उप-सरपंच खान साहेब । मुदा झमेली साहुक बेटा मक्खन बड़ बखेड़ा कयलकनि । ओ टाका-पैसावला छल । ओकर बाप मुखिया बनैक, ताहि लेल जोर लगौने छल ।

तखन हरिश्चन्द्र चौधरी देलथिन घोड़किल्ली–'नेना छऽ माखन ! नहि बुझैत छहक राजनीति ! तोहर बाप हमरालोकनिक मित्र छथि तें कहैत छियऽ । नहि मानबऽ तऽ ठाढ़ कराकऽ बेइज्जत करा लहुन । तोरा जँ भ्रम होअऽ जे दुसधटोली, खतबेटोली, धनुखटोली आ मलहटोलीक वोट तोरा भेटतऽ तऽ भ्रम छऽ । ओसभ हमरेसभक पट्टीदारक जन अछि, एकोटा वोट तोरा नहि देतह । खान साहेबो तोरा धोखे देथुन, एक्को टा मुसलमानक वोट तोरा नहि भेटतह ।'

मक्खन साहु डेरा गेल । बापकें बैसा लेलक ।

सेहो पुरना बात भेलैक आब । आब परिस्थिति बदलि गेल छैक । एकबालीक खिलाफ आब लंके मोहनपुरमे बाजऽ लागल छनि–'की कयलनि एतेक दिन मुखिया रहि— खाली अपन कोठा पीटि लेलनि ! इलाकाक कोनो उपकार भेलैक ? अइबेर शिबू ठाढ़ हैत ।'

शिबूक घर बलुआहीमे छैक । बलुआहीक लोक आब बेस पढ़ि-लिखि

गेल अछि । दू टा इंजीनियर, एक टा डाक्टर आ तीन टा ओकील । ढौए-ढाकी किरानी सभ । आन कोनो टोलमे एतेक पढ़ल-लिखल लोक नहि । रामौतार मिसरक परिवार नहि पढ़ि सकलनि, मुदा सर्वेसर्वा वैहसभ छलाह । हुनके पोता छलनि शिबू । महेश मास्टर सनकौने छलथिन बलुआहावलाकेँ–'पढ़ल-लिखल तोँसभ, धन-बीत तोरालोकनिकेँ, आ मुखिआ होथि एकबाली !'

बलुआहीवलासभ जोर लगौलक । पीपरपाँतीकेँ फोड़लक किछु लोक । गाममे काज शुरू कयलक । बालुपर सभकेँ बजा टोलक सभ पढ़ल-लिखल बेराबेरी भाषण कयलक । चन्दा असुललक आ एक टा मन्दिरक निर्माण कयलक। आब ओइ पार नहि जायत कोनो लोक । एही पार दुर्गापूजा हैत, नाटक हैत, मेला लागत । आ सभक अगुआ भेल शिबू । पीठपर छलथिन डाक्टर, इंजीनियर आ प्रोफेसर । शिबू मैट्रिकेमे फेल भऽ गेल, मुदा रहय बड़ जाबिर लोक ! ओकरा लेल कोनो काज कठिन नहि । सौँसे बलुआही डेराइ ओकरासँ । सभ सोचलक–एकरे नेता बना दे, टोल सुरक्षित रहत ।

असुरक्षित भऽ गेलाह एकबाली । अपनो टोलमे किछु-किछु विरोध होबऽ लगलनि । भातिजे छलनि नरेश । ओ हरदम चक्कू संग रखैत छल । इलाका डेराइत छलैक । मुखियाक गद्दी लेल ओहो उम्मेदवार छल ।

आ, सभसँ बड़का उम्मेदवार छल तेजू । हवेली मोहनपुरक लोक तँ नहि, मुदा मास्टर महेश खूब सहकौने छलथिन ओकरा । पीठपर छलथिन मिहिर आ नारायण–'टाका-पैसाक परवाहि नहि, जे खर्च हैत, देब । मुखियाक गद्दी अइ पार आबक चाही, चाहे जेना हो ! लंकाटोल एतेक वर्षसँ गद्दी हथियौने अछि, सरपंची हाथमे लऽ हरिश्चन्द्र चौधरी गाम भरिकेँ ठकैत छथि ।' मिहिर आ नारायण लंकाटोलक बहुत रास हीरोसभकेँ नौकरी देऔने छलथिन, तकरे भरोस छलनि जे ओइ पारक बोट बाँटि लेब । तेजू खूब उत्साहमे छल–भगवतीक कृपा एकरे कहैत छैक ! सभ दिससँ मदति भेटि रहल छलैक । कमलाक कनियाँक सेहो, आ मिहिर आ नारायणक सेहो ! संगीक सङ-सङ भैयारियो छलैक दुनूक ।

दुनूक मंसूबा मुदा किछु आर छलैक । तेजूक अऽढ़मे अपन क्षेत्र तैयार करऽ चाहैत छल । दुनू अफरात टाका कमा लेने छल । आब राजनीतिक प्रश्रय आ प्रभुत्व चाहैत छल । मुदा, नौकरी छोड़बासँ पहिने स्थिति खूब मजगूत कऽ लेबऽ चाहैत छल । तेँ आगू कयने छलनि मास्टर महेश आ तेजूकेँ । सभ टा टाका ओही दुनूक छलैक ।

बुद्धि आरो लोकसभ लगौने छल । तिवारीजी दुसधटोली आ खतबेटोलीमे घूमि कम्युनिस्ट उम्मीदवार लेल क्षेत्र तैयार कऽ रहल छलाह । मलहटोली आ धनुखटोलीमे 'हुनकर अड्डे रहैत छलनि । अपने घरक सुखी छलाह तिवारीजी । समस्तीपुर लग घर रहनि, बेस सुखितगर लोक । मजदूर आ जनकेँ अपन कब्जामे रखैत छलाह । एहू गाममे यैह धन्धा करैत छलाह । घूमि-घूमि सभक कान फुकैत छलथिन, बेर-कुबेर टाको दऽ दैत छलथिन पैँच-उधार !

मुदा, हिनकासँ बेसी यादवजीक प्रभाव छलनि अइ टोलसभमे । एखनो एक्को टा पढ़ल-लिखल लोक नहि छलैक अइ टोलसभमे । यादवजीक बात सुनैत छलनि अबस्स, मुदा ककरो आगू बढ़बाक साहस नहि छलैक ।

आगू बढ़ल छल गफूरगंजक लोक । ओतऽ यादवजीक चलती रहनि । सभकेँ अपनामे मिला अगिला चुनाव लेल झमेली साहुक बदला मक्खन साहुकेँ तैयार कयने छलाह यादवजी । आ, लंका मोहनपुर आ हवेली मोहनपुरक ब्राह्मणेतर लोकक टोलमे हुनकर प्रयास जारी छलनि ।

एकबाली चौधरीकेँ सभ खबरि छलनि । लोक आ समयकेँ चिन्हबामे ओ माहिर छलाह । एहन सन क्रम बनौने छलाह जेना किछु बुझले नहि होइनि । सभ ठाम, सभ अवसरपर एक्के बात कहैत छलथिन–'आब बहुत भेल । नवो लोककेँ भार लेबऽ दियनु ।'

भरि गाम अपन समर्थक द्वारा प्रचार करबा देने छलथिन–एकबाली अइ बेर नहि ठाढ़ होयताह ।

गेनमा मुदा ठाढ़ भऽ गेलनि–सेहो तनिकऽ ।

साफ कहलकनि–'हमरा बुते नहि होत मालिक ! कोनो दोसर जन ताकि लू ।'

तामसे थरथरा उठलाह मास्टर महेश–'तोहर एहन मजाल ? काज नहि करबें ? कोनो बेगार कहै छियौक ?'

गेनमा तैयो अड़ल रहल–'बेगारे तऽ भेल । बोनि वास्ते तीन दिन दौड़त हमर जनानी आ बोनिक सत्ती सभ चौल करतैक ओकरा संग ।'

—'ओ ! तऽ ई बात छैक ! आब तोहर कनियाँकेँ किछु ने कहतौक क्यो ! बड़ महतमानि भेल छौक ! एना हँसी-मजाक तऽ होयबे करैत छैक । पूछि ले अपन मायेसँ ? कीसभ ने कहैत छैक लोक !' महेश कने पैतरा बदलैत कहलथिन ।

मुदा गेनमा अड़ल छल—'खाली सेहे बात नहि हय मालिक ! समयपर बोनि नहि मिलत तऽ खयबै की ? कमाउ तीन दिन, बोनि भेटत एक टा, सेहो पुरना साबिक रेट ! हमरा तऽ जहाँ अधिक मजूरी मिलत, समयपर बोनि देत, ऊहेँ कमायब ।'

महेश बाबूक क्रोध बेसम्हार भऽ गेलनि—'देखै छिऔ हमहूँ जे के काज दैत छौ हमरा अछैत अइ गाममे आ कहाँसँ बोनि लबैत छेँ ? सभ टा रड़पनी घोसाड़ि दैत छिऔक हमहूँ । पहिने हमर घराड़ी खाली कर ।'

गेनमा निडर भऽ कहलकनि—'अहाँक घराड़ी केहन ! ई घराड़ी तऽ हमर हय । चारि पुस्तसँ अही घराड़ीपर छी, के हटाओत अइपरसँ हमरा ?'

महेश बाबू ओकर निडर अभिव्यक्तिसँ चौँकैत कहलथिन—'ओ, तँ ई आब तोहर भऽ गेलौ ! तिवारीजी आ यादवजी बाजि रहल छथि ! आ ई जे घराड़ीक संग बड़की टा बाड़ी छैक, से ककर छैक ? सर्वेवलाक कैम्प लगले छैक स्टेशन लग । कने यादवजीक संग पूछि आ, जे नक्सा कोना कटल छैक ?'

गेनमा दौड़ले गेल सर्वे कैम्प । कागज देखि कहलकै—'तोहर घराड़ीक नक्सा काटि देने छियौक । मुदा बाड़ी छौक सात कट्ठा । से तऽ हुनके नाम छनि। ई कोना हेतौक तोहर ?'

गेनमा शंका कयलकै—'आ कब्जा जे हय हम्मर !'

सरकारी आदमी कहलकै—'ताहिसँ की हेतौक ? तोरा बटाइ छौक ओ । जमीन तऽ हुनके छनि— लालबाबूक । बिना हुनकर लिखने किछु ने हेतौक ।'

गेनमा दौड़ल गेल हवेली । लालबाबूकेँ कहलकनि—'कने चलिकऽ सरबे आफीसमे बोलि दिऔक मालिक ! हम तऽ अहीँक प्रजा छी ।'

लालबाबू कहलथिन—'सर्वे आफिस जयबाक कोन काज ? तोँ टाकाक इन्तजाम कर ! सातो कट्ठा जमीन तोरे लिखि देबौ । अनकासँ बेसी लेबै, तोरासँ साते हजार । घराड़ीक जमीन हजार रुपैए कट्ठा क्यो देतौ अइ गाममे ?'

गेनमा आसमानसँ खसल—'सात हजार ! एतना टाका सातो पुस्त नहि

देखलक मालिक ! हम कहाँ से लायब ? अहाँके लेल तऽ किच्छो ने हय ई सात कट्ठा । सभ दिन नाम लेब अहाँक ।'

लालबाबू कहलथिन—'तोहर नाम लेलासँ हमर आ हमर धीया-पूताक पेट भरत ? टाका जमा कर, तखन बात करिहैँ ।'

गेनमा जाइत-जाइत कहि गेलनि—'ई अहाँ न्याय नहि कऽ रहल छी । गरीबक पेटपर लात नहि मारियौक ।'

रवि दुनू गोटेक गप्प सूनि रहल छल । लालकाकाक कोनो बातपर आश्चर्य कयनाइ आब ओ छोड़ि देने छल । तैयो गेनमाक संग हुनकर बात सुनि बड़ आश्चर्य भेलैक ओकरा । अपने घराड़ी लेल सात हजार टाका ! ई तँ भारी अन्याय होयतैक । गेनमाक मायकेँ ओ चिन्हैत छलैक, मुदा गेनमाकेँ नहि देखने रहैक । ओकर जेठ भाइसभकेँ चिन्हैत छलैक । जेठके भाइक नामपर सभ कहैत छलैक— यदुआ माय। गेनमा माय क्यो नहि कहैत छलैक । गेनमाक गेलाक बाद रवि पुछलकनि—'ई के छल लालकाका ?'

लालकाका कने अनिच्छासँ कहलथिन—'वैह यदुआक भाइ गेनमा— खतबे टोलीक । एकर मायकेँ देखने हेबहक । सभक अङना अबैत छलि चिपड़ी पाथऽ ! तकर बेटाक गप्प सुनलह आइ, पेटपर लात मारबाक गप्प कऽ गेल दरबज्जापर आबि । जमाना जे नहि देखबय !'

रविकेँ नीक लागल छलैक गेनमाक गप्प । गाममे पहिल बेर सुनने छल कोनो पिछड़लवर्गक लोकक मुँहे एहन गप्प । ओकरा लागल रहैक जे गाम ओतेक स्थिर आ ठमकल नहि छैक, जतेक बुझने छलैक । कतहु-ने-कतहु कोनो नव चेतना सुगबुगा रहल छलैक ।

मुदा ओइ सुगबुगीकेँ तुरत दबा देबऽ लेल महेश मास्टर कटिबद्ध छलाह । संग दऽ रहल छलथिन लालकाका । रविकेँ एक बेर लगसँ खतबेटोलीकेँ देखबाक इच्छा भेलैक ।

ओही दिन धार टपि गेल रवि आ टहलैत खतबेटोली दिस गेल । चौदह-पन्द्रह वर्षक बादो कोनो परिवर्तन नहि भेल छलैक । ओहिना छलैक टोल । छोट-छोट घर मोस्किलसँ तीन-चारि हाथ ऊँच आ पाँच-सात हाथ लम्बा । सटले-सटल घरसभ । सम्पन्नता आ विभवक कतहु कोनो लक्षण नहि । सर्वत्र अभाव आ दरिद्र्य पसरल । पोआरक नारसँ छारल घर आ टाटसँ हुलकी दैत घरक

द्ररिद्रता । सभ घरपर लत्ती-फत्ती पसरल । माल-जाल कतहु नहि एको टा । धीया-पूता खोलिकऽ चरबऽ लऽ गेल छलैक प्राय: । टोलमे धूरामे ओंघराइत नाङट नेन्नासभ।

यदुआ-मायक घर रविकेँ देखल छलैक । ओम्हरे जाय चाहलक ओ। दिनुका समय छलैक । ओकरा टोलमे अबैत देखि बाहर बैसल किछु स्त्रिगण-पुरुष अपरिचित दृष्टिएँ ताकऽ लगलैक । ओ सोझे यदुआ-मायक घर दिस बढ़ल ।

किछु दूरेसँ घोंघाउज सुनऽमे अयलैक । यदुआ-मायक आङनमे कोनो बातपर भारी विवाद ठाढ़ छलैक ।

—'सभक जड़ि तोही छेँ गेनमा ! बहुक कहलापर महेश मास्टरसँ राड़ि ठाढ़ कयले ँ !' —एक टा पुरुष-स्वर ।

—'कहिओ हमरो सभक जुआनी रहलै । हवेलीमे हँसी-ठट्ठा कऽ दैक लोक ! कहाँ कहिओ बतंगड़ ठाढ़ भेलैक ?' —एक टा नारी-स्वर ।

—'एक टा यैह महासुन्नरी छै ! हमरासभ तऽ कोनो काजक रहबे ने करिऐक कहियो ! के देखतैक हमरा सभकेँ ?'—एक टा दोसर स्त्री-स्वर ।

पुरुष-स्वर फेर कहलकै—'हम तऽ साफ कहै छिऔ गेनमा ! हम महेश मालिकक पयर पकड़ि लेबैक, लालबाबूक पयर धऽ मना लेबनि । हमर हिस्सा दू कट्ठा छोड़ि देताह ।'—ई यदुआक स्वर छलैक ।

एक टा दोसर पुरुष-स्वर सेहो वैह बात दोहरौलकै—'हँ भाइ ! आर कोनो उपाय नहि । खाली बाड़िएक गप्प नहि छैक ! बोनि-बुतात बन्न करबा देताह ! हम तऽ पैर पकड़ि माफी माङि लेबनि । की परबोधन, तोही कह ।'

तेसर पुरुष-स्वर—'हँ भाइ ! सैह करह ! गेनमा अनेरो झंझटि बेसाहि लेलक । चल रे गेनमा ! तोहू चल । माफी माङि लिहैँ, बात खतम भऽ जयतौक !'

—'हर्गिज नहि ! हम नहि पकड़बै ओकर पैर ! काज करा बोनिमे कटौती करतैक ओ, हमरासभक जनीजातिकेँ बेइज्जति करतैक ओ, आ हमही माफियो मङबैक ? ई हमरा बुते नहि हेतैक ।'

—मानि जो बौआ ! तोहर बड़का भाइसभ ठीके कहै छौ । माफी माङि बात खतम कर । इहो कोनो झगड़ा-फसादक गप्प हइ ! एना तऽ हेबे करै हइ हवेली-ड्यौढ़ीमे । हरिश्चन्द्र बाबू आ बिराज बाबूक पट्टीक जनकेँ पूछि लौक ! सभजग एहिनती होइ छै, एकर क्यो बतंगड़ करै हइ !'

गेनमा तैयो अड़ल छलै—'सभ सहै छै तेँ हमहूँ सहबै ? लऽ लेतै बाड़ीक जमीन, तऽ लऽ लौ । हाथ-पयर तऽ हय ! ई तऽ नहि काटि लैतै क्यो !'

बुढ़िया फेर बुझौलकै—'ई नट्टिन मौगी तोहर दिमाग खराब कऽ देने हउ ! हाथो-पैर काटि लै छै, तोँ नहि देखने छही गेनमा ! अप्पनसभक मालिक दयालु हइ, कने हँसि-बाजि लेलकै तऽ की भेलै ! फसाद नहि ठाढ़ करऽ बौआ !'

गेनमा नहि मानलकै— 'तऽ जाउ तीनू भाइ, लिखा लौक अप्पन-अप्पन हिस्साक जमीन ! हम बिना बाड़िए रहि लेबैक, मुदा ओइ बदमाससँ माफी नै मङबै जे हमरा आरकेँ बहु-बेटीक इज्जतिपर आँखि राखत ।'

रवि आङनमे आबि गेलैक । सभ हड़बड़ा गेलैक ! यदुआ-माय लग अबैत कहलकै-'बौआ, अहाँ गेनमाक बातक ध्यान नहि देबै बौआ, ई एहिनती बड़-बड़ करै हय । आउ ऐन्ने, अइ चटकुन्नीपर बैसू बौआ !'

रवि कहलकै—'नै, बैसबौ नहि अखन ! गेनमा, तोँ हमरा संग चल !'

सभ डेरा गेलैक । यदुआ-माय नेहोरा करऽ लगलैक—'माफ कऽ दिऔ मालिक, नै बुझै हय अखन !'

रवि बीचेमे टोकैत कहलकै—'नै गै, से बात नहि छैक । गेनमा तोँ हमरा संगे आ ।'

गेनमा ओकरा पहिने कहिओ देखने नहि छलैक, ओकरासँ छोटे छलैक । रविक स्वरसँ आश्वस्त होइत कहलकै—'चलू मालिक !'

रवि ओकरा सर्वे-कैम्पमे लऽ गेलैक । ओतऽ तैनात कर्मचारीकेँ जाइते कहलकै—'सर्वेक नामपर एहन अन्हेर नहि करियौक । गरीबक बाड़ी-झाड़ी किएक छीनैत छिऐक अहाँसभ ? पुस्त-दर-पुस्त भोग कयलक आ आब कहैत छिऐक जे एकर नहि छैक ?'

कर्मचारी किछु नहि बुझलकै । ओ रविकेँ नहि चीन्हैत छलैक । जमीनक नम्बर आदि किछु नहि कहि सकलैक रवि । सभ टा बात बूझि कहलकै—'अहाँ लालबाबूक भातिज छियनि ? मुदा लालबाबू आ महेशबाबू तऽ सभ टा कागज देखा नक्शा बनबौने छथि । कागजक बातमे हम की करब ?'

रवि ओहिना तमसायले मुद्रामे कहलकै—'अहाँ नहि किछु करब तऽ हमही करब । हमरो जमीन अछि ओ, सभ टा लीखि देबैक एकरासभकेँ ।'

कर्मचारी किछु धकचुकाइत ठाढ़ रहलैक । फेर कहलकै–'अहाँ सत्ते लालबाबूक भातिज छियनि ?'

–'एकर मतलब ?' रवि कने बेसी तमसाइत कहलकै ।

ओ सर्वेकर्मचारी कहलकै–'तमसाउ नहि अहाँ । हमसभ तँ पछिलो बेर मासक मास कैम्प रखने रही । अहाँ-पारक सभ जमीन-जथाक नक्शा बनौलहुँ । मुदा, हमरा आश्चर्य भऽ रहल अछि । लालबाबू तऽ हमरासभकेँ कहने छलाह जे हुनकर जेठ भाइ निस्संतान मुइल छलथिन । सभ टा जमीन अपना नाम करबा लेने छथि ओ ।'

लालकाकाक बातपर आश्चर्य कयनाइ छोड़ि देने छलनि, मुदा ओइ कर्मचारीक बात ओकर मोनपर बज्र जकाँ खसलैक आ किछु क्षण धरि कोनो बोल नहि बहार भेलैक ओकर मुँहसँ । किछु काल बाद अपनाकेँ सम्हारैत रवि कहलकै–'सूचना लेल धन्यवाद ! हम हुनक ओही भाइ निस्संतान राम चौधरीक बेटा छी–रवि ।'

गेनमाक संग रवि घूरि गेल । गेनमाकेँ विदा करैत कहलकै– तोँ चिन्ता नहि कर गेनमा ! तोहर बाड़ी-झाड़ी तोरे रहतौक । मुदा एखन तोँ जो । बादमे भेँट करिहेँ ।'

रवि हवेली मोहनपुर दिस बिदा भेल । लालकाका आ काकी एतेक नीचाँ उतरि गेलथिन ! ओकर जीवित घूरि अयलाक दुखसँ ओइ दिन लालकाकी हिचुकि-हिचुकि कनैत रहथिन । लालकाका सरकारी खातामे अपन भाइकेँ निस्संतान घोषित कऽ चुकल छथि । रवि तैयो किएक रूकल अछि गाममे ?

घर आबि लालकाकाकेँ कहलकनि— 'हम सोचैत छी जे फेर किम्हरो चल जाइ लालकाका ! एना बैसल-बैसल मोन नहि लगैत अछि ।'

लालकाका ओकर प्रश्नपर चौँकलथिन आ अपन असल भाव नुकबैत कहलथिन–'एतेक दिनपर अयलह आ फेर लगले चल जयबह ! किछु दिन आर रहि जा ।'

किछु दिन आर रहि जा । बस्स ! लालकाकाकेँ कोनो रोक नहि छनि । रवि जा सकैत अछि । क्यो नहि रोकतैक ओकरा ।

–'किछु दिनक बाद किएक ? आइए चल जाइ ! गामक लेखे तँ हम मरिए गेल छी !'

लालकाका रोकैत कहलथिन–'एना जुनि बाजऽ ! मरथुन तोहर दुश्मन । तोरा तऽ अशेष अरुदा छऽ । नहि मोन लगैत छह तऽ किछु दिनक बाद चल जैहऽ । गाममे छैक की राखल ?'

लालकाका ओकर जयबाक बात बेर-बेर दोहरा रहल छलथिन । रवि तखन स्पष्ट कहलकनि–'हमर रहब आ जायबसँ कोन अंतर पड़ैत छैक आब ? अहाँक भाइ तँ निस्संतान मुइल छलाह लालकाका !'

लालकाका खूब जोरसँ चौँकलाह । किछु क्षण कोनो बाते नहि फुरयलनि । फेर लग आबि पीठपर हाथ रखैत कहलथिन–'तोरा अबस्से क्यो कान भरैत छऽ रवि ! अइमे तामस करबाक कोनो बात नहि छैक । जखन बारह वर्ष धरि नहि घुरलह तोँ, तऽ लोकसभ श्राद्ध करबा लेल विवश करऽ लागल । भाइकेँ नहि कहलियनि जे दुख हेतनि । मुदा तोहीँ कहऽ, की लिखबितिऐक ? तहिया के जनैत छल जे तोँ चौदह वर्षक बाद एना घूमिकऽ गाम आबि जयबह ? भाइ निस्संतान मुइला, से लिखायब छोड़ि आर उपाये कोन छल ? तोहर अमंगलक कामना करबह हम, तेहन पतित नहि भेल छी अखनो...'

लालकाका कनबाक चेष्टा करऽ लगलथिन !

यदुआ-माय सेहो चेष्टा कयने छलि ।

रविबाबूक संग गेनमा चल गेलैक आ अङनामे रहि गेलैक तीनू जेठका बेटा आ ओकरासभक आङनवाली । फेर झगड़ा मचि जैतैक मौगिआही, मुदा तीनू भाइ अपन-अपन आङनावालीकेँ लेने गेलैक आ आङनमे रहि गेल खाली यदुआ-माय आ गेनमा-बहु ।

यदुआक माय अपन पुतहुकेँ बुझौलकै— 'तोरे नीमन लेल सभ कहलकौ ! एना क्यो सहकबै हय अपन मरदकेँ ! क्यो किछु बोली देलकौ वा हाथे लगा देलकौ, तऽ गलि नै गेलौ तोहर देह ?'

गेनमाक बहु कने आँखि विस्फारित कऽ अपन सासुक मुँह देखऽ लागलि । यदुआक माय फेर बुझौलकै–'ई तऽ तेना आँखि चिआरिकऽ देखि रहलि हय जेना हम कोनो बड़ अधलाह बात कहने रहिऐ ! गय, एक दिन हमहूँ तोरे सन रही गामक

पुतहु । तोरे ससुरक पँजरामे सटकल सूतल रही कि मालिकक लठैत अयलैक आ उठाकऽ लऽ गेलैक । एकर ससुर तेना काछि लेलकैक जेना निभेर सूतल होइ ! भोरुकबासँ पहिने जखन फेनू ओहिना पँजरामे आबिकऽ सूति रहलिऐ तैयो ओहिना कछने पड़ल रहै एकर ससुर । कहिओ पुछबो ने कयलक जे के उठाकऽ लऽ गेल रहौ तोरा ?'

गेनमाक बहु आरो अवाक् ! की-की बाजि रहलि छलैक ओकर सासु ? केहन निर्लज्जी जकाँ ! एहनसन क्रम जेना क्यो उठाकऽ मन्दिरमे लऽ गेल होइ आ पूजा कऽ घूरि आयलि हो !

यदुआक माय ओकर ओ दृष्टि नहि देखलकै, अपने धुनिमे कहैत गेलैक-'आ हमहीं किएक, आरो कतना गेल होतै एहिनाती, मुदा तोरा जकाँ अपन घरबालाकेँ जान मरबा देबाक तऽ क्यो नहि चरित्तर रचने छलै । तोरे तऽ बड़की गोतनी हउ-इहे यदुआक बहु । जुआनीमे तोरा से बेसी पानी रहलै चेहरापर । ओकरा तऽ हमहीं पहुँचा देलिऐ हवेली । ककरो घरबाला कहिओ कोनो फसाद नै कयलकै । पूछि ले जाकऽ सौँसे दुसधटोलीमे ! एहन छोट बात ले' कोइ कयने हय एहन फसाद आइ ले ? घराड़ी-बाड़ी जेतौ, बोनि-रोजगार नहि भेटतौक गेनमाकेँ, भूखे मरबेँ दुनू परानी ! तखनी के पुछतौक ? आइ हवेलीक लोक पुछै हउ, काल्हि रस्तो के लोक नहि पुछतौ । अखनियो चेति ले ।'

आब गेनमाक बहुकेँ नहि रहल गेलैक । जोरसँ बाजि उठलै-'बस्स करौ अपन उपदेश ! लिहाजे हम चुप्प छिऐ तऽ जे मोनमे आबि रहल छै, बकने जाइ छै। हम कोनो रण्डी-बेसवा छी जे जकरा आगू ई कहतैक, उघारिकऽ पसरि जयबै ! लाजो ने होइ हइ अपन कथा बखानैत ! बुढ़ाड़ियोमे चालि कहाँ छूटल हइ ? अखनो गंदा-गंदा बात कऽ रस लै हइ, सेहो नवका छौंड़ा सभसे ! एकरा कोनो गत्तरमे लाज नहि हइ तऽ सभ अपन लाज बेचि देतै ? हम तऽ भूखे मरि जयबै, मुदा जे आँखि उठा तकतै, तकर आँखि फोड़ि देबै ।'

'जय हो पतिबरता देवी !' यदुआ-माय हाथ उठा भगल करऽ लगलैक-'कने दौग गय यदुआ-बहु ! दुनू छोटकिओ के लेने आ । देख अपन पतिबरता गोतनीकेँ आ परनाम कर एकरा । हमरासभ रण्डी-बेसबा छी, एगो देवी आयलि हय टोलमे ! सभकेँ बजा लही, दरसन करतै ।'

तीनू मौगी बुढ़ियाक भगल सूनि दौड़लि अयलै आ रण्डी-बेसबाक बात

सूनि तीनू एक्के सङ लुधकि गेलैक गेनमा बहुपर-आ लगलै सौँसे देह नोचऽ-'रण्डी तोँ, तोहर माय, तोहर नानी...!'

गेनमा-बहु बचबा लेल संघर्ष करऽ लागलि । मुदा ओइ तीनूक मदतिमे सासुओ आबि गेलैक । पटका-पटकी होबऽ लगलैक । चारू मिलि गेनमा-बहुक मुँह-देह नछोड़ि सोनिते-सोनिताम कऽ देलकै । गेनमा-बहु एकसरि जी-जानसँ संघर्ष करैत रहलि ।

तखने गेनमा घूरि अयलैक । अङनामे मचल झोँटा-झोँटी देखि जोरसँ बमकल-'देखू अइ मौगीसभक तमेसा ! इम्हर जानपर आफत हय आ ईसभ अपनेमे झौहरि आ नोचा-नोचीमे लागल हय !'

सभ थकमका गेलैक । यदुआक बहु आगू आबि कहैत गेलैक-'हम जाइ छी अपन अङना । मुदा बुझा ले अपन पतिबरताकेँ । हमरासभकेँ गारी देत तऽ बेजाय बात हो जेतै ।'

भाउजिसभ अप्पन आङन गेलैक तँ माय आगू अयलैक-'ओकरेसभकेँ नहि, हमरो गारी देलक ई मौगी । कने बुझा दहिक एकरा ! अइ नट्टिनके इशारापर नहि नाच ।'

'चुप्प बुढ़िया' —गेनमा ओकरो डँटलकै । ओकर पित्त लहरल छलैक । सर्वेआफिससँ रविबाबूक सङ निराश घुरल छल । ओकरा कोनो बाट नहि सूझि रहल छलैक । महेश मास्टर बाड़ी-झाड़ी छीनिकऽ रहतैक ।

अपन घरबाली दिस ओकर ध्यान बादमे गेलैक । केश नोचल छलैक आ नूआ-बस्तर खूजिकऽ लटकि गेल छलैक । मुँहपर नछोड़सभ छलैक पैघ । तैयो ओ ओकरे डाँटि देलकै-'बड़ा जुआनी चढ़ल हए एकरा ! सभक सङ कुश्ती खेलाइ हय । माय-भौजीकेँ गारी किएक देलहिक ? एतना हिआब कहाँ से आबि गेलौ तोरामे ?'

बहु कोनो जवाब नहि देलकै तँ ओकरा अपने संकोच भेलैक । कने मोलायम स्वरमे कहलकै- 'जाउ, मुँह-हाथ धो लौक आ नूआ बदलि लौक । ई दू गो टाका हइ, हाटसँ लऽ आनौ जे जरूरी होइ ।'

गेनमाक बहु चुपचाप अयलैक आ गेनमाक हाथसँ टाका लऽ कोठलीमे चल गेलैक । गेनमो अङनासँ बहरा गेल । गेनमा-बहु हाथमे दू टा शीशी लेने बहरायलि आ डेग झटकारने हाट दिस बिदा भेल ।

गेनमा दरबज्जे-दरबज्जे घूमल । सभकेँ कहलकै, मुदा क्यो सङ देबऽ

लेल तैयार नहि भेलैक । उनटे ओकरे बुझबऽ लगलैक सभ-'तोँ नहि बुझैत छहिक गेनमा ! कने शान्त भऽ कऽ विचार । मालिक-गिरहथसँ बिगाड़ कऽ कतेक दिन टिकबै हमरासभ गाममे ? एक्को कोला खेत हय ककरो ? ओहो बीघा-दूबीघा बटाइ के दै हय ? हरवाही-रोपनीमे बोनि के दै हय ? अराड़ि करबै, काल्हिएसँ सभ बन्न। बाड़ी छोड़ियो देतौक दू कट्ठा, तऽ ओइसँ गुजर हेतौक ? रोज-मजदूरी के देतौक ? गाम आ इलाकामे आर काजे कोन छैक ? छोट-छोट बात ले' एतना भारी बबाल नहि खड़ा कर गेनमा !'

गेनमाकेँ क्रोध आबि गेलैक । ओ टोलाक पुरुषक बीच गरजिकऽ बाजल-'ई सभ एकरा छोट-छोट बात कहै हइ ! घरक इज्जतिक बात एकरासभकेँ छोट बात बुझाइत हइ तऽ बड़की गो बात कोन हइ-पेट ? ओकरे भरे लेल सभ अपन-अपन इज्जति दऽ देतैक ? आ पेट की ककरो भरोसे भरै छै ईसभ ? भरोसा तऽ एके टा हइ-अपन दुनू हाथक, अपन ताकतिक । तखन एतेक डेरायल आ अनका कृपापर किएक छैक ईसभ ? मेहनति करबै आ पेट भरबै । बाजौ, सङ देतैक ई सब हमर ?'

एक्को टा बोली समर्थनमे नहि बहरयलैक । गेनमा हताश नहि भेल । फेरसँ कहलकै सभकेँ- 'हम जनैत छिऐ जे ईसभ किएक ने बाजऽ चाहैत छैक ? मुदा चुप्प रहलासँ ई बात रुकतैक नहि । आइ हमर इज्जति आ हमर बाड़ीपर डाका देबेके कोसिस भेल हय, कल तोरासभकेँ होतउ । आ तोँ सभ एहिनती बैसिकऽ चुपचाप तमेसा देखबेँ ?'

तैयो क्यो किछु नहि बजलैक । अपन टोलमे ककरोसँ कोनो मदतिक आशा नहि छलैक, गेनमा बूझि गेल । तैयो हारि मानऽ लेल तैयार नहि छल ओ । ओ अपन टोलसँ उठल आ दुसधटोली दिस चल गेल ।

झलफल अन्हार भऽ गेल रहैक । गेनमा-बहु डेग झटकारने पेठियासँ घुरलि अबैत रहय । एक टा शीशीमे कने किरासन रहैक आ दोसरमे कने कड़ू तेल । नूआक गेठीमे बान्हल कने नोन-मसल्ला रहैक । ओ धड़फड़ायले गफूरगंज बजारक गुमती टपि गेलि रहय ।

गुमतीसँ बलुआही धरि फाँक छलैक । खाली दुनू कात गाछी आ खेत ।

सड़क सोझे उत्तर नहि गेल छलैक । पहिने पूब जा किछु दूर, फेर उत्तरे-दक्षिणे भऽ गेल छलैक । अइ बाटे एकसरि जाइत काल गेनमाक बहुक देह बेसीकाल सिहरि जाइत छलैक ।

आर मौगीसभ पाछुए रहि गेलि रहैक । ओ डेग झटकारने गुमती टपि गेलि रहय । बीच बाटमे आबि पाछाँ तकलक तँ कोनो सुगबुगी नहि लगलैक । ओसभ बड़ पाछाँ छूटि गेलि छलैक । हाट-बजारक लोको घूमि गेल छलैक ।

ओ डेग आरो झटकारलक जे कहुना बस्ती लग पहुँचि जाय । फेर कोनो डर नहि । डर एही फाँकामे ! सेहो आर कथूक नहि, खाली लंका मोहनपुरक मनसा सभक । बूढ़-नव सभ एक्के रंग छैक । एकसरि देखिते झिक्का-तीरी शुरू कऽ देतैक । पेठियासँ घुरतीकाल गेनमा-बहु तेँ सभ दिन हेँजेमे रहैत छलि । एकसरि आगू नहि बढ़ैत छलि अन्हार भेलापर । मुदा आइ सभ पाछुए छूटि गेलि छलैक ।

हवेलीक बात एखनो दोसर छैक । ओतऽसँ एखनो अन्हारो भेलापर बोनि लऽ चल अबैत अछि गेनमा-बहु । कोनो-कोनो उकट्ठी छौँड़ा किछु बजबो कयलकै तँ हँसिकऽ अनठा दैत छलैक । ओतऽ डर खाली महेश मास्टरक आ हुनकर दूत-भूतक । ओकरासभसँ साकांक्ष रहैत छलि गेनमा-बहु ।

मुदा, ओइ साँझ जबर्दस्ती करऽ लगलथिन महेश मास्टर । बुढ़ारी बयसोक कोनो लाज-लेहाज नहि । हाथ पकड़ि कोठलीमे खीचऽ लागल छलथिन तँ पड़ाकऽ बोनि-बुता छोड़िकऽ चल आयलि छलि अङना । गेनमाकेँ कहि देने छलैक ।

सासु ओकरेपर बिगड़ऽ लागलि छलैक । गेनमा काजपर नहि गेलैक, महेश मास्टर बिगड़िकऽ आङनसँ चल गेलैक । ओ अबस्से कोनो कुचक्र रचतैक । गेनमा-बहुक हृदय आशंकित छलैक ।

आब लागि रहल छलैक जे अनेरो गेनमाकेँ कहलकै ! चुप्पे रहि जाइत, सैह नीक । एकदम्म सोझेसाझी कहि देलकै महेश मास्टरकेँ । अबस्से कोनो काण्ड करतैक ओ ।

फेर अपन मरदपर गर्वसँ छाती सेहो फूलि उठलैक-'मर्द हय हमर गेनमा ! ने तँ ठीके तँ कहलक हमर सासु ! के चिन्ता करै हइ टोलमे जे ककर हाथ पकड़लकै हवेलीमे आ ककरा घीचिकऽ कोठलीमे ले गेलैक ? दिनभरि कमा-खटा साँझमे मनसासभ ताड़ी पीबि मस्त हो जाइत हइ । मौगीसभ हवेलीसँ बोनि अनै हइ, कुटान-पिसान करै हइ आ रान्हिकऽ मनसाक आगूमे राखि दै हइ । पेट भरिते आ

ताड़ीक अद्धा पेटमे जाइते थाकल मनसा टूटि पड़ै हइ मौगीपर आ फेर निफिकिर हो फों॑फ कटै हइ खाली मॉंटि आ चटकुन्नीसभपर ! मौगीकें॑ दुख-सुख कब्ब सुनतैक मनसा ? ओकर इच्छा मरलैक आ निचिन्त हो गेलैक । मौगीसभ सॉंझ-परात झौहरि करऽ हइ, गारी-गरौज करऽ हइ आ मनसा जखन लग घीचै हइ निशामे बुत्त, तऽ चैनसँ पसरि जाइ हइ ।

गेनमाक बहुकें॑ बड़ गर्व भेलैक अपन पुरुषपर–'सत्ते गेनमा ओहन नहि हय ! ओकरा खाली अपने भूख से मतलब नै हइ । ओ हमरो सुख-दुख बुझै हय। ओ जान दऽ देत, मुदा अनका लग उघार नहि होअऽ देत हमरा ।'

अपन सासुपर ओकर घृणा आरो बढ़ि गेलैक–'केहन निर्लज्जी हय बुढ़िया ! अहू वयसमे केहन-केहन बिखिन्न-बिखिन्न हँसी-मजाक करै हइ सभसँ ! हवेलीक पुरुष, चाहे ओ नान्हि गो बच्चे रहै, लल्लो-चप्पो करै लगै हय–अहूकें॑ चाही बौआ ! ताकि दू एक गो !'

कखनो कोनो बुढ़बेकें॑ पकड़ि लेतै–'कनियाँ मरि गेली मालिक ! बहुत दिन हो गेल । मौगीकें॑ मोन होइ हय, ताकि दू अहूँकें॑ एक गो ! बुढ़िया से काम चलत तँ एक गो छीहे हम ।'

आ, फेर निर्लज्ज निरघिन हँसी हँसतैक । सूनिकऽ आगि लागि जाइत छैक गेनमाक बहुक देहमे । अधिक काल ओ संगे रहैत छैक आ ओकरा संग रहलापर बुढ़िया आरो सहकाबऽ लगैत छैक छौ॑ड़ासभकें॑ ।

आ, ओइ दिन तँ साफे कहि देलकै 'मनसाक पँजरासे उठाके ले गेलैक ओकरा आ मनसा कछने पड़ल रहलैक । अपन बड़की पुतहुकें॑ अपने हवेली पहुँचा अयलै ! धन्न है इहो बुढ़िया !'

मुदा, गेनमा बड़ मानै अछि अपन मायकें॑ । गेनमाक बहुकें॑ नीक जकाँ बूझल छैक । तीनू जेठका बेटा एक्को साँझ खायो लेल नहि पुछैत छैक । छोटका बेटा गेनमा रखने छैक अप्पन आङनमे । कहियो काल कोनो कटनीमे, कोनो मकानक जोड़ाइ लेल गिलेबा उघऽमे बुढ़ियो कमा लैत अछि । मुदा गेनमा भूखल नै रहऽ दै छै बुढ़ियाकें॑ । जे कमाकऽ लबै अछि, तीनू गोटे बाँटि-कूटि खा लैत अछि ।

गेनमाक बहुकें॑ नहि सोहाइत छलैक बुढ़िया । आइ गेनमो डँटलकै–'चुप्प रहऽ बुढ़ियो !' आइ धरि माय छोड़ि आर किछु नहि कहने छलैक । बुढ़ियाकें॑ लागल हेतैक नीक जकाँ ।

जोरसँ ठेस लगलैक । गेनमाक बहु पयर पकड़ि बैसि गेलि । सोनित बहऽ लागल छलैक । क्यो बाटेपर ईंटा राखि देने छलैक । बहैत सोनितकें॑ बन्द करबा लेल बाटपरक माँटि तोपि देलकै बहुत रास आ फेर ऊठिकऽ डेग झटकारलक ।

अपन टोल पहुँचैत-पहुँचैत नीक जकाँ अन्हार भऽ गेल रहैक । आङनमे बुढ़िया पड़लि खों॑-खों॑ करैत बीड़ी पीबि रहलि छलैक जकरा भुकभुक आङनक अन्हारोमे देखलकै । कोठलीमे जा ठेकनाकऽ राखल डिबिया तकलक आ ओइमे शीशीक किरासन अन्दाजसँ अन्हारेमे ढारि दियासलाइ जरा डिबिया लेसि लेलक ।

फेर चुल्हि पजारऽ लागलि । भोरे खयलक मनसा । भुखायल हेतैक ! ओ हब्बर-हब्बर करऽ लागलि । आइ कोनो काजोपर नहि गेलै । नहि जानि, किम्हर गेलैक ? तामसे मोन घोर छैक, कोनो काण्ड ने कऽ बैसैक ! ओकर अन्देसा बढ़ल गेलैक जकरा दबा ओ भानस-भात कयलक । मोट-मोट रोटी पका लेलक आ बाड़ीमे दू-चारि टा भाटा छलैक, तकरे तोड़ि पका नोन-तेल दऽ साना कऽ लेलक । गेनमा तैयो नहि अयलैक । सामनेक छोटकी घरमे बुढ़िया एखनो पड़लि खों॑-खों॑ कऽ रहलि छलैक । टोलमे पिलुआ वा नेङड़ाक बहुमे गारि-गरौज मचल छलैक आ ताड़ी पीबि बहदुरा अपन बहुएपर बहादुरी देखा रहल छल । मुदा गेनमाक कतहु पता नहि छलैक । गेनमाक बहुक मोन छटपटा रहल छलैक । ओकर ध्यान दुनू मौगीक गारि-गरौज आ बहदुराक घिनौन गारि आ मारिपर नहि छलैक । ओ आशंकापूर्वक गेनमाक प्रतीक्षा कऽ रहलि छलि ।

बड़ी काल बीति गेलैक । गेनमाक कोनो पता नहि छलैक । ओकरा नहि रहि भेलैक । बुढ़िया लग जाकऽ टोकलकै–'ओ' अखनी ले नै घुरल हइ । कने देखे वास्ते भेजौ नै ककरो !'

बुढ़िया कुनमुना उठलैक–'मर ! हम ककरा भेजबै एतना रात के ? एतेक बेगरता हउ तऽ जो अपने । आगि लेसलें॑ अपने आ पानी ढारतौ कोइ आर !'

तामसे किछु कहऽ जा रहल छलै गेनमा-बहु कि क्यो दौड़ले आङनमे अयलैक । यदुआक बेटा कलुआ छलैक । दौड़ैत-दौड़ैत हाँफऽ लागल छलैक । ओहिना हफैत बजलैक- 'गेनमा काकें॑ बान्हि के रखले हइ ड्योढ़ी के लोक । बहुते आदमी गेलै हय । दुसधटोली से चौकीदारकाका सेहो गेलै हय । कहलकै, चोरी कयले हइ । चलान करतै ।'

गेनमा-बहुसँ पहिने यदुआ-माय छड़पिकऽ बैसि रहलैक–'भेलै एकर

कलेजा ठण्डा ! इहे वास्ते सहकोले रहलै ओकरा ! जो आब, छोड़ा लबहिक ।

गेनमा-बहु सासुक बात सुनऽ लेल अङनामे ठाढ़ि नहि छलै । ओ तँ लगले दौड़लै कलुआक हाथ पकड़ने-'कने आ तऽ कलुआ हमरा जौरे !'

कलुआ ओकर सङ दौड़लैक । गेनमाक बहु बताहि जकाँ दौड़ि रहलि छलैक धारक दिस । हेलाव पानि छलैक । हेलि गेलि आ फेर दौड़लि । खसैत-पड़ैत दौगले चल गेलि ।

गेनमाक बात दुसधटोलिएमे क्यो नहि मानलक । ओ घरे-घर बौआइते रहि गेल ।

बचनुआ साफ-साफ जबाब दऽ देलकै-'मास्टर साहेब तोहर मालिक हउ, तोँ जान । हम तऽ हरिश्चन्द्र बाबूक पट्टीमे छी । तोरा मालिक के वास्ते हम अपन मालिकक काम किए छोड़ू ? काज छोड़ू आ भूखे मरू ! बढ़ियाँ रस्ता सिखा रहल छेँ गेनमा हमरा !'

भुल्ला तँ ओहूसँ रुच्छ जबाब देलकै-'तोहर माथ खराप हो गेल हउ गेनमा ? बहुक इज्जतिक नामपर नेतागिरी करे चाहै छेँ ? ने इज्जति रहतौ, ने नेतागिरी । ई गाम बाबू-भैयाक हइ, अइमे छोटका लोकक नेतागिरी नै चलतौ । जो कल्ल-बल्ल माँफी माङि ले मालिक से आ काज शुरू कर । अङनाबाली के सेहो हवेली भेज दही...'

चौकीदार ढोढ़बा कहलकै-'तोरे नीक वास्ते कहै हउ सभ । अनेरो फसाद नहि ठाढ़ कर । घर-घराड़ीसभ छिना जेतौ । भूखे मरबेँ आ सभ तोहर इज्जतिक तमाशा देखतौ । बात मानि जो आ माँफी मागि ले मालिक से ।'

गेनमा तैयो अड़ल रहल । कथीक माँफी ? कसूर की हय हमर ? घरवालीसे जबर्दस्ती करे चाहलक आ ओ नै मानलकै से हमर कसूर ? हम मजदूर छी, जहाँ मोन होत, काम करब । नै गेलिऐ ओकराकिहाँ बेगारी बास्ते, से हमर कसूर ? निसाफ करौ ईसभ । कोन कसूरक माँफी मङिऔ हम ?'

ढोढ़बा बिगड़िकऽ कहलकै-'बेसी पिंगल नहि पढ़ गेनमा ! हमहूँ सभ बुझै छिऐ जे कसूर ककर हइ । मुदा हमरा इहो बुझल हय जे हमरा की करै चाही ।

दोसरा के कहलापर अपन घर नै उजाड़ि लेबै हम । तोरा बड़ अखरै हउ ई अन्याय, तऽ के ले फैसला मालिक से, हम किए जैबौ ओइमे ? हमर मालिक छथि गोवर्धन बाबू आ हुनकर बेटासभ । तोँ तऽ लालबाबूक पट्टीमे छेँ, हुनकेसँ निसाफ माङ । मालिकसभ लग नहि जयबेँ तऽ पंचायतमे जो, मुखियाजी के बोलहुन । हमरासभके पास किए भाषण कयले छेँ ? जो अपने टोलमे, ओकरेसभ से काज बन्न कराले पहिने ।'

गेनमा बुझि गेल जे व्यर्थ चेष्टा कऽ रहल छल । सौँसे खतबेटोली आ दुसधटोलीमे क्यो ओकर सङ नहि देतैक । ओकरा एकसरे फैसला करऽ पड़तैक, चाहे जेना होइ ।

ओ अन्हारेमे दुसधटोलीसँ बहरायल आ धार टपि गेल । एक बेर फेर हवेलीमे चेष्टा करत । लालबाबूकेँ कहतनि । रविबाबूकेँ फेरसँ कहतनि जे हमर बाड़ी-झाड़ीकेँ बचा दियऽ मास्टर साहेबक चालिसँ । गरीबक दू कट्ठा जमीन हड़पलासँ कोनो मातबर नै भऽ जायब अहाँलोकनि ।

-'एतेक रातिकेँ कतऽ जाइ छेँ गेनमा ?' टोकलकै क्यो तँ ओकर ध्यान टुटलैक । महेशबाबूक जासूस गुणाकर छलैक । नहि जानि किएक पछोड़ धऽ लेने छलैक । ओ डेग तेज करैत कहलकै-'ओहीनती । कने काम हय ड्योढ़ीमे ।'

गुणाकर फेर नहि टोकलकै । ओकर सङ एक टा आर क्यो छलैक से अन्हारमे दौड़िकऽ आगू चल गेलैक । गेनमाक इच्छा भेलैक जे घूरि जाय । मुदा एतेक दूर आबिकऽ घुरि जायब सेहो कोनादन लगलैक । ओ आगू बढ़ैत गेल ।

नामी बाबूक घर लग अबिते चरू दिससँ लोकसभ दौड़लैक- चोर-चोर ! सङे-सङे अबैत गुणाकरो चिचिया उठलैक- चोर-चोर । फेर ककरो लाठी माथपर लगलैक, फेर दोसर-तेसर.... । तकर बाद होश नहि रहलैक । ओ ओतहि ओंघरा गेल ।

होश भेलैक तँ ओ नामी बाबूक दरबज्जापर ओंघरायल छल घासपर । दुनू हाथ पाछाँ पीठपर बान्हल छलैक आ पयरो रस्सिएसँ बान्हल छलैक । चारू कात भीड़ जमा रहैक-सभक हाथमे लांलटेन । कोनो-कोनोक हाथमे टौर्च । हाथ महक टौर्च ओकर मुँहपर बारैत महेशबाबू कहलथिन-'देखू ने भगल एकर ! मारिक डरे कछने पड़ल छल !'

महेश बाबूक बोलीपर ओकर ध्यान गेलैक जे माथसँ कपारपर टघरि किछु

बहि रहल छलैक । सौँसे देह सोनिते-सोनिताम भेल छलैक । ओ उठबाक चेष्टा कयलक । पयर-हाथ बान्हल रहलोपर कहुना ओंघराइत-ओंघराइत ठाढ़ होयबाक चेष्टा कयलक । मुदा प्रयास व्यर्थ गेलैक ।

ओकर ओइ चेष्टापर गुणाकर बजलाह-'एकदम सेन्हा-चोर अछि बाबू ! देखू ने, हाथ-पयर बान्हलो छैक, तैयो केना उनटि-पुनटि रहल अछि ! एहन अन्हेर नै नै देखल अछि । साँझे-रातिमे एकदम बखारिएपर हमला ! ओ तऽ जहाँ धान भुभुआ कऽ खसलैक, हमर कान ठाढ़ भेल बाटपर । हाथमे लाठी रहय । ओही ठाम बखारिए लग सुता देलिऐक ।'

गेनमा जोरसँ बाजल-'एकदम झूठ बात । बाटेपर अनेरो पीछे से लाठी मारलनि हमरा आ ऊपरसँ झूठ-मूठ चोरी के इलजाम ! कोनो बखारी-तखारी नै कटने छिऐक हम ।'

-'चुप्प चोरा !' लाठीक एक हूर गुणाकर फेर गेनमाक पाँजरमे देलथिन आ ओ गैंचिकऽ ओंघरा गेल ।

रवियो ओहि ठाम हल्ला सुनि पहुँचि गेल छल । गेनमाकेँ ओना गैंचिकऽ खसैत देखि बाजल-'एना नहि मारियौ । बात तऽ सुनियौ जे की कहैत अछि ?'

गुणाकर आँखि तररैत बजलाह-'मारियौक नहि ? ई की बाजि रहल छी अहाँ ? चोरबाक बात सुनबै ? ओकरा तऽ खाल खीचि लेबै जीविते ।' ओ देलथिन फेर एक हूर । गेनमा किकियाकऽ रहि गेल । रविकेँ क्रोध भेलैक आ बीचमे अबैत बाजल-'अनेरो बहादुरी नै देखाउ । चोरी कयने अछि तऽ सजाय भेटबे करतैक । एना जान नहि लियौक एकर ।'

महेश बाबू रुष्ट होइत कहलथिन-'तोँ बीचमे नहि बाजह रवि ! तोँ चीन्हैत नहि छहक एकरासभकेँ । बिन बुझने-सुझने अनेरो पक्ष लऽ सहकबहक नहि ।'

रवि बुझबैत कहलकनि-'पक्ष लेबाक सबाल नहि छैक मास्टरकाका ! सबाल छैक सत्य-असत्यक फैसलाक । चोरोकेँ अपन बात कहबाक अवसर भेटबाक चाहिऐक । मारि-मारिकऽ जान लऽ लेलासँ एकर प्रतिकार संभव नहि छैक ।'

महेश बाबू कने बेसी रुष्ट स्वरमे कहलथिन-'तोँ चौदह वर्ष बाद गाम घूरल छऽ रवि, मुदा लक्षण एखनो तोहर ठीक नै बुझाइ छऽ । अनेरो सभ बातमे टाङ अड़बैत छऽ-कहियो स्कूलक पढ़ाइ, तऽ कहियो सर्वेक झमेला । आ, आब

खुल्लम-खुल्ला छोटका लोककेँ सहकेबहक, से नै बर्दास्त करबऽ हमरालोकनि । एकरा चलान हम अबस्से करबैक ।'

रवि अपन तामस रोकैत कहलकनि-'अहाँ हमरापर निरर्थक आरोप लगा रहल छी मास्टरकाका ! ई बात ठीक जे अहाँ जकाँ छोटका लोक आ बड़का लोक हमर शब्दकोषमे नहि अछि । हम सभ लोककेँ एक्के रङ बुझैत छिऐक । बरसो अपने वैह सभ काज कऽ आयल छी, जकरा अहाँ छोट काज कहैत छिऐक । मुदा चोरिकेँ प्रोत्साहन हम कहियो ने देबैक । गेनमा चोरी कयने अछि तँ ओकरा अबस्स सजाय भेटतैक । मुदा पहिने ओकर अपराध प्रमाणित होबऽ दियौक ।'

गुणाकर छड़पि उठलाह-'हद कयल अहूँ रविबाबू ! सेन्हेपर पकड़लिऐक हम आ तैयो अपराध प्रमाणित हैब बाँकिए छैक ? एकर तऽ हाथ-पयर काटि लेबाक चाही । एकदम सेन्हा-चोर अछि । बखारीक पेनी काटि ओहिमे छिट्टा लगौने छल । देखियौ बखारीक नीचाँ भुभुआयल धान आ ओतऽ पड़ल एकर छिट्टा आ हाँसू । आरो कोनो प्रमाण चाही अहाँकेँ ?'

रवि कहलकनि-'हमरा कोनो प्रमाण नहि चाही । प्रमाण कचहरी आ पंचक सामने उपस्थित करब । तैयो एक टा बात पुछैत छी, अन्हारमे अहाँ कोना बूझि गेलिऐ जे बखारी लग गेनमे अछि आ एखन जे छिट्टा आ हाँसू पड़ल छैक ओतऽ, से गेनमेक छैक ?'

महेशबाबू तरङि उठलथिन-'अपन ओकालति बन्द करऽ रवि ! न्याय आ पंचैती हमरोलोकनि बुझैत छिऐक । तोहर रङ-ढङ ठीक नहि देखि रहल छियऽ हम । लाल, कने लऽ जैयनु हिनका एतऽसँ, अनेरो बात बढ़ा रहल छथि ।'

लालकाका आगू अयलथिन-'चलऽ रवि, अङना चलऽ । अइ गामक हाल-चाल तोरा नहि बूझल छऽ, बड़ दिनपर गाम आयल छऽ । अनेरो अइमे किएक पड़ैत छह ?'

रवि ओतऽसँ विदा होबऽ लागल । ताबे दुसधटोलीसँ ढोढ़बा चौकीदार आबि गेलैक । ओकरा देखिते महेश बाबू कहलथिन-'चलान करऽ अइ चोरकेँ । बजा ला दफादारकेँ ढोढ़बा !'

रवि महेशबाबूक दरबज्जासँ ऊठिकऽ चल आयल !

सभक सामने महेश बाबू ओकरा अप्रत्यक्ष आ प्रत्यक्षो रूपेँ बात कहलथिन। ओ ओकर विरोध करऽ चाहैत छल । मुदा ओकरा ओतऽसँ ऊठिकऽ चल आबऽ पड़लैक, एहि दुआरे नहि जे लालकाका मना कयलथिन । एहि दुआरे जे अपन बातक कोनो समर्थन ओकरा उपस्थित जन-समुदायसँ नहि भेटल छलैक । सभ ओकरा चोरक समर्थक बूझि रहल छलैक ।

नहि जानि किएक, ओकर मोन गेनमाकेँ चोर मानबा लेल तैयार नहि भऽ रहल छलैक । दिनमे ओकरे सङ सर्वेआफिस गेल छलैक गेनमा । ओ अपन बाड़ी आ बासक रक्षा चाहैत छल, जकर उपभोग ओ कैक पुश्तसँ कऽ रहल छल । महेश बाबू ओकरे हड़पबाक धमकी दऽ आयल छलथिन ।

गेनमा चोर किन्हु नै भऽ सकैत छल । ओकरामे स्वाभिमान छैक, साहस छैक । मुँहेपर कहलकनि महेश बाबूकेँ जे आब अहाँक काज नहि करब, हमरोसभक इज्जति अछि । इज्जति दऽकऽ फेकल रोटीक टुकड़ी हमरा नहि चाही। ओ साफ-साफ कहि देने छलनि ।

रवि ओकर मदति करऽ चाहैत छलैक, मुदा सर्वेआफिससँ घुरैत काल ओकर अपने मोन ओहिना आहत छलैक । लालकाका अपन जेठ भाइकेँ निस्संतान लिखा सभ टा नक्शा अपन नाम करा लेले छलथिन सर्वेमे । रवि हुनका लेल मरि गेल छल ।

कहलकनि तँ कानऽ लगलथिन लालकाका–'तोहर अमंगलक कामना करबह हम ! अखनो एतेक नीच नहि भेल छी !' रविकेँ कनैत लालकाकी मोन पड़लथिन–'ई हरहरी बज्र कहाँसँ खसल ?' आ, कनैत लालकाकाकेँ देखि ओकर मोन घृणासँ पचपचा उठलैक ।

ओकरा सम्पूर्ण गामेसँ घृणा भऽ गेल छलैक । सर्वेआफिस जयबाक समाचार जेना बिजली जकाँ सौँसे गाममे पसरि गेल छलैक । रवि अपन कोठलीमे एकसरे बैसल छल कि चोर जकाँ नुकाइत महेश बाबू अयलथिन–'तोरे तकैत छलियह रवि !'

रवि ऊठिकऽ जगह दैत कहलकनि–'की बात छैक मास्टरकाका ?'

महेश बाबू फुसफुसाकऽ कहलथिन– 'बात तँ तोरो सभ टा बुझले भऽ गेलह आब । गेले छलऽ सर्वेआफिस । ओही दिन हमरालोकनि विरोध कयने

छलियनि लालक जे एना नहि करऽ । ओ कहलनि जे चौदह वर्ष भेलैक, रविक कोनो पता नहि छैक । आब ओकर घुरबाक आशा व्यर्थ ! श्राद्ध करबा लेल भाइ तैयार नहि भेला, नहि तँ सेहो करबा दितिऐक । हमरालोकनि चुप्प रहि गेलहुँ ओइ दिन । मुदा आब चुप्प नहि रहबनि । तोहर अधिकार तोरा भेटबेक चाही । लालक नेतिमे खोट आबि गेल छनि, हमरा बूझल अछि । मुदा तोँ निश्चिन्त रहऽ, जाधरि हम छी, तोहर हक नहि मारि सकैत छथुन लाल ।'

रवि कोनो उत्तर नहि दऽ सकलनि । अइ आकस्मिक सहानुभूतिक कोनो अर्थ नहि लागि रहल छलैक ।

महेश बाबू अपने कहलथिन–'एक टा काज तोँ करऽ रवि ! हमर घर लग जे पुरना घराड़ी छैक दस कट्ठा तोहर पट्टीक, तकरा तोँ लिखि दैह हमर नामसँ। लालकेँ किछु नै कहियहुन । ओ भारी चुट्ट छथि । कतेको बेर कहलियनि, तैयारे नहि होइत छथि । ओ घराड़ी तोँ हमर नाम लिखि दैह, आ देखहुन जे कोना हम लालक सभ टा बुधियारी घोसाड़ि दैत छियनि !'

रविकेँ सहानूभूतिक अप्रत्याशित बाढ़िक अर्थ लागि गेलैक । किछु रुच्छे स्वरमे कहलनि–'हम की जानऽ गेलिऐक जमीन-जथाक हाल-चाल ? सभ टा तँ लालेकाका जनै छथि । हुनकेसँ लिखा लियऽ ने ! हम कहबनि हुनका, हमरा कोनो आपत्ति नहि ।'

महेश बाबू ओहिना फुसफुसाइत कहलथिन–'सभ टा लाहैब करबऽ तोँ । लालकेँ किएक कहबहुन तोँ ? आधाक मालिक छऽ तोँ । लिख दैह ने तोँ, बाँकी सभ टा हम बूझि लेबनि । तोँ निश्चन्त रहऽ ।'

आब साफे-साफ कहऽ पड़लैक रविकेँ–'ई लिखा-पढ़ीक हाल लालेकाका कहताह । हमरा कोनो काज नहि अछि आधा हिस्साक । एकसर छी, खाइत छी आ पड़ल रहैत छी । अनेरो जमीन-जथाक झंझटिमे के पड़य ?'

महेश बाबू रुष्ट भऽ चल गेलथिन । रवि तखने बूझि गेल जे हुनकर रुष्ट होयब ओकर किछु अपकारे करतैक । मुदा गाममे ककरोसँ कोनो उपकारक आशा ओ छोड़ि देने छल ।

मुदा लोक आशा नहि छोड़ने छल । महेश बाबूक बाद ओहिना नुकाइत हरिश्चन्द्र चौधरी आयल रहथिन–सरपंच हरिश्चन्द्र चौधरी । अबिते कहलथिन–'तोँ तँ किम्हर रहैत छऽ रवि, भेटो-घाट नै होइत अछि । एतेक वर्षपर गाम आयल छऽ

तैयो जेना गामसँ कोनो मतलबे नहि होअऽ ! हौ, हमरालोकनि जखन छी, तखन चिन्ता किएक करैत छऽ ? जेहने रामभाइ तेहने हमरालोकनि । तोँ निश्चिन्त रहऽ। अप्पन पित्ती किछु कुचक्र रचने छथुन, तेँ सभ पित्तीकेँ तोँ बैमान मानि लैह, ई तोहर अन्याय हेतह । न्याय लेल एखन छी हम गाममे ।'

हरिश्चन्द्र चौधरीक न्यायक कथा ओकरा जानल-सूनल छलैक । मुदा हुनकर अयबाक उद्देश्य ओ नहि बूझि सकल तत्काल । कहलकनि–'अहीँ लोकनिक स्नेह लेल तँ घुरल छी गाम हरीकाका ! आर अछिए के हमर ?'

हरिश्चन्द्र चौधरी बड़ स्नेहसँ कहलथिन–'एना नै बाजी । के नहि छऽ तोहर ! भरि गाम तोरे छऽ । सभ टा इलाका तोरे छऽ । बाप-दादाक बसाओल परोपट्टा छऽ ई, एकर सभ लोक तोरे छऽ । आ अखन वयसे की भेल छऽ तोहर ? विवाह करबऽ, परिवार हेतऽ । सभ टा हेतऽ । अखन कोन अबेर भेल छऽ ?'

रविकेँ एतेक स्नेह भीतरसँ पघिला रहल छलैक । मुदा ओ विश्वास नहि करऽ चाहैत छल । ओकरा लागि रहल छलैक जे अबस्से कोनो विशेष अर्थ छैक अइ आत्मीयता आ स्नेहक ।

अर्थ छलैक । अपने स्पष्ट कयलथिन हरिश्चन्द्र चौधरी । कने लग सटि आस्तेसँ कहलथिन–'लालकेँ हम तेहन पटकनियाँ देबनि जे होश नहि हेतनि फेर। तोरा चिन्ता करऽक नहि काज । तोँ खाली सभ टा 'पावर आफ एटोरनी' हमरा दऽ दैह, सभ टा बेच-बिकिन करबाक अधिकार । फेर तोँ निश्चन्त बैसबह गाममे आ नाच नचता लाल ।'

रविकेँ एकरे प्रतीक्षा छलैक । हरीकाका अपनै असल रंगमे आबि गेल छलथिन । हुनका सभ टा बेचबा-बिकिनबाक अधिकार चाहियनि । सभ टा रजिस्ट्री लिखा-पढ़ी करथिन ओकर नाम आ ओकर हिस्साक रक्षा करथिन लालकाकासँ ? ओ हँसबाक चेष्टा करैत कहलकनि–'हमरा की फैदा हैत लालकाकाकेँ नाच नचाकऽ ? आ, हिस्सा लऽकऽ की करब हम ? लालकाकाक छनि तऽ हमरे अछि। अहाँ चिन्ता नै करू हरीकाका ! हमरा कोनो दुख नहि अछि गाममे, बेस सुखी छी हम । अहाँलोकनि छीहे, तखन चिन्ता कोन ?'

हँसब पार नहि लगलैक । घृणासँ मोन ततेक पचपचा उठलैक जे बाहर जाकऽ बोकरि देबाक इच्छा भेलैक । मुदा ओ बैसले रहल ।

हरिश्चन्द्र चौधरी ठाढ़ होइत कने रुष्ट स्वरमे कहलथिन–'तोरे नीक लेल

कहैत छलियऽ, निश्चिन्त भऽ अइ गाममे रहितऽ, तोरा नहि पसिन्द छऽ तँ बड़ बेश । अपने पता चलि जेतह ।'

जाइत-जाइत स्पष्ट धमकी दऽ गेलथिन–'अपने पता चलि जेतह ।' गामक सरपंचक धमकी । रवि जनैत छल– अइमे अर्थ छलैक । मुदा गामक सभ टा बात ओकरा लेल ओही क्षण अर्थहीन भऽ गेल रहैक जखन ओ लालकाकीक कानब सुनने छल । जे अपन दूध पिआ पोसने छलथिन, से ओकर घूरिकऽ गाम चल आयलापर कानलि छलथिन । रवि अपने कानसँ सुनने छल आ तहियासँ किछुओ सूनिकऽ ओकरा आश्चर्य नहि होइत छलैक ।

बेर-बेर एक्के टा बातक आश्चर्य ओकरा होइत छलैक । ओ गाममे किएक छल ? कोन लोभ ओकरा बान्हिकऽ रखने छलैक ? घुरल छल बाबूसँ भेँट होयबाक आशामे । मुदा आब ? आब किएक बैसल छल ओ गाममे ? ओकरा घूरि जयबाक चाहिऐक ।

यैह बात ओइ दिन कविताकेँ कहि देलकै रवि । गाम अयलाक बाद दोबारा कवितासँ भेँट नहि भेलैक । एक दिन भेँट भेलैक आ लगलैक जेना कविता ओकरा शुद्ध मनसँ क्षमा कऽ देने छैक, ओकर मोनमे ओकरा लेल कोनो प्रतिशोध वा प्रतिहिंसाक भाव नहि छैक । रवि तकर बाद अपनाकेँ हल्लुक अनुभव कयने छल आ नव ढंगसँ जीबाक, काज करबाक चेष्टा कयने छल ।

ओ चेष्टा बेर-बेर निष्फल भेल छलैक । जाहि अपराध-बोधक पाथर ओकर छातीपर छलैक चौदह वर्ष, ओकरा उतारिते एक टा ओहूसँ पैघ पाथर छातीपर खसलैक । पहिने लालकाकीक कानब ! फेर लालकाकाक प्रति उपजल शंकाक पुष्टि आ तखन सम्पूर्ण गाममे पसरल स्वार्थ-लोलुप व्यवहार । ओकर आत्मा फेर एहि वातावरणसँ मुक्तिक लेल छटपटा उठल छलैक । ओइ दिन महेश बाबू आ हरिश्चन्द्र चौधरीक गेलाक बाद तँ जेना ओ निर्णय लऽ लेने छल ।

आ, कविताकेँ कहि देने छलैक । नहि जानि किएक, ओकर डेग उतरबारि टोल दिस बढ़ि गेल छलैक । कविताक घरसँ आगू बढ़ि गेल छल । एक बेर तकने छलैक । मुदा क्यो बाहरमे नहि छलैक । एकदम सुन्न छलैक । आङनमे होयतैक कविता । रवि सोचियोकऽ आङनक भीतर पैसबाक साहस नहि कयलक । ओ आगू बढ़ि गेल ।

तेजूक दोकान दिस गेल । लेसिकऽ लालटेन टाङल छलैक दोकानमे आ

बैसार जमल छलैक । तेजूक जेठका बेटा दोकानमे बैसल छलैक आ तेजू अपने गप्पमे लागल छल । ओकरा देखिते कहलकै– 'आ भाइ ! आइ फेर कोना मोन पड़लौ ई दोस्त !'

ठीके, कतेक दिन भऽ गेल छलैक ओम्हर गेना ! रवि बैसैत कहलकै–'ओहिना बाझल रही झूठ-फूस काजमे । मौके नहि भेटल । सुना अप्पन, की हाल छौक ?'

तेजू उसाहपूर्वक कहलकै–'अइ ठामक हाल तँ आब एक्के बेर कहबौक भाइ ! कहुना अइ एकबाली चौधरीसँ मुखियाक गद्दी छीनऽ दे । वोट नजदीक आबि रहल छैक । तोँ गाम आबि गेल छैँ । तोरो मदति करऽ पड़तौक ।'

रवि हँसिकऽ कहलकै–'हमर मदतिसँ तँ भारी फायदा हेतौक ! जेहो बोट भेटबाक, सेहो नहि भेटतौक । हम छी भगौआ-पड़ौआ लोक, श्राद्धो कऽ देबक चाहैत छलैक हमर । हमरा के चीन्हत गाममे आ के देतौक भोट हमर कहलासँ ?'

तेजू सहानुभूतिपूर्वक कहलकै–'बेकारक बात बजै छैँ तोँ । तोँ भगौआ-पड़ौआ लोक किएक रहबेँ ? आ, तोँ छैँ पढ़ल-लिखल लोक, हमर हाल तँ बुझले छौक । इलाकामे तोहर कहबाक बहुत असरि हेतैक । कहुना अइ बेर एकबलियासँ गद्दी छिनबाक अछि । एतेक वर्षसँ हथियाकऽ महंथी कऽ रहल अछि । सभ टा बड़का ठीका अपने लैत अछि, सभ टा रिलीफ बँटबारामे अधिया मारि लैत अछि । हरिश्चन्द्र बाबू अपन सरपंचीसँ प्रसन्न रहैत छथि । दू टा कौरा फेकि दैत छनि, ओहीमे तिरपित ।'

दरबज्जापर बैसल आर लोकसभ तेजूक समर्थनमे टीपऽ लगलथिन । लंका मोहनपुरक प्रति आक्रोश बहार होबऽ लगलैक ।

बंगट मिसर कहलथिन–'तेजू बाबू ठीके कहैत छथि । ई एकबाली भितरिया घाघ अछि । ऊपरसँ मीठ-मीठ बोल आ भितरे-भितरे रेति देत ! देखू ने ओकर चलाकी ! आस्ते-आस्ते सभ किछु अपने पार लऽ गेल । पंचायत आफिस बनबौलक, मलेरिया सेन्टर, कम्युनिटी हौल, पोस्टआफिस–सभ टा लऽ गेल लंका मोहनपुर ! हमरालोकनि मुँहे देखैत रहि गेलहुँ ।'

अशर्फी झाकेँ भेलनि जे तेजूक समर्थनमे ओ पछुआ गेलाह । झट कहलथिन–'से तँ ठीके । सभ टा मुङबा खयलक एकबाली, हमरालोकनि मुँह तकैत रहलहुँ । ऊपरसँ हरिश्चन्द्र बाबू कहताह जे हमर पीठ ठोकू–पाँचे सय भोटमे सरपंचीक गद्दी लऽ अनैत छी । जेना हमरालोकनि किछु बुझिते नहि छिऐक !

दलाल छथि ओ एकबालीक । अहूँक दोकानमे ओ ओकरे दलाली लेल बैसल रहैत छथि जे एतुक्का सभ टा गप्प जाकऽ ओकरा कहथिन आ दू टा कौरा देतनि ।'

तेजू बुधियार जकाँ हँसल–'सैह तँ छैक असल चालि ! हुनका सामनेमे कहले अही लेल जाइत छैक ओ बातसभ जे अइ बेर तैयारी छैक गद्दी छिनबाक । आ तेँ देखहक अइ बेर ओकर चालि । पहिनेसँ सभ ठाम घोषणा कऽ रहल अछि–'हम अइ बेर ठाढ़ नहि हैब ।'

बंगट मिसर बीचेमे बात लोकैत कहलथिन–'नाटक करै-ए ओ ! ओ एतेक जल्दी गद्दी छोड़त ! लतियाकऽ हँटयबैक तखने हँटत । मुदा पैतराबाजी खूब कऽ रहल अछि । गफूरगंजमे सभकेँ सनका रहल छैक जे तोँ ठाढ़ हो आ एम्हर हरिश्चन्द्र चौधरी प्रचार करैत छथिन जे पाँचो सय भोट हवेली मोहनपुरमे नहि अछि। पाँचमे डेढ़-दू सय भोट धानुख आ मलाहसभक अछि । ओ भोट तेजूकेँ किन्नहु नहि भेटतनि । साहु लऽ जायत ओ सभ टा भोट ।'

तेजू बीचेमे तरङिकऽ बाजल–'हुनके कहने सभ टा भोट साहुकेँ भेटि जयतैक ! हमरालोकनि बैसल तमाशा देखब ! राड़-रोहिया हमरासभक, भरि साल बोनि-बुतात देबैक हमरालोकनि, आ भोट लऽ जयताह साहु ! देखबनि हमहूँ किने ! हबेली मोहनपुरक बूथपर एक टा भोट किनको नहि हेतनि ।'

अशर्फी झा उत्साहित होइत बजलाह–'से की कहै छी तेजूबाबू ! खाली हवेली मोहनपुरेक बूथ टा किएक, लंका मोहनपुरोक बूथमे अधिया भोट नै लेबनि हमरालोकनि ? हरिश्चन्द्र चौधरी ने परतारैत छै हमरालोकनिकेँ जे लंका मोहनपुरमे दू हजार भोट छै ! मुदा ताहिमे पाँच सय भोट दुसाध-खतबे आ मुसलमानक छैक । ओ तँ हमरसभक जन थिक–अही हवेली मोहनपुरक रैयत ! ओ वोट कतऽ जायत । चमरटोलीमे चारिए घर छैक, मुदा ओहो वोट तऽ हमरे अछि ।'

बंगट मिसर नहलापर दहला देलथिन–'खाली 'छोटके लोक'क भोट किएक, बभनटोलीक भोट सेहो अधिया लेबनि । एतेक रास नढ़ेरसभकेँ जे मिहिर आ नारायण नौकरी दिऔलथिन अछि से बेकारे जयतनि ! सभ गाममे बैसल नढ़ेरपनी करैत छल आ तेसरा दिनपर अप्पन बाप-पित्तीकेँ लठियबैत छल, से सभ आइ बाबू भऽ गेल अछि, सरकारी नोकरी पाबि हाकिम कहबै अछि । से की बेकार जयतैक ? लोककेँ बूझल नहि छैक जे तेजू बाबू तँ खाली नामे लेल छथि, असली उम्मीदवार छथि नारायण बाबू आ मिहिर बाबू ।'

एतेक कालसँ चुप्प बैसल पण्डित बाबू आ फकीर बाबू एक्के बेर बाजि उठलाह–'भारी लंगट छऽ तोहूँ बंगट ! कतऽ की बाजी, कोनो विचार नै । दुनूकेँ सरकारी नौकरी छनि, लाहेब करबहुन । रवि की सोचत ? ओकरा हेतैक जे सत्ते वैह दुनू उम्मीदवार अछि ।'

तेजुओ जोरसँ डँटलकनि–'सत्ते बंगटबाबू, कोनो कंट्रोल नहि रहैत अछि बजबाकाल अहाँकेँ । हम नाम लेल किएक उम्मीदवार रहब ?'

बंगट कने आर बकलेल जकाँ बाजि उठलाह–'से नहि, माने ई कहलहुँ जे टाका-पैसा तँ हुनकेसभक खर्च हेतनि ।'

तेजू जोरसँ बमकि उठल–'टाका हुनकर किएक खर्च हेतनि यौ ? हम कोनो कंगाल छी ! अप्पन बले लड़ब, जनताक समर्थन चाही । अहाँ नहि बुझैत छिऐक । चुप्प रहू ।'

बंगट मिसर चुप्प भऽ गेलाह । तेजूक डाँटसँ हुनका भीतरे-भीतर क्रोध भेलनि–'जेना हमरा बुझले ने होअय जे ककर टाका छैक ! कंगाल नै तँ आर की छी ? दोकानोमे तँ ओकरेसभक टाका छैक आ टाका छैक कमलाक बहुक ! अप्पन की अछि ? सभ टा तँ बेचि-बिकिन खयने छी ।'

रविकेँ हँसी लगलैक तेजूक बुधियारीपर । बुधियार काका मोन पड़लथिन–'सब मूर्खनाथ !' हँसी आर जगजिआर भऽ गेलैक ।

तेजू कने अप्रतिभ होइत बाजल– 'हसलेँ किएक भाइ ? कोनो अनटोटल बजना गेल ?'

रवि अपनाकेँ सम्हारैत कहलकै– 'नै रे, से बात नहि । अपन कपारपर हँसी लागल जे हम ओहिना रहि गेलहुँ आ तोरालोकनि सभ आगू बढ़ि गेलेँ– तोँ, मिहिर, नारायण...

तेजू खूब स्नेह देखबैत कहलकै–'तोँ किएक पछुअयबैँ ककरोसँ ? पढ़ै छलेँ, तैयो सभमे फस्ट छलेँ, खेलोमे सबसँ आगाँ । आइ नहियो नोकरी करै छेँ, तैयो सभसँ आगाँ छेँ । भाइमे एकसर छेँ–आठ आनाक मालिक । पड़तनि भरि गाममे एखनो ककरो एक माथपर एतेक जमीन ?'

जमीनक बातपर रविकेँ फेर सर्वेआफिस मोन पड़लैक, लालकाका मोन पड़लथिन । लालकाकाक भाइ निस्संतान मुइल छलथिन । रवि तँ बाइली लोक छल । नहि, बाइली लोक नहि, मुइल लोकक बौआइत प्रेत ।

ओकरा फेर हँसी लगलैक–एक टा भीजल हँसी । तेजू फेर टोकलकै–'फेर हँसलेँ भाइ ?'

रवि नीक जकाँ सम्हरैत हँसिकऽ कहलकै–'तोरे बातपर हँसी लागल भाइ ! माथपर एतेक जमीन लऽकऽ की करब ? पढ़ने-लिखने रहितहुँ तँ दस लोकमे बजितहुँ, ककरो पढ़बितिऐक ।'

तेजू बुझनुक जकाँ हँसल–'तोँ रहि गेलेँ वैह रवि– रामकाकाक असली बेटा, ओहिना । आदर्शक पाछाँ पागल । बबो तोहर ओहने उदार छलथुन । हमरालोकनि तऽ छोट लोक छी भाइ ! नफा-नोकसान सोचिकऽ कोनो काज करै छी आ बजै छी । हमरा रहैत ओतेक जमीन तऽ हमरा कोनो बातक चिन्ता नहि रहैत ।'

रवि बात बदलैत कहलकै–'चिन्ता तँ हमरो नहि अछि भाइ ! खाइ छी बैसल-बैसल आ पड़ल रहै छी । एकरे जिनगी कहैत होइ तँ आरामेसँ बीति रहल अछि । बीति की रहल अछि, बीतिए गेल अछि । चौदह वर्ष अपने गमा आयल छी ।'

तेजू टोकि देलकै–'कतऽ गेल रहेँ रवि ? किएक पड़ायल रहेँ ? हम तऽ दोस्त छियौ, हमरो तऽ कह ?'

रवि डेरा गेल । बात एक टा एहन बिन्दुपर पहुँचि गेल छलै, जाहिसँ ओ बँचैत आयल छल । शुरू-शुरूमे सभ यैह प्रश्न पुछैत छलैक आ रवि टारि जाइत छल । तेजुओ पुछने छलैक आ रवि टारि देने रहैक । आब ई प्रश्न पूछब लोक छोड़ि देने छलैक । आइ फेर अकस्मात् सभक सामने तेजू वैह प्रश्न पूछि बैसलैक । रवि उठैत कहलकै–'आब आइ चलै छी भाइ !'

तेजू हाथ धऽ बैसा देलकै–'अरे, तऽ जाइ किएक छेँ ? नहि कहबेँ तऽ नहि कह । हम तऽ ओहिना पुछने छलियौक, कोनो जिद थोड़े छल हमर !'

रवि बैसैत कहलकै–नै, ताहि लेँ नहि ! ओहिना । अबेर भेल आब ।'

मुदा, रवि उठल नहि । बैसले रहल । गप्प फेर मुखियाजी आ चुनावेक शुरू भऽ गेलैक । चाह सेहो आबि गेलैक ।

चाह पीबि डाँट खाकऽ सुटकल बंगट मिसर फेर सुगबुगयलाह–'हमर बात अहाँलोकनिकेँ अधलाह लागि गेल । मुदा सुपत बात हम कहबे करब । तेजू बाबूकेँ जाबत दस गोटेक मदति नहि हेतनि ता कोना जितताह ? एसगर महेश बाबूक बलेँ तऽ सभ टा नहि भऽ जयतनि ?'

तेजू फेर डँटलकनि–'अच्छा, से देखल जेतैक जखन समय हेतैक । दस लोक मदति करबे करत । अखन ई बात अहाँ बन्द करू ने ! रवि की कहैत अछि, से सुनू ।'

रविकेँ गुणाकर मोन पड़लैक । कहने रहैक जे कमलाक बहुकेँ महेश बाबू तेहन पटकनियाँ देथिन जे ओकरो मोन रहतैक । बड़ भभटपन करै छनि हुनका लग ! तेजू ककर लोक छैक ? महेश बाबू कहथिन तऽ नङटियाकऽ ओइ मौगीकेँ सामनेमे आनि देतनि तेजू । बंगटो मिसर सैह कहि रहल छलथिन । ओकरो किछु-किछु अर्थ लागि रहल छलैक । तेजू फेर टोकलकै–'कोन सोचमे पड़ि गेलेँ रवि ?'

–'नै, कोनो सोच नहि । एहिना विचारैत रही जे तोँ मुखिया भऽ जयबेँ तऽ हमरोसभ कहबैक लोककेँ जे हमरे सङतुरिया मुखिया अछि ।'

तेजू प्रसन्न होइत कहलकै–'ई तोँ बजलेँ एक टा बात तखनसँ ! मुखिया तऽ हम हेबे करबौ आ अइ एकबालीकेँ दस लोकक सामने बेइज्जत सेहो करबैक। बड़का भारी छिनार अछि इहो एकबालिया ।'

गप्पक एहू अप्रत्याशित मोड़सँ रवि चौंकि गेल । बंगट मिसर उत्साहित होइत कहलथिन–'से कोन नव बात करबै अहाँ ? ककरा ने बूझल छैक जे अपन भाउजिसँ फँसल अछि ई मुखिया । विधवा भौजी छैक आ अपनो अछि मौगीकेँ खयने । दुनू खूब खुलि खेलाइ अछि ।'

अशर्फी झा गप्प लोकलथिन–'मियाँ बुझलकै पियाजु ! यौ, ई सभ ककरा नहि बूझल छैक ? मुदा तेजू बाबू जे कहलनि सेहो किछु बुझियौक ?'

तेजू अपने फड़िछबैत बाजल–'हमरो कहैत लाज होइत अछि । अपने परिवारक गप्प भेल । ओइ पार चल जाइत गेलाह, तेँ सम्बन्ध तँ नहि छूटि गेल ! पोखरि हवेली तँ हवेली मोहनपुरेक अंग थिक । ओही ठाम परिकल अछि ई एकबलिया !'

पंडित बाबू कहलथिन–'तँ अइमे एकबाली चौधरिक कोन दोष ? जिनकर स्त्री छलथिन, वैह जखन सभकेँ छोड़ि अपने दोसर विवाह कऽ दार्जिलिंगेमे बसि गेलाह, तँ स्त्री तऽ छुट्टा हेबे करथिन । नहि एकबाली तऽ क्यो आने ।'

फकीर बाबू टोकलथिन–'ई बात तऽ ठीक नहि कहि रहल छी पण्डितबाबू ! पुरुष कतहु परदेस चल जायत, तँ स्त्रीकेँ आजादी भेटि जयतैक ? एना तऽ हमरा

लोकनिक समाजे भ्रष्ट भऽ जायत । आ, मुखियाक एक टा कर्तव्य होइत छैक । ओकरे कृत्य एहन हेतैक तँ ओकर विरोध हेतैक ।'

तेजू प्रसन्न होइत बाजल– 'सैह तऽ हमहूँ कहैत छी फकीरकाका ! एकर विरोध हेबेक चाही । हमरालोकनिक समाजमे एना खुल्लम-खुल्ला व्यभिचार नहि चलि सकैत अछि । अइ मुखियाकेँ अइ बेर हम सभ दिससँ नाङट कऽकऽ छोड़ि देबै, अहाँसभ देखैत रहू ने !'

रविकेँ सभ टा बात मनोरंजक लगलैक । तेजू मुखियापर चरित्रहीनताक आरोप लगा रहल छलैक । गामक लोक ओकरा समर्थन कऽ रहल छलैक, ओही गामक लोक जतऽ तेजू राति होइते कमलाक आङन दिस विदा होइत अछि आ दोकान बेटापर छोड़ि दैत अछि । पण्डितकाका आ फकीरकाका सन बूढ़-बूढ़ानुस ओकर सङ दऽ रहल छथिन । बंगट मिसरकेँ बजना गेलैक जे असली उम्मेदवार छथि मिहिर आ नारायण ! पण्डितकाका आ फकीरकाकाक क्रोधसँ ओइ सत्यपर परदा नहि पड़लैक । -रवि बूझि गेलैक ।

रवि ऊठिकऽ विदा होबऽ लागल तँ पण्डितकाका आ फकीरकाका दुनू सूचना देलथिन अपन-अपन बेटाक आगमनक । दूर्गापूजा आबि रहल छलैक । मिहिर आ नारायण दुनू आबि रहल छैक । रवि दुनू गोटेक सूचनापर हर्ष प्रकट कयलकनि जे एतेक वर्ष बाद पुरान मित्रसभसँ भेँट होयतैक ।

मुदा, तेजूक दलान छोड़ैत काल हर्ष प्रकट कयलाक बादो ओ मोने-मोन बूझि रहल छल जे प्रायः ओकरा भेँट नहि होयतैक । दूर्गापूजा धरि गाममे ठहरि सकब ओकरा लेल संभव नहि होयतैक आ गाम छोड़बासँ पहिने ओ एक बेर फेर कवितासँ भेँट करऽ चाहैत छल । कारण ओकरा अपनो नहि बूझऽमे आबि रहल छलैक । ओकरा भेँट करबाक उत्कट इच्छा भऽ रहल छलैक–बस्स, एतबे टा ओकरा बूझल छलैक ।

तेजूक घर दिस जाइत रवि देखने छलैक–सुन्न दलान । दलान तऽ छलैके नहि, खाली एक टा घर, बाहर दिस ओसारो नहि । टाटसँ घेरल आङन । रवि इच्छा रहितो आङन नहि जा सकल । तेजूक दलानसँ घूरैत काल नीक जकाँ साँझ भऽ गेल छलैक । कविताक आङन पैसबाक पहिने कने थकमकायल रवि । फेर आङन पैसि गेल । आङनो सुन्न छलैक । घरक भीतर डिबियाक इजोत छलैक आ ताहिसँ आ घरक दरबज्जा खूजल रहबाक कारणेँ लगलैक जेना घरमे क्यो होइ । ने तँ मनुक्खक उपस्थितिक ओइ आङनमे कोनो चेन्ह नहि छलैक । रवि किछु काल ओहिना ठाढ़

रहल । देह कने सिहरि गेलेक । भीतर कोठलीमे जयबाक वा सोर पाड़बाक जेना साहसे ने भऽ रहल होइ । फेर कने खखसिकऽ बाजल–'कविता !'

रविकेँ अपने स्वर अपरिचित आ भरभरायल सन लगलैक । मुदा घरसँ कविता जेना लगले चीन्हि गेलैक । हाथमे डिबिया लेने फुर्तीसँ बाहर अयलैक आ ओसारासँ नीचाँ उतरि कहलकै–'आइ कोना मोन पड़ि गेलौ कविता तोरा ?'

रवि कविताक सहज बोली सूनि आङनक ओइ भयावह सुन्नसँ उपजल सिहरनकेँ दबा बाजल–'मोन सभ दिन पड़ै छलेँ कविता ! मुदा नहि जानि किएक अयबाक साहस नहि भेल । तोँही चल अबितेँ !'

कविता कहलकै–'बेस कहलेँ ! तोरा पुरुष भऽ साहस नहि भेलौ आ हम माउगि भऽ चल अबितियौक ।'

रवि पूर्ण सहज भऽ होइत बाजल–'पुरुष-माउगक गप्प नै छैक कविता ! हम तँ अपने गाममे अनचिन्हार भऽ गेल छी । देखिकऽ लोक अनठीयो बूझि लेत। तोरा तँ सभ चीन्है छौ । कखनो, कतहु जा सकैत छेँ ।'

कविता कहलकै–'सेहो खूब कहलेँ तोँ ! कतहु कखनो जा सकैत छी ! बगलेमे जासूस लागल अछि । पितिऔते भाइ-भाउजि छथि । बापक मुँहमे आगि देबाक ऋणक बदलामे ओकर बेटीसँ सभ किछु छीनि बैसल छथि । तैयो सन्तोष नहि छनि । कहुना एतऽसँ हम पड़ाइ, तकरे चिन्ता रहैत छनि । आ चिन्ता रहैत छनि जे के आयल, के गेल अइ आङनमे ? भाइ भऽ प्रमाद देबासँ नहि चुकैत छथि कहियो ।'

रविकेँ लगलैक जेना आङन आयब अनुचित भेलैक । चलबाक उपक्रम करैत कहलकै–'बेस, तँ चलै छी अखन ! ओहिना चल आयल रही, नै देखने रहियौक तोरा बहुत दिनसँ !'

कविता हँसलैक । रवि कने आश्चर्यसँ पुछलकै–'हँसलेँ किएक ?'

कविता कहलकै–'सभ लोक झूठो नहि बाजि सकैत अछि ! तोँ कहलेँ जे ओहिना चल आयल रही तँ तोहर झूठ पकड़ा गेलौक, तेँ हँसी लागल ! ओहिना आबऽबला लोक तँ तोँ नहि छेँ !'

रवि स्वीकृति दैत कहलकै–'ठीके पकड़लेँ तोँ कविता ! ओहिना नहि आयल रही हम । तोरा कहऽ आयल रहियौ जे आर बेसी दिन अइ गाममे नहि रहि

सकब भरिसक । लवकेँ हम कहने रहिऐक जे ओकर बाप लग पहुँचा देबैक । ओ काज हमर बाँकी रहि जायत । ई काज तोँही कऽ दे कविता ! लऽ जाही ओकरा बापक लग ।'

'जबर्दस्ती !' कविता पुछलकै–'ओ नहि बजबैत छथि तैयो जबर्दस्ती लऽ जैयौक ओकरा ओकर बाप लग ! ताहिमे मान बढ़तैक ओकर ?'

रवि ओकर बातक उत्तर नहि दऽ कहलकै–'बैसऽ लेल नहि कहबेँ कविता ? एहिना ठाढ़े रहू आङनमे ?'

कविता शीघ्रतासँ फेर कोठलीमे गेलैक आ एक टा पटिया आनि ओसारापर बिछा कहलकै–'आ, बैस !'

रविकेँ जेना तीर जकाँ किछु गड़ि गेलैक मोनमे । कविता नहि बिसरलि छैक ओ बात । ओइ एकान्त दुपहरियाक ओ कोठली ओकरा नहि बिसरलि छैक । ओ रविकेँ अपन घरमे अयबाक निमंत्रण नहि देतैक । बाहर ओसारापर पटिया बिछा देने छैक ।

कविता टोकलकै–'आ, बैस ने ! कतेक कालसँ ठाढ़ छेँ आङनमे !'

रवि ओकर आग्रह अस्वीकार करैत कहलकै–'रहऽ दे कविता ! आब जायब, अबेर भेल । खाली हमर आग्रह ध्यान रखिहेँ । संभव होउ तँ लवकेँ अपन बाप लग पहुँचा दहिक ।'

कविता तत्काल कहलकै–'अबस्स पहुँचा देबैक । जहिए संभव हेतैक, पहुँचा देबैक । ओही लेल तँ ई अखबज प्राण अँटकल अछि । मुदा एना तमसाकऽ नहि जा सकै छेँ तोँ, कने बैसि ले ।'

रविकेँ आश्चर्य भेलैक । पुछलकै–'तोँ कोना बुझलहिक जे हम तमसाकऽ जा रहल छियौ ?'

–'तोरा तँ बुझले छौ जे हम लालबुझक्कड़ि छी ।'

रविक मुँह फक भऽ गेलैक । डिबियाक इजोतमे कविता नहि देखलकै, मुदा रविक मुँह एकदम विवर्ण भऽ गेलैक । एक दिन कविता कहने रहैक जे 'तोहीँ लालबुझक्कड़ छेँ, तोँहीँ बुझा दे ।' आ, रविक विवेक वासनाक उद्दाम वेगमे बहि गेल छलैक ।

आ, ओही वेगमे बढ़ि गेल छलनि बाबूक सभ टा स्वप्न, रविक अप्पन

सम्पूर्ण महत्त्वाकांक्षा । रविकेँ लगलैक जे लाख सहज होयबाक चेष्टा करय, एक टा बात ओकर मर्मस्थलमे पाथरक रेखा जकाँ खिचा गेल छैक । ओ बेर-बेर मोन पाड़तैक जे ओकर अपराध अक्षम्य छलैक । कविता क्षमा कऽ दैक, तैयो !

कविता कहलकै–'तोरा सङ यैह मोस्किल छौक । अपने किछु बजबेँ आ फेर ओकरे मोनमे रबर जकाँ तानि-तानि नमारैत रहबेँ । तोरा नहि लऽ गेलियौक कोठलीमे, तकर तामस भेलौ ! मुदा अपना डर लेल से नहि कयलियौक । हमरा तोरासँ कहियो कोनो डर नहि छल । आइयो नहि अछि, सत्ते कहैत छियौ । मुदा ई समाज, गामक लोक– एकरे द्वारे बाहरे बैसऽ कहलियौ । काल्हिए भरि गाम पसारि देतौक किछु आ तोँ भागि पडयबेँ ।'

रवि कहलकै–'से तँ नहियो पसारत क्यो किछु तैयो भगबे करब अइ गामसँ । सत्ते कहै छियौ कविता ! मुदा एक टा बात पूछै छियौ कविता ! काल्हि जे किछु पसारत क्यो, से झूठ हेतैक । मुदा एक दिन ओ सत्य घटित भेल छलैक । से किएक ने जनलक गामक लोक ?'

कविता दृढ़ स्वरमे कहलकै–'जनितैक कोना ? जे लोककेँ कहितैक जे की भेल छलैक, से तँ अपने डरे पड़ा गेल । तखन कहितैक के ? हम कहितिऐक जे रवि ओही लेल पड़ा गेल आ लोक मानि जाइत जे मेधावी आ चरित्रवान रवि, रामकाका सन साधु पुरुषक बेटा रवि एहन कृत्य कऽ गामसँ पड़ा गेल ? आ, लोक मानियो जाइत तँ हम कहितिऐक सभकेँ, डिगडिगिया पिटितहुँ चारूकात जे हमरा संग अन्याय भेल अछि, अहाँ न्याय करू ? एक दिन साहस कऽ रामकाका लग गेल रही जे हुनकेसँ न्याय मङबनि । हुनका ततेक हताश आ दुःखसँ हारल देखलियनि जे हुनका आर आघात देबाक साहसे नहि भेल ।'

रवि कृतज्ञतासँ कहलकै–'ई हमरा ऊपर तोहर सभसँ पैघ ऋण रहलौक । बाबूकेँ तोँ यदि ओ कहि दितहुन तँ हुनकर मृत्यु आरो कठिन आ कष्टदायक भऽ जैतनि । तोहर ई उपकार हमरा मृत्यु पर्यन्त मोन रहत कविता !'

–'खाली उपकार मोन रहतौ ? आ कविता ?'

–'तोहूँ मोन रहबेँ कविता ! सभ दिन मोन रहबेँ । एक्को दिन लेल कहाँ बिसरि सकलियौक तोरा ?'

–'एक्को दिन लेल नहि बिसरलौ जे कविता द्वारे तोहर सम्पूर्ण जीवन नष्ट भऽ गेलौ ! सभ दिन घृणापूर्वक स्मरण कऽ कविताकेँ कोसैत रहलेँ !'

रवि अवाक् भऽ गेल । कविता ओकर सभ टा बात कोना बुझने जा रहलि छलैक । ओकर दृष्टिसँ जेना किछुओ नुकायल नहि छलैक । जेना ओकर निर्वासित जीवनक प्रत्येक दिन ओ ओकरे संग रहलि होइ ।

–'ओ दोसर स्थिति छलैक कविता ! दोष अपन छल आ रोष तोरापर छल । तोँ क्षमा कऽ देलेँ आ आब शान्तिपूर्वक अइ गामसँ जा सकब । शेष जीवनमे तोँ बड़ आत्मीयताक संग मोन पड़बेँ, हम सत्त कहैत छियौक कविता !'

–'आर किछु ने पुछबाक छौक तोरा ? किछु कहबाक नै छौ ?' कविताक अइ आकस्मिक प्रश्न लेल रवि एकदम प्रस्तुत नहि छल ।

–'आर हम की कहबौ कविता ? सभ टा तँ कहिए देलियौ तोरा ! तोहूँ ई गाम छोड़ि लवकेँ लऽ अपन सासुर चल जैहेँ, सैह कहने जाइत छियौक । लव कहाँ छौक ?'

–'गफूरगंज गेल अछि–हाट ! आब अबिते हैत !'

रवि विदा भऽ गेल । कविता अङनेमे ओहिना डिबिया लेने ठाढ़ि रहलैक । आगू बढ़ि मुँहथरि धरि रोशनियो ने देखा देलकै ।

रवि बाटपर आबि गेल आ अपन टोल दिस विदा भऽ गेल । दूरेसँ लगलैक जेना खूब घोँघाउज मचल होइ कतहु । अपन टोल अबैत-अबैत पता लागि गेलैक जे नामीबाबाक घरक आगूमे खूब भीड़ लागल छलैक आ हल्ला-गुल्ला भऽ रहल छलैक । रवियो ओम्हरे विदा भेल ।

गेनमाक हाथ बन्हले रहलैक । पयर खोलि देलकै चौकीदार । दफदार सेहो आबि गेल रहैक । दुनूक संग गेनमाकेँ थाना विदा करऽ लगलथिन महेश बाबू ! डोरी चौकीदारक हाथमे छलैक ।

तखने अपस्याँत दौड़ैत गेनमा-बहु अयलैक आ चौकीदारक पयरसँ लपटि गेलैक–'एतेक अन्याय नै करऽ चौकोदारकाका ! हमर मरद बेकसूरी हय । ओकरा छोड़ि दहक ।'

चौकीदार पयर छोड़बैत कहलकै–'पैर छोड़ हमर बतही ! कसूरक फैसला पुलिस आ अदालति करतै । हमरा अपन ड्यूटी करे दे ।'

डोरी लेने चौकीदार बिदा भेलै । वैह डोरी गेनमाक दुनू हाथ आ डाँड़मे बान्हल छलैक । ओहो बिदा भेल पाछाँ-पाछाँ ।

गेनमा-बहु पयर नहि छोड़लकै चौकीदारक–'हम नहि छोड़बऽ काका तोरा । ई ड्यूटी हइ हो काका ? बेकसूरी आदमीकेँ रस्सा लगौले जाइ हऽ ।'

चौकीदार पयर झिकझोरि छोड़बैत बाजल–'बेकसूरी कोना हइ गे ! ई मालिकके बखारी कटलकनि, आँखिसँ देखलकै लोक ।'

गेनमाक बहु जेना प्रचण्ड बताहि भऽ गेलक–'ई मालिक पकड़लकै हमर मरदकेँ ? ई मालिक झुट्ठा हय । ई मालिक छिनार हय । हमर हाथ पकड़ैत रहल हवेलीमे । हमर मरद मुँहपर डाँटि देलकै, तकरे ओलि सधबै हय । एकर बातपर नै जा हो कक्का ! एकरा छोड़ि दहक ।'

महेश बाबू तरङ्किऽ लग अयलाह । हाथमे बेँत छलनि जाहिसँ गेनमाक गत्र-गत्र दगने छलथिन । वैह बेँत सट-सट गेनमा-बहुक पीठपर मारैत कहलथिन–'तोहर एहन मजाल गे नटिनियाँ ! तोँ हमरे दरबज्जापर आबि हमरा गारि देबेँ ! लगाबऽ गुणाकर एकरा पचास जूता !'

गुणाकर जूता खोलि ताबड़तोड़ देबऽ लगलथिन आ महेश बाबूक बेँत सेहो बजरैत रहलनि । मौगी मुदा चुप नहि भेलनि । ओहिना गारि पढ़ैत रहलनि महेश बाबूकेँ— छिनार, झुट्ठा कहैत रहलनि ।

मारिसँ ओकर बोली क्रमशः बन्द होबऽ लगलैक, मुदा जूता आ बेँत ओहिना बजरैत रहलैक । तखने अन्हारसँ मुखिया एकबाली चौधरी प्रकट भेलाह । संगमे लंका मोहनपुरक किछु आर लोक रहनि । अबिते महेश बाबूकेँ रोकलथिन–'एना नहि होअय मास्टर साहेब ! स्त्रीगणपर एना हाथ छोड़ब उचित नहि । बस्स करू गुणाकर !'

गुणाकरक हाथ ठमकि गेलनि । महेशबाबू बेंत रोकैत गरजिकऽ बजलाह–'हमरा उचित-अनुचित नहि सिखाउ मुखियाजी ! ई मौगी दरबज्जापर आबि हमरा गारि पढ़त आ एकरा छोड़ि देबैक ! एकरा नङटे गाछसँ टाङि घोरन लुधका देबैक हम ।'

'बात की थिकैक ?' –मुखियाजी प्रश्न कयलथिन ।

–'बात की रहतैक ! एकर सायँ गेनमा हमर बखारी हाँसूसँ काटि धान चोरा रहल छल । गुणाकर पकड़लथिन । दफादार ओकरा थाना लऽ जा रहल छैक आ ई मौगी दरबज्जा चढ़ि हमरे उनटे गारि पढ़ि रहलि अछि । लगाबऽ गुणाकर एकरा पचास जूता आर ।'

गुणाकर जूता उसाहऽ लगलाह, मुदा मुखिया बीचेमे रोकि देलथिन–'अहाँ थम्हू गुणाकर ! ई ठीक बात नहि भऽ रहल अछि मास्टर साहेब ! एक टा जनानीकेँ एतेक मारि ! सायँ चोरि कयने छैक तँ ओकर तरीका छैक । बगलेमे सरपरंच छथि । हुनको बजबा लितियनि । पंचायत अछि, ओतहि फैसला होइत । पुलिसेमे देबाक अछि, तऽ सैह करितहुँ । मुदा एना स्त्रीगणपर जुलुम ठीक नहि ।'

महेश बाबू गरजिकऽ बजलाह–'बस्स करू मुखियाजी ! हमर दरबज्जापर बिन-बजाओल आबि हमरा न्याय सिखा रहल छी ? सात पुरखासँ एकरसभक न्याय हमरालोकनि करैत आयल छिऐक, अखनो करबैक । एक बेर आर अहाँलोकनि अइ दरबज्जापर अपन जोर देखबऽ आयल रही । की हाल भेल रहय से बिसरि गेल ?'

आ, अन्हारमे बूढ़ा नामी बाबूक गर्जन सेहो सुनाइ पड़लनि–'आ हम अखन जिबिते छी मुखियाजी ! अखनो बन्दूक उठा सकैत अछि हमर हाथ ।'

एक बेर नामी बाबूक संग लंका मोहनपुर चौधरानावलाक झगड़ा भेल रहनि । अलगू चौधरी लंका मोहनपुरवलाकेँ सहका देने रहथिन । बात किछु नहि रहैक । नावपर किछु छौंड़ासभ बदमासी कयने रहनि । सभकेँ पकड़बाकऽ पिटने छलथिन नामी बाबू । ओही छौंड़ाक गार्जियनसभ लाठी लऽकऽ नामी बाबूक दरबज्जापर आबि गेल रहैक । कोठेपरसँ दू टा हवाइ फायर कयलथिन नामी बाबू । सभ लंक लऽकऽ पड़ायल ।

नामी बाबूक गर्जनक मुखियाजी कोनो उत्तर नहि देलथिन । दफादार गेनमाकेँ लऽ थाना विदा भेल । मुखियाजी गेनमा-बहुकेँ कहलथिन–'जो, तोँ अपन घर जो । पुलिसमे केस दर्ज होबऽ दहिक । बादमे जमानति भऽ जेतौक ।'

गेनमाक बहु चुपचाप ऊठि विदा भेलि । दरबज्जापर जमा भीड़ो आस्ते-आस्ते सहटऽ लागल । मुखियाजी सेहो किछु बिचारैत लंका मोहनपुर विदा भेलाह ।

मुदा, महेश चौधरीक तामस शान्त नहि भेलनि । गुणाकरकेँ लग बजा कानमे कहलथिन–'अइ मुखियाकेँ तँ हम बादमे बूझि लेबनि । मुदा अइ मौगीक इन्तजाम आइए हेबाक चाही । गणेशकेँ संग कऽ लैह । आरो लोकक काज होअऽ

तँ लऽ लैह । यदुआ-मायकेँ ताड़ी-पीनी लेल किछु टाका दऽ दिअहक । आ, अइ मौगीकेँ नङटियाकऽ बीच आङनमे बेरा-बेरी भरि राति नोचि-नाचिकऽ छोड़ि दिअहक। गत्र-गत्रमे निशान कऽ दिअहक जे काल्हि सौँसे इलाकाक लोक देखैक ।'

गुणाकर चल गेलाह । महेश बाबू ओतहि ठाढ़ छलाह । बाप कहलथिन– 'अही द्वारे कहैत छलियह तोरा सभ दिन जे होशियारीसँ सभ काज करह । ई लक्षण नीक नहि छऽ । खतबेटोलीक एक टा मौगी दरबज्जापर आबि तोरा की-की ने कहि गेलह ! काल्हि भरि गाम चर्चा हेतह ।'

महेश बाबूक तामसकेँ बापक गप्प आर बढ़ा देलकनि । ओइ छिनरी मौगीक एहन मजाल ! काल्हि देखतैक भोरे गामक लोक । सायँ जहलमे रहतैक आ अपने चितंग पड़लि रहति नाङटि भेलि बीच आङनमे ।

गेनमाक आङनमे गुणाकर एकसरे पैसलाह । ककरो संग नहि कयलनि । हुनकर मोन बड़ दिनसँ ललचायल रहनि गेनमा-बहुपर । मुदा, ओइपर महेश बाबू आँखि गड़ौने रहथिन । ओ चुप्पे छलाह ।

आइ अपने स्वीकृति दऽ देलथिन । गुणाकर हुलसल विदा भेलाह । हाथमे अपनासँ ऊँच लाठी रहनि । लम्बाइमे अपने कने कम्मे रहथि-पाँच फीट चारि इंच! मुदा बेस चाकर । अखाढ़ा खेलाइ छलाह पहिने । हाथ-पयर-जांघक मांसपेशी खूब कस्सल-कस्सल । पचासक वयस भेलनि, तैयो सभ टा दाँत दुरुस्त छलनि आ केश एकदम कारी । सभ दिन कड़ूतेल लगबैत छलाह केश आ देहमे । नित्य मालिससँ कारी देह खूब चमकैत रहैत छलनि । देहपर अधिक काल कोनो अंगा नहि । डाँड़मे ढट्ठा बान्हल धोती आ हाथमे पैघ सन लाठी । डाँड़सँ खोसल बटुआमे तमाकू आ चून ।

आङन पैसऽसँ पहिने नीक जकाँ तमाकू चुना ठोर तर दबलनि आ रातुक अन्हारमे छपकले गेनमाक आङन पैसलाह । आङन निस्तब्ध छलैक आ घरक फट्टक बन्द । सामने कने टा एक टा आर कोठली छलैक बिन चौखटि-दरबज्जाक । यदुआ-मायकेँ आस्तेसँ हिला देलथिन ।

बुढ़िया चेहाकऽ उठलि-'के हय ?'

गुणाकर मुँहपर हाथ राखि देलथिन– 'डेरो जुनि । हम छी गुणाकर । ई ले दसटकिया !'

यदुआ-माय प्रसन्न होइत बाजलि-'आइ बेसी भाङ पीले छी गुणाकर बाबू ! दसटकही कहिओ जुआनीमे नहि देली आ आइ अइ बुढ़ियाकेँ दसटकिया !'

गुणाकर आस्तेसँ डँटलथिन–'ई हँसी-मजाक बन्द कर । ई दसटकिया तोरे छौ, मुदा तोरा लेल नहि । तोहर छोटकी पुतहु जे छौ बड़का इज्जतिबाली, तकरा लेल । बड़ गुमान छै ओकरा, आइ बुझा देबैक । कने फट्टक खोला दे ।'

यदुआ-माय सिहरि गेलि । गुणाकर राक्षस छै, ओकरा बुझल छैक । मौगी-देहकेँ जानवर जकाँ भम्होड़ैत छैक, जेना भूखल बाघकेँ शिकार भेटल होइ । कहियो काल अप्पन अइँठ-कूठ महेश बाबू ओकरो फेकि दैत छथिन आ ओइ अइँठ-कूठकेँ सिसोहिकऽ राखि दैत छैक गुणाकर । यदुआ-माय जनैत छलैक ।

विरोध करबाक कोनो उपाय नहि छलैक, कोनो इच्छो नहि छलैक । गेनमा आ ओकर बहु अपने झंझटि बेसाहने छैक । अही मौगी द्वारे आइ ओकर बेटाकेँ थाना लऽ गेलैक । बड़ शान छै एकरा ! आइ घोसाड़ि देतैक गुणाकर सभ टा । फट्टक लग जा कने आस्तेसँ बजलैक-'कने फट्टक खोल गय गेनमा बहु ! एगो बीड़ी दे । खोल फट्टक !'

पहिल बेर क्यो नहि बजलैक । यदुआ-माय फेर सोर पाड़लकै, दोसर बेर, तेसर बेर । गेनमाक बहु लोहछिकऽ उठलै–'अइ बुढ़ियाक तमेशा देखू ! अइ सुतली रातिमे बीड़ीक बेगरता हो गेलै !'

फट्टक खुजलैक आ फट्टक खुजैत देरी बुढ़ियाक सत्ती गुणाकर झपटलनि ओकरापर । मुँहसँ एको शब्द नहि बहार होबऽ देलथिन । एक हाथसँ मुँह दबा उठा लेलथिन कोरामे आ ओहिना कोरामे लेने माँटिपर बैसि गेलाह । मौगी बेसी हाथ-पयर नै फेकि रहलि छलैक । गुणाकर चपचपाइत ओकरा माँटिपर पाड़लनि ।

कने हाथक पकड़ि ढील भेले छलनि कि मौगिया हाथसँ छिटकि कोठलीक अन्हारमे कोम्हरो बिला गेलनि आ, जाबत सम्हरथि ताबत खच्च दऽ कोनो चीज कन्हामे धँसलनि, फेर दोसर, तेसर । गुणाकर ओहीठाम ओंघरा गेलाह ।

ओ दबिला, शोनिते रङल दबिला लेने आङनमे आयलि गेनमा-बहु ।

यदुआ-माय ओतहि ठाढ़ि छलैक । उठा लेलकै ओकरोपर दबिला-'आइ एकरो खण्डी-खण्डी कऽ दैत छिऐ । भीतरमे मस्टरबाकेँ काटिकऽ राखि देले छिऐक । दुनू पाप एक्के दिन हँटि जाउ धरतीसँ ।'

यदुआ-माय हाथ जोड़ि पयरपर खसलैक— 'काटि दे भवानी ! तोँ देवी छेँ ! छछात दुर्गा । काटि दे, हमरो उद्धार भऽ जायत ।'

गेनमा-बहु दबिला नीचाँ करैत कहलकै- 'एकर शोनितसँ के अपन हाथ रङतैक, गंदा शोनित हइ, घिनोन । भरि जिनगी अपने खेल खेलौलकै आ बुढ़ारीमे बेटी-पुतहुके सौदा करै हय ।'

यदुआ-माय ओहिना पयरपर खसल रहलैक-'ठीक कहले भवानी ! मुदा अइ पापिनोक उद्धार कऽ दे भवानी ! तोँ एतना देरी से किए अयले भवानी अइ गाममे ? तोँ आर पहिले अबितेँ भवानी !'

बुढ़िया बताहि भऽ गेलि छलैक । भवानी-भवानी रट लगबैत जमीनपर ओंघरा रहलि छलैक । जानक डरे भगलो ने कयने होइ !

मुदा, भगलो कयने होइ तैयो ओकर शोनितसँ अपन हाथ रङबाक इच्छा नहि भेलैक गेनमा-बहुकेँ । भीतरघरमे एक टा लहास पड़ल छलैक जकरा ओ मास्टर महेशक लहास बूझि रहलि छलैक । आङनमे बुढ़िया भवानीक रट मारने छलैक ।

ओइ अन्हारमे क्यो देखितैक तँ सत्ते भवानी लागि रहलि छलैक गेनमा-बहु । सौँसे देहपर शोणितक छिटका आ हाथमे दबिला । बीसक वयस आ गोर रंग । कस्सल देह आ कटगर नाक-आँखि । मुदा, क्रोध आ घृणासँ तनल आ ओइ भवानी-मूर्तिक पयरपर यदुआक माय ओंघरा-ओंघरा गोड़ लागि रहलि छलैक ।

किछु काल बाद ऊठिकऽ ठाढ़ि भेलै बुढ़िया-'दबिला हमरा दे भवानी ! तोँ भागि जो अप्पन नैहर ।'

गेनमा-बहुक लेल ई अप्रत्याशित छलैक । सत्ते, बुढ़िया बताहि भऽ गेलि छलैक । ओ दबिलावला हाथ दूर करैत कहलकै-'ई की करतैक दबिला लऽकऽ ? आरो दू चारि टाकेँ अन्हारमे नुकौने हइ की ? बुला ले, ओकरोसभकेँ खण्डी कऽ दिऐक आइ ।'

यदुआ-माय हाथ जोड़ि देलकै-'कऽ देबहिक तोँ, मानै छियौ हम । तोँ छछात दुर्गा छेँ । मुदा दबिला दे हमरा आ भागि जो अप्पन नैहर ।'

गेनमाक बहु अड़ल रहलैक-'हर्गिज नहि । ककरो नहि देबैक ई दबिला । घरमे मस्टरबा दू खण्डी भेल पड़ल हइ । पुलिसकेँ बजा लौक ।'

यदुआ-माय कहलकै— 'मस्टरबा नै हउ भवानी, ओकर कुकूर हउ गुणाकर । अइ कुकूर वास्ते हम छियौ भवानी । दबिला दऽ दे हमरा । तोहर बड़का गो जिनगी हउ । गेनमा छूटिकऽ आबि जेतौक । कोनो दोसरे गाम बसि जैहेँ । भागि जो भवानी !'

-'नै, हम नै भगबै । भागिकऽ कहाँ जयबै ? मस्टरबा आ गुणाकर तँ सभ जौर हइ । आब भगबै नहि कतौ । बजा लौ पुलिसकेँ ।'

'जय भवानी'-बुढ़िया अङनासँ बाहर दौड़लैक । सत्ते पगला गेलि छलैक बुढ़िया । अन्हारमे नै जानि किम्हर दौड़ले गेलैक ।

मुदा, गेनमा-बहुकेँ डर नहि भेलैक-'जाउ जिम्हर जयबाक होइ, बुला लौ जकरा बुलाबेके होइ । आइ सभकेँ अही दबिलासँ काटि देबैक ।'

ओ हाथमे दबिला लेने ओही ठाम आङनमे बैसि गेलि ।

महेश बाबूक दरबज्जापरसँ मुखियाजी सोझे अपन टोल नहि गेलाह । पहिने गेला पोखरि हवेली । कुसुमदाइ बाट तकैत होयथिन ।

मुखियाक मोन अशान्त छलनि, अपमानक ज्वालासँ दग्ध । महेश बाबू अपमान कयने छलथिन दस लोकक सामने । हुनकर मोन बढ़ल जा रहल छनि । बलुआहीमे रामौतारक बेटा-पोतासभ हुनकर संग छनि, पीपरपाँती आ बलुआहीक आरो लोक सभकेँ ओ अपना दिस मिलौने जा रहल छथि । मुखिया एकबाली चौधरीकेँ सभ ठामक खबरि रहैत छनि । ओही दिन प्रोफेसरक दरबज्जापर मीटिंग भेल रहैक- बलुआहीक प्रोफेसर वीरेन्द्र । बूढ़ा नकछेदी अपने गप्प उठौने रहथि-'अइ बेर मुखिया बदलब आवश्यक अछि । अपन गामक नामपर सभ बेर वोट लऽ लैत अछि एकबाली आ अपन भोँट भरि लैत अछि ।'

प्रोफेसरक भाइ नरेन्द्र बजलाह-'एकदम गोबरक चोत छथि मुखिया । कोनो गप्पक लूरि छनि ? कोनो मंत्री-नेता चीन्हैत छनि ? खाली दरभंगामे पैरबीक ठीका लऽ ली । बस्स, एतबे अबैत छनि ।'

पीपरपाँतीक बटोहीझा कहलथिन–'हमरालोकनि तँ सभ बेर संग देलियनि मुखियाक, मुदा अइ बेर हुनका बदलब आवश्यक अछि । बगलेमे अछि विशनपुर, जकरा क्यो चिन्हितो नहि छलैक इलाकामे । तकर मुखिया अपन गामकेँ 'आदर्श ग्राम' घोषित करबा सभ टा सुविधा लऽ लेलक । आ, हमरालोकनि मुँह तकैत रहलहुँ । हवेली मोहनपुरमे सभ घर पढ़ल-लिखल लोक, हमरोलोकनि आब पछुआयल नहि छी, गफूरगंजमे रेलवे स्टेशन । मुदा, पक्की सड़क बनबा लेलक बिशनपुरबला, उनटा लऽ गेल सड़ककेँ, आन पंचायत दने । हमर मुखिया गोबरक चोत छथि, हिनका बदलू अइ बेर ।'

एकबाली चौधरीकेँ सभ खबरि भेल रहनि । हवेली मोहनपुरक योजना हुनका बूझल छलनि । तेजू तँ कल्हुका छौड़ा छथि, असल छथि महेश आ टाका-पैसाक जोर रहतनि मिहिर आ नारायणक । दू नम्बरक पैसाक जोर ।

ओहो पैतरा बदलि लेने छथि । सभ ठाम अपनेलोकसँ प्रचार करा देने छथिन–'एकबाली अइ बेर ठाढ़ नहि होयताह । हवेली मोहनपुरक हरिश्चन्द्र चौधरी पुरान छथि, हुनके बना दियनु । नै तऽ झमेली साहुक बेटा मक्खन साहु अछिए । जमाना देखियौक । सभसँ बेसी बोट तँ ओकरेसभक छैक । कतेक दिन तक ओकरा दबाकऽ रखबैक, शोषण करबैक ?'

झमेली साहु आ ओकर बेटा मक्खनकेँ बीच-बीचमे मुखिया सहका दैत छथिन । सभ टा योजना ठीके काज कऽ रहल छनि । कोनो विशेष चिन्ता नहि छनि ।

मुदा, आइ महेश बाबू दस लोकमे ललकारने छलथिन । ओ ओही पारमे रहथि जखन हल्ला मचलैक । देखबा लेल पहुँचि गेल छलाह । हुनकर मोन अशान्त छलनि आ अशान्त मोनक इलाज छलथिन कुसुमदाइ, पोखरि हवेलीक कुसुमदाइ । गामक बेटी नहि छलीह, पुतहु छलीह । मुन्नर चौधरीक स्त्री । गाममे सभ कहै छनि–मुन्नरक स्त्री वा टुन्नीक माय । मुदा मुखियाजी दुलारसँ कहैत छथिन कुसुमदाइ ।

मुखिया पुरान चमचोर छथि । चिकनफट सेहो बेस । खादीक धोती-कुर्त्ता हरदम कड़ाकड़ायल आ निदग्ग रहैत छनि । सफाचट दाढ़ी-मोछ । भुट्ट होयबाक कारणेँ वयस किछु कम्म बुझाइत छनि । केश खिजाबसँ रङल । देह बेस सोंटल, मुदा छोट छीन धोधि । मुँहमे पान आ हाथमे छड़ी । रंग कारी आ नाक पसरल । आँखिमे एक टा कृत्रिम विनम्रता । अपने धीया-पूता जहिया पकड़ने रहनि भाउजिक संग, बड़ गंजन कयने रहनि । मुखिया लेखे धनसन । सभ टा देहसँ झाड़ि लेलनि । भाउजि देहसँ लटकले रहलथिन । बूढ़ि होइत भाउजि आब भार लागऽ लागल

छथिन । एकबाली अपने पचास पार कऽ गेल छथि । भाउजि सेहो पैंतालीससँ कम्म नहि होयथिन । पाकल केश आ पिचकल गालबाली पैंतालीस वर्षक गोरि-नारि भाउजि आब एकबालीकेँ असर्ध लगैत छथिन । हुनकर बिछौनपर सुतलाक बाद भरि दिन जी ओकाइत रहैत छलनि, जेना कोनो असर्ध वस्तु छूबि लेने होथि ।

मुदा, मुक्ति नहि छलनि । एक दिन अपने स्नेहसँ बिछौनपर नोतने छलथिन । आब ओइपरसँ उतारब मोस्किल भऽ रहल छनि । एकबाली अपने उतरि गेल छलाह ओइ बिछौनासँ बहुत पहिने । कुसुमदाइक बिछौन महमह करैत छलनि । पहिले दिन सभ टा जीहक पचपची ठीक भऽ गेलनि आ मुँहमे एक टा नीक सन सुगन्ध भरि गेलनि ।

ओना, कुसुमोदाइ पैँतालीससँ कम्म नहि छलीह । मुदा देखबामे तीसे सन लगैत छलीह । तीस वर्षक जेठ बेटी टुन्नी सासुर बसैत छनि, से कुसुमदाइक जेठ बहिन सन लगैत छलनि । दुनू बेटा अट्ठारह आ सोलह वर्षक भऽ गेल छनि । छोटकियो बेटी सासुर बसैत छलनि ।

मुदा, से बादक गप्प छैक । जहिया मुन्नर चौधरी निपत्ता भेलाह, जेठकी बेटी पन्द्रह वर्षक रहनि, दूनू बेटा आठ वर्ष आ छओ वर्षक । सभसँ छोट बेटी कोरामे रहनि । क्यो-क्यो कहैत छनि जे कोरोमे नहि, पेटमे रहनि । बेसी लोक कहैत छनि जे पेटोमे नहि रहनि, मुन्नर चौधरीक पड़यलाक बाद पेट मे अयलनि । ठीक-ठीक ककरो मोनो नहि छैक । एतबा मोन छैक जे पन्द्रह वर्ष पूर्व एक दिन मुन्नर चौधरी निपत्ता भऽ गेलाह । की भेलनि, लोक नहि बुझलकनि । वर्ष दिन बाद खबरि अयलैक जे दार्जिलिंगमे छथि, एक टा पहाड़िनसँ बिआह कऽ लेने छथि ।

लोककेँ हुनकर स्त्रीपर बड़ दया भेलैक । चारि टा सन्तान । एक टा बिआह जोगर बेटी आ स्वामी छोड़ि पड़ा गेलथिन । मुदा मुन्नर चौधरीक स्त्री साहस कयलनि आ सभ टा काज होबऽ लगलनि । बेटी सासुर गेलनि, बेटासभ स्कूल जाय लगलनि । जमीन-जथा छलनि, नीक उपजा भऽ जाइत छलनि ।

फेर लोकमे कनफुसकी होबऽ लगलैक जे मुन्नरक अङनामे साँझेसँ लुच्चासभ जमा रहैत छनि, चिलम फुकैत छनि आ ओतहि पड़ल रहैत छनि । स्वाति ने गाम छोड़ि पड़यलाह मुन्नर !

जहिया एकबाली मुन्नर चौधरीक अङनामे प्रवेश कयलनि, बाँकी सभ भागि पड़ायल । एकबालीकेँ गन्ध लागल रहनि आ सुँघैत पहुँचल रहथि एक

दिन–'एना कतेक दिन चलत ? कही तँ हम किछु मदति करी । अइ पंचायतक सेन्टरपर ट्रेण्ड दाइक जगह खाली छैक । अहाँक बहाली करबा सकैत छी, मुदा...'

मुदा बुझबामे मुन्नरक स्त्री बड़ होशियारि छलथिन । एकबालीक मोन हुलसि उठलनि । ओ सिनेहसँ कहलथिन–'एतेक दिन धरि अहाँ कहाँ नुकायलि रही कुसुमदाइ !'

कुसुमदाइ ट्रेण्ड दाइ बनि गेलीह । रुपैया-पैसाक आमदनीक जरिया भऽ गेलनि । बेटासभ अङनेमे काण्ड देखैत बुझनुक भऽ गेल छनि । टोक-चाल नहि करैत छनि । छोटकी बेटीकेँ सासुर विदा करबामे एकबाली बड़ मदति कयलथिन । बेटो दुनूकेँ कालेजमे पढ़बाक व्यवस्था करबा देलथिन । आङन खाली भऽ गेलनि आ एकबाली निधोख जाय-आबऽ लगलाह । कुसुमदाइक सिङार-पटार बढ़ि गेलनि । ठोर हरदम रङल, कसल-कसल आङी, रंग-विरंगी साड़ी, आँखिपर चश्मा । सौंसे इलाका हाथमे छत्ता लेने बूलि जाइत छलीह । गोरि-नारि आ मांसल देहबाली कुसुमदाइक देह सालमे एक बेर पियरा जाइत छलनि, देहक मासु गलि जाइत छलनि । तहिया कम्मेकाल घरसँ बहराइत छलीह कुसुमदाइ । ओना, अट्ठारह-बीसक छौँड़ो लोभाकऽ टकटकी लगा दैत छलनि । बिराज बाबूक जेठ बालक, मुन्नरक जेठ भाइ रघुनाथ चौधरी शुरूमे बड़ हल्ला कयलनि–'ई मौगी तँ निर्लज्जि अछिए, नै तँ मुन्नर किएक एना घर छोड़ितथि ? मुदा, अइ मुखियाक करनी तँ देखू ! एकरा तँ कारी-चून लगाकऽ इलाकामे घुमयबाक चाही ।'

भरि गाम वैह प्रचार कयलथिन । मुदा, हुनकर डर एकबालीकेँ नहि छलनि । ओ निधोख जाइत-अबैत छला । हुनका सम्हारऽ लेल हरिश्चन्द्र चौधरी छलथिन ।

आइ महेश दस लोकमे ललकारने छलथिन आ मोन उद्विग्न छलनि । एकबालीक उद्विग्न मोनक इलाज छलनि कुसुमदाइक हाथ । ओम्हरे विदा भेलाह । तीन दिनसँ गेलो नहि छलाह ।

एकबालीकेँ देखिते कुसुमदाइ प्रसन्न भऽ उठलीह–'आउ मुखियाजी ! बाट तकैत-तकैत तीन दिनसँ आँखि दुखा गेल । एहन कोन तामस हमरापर जे आयब त्यागि देल । अखनो मोन तमसायले देखैत छी ।'

एकबाली धड़फड़ायल रहथि । घरमे अबिते पजिया लेलथिन–'अहाँपर कोना तमसायब कुसुमदाइ ? अहाँ तँ हमर जान छी । आइ मोन बड़ भारी अछि–माथ टनकि रहल अछि ।'

कुसुमदाइ देह छोड़ाकऽ जाय लगलीह–'थम्हू, कने गमकौआ तेल लगा दैत छी माथमे । तुरत सभ ठीक भऽ जायत ।'

एकबाली जाय नहि देलथिन । नीक जकाँ बाँहिमे समटैत कहलथिन–'असल गमकौआ तँ अहाँ छी कुसुमदाइ !'

कुसुमदाइ बाँहिसँ छिटकि गेलथिन–'नै, आइ लोभ नहि, आइ...' कुसुमदाइ हँसलीह— एकबाली एकदम सुस्त भऽ गेलाह । माथक टनक आर बढ़ि गेलनि । ऊठिकऽ ठाढ़ होइत कहलथिन–'तखन आइ चलै छी । मोन ठीक नहि अछि । फेर काल्हि आयब ।'

बिना उत्तरक प्रतीक्षा कयने एकबाली घरसँ बाहर आबि अपन घर दिस विदा भेलाह । रातिक अन्हार बेस नीक जकाँ पसरि गेल छलैक । एकबाली अपन हाथक बड़का टार्च बारैत अपन टोल पहुँचि गेलाह ।

अपन कोठलीमे आबि देखलनि जे टेबुलपर थारीमे खयनाइ झाँपिकऽ राखल छनि आ हुनकर बिछौनपर भाउजि चितंग पड़लि छथिन । अनेरो पित्त लहरि गेलनि । समधानिकऽ एक लात देलथिन भाउजिक पाँजरमे–'उठू ! एना की पड़लि छी हमर बिछौनपर ? जाउ अपन कोठली ।'

भाउजि अप्रतिभ भऽ गेलथिन । ई अपमान आ तिरस्कार अप्रत्याशित छलनि । उठैत कहलथिन–'भऽ आयल हैब पोखरि हवेलीसँ, तेँ एतेक रोआब अछि । कुकूर छी, सभ भीड़मे मूँह देबे करब ।'

झनकैत-पटकैत भाउजि कोठलीसँ चल गेलथिन आ हुनका जाइते एकबालीकेँ लगलनि जे गलती भऽ गेलनि । एना लात नहि मारऽ चाहैत छलनि । मुदा, मोन बड़ उद्विग्न छलनि आ लात चलि गेल रहनि ।

खयनाइ ओहिना झाँपल रहलनि आ एकबाली अपन गुनधुनमे लागल रहलाह । राति बितैत गेलैक ।

आँखिमे निन्न नहि छलनि एकबालीक । बड़ी राति बितलापर लगलनि जेना क्यो नाम धऽ सोर पाड़ि रहल होइनि । ऊठिकऽ हाथमे टार्च लेलनि आ बाहर अयलाह । दरबज्जापर एक टा माउगि चिकरि रहल छलनि–'दरबज्जा खोलू मुखियाजी !'

मुखिया ओइ मौगीकेँ मुहपर टौर्चक रोशनी दैत पुछलथिन–'तोँ के छिएँ गय, की बात छैक ?'

–'हम यदुआ-माय छी मालिक, खतबेटोलीके । कने चलू हमरा जौरे । हमर भवानीके बचा लू ।'

मुखिया खौँझाइत कहलथिन–'एतेक रातिके अही लेल हल्ला मचौने छेँ? के छौ तोहर भवानी ?'

यदुआक माय आगू आबि पयर छानि लेलकनि–'हमर गेनमा-बहु मालिक ! उहे भवानी हय छछात दुर्गा । गुणाकरके दबिलासँ दोखरि देलकै । घरमे लहास पड़ल हइ आ अपने दबिला लेने बैसलि हय भवानी । एकदम्म बेकसूरी हय हमर भवानी । साँझे गेनमाकेँ थाना भेजलक आ रातिए गुणाकर पैसलै घरमे । सभ महेश मास्टरकेँ कुचक्र हय मुखियाजी ! बचा लू हमर भवानीके ।'

मुखियाक माथ एखनो टभकि रहल छलनि । दस लोकमे महेश बेइज्जत कयने छलथिन । आब कहाँ जयता महेश ? आ, गेनमा-बहुक आकृति मोन पाड़ि आँखिमे एक टा दोसरे चमक आबि गेलनि । आगाँ बढ़ैत कहलथिन–'आ तऽ हमर संग !'

मुखियाक टौर्च जखन यदुआ-मायक आङनमे पड़लैक, तखनो ओहिना दबिला लेने बैसलि छलैक गेनमा-बहु । टोल एकदम निस्तब्ध छलैक जेना, किछु भेले नहि होइ । कोनो-कोनो घरमे कखनो-कखनो क्यो खें-खें कऽ उठैत छलैक आ मुखियाक आगमनपर अनेरुआ कुकूरसभ खूब झौहरि कयने छलैक ।

गेनमा-बहुकेँ देखि मुखियाक माथक टभक आर बढ़ि गेलनि । आइ कुसुमोदाइ हुनकर इलाज नहि कयलथिन । गेनमा-बहु बाघिन छैक–खा जयतैक मुखियाकेँ । घरमे गुणाकर खण्डी भेल पड़ल छैक । मुखिया किछु सोचि मोनेमोन मुसकिया उठलाह— बाघिनक शिकार । कहलथिन–'फेक दे ई दबिला गेनमा-बहु !'

गेनमा-बहुकेँ जेना होश भेलैक । देखलक जे आङनमे सासुक संग मुखियाजी ठाढ़ छलथिन । टार्च मिझा गेल रहैक आ अन्हारमे मुखियाक ठोरपरक कुटिल हँसी ओ नहि देखलकै । मुखिया पुछलथिन–'तोँ अप्पन इज्जति बचबऽ लेल काटि देलहुन गुणाकरकेँ । एसगरे छलथुन ? घर कोना पैसलथुन ?'

गेनमा-बहु बिगड़ि उठलैक–'इहे नट्टिन बुढ़िया मेल कयले रहय ।'

बुढ़िया फेर हाथ जोड़ि देलकै–'भवानी ठीके कहै हय, ई पाप हमहीँ कयली ।'

मुखिया ओकरा डँटलथिन–'तोँ बन्द कर अपन भगल । गेनमा-बहु, तोँ

बाज । महेश सेहो फँसय आ तोँ बाँचि जो अइ खूनक मामिलामे, से तोँ चाहै छेँ कि ने ?'

गेनमा-बहु चुप्प रहलैक । उत्साहित होइत मुखिया कहलथिन–'तोहर इज्जति लेलथुन महेश आ गुणाकर दुनू । गुणाकर बादमे । पहिने महेश । जाय लगलथुन तँ तोहर हाथमे दबिला आबि गेलौ आ दोखड़ि देलहुन गुणाकरकेँ । बुझलहिक कि ने ? पहिने तोहर इज्जति गेलहु, तखन तोँ प्राण लेलहिक ।'

यदुआ-माय फेर बाजलि–'भवानीके इज्जतिपर हाथ देलक, प्राण तँ जेबे करतैक ।' ओ एकदम बताहि भऽ गेलि छलैक ।

मुखिया किछु सोचिकऽ कहलथिन–'सबूत मुदा कमजोर छौक । गेनमा-बहु, तोँ भीतर आ । सबूत बना दैत छियौक ।'

मुखिया गेनमा-बहुकेँ घरक भीतर लऽ गेलथिन । जखन बहरयला, मुखियाक टभकैत माथ शान्त भऽ गेल छलनि आ मोन तृप्त । पाछाँ-पाछाँ अबैत गेनमा-बहुकेँ कहलथिन–'आब कोनो चिन्ता नहि । सबूत पक्का भऽ गेल छौक । महेश आ गुणाकर तोहर इज्जति लेलथुन आ तोँ गुणाकरक जान लेलहुन । खबरि पठबैत छिऐक थाना-पुलिसकेँ । तोँ निश्चिन्त रह । जेना कहलियौ अछि, सैह कहियहिक । डाक्टरी परीक्षा लेल सबूत पक्का कऽ देने छियौक । गेनमोकेँ छोड़ा लेबैक, तोँ चिन्ता जुनि कर ।'

घरे-घरे सभ सूतल छलैक टोलमे । कोनो सुगबुगी नहि छलैक । मुर्दा पड़ल टोल । ताड़ीक निसाँमे बुत्त सूतल टोल । मुखियाकेँ बहराइते कुकूरसभ एक बेर फेर झौहरि कयलकै । मुखियाक डेग लगा सनक भऽ गेल छलनि–तृप्त आ उल्लसित ।

गेनमा-बहु आङनमे बैसलि छलि, बगलमे दबिला राखल छलैक । यदुआ-माय अपन पुतहुक चारू कात परिक्रमा करैत हाथ उठा-उठा बाजि रहलि छलि–'जय भवानी–जय भवानी...!'

कोठलीमे शोणिते-शोणिताम भेल गुणाकरक देह पड़ल छलैक ।

गुणाकरक प्राण मुदा अख्खज छलैक । दबिला कण्ठक कातमे गरदनिमे धँसि गेल रहैक–दुनू कात । मुदा गरदनि बाँचल रहैक । अन्हारमे गेनमा-बहु बुझलकै जे दू खंड भऽ गेलैक । जखन पुलिस अयलैक तँ लादि-पाटिकऽ गुणाकरकेँ लोक अस्पताल लऽ गेलैक । मास दिन पड़ल रहलाह आ बाँचि गेलाह ।

गेनमाक बहु पकड़ल गेलि तँ बन्दे रहि गेलि । क्यो छोड़बऽ नहि गेलैक । सबूत मुखिया बना देने छलथिन । ओ अपन बयान देलकै आ महेश बाबू पकड़ल गेला बलात्कारक अपराधमे । जमानतपर छुटियो गेला । पेशकार छोट भाइ जी-जान लगा देलथिन । मुदा गेनमा-बहु ओहिना बन्द रहलि । क्यो छोड़बऽ नहि अयलैक, जमानतो नहि भेलैक । डाक्टरी जाँच भेलैक । मुदा ओइसँ पहिने दरोगाजी आ बादमे सिपाहीजी सबूत पक्का कयलथिन । कहलथिन-'सबूत ठीक नहि छौ, ठीक करऽ पड़तौक ।'

होश भेलापर गुणाकरक देल बयानसँ सभ टा पकिया कयल सबूत बेकार होबऽ लगलैक–'झूठे महेश बाबूक नाम ! ओ किएक जयथिन ओइ मौगी लग ? जाइत तऽ हम रही, से कोनो आइएसँ ! से नहि रहितैक, तऽ दरबज्जा कोना खोललक ? कोनो सेन्ह काटिकऽ गेल छलिऐ ? मौगिआ ओइ दिन ताड़ी बेसी पीने छलि, अनाप-सनाप बकऽ लागलि, गारि देबऽ लागलि । बिगड़िकऽ दू चाट देलिऐ तऽ सोझे दबिला चला देलक ।'

गेनमा-बहुकेँ मुखियाजीक भरोस छलैक, सबूत बनौने छलथिन । मुदा ओ सबूत बना निश्चिन्त भऽ गेलथिन । महेश बाबू पकड़ल गेला आ जमानतपर रिहा भेला । मुखिया एक चालिमे दू शिकार कयलनि ।

गेनमाक जमानति क्यो नहि देलकै । बुढ़िया यदुआक माय बताहि जकाँ अपन तीनू बेटाकेँ नेहोरा कयलक, भरि टोल, भरि गाम नेहोरा कयलक–'हमर गेनमाकेँ छोड़ा ला, हमर भवानीकेँ छोड़ा ला ।'

बतही कहि सभ ओकरा दुरदुरा देलकै । चोर आ खूनीकेँ के छोड़बितैक ? सभ ओइ दुनूकेँ बिसरि अप्पन-अप्पन काजमे लागि गेल । जेना किछु भेले ने होइ । एक टा मौगी मनसा जहल चल गेलैक तऽ की भेलैक ? टोलक लोक अपन काजमे लागि गेल– चोरि-छिनरपनमे तऽ ई सभ होइते रहैत छैक ।

मुखिया एकबाली चौधरीकेँ बहुत-किछु भेटलनि । महेश बाबूकेँ हथकड़ी लगलनि आ जमानतपर छुटलाह । गाममे आब सभ ठाम लोक एकबालीकेँ कहऽ लगलनि— 'से कोना हैत मुखियाजी ? ठाढ़ तऽ अहाँकेँ हेबे पड़त ।'

एकबाली हँसिकऽ रहि जाइत छलाह । हवेली मोहनपुरमे ओइ दिन महेश बाबू मुखियाकेँ ललकारैत सौसेँ गामकेँ ललकारने रहथिन । ई बात खूब प्रचारित कयलनि मुखिया–'ओलोकनि अखनो सैह बुझैत छथि जे ओलोकनि श्रेष्ठ छथि आ हमरालोकनि नीच । हमरालोकनि हुनक दरबज्जापर जैयनु, भोजन करियनु, ओ नहि करताह । ओसभ मालिक छथि, हमरालोकनि रैयत । ओलोकनि श्रेष्ठ ब्राह्मण छथि, आ हमरालोकनि छोटहा ।'

लंका मोहनपुरमे सभ ठाम प्रतिक्रिया होबऽ लगलैक–'कथीक छोटहा यौ ! आब कोन चीजमे झूस छियनि ! पहिने पैघ छलाह धनपर–चारि कोसक परगनाक मालिक छलाह । आब की छनि ? चूल्हिपर अदहन चढ़ा अन्न लेल गूफरगंज बजार दौड़ैत छथि । तखन विद्या अयलनि । पढ़ि-लिखि दस टा ओहदापर गेलाह । आब हमरालोकनि कोन पछुआयल छी ? डाक्टर अछि, इंजीनियर अछि, प्रोफेसर अछि । तैयो कहैत छथि हमरालोकनिकेँ लठियाकुमैत ! आब तँ हुनकोलोकनिक धीया-पूता पढ़ब-लिखब छोड़ि नढ़ेरपनीमे लागल रहैत छनि । आब तँ कहबनि जे हमरेलोकनि छी हवेली मोहनपुर आ ओसभ छथि लंका मोहनपुर ।'

बलुआहीक बद्री मिसरकेँ नहि सहि होइत छनि आ कहैत छथिन— 'बेसी लुबलुब नहि करैत जाह ! अखनो परतर करबहक हवेलीक संस्कार आ सभ्यताक ? तोरालोकनि तऽ पढ़ियो-लिखिकऽ वैह लठियाकुमैत छऽ । तेसरा दिनपर भाइ-बापसँ लाठा-लाठी करैत छऽ । तोरालोकनिकेँ पढ़ने, नहि पढ़ने की फर्क ? अइसँ तऽ मूर्खे नीक छलह तोरालोकनि । एहन पढ़ब-लिखब कोन काजक ? ने ककरो लेहाज आ ने कोनो सभ्यता ।'

नवतुरियासभ लोहछि जाइत छनि अइ गप्पपर । एक-दोसरकेँ कानमे कहैत छैक–'बूढ़ा सभ्यता सिखा रहल छथुन ! अपने सभ राति पुतहु लग सुतैत छथुन बुढ़ारियोमे, आ हमरालोकनिकेँ सभ्यता सिखा रहल छथुन !'

सभ हँसऽ लगैत छनि भभाकऽ । बूढ़ा बद्री मिसर फेर टोकैत छथिन–'यैह फर्क छैक हवेली मोहनपुर आ लंका मोहनपुरमे । श्रेष्ठक बातपर अशिष्टतापूर्वक ठिठिआयब, यैह पढ़ैत-लिखैत गेल छी अहाँलोकनि ? अखनो हवेलीक धोअनो नहि भेल छी ।'

बद्री मिसर अधिक काल हवेली जाइत छथि । महेश चौधरी आ नामी चौधरी लग उठैत-बैसैत छथि, लोक जनैत छनि । ओना, लंका मोहनपुरक लोक आब हवेली बिन-बजाओल जयबामे अपन अपमान बुझैत अछि ।

मुदा, बूढ़ा बद्री मिसर एखनो ओइ पार जा मन्दिरमे प्रणाम कऽ अबैत छथि। पूजामे एखनो नाटक ओही पारमे देखैत छथि–हवेलीक परतर तोरालोकनि करबह ! तोरालोकनि तऽ नौटंकी करैत छह ।'

बद्री मिसरक संग देबऽवला बेसी लोक नहि छनि आब लंका मोहनपुरमे। लंका मोहनपुर नहि, मोहनपुर पुबारि पार ! गफूरगंज-गुमती लग बड़का बोर्ड टाङल छैक । आ, एकबालीक एजेन्ट सभ ठाम प्रचार करैत छनि–'हवेली मोहनपुरक लोक एखनो वैह सामन्ती युगमे छथि । सभ चीजपर हुनका विशेषाधिकार चाहियनि । मिल्कियत गेलनि मुदा रोआब छनिहें । पाँचे सय लोकक बले मुखियाक गद्दी चाहियनि ! हमरालोकनि दू हजार लोक बकलेल छी ! माँटिक मुरूत ! जे ओ कहता, मानि जयबनि ! जहिया किछु नहि छल, तहिया मुखियाक गद्दी देबे ने कयलियनि आ आब तऽ हमहूँ लोकनि पढ़ि-लिखि गेल छी ।'

यैह पढ़ि-लिखि जायब काल भऽ गेल छैक पुबारियो पारमे । जहिया क्यो ने पढ़ल-लिखल रहै वा कम्मे पढ़ल-लिखल रहै, गामक नामपर तुरत मेल भऽ जाइ। आब पढ़ि-लिखि गेल अछि तँ मेल होयब मोस्किल भऽ गेल छैक । टोला-टोली काट छैक । टोलोमे देयादी आ पड़ोसिया-काट छैक आ सभसँ ऊपर छैक पढ़ल-लिखल बेकार बैसल धीया-पूताक समस्या । हवेली मोहनपुरक मिहिर आ नारायण सभकेँ काज धरा रहल छथिन । हुनकासँ पहिने बिराज चौधरीक छोट भाइ जज भेल रहथिन– रामेश्वर चौधरी । सभकेँ सिविल कोर्टमे भरि देलथिन–खाली हवेलिएक लोककेँ नहि, लंको मोहनपुरक लोककेँ–इलाकाक लोककेँ । जजसाहेब गाम छोड़ि पटने बसि गेल छथि, गामक राजनीतिसँ कोनो मतलब नहि रहै छनि । मुदा मिहिर आ नारायण तँ चुनि-चुनिकऽ नौकरी दिया रहल छथिन । जे तेजूकेँ भोट देतनि, तकरा नौकरी । लिस्ट बनबैत छलथिन महेश बाबू । सभकेँ हुनके खोशामद रहैत छलैक । मुखिया एकबाली जनैत छथि । गामक नवतुरिया आ ओकर गार्जियनोसभ महेश बाबूक खोशामदमे रहैत अछि । एकबाली सभकेँ कहलथिन–'बुधियारीसँ काज लैह । नौकरियो लऽ लैह आ देखारो नहि होअऽ । कहुन जे अहीँक सङ छी। बाँकी इन्तजाम हमरापर छोड़ि दैह । राजनीतिक गप्प छैक । तोरालोकनि नहि बुझबहक अखन । चुनाव आबऽ दहक, अखन छैक किछु दिन देरी । तखन देखिअहक राजनीतिक असल दाव-पेंच ।'

दाव-पेंच तिवारियोजी लगौलनि ।

ओना, धनुखटोलीक माइंजन गङबा तिवारीक बात सुनैत छलनि । मुदा ओइ दिन एकदम बमकि गेलनि–'बेकारे हमरासभकेँ फुसलबै छी तिवारीजी ! अहाँ सभ बुत्ते कुच्छो नहि होइत । हमरा आरके एहिना लोक बेकसूरी सतबैत रहत ।'

तिवारीजी कहलथिन–'नै माइंजन ! आब से समय नहि रहलैक । कने आँखि खोलि दुनियाँक खबरि लैह । शोषकक पोल खुजि गेल छैक । मजदूर जागि गेल अछि आ अपन हक लऽ रहल अछि । तोरालोकनि कहिया धरि सुतले रहबऽ !'

गङबा तैयो नहि मानलकनि–'पोल तऽ सभ दिन खुजले हइ । लोक नै जनै हइ जे गेनमा चोरी नै कयने हइ ? लोक नै जनै हइ जे ओकर बहु इज्जति बचबे खातिर जान लेबऽ चाहलकै ? आइ ओ दुनू जहलमे बन्द हइ । के गेलै ओकरा बचबे खातिर ? अहूँ गेलिऐ तिवारीजी ? कहाँ हय अहाँक पार्टी ? जमानतपर छोड़ा दियौ ने ओकरा !'

तिवारी कने सिटपिटा गेलाह । हुनका माइंजन गङबापर भरोस छलनि । बेर-कुबेर मदति करैत छलथिन । ओ विधानसभा चुनाव लेल अपन पार्टीक क्षेत्र तैयार करऽमे लागल छलाह । पंचायतक चुनावक हुनका कोनो विशेष मतलब नहि छलनि । अनगौआँ छलाह । मुखिया लेल अइ पंचायतसँ अपन पार्टीक उम्मेदवार ठाढ़ करबाक पक्षमे नहि छलाह ।

मुदा गङबा आइ उकटि देलकनि । जहियासँ गेनमा आ ओकर बहु पकड़ल गेल छलैक, सभ किछु शान्त छलैक, जेना किछु भेले ने होइ । कोनो उत्तेजना, कोनो प्रतिक्रिया नहि । सभ जेना ओकरा बिसरि अपन काजमे लागल छल । तिवारीजी विचारलनि जे अपन काज शुरू करी, ओ खिस्सा तँ लोककेँ बिसरि गेल छैक ।

मुदा भितरे-भीतर आगि सुनगि रहल छलैक । तिवारियोजीकेँ पता नहि छलनि । गङबाक प्रश्नपर गोङिआय लगलाह–'ओ तँ हम ओइ दिन गाम गेल रही, ने तँ अबस्से जैतिऐक थाना-कचहरी आ छोड़ा दितिऐक दुनूकेँ ।'

गङबा तैयो नहि छोड़लकनि–'अखने कोन अबेर भेल हय तिवारीजी ! जमानति दिया दियौक । इलाकाक लोकसभ, छोटका लोकसभ कहत जे तिवारीजी सत्ते मदतिया छथि हमरासभक ।'

तिवारीजी कन्नी काटऽ लगलाह । ओ हेडमास्टर महेश बाबूसँ दुश्मनी मोल लेबऽ नहि चाहैत छलाह । अपन सभ टा प्रचार कार्य तरे-तर करैत छलाह ।

कचहरीमे ठाढ़ भऽ गेनमाक मोकदमा देखलासँ खुल्लम-खुल्ला लड़ाइ भऽ जयतनि आ तिवारीजी अनेरोक दुश्मनीसँ बँचऽ चाहैत छलाह ।

गङबाके॑ बुझौलथिन–'तो॑ नहि बुझैत छहक माइंजन ! ओ मामिला एतेक सोझ नहि छैक । खूनक मोकदमा छैक, मोइमे जमानति हैब मोस्किल छैक ।'

माइंजन गङबा नहि मानलकनि–'मस्किल कोन छैक तिवारीजी ? गेनमा-बहुक इज्जति लेलथिन अहाँक हेडमास्टर साहेब आ गुणाकर, हुनका जमानति हो गेलनि । मुखियाजीक भातिज नरेश आ रामोतार बाबूक पोता तेसरा दिनपर छूरेबाजी करै हय, कखनो स्टेशन मास्टर, तँ कखनो कोनो दोकानदार के छूरा मारि अबै हय । ओकरा जमानत हो जाइत हइ आ गेनमा आ ओकर बहुके॑ नै हेतैक ? सेहे तँ हमहूँ कहै छी तिवारीजी जे गरीब लेल दोसर कानून हइ । ओकरा बराबरिक बात अहाँ खाली वोट वास्ते कहै छिऐ, मोनसँ नै मानै छिऐ । अहूँके मोनमे ओकरा वास्ते दोसरे कानून हय ।'

तिवारीजी माइंजनक बदलल रंग-ढंग देखि कहलथिन–'आइ तोरा की भऽ गेलह माइंजन ? हमर मोन तो॑ नै जनैत छह ! हम तँ सभ दिन तोरेसभ लेल खटैत रहैत छी । हमर मोनमे तोरासभ लेल बराबरीक किएक, ओइसँ पैघ स्थान छऽ ।'

–'सत्त कहै छी तिवारीजी ?'

–'झूठ किएक कहबऽ ? परीक्षा लऽ लैह माइंजन !'

–'अच्छा तँ एगो बात करू तिवारीजी ! हमर बेटी बड़ सुन्नर हय, अहाँ तँ देखले छिऐ । अहूँक बेटा छथि । हमर बेटीके॑ अपन पुतहु बना लियऽ । हम–अहाँ सम्बन्धी बनि जैब ।'

तिवारीजी बमकला–'तोहर दिमाग आइ खराब भऽ गेल छऽ माइंजन ! अण्ट-सण्ट बाजि रहल छऽ । हौ, हमरा लेल तँ अइ देशक सभ लोक अप्पन आ सम्बन्धी अछि, एक टा तोही॑ किएक ? आइ हम चलैत छियऽ, तोरासँ दोसर दिन गप्प करब ।'

तिवारीजी पड़ा गेलथिन । माइंजन गङबाके॑ हँसी लागि गेलैक । एकेटा प्रश्नपर तिवारीजीके॑ समानता आ बराबरीक उपदेश बिसरि गेलनि । सभ स्वार्थी अछि, अपन स्वार्थ लेल झूठ-मूठ सिद्धान्तक अढ़ लैत अछि, माइंजन बूझि गेल अछि ।

ओकर मोनमे बहुत दिनसँ आगि सुनगि रहल छलैक । माइंजन गङबा सभ

दिन देखैत छलैक, छोट-छोट नेनासभ पढ़ब-लिखब छोड़ि अइँठ-कूठ उठबै छै, माल-जाल चरबै छै । रवि बाबू कहने छलथिन–छौंड़ासभके॑ स्कूल पठा । ओ पठौने छलैक । फेर रवि बाबूक स्कूले जायब बन्द कऽ देलकनि अइ गामक लोक । ओकरा पढ़ल-लिखल लोक नहि चाहिऐक, अइँठ-कूठ खयनिहार आ माल-जाल जकाँ खटनिहार 'छोटका लोक' पढ़ि-लिखिकऽ बराबरीपर आबि जयतैक तँ छोट-छोट काज के करतैक ? रवि बाबू कहने छलैक–'तो॑ की चाहै छऽ माइंजन ? जहिना तोहर भरि जिनगी अइँठ-कूठ मारि-गारि खाइत बीति गेलऽ तहिना तोहरसभक धीयो-पूताक बीति जाइ ? ई पसिन्द हेतऽ तोरा ?'

माइंजनके॑ पसिन्द नहि छलैक । मुदा कोनो उपाय नहि छलैक । पेटक समस्या सभसँ ऊपर छलैक आ तकरा लेल आधार छलैक ओही अइँठ-कूठक । टोलक स्त्रीगण आ धीया-पूता सभ आङने-आङन काज करै छै, पानि भरै छै, थारी-बाटी मजै छै, अइँठ-कूठ उठबै छै आ बदलामे एक रिकबी अइँठ-कूठ लऽ अनै छै पेट भरबा लेल । पुरुषसभ, जहिया हवेली रहैक, खबासीमे छल । आब हवेलीसभक हालति अपने पस्त छैक, खबास के राखत ? आब तँ खाली छोट-छोट धीया-पूता आ स्त्रीगणसभ काज करै छै हवेलीमे– गेलै आ काज कऽ चल अयलैक । अइँठ-कूठक संग दरमाहा दू टाकासँ पाँच टाका धरि ।

पुरुष कहियो कमाइत छैक, कहियो नहि । हवेलीसँ किछु जमीन बटाइपर जकरा भेटल छैक, से कने आरामसँ अछि । माइंजन अपनो ओही बलपर माइंजन अछि । टोलमे आइ धरि एको धूर अप्पन जमीन क्यो नहि किनने छैक । बासोक जमीन मालिकेसभक देल छैक ।

बासक जमीनक नामपर गङबाके॑ बिलटाक डीह मोन पड़ि गेलैक । महेश मास्टर ओइ डीहके॑ हड़पबाक कोशिशमे छैक । कोनो आन गामसँ जन आनि बसबऽ लेल छैक । ओइ दिन गङबासँ कहने रहैक–'देख गङबा ! बिलटा तँ घराड़ी छोड़नहि अछि । हमरा काज होइत अछि, ऐ ठाम दोसरके॑ बसा देबैक ।'

गङबाके॑ नहि कहि भेलैक बिलटाके॑ ! बिलटा टोलमे आयब-जायब छोड़ने छैक । अपन घरक भार गङबाके॑ दैत कहने रहैक–'कने देखिहऽ माइंजन भाइ एकरा । फट्टक खुजले रहैक हरदम, कहीं कजरी आबिकऽ घूरि ने जाय !'

माइंजनक आँखि नोरा गेल रहैक । कजरी लेल प्राणो दैत छलैक बिलटा । ओ आब की घूरिकऽ ओतैक ? मुदा बिलटाके॑ नहि कहि भेलैक । एक बेर कहने रहैक माइंजन–'टोलके॑ नै छोड़ बिलटा ! आयल-गेल कर ।'

बिलटा हाथ पकड़ि लेलकै–'नै माइंजन भाइ ! ओइ घरमे अकेले नै रहल जाइ हय । कजरी घुरत, तखने अयबौ हमहूँ । ताले तोही हमर घरके जिम्मेदारी राखऽ भाइ !'

ओ जिम्मेदारी आब भारी पड़ि रहल छैक । महेश बाबूक कुदृष्टि फेर पड़ल छैक । एक बेर पड़ल रहैक तँ घर उजरल रहैक, फुलकुम्मरी पड़ायलि रहैक। अइ बेर डीहे हड़पि जयतैक ।

बिलटाकें नहि कहि सकल छैक माइंजन । मुदा आब कहऽ पड़तैक ।

कहऽमे ओकरा डर होइत छैक । बिलटा पहिनहिसँ मास्टर महेशपर कन्हुआयल छैक । कोनो काण्ड ने कऽ बैसैक । अनेरो गेनमा जकाँ बिसा जयतैक । दुनू परानी जहलमे बन्द छैक मास दिनसँ । आ, मस्टरबाकें एक्को दिन जहल नहि जाय पड़लैक । भाइ पेशकार छैक । दौड़-धूप कयलकै आ झट जमानत भऽ गेलैक । अस्पतालसँ घूरल गुणाकर आ दुनू फेर ओहिना गाममे शिकारी जकाँ घुमैत अछि ।

तिवारीजीकें लोहछाकऽ भगा देलकै बिलटा, मुदा ओकर असली तामस गेनमाक घरक लोकपर छैक, ओकर टोलक लोकपर छैक । तीन-तीन टा सहोदर भाइ छैक, ओहो जमानत देबऽ नहि गेलैक । एतेक टा टोल छैक, ककरो साहस नहि भेलैक जे एक टा बेकसूरी दिससँ ठाढ़ होइ ! धिक्कार छैक सभकें !'

धिक्कार तँ ओ अपनो लेल रखने अछि मोनमे । कहाँ बढ़ल आगू वैह ! सभ तँ गरीबहे छैक–सौंसे दुसधटोली, खतबेटोली, मलहटोली, चमरटोली आ धनुखटोलीक लोक । कहाँ एक टा गरीब दिससँ ठाढ़ भेलैक क्यो ? गेनमा आ ओकर बहु एहिना जहलमे सड़तैक । कतहु कोनो आगि नहि सुनगतैक । कतहु कोनो चिनगी नहि छैक । कतहु नहि !

तरे तर आगि सुनगि रहल छलैक । तिवारीजी ओइ दिन बूझि गेलथिन ।

दुसधटोलीमे सेहो ओइ दिन तिवारीजीक स्वागत नहि भेलनि । सभक आकृति तनल, ठोरपर चुप्पी ।

पुछलथिन–'की बात छैक ढोढ़बा ? सभ चुप्प छैं ।'

चौकीदार ढोढ़बा बाजल–'की बोलू हमरासभ ! जे बोलत, ओकर जीह

काटि लेबैक अहाँसभ । हाथ-पैर बान्हि जहलमे दऽ देबै । गरीब के बोले के हक नै हइ ।'

तिवारीजी कहलथिन–'देखऽ हौ चौकीदार, तोरो वैह भ्रम छऽ ? गरीबकें हक छैक आ ककरोसँ कम्म हक नहि छैक, मुदा ई हक मङलासँ नहि भेटैत छैक, छिनलासँ भेटैत छैक । जाधरि तोरालोकनि एना दीन-हीन बनल रहबऽ, कोनो अधिकार नहि भेटतह । अपन हककें चीन्हऽ आ ओकरा हासिल करबा लेल अपनामे साहस आ संकल्प आनह ।'

प्रबोधन कहलकनि–'साहस तँ कयने छल हमर भाइ गेनमा । ने हक भेटलैक, ने न्याय । जहलमे पड़ल हय । कोइ घूरिके देखे नै गेलै गामक लोक ।'

तिवारी बुझौलथिन–'एक टा गेनमासँ काज नहि चलतौक । सभ टोलमे दू टा चारि टा गेनमा बनबऽ पड़तौक, तखन तोहर बातमे असरि हेतौक । ई छिट-फुट विद्रोहसँ किछु तत्काल भेटब मस्किल छौ ।'

बेटसर कहलकनि–'इहो बेस कहली अहाँ ! हमरासभ गेनमा जकाँ बेराबेरी जहल जाइ बेकसूरी, अहाँ बैठल तमेशा देखब ! इहे असली नेता छी अहाँ !'

तिवारीजीकें कने क्रोध भेलनि जकरा पीबि ओ कहलथिन– 'बेसी लुबलुब नहि कर बटेसर ! यदि तों सभ अपनामे एकता आ साहस नहि अनबैं तऽ हम की करबौ ? ई तऽ कोनो नव गप्प नहि छैक । गेनमाकें के जहल लऽ गेलै ? –यैह तोहर चौकीदार ढोढ़बा । सभ दिन अखनो अन्हरोखे उठिके महेस मास्टरक काज के करै छै ? तोरेलोकनि । अखनो वोट ककरा देबहक तों सभ–वैह एकबाली चौधरी कि तेजूझा ।'

बटेसर आ प्रबोधन तैयो नहि मानलकनि–'सेहे तऽ कहै छी तिवारीजी जे हमरा आर एकबाली बाबू, चाहे तेजूबाबूकें नै दू, मक्खनसाहुकें दियनु, अहाँक पार्टीकें दियऽ । मुदा ओइ से की होत ? अपन गाममे मुखिया ने एकबाली चौधरी हय, एम.एल.ए. तँ नौरंगी यादवे हय दू बेर से । की कयलक हमरा आर वास्ते ? नौरंगी अहाँक पार्टीक नहि हय, मुदा अपनाकें वोट लेबे काल 'छोटका लोक' कहै छल । आब तँ ओहो बड़का लोक हय– दिल्ली-पटना रहै हय ! हमरा आर से कोन मतलब हइ ? फेर वोटमे काज पड़तैक, तखनी औत । अपन विशनपुरकें खूब चकचकौले हय, सड़क ले गेल, बिजली ले गेल, गाम वास्ते नहि, अपना वास्ते ! अपन घर हइ ओतऽ ! हमरा आरके की देलक ?'

ओसभ ततेक बकलेल नहि छल जतेक तिवारीजी बुझने छलथिन। जहियासँ हाइ स्कूलमे रामकरन मिसर आयल रहथिन, हुनक मदति लेल तिवारीजी चेष्टामे लागल छथि। दू चुनावसँ कांग्रेसो पछड़ि जाइत अछि अइ इलाकामे! सोसलिस्ट पार्टीक नौरंगी यादव जीतैत छथि ई सीट। तिवारीक उम्मीदवार रामकरन मिसर दोसरो स्थान नहि पबैत छथिन। असल लड़ाइ सोसलिस्ट पार्टीक नौरंगी यादव आ काँग्रेसी उम्मेदवार रुद्रनारायण लालमे रहैत छनि। विशनपुरक नौरंगी आ नवटोलीक रुद्रनारायण लाल। मोहनपुरक हरिश्चन्द्र आ एकबाली टिकटक प्रत्याशी सभ बेर रहैत छथि, मुदा बाजी मारि लैत छथि रुद्रनारायण लाल।

मुदा, अइ बेर तिवारीजी खूब भरोस देने छलथिन रामकरन मिसरकेँ। मिसरजीकेँ शिकाइत छलनि जे मोहनपुर पंचायतमे हुनका कोनो वोट नहि भेटैत छनि–सभ टा वोट रुद्रनारायण आ किछु-किछु नौरंगी लऽ जाइत अछि। तिवारी रविकेँ दरभंगा जा कहि अबैत छथिन मिसरजीकेँ जे अइ बेर कोनो चिन्ता नहि, सभ टा काज भऽ रहल अछि।

असल काज मुदा कयने छथि भितरे-भितरे यादवजी। स्कूलमे मास्टरी कम, नौरंगीक लेल क्षेत्रमे स्थिति मजगूत करबामे हुनकर बेसी समय जाइत छनि। टोले-टोले घूमि अपन रामवाण छोड़ि जाइत छथि–'समय आबि गेल छौक। बाभन आ बड़का जातिसभ बड़ शोषण कयने छौ। आब हमरसभक बेर अछि। मजा चिखा दहिक। सभ 'छोटका लोक' मिलि जो आ देखा दही जे के पैघ अछि आ के छोट? ई तिवारी तँ 'बड़के लोक' सभक दलाल छौ। गप्प बराबरिक करै छौ आ रामकरन मिश्रक संग जतिआरे निबाहै छौ। तोहूँसभ मोन राख, मुखियामे मक्खन साहु आ एम.एल.ए. मे नौरंगी यादव– कोल्हु-छाप आ महीस-छाप।

गेनमाक मामिला मुदा दुनू गोटेकेँ देखार कऽ देने छलनि। खुल्लमखुल्ला हेडमास्टर महेश बाबूक खिलाफ एखन तिवारीजी, यादवजी आबऽ नहि चाहैत छलाह। तरे-तर काज चलि रहल छलनि। तेँ गेनमाक बेरमे दूनू गोटे अनठा देलथिन आ गेनमाकेँ जमानतो नहि भेलैक। दूनू गोटे निश्चिन्त छलाह जे लोक बात बिसरि जयतैक। ड्यौढ़ी हवेलीमे चोरि लेल एकाध टा जन-बोनिहार एना जहल जाइते रहैत छैक। खाली गेनमेक गप्प रहितैक तँ छोड़ा दितथिन। मुदा, ओकर बहु तँ ओइसँ पैघ काण्ड कयने छलैक। ओ मास्टरपर बलात्कारक आरोप लगा देने छलनि आ गुणाकरकेँ दबिलासँ काटि देने छलनि– कहुना प्राण बँचलनि।

मुदा, से ने कोनो अखबारमे छपलैक, ने ओइपर विधानसभा पार्लियामेण्टमे

बहस भेलैक। कोनो रिर्पोटर लंका मोहनपुर धरि नहि पहुँचलैक। ने अखबारमे बड़का हेडलाइन बाहर भेलैक–'पिछड़ावर्गपर पाशविक अत्याचार', 'हरिजन स्त्रीक इज्जतिपर हमला!' ने जाँचक माङ भेलैक, ने कोनो कमीशन बनलैक। जहिना गाम शान्त रहलैक, तहिना इलाका, प्रान्त आ देशो शान्ते रहलैक। जेना ई भूखण्ड कोनो दोसर महादेशमे होइ–अन्ध महादेशमे जतऽ रेल, बिजली, समाचारपत्र नहि पहुँचैत होइ। नेताक पहुँचबाक तँ गप्पे नहि छैक। ओकरा लेल चाहिऐक फैल बाट, जाहिपर आगाँ-पाछाँ मोटर-जीपर काफिला जा सकै, सभ ठाम जा सकब हुनका लेल संभव नहि!

मुदा, अइ ठाम ओ पहुँचितथि। ई घटना हुनका प्रचार लेल, विधानसभामे पक्ष वा विपक्षमे गरजऽ लेल नीक मसाला दितनि। गड़बड़ कयलथिन तिवारीजी आ यादवजी। दुनू स्कूलमे मास्टर छलाह–अनेरो हेडमास्टरसँ अराड़ि करऽ नै चाहैत छलाह– हुनकर क्षेत्र छनि, ओ जानथि। जागरण-समानताक गप्प तँ पार्टी लेल छैक। सभ ठाम एहिना होइत छैक–गामोमे, शहरोमे। एकरा तूल देलासँ नौरंगीक बदनामी होइतनि। ओ इलाकाक प्रतिनिध छथि, यादवजी तेँ चुप्प रहलाह। रामकरन मिश्रकेँ खबरि भेलासँ विपक्ष द्वारा विधानसभामे प्रश्न करा दितऽथिन, तिवारीजी तेँ चुप्प रहलाह। हेडमास्टर महेश बाबूसँ दुश्मनी करब ठीक नहि।

मुदा ओइ दिन गङबा, ढोँढ़बा, प्रबोधन आ बटेसरा तिवारीजीक अकिल गुम्म कऽ देलकनि। ओ जतेक शान्त बुझैत छलथिन इलाकाकेँ, से नहि छलैक। गेनमा नहि छुटतैक तँ दोसर गेनमा ठाढ़ होयतैक। तेसर औतैक। अभाव आ अशिक्षाक तरमे कोनो नव चेतना सुगबुगा रहल छलैक। एकरा के दबा सकतैक? तिवारीजीकेँ प्रसन्न होबऽ चाहैत छलनि। ओ एना आशंकित किएक भऽ गेलाह?

रविकेँ एतेक पैघ काण्डक आशंका नहि छलैक।

गेनमापर पड़ैत मारिक ओ मास्टरकाकाक दरबज्जापर विरोध कयने छलैक। लालकाका ओकरा ओतऽसँ विदा कऽ देने छलथिन। मुदा तैयो ओकरा एतेक पैघ घटनाक आशंका नहि छलैक। सेहो ओही राति।

ओ किछु नहि कऽ सकलैक। चाहियोकऽ ओ आगू नहि बढ़ि सकल।

थाना-पुलिस-कचहरी भेलैक । गेनमा आ ओकर बहु बन्दे रहलैक । मास्टरकाका छुटि अयलाह । रविकेँ खाली सूचना भेटैत रहलैक । ओ अपने किछुओ नहि कऽ सकल, जाकऽ देखियो नहि सकलैक ।

यदुआ-माय एक दिन आयलि छलैक प्रचण्ड बताहि भेलि । कपड़ा-लत्ता गुदड़ी भेल-आँखि लाल-लाल, जेना सूतलि नहि होइ कतेको रातिसँ । हाथ ओकर हरदम दुनू ऊपरे उठल रहैत छैक जेना ककरो गोहारि कऽ रहलि होइ ! रवि लग ओहिना हाथ उठौने बजलैक–'हमर भवानीकेँ बचा लू बौआ.....हमर गेनमाकेँ बचा लू ! दुनू बेकसूरी हय...'

फेर हँसऽ लगलैक एक टा डेराओन हँसी–'भवानीकेँ बन्द कयने छै, बुझा देतौ । काटि देतौ सभकेँ खण्डी-खण्डी...!'

आ, जहिना आयलि छलैक, तहिना हाथ उठौने गोहारि करैत चल गेलैक। रवि तैयो किछु ने कऽ सकलैक । एक दिन ओहो निरपराध जहल गेल छल । क्यो ओकरा दिससँ गवाही नहि देने छलैक । ओकरा सभ टा मोन छलैक अपन चौदह वर्षक संघर्ष आ यंत्रणाक कथा। गामक लोक नहि जनैत छैक आइयो । अपन कमायल दरमाहा मङने छलैक आ मालिक पठा देलकै जहल । चोरीक आरोपमे ।

रवि जनैत छलैक जे गेनमा चोरी नहि कयने छलैक । ओकर अपन मोन कहैत छलैक । आ, गेनमा-बहुक साहसपर तँ ओकरा आश्चर्यक संग श्रद्धा होइत छलैक । इच्छा होइत छलैक जे जाकऽ एक बेर देखैत यदुआ-मायक भवानीकेँ ।

मुदा, ओकरामे भरिसक साहसक अभाव छलैक । एक दिन एकटा कमजोर क्षणमे अपराध कऽ बैसल छल । ओइ अपराधक मार्जनक अवसर छलैक । बाबूसँ कहितनि जे हमरा बुते अपराध भऽ गेल अछि, हम दोषी छी, हमरा सजाय दियऽ । कविताकेँ कहितैक– आब यैह उपाय छैक कविता, दोसर रास्ता नहि । तोँ पकड़ि ले हमर हाथ । मुदा, से कहबाक बदला कायर जकाँ भागि गेल गामसँ चौदह वर्ष धरि । अर्थहीन जीवनमे अनेको ठाम बेर-बेर सताओल गेल आ कायर जकाँ भागि पड़ायल ।

आ, फेर गामसँ भागि पड़यबाक सभ तैयारी कऽ लेने छल रवि । कविताकेँ कहि देने छलैक । तकर बादो मासोसँ बेसी गाममे पड़ल रहल–अकर्मण्य आ उपेक्षित । क्यो कहिओ किछु पूछऽ नहि अयलैक ।

रविए हाल पूछऽ गेल रहनि । साँझक बेर रहैक । विक्रम भाइ गामेपर

छलथिन । रविकेँ देखि जेना कोनो असौकर्यमे पड़ि गेलथिन– ने स्वागत, ने बैसबाक आग्रह । रवि भीतर जाय लागल तँ रोकि देलथिन–'ओमहर नै जा रवि, तोहर भौजीकेँ पसिन्न नहि छनि । किदनसभ कहैत छली तोरा बारेमे ! सूनिकऽ दुख आ आश्चर्य भेल । तोँ एहन कऽ जयबह, क्यो नहि सोचि सकैत छल । विश्वास नहि भेल, मुदा तोहर भौजी झूठ किएक कहतीह ? तोरा ओतेक मानैत छलथुन, तोरा घुरलापर कतेक प्रसन्न छलथुन । फेर महेशमामा कहलनि जे कविताक घरमे परिकल छऽ । ओकर स्वामी छोड़ने छैक । अनेरो बदनामी हेतैक, गाममे टिकब मस्किल भऽ जयतैक । बाहर जे कयलह से कयलह, गामकेँ तऽ बारि दैह । तोहर भौजी कहैत छलीह जे तोँ मौगीकेँ बड़ सस्त वस्तु बुझैत छहक, जखन चाही, भेटि जायत । सुनिकऽ बड़कामामा मोन पड़लाह–कतेक उच्च आदर्श छलनि हुनकर ! आ तोँ एतेक नीचाँ खसि पड़ल छऽ ! मनुक्ख कोना बदलि जाइत अछि !'

रवि अइ अप्रत्याशित आक्रमणसँ विवर्ण भऽ गेल । पयर जमीनमे सटि गेलैक आ अपमानसँ सौँसे देह थरथरा उठलैक । कहुना सम्हारैत घूरि गेल आ जाइत-जाइत कहलकनि–'ठीके मनुक्ख बदलि जाइत अछि भाइ ! ओकरा किछुओ ने मोन रहैत छैक । आ, हम तऽ मनुक्खो नहि छी, प्रेत छी– चौदह वर्ष पहिने मुइल मनुक्खक प्रेत ! ओकर छायोसँ बचबाक चाही !'

भोरे रवि लालकाकाकेँ कहलकनि–'हम आइ जायब लालकाका ! गाड़ी कतेक बजे छैक ?'

लालकाका वस्तुतः चौंकलथिन–'गाड़ी तऽ दस बजे छैक, मुदा आइए कोना जयबह ? अखन रहऽ किछु दिन !'

–'नै लाल काका ! आब बहुत दिन भेल । एक टा आदमीक इन्तजाम कऽ दियऽ !'

लालकाका रोकलथिन–'एना एकाएक ? कोनो कुभाव लऽकऽ नै जा रवि अपन लालकाका लेल !'

रवि हुनका आश्वासन देलकनि–'ककरो लेल कोनो कुभाव वा भाव नहि लालकाका ! एकदम सोचल-विचारल यात्रा अछि ! हमरो तऽ किछु करबाक चाही ! एक टा सूटकेश आ बिछौन अछि, एक टा कुलीसँ काज चलि जायत !'

लालकाका चल गेलथिन आ बात बिजली जकाँ पसरि गेलैक गाममे । पहिने मास्टरकाका दौड़ल अयलथिन आ एकसरमे कहलथिन–'तोरा ओइ दिनुका

बातक अधलाह लागि गेलह ? तोँ गाममे नहि छलऽ । एतुक्का छोटका लोकक हाल नहि बुझल छऽ, तेँ कहने छलियऽ ! एना गाम छोड़िकऽ नहि जा ! सभटा सम्पत्ति नष्ट भऽ जयतह ! लाल सभ टा खा जयथुन, आधाक मालिक छऽ तोँ । तोरा कोन काज छऽ नौकरी करबाक ? फेर सोचि लैह एक बेर ।''

लाल सोचि लेने छल । मास्टरकाका चल गेलथिन ! हरीकाका अयलथिन–'ई बतहपनी छोड़ रवि ! गामसँ नै जा ! हम तँ ओहू दिन बाट देखौने छलियऽ ! कोनो प्रपंचसँ डेराकऽ लोक अपन धन-सम्पत्ति तऽ नहि त्यागैत अछि एना ! हम एखनो तैयार छियऽ मदति लेल !'

रवि तैयार नहि भेलनि । ओहो चल गेलथिन । पण्डितकाका आ फकीरकाका सेहो अयलथिन–'पूजा एकदम लग आबि गेल छैक । किछुओ दिन रुकि जैतह तऽ पुरान संगीसभसँ भेँट भऽ जैतह ।'

तेजुओ दौड़ल अयलैक–'ई की भाइ ! तोरासँ वोटमे कतेक काज लेबाक छल । पूजेक बाद तऽ हेतैक ! आ तोँ जा रहल छेँ ?'

मनोज हँसिकऽ कहलकै– 'गाममे मोन नहि लगलौ ब्रदर ? बाहरक चीज भेटि गेलापर, गौआँरी चीज नहि सोहाइत छैक, आइ नो ब्रदर, गो अहेड । माइ बेस्ट विसेज ।'

मनोजक कनियाँ स्नेहसँ आग्रह कयलकै–'जल्दी-जल्दी आयब गाम । एना चौदह वर्ष निपत्ता नहि भऽ जायब ।'

लालकाकी कानऽ लगलथिन– अही लेल पोसने छलियऽ तोरा ? माय-बाप नहि छथुन, हमरालोकनि तऽ छियऽ ! तोरा कनियो माया नहि होइत छऽ हमरासभपर ?'

रवि तैयो नहि रुकल । चौदह वर्ष पूर्व एक दिन दौड़ले पड़ायल छल गामसँ । तहिया ओ नहि जनैत छल जे ओ पलायन एतेक दिन धरि गामसँ फराक कऽ देतैक । आइ बूझि रहल छल जे ई अन्तिम विदा छैक । एकर बाद गाम आ ओकर लोकसँ कहिओ कोनो सम्पर्क नहि रहि जयतैक । ओइ पलायनमे मात्र भय आ आशंका छलैक, अइ विदामे छलैक मर्मान्तक पीड़ा आ कचोट ।

ई पीड़ा एकतरफा छलैक, सेहो रवि जनैत छल । ककरो मोनमे कतहु ओकरा लेल कोनो ममता वा चिन्ता नहि छलैक । लालकाकीक दूध सुखा गेल छलनि आ लालकाका बेसी बुझनुक आ संसारी भऽ गेल छलथिन । गामक लोकक संग सौदेबाजीमे रवि अपटु छल, ककरो संग मेल नहि भऽ सकलैक ।

आगू-आगू मोटरी लेने करिया छलैक आ पाछाँ-पाछाँ रवि । धारक कात धरि लालकाका अरियाति गेल छलथिन, काकियो बड़ी दूर धरि संग छलथिन । मुदा, गोड़ लागि विदा होइत कालो कोनो कोमल भाव फेर नहि जनमि सकलैक । ओ तँ एक टा निस्तब्ध रातिमे कानब सूनि सुखा गेल छलैक ।

गाड़ी बहुत लेट छलैक । रवि करियोकेँ पाइ दऽ घुरा देलकै । स्टेशनपर गाड़ीक प्रतीक्षामे बैसल ओ सोचि रहल छल जे कतऽक टिकट खरीदय ! ओकरा लेखे कोनो स्थानक नाम कोनो महत्त्व नहि रखैत छलैक । खाली निर्णय लेबाक देरी छलैक– सभठाम एक्के रंग । निर्णय लेबाक गुनधुनमे स्टेशनक बेंचपर बैसल रविक आँखियो झपा गेल रहैक ।

क्यो झकझोड़िकऽ जगा देलकै ओकरा–'सूति रहलिऐ रविमामा !'

आँखि खोलि देखलक– लव ठाढ़ छलैक ! कने आश्चर्यसँ पुछलकै–'तोँ कोना एतऽ ?'

लव कहलकै–'अहीँ लग तऽ आयल छी ! अहाँ तऽ बेस झुट्ठा बहरयलहुँ ! अपन प्रामिस बिसरि गेल ? हमरा बिना बाबूजी लग पहुँचौने भागल जाइत रही ! माय चिट्ठी देलक आ कहलक चल जो दौड़ले स्टेशनपर । ओ तोरा बाबू लग अबस्स पहुँचा देथुन । देखू ने, दौड़ैत-दौड़ैत केहन हकमि गेल छी ! लेट छैक गाड़ी तेँ, ने तऽ अहाँ पड़ाइए गेल रहितहुँ । हे लियऽ अपन चिट्ठी ।'

रवि उत्सुकतासँ चिट्ठी पढ़ऽ लागल—

'लवकेँ तोँ गछने छलहिक, ओकरा बाप लग पहुँचा देबहिक । हमरा पुछने छलेँ–'चल किएक ने जाइत छेँ हुनका लग ?' हम जबाब देने रहियौ–'लऽ जे नहि जाइत छथि !' तोँ नहि टिकि सकबेँ गाममे तकर आशंका छल, तोँ अपनो कहने रहैँ । मुदा, एकाएक विदा भऽ जयबेँ, से विश्वास नहि छल ।

तोँ नहि पहुँचा सकलहिक लवकेँ ओकर बाप लग । हमहीँ पहुँचा दैत छिऐक ? हमरा नहि लऽ गेला, तकर कोनो दुख नहि । लवकेँ ओकर बाप अबस्स भेटबाक चाही । ताही लेल अइ बंजर धरतीपर एतेक दिन जीवि गेलहुँ हम ।

एक दिन तोँ हाथ पकड़ि झिकने छलैँ आ हम निर्विरोध चल आयलि रहियौक । बादमे कानल रही, कानिकऽ धमकी देने रहियौक । तोँ डरे पड़ा गेलेँ ।

हम चुप्पे रहलहुँ । ककरो किछु नै कहलिऐक । बेर-बेर आश्चर्य होइत

छल जे हम तोहर विरोध किएक ने कयने छलियैक ? चुपचाप तोहर बाँहिमे सिमटि गेलि छलियैक । एहन सद्ध आ डेरबुक तऽ नहि रही हम ! तोहर क्रियामे मात्र एक टा उत्तेजना छलौक, क्षणिक उद्दाम इच्छा । ओइमे कोनो प्रेमक आह्वान नहि छलैक-ई बुझबा जोबर हम रही । तखन किएक रहलौँ चुपचाप ? बेर-बेर सन्देह होबऽ लागल जे तोरे सन कोनो सुप्त कामना हमरो मोनमे तऽ नहि छल ! कामना छल वा नहि, मुदा तोहर उद्दाम आवेगक परिणाम हमरा गर्भमे छल ।

मुदा, ओइ दिन 'ओ' सभ टा स्पष्ट कऽ देलनि । बियाहसँ एक दिन पूर्व रामकाकासँ की कहऽ गेलि रहियनि, से अपनो नहि बूझल छल । मुदा, 'ओ' सभ टा स्पष्ट कऽ देलनि । चतुर्थीक राति साहस कऽ ठाढ़ भऽ गेलि रही आ कहने रहियनि– 'हमरा किछु कहबाक अछि ।'

ओ सभ टा सूनि कहने छलाह–'बस्स एतबे ? यैह कहबाक छल ?'

हमरा आश्चर्य भेल छल ! ने क्रोध, ने घृणा ! एकदम गम्भीर स्वर । हम अकचका कऽ मुँह देखऽ लगलियनि ।

ओ गम्भीरतासँ कहलकनि– 'ई यदि मात्र एक टा दुर्घटना छल आ ओकरा अहाँ बिसरि सकै छी, तऽ हमरा लेल कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि । हमरा कहि देबाक साहस अहाँ कयलहुँ, ताहिसँ अहाँक लेल मोनमे आदर जन्म लेलक । आइ धरि अहाँ लेल स्नेह छल, अहाँक जिनगीकेँ सुखी देखबाक इच्छा छल । मुदा, अहाँकेँ कोन इच्छा ई कहि देबऽ लेल बाध्य कयने अछि ? मात्र कर्त्तव्यबोध वा आर किछु ?'

हमरा किछु ने फुरायल । ओ फेर अपने कहलनि–'ई बातकेँ अहाँ नुका सकैत छलहुँ । सभसँ नुकौने रहलहुँ एतेक दिन । तखन हमरा किएक कहि देलहुँ ई बात ? मात्र कर्त्तव्यबोध वा आर किछु ? की चाहैत छी हमरासँ अहाँ ? हमरा अहाँक देहक लेल चिन्ता नहि अछि, अहाँ जाहि रूपमे छी, हमरा लेल अहाँकेँ ग्रहण करब सौभाग्य हैत । मुदा, अहाँ अपन मोनकेँ देखू । कोनो आर बात तऽ नहि अछि अहाँक मोनमे !'

आ, सभटा बात स्पष्ट भऽ गेल । तोरा लग ओ निर्विरोध समर्पण ! ओ मात्र तोहर शारीरिक बलक भय वा अपन सुप्त इच्छा, शारीरिक इच्छाक परिणाम नहि छल, ओहिमे आर किछु छलैक । ओकरा हम नहि बुझलिऐक । ओ बूझि गेलाह । तोँ हमर मोनमे छलेँ !

हम तँ नेन्नेसँ तोरा सङ छलौ, लड़ै-झगड़ै छलौँ, मेलो भऽ जाइत छल ! मुदा तोँ ततेक समीप छलेँ जे ई बुझबाक अवसरे नहि भेटल जे तोरा प्रति कोन भाव अछि मोनमे ! ओ लगले बूझि गेलाह ।

ओ भोरे चल गेलाह । जाइत काल प्रणाम कयने छलियनि । आइयो करैत छियनि प्रणाम ओइ देव-पुरुषकेँ ।

तोँ, आब कोनादन लगैत अछि 'तोँ' लिखैत, अहाँ जा रहल छी । अहाँक मोनमे तहियो कोनो भाव नहि छल जहिया प्रबल आवेशमे अपन अंकमे समेटने रही ! आइ हमरा लेल, हमर स्थिति लेल अहाँक मोनमे दया अछि आ अपन कृत्यक लेल संताप । मात्र एतबे ।

जे नै अछि अहाँक मोनमे हमरा लेल, से मङबो नहि करैत छी । अही गाममे अही बंजर धरतीपर बाँकियो दिन बिता लेब हम । हमरा अभ्यास भऽ गेल अछि ।

मुदा, लवकेँ लेने जैयौक । अहीँवला प्रतिभा छैक ओकरामे, ओकरा मनुक्ख बना दियौक । ओकर बापसँ ओकरा भेँट करा दियौक...'

रवि पत्र पढ़ैत विस्मय, आनन्द आ अश्रुसँ भीजि गेल । ऊठिकऽ लवक हाथ पकड़ि लेलकै–'हाथ कसिकऽ पकड़ि ले लव, तोहर बाप फेर चोराकऽ पड़ा नै सकतौक !'

लवक आकृति प्रसन्नतासँ चमकि उठलैक आ ओ दुनू हाथे रविक हाथ पकड़ि लेलकै–'आब कोना पड़ायब ?'

तखने ओकर ध्यान प्लेटफार्मक कोन दिस गेलैक । आ, ओ बाजि उठलैक–'हे देखू, मायो आबि गेलैक !'

लवक हाथ पकड़ने रवि जोरसँ दौड़ल, जेना कविता कतहु पड़ा जयतैक ! लग आबि बामा हाथे कविताक दहिना हाथ धऽ लेलकै–'लवकेँ नहि, पहिने हमरा मनुक्ख बना दे कविता ! हमर सङ चल ।'

कविताक आकृतिपर एकटा नवकनियाँक लाज पसरि गेलैक, मुदा ओ आत्मविश्वासक सङ बजलैक–'चलू ।'

ओ डेग ओम्हर बढ़ौलकैक जेम्हरसँ रवि दौड़ल आयल छलैक । रवि हाथ झीकि लेलकै–'ओम्हर नहि कविता ! गाम दिस चल । ओ कथा जे ओइ दिन तोँ नहि कहि सकलही, हम कहबैक आइ सभकेँ ।'

कविताक आकृति ओहिना प्रसन्नताक आधिक्यसँ दमकैत रहलैक आ ओ घूरिकऽ गाम दिस पयर बढ़ौलकै– 'चलू' ।

बिलटा लगेमे ठाढ़ छल । ओ सभ टा देखलकै । रवियो देखलकै ओकरा आ कहलकै–'कने हमर सभ टा सामान उठा ले बिलट !'

आगू-आगू रवि आ ओकर दुनू कात लव आ कविता । एक-दोसरक हाथमे हाथ । पाछाँ-पाछाँ माथपर मोटरी लेने बिलटा ।

किछुए डेग जाकऽ कविता लजा गेलैक । दिनक इजोत पसरल छलैक आ चारू कातसँ लोकक टकटकी लागल छलैक । ओ हाथ छोड़ि देलकै आ रविक पाछाँ-पाछाँ चलऽ लगलैक ।

बिलटा पाछाँसँ देखि रहल छलैक । ओकरा एकटा इजोरिया राति मोन पड़लैक । ओ पुछने रहैक–'की नाम हइ एकर ?'

–'कजरी' ।

बिलटाकेँ ओ नाम आ ओ लजायल स्वर नीक लागल रहैक ।

रविक पाछाँ-पाछाँ लजायल कनियाँ जकाँ चलैत कविता बिलटाकेँ बड़ नीक लगलैक ।

माथपर बोझ रहितो ओकर डेग तहिना आनन्दसँ उमकल रहैक जेना कजरीक सङ गाम जाइत काल रहैक ।

आ, गाम लग आबि रहल छलैक ।

(तेसर भाग)

उत्तरकाण्ड

एक बेर सौंसे गाम उमड़लैक । मुदा से बादमे । पहिने लालकाका ।

दरबज्जेपर छलथिन । रविकेँ फेर घुरैत देखि आ ओकर संग माथपरसँ आँचर लेने एक टा स्त्रीकेँ देखि आश्चर्यचकित रहि गेलथिन । रविक संग कविता आ लवो गोड़ लगलकनि । लालकाका आशीर्वाद देबाक बदला पयर पाछाँ करैत पुछलथिन– 'ई की ? ईसभ के छथि ?'

रवि कहलकनि–'अहाँक पुतहु आ पोता । हिनके छोड़ि पड़ायल रही चौदह वर्ष पूर्व । घुरियोकऽ कहबाक साहस नहि भेल । मुदा एक बेर हम फेर घूरि आयल छी अपन स्त्री-बेटाक संग लालकाका ! हमरा आशीर्वाद दियऽ ।'

लालकाका बिगड़ि उठलथिन– 'एकदम अनर्गल बात ! ई तोहर स्त्री-बेटा कोना भऽ सकैत छऽ ? ई तँ वसन्त ठाकुरक बेटी कविता आ ओकर नाति लव थिकैक । एकर बिआह हरीझाक सारक संग भेल रहैक । हमहूँ रही ओइ विवाहक दिन । ईसभ नाटक आ व्यभिचार गाममे नहि चलतह रवि, बाहर जे कयलह से कयलह । एकरासभकेँ जाय दहक अप्पन घर ।'

–'नै लालकाका ! छोड़ि देबाक लेल एकरासभक हाथ नहि पकड़ने छिऐक आइ । चौदह वर्ष धरि एकरासभकेँ अनेक दुख आ अत्याचार सहऽ पड़ल छैक हमर कायरताक कारण ! आइ सौंसे गामक समक्ष हमरा स्वीकार कऽ लेबऽ दियऽ जे ई हमर स्त्री आ बेटा थिक ।'

लालकाका ओहिना तरङल छलथिन–'तोहर स्वीकार कयने की हेतह ? हम नहि स्वीकार करबह ई बात । गामक क्यो स्वीकार नहि करतह । चौदह वर्षक बेटाक संग एकाएक तोहर स्त्रीक अवतरणक कथा क्यो नहि सुनतह । एकरासभकेँ अप्पन घर जाय दहक ।'

रवि दृढ़तापूर्वक कहलकनि–'एकरासभक घर यैह थिकैक– हमर घर ।

एतेक दिन धरि एकरासभकेँ एकर अधिकारसँ वंचित रखलिऐक । आइ स्वीकार करऽ दियऽ लालकाका ! हमरा अइ पुनीत कार्यसँ नै रोकू ।'

लालकाका तामसे गरजि उठलथिन–'ई थिकह तोहर पुनीत कार्य ? हमरा लग ई सभ बजैत तोरा लाज नै भऽ रहल छऽ ? ककरो स्त्री आ बेटाकेँ अपन घर आनि ओकरा अपन स्त्री-बेटा घोषित कऽ रहल छऽ ! हमरा सभ पता अछि । अइ बेर तोँ वसन्त ठाकुरक घर परिकल छलऽ । नेनोमे तोरा अइ छौँड़ीक संग लागि छलऽ । मुदा, एना खुल्लम-खुल्ला व्यभिचार गाममे नहि चलतह ।'

रविओ उत्तेजित होबऽ लागल । कने कड़ा स्वरमे कहलकनि–'गाममे कोन-कोन पुण्य काज होइत अछि, से हमरा बूझल अछि । एक-एक टा पुण्यात्माकेँ चीन्हि गेल छियनि किछुए मासमे हम । मुदा, ओइ पाप-पुण्यक विचार करबाक लेल नै घुरल छी हम । हम तँ भरि गामकेँ एक टा सत्यसँ अवगत कराबऽ चाहैत छिऐक । हम कायर छी । डरेँ चौदह वर्ष पूर्व लोककेँ नहि कहि सकलिऐक । हमर स्त्री-बेटा गाममे उपेक्षित रहल । आइ सभक सामने हम एकरा स्वीकार कऽ रहल छिऐक । हमरा अइ कर्त्तव्यसँ नहि रोकू ।'

लालकाकापर रविक बातक कोनो असरि नहि भेलनि आ ओ पूर्ववत् अपन बातपर अड़ल रहलथिन–'रोकबऽ हम किएक, रोकतह सम्पूर्ण गाम, सम्पूर्ण समाज। ई दोसरक स्त्री छैक, दोसरक बच्चा छैक । एकरा तोँ अपन कहि देबहक तेँ तोहर नहि भऽ जयतह । पण्डित मंत्र पढ़ा हरिबाबूक सारक संग एकर विवाह करौने छलैक । चालि-ढालि नीक नै छलैक, तेँ ने वर पहिल यात्राक बाद घूरिकऽ नहि अयलैक !'

रवि हुनकर बात कटैत कहलकनि–'हमर स्त्रीपर एहन लांछन नहि लगाउ लालकाका ! हम अनुरोध करैत छी । हम अहाँक अनादर नहि करऽ चाहैत छी । मंत्र पढ़ा जे विवाह पण्डितजी करौलथिन से अहाँसभ देखने छलिऐक, ओहो सत्य छलैक । मुदा ओइसँ पूर्व हम कविताकेँ स्त्री रूपमे ग्रहण कयने छलिऐक । डरेँ बाबूकेँ ई नहि कहि भेल आ हम भागि पड़यलहुँ । हमर शिशु एकर गर्भमे छलैक । मंत्र पढ़ि जकर हाथमे एकर हाथ देल गेल रहैक, से नीक लोक छलथिन । सभटा बात सुनलथिन, तँ बिना स्पर्श कयने चल गेलथिन अपन गाम । ई कविता हमर स्त्री थिक लालकाका ! लव हमर बेटा अछि । मंत्र दस लोकक सामने नहि पढ़ने छी, ताहिसँ की सभ टा सम्बन्ध बदलि जाय ? ओ मंत्र अइ सत्यसँ ऊपर नहि छैक जे आइ हम कहि रहल छी ।'

लालकाका अड़ल रहलथिन–'सत्य चोराओल नहि जाइत छैक । विवाह एक टा पवित्र सम्बन्ध छैक, जकर साक्षी समाज होइत छैक । चोराकऽ पाप होइत छैक । ओइ पाप लेल हमर घरमे कोनो स्थान नहि छैक ।'

रविक उत्तेजना आब बेसम्हार होबऽ लगलैक–'अहाँक घरमे नहि छैक तँ नहि रहौक, हमर हृदयमे छैक । हमर घरमे छैक । हम लऽ जाइत छिऐक एकरासभकेँ अपन घर, बाबूक घर । अहाँ नहि देब आशीर्वाद तँ नहि दियऽ, बाबू हमरा आशीर्वाद देताह । हमर एकसर घूरि अयलापर अहाँ दुखी रही, हमर मृत्युक कामना कयने रही । हमर सपरिवार घूरि आयब कोना बर्दाश्त हैत अहाँकेँ ?'

लालकाका तामसे थरथर काँपऽ लगलथिन । रवि ओइपर बिन ध्यान देने ओइ कोठलीमे पैसि गेल जकरा खाली कऽ भोरे गेल छल । कविता आ लवकेँ कहलकै–'माय आ बाबूक फोटोकेँ प्रणाम कऽ आशीर्वाद ले ।'

तीनू प्रणाम कयलकै । कविताक आकृति जे स्टेशनसँ घुरैतकाल लाजे नवकनियाँ जकाँ रक्तिम आ उल्लाससँ दमकैत छलैक, फेर विवर्ण आ पिरौछ भऽ गेल छलैक ! रविकेँ हताश भावसँ तकैत कलकै–'आब की हैत ?'

रवि ओकर पीठ थपथपा आश्वासन देलकै–'सभ ठीके हेतौ । तोँ चिन्ता जुनि कर ।'

जतबा काल लालकाकासँ बहस भेलै, सामान माथपर लेने बिलटा ठाढ़ छलैक । कोठलीमे आबि सामान राखि देलकै आ पुछलकै–'आरो कोनो काज हय मालिक ?'

रवि पाइ दैत कहलकै–'नै, तोँ जो ।'

बिलटा जाय लगलैक तँ कविता टोकलकै आ अपन डाँड़मे खोँसल कुंजी दैत कहलकै–'कने हमर आङनसँ कपड़ा-लत्ता, वर्तन-वासन आ किछु अन्नो-पानि आनि दे । लवोकेँ संग लऽ जाहिक ।'

बिलटा कुंजी लऽ प्रसन्नतासँ विदा भेल । लव संग गेलैक ।

कविताक आकृति ओहिना विवर्ण आ डेरायल छलैक । रवि ओकरा स्नेहसँ लग घीचि अपन बाँहिमे समटैत कहलकै–'एना त्रस्त आ भयभीत किएक छैँ ? अपन स्वामी आ बेटाक संग अपन घर आयलि छेँ, अइमे डेरयबाक कोन काज ? एक दिन अही आङनक एक टा कोठलीमे एक टा उत्तेजक क्षणमे तोरा संग अन्याय

भेल रहौक । आइ ओइ आङनमे पुतहु बना आनि देलियौक तँ लगैत अछि जेना तोरा संग सम्पूर्ण तँ नहि, आंशिको न्याय भऽ सकलौ । जे बीति गेलैक, तकर उपाय नहि छैक कविता ! चौदह वर्षसँ बेसी तोरा बड़ सहऽ पड़लौक–दुख, अपमान आ लांछन । सभटा हमरे कारण । आइ अपन बाँहिमे समेटि अपन सम्पूर्ण अन्तःकरणसँ तोरा स्वीकार करैत छियौक । सभटा बिसरि जो कविता ! आइ जे भऽ रहल छैक, तकरे सत्य मान ।'

कविता रविक छातीमे मूड़ी गाड़ने कहलकै–'हमरा लेल तँ ओहो सत्य छल जे ओइ दिन अइ आङनमे घटित भेल । से नै रहैत तँ जकरा संग मंत्र पढ़ा बिआहलि गेल छल, चल जैतहुँ । हम तँ तहिएसँ प्रतीक्षामे रही आजुक । आइ ओ दिन आबि गेल अछि तँ डर लागि रहल अछि । नहि जानि, किएक लागि रहल अछि जे एतेक सुख हमरा सहि नहि हैत । जन्मेसँ दुख सहैक अभ्यास भऽ गेल अछि । सुख, सेहो एतेक रास एक बेर पाबि, बड़ डर भऽ रहल अछि ।'

रवि कविताक कँपैत देहकेँ अपन बाँहिक बंधनसँ स्थिर करबाक चेष्टा करैत कहलकै–'कोनो डर नहि कविता ! हम छियौ तोरासभ लेल, लव लेल आ तोरा लेल लालकाका, ई गाम आ सौँसे समाजसँ लड़ि सकै छी हम । बिसरि जो ओइ रविकेँ जे एकदिन अपन कलंकित मुँह नुका चुपचाप पड़ा गेल रहौ । आइ ओइ कलंककेँ अप्पन माथपर साटि लेने अछि रवि । ओहिना माथपर सटने सम्पूर्ण गाम आ समाजक समक्ष ठाढ़ हैत रवि । ओकरा ककरो डर नहि छैक ।'

बाहर गलगुल होबऽ लागल छलैक । रवि कविताकेँ छोड़ि देलकै । ओ नीक जकाँ आँचर लऽ सम्हरिकऽ ठाढ़ि भऽ गेलैक । दरबज्जापर भीड़ जमा भऽ रहल छलैक, लालकाका सभकेँ बजा रहल छथिन, से ओकरा अन्दाज भऽ गेलैक । अङनोमे भीड़ जमा भऽ रहल छलैक । रवि कोठलीसँ बाहर आयल । लालकाकी आ मनोजक कनियाँ ठाढ़ि छलथिन कोठलिए लग आ आङनमे बहुत रास स्त्रीगण छलैक । रवि लालकाकीकेँ कहलकनि–'हमर स्त्री-बेटाकेँ आशीर्वाद नहि देबैक लालकाकी !'

लालकाकी झझकि उठलथिन–'केहन स्त्री आ केहन बेटा ! एक टा बाल-बच्चावाली बिआहलि स्त्रिगणकेँ अपन घर लऽ अनने छऽ आ हमरासँ आशीर्वाद मङैत छऽ ? यैहसभ करबा लेल गाम घुरल छलऽ ? अइसँ तँ.....'

रवि बीचमे कहलकनि–'अइसँ तँ मरिए गेल रहितहुँ सैह नीक ! बारह वर्षक बाद तँ लोक श्राद्धो कऽ दैत छैक । मुदा बूढ़ा नहि माननलनि, बैमान घुइयाँ

छलाह आ मुर्दा चौदह वर्षक बाद हड़हड़ी बज्र जकाँ अहाँक छातीपर खसल । मुदा, अइ मुर्दाकेँ अहाँ दूध पिऔने छलिऐक लालकाकी !'

लालकाकीक आँखि कने आश्चर्यसँ विस्फारित भेलनि, मुदा पकड़ल जयबाक संकोचक बदला ओइमे क्रोधक लपटि आबि गेलनि–'दूध पिअबैत काल कहाँ बुझने छलिऐक जे साँपकेँ दूध पिया रहलि छी, एकदिन हमरे डँसत । तोहर अइ कृत्यपर भरि गाम थू-थू भऽ रहल छऽ । ककरो मुँह देखयबा जोगर रहब हमरालोकनि ?'

लालकाकी मरि गेल छलथिन, ओतऽ ममताक आशा करब व्यर्थ छलैक । ओ तँ मात्र मनोज, लल्लू, बौआ आ छोटकूक माय छलथिन, रविक माय नहि, ओकर लालकाकी नहि । रविक मृत्युक कामनाक बात रवि बूझि गेलनि, सेहो सूनि लालकाकीकेँ कनियोँ ग्लानि नहि भेलनि ।

ओइ लालकाकीसँ स्नेह आ आशीर्वादक आशा करबा लेल रविकेँ अपने ग्लानि भेलैक । ओ ओतऽसँ हँटि बाहर दलान दिस गेल ।

दलान खचाखच भरल छलैक । एतबे कालमे लालकाका सौँसे गामकेँ जमा कऽ लेने छलथिन । रविकेँ अबैत देखि चारू कात चुप्पी पसरि गेलैक । रवि ओइ असह्य चुप्पीक बीच बड़ीकाल धरि ठाढ़ रहल । कखनो कोनो दिससँ आक्रमण शुरू भऽ सकैत छैक, रवि जनैत छल । मुदा आइ ओ सभ टा आक्रमण, सभटा आक्षेपकेँ सहि ओकर प्रत्युत्तर देबाक साहसक संग गाम घूरल छल ।

चुप्पी हरिश्चन्द्र चौधरी तोड़लथिन– 'किदन सभ सुनैत छियऽ रवि ! वसन्तक बेटीकेँ तोँ उठाकऽ अप्पन घर लऽ अनने छहक ! राम भाइ ओ श्रीकान्त काकाक परम्परामे एहन निर्लज्ज आ घृणित कार्य ! ओकरासभकेँ पहुँचा दहक अपन घर ।'

रवि दृढ़तापूर्वक कहलकनि–'अपने घर तँ पहुँचा देने छिऐक ! कविता हमर स्त्री थिक आ लव हमर बेटा । अपन स्त्री-बेटाकेँ अपन घर आनब निर्लज्ज आ घृणित कार्य छैक, से आइए जानल ।'

महेश बाबू बीचेमे बात कटैत कहलथिन–'केहन स्त्री आ केहन बेटा ! कविताक विवाह भरि गामक लोकक सामने भेल छैक, स्वामी आइयो जीवित छैक आ एक टा बेटो छैक । तकरा तोँ जबर्दस्ती अपन स्त्री-बेटा बना लेबहक आ हमरालोकनि मानि जयबह ! व्यभिचार लेल ई बाप-पुरखाक आङन चुनैत तोरा लाज नहि भेलह ? अही लेल गाम घूरल छह ?'

रवि ओहिना दृढ़तापूर्वक कहलकनि–'लाज हमरा भेल मास्टर काका ! आइयो होइत अछि । अपन स्त्रीकेँ असहाय छोड़ि कायर जकाँ पड़ा गेल रही, तकर लाज आइयो होइत अछि । मुदा, आइ जे ओइ दुनूकेँ अपन स्त्री-बेटा कहि अपना रहल छिऐक तकर कनियो लाज नहि अछि, ओकर गर्व भऽ रहल अछि । जे काज बहुत दिन पहिने करबाक चाहैत छल, से आइ कऽ रहल छी । हमरा अहाँलोकनिक आशीर्वाद चाही ।'

पण्डित काका कहलथिन— 'विश्वास नै होइत अछि रवि जे ई तोँ बाजि रहल छऽ ! कतेक बदलि जाइत अछि मनुक्ख ! राम भाइक बेटा आ ओकर एहन कृत्य ! एहन काजमे हमरालोकनिक आशीर्वाद मङैत तोरा लज्जा हेबाक चाहियऽ ।'

रवि हुनक लग जा हुनकर पयर छूबि कहलकनि–'हम अहाँक पयर छूबि कहैत छी जे अइमे लजयबाक कोनो बात नहि छैक, अभिमानक बात छैक । अपन कर्त्तव्यक देरीसँ ज्ञान भेनाइ आ ओकर परिमार्जन कऽ लेब प्रत्येक मनुक्खक लेल गर्वेक बात होइत छैक, हमरो लेल अछि । हम कर्त्तव्यच्युत भऽ गेल रही । चुपचाप विवाह कऽ अपन स्त्रीक गर्भमे अपन नेना छोड़ि लाजे पड़ा गेल रही । चौदह वर्ष धरि पड़ायले रहलहुँ । एहि बीच लोक हमर स्त्रीक सीथमे दोसरक हाथेँ सिन्दुर दिया देलकै । ओ कमजोर स्त्री समाज लग साहस नहि कऽ सकलि, मुदा जे सिन्दूर देने छलथिन तनिका कहि देलकनि । ओ नीक लोक छलथिन, ओही दिन चल गेलथिन । तहियासँ हमर स्त्री दुख आ अपमान सहैत हमर प्रतीक्षा कयलक । आइ ओकरा स्वीकार कऽ हम अप्पन पापक प्रायश्चित्त कऽ रहल छी । अहाँलोकनि हमर मदति करू पण्डित काका, आशीर्वाद दियऽ । अहाँ बाजू बुधियार काका !'

–'यू हैव माइ ब्लेसिंग्स माइ चाइल्ड !' (हमर आशीर्वाद छौक)–बुधयार काका बाजि उठलथिन ।

–'हैव यू गौन मैड भजार !' (अहाँ पागल भऽ गेल छी भजार)–भजार काका टोकलथिन–'शी इज मैरिड टु समवन एल्स' (ओ अनकासँ बिआहलि छैक ।)

बुधिकार काका ठाढ़ होइत कहलथिन–'आइ नो, आइ नो भजार ! बट ट्राइ टु सी व्हाट आदर्स कान्ट सी ।' (हम जनैत छी, हम जनैत छी भजार ! मुदा, ओ देखबाक चेष्टा करू जे आन नहि देखि पाबि रहल छथि ।)

सभ बुधियार काकापर ठोठिया कऽ उठलनि–'अप्पन बुधियारी बन्द राखू

एतऽ । ई गाम आ समाजक मर्यादाक प्रश्न छैक । धर्म आ सामाजिक रीति-रेबाजक अपरिहार्यताक प्रश्न छैक ।'

भजार काका जाइत-जाइत कहलथिन–'दे विल नाट लिसन टु मी, बट यू हैव माइ ब्लेसिंग्स रवि !' (ईलोकनि इमर बात नहि सुनता, मुदा हमर आशीर्वाद छौक तोरा रवि !)

रवि आगू बढ़िकऽ गोड़ लगलकनि । बुधियार काका चल गेलथिन । उपस्थित लोकसभमे एक बेर फेर एक टा चुप्पी पसरि गेलैक । रवियो चुपचाप ओइ कटाह चुप्पीक बीच ठाढ़ रहल ।

चुप्पी लालकाका तोड़लथिन–'अहाँलोकनि आइ एकर फैसला कऽकऽ जाउ । हमर आङनमे ई अनाचार नहि चलि सकैत अछि ।'

रवि चारू कात तकलक । किम्हरोसँ ओकरा अपन समर्थनक आशा नहि लगलैक । सभ जेना लालेकाकाक बातक समर्थन कऽ रहल छलनि ।

महेश बाबू कहलथिन–'लाल ठीक कहै छथुन । हमरालोकनिक आङनमे ई अनाचार नहि चलि सकैत छऽ । तोरा जे करबाक होअऽ, गामसँ बाहर जाकऽ करऽ । एतऽ रहबाक छऽ तँ अइ दुनू माय-बेटाकेँ अप्पन आङन पहुँचा दहक ।'

रविक शरीर क्रोध, घृणा आ उत्तेजनासँ काँपऽ लगलैक–'हम अपन स्त्री-बेटाकेँ अपन आङनमे अनलहुँ से भेलैक अनाचार ! आ, दोसरक बेटी-बहुक इज्जतिपर हाथ देब सदाचार छैक ? राति-विराति कोनो घर पैसब सदाचार छैक ? ओ गाममे चलि सकैत अछि ? अइ दुनू माय-बेटाकेँ आब अइ आङनसँ क्यो नहि निकालि सकैत छैक । हमर आङन अछि आ हम अपन स्त्री-बेटाकेँ राखब, हमरा क्यो रोकि नहि सकैत अछि ।'

तेजू बीचमे छड़पिकऽ बजलैक–'हम एतेक काल संगीक लेहाजे चुप्प रही, मुदा आब हमरा बाजऽ पड़त । ई नै चलि सकैत छौ रवि ! ई गाम थिकैक । एकर अपन नियम, मर्यादा आ कायदा-कानून छैक । जकरा मोन हेतैक, ओ अइ कानूनकेँ तोड़ि नहि सकैत अछि । समाज ओकर निष्कासन कऽ दैत छैक ।'

रविकेँ तेजूक बातपर हँसी लगलैक । तेजू आ मर्यादाक गप्प ! ओ रुच्छतासँ कहलकै–'हमहूँ एतेक काल दोस्तिएक लेहाजसँ नाम नै लेने छलियौक । तोँ अपने बीचमे कूदि नाम खोलि देलहिक । ककरो घरमे, अनकर स्त्री लग जायब

मर्यादाक उल्लंघन नहि छैक गामक लेल, आ हम अपन स्त्रीकें अपन घरमे राखब से भेल अनाचार आ व्यभिचार ?'

फकीरकाका कहलथिन– 'अनेरो तखनसँ स्त्री-बेटाक रट मारने छऽ आ सभपर मिथ्या आरोप लगा रहल छहक। कहिया भेलह तोहर विवाह आ के छऽ साक्षी ?'

रवि कनेकाल लेल चुप्प भऽ गेल। कोनो जवाब नहि फुरलैक। फेर कहलकनि–'हमर साक्षी छथि भगवान।'

महेशबाबू फेर तरङलाह–'फेर मिथ्या आ ओकर संग भगवानक नाम ! विवाहक लेल समाज साक्षी होइत छैक, भगवान नहि। के छलऽ पण्डित ? कहिया भेलऽ विवाह ?'

रविकें किछु बाजि नहि भेलैक। महेशबाबूक साहस बढ़लनि— 'आ यदि भगवान लग तोहर विवाह भेल छलऽ, भगवाने साक्षी छलथुन, तँ पड़यलऽ किएक ? तोँ पड़ा गेलह, तँ कविता झट दोसरक कनियाँ बनि किएक बैसलीह बेदी तर ? तोहर पड़यबाक तेसरे मास तँ विवाह भेल रहनि ! भरि गामकें मोन छैक। तोहर विवाह सत्य छलऽ, तँ ओ विवाह की छलैक जे सभक आँखिक सामने भेलैक ?'

रवि चुप्पी तोड़ैत दृढ़ स्वरमे कहलकनि–'दुनू सत्य छैक मास्टरकाका ! कविता हमर स्त्री अछि आ लव हमर बेटा, सेहो सत्य छैक। आ, ओकर विवाह कवीन्द्र बाबूक संग भेल रहैक, सेहो सत्य छैक। मुदा, कवीन्द्र बाबूक स्त्री ओ विवाहोक बाद नहि बनि सकलनि। ओ बूझि गेलथिन आ ओकरा छोड़ि चल गेलथिन। कहिओ घूरिकऽ नहि अयलथिन। घूरिकऽ अयलहुँ हम, किएक तँ कविता हमर स्त्री थिक, लव हमर बेटा अछि। समाजक सामने हमर विवाह नहि भेल अछि तँ ठहरू अहाँलोकनि। एखने अहीं सभक समक्ष ओकर सीथमे सिन्दूर दऽ दैत छिऐक। ओना, ओकर सीथमे सिन्दूर आइयो हमरे नामक छैक, खाली हाथ कवीन्द्र बाबूक छलनि।'

हरिश्चन्द्र चौधरी बिगड़ैत कहलथिन–'बन्द करऽ ई नौटंकी ! तोँ तँ नाटक-सिनेमावला गप्प करैत छऽ। विवाह भेलनि कवीन्द्र बाबूक संग तँ तोहर स्त्री कोना भेलथुन ? आ, दोसरक स्त्रीकें, चौदह वर्षक एक टा बेटाक मायकें तोँ आइ सिन्दुर कोना देबहक ? चुपचाप दुनूकें वसन्त ठाकुरक घर पठा दहक, काल्हि विचार कऽ गामोसँ बाहर कयल जेतैक।'

रवि हुनकोसँ बेसी जोरसँ गरजल–'ककर मजाल छैक जे ओकरा गामसँ

बहार करतैक ? हमर स्त्री आ बेटा हमर घरमे रहत। जे समाज व्यभिचार आ कुरीतिकें प्रश्रय दैत छैक, मुँह झाँपिकऽ पाप करबाक अनुमति दैत छैक, ओकरा हम चिचियाकऽ कहैत छिऐक जे ई पाप नहि छैक। ई थिक हमर कर्त्तव्य, हमर धर्म। एहिसँ कोनो समाज हमरा रोकि नहि सकैत अछि। ई केहन समाज अछि अहाँलोकनिक औ ? एक दिन ई सरपंच हरिकाका आयल छलाह हमरा लग जे तोँ हमरा पावर आफ एटरनी दऽ दैह, हम लालकें नाच नचा देबनि, तोहर हिस्सा हड़पऽ चाहैत छथुन। एक दिन ई मास्टरकाका आयल रहथि जे पुरना घराड़ी हमरा लिखि दैह, तोहर रक्षा हम करबऽ तोहर पित्तीसँ, ओ बैमान छथुन, तोरो हिस्सा खा जयथुन। ई लालकाका एक दिन सर्वे आफिसमे कहि आयल छथिन खानापूरीमे जे हिनकर जेठ भाइ निस्संतान मुइल छथिन...।'

लालकाका ओकरोसँ बेसी जोरसँ चिचिया उठलथिन–'हम आइयो कहैत छियनि जे हमर भाइ निस्संतान मुइला। भरि गामक समक्ष कहैत छियनि। हमर भाइ साधु छलाह, बेटो हुनकर हीरा छलनि। कोनो दुश्मनक नजरि लागि गेलैक। ओ हेरा गेल, मरि गेल। ई जे घूरिकऽ आयल अछि, से हमर राम भाइक बेटा नहि अछि, कोनो बहुरुपिया अछि। ठकऽ आयल अछि हमरासभकें। ई रवि नहि थिक...कोनो बहुरुपिया थिक। एकरा भगाउ एखने गामसँ...'

लालकाका अपन असल रङमे आबि गेल छलथिन। रविकें एहने आशा छलैक। मुदा, ओकरा गामसँ भगयबाक लेल एतेक नीचतापर उतरि औथिन, से ओकरा आशा नहि छलैक। ओकरा रवि मानबेसँ मुकरि गेलथिन। जहिया घुरल छल चौदह वर्षक बाद, कान्हपर हिचुकि-किचुकि कऽ कानल रहथिन यैह लालकाका।

दुःख आ क्रोधसँ विकृत स्वरमे रवि कहलकनि–'एतेक आसान नहि छैक लालकाका ककरो हक छीनि ओकरा गामसँ भगा देब ! हम तँ अपन हक छोड़ि गाम छोड़ि विदा भऽ गेल रही। मुदा, अपन स्त्री-बेटा लेल घूरिकऽ आबऽ पड़ल। ओकर हक ओकरा अबस्से भेटतैक। सर्वेमे एखन तसदीक बाँकी छैक, ओतहु अहाँलोकनिक प्रपंच चलत तँ आगूक रस्ता छैक। हमरा मृत घोषित कयने ओ हक आब नहि पचत लालकाका ! हम बहुरुपिया छी– कोनो धोखेबाज बदमाश ! की फकीरकाका, अहाँ चीन्हैत छी हमरा ? अहाँक बेटा तँ हम्मर सङी छल। आ अहाँ पण्डितकाका ! अहूँक बेटा हमर सङी छल। आ तोँ तेजू ! तोँ तँ सङे पढ़ैत छलैं, तोँ चीन्है छैं की नहि हमरा ?'

क्यो किछु नहि बजलैक। रविक आकृतिपर दुख आ घृणाक चेन्ह आर

जगजिआर भऽ गेलैक–'क्यो नहि चीन्हैत छी हमरा एहि गाममे ? हम एक टा धोखेबाज बहुरुपिया छी । बजा लियऽ पुलिसकें अहाँसभ ! मुदा एक टा बात जानि राखू । सत्यकें देखार होबऽ पड़तैक, ओकरा क्यो नहि झाँपि सकैत छैक, आ तहिया सौंसे इलाका बूझत जे बहुरुपिया के ? धोखेबाज के ? हम अपन स्त्री-बेटाक सङ एही गाममे, अपने घरमे रहब । अहाँलोकनिक आशीर्वाद चाहैत छलहुँ, तकर बदलामे अहाँलोकनि बहुरुपिया आ धोखेबाजक विशेषण देलहुँ, ई बात मुदा हमरो मोन रहत ।'

रवि जाय लागल, तखन बिलटा आबि गेलैक–'सभटा चीज आनि देली मालिक, आरो कोनो काज हय ?'

रविक आकृति चमकि उठलैक । पाछाँ घूरिकऽ तकैत कहलकनि–'ई बिलटा मुदा हमरा चीन्हैत अछि । एकरासँ पूछि लियौक जे हम के छी ? की बिलट, के छी हम ?'

बिलटा अकबकाइत बजलैक–'हे लू, ई की पुछै छी मालिक ! अहाँकें के नै चीन्है हय ? अहाँ बड़का मालिक, रामबाबू के बेटा रविबाबू ।'

रवि एक बेर फेर उपस्थित ग्रामीण दिस तकलक आ पुछलकनि–'आबो चीन्हैत छी अहाँलोकनि हमरा कि नहि ?'

क्यो कोनो जबाब नहि देलकै । रवि भीतर आङन दिस चल गेल ।

कविताक आँखिमे निन्न नहि छलैक । ओ लगातार कनने जा रहलि छलैक । रवि बुझबैत-बुझबैत हारि गेलैक मुदा कविताक आँखिक नोर बहिते रहलैक । ओहिना कनैत कोठलीमे भानस कयलकै साँझमे, रवि आ लवकें खुआ देलकै । अपन कण्ठ तर एको टा दाना नहि गेलैक । रवि आग्रह कऽ हारि गेलैक ।

लव चौकीपर सूति रहल छलैक । नीचा माँटिपर बिछौन कऽ रवि पड़ल छल आ कविता ओकर छातीपर पड़लि कानि रहलि छलैक । कनिते जा रहलि छलैक ।

रवि एक बेर फेर चेष्टा कयलक–'एना नहि कान कविता ! आइ तऽ खुशीक दिन छौक– हमर-तोहर विवाहक पहिल राति ! एकरा कानिकऽ एना अशुभ

आ व्यर्थ नहि बना ! देख, आँखि उठाकऽ देख ! चौकीपर तोहर बेटा सूतल छौक आ तों घरमे अपन स्वामीक छातीपर पड़ल छें ! हँस कविता, गीत गा ! एना कान नहि ! नहि तँ हमरो साहस कमि जायत ।'

कविता मूड़ी उठौलकै ! कनैत-कनैत आँखि लाल भऽ गेल छलैक आ भीजल आकृतिसँ जतऽ-ततऽ केशक लट पसरि गेल छलैक । लालटेनक इजोतमे कविताक ओ आकृति बड़ नीक लगलैक रविकें ! सभटा नोर पोछैत, ओकर छिड़िआयल केशकें समेटि देलकै रवि । मुदा कविता फेर कानऽ लगलै–'किएक लऽ अनलहुँ हमरा एतऽ ? हम तऽ खाली लवकें पठौने छलिऐक ओकर बाप लग, ओकरा लऽ जाय लेल कहने रही ! हम तँ ओहिना जीवि लितहुँ बाँकियो दिन ! हमरा लेल धरती नहि फटैत जे ओइमे विलीन भऽ जैतहुँ ! अही गाममे, एहने लोकसभक बीच जीवि लितहुँ हम ! मुदा अहाँ एतऽ लऽ अनलहुँ । नहि जानि हमरो की भऽ गेल ! कनियाँ जकाँ अइ घरमे चल अयलहुँ ! आब कोन उपाय हैत ? गामक लोक एकरा किन्हहुँ नहि मानत । कोन सबूत देबैक हमरालोकनि ? आ अनेरो अहाँ आफतमे पड़ि गेलहुँ । लवक भविष्य अंधकारमय भऽ गेलैक ! सभ टा हमरे लेल !'

रवि ओकरा स्नेहसँ डँटलकै–'बताहि भेल छें तों ! हम किएक आफतमे पड़ब आ रविक भविष्य किएक अन्धकारमय हेतैक ! तों दुनू गोटे अपन उचित स्थानपर पहुचि गेल छें, तोहर दुनू गोटेक हक क्यो नहि मारि सकैत छौ ! अपन हक तऽ हम छोड़ि देने रहियनि, एकर हमरा लोभ नहि छल । मुदा आब ओ हक हमर नहि थिक, तोहर छौक, लवक छैक । ओकरा हम लऽकऽ छोड़बनि ।'

कविताक स्वरमे डर आर बढ़ि गेलैक–'तें कहै छी जे अहाँ आफतमे पड़ि गेलहुँ ! अहाँ बुते गामक छल-प्रपंचमे सकब मस्किल हैत । अहाँ तऽ हँसैत-हँसैत अपन अधिकार छोड़ऽवला लोक छी आ एतऽ लोक एक टा अबलासँ ओकर मुँहक आहार छीनि लैत छैक ! बाबूकें आगि देबाक बदलामे हमर पितिऔत सभटा जथा हथिया लेलनि । श्राद्धमे बड़ खर्च भेलनि, मस्किलसँ एगारह ब्राह्मणकें हाथ अइँठ करौलथिन, ताहीमे सभ टा लऽ लेलनि । अहाँ नहि सकब हिनकालोकनिक संग ! भरि गामक स्त्रिगण घर पैसि कथा कहि गेली ! अहाँ दलानपर रही आ आङनमे सभ सतबरता आ पतिव्रता बनि हमरा रण्डी-वेश्या सभ कहि गेलीह । हमर जन्मे बुझाइत अछि ओही लग्नमे भेल अछि । जकरा लग रहैत छिऐक, दुखे दैत छिऐक ! माय-बाप जिनगी भरि हमरा लेल दुख पौलनि । हमरे लेल अहाँक जीवन नष्ट भेल, लालकाकाक स्वप्न नष्ट भेलनि । आ, आब फेर ओही कार्यक पुनरावृत्ति ! अहाँकें

हाथ जोड़ैत छी, लवकें लऽकऽ चल जाउ गामसँ आ हमरा छोड़ि दियऽ अही नग्रमे ! हम सहि लेब, सभ टा सहि लेब । हमरा कोनो दुख नहि हैत ! खाली लवकें अहाँ लऽ जैयौक !' कविता झोंकमे कहि गेलैक !

रवि ओकर देहकें नीक जकाँ अपन बाँहिमे समटैत कहलकै–'हम जनै छी कविता, तों सहि लेबें । सभ टा सहि लेबें । मुदा, हम ईसभ सहबा लेल अइ गाममे एकसरि नहि छोड़ि सकैत छियौक । एतेक दिनपर तों भेटल छैं, तोरा छोड़ि नहि सकैत छियौ हम ।'

कविता ओकर आलिंगनमे निरीह शिशु जकाँ समर्पित बाजि उठलैक–'हमरापर दया करबा लेल सौँसे गामसँ राड़ि किएक मोल लेब ? अहाँ लवकें स्वीकार कऽ लेलिऐ, यैह हमरा ऊपर अहाँक असीम कृपा भेल । बस्स, एकर बाद किछु नै चाही ।'

रवि कविताक मुँहपर अपन आङुर रखैत कहलकै–'ई दया-कृपाक गप्प किएक कविता ? हमरा तोहर स्नेह चाही । एतेक दिन धरि एक टा प्रेत जकाँ बौआइत रहल छी । हमरो तँ ककरो स्नेहक छाहरि चाही !'

कविता ओकर आङुरकें अप्पन मुट्ठीमे लैत कहलकै–'हमरा परतारू नहि । हम की दऽ सकब अहाँकें ? की अछि हमरा लग ? रुग्न गलल अस्थिपंजर मात्र । जाहि देह लेल एक बेर अहाँ अपन आदर्शसँ खसल रही, से देह आ लावण्य तँ ई चौदह टा वर्ष गीड़ि गेल । ओहू लावण्यमयी कविता लेल अहाँक मनमे प्रेम नहि छल, छल एक टा उद्दाम इच्छा । ओइ इच्छाक बड़ पैघ मूल्य चुकबऽ पड़ल अहाँकें । तैयो हमरा लेल असीम दया अछि अहाँक मोनमे । हमरा अपनाकऽ सम्पूर्ण समाजसँ लड़ऽ चाहैत छी । मुदा हमरा लज्जा भऽ रहल अछि । की अछि हमरा लग जे अहाँकें देब ? एकटा मोन छल से तँ अपनो पता नहि लागल जे कहिया देलहुँ अहाँकें । एकटा देह छल से गलिकऽ कंकाल भऽ गेल । हमरा अपन आलिंगनमे लऽ आर लज्जित नहि करू ।'

रवि कने स्नेहभरल क्रोधसँ कहलकै–'तों सत्ते बताहि भेल छें कविता ! सभकिछु तँ छौके तोरा लग हमरा देबऽ वास्ते । तोहर कुमारि देह आ मोन आ तोहर क्षमा । तों हमर नेनपनक सङी आ नवयौवनक प्रेयसी छें । हमर नेनाक माय छैं । तोहर इच्छा चिरदिनसँ हमर मोनमे छल आ आइ तोरा साधिकार अपन कोठलीमे लऽ अनने छियौक । ई तोहर चतुर्थीक राति थिकौक, तों कान नहि कविता ! अइ

रातिकें, अइ क्षणकें, अपन हँसीसँ नमराकऽ ततेक पैघ कऽ दे जे बाँकी जिनगी कटि जाय ओकरे हिलकोरमे ।'

कविता तैयो कनिते रहलैक–'कोना हँसू हम ? की लऽकऽ समर्पित होउ । ई पपड़ी पड़ल ठोर, ई सुखायल-पचकल गाल आ खधियामे धँसल आँखि । सुखाकऽ टाँट भेल हाथ-पयर आ खड़खड़ करैत तरहत्थी । हमरा लाज होइत अछि अपनापर । हमरा पहुँचा दियऽ अपन घर आ लवकें लऽ जैयौक कतहु, जहाँ ओ मनुक्ख बनि सकय, जतऽ ओकर मायक अभाग्यक छाया ओकर पछोड़ नहि करैक ।'

रवि कने आहत अभिमानसँ कहलकै–'हमरा की बूझि लेने छैं कविता तों ? आइयो तों हमरा वैह कामान्ध रवि बूझि रहलि छें ? तों केहन छें, हमर आँखिमे देख । ओइमे आइयो तोरा वैह लावण्ययुक्त आकृति भेटतौक । हमरा लेल तँ तों आइयो ओहिना छें, आतबे आकर्षक, मुदा ओइसँ बेसी अप्पन । आइ तों हम्मर छें । सौँसे गाम लग चिचियाकऽ कहि आयल छिऐ जे कविता हमर स्त्री अछि आ लव हमर बेटा । एना मासुक लोभी कामान्ध रवि कहि अपमान नहि कर हमर । एकदिन तोरा लग अपराध भेल छल, मुदा आइ अपन सम्पूर्ण होश-हवाशमे पूर्ण दायित्वक संग....

कविता बीचमे बात काटि देलकै–'सैह तँ हमहूँ कहैत छी जे अहाँ अपनाकें दोषी मानि पापक प्रायश्चित्त कऽ रहल छी । जाहि कविताकें अहाँ प्रबल आवेगसँ अपन आलिंगनमे बन्हने छलिऐक, ओकरोसँ अहाँक प्रेम नहि छल । आइ जाहि कविताक कंकाल अहाँक आलिंगनमे सिकुड़ल पड़ल अछि, ओकरो लेल अहाँक हृदयमे प्रेम नहि, दया अछि, अपराधक प्रायश्चित्त करबाक संकल्प अछि । मुदा ई कविता अहाँकें ओइ दायित्वसँ मुक्त करैत अछि । ओकर मोनमे अहाँ लेल कोनो कुभाव नहि छैक, मात्र प्रेम छैक अहाँ लेल सभ दिनसँ, ओही प्रेमक बलपर ओ खेपि गेल एतेक वर्ष । लवकें अहाँ लग पहुँचा देलक । ओकर काज समाप्त भऽ गेलैक । ओ सुखी अछि । ओकरा आर सुख नहि चाहिऐक ।'

रविक हाथक बंधन ढील भऽ गेलैक आ अभिमानसँ मुँह फेरि करौट लऽ लेलक रवि–'जतेक इच्छा होउ, गारि दऽ ले हमरा । आब नहि टोकबौ हम । हम अपन स्त्री आ बेटाकें घर अनने छी, कोनो अनाथाश्रमक स्त्री आ ओकर नेनाकें आश्रय देबऽ नहि अनने छिऐक । एखन एतेक हृदयहीन नहि भेल छी हम !'

कविता पाछाँसँ ओकर गरदनिमे बाँहि धऽ ओकर मुँह अपन दुनू हाथमे लऽ

लेलकै–'एना नहि तमसाउ । अइ अभागलिकेँ एतेक सुख नहि सहि हेतैक, हम फेर कहै छी । हमरा घृणासँ दुतकरि दितहुँ तँ सहि लितहुँ हम ।'

रवि घूमिकऽ कविताकेँ अपन देहसँ साटि लेलकै । कविताक कानब बन्द भऽ गेल छलैक, मुदा देह थरथरा रहल छलैक । अपन ठोर आ हाथक स्पर्श कविताक आकृति आ शरीरकेँ बेर-बेर देलकै रवि । ओकर देहक थरथरी बन्द भऽ गेलैक आ तखन अयलैक ऊष्मा । एकटा स्निग्ध आलोड़न । रविक छातीपर अपन देहक बोझ दैत ठोरसँ ओकर कण्ठ छुबैत कविता कहलकै–'अइ बेर मुदा भागिकऽ पड़ाय नहि देब अहाँकेँ ।'

ओ आलोड़न अन्तहीन भऽ गेलैक । आरो स्निग्ध, आरो तीव्र । कविता शिथिल भऽ पड़लि रहैत छलैक । मुदा रविक स्पर्श होइते फेर वैह स्निग्ध आलोड़न, ओहने उन्मादक वेग । रवि शिथिल भऽ पड़ि रहैत छल । कविताक स्पर्श होइते फेर वैह सिरहन, वैह स्निग्ध कम्पन ।

भोर तखनो नहि भेल छलैक । लालटेन मिझा देने छलैक कविता । कोठलीक अन्हारमे इजोतक एको टा रेख नहि छलैक । मुदा कविता देखि रहलि छलैक । रविओ देखि रहल छलैक । स्पर्शमे जेना दृष्टि आबि गेल छलैक । एक-एक टा भाव, एक-एक टा सिहरन आ आलोड़नकेँ देखि रहल छलैक दुनू । अनुभव कऽ रहल छलैक प्रतिक्षण ।

'सूतब नहि ?' – कविता पुछलकै ।

–'आइ कोना सूतब ? आइ तँ पहिल मिलन-राति थिक ! आइ सुतबाक गप्प नहि कविता !'

कविता रविक छातीपर हाथ रखैत कहलकै–'तखन आर गप्प कहू । ओतेक दिनुका गप्प । चौदह वर्ष धरि कहाँ रही अहाँ ? कतऽ-कतऽ गेलहुँ ? आइ सभ टा कहू हमरा.....

आ, रवि सभटा कहलकै ।

बरौनीसँ फेर गाड़ी । मुदा मोकामासँ कलकत्ता नहि गेल रवि । चल गेल पटना ।

भूखल-पिआसल-विवर्ण आ डेरायल आकृति देखि गेटपर धऽ लेलकै टिकट कलक्टर । बड़ी काल धरि रोकने रहलैक, जहल पठा देबाक धमकी देलकै । रवि कोनो जवाब नहि देलकै । चुपचाप ठाढ़ रहल । फेर नहि जानि की भेलैक ! ओकर विपन्न स्थितिपर दया वा अपात्र लग व्यर्थ आशा करबाक अपन गलत निर्णयपर आक्रोश कि एक्के बेर चिचियाकऽ कहलकै–'जाओ, भाग जाओ ।'

रवि स्टेशनक बाहर आबि गेल । सड़कक कातमे लागल दोकानसभमे चाह पिबैत, बिस्कुट खाइत लोककेँ ललचायल आँखिएँ तकैत रहल । पड़ाइत-पड़ाइत गामसँ एतेक दूर आबि गेलाक बाद आब भूख-पियासक अनुभव भऽ रहल छलैक । मुदा एको टा पाइ संग नहि लेने छल । देहपर एक टा गंजी छलैक आ डाँड़मे एकटा धोती ! बस्से एतबे । ने पयरमे चप्पल, ने देहमे कमीज । रविकेँ पड़यबाकाल कोनो चीजक होश नहि रहलैक ।

मुदा दोकानदारसभकेँ पूरा होश छलैक । ओकरा ओना तकैत देखि सभ साकांक्ष भऽ गेल छलैक–'कहीं किछु लऽ ने पड़ाय ।' रवि आगू बढ़ैत गेल ।

एक टा होटलमे गरम पूरी छना रहल छलैक । ओतहि किछु काल निहारैत रहल रवि । भोर भेले छलैक आ गर्मी मासक भोरमे दोकानसभ जल्दिए खुजि गेल छलैक । रवि लेल शहर नव छलैक, कहियो पटना आयल नहि छल ।

ओकरा टकटकी लगौने देखि दोकानदार टोकलकै–'क्या बात है ? चलो, आगे बढ़ो ।'

रवि आगू बढ़ऽ लागल, मुदा फेर किछु सोचि ठहरि गेल आ कहलकै–'हमरा कोनो काज भेटि सकैत अछि ?'

दोकानदार एकबेर ऊपरसँ निच्चाँ धरि देखलकै ओकरा । आ फेर पुछलकै–'कोन काज अबै छौ तोरा ?'

रवि कने आशान्वित होइत बाजल–'कोनो काज ! जे कहब से कऽ देब हम, हमरा राखि लियऽ ।'

दोकानदार कहलकै–'अइँठ उठाबऽ पड़तौक । थारी-बाटी धोबऽ पड़तौक ।'

रवि आर आशान्वित होइत बाजल–'हमरा मंजूर अछि ।'

दोकानदार मुदा सभ टा बात साफ कऽ लेबऽ चाहैत छल–'भोजन आ पन्द्रह टाका भेटतौक । ड्यूटी भोर छौ बजेसँ राति बारह बजे धरि । मंजूर छौक ?

रवि फेर कहलकै–'हमरा सभ टा मंजूर अछि ।'

आ, रवि ओही दोकानमे रहि गेल । अइँठ-कूठ साफ करऽ लागल । साहुजी बेसी निर्दयी नहि छलैक । अठारह घण्टा खटौलाक बदला दिनमे मोटका चाउरक भात आ पानिवला दालिक संग कहिओ-काल बचल-खूचल तरकारियो दऽ दैत छलैक । रातिकेँ गनिकऽ मोट-मोट चारि टा रोटी । रविक काज चलि जाइत छलैक ।

पहिल मास पन्द्रह टाका भेटलैक, तँ एकटा दोसर खण्ड मोट सन धोती कीनि लेलक । दोसर मास भेटलैक फेर पन्द्रह टाका, तँ एकटा कमीज बनबा लेलक रवि । मुदा, तेसर मासक दरमाहा हाथमे दैत साहुजी कहलकै–'देख बौआ, कोनो आन ठाम काज ताकि ले । तोहर काजसँ कोनो शिकायत नहि अछि हमरा । मुदा नहि जानि किएक, लगैत अछि जेना ई काज तोरा जोगर नहि छौ, पढ़ल-लिखल बुझाइत छेँ, ब्राह्मण छेँ । अइ ठाम अइँठ-कूठ खाकऽ दोकानक पट्टापर पड़ल रहैत छेँ तँ अगलो-बगलोक लोक पूछऽ लगैत अछि । कैकबेर कतेक ग्राहको पूछि चुकल जे ई के छौक । अधलाह नहि मानिहेँ बौआ, तोँ कोनो नीक सन दोसर काज ताकि ले, पढ़ल-लिखलवला ।'

रवि पन्द्रह टाका पाटिकमे राखि, हाथमे दोसर खण्ड धोती लेने ओतऽसँ विदा भेल । एक टा झोरा किनलक आ धोती ओइमे राखि लेलक । पयर पाकऽ लगलैक, एक टा मामूली चप्पल कीनि लेलक । पाकिट फेर खाली । दिन भरि बौआकऽ आबय आ भरि छाक पानि पीबि रातिकेँ झोरा माथ तर राखि गांधी मैदान वा प्लेटफार्मपर जाकऽ बेंचपर सूति रहय । भोरे गंगाजीमे स्नान कऽ, धोती सुखा लेअय आ फेर ओकरा झोरामे राखि, दिन भरि बौअयनी, आ अन्तमे फेर वैह कलक भरि छाक पानि ।

भूखे तेसरे दिन आँखि चोन्हराय लगलैक । फेर साहुजी लग पहुँचल–'अही ठाम रहऽ दियऽ हमरा, भूखे प्राण तँ नहि जायत ।'

साहुजी भोजन देलकै आ देलकै एक टा पता – 'ओइ ठाम चल जो बौआ ! सम्हरिकऽ गप्प करिहेँ, जज साहेब छथिन् । धीया-पूता लेल एक टा मास्टर चाहियनि, हमरे गामक छथिन–एक बेर कोशिश कर । बेलीरोडपर छैक ।'

पेट भरि गेलासँ तृप्त आ उल्लसित रवि नव उत्साहक संग विदा भेल आ जज साहेबक क्वार्टरमे डेराइत पैसल । बरण्डेपर आरामकुर्सीपर बैसल छलथिन । पुछलथिन–'की थिक ?'

रवि कण्ठ साफ करैत बाजल–'जी, हमरा अपने गामक साहुजी पठौने छथि, जिनकर स्टेशन लग दोकान छनि । अपनेकेँ धीया-पूता लेल एक टा मास्टर चाही ?'

जज साहेब चश्मा उतारि एक बेर नीक जकाँ देखलथिन आ फेर प्रश्न कयलथिन–'अहाँ पढ़ा सकबै ? अहाँ तँ अपने स्कुलिया विद्यार्थी लगैत छी, पैघ-पैघ विद्यार्थी छैक–अठमा आ छठाक । कोन क्लास तक पढ़ा सकैत छिऐक ?

रवि विश्वासपूर्वक बाजल–'मैट्रिक धरिक ।'

रविक उत्तर आ ओकर स्वरमे झलकैत आत्मविश्वाससँ जज साहेब आकृष्ट भेला–'कहाँ धरि पढ़ल छी ? कोनो सर्टिफिकेट अछि ?'

रवि किछु आशंकित भेल, मुदा फेर ओतबे विश्वाससँ कहलकनि–'सर्टिफिकेट तँ कोनो नहि अछि, मुदा अपने विद्वान् लोक छी । पहिने हमर परीक्षा लऽ लेल जाय ।'

जज साहेब आर प्रभावित भेलथिन । एक बेर नीक जकाँ ओकरा ऊपरसँ नीचाँ धरि देखलथिन आ पुछलथिन–'दू टा विद्यार्थी अछि, अठमा आ छठाक । तकर अतिरिक्त एक टा आरो छोट नेना अछि । एखन स्कूल जायब शुरू नहि भेल छैक । तीनू अहीँक संरक्षणमे रहत । की लेब अहाँ ?'

आशान्वित होइत बाजल–'माथपर छाहरि लेल एक टा आश्रय आ दू संध्या भोजनक अतिरिक्त अपनेकेँ जे इच्छा हो, सैह दऽ देब ।'

'नाम की अछि ?'- जज साहेब दोसर प्रश्न कयलथिन ।

'रवि ।'–छोटसन उत्तरसँ जज साहेब संतुष्ट भऽ गेलथिन ।

रविक माँथपर छाहरि भेटि गेलैक–जज साहेबक सरबेण्ट्स क्वार्टर । दुनू संध्या भोजनोक ब्योँत भऽ गेलैक । एक बेर फेर साहुजी ओकर प्राणरक्षा कयने छलैक ।

विद्यार्थी दुनू नीक छलैक–तरुण आ अरुण । बुद्धि तीक्ष्ण रहैक दुनूक ।

खाली खेलौड़िया बेसी । जल्दिए रितिया गेलैक रविक संग । तेसर नेना चारिए वर्षक छलैक–खूब सुन्दर आ गोल-मटोल । रविकें नीक लगैक ओकरो पढ़बैत आ कोरामे लैत ।

मुदा, ओहू ठाम टिकि नहि सकल बेसी दिन रवि । जज साहेबक स्त्रीक कुदृष्टि पड़ि गेलनि । अधिक काल चीज-वस्तु लाबऽ पठबऽ लगलथिन रविकें–तरकारीसँ लऽ लिपिस्टिक धरि । अरुण-तरुण टोकबो करनि तँ डाँटि लेथिन– 'बैसले तँ रहैत छथुन तोहर मास्टर साहेब ! खाइत छथुन आ ढेकरैत बैसल रहैत छथुन । भोर-साँझ एक घण्टा पढ़ा देलथुन, बस्स ।'

रविकें चीज-वस्तु आनि देबऽमे कोनो आपत्ति नहि छलैक । मुदा, ओकर आनल कोनो चीज जज साहेबक कनियाँकें पसिन्द नहि होइत छलनि । सभमे खराबी निकालि फज्झति करैत रहैत छलथिन । जज साहेबक लेहाजे रवि चुप रहि जाइत छल ।

मुदा, एक दिन जज साहेब अपने सुनि लेलथिन आ कनियाँकें टोकलथिन–'एना मास्टर साहेबकें बेइज्जति नहि करियनु । जेहने मूर्ख अपने छी, तेहने सभकें बूझि लैत छिऐक आ सभकें एक्के लाङनिसँ लाड़ि दैत छिऐक । माँफी मङियनु मास्टर साहेबसँ ।'

माँफी मङबाक सती अट्ठाबज्जर खसा देलथिन जज साहेबक कनियाँ– 'आब तँ अइ घरमे ई मस्टरबे रहत कि हमहीं रहब ! एकरा द्वारे बेइज्जति कयलनि हमरा, एकरे सामने मूर्ख कहलनि । जा धरि जायत नहि ई घरसँ, हम अन्न-पानि नहि छूअब ।'

आ, सत्ते अन्न-पानि त्यागि देलथिन ओ । जज साहेब हारि मानि गेलथिन । रविक हाथमे एक सय टाका दैत कहलथिन–'हमर स्थिति देखि हमरा क्षमा कऽ देब मास्टर साहेब ! अहाँ अपन घर घूरि जाउ । नीक कुल-शीलक बुझाइत छी । कोनो आवेश आ प्रतिक्रियामे जीवन नष्ट नहि करी ।'

रवि टाका घुरबैत कहलकनि–'सभ मास तँ पचास टाका देबे कयल अपने– भोजन आ आवास अलग । ऊपरसँ अपनेक असीम स्नेह । ई टाका राखू अपने । हमरा मात्र आशीष दियऽ ।'

मुदा जज साहेब नहि मानलथिन । टाका पाकिटमे राखि देलथिन । अरुण-तरुण विदा होयबा काल कानऽ लगलैक ।

रविकें घूरि जाय लेल कहने छलथिन जज साहेब । मुदा, ओ घूरि नहि सकल । बेर-बेर एक टा धमकी मोन पड़लैक आ मोन पड़लैक उपहास करैत आकृतिसभक बीच दुखी आ हताश बाबूक आकृति । ओकरा घूरि जयबाक साहस नहि भेलैक ।

घूरिकऽ साहुजी लग गेल । ओहो नहि छलैक । गाम गेल छलैक । एक वर्ष जज साहेबक घरमे बिता रवि फेर बेकार भऽ गेल छल । मुदा, अइ बेर स्थिति दोसर छलैक । देहपर नीक वस्त्र छलैक आ पाकिटमे दू सय टाका । एक सय बचाकऽ रखने छल आ एक सय जज साहेब देलथिन ।

पटनामे ओ असुरक्षित सेहो अनुभव करैत छल । कोनो दिन गामक कोनो लोक देखि लेतैक आ सभ टा भण्डा फूटि जयतैक । ओ आर दूर जाय चाहैत छल । एक दिन एक टा गाड़ीमे बैसि हाबड़ा पहुँचि गेल ।

स्टेशनेपर रविक माथ नाचऽ लगलैक । एतेक भीड़, एतेक लोक आ एतेक चहल-पहल ! कल्पना नहि छलैक ओकरा । विशाल भीड़क संग बाहर आबि रवि किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेल । लगलैक जेना एतऽ अयबाक निर्णय लऽ पैघ गलती भऽ गेलैक । किम्हर जाय, की करय, किछु फुरा नै रहल छलैक । सुनने छल जे बड़ाबाजारमे बड़ मैथिल छथि । ओ कन्हापर झोरा आ हाथमे टिनही बक्सा लेने आबू बढ़ल । एकटा ट्राममे कहुना चढ़ि गेल ।

कन्डक्टर लग अयलैक–'टिकट !'

रवि बक्सा राखि पाकिटमे हाथ देलक । हाथ आर-पार चल गेलैक । पाकिट नदारद । कन्डक्टर बिगड़ि उठलैक–'उतरो, अगले स्टॉपपर ।'

ट्राम ठाढ़ होइते ओकरा जेना क्यो धकिया देलकै ट्रामसँ । ओ बक्सा हाथमे लेने ओंघराइत-ओंघराइत बाँचल ! मूड़ी उठा देखलक– खाली ऊँच-ऊँच विशाल अट्टालिका ! नीचाँ तकलक— खाली अपार जनसमूह आ जोरसँ पड़ाइत मोटर-ट्राम— बस्स । बीच-बीचमे रिक्सा सेहो, साइकिल-रिक्सा नहि, मनुक्खकें घोड़ा जकाँ जोतने रिक्सा ! रवि सुनने छलैक, मुदा देखिकऽ आरो अजीब लगलैक ।

मुदा, सेसभ अधिक देखबाक मनोदशा नहि छलैक । पाकिट काटल आ संगमे एको टा पाइ नहि । महानगर कलकत्ताक अपरिचित भीड़मे ओकरा अपन स्थितिपर बेर-बेर कनबाक इच्छा भऽ रहल छलैक । पटना छोड़बाक अपन निर्णयपर क्रोध आ पश्चात्ताप भऽ रहल छलैक ।

मुदा, पटना पाछाँ छूटि गेल छलैक आ महानगरक फुटपाथपर हाथमे एक टा टिनही बक्सा आ कान्हपर झोरी लेने रवि आगू बढ़ल जा रहल छल । पियास लगलैक तँ एक टा कलमे चुरू लगा पानि पीबि लेलक । फेर आगू बढ़ल । सामने बड़का मैदान आबि गेलैक । ओ ओहीमे पैसि गेल । बीच मैदानमे पहुँचि गेल । ओतऽसँ चारू कात ठाढ़ अट्टालिका आ दौड़ैत लोक आ सवारीसभकेँ देखलकै एक बेर । थाकिकऽ चूर भऽ गेल छल । रौद तीव्र भऽ गेल छलैक । झोरासँ अखबार बाहर कयलक आ माथ तर बक्सा आ झोरा राखि मैदानमे पड़ि रहल । आँखिपर रौदसँ बचवा लेल अखबार राखि लेलक । किछु काल बाद अखबार हँटा फेर चारू कात तकलक ।

मैदानमे बहुत रास लोक आबि-जा रहल छलैक । खोमचावलासभ सामान बेचि रहल छलैक जहाँ-तहाँ । सामने एकटा ताजमहल ठाढ़ छलैक । ताजमहल नहि, विक्टोरिया-मेमोरियल । बाबू देखौने रहथिन फोटो अलबममे ।

बाबू मोन पड़लासँ हताश मोन कानऽ-कानऽ सन भऽ गेलैक । एक टा क्षणिक आवेशमे बाबूक सभटा स्पप्न खण्ड-खण्ड कऽ ओ एकटा विशाल नगरमे असहाय-निरुपाय पड़ल छल ।

ओ फेर अखबार आँखिपर राखि लेलक । निन्न भऽ गेलैक । उठल तँ साँझ भऽ गेल छलैक । चारू कात जगमग प्रकाशमे महानगरक वैभव छिड़िआयल छलैक । रवि ऊठिकऽ बैसि गेल । भूखसँ पेट कुलबुला रहल छलैक । बक्सा उठा मैदानसँ बाहर दिस विदा भेल । ग्रैण्ड मेट्रोक बत्ती चमकि रहल छलैक । सड़क पार कऽ ओतऽ जयबामे रविकेँ बड़ी काल लगलैक । लगैत छलैक जेना सभटा देहेपर चढ़ि जयतैक भीड़ आ सवारी ! ओइ भीड़मे एम्हरसँ ओम्हर आ ओम्हरसँ एम्हर बौआइत रहल ।

भीड़ कम्म होइत-होइत खतम भऽ गेलैक । रोशनियो मिझाइत-मिझाइत आधा भऽ गेलैक । आखिरी बस आ ट्राम सेहो चल गेलैक । सिनेमाक दोसर 'शो'क पसिंजर लऽ टैक्सी आ मिनीबस सभ चल गेलैक । रवि ओइ बाटसभपर तैयो ओहिना टहलैत रहल । एक ठाम एक टा हाथ-रिक्शावला पछोड़ धऽ लेलकै । म्यूजियमक सामने । बड़ी काल धरि पछोड़ धयने रहलैक-'जाबेन बाबू ? खूब भालो जीनिस !'

रविकेँ पहिने कोनो अर्थे नहि लगलैक । फेर अर्थ बूझि हँसी लगलैक । ओकरो क्यो पैसावला गहिकी बूझि सकैत छलैक एहनो हालतिमे, से सोचि ओकरा

आरो हँसी लगलैक । रिक्सावला निराश भऽ बैसि गेलै सड़कक कातमे रिक्सा लऽकऽ आ रवि आगू बढ़ि गेल । मुदा, लगलैक जेना एना रातिमे घूमब निरापद नहि छलैक । बहुत रास मौगीसभ श्रृंगार-पटार कयने सड़कपर आबि गेलि छलैक आ हाथरिक्शा आ टैक्सीसभ लग ठाढ़ि छलैक । ओ चुपचाप फेर मैदानमे पैसि गेल आ बीच मैदानमे पहुँचि बक्सा माथ तर राखि पड़ि रहल । ऊपर महानगरक आकाश छलैक आ चारू कात पसरल मैदानमे डेराओन अन्हार छलैक । ओ आँखि बन्द कऽ लेलक ।

आँखि खुजलैक तेँ चारू कात रौद पसरल छलैक । एक टा बूढ़ सन लोक एकटा काठक बक्सामे माँटिक चुक्कड़सभ आ हाथमे केतली लेने ठाढ़ छलैक-'चा खाबेन दादा !'

रवि अर्थ बूझि गेलैक आ कहलकै-'बिना पाइए पिअयबै ?'

रवि ई बूझि कहने छलैक जे ओकर बोली नहि बुझतैक चाहवला । मुदा ओ बूझि गेलै आ कहलकै-'कोनो बात ने ! पी लियऽ बिना पाइए ।'

रविकेँ आश्चर्य भेलैक । चाहक चुक्कड़ हाथमे दैत चाहवला कहलकै-'हमरो घर ओम्हरे अछि, मधुबनी लग । अहाँ कोना आबि गेलिऐक इम्हर ? रातिभरि एतहि सूतल छलिऐक ?'

सहानुभूति पाबि रविक मोन फेर कनौन भऽ उठलैक । सभ टा कहलकै चाहवलाकेँ । सभटा सुनि ओ कहलकै-'अहाँ एतहि रहू ! हम कने ई चाह बेचने अबै छी । फेर चलब हमरा संग । कोनो इन्तजाम भैए जायत । हमरासभ चारि जन एक टा कोठलीमे छिऐ ! तीन जन रिक्शा चलबै अछि ।'

रवियो ओही कोठलीमे आबि गेल- बड़ाबाजारक ओ पिजड़ानुमा कोठली । किम्हरोसँ कोनो इजोत नहि । ओही कोठलीमे रवि पाँचम प्राणी आबि गेलैक । ओकरो दिया देलकै एक टा हाथ-रिक्शा चाहवला भिखारी आ रिक्शावला महिन्दर, नागेश्वर आ चलित्तर । ओकरेसभक संग चारिम रिक्सावला रवि । आठ वर्ष धरि रिक्शा लेने दौड़ैत रहल । हकमिकऽ सुस्ता लैत छल, फेर दौड़ऽ लगैत छल । सभ वर्षमे गाम जाइत छलैक एक बेर । जयबाकाल सभ एक बेर पुछैक-'तोँ नहि जयबैं रवि गाम ? कतऽ घर छौक तोहर ?'

रवि ककरो नहि कहि सकलै । एक टा धानुख, एक टा ततमा आ दूटा दुसाध छलैक । चारू संग रहैत छल । पाँचम भेलैक रवि । बड़ मानैत छलैक रविकेँ सभ आ गाम जाइत काल पुछैत छलै-'गाम किएक ने जाइ छेँ रवि ?'

रवि कोनो उत्तर नहि दैत छलैक । मुदा वर्षमे एक बेर गाम जयबाक संग ओसभ बीचमे कहिओ काल इम्हरो-ओम्हरो जाइत छलैक । एक बेर पुछने रहैक–'तोहूँ चलबे रवि ?'

रवि संग देने रहैक । फेर एकसरो जाय लागल कहिओ काल । मासमे एकाध बेर । अभ्यास भऽ गेलैक, जेना रिक्शा चलयबाक अभ्यास भऽ गेलैक । पहिल दिन लागल रहैक जे उनटिए जयतैक । फेर लगलैक जेना सामनेसँ अबैत, पाँछासँ अबैत सभ टा ट्राम-बस ओकरेपर चढ़ि जयतैक । फेर अभ्यास भऽ गेलैक । रवि सीटपर भारी-भारी सवारी लेने बेजान दौड़ऽ लागल ।

आठ वर्षक बाद ओहो छोड़ि देलक । एक टा दोकान रहैक बड़ाबाजारमे । कहलकै ओकर मालिक–'अढ़ाइ सय टाका देबौक, छोड़ ई रिक्शा ।'

रवि बेसी कमा लैत छल, मुदा रिक्शासँ पिण्ड छुटबाक अवसर ओ छोड़ऽ नहि चाहैत छल । कपड़ाक दोकान छलैक । रवि सभ टा देखैत छलैक, कपड़ा फाड़बासँ लऽकऽ केस धरि ।

शुरूमे तीन मास बढ़ियाँ चललैक । समयपर पाइ देलकै । फेर दू-दू मासपर देबऽ लगलैक । बादमे सेहो नहि । छओ मासक बकियौता भऽ गेलैक तँ एकदिन रवि कहलकै–'एना तँ नहि काज चलत सेठजी ! हमर दरमाहा तँ देबऽ पड़त । छओ मास भऽ गेल । ई तँ उचित नहि !'

सेठजीक आँखि रङि गेलनि–'आइ तोँ हमरा उचित-अनुचित सिखा रहल छेँ ? काल्हि धरि रिक्शा घीचैत छलैँ, जानवर जकाँ । हम बाबू बना गद्दीपर बैसा देलियौ आ आइ हमरे शिक्षा दऽ रहल छेँ ?'

आ, प्राते भेने बदला लेलकै सेठजी । कैशबक्साक सभ टा पाइ बहार कऽ लेलकै आ ओकर कोटमे राखि देलकै । दोकान बन्द करऽ काल कहलकै–'हिसाब देखियौ ?'

रवि अवाक् ! कैशबक्सामे एक्को टा रुपैये नहि । पुलिस बजबा लेलकै सेठजी आ तलाशी शुरू करबा देलकै । ओकर कोटमे तीन हजारक गड्डी बहरयलैक ।

बड़ कोशिश कयलकै भिखारी, महिन्दर, नागेश्वर आ चलित्तरा, मुदा सेठ ओकरा जहल पठबाइए देलकै ।

जहलसँ छूटल तँ सोझे सेठ लग गेल आ कहलकै–'हम जहलसँ छूटि

आयल छी आ दोबारा जहल जयबामे हमरा डर नहि हैत । चोरिक इलजाम लागि चुकल अछि, खूनोक लेल आब हमरा चिन्ता नहि हैत । अखन खाली हाथ आयल छी, मुदा छओ मासक दरमाहा पन्द्रह सय यदि तुरत नहि देब, तँ चक्कुओ लऽकऽ आबि सकैत छी ।

सेठजी डेरा गेलैक आ ओकर पन्द्रह सय टाका दऽ देलकै । चलित्तर कहलकै–शुरू कऽ दे फेर रिक्शा । मुदा, रविकेँ दोबारा रिक्शा चलायब शुरू करबाक इच्छा नहि छलैक । ओ दोसरे काज शुरू कयलक । ठेलापर फलसभ लेलक आ फल आ ओकर रस बना बेचऽ लागल घूमि-घूमिकऽ । बेसी काल एसप्लानेडक मैदानेमे रहैत छलैक ओकर ठेला एक कातसँ दोसर कात । कौखन विक्टोरिया मेमोरियलक गेटपर तँ कखनो म्यूजियम लग वा लाइटहाउस सिनेमा लग । खूब बिक्री होबऽ लगलैक ।

चारि वर्ष ओहुना बीति गेलैक । तखन रविक मोन छटपटाय लगलैक । बेर-बेर दुःस्वप्न आबऽ लगलैक जे फेर बाबूसँ भेंट नहि होयतैक । ओ गाम घूरिकऽ जयबाक निर्णय लऽ लेलक ।

चौदह वर्षमे रवि बदलि गेल छल । अट्ठारह वर्षक ओ सुकुमार आकृति कठोर श्रम आ रौद-पानिमे बौआइत कठोर आ झामर भऽ गेल छलैक । केश असमयमे ठाम-ठाम पाकि गेल छलैक आ गौरवर्ण जरिकऽ ताम्रवर्ण भऽ गेल छलैक । रिक्शा-ठेला चलबैत-चलबैत सोझ देह कने आगू दिस झुकि गेल छलैक आ हाथ खुरदुर आ सक्कत भऽ गेल छलैक ।

रवि अपन बगय-बाना बदलि लेलक । साहेबी लेबास बनबा लेलक । नीक सूटकेस आ बिछौन लऽ लेलक आ सभ टा कमायल टका पाकिटमे भरि लेलक । ओ बाबूकेँ कनियो भनक नहि लागऽ देबऽ चाहैत छलनि जे ई चौदह वर्ष ओकर कोना बीतल छलैक । ठेला चलित्तरकेँ दऽ देलकै आ तेरह-चौदह वर्षक संगी ओइ कोठली आ अपन चारू मित्रसँ विदा लेलक । सभसँ बूढ़ छलैक भिखारी, ओ नेना जकाँ कानऽ लगलैक ।

नेना जकाँ कनलथिन लालोकाका, मुदा फेर सभक सामनेमे कहलथिन जे रवि बहुरुपिया अछि, धोखेबाज अछि । रामबाबू निस्संतान मुइल छलाह, हुनकर कोनो बेटा नहि छनि ।

–'हम ठीके मरि गेल रही कविता ! जीबिकऽ चौदह वर्षक बाद आबि

गेल छी– मात्र तोरे लेल, लवक लेल ! आयल तँ रही बाबूक लेल, मुदा हुनकासँ भेंट नहि भेल । मुदा, तोँ दुनू गोटे भेटि गेलेँ । आर क्यो देअय वा नहि देअय, बाबू अबस्स आशीर्वाद देताह हमर साहस लेल, तोरा आ लवकेँ ग्रहण करबाक लेल ।'

भोर भऽ गेल छलैक । रविक कथा सुनैत-सुनैत कविता फेर कानऽ लागलि छलैक– दहो-बहो नोर ! कहबाक धुनिमे रवि नहि देखने छलैक, मुदा अपन बात समाप्त कऽ भोरक इजोतमे देखलकै जे कविता कानि रहलि छैक । ओ टोकलकै–'तोहर आँखिमे फेर नोर' ?

कविता ओइ नोरकेँ पोछलकै नहि–'एकरा बहऽ दियौक ! अहाँक कथा सुनैत-सुनैत नहि जानि कखन बहऽ लागल, हमहूँ ने बुझलिऐक । अहाँक चौदह वर्ष जतेक दुख आ कष्टमे बितल से देखि लागल जे हमर दुख तँ किछु नहि छल । गाममे रही, माय-बाप जीबै छलाह, सम्हारने रहलाह । ओ दुनू नहि रहला तँ लव बुझनुक भऽ गेल ! माय कष्ट बुझलक आ सभ टा सम्हारि लेलक । मुदा, अहाँ एतेक पैघ राजपाट, सुख आ सुविधा छोड़ि रिक्शा चलबैत रहलौँ, अइँठ-कूठ उठबैत रहलौँ, एकसर सभ टा दुख-कष्ट सहैत रहलौँ ! ओही दुखसँ नोर बहऽ लागल ।'

रवि ओकरा रोकलकै–'हमरापर घृणा नहि भेलौ कविता ? जे-से काज करैत रहल छी हम । बजारू स्त्रिगणक सम्पर्कोसँ परहेज नहि रहल हमरा, कहियो काल नशा सेहो करैत रहल छी । एहन नीच आ कापुरुषक हाथ अपनाकेँ सौँपबाक लज्जा-ग्लानि नहि भेलौक ऐक्को बेर ! सत्त-सत्त बाज कविता !

–'भेल लज्जा आ ग्लानि ! एक बेर नहि, कतेको बेर भेल । सत्त कहै छी ।' कविता कहलकै– 'ठीके लज्जा आ ग्लानि भेल अपनापर । हमरे कारण ई सभ टा दुःख आ अभाव देखलहुँ अहाँ ! हमहीँ अहाँक समस्त दुर्भाग्यक कारण बनलहुँ । तकर ग्लानि तँ जीवन पर्यन्त रहत । अहाँकेँ अपनयबामे ग्लानि केहन, गौरव रहत आ मृत्यु पर्यन्त ओ गौरव चमकत हमर सीथमे । अहाँ आशीर्वाद दियऽ हमरा । जन्म-जन्मान्तरमे अहीँकेँ स्वामी रूपमे पाबी ! आशीर्वाद दियौक लवकेँ, सभबेर हमर कोखमे जन्म लेअय ओ ।

लव तखनो सुतले छलैक । ओकरा दुनू मुग्ध भऽ निहारैत रहल ।

लालकाका साफ जबाब दऽ देलथिन–'एक कनमा अन्न नहि देबह हम तोरा । तोरा हम नहि चीन्हैत छियऽ ।'

रवि फेर एक बेर कहलकनि–'शान्त भऽकऽ बिचारि लिअऽ लालकाका ! आधा हिस्सा हमर अछि । मुदा से नहि माङि रहल छी हम । हमरा एक टा भनसाघर आ किछु अन्न चाही । बाँकी हिसाब बादमे कऽ लेब ।'

लालकाका उत्तेजित होइत कहलथिन–'तोरा हमरा संग कोनो हिसाब नहि छऽ । तोँ फ्रॉड छऽ, तोरा हम जहल पठबाकऽ रहबऽ । आबऽ दहक बौआकेँ, रातिए चिट्ठी लिखि देने छिऐक । ओ ओकील अछि, ओकरा सभ टा इन्तजाम बूझल छैक, तोरा सन-सन बदमाशकेँ बन्हबा देबा लेल ।'

उत्तेजनामे लालकाका आपत्तिजनक बात बाजि रहल छलथिन, मुदा अपन क्रोध दबबैत रवि कहलकनि–'ककरो बजा लियऽ लालकाका, जे हमर अछि से हमरे रहत । अनेरो एक टा नाटक हैत आ घरक बदनामी हैत । तेँ कहै छी जे फेर एक बेर सोचि लियऽ ।'

लालकाका आरो उत्तेजित होइत कहलथिन–'तोँ हमरा घरक बदनामीक बात कहि रहल छऽ ? घरक बदनामीमे बाँकी की छैक ? जाहि कोठलीमे भाइ रहैत छलाह, ताहीमे तोँ खुल्लमखुल्ला व्यभिचारक अड्डा बना लेने छऽ ।'

रवि क्रोधसँ चिकरि उठल–'बस्स करू लालकाका ! बर्दाश्तक एकटा सीमा होइत छैक । अपन पुतहु आ पोताकेँ आगू बढ़ि आशीर्वाद देबाक सत्ती अहाँ ओइ भाइक नामक दोहाइ दऽ रहल छी जकर बेटाकेँ जबर्दस्ती मृतक घोषित कऽ हुनक सम्पत्ति हथिअयबाक लालचमे अहाँ आन्हर भऽ गेल छी । हमर हिस्सा अहाँ पचा नहि सकब, तेँ कहने जाइ छी जे बिना कोनो विवादक हमर हिस्सा बाँटि दियऽ ।'

रवि ओइठामसँ हँटि गेल । लालकाका बेर-बेर अवाच्य कथा कहि ओकरा उत्तेजित कऽ रहल छलथिन आ ओ उत्तेजनामे हुनकर अपमान कऽ सकैत छलनि, जे ओ नहि चाहैत छल ।

मुदा, गामोमे नवतुरिआसभ ओकर मखौल करऽपर लागल छलैक । ओकरा देखिते एकटा छौँड़ा बजलैक–'हँटि जो बाबू ! मजनू मियाँ आबि रहल छथुन ।'

दोसर छौँड़ा बजलैक–'मुदा लैलाकेँ एतेक टा बेटा कोना भऽ गेलै भाइ ? बिआहसँ पहिने बेटा ? ई तँ सिनेमोक हीरोसभकेँ जितलक रै ! ससपेन्स मूवी !'

तेसर ठिठिआइत कहलकै–'आब दरभंगा जयबाक नहि काज । गाममे देखि लेब सिनेमा । बुढ़िया हीरोइन आ बूढ़ हीरोक रोमान्स– हवेली मोहनपुरक रूपहले परदेपर !'

रवि लग आबि गेलैक आ छौँड़ासभकेँ कहलकै–'लैला-मजनूक गप्प बुझबाक वयस नहि भेल अछि बाउ ! स्कूल जयबाक तैयारी करू आ घर जाउ ।'

–'तकर चिन्ता छोड़ू ने अहाँ ! स्कूल किएक, कालेज जायब हमसभ' एक टा छौँड़ा उद्दण्डतापूर्वक कहलकै–'अहूँ अपन काज करू गऽ ।' फेर तीनू ठिठियाकऽ हँसलैक आ तकर बाद सभक सम्मिलित पिहकारी गामभरिमे पसरि गेलैक ।

हवेली मोहनपुरमे एकटा नव सभ्यता जन्म लऽ लेने छलैक– उद्दण्ड आ दिशाहीन नव पीढ़ी । सभ भोरे गाड़ीसँ दरभंगा जाइत छलैक कालेजक नामपर आ साँझकऽ घुरैत छलैक । पढ़ाइक नामपर सभ दिन बिना टिकट यात्रा आ शहरमे मारि-पीट आ बौअयनी । गामोमे ककरो कोनो लेहाज नहि । आब अपन बाप छोड़ि अनकर कोनो गप्प गुनब नवका पीढ़ी अपन अपमान बुझैत छलैक । ककरो क्यो टोकितो नहि छलैक । आ, अपनो बापक कोन गप्प सुनैत छलैक ओसभ ! सभक बापे डरे सुनि लैत छलथिन, जे कहैत छलनि, मानि लैत छलथिन । लंका मोहनपुरक नरेश आ शिबूक संग इहोसभ चक्कू-छूरा रखैत छल आ सदिखन ओकरे तावमे रहैत छल ।

रविकेँ किछु-किछु अंदाज गाम अबिते लागि गेल छलैक । स्कूल ओ अपने देखि आयल छल । नवका पीढ़ी दिशाहीन भऽ, एम्हर-ओम्हर बौआ गेल छलैक, रविकेँ अफसोस भेल रहैक । मुदा आइ तँ रविएपर सभ अपन रंग देखा देलकै । ओना ओ सभ भोरसँ अही ताकमे रहिते अछि । नै रवि तँ आने क्यो । कोनो अनर्गल गप्पपर ठिठियाकऽ हँसब आ तखन एक टा पैघ सन पिहकारी ।

हवेली मोहनपुरमे आब कोनो गरिमा, कोनो पैघत्वक लक्षण नहि रहि गेल छैक । ओकर गौरवशाली अतीतक ध्वस्त समाधिपर उपजल छैक एक टा लज्जास्पद सभ्यता । अपन अध:पतनक बीच एकटा अर्थहीन अकड़–'हमरालोकनि आइयो किछु कहबैत छी, दस कोसक परगना छल हमरालोकनिक ।'

रवि बहुत-किछु करऽ चाहैत छल गाममे, मुदा लोक किछु करऽ नहि देने छलैक । ओ हारिकऽ फेर गामसँ विदा भऽ गेल छल । तहिआ अपनो नहि जनैत छल जे एना कविता आ लवक संग फेर घूरि आओत आ घुरिकऽ अयलापर धीयोपूतासभ ओकर उपहास करतैक ।

ओ ओइठामसँ हँटि गेल । ओइ नवतुरियासभसँ मुँह लगौनाइ बेकार छलैक । ओइमेसँ तीन टा छौँड़ाकेँ चिन्हलकै— एकटा हरिश्चन्द्र चौधरीक पोता आ दोसर महेशबाबूक पोता । भजारकाकाक छोटका बेटाकेँ सेहो ओ चिन्हलकै । बाँकी छौँड़ासभकेँ चीन्हि नहि सकलैक ।

ओ बुधिकारकाका लग गेल । ओकरा दुखी आ हताश देखि कहलथिन – 'एना नहि रवि, यू लुक कम्प्लीटली अपसेट' (एकदम व्याकुल लागि रहल छैँ) । ई तँ एक टा पैघ संघर्षक शुरुआत छौक– जस्ट ए बीगिनिंग । डोन्ट लूज हर्ट माइ चाइल्ड ! (मोनके छोट नहि करू बाउ !)'

बुधियारकाका रविकेँ मानैत छलथिन । रवि जखन छोट छल, अपन बाड़ीक लताम आ शरीफा दैत छलथिन आ देखिते कहैत छलथिन–'इन्टेलिजेन्स, दाइ नेम इज रवि, (प्रतिभाक नाम थिक रवि) ।'

रवि लग बैसैत कहलकनि–'अपसेट नहि बुधियारकाका, दुखी भऽ गेल छी, गामक हालति देखि मोन बड़ दुखी भऽ गेल अछि । सत्ते कहू बुधियारकाका ! हमरासँ कोनो पाप भऽ रहल अछि ? अपन गलतीक प्रायश्चित्त करब पाप थिकैक ?'

बुधियारकाका कहलथिन–दोबारा ई प्रश्न किएक ? हम अपन आशीर्वाद काल्हिए दऽ आयल रहियऽ । फेर शंका किएक ?'

रवि कहलकनि–'शंका नहि बुधियारकाका, खाली मोनक सन्तोष । अहाँक मुँहसँ दोबारा सुनि फेर हमर विश्वासकेँ ताकति भेटतैक, हमर संकल्प दृढ़ हैत आ भरि गामसँ लड़ि सकब ।'

बुधियारकाका कहलथिन–'लड़ाइ नहि रवि, ई गाम दया करबाक योग्य भऽ गेल आब– एन आबजेक्ट आफ पिटी– की छल आ की भऽ गेल ? तोहर पुरखाक अर्जित पुण्यसँ बसल ई गाम । श्रीकान्तकाका धरि गामक हालते दोसर छलैक– द गेन्ज्योर एण्ड डिगनिटी । भरि गाममे हुनकर धाक छलनि । एहन नहि छलैक जे ओइ दिनमे क्यो अधलाह लोक नहि छल, कोनो खराब काज नहि होइत छलैक गाममे । अपन भाइये तँ छलथिन नामीकाका आ गोवर्धनकाका– सेलफिस एण्ड डिबौच । भरि गाम जनैत छलैक जे दुनू स्वार्थी आ डड़ाँडोरिक ढील छलाह । बहुए घर चलबैत छलथिन । बेटा महेश आरो आगू बढ़ि गेलथिन नामीकाकाक–वर्दी सन आफ वर्दी फादर, मुदा जाधरि श्रीकान्तकाका जीवैत रहलाह, सभकेँ डर होइत छलैक । हुनकर इच्छा गामक निर्णय छलैक आ ओइ एक व्यक्तिक इच्छामे भरि

गामक मंगलकामना आ प्रतिष्ठा निहित छलैक– इट वाज कम्पलीटली वन मैन शो रवि, ए बेनीभोलेन्ट डिकटेटरशिप ।'

रवि जिज्ञासा कलयकनि–'तखन एतेक जल्दी ई परिवर्त्तन कोना भेलैक बुधियारकाका ?'

बुधियारकाका हँसलथिन–'जल्दी नहि, आस्ते-आस्ते रवि ! श्रीकान्तकाकाक जीवनमे एकर लक्षण शुरू भऽ गेल रहैक । ओ बूझि गेल छलथिन । ओहन स्थानसँ अपने हँटि जाइत छलाह–ही कुड नोट टोलरेट एनीथिंग इनडिसेन्ट !'–जमींदारी छोट भऽ गेल रहैक–पट्टीदारसभमे बँटैत-बँटैत । कर्ज सधबऽमे मौजे बिका गेलैक । अंग्रेजी शिक्षा लेल प्रोत्साहित कयलथिन श्रीकान्तकाका–'दिस टू वाज हिज कन्ट्रीब्यूशन। रामेश्वर जज बनलाह, तोहर बाप बी.ए. पास कयलथुन आ घरेघर लोक पढ़ऽ लागल अंग्रेजी– सेहो हुनके प्रेरणा छलनि । पढ़ि-लिखि लोकक दृष्टिकोण उदार नहि भेलैक, संकीर्णता अबैत गेलैक– छोट-छोट परिवारक स्वार्थ । सभ ओहीमे बाझि गेल– हू केयर्स फॉर पास्ट ट्रेडिशन्स एण्ड इमेज आफ दऽ भिलेज ! (पुरान परम्परा आ गामक प्रतिष्ठा लेल चिन्ते ककरा छैक ?) हम तँ दिन गनि रहल छी बाउ ! एकदिन तेजकेँ कहने रहियैक–सब मूर्खनाथ । आब लगैत अछि जे वैह सभसँ बुधियार अछि, हमहीं लोकनि बकलेल छी । गामक नेता वैह अछि, इलाकाक नेता हैत, सभ ओकरा वोट देबऽ लेल कपर-फोड़ौऔलि करत । गाममे किएक, सौंसे देशमे एहिना भऽ रहल छैक । मूर्खनाथ अछि जनता–वी, द इलेक्टोरेट ! अपन बहुमूल्य वोट चोर-चोहारकेँ दऽ फेर अपन भाग्यपर कनैत रहैत अछि– प्रत्येक पाँच वर्षपर । अपन गल्तीसँ कोनो शिक्षा नहि लैत अछि– फेर वैह नागनाथक भाइ साँपनाथ ।

रविक बात करैत-करैत बुधियारकाका दोसर गप्प पर आबि गेल छलथिन। बुधयारकाकासँ विदा लैत कहलकनि रवि–'अखन चलै छी कक्का ! फेर आयब ।'

दुर्गापूजा आबि गेलैक ।

फकीरकाका आ पण्डितकाका कहने रहथिन–'पूजाधरि रुकि जा रवि ! मिहिर आ नारायण आबि रहल छऽ । भेँट भऽ जयतह !'

तहिया हुनकर बात नहि मानि रवि गामसँ विदा भऽ गेल छल । मुदा रवि

गाममे रहि गेल तँ क्यो एक्को बेर पूछऽ नहि अयलैक । पूजामे भरि गामक लोक आयल छलैक– सभ टा नौकरियाहा ।

गाम भरिक लोक धरोहि लागल छलैक मिहिर आ नारायणक घर दिस । किछु नगद आ बेसी नौकरीक प्रत्याशी । विशेष उम्मीदवारक संग महेशबाबू अपने जाइत छलाह । रवि अधिक काल देखैत छलैक ।

नारायण आ मिहिर जखन जाइतो छल दुर्गास्थान दिस, पचीस-पचास लोक संग रहैत छलैक पाछाँ-पाछाँ । जाड़ शुरू होबऽ लागल छलैक, तैयो माथपर छत्ता लगौने रहैत छलैक दुनू कातसँ लोकसभ ! रवि सेहो देखने छलैक ।

रविसँ भेंट करऽ क्यो नहि आयल छलैक । ओ पूजोस्थानमे कम्मे जाइत छल । एकदिन प्रणाम करबा लेल गेल तँ नारायण सामने पड़ि गेलैक । चीन्हिकऽ कहलकै–'सुनने छलियौ । आरो किदन सभ सुनै छियौ ।'

रवि लपकऽ जा रहल छल, मुदा अन्तिम बात सुनि थकमका गेल– 'सुकुर चीन्हि तऽ गेलैँ ! लोक तँ इहो कहने हेतौ जे कोनो बदमास बहुरुपिया अछि ।'

नारायण पैघत्वसँ हँसलैक–एकटा बलधकेल हँसी–'बताह नहितन ! अपन नेनपनक संगीकेँ चिन्हबामे धोखा हैत ! मुदा एक टा बात कहै छियौ भाइ ! ई गाम छैक, एहि ठाम गामेक कायदा-कानून चलैत छैक । तोहर उदारवादी आ प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनयबामे एकरा समय लगतैक । फेरसँ एक बेर विचारि लितेँ, तऽ तोरे नीक होइतौ ।'

रविकेँ अइ उपदेशपर हँसी लगलैक–आब नारायण ओकरा सिखबऽ लागल छैक ! पैघ लोक भऽ गेल छैक, ओकरा उपदेश देबाक हक छैक । आब सबक छरपा देबऽ लेल खोशामद करऽबला नारायण नहि छलैक ।

–'बात उदारवादी आ संकुचित दृष्टिकोणक नहि छैक नारायण ! बात छैक सत्य आ न्यायक । एक टा स्त्री आ नेनासँ ओकर अधिकार छिनबाक साजिशक विरोधक छैक । प्राण अछैत ई लड़ाइ छोड़ऽवला नहि छी हम ।' रवि दृढ़तासँ कहलकै ।

नारायण रुष्टता आ उपेक्षासँ कहलकै— 'तोहर मामला छौक, तोँही जान । मुदा गामक लोक एहन-एहन कृत्यपर आङुर उठयबे करैत छैक, नै तँ फेर सामाजिक बंधन की रहतैक ?'

नारायण अपन पछलगुआ सभक संग चल गेलैक । रविओ घर घूरि

आयल। लव घरमे माये लग घोसिआयल छलैक । ओकरा रवि कहलकै–'एना घरमे किएक घोसिआयल छेँ ? जो पूजास्थान, खेलो सभक संग ।'

लव नहि उठलैक तैयो । रवि जिद कयलकै तँ लव कनौन भऽ बाजि उठलैक–'हम नहि जायब कतउ । सभ खौंझबैत अछि हमरा, गारि पढ़ैत अछि।'

रविक आँखि रँगि गेलैक–'चल तोँ, हमर संग चल, देखैत छिऐक जे के तोरा गारि पढ़ैत छौक ? चल, आ हमर संग !

आ, विदा होइत कहलकै–'आ तोहूँ भऽ आ कविता ! दुर्गाजीकेँ गोड़ लागि आ । एना घरमे नुकायलि नहि रह ।'

लवक संग फेर दुर्गामन्दिर पहुँचल । आरतीक बेर छलैक । मिहिर देखलकै ओकरा, मुदा अपन स्थानेपर ठाढ़ रहलैक । लग नहि अयलैक । रवियो आरती लऽकऽ घुरि आयल । गाममे ककरोसँ कोनो आशा करब व्यर्थ छलैक ।

लवकेँ कतबो कहलकै ओतहि खेलाय लेल, मुदा ओ नहि मानलकै । संगे घुरि अयलैक । कविता ओहिना कोठलीमे काजमे व्यस्त छलैक । रवि पुछलकै–'तोँ नहि गेलेँ आरती लेबऽ ?

कविता टारैत कहलकै–'लऽ लेबै काल्हि । आइ फुरसतिए नहि भेल ।

रवि जिद नहि कयलकै । कविता बाहर जाय नहि चाहैत छैक । मास दिनसँ एहिना घरेमे बन्द छैक । कोठलीसँ कने बहरायलि चोराइत आ फेर बन्द ! बौआ, लल्लू आ छोटकू सभ गाम आयल छैक । क्यो रविकेँ गोड़ लागऽ नहि आयल छैक । जहिआ कविताकेँ लऽ घुरल रहय, मनोज हँसिकऽ कहने रहैक–'घाट-घाटक पानि पीबि अन्तमे एतऽ टिकलेँ ब्रदर ! आइ पिटी योर च्वाइस (अहाँक पसिन्दरपर दया अबैत अछि) । रवि तमसाओकऽ किछु कहने नहि छलैक। मनोज ओहिना छलैक सभदिन । ओकर बातक विचार करब व्यर्थ।

मुदा, रविक हकक बारेमे सुननाइ आ विचार कयनाइ सेहो भरि गामक लोक व्यर्थे बूझि रहल छलैक । एतेक दिनसँ न्याय आ सद्‌भावक आशामे एक टा कोठलीमे पड़ल गाम भरिक लोकक, नेनासँ बूढ़ धरिक– कटाक्ष आ आरोप सहि रहल छल । मुदा, लगैत छैक जेना न्यायक आशा व्यर्थ छैक । ओकरा अपने कोनो उद्यम करऽ पड़तैक । कलकत्ता प्रवासमे अर्जित धन आस्ते-आस्ते समाप्त भऽ रहल छलैक । किछु दिन आर, मास-वर्ष दिन खेपि जायत । तकर बाद । सौँसे जीवन पड़ल छैक, अप्पन आ कविताक आ लवक सम्पूर्ण भविष्य छैक ।

लवकेँ पढ़बैत काल रवि सभ टा चिन्ता, सभ टा अपमान बिसरि जाइत अछि । एक बेर जे पढ़ा दैत छैक से कण्ठस्थ भऽ जाइत छैक । ने दोबारा पढ़ऽक काज, ने बेर-बेर धोखबाक काज । रविक आखिमे नोर आबि जाइत छैक । अप्पन महत्त्वाकांक्षा आ विद्यार्थी जीवन मोन पड़ैत छैक । लव विलम्बसँ पढ़ब शुरू कयने छैक, मुदा तकर कोनो चिन्ता नहि । ओ सभ टा करैतक लव, जे रवि नहि कऽ सकल । ओ सभ टा पढ़तैक, ज्ञानक ओइ ऊँचाइ धरि जयतैक लव, जतऽ रवि नहि जा सकल । रवि गर्वमिश्रित उत्साह आ प्रसन्नतासँ ओकरा पढ़बऽ लगैत छैक ।

कवितामे ने उत्साह छैक, ने प्रसन्नता । दिन भरि घरक भीतर गुमसुम घोसिआयल रहैत छैक । रवि कतबो हँसबऽ चाहैत छैक, उत्साहित करऽ चाहैत छैक, कविता ओहिना मुरझायल आ सर्द रहैत छैक । पहिल राति रवि सफल भेल छल, कविताक सर्द देह-मोनमे ऊष्मा आयल छलैक । मुदा, प्रात होइते कविता फेर ओहिना मुरझा गेलैक । दिन भरि उदास भेल सभ टा काज करैत छैक आ रातिकऽ सर्द भेल, बर्फक सिल जकाँ रविक बाँहिमे पड़लि रहैत छैक । कहियो रवि टोकि दैत छैक तँ कानऽ लगैत छैक । कनिते-कनिते राति बिता दैत छैक । रवि डरक लेल ओकरा टोकबो नहि करैत छैक । कविताक सर्द-हेमाल देह आ ठिठुरल ठोर सभ राति रवियोकेँ सर्द आ आतंकित करैत रहैत छैक ।

पूजामे ओकरा आशा छलैक जे बाहरक लोकसभ ओतैक आ ओकरा आ लालकाकाक मामिलामे पड़ि तसफीया करा देतैक । मुदा, क्यो नहि अयलैक । ओकरा बुझबामे आबि गेलैक जे गाममे महेश बाबू आ हरि बाबूक खिलाफ जल्दी क्यो मुँह नहि खोलतैक आ लालकाकाक पीठपर अइ मामलामे दुनू छलथिन । सभ ठाम एक-दोसराक विरोधी महेश बाबू आ हरिश्चन्द्र बाबू रविक हकक लड़ाइमे लालकाकाक संग छलथिन । लालकाकासँ दुनूमे ककरो स्नेह वा विशेष हेम-क्षेम नहि छलनि, मुदा रवि अपनहि दुनूकेँ दुश्मन बना लेने छल, हुनका लोकनिक प्रस्ताव नहि मानने छलनि । आइयो यदि समाद पठा दैनि दुनूमे ककरो, जे हुनकालोकनिक प्रस्ताव ओकरा स्वीकार छैक, तँ लगले सभ टा ठीक भऽ सकैत छैक । मुदा, से रविकेँ मंजूर नहि छैक । गाममे रहबाक पहिल शर्त्त– दूमे एक पार्टीमे रहू । स्वतंत्र भऽकऽ रहब तँ कत्तहु ने रहब– अनमन रवि जकाँ ।

गेनमो स्वतंत्र होबऽ चाहलक । महेश बाबूक आधिपत्यसँ स्वतंत्र । उपटि गेल । अइ गाममे पट्टी धऽकऽ रहऽ पड़ैत छैक, गोल बनाकऽ रहऽ पड़ैत छैक । कोनो मालिककेँ धऽकऽ रहू, नै तँ एकबाली मुखियाकेँ पकड़ू । बलुआही, वा

पीपरपाँती वा चौधराना धऽकऽ रहू । गाममे टिकल रहबाक एतबे शर्त छैक । स्वतंत्र भऽ जीवाक चेष्टामे एकोढ़बा बना देल जाइत छैक । उजाड़ि देल जाइत छैक गेनमा जकाँ ।

गेनमाकेँ भरि गामक लोक, ओकर अपनो टोल-पड़ोसक लोक बुड़बके बुझैत छैक । जवान छल, कड़गड़ देह छलैक । सुन्दर आ समाङवाली बहु छलैक । एहन बहुवलाकेँ मलिकान आ गिरहतक घरमे बेसी काल काज भेटैक छैक, नीक आँटी कटनीमे आ बढ़ियाँ पनपिआइ हरबाहीमे भेटैत छैक । गेनमाकेँ तँ एखन दस-पाँच वर्ष सभ ठाम बेसी मान होइतैक । मौगी बेस उठानपर छलैक । बूढ़ पुरुष आ स्त्रीकेँ, आ बिनु बहुवाली मरदकेँ कटनी-रोपनीमे छोट आँटी आ छाँटल बोनि भेटैत छैक । बताह छल गेनमा आ ओकर बहु । दुनू गेल अपने करनीसँ ।

रवियो जायत, बेसी लोक सैह बुझैत छैक । अनेरो सभसँ दुश्मनी बेसाहने अछि । लालबाबू अपन ओकील-बेटाक बलेँ ओकरा बहुरुपिया आ धोखेबाज साबित करऽमे कोनो कसरि नहि रखथिन । भरि गाम ओकरा डकैत आ नक्सलाइट बना प्रचार कऽ देने छथिन-'आँखि नै देखैत छिऐक-एकदम कठोर आ निर्मम । ककरो खून कऽ सकैत छैक कखनो ।' आ, अइ प्रचारमे सहयोग छनि महेश बाबू आ हरिश्चन्द्र चौधरीक, तेजू आ गुणाकरक । रविकेँ आश्चर्य भेलैक जखन ओ देखलकै जे पण्डितकाका आ फकीरकाका सेहो ओही गुटमे छलथिन । नारायणक गप्पसँ आरो निराश भऽ गेल रवि आ मिहिर तँ देखियोकऽ लग नहि अयलैक । खाली बुधियारकाका कहलथिन-'यू हैव माइ ब्लेसिंग्स माइ चाइल्ड !' (हमर आशीर्वाद छौ बौआ !)

रवि कतबो कहलकै, कविता एको दिन दुर्गास्थान नहि गेलैक । रविक तामसोपर ध्यान नहि देलकै । एतबे कहलकै-'अही ठामसँ गोड़ लगैत छियनि । सभटा मंगल करतीह ।'

रविक कहलापर ओकर संग लव जाइत छलैक, मुदा लगले भागि पड़ाइत छलैक वा ओकरे संग घुरि अबैत छलैक । गामक लोक आ अपन सङतुरियासँ लव डेराइत छलैक जेना ! एकदम शान्त आ गम्भीर भऽ गेल छलैक एतबे दिनमे, जेना बड़ पैघ भऽ गेल होइ । रविकेँ ओकर ओ गम्भीर आकृति आ एकान्त मोह भीतरसँ हिला दैत छलैक आ ओकर मोनसँ धधरा उठऽ लगैत छलैक । कतेक चंचल, प्रसन्न आ आत्मविश्वाससँ भरल छलैक लव । एकसर मायक भार उठयबाक साहस रखैत छलैक । आब बापक लग आबि जेना एकदम निरीह भऽ गेल छलैक । शान्त आ

गम्भीर । जतबे पुछैत छलैक रवि, ततबेक उत्तर । कोनो जिज्ञासा नहि, कोनो अतिरिक्त उत्साह नहि । ओकर आकृति देखि रविकेँ फेरसँ अपराधबोध होबऽ लगैत छलैक-नहि लाबऽ चाहैत छल कविता आ लवकेँ गाममे ।

मुदा, पड़ा गेनाइ, फेरसँ पड़ा गेनाइ कविता आ लवकेँ लऽकऽ एक टा आर निन्दनीय कार्य होइतैक, जेहन पहिल पलायन भेल छलैक । लोक बुझतैक जे एकटा परित्यक्ता आ ओकर बेटाकेँ लऽ रवि पड़ा गेल । गाम भरिकेँ सम्पूर्ण कथा सुनायब आवश्यक छलैक- कविता आ ओकर बेटाक कथा । रवि आ ओकर स्त्री-बेटाक कथा ।

रवि बेर-बेर अपनाकेँ बुझबैत अछि जे ओकर निर्णय ठीक छलैक । कविता आ लवकेँ घर आनब उचित आ न्यायसंगत छलैक । सामाजिक विरोध आ आक्रमणकेँ सहन करऽ पड़तैक, ओइपर विजय प्राप्त करऽ पड़तैक ।

मुदा, कविता संग नहि दऽ रहलि छलैक । एके टा रट मारने छैक-'लवकेँ लऽ चल जाउ । हमरा अपन हालपर छोड़ि दियऽ । जहिना चौदह वर्ष बिता लेलहुँ, शेष जीवनो बिता लेब । हमर चिन्ता जुनि करू ।'

आ, कविता लेल रविक चिन्ता बढ़ले जा रहल छैक । एना कविता टूटि जयतैक, अपनाकेँ मारि लेतैक कविता । ओ गुमसुम आ उदास रहि नित्य अपनाकेँ मारि रहलि छैक, जेना ओकर जीवाक इच्छा समाप्त भऽ गेल होइ ! ओकरामे फेरसँ जीवाक, उमंगसँ जीवाक इच्छा आ शक्ति उत्पन्न करबाक जतबे चेष्टा करैत अछि रवि, ततबे ओकर निराशो बढ़ल जाइत छैक ।

दुर्गापूजोमे बड़ निराशा भेलैक । पूजाक व्यवस्था अस्त-व्यस्त, पुजेगरी उदासीन आ दुर्गास्थानमे लागल मेलामे निस्संकोच बौआइत अबण्ड छौँड़ासभ । पिहकारी आ ठहक्का । दुर्गास्थान कलश-स्थापने दिनसँ उदास-उदास । ने नाच ने गबैया ! खाली गर्द मचबैत लाउडस्पीकर आ लाउडस्पीकरपर अपन-अपन फिल्मी ज्ञानक परिचय दैत गामक नवतुरिया ! ने कोनो लेहाज, ने कोनो शिष्टता ।

अष्टमी आ नवमीक राति नाटक देखैत काल एहि अव्यवस्था आ अशिष्टताक पराकाष्ठा देखलकै रवि । मंचक बाद ने शामियाना, ने शतरंजी । फर्दमे घासपर छीटल पोआर । ओइपर बैसल किछु बूढ़ लोक । बाबू-भैयासभ घर-घरसँ कुर्सी आ बेंच आनि कातेकात आ बीचो-बीचमे जगह दफानने । फर्दमे बैसल स्त्रिगण ! स्त्रीगण-पुरुष मिम्झर भेल । फक-फक करैत लाइटसभ आ कनिऐ टा स्टेजपर

धक्कम-धुक्की करैत लोक । नाटक देखि लाजसँ कानऽ-कानऽ सन मोन भऽ गेलैक रविकेँ । लंका मोहनपुरक बदरी मिसर एखनो दुर्गापूजामे हवेलीक नाटक देखैत छथि आ अपन गामक लोककेँ कहैत छथिन– तोँ सभ तँ नौटंकी करैत छऽ, हवेलीक परतर करबह ?'' मुदा, नाटक देखि रविकेँ लगलैक जेना नौटंकियोसँ खराब प्रथा भऽ गेल होइ गामक नाट्य संस्थाक ।

रविकेँ अपन समय मोन पड़लैक । स्टेज बनबायब श्रीकान्त चौधरीक बाद राम बाबूक जिम्मेदारी छलनि । लम्बा-चौड़ा स्टेज बनबा, घरे-घरसँ चौकी मङबा, ओकरा नीक जकाँ बैसबा दैत छलथिन । दू-दू टा शामियाना ठाढ़ होइत छलैक आ सौंसे पैघ-पैघ शतरंजी बिछाओल जाइत छलैक । कुर्सी-बेंच राखब मना छलैक– राम बाबूक आज्ञा । सभ शमियानामे बैसैत छल । ने पिहकारी, ने उद्दण्डता । नीक-नीक दृश्यपर थपड़ी पड़ैत छलैक आ नीक गीतपर जोरसँ फरमाइश होइत छलैक- 'वन्स मोर, वन्स मोर ।'

डे-लाइटसभक रोशनीमे राति दिन बनि जाइत छलैक । स्टेज-डाइरेक्टर रहैत छलथिन उतरबारि टोलक निरसू बाबू । एकदम कड़ा डाइरेक्टर । ककरो स्टेजपर टपऽ नहि दैत छलथिन । बाबा आ बाबू कहियो नाटकमे पार्ट नहि लेलथिन, मुदा रवि नेन्नेसँ पार्ट लैत छल । पैघ-पैघ भूमिका । 'कृष्ण-सुदामा'मे सुदामाक भूमिका, आ सामाजिक नाटकमे, क्रान्तिकारी नाटकमे क्रान्तिकारी नायकक भूमिका रवि करैत छल । एक बेर भेलैक तीन भाषामे नाटक । रविक भूमिका तीनू भाषामे छलैक । ओ नवम वर्गक विद्यार्थी छल, मुदा उच्चारण साफ रहैक आ स्मरणशक्ति तीव्र । 'कालिदास'मे शकुन्तलाक पहिल दृश्य भेल रहैक । रथपर सवार दुश्यन्त आ सारथि ! भगैत हरिण आ निषेध करैत ऋषिकुमार ! रवि ऋषिकुमार बनल छल- 'भो भो राजन्, आश्रम मृगोऽय न हन्तव्यो न, हन्तव्य...।' पैघ करतल-ध्वनि भेल रहैक ।

आ 'मेकवेथ'क ओइ अन्तर्द्वन्द्वात्मक दृश्यमे तँ रवि जेना आत्मविस्मृत भऽ गेल छल–

दिस हैण्ड आफ माइन विल रादर
टर्न दऽ मल्टिच्यूड्स कार्नाडाइन
मेकिंग दऽ ग्रीन वन रेड ।

आ, सात महारथी द्वारा घेरायल एकसर अर्जुनपुत्र अभिमन्युक भूमिकामे जेना रवि महाभारतक युद्धक ओइ दृश्यकेँ जीवन्त कऽ देने रहैक । वीरतापूर्ण मृत्युक वरण करैत अभिमन्युक समक्ष अधर्ममे लागल सभ महारथी श्रीहीन भऽ गेल रहथि ।

अभिमन्यु फेर घेरायल अछि । चक्रव्यूह फेर रचल छैक आ भागिकऽ पड़ायवला रवि नहि अछि । वीरतापूर्ण मृत्युक वरण कऽ सकैत अछि, मुदा पीठ नहि देखा सकैत अछि । इतिहासकेँ फेरसँ लिखऽ पड़तैक । चक्रव्यूहकेँ तोड़ऽ पड़तैक ।

बहुत रास व्यूहकेँ तोड़लक रवि !

दुर्गापूजाक बाद पंचायतक चुनाव छलैक । एकबाली चौधरी अन्तमे पैतरा बदललनि–'लोक नहि मानैत अछि, ठाढ़ तँ होबहि पड़त ।'

तेजुओकेँ लोक नहि मानलकै, ठाढ़ होबऽ पड़लैक ! गफूरगंजमे मक्खन साहु पहिनेसँ डटल छल । मुखियाक तीन उम्मेदवार । तीनिए टा उम्मेदवार सरपंचोक— हवेली मोहनपुरक हरिश्चन्द्र चौधरी, गफूरगंजक खान साहेब आ लंका मोहनपुरसँ शिबू— बलुआहीक रामोतारक पोता । चुनाव अभियान जोर पकड़लक ।

यादवजीकेँ धनुखटोलीमे पकड़लकनि रवि । माइंजन गङबाकेँ बुझा रहल छलथिन– 'ई बभनासभ सब बेर ठकि दैत छौक तोरासभकेँ । सब छोटका लोककेँ मिलिकऽ एकर सभक राजपाट छीनऽ पड़तौक । मोन रखिहेँ— मुखियामे मक्खन साहुक कोल्हु-छाप आ सरपंचमे खान साहेबक ऊँट-छाप ।'

रवि हुनका बोकिऔलक–'कथी लेल परतारै छिऐक यादवजी 'छोटका लोक'क नामपर ? ई गङबा 'छोटका लोक' भऽ सकैत अछि अहाँ–हमरा दृष्टिमे । साधनहीन अछि । मुदा, अहाँ कहियाक 'छोट लोक' ? ई मक्खन साहु जे सभसँ बड़का सेठ अछि इलाकाक, हमरा-अहाँ सभकेँ उधार-कर्ज दैत अछि, ओ कहियाक 'छोटका लोक' ? ओकर भैयारी गङबा सन गरीबक संग छैक कि छैक सेठ-साहुकारक संग ? भोट लेल भैयारी ! ओ जामाना गेलैक यादवजी ! धर्मशास्त्रीसभ धर्मक नामपर, स्वर्ग-नरकक नामपर, जाति-धर्मक नामपर शोषण कयलकै । आइ अहाँसभ नेतालोकनि शोषण कऽ रहल छिऐक कल्हुका स्वप्न देखाकऽ । ई सवर्ण आ अछोपक तर्क बेकार अछि । दुइए टा जाति अछि– शोषक आ शोषितक । मक्खन साहु आ गङबा धानुख एक जातिक कहिओ ने भऽ सकैत अछि । गङबा लेखे जेहने महेश चौधरी, एकबाली चौधरी, तेहने अहाँक नौरंगी यादव आ मक्खन साहु ।'

यादवजी बिगड़िकऽ टोलसँ पड़ा गेलथिन । जहियासँ तिवारीजीक संग धनुखटोली आ खतबेटोलीमे गङबा, प्रबोधन, ढोढ़बा आ बटेसर बकतूत कयने रहनि, तहियासँ तिवारीजी छिटकले रहैत छलाह, पंचायतक चुनावमे हुनका कोनो बेसी मतलबो नहि रहनि । मुदा, यादवजी सक्रिय रहैत छलाह ।

दोसर दिन खतबेटोलीमे भेटलथिन यादवजी । रविकें देखिते उठिकऽ जाय लगलथिन, मुदा रवि रोकि लेलकनि–'पड़ाइ किएक छी यादवजी ? हमहूँ एक टा मतदाता छी ।

यादवजी खिसिआइत कहलथिन–'मतदाता नहि, मतभक्षक छी अहाँ । सभठाम पाछाँ लगले रहैत छी ।'

रवि कने दृढ़तासँ कहलकनि–'लगले नहि छी, लागल रहब । परछाँही जकाँ संग लागल रहब । एक टा भोट एकर सभक नहि खसऽक चाहिऐक अइबेर। ई शोषित प्राणीसभ जकरा अहाँ छोटका लोक कहैत छिऐक, अइ बेर नहि ठकल जैत अहाँ सभसँ । अही छोटका लोकक एक टा भाइ निरपराध चोरीक इलजाममे जहलमे बन्द छैक । ओकर स्त्रीपर खून करबाक चेष्टाक मोकदमा चलि रहल छैक । अयलिऐक एक्कोबेर ओकर मदतिमे आ ओकरासभकें छोड़बऽ लेल ? आ ई भोट बेरमे 'छोटका लोक'क एकता मोन पड़ल अछि ?'

यादवजी तरङिकऽ कहलथिन–'अहूँ तँ भोटे बेरमे आयल छी । एतेक दर्द छल तँ अहीं किएक ने देलिऐक जमानति ? अहीं छोड़ा दियौक एखनो । अहूँ तँ भोटे बेरमे बौआ रहल छी । की अपने ठाढ़ हैब ?'

सभ जिद्द धऽ लेलकै–'हँ मालिक, अहीं ठाढ़ होउ । हमरा-आर सभ अहींकें भोट देब । मलहटोली, खतबेटोली, धनुखटोली, दुसधटोली, चमरटोली आ गफूरगंजोकें भोट मिलि जायत अहाँके, अहीं ठाढ़ होउ मालिक !'

रवि सभकें बुझौलकै–'ठाढ़ भेलासँ कोनो समाधान नहि हेतौक । सभ कहतौक जे अपने ठाढ़ होयबा लेल रवि एतेक सिद्धान्त बघारने छल । अइ बेर तों सभ बहिष्कार कर । अपन रोष आ विरोध प्रकट करबा लेल मतदानक बहिष्कार कर। तोरालोकनि क्यो वोट नहि देबहिक अइ बेर– सम्पूर्ण वहिष्कार । हम जनैत छी जे इहो ठीक उपाय नहि । मतदानमे ई तटस्थता खराब तत्त्वकें प्रश्रय दैत छैक। तों नहि देबहिक वोट, तैयो वैह असामाजिक तत्त्वसभ जीतिकऽ आबि जेतौक । मुदा, अइ बेर उपाय नहि छौक । तोरासभमे ठाढ़ होयबा लेल जा धरि कोनो साहसी

आ विचारवान लोक तैयार नै भऽ जाउ, बहिष्कारे एकमात्र उपाय छौक ।'

सभ मानि गेलैक आ चारू तरफ प्रचार भऽ गेलैक–'अइ बेर छोटका लोकसभ ककरो वोट नहि देतैक– मक्खनो साहुकें नहि ।'

तेजू धड़फड़ायल अयलैक रविक लग–'ई तँ खूब उपकार कयलें भाइ ! अही लेल भोट धरि रुकऽ कहने छलियौ हम ! ई छोटका लोक सभ भोट नहि देतै, तँ एकबाली फेर बाजी मारि लेत । ओकर ओइ पारमे ब्राह्मण-वोट अनकट्ट छैक । सभकें बुझा दहिक एक बेर ।'

रवि कोनो आश्वासन नहि देलकै । तेजू नेहोरा कऽ प्रलोभन देबऽ लगलैक— 'तों अप्पन हिस्सा ले' चिन्ता नै कर भाइ ! मजाल छनि लालकाकाक जे नहि देथुन तोहर हिस्सा ! खाली भोट खतम भऽ जाय दहिक, सभ ठीक भऽ जयतौक । अपने ठाढ़ भऽ हम करा देबौक सभ ठीक-ठाक । तों खाली ई 'छोटका लोक' सभक टोलकें ठीक राख, एको टा वोट अनका नहि खसैक ।'

रवि तैयो कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलैक । तेजू क्रुद्ध भऽ उठलैक–'दोस्तीमे अनुरोध करै छियौ तँ ऐंठल जाइ छैं ! गुमाने नहि रहिहैं । तोरे भरोसे नहि ठाढ़ भेल छी हम । ओकर सभक सब वोट हमरे खसत, देखि लिअहिक तों । हमरो अबैत अछि घोड़किल्ली ।'

रवि कोनो जवाब नहि देलकै । एकबाली चौधरी सेहो अयलथिन–'अहाँ संग अन्याय भेल अछि, हम जनैत छी । मुदा, हम रूकल रही जे अहाँ लोकनिक, हवेलीक मर्यादाक प्रश्न अछि, अहाँलोकनि अपने फड़िया लेब । मुदा, आब चिन्ता नहि करू अहाँ । वोटक बाद लालबाबूकें दू मिनटमे ठीक कऽ देबनि हम । खाली ई छोटका लोकसभकें बुझा दियौक अहाँ । सभ टा भोट हमरेलोकनिक मारल जायत आ जीति जायत मक्खन साहु ! गफूरगंजक समर्थन ओकरा 'सोलिड' छैक ।'

रवि हुनको कोनो आश्वासन नहि देलकनि । ओ अपन निर्णयपर अडिग छल– अइ बेरक रणनीति— वहिष्कार । मतदानक वहिष्कार ।

सम्पूर्ण वहिष्कार भेलैक । भोरसँ एक बजे दिन धरि एक्को टा मतदाता धनुखटोली, मलहटोली, चमरटोली, खतबेटोली आ दुसधटोलीसँ मतदान केन्द्र दिस नहि गेलैक । घण्टे-घण्टे आबि बिलटा खबरि दैत रहलैक, गेनमा रिपोर्ट लबैत रहलैक ।

गेनमा छूटि गेल रहैक । रवि दरभंगा जा रामकरण मिसरकें कहने रहनि– 'यैह थिक अहाँक पार्टीक साम्यवाद ! एक टा गरीब बेकार जहलमे पड़ल अछि आ तिवारीजी अहाँकें झूठ-फूस खबरि दऽ जाइत छथि जे सभ टा गरिबहा अहीँक संग अछि ।'

मिसरजी एकदम बिगड़ि गेलथिन तिवारीजीपर । मुदा, ओहूसँ बेसी रुष्ट भेलनि नौरंगी यादव । ओकरो रवि जाकऽ कहि आयल रहैक–'अहाँ अइ इलाकाक प्रतिनिधि छी आ अपनाकें पछिला वर्गक प्रतिनिधि आ रक्षक सेहो कहैत छी । कहाँ गेल अहाँक ओ समर्थन ? गेनमा आ ओकर बहु जहलमे पड़ल अछि निरपराध । कतहु कोनो सुगबुगी नहि भेल ।'

नौरंगी आ रामकरण मिसर हंगामा कऽ देलकै । अखबारोमे वक्तव्य बहरयलैक । समाचारक संग गेनमा आ ओकर बहुक फोटो छपलैक । दुनूक जमानतियो भऽ गेलैक । केसोमे दम नहि रहलैक । दुनूकें रिहाइ भेटतैक, तकरे हल्ला बेसी छलैक । गेनमा गाममे काज नहि करैत छल, दरभंगामे रिक्शा चलबैत छल । पंचायत-चुनाव-वहिष्कारमे अपन टोलमे, दुसधटोलीमे आ आनो-आनो टोलमे अगुआ बनल छल गेनमा ।

मुदा, ओइ दिन अगुआ खाली बिलटे आ गेनमा नहि छलैक । दौड़ि-दौड़िकऽ माइंजन गङबा, चौकीदार ढोढ़बा आ माइंजन कल्लू सहनी सेहो रविकें समाचार दऽ जाइत छलैक– 'एको टा लोक वोट देवे वास्ते नै गेल ।'

एक बजेमे मुदा कोनो जादू भेलैक । साइकिलपर हनहनाइत तेजू मतदानकेन्द्रसँ घुरलाह आ पहिने मलहटोली आ धनुखटोली गेलाह । फेर साइकिल अही पार छोड़ि धार टपि गेलाह । खतबेटोली आ दुसधटोली गेलाह ।

आ, तेजूक टोलसँ बहराइत हाँजक हाँज लोक बूथ दिस गेलैक । पहिने मलहटोलीसँ, फेर धनुखटोलीसँ हाँजक स्त्रीगण-पुरुष आ बच्चो बूथ दिस गेलैक । तकर बाद खतबेटोली आ दुसधटोलीक लोक सेहो लंका मोहनपुरक बूथ दिस विदा भेलैक । वहिष्कारक आह्वान जेना सभ बिसरि गेलैक । कोनो जादू भेल होइ जेना ! तेजू मुसकियाइत अपन हवेली मोहनपुरक बूथपर घुरि आयल ।

धनुखटोलीसँ जाइत गङबा माइंजनकें ललकारलकै बिलटा–'की हौ माइंजन भाइ ! तोहूँ चललह ! अही दमपर हमसभ विरोध करबै अन्याय आ जुलुमके ? हरियर नोट देखिते ललचाकऽ सभ बिसरि गेलह हौ गङबा भाइ !'

गङबा कोनो उत्तर नै देलकै, जेना किछु सुननहि ने होइ । सभकें हाँजमे लेने बूथ दिस चल गेलै ।

माइंजन कल्लू सहनीकें छेकलक बिलटा–'की हौ सहनी भाइ ! एकरे खातिर सप्पत खयले छलऽ जे अइबेर चाहे जे हो जाय, ककरो वोट नहि देब ? कतना मिलल हऽ जे एकदम सब टा बिसरि गेलऽ ?'

ओहो बात नहि सुनलकै । बिलटा रवि लग दौड़ल । लंका मोहनपुरसँ गेनमा सेहो दौड़ल अयलैक ! रवि चुपचाप सभ टा सुनलक— 'सभ चल गेल मालिक ! पाँचो टोलमे यैह हमही दू गो बाँचल छी, ने तऽ सभ गेल । जे बन्हेज कयने छलिऐक से तोड़ि देलक !'

बन्हेजक संग रविक आशा सेहो टूटि गेल छलैक— गाम आ ओकर लोकक लेल किछु कऽ सकबाक आशा । किछु दिनसँ एक टा आशा पनपऽ लागल छलैक ओकर मोनमे । बिलटा आ गेनमाक खबरि ओइ आशाकें मुरझा देने छलैक ।

तेजूक आशाकें हरिश्चन्द्र चौधरी लंका मोहनपुरक बूथसँ आबि क्षीण कऽ देलथिन–'भरोसे नहि रहै जैब ! चौबे गेला छब्बे बनऽ, दुब्बे भऽकऽ अयला । सैह हैत ! पाँचे सय वोटपर कमसँ कम सरपंची तऽ भेटि जाइत छल, मुदा मुखिया-सरपंची दुनूपर दृष्टि रखलासँ दुनू गेल । मारलक एकबाली फेर पटका । जाकऽ देखि आउ लंका मोहनपुरक बूथपर ! अहाँक हरियर नोट डाँड़मे खोसने दुसधटोली, खतबेटोलीक टोलक लाइनमे ठाढ़े अछि, साँझ धरि ठाढ़े रहत । लाइनमे खाली एकबालीक गुण्डासभ ठाढ़ छैक । आँगा आ पाछाँ दुनू ! आखिरीमे दुनू टोलक बैलट आ बचलाहा बैलटपर मोहर मारि खसा लेत । प्रेजाइडिंग आफिसर आ अहाँक एजेण्ट डरे सुटकल छथि । हमरा तऽ एकबाली साफ कहलक- 'अहाँसँ मेल कऽ की हैत देयाद ? अहाँक हवेली मोहनपुरमे मुखियाक सभ भोट गेलैक तेजूकें आ सरपंचमे सभ भोट गेलैक खान साहेबकें । तेजू अपन पैसाक बलपर नचैत छथि, तऽ पैसा लाठी आ बुद्धि तीनूक कमाल देखिए लेथु एहि बेर । पैसा लऽकऽ ओइ पारक सभ गुण्डबा मोस्तैज छैक एकबालीक वास्ते । आर तऽ आर, जकरा बले नचै छलाह महेश, से रामौतारक घरानि सेहो धोखा देलकनि । शिबू टाका लऽ बैसि गेल अछि आ गामक नामपर एकबालीकें जितबऽमे लागल अछि । लंका मोहनपुरमे सभ वोट

मुखियामे एकबालीकेँ, सरपंचमे खान साहेबकेँ । पुरान खेलाड़ी अछि खान । तेजूकेँ एके पटकामे चित्त कऽ देलकनि । सरपंचमे हवेली मोहनपुरक सभ टा वोट लऽ लेलकनि जे मुखियामे गफुरंगजक मुसलमानक वोट दिया देब ! मुदा, सभ टा वोट दिया देलकै एकबालीकेँ । मुँह तकैत रहला मक्खन साहु आ तेजू । हमरासँ रिजल्ट बूझि लियऽ–मुखिया एकबाली आ सरपंच खाँ साहेब । आब मनबै जाउ खुसी ।'

हवेली मोहनपुरमे सभ टा हलचल शान्त भऽ गेलैक । उदासी पसरि गेलैक । तेजू साइकिल दौड़ौलक– लंका मोहनपुर गेल, गफूरोगंजसँ भऽ आयल । कतहु किछु बजबाक साहस नहि भेलैक । लंका मोहनपुरमे बड़का-बड़का लाठी लेने बलुआहासँ पीपरपाँती धरिक सभ लठैत ठाढ़ छलैक आ नवतुरिआ शिबू-नरेश सभक हाथमे छलैक लम्बा-लम्बा चक्कू ! गफूरगंजमे खान साहेब बूथपर अपने मोस्तैज छलथिन आ तेजूकेँ तखनो ठकलथिन–'कोइ चिन्ता मत कीजिए ! यहाँ सभ ठीक-ठाक है— मुखियामे तेजूबाबू का दीया-छाप'।

मुदा दीप मिझा गेल छलैक से बुझबामे कोनो भाङठ नहि रहलैक तेजूकेँ । अपन घरमे आबि माथपर हाथ दऽ बैसि रहल ।

मुदा जखन गफूरगंजमे वोटक गिनती शुरू भेलैक, तेजू खतबेटोली आ दुसधटोलीमे जाकऽ फनकऽ लागल— 'निकाल, निकाल हमर नोट बैमनमासभ ! मूड़ी पाछु बीस टाका देलियैक सभ घरकेँ, आ जाकऽ चुपचाप घुरि अयलैँ सभ क्यो ! एक टा वोट नहि खसा सकलैँ। देखियौ, कहाँ छौ आङुरमे निशान ? आ तोँ ढोढ़बा, देखियौ, तोहर निशान ? बड़का नेता बनल छलैँ, फराकसँ दस टा दसटकिया देलियौ ।'

ढोढ़बा गोङिआइत बाजल–'हे लू ! हमरा आरपर कैले बिगड़ै छी तेजूबाबू ! सभ क्यो तऽ ठाढ़े छलिऐ लाइनमे । आखिरी तक पहुँचे नहि देलक, तँ हम सब की करती ?'

तेजू ओकर घेंट धऽ लेलकै–'निकाल हमर सभ टाका ।'

पाँच टा दसटकिया फेकैत कहलकनि ढोढ़बा–'लऽलू जे बाँचल हय । जे खर्च हो गेल, से कहाँ से देब !'

मुदा टोलभरिक लोक झौहरि करऽ लगलैक–'हमरासभकेँ कहाँ देलक मूड़ी पीछू बीस टाका ? मूड़ी पीछू दसे टाका देले हय ।'

ढोढ़बा ऊठिकऽ तरमड़ाइत बाजल–'झूठ बोलै हय सभ, ताड़ी पीले हय । अहाँ जाउ तेजूबाबू– कल्ले-बल्ले जाउ इहाँ से, सभ ताड़ी पीले हय अखनी ।'

ढोढ़बा ठीके ताड़ी पीने छल, मुदा तेजू ओकर गरदनि नहि छोड़लथिन–'डर देखबै छैं हमरा ? बिना टाका ओसूलने नहि छोड़बौ । आ, तोँ सभ की तमाशा देखै छैँ ? निकाल दसे-दसे टाका सभ क्यो...'

सभ ओतऽसँ सहटऽ लागल— 'से की धयले हय ! सभ तँ खर्च हो गेल । कहब तँ एकदिन बेगारीमे खटि देब ।'

तेजू गारि दैत कहलकै– 'चोरा सब नहितन ! नहि चाही तोरासभक बेगारी ! सभसँ दसटकिया बोकराकऽ छोड़बौ आ ढोढ़बाकेँ तऽ गनाकऽ सभ टाका लेबैक । चौकीदारी देखबैत अछि हमरा !'

ढोढ़बा ऊठिकऽ पड़ा गेल । तहिना पड़ायल खतबेटोलीसँ प्रबोधन । मूड़ी पीछू दस टाका ओहो मारने छलैक आ एक सय फराके । खौँझायल तेजू टोलक लोक सभपर तामस उतारलनि–'कुकुर छैँ तोँसभ ! दया कऽ चारि टा कौर फेकि देलियौ तऽ हाथेमे हबकि लेलैँ। मुदा छोड़बौ नहि ककरो ।'

गेनमा ठाढ़ भऽ सभ टा सुनैत छल । सौंसे टोलकेँ चिचियाकऽ कहलकै–'आरो गारि आ लात-जूता मिले के चाहियौ तोराआरके । ओही लायक छेँ तोँ सभ ! रवि बाबूकेँ धोखा देलही । एकटा दसटकहीपर सभ ललचा गेलेँ ! ओहीपर अपन ईमान आ इज्जति बेचि देलैँ— आक् थू ।'

साँझमे जुलूस बहरयलैक । आगू-आगू पैघ-पैघ लाठी-भाला चमकबैत लंका मोहनपुरक लठैत आ गुण्डासभ आ खाँ साहेबक तन्दुरुस्त मोछैल पछिलगुआसभ । बीचमे एकबाली आ खाँ साहेब मालासँ लदल । पाछाँ-पाछाँ सैकड़ो लोक । कुदैत-चिचिआइत– 'एकबाली-खान जिन्दाबाद' हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई । जो हमसे टकरायेगा, चूर-चूर हो जायेगा ।'

जुलूसक आगाँ बड़का-बड़का पेट्रोमेक्स । ओइ अन्हार रातिमे सभठाम ओ जुलुस गेलैक– लंका मोहनपुरसँ गफूरगंज आ गफूरगंजसँ हवेली मोहनपुर । हवेली मोहनपुरक सभ दरबज्जा सुन्न छलैक । सभ अप्पन-अप्पन घरमे घोसिआयल छल । खाली बुधिआर काका अप्पन दरबज्जापर बैसल छलाह । लाठी-भाला चमकबैत आ कण्ठ फाड़िकऽ चिचिआइत जुलूसक लोककेँ देखि अपनहि बड़बड़ा उठलाह–'खुशी उत्साह आ उत्सव । ह्वाट फार (कथी लेल ?) फेर साँपकेँ चुनबा लेल ? अपन

हाथे अपन गरदनि कटबा लेल ? फॉर योर सूसाइड्ल टेन्डेन्सी ? (आत्महत्याक प्रवृत्ति लेल ?) फेर अगिला चुनाव धरि अपने छटपटयबैँ, शिकाइत करबैँ, ममोड़ल जयबैँ, मुदा फेर ओही खिस्साक दोहरौअलि–अगेन...एण्ड अगेन...एण्ड अगेन (फेर, फेर आ फेर) । चीन्है छियौ- नीक जकाँ चीन्है छियौ तोरासभकेँ । अनका इशारापर, अनकर बलेँ, कुदैत मूर्खसभ- शेमलेस एण्ड स्पाइनलेस क्रीचर्स (निर्लज्ज-रीढ़विहीन कीड़ा) हमरा लग नहि कूद, चीन्है छियौ तोरासभकेँ, नीक जकाँ चीन्है छियौक–सभ मूर्खनाथ, आल आफ यू ।'

गेनमा-बहु आङनमे गुमसुम बैसलि छलि ।

भोरसँ गाम आ इलाकामे हड़कम्प मचल छलैक । पुलिस-दारोगा आयल रहैक– धड़-पकड़ भेल रहैक । भोरे कुसुमदाइक आङनक मुहथरि लग एकबालीक देह पड़ल छलैक–धड़ अलग, मूड़ी अलग । शोणितक पमार बहल छलैक । हाथक टार्च ठामहि ओँघरायल रहैक ।

मुँहथरि लग लत्तीक झोँझमे बैसलि छलि गेनमा-बहु । तीन घण्टा धरि बैसलि रहलि । भोरुकबा उगक बेर होबऽ लगलैक । जीतक खुशीमे एकबाली उमकल छलैक । कुसुमदाइ उमकलि छलीह । भोर होबऽमे बेसी देरी नहि रहैक ।

गेनमा-बहु हताश होबऽ लागलि । नियारिकऽ ई राति आ स्थान चुनने छलि । जहियासँ छूटिकऽ आयलि, गुनधुनमे छलि । कखनो ठोरपर हँसी नहि पसरलैक । कखनो देहमे हाथ नहि लगबऽ देलकै गेनमाकेँ । छुबैत देरी सिकुड़ि जाइ । देहकेँ काठ कऽ लैक ।

गेनमा खिसियाकऽ एक दिन कहलकै–'एना किएक करै हइ ? हमरा छूलासे देह मैल हो जैते एकर ?'

गेनमा-बहु कानऽ लगलैक— 'आर की मैल होतैक ई देह ? ई तऽ घोकल हइ । पहिले मुखिया, फेर दारोगा ...फेर सिपाही...। ई देह तऽ सड़ि गेल हइ, एकरा काटि देबैक एकदिन ।'

गेनमा फेर डँटलकै । मुदा क्रोधसँ नहि, दुलारसँ–'बताहि भेले हैं ! तोहर देह किएक घोँकल रहतौ ? ओ तऽ साफ हउ, एकदम गंगाजल नाहित । कोनो पापी आ राक्षसके घोँकलासे गंगाजल गंदा नै होइ हइ ।'

गेनमा-बहु मुदा जिद्द धयने रहलैक–'नै छूबौ ई हमरा । असर्ध हय हमर ई देह । के के गिजलक एकरा ! हम अपने गिजबौलिऐक । इज्जति बचबे खातिर दबिला चलौले रहलिऐक आ फेर वैह इज्जति अपने बेचि देलिऐक–चुपचाप पसरि गेलिऐक मुखिया लग । फेर थानोमे । आ, नहि जानि ककर हइ अइ पेटमे ? मुखियाके कि दारोगा के वा सिपहिया के ! सुगबुग करै हय पेटमे कोनो पपिआहा कीड़ा नाहित, तऽ सौंसे देह घिरना से भरि जाइ हइ । मोन करै हय जे पेट चीरि बाहर कऽ दिऐ अखनिए अइ पापकेँ...'

गेनमा बुझौलकै–''जहलमे एकसरे बैठल-बैठल सोचि-सोचिकऽ एकर माथा खराप हो गेल हइ । ई जे हइ से ककरो ने हइ । हमर हय गे ! एकरा पाप मानिके एकरा से घिरना नहि कर । आ, जे भेलौ एकरा संग तकरा बिसरि जाउ । ओकरे से लड़े वास्ते तऽ खड़ा भेल छी हम । जे एकरा साथे हौलौ, आरो कतना साथे हो रहल हइ, फेनू ककरो साथ नै होइ । जकर हाथमे न्याय हइ, जुलुम रोकेक भार हइ, सैह जुलुम करै हइ कमजोर आ गरीबपर । ई मुखिया, ई दारोगा-पुलिस ! ई रक्षा नै कयलकै एकर । एगो राच्छस से अपन इज्जति बचा लेलकै ई, मुदा कानून आ सरकार के रखबारी करेवला जोँकसभ एकरा लूटि लेलकै । आब ई लूटि नहि चले देबै हमसभ । एकरे लड़ाइ लड़बै । मुदा ई एना बताहि जकाँ करतैक, हिम्मत हारि देतैक, तखन कोना लड़बै हम ?'

गेनमा स्नेहसँ देहपर हाथ राखऽ चाहलकै, मुदा गेनमा-बहु छिटकिकऽ पड़ा गेलैक 'नै, ई नइ छूतै हमरा । जाले अइ गन्दगीकेँ धो नहि लेबैक हम, शुद्ध नहि भऽ जयबै, ई नै छूतै हमरा ।'

गेनमा नहि छुलकै । छोड़ि देलकै ओकरा एकसर । मुदा, ओकरा कोनो अन्दाज नहि छलैक जे ओकर मोनमे की छैक । ओ गुमसुम रहैत छलैक । एकसरि बैसलि दबिलाक धारकेँ पिजबैत रहैत छलैक । गेनमा सेहो नहि देखलकै ।

देखलकै यदुआ-माय । दबिलाक धार पिजबैत भवानी । यदुआ-माय बताहि भेल गामे-गाम बौआइत छलै– भीख मडै नै छलै । जे दऽ देलकै क्यो, खा लैत छलै । लाल-लाल आँखि आ गुद्दरसँ आधा झाँपल देह । हाथ हरदम गोहारिमे ऊपर उठल आ ठोर पटपटाइत । ओइ दिन अङना आबि धार पिजबैत भवानीकेँ देखलकै–'घुरि अयलै भवानी ? गेनमा कहा हौ ?'

गेनमा-बहु आदरसँ बजौलकै–'अबैत होतै ! बैठ ने ! कहाँ चल गेल रहलेँ माय !'

यदुआ-माय हाथ उठौने नचैत रहलैक-'नै भवानी, बैठबौ नहि । जाइ छियौ ! मुदा, तोँ छोड़ दबिला भवानी....खतम कर ई अपन खेल ।'

भवानीक क्रोध, मुदा शान्त नहि भेलैक । कुसुमदाइक मुँहथरि चुनने छलैक ओ, आ हाथमे रहैक पिजाओल दबिला ! तीन घण्टा बैसले रहि गेलि । हताश होबऽ लागलि । भोर होबऽमे देरी नहि छलैक । इजोत होइते क्यो देखि लेतैक ।

देखलकै यदुआ-माय ! ओइ लत्तीक झोंझमे नुकायल भवानीकेँ नहि जानि कोना देखि लेलकै- 'दबिला हमरा दऽ दे भवानी ! तोँ घर जो ।'

बतही सासुकेँ ओतऽ देखि गेनमा-बहु डेरायलि-'सभ टा चौपट कऽ देतैक ई ।' फुसफुसाकऽ डँटलकै-'ई जाउ माय एन्ने से ! हमरा अपन काज करऽ दौ ।'

यदुआ-माय नहि मानलकै-'नै भवानी ! आइ ई काज हम करबै । तोँ भागि जो एतऽसँ ।'

तखने आङनक दरबज्जा खुजलैक । मुखिया एकबाली चौधरी बहरयलैक । दरबज्जा फेर बन्द भऽ गेलैक । मुखिया लग्घी करऽ ओही लत्तीसभक झोँझ लग बैसि गेल ।

यदुआ-माय लपकिकऽ दबिला लऽ लेलकै आ दौड़िकऽ दुहत्थी चला देलकै गरदनिपर । मूड़ी दूर जा खसलैक । आ, दबिला लेने दौड़लि यदुआ-माय चल गेलैक । दू खण्ड भेल धड़ आ मूड़ीकेँ गेनमा-बहु किछु काल निचैनसँ देखैत रहलैक आ फेर अपन टोल दिस चल गेलि ।

भोरसँ इलाकामे हड़कम्प मचल छलैक, धड़-पकड़ जारी छलैक । कनैत-कनैत कुसुमदाइक सभ टा श्रृंगार बहि गेल छलनि आ सभ दिन सुन्नर लागऽवला मुँह असर्ध लागऽ लागल छलनि । लहास हुनके मुँहथरिपर छलनि आ जेठका बेटा घरेपर छलनि । पुलिस ओकरो फँसबऽपर छलैक । चेतन नेन्ना मायक संग आखिर कतेक दिन तक बर्दाश्त करैत एक टा दोसर पुरुषकेँ ?

तेजू आ मक्खन साहु अलगे डरे त्रस्त । दुनू एकबालीसँ हारल छल आ जीतेक राति एकबाली दू खण्डी भऽ गेलाह । पुलिस बहुतरास नछोड़ देलोक बाद मक्खन साहु आ तेजूकेँ सन्देहक सूचीमे रखने छलनि । थैली पैघ कऽ देने छलथिन दुनू, मुदा डरे तैयो त्रस्त छलाह ।

अपन आङनमे गुमसुम बैसलि छलि गेनमा-बहु । गेनमा बाहरसँ घुरल छल

आ आस्तेसँ डेराइत बहुकेँ कहलकै— 'फेर एक टा खून कयलकै ई ! ओइ बेर बाँचि गेलैक, मुदा अइ बेर नहि बँचतैक । ओइ बेर इज्जतिक सवाल छलैक, अइ बेर की कहतैक ? के विश्वास करतैक एकर बातक ? ओइ बेर अपने कहने छलैक अदालतिमे जे गुणाकर आ महेश मास्टर छलाह । आब मुखियाक नाम कोना लेतैक ? के विश्वास करतैक एकर बातक ? हथकड़ी लगबे करतैक अइ बेर आ फाँसी हेतैक ।'

गेनमा-बहु निधोख कहलकै- 'तँ भऽ जाय दो फाँसी ! दू खण्डी काटि देलिऐ, बस्स, हमर काम हो गेल । आब जहल-फाँसी के हमरा डर नै हय ।'

लग आबि गेनमा देहपर हाथ देलकै । ओकरा आश्चर्य भेलैक जे आइ ओ छिटकि कऽ दूर नहि गेलैक । हाथसँ ओकर पीठ सोहरओबैत स्नेहसँ कहलकै- 'डर एकरा नै हइ, मुदा हमरा हय । एकरा लऽ जेतै, फाँसी दऽ देतै, तँ हम कोना रहबै ?'

नै जानि किम्हरसँ दबिला लेने यदुआ-माय आबि गेलै आङनमे- 'रहबेँ तोँ दुनू, चैनसँ रहबेँ आब । पापीकेँ काटि देने छिऐक अही दबिलासँ । जय भवानी ।'

गेनमा हुलसिकऽ उठल-'बैठ माय ! तू कहाँ चल गेल रहलेँ ? नै जाय देबौ आब तोरा कहीँ ।'

दबिला छीनि लेलकै । घरक भीतर जाकऽ नीक जकाँ ओकरा धोलक आ सुखा-पोछिकऽ चारमे नुकाकऽ खोँसि देलकै । तैयो मोन नहि मानलकै । फेर निकाललक । फेर धोलक ! सुखाकऽ आगिपर धिपौलक । फेर सेराकऽ चारमे खोँसि देलकै, नुकाकऽ ।

यदुआ-माय शान्त स्थिर बैसलि छलैक अपन पुरना स्थानपर । पुतहु खाय लेॅ देने छलैक । नव कपड़ा देने छलैक । शान्त भेल बैसलि बुढ़िया बीड़ी पीबि रहलि छलैक ।

गेनमा-बहु घरमे अयलैक । दबिलाकेँ धोऐत-पोछैत पसेना-पसेना भऽ गेल छलैक गेनमा । बहु कने लग आबि कहलकै- 'आब सुस्ता लौ कने । थाकि गेल हेतै ।'

गेनमा बहुत दिनपर बहुक एहन बोली सुनने छल । हाथ बढ़ा समेटि लेलकै ओकरा बाँहिमे । बाहिमे लेने बिछायल चपतापर बैसि गेलैक आ ओकरा सुता

देलकै । फेर ओकर उघरल पेटपर अपन कान सटा देलकै–बड़ी काल तक सटौने रहलैक । हँसिकऽ कहलकै–'मर बहिँ, ई तँ कुदकै हइ पेटमे !'

गेनमा–बहु लजाकऽ उठि बैसलैक आ बाहर जाइत कहलकै–'भारी निर्लज्ज हइ ई तँ ! फट्टक खूजल हइ आ माय बैसलि हइ अङनामे ।'

गेनमा ओही ठाम चपतापर ओँघराइत आनन्दसँ कहलकै–'आहि रौ बा ! एक सिकंड खेला देलिऐ अपन चेङनाकेँ तँ निर्लज्ज हो गेलिऐ ?'

ओइ राति कविता कानऽ लगलैक–'ई की भऽ गेल ? कोना मुँह देखयबैक लोककेँ ?'

रविकेँ तामस भेलैक–'ओना तँ बड़ मुँह देखबैत छहीक तोँ लोककेँ ?'

कविता ओहिना कनैत रहलैक–'लाजे मरि जयबाक गप्प छैक । एतेक दिनुका बाद....पन्द्रह वर्षक बाद, अइ बुढ़ारीमे ई लाजक नहि तँ कोनो गर्वक विषय थिकैक ?'

रवि डाँटि देलकै ओकरा–'यैहसभ अण्ट-शण्ट सोचि दिनानुदिन अपन स्वास्थ्य खराब कयने जा रहलि छैँ । अपना नहि, तँ पेटक जीवपर दया करहिक। अपना संग एकरो जान लेबहिक ।'

कविता कनैत-कनैत हँसलैक आ कहलकै–'जान तँ अबस्से लेत ई हमर ! बुढ़ारीमे ओहिना पेटमे आयल अछि ! मुदा, ओइ मृत्युसँ पहिलुका धिक्कार आ तिरस्कार बेसी कष्टकर हैत सहबामे ।'

रविक क्रोध बेसम्हार होबऽ लगलैक–'फेर वेह गप्प ! कथीक धिक्कार आ कथीक तिरस्कार ? अपन पतिक संतानकेँ धारण करब धिक्कारक विषय थिकैक ? एखनो धरि तोहर मनसँ ओ बात नहि गेल छौ । तोँ ककरा लग छैँ ? के छियौ हम तोहर आ लवक ? ई बात पहिने तोरे बुझबऽ पड़त हमरा ?'

कविता अनुनयसँ कहलकै–'बिगड़ू नहि ! दुख नै करू हमर बातक । हमर माथ खराब भेल जा रहल अछि । अहाँक दुख आ स्थिति आब आर अधिक सहन

नहि भऽ रहल अछि हमरासँ । अही सोचमे प्राण जैत हमर ।'

रवि ओहिना बिगड़ल रहलैक–'बस्स, भऽ जयतै सभ टा खिस्सा समाप्त । तोँ अपन प्राण दऽ देबैँ आ भरि गाम लवकेँ छातीसँ लगा लेतैक । एतबे चीन्हैत छहीक गामक लोककेँ ।'

कविता कानब बन्द कऽ देलकै । रविक केशमे अपन आङुर चलबैत कहलकै–'निर्बुद्धी छी हम ! हमर बातपर एतेक क्रोध नहि करू । फेर नै बाजब एना हम कहियो । मुदा, नहि जानि किएक, बड़ डर लगैत अछि । होइत अछि जेना बेसी बाँचब नहि हम । एकटा बात मानब हमर ?'

रवि ओकरा आर लग खीचिकऽ कहलकै–'एक टा किएक, हजार टा बात मानबौ तोहर । तोँ कह तँ पहिने ।'

कविता आस्तेसँ कहलकै–'कोनो उपाय होअय तँ लवकेँ उपनयन करा दियौ, एतेक टा भऽ गेल । अहाँ तँ करबे करबैक सभ टा । एखन कऽ देबैक तँ हमहूँ देखि लेब ।'

रवि कविताकेँ दूर ठेलि देलकै–'फेर वैह बात ! तोँ सभ टा देखबैँ । लवक उपनयन देखबहिक, ओकर बियाहो देखबहिक ! खाली दुख देबऽ लेल ई सभ बजैत रहै छैँ तोँ ।'

लग सटि मुँहपर हाथ राखि देलकै कविता– 'तामस नै करू । आब नै बाजब हम । मुदा, उपनयन कहुना भऽ जाइक ।'

प्रातेसँ रवि चेष्टामे लागि गेल । गाममे ककरोसँ आशा नहि छलैक । तैयो चर्चा कयलक बुधियारकाका लग । ओ उत्साहित कयलथिन, मुदा रवि जनैत छल जे हुनकर घरक लोक रविक संग नहि देतैक । रवि दरभंगा गेल मोहन भाइ लग । ओतऽ ओकरा आशा छलैक ।

रविकेँ देखि मोहन भाइक मुँह लटकि गेलनि, जेना हजार मोन पानि पड़ि गेल होइनि देहपर । रवि गोड़ लगलकनि तँ हड़बड़ाइत पुछलथिन–'कोम्हर अयलऽ रवि ?'

रवि अपन उद्देश्य कहलकनि आ अनुरोध कयलनि–'अहाँ आ भौजी चलिकऽ आशीर्वाद दिऐक तँ सभटा काज भऽ सकैत अछि । गामक हमरा चिन्ता नहि अछि । टाको-पैसा लेल हमरा चिन्ता नहि अछि । मुदा, कविता रोगाहि

आ एकसरि सभटा नहि कऽ सकति ! अहाँ आ भौजी चलि यदि आशीर्वाद दितिऐक लवकें ।'

मोहन भाइ चुप्पे रहलथिन । बड़ी काल बाद कहलथिन–'बात तोरा साफ-साफ कहि दियऽ ताहीमे नीक हैत दुनू गोटेकें । एना दोसरक स्त्री आ बेटाकें तों जबर्दस्ती अपन घर रखने छऽ आ आइ हमरा सेहो ओइमे चलबा लेल कहैत छऽ ? ई कहऽसँ पहिने तोरा सोचऽ चाहैत छलऽ । हमरा चारि टा बेटी अछि, समाजमे रहबाक अछि हमरा । तोहर भौजी जहिया सुनलथुन, तहिएसँ अवाक् छथुन। अवाक् तँ हमरालोकनि ओहू दिन भेल रही जहिया विक्रम तोहर चालि-चलन दऽ कहलनि । मामा हमरालोकनिकें बसौलनि आ तों एना अपने घरमे, विक्रमक स्त्रीपर कुदृष्टि देलहुन । अविश्वास भेल छल । मुदा, तखन तों दोसर काण्ड कयलह । खुल्लम-खुल्ला परित्यक्ता स्त्रीकें ओकर बेटाक संग अपन घर बसा लेलह । लाजे मरि गेलहुँ हमरालोकनि । राम मामाक बेटाक एहन कृत्य ! नीक भेलनि जे ओ नहि देखलनि ईसभ ! आ, तों हमरा गाम चलि ओही स्त्रीक बेटाक उपनयनमे सम्मिलित होयबाक निमंत्रण दऽ रहल छऽ ? तोरामे लज्जा-संकोच नामक कोनो चीज बाँचल नहि छऽ ?'

रवि विदा होइत कहलकनि–'ठीके नहि बाँचल अछि मोहन भाइ ! नै तँ आजुक अहाँक आचरणपर लाजे मरि जैतहुँ हम । अहाँसँ बड़ आशा रहनि बाबूकें। बड़ खर्च आ आशासँ अहाँकें ओकालति पढ़ौने छलाह । अहाँ दुनू भाइकें बसौने छलाह । बड़ आशा रहनि अहाँ दुनू भाइक, खासकऽ अहाँक चरित्रपर बाबूकें । की बनौलनि अहाँकें ओ एतेक यत्नसँ ? यैह एक टा झूठ-सत्तक मोकदमा लड़ऽवला स्वार्थी ओकील, जे बिना पूरा बात बुझने फैसलापर आबि जाइत अछि ? अहाँसँ एकटा बात कहबा लेल आयल रही, मुदा से आब बेकार अछि । अहाँक परिचय भेटि गेल । अपन स्त्रीक कहलापर एकदिन अहाँक छोट भाइ अपन परिचय देने छलाह आ आइ अहूँ अपन परिचय दऽ देलहुँ । हमरा एतबे दुःख रहत जे एकदिन हम अहाँ दुनूकें श्रद्धा कयने छलहुँ । पश्चात्ताप रहत जे ओहू स्त्रीकें श्रद्धा करैत छलियनि जनिकर मोनमे जहर छलनि आ शरीरमे खाली वासना ।'

मोहन भाइ बिगड़ि उठलथिन–'तों हमरालोकरिकें गारि पढ़िकऽ जा रहल छऽ रवि ?'

रवि ओइसँ दुन्ना कोधसँ कहलकनि–'अहाँलोकनि हमर सम्बन्धी छी, सैह आब एक टा गारि थिक हमरा लेल । लालकाका, विक्रमभाइ आ आब अहूँ । सभ

सम्बन्धसँ मुक्त भऽ गेल छी, हम आब एकसर छी– बन्धु-बान्धव रहित ।'

गाम घूरिकऽ नव समस्या सामने आबि गेलैक । सभ टा सामान घरक बाहर फेकल छलैक आ कविता आ लव ओकरा ओगरने बैसल छलैक । कोठलीमे ताला लगा ओकर आगूमे लालकाका बैसल छलथिन । रविकें देखिते गरजऽ लगलथिन– 'हँटाबऽ ई पापक मोटरी-चोटरी हमर आङनसँ । एतेक दिन बर्दाश्त कऽ गेलहुँ हम । आब ई उपनयनक गप्प ! सेहो हमर आङनमे ! प्राण दऽ देब हम, मुदा ई नहि होबऽ देबऽ अप्पन आङनमे । लऽ जा अप्पन असला-खसला आ ढीढ़वाली रखैल मौगीकें.....'

'लालकाका !' –ततेक जोरसँ गरजल रवि जेना ठनका खसल होइ । सौंसे गाममे ओकर ओ गर्जना प्रतिध्वनित भेलैक । लालकाका डरे सिटपिटा गेलथिन । मदतिक लेल चारू बेटा– मनोज, लल्लू, बौआ आ छोटकू लग आबि गेलनि । लालकाकी सेहो आबि गेलथिन ।

कविता हाथ धऽ लेलकै । क्रोधसँ सौंसे देह थरथर काँपि रहल छलैक रविक । कविता ओकरा घीचैत कहलकै–'जाय दिऔ ! चलू अइ ठामसँ ।'

कविता नहिओ पकड़ितैक तैयो ओकर हाथ नहि उठितैक लालकाकापर । रवि बूझि गेल छल । सभ टा क्रोधक बादो लालकाकापर आक्रमण करब ओकरा बुते सम्भव नहि छलैक । ओ क्रोधे थरथराकऽ रहि गेल छल । नहि तँ एहन बातपर नरेटी धऽ लितैक बजनिहारक ।

लालकाका मुदा डेरा गेल छलथिन । ओ अही विश्वासक संग दरबज्जा बन्द कऽ बैसल छलथिन जे रवि हमरा ठेलिकऽ घर नहि जायत किन्नहुँ । मुदा ओकर क्रोध देखि ओ भीतरे-भीतर डेरा गेल छलथिन ।

कविता हाथ घीचि लेने छलैक– जाय दियौ । चलू अइ ठामसँ ।'

ओ जीप सरसराइत कवितेक घर लग ठाढ़ भेल रहैक ।

रवि अपन आङनसँ कविताक घर चल आयल छल । सभ टा बाहर फेकल सामान बेरा-बेरी लवक संग उठा अनने छल । एतेक दिनसँ बन्द घरकें

कविता झाड़ि-पोछि लेने छलैक । रविक मोन तखनो तामसे घोरे छलैक । गुमगुम क्रोधमे जरैत बैसल छल । कविता कहलकै–'चलू, नीके भेल । लालकाका अहाँक एक तरहे उपकारे कयलनि । सासुरमे रहबाक सऽख पुरा देलनि । भरि जनम उपराग दितहुँ जे सासुरमे एक्को दिन मुँह नहि अइँठौलहुँ ।'

रविकेँ हँसी लागि गेलैक । मुदा, तखने बगलक घरसँ क्यो गरजि उठलैक— 'आब ई छिनरपनक नाटक हमरालोकनिक घरमे शुरू हैत ! आगि लगा देबैक घरमे हम ! रण्डी-वेश्या लेल जगह नहि छैक अइ टोलमे ।'

रवि अकचकाइत पुछलकै–'ई के ?'

कविता एक टा करुण हँसी हँसिकऽ कहलकै–'हमरे पितिऔत छथि मुन्नू। बहिनक सभ टा जथा हड़पने बैसल छथि आ आब सम्मानो कऽ रहल छथि ओकर । मुदा अहाँ अनठाउ हिनकर बात । ई तऽ सभ दिन एहिना छथि।'

खाली मुन्नुए नहि, भरि गाम ओहिना छलैक । उद्योग कऽ देलकै रवि । मुदा क्यो नहि अयलैक । एकसर रवि, कविता आ बरुआ ।

गेनमा आ बिलटा अयलैक–'जे काज हो, बोलि दू मालिक, सभ हो जायत । कोनो फिकिर करेके काम नहि हय ।'

दुनू एक टा चार ठाढ़ कऽ बाहर दिससँ ओसारा बना देलकै । गेनमा-बहु आ यदुआ-माय अयलैक । सौँसे आङन साफ कऽ नीपि देलकै । मड़बा ले' माटि आनि ऊँच चबुतरा बना देलकै गङबा, खढ़-बाँस आबि गेलैक । मुदा गामक कोनो लोक नहि अयलैक । माटि-माङर, कुमरम आ उपनयन । गनले दिन रहि गेल छलैक । गामक कोनो स्त्रीगण-पुरुष एको बेर हुलकी देबऽ नहि अयलैक ।

बिलटा कहलकै ओइ दिन–'कोनो परवाहि नै मालिक ! हमरा आर छी। टोलाक सभ लोक मदति वास्ते आबै चाहै य । ओकरा सभकेँ लाज होइ हइ । माइंजन गङबाकेँ सभसँ वेशी लाज हइ । टाका वास्ते बिका गेलैक ।'

गेनमो कहलकै— चौकीदारका आ हमर भाइ प्रबोधनो लजायल हइ । ओकरो सभकेँ बोला लू मालिक ! माँफी दऽ दिऔ ओकरा सभकेँ ।'

रवि नहि मानलकै–'नै गेनमा, ओकरासभकेँ हमरासँ माँफी माङक कोनो काज नहि छैक । हमरा कोनो धोखा नहि देने अछि ओसभ । ओसभ धोखा देने अछि अपनाकेँ । रुपैयापर भोट खाली वैहसभ नहि बेचने अछि, भरि देशमे एकर

खरीद-बिक्री होइ छैक, लाठीक जोरपर छीना-झपटी सेहो होइत छैक । अइमे कोनो नव बात नहि छैक । दुनियाँमे सभ वस्तु बिकाइ छैक । ओकरा खरीदल जा सकैत छैक । चाहे ओ वोट होइ, इज्जति होइ, पसेना होइ वा देशक भविष्य । पैसावला लोक सभ दिन अही सिद्धान्तपर काज करैत छैक जे दाम दऽ ओ सभ चीज खरीदल जा सकैत अछि । एकरे तोड़बाक छल । अइ विश्वासकेँ, अइ पद्धतिकेँ जे प्रत्येक वस्तु बिकाउ नहि होइत छैक । गेनमा-बहु एकर आशा जगौने छलि, तोँ जगौने छलेँ, बिलटा आ माइंजन जगौने छल । मुदा पंचायतक चुनावक बाद हमरा बुझबामे आबि गेल जे ई सिद्धांत, ई पद्धति अखन नहि हँटतैक । पैसावला एहिना खरीदत वोट, इज्जति आ मनुक्ख । लाठीवला एहिना जीतत वोट आ सम्मान । शोषकक नव-नव रूप अबैत रहतैक आ कमजोर लोक पिसाइत रहत । किएक तऽ ओ बिकायत... ओकर दाम लगतैक । कहियो एकजुट भऽ अन्यायक विरोध नहि कऽ सकत । साधनहीनक बल थिकैक ओकर एकता, मुदा से हमरा भ्रम भेल छल । तोरालोकनि निर्धन अइ लेल नै छैँ जे भूमिहीन छैँ । तोहर इज्जति अइ लेल नै लेल जाइ छौ, जे अभाव छौक । तोँ सभ बिकाउ छैँ... तोहर बोली लगै छौक । तोँसभ बिकाउ छैँ... तोरा लोक कीनि लैत छौक ।'

बिलटा आ गेनमा किछु बुझलकै आ किछु नहि बुझलकै । मुदा, एतबा बुझि गेलैक जे रविक तामस अखन धरि शान्त नहि भेल छैक । ओकर टोलक आन लोक सभक मदति नहि लेतैक ओ । बिलटा आ गेनमा मुदा सभ टा सम्हारने गेलैक ।

ओइ दिन ओ जीप सरसराइत कविताक दरबज्जापर ठाढ़ भऽ गेलैक । बारह बजैत छलैक–फरवरी मास । रौद कटाह नहि भेल छलैक । लोकसभ अपन-अपन दरबज्जापर रौदमे पड़ल छल । जीपक घड़घड़ाहटि सूनि उठि बैसल । रवि आङनसँ बाहर दरबज्जापर आयल– एक टा सुन्दर आ बलिष्ठ युवक जीपसँ उतरि लग अयलैक–'अपने हमरा नहि चीन्हब... हमर नाम कवीन्द्र अछि... हरिबाबूक सार ।'

रवि प्रसन्नतासँ कहलकै– 'नीक जकाँ चीन्हि गेलहुँ हम । दर्शन नहि भेल छल अपनेक, मुदा अपनेक प्रति कृतज्ञतासँ नित्य नतमस्तक होइत छी । सत्ते बड़ उपकार कयने छी अपने हमरापर ।'

कवीन्द्र रोकैत कहलथिन–'ई उपकारक हिसाब-किताब रहऽ दियऽ । केहन उपकार कयने छी से हमरा बूझल अछि । हमर बहिन लिखने छलीह हमरा। ओ एखनो रुष्ट छथिन कवितापर । हमरा पत्र आनन्द लैत लिखने छलीह जे केहन

विपत्तिमे पड़ल छी अपनेलोकनि । पत्र पाबि रहल नहि गेल । दौड़ले आयल छी । अपने कोनो चिन्ता नहि करू । एखने हम सौँसे गामकेँ घूमि-घूमि कहि दैत छियनि जे कविता ककर स्त्री थिकीह ।'

कवीन्द्र जीप छोड़ि आगू बढ़लाह । रवि रोकलकनि-'कने पानि पीबि लितहुँ पहिने ।'

कवीन्द्र नहि मानलथिन-'एखन नहि, घूरिकऽ आबऽ दियऽ पहिने । एतेक पवित्र यज्ञ ठनने छी अपने आ गामक लोकक एहन बहिष्कार ! एकर इन्तजाम करऽ दियऽ पहिने ।'

साँझखन कवीन्द्र उदास घुरि अयलथिन । आकृति गम्भीर छलनि । रवि हँसी कयलकनि-'हारि गेलहुँ ?'

गम्भीर आकृतिपर हँसी पसरि गेलनि-'एतेक जल्दी हारि मानऽवला लोक नहि छी हम ।' सभकेँ हरदा बजाकऽ छोड़बनि । मुदा विचित्र अछि अहूँक गाम ! कतबो कहलिऐक-क्यो ध्यान नहि देलक ! आजुक युगमे एकटा स्त्रीक जीवनकेँ सीथमे सेन्नुर भरि जयबाक नामपर नष्ट कऽ देबा लेल उद्यत छथि । हम कहिकऽ थाकि गेलियनि जे चलू सभ क्यो ! अहीँ लोकनिक सामने हम सीथमे सेन्नुर देने छलियनि । अहीँलोकनिक सामने मेटाइओ दैत छियनि । रविबाबू फेर सेन्नुर दऽ देथिन । क्यो टस्ससँ मस्स नहि भेल । मनुक्खसँ उपर नहि होइत छैक कोनो रीति-रेवाज। मनुक्खक रक्षा लेल ओकरा बदललो जा सकैत छैक, से नहि मानैत छथि अहाँक गामक लोक । मुदा चिन्ता नहि करब अपने । हम काल्हि फेर आयब ।'

कोनो आग्रह नहि सुनलथिन कवीन्द्र भोजन-पनपिआइक ! जीप दौड़ौने चल गेलथिन आ दोसर दिन फेर अयलथिन- दू टा जीप । एक जीपमे सामान आ दोसरमे लोकसभ- हुनकर तीनू भाउजि आ दू टा काकी । सभक संग अपने आङनक मुँहथरि धरि अयलथिन कवीन्द्र आ जोरसँ कविताकेँ सुनबैत कहलथिन-'ककरोसँ कोनो संकोच नहि करब अहाँ । लाजसँ छोट हैबाक कोनो प्रयोजन नहि । सभ जनैत छथि हमर घरमे अहाँक गप्प । आ, ई सभ छोट नहि छथि- हमर सम्बन्धी छथि । अहाँ सम्मानपूर्वक सामने अबियनु सभक ।'

कविता की लऽ सामने अबितैक कवीन्द्रक ! एकदिन ओ कहने छलथिन- 'एक बेर जे ई मुँह देखि लेत, जीवन पर्यन्त नहि बिसरत ।' आइ देखिओकऽ चिन्हथिन ओइ मुँहकेँ ? लवकेँ आगू बढ़बैत कहलकै कविता— 'जा, गोड़ लगहुन ।'

लव गोड़ लगलकै आ कवीन्द्र ओकरा उठा छातीसँ सटा लेलथिन ।

कविताक आङनमे गीत-नाद भेलैक, सभ टा बीधो-व्यवहार भेलैक आ भरि गामक लोक दूरसँ देखैत रहलैक । रातिमक बाद विदा भेलथिन कवीन्द्र ! सभ जीपर बैसि गेलनि । रवि विदा करबा लेल ठाढ़ छलनि । लव दौड़ल अयलनि-'माय बजबै अछि अहाँकेँ ।'

कवीन्द्र फेर आङनक मुँहथरि लग गेला । एकदिन अही मुँहथरिपर चुमाओन भेल रहनि । कविता अही आङनमे कनगुरिया लागल रहनि । आइ विदा होइत काल कवीन्द्रकेँ सभ टा मोन पड़लनि । भरिसक ई अन्तिम छलनि । फेर देखादेखी वा भेँट-घाँटक आशा नहि छलनि ।

कविता लग आबि जमीन छूबि गोड़ लगलकै— 'एतेक दया कयलहुँ अइ अभागलिपर, तँ एक टा अन्याय किएक भेल ?'

कवीन्द्र अकचकाकऽ तकलथिन !

कविता कहलकै-'सभकेँ अनलियनि तँ अपन स्त्रीकेँ किएक छोड़ि देलियनि ? एक बेर हुनको देखि लितियनि !'

कवीन्द्र हँसलाह-'से तँ मुदा संभव नहि छल ।'

कविता कने अभिमानसँ कहलकै-'कोनो अपमान नहि होइतनि हमर घरमे । अपन माथपर रखितियनि हम !'

कवीन्द्र तैयो हँसिते रहलथिन-'से मुदा अहाँ रखितियनि कोना ? विवाह तँ भेल छल हमर, मुदा स्त्री कहाँ भेटलीह ?'

कविता आँखि उठा देखलकै । कवीन्द्रक ठोरपर वैह हँसी छलनि चतुर्थी-रातिवला । कविताक आँखिसँ भटभट नोर खसऽ लगलैक । खसिते रहलैक ।

जीप चल गेलैक । रवि घूरिकऽ आङनक मुहथरिपर अयलाह । कविता ओहिना ठाढ़ि छलैक- आँखिसँ भटभट खसैत नोर ।

रवि कने देह छूबि कहलकै- 'आङन चल कविता !'

कविता चौँकलैक आ चारू कात तकैत कहलकै-'ओ सभ जाइत गेलाह ?'

लवो चल गेलैक । कविता छाती पीटैत रहि गेल । रवि दौड़ैत अपस्याँत भऽ गेल । भरि-भरि राति लवक कमजोर देहकेँ अपन छातीसँ सटौने बैसल रहि गेल । मुदा लव चल गेलैक ।

नहि जानि, केहन बोखार छलैक ! कमबे नहि कयलकै । तैंतीस दिन धरि चढ़ले रहलैक बोखार । रवि लग जे बाँचल छलैक, सभटा लगा देलकै । दरभंगोसँ डाक्टर अनलकै । मुदा सभ बेकार ! ओइ दिन दुपहरियामे लव विदा भऽ गेलैक । तैँतीस दिनमे ओकर ओ स्वस्थ सुन्दर शरीर गलि गेल छलैक । मात्र कंकाल अवशिष्ट ।

कनैत-कनैत बताहि भऽ गेलैक कविता ! रविकेँ कुर्त्ता पकड़ि झिकझोरऽ लगलैक –'अहाँ खूनी छी ! अहीँ जान लेने छिऐक एकर । ओइ दिन स्टेशनपर पहुँचा देने रही एकरा जे लऽ जेयौक एतऽसँ दूर, अइ गामसँ दूर । मुदा अहाँ घुरि अयलहुँ, हमर लवकेँ खा गेलहुँ अहाँ !'

रवि जेना बहीर भऽ गेल छल ! कविताक कोनो बात जेना ओकर कानमे नहि जा रहल छलैक । ओकर कोरामे लवक मुर्दा-देह पड़ल छलैक, तकरो उतारबाक होश नहि छलैक ओकरा ! तैँतीस रातिक लगातार जागरन, दौड़धूप आ चिन्ता आ तकर बाद अइ बज्राघातसँ सुन्न भऽ गेल छल रवि । कविता बताहि जकाँ चिकरैत ओकर कुर्त्ता तीरी-तीरी कऽ रहलि छलैक— 'अहाँ खूनी छी, अहीँ जान लेने छिऐक लवक !'

रवि कविताक प्रलाप नहि सूनि रहल छलैक । ओ लवक कंकाल देह आ उनटल आँखिकेँ देखि रहल छलैक । अहीपर ओकर समस्त आशा केन्द्रित छलैक– लवे छलैक ओकर स्वप्न ! ओकरे लेल ओ सभसँ लड़ल छल । ओकर देह ओकरा कोरामे निर्जीव पड़ल छलैक । नहि जानि, कोना एहन गम्भीर भऽ गेल छलै लव ! जहियासँ स्टेशनसँ घूरिकऽ गाम अयलैक, कहिओ हँसलैक नहि खुलिकऽ । एक्केबेर एकदम चेतन आ सज्ञान भऽ गेल छलैक जेना ! रवि ओकर मुँह देखि सिहरि जाइत छल आ कहैत छलै–'तोँ एना नहि रह बाउ ! हँस-बाज, खेलो गऽ सभक संग ।'

लव कहिओ ने गेलैक ! सदिखन माय-बापक संग लागल रहैत छलैक । उपनयनोमे ओहिना गम्भीर रहलैक– ने कोनो उल्लास, ने कोनो फरमाइश ! ओहन बुझनुक आ सज्ञान लवकेँ देखि रवि सिहरि जाइत छल, ओकरा डर होइत छलैक, अपराध-बोध होइत छलैक ।

कोरामे लवक मुर्दा देह लेने बैसल रविक ओ अपराध-बोध आर बढ़ि गेल छलैक ! कविताक आरोप ओ नहि सुनलकै, मुदा तैयो लगलैक जेना सत्ते वैह हत्या कयने होइ ओइ मेधावी आ निडर बालकक । जहियासँ ओकर बाप बनि घुरलैक रवि, ओकर निडरता, ओकर हँसी हेरा गेलैक । रवि छीनि लेलकै सभ टा !

कोरा महक बोझ असह्य भऽ उठलैक–अपन संतानक मृत देहक बोझ । ओही बोझसँ धरतीमे धसि जाइत तँ नीक होइतैक । मुदा धरती निस्सन छलैक आ रवि बोझ तर जाँतल छल ।

अङनासँ गेनमा बजलै–'ले चलू मालिक आब ! साँझ हो गेल ! करेजा मजगूत करू ।'

रविकेँ होश भेलैक । लवकेँ ओहिना कोरामे उठौने आङनमे आयल । बिलटा बाँस काटि अनने छलैक । रवि धऽ देलकै चचरीपर लवक देह । आरो वस्तुक इन्तजाम कयने छलैक बिलटा–'चलू आब ।'

चारि टा कान्ह नहि पुरलैक । बिलटा, गेनमा आ रवि । तीनिए गोटे मिलि बिदा भेल ! आङनमे चिकरैत कविता रविकेँ कहैत रहलैक— 'कलेजा ठण्डा भेल अहाँक ! अही लेल अनने छलिऐक गाममे एकरा ! भेल सऽख पूर ! अपने कान्हपर अपन बेटाक लहास...!

रविक डेग आगू नहि बढ़ि रहल छलैक, जेना समस्त सृष्टिक बोझ ओकरे कान्हपर होइ ! ओकरा हँटा देलकै बिलटा–'हमही दुनू लऽ चलै छी । अहाँ छोड़ि दियौ ।'

घुरैत बेस राति भऽ गेलैक । चिता मिझा गेलाक बादो रविकेँ साहस नहि होइत छलैक आङन जयबाक । कोना देखतैक कविताक मुँह ? लवकेँ मङतैक तँ कहाँसँ अनतैक ? ई गाम अन्ततः छीनिए लेलकै ओकर सभ-किछु, ओकर लव... ओकर स्वप्न... ओकर भविष्य... !

गेनमा आ बिलटा जबर्दस्ती आङन पहुँचा घुरि गेलैक ! आङनमे अन्हार छलैक । सौँसे घरमे अन्हार छलैक । ओहि डेराओन अन्हारमे बड़ी काल ठाढ़ रहल रवि । कविता कानि नहि रहलि छलैक । कुहरि रहलि छलैक । अन्हार घरमे कविता कुहरि रहलि छलैक– अनवरत ! आ, ओकर कुहरनाइ आङनक अन्हारक संग पसरल छलैक ।

बड़ी काल बाद साहस कऽ कोठलीमे पैसल रवि–'किए कुहरै छेँ कविता ?'

कविता जेना कुहरब बिसरि चिचिया उठलैक–'निकल बाहर, तोँ किएक अयलेँ हमर घरमे...तोँ खूनी छेँ...'

रवि डेराकऽ बाहर पड़ा आयल । आङनेमे ठाढ़ रहल । कविताक कुहरब बढ़िते गेलैक । रातुक उत्तरार्धमे ओ कुहरब चिकरबमे बदलि गेलैक । एकबेर फेर साहस कऽ घरमे पैसल रवि–'की होइ छौ कविता ? एना चिकरै किएक छेँ ?'

कविता फेर चिकरब बन्द कऽ ओकरेपर गरजलैक–'निकल-निकल अइ घरसँ, तोँ किए अयलैँ एतऽ... तोँ खूनी छेँ... हत्यारा छेँ ! निकलि जो हमर घरसँ...।'

रवि फेर पड़ा आयल आङन । कविता ओहिना चिकरैत-कुहरैत रहलैक । प्रमादमे बड़बड़ाइत रहलैक । आङनक अन्हारमे ठाढ़ रवि कनैत रहल । लव गेलैक आ कविता बताहि भेल छैक ।

भोरुकबामे एक टा नवजात शिशुक कानब घर-आङनमे पसरि गेलैक आ ओकरे संग दौड़ल फेर कोठलीमे गेल रवि–'कोना छेँ कविता ? बच्चा कोना छौ ?'

कविताक स्वर अइ बेर क्षीण आ बदलल छलैक–'भागू एतऽसँ अहाँ ! भीतर किएक अयलहुँ ?'

रवि बाहर आबि गेल । कनेकाल नेना कनलैक । फेर सभ शान्त भऽ गेलैक । कोठली ओहिना शान्त छलैक । ने कविताक चीत्कार, ने नेनाक कानब । रविकेँ डर होबऽ लगलैक ।

फेर साहस कऽ कोठलीमे पैसल । इजोत घरोमे पैसि गेल छलैक । नीक जकाँ कपड़ामे लपेटिकऽ एक टा नेना राखल छलैक– आ बगलमे कविता पड़लि छलैक । ओहिना लथपथ आ श्रान्त । रविकेँ देखि ओकर ठोरपर हँसी पसरलैक–'लव फेर घुरि आयल अछि, देखू ।'

आँखिसँ नोर टघरि गेलैक आ गरदनि एक कात लटकि गेलैक । रवि दौड़िकऽ लग आबि बैसि गेलैक । देह छुलकै– सर्द-हेमाल । नाड़ी पकड़लकै– कतहु कोनो स्पन्दन नहि । स्पन्दनयुक्त नेना हाथ-पयर फेकैत बगलमे राखल छलैक– कपड़ामे लपेटल ।

रवि कानऽ लागल । छाती फाटि गेलैक । इच्छा भेलै जे एतेक जोरसँ चिकरि कऽ कानय जे सौसेँ गाम जमा भऽ जाइ । मुदा, निःशब्द कोठलीमे कनैत रवि कविताक सर्द-हेमाल देहकेँ अपन छातीसँ साटि लेलक । कवितो छोड़ि देलकै ओकरा । पहिने लव, तखन कविता । रवि हारि गेल । सभ किछु हारि गेल । अपन हेहर प्रानपर आश्चर्य भेलैक रविकेँ जे कोना एखन धरि शरीरमे टिकल छलैक !

रौद पसरि गेल छलैक आङनमे । बेटाक उत्तरी गरामे छलैक आ स्त्रीक लहास कोरामे । रवि उठल । कपड़ामे झाँपल नेनाकेँ बामा हाथसँ उठौलक आ दहिना हाथसँ कविताक देहकेँ उठा कान्हपर राखि लेलक । घरसँ बाहर आयल, आङनमे । आङनसँ बाहर भेल आ गामसँ बाहर विदा भेल ।

कान्हपर मृत स्त्रीक देह आ बाँहिमे नवजात शिशुकेँ लेने जाइत रविकेँ हवेली मोहनपुरक लोक अवाक् भऽ देखलकै ।

चिता धधकि रहल छलैक ।

ओकर समीपे रवि ठाढ़ छल । कने दूरपर ओहिना कपड़ामे लपेटल नवजात शिशु पड़ल छलैक ।

बिलटा फेर आबि गेल छलैक । लकड़ी-काठी जुटौने छलैक आ रविक पाछाँमे ठाढ़ छलैक ।

चिताक आगिमे रविक सभ किछु जरि रहल छलैक । रातिए लवक देहक संग अपन स्वप्न आ आकांक्षाकेँ जरा गेल छल । आब कविताक देहक संग ओकर जिनगी जरि रहल छलैक । सभ किछु समाप्त भऽ गेल छलैक ।

कपड़ामे लपेटल नेना जोर-जोरसँ कानि उठलैक । रवि पाछाँ तकलक । दौड़िकऽ लग आयल आ नेनाकेँ समेटिकऽ कोरामे लऽ छातीमे सटा लेलकै । ओ चुप्प भऽ गेलैक ।

कविता लवकेँ स्टेशन पहुँचा देने रहैक– एकरा लऽ जैयौ, मनुख बना

दियौ । रवि ओकर आङुर धऽ आ कविताकेँ लऽ गाम घुरि आयल । लवकेँ छीनि लेलकै, कविताकेँ छीनि लेलकै ई गाम, मुदा जाइत काल कविता कहने छलैक– 'लव फेर घुरि आयल अछि, देखू ।'

लव सत्ते घुरि आयल छलैक । एकरा ओ लऽ जयतैक– दूर– अइ गामसँ दूर...। बहुत दूर लऽ जयतैक एकरा...कविता मनुक्ख बनाबऽ कहने छलैक लवकेँ... कविताक बात मानऽ पड़तैक– लवकेँ मनुक्ख बनबऽ पड़तैक ।

रवि फेर कानि उठल । एतेक पैघ भार दऽ कविता ओकरा एकसर छोड़ि गेलि छलै– सौँसे पृथ्वीपर एकाकी । ओकर डेगमे डेग मिलाकऽ के चलतैक ? चौदह वर्ष ओकर प्रतीक्षा कयलकै कविता, मुदा भेटि गेलाक बाद निष्ठुर भऽ छोड़ि गेलैक । लवोकेँ लऽ गेलैक...

नहि, लवकेँ फेर दऽ गेल छलैक कविता । ओकर अन्तिम उपकार । उपकारे नहि, उपहारो । ओकरा छातीसँ सटा लेने छल रवि आ ओ चुपचाप पड़ल छलैक ओकर बाँहिमे । जीवि लेबाक सम्बल ओकर बाँहिमे छलैक ।

ओ बिलटाकेँ कहलकै– 'चलै छियौ बिलट, तोँ बहुत मोन रहबेँ । एक टा निष्ठुर आ हृदयहीन बस्तीमे तोहर हृदयक विशालता आ उदारता सभ दिन मोन रहत ।'

बिलटा दौड़िकऽ लग अयलैक– 'नै मालिक, अहाँ नहि जायब । हमरा सभ अज्ञान छी, अज्ञानपर क्रोध कऽ छोड़ि नहि सकै छी अहाँ !'

रवि बुझौलकै–'क्रोध नहि बिलट, तोरा लेल कृतज्ञता आ स्नेह भरल अछि मोनमे, मुदा खबरदार ! आब ई मालिक नहि कहियहिक ककरो कहिओ । क्रांति कतहु बाहरसँ उधार नहि अबैत छैक बिलट, ओ अपन सोनितमे रहैत छैक । हम्मर काज नै छौक तोरासभकेँ...तोरासभकेँ काज छौक अपन सोनितकेँ चिन्हबाक, ओइमे सुप्त चेतनाकेँ जगयबाक ... ई तोँसभ अपने कऽ सकै छैँ बिलट... क्यो आन कहिओ ने कऽ सकतौ ।'

बिलटा नहि मानलकै–'हमरासभ बुते कुच्छो नै होत मालिक ! अज्ञानी छी, मूर्ख छी हमरासभ । हमरासभपर बिगड़ि कऽ नै जाउ मालिक...अहाँकेँ नहि जाय देब हमसभ ! देखू, पाछाँ सौसेँ गाम ठाढ़ हय ।'

रवि घूरिकऽ तकलक । श्मशानमे सौसेँ गाम ठाढ़ छलैक । उतरबारि,

पछबारि आ बिचला टोलक सभ लोक । खतबेटोली, दुसधटोली, मलहटोली आ धनुखटोलीक सभ लोक । आगूमे ठाढ़ छलथिन बुधियारकाका । सौँसे गाम जेना कबुला कयने छलैक जे स्त्री-बेटा मरतैक तऽ रविक संग देतैक सभ । रविक आँखिसँ नोर बहऽ लगलैक । बुधियारकाका लग चल अयलथिन–'कान नहि रवि...नो टियर्स । यू आर ए ब्रेव सोल्जर माइ सन (नोर नहि, तोँ एकटा बहादुर सिपाही छै) ।

मुदा, बुधियारकाका अपने कानऽ लगलथिन । सभटा बुधियारी धयले रहि गेलनि– खाली नोर– दहो-बहो ।

नोरमे रविक संकल्प नहि बहलैक ! ओ गामसँ बाहर दिस बिदा भेल...! एकटा छौँड़ा बाट छेकि ठाढ़ भऽ गेलैक–'अहाँकेँ नहि जाय देब रविकाका !'

एकटा छोट छौँड़ा ! रवि ओकर मुँह तकलकै । छौंड़ा अनुरोधपूर्वक बजलैक– 'सत्ते, रविकाका ! अहाँ नै जाउ ! हमरा सभकेँ पढ़ाओत के अहाँ बिना ?'

रवि तैयो अकचकाइत ओकर मुँह देखैत रहलैक । छौँड़ा फेर कहलकै–'हमरा नै चिन्हलौँ रविकाका ! हम, अहाँक विद्यार्थी...सुन्दरकान्त झा...लवक संगी...आब पचमामे पढ़ै छी...

रवि फेर कानि उठल । लवकेँ तीनिए वर्षमे मैट्रिक पास करयबाक योजना छलैक ओकर । केहन प्रतिभा आ आत्मविश्वास छलैक लवमे ! ओहो छोड़ि देलकै ओकरा ।

ओइ छौँड़ाक माथपर हाथ रखैत रवि भीजल स्वरमे कहलकै–'आशीर्वाद दै छी बाउ, अहाँ खूब पढ़ू...यशस्वी होउ...'

रवि आगू बढ़ल । कोरामे बच्चा रहबाक कारणेँ हाथ ऊपर नहि उठि रहल छलैक । मुदा, दुनू हाथ जोड़ि लेने छल प्रणामक मुद्रामे ।

रवि आगू नहि बढ़ि सकल बेसी । नवतुरिआ सभ पयर छानि लेलकै– 'हमरा सभकेँ क्षमा कऽ दियऽ । बड़ अपमान कयने छी हमसभ अहाँक । अहाँ पैघ छी... चरित्रवान छी अहाँ ! हमरासभकेँ बाट देखाउ... गामकेँ देखबियौक...

रवि ओकरोसभकेँ कहलकै–'अहाँसभ लेल कोनो कुभाव नहि अछि हमर मोनमे, मुदा अपन बाट सभकेँ अपनहि ताकऽ पड़ैत छैक...निर्मित करऽ पड़ैत छैक ! अहाँलोकनि अपन बाट आ कर्त्तव्य चीन्हू, सैह आशीर्वाद दैत छी ।'

रविक लेल एखन आरो आश्चर्य बाँकी छलैक । आगू ठाढ़ छलथिन लालकाका आ लालकाकी । लालकाका लग आबि गेलथिन–'घुरि चलऽ रवि ! अपन घर चलऽ । लालकाकाकेँ क्षमा कऽ दहुन ।'

लालकाकी आगू आबि हाथ पसारि देलथिन–'अइ नेनाकेँ हमर कोरामे दऽ दे रवि ! तोरा दूध पिऔने छलियऽ, मुदा हमर ममता मरि गेल छल । दूध सुखा गेल अछि हमर, मुदा अपन ममतासँ पोसि लेबैक एकरा ।'

रविक आँखिसँ नोर फेर बहऽ लगलैक–'नै लालकाका ! आब घुरबाक साहस नहि अछि । अहाँ चीन्हि लेलहुँ हमरा जे हम अहींक भातिज रवि छी, सैह बहुत ! अहाँ चिन्हलहुँ, लालकाकीक ममता फेर भेटल । आर किछु नहि चाही । जकरासभकेँ चाहैत छलैक, से सभ चल गेल ।'

कनैत रवि कने जोरसँ सभकेँ सम्बोधित करैत कहलकै–'चिता मिझा रहल छैक आब । बगलेमे लवक चिता मिझायल पड़ल छैक । चारि टा कन्हा नहि भेटलैक ओकरा । तीन जन श्मशान अनलिऐक । बापक कान्हपर बेटाक लहास । आ, कविताकेँ ओहो तीन टा कान्ह नहि भेटलैक । अपने कन्हापर टाङिकऽ अनने छलिऐक एकसरे । एखन अहाँसभ आयल छी । तऽ दऽ दियौक सभ क्यो पाँच-पाँच टा काठी दुनूकेँ । ओकर सभक आत्माकेँ शान्ति भेटि जयतैक । हमरो शान्ति भेटत जे हमर स्त्री-बेटाकेँ मुइलेक बाद सही, स्वीकार कयलिऐक अहाँलोकनि !

पाँच-पाँच टा काठी उठा सभ देलकै दू बेर— दूनू चितापर बेरा-बेरी । रवि विदा भेल सभकेँ कृतज्ञतापूर्वक तकैत । कोरामे नवजात शिशु छलैक । ओकर खाली छातीसँ सटल ! केश छिड़िआयल छलैक । दाढ़ी बढ़ल, महीनो दिनसँ । आँखिक चमकैत नोरमे मुदा एकटा विश्वास छलैक आ डेगमे दृढ़ता ।

कनिये दूर जाकऽ नेना कानऽ लगलैक । जोर-जोरसँ चिकरऽ लगलैक । रवि जतबे चुप्प करबाक चेष्टा कयलकै, ततबे कानब बढ़िते गेलैक । चुप्प करबाक चेष्टामे अपस्याँत भऽ गेल रवि ।

–'बच्चा हमरा दऽ दू मालिक !'

एकटा नारी-स्वरसँ चौंकि गेल रवि ! सामने गेनमा ठाढ़ छलैक, कोरामे अपन बच्चाकेँ लेने ! हाथ पसारने गेनमा-बहु छलैक–'बच्चाकेँ दऽ दू मालिक !'

रविकेँ थकमकाइत देखि गेनमा कहलकै–'हँ मालिक, बच्चाकेँ दियौ एकरा ! ई चिलकाउर हय, बच्चाकेँ पोसि लेत ।'

रवि बच्चाकेँ गेनमा-बहुक कोरामे दऽ देलकै...। ओ ओही ठाम ओकर मुँहमे दूध लगा देलकै । बच्चा चुप्प भऽ गेलैक ।

रवि कहलकै–'ला दे, हमरा आब !'

गेनमा बीचमे आबि गेलैक–नै मालिक ! बच्चाकेँ ओकरे लग रहऽ दियौ । अहाँ घुरि चलू आ हमरासभकेँ देखू ! ई हमर कोरामे हमर बेटा हय— एकरा सभकेँ देखबै अहाँ ! हमरा आर तऽ एहिना रहि गेली मालिक ! मुदा एकर सभकेँ जिनगी शुरू हो रहल हइ ! हमरे आर नाहित इहो मारि-गारि खाइत अन्हारमे बौआइत नै रहि जाय, तकर भार लियौ अहाँ ! एकरा सभकेँ गियान दियौ...एकरा सभकेँ मनुक्ख बना दियौ अहाँ...

कविता कहने छलैक– लवकेँ लऽ जैयौक गामसँ बाहर, मनुक्ख बना दियौक ! गेनमा कहैत छैक–'गाम घुरि चलू...! हमरा सभक नेनाकेँ मनुक्ख बना दियऽ...'

कविताक नेना गेनमा-बहुक दूध पीबि रहल छलैक । सिंहनी छैक गेनमा-बहु...ओकर दूध पीबि कविताक नेना जीबि जयतैक...! रवि कोनो निर्णय नहि कऽ पाबि रहल छल ।

पछोड़ धयने बिलटा संग आबि गेल छलैक–'घूरि चलू मालिक ! हमर घर खाली पड़ल हय ! जहिया से कजरी गेल, कहिओ पैर नै देली ओइ घरमे । आइ अहींक साथे हमहूँ घर घुरब अप्पन...! साथमे एगो बेटा रहत आ एगो पोता...सभ मनोरथ पूरि जायत एक्के संग ।'

रवि ओकर मुँह देखलकै । बिलटा कानि रहल छलैक–'आब बूढ़ हो गेली हमहूँ ! अकेले स्टेशनक प्लेटफार्मपर पड़ल-पड़ल बूढ़ हो गेली हम ! मुदा अभी कूबत हय अइ हाथमे ! अपन बेटा-पोताकेँ पोसि सकै छी हम...! बेघर छी हम कहियासे मालिक– हमरा घर दिया दू...मनुक्ख बना दू ।'

रविक मोन डोलऽ लगलैक ! गेनमा कहैत छैक– घूरि चलू ! हमरा सभकेँ अन्हारसँ निकालू, ज्ञानक प्रकाश दियऽ । बिलटा कहैत छैक– घूरि चलू...हमरा घर दिआ दियऽ...बेटा-पोता दिआ दियऽ...मनुक्ख बना दियऽ । कविता कहने छलैक– लव फेर घुरि आयल अछि, देखू ! लवकेँ कविता अपने गामसँ

बाहर दऽ आयलि छलैक ! रवि घुरि आयल छल— लव छिना गेल छलै । कविता खूनी कहने छलैक ओकरा । दोबारा लव हेरा जयतैक तँ माफ नहि करतैक कविता ओकरा, किन्हु नहि ।

मुदा, कविताक लव गेनमा-बहुक दूध पीबि रहल छैक । सिंहनी छैक गेनमा-बहु ।

रवि निर्णय लऽ लेलक । कविताक मिझायल चिता दिस देखि मोनेमोन कहलकै–'हम फेर घूरि रहल छियौक कविता ! तोहर बात काटि रहल छियौक, क्षमा करिहैं ! तोँ लवकेँ मनुक्ख बनबऽ कहने छलेँ, हम तोहर लवक संग आरो-आरो लवकेँ मनुक्ख बनयबाक संकल्पक संग घुरि रहल छियौक । हमरा करऽ दे एक टा नवारम्भ, नव मनुक्ख, नव समाजक निर्माणक चेष्टा...तोहर लवक लेल । तोहर लव सन-सन हजारो-लाखो लवक लेल...'

तोँ खुशी भेलेँ ने कविता !'



राजा पोखरिमे कतेक मछरी ?

छी आ कहाँ जाइ छी । तोरा मारबो बेकार । अपने हाथमे चोट लगैत अछि । तोँ काठ छैँ, काठ ! शोणिते-शोणिताम भऽ जाइत छैं, मुदा एक ठोप नोर नहि अबैत छौ आँखिमे ।

कठरी बाबाजी चोरबा सभक संग चलैत बाजल- ''हमरा आँखिमे नोर किएक रहत हौ ? कोनो खराब काज कयने छी हम ! खाली एकटा बात पुछलिअऽ ताही लेल डेंगा देलह । अपने पछताइ जेबह।''

सत्ते पछतायल चोरबा सभ ।

एकटा धनिकहाक घरमे सेन्ह मारलक— बड़काटा सेन्ह । माटि बहुत रास जमा भऽ गेलैक । घर पैसबामे झंझट होइ । एकटा चोर बाजल— ई कठरी बाबाजी बैसल किएक अछि ? इहो माँटि फेकत । केहन तऽ भिसिण्ड अछि !

कठरी बाबाजी आँगनक मुहथरि लग गेल आ जोरसँ हाक मारलक- घरैत छी यौ— घरैत छी यौ, सात जन चोर ठाढ़ छथि, सेन्ह कटने छथि से माटि फेकबा लेल छिट्टा मँगैत छथि ।

जाग भऽ गेलैक । घरबैया सभ दरब्बजा खोलि-खोलि दौड़लाह । चोरबा सभ लंक लगा पड़ायल । पकड़ल गेल कठरी बाबाजी । सभ ओकरे लाते-जुत्ते मारऽ लगलैक । कठरी बाबाजी खाली एतबे बाजल- ''आहि रे बा ! हमही ँ हाक लगा जाग करौलहुँ आ हमरे मारै छी ?''

छौंड़बा सभ कठरी बाबाजीकेँ थाना लऽ जयबाक लेल रहै मुदा बुझनुक सभ कठरी बाबाजीकेँ छोड़ा देलकै । सौंसे देह थूरल, शोणिते-शोणिताम भेल । कठरी बाबाजी ओतऽसँ डेग घिसयिबैत बिदा भेल ।

दोसर राति अन्हारमे सातो चोर निश्चिन्त बिदा भेल जे कठरी बाबाजीकेँ अबस्से मारि देने हेतैक सभ वा अधमरू कऽ जहल पठा देने हेतैक । ओ आइ जतरा नहि बिगाड़त । मुदा कठरी बाबाजी ओही बाटपर धूनी रमौने मौजूद छलैक— ''के तोँ थिका हौ ? के थिका, कहाँ जाइ छऽ, हमरा नहि कहै छऽ?''

लोहछल चोरबा सभ मारैत-मारैत ओधबाध कऽ देलकै-'तोँ जिबिते बाँचि गेलैं काल्हि, मुदा आइ नहि छोड़बौ हमरा लोकनि । ने रहत बाँस, ने बाजत बाँसुरी ।''

कठरी बाबाजी मारि खाइत रहल । एक्को बेर किलोल नहि कयलक ।

खाली एतबे कहलकै— आहि रे बा ! हमरा एना किएक मारैत छऽ ? हम तऽ खाली एकटा बात पुछने रहियऽ ।

मारैत-मारैत अकच्छ भऽ चोरबा सभ अपने छोड़ि देलकै- ''एकरा मारब बेकार छौ । लऽ चल आइ फेर एकरा । खाली कोनो काज नहि अढ़बियहिक आइ ।''

अपन झोरा-झपटा सरियबैत कठरी बाबाजी चोरबा सभक संग विदा भेल । चोरबा सभ ओइ दिन एकटा दोसर गाम गेल । एकटा बनियाँक दोकानक ताला तोड़ि ओइमे पैसल । शुरुएमे चीनीक पट्टा सभ राखल छलैक । बोरा फाड़ि-फाड़ि चोरबा सभ चीनी फाँकऽ लागल । एकटा कठरी बाबाजी दिस गेलैक । थोड़े चीनी ओकरो दैत कहलकै— ले, तोहूँ खो ।

कठरी बाबाजी अन्हारे घरमे झोरासँ निकालि भगवानकेँ पसारि भोग लगौलक । फेर लागल शंख बजाबऽ । चोरबा सभ लंक लगाकऽ पड़ायल । बनियाँक घरानि सभ लाठी-सोंटा लेने दौड़ल । कठरी बाबाजीकेँ मारैत-मारैत अधमरू कऽ देलकै । कठरी बाबाजी खाली एतबे कहैत रहलै- ''आहि रे बा, हमरा किएक मारैत जाइत छी ?''

बनियाँक घरानि सभ कठरी बाबाजीकेँ ओहिना मारैत रहलैक । फेर अपने थाकिकऽ छोड़ि देलकै । किछु बुझनुक सभ छोड़ा देलकै ओकरा । किछु काल बाद कठरी बाबाजी उठल आ डेग घिसियबैत बिदा भेल ।

चोरबा सभ ओ नग्र छोड़िकऽ भागि पड़ायल— कोनो दोसर नगर दिस !

बाबीक तुराइ तरमे दुबकल खिस्सा सुनैत भास्कर पुछलकै- ''ई कठरी बाबाजी के छलैक बाबी ?''

''बाबाजी छलैक— साधु-महात्मा''- बाबीक सहज उत्तर छलैक ।

''साधु-महात्मा ककरा कहैत छैक बाबी ?''

''महात्मा माने महात्मा ! माने जे घर-संसार त्यागि दैत अछि, जकरा कोनो वस्तुक लोभ नहि रहैत छैक !'' बाबी बुझयबाक चेष्टा कयलकै ।

''ओकरा चोट किएक नहि लगैत छलैक बाबी ?'' भास्कर फेर प्रश्न कऽ देलकै ?

''चोट कोना लगितैक ? ओकर देह तऽ काठक छलैक- तेँ नाम छलैक कठरी बाबाजी ।''

बाबी सहजतासँ उत्तर देलकै । भास्करक जिज्ञासा मुदा शान्त नहि भेलैक। पुछलकै- ''काठक छलैक तऽ शोणित कोना बहलैक, कप्पार कोना फुटलैक ?''

बाबी गड़बड़ाय लगलैक । एहि प्रश्नक तत्काल कोनो उत्तर नहि देलकै। भास्करक जिज्ञासाक अन्त नहि भेल छलैक- ''मनुक्खक देह काठक कोना भऽ गेलैक बाबी ? साधु महात्मा मनुक्ख नहि होइत छैक ?''

एहि प्रश्नपर बाबी बड़ गम्भीर भऽ गेलैक । पोताकेँ तुराइ तरमे आर नीक जकाँ अपन जर्जर पाँजरसँ सटा कहलकै- ''मनुक्खे छलै बौआ, मुदा जे मनुक्ख अन्याय-अनीतिकेँ टोकारा दैत छैक, ओकरा एहिना सभक लात-जूता खाय पड़ैत छैक । अपन देहकेँ काठ बनबऽ पड़ैत छैक आ आत्माकेँ अजेय।''

एतबा कहि बाबी चुप्प भऽ गेलीह । डर भेलनि जे भास्कर फेर ने कहीं प्रश्न कऽ दिअय—आत्मा की होइत छैक ? अजेय माने की भेलैक ?

भास्कर सूति गेल छल । अपन प्रश्नक उत्तर सुनैत-सुनैत ओकर आँखि लागि गेल छलैक । आत्मा आ अजेय शब्द ओ नहि सुनि सकल । सुनैत तऽ बाबीकेँ घण्टो आरो सबाल पूछि-पूछिकऽ अकच्छ कऽ दितनि ।

ओना बाबी ओकर प्रश्नसँ कखनो अकच्छ नहि होइत छलथिन। सूतल भास्करक माथक झबरल केशकेँ सोहरबैत बाबीक अपनो आँखि झपकऽ लगलनि।

घरमे अन्हार पसरल छलैक । डिबिया नहि जानि कखन मिझा गेल छलैक। घरक कोन महक अगियासीक आगि सेहो भुम्भुर भऽ गेल छलैक, खाली छाउर तर आगि रहि गेल छलैक, भोरे अगियासी फेरसँ पजारि लेबाक हेतु।

साँझसँ अइ घरमे बड़ भीड़ छलैक । पहिने अगियासी ओसारापर होइत छलैक । जाड़ बढ़लैक तऽ घरमे होमऽ लगलैक । बाबीक अगियासी लग आ बिना अगियासियोक बाबीक बैसारमे बारहो मास चौसज्झा आंगनमे सभ आँगनक धीया-पूतासभ साँझेसँ जमा भऽ जाइत छल । आँगनक नामेटा चौसज्झा रहि गेल छलैक । ओ छलनि आब महेन्द्रनाथ चौधरीक, माने भास्करक पिताक । कहिओ भास्करक पितामह अपन चारू भाइक संग एहि आंगनमे छलथिन । चौसज्झा आंगनक चारूकात चारिटा कोठा छलैक— एक-एकटा सभ फरीकक । फेर बाँट-बखरा

भेलैक- तीनटा फरीक अइ आँगनसँ बाहर चल गेला, बदलेनक जमीन आ टाका भेटि गेलनि । आंगनमे रहि गेलाह महेन्द्रनाथ चौधरीक पिता । हुनकर साबिक पछबरिया कोठा छलनि जाहिमे आब महेन्द्रनाथ चौधरीक माय रहैत छलथिन बड़का बिचला कोठलीमे । एक कात पूजाघर छलनि आ दोसर कोठलीमे वस्तु-जात राखल छलैक । पुरान-पुरान सनुकचा आ आलमारीमे ठूसल अड़जाल-खड़जाल सभ । चोरबा-नुक्की खेलाइत काल धीया-पुता सभकेँ बड़का-बड़का अलमारी-सन्दूक सभक पाछाँ नुकयबामे खूब सुविधा होइक- तालो ने लगैक ओइ घरमे आब । दक्षिणबरिया कोठामे महेन्द्रनाथ चौधरी अपने रहैत छथि । उतरबरियामे हुनकर जेठ बालक शचीन्द्रनाथ चौधरी जिनका सभ सचिन बाबू कहैत छनि । भास्करसँ बीस वर्ष पैघ छथिन । पुबरिया कोठावला फरीक बदलेन नहि मानलथिन । जमीन तऽ दऽ देलथिन मुदा अपन सभटा ईटा उखाड़ि ओ ठीक सटले घूमिकऽ अपन आंगन बना लेलथिन । महेन्द्रनाथ चौधरीक पिताक पुबरिया घरक प्लौटसँ सटल हुनकर पछबरिया घर बनि गेलनि आ आंगनक मुँह आर आगू बढ़ा ओ ओहि ठाम बसि गेलाह । महेन्द्रनाथ चौधरीक पिताकेँ असुविधा भेलनि । ओइ पुबरिया प्लौटपर ओ एकटा बड़का भनसाघर बनबा लेलनि, खूब पैघ-पैघ तीनटा कोठली । खूब ऊँच कुर्सी आ ताहि पर ईंटाक देबाल । धरनि-खंभा सभ सखुआक मुदा उपरमे खपड़ा । सभसँ दक्षिणबरिया कोठलीमे भड़ार बनलनि, तकर सटले विधवालोकनि लेल फराक भनसाघर । अरबा खायवाली सभक । बादमे जहिआ विधवा ब्राह्मणी नहि भेटैत छलनि, स्वयं महेन्द्रनाथ चौधरीक माय भानस करैत छलीह । सधवाक छूअल नहि खाइत छलीह । आ तकरे सटल घरमे उसनाक पटल छलैक- ओहूमे एकटा ब्राह्मणिये भानस करैत छलीह- मुदा ओइमे सधवो रान्हि सकैत छल । दलानक दिक्कति रहि गेलनि । साबिक बंगलीमे अपन हिस्सा छोड़ि देने छलाह । पाहुनपरक-कुटुम्बकेँ सोझे अंगना कोना लबितथि ? दलान बनाबहे पड़लनि । कने हँटिकऽ आंगनक मुँहथरिसँ उतरबारि कात दू-तीन सय लग्गा बाद खूब नीक बासक जमीन छलनि । ओतहि अपन दलान बनौलनि । बाड़ी-फुलबाड़ी लगौलनि । ओहूमे दूटा कोठली देलखिन— दुनू कातमे । खूब ऊँच चार- सीटल खढ़सँ छारल । दुनू कोठली आ बीचक बरण्डा सीमेण्ट कयल । ओइ बरण्डामे पाँचो सय आदमी एक संग बैसि सकैत छल । नाचमे भरि गामक लोक ओतहि जुमैत छल । स्त्रिगण सभ लेल शामियाना ठाढ़ कऽ ओकरा तीन दिससँ कनातसँ घेरि आगूमे सिड़की लगाओल जाइत छलैक । महेन्द्रनाथ चौधरीक बाप महारुद्र चौधरी बड़ एकबाली आ रसिक छलाह । हुनके एकबालसँ सभ होइत छलनि— नाच-गान... शोभा सुन्नर ।

सुन्नरि-सुन्नरि चारिटा कुलीन कन्यासँ विवाहो कयने छलाह- सभ सोति-योग्यक बेटी । महारुद्र चौधरीक प्रपितामहकेँ जहिया जमींदारी भेटलनि, मैथिल समाजमे मोजर नहि दैनि ! छोटहा बुझनि सभ- कुलीन मैथिल ब्राह्मणक बटीकेँ पुतहु बना अनबाक जिद्द ठानि लेलनि । रसिकक संग-संग महारुद्र चौधरी असली रुद्रक अवतारो छलाह । सौंसे इलाका डरें थर-थर कँपैत छलनि । जकर बहु-बेटीपर नजरि गड़लनि— ओकरा उठा हवेली मंगबा लेबऽमे कनियो देरी नहि होइत छलनि ।

कुलीन ब्राह्मणकेँ उठा अनबामे मुदा बड़ कष्ट भेलनि महारुद्र चौधरीकेँ । हुनक बाप अपन सभ बेटीकेँ द्ररिद्र, बूढ़-बताह-बौन-कैल जेहन भेटलनि तेहने कुलीन ब्राह्मणकेँ बिआहि देलथिन । हुनको चारि विवाह रहनि, चारू विवाह मिला सतरहटा बेटी रहनि । सभकेँ बसौलनि अपने गाममे, घराड़ी देलथिन । बिक्रीमे पूर्ण मूल्य लेबऽक सिद्धान्ती भलमानुस सभ अपन मूल्य पाबि सन्तति ओही गाममे छोड़ि बिदा भेलाह । सतरह बहिनमे चारि भाइ छलाह महारुद्र चौधरी । हुनको अपन बेटी देबामे भलमानुसवर्ग बड़ मोल-तोल कयलकनि । भलमानुसक बेटीक मूल्य ओहि समय बेसी रहैक । राजा-जमीन्दारक घर बेटी देबामे खूब मूल्य भेटैत छलैक । महारुद्र चौधरीक प्रपितामहे तैयार छलथिन मूल्य देबा लेल । मुदा महारुद्र चौधरी जिद्दी, तिकड़मी आ क्रूर छलाह । अपन पैघत्वकेँ कोनो दिशामे कम नहि देखऽ चाहैत छलाह । जाति-गर्वयुक्त समाजक चारिटा कुलीन कन्याकेँ अपन स्त्री बनाकऽ अनलनि । पहिल विवाह बाप छोटे बाभनक बेटीसँ कऽ गेल छलथिन मुदा ओ स्त्री नहि रहलथिन । किछुए दिन बाद मरि गेलथिन । महारुद्र चौधरी तकर बाद चारिटा विवाह कयलनि... चारू सोति-योग्यक बेटी । सभसँ छोट छलथिन महेन्द्रनाथक माय...भास्करक बाबी । चारू स्त्रीसँ एक-एकटा बेटा आ तीन-तीनटा कन्या छलनि। सभ बेटीकेँ बिआहि सासुर पठौलनि । गाममे आर बसैबा जोगर जमीन नहि छलनि। हबेलीसँ सभकेँ मदति भेटि जाइत छलनि । चारू भाइ सचेष्ट भेला धरि एक्के आंगनमे रहलाह । तकर बाद बँटवारा भेलनि आ साबिक आंगनमे रहि गेलाह एकसर महेन्द्रनाथ चौधरी ।

आ साबिक उतबरिया कोठाक ओसारा आ कोठलीमे भास्करक बाबीक अगियासी लग सभ आँगनक धीया-पुताक बैसार होइत छलैक । ओइ ठाम लालटेनक बदला सदिखन एकटा डिबिया जरैत छलैक— माटिक बनल दीपघर पर राखल पैघ सन डिबिया । ओही डिबियाक इजोतमे बाबी खिस्सा कहैत छलैक । भास्कर मुग्ध भेल सुनय... आरो धीया-पुता सभ सुनैत छल । बाबीक रामायण एकटा लाल

कपड़ामे बान्हल लकड़ीक बनल तिनकोनमा फ्रेमपर सदिखन राखल रहैत छलनि— कौखन हुनकर बिछौनपर तँ कौखन हुनकर अगियासी लग । ओही स्टैण्डपर पोथी पसारिकऽ पढ़ब शुरू करैत छलीह बाबी । लगभग दस इंच ऊँच छलैक ओ लकड़ीक स्टैण्ड । जखन पढ़बाक इच्छा होइत छलैक, ओइ लाल कपड़ाकेँ खोलि पोथीक बीच राखल चश्माक टिनही खोल बाबी बहार कऽ लैत छलैक । गोल शीशावला चश्मा, लचपच कमानी-चममच करैत । कमानीकेँ तानिकऽ बाबी कानपर चढ़ा लैत छलैक आ कथा बाँचऽ लगैत छलैक—

मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी

आ बच्चा सभक भीड़ बढ़ले जाइत छलैक । बीच-बीचमे बाबी माने सेहो कहने जाइत छलैक । बाबीक गला खूब महीन आ कोमल रहैक । गयबा काल भाव-विमुग्ध भेलापर स्वर आर कोमल भऽ जाइत छलैक । रामायण पाठ किछु काल । तकर बाद खिस्सा सभक फरमाइश । खिस्सापर खिस्सा । बेशी धीया-पुता सभ खिस्सा सुनैत-सुनैत ओहीठाम बाबीक अगियासी लग पटियापर ओंघरा जाइत छल । ओकर आंगनसँ आबि ओकर माय-बहीन ओकरा सभकेँ उठाकऽ जाइत छलैक । कखनो नोकरबाक कोरामे बाबी स्वयम् पठबा दैत छलथिन । आ बैसकी टुटलाक बाद, अगियासीक आगि भुम्भुर भेलाक बाद अपन बिछौनपर आबि, ओढ़ना वा तुराइ तर दुबकल भास्कर असगरे खिस्सा सुनैत छल बाबीसँ । कठरी बाबाजी बला खिस्सा, ओ खिस्सा खतम होइत देरी भास्करक अन्तहीन जिज्ञासा शुरू भऽ जाइत छलैक—

—लोभ ककरा कहैत छैक ?

—चोर लोक किएक बनैत छै ?

—साधु-महात्मा ककरा कहैत छैक ?

—मनुखक देह काठक कोना भऽ सकैत छैक ?

आ उत्तर सुनैन-सुनैत भास्करक पपनी भारी भऽ जाइत छलैक आ ओकर माथक मोलायम केशकेँ सोहरबैत बाबी अपनो सूति रहैत छलीह ।

भोरेसँ भास्करक प्रश्न चालू भऽ गेलैक ।

ओकर माय भनसा-भड़ारक झंझटिसँ आइ-काल्हि निश्चिन्त छलैक । प्रेमा भानस-भात शुरू कऽ देने छलैक ।

विधवा ब्राह्मणी छथि प्रेमा । नैहरमे अपन विधवा माय लग अपन एकमात्र पुत्रक संग रहैत छथि । विधवा भेलाक बाद भैंसुर-देओर मिलिकऽ सभटा हिस्सा हड़पि लेलकै आ गामसँ बैला देलकै । प्रेमाक अयलासँ भास्करक मायकेँ बड़ सुविधा भऽ गेलैक । पहिने एकटा भनसामे सधवा ब्राह्मणी भानस करैत छलीह आ दोसरमे अरबाक पटल स्वयम् भास्करक बाबी सम्हारैत छलीह । गौरी चौधराइन विधवा छलीह आ हुनकर चौका फराक छलनि । स्वयम् रन्हैत छलीह मुदा टहलूमे ठाढ़ि रहैत छलथिन पुतहु-महेन्द्रक पत्नी आशा । भास्करक माय आशा चौधराइन । मात्र एक गोटेक भानस लेल सभटा वस्तुक पूरा ब्योंत करऽ पड़ैत छलनि । प्रेमाक आबि गेलासँ सधवा ब्राह्मणीक काज नहि रहलनि । सभक काज एक्के भनसामे भऽ जाइत छलनि । माछ-माउस जहिआ रन्हबाक भेलनि, तहिये दोसर भनसाघरक उपयोग होइत छलैक आ भास्करक माय अपने रान्हि लैत छलीह । भनसाघरक सभदिना झंझटि प्रेमाक रहलासँ कमल रहैत छलनि ।

भास्करक चलते मुदा झंझटि बढ़ि गेल छलनि । बाबीक औछौनसँ उठि ओ सोझे माय लग अबैत छल । बाबी अन्हरोखे उठि प्रातःस्नानमे चल गेल रहैत छलैक । माय भास्करकेँ कुरूड़-आचमनि करा सभ दिन एक गिलास दूध दैत छलथिन । ओइ दिन गिलास हाथमे पकड़ने एकटा प्रश्न कऽ देलकनि भास्कर— माय, एकटा बात कह । तोँ हमरा सभ दिन पीबऽ लेल दूध दैत छैं, चलितराक बेटा के कहाँ दैत छहीक ?

ओकर प्रश्नपर अकचकाइत माय बजलैक- "मर, ओकरा किएक देबैक हम दूध ? ओ कोनो हमर बेटा अछि ! पिबऽ जल्दीसँ दूध ।"

भास्कर ओहिना गिलास पकड़ने ठाढ़ रहल । किछु कालक बाद बाजल- जहिना हम तोहर बेटा छियौ, तहिना ठकना चलितराक बेटा छैक । महीस चलितरे चरबैत अछि, ओकरा घास-भूसा वैह दैत छैक, दूध वैह दुहैत अछि, तऽ ओकर बेटा किएक नहि पितैक दूध ?

माय गम्भीर होइत कहलकै— अपन-अपन भाग्य, पछिला जन्मक भोग । तोरा अरजल छऽ, ओकरा नहि छैक ।

पछिला जन्मक अरजल आ भाग्यक बात किछु नहि बुझलकै भास्कर । खाली जिदपर अड़ि गेलैक— "ओकरो पिआ दहीक ने दूध सभ दिन ! हमरे बतारी तऽ अछि ।"

माय एकदम बिगड़ि उठलैक- "दुर जो, हम किएक पिएबैक ओकरा ? हमरा अपना धिया-पुता नहि अछि कोनो ! जल्दी पीबि लैह दूध ।"

मायक तामसपर बिना कोना ध्यान देने भास्कर कहलकै- "खाली अपने धिया-पुताकेँ दूध पिअबैत छैक लोक ? सभक धीया-पूताकेँ नहि पिआ सकैत छैक ?"

माय अवाक् । कोनो उत्तर नहि फुरलनि । गिलास जबर्दस्ती ओकरा मुँहमे सटा देलथिन । दूध बेमनसँ पीबि गेल भास्कर । माय आँचरसँ ओकर मुँह पोछैत कहलथिन- 'जा नहा-सुना लैह । गुरुजी अबिते हेथुन । नहा-सुनाकऽ बस्ता लऽ बैसऽ दलानपर, स्कूलो जयबाक छऽ ।' माय ओकरा टरका देलकै तकर भास्करकेँ दुख भेलैक । चुपचाप ओतऽसँ सहटि गेल । नहा-सोनाकऽ दरबज्जापर गुरुजीक प्रतीक्षामे बैसि गेलि । गुरुजी ओकरा एना प्रतीक्षामे बैसल देखि चौंकि गेलथिन— "की बात छै आइ ? पहिनेसँ मौस्तैज छऽ ।"

—"छै एकटा बात गुरुजी ! अहाँसँ किछु पुछबाक अछि !"

भास्करक गम्भीर स्वरपर उत्सुकतासँ मुसकिआइत गुरुजी कहलथिन— पुछह ।

—"भाग्य ककरा कहैत छैक गुरुजी ?"

गुरुजीक मुसकी हँसीमे बदलि गेलनि- "इएह पुछबा लेल भोरेसँ बैसल छलह ? भाग्य कहै छै लिखलाहाकेँ । सभक कपारमे लिखल छैक फराक-फराक । ककरो देखहक जे कतेक धनिक अछि आ क्यो खयबो लेल बेलल्ल—

भास्कर बीचहिमे बाजल- "कहाँ ककरो कपारमे लिखल देखैत छियैक किछु ? कपार तऽ सभक एके रंग देखैत छिऐक । फेर एना कोना भऽ जाइत छैक ? किएक हम दूध पीबैत छी, आ चलित्तराक बेटा माड़—"

गुरुजीक हँसी बिला गेलनि । विह्वल होइत कहलथिन- "नै पुछऽ ई सवाल तोँ । बड़ बच्चा छऽ अखन । युवावस्थामे एकटा राजकुमारकेँ इएह सभ प्रश्न उठल रहनि मोनमे । आरो-आरो पैघ प्रश्न— मृत्यु, वृद्धावस्था । उत्तर नहि

भेटलनि । उत्तर तकबाक लेल अपन सुन्दर पत्नी आ अबोध बेटाकेँ सूतल छोड़ि घरसँ बाहर भऽ गेलाह, कतेको ठाम बौअयलाह । सभ किछु छोड़ि देलनि, तखन ज्ञान भेटलनि ।''

''की ज्ञान भेटलनि गुरुजी ?'' भास्कर उत्सुकतासँ पुछलकनि ।

''अखन से नै बुझबहक तोँ । बड़ बच्चा छऽ ।''

''मुदा गुरुजी ओ ज्ञान घरमे नहि भेटलनि तऽ कतऽ खसल भेटलनि ? सभकेँ छोड़ि देलाक बाद लोकके ओ खसल ज्ञान भेटि जाइत छैक ?''

गुरुजी निरुतर भऽ गेलथिन । चिन्तित भावे भास्करकेँ देखैत रहलथिन। चेहरापर जेना आँखि सटि गेलनि । अदुभुत रूप, जेहने रंग, तेहने गढ़नि । आकृतिपर एकटा निष्कलुष जिज्ञासा । गुरुजी देखते रहि गेलाह अपन बारह वर्षक शिष्यकेँ।

भास्कर टोकलकनि- ''की देखैत छी गुरुजी ! हमर प्रश्नक उत्तर नहि देलहुँ ?''

गुरुजी उठैत कहलथिन- ''अनेरो प्रश्न सभसँ मोन भारी नहि करी । जिनगी एकटा भारी परीक्षा छैक आ अइमे कठिनसँ कठिन प्रश्न सामने अबैत रहैत छैक । सभक उत्तर मनुष्य अपने तकैत अछि । जकर उत्तर नहि भेटैत छैक ओकरा ईश्वरक लीला मानि माथ झुका लैत अछि । जा, आब आइ आरो पढ़ाइ करब बेकार। तोहर मनमे बहुत रास प्रश्न भरल छऽ । सभटाकेँ बिसरि हल्लुक मोनसँ स्कूल जाह । अपन पाठपर ध्यान दैह ।''

गुरुजी चल गेलथिन मुदा ओकरा मोनमे प्रश्न सभ औनाइत रहलैक । कठरी बाबाजीक खिस्सा मोन पड़ैत रहलैक । निरपराध मारि खाइत शोणिते-शोणिताम भेल कठरी बाबाजीक आकृति आ पसायल माँड़ दिस तृषित नेत्रे तकैत चलित्तराक बेटा ठकना । कखनो आंगनक कोनटा लग ठाढ़, कौखन बथानपर बैसल, कारी भुजुंग, नंग-धड़ंग । डाँड़मे एकटा फाटल चेफड़ी लागल छोटे सन पैण्ट । कारी चेहरापर बड़ीटा आँखि आ ओइ बड़ीटा आँखिमे झलकैत बड़ीटा भूख ।

भूख ओकरा लागि गेल छलैक । भनसाघर आबि प्रेमाकेँ कहलकै- खाय लेल दिअऽ प्रेमा पीसीऽ ! स्कूल जायब ।

प्रेमा झट थारी परसऽ लगलैक- 'लिअऽ बौआ ! भऽ गेल अछि ।''

प्रेमा पीसीकेँ देखिकऽ फेर कतेको सबाल ओकर मोनमे घुरिआय लगैत

छैक । प्रेमा पीसी एतेक सुन्दर किएक छैक ? केहन गोरि आ केहन झलकैत चेहरा ! मैल पानि-माटि लागल बिन-पढ़िया नूओ मे केहन नीक लगै छै प्रेमा पीसी ! मायोसँ सुन्नर । सदिखन छपुआ आ रंगल नूआ पहिरियोकऽ माय प्रेमा पीसी सन कहाँ लगैत छैक ? भास्कर हुनका दखिते रहि गेल । कौर उठबे नहि करैक । प्रेमा लग आबि गेलै- ''की भेल बौआ, खाइ नहि छी ?''

-''आइ भूख नहि अछि ।'' भास्कर उठऽ लागल ।

प्रेमा पकड़िकऽ बैसा देलकै- ''हे देखू, अखने कहै छलहुँ बड़ भूख लागल अछि आ अखने उठल जाइ छी । लिअऽ, हम खुआ दैत छी ।'' प्रेमा अपने हाथे खुआबऽ लगलै । भास्करकेँ नीक लगलै मुदा ऊपरसँ ना-नू करैत बाजल- ''हम कोनो बच्चा छी आब ! छठामे पढ़ै छी, लोक देखत तऽ हसँबो करत ।''

प्रेमा ओकरा मुँहमे कौर दैत बजलैक- ''हँसत किएक बौआ ? माय लेल तँ धीया-पुता सदिखन बच्चे रहैत छैक । हमरो मनोरथ तऽ पूरऽ दिअऽ कनी !

मुँहक कौर चिबा भास्कर बाजल- ''मुदा ब्रह्माकेँ कहाँ कहिओ खुअबैत छियैक अपने हाथे ? अहाँक बेटा तऽ ओ अछि ।''

प्रेमाक चमकैत आकृति मलिन भऽ गेलैक । मुदा ओहिना कौर पर कौर दैत रहलैक भास्करक मुँहमे । कहलकै- ''अहूँ अपने बेटा छी बौआ ! अपन-अपन नसीब छैक । जा धरि बाप जीबैत रहैक, सभ दिन कोरेमे बैसाकऽ खुएलकै । आब हम अभागलि कमेबै-खटेबै, की कोरामे खुएबै ओकरा ?''

प्रेमाक बेटा ओकरे बतारी छलैक । ओकरे संग स्कूल जाइ छलैक मुदा सभदिन भुखले । ओ प्रेमाकेँ टोकै— ''हमरे संग ब्रह्मोकेँ खुआ दिऔ ने प्रेमा पीसी !''

प्रेमा टारि दैक- ''अहाँ खाउ ने बौआ ! ओ खयने छैक । फेर बेरियामे खा लेतैक हमरा संगे ।''

ब्रह्माक सुखायल मुँह देखिकऽ ओ बूझि जाइत छलैक जे भोरेसँ भूखल छैक । दुपहरियामे प्रेमा कहियो हवेलीमे नहि खाइत छलीह । अपन थारी अपन आँगन लऽ जाइत छलीह । ओहीमे अपन माय आ अपन बेटा दुनूकेँ खुअबैत छलीह- भास्करकेँ बूझल छलैक ।

आइयो स्कूल जयबा लेल बस्ता लेने ब्रह्मा ठाढ़ छलैक आ प्रेमा मुँहमे कौर देने जा रहल छलैक भास्करकेँ ।

बेशी खा नहि भेलैक । प्रेमा पीसीक हाथ रोकैत कहलकै- "आब बस्स ।"

मुँह-हाथ धोकऽ बस्ता लऽ ब्रह्माक संग घरसँ बहरायले छल कि दरबज्जापर क्यो किलोल करऽ लगलैक । दौड़िकऽ बाहर आयल । ठकनाकेँ भैया गाछमे उनटा लटकाकऽ बान्हि देने छलथिन । देहपर घोड़नक छत्ता राखल छलैक आ उपरसँ ओकर खाली देहपर भैयाक बेंत बरसि रहल छलैक । छौँड़ाक किलोलसँ आसमान फाटि रहल छलैक । भास्कर दौड़िकऽ ठकनाक देहपर झूकि गेल । भैया तामसे गरजलाह- "तोँ हँटि जो भास्कर ! आइ हम एकर जान लऽ लेबैक ।"

"नै भैया, एना नहि मारियौक । मरि जेतैक ।" भास्कर नेहोरा करऽ लगलनि ।

भैया ओकरा ठेलिकऽ हँटबैत आ ठकनाक देहपर सड़ाक-सड़ाक बेंत मारैत गरजलाह- "पहिने एकर कसूर तऽ सुन । सरबा नम्बरी चोर अछि । तोहर भौजी कलपर नहाइत छलीह, घड़ी खोलिकऽ रखलनि से अयबाकाल उठायब बिसरि गेलनि । ई गेल तकर बाद आ घड़ीकेँ तेना निपत्ता कयलक जे मारिकऽ हमही थाकि गेल छी, ई नहि गछैत अछि । सरबा सभ दिन भोरेसँ आंगनमे हुलुक-बुलुक करैत रहैत अछि ।"

चलित्तरा लपकिकऽ पैर छानि लेलकनि भैयाक- "फेर आंगनमे पैर नहि देत छोटका मालिक ! दूगो बसिया रोटी आ कने माँड़ लेल अगोरने रहै हय अंगना। ई अहाँक चीज नहि उठओत छोटका मालिक ! एना मालजाल जकाँ नहि मारियौ . ...मरि जायत हमर नेना ।"

भैया ओकरो चारि बेंत लगा देलथिन- "भाभट नहि कर । खाली भगल कयने छौक । कोनो चोट लगै छैक एकरा ? आँखिमे नोर छैक ? सार, सेन्हा चोर अछि ।" भास्कर भैयाक हाथक छड़ी लूझि लेलकनि । तावत गुजरी खबासिनी अंगनासँ दौड़लि अयलैक- "बौआसिनक घड़ी भेटि गेलनि । कल परसँ उठाकऽ आलमारीमे राखि देने छलथिन । बिसरि गेल छलनि ।"

भैया कने अप्रतिभ भेलाह । फेर बलधकेल हँसैत बजलाह-"ई स्त्रिगणो सभक लीला अपरम्पार होइ छै । अखने अंगनामे मुँह फुलौने छली जे हेरा गेल । लगले भेटियो गेलनि । मुदा ई ठकना सार अछि अबस्से सेन्हा चोर । खबरदार, जौँ फेर आंगनमे अयलैं... ।

तावत भास्कर ठकनाक बन्हन खोलि देने छलैक । लगभग बेहोश सन ठकनाकेँ कोरामे उठौने चलित्तरा बथान दिस चल गेल । दरबज्जापर थहाथही लोक जमा भऽ गेल छलैक । मुदा जेना किछु भेले नहि होइ–अति साधारण बात । सभ अपन-अपन घर बिदा भेल । भैयो अंगना चल गेलाह । खाली भास्कर सुन्न भेल ठाढ़ रहय जेना ओकरे उन्टा लटका कऽ घोड़नक छत्ता देह पर छोड़ि कऽ बेंत मारने होइ क्यो । ओ बड़ी काल धरि ओहिना ठाढ़ रहल ।

ब्रह्मा टोकलकै– स्कूल नहि चलब ?

भास्कर ओकरा विदा करैत कहलकै–"तोँ जो आइ । हमर मोन ठीक नहि अछि ।"

ओ बथान दिस गेल । पुआरपर गमछा बिछा कऽ पाड़ने छलैक ठकनाकेँ । आँखि बन्न छलैक मुदा हिचकीसँ अखनो सौँसे देह सिहरि रहल छलैक । चलित्तरा लगमे कातर सन बैसल छल ।

लग बैसि कऽ भास्कर पुछलकै–"कोनो दवाइ-तवाइ देबहिक ?" चलित्तरा ओहिना कातर भावसँ तकैत रहलैक ।

भास्कर दौड़ल आंगन गेल । मायकेँ कहलकै–"कोनो दवाइ दे माय ! ठकना बेहोश पड़ल छैक, सौँसे देह फूटल छैक ।"

मायक बदला कोठलीसँ बाबूजीक स्वर अयलैक–"अहाँ एखन धरि स्कूल नहि गेलहुँ भास्कर ?"

–"बस्स, जाइ छी बाबूजी"– बाबूजीक अप्रत्याशित उपस्थितिसँ सहमल बाजल ।

–"जाइ छी नहि, जाउ । स्कूल हरदम समयपर जयबाक चाही ।"

भास्कर स्कूल दिस बिदा भेल । साँझधरि स्कूलेमे रहल मुदा सदिखन तहिना छटपटाइत रहल जेना क्यो ओकरे गाछसँ उनटा टांगि देने होइ आ देहपर घोड़नक छत्ता राखि बेँतसँ पिटने जा रहल होइ ।

भास्करकेँ किछु बजबाक, विरोध करबाक साहसे नहि भेलैक । ओकरा पढ़बा लेल शहर पठा देल गेलैक ।

बाबूजी एकाएक ओइ दिन घोषणा कऽ देलथिन— गामक स्कूलक पढ़ाइ ठीक नहि छैक । आब तोँ दरभंगे मे पढ़बह । कालिह चलिहऽ हमरा संग दरभंगा नाम लिखैबाक हेतु ।''

सत्र शुरू भऽ गेल छलैक । जिला स्कूल मे सभ सीट भरि गेल रहैक । दोसर एकटा नामी स्कूल छलैक । गामक स्कूल सँ कक्षा मे प्रथम अयबाक प्रमाणपत्र अनने छल । तैयो ओइ स्कूलक हेडमास्टर स्वयम् परीक्षा लेलथिन आ नाम लिखा गेलैक । होस्टलमे सेहो सीट भेटि गेलैक ।

सीट भेटलैक सैह टा । तीन सीटवला कोठलीमे एकटा चौकी । होस्टलमे बारह टा कोठली छलैक, सभमे तीन-तीन टा चौकी । खाली दूटा कोठली सिंगल सीटवला रहैक । स्कूलक पछुआर मे रहैक होस्टल । विद्यालय भवन बड़ सुन्नर रहैक । हल्लुक लाल रंगक पक्का भवन अंग्रेजीक 'इ' अक्षरक आकार मे बनल । पैघ आ सुरुचिपूर्ण । मुदा होस्टल रहैक ओतबे खराब । खपरैल घर । देबाल भखरल । कोनो कोठलीमे पंखा नहि । दस बजे रातुक बाद बिजली सेहो बन्द भऽ जाइ ।

ओइ होस्टलमे बड़ डर होइ छलैक भास्करकेँ । बेर-बेर गाम मोन पड़ैत छलैक । माय-भौजी आ प्रेमा पीसी मोन पड़ैत छलैक आ भरि-भरि राति जगले रहि जाइत छल । गर्मीसँ कछमछ करैत, अज्ञात आशंकासँ भयभीत ।

कोठलीमे दुनू दसमा क्लासक विद्यार्थी रहैक । बेस पैघ-पैघ छौंड़ा । ओकरा सभक संग रहब भास्करकेँ कहियो नीक नहि लगैक । जहिया सामान लऽ कोठलीमे आयल छल, तहिए पड़ा जयबाक इच्छा भेल छलैक । मुदा बाबूजी मोस्तैद छलथिन । नाम लिखा, होस्टलमे राखि, गाम घुरि गेलथिन । भास्करकेँ किछु कहबाक साहसे नहि भेलैक ।

दिनभरि स्कूलमे नीक जकाँ बीति जाइत छलैक । पढ़ाइ बढ़ियाँ होइत छलैक । नव-नव संगी भेटलैक । क्लासटीचर सेहो मानऽ लगलैक ।

होस्टलमे अबैत देरी मोन कतहु पड़ा जयबा लेल औना उठैक । ओ छोटछीन गुमसल कोठली आ कोठलीमे सटल-सटल चौकी । ओइ चौकी सभपर दूटा अनचिन्हार आ घिनौन सन छौंड़ा सभ । एकटा दिनभरि अपन मुँहमे पाउडर-क्रीम

मलैत रहैक आ दोसर कच्छा पहिरि भोर-साँझ डण्ड बैसक करैक । भास्कर आँखि बन्द कयने पड़ल रहय ।

ओहू राति आँखि बन्द कयने पड़ल छल । कोठलीमे अन्हार छलैक– गुमसल अन्हार । कछमछ करैत घण्टो बीति गेलैक मुदा आँखिमे कनियो निन्न नहि, दोसर चौकीपरसँ गोपाल टोकलकै- ''अन्हारमे एकसर डर लगैत हेतौक भास्कर, हमर चौकीपर आबि जो ।''

भास्कर कोनो उत्तर नहि देलकै । अन्हारमे ससरिकऽ गोपाल ओकर चौकीपर आबि गेलैक । ओकर सौंसे देहपर हथोरिया देबऽ लगलैक । भास्कर ओकरा ठेलिकऽ हँटबैत जोरसँ कहलकै- ''अपन बिछौनपर जाउ अहाँ, नै तऽ भोरे सुपरिन्टेन्डेण्ट साहबकेँ कहि देबनि ।''

गोपाल अन्हारेमे ससरि गेलैक । किम्हरो कोनो शब्द नहि । भास्करक आँखिसँ निन्न पड़ा गेलैक । नहि जानि कतेक कालक बाद फेर क्यो ससरिकऽ ओकर चौकीपर आबि गेलैक । ओकरा अपन देहसँ सटबैत फुसफुसाकऽ बजलैक ''गोपालकेँ मार गोली । हमरा संग दोस्ती कऽ ले, खुश कऽ देबौ ।''

चुन्नूक देहपर खाली एकटा कछिया रहैक । ओकरा बिछौनसँ ठेलैत उठिकऽ कोठलीसँ बाहर आबि गेल । इच्छा भेलैक जे तखने हेडमास्टर साहबक डेरा जा सभटा कहि दैनि । किछु विचारिकऽ रुकि गेल । भोरे पहिने सुपरिन्टेण्डेंट साहबकेँ कहतनि जे कोठली बदलि दिअऽ ।

मुदा की-की बदलऽ लेल कहतनि ? मेसक हाल सेहो बत्तर छलैक । दिनमे आँकड़बला उसना चाउरक भात आ निराल पानि दालि । बिन तेल-मसल्लाक खाली मिर्चाइक झोर देल तरकारी । कण्ठ तर घोंटबामे सभ दशा भऽ जाइ छलैक भास्करक । राति कऽ रोटीक नामपर टाँट अकड़ल आँटाक लोइया आ कड़ू झोर । जलखइमे जे-किछु जकरा संग हो । भास्करकेँ ई होस्टल कनियो पसिन्द नहि छलैक । अपन रूम-मेट पसिन्द नहि छलैक ।

भोरे कोठली बदलबाक अनुरोध करऽ होस्टल सुपरिन्टेण्टेडक कोठलीमे पहुँचल तऽ अजीबे दृश्य देखलक । गोपाल हुनकर चौकीपर पसरल छलनि एकदम अधिकारपूर्वक । लगमे सुपरिन्टेण्डेट साहब बैसल छलखिन । भास्करकेँ देखि हड़बड़ाकऽ ठाढ़ भऽ गेलथिन- ''बिना आज्ञाक कोठलीमे कोना अयलह ?''

भास्कर माफी मँगैत कहलकनि- सौरी सर, गलती भऽ गेल । हमर एकटा

प्रार्थना अछि । हमर कोठली बदलि दिअऽ । कोनो सिंगल सीटवला कोठली दिआ दिअऽ ।

–"वाह रे प्रार्थना !" सुपरिन्टेण्डेन्ट साहब बिगड़िकऽ कहलथिन– तोरा बूझल नहि छऽ जे ऐ होस्टलमे कोनो सिंगल सीटलबला कोठली नहि छैक । दूटा छैक से छठा क्लासबलाकेँ भेटब मस्किल । ऊपर क्लासबलाकेँ देल जाइत छैक ।

–"मुदा सर...' भास्कर कहऽ चाहलकनि किछु । ओ बीचेमे टोकि देलथिन– "तोहर बड़ शिकायत भेटि रहल अछि हमरा । तोहर बापकेँ लिखऽ पड़त । होस्टलकेँ अपन कायदा-कानून छैक । गोपाल कहैत छल तोँ बड़ी-बड़ी राति धरि किदन-किदन सभ अण्ट-शण्ट बड़बड़ाइत रहैत छऽ, बत्ती जरा-जरा अपन दूनू रूममेटकेँ तंग करैत छहक । एतनी टामे तोहर ई हाल छऽ तऽ पैघ भेलापर की हेतऽ?

"हमरापर मिथ्या आरोप नहि लगाउ सर !" भास्कर दृढ़तासँ बाजल– "हम कोनो नियमक उल्लंघन नहि करैत छी ।"

सुपरिन्टेण्डेंट साहब क्रोधे गरजऽ लगलखिन– "एतनी टा छौंड़ाक ई मजाल ? अखने हम तोरा होस्टलसँ बाहर करैत छी । तोरा रहलासँ होस्टलक सभ विद्यार्थी खराब भऽ जायत ।"

भास्कर अवाक् रहि गेल । गोपाल ओहिना साधिकार सुपरिन्टेण्डेंटक चौकीपर पसरल छल । चेहरापर एकटा कुत्सित हँसी । भास्कर ओइ हँसीसँ दूर भागि गेल । बोरिया-बिस्तर लऽ गाम आबि गेल ।

बाबूजी एकदम रुष्ट भऽ गेलथिन– "गाममे अकच्छ भऽ तोरा शहरक स्कूलमे देलिअऽ । मासो दिन नहि टिकि सकलह । ओहन बढ़ियाँ स्कूल छैक..."

भास्कर बाबूजीकेँ मनबैत कहलकनि– "स्कूल ठीके नीक छलै बाबूजी, मुदा होस्टल बड़ खराब ।"

बाबूजी ओकरा बढ़ियाँ होस्टलवला स्कूलमे राखि देलथिन पटनामे । खूब बढ़ियाँ स्कूल, खूब बढ़ियाँ होस्टल । गंगाक कातमे रहैक स्कूल आ होस्टल । खूब हवादार कोठली, खूब स्वच्छ वातावरण । व्यवस्था एकदम उच्च कोटिक । स्मार्ट आ साफ सुथरा संगी-साथीसभ– हँसमुख आ तेज ।

भास्करक मोन तैयो नहि लगैक । बेशीकाल उदासे रहय । गाम आरो दूर भऽ गेलैक । मोन लगाकऽ पढ़य, खूब बढ़ियाँ नम्बरो अबैक । शिक्षकसभ खूब

मानैक, मुदा भास्करक मोन रहि-रहिकऽ उदास भऽ जाइक । कौखन एकसरमे माथमे बहुत रास प्रश्न औना उठैक आ भास्कर विह्वल भऽ उठय ।

फादर मर्फी ओकरा सभसँ बेशी मानथिन । हुनकासँ पूछि-पूछिकऽ अपन जिज्ञासा शान्त करय भास्कर । मुदा ओकर जिज्ञासाक अन्त नहि छलैक । उदासीक अन्त नहि छलैक । कौखन अनेरो उदास बैसल रहि जाय– घण्टो ।

फादर मर्फी एक दिन पूछि बैसलैक– "व्हाट्स रौंग विद यू माइ चाइल्ड !"

भास्कर हँसिकऽ कहलकै– "किछु ने फादर ! गाम मोन पड़ि जाइत अछि । गामक लोक मोन पड़ि जाइत अछि । एकटा बात पूछू फादर ?"

"येस माइ चाइल्ड !"

"ईसाकेँ एना सलीबपर के ठोकि देने छनि फादर ? किएक ठोकि देने छनि ?

फादर गम्भीर भऽ उठलथिन– "वी हैव डन इट माइ चाइल्ड ! वी हैव आलवेज हैंग्ड दोज हू ट्राइड टू टेल अस दि ट्रूथ...वी हैब आलवेज क्रूसीफाइड आवर जीसस ।"

"ह्वाइ फादर...? ह्वाइ..."

ह्वाइ ? किएक ? भास्करक सभटा जिज्ञासा अही ठाम आबिकऽ ठमकि जाइत छैक । एकर उत्तर ओकरा कतहु नहि भेटैत छैक, क्यो नहि दैत छैक । एक दिन निरपराध ठकनाकेँ भैया गाछसँ उनटा लटकाकऽ मारने छलथिन । भास्कर बेहोश ठकना लेल दवाइ ताकऽ चारू कात दौड़ल छल, मुदा बाबूजी ओकरा स्कूल पठा देने छलथिन । स्कूलसँ घुरलापर साँझखन बाबीक सङ्ग अगियासी लग बैसल ओकर मोन एकदम उदास रहैक । बाबी बेर-बेर टोकलकै, सङ्गी-साथी सभ सेहो टोक-चाल कयलकै मुदा ओकर मुँह लटकले रहलैक । बाबी बौंसैत कहलकै– "एहन छोट-छोट बातपर एना मोन उदास नहि करी । एना तऽ होइते रहैत छैक ।"

भास्कर बाबीक बातपर आर मुँह फुलबैत बाजल— "एकरा तोँ छोट बात कहैत छहीक बाबी ? निरपराध ठकनाकेँ मारैत-मारैत बेहोश कऽ देलखिन भैया आ तोँ एकरा छोट बात कहैत छहीक ?"

"बड़ छोट बात छैक बौआ ! एना तँ होइते रहैत छैक । तोरा देखले की छौक ? अही हवेलीमे कखन खड़ाम आ जुत्तासँ ककर कपार फोड़ि देल जयतैक आ कखन ककर बहु-बेटीकेँ के उठा अनतैक, तकर हिसाब नहि छलैक ?"

"बहु-बेटीकेँ किएक उठा अनतैक ?"

भास्करक चिन्तित प्रश्न छलैक । बाबी हँसऽ लगलैक- "तोँ अखन नहि बुझबहिक बाउ ! बहु-बेटीक इज्जतिक लतखुर्दनि किएक होइ छैक, तोँ नहि बुझबहिक। मुदा हमसभ अपना आँखिसँ देखने छियैक । चौधरी खानदानक ई पुरान होइत हवेली बहुत-किछु देखने छैक बौआ ! ई सब तोँ नहि बुझबहिक । तोँ हवेलीमे जन्म लैयोकऽ एकर लोक सन नहि छैं, तोँ तऽ जेना कोनो दोसरे दुनियाँक लोक छैं ।"

भास्करकेँ जिद लागि गेलैक- "किएक नै बुझबैक बाबी ? आ नहि बुझबै तऽ जाय दहिक । मुदा निरपराध ठकना किएक मारि खयतैक ? ओकर फूटल देहपर दबाइ किएक नै लगतैक ?"

बाबी कहलकै- ओ गरीब अछि तेँ । गरीबकेँ दण्ड देबा लेल अपराधक विचार नहि होइत छैक । ओकर गरीब भेनाइ पर्याप्त कारण छैक । ई अमीर लोकक शौक छैक । कखनो ककरो निरपराधो दण्ड दऽ देब ओकरा क्लेश नहि दैत छैक, ओकरा तऽ आनन्द भेटैत छैक । तोँ किएक मोनकेँ दुखी कयने छैं । ठकनाकेँ टाका देबहिक, तऽ हम देबौ । दऽ अबियहिक भोरे ।

भोरे दौड़ल गेल खतबेटोली । ठकनाक माय अपन खोपड़ीक बाहरमे बैसल छलैक- भोरका रौदमे । ठकना सेहो उघारे देहे बैसल छल । बेस प्रसन्न मुद्रामे । ओकरा मुँहपर कोनो तकलीफक रेख नहि छलैक ।

भस्कर हाथक दसटकही ठकना-मायक हाथमे दैत कहलकै- "लऽ ले, एहिसँ ठकनाक दवाइ करा दियहिक ?" हाथक दसटकही लैत ठकनाक माय कहऽ लगलैक- "बौआ हमसब अहीँक परजा छी । अहीँ सब पालै-पोसै छी । छोटका मालिकक सेहो कोनो दोष नहि हनि । हुनको तँ धोखे भेल रहैन तेँ ने ठकनाकेँ मारलखिन । बाउ, हमसब गरीबनी अहीँक रोटीक टकड़ीपर ने जीबैत छी ।"

भास्कर ई सब सुनि बड़ सोचमे पड़ि गेल । जकरा काल्हिये भैया मारलथिन तकर ओहि परिवारपर एतेक श्रद्धाक संग बाजब सुनि भास्करक मोनमे कोनो अर्थ नहि लगलै । ठकनाक माय नहि जानि कीं सभ कहि रहल छलैक । कमाइ-खटाइ छैक चलितरा, बड्ड जकाँ दिनभरि खटैत रहैत छैक, तखन अनकर देल कोना खाइ छैक ठकनाक माय ? एक बेर कनी ठेस लागल रहैक ओकर औँठामे तऽ माय सात दिन तक पट्टी बन्हने रहैक आ मलहम लगौने रहैक । सौँसे देह थूरल गेलैक काल्हिए तऽ आइए सभटा ठीक कोना भऽ गेलैक ? जे भैया मारलखिन तकरे गुण कोना गबै छैक ठकनाक माय ? भास्कर गुनधुन करैत चुपचाप घुरि आयल ।

बाबूजीकेँ सभ खबरि भऽ गेलनि । भास्करकेँ बजा डँटलथिन- "अखनेसँ खतबेटोली-दुसधटोली बौआय लगलऽ तोँ । छोटका लोक सभक संगति ! तोहर गाममे रहब आब अनिष्टकर हैत । आब शहरेमे पढ़बह तोँ ।"

भास्कर चुप्पे रहल । दरभंगाक स्कूलक होस्टलमे दऽ देलथिन तैयो चुप्पे रहल । होस्टल छोड़ि गाम आयल आ बाबूजी कतेक बात कहलथिन, तैओ ओ चुप्पे रहल । फेर पटना दऽ अयलथिन तैयो ओ चुप्पे रहल ।

ओकर मोनमे मुदा सदिखन प्रश्न उठैत रहलैक । होस्टलक कोठलीक एकान्तमे... उमकल गंगाक कछेरमे...गांधी मैदानक घासपर...सभठाम ओ प्रश्न सभ ओकर मोनमे गोंगिआइत रहलैक । फादर मर्फी कहलकै- "वी हैव आलवेज क्रूसीफाइड आवर जीसस..." । आ भास्करक मोनमे गोंगिआइत रहलैक— व्हाइ ?

किएक ?

ओकर मोछक पम्ही करिआकऽ घनगर भऽ गेलैक । आँखिमे, कारी डिम्हावाला पैघ-पैघ आँखिमे लाल-लाल धारी झलकऽ लगलैक । चालिमे एकटा मस्ती आबि गेलैक आ हाथ-पयरमे गस्सल चिकनाहटि । लम्बाइ खिचाकऽ पाँच फीट एगारह इंच धरि पहुँचि गेलैक आ गोर छातीपर कारी-कारी केश बहराय लगलैक ।

छुट्टीमे गाम आयल तऽ माय मुग्ध देखिते रहि गेलैक आ बाबी अपन करेजसँ सटा कहलकै- "तोँ तऽ जवान भऽ गेलैं रे ! आब एकटा कनियाँ लऽ आ अपना लेल....

कनियाँ ओ जल्दीये लऽ अनलक । ओ की अनलक, सभ मिलिकऽ ओकरा लेल एकटा कनियाँ लऽ अनलकै ।

मैट्रिक जहिना पास कयलक, भौजी पछोड़ धऽ लेलथिन- अपन लाल-गुलाब सन देओर लेल एकटा जूहीक कली ताकिकऽ रखने छी हम...बाजू, आनि दिअऽ अहाँ लेल ?

भास्कर कने हँसी करैत कहलकै- "कोन फुलबारीमे अछि ओ जूहीक कली ? पहिने कने देखाउ ने !"

भौजी झट अपन चेहरा आगू बढ़ा आँखि मूनिकऽ कहथिन- "हे लिअऽ, देखि लिअऽ । पसिन्द अछि ने ?"

भास्कर लजाइत कहलकै- माने ?

भौजी हँसिकऽ कहलथिन- "माने एकदम साफ अछि ! हमरे छोट बहिन अछि । बाबू कैक बेर लिखि चुकल छथि । बाजू पसिन्द अछि ने ? अहाँ तऽ ओकरा देखने छिऐक ।"

भास्कर आर बेशी लजा गेल । भौजी ओकरा खूब पसिन्द छलैक— जतबे सुन्दरि, ततबे हँसमुख ।

नहि जानि इम्हर की भऽ गेल छनि ? हरदम गुमसुम आ उदास रहैत छथिन । हुनकर बहिनक चर्चासँ भास्करकेँ गुदगुदी होबऽ लगलैक मोने-मोन ।

ऊपरसँ कहलकै- "बहिन बड़ फालतू भेल छथि भोजी...एना बँटने फिरैत छी ?"

भौजीपर ओइ हँसीक कोनो असरि नहि भेलैक । मुग्ध भावे कहलथिन- "ई हमर मोनक अभिलाषा अछि बौआ ! खूब जोड़ी हैत अहाँलोकनिक ? एकदम राम-सीता सन...

"देखू चालाकी ! अखनेसँ बहिनक पक्ष लेबऽ लगलहुँ । अहाँक राम कारी छलाह । बहिन कतबो गोरि हेतीह तऽ हमरासँ बेशी नहि हेतीह ।"

रम्भा एकटक अपन देओरकेँ देखैत रहि गेलीह- "सत्ते कहै छी बाउ ! एहन गोराइए किएक, एहन रूपो भेटनाइ दर्लभ छैक संसारमे । तेँ तऽ एतेक लोभ अछि अहाँपर ।"

भास्करक मोनमे मुदा कोनो लोभ नहि छलैक । ने रूपक, ने गोराइक, ने नवयौवनक सुवासक । ओकरापर तऽ दोसरे धुनि सवार हरैक- पढ़बा-लिखबाक । मैट्रिकमे स्कालरशिप भेटि गेल छलैक, प्रथम श्रेणीमे नीक स्थान छलैक । ओ आगू पढ़ऽ चाहैत छल, खूब आगू पढ़ऽ चाहैत छल ।

बाबी कहलकै- "तऽ मना के करैत छौक ? पढ़ ने खूब, पढ़िते रह सभ

दिन, मुदा बिआह-दानक एकटा वयस होइत छैक । तोरा वयसमे हमरा एकटा धियोपुता भऽ गेल रहय ।"

भास्कर कहलकै- "तहन तऽ सत्ते पछुआ गेलौं बाबी, मुदा चिन्ता नहि कर । विआह होबऽ दे, सभकेँ लगले पछुआ देबनि ।"

बाबी हँसैत गालपर थापर मारैत कहलथिन- "बुढ़िया बाबीसँ हँसी करैत छैं ? मुदा मोन राख । नहि अनबैं ऐ साल, तऽ कचोट रहि जयतौक । फेर ककरो पछुयेबहिक, हम घुरिकऽ देखऽ नहि अयबौक ।

भास्कर निरुत्तर भऽ गेल । माय लग सेहो ओकर कोनो तर्क नहि चललैक- "एखन जान बचा दे माय ! पढ़ऽ-लिखऽ दे ! फेर जतहि कहबैं, फँसरी लगा लेबौक ?"

माय डाँटि देलथिन- "अलाय-बलाय गप्प, फँसरी लगयबौ हमरा लोकनि तोहर गरामे ? बड़की कनियाँक बहिन लाखमे एक छनि । अपनो देखहुन । बीस बरखसँ सासुर बसैत छथि- आइयो कोनो नवकनियाँसँ कम छथि ?"

भास्कर अन्तिम प्रयास कयलक- "से हम कहाँ कहैत छियौक जे कनाह-घेघही गरामे बान्हि रहल छैँ, मुदा महासुन्दरीकेँ लऽकऽ हम की करब अखन ? पढ़ऽ-लिखऽ दे हमरा ।"

मायपर ओइ अन्तिमो चेष्टाक कोनो असरि नहि भेलैक । कहलकै- तऽ पढ़ऽ-लिखऽ ने चैन सँ ! कोन भार रहतऽ तोरापर ओकर ? अखन बाप जिबैत छथुन । हमरा लोकनि छिअऽ । कोनो वस्तुक अभाव नहि छऽ । खाली एतबा बाजऽ ने, कनिआँ पसिन्द छऽ की नहि ? देखबहक ? बजबा दिअऽ कोनो बहाने ?

तकर प्रयोजन नहि छलैक । देखने छलैक भौजीक बहिनकेँ । परुकेँ भौजीकेँ नैहर पहुँचाबऽ वैह गेल रहय । कोनो उपनयन रहनि भौजीक नैहरमे, भरिसक भौजीक पितिऔत भाइक बेटाक । किरणकेँ देखने रहैक ।

आ देखिकऽ मोनमे अजीब सन सनसनी उठल रहैक । जखन कखनो ओ लग अबैक, ओ सनसनी अपन नस-नसमे अनुभव करय । ओतऽसँ घुरियो अयलाक बाद बहुत दिन धरि ओ सनसनाहटि ओकरा अनुभव होइत हरल छलैक ।

फेर ओइ आकृति आ ओइ सनसनाहटिकेँ बिसारि देने छल ओ । मुदा बिसरल नहि छलैक । नुका रहल छलैक तहमे । भोजी जखन चर्चा कयलथिन, ओ

ओइ तहसँ बहराकऽ फेर ऊपर आबि गेलैक । भौजी, माय, बाबी सभक संग ओ ऊपरसँ बहस करैत रहल, मुदा मोनमे ओ सनसनी तीव्रतर होइत गेलै । जखन बाबू अपन समधिकेँ बजबा हुनकर छोटीक कन्याक हाथ अपन छोट बालक लेल माँगि लेलथिन तऽ भास्करक मोनक सनसनी विस्फोटक स्थितिमे पहुँचि गेलैक । ओ दिन गनऽ लागल ।

जहिआ सखी-बहिनपा सभ कोबरमे किरणकेँ ठेलि बाहरसँ जिंजीर लगा देलकै...भास्करक मोनक सनसनी एकटा संगीतमे बदलि गेलैक । भास्कर डूबि गेल ओइमे, किरण सेहो डूबि गेल ।

भास्कर कहलकै– "अहाँकेँ छुबैत डर होइए । कहुँ दाग ने लागि जाय।"

लजायल किरण कहलकै– कथीमे ? हमर आकृतिमे की अहाँक आँगुरमे ?

किरणक कँपैत देहकेँ अपन बाँहिमे समेटि भास्कर कहलकै– लगा दिअऽ दाग हमर पोर-पोरमे । हमर मोन आ आत्मामे । एहन लगाउ जे कहिओ धोखड़य नहि, कोनो दोसर रंग चढ़य नहि ।

किरण हँसिकऽ कहलकै– "पुरुषक कोन ठेकान ? एकटा रंग हटा, दोसर रंग चढ़बैत देरिये कतेक लगैत छैक ? मौगी लग ओकरा बान्हबा लेल रहिते की छैक ? खाली समर्पण, सर्वस्व समर्पण । ओइ समर्पणकेँ अपमानित करबामे पुरुषकेँ देरिये कतेक लगैत छैक ?"

भास्करक मोनमे प्रश्न सनसना उठलैक– किएक ? एना किएक ? स्त्री एतेक आश्रित आ पराधीन किएक ? पुरुष एतेक स्वच्छन्द आ निर्लज्ज किएक ?

किरणकेँ डर भेलैक– "की भेल ? कतऽ चल गेलहुँ अहाँ ? आइ तऽ कमसँ कम नहि जाउ कतहु छोड़िकऽ हमरा ।"

भास्करक बाँहिक बन्हन आर कसि गेलैक– "जायब कतऽ अहाँकेँ छोड़िकऽ... सभ दिन अहीं लग रहब । देखू हम छी ने अहाँक लग !"

किरण जेना ओकर सम्पूर्ण शरीरकेँ अपनामे समाहित कऽ लेबऽ चाहैत छलैक । ओकरा अपन बाँहिमे समेटैत कहलकै– हँ, अहाँ छी...खाली अहींटा छी, आर सभ मिथ्या...खाली अहींटा वास्तविक छी ।

आ ओ चेष्टा एकटा आलोड़न बनि गेलैक । एक-दोसरमे लिप्त ओ समाहित भऽ जयबाक चेष्टा । दूनूक एकाकार हैबाक उद्दाम चेष्टा । थाकिकऽ

एक-दोसरक बाँहिमे निश्चेष्ट पड़ल रहैत छल किछु क्षण...आ फेर वैह आलोड़न, वैह उद्दाम चेष्टा ।

भोरुका पहरमे किरण उठलैक । पैर दबने बिदा भेलैक । मुदा जा नहि भेलैक– ओकर आँचर भास्करक मुट्ठीमे छलैक । लग आबि कानमे मुँह सटा कहलकै– जाय दिअऽ...भोर भऽ गेलैक ?

भास्कर फेरसँ देहमे साटि लेलकै– "होमऽ दिऔक...हमर अहाँक मिलन-राति तऽ समाप्त नहि भेल अछि ।"

फेर सभटा बिसरि गेलैक । भोरका चिड़ैक चहचहायब, दरबज्जाक फाँकसँ सखी-बहिनपाक ताकब...घरमे जागल लोकसभक आबा-जाही, सभटा ओइ आलोड़नमे बहि गेलैक ।

किरण फेर ठाढ़ भेलि– "आब जाय दिअऽ...सभ ठाढ़ हैत चारूकात । लाजे मरि जायब ।"

तावत दरबज्जापर थाप पड़ऽ लगलैक– "हय किरण....निकलऽ ने हय... घर भरि जागि गेलह । बाहर आबह— राति फेर ओतैक ।"

किरण दरबज्जा खोलिकऽ पड़ायलि । पाछाँ-पाछाँ हँसैत सखी-बहिनपा दौड़लैक । किरण ककरो ने देखलकै । जाकऽ मायक ओछौनपर पड़ि रहलि । आँखि खुजलैक तऽ कोठेलीमे खिड़की बाटे रौद छिड़िआयल छलैक । ओकरा कानमे मायक स्वर अयलैक– "हय रम्भा ! देखहुन ने चौधरीकेँ । एगारह बाजि गेलैक, सुतल रहथुन की ?"

किरणकेँ आर लाज भेलैक । चुपचाप उठिकऽ स्नानघर दिस जयबाक इच्छा भेलैक । मुदा आलसे उठि नहि भेलैक । फेर गेरुआमे मूड़ी गाड़ि लेलक । लगले निन्न भऽ गेलैक ।

भास्करकेँ दूरसँ हबेली उदास लगलैक । किरणक चिट्ठी मोन पड़लैक– "अइ हवेलीमे बड़ डर लगैत अछि हमरा । अहाँ जल्दी आउ ।" भास्करकेँ डेराओन-सन किछु नहि लगलैक । खाली उदास-उदास ।

स्टेशनपर ठकना आयल छलैक । बेश मजबूत आ दमगर काठी छैक । रंग

खूब कारी । खाली देहक मांसपेशी छलछल करैत छैक । भास्करकेँ ओकर नेनपनक आँखि मोन पड़लैक जाहिमे बड़कीटा भूख सदिखन ओकर दूधक गिलास दिस टकटकी लगौने रहैत छलैक । आइ ओइ आँखिमे कोनो भूख नहि छैक, कोनो विद्रोह वा प्रतिहिंसो नहि छैक । ओइमे एकटा असीम सन्तोष आ शान्ति छैक । माँड़ पीबि ठकना ओकर दूधक गिलाससँ पोसल देहसँ बेशी मजबूत भऽ गेल छलैक । ओकर भारी मोटा उठा दौड़ले गाम दिश बिदा भऽ गेलैक ।

ओकर डेगमे नहि सकल भास्कर । गामसँ साइकिल लेने बतहा सेहो आयल छलैक । ओकरो घुरा देलकै, पैदल चलबाक इच्छा भेलैक । अपन डेगे आगू बढ़ैत गेल भास्कर । चिन्हार लोक सभ भेटऽ लगलैक । आन-आन गामक चिन्हार लोकसभ । स्टेशनसँ तीन कोसपर छलैक गाम । पहिने स्टेशनसँ गामधरि कच्ची सड़क छलैक । हरदम धूरा-माटिसँ भरल, बरखा-बुन्नीमे कादो-कादो भेल । स्टेशनसँ हवेली धरि अबैत-अबैत सभ दशा भऽ जाइत छलैक ।

आब हालति बदलि गेल छैक । स्टेशनसँ गाम आ गामसँ दोसर गामधरि पक्की सड़क बनि गेल छैक, ताहिपर रिक्सो चलैत छैक । ओना गामक बेशी रिक्शाबला शहरेमे रिक्सा चलबैत अछि । आब एहि सड़कपर बस सेहो चलैत छैक। दरभंगासँ विदा होइत छैक आ स्टेशन लग होइत ओकर गामबाटे बीस कोस आगू धरि जाइत-अबैत छैक । अइ बसमे चढ़ब बड़ मस्किल । हरदम लदले रहैत छैक। आ बसक चारूकात घुघुरू जकाँ लटकल लोक सभ । छतपर सैकड़ो लोक । आब गामोघरक लोक माइलो दू माइल पैदल नहि चलैत अछि । बस सवारी सेहो फ्री । टिकटक कोनो काज नहि । मुँहगर भेल तऽ सोलहन्नी फ्री । कने मुँहदुब्बरो रहल तऽ आधा फ्री । कन्डक्टरक हाथमे चुपचाप किछु कैंचा राखि निश्चिन्त ।

हवेलीसँ पहिने हाथी अबैत छलैक स्टेशन धरि । भास्करो देखने छलैक एकटा दन्तार हाथी । ओकरा नीक जकाँ मोन छैक ओ हाथी आ ओकर फिलवान उसमान खाँ । पठान रहैक । गोरनार आ लम्बा-चौड़ा सुरेबगर सोटल देह । कारी घनगर आ चमकैत दाढ़ी-मोछ । डाँड़मे लुंगी आ देहपर चरखाना गंजी । कौखन गंजीपर मिर्जइ चढ़ा तुर्की टोपी आ लुंगी उतारि चुस्त पैजामा पहिरि लिअय तऽ भास्करकेँ इतिहासक पोथीमे देखल कोनो मुगल बादशाह सन लगैक । ओ दन्तार हाथी ककरो सम्हारमे नहि अबैत छलैक । एकसर उसमाने सम्हारैत छलैक ओकरा, ओकरे इशारापर ओ हाथी उठैत-बैसैत छलैक । सैह हाथी एकदम बिदकि गेलैक । उसमान आँकुसपर आँकुस लगबैत थाकि गेल, पगलायल हाथी किछु ने सुनलकै ।

सभ किछु पीचैत, धङैत, दौड़ैत रहलैक । उसमान खाँ कूदिकऽ पड़ाइयो नहि सकल । एकटा टिनवला घरक चोखगर टिन ओकर गराक आरपार चीरि देलकै आ ओकर निर्जीव शरीर हाथी परसँ शोणिते-शोणिताम भेल जमीनपर ओंघरा गेलैक । हाथीकेँ जेना होश आबि गेलैक । अपन फिलवानक मृत देह लग संचमंच ठाढ़ भऽ गेल ।

भास्करकेँ ई सभ खिस्सा सुनल छैक । फिलवानक मरितहि महेन्द्रनाथ चौधरी तामसे थरथर काँपऽ लगलाह । बन्दूक निकालि लेलनि । लोक कतबो मना कयलकनि, फिलवानक मृत देह लग संचमंच ठाढ़ हाथीकेँ गोलीपर गोली मारैत चल गेलथिन । हाथी अर्राकऽ अपन फिलवानक देह लग खसिकऽ शान्त भऽ गेल ।

भास्करकेँ बाबी कहैत छलैक ई सभ खिस्सा । महेन्द्रनाथ चौधरी बड़ शौकसँ खरीदने रहथि ई हाथी । हरिहर क्षेत्रक मेलासँ अनने रहथि, मुदा हाथी पागल भऽ गेल छलैक आ फिलवानक जान लऽ लेने छलै । ओहन पागल हाथी के रखैत ? महेन्द्रनाथ चौधरी अपने हाथे गोली दागि देलथिन । हवेलीक अन्तिम हाथी छलैक ओ । महेन्द्रनाथ चौधरी फेर हाथी नहि किनलनि । हुनकर बापक हवेलीक सिंहद्वार लग तीन-तीन टा हाथी हरदम झुमैत रहैत छलनि ।

भास्करकेँ हाथीक सवारी कहियो पसिन्द नहि रहैक । ओकरा घोड़सवारी नीक लगैक । एकटा उजरा घोड़ा रहैक- खूब ऊँच आ तेजगर । बाबू ओइपर एकसर कखनो ओकरा बैसऽ नहि देथिन । भास्कर भैयाक खोसामदमे रहैत छल । अधिक काल भैये ओइ घोड़ापर बहराइत छलथिन । ओइपर बैसल भैया ओकरा बड़ सुन्दर लगैत छलथिन- एकदम परीकथाक राजकुमार सन । ओकरा अपनो ओइपर बैसबाक मोन होइ, मुदा ओकरा क्यो ने बैसऽ दैक ओइ घोड़ापर । सहीस अजीज खानक पाछाँ-पाछाँ लागल रहय । घोड़ाक पीठपर ओकरा बैसा, घोड़ाक लगाम पकड़ि अजीज खान आगू-आगू चलैक । एहन सवारी नहि सोहाइक भास्करकेँ ।

एकदिन सहिसबेकेँ खूब छकौलकनि ओ । जहिना पीठपर बैसल, मारलकै घोड़ाक पाँजरमे लात । घोड़ा हवा भऽ गेलैक । पाछाँ-पाछाँ दौड़ैत अजीज खान बदहवास भऽ गेलैक । भास्कर घोड़ाकेँ दोड़बैत रहल । अन्तमे सहीस लग आबि घोड़ासँ उतरि गेल । अजीज खानक जानमे जान कयलैक- ''जान बचि गेल बौआ ! किछु भऽ जाइत तऽ बड़का मालिक खाल खीचिकऽ भूसा भरबा दितथि ।''

से ठीके भरबा दितथिन महेन्द्रनाथ चौधरी । दया-माया कनियो ने छलनि हुनकर हृदयमे । लोभी आ पाषाणहृदय छलाह ओ । अत्यधिक संचित करबाक व्यसन छलनि । गामक लोक पीठ-पाछाँ कहनि- जालिम चौधरी । जन-बनिहार,

अमला-बटीदारक हेतु तऽ साक्षात् यमराज छलाह ओ । पहिने टाका दऽ जमीन सुदिभरना लैत छलथिन आ बादमे सूदपर सूद जोड़ि निर्दयतापूर्वक सभ-किछु अपना नाम लिखा लैत छलथिन । गामक सभ मोसम्मातक घराड़ी आ जमीन, विधवा-बेसहाराक गहना-गुड़िया, बर्तन-बासन आ जन-बनिहारक थारी-बाटी वैह बन्धक रखैत छलाह। ने मोनमे दयामाया छलनि ने ककरो डर ।

खाली एक गोटेसँ डेराइत छलाह । गौरी चौधराइनक आगूमे ओ मिमिआय लगैत छलाह । माय हुनकर छलथिन, मुदा गाम भरिक लोक हुनकर सन्तान छलनि। दुख-विपत्तिमे पड़ल लोक बूढ़ी मलिकाइनक पैर छानि लैत छलनि- "आब एगो अहींक आसरा हय बूढ़ी मलिकाइन ! मालिक उजाड़ि देताह हमरा, तबाह कऽ देताह।"

आ गौरी चौधराइन अपन बेटाकेँ बजा कहैत छलथिन- की सभ सुनैत छिअऽ हौ महेन ! कहाँदन तोँ भारी बनियाँ भऽ गेल छऽ । एक टाकासँ दस टाका बनबैत छऽ । कोनो सेठ-साहूकारक घरमे जन्म लितऽ तोँ, हमर काखिमे कोना आबि गेलऽ...?

महेन्द्रनाथ चौधरी घिघिआय लगैत छलाह । अपन बाबीक ओ उग्र रूप देखने छल भास्कर ।

ओकर माय मुदा एकदम विपरीत छलैक । गरीब घरक बेटी रहैक, हरदम घर-गृहस्थीक काजमे ओझरायल रहैत छलैक । जमींदारनीवला रोब-दाब कनियो ने छलैक ओकरामे ।

सत्ते, आशा चौधराइन ओइ वातावरणमे बेछप छलीह । साधारण रूप, मजबूत कदकाठी । पतिकेँ परमेश्वर मानि पूजऽवाली । कहिओ सबाल-जबाब पूछऽवाली नहि । स्वामीक इच्छाकेँ परमेश्वरक इच्छा मानि जीवऽवाली भारतीय नारी, मैथिलानी । पन्द्रह वर्षक रहथि तऽ अइ हवेलीमे अयलीह । दोसरे वर्ष सचिनक जन्म भेलैक । तकर बाद चारिटा बेटी आ टूटा बेटा । क्यो नहि बँचलनि। पीठ पाछाँ भरिगाम कहैक- ई सभ महेन्द्रनाथ चौधरीक पापक फल थिकनि । हुनकर स्त्री तऽ साक्षात् अन्नपूर्णा छथिन ।

सचिनक जन्मक बीस वर्ष बाद जखन भास्करक जन्म भेलैक तऽ ककरो मोनमे कोनो उत्साह-उमंग नहि रहैक । आशा चौधराइनक मोनमे सेहो नहि । सचिनक विवाह पन्द्रहे वर्षमे करा देने रहथिन, पुतहु बसै छलनि । बूझल छलनि जे अन्य छवो सन्तान जकाँ इहो बाँचत नहि । खाली मायक जर्जर छलनी भेल छातीमे

एकटा आर भूर करऽ आयल छथि । सातम भूर—हृदयक आरपार । आशा चौधराइन बेटाक मुँहो ने देखऽ चाहैत छलीह । ने बापेकेँ कोनो उत्साह रहनि ओकर मुँह देखबाक ।

बूढ़ी पितामही ई सभटा खिस्सा कहने रहैक भास्करकेँ । खाली वैह टा नाचल रहैक भरि आँगन । ओकरा कोरामे लेने, निहारैत-निहारैत विभोर भऽ गेल रहैक— "भास्कर भगवान आयल छथि । आँखि नै टिकैत अछि चेहरापर । सूर्य भगवान थिकाह- कवच-कुण्डल नहि छनि मुदा तेज ओहिना छनि । सूर्य नाम नहि रहतनि । पुरखाक नाम छलनि । भास्कर थिकाह ई..."

आ पितामहीक कोरामे भास्कर जीबि गेल । माय डरे कोरो ने लेथिन, कहीं फेर ने छिना जानि कोरेमेसँ । एकटा महेन्द्र छोड़िकऽ आर कोनो सन्तान नहि भेल रहनि गौरी चौधराइनकेँ । बुढ़ारीमे पोताकेँ करेजसँ सटा एकबेर फेर माय बनि गेलीह । हुनकर सुखायल छतीकेँ मुँहमे लऽ जखन भास्कर चभर-चभर करऽ लगनि, तऽ दूध नहि निकलैक ओइसँ, मुदा सम्पूर्ण शरीरेसँ जेना दूधक धार बहि जानि !

हुनकर पछबरिया कोठामे भास्कर बढ़ल । ओकरे ओसारापर खेलायल, रामायण-महाभारत सुनलक, ओसारा आ घरक अगियासी लग बैसिकऽ कठरी-बाबाजीक आ आर अनेक खिस्सा सुनलक । माय कहिओ डरे दुलारो ने करथिन बेशी जे कहीं फेर हुनकर भाग्य ओकरा छीनि ने लैनि ओकरासँ जेठे छबो सन्तान जकाँ। बापो ने घुरिकऽ तकैत छलथिन । बाबीक घरमे खेलाइत, बढ़ैत भास्करक मोनमे क्रमश: बहुत रास प्रश्न सभ ठाढ़ होबऽ लगलैक । कौखन ठकनाकेँ लऽकऽ, कौखन ब्रह्माकेँ लऽकऽ । बाबूजीकेँ बर्दाश्त नहि भेलनि ओ सभ प्रश्न आ ओकरा सभमे भास्करक बढ़ैत रुचि । गामसँ दूर पठा देलथिन— पहिने दरभंगा, तखन पटना ।

सामान लेने ठकना आगाँ चल गेल छलैक आ ई सभ पुरना गप्प गाम दिस पैरे बढ़ैत काल भास्करकेँ अनायास मोन पड़ि गेल छलैक ।

हवेलीक पुरना चौसज्झा आँगनक मुँहपर सिंहद्वार छलैक, जाहि बाटे हाथीपर बैसल लोक आँगन जा सकैत छल । दन्तार हाथीपर बैसि अपन बापक संग कतेको बेर भास्कर सेहो ओइ सिंहद्वार बाटे आँगन आयल छल— विशेष अवसरपर, पाबनि-तिहार कऽ, दुर्गापूजामे जतरा दिन, मुदा ओइ दन्तार हाथीकेँ महेन्द्रनाथ चौधरी अपने हाथे गोली मारि देलथिन । हाथी पागल भऽ गेल रहैक ।

ओही सिंहद्वारसँ सय लग्गा आगू जाकऽ महेन्द्रनाथ चौधरीक बंगली

छलनि— अपन आ पाहुन-परक लेल बैसार । फूसेक चार, मुदा खूब सजल सीटल। सजल-सजल बाती आ चुनल-चुनल खढ़, लकड़ीक चौपहल-अठपहल सुन्दर खम्भा सभ- सुन्दरसँ रंगल-ढौरल । कुर्सी खूब ऊँच आ ताहिमे दूनू कातसँ सीमेन्ट कयल सीढ़ी । सौंसे ओसारा सेहो सीमेण्ट कयल जाहिपर दू टा सोलहत्थी शतरंजी हरदम बिछायल । एक कात बड़का आरामकुर्सी जाहिपर महेन्द्र चौधरी अपने बैसैत छलाह आ दोसर कात दस-बारह टा कुर्सी । चारमे खोसल सभ आकारक ताड़क पंखा । पाहुन-परककेँ आ बैसारक लोककेँ दू टा जन हरदम पंखा हौंकैत छलैक । उत्तरे-दक्षिणे लम्बा बनल बंगली जकर दूनू कात एक-एक टा कोठली छलैक । दक्षिणवारि कोठलीमे देवानजी गौरीशंकर कर्ण रहैत छलाह आ उतरबरियामे स्वयम् महेन्द्रनाथ चौधरी विश्राम करैत छलाह । हुनकर घरमे बड़का गद्दीवला तखतपोश छलनि आ चारसँ बड़का पंखा, झालरिवला, लटकल छलनि जकरा एकटा जन बाहर बैसल खीचैत छलनि । ई सभ भास्करकेँ ओहिना मोन छलैक ।

अही बंगलीक पुबारी कात दने सड़क जाइत छलैक जाहिपर पहिने हाथी, घोड़ा खड़खड़िया आ पैदल सवार चलैत छलैक आ आब बस, साइकिल, रिक्सा आ मोटर चलैत छैक ।

भास्कर पैरे बिदा भेल छल । चिन्हार लोक सभ भेटऽ लागल छलैक । तीन कोसक रस्तामे पहिले गाम छलैक रानीहाट । अपने जमींदारीक गाम छलैक कहिओ । आबो कोलाकोली जमीन बाँचल छैक । हाट लगैत छैक बुध आ शनि कऽ । रानी माँक हाट । जमीन भास्करेक परिवारक कोनो स्त्रीक नाम छलैक- रानी माँ कहैत छलनि हुनका लोक आ गामक नाम पड़ि गेलैक रानीहाट । पहिने कोनो आन नाम रहैक ।

बस्तीमे मुसलमानक संख्या बहुत रहैक । हाटमे आ गामे-गाम घुरिकऽ चूड़ी आ टिकुली-सिन्दुर वैहसभ बेचैत छल, हाटपर दोकान खोलिकऽ ब्लाउज-फ्राक वैह सभ सिबैत छल । रानीहाटक चूड़ी आ सिन्दुर-टिकुली सधवा लोकनि लेल चिर सोहागक प्रतीक छलनि । भरि इलाकाक स्त्रीगण एतहि खरीदैत छल चूड़ी-टिकुली-सिन्नुर । जे लोकनि हाट नहि अबैत छलीह अपने, ओहो सभ हाटसँ खरीदबा कऽ मँगबैत छलीह, अइ गामक चूड़ीहारा घरे-घर दैयो जाइत छलनि ।

आबादी एकदम मिज्झर छलैक अइ गाममे । आधा हिन्दू, आधा मुसलमान। घरो सभ एकदम मिझरायल, फराक-फराक टोल नहि । जेना-जेना

समय बितलैक, फेरी लगाबऽवला सभ हाटक बगलमे सड़कक कातेकात दोकान खोलि लेलक— चूड़ीक दोकान, टिकुली सिन्नुर आ रिबनक दोकान, दर्जीक दोकान, कपड़ाक दोकान। फेरी लगबऽवला चूड़ीहारा गोटेक-आधेक रहि गेल ।

नेनेसँ अइ गामक हाटमे अबैत छल भास्कर- कहिओ दन्तार हाथीपर तऽ कहिओ उजरा घोड़ापर । कहिओ काल पैरो ककरो संग आबि जाइत छल । कने चेतन भेल तऽ साइकिलोसँ आबऽ लागल । ई गाम आ हाट बड़ पसिन्न छलैक ओकरा । लोको सभ बड़ चीन्हैत छलैक ओकरा ।

आइयो ओकरा पैदल जाइत देखि लोकसभक चिन्हार दृष्टि अनुसरण करऽ लगलैक । क्यो प्रणाम कयलकै, क्यो आदाब । जुम्मन मियाँ अपन कपड़ाक दोकानपरसँ उठिकऽ दौड़ल अयलैक- "की बात छै हुजूर ? अहाँ इत्ती दूर पैदले ! घरपर इत्तेला न देलियै ! पसीना-पसीना हो रहल छी ! आउ, कने सुस्ता लू ! कने शर्बत-पानी पी लू ।"

भास्कर ओकर दोकानमे आबिकऽ बैसि गेल । जुम्मन मियाँ पंखा चलबैत बाजल- आब तऽ अहू इलाकामे बिजली आबि गेल हजूर ! अहुँके गाममे खम्भा गिरा देलक ।

भास्करकेँ ई गाम कने सुन्न आ उदास सन लागि रहल छलैक । पुछलकै- "की बात छै जुम्मन काका ! रानीहाटमे पहिला रौनक नहि रहलैक ।"

जुम्मनक हँसैत आकृति एक्के बेर मिझा गेलैक- "ई न पुछू हुजूर ! गाममे बचले के है जे रौनक रहत ! सभ तऽ भागि गेल ।"

भागि गेल ? भास्करकेँ बड़ आश्चर्य भेलैक- गाम छोड़ि पड़ा गेल सभ ! किएक जुम्मन काका ?

जुम्मन ओहिना उदास स्वरमे कहलकै- "न भगैत तऽ मारल जाइत हुजूर ! रानीहाटमे घिरनाके आगि पसरल रहै । आदमी-आदमीक खून के पिआसल हो गेल रहै, माय-बहिनके इज्जति लूटे चाहैत रहे, मासूम बच्चा सभकेँ संगीनके नोकपर उठा लैत रहै । 1947 के दंगामे ई गाममे लोक सभ भाइ-भाइ लेखा रहल, वाकि उहे भाइ-भाइ एक दोसर के जान के दुश्मन हो गेल ।

भास्कर व्यग्रतासँ पुछलकै- एना कोना भेलैक जुम्मन काका ? किएक भेलैक ? के कयलकै ?

जुम्मन ओहिना उदास स्वरमे कहैक– अपन मुलुक के रहनुमा सभ । उहे लोग अपन स्वारथ वास्ते घिरना के आगि पसारने छथि हुजूर !

भास्कर विह्वल होइत कहलकै– "मुदा जुम्मन काका ! एतऽ रामनवमीक उत्सव संगे होइत छल, दाहा संगे उठैत छल । ईद मनबैत छल, दीयाबाती मनबैत छल । एतऽ ई सभ कोना भेलैक ?"

–अहाँ मासूम फरिश्ता छी हजूर ! जुम्मन कहैत गेलैक– ई घिरनाके आगि जेनेसँ अबै हय, उहाँ कुच्छो स्वार्थी भेड़िया रहैय । ऊ सभ सोहागिनके माँग उजाड़ै हय, मासूम बच्चाके खून से होली खेलै हय । ऊहे सभ घिरनाक आगि अइ बस्तीमे ले आयल हजूर ! हमर आका, हमर रहबर– ई जुग के पैगम्बर– उहे सभ धिरनाके आगि पसारने छथि हुजूर ! मंजर देखि लू ईहो । चाहे घर जरल हय, चाहे खाली पड़ल हय । एहू बुढ़बा कन्हा अपन दू-दू गो जवान बेटाके लहास उठौले हय हजूर !

जुम्मन मियाँ कानऽ लगलैक । बड़ी काल तक कनैत रहलैक । भीतरसँ एकटा छौंड़ा शर्बतक गिलास दऽ गेलैक । शर्बत पीबि उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल भास्कर –"नहि कानू जुम्मन काका ! अहाँक बस्तीकेँ नफरतक आगि नहि जरा सकैत अछि । एतऽ अखनो अहाँ सन लोक रहै अछि जे अपन-अपन दू-दू टा बेटाकेँ अपन हाथे दफना देलाक बादो भास्कर चौधरी लेल स्नेह रखैत अछि, ओकरा स्नेहसँ रोकिकऽ शर्बत पिअबैत छैक । जकरा मोनमे आइयो सभक लेल स्नेह छैक, ककरो लेल प्रतिहिंसा आ घृणा नहि छैक । अइ बस्तीकेँ घृणाक आगि कहिओ डाहि नहि सकैत अछि जुम्मन काका !

भास्कर आगू बढ़ैत गेल । मोन बड़ी काल धरि भारी रहलैक । रानीहाटक बाद नवटोल आ नवटोलक बाद गोपालपुर । चिन्हार लोक सभ दूनू गाममे हाथ जोड़ैत गेलैक आ भास्कर सभकेँ प्रत्युत्तरमे हाथ जोड़ैत आगू बढ़ैत गेल ।

अपन गाम रामचन्द्रपुर लग आबि गेलैक । हवेलीक सिंहद्वार देखाइ पड़ऽ लगलैक आ ओइ सिंहद्वारक पाछाँक ऊँच-ऊँच कोठाक छत सेहो देखार होबऽ लगलैक । भास्करकेँ किरणक चिट्ठी मोन पड़लैक, मुदा ओकरा डेराओन सन किछुओ नहि लगलैक । खाली उदास-उदास आ श्रीहीन ।

लग आबि सिंहद्वारसँ भीतर आँगनमे पैसैत काल हवेली ओहिना सोहाओन आ अपन सन लागऽ लगलैक । किरण बताहि छैक । तीन वर्षक नेनाक माय बनि

गेलैक, मुदा आइयो ओहिना छैक– एकटा अबोध शिशु । अनेरो सभ किछु डेराओन लगैत रहैत छैक ।

रामचन्द्रपुरक हवेलीमे पैर दैत किरणक मोनमे कोनो भय नहि छलैक । खाली उमंग आ स्वप्न छलैक नवजीवनक । भास्करक संग जीवन बड़ मधुर आ आकर्षक भऽ उठल छलैक सोलहे दिनमे ।

जिनगी ओनाहो ओकरा लेल बड़ उमंग आ उत्साहक चीज छलैक । माय कतबो मना करैक ओ हरदम कूद-फान आ हल्लागुल्ला मचौने रहैत छल । भाइ-बहीन सभमे छोट छलि, सभक दुलारू । बड़की बहिन बीस वर्ष पहिने सासुर गेलैक । तकर बाद पाँच टा भाइ आ तखन किरण । सभक खेलौना छलि ओ ।

अपने घर टाक नहि, गाम भरिक । घरे-घर बौआयब...ताश-पचीसी खेलायब...सखी-बहिना-चम्पा-चमेली लगायब...धारमे नहायब...गाछीमे झूला झूलब, टिकुला बीछब, मोछक झक्खा बनायब, सिंहद्वारक फूल बीछब आ भालसरीक लाल-लाल फल तोड़ब आ खायब ओकरा पसिन्द छलैक ।

तेरहम वयस भेलैक तऽ माय टोकऽ लगलैक– "आब बन्द कर ई यत्र-कुत्र बौअयनी । संच-मंच भऽकऽ घरमे बैस, चारि टा लूरि सीख । बापकेँ नहि जानि कोना निन्न होइत छौ, हमरा तऽ तोरे चिन्ता रहैत अछि हरदम ।

कखनो काल माय लग बैसऽ लागलि किरण । टहल-टिकोरा कऽ दैक, भनसोघरमे बैसि जाइ । मायकेँ अपने अकच्छ लगैक । ओकरा ठेलिकऽ बाहर कऽ दैक– "जो । गंगाक आंगनसँ घुमि आ ।"

गंगा ओकर संगी छलैक, पितिऔत बहीन । आरो बहुत संगी रहैक । कुसुम...रजनी...तीरा...फूल...सभठाम टहलि आबय...खेला आबय आ फेर माँ लग बैसि जाय । माय स्नेहसँ निहारैत बाजैक–"नहि जानि हमर ई सोन सन बेटी कोन घर जायत ?"...

किरणो आब बुझऽ लागल छलैक एकर माने । मुँह फुला कहैक–– एतेक भार भेल छियौ माय तऽ गरदनि काटि दे । धार-पोखरिमे डुबा दे ।

माय ओकरा लग खीचि केश सोझरबैत कहैक– "कतेक गर्दा पड़ौने रहै

छैं सौंसे ! जो, नहा ले। गरदनि कटबौक हम तोहर आ भार हैबें तों ? बेटी तऽ जयबे करैत छैक अपन घर बाउ ! तोहर तऽ तेरहम भेलौक, हम तऽ एगारहमे बरखसँ सासुर बसै छी। तोरो अपन घर-गृहस्थी हेतौ, राजकुमार सन स्वामी हेतौ, फूल सन-सन बेटा-बेटी हेतौ...

-"धत्"-कहैत लजाकऽ पड़ा जाय किरण।

बेदी तर कनखियेसँ देखलकै भास्करकेँ तऽ सौसे देहमे झुरझरी पैसि गेलैक। मायक बात मोन पड़लैक— राजकुमार सन स्वामी हेतौक, फूल सन-सन बेटा-बेटी हेतौक...।

पन्द्रहमे वयस रहैक। सोलहमे दिन द्विरागमन भऽ गेलैक। रामचन्द्रपुर हवेलीमे पैर दैत काल गाछी-बिरछीमे खेलायवाली, घरे-घर बौआवाली, ताश-पचीसीमे मगन रहऽवाली किरण बहुत पाछाँ छूटि गेल रहैक। एकटा बुझनुक समर्पित नारीक डेग पड़ल छलैक ओइ हवेलीमे— प्रेममे भीजल, आकण्ठ डूबल, भविष्यक स्वप्नसँ आह्लादित आ वर्त्तमानक सुखसँ रोमांचित नारीक डेग।

कखनो ओकर बुझनुक सन गप्पपर हँसी लागि जाइ भास्करकेँ। किरण बिगड़ि जाइ...।

"-एना हँसै किएक छी ? कोनो बच्चा छी हम आब ! पन्द्रहम वयस अछि। आ अपने कोन बड़का दादा-नाना छी ! तीने वर्ष तऽ जेठ छी। पुरुष छी, हाथ-पैर नाम-नाम अछि तऽ बड़का टा बुझैत छी अपनाकेँ !

भास्कर ओकरा अपन बाँहिमे समेटि ओकरा अपन आँखिमे तकैत कहैक— "देखू केहन बच्चा छी हम ! कतेक छोट भऽ जाइ छी अहाँ लग ! अहाँ छोड़ि आर किछु सुझिते नहि अछि। सदिखन अहीं लग नुड़िआइत रहैत छी, लाजो-धाख ने रहल। घरमे सभ हँसैत हैत। मुदा करू की ? तेना ने बान्हि लेने छी अहाँ ! एक्को क्षण हँटबाक मोने ने करैत अछि अहाँ लगसँ। परसू कालेज खुजि रहल अछि। काल्हि जयबाक अछि आ मोन आइएसँ कोनादन कऽ रहल अछि।"

किरण विह्वल भऽ उठलैक- "काल्हिए चल जायब अहाँ ?" फेर बड़ी काल चुप्प पड़ल रहलैक। ओकर छातीपर अपन गाल रगड़ैत कहलकै- "पटनामे हम मोन रहब ?"

भास्कर कोनो जवाब नहि देलकै। ओकरा अपन बाँहिक कठोर बन्धन मात्रसँ आश्वस्त करैत रहलैक- ठोरक स्पर्शसँ आश्वस्त करैत रहलैक।

पटना पहुँचि अपन पत्रसँ ओकरा आश्वस्त कयलकै- "अइ ठाम सभ-किछु बड़ा सुन्नर छैक, मुदा अहाँ सन किछुओ नहि छैक। बेर-बेर मोन होइ-ए जे एकटा अहाँ आबि जैतहुँ एतऽ तऽ सभ-किछु कतेक सुन्दर आ कतेक अप्पन भऽ जाइत !"

बहुत रास चिट्ठी लिखलकैक। सभ चिट्ठीमे किरणकेँ आश्वस्त करैत रहलैक। किरण लिखलकै- खूब परतारै छी हमरा ! पुरुषक कोन ठेकान, जिम्हरे गेल, तिम्हरे बन्हा गेल। मुदा हमहूँ अहाँकेँ बान्हिकऽ रखबा लेल मजबूत किलाबन्दी कऽ लेने छी। अहाँ बूझू तऽ। किन्हु ने बूझब। हम अहाँकेँ अपन गर्भमे बन्दी बना लेने छी। अहाँ हमर कोखिमे पनपि रहल छी। अहाँक अस्तित्वक सुगबुगी हम सदिखन सुनैत छी आ आतुर प्रतीक्षामे छी ओइ दिनक जहिआ हमरा कोरामे खेलायब अहाँ।

पत्र कालेजमे भेटल छलैक। आनर्सक क्लाससँ बहरायल रहय। किरणक बुझनुक सन चिट्ठीपर अनेरो बिहुँसऽ लागल। ओम्हरसँ आरती आबि रहल छलैक। टोकि देलकै- "ककर चिट्ठी अछि भास्कर ? एकसरे पढ़ि-पढ़िकऽ मुसकिया रहल छी।"

आरती सिनहा ओकर क्लासफेलो छलैक। ओकर एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी। प्रतिद्वन्द्विताक संग मधुर सम्बन्धो छलैक दूनूमे। बेशी घनिष्ठता नहि, मुदा बेस मधुर औपचारिक सम्बन्ध।

भास्कर चिट्ठी ओकरा दिस बढ़बैत कहलकै- "बाते तेहने अछि आरती ! एकटा प्लेजेण्ट सरप्राइज। हम बाप बनऽ जा रहल छी।"

एकाएक जेना किछु नहि बुझलकै आरती ! फेर बूझिकऽ कने लजा उठलैक आ उदास सन भऽ उठलैक- "अहाँक विवाह कहिआ भेल भास्कर ?"

भास्कर कने लजाइत कहलकै- "सौरी आरती ! अहाँकेँ मधुर नहि खौओलहुँ। पछिला बेर गाम गेल रही तऽ कनियाँ आनिकऽ घुरल रही। बाप बनि जाय दिअऽ, दुनू मधुर एक्के बेर खुआ देब।"

ओकर अतिरिक्त उत्साह आ प्रसन्नता देखि आरतीकेँ हँसी लागि गेलैक- "ए बेरी एक्साइटेड बेबी-फादर !'

भास्कर नाटकीय गम्भीरतासँ कहलकै- "हम अहाँकेँ बेबी सन लगैत छी ? पाँच फीट एगारह इंच, वजन 160 पौण्ड, सीना चालीस इंच।

"बस-बस बस ।" आरतीकेँ भभाकऽ हँसी लागि गेलैक- "मानि गेलहुँ हम । बाप बनबा लेल 'क्वालिफाइ' कऽ गेल छी अहाँ ।"

फेर गम्भीर होइत कहलकै- "मुदा नहि जानि किएक भास्कर, हमरा अखनो विश्वासे ने भऽ रहल अछि जे अहाँक विवाहो भऽ गेल आ अहाँ बापो बनि गेल छी । इट्स आल सो अनएक्सपेक्टेंड एण्ड सडेन ! हमरा तऽ आइयो अहाँ एकटा अबोध मुदा विलक्षण प्रतिभावान शिशु सन लगैत छी जकरा हरैबाक इच्छा हमरा सभ दिन रहैत अछि मोनमे ।"

एतबा कहि गम्भीरताकेँ हँटबैत कने दुष्टतापूर्वक मुसकिया उठलैक आरती । भास्कर सहज भाव सँ कहलकै- अहाँक इच्छा अबस्स पूर्ण हैत आरती !

-'शुभकामना लेल धन्यवाद । हमरो चेष्टा जारी अछि, अहूँ सावधान रहब । नवकनियाँक दुलार आ भावी सन्तानक आगमनक आह्लादमे बिसरि नहि जायब जे एकटा प्रतिद्वन्दी अहाँकेँ पछाड़बा लेल सदिखन उद्यत अछि । अपन कनियाँकेँ हमरो दिससँ बधाइ लिखि दिअनु ।'

भास्कर किरणकेँ लिखलकै- "अहाँ हमरा सुखपर सुख देने जा रहल छी किरण ! अहाँक ऋणसँ उऋण हैब मस्किल । लगैत अछि जेना किछुए दिनमे बड़ पैघ भऽ गेल छी अहाँ, ततेक पैघ जे हमरा अपन कोरामे खेलायब अहाँ । अपन ध्यान राखब । बड़ छोट छी अखन । अहाँ हँसब जे लगले बड़ पैघ आ लगले बड़ छोट लिखि रहल छी । दुनू बात ठीके लगैत अछि हमरा । अहाँ माय बनब से सोचि लगैत अछि जेना बड़ पैघ भऽ गेल होइ । फेर मोन पड़ैत अछि जे अहाँ तऽ स्वयम् एकटा अबोध नेना छी, माय कोना बनब ? बड़ चिन्ता भऽ रहल अछि । केहन छी, कोना छी, सभ दिन लिखैत रहू । प्राण सदिखन अहीँपर टाँगल रहैत अछि ।"

बाबी सुनैत देरी नाचऽ लगलैक- "अही लेल रुकल रही हम राजा बौआ ! आउ, जल्दी आउ आ आबिकऽ हमरा छुट्टी दिअऽ ।"

किरणक चारूकात सदिखन छाया जकाँ संग लागि गेलथिन बाबी- ई खाउ, ओ खाउ । ई करू, ओ नहि करू । किरणकेँ बुढ़िया बाबीक ई अतिरिक्त स्नेह बड़ नीक लगैक ।

गामक मौगीसभ लग बैसि-बैसि ओकरा डेरा जाइ- "पन्द्रहमक गर्भ छनि, सोलहममे जन्म देथिन । हे भगवती 'रच्छा' करबनि ।"

बाबी सभकेँ डाँटिकऽ भगा देथिन । एकसरमे अपनो खूब कबुला-पाती

करथि मुदा सभक सामने कहथिन- "अहाँ सभक ढकोसला थिक खाली । सोलहममे भेने की हेतैक ? अनेरो डेरबैत छी हमर फूल सन नेनाकेँ ...।

स्त्रिगण सभ हाथ-मुँह चमकबैत लोहछिकऽ चल जाय । बाबी लग आर किछु बजबाक साहसे ने होइ । बाबी तखन किरण लग बैसल रहैक घण्टो- "ई सभ अन्धविश्वास थिकैक । कोनो चिन्ता नहि करब । हमरा अपने भेल अछि सोलहममे । एहिना सभ पहिनहिसँ डेराकऽ अधमरू कऽ देने छल ।"

भास्करक मायकेँ बजाकऽ डँटलथिन- "अहाँ तऽ एकदम अपरोजक छी हीरा बौआसिन ! नहि जानि कोन काजमे लागल रहैत छी ! थम्हा दिअनु ओ सभ प्रेमाकेँ । कने अपन पुतहुकेँ देखू, ओकरा लग बैसू, ओकर ध्यान रखियौ, नीक-नीक चीज खाय लेल दियौ, नीक-नीक गप्प कहियौ ।"

बाबी आशा चौधराइनकेँ हीरा बौआसिन कहैत छलथिन । रम्भाकेँ सेहो बजाकऽ डँटलथिन- "अहाँ तऽ नहि जानि कोन दुनियाँमे रहैत छी, हरदम पट बन्द । अपना तऽ कहिओ भेल नहि, की जाने गेलियैक जे केहन जनमारा होइ छैक ई पहिल सन्तान । ताहिपरसँ सोलहम वयस । देयादिनिये नहि, छोट बहिनो अछि अहाँक । कनेक ओकर ध्यान रखियौ आइ-काल्हि...

बड़ पैघ बात कहि देलथिन बाबी ! आन क्यो कहने रहतैक तऽ तिलमिला जाइत रम्भा । बाबीक स्नेह देखिकऽ हँसी लागि गेलैक । मूड़ी झुका हँसिकऽ कहलकनि- "ई सभ छथिने तऽ हम किएक चिन्ता करियौक...'

अपन बेटोकेँ डाँटि अयलीह बाबी-"कोन दुनियामे रहै छऽ तोँ महेन ! आंगनमे कुलदीपक आबऽ लेल छऽ, आ तोँ एकदम निश्चिन्त छऽ ! कने डाक्टरनी बजाकऽ सभटा पहिनेसँ जाँच-ताँच कराकऽ देखाऽ लहक ।"

दरभंगासँ नामी डाक्टर आयलि अपन मोटर चढ़िकऽ । देखिकऽ सन्तोष व्यक्त कयलक— एवरी थिंग इज नार्मल । चिन्ताक कोनो प्रयोजन नहि ।

जहिया नवजात शिशुक क्रंदन पसरलैक, बाबी ओकरा कोरामे लऽ नचैत-नचैत बेहाल भऽ गेलीह, हमर राजा...हमर सोना...

वर्षे दिन बाद बिछौन धऽ लेलनि । सभकेँ बजाबऽ कहलथिन— आब बेर आबि गेल, आब हम जायब । भास्करोकेँ बजबा लियौ...

भरि गामक लोक गामक रानी माँक दर्शन करऽ अयलनि । ककरो विश्वासे

ने होइ जे हिनका किछु हेतनि अखन । सभक संग गप्प कयलथिन । सभकेँ आशीर्वाद देलथिन । भास्करकेँ बजबऽ आदमी गेलैक पटना आ संगे लेने घुरलैक। ओही दिन बाबी बिदा भऽ गेलीह ।

जयबासँ पूर्व बाबी स्वयम् कहलथिन- ''उठा ले भास्कर अपन कोरामे। घरसँ बाहर लऽ चल, आंगनमे तुलसीचौरा लग पाड़ि दे ।'' भास्कर नीक जकाँ कोरामे समेटि बाबीकेँ आंगनमे लऽ अनलकनि ।

भरि गाम चकित छल । कोना हँसि-बाजि रहल छलथिन ! अखन कोना किछु हेतनि ? मुदा आंगन अयबाक दसे मिनटक भीतर गरामे घरघरी आबि गेलनि। भास्कर मुँहमे गंगाजल देलथिन चम्मचसँ । एक घोंट कंठ तर गेलनि । दोसर घोंट मुँहमे रहि गेलनि । गरा टगि गेलनि आ गंगाजल मुँहसँ बाहर टघरि गेलनि ।

भास्कर आँखिक कोरसँ बलबल नोर फेकि देलकै । आँगनमे जमा सौँसे गामक स्त्री-पुरुषक आँखिमे नोरे-नोर छलैक । जे सुनलकै, जतऽ छलै, ततहिसँ कनैत अयलैक ।

आ बाबीक चिता लग ठाढ़ भास्करक मोनमे फेर बहुत रास प्रश्न घुरघुरा उठलैक— बाबी चल गेल । किएक चल गेल ? लोक एना किएक चल जाइत छैक ? गुरुजी मना कयने रहथिन ई सभ सोचबा लेल भास्करकेँ । एकटा राजकुमारक मोनमे युवावस्थामे ई सभ प्रश्न उठल रहनि । अपन सूतल पत्नी आ पुत्रकेँ छोड़ि ओइ प्रश्न सभक उत्तर ताकऽ विदा भऽ गेल छलाह ।

भास्कर कतहु पड़ाय नहि चाहैत छल । किरण आ राजाकेँ छोड़ऽ नहि चाहैत छल । ओ तऽ सभक संग जीबऽ चाहैत छल । मुदा बेर-बेर कोनो सबाल ओकरा मोनमे ठाढ़ भऽ जाइत छलैक । एकटा अनचिन्हार लोक ओकरा मोनमे जनमऽ लगैत छलैक । एकदम अनचिन्हार नहि छलैक ओ लोक । नेनेसँ बेर-बेर मूड़ी अलगबैत-अलगबैत किछु चिन्हार सन भऽ गेल छैक । मुदा ओकरासँ कोनो मतलब नहि राखऽ चाहैत अछि । ओ तऽ अपन परिवार— पत्नी-बेटाक संग एकटा साधारण लोकक जिनगी जीबऽ चाहैत अछि । फेर ई असाधारण प्रश्न सभ कोना जनमि जाइत छैक ओकर मोनमे ? बाबीक काज-तिहार भरि वैह सभ प्रश्न ओकरा मोनमे गोंगिआइत रहलैक- जे प्रिय छैक, जे अप्पन छैक, से कतऽ चल जाइत छैक ? किएक चल जाइत छैक ? घुरिकऽ किएक ने अबैत छैक ?

घुरिकऽ कालेजक होस्टलमे आबि गेल, तैयो ओ प्रश्न सभ पछोड़ धयने

रहलैक । बाबीक गप्प.....ओकर खिस्सा...ओकर रामायण— सुतली-सुतली राति कऽ कानमे गोंगिआइत रहलैक ।

ओ किरणकेँ पत्र लिखि-लिखि अपना मोनकेँ दोसर दिस लऽ जयबाक चेष्टा करय- जे कोरामे खेलाइत अछि, सदिखन तकरे ध्यानमे मगन रहैत छी की कौखन ओकरो ध्यान अबैत अछि जे सुदूर पाटलिपुत्रमे अहाँक नामक जाप करैत बैसल अछि ? हमरा अपने सन्तानसँ ईर्ष्या करबा लेल विवश नहि करू । कहिओ काल इम्हरो ध्यान करू हे ममतामयी !

किरण लिखलैक- 'बड़ चालाक भऽ गेल छी । हमरा प्रसन्न करबा लेल बात गढ़ैत रहैत छी । हम आभारी छी तकर । हमर तऽ सदिखन— जगैत-सुतैत हरदम अहीँपर ध्यान रहैत अछि । हमर कोरामे जे प्रतिमूर्ति दऽ गेल छी अपन तकरा संग मोन बहटारबाक चेष्टा करैत छी, मुदा नहि जानि किएक बड़ डर लगैत अछि आब हमरा अइ हवेलीमे । अहाँक गेलाक बाद ई हवेली भयावह भऽ जाइत अछि । बाबी नहि रहलीह, माय अपन दुनियाँमे रहैत छथि । बहीनक कोठलीक पट्ट बन्द रहैत छनि- सदिखन गुमसुम । लगिते नहि अछि जे हमरे जेठ बहिन छथि, जोर दऽ अहाँक सङ्ग हमर विवाह करौने छथि । चौधरी राति भरि लुच्चा-लफंगा सभक संग बोतल लेने बैसल रहैत छथि हवेलीमे । हुनका टोकबाक साहस ने अहाँक मायमे छनि, ने हमर बहिनमे । हमरा तँ लगैत अछि जेना बाबूओ डेराइत छथिन हुनकासँ । बाबूक कोठलीमे जयबाक साहस ककरो नहि छनि । दुनू बाप-बेटाक आमना-सामना कम होइत छनि । कहिओ काल होइतो छनि तँ हमरा लगैत अछि जे बाबुए आँखि बचबैत पड़ा जाइत छथि । ओइ कालमे चौधरीक आँखि धहधह जरैत रहैत छनि । ओइ धधरासँ हमरा बड़ डर होइ-ए । लगैत अछि जेना परिवारक कोनो अनिष्ट होमऽवला होइ । भऽ सकैत अछि हमर भ्रम हो । मुदा हमरा जे लगैत अछि, से अहाँकेँ लिखि देलहुँ ।

हमरा बड़ डर लगैए- अहाँ लेल, राजा लेल । सौँसे परिवार लेल । कोनो अनिष्टक आशंकासँ कोंढ़ हरदम कँपैत रहैत अछि । अहाँ जल्दी पढ़ाइ खत्म करू आ चल आउ । राजा आब बाजब सीखि रहल अछि । एक बेर ओकरो मुँहे सुनि जइयौक- कोना 'पप्पा' कहैत अछि अहाँकेँ....।''

भास्कर नहि जा सकलैक तुरत । औनर्सक परीक्षा भऽ गेल छलैक । परिणामो निकललैक । आरती अपने आयलि रहैक अखबार लेने- ''ऐ बेर फेर बाँचि गेलहुँ अहाँ । पहिल स्थान फेर मारि लेलहुँ । मुदा एम.ए. मे नहि छोड़ब । कांग्रेचुलेसन्स बेबी-फादर !

आरती ओकरा बेबी फादर कहऽ लागल छलैक । ओकरा क्रोध नहि होइत छलैक । आश्चर्य होइत छलैक जे सेकेण्ड भेलोपर...ओकरासँ हारि गेलोपर ओतेक प्रसन्न कोना रहैत छलैक आरती ! ओ सेकेण्ड भऽ जाइत तँ मुँह लटकि जइतैक ।

एम.ए. मे नाम लिखौलाक बाद एक दिन भास्कर आरतीसँ कहलकनि- ''अहाँक ह्रदय कतेक पैघ अछि आरती ! अहाँ सन कम्पीटीटर पाबि भाग्यशाली छी हम ।''

आरतीक आँखिमे नहि जानि कोन भाव आबि लुप्त भऽ गेलैक । हँसैत कहलकै- 'सत्ते । ह्रदयक बात बूझि लैत छियै अहाँ !'

भास्कर चौँकिकऽ ओकरा दिस देखलकै । आरती सम्हरि गेल रहैक- ''एना चौँकू नहि बेबी फादर ! हँसी कयने रही हम । अहाँक एही सरलतापर तऽ दया आबि जाइत अछि आ सभ परीक्षामे छोड़ि दैत छी । सेकेण्ड हैब तँ नेना जकाँ कानऽ लागब, फेर हमरे आँचरसँ नोर पोछऽ पड़त...। छी ने हम बहादुर लड़की— ए ब्रेव गर्ल...

भास्करो कने दुष्टतासँ कहलकै- ए ब्रेब नौटी स्वीट गर्ल....।

आरती बनाबटी क्रोधसँ कहलकै- ''कनियाकेँ चिट्ठी लिखि देबै बेबी फादर....।''

भास्कर अपन चिट्ठीमे लिखलकै- ''परीक्षामे नीक जकाँ पास भेलहुँ, एम.ए.मे नामो लिखा लेलहुँ । गाम नहि आबि सकलहुँ । छुट्टी छल मुदा प्रतियोगिताक फार्म भरि लेने छी । अहाँ तामस नहि करब । अहीँ सभ लेल ई सभ कऽ रहल छी । राजाक 'पप्पा' कहब तँ हम एतहुसँ सुनैत रहैत छी ।

अहाँकेँ तँ हम बहादुर बुझैत रही । एतेक डेरबुक कोना भऽ गेलहुँ अहाँ ? हवेलीक कोनो अनिष्ट नहि हेतैक । अपन मोनसँ भ्रम बाहर कऽ दिअऽ ।

भैया लेल अहाँ चिन्ता नहि करू । हुनकर स्वभाव शुरुएसँ एहिना छनि । भौजी सन स्त्री पाबियोकऽ नहि बदललाह । शराब हुनकर पुरान संगी छनि । बाबूजीकेँ हुनकासँ डेरेबाक कोनो कारण नहि छनि । अहाँकेँ भ्रम भेल अछि । एक तरहे दुनू गोटेक स्वभाव आ व्यवहार मिलैत छनि । घरमे अपवाद हमहीं छी ।

भौजी लेल हमरो चिन्ता रहैत अछि । ओ एना गुम्म-सुम्म किएक भऽ गेलीह ? हरदम हँसैत-हँसबैत रहैत छलीह भौजी । भितरे-भीतर कोनो दुख हुनका

घुन जकाँ खा रहल छनि । भैया लेल नहि हेतनि ओ दुख । हुनकर आदति आ अत्याचारक अभ्यस्त भऽ गेलि छथि ओ । भरिसक धीया-पूता नहि हेबाक दु:ख मोनक कोनमे दबल पीड़ा दऽ रहल हेतनि । वयस भेलनि आब । अहाँ राजाकेँ बेशी काल हुनके लग छोड़ि दिऔक ।

किरणक दोसर पत्रमे एकटा भारी विस्फोट भेलैक— जकर डर छल, सैह भेल । प्रेमा पीसी कनैत चिचिआइत आँगनसँ चल गेलीह । हुनकर गेलाक बाद हुनकर बेटा, अहाँक संगी ब्रह्मा, हवेलीमे पैसिकऽ भैया-बाबूजी आ सौँसे चौधरी खानदानकेँ गारिक तर कऽ गेल । तामसे बताह भऽ गेल छल । ओकर मायक इज्जतिपर हमला भेलैक हवेलीमे । ओ हवेलीमे आगि लगा देबऽ चाहैत छल । भैया तऽ घरेसँ लापता भऽ गेलाह, बाबूजी नहि जानि कोना बर्दाश्त कयलथिन । हुनकर आँखिमे एकटा भयानक भाव हम देखलियनि । नहि जानि प्रेमा पीसी आ ब्रह्माक की हेतनि ?

ओना हैबा लेल आब किछु बाँकी नहि छनि । प्रेमा पीसी अपने हमरा कहलनि । अइ हवेलीमे हुनकर सभ-किछु पहिने लुटा गेल छलनि । पहिने अहाँक बाबू आ तखन अहाँक भैया । प्रेमा पीसी पाथर भऽ गेल छलीह । सुनिकऽ हमहूँ घृणासँ सिहरि गेलहुँ ।

ई सभ कहबा लेल नुकाकऽ आयल छलीह । कनैत कहलनि- ''आइ अहाँकेँ सभटा कहब कनियाँ ! बिना सभटा कहने मोन चैन नहि हैत । भास्करकेँ अपन बेटा जकाँ पोसलियैक- अपन ब्रह्मोसँ बेशी दुलार कहब तऽ डाइन सन लागब । मुदा से हम कयलियैक । अइ हवेलीमे सभक लेल, नोकरो-चाकरक लेल दिन-राति चूल्हिमे झोंकाइत रहलौं । हवेलीक मालिक एक दिन एकटा दोसर आगिमे झोँकि देलनि । विधवाक धर्म नष्ट कयलनि । कनैत-कनैत बताहि भऽ गेलहुँ । फेर आहँक भैसुर ओकरा दोहरौलनि । बेरा-बेरी दुनू दिस झिकाइत रहलहुँ । खाली एकटा मुर्दा देह बनिकऽ रहि गेलहुँ । आत्मा मरि गेल । नहि जानि किएक, ओहि राति जखन जानवर जकाँ नोचऽ-काटऽ लगलाह अहाँक भैसुर तँ मोन विद्रोह कऽ उठल । चिचिआइत पड़ैलहुँ, भरि गाम बूझि गेल । आब कोनो डर नहि रहल । हमर निर्णय तँ ऊपर हैत । समाजक हमरा डर नहि अछि । डर अछि ब्रह्माक । ओकरा कहि पछता रहल छी हम । ओ बताह भेल अछि । हवेलीक ओ की बिगाड़तैक... मुदा ओकर रक्षा के करतैक ? अहाँ भास्करकेँ लिखि दिऔ कनियाँ....वैह टा बचा सकैत छैक ब्रह्माकेँ ।''

तेँ लिखै छी जे जल्दी आउ । हमरा बड़ डर लगैत अछि । अहाँ हँसब जे हमरा कथीक डर ? अपन घरमे कोन डर ? हम आइ निस्संकोच भऽ लिखैत छी जे ई हवेली ओतबे दिन हमर घर रहैत अछि, जतबा दिन अहाँ रहैत छी एतऽ । अहाँक जाइत देरी ई हवेली एकटा भुतहा घर बनि जाइत अछि आ हमरा सभ ठाम डर लगैत अछि । बाबी छलीह तँ हवेलीक एक भागमे सुख-शान्ति आ आराम भेटैत छल । आब ओहो नहि रहलीह । ई हवेली एकदम डेरौन लगैत अछि । अहाँ जल्दी आउ ।

किरण प्रतीक्षामे छलि ।

दिन-पर-दिन बितल जा रहल छलैक । भास्कर ने कोनो चिट्ठी देलकै, ने समाद । दुर्गापूजा-दीयाबाती सभ बीति गेलैक । किरणक मोनमे एकटा आहत अभिमान छटपटाइत रहलैक ।

हवेलीमे आब एक्को क्षण ने रहल जाइत छैक ओकरा । सदिखन कोनो भय । ऊपरसँ हवेली बड़ शान्त लगैत छैक । प्रेमा पीसीक काण्ड आ ब्रह्मक उग्र विद्रोह आ दोषारोपणक बाद हवेली आर शान्त भऽ गेल छलैक । हवेलीमे लोक ओहिना कम छलैक, खबासे-खबासिनी, चरवाहे-नौकर बेशी । ओहो सभ जेना डेरायल सन रहय— सदिखन सहमल ।

महेन्द्रनाथ चौधरीक खबास छलनि गोपिया । ओ हरदम हुनके लग रहैत छलनि । अनकर कोनो काज ओ नहि करैत छल । आशा चौधराइनक कोनो खास खबासिनी नहि छलनि । भनसाघरक काज देखैत छलैक रेमनी । वैह हुनको टहल-टिकोरा करैत छलनि । सचिनक खबास छलनि सुरजा आ खबासिनी रहनि ओकर बहिन गुजरी । रम्भाक खबास रहनि बतहा आ किरणक खबासिनी रधिया । गाय-महीसमे चलितराक सङ्ग ओकर बेटा ठकना आ सुबधा रहैत छलैक । ओ सभ दोसर खण्डमे रहैत छलैक । पछबरिया घरक पाछाँ, जतऽ माल-जालक घर आ जरनघरा छैक ।

अपन दीदीक कोठलीक बगलेमे किरणक कोठली छलैक । बतहा अधिक काल रम्भाक कोठलीमे घोसिआयल रहैत छल । शुरू-शुरूमे कोनादन लगैक ओकरा एकटा खबासक एना कोठलीमे दिनराति घोसिआयल रहब । बादमे अभ्यस्त भऽ

गेलि । दीदीक एकान्तवास आ ओकर चुप्पी आ उदासी ओकरा रहस्यमय लगैक । एक दिन साहस कऽ दीदीक कोठलीमे गेलि । रम्भा ने ओकर कोठलीमे अबैत छलैक ने ओकरा अपन कोठलीमे बजबैत छलैक । ओहि दिन कोठलीमे पैसि किरण देखलकै जे ओकर दीदी बिछौनपर पड़ल छलैक- लाल-लाल आँखि, केश छिड़िआयल । ओकरा डर भेलैक । लग जा पुछलकै- मोन खराप छौ दीदी ?

दीदी हँसऽ लगलैक- ''आइ बहिन कोना मोन पड़ि गेलौक ? बगलक कोठलीमे दीदी एकसरि पड़ल रहैत छौक, लगमे कहिओ हुलकियो देबाक मोन नहि होइत छौक ? हमरासँ डर होइत छौक ? लगमे बिछौनपर बैसैत किरण कहलकै— ''उन्टा दोष नहि दे दीदी ! छोट बहिन छियौ, अपने जोर लगा अइ हवेलीमे अनलैं । एकसर एहि अनचिन्हार आ डेरौन हवेलीमे सभसँ त्रस्त रहैत छी, कहिओ घुरिकऽ खबरि नहि लेलैं । अइ कोठलीक एकान्तमे नहि जानि कोना तोहर मोन नहि अगुताइत छौ ? आइ जबर्दस्ती हमहीँ चल आयल छियौ ।''

रम्भा जेना डेरा उठलैक । एकदम निषेध करैत बाजि उठलैक- ''नहि आ, नहि ताक एम्हर । ई संसार, हवेलीक अइ कोनाक संसार अभिशप्त छैक, एहिमे हमरे जीबऽ दे । तोँ अपन दुनियाँमे प्रसन्न रह । इम्हरका छाया तक स्पर्श नहि कर । हमरा छोड़ि दे एहि कोठलीक एकान्तमे ।''

किरण अपन बहिनक गरामे दुनू बाँहि दऽ छातीपर पड़ि रहल— किएक दीदी ? किएक छोड़ि दियौ तोरा ? नहि छोड़बौ आब एकसर ओकयबा लेल । कोन एहन दुःख छौ तोरा जकरा लेल एना एकान्तमे प्राण देबैं ? जे नहि छौ, तकरा लेल कोन दुख ! हमरा लोकनि तऽ छियौ- राजा छौक...

अपन छोट बहिनक बुझनुक सन गप्पपर रम्भाकेँ हँसी लागि गेलैक— ''अपन बाँझ हेबाक दुखसँ नहि नुकायल छी । तोँ तऽ छोट बहिन छैहे । अइ हवेलीमे आबि भास्करोकेँ अपन सन्ताने जकाँ पोसलियैक, तेँ तोरा मायक ममताक संग कहैत छियौ- ''इम्हरका छायो दिस नहि बढ़ा हाथ । जरि जयबैं, अपवित्र भऽ जयबैं । एहि आगिमे एकसरे जरऽ दे हमरा...''

किरण क्रोधे लहकि उठल- ''आबऽ दहुन आइ । अबस्स पुछबनि हम । सभटा मर्यादा तोड़िकऽ पुछबनि । भैंसुर छथि, जेठ बहिनोइ छथि । दुनू तरहें श्रेष्ठ छथि । मुदा आइ अबस्स पुछबनि हुनकासँ जे ई शोभा दैत अछि अहाँकेँ ? घरमे सुन्दरी युवती स्त्री एक्सर पड़लि बाट तकैत रहैत अछि आ अहाँ जहाँ-तहाँ मुँह

मारैत रहैत छी । एक्कोटा मौगी अछि अइ परोपट्टामे हमर बहिन सन आ अहाँ छुतहरनी सभक कोरामे ओंघरायल रहैत छी । आइ अबस्स लेबनि हम जवाब ।''

रम्भा अपन छोट बहिनक तमसायल आकृतिकेँ स्नेहसँ तकैत रहल । आँखिमे बहुत रास नोर भरि अयलैक । ओकरा नुकबैत कहलकै- ''जवाब तोरा नहि भेटतौक किरण ! ओ नहि दऽ सकथुन जवाब तोरा । आइ हमहूँ नहि कहि सकबौक किछु, कहबाक साहसे नहि अछि । भरिसक कोनो दिन कहबाक साहस होअय । यदि ककरो कहि हैत, तऽ तोरा अबस्स कहबौ । ताधरि दूरे रह... एम्हर नहि ताक...नहि पुछहिक ककरोसँ किछु....।

किरण आर उदास भेल घुरि आयलि । दीदी आ ओकर कोठली आर रहस्यमय भऽ उठलैक । फेर बहुत दिन धरि नहि गेल ओम्हर । भास्करक कोनो चिट्ठी-पत्री नहि आबि रहल छलैक । मोन उद्विग्न छलैक...राति कऽ निन्न नहि होइ । आ राति बितलापर दीदीक कोठलीसँ कखनो जोरसँ हँसबाक तऽ कखनो सिसकि-सिसकि कऽ कनबाक स्वर ओ स्पष्ट सुनैक । सुनिकऽ मोन औनाय लगैक । पैर ओम्हर जाय लगैक । फोर दीदीक निषेध मोन पड़ैक आ पैर बन्हा जाइक ।

कोनो-कोनो राति दीदी जोरसँ बतहापर चिचिया उठैक-''निकल....निकल अइ कोठलीसँ ! तोहर एहन मजाल...हमरापर हुकूमति करबैं तोँ...दू कौड़ीक नौकर, निकल अखने अइ घरसँ !''

दीदीक उन्मादिनी स्वर सुनिकऽ ओकर इच्छा होइ जे दौड़िकऽ ओइ कोठलीमे जाय आ लतियाकऽ बाहर कऽ दैक बतहाकेँ... दीदी बताहि भेल छैक...सुतली रातिमे एकटा नौकरकेँ घर घुसौने रहैत छैक...आर क्यो नहि भेटलैक ओकरो...छि: छि: छि: !

फेर दीदीपर दया आबि जाइत छलैक । क्रोध आ घृणा बिला जाइत छलैक । क्रोध, घृणा आ दयाक ई चक्र सभ दिन ओकर मोनमे उठैत छलैक मुदा दीदीक कोठली धरि जा नहि होइत छलैक । दीदीक निषेध ओकर पैर बान्हि देने छलैक ।

फेर जेना एकटा बिहाड़ि उठलैक हवेलीमे । राति बेशी नहि भेल छलैक । किरण खयनो नहि छल तावत । प्रेमा पीसी चिचिआइत सचिनक कोठलीसँ पड़यलथिन । हुनकर चीत्कार सुनि किरणो अपन कोठलीसँ बाहर आबि गेल आ रम्भो । आशा चौधराइन सेहो अपन कोठाक ओसारापर आबि गेलीह । भनसाघरक रेमनी आ पछुआड़क नोकर-चाकर सभ जमा भऽ गेल छलैक । बीच आँगनमे

अर्धनग्न ठाढ़ि छलीह प्रेमा । कपड़ा चिर्री-चिर्री भेल छलनि, सौसेँ मुँह नोछड़ल-काटल छलनि, मुदा अपना देह झँपबाक होश नहि छलनि । ओ खाली चिचिया रहलि छलीह बताहि जकाँ । जेना क्यो कण्ठ मोकि रहल होनि, ओ अपन प्राणरक्षार्थ चिचिया रहल होथि....चिचिआइत-चिचिआइत बताहि भऽ गेल रहथि- ''पापक हवेली थिक ई । एतऽ मनुक्ख नहि, जानवर रहैत अछि । नोचिकऽ खा लैत छैक मनुखकेँ । अबै जो, अबै जो, देखहिक अइ इवेलीक जानवर सभक चेहरा ।''

सभ अपन-अपन स्थानसँ हुलकैत रहलैक, आँगनक मुँहथरि धरि अयलैक, मुदा क्यो आगू नहि बढ़लैक । प्रेमा चिचिआइत आँगन सँ बाहर दौड़लीह— तोँ सभ नहि बिगाड़बहिक एकर किछु । डर होइत छौक तोरा सभकेँ । हमर बेटा देखतैक एकरा सभकेँ । बजबैत छियै ओकरा...

आँगन शान्त भऽ गेलैक । नौकर-चाकर अपन-अपन काजमे लागि गेल । रम्भा आ आशा चौधराइन सेहो अपन-अपन घर गेलीह । खाली किरण अपन जगहपर ठाढ़ि रहलि, जेना पैर सटि गेल होइ । प्रेमा पीसीक ओ उन्मादिनी रूप देखि ओ स्तम्भित रहि गेल छल ।

नहि जानि कतेक काल ठाढ़ि रहलि ओ ! तखने ब्रह्मा एकसर गरजैत आँगनमे अयलैक । खाली हाथ, मुदा क्रोधे थरथराइत, अभद्र गारि पढ़ैत- ''निकल घरसँ आइ यदि एक बापक जनमल छेँ । निकल सार सचिन आ महेन्द्र चौधरी । आइ दुनू बाप-बेटाकेँ चीरिकऽ राखि देबौक अही आँगनमे !''

आँगनमे क्यो नहि बहरेलैक । खाली किरण ठाढ़ि छलि अपन ओसारापर । ओ ब्रह्माकेँ चीन्हैत छलैक । ओकर स्वामीक दोस्त । केहन शान्त आ सभ्य छलैक ! स्वस्थ शरीर आ सुन्दर आकृति, रंग कने पिण्डश्याम । भौजी कहैत छलैक किरणकेँ आ रम्भोकेँ। आशा चौधराइन घरसँ बहरयलीह, रम्भो घरसँ बहरैल । दूनू अपन-अपन ओसारापर ठाढ़ि भऽ गेलीह ।

ब्रह्मा जेना ककरो नहि देखलकनि । ओ तऽ महेन्द्रनाथ चौधरी आ हुनकर बेटाकेँ ताकि रहल छलै— 'अइ पापक हवेलीकेँ जराकऽ सुड्डाह कऽ देबैक । जे हाथ हमर मायक देह दिस बढ़ल, तकरा काटि देबैक हम । निकल बेटी...

गारिक तर कऽ देलकै ब्रह्मा । सचिन घरसँ निपत्ता छल । महेन्द्रनाथ चौधरी तामसे थरथराइत अपन ओसारापर आबि गेलाह । किरणकेँ डर भेलैक जे ब्रह्मा कोनो काण्ड करतैक । मुदा ओ ओहिना आँगनमे ठाढ़ सातो पुरखाक उद्धार करैत

रहलैक । महेन्द्रनाथ चौधरीक आँखिमे रक्तिम ज्वाला दहकऽ लगलनि, मुदा किछु बजलाह नहि ।

नौकर-चाकर सभ आगू बढ़लैक । ब्रह्माकेँ पकड़िकऽ आँगनसँ बाहर लऽ गेलैक । जाइतो-जाइतो गारि दैत रहलैक ब्रह्मा ।

फेर सभ अपन-अपन कोठलीमे घुरि गेल । हवेली एकदम शान्त भऽ गेलैक जेना किछु भेले नहि होइ ! किरणकेँ हवेली आर डेरौन लागऽ लगलैक। भास्करपर क्रोध होबऽ लगलैक । चुप्पी सधने कोना निश्चिन्त दूर बैसल छलैक !

प्रेमा पीसी ओइ साँझ नुकाकऽ अंगना अयलथिन । कल जोड़िकऽ कानऽ लगलथिन । अपन सभटा कथा कहलथिन । ब्रह्माक अनिष्टक आशंकासँ ओ काँपि रहल छलीह । खाली भास्करक भरोस छलनि । नेहौरा कऽ चिट्ठी लिखऽ कहऽ आयल छलथिन ।

किरण लिखलकै चिट्ठी । सभ बात लिखलकै चिट्ठीमे । तैयो कोनो उत्तर नहि अयलैक । आहत अभिमान मोनमे छटपटाय लगलैक ।

दीदीपर सेहो बड़ क्रोध भेलैक । एना कोना बर्दाश्त करैत अछि ओ ? प्रेमा पीसीक संग एहन काण्ड कयलथिन भैया, तैयो चुपचाप देखैत रहलीह । फेर अपन कोठली चल गेलीह, जेना किछु भेले नहि होइ ! ओइ राति दीदीक निषेध बिसरि गेलैक किरण । रम्भाक कोठलीमे बत्ती जरि रहल छलैक आ बतहा ओही कोठलीमे छलै । तामसे हनहनाइत किरण ओइ कोठलीमे पैसि गेलि । बिछौनपर पेटकुनियाँ देने पड़लि छलैक दीदी । छाती तर दूटा गेरुआ छलैक, आ दहिना हाथ पलंगक नीचाँ लटकल छलैक । मुँहपर केश छिड़िआयल छलैक । पलंगसँ सटल राखल एकटा छोटका टेबुलपर एकटा पैघ सन बोतल राखल छलैक जे आधा खाली भऽ गेल छलैक । बतहा एकटा कोनमे सहटिकऽ सहमल ठाढ़ छलैक । किरणकेँ देखिते कोठलीसँ पड़यलैक । किरण पलंग लग जा अपन दीदीक देहपर हाथ राखि देलकै।

रम्भाक आँखि खुजलैक । फेर बन्द भऽ गेलैक । बड़ मस्किलसँ फेर खुजलैक, फेर बन्द भऽ गेलैक । तेसर बेर चेष्टापूर्वक आँखि खोलैत किरणकेँ चिन्हलकै- ''देखिए लेलैं तोँ ? मना कयने छलिऔक ने जे इम्हर नहि ताक !''

किरण घृणापूर्वक कहलकै- तोहर ई हाल दीदी ! छिः ! लाजे मरि गेलौं हम तऽ । माय बाबूजी सुनथुन तऽ की हाल हेतनि ? ई सभ कहाँसँ सीखि लेलैं दीदी ?

''सिखा देलक गय— समय सभटा सिखा देलक । सभटा लाज, सभटा संस्कार छीनि हमरा निर्लज्जि आ भ्रष्ट बना देलक । तोहर चौधरीकेँ पीबाक शौक छलनि, कहिओ काल जबर्दस्ती चटा दैत छलाह । बोकरैत-बोकरैत बेहाल भऽ जाइत छलहुँ, कण्ठ तैयो जरिते रहैत छल । फेर नहि जानि कहिआसँ, ओही बुन्दसँ कण्ठ तर होमऽ लागल— बिना एकरे एक्को क्षण बितब पहाड़ लागऽ लागल । अइ हवेलीक अइ सुन्न घर-आँगनमे इएह टा चौबीस घंटाक संगी भऽ गेल । क्यो संग नहि देलक हमर, मात्र यैह टा संग देलक....एकरे संग जीबैत छी हम ।

किरण ओहिना घृणापूर्वक कहलकै- ''घरमे आर की क्यो छौक ? हमरा सभक संग जीवन नर्क भऽ जाइ छौक आ कोठलीक अइ एकान्तमे अइ बोतल-गिलासक संग स्वर्ग भेटैत छौक ! किएक ने जीबैत छैं सभक संग... के मना कयने छौक तोरा पूजा-चौकामे जयबासँ ?''

रम्भा ओकर घृणासँ विकृत मुँह देखि हँसऽ लगलैक- 'मना कयने अछि गय...सभठाम वर्जित छी हम । कतहु ने जा सकैत छी । हमर स्पर्शसँ अपवित्र भऽ जयतैक सभ । विश्वास नहि होइत छौक हमर बातक ? पूछि लिअहुन मायसँ, हुनका सभ बूझल छनि । जाय देतीह हमरा पूजाघर आ चौकामे ?

किरणक घृणा विलीन होबऽ लगलैक । फेर अपन बहिनपर दया होबऽ लगलैक । ओकर देह झकझोरैत कहलकै- ''किएक दीदी ? किए ने जाय देथुन तोरा ? कोन अपराध भेल छौ तोरासँ...?

रम्भा जोरसँ ठेलि देलकै ओकरा- नहि छू हमरा । मना कयने छलियौ, हमर छायोक स्पर्श जुनि कर । हमर अपराध अक्षम्य अछि । हमरा क्यो क्षमा नहि देत । ने तोहर चौधरी- ने हुनकर माय । ने ई समाज । सभक घृणा चाही हमरा । हम ओकरे पात्र छी ।

किरण खसैत-खसैत बाँचल । किछु काल अवाक् ठाढ़ि रहल ओइ कोठलीमे । रम्भाक उत्तेजित शरीर फेर शिथिल भऽ गेलैक । हाथ ओहिना पलंगसँ नीचाँ लटकि गेलैक । मुँहपरसँ केश हँटि गेलासँ सुन्दर गोर आकृति रोशनीमे चमकि उठलैक- अपन दुधिया कान्तिक संग ।

किरण कोठलीसँ बाहर आबि गेल । बतहा चौखटिक बाहर ठाढ़ छलैक । ओकरा घृणासँ तकैत ओ अपन कोठली दिस जाय चाहलक । बतहा दौड़िकऽ बाट छेकि लेलकै- ''बचा लिअनु छोटकी कनियाँ, अपन बहिनकेँ बचा लिअनु । हमर

किछु ने सुनैत छथि । सभदिन ई जहर हमहीं आनिकऽ दैत छिअनि । नहि आनि दैत छिअनि तऽ गारि देबऽ लगैत छथि, सहि जाइत छी । फेर बताहि भऽ जाइत छथि, कपड़ा-लत्ता फाड़िकऽ नाङ्गट भऽ जाइत छथि, घरक चीज-वस्तु तोड़ऽ-फोड़ऽ लगैत छथि । नै देखल जाइत अछि छोटकी कनियाँ हमरासँ ई सभ । आनि दैत छिअनि फेर जहर । मरि जयतीह पीबैत-पीबैत बड़की कनियाँ । बहिन छथि अहाँक... कहुना बचा लिअनु । हम नौकर छी... हमर बात नहि सुनैत छथि ।''

किरण एकटा नव दृष्टियें देखलकै बतहा खबासकें । अधबयसू बतहा खबास । बतहा धानुक । मजगूत देह आ कारी रंग । नाक कने पीचल । ठोर पातर आ कपार चाकर । आँखि छोट-छोट । कने भुट्ट सन । कठमस्त देह सदिखन उघारे । खाली जाड़ मासमे देहपर एकटा सलगा । साफ खीचल धोती ठेहुनसँ उपरे धरि । ई खबास ओकर क्यो नहि छलैक, ओकर बहिनक क्यो नहि छलैक । मुदा ओ कानि रहल छलैक, आ ओकर बहिनक जिनगीक भीख माँगि रहल छलैक । किरणकें अपनापर लाज भेलैक- बतहाकें ओ की बुझैत छलैक, एकटा नीच स्वार्थी नौकर ! ओकरा सभसँ कतेक पैघ छैक ओ...अइ हवेलीक कोनो लोकसँ पैघ । बतहाकें ओ कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलै । अपन कोठलीमे आबि गेल ।

अपन दीदी आ बहिनोइक बारेमे सोचि-सोचि ओ बताहि होमऽ लागल । की छैक दूनूक बीचमे, कोन एहन दरारि छैक जे पाटल नहि जा सकैत छैक ? मायसँ पुछतनि जे दीदीकें की दुःख छैक ? अबस्स पुछतनि । हुनका सभ बूझल छनि ।

किरणकें अपन माय मोन पड़लैक । किरणक बिआहक गप्पपर ओ बड़ प्रसन्न छलैक । अपन बड़की बेटी लेल ओकरा दुख रहैक- भगवान कोनो सन्तान नहि देलथिन । छोटकी बेटी ओही घर जयतैक, ओकरा धीयापुता हेतैक, दुनू बहिन सुखसँ रहत । मुदा से कहाँ भेलैक ? हवेलीमे जे देखि रहल छल किरण... ताहिसँ हाथ पैर सुन्न भेल जा रहल छलैक आ मोन आतंकित ।

आ जहिआ ब्रह्माकें बान्हिकऽ बीच आँगनमे ओंघरा देल गेलैक, तहिओ किरणक हाथ पैर सुन्न भऽ गेलैक । सचिनक तीनू लठैत- बेचू, मिट्ठू आ गणेश ब्रह्माकें बान्हिकऽ अनने छलैक । कपार फूटल, सौंसे देह लाठीसँ चूरल ।

ब्रह्मा किलोल कऽ रहल छल- ''हमरा झूठ-मूठ फँसा रहल छथि । हम तऽ अपन घरमे सूतल रही । ई तीनू सचिन बाबूक कुकुर छथि, हुनके इशारापर बान्हिकऽ अनने छथि ।

तीनू लठैत बेरा-बेरी ओकरा मारैत रहलैक- ''चुप चोरा नहितन ! सेन्ह मारैत पकड़ल गेलाह तऽ बात बनबैत छथि ! भड़ारेघरमे सेन्ह दैत छलाह ।''

आँगनमे लोक जमा भऽ गेलैक । मुदा क्यो आगू नहि बढ़लैक । मारिसँ बेहोश होबऽ लागल ब्रह्मा, मुदा चेतनाहीन होमऽसँ पहिने एक बेर जोरसँ चिकरल- यदि अइ अन्यायक बदला नहि ली....महेन्द्रनाथ चौधरी आ ओकर खानदानकें तबाह नहि कऽ दी...अइ हवेलीकें जराकऽ सुड्डाह नहि कऽ दी तऽ हम एक बापक बेटा नहि ।

बेहोश ब्रह्माक देहपर प्रेमा ओंघरा गेलीह । सभकें हाथ जोड़लथिन, नेहोरा कयलथिन, मुदा क्यो नहि सुनलकनि । महेन्द्रनाथ चौधरी आ शचीन्द्रनाथ चौधरीक पैरपर ओंघरा गेलीह । ओ ठोकर मारि देलथिन । चौकीदार ब्रह्माकें बान्हिकऽ लऽ गेलैक ।

कनैत-कनैत बताहि भेलि प्रेमा किरण लग अयलीह- ''अहाँ भास्करकें लिखियौ कनियाँ ! ब्रह्मा ओकर संगी छैक । ओ जनैत अछि जे हमर बेटा चोर नहि अछि । हम पहिने कहने रही कनियाँ, ओकरा लिखियौ...ने तऽ फाँसी चढ़ा देत हमर बेकसूर बेटाकें ई निर्दैया सभ ।''

किरण लिखलकै । तैयो नहि अयलैक भास्कर । ने कोनो चिट्ठिये अयलैक । किरणक मोनमे एकटा आहत अभिमान छटपटाइत रहलैक- बहुत दिन धरि ।

तखन एकटा मोट सन लिफाफ अयलैक । भास्कर लिखने छलैक- ''तामस नहि करब किरण ! अहाँक ओतेक चिट्ठी पाबियोकऽ कोनो उत्तर नहि देलहुँ । ओहन स्थितिमे पत्र आ ओइमे देल सान्त्वना कोनो काज नहि दैत । अहाँ एकसरि छलहुँ हवेलीमे आ हमर समीप चाहैत छलहुँ । हमरो मोन औनाइत छल जल्दीसँ जल्दी अहाँक लग पहुँचबाक लेल— अहाँक लग, राजाक लग, अहाँ सभक लग । मुदा उपाय नहि छल । मोनकें जाँतऽ पड़ल । हम एहन व्यवस्थामे लागल रही जाहिसँ सभ दिनक लेल अहाँ सभ हमर संग रही । अहाँकें हवेलीसँ बहार लऽ चली कतहु । प्रतियोगिता परीक्षा भऽ गेल, ओकरे तैयारीमे लागल रही । यदि सफल हैब, तऽ किछुए दिन, प्रशिक्षणकाल धरि, फराक-फराक रहब । फेर अपन डेरा हैत- डेरामे अहाँ रहब, राजा रहत । मायो-बाबूजी औताह कौखन— भैया-भौजी सेहो । ओ हवेलीसँ नीक लागत । ओ अहाँक अपन घर हैत । ओ घर, अप्पन घर अहाँकें भेटि सकय, तकरे चेष्टामे रही । तें, नहि लिखलहुँ तीन वा चारि माससँ किछुओ । अहाँकें एहि लेल नहि लिखलहुँ जे अहाँपर ध्यान गेल तऽ रहल

नहि जायत । दौड़ल गाम जाय पड़त, सभ तैयारी बेकार भऽ जायत । आ बाबूजी-भैया सभकेँ एहि लेल नहि लिखलियनि जे तुरत लिखताह— कोन काज छऽ नौकरी-चाकरीक । अपन घरमे रहऽ, खा पिबऽ । कोन चीजक कमी छऽ ! भगवानक देल सभ किछु छऽ....

इएह भगवानक देल सभ-किछु, नहि सोहाइत अछि हमरा । ओना तऽ अपनो जे कमायब से भगवानेक देल हैत, मुदा बाप-पुरखाक कमाइ बैसिकऽ खयनाइ नीक नहि लगैत अछि । नहि जानि किएक बेर-बेर मोनमे प्रश्न उठैत अछि जे पुरखाक अरजल सम्पत्तिमे कतहु कोनो दोष तऽ नहि अछि ! ई प्रश्न कखनो अनुचितो लगैत अछि- अपने पुरखाक कीर्तिपर अविश्वास ? मुदा लाख दबैलोपर ई प्रश्न मोनमे उठैत रहैत अछि । चाहैत छी जे अइ अरजलकेँ बिसरि अपन कमाइसँ खाइ, अहाँ सभकेँ खुआबी- जतबे जुड़य, जैह जुड़य । बुझियैक तऽ जे अपन बुद्धि आ पसेनाक इमानदार कमाइसँ कतेक अरजल जा सकैत छैक ? अहाँ हमर संग देब, ई हमरा बूझल अछि । तैयो ई सभ पहिने नहि लिखलहुँ अहाँकेँ । हवेलीक वातावरणमे पहिनेसँ डेरायल आ भयभीत रही ।

प्रतियोगिता परीक्षाक बादो एम.ए.क पढ़ाइ चलि रहल अछि । यदि सफल भेलौं कम्पीटीशनमे तऽ एम.ए. बादोमे कऽ लेब । नहि तऽ एम.ए. करब । फेर कम्पीटिशनमे बैसब । कोनो कालेजमे नौकरी करब । अहाँ संग रहब । सभ मास पहिली तारीख कऽ अपन मेहनतिक कमाइ अहाँक हाथमे देब । अहाँ ओही टाकामे घर चलायब- ककरो अरजल वा ककरो दानक भरोसपर नहि । अखन अहाँकेँ अपन गाम-घरसँ आनि एकटा एहन हवेलीमे राखि देने छी जे हम्मर एहि लेल अछि जे हम ओहिमे जनमल छी, हमर पुरखा ओकरा बनौने छलाह । ओइमे अहाँ डेरायलि रहैत छी, हमहूँ एतऽ निश्चिन्त नहि छी । अहाँक लेल एकटा घरक निर्माणमे लागल छी- छोटे-छीन मुदा अप्पन, हमर-अहाँक-राजाक...

हमरापर जे तामस होअय, तकरा आब थूकि देब । अहाँ एको क्षण लेल मोनसँ हँटल नहि रही । अहाँकेँ पत्र नहि लिखि हम स्वयम् अपनाकेँ यातना दऽ रहल रही । एकटा लोभ अछि हमरा मोनमे जे एकर बाद आब सभ दिन हमरा लग रहब...कोनो चौधरीक हवेलीमे नहि ।

ओना, हवेली हमरा प्रिय सेहो अछि । हमर बाबी छल ओइमे, हमर माय अछि ओतऽ, हमर नेनपन बितल ओइमे आ हमर माय-बाप-भाइ-भौजी रहैत छथि, मुदा अपन सभ स्नेहक बादो, ओइमे रहैत काल एकटा प्रश्न हमरा नेनपनेसँ तंग करैत

रहल अछि जे कोना ककरो हवेली बनि जाइत छैक आ क्यो खोपड़ीमे रहि जाइत अछि ! ईमानदारीक कमाइसँ हवेली ठाढ़ भऽ सकैत छैक वा नहि । हम अपने कमाकऽ ई देखऽ चाहैत छी जे हमर कमाइसँ, हमर ईमानदारीक कमाइसँ, अहाँ लेल कोनो घर ठाढ़ भऽ सकैत अछि वा नहि ? हम अपन नेनपनक प्रश्नक उत्तर ताकि रहल छी किरण !

अहाँ हमर संग दिअऽ आ तामसकेँ थुकरि दिअऽ । परीक्षा भऽ गेल अछि । हमरा पूरा विश्वास अछि जे हम अहाँक लेल एकटा हवेली नहि, एकटा घर अबस्स बना सकब । तखन पुरनो हवेलीमे किछु दिन काटि लिअऽ । हमहूँ आबि रहल छी, किछु दिन गाममे रहब । अहाँ अपने अकच्छ भऽ कहब-"जाउ आब । पढ़ू-लिखू गऽ । दुलार-मलार बड़ भेल ।"

दुलारक नामपर प्रेमा पीसी आ अहाँक चिट्ठीमे हुनकर गप्प मोन पड़ि गेल । सत्ते बड़ मानैत छलीह हमरा । बिपत्तिमे अहाँक मार्फत समाद देलनि आ हम कायर जकाँ नुकायल रहलहुँ । हुनकर कथा सुनि अपन हवेली आ बाप-भाइसँ घृणा सन होबऽ लागल । भैया दऽ तऽ हम सभ बुझैत छलियनि । मुदा बाबूजी ! अहाँक पत्रसँ देहमे आगि लागि गेल छल । अपन देहक शोणितसँ घृणा भेल छल । प्रेमा पीसी हमरालोकनिकेँ......हमरा क्षमा करतीह वा नहि, से नहि जनैत छी । मुदा अहाँ हुनका कहि देबनि जे हमरा अछैत ब्रह्माक कोनो अनिष्ट नहि हेतैक । हम अबस्स छोड़बा देबैक ओकरा । ब्रह्मा हमर दोस्त अछि, हम चिन्हैत छियैक ओकरा । ओ चोरि किन्हु ने कऽ सकैत अछि ।

बस्स, नौटा दिन आर अछि । आइ शुक्र छैक, अगिला शनिकऽ भोरे गाम पहुँचि जायब । राजाकेँ नीक जकाँ पप्पा कहब सिखौने छियैक ने ? अहाँ की कहब हमरा- राजाक बाबू ? पुरना सम्बोधन सभ मोन अछि ने ?"

चिट्ठी पढ़िकऽ किरन हुलसि उठल । भास्कर आबि रहल छैक । ओकरा सभटा तामस अपने मोनमे रहतैक । बाहर नहि आबऽ देतैक । अबस्स कम्पीटीशनमे सफल हेतैक ओ । अपना संग अइ हवेलीसँ बाहर लऽ चलतैक ।

खुशीसँ नाचऽ लागलि किरन । राजाकेँ कोरामे उठा हवामे फेकऽ लगलैक । राजा आब नीक जकाँ बाजऽ लागल छैक । हँसैत हँसैत फदकलै- माय, बड़ खुशी छैं आइ ?

ओकरा छातीसँ सटा लेलकै किरण- "सत्ते बेटा ! आइ बड़ खुशी छियौ

हम । तोहर पापा आबि रहल छथुन । तोरा हमरा सबकें अइठामसँ लऽ चलथुन । आब हुनके संग रहबैं तों ।''

राजा प्रसन्न होइत मायसँ लपटि गेल- ''सत्ते माँ !''

रम्भाकें नहि जानि किएक आइ बेर-बेर मोन पड़ऽ लगलैक ओ सभ जे बीति गेल छलैक, जे फेर घुरिकऽ नहि ओतैक कहिओ ।

भोरे भास्कर गोड़ लागऽ आयल छलैक । सूर्य माथपर आबि गेल छलैक मुदा रम्भा बिछौनेपर पड़लि छलि । देह अलसायल छलैक आ आँखिमे छलैक लाल-लाल डोर । रतुका नशाक असरि अखन धरि मौजूद छलैक । भास्करकें देखि सम्हरैत उठि बैसलि-''गाड़ी आबि गेलैक ? एतेक दिन बीति गेलैक ?''

भास्करक ठोरपर दुष्ट हँसी पसरि गेलैक- ''अखनो धरि वैह हाल अछि भौजी अहाँक ! दिन कतेक बीति गेलैक, सेहो होश ने रहैत अछि मुदा से वाजिबे। अहाँकें देखिकऽ अखनो लोककें दीन-दुनियाक खबरि बिसरि सकैत छैक ।''

रम्भोक ठोरपर ओहने दुष्ट हँसी पसरि गेलैक- अच्छा ! अहाँ तऽ खूब होशियार भऽ गेल छी पटनामे रहिकऽ । हम कहबैक किरणकें जे होशियार रह, उड़न्त भऽ गेल छथुन ।

''रहऽ कहाँ देलहुँ भौजी ! उड़न्त रही कहिओ । अहाँ दुनू बहिन तऽ कामरु कमख्यासँ जादू सीखि आयलि छी । उड़न्तकें झट पोस बना दैत छियैक आ पिजड़ामे बन्द कऽ दैत छियनि । मजाल छैक जे कहिओ इम्हर-ओम्हर पाँखि फड़फड़ाओत ?''

ओकर हँसीपर रम्भाक हँसी बिला गेलैक । एकदम उदास भऽ गेलैक । भास्करकें अपन बातपर अपने गरानि लागऽ लगलैक । कोना बजा गेलैक एहन बात ? भैया एमहर-ओमहर बौआइत छथिन, से सभकें बूझल छैक । कहियो भौजीक पोस नहि मानलथिन, सेहो सभकें जानल छैक । तखन कोना एहन निर्दय उपहास कऽ देलकै भास्कर ?

मुदा भास्करक ई सोचब जे भैया कहिओ भौजीक पोस नहि मानलथिन- एकदम असत्य छलैक । घरमे आर क्यो जानथि वा नहि, रम्भा नीक जकाँ जनैत

अछि जे सचिन पोस मानने छलैक । बताह भऽ गेल रहैक रम्भाकें देखिकऽ । बारहे वर्षक छलि रम्भा । चतुर्थीक दिन घघरा केँचुआ उतारि जहिना साड़ी-ब्लाउज पहिरा देलकै— एकटा अल्हड़ि किशोरीसँ सज्ञान वयस्क आ सलज्ज परिणीता बनि गेल रम्भा । आ ओइ सलज्ज परिणीताकें निहारैत सचिन अवाक् रहि गेल । लालटेनक मद्धिम इजोत ओइ आकृतिक धवलतासँ आर प्रखर भऽ गेल छलैक । रम्भाक स्निग्ध, सुचिक्कन आ निदग्ग त्वचाक स्पर्शसँ भास्करक देहमे झुनझुनी पैसि गेल रहैक । ओकर पैघ-पैघ कारी पपनीसँ झाँपल आँखिकें स्पर्श करबा लेल ओकर ठोर व्याकुल भऽ उठल रहैक आ आँखिक स्पर्श करैत ओकर ललचाइत ठोर नीचाँ पातर-पातर ठोर धरि पहुँचि गेल छलैक । ओकर स्पर्श आ देहगंधमे मातल सचिन ओकर घनगर रेशम सन मोलायम छह-छह करैत केशमे भुतिया गेल । भरि राति भुतिआयले रहल ।

रम्भाकें ओहिना मोन छैक सभटा । किछुओ बिसरल नहि छैक । सचिनक ओ अथाह स्नेह । ओ पागलपन भरल दुलार । मुदा लगैत छैक जेना पछिला जन्मक गप्प होइ । भास्कर की जाने गेलैक ई सभ गप्प । जनमिकऽ ठाढ़ो ने भेल रहय धरतीपर ।

तहियो मुदा सचिनकें इम्हर-ओम्हर मुँह मारबाक प्रवृत्ति रहैक । कम्मे वयसमे परकि गेल छल । अपनासँ पैघ-पैघ मौगी सभक चस्का लागि गेल रहैक । ब्राह्मणी-सधवा-विधवा-कुमारिसँ राड़-रोहिया तक कोनो परहेज नहि छलैक । सासुर पैर दितहि ई बात बूझि गेल छल रम्भा ।

पहिल बेर पकड़ायल तऽ लाजे काठ भऽ गेल सचिन । पैर पकड़ि कानऽ लगलैक, माफी मांगऽ लगलैक । रम्भा बेशी मान नहि कयलकै । दोसर बेर पकड़यलैक तऽ कने जब्बर भऽ गेलैक, जेना किछु भेले नहि होइ । कहऽ लगलैक- ''आदति भऽ गेल अछि रम्भा ! अहींक सप्पत, अहाँक स्थान आर क्यो नहि लऽ सकैत अछि । कहिओ नहि । ई सभ तऽ मौज-मस्ती थिकैक- जवानीक खेल, एकरा अधलाह नहि मानू ।''

रम्भाकें कोनादन लगलैक । ओ निषेध करिते रहलैक । मुदा सचिनक साहस बढ़िते गेलैक । पहिने चोरानुकाकऽ करैक । फेर घिनौन-घिनौन मौगीकें ओकरे बिछौनपर लाबऽ लगलैक तऽ मान आ क्रोधसँ ओकर छाती फाटऽ लगलैक । मुदा सचिन लेखे धनसन । ओकरा लगबे नहि करैक जे कोनो नीच काज कऽ रहल छल । ओकरा लेल ओ जवानीक खेल छलैक— मौज-मस्ती छलैक ।

आ ओइ मौज-मस्तीक लेल ओ जन-बनिहारक संग ताड़ी पीबि लै छलैक, बाहरसँ बोतल लऽ अनैत छलैक- कीमती विदेशी शराब । रम्भा मना करैक । मुँहाबज्जी बन्द कऽ दैक, बोतल उठा फेकि दैक, मुदा सचिनपर कोनो असरियै नहि होइ । उन्टे रम्भेकेँ ओइ मौज-मस्तीमे शामिल करऽ लगैक ओ । जबर्दस्ती एक घोंट कण्ठ तर ढारि देने रहैक, कण्ठ लहरि गेल रहैक । सौंसे देह जरि गेल रहैक आ बोकरैत-बोकरैत बेदम भऽ गेल छलि ।

फेर ठोपे-ठोपे ओकरो कण्ठ तर जाय लगलैक ओ तरल पदार्थ । ओतेक अधलाह नहि लगैक । कण्ठ ओतेक नहि लहरैक, रद्दो ने होइ बेशी । खाली सौंसे देहमे विचित्र सन उम्माद आ सुरसुरी उठऽ लगैक । सचिन आरो नीक, आरो प्रिय लागऽ लगैक ।

भास्करकेँ नहि बूझल छैक ई सभ । रम्भा नीक जकाँ जनैत अछि ।

वर्ष-पर-वर्ष बितैत गेलैक, सचिनक प्रेमक आवेग कहिओ शिथिल नहि भेलैक । मौज-मस्तीमे ओ ओहिना मगन रहैत छल । रम्भाकेँ ओ सभदिन अखरैत छलैक । मुदा सचिन ओकर मान, ओकर क्रोध, ओकर आहत आत्मा आ अपमानित नारीत्वकेँ एकटा शुद्ध प्रेमी बनि मना लैत छलैक । ओकर प्रेमक आवेगमे रम्भा बहि जाइत छल- सचिनक सभ उचित-अनुचित बिसरि जाइत छल ।

मुदा एकटा तेहन बाढ़ि अयलैक जे रम्भाक सभटा खुशी बहाकऽ लऽ गेलैक । सचिनक प्रेम ओइमे बहि गेलैक । रम्भाक प्रेमी पति ओइमे डूबि गेलैक । आँगनक सुख-शान्ति आ रम्भाक सभटा स्पप्न आ सभटा पवित्रता ओइमे बहि गेलैक । महेन्द्रनाथ चौधरी अपन कोठा दिस चल गेलाह । विस्मयाहत, बज्राहत रम्भा दौड़िकऽ अपन कोठलीसँ बहरायलि आ हुनका जाइत देखैत रहलि । मुदा ओ एकसरि नहि छलि । कतहुसँ आबि सचिन सेहो बरण्डापर ठाढ़ छल आ दक्षिणबरिया कोठा दिस जाइत अपन पिताकेँ आग्नेय दृष्टिसँ निहारि रहल छल । रम्भापर ओकर दृष्टि बड़ी कालक बाद गेलैक । रम्भा चाहलक जे सचिन आगू बढ़ैक आ ओकर कण्ठ मोकि दैक । मुदा ओ अपन जगहपर ठाढ़ रहलैक । घृणापूर्वक ओकरा दिस तकैत हनहनाइत हवेलीसँ बाहर चल गेल । ओ इहो ने देखलकै जे दक्षिणबरिया ओसारापर ओकर माय ठाढ़ छलैक । मूड़ी झुकौने चलल जाइत महेन्द्रनाथ चौधरी सेहो नहि देखलथिन ओकरा । भरिसक देखियोकऽ अनठा देलथिन ।

आशा चौधराइन बड़ी कालधरि ओसारापर पाथर बनलि ठाढ़ि रहलीह । जेना कोनो चेष्टे ने रहि गेलनि शरीरमे । सामने उतरबरिया कोठाक ओसारापर ठाढ़ि रम्भा एकटक अपन सासुकेँ देखि रहल छलि ।

बड़ी काल बाद आशा चौधराइन ओम्हर तकलनि । रम्भाक आँखिमे पीड़ा, किछु घटित भऽ जयबाक आदंक आ नोर छलैक । आशा चौधराइनक आँखिमे घृणा नहि छलनि, छलनि मात्सर्य आ बलबलाइत नोर ।

रम्भाकेँ लगलैक जेना ओकर सासु ओकरा घृणासँ ताकि रहल छैक । ओ ओहीठाम ओंघरा गेलि । क्यो दौड़िकऽ लग नहि गेलैक । आशा चौधराइन अपन ओसारापर ठाढ़े रहलीह । हुनको होश नहि छलनि- नोरसँ आँखि अन्हरायल छलनि आ घृणा ओ आघातसँ मोन ।

आशा नोरे लेने एहि घरमे आयलि छलीह । बाप घूटर झा बड़का पंजीवला छलथिन- महादरिद्र । तेहने क्रोधी । चारिटा बेटिये रहनि । तीनूकेँ बेचि कहुना वयस खेपि गेल छलाह । पचपनक धक्कामे पहुँचि गेल रहथि । सभसँ छोटि बेटी रहनि आशा । दसे वर्षक रहनि । खूब काजुल, खूब बुधियारि । ओही वयसमे सभटा घर-आश्रम सम्हारि लेने रहनि । खूब मजबूत काठी रहैक.... आँखियो-कान कोनो तेहन बेजाय नहि रहैक, मुदा रहैक कारी । घूटर झा अपने कोइलोसँ कारी छलाह, तेहन नहि छलि आशा । माय खूब गोरि रहैक आ तीनू जेठकी बहिनियोक रंग साफ रहैक ।

महेन्द्रनाथ चौधरीक पिता महारुद्र चौधरी उच्च कुलशीलक पुतहु चाहैत छलाह । धन-सम्पत्ति अरजि लेने छलाह । पुरखाकेँ सौंसे परगना दऽ देने रहनि बादशाह । मुदा मैथिल समाज धनक बलपर उच्च स्थान देबऽ लेल तैयार नहि रहनि । अपन विवाह पाँजि-पाटिमे कयने छलाह- छोटका पाँजिमे । महादेव झा पाँजिक कन्या घरमे अनबाक सेहन्ता रहनि । घूटर झा सेहो चारिम बेटीमे नीक जकाँ गना लेबाक पक्षमे छलाह जे ओहीसँ दुनू व्यक्तिक बाँकी जिनगी कटि जानि । महारुद्र चौधरी ततबा दऽ देलथिन ।

आशा कनिते आयलि नैहरसँ । भरि बाट कनैत आयलि । गाम आ माय-बाबूकेँ छोड़ैत करेजा फाटि गेलैक । महेन्द्रनाथ चौधरी वेदिये तरसँ बिदकल छलथिन । कारी कनिया हुनका नहि सोहयलनि । चतुर्थियो रातिमे मुँहे फुलौने

रहलथिन, आशा कनैत माटिपर पड़लि रहल । प्रात भेने नैहर छोड़ि कनैत हवेलीमे आबि गेल । आशाक आँखिमे नोरे-नोर छलैक ।

गोरी चौधराइन अपन आँचरसँ पोछि देलथिन सभटा नोर । सभटा बीध-व्यवहार तेना करौलथिन जेना अपने बेटी होनि । आशाक आँखिक नोर सुखा गेलैक । गौरी चौधराइन स्नेहसँ कहलथिन- ''हमरा बेटी नहि बाँचल कोनो, अहीं बेटी छी हमर। फेर नहि कानब कहिओ ।''

फेर घुमिकऽ नहि गेलि अपन नैहर कहिओ । बापे आबिकऽ कहिओ काल भेंट कऽ जाइत छलथिन । जाधरि जिबैत रहलथिन, मायो तीन बेर गामक बाहर मन्दिरमे आबि भेंट कऽ गेलथिन । महेन्द्रनाथ चौधरी ने फेर कहिओ सासुर गेलाह, ने अपन स्त्रीकेँ जाय देलनि ।

आशा हवेलियेमे पैघ होमऽ लागलि । अपन सासुसँ सभ-किछु सीखऽ लागलि । भनसा-भड़ार सभ सम्हारऽ लागलि । गोसाउनिक पूजा करऽ लागलि । गौरी चौधराइन दुलारसँ कहथिन- अबस्स पूर्व जन्मक बेटी छी हमर ।

आशा हँसिकऽ कहथिन-''अहाँक बेटी कोना हैब हम ? अहाँक एहन गोर दपदप आ राजरानी सन रूप आ कहाँ झरकल सन ई मुँह !''

सासु दुलारसँ मुँह लऽ लेथिन दुनू हाथमे- ''के कहत हमर बेटीकेँ झरकल-एहन चमकैत आ सुन्दर कारी पाथर छैक कतहु विश्वमे ? भागमन्त छथि हमर महेन ।

महेनकेँ कारी पाथर पसिन्द नहि छलनि । कहिओ काल बिछौनपर अपना लग घिचियो लैत छलथिन तऽ बादमे ठेलियो दैत छलथिन- ''केहन रुच्छ हाथ पैर अछि जेना सभ दिन माटि कोड़ैत होइ ! आ ई असर्ध कारी खटखट चाम ।''

आशाक आँखिमे खाली नोरे-नोर छलैक ।

कोखिमे मुदा भगवान खाली इजोते-इजोत दऽ देलथिन । सचिन खूब सुन्दर छलैक । जेहने रंग, तेहने नाक-कान । गौरी चौधराइन कहलथिन- बापक रंग छैक आ मायक गढ़नि । महेन्द्रनाथ चौधरी खूब खिसियाथि मोने-मोन, मुदा मायक आगाँ बजबाक साहस नहि होइनि ।

सभटा तामस आशापर उतारि देथिन- हमरे भागमे बथायल रही अहूँ । एहिसँ तँ एकटा महीससँ बिआह करा दितथि बाबू हमर । जेहने रूप-रंग तेहने अकिल ।''

आशाक आँखिमे नोरे-नोर रहैत छलैक, बलबल करैत सदिखन ।

भनसा-भड़ार-गोसाउनि-बिहारी भाइ आ सासुक सेवामे व्यस्त रहैत छलि । महेन्द्रनाथ चौधरीक ख्याति गाममे नहि, इलाकामे छलनि । खाली विधवा आ अबलाक गहना आ घराड़िये बंधक नहि रखैत छलाह, ओकर इज्जतिक सौदा सेहो करैत छलाह- ओइमे खूब बोली उठबैत छलाह । खाली मायक डरे घर लैबाक साहस नहि होइत छलनि । मौजे सभपर अपन बंगली छलनि, अमला छलनि, मोसाहिब छलनि । जे चाहैत छलाह, भेटि जाइत छलनि ।

कहिओ काल असर्ध आशाकेँ सेहो हुनकर बिछौनपर स्थान भेटि जाइत छलैक । एकक बाद एक जखन छौटा सन्तान चल जाइत रहलैक, ओहो कहिओ कालक सुख यातना लागऽ लगलैक । सुख तऽ ओ कहिओ ने छलैक, तैयो सहि जाइत छल । फेर एकदम असह्य भऽ उठलैक ।

जहिआ खगता होनि, महेन्द्रनाथ चौधरी नहि मानथिन । सक्कत माटिक बनल छलीह आशा । छौटा सन्तानक बादो देहक माटि ओहिना सक्कत छलनि । ओइ देहपर कहिओ काल महेन्द्रनाथ चौधरीकेँ लोभ भऽ जाइत छलनि आ आशा ओइ अनिच्छित उपकार आ दयाकेँ सहि जाइत छलीह ।

जहिआ भास्करक जन्म भेलैक, दुख आ आशंकाक संग लाजो भेलैक आशाकेँ । सचिन बीस वर्षक भऽ गेल छलैक । पुतहु घर आबि गेल छलैक । बीच महक कोनो सन्तान बाँचल नहि छलैक । इहो बचतैक, तकर कोनो आशा नहि छलैक । मुँहो नै देखऽ चाहैत छलैक आशा । मायक छातीमे फेर एकटा भूर करऽ आयल छलैक । ओइ नेनापर बेशी सिनेह नहि देखौलनि आशा ।

पितामही गौरी चौधराइन पोसि लेलथिन नेनाकेँ । सूर्य सन देदीप्यमान छलैक । पितामही नाचऽ लगलथिन- ''सूर्य भगवान आयल छथि । कवच-कुण्डल नहि छनि, मुदा थिकाह ओहने तेजसँ भरल । सूर्य नाम नहि रहतनि, पुरखाक नाम छनि । भास्कर हेताह ई...भास्कर चौधरी-''

नेना जीबि गेलनि तऽ आशाकेँ जेना विश्वासे ने भेलनि ! नीक जकाँ दुलारो ने करैत छलथिन जे कतहु फेर ने छीनि लेथि भगवान । ककरो लग जीबि लेथुन पहिने । पितामही छथिने...

आ पहिल बेर आशाक नोर-भरल आँखिमे प्रसन्नताक लहरि छलैक... जीबाक उमंग छलैक । जेना-जेना ओकर रूप आ बुद्धि बढ़ैत गेलैक, महेन्द्रनाथ

चौधरीक अनुशासन आ अत्याचार सेहो बढ़ैत गेलनि । आशामे ओकर विरोध करबाक साहस आबऽ लगलैक ।

जहिआ दरभंगा पठबऽ लागल छलथिन, आशा तनिकऽ ठाढ़ि भऽ गेल छलीह– नै, ई हर्गिज नहि हैत । एतनीटा नेना एकसर नहि रहत । कोनो टूअर-टापर अछि जे एकसर रहत ! कोन वस्तुक कमी देने छथिन भगवान ? गामेक स्कूलमे पढ़त ।

महेन्द्रनाथ चौधरी डाँटि लेलथिन– रहि गेलौं वैह गोबर । होस्टलमे टूअर लोक सभ नहि, पैघ-पैघ लोकक धीयापुता रहैत छैक । ओतऽ पढ़त, नीक लोकक संगति हेतैक तऽ किछु सीखत, संस्कार बदलतैक, पैघ लोक बनत ।

भास्कर भागि अयलैक होस्टलसँ तऽ आशाकेँ चैन भेलनि जे खिस्सा खतम । मुदा महेन्द्रनाथ चौधरी जिद पकड़ि लेलथिन– पटनाक स्कूलमे पढ़त... मिशन स्कूलमे । बड़का-बड़का राज-रजवाड़ाक धीयापुता पढ़ैत छै ओइमे । आशा मुदा अनशन शुरू कऽ देलनि– ''प्राण दऽ देब हम । हमर सोन सन नेना एतेक दूर रहत एकसर ? बाज अयलहुँ एहन पढ़ाइसँ हम ! गामेक स्कूलमे पढ़त ।

सासु बुझौलथिन- जाय दिऔक हीरा बौआसिन ! पढ़ि-लिखि जायत तऽ हमरे-अहाँक नाम हैत । नेनाकेँ कतेक दिन आँचरसँ झाँपिकऽ राखब ?

भास्कर चल गेलैक आ आशाक आँखिमे फेर खाली नोरे-नोर भरि गेलैक । एकदिन बूढ़ी सेहो चल गेलथिन । जायसँ पूर्व आंगनमे एकटा सुन्दर सन पुतहु आ सोन सन पोता देने गेलथिन ।

ओइसँ पहिने बहुत-किछु देखलक आशा । सुकुर जे बूढ़ी किछु नहि बुझलथिन । सुन्न आ अवाक् भेलि ठाढ़ि रम्भाकेँ देखि फेर आइ ओकर आँखिसँ बलबल नोर फेकऽ लगलैक । राति खन अबेर धरि अपन दलानवला कोठलीमे छलाह महेन्द्रनाथ चौधरी । आँगनमे अपन कोठलीक ओसारापर बैसलि छलि आशा। इजोरिया राति छलैक । लड़खड़ाइत डेगे अपन स्वामीकेँ आँगनमे प्रवेश करैत देखलक ओ । मुदा अपन कोठामे अयबाक बदला उतरबरिया कोठामे चल गेलथिन ओ । आशाकेँ जोरसँ चिचियाकऽ टोकबाक इच्छा भेलैक, मुदा कण्ठसँ बकार नहि बहरेलैक । महेन्द्रनाथ चौधरी रम्भाक कोठलीमे पैसि गेलथिन तैयो ओकर मुँहसँ बकार नहि बहरेलैक । कोठलीमे अन्हार छलैक । सचिन सेहो नहि घुरल छलैक, गाममे कतहु बहरायल छलैक । अकस्मात ओकरो आँगनमे प्रवेश करैत देखलकै

आशा । इजोरिया आँगनमे छिड़िआयल छलैक । सचिन रम्भाक कोठली लग पहुँचि गेल छल, तखने बापकेँ रम्भाक कोठलीसँ बहराइत देखलक । गाम दिस जाइत काल, दलानवला कोठलीमे अपन मोसाहिब सभक संग बोतल-गिलास लेने बैसल देखने रहनि हुनका । रम्भाक कोठलीसँ हुनका बहराइत देखि विचित्र दशा भऽ गेलैक । हुनका जाइत देखिते रहल, टोकि नहि भेलैक पाछूसँ । रम्भा बहार भेलैक । ओकरा देखिकऽ जेना सुन्न भऽ गेल ! सचिनक मोनमे क्रोधक लहरि अयलैक जे रम्भाक गरदनि दाबि, दौड़िकऽ अपन बापोकेँ पकड़िकऽ चीरि दीअय । मुदा ओ घृणासँ रम्भाकेँ ताकि एकबेर आँगनसँ हनहनाइत बाहर भऽ गेल ।

आशाक आँखिमे नोरे-नोर छलनि । उतरबरिया कोठामे जा रम्भाकेँ छातीसँ लगा पुचकारि नहि भेलनि । अपन ओसारापरसँ देखैत रहलीह आ आँखिसँ बलबल नोर फेकैत रहलनि ।

एहिना देखैत रहि जाइत छथि आशा । रोकबाक आ प्रतिवाद करबाक साहसे नहि होइत छनि । महेन्द्रनाथ चौधरी कहै छथिन...''चुप रहू अहाँ । हमर काजमे दखल नहि दिअऽ । बेटीबेच्चाक बेटीक मुँहे पैघ-पैघ बात केहनदन लगैत अछि ।''

तैयो ओ प्रतिवाद कयने रहथिन । जहिआ प्रेमा ओकर पैर पकड़ि ओंघरा गेल रहथि दस वर्ष पूर्व तऽ तामसे एकदम तनिकऽ ठाढ़ि भऽ गेल रहथि– ''भाँड़ छूबाक अभ्यास अछि, छुबैत रहू । मुदा कुकुर भऽकऽ भगवतीक चौरामे मुँह किएक लगौलहुँ ? आब हम चुप्प नहि रहब । एहि गरीब विधवाक कथा हम भरि गामकेँ कहबैक ।''

महेन्द्रनाथ चौधरी हाथ उठा देने रहथिन । मारैत-मारैत बेदम कऽ देने रहथिन- अहाँक एहन मजाल जे हमरा कुकुर कहब । अपन औकाति बिसरि गेल ! अन्न-वस्त्र भेटैत अछि । बेटा-पुतहु घर-द्वार सभ किछु अछि, ओहीमे रहू । दोसरा दिस तकबाक कोशिश नहि करू । हमर काजमे दखल देब तऽ एहि वयसमे ओ सभ हैत जे नहि भेल अछि ।

यत्र-तत्र थूरल देह आ ग्लानिसँ भरल मुँह लेने नुकायलि रहलीह आशा । ककरो सोझाँ जयबाक साहसे नहि होनि । प्रेमा दिस तकले नहि जानि ।

एकदिन प्रेमे अयलनि कोठलीमे चुपचाप- ''एना किएक पड़ल छी भौजी ? हमरा लेल एतेक मोन खराप नहि करू । हमर इज्जति गेल... आब घुरत

नहि । गरीब विधवाक इज्जतिपर ओहुना सभ दिन आफते रहैत छैक । कोना बाँचल एतेक दिन से आश्चर्य ! राक्षस तँ सभ ठाम भरले अछि । हमरा अही घरमे आबिकऽ लुटैबाक छल । गरीब विधवाक इज्जतिक मोले कतेक.... । हवेलीक मालिकक बात तऽ जाय दिअ हुनकर मुसाहिब-जिरतिया धरि भाटा-मूरक भावे इज्जति खरीदैत रहैत अछि ।

प्रेमाक आँखिमे नोर नहि छलनि । सभटा नोर बलबलाकऽ आशा चौधराइनक आँखिमे भरि आयल छलनि ।

आइ फेर सभटा नोर हुनके आँखिमे आबि गेल छलनि । रम्भा अपन ओसारापर ओहिना स्तम्भित ठाढ़ि छलि । ओकरा आँखिमे नोर नहि छलैक । बलबलाकऽ बहरायल नोरसँ आशा चौधराइनक आँखि अन्हरा गेल छलनि । रम्भा खसि पड़लैक, सेहो ने देखलनि ओ ।

बड़ी काल बाद उठिकऽ ठाढ़ि भेलीह । अपन कोठलीमे बिछौनपर धुत पड़ल छलाह महेन्द्रनाथ चौधरी । आशाकेँ लगलनि जेना कोनो जानवर मनुखक स्वरूप धऽ पलंगपर पसरि गेल हो । घृणासँ मुँहपर थूकि देबाक इच्छा भेलनि, मुदा से नहि कऽ भेलनि । मुँहसँ एतबे बहरेलनि- कुकुर ।

महेन्द्रनाथ चौधरीक कानमे ओ शब्द भरिसक गेलनि । देह कने सुगबुगा उठलनि । 'पट पड़ल छलाह, पड़ले रहलाह । आशा घृणासँ थरथराइत ओइ पलंग लग ठाढ़ि रहलीह । आ बेर-बेर बजली- कुकुर.... ।

गरजिकऽ महेन्द्रनाथ चौधरी ठाढ़ नहि भेलथिन । अनठौने पड़ल रहलथिन। आशा बगलवला कोठलीमे अपन बिछौनपर चलि गेलीह ।

राति नमरिकऽ पहाड़ सन भऽ गेलैक आ निन्न ओइमे कतहु हेरा गेलैक। सचिनक सभटा मौज-मस्ती हेरा गेल छलैक ।

शराब अखनो पिबैत छल । पहिनेसँ बेशिए पिबैत छल । मुदा नशा नहि होइत छलैक । खानगी मौगी सभ लग अखनो जाइत छल । पकड़िकऽ, उठबाकऽ, जकरा मोन होइ छलै, मंगबाइये लैत छलैक आइयो । मुदा ओ मस्ती नहि अबैत छलैक । ओइ रातिक इजोरियामे जेना सभटा मौज-मस्ती, सभटा उन्माद-उत्तेजना हेरा गेल छलैक ।

पहिने उत्तेजनासँ पागल भऽ गेल छल ओ । खून कऽ देबाक इच्छा भेल छलैक । भारि राति गाममे बौआइत रहल छल ओही उत्तेजनामे । भोरुकबामे घर

घुरल छल । अपने कोठलीसँ नेपाली कत्ता हाथमे लऽ लेने छल । फेर अपन शयन-कक्ष धरि आयल छल ।

बिछौन खाली छलैक । सीमेण्टपर रम्भा ओंघराछल छलैक । जागल छलैक की सूतल से कहब मस्किल । ओकर इच्छा भेलै जे एहिना सुतलेमे गरदनि उड़ा दैक। हाथ तनियो गेलैक, मुदा चला नहि भेलैक । कत्ता ओकर तनल हाथमे थरथराइत रहलैक । ओ पड़ाकऽ फेर अपन कोठलीमे आबि गेल ।

बड़ी कालक बाद फेर अपन शयनकक्ष दिस गेल । अइ बेर हाथमे कत्ता नहि छलैक । रम्भा ओहिना ओंघरायलि छलैक । सीमेण्टपर सचिन लग बैसि गेल। ओकर छिड़िआयल केशकेँ समेटिकऽ ओकर पीठ थपथपा देबाक, मुँह कान हँसोथिकऽ दुलार करबाक इच्छा भेलैक, मुदा ओकर हाथ नहि उठलैक, जेना लोथ भऽ गेल होइ । मुदा डेराकऽ हाथ खीचि लेलक । लगलैक जेना कोनो असर्ध वस्तुपर हाथ पड़ऽ जा रहल छलैक । सौंसे देह घृणासँ थरथरा उठलैक । ओ उठिकऽ बैसि रहल । चारि डेग पाछाँ हँटि गेल जेना ओकर छाहो स्पर्श करतैक तऽ छुआ जायत, अपवित्र भऽ जायत । ओ पड़ाकऽ अपन कोठली आबऽ चाहैत छल। मुदा पैर माटिमे सटि गेलैक । रम्भा उनटिकऽ चित्त भऽ गेलैक । आकृति रातिए भरिमे मुर्दा सन उज्जर भऽ गेल छलैक, जेना सभटा शोणित क्यो सूइ लऽकऽ घीचि लेने होइ देहसँ । निरीह कातर आ पश्चात्तापक आगिमे जरैत । आँखिमे बजबज करैत नोर । सचिन पड़ाय चाहलक । रम्भाक ठोर थराथरा उठलैक- हमरा मारि दिअऽ जानसँ ।

सचिन पड़ा आयल । रम्भाक ओ उज्जर आकृति आ ओइ आकृतिक निरीह-कातर भाव ओकर पछोड़ धयने रहलैक । ओकरासँ पिण्ड छोड़बऽ लेल ओ ओरो बेशी शराब पीबऽ लागल- दिनराति पीबऽ लागल । दिनराति जकरा-तकरा आँचर तर पड़ल रहय । मुदा पछोड़ नहि छोड़लकै ओ आकृति आ ओकर ओ निरीह-कातर भाव । ओकरा ओ मुँह एकदम निष्पाप आ निष्कलंक लगैक ।

ओ घुरिकऽ अपन कोठलीमे आबय । रम्भा लग जाय चाहय । ओकर स्पर्श करऽ चाहय । रम्भाक विवर्ण मुँहपर लाली घुरऽ लगैक, निरीह आकृतिपर फेर जिनगी आबऽ लगैक, मुदा तखने सचिन जोरसँ चीत्कार करैत पड़ा जाय । स्पर्श करबाक साहसे नहि होइ । लगैक जेना कोनो अपवित्र, अस्पृश्य चीज राखल होइ ओकर कोठलीमे । ओ बेर-बेर ओइ कोठलीमे जाय आ बेर-बेर पड़ा आबय । पड़ाकऽ फेर घुरि आबय । स्पर्श लेल बढ़ल हाथ थरथराकऽ रहि जाइ ।

बहुत दिनसँ बौक बनलि रम्भा एकदिन टोकलकै- ''हमर स्पर्शो ने करब कहिओ ? हमर अपराध ?''

सचिनकेँ किछुओ जवाब नहि दऽ भेलैक । उनटे तामस भऽ गेलैक, ओहि क्षणमे । निरपराध कोना अछि ? अपन आँखिसँ देखने छियैक । ओ तामसे हनहनाइत ओइ घरसँ पड़ा आयल । आँगनसँ बहराइते काल बुझयलैक जे ओकापर तामस व्यर्थ छैक । जकरापर तामस हैबाक चाहियैक, तकरासँ डर होइत छैक । जिनका लाजे मूड़ी गाड़िकऽ चलबाक चाहियनि से आइयो मूड़ी तानिकऽ चलैत छथि । ओ तनल गरदनि छोपि लेबाक चाही ।

ओ तनल गरदनि सचिनक सामने अपने झुकि जाइत छलैक । बचलोपर यदि सामना भैये जाइत छनि, महेन्द्रनाथ चौधरी मूड़ी झुकाकऽ पड़ा जाइत छथि ।

सचिनो पड़ा जाइत छल । रम्भाक डबडबायल आँखि आ ओइ आँखिक प्रश्न ओकरा बर्दाश्त नहि होइत छलैक- हमर अपराध ? कोनो अपराध ओ ताकि नहि पबैत छल । प्रत्यक्षदर्शी छल सभ घटनाक, तैयो नहि जानि किएक ओकरा अपराधी मानबा लेल मोन तैयारे नहि होइत छलैक । बेर-बेर पैर ओकर कोठली दिस बिदा भऽ जाइत छलैक ।

आ कोइलीमे अबैत देरी बिछौनपर बैसल स्त्री ओकरा अपवित्र आ अस्पृश्य लागऽ लगैत छलैक । ओकर छायोसँ पड़ाइत छल ओ ।

आ पड़ाकऽ जानवर भऽ जाइत छल । स्त्रीक देह ओकरा गिजबाक आ नोचऽ-काटऽक वस्तु बुझाइत छलैक । ओकरा लस्त-पस्त, शोणिते-शोणिताम आ क्षत-विक्षत कऽ दैत छलैक ।

प्रेमाकेँ सेहो क्षत-विक्षत कयने छलैक ओ । प्रेमा सुन्दर छलैक आ वयस भेलोपर ओकर देहमे ककरो लोभा सकबाक शक्ति छलैक । सचिन सेहो लोभायल रहैत छल । मुदा साहस नहि होइत छलैक । प्रेमाक लग माय हरदम मड़राइत छलैक । राति-बिराति ओकरा कोठा दिस आबहु नहि दैत छलैक । रम्भाक कोठलीसँ पड़ायल, मौगीक देहकेँ क्षत-विक्षत करबा लेल बौआइत सचिनकेँ प्रेमा अभरि गेल रहैक एक राति ! भम्होरिकऽ छोड़ि देने रहैक ओकरा ।

प्रेमा सहि गेल छलैक । जहिया वर्षोक संचित सतीत्वकेँ, विधवाक इज्जतिकेँ महेन्द्रनाथ चौधरी कलंकित कऽ देने रहथिन, आशाक पैर पकड़ि कानलि छलि प्रेमा । मुदा सचिनक लीला ओकरा नहि कहि भेलैक । ने आशा भौजीकेँ, ने

बड़की कनिया रम्भाकेँ । ओ सहि गेल सभटा । सचिन परकि गेलैक । देखैत देरी नोचऽ काटऽ लगैक । ओइ राति सहब मस्किल भऽ गेलैक आ चीत्कार करैत पड़ायलि प्रेमा ।

से बादमे भेलैक । पहिने चेष्टा कयने छल सचिन । रम्भाकेँ क्षमा कऽ अपना लेबाक चेष्टा कयने छल । बेर-बेर ओकरा कोठलीमे गेल छल आ पड़ा आयल छल ।

जखन नहि भऽ सकलैक तऽ रम्भाक आगू हाथ जोड़िकऽ ठाढ़ भऽ गेल- मुक्त कऽ दिअऽ हमरा रम्भा । एना बंशीमे फँसल माछ जकाँ नहि नचाउ । आब थाकि गेल छी हम । हमरा मुक्त कऽ दिअऽ । अहाँसँ प्रेम करबाक चेष्टा सफल नहि होइत अछि आ घृणासँ मुँह फेरि फराक भऽ जायब सेहो बर्दाश्त नहि होइत अछि । प्रेम-घृणाक एहि खेलसँ मुक्त करू हमरा आब ।

आ रम्भा मुक्त कऽ देबाक चेष्टा कयने छलैक । एक दिन जहरक जे बुन्द जबर्दस्ती ओकर गराँ तर ढारि देने रहैक, से बोतलक बोतल गटागट पीबि जाय लगलैक । हरदम नशामे धुत्त रहऽ लगलैक । ओकरा देखिकऽ सचिनक अपन सभटा नशा उतरि जाइ- चाहे कतबो बोतल ढारिकऽ ओकर कोठलीमे पैसि जाय ।

ओ फेर प्रार्थना कयलकै- बन्द करू रम्भा ई सभ । ई अहाँक जान लऽकऽ रहत । एना अपनाकेँ नहि मारू रम्भा !

रम्भाक पैघ-पैघ आँखिमे कोनो मरल स्वप्न चमकि उठैक-''तऽ जिआ दिअऽ । घुरा दिअऽ हमर सभ-किछु जे छिना गेल अछि ।''

सचिनकेँ कोनो जबाब नहि दऽ होइ । तामसे बतहाकेँ मारऽ दौड़ैक-'' जान लऽ लेबौक सार तोहर । पिआ-पिआकऽ जान लऽ लेबहुन हिनकर । कोन जन्मक दुश्मनी छौक तोहर ?

बतहाकेँ नहि बूझल छलैक जे दुश्मनी कोन जन्मक छलैक । कहियो, कोनो जन्ममे अबस्स रहल हेतैक किछु । ने तऽ किएक ओकरा भागिकऽ पड़ा नहि होइत छैक ! किएक ओकर चीत्कार ओकरा सुनल नहि जाइत छैक ! तमसाकऽ बन्द कऽ दैत छैक...दू-दिन चारि-दिन । फेर एकदिन किलोल करऽ लगैत छै- डकूबा छेँ रे बतहा ! हमर दुश्मन छेँ, तोँ जान लैयेकऽ रहबेँ हमर । छातीमे केहन जनमारा दर्द अछि रौ....आनि दे, आनि दे जल्दीसँ ।

आ बतहाकेँ आनऽ पड़ैत छलैक । देखिते देरी प्रसन्न भऽ जाइत छलैक

रम्भा-"तोँ अवश्य ओइ जन्ममे बाप रहल हैबेँ हमर । एतेक दया-माया आर ककरा हेतै ?"

बतहा कानऽ लगैत छल-"दया-माया रहितैक...तऽ ऐना जान लितैक ओकर ? बाप कतहु एहन कसाइ होइत छैक ? अबस्से कोनो जन्मक दुश्मनी छल हेतैक । सचिन बाबू ठीके कहैत छथिन ।

ओकरा इहो नहि बुझाइ छैक जे कोन दुख छैक बड़की कनियाँकेँ । एहन सुन्दर घर-वर । एकटा धीया-पुता नहि छैक- ताहिमे अपन कोन सक्क ? ताहि लेल क्यो ऐना जान दैत अछि अप्पन ?

बतहाकेँ के बुझा कऽ कहतैक जे रम्भा किएक जान दैत छैक ? सचिन किएक पड़ायल फिरैत छैक ? बतहा कोना बुझतैक जे कोन दुख छैक बड़की कनियाँकेँ ?

कतेको बेर कहि चुकल छैक- "अहाँकेँ कोन कमी देने छथि भगवान ? ई अधलाह चीज छोड़ि दिअऽ, ई ककरो ने नीक कयने छैक आइ धरि । अहुँक नहि करत । हमरा कहू अप्पन दुख । हम अप्पन जान दऽकऽ ओकरा दूर करब । दैबक देल दुखपर मनुखक कोन जोर ?"

जहिआ बतहाक मनो कयलापर रम्भा नहि मानैक....ढारने चल जाइक तऽ सचिन ओकर कोठलीमे धरना दऽ दैक-"आइ एतऽसँ नहि उठब हम, एना मरऽ नहि देब अहाँकेँ ।"

आ रम्भाक आँखिमे फेर वैह मुइल स्पप्न चमकि उठै- "तऽ जिआ दिअ हमरा ।"

जिआ देबाक साहस नहि छलैक सचिनमे । चेष्टा ओ करैत छल । पूर्ण निश्चयक संग जाइत छल जे रम्भाकेँ बाँहिमे समेटि ठोरसँ ओकर सभटा नोर पीबि ओकरा जिआ देतैक । मुदा ओकर कोठलीमे जाइत देरी ओ निश्चय गलि जाइत छलैक । स्पर्श लेल उठल हाथ लोथ भऽ जाइत छलैक आ बिछौन पर बैसलि रम्भा ओकरा अपवित्र आ अस्पृश्य लागऽ लगैत छलैक ।

भास्कर गाममे किछु बेशिये दिन रहि गेल अइ बेर ।

किरणक पत्रसँ बड़ चिन्ता भऽ गेल रहैक । पहुँचल तऽ ओहन डेराओन किछु नहि लगलैक । किछु उदास सन लागल रहैक शुरूमे । हवेलीमे प्रवेश करैत देरी सभ-किछु बड़ सहज आ सोहाओन लागऽ लगलै ।

भगवती, माय-भौजी सभके़ँ गोड़ लगलक । बाबूजीकेँ प्रणाम कऽ आयल आ बाबीक कोठलीकेँ गोड़ लगलक । भैया घरमे नहि छलथिन । अपन काठलीमे पहुँचल तऽ किरणक कोरासँ ललकि कऽ राजा बाजि उठलैक- पप्पा ।

उदासी आरो बिला गेलैक । कोरामे राजा छलैक । भास्करकेँ सौंसे हवेली खिलखिल कऽ हँसैत लगलैक ।

किरणोक प्रसन्नताक अन्त नहि छलैक । भास्कर आबि गेल छलैक आ हवेली किछु दिन लेल फेर घर बनि गेल छलैक- सुन्दर, सुखद आ आत्मीय ।

ओकर तामसोक अन्त नहि छलैक । ओकर मोनक आहत अभिमान छटपटा रहल छलैक । ओकर बेर-बेर चिट्ठी देलोपर भास्कर चुप्पी सधने छलैक । कोनो चिट्ठीक उत्तर नहि देने छलैक । अयबासँ मात्र नौ दिन पहिने चुप्पी तोड़लकै आ बड़की टा कैफियत देलकै ।

किरण ओइ कैफियतसँ सन्तुष्ट नहि भेलैक । भास्कर भरि राति मनबिते रहि गेल । किरणक मोनक आहत अभिमान आ विश्वास छटपटा रहल छलैक- "एतेक छोट बुझलहुँ हमरा ? एकटा चिट्ठियो लिखबाक फुरसति नहि छल ?"

भास्करकेँ कोनो उत्तर नहि फुरलैक । चुप्पे रहब ठीक बुझयलैक । खाली किरणकेँ छुबैत रहलैक, दुलारसँ छुबैत रहलैक, सभ ठाम, सौंसे देह । पहिने तऽ बड़ी काल धरि देह अकड़ने रहलैक किरण । फेर सिहरऽ लगलैक । सिहरैत देहसँ चिपकि गेलैक आ फुसफुसाकऽ बजलैक- "बड़ होसियार भऽकऽ आयल छी । के सिखबैत छल ई सभ ?"

भास्करोकेँ दुष्टता सुझलैक । कहलकै- छल एकटा । खाली अहीं टा छी दुनियाँमे !

किरणक स्वरक आह्लाद बिला गेलैक- खाली हमही टा किएक रहब ? मुदा के छथि से तऽ सुनी ।

आनन्द लैत भास्कर गम्भीर मुद्रामे कहलकै- अहाँ कोना चिन्हबनि ? पटनेक छथि ।"

किरण ओकर देहसँ हँटि गेलैक आ दोसर दिस तकैत पुछलकै- "केहन छथि ?"

भास्कर फेरसँ ओकरा अपन बाँहिमे समेटैत कहलकै– "छथि तऽ बड़ सुन्नर मुदा अहीं जकाँ कने तमसाहो छथि । तामसमे नाकक टुनगी अहिना लाल भऽ जाइत छनि । छथि तऽ बेश दुब्बरि मुदा गुदगरियो खूब छथि, जतऽ हैबाक चाही । रंग जतबे गोर छनि, ततबे ओइमे आलता सेहो घोरल छनि । ठोर जतबे पातर, ततबे लालो छनि । आँखि जहिना पैघ छनि, तहिना कारी आ कटगर । केश ठेहुन धरि लटकल रहैत छनि– खूब कारी घनगर आ मोलायम...एकदम तस्सर जकाँ छह-छह करैत । बिना तेल-फुलेलेक हरदम गमकैत रहैत छनि । सौंसे देह गमकैत रहैत छनि। कोठलीमे पैर देतीह कि सभ-किछु गमकऽ लागत । आँगुरोसभ जेना रचि-रचिकऽ बनल होनि– छुबि देतीह तऽ करेण्ट लागि जायत आ बाँहि समेटि लेतीह तऽ हवामे उड़ऽ लागब ।

तामसे अपन देह बाँहिसँ छोड़बैत किरण जोरसँ बाजलि– भारी निर्लज्जि छथि !

भास्कर ओहिना दुष्टतापर्वक हँसैत किरणकेँ आरो लग समेटि कहलकै– "से तऽ छथिए । देखिऔन ने, अखनो कोना सटल छथि हमरा संग ! लगमे बेटा सूतल छनि तकरो होश नहि छनि ।"

किरण पलंगक सामनेवला बड़का अयना दिस देखलक । सौंसे पलंग प्रतिबिम्बित छलैक । ओ भास्करक बाँहिमे छल आ भास्करक आँखिमे दुष्टता भरल हँसी छलैक ।

किरण ओकर छातीमे मुक्का मारऽ लगलैक– अहाँ बड़ दुष्ट भऽ गेल छी !

भास्कर ओकर कानमे ठोर सटा फुसफुसा कऽ कहलकै– "अहाँ बड़ मधुर भऽ गेल छी, पहिनहुँ सँ बेशी ।

किरण अगराकऽ ओकर देहपर ओलड़ैत कहलकै– बेशी मधुर मोन फेरि देत ।

भास्कर ओहिना आँखि बन्द कयने कहलकै– बीच-बीचमे अचार खा लेब ।

किरण ओहिना ओकर देहपर ओंघराइत कहलकै– अचार कतऽसँ आओत ?

–"बजारसँ"

भास्कर झट उत्तर देलकै आ आँखि खोलि दुष्टतापूर्वक हँसऽ लगलैक । किरणक आँखिमे एकटा सन्तुष्ट आ गर्वयुक्त भाव छलैक । तर्जनी ओकर

ठोरपर रखैत कहलकै– फेर वैह दुष्टता !

आ राति पड़ाइत रहलैक ।

भोरे राजा उठलैक पहिने । उठिकऽ दुनूक बीचमे आबि गेलै । किरणक निन्न टूटि गेलैक । उठिकऽ जाय लागल । राजा ओकर आँचर धऽ लेलकै– बैस ने माँ ! पप्पा अहूँ उठू ने !

भास्करो जागि गेल । एक कात किरण आ दोसर कात ओ । बीचमे राजा आ राजाक अनन्त प्रश्न । भास्करकेँ अपन नेनपन मोन पड़ि गेलैक । बाबी मोन पड़लैक । एना माय-बापक बीच कहाँ कहियो सूतल ओ ? बाबिए ओकर माय-बाप सभ छलैक । राजा अखन बड़ छोट छैक, तीन वर्ष पुरबे कयल छैक मुदा बड़ पकठोसल गप्प करैत छैक ।

एक राति सुतबासँ पहिने जिद कयलकै– खिस्सा कहू ।

भास्करकेँ खिस्सा कहबाक अभ्यास नहि छलैक– झट कोनो खिस्सा मोने नहि पड़लैक । ओकरा बाबीक खिस्सा मोन पड़लैक– कठरी बाबाजीवला खिस्सा। सैह कहऽ लगलैक ।

खिस्सा खतम होइत देरी राजा पूछि बैसलैक– "कठरी बाबाजी के छलैक पप्पा ?

भास्करकेँ बाबीक उत्तर मोन पड़लैक– साधु-महात्मा छलैक ।

उत्तर सुनिकऽ राजा दोसर प्रश्न कऽ देलकै– "साधु-महात्मा ककरा कहै छैक ?"

भास्करक ठोरपर फेर बाबीक उत्तर आबि गेलैक– साधु-महात्मा माने साधु महात्मा । माने जे घर-द्वार सभ त्यागि दैत अछि ।

कठरी बाबाजीकेँ चोट किएक नहि लगैत छलैक ?– भास्करक नेनपन जेना घुरि आयल छलै राजाक रूपमे । भास्करक ठोरपर बाबीक सहज उत्तर छलैक– "चोट कोना लगितैक ? ओकर देह तऽ काठक बनल छलैक ।"

राजा सूति रहलैक । भास्करकेँ बाबी कहने छलैक– "जे अन्याय-अनीतिकेँ ठोकरा दैत छैक तकरा अपन देह काठक बनबऽ पड़ैत छैक आ आत्माकेँ अजेय ।"

ओकर आत्मा ओकरा धिक्कारऽ लगलैक । ओकर अपने घरमे अन्याय

भेलैक, तकर चिट्ठी देलकै किरण, मुदा ओ तकरा बिसरि अपन स्वार्थमे लीन रहल। बाबीक खिस्सा, ओकर उपदेश सभ व्यर्थ गेलैक। ओकर शरीरक स्वार्थी सामन्ती खून जीति गेलैक। ब्रह्माक संग अन्याय भेलैक, प्रेमा पीसीक संग अमानवीय व्यवहार भेलैक। ककरो आन द्वारा नहि, ओकरे बाप-भाइ द्वारा आ ओ सभटा बिसरि पटनामे नुकायल रहल, गाम आबि पत्नीक संग रंग-रभसमे लागल अछि। ओकरामे साहस नहि छैक जे अपन बाप आ भाइसँ किछु पूछत ? हुनकर अन्यायकं प्रतिकार करत। नहि जानि ब्रह्मा छुटबो कयलैक वा नहि ? प्रेमा पीसी कोना छैक ? किरण पुछलोपर किछु नहि कहैत छैक। किछु नुका रहल छैक ओकरासँ। माय सेहो ने कहैत छैक किछु, मुदा ओकरा लगैत छैक जेना कोनो गम्भीर बात छैक जकरा ओकरासँ नुकाओल जा रहल छैक।

राजासँ मुदा किछुओ नुकायल नहि रहैत छैक। ओ सभटा देखैत रहैत छैक, सभक बारेमे पूछैत छैक। भोरे ओकर हाथ-मुँह धोआ दैत छैक किरण आ कोठलियेमे एक गिलास दूध लऽ अबैत छैक- 'ले, पीबि ले चुपचाप, अकर-बकर नहि कर।'

राजा नहि मानैत छैक। हाथमे गिलास लऽ पूछि दैत छैक- गेनमोकेँ दूध पीबऽ लेल दहिक ने माय ! बथानपर बैसल हेतैक। किरणक ठोरपर भास्करक मायक उत्तर छलैक-''मर, ओकरा किएक देबैक हम दूध ? हमरा कोनो अपन नेना अछि ?

राजा चुपचाप दूध पीबि लेलकै। अखन तीने वर्षक नेन्ना छैक। बड़ बजैत छैक, बड़ सवाल पुछैत। किरण अकच्छ रहैत अछि।

भास्करकेँ ओ सभ सबाल मोन पड़ैत छैक जे नेनपनमे ओकर मोनमे उठैत छलैक। आइ राजाक मोनमे उठि रहल छैक। प्रश्न तऽ उठिते रहैत छैक। समाधान कतऽ भेटतैक ? चलितराक बेटा ठकना, ठकनाक बेटा गेनमा, एहिना सभटा दूध दूहि अनका दैत रहतैक आ ओकर अपन बेटा एहिना माँड़ पिबैत रहतैक। मेहनति-मजदूरी करऽबला लोकके माँड़ टा नसीब रहतैक आ हवेलीमे पोसाइत कोनो भास्कर, कोनो राजाक लेल सभ दिन दूधक गिलास सुरक्षित रहतैक।

गेनमाकेँ देखने छलैक भास्कर। राजासँ दुइये वर्ष पैघ हेतैक। पाँचे वर्षक अवस्थासँ बापक संग बथानपर आबि जाइत अछि। झाड़ुओ लगा लैत अछि, कस्तर उठाकऽ फेंकि अबैत छैक। संगमे मायो रहैत छैक। हवेलीमे पर्दा करैत छैक- मोट ननगिलाटक साड़ीक घोघ रहैत छैक सदिखन, गोबर कढ़ैत काल, चिपड़ी पथैत

काल, आँगन गोबरसँ नीपैत काल। मायक आँचर धयने लटकल गेनमा हवेलीक चीजकेँ देखैत रहैत अछि। ओइ आँखिमे भूख छैक। ओतबे पैघ भूख जतबा ओकर बाप ठकनाक आँखिमे रहैक नेनपनमे वा ठकनाक बाप चलितराक आँखिमे रहल हेतैक ओकर नेनपनमे। ई भूख पुश्त-दर-पुश्त अहिना झलकैत रहतैक एकरा सभक आँखिमे आ माँड़ पीबि-पीबि दूध दुहैत रहबा लेल मजबूर रहतैक सभ ?

एकर सभक आँखिमे खाली भूख छैक। कोनो प्रतिहिंसा वा विद्रोह किएक ने छैक ? अइ हवेलीमे पुश्त-पुश्तैनसँ खटैत आयल अछि, शोषित होइत आयल अछि, तैयो एतेक स्नेह किएक छैक एहि हवेलीसँ ? गेनमा-माय निरपराध बेटाकेँ मारि लगलोपर कहने रहैक भास्करकेँ- ''परबरिसो तऽ अही हवेलीसँ होइत छैक मालिक !'' एना निरपराध मारि खाइत, अपन निरन्तर श्रमक बदलामे भेटल अल्प मजूरीकेँ कहिया धरि ई सभ दया बुझैत रहत, परवरिश मानैत रहत ? आ हवेलीमे पोसल कोनो भास्कर वा कोनो राजा ओकरा सम्मुख पैघत्व देखबैत रहतैक !

भास्करकेँ लाज भेलैक। ओ खाली छुच्छ आदर्शवाद देखबैत रहल अछि। पैघ बात सोचबाक अपन अहंकेँ सन्तुष्ट करैत रहल अछि। वस्तुतः ओ अपन परिवारक, अपन लोकक छोटछीन, संकुचित परिधिमे सोचैत रहल अछि सभदिन। ठकना आ ब्रह्मा सन लोक लेल ओकर चिन्ता नकली छैक ? प्रेमा पीसी लेल ओकर आदर आ स्नेह नाटक छैक ? गाम अयना एतेक दिन भेलैक, एक्को बेर खोजो खबरि लेने छनि ?

आ ठकना वा ब्रह्मा एकसर तऽ नहि छैक। बहुत रास ब्रह्मा आ ठकना छैक। प्रेमा पीसीक कलंकक कथा एकसर नहि छैक। ओहन-ओहन बहुत रास कलंकक कथा छैक, अही हवेलीसँ उपजल कलंक आ शोषणक कथा छैक। तैँ विरोध करबाक साहस छैक ओकरामे ? ओ तऽ किरण आ राजा लेल एकटा सुन्दर घर बनैबाक स्वप्नमे बाझल अछि...हवेली छोड़िकऽ एकटा दोसर हवेलीमे जायत। जमींदारक हवेली छोड़ि एकटा हाकिमक हवेली। ठकना आ ब्रह्मा ओतहु हेतैक। नौकर-चाकर-भनसीया सभ हेतैक। एहि हवेलीक कथाक अन्त करबाक बदला एकटा नव हवेलीक कथाक जन्म देत भास्कर। सामन्तक सन्तान अपन आदर्शवादी अहंकं सन्तुष्टि लेल पैघ-पैघ बात सोचि सकैत अछि वा सोचबाक स्वांग कऽ सकैत अछि। ओइ संस्कारसँ मुक्त भऽ किछु कऽ सकबाक साहस कतऽसँ औतैक ओकरामे ?

अपनाकेँ धिक्कारि लेलासँ ओकर मोन चैन नहि भेलैक। ओकर मोनकेँ

बहुत रास सवाल मथैत रहलैक— हमरामे साहस नहि अछि मुदा आरो लोक तऽ अछि । चलित्तरा ठकना आ गेनमा सन-सन लाख-करोड़ लोक अछि । ओ कोना मानि लैत अछि एकरा अपन नियति ? ओकरा सभक मोनमे, पुश्त-पुश्तैनसँ बेगारी खटैत, चाकरी करैत, अपन उचित मजूरीक लेल प्रश्न नहि उठैत छैक ? अपन अधिकार लेल किएक ने लड़ैत अछि ओ ?

कालेजमे आ पटनाक बैसकी सभमे बहुत रास गप्प होइत छलैक— आन-आन देशक उदाहरण देल जाइत छलैक, मजदूर क्रान्तिक गप्प होइत छलैक, श्रमक महत्तापर गप्प होइत छलैक– ओकर जागरणक गप्प होइत छलैक । अपनो देशमे मजदूरक जागृतिक गप्प होइत छलैक । मुदा भास्कर गाममे आबि देखैत अछि जे चलितरा बूढ़ भेल तऽ ठकना, ठकना बुढ़ायल तऽ गेनमा । ओ खिस्सा तऽ चलिए रहल छैक । ओ जागृति देशक कोन भागमे नुकायल छैक ?

पटनोमे तऽ सभठाम सैह देखलकै । छात्र आन्दोलनक नामपर मात्र किछु गोटेक सक्रियता, जकरा पढ़बा-लिखबासँ बेशी मतलब नहि छलैक । जुलुसमे पाछाँ-पाछाँ चलैत बेशी मन्हुआयल लोक, डेरायल लोक । मुदा आगि आ ज्वाला ककरो आँखिमे नहि । अपन स्वार्थ लेल किछु लोक छात्रशक्तिक अपव्यय करैत छैक, ओकरा हाथमे मशाल आ हथियार थमा दैत छैक । हाथ आ शरीर ककरो आ निशाना कोनो आन लक्ष्यपर । सभ जुलुस, सभ हड़ताल आ आनदोलनमे भास्करकेँ सैह अनुभव भेलैक । छात्र वर्ग वा मजदूर वर्ग लग सहानुभूतिक नकली शब्द सुना कोनो दूरस्थ स्वार्थ लेल तथाकथित छात्र आ मजदूर नेता हिंसा आ उपद्रव करबा दैत छैक । असामाजिक तत्त्व अपन हाथक गोला आ बन्दूक छात्र आ मजदूरक नाम लिखि दैत छैक । जघन्य अपराध राजीतिक कार्य बनि जाइत छैक ।

पार्टी बदलैत छैक, सरकार बदलैत छैक, मुदा आम जनताक हालति ओहने रहि जाइत छैक ।

कहिया धरि ? कहिया धरि अनकर देल हथियार आ अनकर नकली आक्रोशसँ काज चलबैत रहत ई सभ ? कहिया धरि कोनो भास्कर-सन खुदरा सामन्तक नकली सहानुभूति आ कोनो तथाकथित नेताक इशारापर जीबैत रहत ई वर्ग ? ठकना वा गेनमाक आँखिमे विद्रोह आ प्रतिहिंसाक भावना कहिया जगतैक ? प्रतिहिंसा नहि, खाली विद्रोह....वर्तमान व्यवस्थाक प्रति विद्रोह, नव व्यवस्थाक स्थापना लेल विद्रोह !

ब्रह्मा विद्रोह कयने छलैक । ब्राह्मण छैक ब्रह्मा, मुदा ओकरामे आ ठकनामे

कोनो अन्तर नहि छैक । दूनूक आर्थिक स्तर एक्के छैक । सामाजिक स्तरपर भने ब्रह्मा सन लोक अपन उच्चताक नकली घमण्ड कऽ लिअय, वास्तविकतामे ओकरामे अन्तर नहि छैक । एक तरहेँ ठकनाक स्थिति नीक छैक । ओ कमा सकैत अछि, शारीरिको श्रमसँ अपन परिवारक भरण-पोषण कऽ सकैत अछि, मुदा ब्रह्मा बुते से नहि हेतैक । ओकरा अपन जातीय उच्चताक मिथ्या अभिमान हेतैक । शारीरिक श्रम करबामे लाज हेतैक । माय हवेलीमे काज कऽ लेथिन, अपने कतहु भनसीयाक काज कऽ लेताह, मुदा हर जोतैत, खेतमे श्रम करैत लाज हेतनि । ई हिपोक्रेसी अइ वर्गक सभसँ पैघ समस्या छैक । ब्रह्माक विरोध कोनो व्यवस्थाक विरोध नहि छलैक । ओ तऽ एकटा घटनाक विरोध छलैक । अपने मायक अपमानसँ विचलित छल ओ । ओकरा मायक अपमानक बदला लेबाक छलैक ।

ब्रह्मा आ ओकर मायक बात सोचैत-सोचैत एक बेर फेर प्रेमा पीसी मोन पड़लथिन । ओ हवेलीसँ बहरा गेल । ककरो संग नहि कयलक, ककरो किछु नहि कहलकै । सोझे ब्रह्माक अँगना गेल । नेनपनमे अनेको बेर गेल छल । घर ताकऽमे कोनो असुविधा नहि भेलैक । सोझे ओकर आँगनमे पहुँचि गेल । आँगन एकदम सुन्न छलैक जेना क्यो नहि होइ घरमे ! प्रेमा पीसीक कोनो पता नहि छलनि । टाटक दक्षिणवारी घर मात्र छलैक । बाँकी तीन दिस खाली । टाटेसँ तीन कात घेरल । दक्षिणबरिए घरमे दू टा कोठली आ ओकरे ओसारापर भानस-भात । पछबारी कात चुलहा बनाओल । भास्कर देखने छलैक ई सभ । कइ बेर एहि ओसारापर बैसिकऽ भोजनो कऽ गेल अछि । जा धरि ब्रह्माक बाबी जीबैत छलथिन, अपने लग बैसा खुअबैत छलथिन । हुनकर बाद प्रेमा पीसी अपने । अन्तिम बेर ब्रह्माक द्विरागमनमे आयल छल....मुँह देखाइ दऽ गेल रहैक ओकर कनियाँकेँ ।

भास्कर घरक लग आयल । एकदम सुन्न छलैक । ओ डेग उठौनहि छल घुरबा लेल कि घरसँ एकटा किरणेक बतारी स्त्री निकलिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक ओसारापर आ एकटा पीढ़ी खसबैत कहलकै– आउ । बैसू ।

मुँहपर कने घोघ छलैक । मुँह खूब साफ नहि देखाइ । भास्कर बैसल नहि । अंदाजसँ बुझबामे भांगठ नहि रहलैक जे ब्रह्माक स्त्री छैक । नूआ ठाम-ठाम सीअल, चिप्पी लागल । ब्लाउजक बाँहिपर सेहो चिप्पी । खरकट मैल मुदा ओइ मैल नूआक छोट-छीन घोघो तरसँ ओकर गोर आकृति झलकि रहल छलैक । स्वास्थ्यो रहैक मांसल । भास्कर प्रशंसापूर्वक देखिते रहि गेल । फेर अपने लजाकऽ दृष्टि हँटा लेलक आ पुछलकै– प्रेमा पीसी नहि छथि भौजी ?

ब्रह्माक स्त्री हाथसँ इशारा कयलकै । ओ ओकर पाछाँ पुबरिया कोठलीमे गेल । दिन-देखार आयल छल । आँगनमे खूब रौद आ इजोत छलैक । कोठलीमे किछु सुझबे नहि कयलैक । एकदम अन्हारगुज्ज । फेर आस्ते-आस्ते सभटा फरीछ भेलैक । कोठलीक माटिपर प्रेमा पीसीकेँ बान्हिकऽ ओंघरा देने छलैक । देहपर कोनो वस्त्र नहि, एकदम नाङ्गट । सौंसे माथ-कपार फूटल भाँगल, शरीरपर मारि खरोच । तामसे भास्कर जोरसँ बाजि उठल- "ई की भौजी ? एना बान्हिकऽ किएक रखने छियनि प्रेमा पीसीकेँ ?"

तावत प्रेमा जोरसँ हँसऽ लगलैक- अट्हास करऽ लगलैक....आउ आउ.... अहूँकेँ चाही...अहूँ इज्जति लेब ? लिअऽ-लिअऽ मुदा हमर ब्रह्माकेँ छोड़ि दिऔक । गरीब विधवाक एक्के टा आस अछि...ओकरा छोड़ि दिऔक ।

प्रेमा पीसी जोर-जोरसँ कानऽ लगलैक । भास्कर घरसँ बाहर आयल । पाछाँ-पाछाँ ब्रह्माक स्त्री अयलैक- "प्रचण्ड पागल भऽ गेल छथि माय ! कोनो कपड़ा-लत्ता शरीरपर रहऽ नहि दैत छथिन । चीरी-चीरी कऽ फाड़ि दैत छथिन । "एहिना नङ्गटे बाटे-घाटे बौआइत फिरैत छथिन । धीयापुता सभ रोड़ा मारैत छनि । पाथरसँ कान-कपार फोड़ि दैत छनि मुदा हिनका लेल धनसन । जहिया बेटाकेँ पुलिस लऽ गेलनि सभकेँ नेहोरा कयलथिन, कल जोड़लथिन । मुदा क्यो ने सुनलकनि । ओ बेटाक जाइत देरी प्रचण्ड बताहि भऽ गेलीह । कथुक होश नहि रहलनि, आब तऽ...

भास्कर लाजे मरि गेल । प्रेमा पीसी ओकर मदति चाहने छलैक, ओ नहि आबि सकलैक । प्रेमा पीसी पागल भऽ गेलैक आ सभठाम नङ्गटे बौआइत रहैत छैक । आब ओकरा ककरो मदति नहि चाहियैक ।

ओ अँगनासँ बहराय लागल । ब्रह्माक स्त्री टोकलकै- बैसब नहि ? सुनै छी सभदिन एहि आँगनसँ खा-पी कऽ जाइत छलहुँ । आइ ओ होशमे नहि रहलीह तऽ कमसँ कम एक गिलास पानियो पीबिकऽ जाउ । अहाँक दोस्त कहिओ घुरताह तऽ हमरा तमसयताह जे किछुओ आदर नहि कयलहुँ अहाँक ।

भास्कर ठाढ़ भऽ गेल । ब्रह्माक स्त्रीक मुँह देखलकै । ओइपर कोनो व्यंग्यक रेखा नहि छलैक । घुरि आयल आ पीढ़ीपर बैसि गेल- दिअऽ भौजी ! भौजी दौड़िकऽ घरक भीतर गेलैक । एक टा गिलासमे पानि आ रिकबीमे कनेटा गुड़क ढेप लेने अयलैक । गुड़ खा पानि पीबि लेलक आ बिदा भेल । आँगनसँ बहरयबासँ पूर्व कहलकै- "अहाँ चिन्ता नहि करू भौजी ! सभ ठीक भऽ जयतैक । बुह्मा घुरि आओत आ पीसी फेरसँ नीके भऽ जयतीह ।" ब्रह्माक स्त्रीक आँखिमे अविश्वास छलैक । ओ दृष्टि हँटा लेलक ।

ओतऽसँ ओ सोझे देवानजी लग गेल । देवानजी बूढ़ भऽ गेल छलाह । सुझितो कम छलनि । तैयो सभटा काज, मामिला-मोकदमा वैह देखैत छलथिन । भास्करकेँ देखि हड़बड़ा गेलथिन- आउ-आउ बौआ, हम तऽ कतेक बेर कहलियनि मालिककेँ जे हम आब नहि सकैत छी । अपनहुँ बूढ़ भेलहुँ । सचिन बाबूकेँ कोनो मतलबे नहि छनि । भास्कर बौआकेँ कहियनु जे सभटा कागज-पत्तर बुझि-सुझि लेताह । भास्कर हुनका लग बैसिते कहलकनि- ओ सभ अखन अपने लग राखू देवानजी ! हम ओ सभ सीखिकऽ की करब ? अखन दोसर काजसँ आयल छी । झूठ-मूठ केसमे फँसा दैत गेलियैक ब्रह्माकेँ, जमानतो नहि भेल छैक आइ धरि । से किएक देवानजी ?

"के करतैक ओकर पैरवी ? के रखतैक ओकील ? नीक जकाँ फँसा देल गेल छैक ब्रह्माकेँ । ओकरा छोड़बऽ लेल नामी वकील करऽ पड़तैक, तखने जमानति देतैक ओकर । के करतैक से ओकरा लेल ?"

–हम करबैक । भास्कर अविलम्ब कहलकै- अहाँ खर्च-वर्च लेल चिन्ता जनि करू, कहुना ब्रह्माकेँ जमानति दिआ दिऔक ।

देवानजी अवाक् । डेराइत कहलथिन- "मालिक बुझता तऽ बड़ बिगड़ताह ।"

भास्कर हुनका आश्वासन देलकनि- तकर चिन्ता अहाँ नहि करू । सभटा जिम्मेदारी हमर ।

आँगन घुरैत काल ओकर मोन किछु हल्लुक लागि रहल छलैक ।

भोरसँ नेना बड़ दिक कयने छलैक ।

सुधा बेर-बेर ओकरा परतारि दैत छलैक । अपन दूध लगा दैत छलैक, मुदा छौंड़ा झट मुँह हँटा लैत छलैक । पाँच बरखक भेलैक, कहियासँ अन्न खाइत छैक ! ओकर सुखायल छातीसँ कोना पेट भरितैक ?

सुधा छटपटाकऽ रहि गेल छलि । अपन नेनाकेँ एक मुट्ठी सुखलो अन्न देबा लेल नहि छलैक । अपन चिन्ता ओकरा नहि छलैक । घरमे बान्हलि बतही सासुओक चिन्ता ओकरा नहि छलैक । मुदा अबोध नेना ! ओकरा कोना परतारतैक ? कोना देखल जयतैक ओकर भूखे सुखायल मुँह ?

बापकेँ जहलमे रखने छैक सभ । तीन माससँ ऊपर भेलैक । कोना दिन खेपलक अछि, से की बुझतैक लोक ? भोरे उठि बतही सासुक गूँह-मूतक सफाइ...हुनका बान्हलेमे स्नान करौनाइ । खुजितहि भागि पड़ेथिन । कोनो ब्योंत कऽ हुनकर पेटमे दूटा अन्न, आ दू कौर अबोध नेनाक पेटमे । अपने खाली पानि पीबि... घरे-घर जायब...कुटाइ-पिसाइ करब, मानस-भात करब...कपड़ा-लत्ता खीचि देब । ककरो सिलाइ कऽ देब, ककरो किछु कूटि देब । सभ काज कऽ लैत छलि सुधा आ तखन रौद चढ़लापर... एक बजे धरि आँगन अबैत छलि, आँचर तर एक थारी भात वा हाथमे कनेटा पोटरी लेने । ओहीमे तीन प्राणीक गुजर होइत छलैक ।

आइ सेहो नहि भेलैक, सभ आँगन घुरि आयल, ककरो खगता नहि छलैक आइ । जकरा छलैको से दू-एकटा बेगारी करा निश्चिन्त भऽ गेलैक, किछु देबाक चर्चे नहि कयलकै । भुखायल छौंड़ा आँचर धयने छलैक सभ ठाम...ठुनकैत पछोड़ धयने छलैक । लोहछिकऽ दू चाट धऽ देलकै । खाली पीठपर पाँचो आँगुर उखड़ि गेलैक ।

कनैत-कनैत छौंड़ा बेहाल भऽ गेलैक । कोरामे लेने कहुना आँगन आयल। कतेक दुलार-मलार कयलकै, मुदा कनिते रहलैक छौंड़ा । कनिते सूति रहलैक । फेर खाय लेल नहि मंगलकै । निन्नोमे ओकर हिचुकी जारी छलैक ।

आ सुधाक छाती फाटऽ लगलैक । केहन परीक्षा लऽ रहल छथिन ईश्वर ! कहिआ घुरिकऽ औतैक एकर बाप ? आब नहि सम्हरैत छैक ओकरासँ एतेकटा जिम्मेदारी । ओइ दिन आँगन आबि कहि गेलैक भास्कर- अहाँ चिन्ता नहि करू भौजी ! ब्रह्मा घुरि आओत आ प्रेमा पीसी नीकेँ भऽ जयतीह । अइ परतारबकेँ तहिये बूझि गेल रहैक सुधा । तैयो नहि जानि किएक सभ दिन बाट ताकऽ लागल रहैक । भरिसक छोड़ाइये दैक ! मुदा दिन-पर-दिन बितैत गेलैक- आ ब्रह्मा नहि छुटलैक । ओइ दिन जखन भास्कर आँगनमे आयल रहैक, छौंड़बा कतहु बाहर खेलाइत छलैक । जाइत काल भास्करकेँ देखलकै । अपन मायसँ पुछलक- ई के छलथिन माय ? अपना अँगना किएक आयल छलथिन ? ई तऽ हवेलीक छलथिन ।

सुधा कहलकै- हवेलीएक छथिन मुदा तोहर बाबूक दोस्त छथिन ।

छौंड़बा हुलसि गेलैक- तऽ हिनका कहुन ने माय जे बाबूकेँ लऽ अनथिन । नहि जानि कतऽ लऽ गेलनि सभ ?

सुधा ओकरा कोरामे लैत कहलकै- "कहलिअनि अछि बौआ ! ई अबस्से छोड़ा देथुन तोहर बाबूकेँ ।"

आ से खाली नेन्नाकेँ परतारबाक लेल नहि कहने छलैक सुधा । भास्करक गप्पपर पहिने अविश्वास भेल छलैक । फेर पूरा आस बन्हा गेल छलैक । अबस्से छोड़ा लेथिन हुनका ई ।

दिन बितलैक । सप्ताहो बीति गेलैक, ब्रह्मा नहि छुटलैक । नेना खाइ लेल जिद करैत छलैक आ ओ धयले चाट लगा देलकै ।

सुधाक मोन छटपट कऽ रहल छलैक । दू आँगनसँ माँगि घुरि आयलि । आइ सभ सप्पत खा लेने छलैक जेना ! हताश सुधा आँगनक अरड़नेबा-गाछसँ बहुत रास अरड़नेबा तोड़लक लग्गीसँ । सभकेँ काटि, उसिनि लेलक आ नून मिला बूढ़ीकेँ खुआ अयलनि ।

छौंड़ा ओहिना सूतल छलैक । साँझ भऽ गेल छलैक । सुधा जगा देलकै ओकरा । मुँह हाथ धोकऽ आँचरसँ पोछि देलकै आ फेर अपने हाथे ओ उसनल अरड़नेबा खुअबऽ लगलैक- "आइ इएह खा ले बाउ ! काल्हि अबस्से भात रान्हि देबौक ।"

छौंड़ा किछु ने बजलैक । चुपचाप खाय लगलैक । सुधाक आँखिसँ नोर बहऽ लगलैक ।

छौंड़ा टोकि देलकै-"कनै किएक छैँ माय ? हम नहि जिद करबौ कहिओ आब । कानै नहि ।"

सुधा आर कानऽ लागलि । आ बेटाकेँ करेजासँ साटि लेलक- "हमही डाइन छी रे ! सभकेँ खा जयबौ । भुखायल नेनाक पीठपर चाट मारलौं । हाथ टूटि जायत हमर ।"

छौंड़बा बुझनुक जकाँ जल्दी-जल्दी चारि कौर खा लेलकै आ कहलकै- "हमर पेट भरि गेल माय, आब तोहूँ खा ले ।"

अपने हाथे खुअबऽ लगलैक । सुधाक आँखिक नोर आर बढ़ि गेलैक । ओहिना कनैत दू कौर खा लेलक ओहो, उसनल अरड़नेबा नोनक संग ।

छौंड़ा मुदा ओतबे खाकऽ प्रसन्न भऽ गेलैक । मायक कोरामे खेलाय लगलैक । सुधा टांग पसारि देलकै । छौड़बा दुनूकात टांग दऽकऽ ओइपर बैसि गेल । सुधा ओकर दुनू बाँहि बेरा-बेरी आगू-पाछू झीकैत कहलकै–

दालि दड़री
मरीच दड़री
राजा पोखरि मे कतेक मछरी ?

छौंड़बा बीचेमे प्रश्न कऽ देलकै– राजा ककरा कहै छैक माय ?

सुधा कहलकै– जकरा लग सभ-किछुक अम्बार रहैत छैक, जे हमरा-तोरा जकाँ खाय लेल बेलल्ल नहि रहैत अछि । जेना हवेलीक लोक सभ छौ, वैह सभ राजा छैक ।

छौंड़ा फेर प्रश्न कयलकै– पोखरिक माछ ओकर कोना भऽ जाइत छैक ?

सुधा कहलकै– जकर पोखरि, तकर माछ ।

छौंड़बा नहि मानलकै– पोखरि कोना ओकर भऽ गेलैक ?

सुधा कहलकै– ओकरे छैक बौआ ! ओकर पुरखाक खुनाओल छैक । ओकर माछ, ओकर पानि, सभटा ओकरे छैक ।

छौंड़बाकेँ मायक गप्प नीक नहि लगलैक । परसू पोखरिमे मछहर रहैक– बड़का महाजाल खसल रहैक । ललमुँहा रहु-भाकुर सभ पानिमे कूदऽ लगलैक तऽ बड़ नीक लगलैक ओकरा । भीड़पर ठाढ़ माछक ओ खेल देखैत रहल । मलहा सभ जाल घीचि माछ सभ बहार कऽ लेलकै । एकटा मलहाक खोंगीसँ एकटा रहुक थरि कूदि कऽ बाटपर खसि पड़लैक । ओ ओकरा उठा लेलक ।

ताही कालमे सोनू चौधरीक बेटा ओकर गट्टा पकड़ि लेलकै– चोरा नहि-तन ! माछ चौरैने छैं ?

ओ कानऽ-कानऽ सन भऽ गेल– ''नहि मालिक, हम चोरी नहि कयने छी । माछ बाटपर खसल छलैक, उठा लेलियैक, अहाँ लऽ लिअऽ ।

ओ माछ छीनैत कहलकै– ''देखू ने अखनेसँ एकर चालि ! चोरक बेटा चोर ।''

आ जाइत-जाइत एक चाट धऽ देलकै ओकर गालपर । कनैत माय लग आयल । माय नोर पोछैत कहलकै– ''जाय दहिक बौआ ! ओ मालिकक बेटा

छैक । ओकरासँ अराड़ि नहि करी । तोहर बाबू कयलथुन, अनेरो झंझटमे फँसलथुन ।

ओ चुप्प भऽ गेल, मुदा मोनमे किछु सुनगऽ लगलैक । आ आइ फेर माय कहैत छैक पोखरि ओकरे छैक, ओहि महक माछ ओकरे छैक । ओ सभ राजा छैक ।

ओ मायसँ पुछलक– ''ई राजा के बनबैत छैक ?''

सुधा कहलकै– कपार ! अपन कपारेसँ क्यो राजा होइ-ए आ क्यो फकीर ।

–''झूठ । एकदम झूठ सरबन''– एकाएक अपन स्वामीक स्वर सुनि सुधा चौंकि उठल । लगेमे एकटा पुरुष ठाढ़ छलैक । लम्बा बाँस जकाँ ठाढ़ । मुँहपर दाढ़ी-मोछ छलैक बेश घनगर । हाथमे झोरा छलैक । इजोरियामे अपन स्वामीक बदलल रूप चिन्हलक सुधा आ बेटाकेँ गह्वरित होइत कहलक— तोहर बाबू घुरि अयलथुन ।

आ कानऽ लागलि । सरबन अह्लादित होइत बाप दिस दौड़ल । फेर मायकेँ कनैत देखि थकमका गेल । ब्रह्मा ओकरा लग धीचैत कहलकै– तोहर माय तोरा झूठ खिस्सा कहैत छलथुन । आ बैस हमरा कोरामे, बैस । हम तोरा खिस्सा कहैत छिऔक ।

सरबन बापक टाँगपर बैसि गेल ओही ठाम । ब्रह्मा ओकर बाँहि झीकैत कहलकै–

दालि दड़री
मरीच दड़री
बाबा पोखरि मे कते मछरी ?

सरबन हर्षित होइत बाजल– ''ककर बाबाक पोखरि छैक बाबू ?''

ब्रह्मा सुधा दिन तकैत कहलकै– ''सभक बाबाक पोखरि छैक बाउ ! पोखरि आब कोनो एक गोटेक नहि रहतैक । सरकारक छैक आ सरकार सभक छैक । ककरो बापक खुनयलासँ पोखरि ककरो बपौती नहि भऽ जयतैक । पोखरि सभक छैक, तोरो छौक ।

सरबनकेँ ई खिस्सा बड़ नीक लगलैक । खिस्सा सुनैत-सुनैत ओ फेर सूति रहल आ लगले सपना देखऽ लागल । पोखरिमे महाजाल खसल छलैक ।

ललमुहाँ रहु-भाकुर सभ कूदि रहल छलैक । भरि गामक लोक जालमेसँ माछ बीछि रहल छल । सरबनो बीछि लेलक दूटा माछ आ दुनू हाथमे एक-एकटा माछ लेने अँगना दिस दौड़ल ।

ब्रह्मा उठिकऽ ठाढ़ भेल-"मायकेँ नहि देखैत छियैक ! कतहु गेल अछि ?"

सुधाक करेज काँपऽ लगलैक । फेर कोनो काण्ड हेतैक । मायक दशा देखितहि फेर पागल भऽ जयतैक । ओ बाट छेकैत जकाँ कहलकै- "नहि, जयथिन कतऽ ? कोठलीमे सूतल छथिन खा-पीकऽ । भोरे गप्प करब ।"

ब्रह्मा तेयो बढ़ैत कहलकै- चलू, सुतलेमे गोड़ लागि लेबऽ दिअऽ ।

सुधा देहरिपर ठाढ़ भऽ गेलैक- लागि लेबनि भोरे । अखन आँखि लागल छनि । निन्न बड़ पातर भऽ गेल छनि अहाँक गेलाक बाद । एक बेर उठि गेलीह तऽ फेर निन्ने नहि हेतनि ।

ब्रह्माकेँ आशंका भेलैक-"सत्त बजैत छी ने ! माय अछि ने घरे मे !

सुधा झट कहलकै- अहाँक सप्पत । घरेमे छथि ।

सरबन निन्नमे स्वप्न देखि रहल छलैक । सुधाक आँखिमे ने निन्न छलैक, ने स्वप्न । सूतल सरबनकेँ उठाकऽ कोठलीमे देलकै । अपनो सभक बिछौन कयलक । फेर टप-टप नोर खसऽ लगलैक । ब्रह्मा ओकरा लग बैसिऽ नोर पोछैत पुछलकै- "एना कनै किए छी आब ? आबि तऽ गेलहुँ हम ।"

सुधा कनिते रहलैक- एतेक दिनपर अयलहुँ घर आ आगूमे देबा लेल अछि इएह उसनल अरड़नेबाक एक कौर ।

ब्रह्माक आँखिमे किछु लहकि उठलैक । फेर लगले ओ मिझाओ गेलैक । झोरासँ बहार करैत कहलकै- तऽ ताहि लेल किएक कनैत छी ! देखू, हम की अनने छी । सरबन तऽ सूति रहल । भोरे खुआ देबैक ।

झोरामे मुरही लाइ छलैक । ब्रह्मा अपनो फाँकऽ लगलैक आ सुधोकेँ देलकै । सुधाकेँ एको फक्का गीड़ल नहि गेलैक । गरामे काँट जकाँ गड़ऽ लगलैक । नेन्ना दिन भरि उपासे रहलैक, रातियोकऽ भुखले सूति रहलैक ।

कनैत-कनैत सुधो सूति रहलि । ब्रह्माक छातीसँ नीक जकाँ सटिकऽ सूति रहलि । सौसे मुँह अखनो नोरसँ भीजल छलैक मुदा निश्चिन्त सूतलि छल । कतेक

मासक बाद आइ अपन स्वामीक छातीपर मूड़ी राखि सभ चिन्तासँ मुक्त भऽ गेल छलि जेना !

ब्रह्माक आँखिमे मुदा निन्न नहि छलैक । कतेक मास जहलमे बिता आइ अपन घर घुरल छल । बहुत दिनपर अपन बिछौन आ बिछौनपर अपन पत्नीक सामीप्य आ स्नेह भेटल छलैक । बड़ी राति धरि सुधा कनिते रहलैक, ओ ओकरा शान्त करैत रहलैक । दुलार करैत रहलैक । दुलार आ स्नेहसँ सभटा बिसरि गेलैक सुधा आ सूति रहलैक । मुदा ब्रह्माक आँखिसँ निन्न पड़ायल छलैक । ओकरे मायक इज्जति गेलैक आ वैह निरपराध जहलो गेल । सचिन बाबूक कुकुर सभ नाटक कयलकै आ भरि गाम ठाढ़ भेल तमाशा देखलकै । मारैत-मारैत बेहोश कऽ देलकै ओकरा, मुदा ककरो किछु बजबाक साहस नहि भेलैक । अइ गामक लोक, गरिबहा लोक एतेक निर्बल, एतेक असहाय कहिआ धरि रहतैक ?

जहलमे ओकर खिस्सा सुनि दादा कहने रहैक जे तोँ उचित काज कयने छेँ, अन्यायक विरोध कयने छेँ । ई विरोध जारी राख । अइ लड़ाइमे हमरा लोकनि तोहर संग देबौक । देशक आनो-आनो भागमे लड़ाइ जारी छैक । एना असहाय भऽ जुलुम नहि सहतैक आब लोक ।

जहलोमे सभ दादे कहैत छलैक ओकरा । ओकर असल नमा जेना ककरो बूझले ने होइ । जहलोमे खूब बढ़ियाँ-बढ़ियाँ कपड़ा पहिरैत छलैक- आ नीक खेनाइ भेटैत छलैक । लगैत छलैक जेना जहलमे नहि, कोनो पहुनाइमे आयल हो ! आधा पेट खिच्चड़ि आ मोट-मोट रोटी खाइत-खाइत ब्रह्मासभ तबाह छल ।

दादा बड़ दयालु छलैक । जहलोमे सभक दुखनामा सुनैत छलैक । जाइत काल ब्रह्माकेँ कार्डो देलकै- "ई अपने घर छियौक । कहिओ काज होउ, एहि पतापर चल अबिहें ।"

ओ कार्ड ब्रह्माक झोरामे पड़ल छलैक । डाँड़मे जहल जाइत काल बीसटा टाका छलैक । नहि नजरि गेलैक ककरो, ने तऽ निकालिए लेने रहितैक । ओकरा कोनो होश छलैक !

जहलसँ बहरायल तऽ एकटा झोरा लेलक आ सनेसमे मुरही-लाइ कीनि लेलक । दाढ़ी-मोंछ खूब बढ़ि गेल छलैक । कान्हपर ओ झोरा लटका चलऽ लागल तऽ कोनो नेता सन लागऽ लागल । ब्रह्माकेँ ई सोचि अपने हँसी लगलैक । चोरीक इलजाममे जहलमे छल आ नेताक हुलिया बनि गेलैक । खाली जहलसँ बहराइत

काल माला लेने कोनो भीड़ नहि ठाढ़ छलैक बाहर । अपन परिवारक लोक नहि छलैक । के रहितैक ? छैके के ? माय, सुधा आ नान्हि टा सरवन । ओ सभ कोना औतैक एतऽ ?

नहि जानि कोना एतेक दिन खेपने हेतैक ! घरमे ने टाका छलैक, ने अन्न । माय अपमान आ दुःखसँ बताहि जकाँ भऽ गेलि रहैक । एकसर सुधा की-की सम्हारने हेतैक ?

एतबा सोचिते ओकर आँखिमे ज्वाला धधकऽ लगलैक- यदि हमर माय, स्त्री आ बच्चाकेँ किछु भेल तऽ आगि लगा देबैक महेन्द्र चौधरीक हवेलीमे । ओही आगिमे झोंकि देबैक ओकर सौंसे परिवारकेँ । ओही आगिमे धधकैत, उद्विग्नतामे डूबल ओ ट्रेन पकड़ि गाम दिस बिदा भेल । साँझ भेलापर गामक स्टेशनपर उतरल । दुइये स्टेशन छलैक दरभंगासँ ।

जहलसँ बहराइत काल आ गाममे अपन घर दिस बढ़ैत काल एकटा आरो प्रश्न ओकर मोनकेँ मथि रहल छलैक- हमरा के छोड़ा देलक ? कोना भेल हमर जमानति ? आ अही गुनधुनमे रातुक झलफलमे अपन आँगनमे आबि गेल छल । गाममे क्यो नहि चिन्हलकै । सुधा पहिने अकचका गेलैक । सरबनकेँ टाँगपर बैसा खिस्सा कहि रहल छलैक । ब्रह्माक मोनक दुश्चिन्ता समाप्त भेलैक ।

सुधा सूति रहल छैक, मुदा ओकर दुश्चिन्ता अखनो समाप्त नहि भेल छैक । अइ अन्यायक प्रतिकार कोना हेतैक ? बदला कहुना लेबहे पड़तैक । एना सहि जायब ओकर मायक अपमान हेतैक, ओकर गरीबी आ असामर्थ्यक अपमान हेतैक ।

मुदा की कऽ सकतैक ओ ? महेन्द्र चौधरी आ ओकर पुत्रक सामर्थ्य असीम छैक । कुकुर सभ पोसने अछि ओ । दसटा लठैतकेँ बैसाकऽ खुअबैत अछि । ओकरा अपन आ अपन परिवारक पेट भरब मस्किल छैक । भनसीयाक काज करैत छल महेन्द्र चौधरीक देयादीमे । माय महेन्द्र चौधरीक आँगनमे छलैक ओकर नेनपनेसँ । दुनूक काज गेलैक । मायक इज्जति गेलैक आ काज गेलैक । ओ जहल गेल आ महेन्द्र चौधरीक दयाद, उपेन्द्र चौधरी, आब ओकरा नहि रखतैक अपन आंगनमे । ओकरा बूझल छैक ।

मिडिल तक पढ़ि गेल छल कहुना । सभ गुरुजी कहैक जे बड़ तेजगर रहय । भास्कर जखन चल गेलैक गामसँ, तऽ वैह फस्ट करय । हाइस्कूलमे तैयो

नाम नहि लिखा सकलैक । असगर मायक कमाइसँ तीनू प्राणीक गुजर मस्किल भऽ गेलैक । नानी जीबैत रहैक । ओकर बिआहक जिद धऽ लेलकै । पन्दरहे वर्षक छल तऽ बिआह करा देलकै । नानी गेलैक आ सरबन आबि गेलैक । कहुना गुजर भऽ जाइत छलैक ।

सुधाक चेफड़ी लागल साड़ी आ फाटल ब्लाउज देखि कानऽ सन मोन भऽ गेलैक । गरीबक नसीबमे फाटल-पुरान तऽ रहिते छैक, मुदा ई तऽ देहो झपबा जोगर नहि छलैक । नहि जानि कोना खेपलकै एतेक दिन ?

आ माय कोना खेपलकै ? एतेकटा अपमान आ दुख कोना सहने हेतै माय ? सुधा गोरो ने लागऽ देलकै राति । परतारि कऽ घर लऽ अनलकै । ओहो जिद नहि कयलकै । मायकेँ देखि फेर ओकर शोणित खौलऽ लगितैक ।

निन्न नहिए भेलैक । चिड़ै-चुनमुन्नी बाजऽ लगलैक । सुधा तैयो निभेर सूतल छलैक । ओकरा बड़ सिनेह आ दया भेलैक । नहि जानि कतेक रातिक बाद सूतल छैक एना । सरबनो सुतले छलैक । माय-बेटाकेँ ओहिना सूतल छोड़ि ओ कोठलीसँ बाहर आबि गेल ।

आँगनमे इजोत पसरि गेल छलैक । मायक कोठलीक केबाड़ खूजल छलैक । सुतबा काल भिड़का देने रहैक सुधा । भरिसक कुकुर-बिलाड़ि पैसल छैक कोठलीमे । ओ कोठलीमे पैसल । सामनेक हाल देखि ओ स्तब्ध रहि गेल । घरमे पटियापर ओकर माय पड़ल छलैक । हाथ-पयर दूटा रस्सीसँ बान्हल । देह एकदम उघार । चीरी-चीरी कयल धोती एक कात फेकल छलैक । कपारपर टेटर, देहमे नछोड़, ठाम-ठाम चमड़ा नोचल ? मायक केश गर्दा आ माटिसँ भरल ।

ब्रह्माक आँखिक धधरा लपलपा उठलैक । नस-नसमे एकटा हिंसक आवेश तड़तड़ा उठलैक । फेर नोर खसऽ लगलैक । कानऽ लागल ब्रह्मा । अपन मायक दुर्दशा आ अपन सामर्थ्यहीनतापर कानऽ लागल । माय पागल भऽ गेलैक आ ओ जहलमे पड़ल रहल ।

सुधापर तामस भेलैक । एना बान्हिकऽ किएक रखने छैक मायकेँ ? जल्दीसँ चीरी भेल धोती देहपर राखि देलकै आ बन्हन खोलऽ लगलैक । हाथ-पैर एकदम ठरल छलैक ।

बन्हन खोलि टोकलकै- "माय, उठ ने माय ! देख, हम आबि गेल छियौ ।"

कोनो उत्तर नहि । ब्रह्मा विकल भऽ गेल- ''बजै किए ने छैं ? उठ ने माय ! हम आबि गेलियौ ।''

तैयो कोनो उत्तर नहि । हड़बड़ाकऽ सौंसे देह डोला देलकै । सर्द हेमाल देह– निष्प्राण । ब्रह्मा तेना चीत्कार कयलक जेना क्यो गला रेति रहल होइ ।

सुधा दौड़लि अयलैक । मायक देहपर झुकि गेलैक- ''उठथु ने ! देखथु, हिनकर बेटा घुरि अयलथिन, किछु कहथिन नहि हिनका ।''

प्रेमाकेँ आब ककरोसँ किछु कहबाक नहि छलनि । सुधा हुनकर सौंसे देह झकझोरि कानऽ लगली- ''नै, से नहि हेतनि । बाजथु ई । ई तऽ भारी अकलंक देने जाइ छथि हमरा । गामक लोक आ हिनकर बेटो कहताह जे किछुओ दिन नहि सम्हारि सकलियनि हिनका । हिनका बेटाकेँ की जबाब देबनि हम ? हमरा एतेक पैघ दण्ड नहि देथु...बाजथु किछुओ ।''

बजनिहारि तऽ छलीहे नहि । सभदिन लेल चुप्प भऽ गेलि छलीह, ने तऽ लगले उठिकऽ ठाढ़ भऽ जैतथिन- आउ आउ, अहुँ लेब हमर इज्जति...लऽ लिअऽ... खाली हमर ब्रह्माकेँ छोड़ि देबैक...ओकरा छोड़ि आर क्यो नहि अछि हमर...नेहोरा करैत छी हम...

ओ चुप्प छलीह आ सभदिन चुप्प रहऽवाली शान्त गंभीर सुधा चिचिआ कऽ कानि रहल छलीह– ''ई उचित नहि भेलनि हिनकर ? हमर सेवा, हमर मेहनतिक ई इनाम दऽ गेलीह ई । जिनगी भरि लेल एतेक भारी अकलंक !''

ब्रह्मा सेहो कानऽ लागल— अहीं मायसँ भेट नहि करऽ देलहुँ हमरा रातिमे । हमरा देखि लैत तऽ बचि जाइत माय । किएक ने भेट करऽ देलहुँ हमरा ? माय ओइ घरमे मुइल पडलि छलि आ हमरा लोकनि...

सुधा आर जोरसँ कानऽ लगलैक- ''से की जाने गेलिऐक ! हमरा तऽ भेल जे मायकेँ ओना बताहि बनलि देखबनि तऽ रातियेमे कोनो काण्ड भऽ जायत । एतेक पैघ अयश लिखल छल हमरे भागमे ।...उठबियनु आब...लऽ चलिअनु आँगनमे ।

ब्रह्मा उठा लेलकै कोरामे । जे माय कोरामे खेलौने छलैक ओकरा, तकरे निर्जीव शरीर आइ ओकर कोरामे छलैक । घरे-घर मेहनति-मजदूरी कऽ पोसने छलैक ओकरा । विधवा-बेसहारा होइतो पोसिकऽ एतेक पैघ कयने छलैक ओकरा। अपन मायोकेँ पोसने छल ओही मेहनतिक कमाइसँ । मुदा पापक हवेली ओइ

मेहनतिपर पापक मोहर लगा देलकै । ओ नहि बचा सकल अपन मायकेँ । आँगन आनि तुलसीचौरा लग पाड़ि देलकै आ लगमे बैसि गेल । सुधो बैसि गेलैक लगेमे । आंगनमे रौद पसरि गेल छलैक । सुधा अपन स्वामी दिस तकितहि डेरा गेलि । ओकर आँखिमे फेर कोनो हिंसक ज्वाला लपलपा रहल छलैक ।

आशा चौधराइन अपन पोताकेँ खेला रहल छलीह ।

साँझ भऽ गेल छलैक । साँझे नहि, राति भऽ गेल छलैक । झलफल अन्हार । खूब तरेगन रहैक आकाशमे । चन्द्रमा नहि । पोता अन्हारमे किम्हरो निकलि ने जाय तेँ रोकिकऽ रखने छलथिन । भास्कर घरेमे छलनि । किरणोकेँ ओम्हरे पठा देने छलथिन । बड़ नीक लागि रहल छलनि हुनका । जहिआसँ छोटका बेटा आयल छलनि, सभ किछु बड़ नीक लागि रहल छलनि । हवेलीक ओ स्वप्न, अपने आँखिए जगैतमे देखल ओ डेराओन स्वप्न हुनका बिसरि गेल छलनि । मोनो नहि राखऽ चाहैत छलीह ओकरा ।

मोन हुनका ओनाहो किछु ने रहैत छनि । खिस्सा-पिहानी तऽ आरो नहि । सचिन आ भास्करकेँ तऽ पितामहिये खिस्सा कहलथिन सभ दिन । आब ओ अपने पितामही बनि गेल छलीह आ राजा जिद धयने छलनि ।

किछु ने फुरेलनि तऽ दुनू टांग पसारि लेलनि आ ओइपर राजाकेँ बैसा दूनू हाथ बेराबेरी झीकैत कहय लगलथिन–

दालि दड़री
मरीज दड़री
बाबा पोखरि मे कतेक मछरी ?

राजा बीचेमे टोकलकनि- ''ककर बाबाक पोखरि छैक बाबी ?''

आशा चौधराइन सगर्व कहलथिन- तोहर बाबाक ।

आ राजा फेर पूछि देलकनि- ''हमर बाबाकेँ के देलकनि पोखरि ?''

आशा चौधराइन आरो सगर्व कहलथिन– 'हुनकर बाबा ।'

राजा फेर प्रश्न कऽ देलकनि– ''आ हुनकर बाबाकेँ के देलकनि बाबी ?''

आशा चौधराइन कहऽ जा रहल छलथिन जे ''हुनकर बाबा...'', कि आँगनमे गरजैत महेन्द्रनाथ चौधरी पैसलाह– ''देखि लिअऽ अपन सुपुत्र सभक करनी । एक बेटा ओइ दिन नाक कटौलनि आ एकटा ऐरू-गैरू आँगनमे आबि गारि पढ़ि गेल । आब दोसर बेटा ओकर पैरबीकार बनल छथि, जमानति दिआ देलथिन, हमर सभक कयल मोकदमाकेँ झूठ साबित करताह ओ । छथि कतऽ अहाँक देव-पुरुष ? गरीबक उद्धारक बनताह । अपन औकाति की छनि ?

भास्कर कोठलीसँ बाहर आबि गेल– ''किछु कहैत छलहुँ बाबूजी ?''

महेन्द्र चौधरी ओकरा देखितहि जोर-जोरसँ गरजऽ लगलाह– 'आर कटाबह अइ हवेलीक नाक ! तोहर तऽ रंगे-ढंग विचित्र छलऽ नेनपनेसँ ! तैं ओतेक पढ़ा देलिअह जे सुबद्धि हेतह ! मुदा पढ़ि-लिखिकऽ मूर्ख बहरेलह तोँ ! अपन माय-बापकेँ गारि देबऽवलाकेँ देखि की अयलह ? ओकरा जहलसँ छोड़ा देलहक ?

भास्कर हर्षित होइत बाजल–''ब्रह्माक जमानति भऽ गेलैक बाबूजी ?''

महेन्द्र चौधरी अपन स्त्रीपर घुड़कलाह– ''देखि लिअऽ अपन सुपुत्रक हाल ! तेना प्रसन्न भऽ रहल छथि जेना अपने जेठ भाइ छूटि गेल होथि ! जा', आइए चल जा पटना तोँ । तोरा गाममे रहबाक कोनो काज नहि छऽ । तोँ नहि छऽ जमींदारिक काज बुझबा जोगर ।

भास्कर बड़ दुखसँ कहलकै– ''चलि जायब बाबूजी ! हमरा तऽ जयबाक अछिए । छूट्टीमे आबि गेल रही । हमरा बूझल छल जे हम अयोग्य छी । कोनो काजक नहि छी । मुदा ई नहि बूझल छल हमरा जे छुट्टियोमे हमर आयब नीक नहि लगैत अछि अहाँलोकनिकेँ ।''

महेन्द्र चौधरी कने नरम पड़लाह– ''से कखन कहलिअऽ हम ? अपन घर छऽ । आबह जा, मुदा आब बच्चा नहि छऽ । खाली मायासँ काज नहि चलैत छैक । जे हमर अपमान कयलक, हमर पुरखाकेँ गारि पढ़लक, तकरा कोन बुद्धिये छोड़बा देलहक तोँ ? हमर अपमान तोहर अपमान नहि भेलह ?''

भास्कर दृढ़तापूर्वक कहलकै– ''अबस्स भेल । मुदा ओ होशमे नहि छल । अइ हवेलीमे ओकर माइक अपमान भेलैक । ओकर इज्जति लूटल गेलैक । ओइ अवस्थामे ककरो माथा खराब भऽ सकैत छलैक । तकरा लेल एहन दण्ड ! झूठ-मूठक केसमे पठा देलियैक ओकरा जहल । माय दुःख आ अपमानसँ बताहि

भऽ गेलैक । स्त्री-नेना अन्न बेतरेक मरि रहल छैक । ओकरा छोड़ाकऽ हम कोनो गलती कयने छी ? अहीँ कहू बाबूजी ! माय तोहीँ बाज !''

माय किछु ने बजलैक, मुदा बाप गरजि उठलथिन– ''ई तोँ हमरासँ पुछैत छऽ ? एहन काज क्यो आन कयने रहैत तऽ गरदनि छोपबा लेने रहितियैक ।''

भास्कर गरदनि झुका देलकै– तऽ गरदनि कटबा दिअऽ बाबूजी ! मुदा जा धरि जीबैत छी, ई अन्याय हमरासँ बर्दास्त नहि हैत । बस्स करू बाबूजी आब । बहुत भेल ई सभ खेल । युग बदलि गेल छैक...कोनो युगमे गरीबकेँ सतौनाइ नीक काज नहि कहल गेलैक अछि । हमरा अइ आत्मग्लानिसँ बचाउ बाबूजी ! भैयोकेँ कहियनु । जिनका हम प्रणाम करै छी, जे हमर आदरक पात्र छी, तिनकर कर्मपर हमरा गर्व हेबाक चाही । एहन किछु ने करथि ओलोकनि जाहिसँ मूड़ी नहि उठा सकी हम...

माय ओकरा ठेलिकऽ हँटबऽ लगलैक– ''जा, घर जा । बाप-पित्तीक मुँह नहि लागी ।''

राजा पहिनहि डरेँ पड़ा गेल छलैक माय लग । ओकर हाथ पकड़ि किरणो अपन कोठलीसँ बाहर आबि गेल छलि । रम्भा सेहो ओसारापर आबि गेल छलि ।

आँगनमे थरथर करैत महेन्द्रनाथ चौधरी ठाढ़ छलाह– ''अही दिन लेल तोरा शिक्षा भेटल छलह ? आइ तोँ बापक मुँहपर कर्म-कुकर्मक ज्ञान बघारि रहल छऽ । बर्दास्त करबाक एकटा सीमा होइत छैक । फेर कहिओ एहन बात अपन मुँहपर अनलऽ तऽ हमरासँ खराप लोक दुनियामे नहि भेटतह । चलि जा भोरे...पढ़ऽ लिखऽ गऽ...जा धरि नहि लिखिअऽ, गाम अयबाक काज नहि छऽ... । हवेली,... कुल खानदानक मर्यादाकेँ नष्ट कऽ देलह तोँ ।''

.भास्कर गोड़ लागिकऽ ठाढ़ भऽ गेल– ठीक छै बाबूजी, चल जायब भोरे । ता धरि मुँह नहि देखायब जाधरि नहि लिखब अहाँ । मुदा विश्वास राखू, एतऽ रही वा कतहु,...कुलक मार्यादा, हवेलीक मार्यादा नहि तोड़ब हम । अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेलासँ.....सत्य लेल लड़लासँ कुलक मर्यादा बढ़ैत छैक.... घटैत नहि छैक....।

भास्कर अपन कोठलीमे चल गेल । आँगनमे तामसे थरथराइत महेन्द्रनाथ चौधरी आ सकपकायल आशा चौधराइन ठाढ़ छलीह ।

किरणो दौड़ल कोठलीमे गेल । माथ दुनू हाथसँ पकड़ने बिछौनपर बैसल

छल भास्कर । किरण लग आबि कहलकै- ''बाबूक बातक एना जबाब किएक देलियनि ? श्रेष्ठ छथि । अहीं सहि जैतहुँ ।''

भास्कर मूड़ी उठौलक । आश्चर्यसँ किरण दिस देखलकै- ई अहाँ कहि रहल छी किरण ? सभटा जनैत ? बाबू हमरा किछु कहितथि तऽ सहि जैतहुँ हम। मुदा जे बात ओ कहि रहल छथि, से हमरा मान्य नहि अछि । बराबरि अपन इच्छासँ नचबैत आयल छथि हमरा । मुदा अपन आत्माक आवाजकेँ मारिकऽ कतेक दिन जीबि सकब ? जाय दिअऽ । आइ खिस्से खतम कऽ देलनि बाबू । काल्हि भोरे चल जायब । कोनो व्योंत हेतइ । तखन अहूँ चल आयब । राजाक संगे । अइ हवेलीसँ सम्पर्के ने रहत कोनो ।

किरण लग बैसैत कहलकै- सत्ते, नहि रहत कोनो सम्पर्क । अहाँक माय-बाबू छथि, भैया-भौजी छथि । तमसाकऽ विदा भेने सभ सम्बन्ध टूटि जायत।

भास्कर कने शान्त होइत कहलकै- सम्बन्ध नहि टूटत, मुदा ने देखबैक किछु, ने बाजब । सम्पर्के ने रहत तऽ एतुक्का नीक-बेजायसँ सेहो मतलब छूटि जायत ।

किरण गम्भीरतासँ प्रश्न कयलकै- एतुका नीक-बेजायसँ मतलब छूटि जायत, मुदा अधलाह काज तऽ सभ ठाम होइत छैक । ओतहुसँ पड़ा जायब ? ओतऽ अन्तरात्मा नहि किछु कहत ?

भास्कर असहाय जकाँ बाजल- तखन की करू हम ? अही कहू ने !

स्नेहसँ ओकर माथ सोहरबैत कहलकै किरण- किछु करबाक नै काज, तामस थुकरि दिअऽ । बाबू जे कहलनि तकरा बिसरि जाउ ।

-''मुदा अहीं कहू किरण ! ब्रह्माकेँ छोड़बा देलामे कोनो अन्याय भऽ गेल हमरासँ ?''

-''से कखन कहलहुँ हम ? हम तऽ खाली इएह कहैत छी जे बाबू जे कहलनि से बिसरि जाउ । ओ श्रेष्ठ छथि, हुनका अधिकार छनि ।''

-ओही अधिकारसँ आइ धरि हमर मुँह बन्द करैत आयल छथि । आब अतत्तह भऽ गेल । अहीं तऽ लिखने रही अपन चिट्ठीमे । प्रेमा पीसी बताहि भऽ गेलीह, से अहाँ नहि लिखलहुँ । कहबो नहि कयलहुँ । बाबी कहने छलि किरण जे अन्याय-अनीतिकेँ जे टोकारा दैत छैक, ओकरा मारि-गारि सहऽ पड़बे करैत

छैक...। हमरो सहऽ पड़त....अहूँकेँ सहऽ पड़त किरण....हम सभटा स्पष्ट देखि रहल छी । अहूँ तैयार रहू किरण...

किरणकेँ डर होबऽ लगलैक- ''ई की सभ बाजि रहल छी ? किछु ने हैत । चैनसँ सूतू, मोन स्थिर करू ।''

भास्कर गम्भीर स्वरमे कहलकै— हमर मोन स्थिर अछि किरण ! भोरे हम जायब ।

नहि जा सकल भास्कर । तैयारीमे लागल छल । किरण बुझाकऽ थाकि गेल रहैक । भरि राति बुझबैत रहलैक मुदा भास्कर अड़ल छल- ''अहाँ ई नहि बूझू किरण जे बाबू जाय लेल कहलनि, तेँ जा रहल छी हम । जयबाक दिन तऽ आबिए गेल अछि । बाबूओक बात रहि जेतनि । ब्रह्मा छूटि गेल अछि, अपन माय-स्त्रीक ध्यान राखत । एतबे प्रायश्चित्त भऽ सकल हमरासँ । प्रेमा पीसीक ममताक आर कोनो मूल्य नहि दऽ सकलियनि । ममताक मूल्य आँकलो नहि जा सकैत अछि ।

तैयारी भऽ चुकल छलैक । माय कोठलीमे अयलथिन- जिद नहि करऽ भास्कर ! आइ नहि जो । प्रेमा राति मरि गेलीह । क्रियाकर्म धरि रुकि जो । कने ओइ आँगन जा देखहक जे कोनो व्यवस्था भेलैक वा नहि ।

भास्कर अवाक् मायक मुँह तकैत रहल । के कहैत छैक जे अइ हवेलीमे माय छैक । एतऽ ओकर माय रहैत छैक, जकरा कोनो छोट विचार स्पर्शे नहि कऽ सकैत छैक । मायक पैर छूबि लेलक भास्कर । माय हाथ पकड़ैत कहलथिन- एना किए करैत छऽ, नहि मानबऽ जयबे करबऽ ?

-नहि माय, खाली आशीर्वाद दे सभ दिन जे सत्यक बाटपर चलि सकी ।

भास्कर शीघ्रतासँ प्रेमा पीसीक घर दिस दौड़ल ।

भास्कर श्मशानसँ घुरल तऽ चारि बाजि गेल छलैक ।

कोठलीमे अबितहि कहलकै- सभटा सामान सरिया दिअ किरण ! गाड़ी नौ बजे रातिमे अछि ।

किरण कनौन सन भऽ उठलैक– नहि मानब ? कमसँ कम आइ रुकि जैतहुँ।

भास्कर ओकरा बुझबैत कहलकै- ''एना उदास नहि होउ । हम जा नहि सकब । अहाँकेँ बूझल अछि, जायब कतेक जरूरी अछि । युनिभरसिटी कहिआ ने खुजलैक ! बड़ा दिनक तातिलमे आयल रही । बहुत रास क्लास छूटि गेल । फेर अपन इन्तजामो करबाक अछि ।

किरण डेरा उठलैक- ''केहन इन्तजाम ?''

भास्कर कहलकै- ''अपन पढ़बा-लिखबाक इन्तजाम । जल्दीसँ अइ हवेलीसँ अहाँकेँ लऽ चलबाक इन्तजाम । आजुक घटनाक बाद आब घरक पाइसँ पढ़ब तऽ नहिए भऽ सकत ।''

किरण कहलकै-''किएक ने भऽ सकत ? बाबूजी कोनो नहि देताह ? बातकेँ बतंगड़ बना रहल छियै अहाँ ।''

भास्कर ओकर बातकेँ टारैत कहलकै- ''तकर इन्तजाम करहे पड़त । अहाँक लग पन्द्रह सय टाका हैत किरण ? हमरा लग जे छल, मोकदमा लेल देवानजीकेँ दऽ देलियनि ।''

किरणो आब गम्भीर भऽ उठलि- ''हमरा लग टाका तऽ नहि अछि । गहना सभ अछि, वैह लऽ जाउ ।''

भास्करकेँ जेना चोट लगलैक किरणक बातक- ''अहाँक गहना लऽ जायब हम ? आ टाका हमरा लऽ जैबाक नहि अछि, ब्रह्माकेँ देबाक अछि श्राद्ध लेल । कोनो उपाय तऽ करहे पड़त ।''

– ''कोनो चिन्ता करबाक काज नहि छऽ । टाका हम देबह । पटनो जाकऽ कोनो इन्तजाम करबाक काज नहि छऽ । अखन खाली पढ़ह । टाका लेल हम जिबैत छिअऽ अखन । झगड़ा बापसँ भेल छऽ, हमरासँ नहि ।'' -कोठलीमे अकस्मात सासुकेँ देखि किरण हड़बड़ा गेलि ।''

भास्कर मायक पैर छुबैत बाजल- ''तोहर पैर छुबिकऽ कहैत छियौक माय, बाबूजीक बातक दुख नहि अछि हमरा । ई तऽ सिद्धान्तक लड़ाइ छै । बाबूजीकेँ एक दिन हमर बात मानऽ पड़तनि, तोँ देखि लिहैँ !''

भास्कर मायसँ टाका लऽ फेर ब्रह्माक आँगन दिस गेल । पाँच सय अपना लेल राखि लेलक । एक हजारमे कहुना काज चलि जयतैक ।

भोरे ब्रह्माक आँगनमे पहुँचल छल तऽ लाश ओहिना पड़ल छलैक तुलसीचौरा लग । ब्रह्मा आ ओकर स्त्री सेहो ओतहि बैसल छलैक । टोलक किछु स्त्रीगण-पुरुष सेहो जमा छलैक । भास्करकेँ देखितहि सभ बाट बना देलकै ।

प्रेमा पीसीक लाश लग बैसि गेल भास्कर । पैर छुबि प्रणाम कयलकनि आ बाजल– आब उठ ब्रह्मा । लऽ चलबाक तैयारी करहुन ।

ब्रह्मा ओकरा दिस तकलकै । आँखिमे धधरा छलैक । भास्कर ओकरा अनठबैत कहलकै– तोँ उठ ने ब्रह्मा !

भास्कर अपने उठिकऽ व्यवस्थामे लागि गेल । बाँस अयलैक, चचरी बनि गेलैक, हाटसँ नव कपड़ो आबि गेलैक । चारि टा कान्हपर उठा लेलकै लाशकेँ लोक— राम नाम सत्त है । ब्रह्माक स्त्रीक संग आरो स्त्रीगण सभ जोरसँ कानि उठलैक ।

भास्करो कान्ह देने छलैक । ब्रह्मा आगाँ-आगाँ छल । गामक लोकक आँखिमे आश्चर्य आ अविश्वास छलैक ।

आगि देलकै ब्रह्मा । चिता धधकऽ लगलैक । ओहने धधरा ब्रह्माक आँखियोमे छलैक । भास्कर भोरसँ देखि रहल छलैक । किछु कहऽ चाहैत छलैक ओ, मुदा ब्रह्मा एकदम गुम्म छलैक । एक्को शब्द नै बाजल छलैक भोरसँ ब्रह्मा । श्मशानोमे टोकलकै एक बेर-''साहस कर ब्रह्मा । पीसी तऽ गेलथुन ।''

वैह धधरा फेर लपलपा उठलैक । कोनो उत्तर नहि । भास्करो छोड़ि देलकै । फेर नहि टोकलकै ।

श्मशानसँ घुरिकऽ लोह पानि आगि छूबिकऽ अपन अंगना घुरऽ लागल तऽ सुधा टोकलकै– किछु पानि पीबि लितहुँ बौआ ?

भास्कर ओकर विवशताकेँ देखलकै जे आग्रह कऽ देलाक बाद आँखिमे पसरि गेल छलैक । जल्दीसँ विदा होइत कहलकै– ''हम कने आँगनसँ अबै छी भौजी, तखने पीबि लेब ।''

टाका लेने दोबारा पहुँचल भास्कर तऽ ब्रह्मा अपन दलानपर बैसल छल । दलान की छलै दू हाथ चाकर आठ हाथ नाम कने ऊँच ओसारा, दक्षिणबरिया घरक । बाँसेक खम्हेली, बिनु-लेबल टाट आ चारपर छेहर खढ़ । दलानमे एकटा टूटल सन चौकी छलैक, मुदा ब्रह्मा माटिपर एकटा फाटल सन कम्बलक आसन बना बैसल छल । गरामे उतरी छलैक ।

भास्करकेँ देखियोकऽ किछु बजलैक नहि ब्रह्मा । ओ किछु काल ओइ टुटलाहा चौकीपर बैसि गेल । ब्रह्मा ओकरा दिस तकलकै । आखिमे वैह धधरा लपलपा रहल छलैक । दाढ़ी-मोछसँ झाँपल चेहरा ओ धधकैत आँखि भयावह लागि रहल छलैक । भास्करे टोकलकै— ''हमरा आइ राति जयबाक अछि ब्रह्मा । हम गाम नहि रही, जे भेलैक ताहि लेल हमरा अफसोच अछि । तोहूँ सभ बिसरि जो ब्रह्मा ! फेरसँ जिनगी शुरू कर ।''

-''कोन जिनगी ? हवेलीक भनसीयाक जिनगी ?'' ब्रह्मा रुच्छतासँ बजलैक । पहिल बेर बाजल छलैक भोरसँ ।

-''नहि, भनसीयेक जिनगी किएक ? जे तोरा पसिन्द होउ । काज कोनो छोट-पैघ नहि होइत छैक । छोट-पैघ मनुक्ख होइत अछि ।''

-''गरिबहाकेँ ठकबा लेल, ओकरा शोषण लेल एहने-एहने उपदेश गढ़ल गेल छैक । हमरा जे करबाक अछि, से हम अबस्स करब ।''

ब्रह्माक स्वरमे भयानक प्रतिहिंसा छलैक । भास्कर शान्त स्वरमे कहलकै -''जे करबाक छौक, से अबस्स कर । मुदा सोचि-विचारिकऽ कर । कोनो प्रतिक्रिया वा क्रोधावेशमे नहि कर । कोनो फायदा नहि हेतौक । एक अनर्थसँ दोसर अनर्थमे ओझरा जयबें । तोँ तऽ सभदिनसँ शान्त आ बुझनुक छैं । जे करिहें, विचारि कऽ करिहें । हम आब चलै छियौ, आँगनमे कने भौजीक भेट कऽ लैत छियनि ।''

सुधा ओसारेपर बैसल छलैक- एकसरि । लगेमे सरबन सेहो बैसल छलैक । भास्करकेँ देखि दूनू ठाढ़ भऽ गेलैक । पीढ़ी खसबैत कहलकै सुधा- ''बैसू ने बौआ ।''

भास्कर टाका ओकरा दिस बढ़बैत कहलकै- ''ई राखि लिअऽ भौजी ! कम्मे अछि, मुदा कहुना पीसीक सभटा काज सम्पन्न करा देबनि । ब्रह्मोकेँ दितिऐक, मुदा ओकर गराँमे उतरी छैक आ माथो खराब भेल छैक । अहाँ बुझनुक छी, सभटा सम्हारि लेब । हम रहि नहि सकब, आइए राति पटना जा रहल छी । युनिवर्सिटी खुजि गेल अछि ।''

सुधा हाथ नहि बढ़ौलकै- 'मुदा बौआ... हुनका बिना पुछने...

भास्कर टाका ओकर पैर लग माटिपर रखैत कहलकै- राखि लियऽ भौजी ! कोनो पुछबाक काज नहि । अखन ओकर माथ गरम छैक । फेर भोरसँ कोन

ओकरा पूछि-पूछि काज भेल छैक ! पीसी हमरो पोसने छलीह, हमरो कर्त्तव्य अछि । हम अपन दिससँ ई भार अहाँकेँ देने जाइत छी ।

भास्कर आँगनसँ बहरा गेल । सुधाक उत्तरक प्रतीक्षा नहि कयलकै । किरण सभटा वस्तुजात सरिया देने छलैक । माय थारी ओही ठाम कोठलीएमे लऽ अनलकै । भोजन कऽ भगवतीकेँ गोड़ लागि आयल । मायक पैर छूलक, बाबूजीक चौखटि लग जा गोड़ लागि अयलनि ।

सामान लऽ ठकना स्टेशन विदा भऽ गेलैक । भैया-भौजीकेँ गोड़ लागब रहि गेल छलैक । आयलो छल तऽ भैयाकेँ गोड़ नहि लागि सकल छल । तीन दिन बाद भेंट भेल छलैक । गोड़ लगलकनि तऽ खाली एतबे पुछलथिन- ''कखन अयलैं ?''

आइ जयबाकाल फेर हुनकर कोठलीमे गेल । भैया घरमे एकसरे छलाह । ने सुरजा खबास छलनि, ने खबासिनी गुजरी । ओकरे सभक द्वारे भास्कर भैया लग नै गेल ओतेक दिन । किरण कहने रहैक जे गुजरिये हुनकर पलंगपर मलिकाइन जकाँ पड़लि रहैत छनि ।

आइ एकसरे छलथिन भैया । गोड़ लागि भास्कर कहलकनि— जाइ छी भैया !

सचिन हड़बड़ाकऽ उठि बैसल- जाइ छैं ? एतेक जल्दी ?

भास्कर हँसिकऽ कहलकनि- ''जल्दी कहाँ भैया....अइ बेर तऽ बहुत दिन रहि गेलहुँ । यूनिभरसिटी खुजि गेल छैक ।''

सचिन हताश जकाँ बैसि गेल— तैयो रहितैं तऽ नीक छल । कने देखितहिक अइ हवेलीकेँ । मायकेँ...अपन भौजीकेँ...।

भास्कर चौंकल । भैयाक मुँहसँ एहन गप्प ! कहलकनि— ''अहाँ तऽ छीहे भैया, अहाँ देखबै सभकेँ...

सचिन जोरसँ माथ झकझोरैत कहलकै— ''नै, हम नहि देखबै ककरो । नहि देखलियै कहिओ । आब देखियो ने सकबैक, मुदा तोँ बचा सकैत छहिक । रम्भाकेँ बचा सकैत छहिक, अइ हवेलीकेँ बचा सकैत छहिक । नहि जानि किएक हमरा बड़ डर भऽ रहल अछि । लगैत अछि जेना भारी अनिष्ट होमऽवला छैक । तोहर भौजी बड़ दुखी छथुन भास्कर...हुनका देखियहुन...।''

भास्कर अवाक् । भैयाकेँ आइ की भऽ गेल छनि ? सचिन हँसैत बाजल- ''एना आश्चर्य नहि कर भास्कर ! नशामे नहि छी आइ । बहुत दिनपर होशमे छी । तेँ तोरा कहैत छियौक...हमहूँ मनुक्खे छी । जानवरोसँ गेल गुजरल काज कयने छी, तैयो मनुक्खे छी । क्षमा कऽ दिहैं हमरा, बिसरि जैहैं हमर करनीकेँ । अपन भौजीकेँ देखिहैं...ओ निरपराध छथि ।''

- ''एकटा बात पूछू भैया ?" भास्करकेँ आइ भैयाक ई रूप देखि किछु साहस भेलैक ।

- ''पूछ ने !'' सचिन उत्सुकतासँ कहलकै ।

- भौजी एतेक सुन्दर छथि आ अहाँक मोनमे एतेक चिन्ता अछि, तखन एना किएक ? ओ एकसरि दुखी पड़ल रहैत छथि आ अहूँ नशामे लीन रहैत छी । एकरा रोकबाक उपाय नहि छलैक ?

सचिन जेना कोनो सोचमे पड़ि गेलैक । कहलकै- ''प्रायः नहि छलैक भास्कर ! एतऽ आबिकऽ सभकेँ भाग्यवादी बनऽ पड़ैत छैक । हम सभ दिन भोगवादकेँ मानैत रहलहुँ । तोहर भौजी आबि गेलीह तैयो ओ अतिशय भोगक प्रवृत्ति नहि गेल । अपना मोने ओकर औचित्य ताकि लैत रही, तोहर भौजीक निषेधपर ध्यान नहि देलियनि । जहिआ ध्यान गेल, दोसर कोनो बाटे नहि छल । अही बाटपर बढ़ैत चल गेलहुँ, ई जनैत जे ई हमरा गर्त्तमे खसाकऽ रहत । अपने खसलहुँ तकर ओतेक दुख नहि अछि भास्कर ! तोहर भौजियो ओइमे डूबि गेलीह । हमर पाप हुनको लऽ डुबलनि । सभटा दोष हमर अछि, ओ जानि-बूझिकऽ अपनाकेँ मारि रहल छथि, आत्महत्या कऽ रहल छथि । हुनका बचा लिअहुन कहुना ।''

सचिन एक्के साँसमे बाजिकऽ थाकि गेल जेना ! आशा भरल नेत्रसँ अपन छोट भाइ दिस तकैत रहल । भास्करकँ आँखिमे स्नेह, सहानुभूति आ सद्भावना छलैक । बड़ आत्मीय आ आश्वस्त स्वरमे कहलकै- ''अहाँ चिन्ता जुनि करू भैया ! भौजीक भार हमरापर रहल । मुदा अखन से किएक दैत छी हमरा भैया ? अखन तऽ अहाँ छीहे...अहाँ देखबनि भौजीकेँ ।''

सचिन करुण स्वरमे कहलकै-''हमर हैबाक गिनती नहि कर । एतेक दिन की देखलियनि, जे आब देखबनि । तोँ हुनकर भार गछि लेलेँ, तऽ मोन बड़ हल्लुक लगैए । नहि जानि किएक, किछु दिनसँ लगैत अछि जे शीघ्रे अइ सभ चिन्ता, सभ पश्चात्तापसँ मुक्ति भेटि जायत हमरा...''

भास्कर बीचेमे रोकि देलकै- एहन बात नहि बाजू भैया ! अहाँकेँ रहबाक अछि, हमरालोकनिक संग जीबाक अछि । अखन आब जाइ छी हम ।

सचिन जेना हड़बड़ा उठलैक- ''जाइ छैं ? बेस जो....।''

भास्करक डेग जेना जमीनसँ सटि गेलैक- भैया आइ एना किएक कऽ रहल छथिन ? एना हारल-थाकल आ निराश सन भैया एकदम अनचिन्हार छलथिन ओकरा लेल । बड़ भारी मोनसँ कोठलीसँ बाहर आयल । चौखटिक बाहर भौजी ठाढ़ छलथिन । भास्कर पैर छुबैत कहलकनि- ''जाइ छी भौजी !''

रम्भा कनेकाल गुमसुम रहलैक । किछु बुदबुदाकऽ आशीर्वाद देलकै भरिसक । फेर स्पष्ट बजलैक-''अपन भैयाक हालति तऽ देखनेहे जाइ छी ।''

भास्कर कहलकै— हमरा तऽ डर भऽ गेल भौजी ! भैया तऽ एहन नहि छलाह । हरदम स्फूर्ति आ उत्साहसँ भरल रहैत छलाह । आब तऽ चिन्हले ने जाइत छथि ! प्रेमा पीसीक घटनाक पश्चात्ताप छनि, किछु दिनमे ठीक भऽ जयतनि । अहाँ ध्यान रखबनि । ओ हमरा अहाँक ध्यान रखबाक लेल कहैत छलाह, मुदा हमरा तऽ बेशी ध्यान राखऽ जोगर हुनके हालति लगैत अछि ।

रम्भा नहि कहि सकलैक । नहि कहि सकलैक जे कारण प्रेमा पीसी नहि, ओ स्वयम् अछि । ओकरे कारण सचिनक ई हाल भेल छैक । ओ सभटा जनैत अछि, मुदा ककरो कहि नहि सकैत छैक । सचिनो ने कहि सकैत छैक ककरो । भास्कर कोना बूझि सकतैक ई बात ?

भास्कर आँगनसँ बहराय लागल । पाछाँसँ राजा जोरसँ बजलैक- ''पापा ! जल्दी आयब पापा !"

किरण ओकरा डँटलकै— ''पाछूसँ नहि टोकबाक चाही राजा !''

आशा चौधराइन किरणकेँ मना कयलथिन— ''नै डँटियौ कनियाँ, नेन्ना छैक, ओ की जाने गेलैक ई सभ !"

बाबीक सह पाबि राजा हाथ हिलबऽ लगलैक— टाटा पापा...टाटा... ।

आरती टोकलकै— अइ बेर बड़ देरी लागि गेल बेबी-फादर । ए वेरी लेट हनीमून ।

भास्करकेँ हँसी लागि गेलैक— लेट नहि, एन एवरलास्टिंग हनीमून कहियौ आरती ! अपनालोकनिमे सैह होइत अछि- नो क्विक हनीमून...नो लेट हमीमून... ए परमानेंट एवर लास्टिंग हनीमून....। अहाँकेँ चिन्ता करबाक काज नहि अछि आरती ! वेट फार योर टर्न.... ।

आरती कने लजा गेलैक । फेर सहज होइत कहलकै- गामसँ घुरिकऽ बड़ होशियार भऽ जाइत छी अहाँ । अच्छा छोड़ू ई सभ । क्लास सत्ते बड़ छूटि गेल अहाँक । हमर नोट्स लऽ लेब ।

भास्कर ओकरा दिस कृतज्ञतासँ तकैत कहलकै- अहूँ विचित्र कम्पटीटर छी हमर ! अपन नोट्स हमरा दैत छी ।

आरती हँसऽ लगलैक— असली नोट थोड़बे देब ! दू नम्बरी नोट सेहो रखैत छी हम । तेँ ने मंगनी मे एतेक उदार बनि रहल छी ।

भास्कर गम्भीर भऽ गेल- ''अहाँक उदारता लगैत अछि व्यर्थ जायत आरती ! एम.ए.क क्लास पूरा कऽ सकब तकर संभावना बड़ थोड़ बुझाइत अछि । बहुत रास बात छैक, चैनसँ कहब ।''

आरती झट आमंत्रित कऽ देलकै- तऽ चलू ने काल्हि साँझ हमर डेरापर । पप्पोसँ भेट भऽ जायत ।

अइ आकस्मिक निमंत्रणपर कने चकित भऽ गेल भास्कर । ओकर आश्चर्यकेँ लक्ष्य करैत आरती कहलकै- ''चिन्ता नहि करू बेबी-फादर ! हमर पप्पा अहाँकेँ चीन्हैत छथि ।''

भास्करक आश्चर्य बढ़ि गेलैक । कहिओ गेल नै अछि आरतीक डेरा । ने कहिओ भेटघाँट छैक । तखन कोना चिन्है छथिन ? ओकरा तऽ खाली एतबे बूझल छैक जे आरतीक बाप एकटा बड़का अधिकारी छथिन, सीनियर कमिश्नरक रैंकमे ।

ओकरा एना चकित होइत देखि आरती आरो हँसऽ लगलैक- ''चीन्हैत छथि, तकर की मतलब लगा रहल छी अहाँ ? अहाँसँ भेट नहि छनि हुनका, मुदा अपन विलक्षण प्रतिभासम्पन्न पुत्रीक एकमात्र प्रतिद्वन्द्वीसँ ओ नीक जकाँ परिचित छथि आ रुष्टो रहैत छथि जे ओकरे द्वारे हुनकर बेटी सभ बेर पिछड़ि जाइत छनि । कने सम्हरिकऽ चलब- ही हैज ए वेरी बैड टेम्पर ।

भास्करो हँसऽ लागल । ई आरतियो विलक्षण लड़की छैक ! जतबा ओकरा बारेमे जनैत छैक, ततबे ओकरा प्रति स्नेह आ आदर बढ़ल जाइत छैक । केहन अपूर्व सुन्दरी छैक ! भास्कर ध्यानसँ ओकरा देखऽ लगलैक । एतेक दिनसँ भेट छैक, मुदा कहिओ ऐना गौर नहि कयने छलैक । एकटा प्रतिभाशालिनी छात्रा आ सहपाठिनीक रूपमे आतरी आकर्षित कयने छलैक, एकटा उदार हृदया नारीक रूपमे सेहो ओकरा प्रति मुग्ध छल, मुदा आइ धरि गौर नहि कयने छलैक जे आरती एतेक सुन्दरी छैक ! एकटक देखिते रहि गेलैक भास्कर ।

आरती कने लजा उठलैक- एना की देखि रहल छी भास्कर ? पहिने नहि देखने छी कहिओ ?

भास्कर ओहिना ओकर आकृतिपर दृष्टि गाड़ने कहलकै— सत्ते आरती, लगैत अछि जेना आइ पहिल बेर देखि रहल होइ । एतेक दिन तक खाली अहाँक प्रतिभा आ मोनक सौन्दर्य देखने रही, देहक सौन्दर्य नहि । ओहुना हमर ध्यान पहिने मोनक सौन्दर्य दिस जाइ अछि, तनक सौन्दर्य हमरा ओतेक आकर्षित नहि करैत अछि । अहाँ सुन्दर छी से सभ दिन लगैत छल, मुदा आइसँ पहिने ई नहि बूझि सकलहुँ जे अहाँ एतेक सुन्दर छी ।

आरती लाजे लाल भऽ गेलैक— ई की भऽ गेल अहाँकेँ आइ ? कीसभ बजने जा रहल छी ?

भास्कर ओहिना सहजतासँ कहलकै— मिथ्याऽ नहि कहि रहल छी हम । मिथ्या हम बजिते नहि छी ।

आरती सहज हैबाक चेष्टा करैत हँसलैक- ''हमरो मिथ्या बजबाक अभ्यास नहि अछि । अहाँक ई सौन्दर्य-वर्णनक नव प्रवृत्तिसँ अहाँक पत्नीकेँ अवगत करा दैत छिअनि...होशियार रहतीह । आइ अपन पप्पोकेँ कहबनि जे हुनकर बेटीक प्रतिद्वन्द्वी आब सौन्दर्योपासक सेहो बनि गेल छथि, एण्ड ही हैज ए रियली बैड टेम्पर ।

भास्कर नकली गम्भीरतासँ कहलकै— अहाँक धमकीसँ डेरायवला नहि छी हम । जे मोनमे आयल से कहि देलहुँ । अहाँकेँ पसिन्द नहि भेल तऽ घुरा दिअ हमर बात ।

आरती ओहिना हँसैत रहलैक— एहन बकलेल नहि छी हम । एतेक दिनपर अहाँसँ एतेक पैघ कम्प्लीमेण्ट भेटल आ तकरा हम घुरा दिअ ? खाली मोन राखू- अपन देल सर्टिफिकेट वापस नहि माँगऽ लागब फेर ।

एतहि आबिकऽ भस्कर हारि जाइत अछि । आरतीक एहि सहजता आ उदात्त सरलता लग नतमस्तक भऽ जाइत अछि ओ । ठाढ़े-ठाढ़ बड़ीकाल भऽ गेलै । चारूकातसँ लड़का-लड़की सभ निहारऽ लागल छलैक । आरती ओहि ठामसँ विदा भऽ गेलैक— तऽ काल्हि साँझक कार्यक्रम पक्का ।

भास्कर आगू बढ़ल तऽ छौंड़ा सभक कमेण्ट कानमे पड़ऽ लगलै–चानी हई बाबू तोरे... घरमे बीबी आ एतऽ फुलझड़ी...

गुम्मा मुनि तऽ बड़ तेज निकललौक रे ! असलिए माल टपा देलकौ... कम्बल ओढ़ि कऽ घी पीबै हौ- पीले रे बाबू पीले !

भास्कर छड़पिकऽ ओइ लड़का सभक झुण्डमे कूदि गेल । एकटाक कालर पकड़लक आ दोसरक केश– बाज तऽ फेरसँ, की बजैत छलैं ?

तेसर छौंड़ा ओकर दुनू हाथ झटकि देलकै– जो रे बाउ, किताब चाट । ई दादागिरी तोरा बुते नहि हेतैक । दुइए हाथमे जमीन सुंघऽ लगबैं ।

तीनू-चारू छौंड़ा युनिभरसिटिएक छलैक । कोनो आन विषयक । चेहरा चीन्हैत छलैक भास्कर । एतबे धंधे छलैक एकर सभक । भास्कर एक बेर फेर झपटऽ चाहलक । एकटा छौड़ा आँखि गुरेड़िकऽ बजलैक- एकबेर छौड़ि देलियौ, दोसर बेर नहि छोड़बौ । पेटसँ अँतड़ी बहार भऽ जयतौक एक्के हाथमे । चुपचाप अपन रस्ता नाप आ किताबक पन्ना चाट...

भास्कर रुकि गेल । ओ एकसर छल आ ओकर पूरा गुट छलैक । चुपचाप ससरि जायबे सुरक्षित काज हेतैक, से जनितो ओ ओहिना डटल रहल, तामसे देह थरथर काँपि रहल छलैक ।

तखन भास्करक क्लासक लड़का सभ जुटि गेलैक । बदमसबा सभ ओतऽसँ सहटि गेल । भास्करो अनठा देलकै । अनेरो बात बढ़ि जइतैक ।

आरती घूरिकऽ फेर लग अयलैक— ई कोन काज करऽ लागल रही अहाँ ? गुण्डा-बदमासक मुँह नहि लगबाक चाही ।

भास्कर प्रतिवाद कयलकै– एना तऽ ओकर सभक मोन बढ़ि जयतैक । डरक लेल क्यो ओकरा टोकबे नहि करतैक तऽ साहस बढ़ले जयतैक ओकर सभक । अहू कैम्पसमे गुण्डा-गर्दी बढ़बाक इएह कारण छैक- क्यो टोकऽवला नहि छैक । टोकबाक साहसे नहि छैक ककरोमे– ने विद्यार्थीमे, ने प्रिंसिपल-प्रोफेसरमे ।

एकरा सभक घरोमे प्राय: क्यो रोकऽवाला नहि छैक, ककरो टोकबाक साहस नहि छैक । दस-पाँच टा गुण्डा सौंसे केम्पसकेँ आतंकित कयने रहैत अछि आ हजारो लोक डरल-सहमल तमाशा देखैत अछि । तऽ एना हैबे करतैक ।

आरती कने रुष्ट स्वरमे कहलकै- सौंसे संसारक ठेका लेने छियैक अहाँ ? करऽ दिऔक जे करैत छैक । अहाँ नहि चीन्हैत छियैक ओकरा सभकेँ, किछुओ कऽ सकैत अछि ई सभ । नाम मात्रक विद्यार्थी अछि ई सभ । चक्कू-छूरा चलायबे एकर सभक असली काज छैक....

भास्कर तैयो अविचलित रहल । एतबे कहलकै- 'हमरा बुते ई नहि हैत आरती ! नेनपनेसँ बाबी खिस्सा कहैत छल कठरी बाबाजीक । चोरबा सभ रोज ओकरा मारैत छलैक, तैयो ओ सभदिन टोकि देबे करैत छलैक– के थिका...कहाँ जाइ छऽ... हमरा नहि कहै छऽ । जे अन्याय आ अनीतिकेँ टोकारा देतैक तकरा ई खतरा उठाबहे पड़ैत छैक...

आरती एकदम बिगड़ि उठलैक— अहाँ नहि उठायब कोनो खतरा....बस्स हम कहि देलहुँ । फेर एकरा सभसँ लागब तऽ बेजाय बात भऽ जायत ।

ओकर उत्तरक प्रतीक्षा नहि कयलकै आरती । चल जाइत रहलैक । फेर दोबारा गप्पो नहि भेलैक । आरती लेल ओकर स्नेह आ श्रद्धा बढ़िते गेलैक । आइ कने खतरामे पड़ल देखि अस्थिर भऽ गेलैक ।

भास्करोकेँ नहि जानि किएक जिद लागि गेलैक आइ । आरती लेल खराब बात बाजल ओ गुण्डा सभ आ ओ बर्दाश्त कऽ लेलक । आरतीकेँ कोना कहितैक ई बात ?

खाली आरतिएक बात तऽ नहि छैक । युनिभरसिटी कैम्पसक हालति बदलि रहल छैक । गुण्डा तत्वक प्रधानता भऽ रहल छैक । सभ अइ तत्वक संरक्षक छैक । वाइस चांसलर...प्रिसिंपल ककरो पीटि दैत छैक... लाचार पुलिस अबैत छैक....दू चारि टाकेँ पकड़ैत छैक । मुदा लगले मुक्त । शक्तिशाली पोषक सभ फेर ओइ गुण्डा सभकेँ छोड़ा कैम्पसमे छुट्टा छोड़ि दैत छैक । कालेज वा युनिभरसिटी दिससँ कनियो कड़ाइ भेलैक, वा रस्टिकेट कऽ देल गेलैक वा फाइन भेलैक, त झट हड़ताल, बड़का जुलुस । गुण्डा तत्वक पाछाँ-पाछाँ निरीह विद्यार्थी सभ सेहो ठाढ़ भऽ जाइत अछि । दसटा छौंड़ा गेट बन्द कऽ ठाढ़ भऽ जाइत छैक आ ककरो कालेज जयबाक साहसे नहि होइत छैक ।

भास्करक पाँचम वर्ष छैक अइ विश्वविद्यालयमे । ओ देखि रहल छैक जे कोना स्थिति दिनानुदिन खराब भेल जा रहल छैक आ सभ तमाशा देखि रहल अछि ।

पुलिसो तमाशे देखैत छैक आब । क्यो ओकर टोपी लऽ भगैत छैक तऽ क्यो ढेपा फेकि दैत छैक । ओ संचमंच रहैत अछि । किछु करतैक तऽ प्राते भेने पुलिस-जुलुमक खिलाफ जुलुस बहार भऽ जयतैक आ विपक्ष दिससँ पुलिस अधिकारीक निलम्बन आ न्यायिक जाँचक माँग हेतैक । तैयो जखन नहि सहल जाइत छैक, रोड़ा-ढेपा खाइत-खाइत पुलिस बौखला जाइत छैक तऽ अनधुन लाठी चलबैत छैक...दनादन फायर करैत छैक । बदमशबा सभ नुकायल रहैत अछि आ निरपराध लोकक जान जाइत छैक, राहगीर घायल होइत अछि ।

आ तैयो आरती कहैत छैक चुप्पे रहू ! गाममे बाबू साफे भऽ कहलथिन जे तोरा कोन मतलब छऽ अइ न्याय-अन्यायसँ ? चुपचाप पढ़ऽ लिखऽ गऽ ।

भास्कर बाबूजीक बात नहि मानलकनि । आरतियो बिगड़िकऽ चल गेलैक । मुदा बड़का अन्तर छैक आरती आ बाबूजीमे । बाबूजी स्वयम् ओइ अनीति आ अन्यायकेँ बढ़ा रहल छथिन । आरती खाली स्नेहवश ओकरा रोकि रहलि छलैक, ओकरा खतरा दिस नहि जाय देबऽ चाहैत छलैक ।

प्रातो भेने आरती गुमसुमे रहलैक । एक्को बेर गप्पो ने भेलैक । क्लासक बाद भास्करे टोकलकै- बिगड़ले रहब ? अजुका नोत कैंसिल !

आरती हँसऽ लगलैक- ''छी असली ब्राह्मण अहूँ । खयबाक लोभे दिन भरिक तामस बिसरि गेल । भरि दिन मुँह फुलौने रही आ साँझखन नोत मोन पड़ि गेल ! यू आर मोस्ट वेलकम बेबी फादर !

भास्कर नहि कहलकै जे मुँह तऽ आरतिए फुलौने छलैक । साँझ बितलापर आरतीक डेरापर गेल । बड़की टा बंगला, ओतबे पैघ कम्पाउण्ड । नौकर-अर्दली । एकदम साहबी ठाठ । बंगलाक बाहरे बड़का नेमप्लेट छलैक- पी.सी. सिन्हा आइ.ए.एस. । आरती बाहरेमे ठाढ़ि छलैक बरण्डापर । ओकरा भीतर लऽ गेलैक- भी.आइ.पी. गेस्ट आबि गेलाह पप्पा ! योर डौटर्स ओनली हर्डल इन गेटिंग टौप औनर ।

आरतीक पप्पा उठिकऽ स्वागत कयलथिन- आउ आउ, भास्कर ! आरती दुष्ट अछि...कालेजोमे तंग करैत हैत, मुदा मोन एकर बड़ पैघ छैक...

आरती आँखि गुरेड़िकऽ चुप्प कऽ देलकै— बस्स, अबैत देरी अपन बेटीक गुणगान शुरू ! कने जे आयल छथि, तिनको गुणगान करियनु । पहिने बैसऽ कहियनु ।

भास्करकेँ हँसी लागि गेलैक । सिनहा साहब कहलथिन- अच्छा....अच्छा तोँ जो भीतर, चाह-पानिक बन्दोबस्त कर । बैसू भास्कर !

आरती चल गेलैक । भास्कर बैसि गेल । सिन्हा साहब कहलथिन- ''अहाँक बारेमे ततेक बक-बक करैत रहैत अछि आरती जे एकदम चिन्हार सन लगैत छी । हरदम रट लगौने रहत- बेबी फादर । सत्ते अहाँकेँ देखि अनुमान करब मस्किल अछि जे अहाँक विवाह-दान भऽ गेल....आ बापो बनि गेल छी अहाँ ? गाम गेल रही ने अहाँ...सभ नीकेँ छथि ने ?

भास्कर मूड़ी डोला देलकनि । सिनहा साहब जेना कोनो बात मोन पाड़ैत कहलथिन- अहाँ तँ कम्पीटीशनमे बैसल छी ने अइ बेर ! आब तऽ रिजल्टो औतैक । केहन चान्स अछि ?

भास्कर उत्साहसँ कहलकै- नीके अछि । ओना पहिले चान्स अछि, कोनो गाइड वा कोचिंग तऽ छल नहि...

सिन्हा साहब हँसऽ लगलथिन- अबस्से हैत । गाइड आ कोचिंग सभ नहि होइत छैक । अपन मेरिट चाही । हमरा सभकेँ कोन गाइड छल ! घरमे क्यो नौकरियो ने करैत छल । ने पढ़ले-लिखल छल । अपन आत्मसंकल्प हैबाक चाही । आरतीकेँ बड़ कहलियैक मुदा नहि बैसलि । अच्छा, अहाँ कहू तऽ अहाँ किएक बैसलहुँ प्रतियोगितामे...

भास्करकेँ एकाएक कोनो उत्तर नहि फुरलैक । किछु सोचैत कहलकै— ''एकर जवाब मस्किल अछि । वास्तवमे किछु सोचिकऽ नै बैसल रही । अपन पैरपर ठाढ़ हैबा लेल, अपन मेहनतिक कमाइ खयबा लेल कोनो काज करऽ चाहैत छी । सभ नीक विद्यार्थीकेँ प्रतियागितामे बैसैत देखलियैक तऽ हमरो इच्छा भऽ गेल । नोकरीक कोनो विवशता नहि अछि, मुदा पुरखाक हवेलीमे हुनकर अरजल बैसिकऽ खायब पसिन्द नहि अछि । चाहैत छी जे एकटा अपन घर होअय, छोट-छीन, जाहिमे अपन परिवारक संग रुक्खे-सुक्खे खाकऽ जीबि सकी... अपन अन्तरात्माक विरुद्ध किछु ने करऽ पड़य ।

सिनहा साहब किछु चिन्तित भऽ गेलथिन- तखन तऽ ई काज अहाँक लेल

उपयुक्त नहि हैत । एहिठाम सभटा काज अन्तरात्माक आवाजकेँ मारिएकऽ होइत अछि । चारूकातसँ दवाब रहैत छैक- तरह-तरहक । आरती देखने अछि ओ सभ नाटक । ओ बैसहे नहि चाहैत अछि प्रतियोगिता परीक्षामे । ओ टीचर बनत...नर्स बनत...। कहाँ-कहाँक गप्प सुनिकऽ, पढ़िकऽ ओकरा मोनमे विचित्र आदर्शवादी संकल्प सभ बैसि गेल छैक । अपन देशमे अइ सभ वर्गक नैतिकताक की हाल छैक से ओ देखियोकऽ नहि देखैत अछि । समझौता तऽ आइ-काल्हि सभ नौकरीमे करऽ पड़ैत छैक ।

आरती ट्रेमे चाह-बिस्कुट आदि लऽकऽ आबि गेलैक- "हमर खूब निन्दा भऽ रहल छल पप्पा ! हम सभ सुनैत रही ।"

चाह बना भास्करकेँ दैत कहलकै- खाली चाह पीबू तावत । नो नाश्ता । डिनरमे बेशी देरी नहि लागत । पप्पा, ई कप अहाँ लिअऽ बिना चीनीवला.... बिस्कुट खा सकैत छी भास्कर....

अपनो एकटा प्याली लऽ बैसि गेलैक आ दुष्टतासँ कहलकै- एक टा बात कहू पप्पा ! काल्हि भास्कर कहैत छल कालेजमे जे हम खाली बुद्धिमतिएटा नहि छी...रूपवती सेहो छी । अहाँ तऽ कहैत छी सभदिन जे हमर नाक कने टेढ़ अछि टुनगी लग-

भास्करक हाथक प्याला थरथरा उठलैक, मुँह पाकि गेलैक आ चाह सौंसे कपड़ापर खसि पड़लैक । हड़बड़ाकऽ सिनहा साहब उठऽ लगलथिन । तावत आरती ओकर हाथक प्याली लऽ लेलकै । गिलासमे पानि आनि चाहक दाग धो देलकै कपड़ापरसँ । दोसर कप चाह बनाकऽ दैत कहलकै— "एना हड़बड़ा किएक गेलहुँ भास्कर, पप्पा बेंत लऽकऽ नहि मारताह....प्रसन्न हेताह । बेटीक तारीफ कयलिअनि अछि अहाँ । कमसँ कम पाँचो सालक बाद तऽ अहाँकेँ सूझल जे हम सुन्दरो छी...अहाँ तऽ मोनक सौन्दर्य देखैत छियैक लोकक...रूप देखबाक फुरसति कहाँ अछि अहाँकेँ ? कोना लिटरेचरमे एतेक नम्बर आबि जाइत अछि से आश्चर्य ! नै पप्पा ?

—ई अहाँक बदमाशी अछि आरती ! घर बजा बेज्जति कऽ रहल छियैक । माफी मँगियौक ।—सिनहा साहब कने दुलारसँ डँटैत कहलथिन ।

आरतीक मुँह कनौन भऽ गेलैक— "वाइ गाड, बेबी फादर ! अपमान लेल नहि कहने रही । हम तऽ हँसी कयने रही । आइ एम रीयली बेरी सॉरी भास्कर..."

ताबत भास्करो सहज भऽ गेल छल- "नै, नै, अपमान किएक करब अहाँ ? अहाँकेँ चीन्हैत नहि छी हम ! अहाँक ई हँसी कने बेशी अप्रत्याशित आ खतरनाक छल ।"

आरती बिहुँसि उठलैक- "हँसी खतरनाक छल कि मोनमे चोर छल ? सुन्दर कहि कम्पलीमेन्ट देलहुँ, तऽ ऐ मे हड़बड़यबाक कोन काज ? हम तऽ काल्हिए कपार पीटि लेने रही जे हाय रे भाग्य ! हिनका आइ सुझलनि अछि जे हम सुन्दरो छी ?"

फेर भास्कर दिस तकैत कहलकै- "इहो चाह नहि खसा लेब । आब नहि अछि पौटमे । फेरसँ बनाबऽ पड़त ।"

भास्कर हँसऽ चाहलक मुदा सिनहा साहबक उपस्थिति द्वारे आरतीक हँसी-मजाक ओकरा असहज बना रहल छलैक । सिनहा साहब प्राय: बूझि गेलथिन । आरतिओकेँ जेना होश भेलैक । गम्भीर होइत कहलकै- काल्हि कालेजमे किछु कहऽ लागल रही अहाँ ! की बाधा अछि अहाँक आगू पढ़बामे ? कहू ने ? हमरा लोकनिकेँ कहबामे कोनो हर्ज ?

ई दोसरे आरती छलैक । क्षणेमे जेना कायाकल्प भऽ गेल छलैक— शान्त, गम्भीर । भास्कर कहलकै । सभटा कहलकै— हवेलीक गप्प, प्रेमा पीसीक गप्प, बाबूजीक गप्प । ब्रह्माक बारेमे, भौजीक बारेमे । माय आ किरणक बारेमे । भैयोक सभ गप्प कहलकै । बड़ी राति धरि कहैत रहलैक ।

सभटा सुनि सिनहा साहब कहलथिन- "अहाँ जे कयने छी, तकरा लेल चिन्ताक कोनो काज नहि । मनुष्यताक यैह कसौटी छैक । अपना लेल अहाँ चिन्ता नहि करू । पढ़ू मोन लगाकऽ, हमरा लोकनि छी । बाबूजियोक तामस शान्त हैबे करतनि ।

आरती सभटा सुनैत जेना कोनो ध्यानमे लीन भऽ गेल छलैक ! ओकरा टोकैत सिनहा साहब कहलथिन— आब खेनाइ लगबाउ आरती ! हिनका दूर जयबाक छनि ।

हार्डिंज रोडक ओ क्वार्टर पी.जी. होस्टलसँ ठीके बड़ दूर छलैक । रिक्सा भेटब ओतेक रातिमे मस्किल भऽ जयतैक । भास्कर बाजल— हँ, आब चलबाक चाही । आरती चल गेलैक तऽ सिनहा साहब चिन्तित स्वरमे कहलथिन- "एकटा चिन्ता हमरो अछि भास्कर ! आरतीक चिन्ता । माय नहि छैक, कोनो भाइयो-बहिन

नहि छैक । खाली हमहींटा छियैक । तेँ हम ओकर सब बात जनैत छियैक । जे बात ओ हमरा नहि कहैत अछि, सेहो हम बूझि लैत छियैक । अहाँ दऽ सभ बात हमरा कहलक....अहाँक प्रतिभा आ चरित्रक बारेमे, अहाँक परिवारक बारेमे । मुदा एकटा बात हमरा नहि कहलक । भरिसक कहिओ नहि सकत । मुदा हम जनैत छियैक ओ बात । अहाँक रूप, अहाँक प्रतिभा, अहाँक स्वभाव आ चरित्र ओकर मोनक कल्पनासँ ततेक मिलैत छैक जे सभटा बात जनितो अहाँ दिस खिचायले चलल जाइत अछि ।

भास्कर सिनहा साहबक मुँह ताकऽ लागल । हुनकर आकृतिपर कोनो रोष वा लांछन नहि छलनि । छलनि एकटा बुझनुक पिताक चिन्ता । ओ कहैत गेलथिन– अहींटा हमर मदति कऽ सकैत छी भास्कर ! अहाँ कहिऔ ओकरा कहिओ जे हमर बात मानि विवाह कऽ लेत । अपन घर हेतैक, बाल-बच्चा हेतैक तऽ सभटा आस्ते-आस्ते बिसरि जयतैक । अहाँक बात ओ अबस्स मानत, हम जनैत छी । अहाँसँ भेट करऽ चाहैत छलहुँ हम । आरती लऽ आयलि तऽ बड़ प्रसन्नता भेल । अहाँकेँ अइमे लज्जित हैबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि । आरतियो लेल अइमे कोनो लाजक बात नहि छैक । मुदा हम कहि देबैक तऽ भरिसक बर्दाशत नहि हेतैक ओकरा । नहि जानि की कऽ बैसत ? अहाँ ओहिना कहबैक प्रसंगवश कहिओ । आवश्यकता होइ तऽ जोर दऽ कहबैक । हम बड आभारी हैब ।''

आरती डाइनिंग हालसँ चिचिया उठलैक- ''औनरेबल गेस्टकेँ लऽ अनियनु पप्पा !''

डाइनिंग टेबुलपर फेर दोसरे आरती छलैक—प्रसन्न, चंचल । जबर्दस्ती परसि-परसि बेशी खुआ देलकै भास्करकेँ । सिनहा साहबकेँ नहि दैनि किछु । अहाँकेँ मना कयने अछि पप्पा ! सुक्खा रोटी आ साग खाउ...टमाटरो अछि...

बिदा हैबाकाल अपने गाड़ी निकालि लेलकै आरती- ''चलू, पहुँचा दैत छी ।''

भास्कर कने संकोचमे पड़ल— हम चल जायब आरती !

सिनहा साहब कहलथिन- रिक्शा नहि भेटत । ई रोड राति कऽ ओहिना सुन्न रहैत छैक । ड्राइवरोकेँ लऽ लिअऽ आरती ।

ड्राइवर पछिला सीटपर बैसि गेलैक । भास्कर सिनहा साहबकेँ नमस्कार कऽ आगू बैसि गेल । गाड़ी स्टार्ट कऽ देलकै आरती । भरि बाट दुनू चुप्पे रहल । आरती एकदम गम्भीर भऽ गेल छलैक । भास्कर सिनहा साहबक बात सोचि रहल

छल । कहलकै— अहाँ हमरा ठकैत रही आरती ! योर फादर हैज ए वेरी सोबर टेम्पर....

होस्टलक गेटपर ओकरा उतारि देलकै । धन्यवाद कहबा लेल गाड़ीक दोसर कात आयल भास्कर । आरती रोकि देलकै— कोनो औपचारिकता नहि । आजुक संध्या मोन रहत । आइ आर पसिन्द भऽ गेलहुँ अहाँ । फेर दुष्टतासँ हँसलैक— नो जोक बेबी फादर ! आइ रियली लाइक यू । यू आर सिम्पली ग्रेट...

आरतीक गाड़ी चल गेलैक । भास्कर होस्टलक भीतर आबि देखलक— बरण्डाक बेंचपर देवानजी बैसल छलथिन ।

आशा चौधराइन पाथर भऽ गेल छलीह ।

चौबीस घण्टासँ अहिना पाथर बनलि बैसल छलीह । ने कोनो गप्प, ने कोनो स्पंदन । लगैत छैक जेना शरीरक सभटा चेष्टा, सभटा स्पंदन क्यो बन्द कऽ देने होइ आ तैयो ओ जीविते एकटक शून्यमे निहारैत बैसल होथि !

खाली शून्ये तऽ बाँचलो छलैक आब । निहारबा लेल किछु नहि छलैक । सभ-किछु जरिकऽ समाप्त भऽ गेल छलैक ।

आ जे बाँचल छलैक तेम्हर ताकल नहि जाइत छलनि आशा चौधराइनसँ । दुनू तीन-चौथाइ जरल लाशकेँ उज्जर चादरिसँ झाँपि देल गेल छैक नीक जकाँ आ पाड़ल छैक आँगनक तुलसी चौरा लग । लगेमे बैसल छथि आशा चौधराइन आ हुनकर दुनू पुतहु । पोतो अपन मायक कोरामे डेरायल आ त्रस्त बैसल अछि । सदिकाल जारी ओकर बकबक सेहो अखन बन्द छैक । जे भेलैक से ओ बूझि नहि रहल छैक, मुदा जे देखलकै तकर आतंक ओकर मोनमे ओहिना पैसल छैक ।

ओ तऽ अखन नेन्ना छैक, जे देखलकै तकरे आदंक पैसि गेलैक । ककरो बँचेबाक दिस ध्यान नहि गेलैक । सभ अपन-अपन घरपर चढ़िकऽ ओकरा बचैबामे लागि गेल । हवेलीक तीनू कोठा धू-धू कऽ जरि रहल छलैक- पक्कोमे नीक जकाँ आगि पकड़ि लेने छलैक आ खपरैल भनसोघर नहि बाँचल छलैक । खाली चरवाह आ नौकर-चाकर सभ दौड़ि रहल छलैक घैल आ बाल्टी लऽलऽ ।

पछबरिया, उतरबरिया आ दछिनबरिया कोठा आ भनसाघरमे एके संग आगि धयलकै जेना ! भनसाघरसँ रेमनी आ भंडारसँ आशा चौधराइन चिचिआइत बहरेलीह । किरणो राजाक संग भनसेघरक ओसारापर छल । राति अन्हरिया छलैक । किम्हरो किछु सूझि नहि रहल छलैक । रम्भाकेँ दोसर आँगनमे नोत छलनि, ओ अंगनेमे नहि छलीह ।

सचिन छलाह घरमे आ महेन्द्रनाथ चौधरी सेहो । दुनू कोठा जरि रहल छलैक, मुदा ओइमे कोनो प्राणीक स्वर नहि बुझाइत छलैक । आँगनसँ आशा चौधराइन चिचिआय लगलीह- ''बाहर निकल सचिन....घरमे आगि लागल छौक । चिचिआइत-चिचिआइत गराँ बाझि गेलनि । नौकर-चाकर सभ संग मिलि बड़का आ छोटका मालिकक़ेँ सोर पाड़ऽ लगलनि । कौखन लगैक जेना दुनू कोठाक भीतरोमे क्यो चीत्कार कऽ रहल होइ । मुदा भीतर पैसबाक बाट बन्द छलैक । सभ दरबज्जामे आगि लागल छलैक, सभ खिड़कीमे धधरा छलैक । भरिसक बाहरसँ सभ दरबज्जा बन्द कऽ देने छलैक क्यो । आगि लगले धधकि उठलैक जेना क्यो किरासन वा पेट्रोल ढारिकऽ दियासलाइ खड़रि देने होइ !

रम्भा दौड़लि आँगनमे आयलि । चिचिआइत-चिचिआइत बेहोश होइत सासुकेँ देखलक । निस्तब्ध आ सुन्न भेल राजाकेँ अपन कोरामे समेटने ठाढ़ि किरणकेँ देखलक आ देखलक चारूकात दौड़ैत लोकसभकेँ । ओहो चिचिआइत उतरबरिया कोठा दिस दौड़ल । ठीक आगिमे पैसबासँ पहिने नहि जानिकेँ सभ पकड़ि लेलकै । टँगने आँगनमे लऽ अनलकै । रम्भाकेँ होश नहि छलैक ।

सौंसे गाम आँगनमे जुटि गेलैक । बड़का घैल आ बाल्टीसँ पानि देबऽ लगलैक । माटि आ गर्दा फेकऽ लगलैक । दू घण्टा आगिसँ लड़लाक बाद किछु धधरा कमलैक । मुदा आगि मिझबैत-मिझबैत भोर होबऽ लगलैक । दुनू कोठलीक दरबज्जा-खिड़की जरिकऽ टूटि गेल रहैक, मुदा बाट बनबैत-बनबैत प्रात भऽ गेलैक ।

आ तखन निकललैक ओ दुनू लाश । पहिने उतरबरिया घरसँ । ततेक जरल जे किछुओ चिन्हबा जोग नहि बाँचल छलैक । बताहि सन भरि राति कनैत रम्भा एक बेर फेर बेहोश भऽ गेलि ।

तखन दछिनबरिया घरक लाश निकललैक । नाममात्र अवशेष बचल । सभटा जरिकऽ समाप्त । आशा चौधराइन ओकरा देखैत पाथर भऽ गेलीह । राति भरि आँगनमे बैसल-बैसल जरैत घर-आंगनकेँ देखैत सुन्न जकाँ भऽ गेलि रहथि । भोरे दुनू जरल लाशकेँ देखैत एकदम पाथर भऽ गेलीह ।

दुनू लाशकेँ तुलसीचौरा लग राखि कतहुसँ उज्जर चादरि आनि झाँपि देलकै । लगेमे बैसलि छलीह आशा चौधराइन । राति भरि कखनो पलक नहि खसल छनि । चिचिआइत-चिचिआइत जखन बेहोश भऽ गेल रहथि, सभ आंगनेमे छोड़ि देने रहनि । लगमे रहनि दुनू पुतहु आ पोता । होश भेलनि तऽ जरैत घर सभकेँ देखैत सौंसे देह दुःख आ आघातसँ सुन्न भऽ गेलनि, फेर एक्को बेर नहि चिचियलीह ।

रम्भो नहि चिचियलीह फेर । बेहोश देहकेँ टाँगि सभ आँगनमे धऽ देने रहनि । बड़ीकाल बेहोश रहलीह । ककरो देखबाक फुर्सति नहि छलैक । होश भेलनि तऽ सभ समाप्त छलनि । जरल लाशक अवशेषक तकाइ भऽ रहल छलैक ।

लाश भेटलैक तऽ रम्भा एकबेर फेर बेहोश भऽ गेलि । आशा चौधराइन पाथर बनलि बैसल रहलीह ।

किरण तऽ रातिए पाथर भऽ गेल छलि । आगि लागल देखितहिँ कहुना राजाकेँ लऽ आँगनमे चल आयल छलि । तकर बाद की भेलैक, कोना भेलैक, किछुओ होश नहि रहलैक । डेरायल-सहमल राजा कतेको बेर पुछलकै- बाबा घरेमे छथिन गे....कक्को घरेमे रहि गेलथिन गय...निकलथिन कोना गय माँ....कोना निकलथिन कक्का बाबा....

किरण कोनो जबाब नहि देलकै । राजा कानऽ लगलैक— अपनो सभक कोठली जरि गेल माँ ? हम्मर बिछौना...हमर खेलौना...सभ जरि गेल माँ...?

कनैत-कनैत ओ अपस्याँत भऽ गेलैक । किरण ओकरा छातीसँ सटने अवसन्न भेलि बैसल रहलैक । एक्को शब्द ने बहरेलैक मुँहसँ । राजाकेँ चुप्पो ने करा भेलैक । कनैत-कनैत छौंड़ा अपने चुप्प भऽ गेलैक ।

लोक सभ मुदा चुप्प नहि रहलैक । चारूकात गलगुल होमऽ लगलैक— गामक लोकमे...नौकर चाकरमे...

-''ब्रह्माक काज थिक ई । लाउ बान्हिकऽ ओकरा, फेकि दिऔ ओकरो अही आगिमे ।''

-ताहि लेल बैसले अछि ओ ? निपत्ता भऽ गेल गामसँ ।

बद्री चौधरी बेशी तमसायल छलाह । महेन्द्रनाथ चौधरीक भनसाघरसँ सटल जे हुनकर पछबरिया घर छलनि, सेहो सुड्डाह भऽ गेल छलनि । ओ पठौलथिन

आदमी सभकेँ ब्रह्माक अंगना । किछुए कालमे सभ घुरि आयल— कोनो पता नहि छैक । आंगनमे ओकर स्त्री अपन बच्चाकेँ लेने कनैत बैसल छैक ।

क्यो-क्यो देखने छलैक भगैत । महीसक घरमे छल ठकना । ओ देखलकै पछुआर बाटे भगैत ककरो, चीन्हि नै सकलैक । पकड़िओ ने सकलैक । आगि मिझबऽ दौड़ल । ओहो ने भेलैक । माल-जालक घर आ जरनघरा पर्यन्त जरि गेलैक । कहुना माल-जालकेँ खोलि बैला देलकै...प्राण बाँचि गेलैक ।

हवेली गेलैक । हवेलीक दुनू मालिको गेलाह । भास्कर पटनामे छलैक आ आँगनमे दू-दू टा लाश पड़ल छलैक । सौंसे आँगनमे गलगुल होमऽ लगलैक ।

पटना जाकऽ लाबहोमे आर दू दिन लागि जयतैक । एतेक काल जरल लाश राखब मस्किल । दुर्गन्ध करऽ लागत ।

मुदा के देतनि आगि ? पोता एतेक छोट छनि, जनउओ ने भेल छैक।

भातिज लोकनि छथिन ।

आशा चौधराइन किछु ने सुनि रहल छलीह । पाथर भऽ गेलि छलीह । गौआँ सभ आपसमे कनफुसकी कऽ थाकि गेल । बूढ़ा देवानजी अन्तमे आगू बढ़लाह- ''किछु आज्ञा करियौ मलिकाइन ! एना कोना काज चलत ? साहस करियौ । लौकिकताक निर्वाह तऽ करहे पड़त ।''

आशा चौधराइनक देहमे स्पंदन घुरलनि । बजलीह— अहाँ अपने जाउ देवानजी ! भास्करकेँ संगे लेने अयबैक ।

देवानजी चल गेलाह । चौबीस घण्टा बीति गेल छैक । आँगन एकदम सुन्न भऽ गेल छैक । खाली दुनू पुतहु आ पोता लगमे छनि । आशा चौधराइन पाथर बनलि बैसल छथि ।

काल्हि दिनभरि आंगनमे बड़ भीड़ रहनि । नौकर-चाकर सभ आगि मिझबैत रहल । कोइला-छाउरक ढेरी हँटबैत रहल । जरल-अधजरल धरनि-कड़ी हँटबैत रहल । जरल-अधजरल ठाढ़ रहल देबालक ईंटा सभपर पानि ढारैत रहल । आंगनमे तीनटा स्त्री आ एकटा बच्चा ओहिना बैसल रहल । राजाकेँ कने काल जिद कऽ लऽ गेलथिन बद्री चौधरीक पुतहु, खुआ-पिआ देलथिन । कने काल सुताइयो देलथिन अपने घरमे ।

तीनू स्त्री ओहिना आंगनमे रहलीह— निराहार । मुँहमे जल तक नहि ।

पलको ने झपकलनि किनको एको बेर । बीच आंगनमे ओइ झाँपल लाश सभक लग बैसल रहलीह ।

लोक सभ बड़ जोर देलकनि— अपन-अपन आंगन चलऽ कहलकनि । आशा चौधराइन नहि मानलथिन । हारिकऽ सभ कहलकनि जे अपने बंगलामे चलि जाउ, ओ तऽ अपने घर थिक । लाशकेँ अगोरिकऽ पुरुषपात बैसताह ।

आशा चौधराइन टस्ससँ मस्स नहि भेलथिन । एक बेर एतबे कहलथिन- ''जा धरि लाश नहि उठत, हम एतहि रहब ।''

आ चौबीस घण्टा बीति गेलनि । देवानजी नहि घुरल छलथिन । भोरक ट्रेनो चल गेल छलैक । आशा चौधराइन ओहिना पाथर बनलि बैसलि छलीह ।

राति राजाकेँ उठाकऽ अपन घर लऽ गेल छलथिन बद्री चौधरीक पुतहु । अन्हरोखे उठिकऽ ओ फेर मायक लगमे बैसि गेल- एकदम संच-मंच ।

आँगनमे फेर लोक जुटऽ लगलैक । महेन्द्रनाथ चौधरीक भैयारी सभ जोर देबऽ लगलथिन- ''जिद नहि करू भौजी ! जाउ बंगलीवला घरमे । हमरा सभकेँ अपन काज करऽ दिअऽ । काल्हिएसँ सभटा बन्दोबस्त भेल अछि । हमरो सभक तऽ किछु कर्त्तव्य अछि । भाइकेँ हम आगि देबनि आ सचिनकेँ इन्नर दऽ देथिन ।

आशा चौधराइन पाथर बनल बैसलि रहलीह । लोकसभ बिगड़िकऽ बाट धयलक । आंगनमे तीनू स्त्री आ एकटा अबोध नेना आ नौकर-चाकर मात्र रहि गेल। रौद माथपर आबि गेलैक । तखन एकटा टैक्सी गाममे अयलैक । देवानजीक उतरबासँ पहिनहि भास्कर टैक्सीसँ उतरि हवेली दिस दौड़ल। मुदा हवेली कहाँ छलैक ? खाली जरल घरक ढहल देबाल आ कोइला जमा छलैक । आंगनमे एक पतिआनीसँ तीनटा स्त्री बैसल छलैक- ओकर माय, भौजी आ स्त्री । मायक हाथक चूड़ी फोड़ल छलैक आ सीथक सेन्नुर पोछल । भौजीक हाथ सुन्न छलनि आ माथक केश छिड़िआयल, सेन्नुर पोछल । किरणक चेहरा पर छाउर मलल कारी-स्याह भेल । आँखिमे आदंक आ भय । भास्करकेँ देखि जेना भयक भाव किछु तिरोहित भेलैक ।

राजा दौड़लैक ओकरा दिस- पप्पा अयला माँ देखू...माँ, पप्पा अयला ।

भास्कर ओकरा कोरामे लऽ लाश लग बैसि गेल । ओकरा बाबूक बात

मोन पड़लैक- ''ताबत तक गाम नहि अबिहऽ जाबत बजबिअऽ नहि । ओ बिनबजौने आबि गेल छल आ बाबूजी शान्त पड़ल छलथिन । उठिकऽ डँटबो नहि कयलथिन । आब नहि डँटथिन कहिओ ककरो । आ भैया सेहो हुनकर बगलमे पड़ल छलथिन । भास्करकेँ कहने रहथिन– हमरा लगैत अछि जेना जल्दिये अइ सभसँ मुक्ति भेटि जायत ।

सत्ते सभटासँ मुक्ति भेटि गेलनि भैयाकेँ । आब कोनो चिन्ता, कोनो कष्ट नहि रहलनि ।

भास्कर कानऽ लागल । बाप आ भाइक झाँपल लाश लग बैसिकऽ बच्चा जकाँ कानऽ लागल भास्कर । बड़ी काल धरि कनिते रहि गेल ।

उपेन्द्र चौधरी आँगन अयलथिन । भास्करक पीठपर हाथ दैत कहलथिन— आब जल्दी करऽ । तोहर माय जिद पकड़ि लेने छलथुन, ने तऽ कखन ने सभटा क्रिया-कर्म भऽ गेल रहितनि । तेसर दिन भऽ गेलै आइ । माय लोकनिकेँ कहुन जे बंगलीवला कोठलीमे जैथुन । निराहारे छथुन सभ क्यो ।

भास्कर उठिकऽ ठाढ़ भेल । सभ चीजक ब्योंत भऽ गेल छलैक । दूटा चचरीपर दूनू लाशकेँ राखल गेलैक आ हवेलीक सिंहद्वारसँ दूटा लाश संगे बहरेलैक— बाप-बेटाक लाश । -'राम नाम सत्त है ।'

आगि देलकै भास्कर, बेराबेरी दुनू चितामे । बाप आ भाइक चिता । चिता धधकऽ लगलैक । धधकैत चिता लग बैसल भास्करकेँ ब्रह्मा मोन पड़ऽ लगलैक- 'हमरा जे करबाक अछि से हम अबस्स करब ।'' आ ओकर आँखिमे लपलपाइत ओ धधरा । ई की कयलकै ब्रह्मा ? ओकर सभटा विश्वासकेँ चूर-चूर कऽ देलकै । अही लेल ओकरा जमानतिपर छोड़बौने छलैक ? प्रेमा पीसीक लाश जराकऽ गेल छल आ बाप-भाइक चिता लग बैसल अछि । एकर दायित्व ककरापर छैक ? ब्रह्मा एहन भऽ गेलैक ? अपन बाप-भाइक खूनक लेल ओ स्वयम् उत्तरदायी अछि । वैह छोड़ौने छलैक ब्रह्माकेँ । वैह हत्यारा अछि ।

पँचकठिया फेकिकऽ घुरती काल वैह सभ सवाल मोनकेँ मथने छलैक । एकटा अपराध-बोधसँ ग्रस्त छल भास्कर । मायक सोझाँ कोना जायत ? भौजीक मुँह कोना देखि हेतैक ? जीवन भरि ई अपराध-बोध ओकरा एहिना पीड़ा दैत रहतैक ।

–ई कोन नरककुण्डमे धकेलि देलैं ब्रह्मा हमरा ?'

पहिल चिट्ठी आरतीकेँ लिखलकै ।

आरती ! अहाँ होस्टलमे उतारिकऽ गेलहुँ आ कोठलीक बाहर बेंचपर देवानजी बैसल छलाह । साँझेसँ बैसल छलाह । हुनका सङ्ग पहिने जहाज, ट्रेन, बस, अन्तमे टैक्सी कऽ कहुना गाम पहुँचलहुँ । बाबू आ भैयाक अन्तिम संस्कार भऽ गेलनि ।

ओइ दिन बाटमे, श्मशानमे आ ओतऽसँ घुरितो काल ई सवाल मोनकेँ मथैत रहल– एना किएक भेल ? ककर पापसँ भेलैक ई ? एना आगिमे झरकाकऽ ब्रह्मा किएक मारि देलकनि बाबू आ भैयाकेँ ?

ब्रह्मा दऽ कहने रही अहाँकेँ पछिला बेर । ओकरा मोनमे प्रतिहिंसा छलैक । अपन माइक अपमान आ मृत्युक बदला लेबाक भावना छलैक । मुदा एहन जघन्य कृत्य ! हवेलीकेँ जरा देलकै आ दूटा प्राणीकेँ बाहरसँ दरबज्जा बन्द कऽ जिबिते झरका देलकै ।

से के कयलकै ? हमर संगी ब्रह्मा । ओकरा दऽ पूरा नहि कहने रही हम । खाली कहने रही जे नेनपनक संगी अछि । ओकर माय हमर घरमे भानस-भात करैत छलीह । हमरा बड़ मानैत छलीह । मुदा ई नहि कहने रही जे जखन प्रेमा पीसी हमरा खुअबैत रहैत छलीह, ओ चौखटि लग बस्ता लेने ठाढ़ रहैत छल । प्रेमा पीसी हमर आग्रहोपर ओकरा नहि खुअबैत छलथिन । कतेक चीज लऽ जाइत रही हम स्कूल, ब्रह्माकेँ कतबो आग्रह करियैक, नहि खाय । कहय— ''भूखे नहि अछि । भोरे खा लेने रही । फेर घुरिकऽ जयबै अंगना तऽ खयबै मायक संगे । हबेलीसँ लबैत छैक थारी सभ दिन ।''

ओ केहन थारी छलैक आरती से बुझबैक अहाँ ? ओ थारी होइत छलैक प्रेमा पीसीक खयनाइ । ताहिमे तीन गोटे– ब्रह्माक नानी, ब्रह्मा आ ओकर माय । तैयो ब्रह्माकेँ ने कहिओ कनैत देखलियैक, ने तमसाइत देखलियैक । पढ़बामे तेहने विलक्षण छल ! पैघ लोकक धीयापुता रही, तेँ गुरुजी सभ हमरे फस्ट करा दिअय से दोसर बात, मुदा प्रथम स्थानक सही हकदार वैह छल । जेहने स्मरणशक्ति, तेहने प्रत्युत्पन्नमति । तहिया के जनैत छल जे मिडिल पास कयलाक बाद भनसीया हैत

ब्रह्मा ? मुदा ओहूमे सन्तुष्ट छल ओ । अपन गरीबी....अपन अभावमे अपन माय स्त्री बेटा संग सुखसँ रहैत छल ।

फेर ओहू सुखमे आगि लागि गेलैक । पहिने मायक इज्जति गेलैक आ अपने जहल गेल । ओ जहलसँ छूटल, माय दुनियासँ विदा भऽ गेलै ।

आ तकर बाद सभटा गड़बड़ भऽ गेलैक । बूझि नहि पबैत छी जे ओकरा जमानतिपर छोड़ा हमरासँ कोनो अपराध भेल वा नहि । बेर-बेर लगैत अछि जे हम स्वयम् अपन बाप-भाइक हत्यारा छी । हमरा अइ ग्लानि आ अपराध बोधसँ बचाउ आरती ! अहाँ कहू जे हमरासँ कोनो गलती भेल ? ब्रह्माकेँ छोड़ा देब कोनो गलती काज भेल हमरासँ ?

ओना एकटा गलती आइयो भेल हमरासँ । पुलिस आयल छल गाममे । हमर देयादोक एकटा घर जरल छलनि, पुलिसमे लिखा आयल छलाह । ब्रह्मापर शक लिखा आयल छलाह । हमरो लग आयल पुलिस । हम कहलियैक क्यो ने देखलकै किछु । नहि जानि, कोना लगलैक आगि ? ब्रह्मापर कोनो सन्देह नहि अछि हमरा । ओ हमर मित्र अछि । हमर घर किएक जराओत ? केस भेल छलैक मुदा ताहि लेल एहन काज किएक करत ओ ? जमानतिपर तऽ छूटल अछि । ओकरापर शंका बेकार ।

पुलिसकेँ हमरेपर शक होबऽ लगलैक— अहाँ किछु नुकबऽ चाहैत छी । गामक लोक तऽ दोसर बात कहैत अछि । क्यो-क्यो देखबो कयलकै ओकरा पड़ाइत ।

भास्कर दृढ़तासँ कहलकै– धोखा भेलैक ओकरा सभकेँ । क्यो नहि चिन्हलकै ककरो । खाली लगलैक जे किरासनक टीन फेकि क्यो पड़ा रहल अछि । ओइ टिनोकेँ आगिमे फेकि देलकै ।

पुलिस-दरोगा हमरा विचित्र दृष्टियेँ तकैत चल गेल । देयाद हमरा जरैत दृष्टियेँ तकैत रहलाह जेना गीड़ि जयताह ।

आँगन गेलहुँ तऽ माय कहलक– ''ठीक कहलहक । बिना देखने कोना नाम कहि देबैक ककरो ? ककरो ने देखलियैक हमरालोकनि, ककरो पड़ाइतो नहि देखिलियैक । भगवान निसाफ करथिन ।''

मायकेँ भगवानमे बड़ आस्था छैक....ओ हुनकर निसाफक आसरामे शान्त अछि । सभटा दुख पीबि शान्त अछि ।

हमरामे ओतेक आस्था नहि अछि आरती ! हमरा अहाँक विचार चाही । हमरासँ कतहु अन्याय भेल ? अहाँ लिखब तऽ हमर मोन चैन हैत ।

ओना बाबूजीक काजमे अहाँकेँ अबस्स बजबितहुँ । मुदा अखन हमरा लोकनि स्वयम् बेघर छी । पुरखाक हवेली नहि रहल । ओइ घराड़ीपर आब जल्दी-जल्दी फूसक दू टा कोठली ठाढ़ भऽ रहल अछि । एकादशाहसँ पहिने अबस्स ठाढ़ भऽ जायत । अखन एकटा भनसाघर कहुना ठाढ़ भेल अछि– एकचारी । पूजोघर ओहीमे तावत । हमरा लोकनि बंगलीमे छी ।

हवेलीक संग बहुत-किछु जरि गेल । जरि गेल शोषण आ अन्यायक सभटा चिट्ठा जे भरना आ केबालाक कागत-रूपमे बाबूजीक बक्सामे भरल छलनि । सामन्ती व्यवस्थाक सभटा अवशेष... सभटा चिह्न मेटा देलक ई आगि । खेत बाँचल अछि । शुद्ध खेतिहार रहब आब हम । गाममे रहब ।

एम.ए.क पढ़ाइ आब भरिसक नहिए भऽ सकत । मौका लागत तऽ कहिओ प्राइवेटसँ कऽ लेब । नहियो करब तऽ की फर्क पड़त ? गाममे रहबाक अछि । अपन मेहनतिक कमाइसँ एकटा छोटछीन घर बनाकऽ अपन स्त्री... अपन बेटाक संग रहबाक स्वप्न देखैत रही हम । आइ पुरखाक विशाल डीहपर छोटछीन घर बनि रहल अछि । हुनके अरजल जमीन छनि मुदा ओइमे मेहनति करब हम । सभहक उचित मजूरी देबैक हम । अही ठाम नव ढंगसँ जीबाक चेष्टा करब । अहाँक शुभकामना चही । मनुष्य की चाहैत अछि आ की भऽ जाइत अछि ? भरिसक ओ अपने नहि बूझि पबैत अछि जे ओ की चाहैत अछि । हम आइ.ए.एस. मे जयबाक स्वप्न देखैत रही, नै तऽ प्रोफेसर हैबाक इच्छा छल । पुरखाक हवेली आ अरजल सम्पत्तिसँ दूर पड़ाय चाहैत रही । आब लगैत अछि जेना ओ हमर इच्छा नहि छल, ओ हमर सख-सेहन्ता छल । हम तऽ गामक वासी छी, खेतमे काज कयनाइए हमर असली पेशा अछि, हम सैह करब...

हमर निर्णय केहन अछि आरती ? अहाँ अबस्स लिखू ।

अहाँक बाट निष्कंटक भेल । चैनसँ फर्स्ट करैत रहू अहाँ । ओना हम अहाँक चालाकी पकड़ि लेने रही । खाली हमर अहं केर सन्तुष्टि लेल पिछड़ि जाइत रही अहाँ । फर्स्ट करबाक अहाँक इच्छे नहि छल कहिओ । अहाँक सभटा सहानुभूति हमरा संग छल । एकर आभारी रहब हम सभदिन ।

एकटा बात आर अहाँकेँ कहबाक इच्छा छल । जहिआ अहाँक डेरापर

गेल रही आ अहाँ होस्टल पहुँचाबऽ आयल रही, तहिए कहबाक मोन छल । डरे नहि कहलहुँ जे अहाँ झट कहब ''पप्पा एक्के डिनरमे अपन ओकील बना लेलनि अहाँकेँ ।'' मुदा सत्ते कहै छी आरती, हमरा बड़ प्रसन्नता हैत । अहाँकेँ सभदिन प्रसन्न देखबाक कामना अछि । अहाँ जिनगीक बाटपर चलबा लेल कोनो संगी चुनि लेबाक अपन पप्पाक आग्रहकेँ यदि मानि लेबनि तऽ सत्ते हमरा बड़ प्रसन्नता देत । बूझब जे एकटा आर मान हमरा देलहुँ अहाँ, हमर इहो बात मानि लेलहुँ ।

देखू, की लिखैत-लिखैत की लिखऽ लगलहुँ । मृत्यु आ आगिक विभीषिकासँ शुरू कयने रही आ विवाह आ जीवनसंगीक गप्प धरि आबि गेलहुँ । ई जिनगी एहिना अछि आरती ! एहिमे सभ-किछु होइत छैक, सभटा संभव छैक । काल्हि तक जकरा नहि रहलासँ किछुओ हैब संभव नहि लगैत छैक, आइ ओकरो बिना सभ काज सहजेँ चलऽ लगैत छैक । परसुए जराकऽ घुरल छिअनि बाबू आ भैयाकेँ आ बात पुरान सन भेल जाइए । आँगनमे आयल रही तऽ जे माय पाथर बनलि बैसलि छल, से आब काजमे व्यस्त अछि । घर बनयबाक सभ आदेश दऽ रहल छैक, श्राद्धक सभ विध आ लौकिक दानपुण्य आ भोजक इन्तजाममे सेहो लागल अछि । देवानजीक संग विचार-विमर्श कऽ टाका-पैसाक जोगारमे से व्यस्त अछि । हम खाली उत्तरी पहिरने बैसल छी । मायकेँ देखि बेर-बेर इएह सोचैत छी जे स्त्रीगणमे अपनाकेँ अभियोजित करबाक कतेक शक्ति होइत छैक !

भौजी खाली अभियोजित नहि भऽ सकल छथि । लगैत अछि जेना ओ स्वयम् एकटा जीवित लाश होथि । आकृति विवर्ण भऽ गेल छनि । उज्जर साड़ी आ सुन्न सीथवाली अइ भौजी दिस ताकब मस्किल अछि, करेजा फाटऽ लगैत अछि । चिरदुखिया हमर अइ अपूर्व सुन्दरी भौजीक ई वैधव्य-दुखकेँ देखि हमर माय अपन दुख आरो बिसरि गेल अछि । सदिखन हुनके लेल व्यस्त रहैत अछि, एक्को क्षण एकसर नहि छोड़ैत छनि । ओना मायक दृष्टि विपत्तिक अहू समयमे सभ दिस छैक । हमरा कखन फलाहार हैत, कखन दूध पीअब— सभटाक ध्यान रहैत छैक ओकरा । सभदिन बाबिए लग पोसैलहुँ हम । नीक जकाँ मायकेँ चीन्हि नहि सकलियैक । जानि-बूझिकऽ हमरा छोड़ि देने छल ओ हमर प्राण रक्षा लेल । जीबि गेलहुँ तऽ बाबिएक लग रहि गेलहुँ । मायकेँ जेना-जेना आब चीन्हि रहल छियैक, माय ऊँच भेल जाइत अछि । गर्वसँ कहि सकैत छियैक लोककेँ— हम अइ माइक बेटा छी, आशा चौधराइनक बेटा छी हम ।

परसूसँ मोन बड़ भारी छल आरती ! कटिहारीसँ घुरलाक बादेसँ लगैत छल

जेना माथ फाटि जायत ! बहुत रास बात मोनकेँ मथि रहल छल । अहाँकेँ चिट्ठीमे एतेक रात बात लिखि देलहुँ तऽ मोन बड़ हल्लुक लागि रहल अछि । बड़ विचित्र सम्बन्ध अछि हमरो-अहाँक । हमर किछुओ ने भऽकऽ बहुत-किछु छी अहाँ ।

हे बान्धवी, हमर सादर नमस्कार निवेदित अछि ।''

चिट्ठी लिखि लिफाफमे बन्द कयनहि छल कि राजा आबि गेलैक- ''ककरा चिट्ठी लिखलियै पप्पा ?''

भास्कर लिफाफ ओकरा हाथमे दैत कहलकै- ''तोहर मौसीकेँ । जो, चिट्टी ठकनाकेँ दऽ अबहिक, डाकघरमे खसा औतैक ।''

राजा चल गेलैक । चौखटि लग किरण ठाढ़ छलैक– किनका एतेक टा पोथा लिखल गेल छनि ? हमर बहिन कतऽसँ आबि गेलीह पटनामे ?

स्वरक भंगिमासँ भास्करकेँ आश्चर्य भेलैक— हमर संगी छथि किरण !

किरण झूठ कहलकै- ''तऽ पीसी कहितिऐक, मौसी किएक बना देलिऐक ? खूब हँसी-ठट्ठा होइत अछि ?''

भास्कर बिगड़ि उठलैक— ''एहन बात नहि बाजी किरण ! जे नहि बुझैत छियैक, ताहिमे अनेरो टांग अड़ा रहल छी ।''

किरण भास्करक तामस देखि आर जिदिया गेलैक- ''नै, हम सभ किएक बुझबैक किछु ! हम सभ तऽ बिनपढ़ल-लिखल जाहिल छी । बुझनाहरि सभ तऽ पटनामे बैसलि छथि ।''

भास्कर आरो तमसा उठलैक– ''लज्जाक बात अछि किरण ! अहाँक मोनमे एहन छोट विचार ! जाउ, माय लग जाउ ओइ कोठलीमे । कोन समयमे कोन राग अलापऽ लगलहुँ ?''

अपमानित किरण चल गेलैक । आँखिमे नोर छलैक से भास्कर नहि देखलकै । दोसर अवस्था छैक किरणक, सेहो ने बूझल छैक भास्करकेँ । जखनसँ अयलैक, उतरी गराँमे पहिरि बाहर बरण्डापर वा दोसर कोठलीमे कम्बल बिछा बैसल छैक ।

एक कोठलीमे माय भौजी आ किरण छैक राजाक संग । दोसरमे देवानजीक संग भास्कर अछि । जाड़ अखन पड़िए रहल छैक । बाहर सूतब मस्किल छैक ।

कनैत किरणकेँ देखि आशा चौधराइन चौंकलीह– ''की भेल कनियाँ ? एना कनैत किएक छी ?''

किरण झट नोर पोछि लेलक— ''किछु ने माय ! एहिना हवेली मोन पड़ि गेल छल ।''

आशा चौधराइन बूझि गेलथिन– ''भास्कर किछु कहने अछि ?''

किरण कोनो उत्तर नहि देलकै । सासु कहलकै– ''अखन ओकर मोन अस्थिर छैक । एतेक भारी काण्ड भेलैक । गराँमे उतरी छैक, खयबा-पीबाक ठेकान नहि छैक । माथ गरमायले रहैत छैक । ओकर तामसपर अखन ध्यान नहि दिऔक । अपन ध्यान राखू, अखन दोसर समय अछि अहाँक ।''

किरणक मोनमे कचोट रहिए गेलैक । एहन कोन बात कहलकै ओ जाहि लेल एना झझकि लेलकै ! कहिओ तऽ नै बिगड़ल छलैक आइ धरि । आइ की भऽ गेलैक ? ककरा लिखल गेलैक एहन मोट पोथा ? अपनोपर तामस भेलैक । किएक कयलकै ओकरापर सन्देह ? आइ धरि कहिओ कोनो बात भेल छैक ? तखन एहन समयमे एहन-ओहन गप्पे किएक ? तामस तऽ उचिते भेलैक ।

राजा घुरि अयलैक । किरण पुछलकै— चिट्ठी दऽ देलहिक ठकनाकेँ ?

राजा उल्लाससँ कहलकै– हँ माँ ! राजाक हाथ पकड़ि किरण फेर ओइ कोठली लग गेल । भास्कर माय-बेटाकेँ देखि सोझ भऽ बैसि रहल ।

– ''हमरा नहि बाजऽ चाहैत छल ओहन बात !'' किरण कहलकै ।

– ''हमरो अनेरो तामस भऽ गेल । मोन ठीक नहि रहैत अछि अखन ।'' भास्कर कहलकै ।

सन्ध्या भऽ गेल छलैक । किरणक हालतिपर ध्यान गेलैक भास्करकेँ । ओहो अनोना करैत छलैक ओकरे संग । द्वादशाह दिन तक करतैक । बड़ कमजोर भऽ गेल छैक एतबे दिनमे । भास्कर चिन्तासँ पुछलकै– ''एना किएक किरण ! मोन तऽ ठीक रहैत अछि ?''

किरण लजा गेलैक– ''ठीके रहैत अछि । तखन पहिल बेर सन नहि ।''

भास्कर पहिने नहि बुझलकै । फेर किरणक लजायल आकृति देखि सभ बूझि गेलैक । प्रसन्न भऽ उठल । फेर उदास भऽ गेल । केहन समयमे समाचार

भेटल छैक । राजाक बेरमे खबरि सुनितहि गौरी चौधराइन नाचऽ लागल रहथिन । हरदम छाया जकाँ किरणक संग रहैत छलथिन । अइ बेर के करतैक ओ सभ ? घर पर्यन्त नहि रहलैक । भास्कर चिन्तामे पड़ि गेल ।

किरणकेँ हँसी लागि गेलैक— अखनेसँ कोन चिन्तामे पड़ि गेलहुँ अहाँ ? अखन बड़ देरी छैक । बस्स बुझू जे अखन शुरुए भेल अछि ।

किरण चौखटिक ओइ पार बैसि गेलैक । राजा ओकर कोरामे आबि गेलैक । भास्करकेँ बड़ नीक लगलैक एना चौखटि लग किरणक बैसब । एना घुरिकऽ आबिकऽ अपन गलती मानब । अपन तामसपर ओकरा अपने लाज भेलैक ।

आ समय ससरि गेलैक ।

मायक प्रस्ताव एकदम अप्रत्याशित छलैक ।

भास्कर एकदम हड़बड़ा गेल– ''नहि माय । एना एकसर छोड़िकऽ नहि जो । सभ तऽ गेल । आब तोहूँ छोड़ि देबैँ ?''

काज-तिहार भऽ गेलैक । तीनू दिन भरि गाम खूब खयलकै । भास्कर जिद कऽकऽ दरिद्रनारायणक भोजनक सेहो व्यवस्था रखबौने छल । माय आ देयाद लोकनिकेँ आपत्ति रहनि–''ई नव चलनि नेतासभवला । ई सभ शास्त्र-पुरानक गप्प छैक, ब्राह्मणे भोजन विहित छैक । मुदा भास्करो अड़ल रहल । मनाइयेकऽ छोड़लकनि ।

ओइ दिन नहि मानलकै माय । एकदम अड़ल रहलैक । शान्त, गम्भीर आ अविचलित । भास्करकेँ कहलकै– अखन जोरसँ तोँ राखि लेबह तऽ रहि जायब, मुदा चलि जैतहुँ तऽ ठीक रहैत । काशीवास करब । दुनू सासु-पुतहु । हमरा कोन, वयस भेल, कहुना खेपि लेब । मुदा तोहर भौजी ! हुनको लेल तऽ सोचबाक अछि । काशीमे रहती, बाबा विश्वनाथमे मोन लगौती तऽ समय कटि जयतनि ।

''घरेमे मोन लगौतीह से नहि हेतनि माय ! हमरालोकनि छी, राजा छनि ।

कोनो तकलीफ नहि होबऽ देबनि हम । भैया हुनकर भार हमरे दऽ गेल छलाह ।''
भास्कर किन्नहु जाय देबऽ लेल तैयार नहि छल ।

माय शान्त स्वरमे कहलकै-''से तऽ तोहीं लेबहुन भार । हम कतेक दिन देखबनि ? हमर बाद तऽ फेर तोरेपर औतह ई सभ भार । अखन जाय दैह ।''

भास्कर ब्रह्मास्त्र छोड़लक- ''अखन किरणक ओहन हालति छनि, एनामे ककरा भरोसे छोड़ि देबहुन ?''

माय चिन्तामे पड़लैक– इएह एकटा समस्या अछि । मुदा तकरो इन्तजाम भऽ जयतैक, तोँ चिन्ता जुनि करह ।

बेटा लग आबऽसँ पहिनहि आशा चौधराइन बड़की पुतहुसँ गप्प कयने रहथि । एके कोठलीमे छथि । बाबीवला पछबरिया कोठाक घराड़ीपर मात्र दू कोठलीक फूसक घर बनि गेल छैक । उतरबरिया कोठलीमे भास्कर-किरण आ दक्षिणबरियामे ओ दूनू सासु-पुतहु । एक्के कोठलीमे रहैत, अपन पुतहुक ओहन विवर्ण आ हताश आकृति देखल नहि जाइत छलनि । कहलथिन– ''चलू बड़की कनियाँ ! हमरा संग काशी चलू । ओइठाम बाबा विश्वनाथमे ध्यान लगायब । जेना सभक दिन कटैत छैक, हमरो अहाँक दिन कटिये जायत ।''

रम्भाकेँ जेना विश्वासे नहि भेलैक । माय रहथिन ओकरा संग बनारसमे ? ओकरा संग पूजा करथिन ? ओ अविश्वासक दृष्टिसँ अपन सासुकेँ देखैत रहल ।

आशा चौधराइन बूझि गेलथिन । ओकर पीठ थपथपबैत कहलथिन— बिसरि जाउ सभटा । ओ एकटा दुःस्वप्न छल । ओकर स्मृतिए मेटा दिअऽ । दूटा जे जनैत छलाह से गेलाह । बाँचल छी हम-अहाँ ! गाड़ि दिअऽ ओइ घटनाकेँ अपन मोनेमे । आइसँ हमरो सभकेँ बिसरि गेल ओ घटना । जे जिनगी बाँचल अछि तकरा शुद्ध मनसँ बाबाक पूजामे लगायब ।

—''हमर पूजा स्वीकार हैत माय ?'' अविश्वाससँ रम्भा पुछलकै ।

— अबस्स स्वीकार हैत । एकसँ एक पापीक भगवान उद्धार करैत छथिन । अहाँ तऽ निष्पाप निष्कलंक छी । अहाँक हाथक पूजासँ पवित्र आर ककर पूजा हेतैक ?

— सत्ते कहैत छिअनि माय ! हम किछुओ ने...

रम्भाकेँ नहि कहऽ देलथिन आशा चौधराइन— बिसरि जाउ ओ सभ । फेर कहिओ एकर चर्चा नहि करब । एकटा असर्ध-घिनौन पन्ना छल जिनगीक, जकरा फाड़िकऽ फेकि देलियैक । ओकर प्रसंग फेर कतहु ने आबय कहिओ ।

ओ प्रसंग रम्भाक पछोड़ नहि छोड़ैत छैक कखनो । सुतैत-उठैत सदिखन ओकर आत्मापर भारी पाथर जकाँ पड़ल रहैत छैक । जाबत सचिन जीबैत रहलैक, ओकरो छातीपर सदिखन लादल रहलैक । कतबो चेष्टा कयलकै ओ सभटा बिसरि रम्भाकेँ अपना लेबाक, नहिए भऽ सकलैक । ओ चल गेलैक छातीपर बोझ लेने । जयबा दिन कतेक सहज भऽ उठल रहैक ! दिन भरि घरेमे रहैक । कतहु ने गेलैक, किताब पढ़ैत पड़ल रहलैक । साँझ खन रम्भा टोकलकै- जाउ ने, कने बाहरसँ घूमि-फीरि आउ ।

सचिन नहि गेलैक । ओइ आंगन नोत खाय जाय लगलैक रम्भा तऽ जिद करऽ लगलैक- ''छोड़ू नोंत-फोंत । बैसू ने हमरा लग ।''

रम्भा बुझौलकै- ''जाय दिअऽ । लोक की कहत ? जे कहबाक अछि से कहू ने ! हे लिअऽ हम बैसि गेलहुँ, कहू ने की कहबाक अछि ?'' सचिन चुप भऽ गेलैक । की कहबाक छलैक से तऽ ओकरो बूझल नहि छलै ।

रम्भा उठैत कहलकै– तऽ जाउ हम ?

सचिन चुप्पे रहलैक । रम्भा अपने कहलकै– बस्स गेलहुँ आ अयलहुँ । कनियो देरी नहि हैत । आबिकऽ सुनब अहाँक गप्प ?

बड़ देरी भऽ गेलैक । गप्प कहबा लेल क्यो बचबे नहि कयलैक । ओही अंगनामे छल तऽ गर्द मचलैक । दौड़लि आयल । ताबत दुनियाँ उनटि गेल छलैक । बेहोशे पड़लि छलि अंगनामे तऽ क्यो चूड़ी फोड़ि देलकै ।

एहि घर-आँगनमे आब नहि रहल जयतैक । माय ठीके कहैत छथिन । बाबा विश्वनाथक शरणमे चलबाक चाही, वैह उद्धार करताह ।

आशा चौधराइन तैयार छलीह । भास्कर बाट रोकने छलनि । किरण लेल कोनो व्यवस्था करबाक छलनि से जायसँ पूर्व अनायासे भऽ गेलैक ।

सुधा अयलैक ओइ दिन कनैत-कलपैत । बेटा सेहो छलैक संगमे । एतेकटा काज-तिहार भेलैक, कहिओ ने अयलैक, ने अपने, ने बेटे । नोतो खाय ने अयलैक ।

ओहि दिन कर जोड़िकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक– ''हम बड़ लज्जित छी अपन स्वामीक करनीपर बौआ ! एतेक कयलियनि अहाँ, तकर बदला एहन देलनि ?''

भास्कर स्नेहसँ कहलकै– ''जाय दिऔ भौजी ओइ गप्पकेँ । नहि जानि के कयलक ई सभ ! बिन देखने ककरापर सन्देह करियौक हम ? इएह हेबाक छलैक ।

सुधा जोरसँ कहलकै– ''हम जनै छी बौआ ! ई आन ककरो काज नहि छैक । वैह कयने छथि ई काण्ड आ हत्या । भगवान निसाफ करथिन हुनकर । हमरा सभकेँ तऽ जिविते मारिकऽ निपत्ता भेल छथि । आब तऽ घुरबो मस्किल छनि । पुलिस पछोड़ धयने हेतनि । अङनोमे आयल छलनि । अहाँ तऽ अइ दुनियाक लोके नै छी बौआ, कोनो देवदूत छी ! एतबा भेलोपर बचा देलियनि । किछु ने कहलियैक पुलिस दरोगाकेँ । मुदा सभ तऽ अहीँ सन लोक नहि अछि बौआ ! पुलिसकेँ कहलकै । आरो कहतैक । पकड़ल जेताह तऽ फाँसी हेतनि । नहि पकड़यताह तऽ रेन-वने पड़ायल फिरताह । बाप अछैत बेटा टूगर जकाँ बिलटि जयतनि, भूखे मरि जयतनि ।''

भास्कर ओकरा सान्त्वना देलकै– '' एना नहि बाजू भौजी ! किछु ने हेतैक ब्रह्माकेँ । हम कोनो केस नहि कयने छियैक । अनका कहलासँ की हेतैक ? झोंकमे किम्हरो पड़ा गेल अछि, अबस्स घुरत । अपन करनीपर पछतायत, घुरत आ प्रायश्चित्त करत । तावत हमरालोकनि छी । सरबन टूगर नहि हैत । आइएसँ रहू एतहि अहाँ । माय-भौजी काशी जाय चाहैत छथि । किरण एकसर पड़ि जयतीह । अहाँ संग रहबनि तऽ बल भेटतनि । अखन मोनो किछु दोसर रंगक छनि ।

सुधाकेँ जेना विश्वासे नहि भेलैक- ''ई की कहैत छी बौआ ! अहाँ अंगनामे हमरा आश्रय भेटत ? एक बेर सहारा देलहुँ तँ घरे सुड्डाह भऽ गेल । एतेक दया नहि देखाउ हमरापर । सहल नै जायत हमरासँ ।''

भास्कर ओकरा बुझबैत कहलकै– कोनो दया नहि भौजी, ककरोपर दया नहि । ई तऽ आपसी स्वार्थक व्यवस्था भेल । अहूँक काज चलत आ हमरो काज चलि जायत । राजा आ सरबन संगे स्कूल जायत, जेना हम आ ब्रह्मा जाइत रही कहियो । की रे सरबन, जयबैं ने आब स्कूल ?

छौंड़बा मूड़ी डोला देलकै । सुधा ओहिना इतस्ततःमे छलि ? एतेक लेल तैयार नहि छल ओ । आँखिमे नोर आबि गेलैक । टघरऽ लगलैक । बहुत दिनसँ

कानलि नहि छल । पड़ाइयो गेलैक ब्रह्मा तऽ कानलि नहि छल । एक तरहेँ ओइ दिन लेल तैयारे भऽ गेल छल । जहिआ माय मुइलैक आ ओकरा डाहिकऽ ओ घुरलैक कटिहारीसँ, तहिएसँ जनैत छलि सुधा जे एहन किछु हेतैक आ जल्दी हेतैक । ब्रह्माकेँ रोकबाक कोनो उपाय नहि छलैक । जतबा दिन उतरी पहिरने रहैक, दलानपर संच-मंच बैसल रहलैक, मुदा आँखिमे सदिकाल कोनो धधरा लपलपाइत रहलैक । केश-दाढ़ी-मोंछ कटि गेलैक तऽ मुँह किछु कम्म डेराओन लागऽ लगलैक, मुदा आँखि ओहिना धहधह जरैत ।

काजक बादो, एकसरि नहि छोड़ैक सुधा । भरि-भरि राति लपटल रहैक, नेहोरा करैक, विनती करैक, अपन सप्पत दैक, सरबनक सप्पत दैक । मानि जाइ ब्रह्मा, संग-संग कानहो लगैक, मुदा नोर खसितो आँखिमे धधरा ओहिना लपलपाइत रहैक । सुधा बूझि गेल छलैक जे किछु अबस्स घटतैक– भयावह, अमंगलकारी ।

ओइ राति अट्टहास करैत आयल छलैक- ''फूकि देलियै चौधरीक हवेली सुधा ! झोंकि देलियै ओहीमे दुनू बाप-बेटाकेँ ! भागि नहि सकत । दुनूकेँ पहिने नीक जकाँ बान्हि देलियै घरेमे । मायक बदला लऽ लेलियै । खाली अहाँ लेल चिन्ता रहि गेल । नहि जानि की हैत अहाँ आ सरबनक । हमरा क्षमा कऽ देब सुधा अहाँ । आर कोनो उपाये नहि छल ।

उपाय भास्कर देखा देलकै, तैयो सुधाकेँ संशय छलैक– ''अहाँ मानि गेलहुँ बौआ ! मुदा अहाँक माय, भौजी आ कनियो लोकनि स्वीकार करतीह हमरा एहि घरमे ? घृणासँ लतियाकऽ बाहर नहि कऽ देतीह ?''

आशा चौधराइन अयलथिन । रम्भो अयलैक । किरणो अयलैक । सभ एक्के ठाम जमा भऽ गेलैक । आशा चौधराइन कहलथिन– अहाँ कोनो लाज वा हीनता अनुभव नहि करब सरबनक माय ! अहाँ कोनो पाप वा अपराध नहि कयने छी । जे कयलक अछि, से भोगत । भगवान न्याय करथिन । हमरो लोकनि तऽ भगवानेक शरणमे जा रहल छी । आँगन सुन्न रहत । छोटकी कनियाँ एकसरि रहतीह । असक्क छथि । अहाँ रहबनि तऽ संगतुरियो हेबनि आ काजो-ताजमे मदति हेतनि । चल आउ आइएसँ, कोनो संकोच नहि करू । हमरा लोकनि काल्हि भोरे चल जायब । अहीं लेल थम्हल छी ।

सुधा झट झुकिकऽ पैर छूबि लेलकनि । रम्भाकेँ गोड़ लगलकै– आशीर्वाद देथु ई लोकनि, जे हिनके सभ सन मोन उदार आ पवित्र रहय । कहियो कोनो छोट बात नहि आबय मोनमे ।

आ सरबनक हाथ पकड़ि कनैत आङनसँ चल गेलि !

गामेमे दिन बितऽ लगलैक ।

एक तरहे निर्णय लऽ लेने छल भास्कर जे आब आगू नहि पढ़त, गामेमे रहत, अपन खेत-पथारमे काज करत ।

झंझट लगले शुरू भऽ गेलैक । माय-भौजी जखन काशी जाय लगलैक, देवानजियो जिद्द धऽ लेलथिन- "हमरो छुट्टी दिअऽ । गामे जाकऽ रहब... धीया-पुता सभ हरदम टोकैत रहैत छथि जे छोड़ू नोकरी ।"

भास्कर रोकि लेलकनि- "अहाँ कोनो नोकरी करै छी देवानजी जे छोड़ब ? अहाँ तऽ गार्जियन छी हमर । हमरा किछु बूझल-सूझल अछि ? सभटा अहीं देखब ।

आशा चौधराइन सेहो रोकि देलथिन- "भास्कर ठीक कहैत अछि देवानजी ! अहाँ किछु दिन रहियौ । सभ क्यो एके बेर चल जयबैक तऽ अबूह लगतैक भास्करकेँ । सभटा समझा-बुझा दिऔ...."

माय-भौजीक संगे नहि जा सकल भास्कर । संगे गेलैक खबास ।

जायमे मुदा देरी भेलैक । देवानजी कहलथिन- "ओना कोना चल जयबै मलिकाइन अहाँ ? सभटा हिसाब-किताब ठीक करऽ पड़तैक । बैंकसँ अहींक नामसँ रुपैया निकलतैक ।"

किछु दिन रुकि गेलीह । हुनकर जाइते आरो नोकर-चाकर सभ बिदा भऽ गेलैक । सभकेँ कहलकै भास्कर— हमरा एतेक नौकर-चाकरक काज नहि अछि, मुदा ई नहि बूझ जे हम काजसँ हटा रहल छिऔक । जकरा इच्छा होउ, जतबा दिन इच्छा होउ, रहि सकैत छैं ।

रहि गेलैक मात्र रेमनी । एकमात्र खबासिनी । सभकेँ जयबाकाल देवानजीसँ बन्दोबस्त करा यथेष्ट टाका देलकै आ हाथ जोड़ि कहलकै— तोँ लोकनि जे हमर परिवारक सेवा कयलैं, तकर प्रतिदान नहि भऽ सकैत छैक, हमरा दिससँ तुच्छ भेंट बूझि लऽ जाइत जो... ।

सभ गेलैक तऽ जरल सुन्न आँगन एकदम खाली भऽ गेलैक । जरलाहा लकड़ीक धरनि आ छाउर-कोइला हँटा देल गेलैक । आधा ढहल देबालकेँ खसाकऽ सभटा ईंटा एक ठाम जमा कऽ देल गेलैक— उतरबारी कोठावला घराड़ीपर । पुबरिया आ दक्षिणबरिया घराड़ी एकदम साफ आ चिक्कन बना देल गेलैक । श्राद्धमे अही दूनू घराड़ी आ बड़का आँगनमे बैसिकऽ ब्राह्मण सभ खयलकै । दक्षिणबरिया घराड़ीक पछबरिया कोनपर एकटा एकचारी खसाकऽ भनसाघरक बन्दोबस्त भेल छैक । अन्न-पानि सभ जरिए गेलैक । भोजक जे सामान अयलैक से बंगलीक दूनू कोठलीमे रहलैक । अखनहु ओतहि छैक सभ चीज ।

ठकना रहि गेलैक । महीस आ गाय दूनू वैह चरबै छैक । पछबरिया घरक पाछाँमे एकचारी खसा टाटसँ घेरि एकटा घर बना देल गेल छैक— मालजाल लेल । सभपर एक-एक जोड़ा बड्द फराक छलैक आ फराक-फराक जिरातियो छलैक । सभकेँ चिन्हा दलथिन देवानजी । सभकेँ चिन्हितो छलैक भास्कर ।

खेत-पथारक उपजा आबऽ लगलैक तऽ एकटा कोठली आर जोड़ऽ पड़लैक, पछबरिये घरमे, उत्तर दिससँ । वैह भड़ार बनि गेलैक । आँगनकेँ ठीक-ठाक कऽ देलकै आ उतरबरिया घराड़ीपर ईंटाक विशाल टालसँ हँटि कऽ पैघ-पैघ बखारी बना देल गेलैक ।

भास्करकेँ सभटा अजीब सन लगैक । फूसक छोट-छीन घरमे रहैत छल, मुदा अन्न-पानिक टाल लागल छलैक । हाथ-पैर हिलेबौक काज नहि पड़ैत छैक । सभटा अपने जुटि जाइत छैक ।

देवानजी मुदा सन्तुष्ट नहि छलथिन । सभटा कागज-पत्तर जरि गेल छलैक- भरनावला सभक कागज, केवालावला कागज । देवानजी केवालावला सभक नकल-कौपी बनबा लेने छलथिन बहुत रास, मुदा भरना आ सूदिक कागज नहि बनल छलनि । ओ चाहैत छलथिन जे सभपर जोर दऽ दोसर कागज पर लिखा लेल जाइ । हुनकर खातामे टीपल छलनि सभटा ।

भास्करकेँ नीक नहि लगलैक ई सभ । कहलकनि- छोड़ू देवानजी, जे जरि गेलैक से जरि गेलैक । सूदिवलासँ मूलसँ बेसी सूदि भेटिए गेल हैत । जे बन्हक छलैक से जरि गेलैक । आब आर कतेक लेबैक ओकरा सभसँ ?

खबरि आगि जकाँ पसरि गेलैक । जकर-जकर भरना छलैक, सभ अपनेसँ अयलैक । कबूल कयलकै आ आशीर्वाद दऽ गेलैक । जयजयकार कऽ

गेलैक । देवानजी लोहछि गेलथिन– एना तऽ सभ चौपट भऽ जायत । लूटि लेत सभटा लोक ।

सैह भेलैक । देयादे सभ लूट शुरू कऽ देलथिन । जनिकर आरिमे जतऽ जमीन छलनि, जोति लेलथिन । देवानजी बड़ जोर देलथिन तऽ भास्कर अनिच्छापूर्वक गेल । उनटे वैह लोकनि उपराग सुना देलथिन– तोहर छऽ तऽ कागज देखाबह । तोहर बाप जबर्दस्ती हथिया लेने छलथुन हमर जमीन । कागज देखि लैह ।

भास्कर घुरि आयल । बेशी घमर्थन करब बेकार लगलैक । देवानजी हताश आ रुष्ट भऽ गेलथिन– ''एना तऽ नहि चलत बाउ ! अपना आँखिए सभटा एना नष्ट होइत नहि देखि सकब हम । हमरा छुट्टी दिअऽ । अपन अधिकारकेँ एना नाजायज दवाबसँ छोड़ि देब, गलत लोकक हाथमे छोड़ि देब कोनो उदारता नहि भेल, ई तऽ कायरता भेल । लोक तऽ जान दैत अछि जमीन लेल । जमीन माय थिक– ओकरा अनकर हाथे छोड़ि देब अपराध छैक ।

बूढ़ देवानजीक भावना भास्कर बुझैत छलनि । किछु नहि कहलकनि । मोनमे भेलैक जे पुछनि जे धरती माय थिक तऽ ओइपर लोकक स्वामित्व कोना भऽ जाइत छैक ? सभ तऽ ओकर सन्तान भेलैक । ओकर स्नेह,....ओकर उपजा सभकेँ भेटऽक चाहिऐक ।

जल्दिए ओकरा बुझबामे आबि गेलैक जे देवानजिए ठीक कहि रहल छथिन । ओकर उदारता आ मानवताकेँ लोक कायरता बूझि लेने छलैक । जन-बनिहार तकमे कनफुसकी होबऽ लगलैक– 'मालिक तऽ एकदम सुधंग हइ ...जकरे जे मोन होइ हइ ठकि लै हइ...

किरणो कहि देलकै ई बात । ओहो सुनने छलैक ककरो मुहेँ । भास्कर अधलाह नहि मानलकै, सुनिकऽ हँसि देलकै । बाबी मोन पड़लैक...कठरी बाबाजीक खिस्सा मोन पड़लैक । सभ कठरी बाबाजीकेँ लतमारा बाबाजी बनौने रहैत छलैक, मुदा चोरकेँ ओकरे द्वारे नग्र छोड़िकऽ पड़ाय पड़लैक ।

राजा आ सरबनकेँ गुरुजी लग लऽ गेलैक । नाम लिखा गुरुजीकेँ कहलकनि– ''हमरे बेरबला गप्प नहि करबैक गुरुजी ! ब्रह्मा बेसी तेज छल हमरासँ, तैयो सभदिन सेकेण्ड रहि जाय । सरबनकेँ देखबै । राजा आ सरबनमे जे बेशी तेज निकलय, तकरे फर्स्ट होबऽ देबैक, खाली बाप-पुरखाक नामपर नहि ।''

गुरुजी हँसलथिन– हम तऽ तोरो बेरमे न्याये कयने छलिअऽ । ब्रह्मा तेज छल, मुदा तोरासँ बेशी नहि ।

भास्कर ठकनाक पाछाँ पड़ि गेलैक— गेनमाकेँ स्कूल पठबहिक ।

ठकना गिड़गिड़ाय लगलैक— इस्कूल जाकऽ की करतैक मालिक ? दू गो लूरि सिखतैक तऽ अपन पेट भरतैक ।

भास्कर ओकरा बुझौलकै— ''कांज कोनो करबामे हर्ज नहि छैक । मुदा ज्ञान आवश्यक छैक, विद्या आवश्यक छैक । गेनमाकेँ पढ़ऽ दहिक । खाली भेट भरि लेलासँ मनुष्य-जन्मक सार्थकता नहि होइत छैक । पेट तऽ माल-जाल, कीड़ा-मकोड़ा सभ भरि लैत अछि ।

ठकना किछु ने बुझलकै ओकर बात । भास्कर जिद धऽ लेलकै— तों चिन्ता नहि कर । जतबा ओ कमाकऽ दैत छौक, ततबा हमहीं दऽ देबौक तोरा । तोरा की दरमाहा भेटैत छौक ?

ठकनाकेँ अजीब सन लगलैक— मालिककेँ दरमाहा नहि बूझल हनि । सवा बीघा खेत भेटल हय ओजहमे, ओकरे उपजा भेल दरमाहा । हवेलीमे दुनू साँझ खेनाइ आ सँझुका पनपिआइ । फाटल-पुरान नूआ-वस्त्र । सुकरातीमे नव कपड़ा...

भास्करकेँ आश्चर्य भेलैक— ''कोनो दरमाहा नहि छौक तोरा ? मात्र सवा बीघा खेतक उपजा ! खेत हमरे नाम ! पहिने ई खेत तोरा बापकेँ भेटल छलौक ओजहमे....''

–''हँ मालिक !'' –ठकना चकित छलैक ।

''आ तोहर बाद गेनमाकेँ भेटतैक वैह जमीन ओजहमे ? पुश्त-पुश्तैन खटैत रहि जयबैं, महींस चरैत रहि जयबैं मुदा जमीन हमरे सभक रहत । तोँ उपजा खयबैं, एक्को पाइ दरमाहा नहि भेटतौक ।''

ठकना अवाक् । की कहि रहल छथिन मालिक ! कोनो ओकरे संग एना छैक ? सभ दरवारसँ तऽ अहिना भेटैत छैक चरबाहकेँ । मालिक सत्ते सुधंग छथिन । बेशी पढ़ि-लिखिकऽ माथ फिरि गेल छनि ।

भास्कर नहिए मानलकै । गेनमाकेँ स्कूल पठबऽ लगलैक जबर्दस्ती । सिलेट पेंसिल आ किताब कीनि देलकै । ओजहक जमीनक अतिरिक्त पचास टाका मास दरमाहा बान्हि देलकै । देबानजी माथा पीटिकऽ रहि गेलथिन ।

देयादबाद सभ मुदा चुप्प नहि रहलैक । सभ आबिकऽ दवाब देबऽ लगलैक– ई तऽ सभटा नियम-कानून बिगाड़ि रहल छह तोँ । किछुओ

करबासँ पहिने सभसँ विंचारि लेबाक चाही । एना तऽ गाममे रहब मस्किल भऽ जयतैक लोकक ।

भास्करकेँ ई आक्षेप सहन नहि भेलैक । कहलकनि– जहिआ हमर जमीन अहाँ लोकनि बिन पुछने जोति लेने रही, तहिआ कहाँ गेल छल ई विचार ? खेतमे हर लऽ जैबासँ पूर्व एक बेर पूछि लितहुँ ! हम अपन चरबाहकेँ कतेक दरमाहा देबै से हमरा लोकसँ पूछऽ पड़त ?

ओहो लोकनि बिगड़ि उठलथिन– अबस्स पूछऽ पड़त । ई सौंसे समाजक प्रश्न छैक ।

भास्कर कने आर तीव्रतासँ कहलकनि– की छैक सामाजिक प्रश्न ? हम पचास टाका मास बेशी दऽ देलियैक से, की अहाँ लोकनि एक युगसँ बिन-दरमाहाक खटबैत आयल छियैक से ?

पित्ती लोकनि नरम भऽ गेलथिन— ''देखऽ, ई किताबी बात छैक । व्यवहारिकताक तोरा ज्ञान नहि छऽ । तेँ जन-बनिहार चरवाह-नोकर सभ ठकैत रहैत छऽ । अइ सभमे हमर सभक बात मानह । भैया केहन जाबिर छलाह एहि सभमे । कोनो जन-बनिहारक कल्ला अलगैत छलैक ?

–आबो सैह चाहैत छी अहाँ लोकनि ? —भास्कर व्यंग्यसँ पुछलकै– अहाँ लोकनि जे दयापूर्वक दऽ दियैक, ताहीसँ सन्तुष्ट भऽ जाय सभ ? कहिओ कल्ला नै अलगाबै ?

ओ लोकनि सगर्व कहलथिन— ''मजाल छैक जे कल्ला अलगाओत ! तोरे सन-सन लोकक बहसौलापर ओकर सभक मोन बढ़ैत छैक, कल्ला अलगैत छैक ।''

भास्कर उदास जकाँ कहलकनि— से करैत तऽ बाते कोन छलैक ! ओ सभ तऽ आइयो नहि अलगबैत अछि कल्ला । सभटा अहीं लोकनिक कृपापर जीबैत रहैत अछि ।

लोहछिकऽ चल गेलथिन ओसभ– ''तऽ तों सिखा दहक कल्ला अलगौनाइ । मुदा कहि दैत छिअऽ, मस्किल भऽ जयतह गाममे रहनाइ । आखिर समाजक बन्हेजो तऽ एकटा चीज छैक !''

भास्करपर हुनका लोकनिक धमकीक कोनो असरि नहि भेलैक । डरो नहि

भेलैक । जे करबाक होनि से करथुन । मुदा ओहो जे करऽ चाहैत छल, ताहूमे अनेक बाधा छलैक । किरण बेर-बेर टोकऽ लगलैक– 'ई की सभ करऽ लगलिऐक अहाँ ? भरि गामक लोक रुष्ट भेल अछि । जनक बोनि दास टाका दैत छिऐक । एतुक्का रेट छलैक तीन टाका रोज ।'

भास्कर ओकरा बुझबैत कहलकै– ''अहाँकेँ नहि बूझल अछि किरण ! रेट छलैक अढ़ाइ सेर अन्न । से तीन टाकामे कोन अन्न अढ़ाइ सेर हेतैक ? दसो टाकामे हेतैक– ताहूमे सन्देह अछि ।''

देबानजी बेर-बेर चलि जयबाक धमकी देबऽ लगलथिन । ओकर मायकेँ चिट्ठी लिखलथिन जे सभटा जमीन बेदखल भेल जाइए, सभटा जन-बनिहार बेकहल भेल जा रहल अछि । भास्कर बौआ सभक मोन बढ़ा रहल छथिन । अपने जल्दी घुरि आउ ।

माय नहि घुरलैक । देबानजियोकेँ नहि जाय देलकनि ओ । मुदा किरणक दबाब बढ़ऽ लगलैक । ओ ओकरा पटने जाय लेल, फेरसँ पढ़ऽ-लिखऽ लेल ज़ोर देबऽ लगलैक– ई काज अहाँक बसक नहि अछि ।

भास्कर हँसी कयलकै– ''हम कहने रही ने किरण जे गामेपर बेसी रहि जायब तऽ अहीं कहब जे बड़ भेल दुलार-मलार ! आब जाउ, पढ़ू-लिखू गऽ । मुदा अखन तऽ अहाँ कहबो करब तऽ हम नहि जायब । भरि गाम अनेरो विरोधमे प्रचार कऽ रहल अछि । अइसँ डेराकऽ तऽ हम हर्गिज नहि जायब । आ अखन तऽ अहाँकेँ छोड़िकऽ किन्हु ने जा सकब । ने माय अछि, ने बाबी छथि अइ बेर ।

किरण चुप्प भऽ गेलैक । बेर नजदीक आबि रहल छैक । डर ओकरो मनमे छैक । एकटा सुधा छैक, सभ बातक ध्यान रखैत छैक । ओकरे बलपर थोड़े-बहुत निश्चिन्त रहैत अछि ।

भास्करकेँ मुदा चैन नहि छैक । गाममे रहब जेना एकटा पैघ चुनौती छैक ओकरा लेल । एकबेर गेल रहय खतबेटोली नेनपनमे, ठकनाक मायकेँ टाका दऽ आयल रहैक ठकनाक इलाज लेल तऽ बाबूजी बिगड़िकऽ गामेसँ निकालि देने छलथिन । दरभंगाक स्कूलमे पठा देने रहथिन । आइ ओकरा बिगड़ऽवला क्यो नहि छैक । ओ जाइत अछि बेर-बेर ओइ टोलसभपर– खतबेटोली, धनुकटोली, मलहटोली, दुसधटोली, आ चमरटोली दिस । ओकरा सभ लग बैसैत अछि, गप्प करैत अछि, मुदा जेना सन्तोष नहि होइत छैक । अपन अभाव, अपन गरीबीकेँ बेसी लोक अपन

नियति मानि बैसल छैक । भास्करक बात ओ सभ नहि बुझैत छैक । बकर-बकर सुनैत छैक । कतेको गोटे तऽ मुँहेपर कहि दैत छैक- 'अहाँ तऽ मालिक ई सभ कहिकऽ चल जायब आ हमरा औरकेँ ई सभ काम बन्द कऽ देताह, खेत-पथारमे रोपनी-कटनी बन्द कऽ देताह । धीया-पुता भुक्खे मरि जायत ।'

भास्कर घुरि अबैत अछि । लगैत छैक जेना ओ ओकरा सभकेँ नहि बुझा सकतैक । मोनमे प्रश्न उठैत छैक– किएक ने बुझा सकतैक ? अपन हितक गप्प.... ओकर उत्थानक गप्प ओ सभ किएक नहि बुझैत छैक ? किएक ने सुनऽ चाहैत छैक ?

कौखन भास्करकेँ लगैत छैक जे ओकरा सभक मोनमे आगि छैक, मुदा ओकरे सभ घुसपैठिया बुझैत छैक । अपन वर्गक लोक नहि बुझैत छैक । भास्करक पुरखा जमीन्दार छलैक, अखनो गाममे सभसँ बेशी जमीन ओकरे छैक । ओ मजदूरक उचित मजूरी आ बोनिक गप्प करैत छैक... तऽ ओकर चल अयलापर ओ सभ हँसैत छैक– बेसी नहि पढ़ना-लिखना चाही । देखहिक ने ऐ मालिककेँ.... किदन सभ गप्प करै हइ !''

ब्रह्मो ओकरा नहि बुझलकै । जन-बनिहार सेहो फैदा उठा लैत छैक आ ओकरा बकलेल-बताह बुझैत छैक । ओकर बात सुनऽ लेल, ओकर संग देबऽ लेल तैयार नहि छैक । ओकर सहानुभूति आ चिन्ताकेँ एकटा भारी छद्म बुझैत छैक— सर्वहाराकेँ परतारबाक लेल, शोषण करबा लेल नव सामन्ती छद्म । राजा भेष बदलिकऽ आयल छौक....होशियार रह ।

ओकरा बड़ दु:ख होइत छैक । ओ जे करऽ चाहैत अछि तकर बाट चारू कातसँ अवरुद्ध लगैत छैक । संग देबा लेल जेना क्यो तैयार नहि छैक । ने अपने घरमे...ने गाममे । मुदा ओ हारि मानऽ नहि चाहैत अछि । एही लेल ओ पढ़ाइ छोड़ने अछि, केरियरक चिन्ता छोड़ने अछि । एही गाममे एकटा सामन्तक सन्तान जकाँ नहि, एकटा खेतिहार-मजदूर जकाँ रहऽ चाहैत अछि । लोक ओकरा नकली आ पाखण्डी बुझैत छैक तऽ बुझौक । एकदिन सभकेँ ओकर बात मानऽ पड़तैक ।

भास्कर नित्य एहन किछु चेष्टा करैत अछि जे ओकरे सभक सन लागय... शुद्ध एकटा ग्रामीण खेतिहर सन । खेतपर जाइत अछि...जन-बनिहारक संग अपनो लागि जाइत अछि...दिन भरि ओकर सभक संग रहैत अछि, तैयो जेना दूरी रहिए जाइत छैक । ओ सभ ओकरा अपन वर्गक मानऽ लेल तैयारे नहि होइत छैक । ओकरा सभक लेल ओ राजा छैक...पुरना मालिकक बेटा छैक...आर किछु नहि ।

ठकना तऽ कहिए देलकै- ''नै नीम्मन लगै हय मालिक ! अहाँ हमरा सभ जोरे सभठाम जाइ छी, सभ काज करे लगै छी, हँसै है । कोन कमी है अहाँ के ! बैठू घर पर...हमरा आर के बोलू, देवानजी छथि...जिरतिया सभ हय । अपने कैलऽ हरान होइ छी मालिक ! हमरा पचास टा टाका बढ़ा देली, ताहू जरे सभ गारी दैत है हमरा बहु-बेटी लगाकऽ । दस रुपया रोज दै छियै, तैयो जन नै अबै हय...कहै हय तोहर मालिक तऽ पलबरिश नै करथुन हमरा आर के...अपन मालिक जे दै हय, सभ दिन देत तकरे ओइ जौं काम करबै...

भास्कर निराश होबऽ लगैत अछि । लगैत छैक जेना किछुओ संभव नहि छैक । जमींदारी गेलैक, मुदा मालिक छैके आइयो । एकरा सभ लेल मालिक सभ दिन रहतैक– महेन्द्र चौधरी नहि तऽ उपेन्द्र चौधरी...ओहो नहि तऽ क्यो आर...जे एकरा बोनि देतैक, कम्म वा बेशी, सभक बेगार बनि जयतैक ई...एकर मालिक सभ दिन जीतैक । एकरा सभक नवका पीढ़ी सेहो ओहने छैक । हमरे बतारी तऽ अछि ठकना, मुदा कोनो चेतना नहि छैक । आइयो ककरो दयापर जीबि लेबा लेल आ जीबिकऽ प्रसन्न रहबा लेल तैयार अछि । जे नबका छौंड़ा सभमे कने चिनगी छैक, से शहरक बाट धरैत छैक...रिक्शा चलबैत छैक— होटलमे काज करैत छैक— मिलमे काज करैत छैक आ अपन गाममे ओहो कोनो मालिके जकाँ अबैत अछि— चिक्कन पहिरन देखा...बढ़ियाँ खा-पी अपने लोककेँ देखबैत छैक जे हम तोरासँ फराक भऽ गेल छी...हम नै छी तोहर वर्गक लोक ।

भास्कर तऽ सभ दिन अपनाकेँ ओही वर्गक लोक बुझैत रहल अछि । जकरा तकलीफ छै, जे पीड़ित अछि, प्रताड़ित अछि, जकरा अभाव आ समस्या छैक, भास्कर सदिखन अपनाकेँ ओकरे लोक बुझैत आयल अछि...ओही वर्गक लोक बुझैत आयल अछि । नेनपनेसँ ओकरे कल्याण, ओकरे उत्कर्षक बारेमे सोचैत आयल अछि । एकटा अवसर भेटल छैक तऽ ओकरा क्यो स्वीकार नहि कऽ रहल छैक । वैह लोक सभ...ओकरा नकली बहुरुपिया आ बकलेल-बताह बुझैत छैक । भास्करकेँ लगैत छैक जेना पराजय स्वीकार करऽ पड़तैक— अपना लेल कोनो दोसरे बाट ताकऽ पड़तैक ।

बेर-बेर बाबी मोन पड़ैत छैक । कठरी बाबाजीक खिस्सा मोन पड़ैत छैक । कठरी बाबाजी सभ दिन चोरबाक बाटपर बैसि जाइत छलैक— के थिका, कहाँ जाइ छऽ– हमरा नहि कहै छऽ । भास्करकेँ बाटसँ हँटऽ पड़तैक ? बाबीक खिस्सा झूठ भऽ जयतैक ?

आशाक एकटा क्षीण रेखा उगैत छैक । उपेन्द्र चौधरीक आंगनमे सभ काज बन्द कऽ दैत छनि । अपन चरवाहकें अनेरो मारलथिन– ओकर बहु-बेटीकें गारि पढ़लथिन । भोरे बहिष्कार कऽ देलकनि । ने चरवाह अयलनि...ने पनिभरनी । जन अढ़बऽ गेलाह तऽ क्यो नहि अयलनि । हरबाह बैसि रहलनि । तामसे गरजैत उपेन्द्र चौधरी भास्कर लग अयलाह— देखि लैह अपन करनीक फल ! आइ हमरा संग भेल अछि, काल्हि ककरो आनक संग हेतैक । भरि गामक संग हेतैक । तोहूँ नहि बचबह । उठा लहक आर माथपर..."

भास्कर हुनका किछु जवाब नहि देलकनि मुदा ओकरा प्रसन्नता भेलैक । कतहु तऽ कोनो सुगबुगी छैक । एकदम मुइल नहि छैक सभटा । जान छैक तऽ हेतैक– अबस्से हेतैक...! लोक जगतैक....अपन अधिकार आ मेहनतिक मूल्य बुझतैक।

मुखियाजी ओकरे बुझबऽ पहुँचि गेलथिन । गामक मुखिया बजरंगी चौधरी। कहऽ लगलथिन– ई जे भेल अछि से नीक नहि भेल । आगू नहि बढ़य तें अपने लग आयल छी । एना तऽ ई सभ एकदम बेहाथ भऽ जायत । हमरालोकनि अपने महीस चरायब, अपने धान रोपब-काटब...अपने जल भरब आ घर-आँगन नीपब ?

हुनकर चिन्ता देखि भास्करकें मोनेमोन हँसी लागि गेलैक । अपन काज अपने करऽ पड़तनि ताहि लेल एतेक चिन्ता ? ओकरे सभक वोटसँ मुखिया बनैत छथि । गाममे ब्राह्मण वोट बीसे प्रतिशत छनि । बाँकी वैह सभ । मुदा ओकरा कोनो अधिकार दियैबाक बदला, ओकरा लेल सोचबाक बदला मुखियाजी अपना वर्ग... अपना देयाद-वाद लेल सोचि रहल छथि, अपना लेल सोचि रहल छथि ।

ओ कहलकनि— से किएक हेतैक ? ई चिन्ता निरर्थक मुखियाजी ! मजदूर अबस्स भेटतैक–खेतमे काजो करतैक । खाली ओकरा उचित मजूरी भेटैक । ओकरो लोक मनुक्खे बुझैक, माल-जाल जकाँ मारै-पीटै नहि...विवशताक लाभ उठा इज्जति नहि खरीदैक ओकर क्यो । ई तऽ कोनो अधलाह बात नहि सिखबैत छिऐक ओकरा सभकें हम ? हम कहाँ किछु सिखा सकलियैक ? हमर बात तऽ ओ सभ सुनहे नहि चाहैत अछि । ओ तऽ हमरा अहींक लोक बुझैत अछि, अहींक वर्गक प्रतिनिधि ।

मुखियाजी उत्साहित भऽ कहलथिन–"सैह तऽ हमहूँ कहैत छी, एकरा सभ लेल लाख करबैक, अहाँक नहि हैत । बेरपर अबस्से धोखा देत । पलटाक तीन पुश्तसँ परिवरिश कयलथिन उपेन्द्र चौधरी आ से हुनकेपर उनटि गेलनि । अपन जाति-भाइ– कहू जे सभ लोककें जुटा लेलक । बन्हेज कऽ देलकै । उपकारक बेस बदला देलकनि !''

भास्कर हँसिकऽ कहलकनि– कथीक उपकार ? मजूरीक आधा बोनि देलथिन तकर उपकार ? बेगारीमे पुश्त-पुश्तैनसँ खटबौलथिन तकर उपकार ? काल्हि जे अकारण माल-जाल जकाँ बेंतसँ देह फोड़ि देलथिन– तकर उपकार ? ई उपकार तऽ हम सभ सबदिनसँ करैत आयल छियै मुखियाजी ! कम सँ कम अहाँ तऽ एहन गप्प नहि कहियौक, ओकरो सभक प्रतिनिधि छियैक अहाँ ।

मुखियाजी ओकरा दिस दयासँ देखैत बुझनुक जकाँ हँसलथिन– नेन्ना छी अखन अहाँ । छुच्छ आदर्शवादपर मोहित छी । व्यावहारिक ज्ञान दुइयो पाइक नहि अछि । ओकर सभक प्रतिनिधि छियैक हम ? जहिआ ओकर सभक प्रतिनिधि होमऽ लगतैक, हम हैब मुखिया गामक ? ओकरे क्यो भाइ-भातिज हेतैक । हम तऽ अहाँ सभक प्रतिनिधि छी । अहाँ सन-सन सम्पन्न लोक, जकर ओ आदमी अछि, जन-रैयत अछि । अहाँक माध्यमसँ ओकर भोट हमरा भेटि जाइत अछि । ओकरा सभकें बूथपर जाय के दैत छैक ? ओकर मालिक तँ अहाँ छिऐ । अहाँ प्रसन्न तऽ ओकर सभक वोट तऽ हमर अछिए । तें कहैत छी, अपने पैरमे कुरहरि नहि मारू । स्थितिकें नियंत्रणसँ बाहर जायसँ पहिने सम्हरि जाउ । अइ बेर हम सम्हारि दैत छियनि । हमर लोक ओकरो सभमे अछि। समझा-बुझाकऽ काजपर लगबा दैत छियनि । मुदा आगू फेर नहि होअय एना...से देखब अहाँक हाथमे अछि ।

मुखियाजी चल गेलथिन । भास्करकें पुछबाक इच्छा भेलैक जे— हमरा हाथमे अछि की उपेन्द्र चौधरी सन-सन लोकक हाथमे छनि ? वैह सभ जन्म दैत छथिन एहन-एहन घटनाक । हुनका किएक ने बुझबैक छियनि ?

सत्ते सभटा ठीकठाक करबा देलथिन मुखियाजी । भास्करक मोन हल्लुक भेलैक । ओ अनेरो चिन्तित छल । आगि छैक...तरे-तर सुनगि रहल छैक...अबस्से भड़कि उठतैक एक दिन– समय आबि रहल छैक ।

हल्लुक मोनसँ, उत्साहित मोनसँ अंगना दिस बिदा होमऽ चाहैत छल भास्कर । तखने डाकपिउन अयलैक । तार दऽ गेलैक । तार देखि चिन्ता जकाँ भऽ उठलैक । फाड़िकऽ पढ़लक– कांग्रेचुलेसन्स क्वालिफाइड इन रिटन टेस्ट ।

आरतीक चिट्ठी सेहो अयलैक । तारक पाँचम दिन ।

–तार भेटि गेल हैत । अगिला मास बीस तारीखकें इन्टरव्यू अछि । होस्टलक पतासँ आयल अहाँक चिट्ठी आ कागत-पत्तर सेहो पठा रहल छी । अहाँ बिगड़ल हैब । अहाँक चिट्ठीक लगले कोनो उत्तर नहि देलहुँ । मासक मास बीति

गेल तैयो कोनो उत्तर देल पार नहि लागल । कोनो आन कारणसँ नहि । अहाँ एकटा बात लिखने रही पत्रमे । ओकर उत्तर देबामे हमरा कोनो लज्जा नहि छल, ने अछि । मुदा अहाँ एकटा अनुरोध कयने रही, पप्पाक सिफारिशपर । जे बात हम अहाँकेँ नहि कहि सकलहुँ, से पप्पा अहाँकेँ कहलनि, बेटीक लाज अपनापर ओढ़ि लेलनि। पप्पाक बड़ दुलारू बेटी छियनि हम । मुदा ई हमर लज्जा नहि छल, ने अछि । ई तऽ हमर मोनक सम्पत्ति छल— कौशलसँ राखल सम्पत्ति । पप्पा एकरा बाँटि देलनि। एकसर हमर मोनमे रहैत आ भरि जन्म हमही एकरा आस्ते-आस्ते भोगितहुँ तऽ बड़ नीक रहैत । पप्पा से नहि होमऽ देलनि । तकर कोनो तामस वा रोष नहि अछि— ने हुनकापर, ने अपनापर । अहूँ तामस नहि कयने हैब से विश्वास अछि । मोनक बातपर अपन जोर नहि रहैत छैक— हमहूँ चेष्टा कऽ हारि गेलहुँ ।

अहाँ जोर दऽ लिखलहुँ । अहाँ अपन मान राखऽ चाहैत छी । अहाँक मान रखबाक लेल हमरा एकटा संगी ताकऽ कहलहुँ अछि । ताकऽमे एतेक मास बीति गेल, चिट्ठियो ने लिखि सकलौं । आइ चिट्ठी लिखि देलहुँ, संगीक तलाश जारी अछि । भेटत तऽ अबस्से अहाँक मान रहि जायत । पप्पा बड़ आशा लऽकऽ अहाँसँ अनुरोध कयने हेताह, हम जनैत छी ।

हमर बाट अहाँ निष्कंटक कऽ देल, तदर्थ धन्यवाद । टौप अबस्से कऽ जायब अइ बेर । पप्पाक कमसँ कम एकटा इच्छापूर्ण हेतनि । ओ सभ क्लासमे टौप कयने छलाह, बेटी कमसँ कम अन्तोमे एकटा टौप पाबि जेतनि । मुदा अहाँ कोनो गलत धारणामे नहि रहब । पढ़बाक मामिलामे कोनो तरफदारी नहि कयने रही हम। सभ दिन इच्छा छल अहाँकेँ हरैबाक । पूर नहि भेल । अइ बेर अबस्से पूर होइत, मुदा डरे पड़ा गेलहुँ अहाँ ।

इन्टरव्यू अबस्स दऽ आयब । ज्वाइन करब वा नहि करब अपन हाथमे छैक । इन्टरव्यू लेल पटने बाटे जायब दिल्ली तऽ भेंट हैबे करत—"

पटने बाटे गेल भास्कर । चिट्ठी भेटिते जोर देबऽ लगलैक किरण—अबस्स दऽ आउ इन्टरव्यू । अहाँकेँ ओतेक इच्छा रहय, अवसर किएक छोड़ब ?

आरतीक चिट्ठी पढ़िकऽ किरणक आँखिमे किछु चमकि उठलैक । स्पष्ट देखलकै भास्कर । कहलकै एतबे—"नहि जानि की सब लिखने छथि अहाँक बुद्धिमती संगी ! एको अक्षर बुझबामे नहि आयल । हमरा लोकनि तऽ मूर्ख छी ।"

मूर्ख नहि छलैक किरण, मुदा आरतीक बेरमे नहि जानि किएक मूर्ख जकाँ

करऽ लगैत छैक । भास्करकेँ तामस होइत छैक । जहिआ आरतीकेँ चिट्ठी लिखने रहैक, तहियो किरणक शंकालु प्रश्नपर भास्करकेँ तामस भेल रहैक । आइयो किरणक आँखिमे शंकालु चमक देखलै भास्कर, तामसो भेलैक, मुदा किछु कहलकै नहि ।

बात मुदा मानि लेलकै । इन्टरव्यू देबऽ गेल । पटने बाटे गेल । भोरे-भोर पहुँचल छल । सोझे सिनहा साहबक बंगलापर गेल छल । देखिकऽ आरती अकचका गेलैक— अहाँ बहुत बदलि गेल छी भास्कर !

ओ हँसिकऽ कहलकै— कारी भऽ गेल छी...हाथ-पैर रुच्छ भऽ गेल अछि, सैह ने ! खेतिहर छी हम आरती...सभ दिन खेतमे काज करैत छी ।

किरण गम्भीर छलैक— से नहि भस्कर— गोर-कारीक बात नहि । रंग जरूर मद्धिम भऽ गेल अछि अहाँक । मुदा हम दोसर परिवर्तनक गप्प कऽ रहल छी । यू आर नो मोर ऐ बेबी फादर— यू हैव मेच्योर्ड ।

भास्कर हँसिकऽ कहलकैक— ठीके तऽ अछि । बाप मुइलापर लोक बालिग भैये जाइत अछि । जा धरि बाप जीबैत रहैत छैक, कतबो वयस भेलापर लोक नाबालिगे रहैत अछि ! हमर बाबूजी स्वर्गीय भऽ गेलाह । हमरो बालिग भऽ गेनाइ जरूरी अछि ।

आरती नहि हँसलैक । ओ भास्करक आँखि देखि रहल छलैक जाहिमे एकटा तीव्र बौद्धिक जिज्ञासा सदिखन झलकैत रहैत छलैक । बालसुलभ जिज्ञासामे क्रमशः बौद्धिकता आबि गेल छलैक, मुदा ओकर सरलता आ सहजता ओहिना कायम छलैक । मुदा किछुए मासमे आँखिक ओइ जिज्ञासामे जेना एकटा बुझनुक सन प्रगाढ़ता आबि गेल छैक !

भास्कर टोकलकै—"एना की देखै छी ?"

आरती निस्संकोच कहलकै— "अहाँकेँ । अहीं जकाँ हमरो आब सौन्दर्य दिस ध्यान जाय लागल अछि, खाली मोनेक सुन्दरता नहि देखैत छिऐक आब ! आइ लगै अछि जे एतेक दिन किएक ने ध्यान गेल जे अहाँ एतेक सुन्दर छी...गाममे रहिकऽ तऽ आर सुन्दर भऽ गेल छी ।"

तावत सिनहा साहब बाहर आबि गेलथिन । आरती पुरने परिचित दुष्टताक संग कहलकै—"अखन जे कहलहुँ से बात अहाँ कहि सकैत छियनि...अहाँ जकाँ हमर हाथसँ प्याली नहि खसत ।" फेर हँसऽ लगलैक—"खसत कोना ? हाथमे तऽ अछिए नहि ।"

सिनहा साहब टोकलथिन–"देखैत देरी शैतानी शुरू । हमरा संगे तऽ तेना शान्त गम्भीर बनल रहत जेना हमर नानी होअय ! पहिने भीतर तऽ आबऽ दहिक आरती...!"

–"सौरी पप्पा ! भीतर आउ भास्कर !"

लग पहुँचि गोड़ लगलकनि सिनहा साहबकेँ । स्नेहसँ पीठ थपथपा देलथिन ओ–"वेल डन भास्कर ! कांग्रेचुलेसन्स ।" अहाँ इन्टरभ्यूमे अवश्य सफल हैब ।

सभ क्यो भीतर ड्राइंग रूममे आबि गेलाह ।

सिनहा साहब कहलथिन–'ई नीक काज कयलहुँ भास्कर ! हमरा तऽ डर छल जे कही इन्टरव्यू छोड़ि ने दी अहाँ । रिजल्ट भेटितहि आरतीकेँ कहलिऐक लिखि दहिक भास्करकेँ, इन्टरव्यू अबस्स देथि ।

भास्कर असमंजसमे छल जेना ! कहलकनि–किछुओ निर्णय नहि कयने छी अखन । गाममे रहऽ चाहैत छी, मुदा लोक नहि चाहैत अछि जे हम रही । जकरा लेल रहऽ चाहैत छी, ओहो ने चाहैत अछि । तैयो लगैत अछि जे हमर आवश्यकता छैक ओतऽ...हमरा गाममे रहबाक चाही ।

सिनहा साहब बुझबैत कहलथिन–"नीक लोकक आवश्यकता कतऽ नहि छैक ? प्रशासनमे नहि छैक ? आइ प्रशासन ततेक भ्रष्ट भऽ गेल अछि, जे नीक लोकक ओहूमे टिकब मस्किल छैक । तैयो लोक टिकल अछि । जे समझौता कऽ लेने अछि सेहो आ जे नहि कयने अछि सेहो । नीक लोक टिकतैक नहि, औतैक नहि, तऽ प्रशासनक की हाल हेतैक ? योग्य प्रशासकक संग, ईमानदार आ कर्त्तव्यनिष्ठ प्रशासकक आवश्यकता छैक । एकसँ एक योग्य प्रशासक अबैत छैक, मुदा परिस्थिति, सरकारी दलक दवाब आ राजनीति ओकरा भ्रष्ट कऽ दैत छैक । जकरा भ्रष्ट नहि कऽ पबैत छैक, तकरा टिकऽ नहि दैत छैक । ई समस्या सभ ठाम... सभ काजमे लागू छैक भास्कर ! अहाँ अपन संघर्ष, अपन लड़ाइ कतहु जारी राखि सकैत छी । जरूरी नहि छैक जे गामेसँ शुरू कयल जाय । जे जतऽ अछि, ततहिसँ ई लड़ाइ शुरू करय । तखने कल्याण संभव छैक । कोना-कानी निर्बल स्वर उठैत रहतैक तऽ एहिना दबैत रहतैक । भ्रष्टाचार आ अनीति-अनाचारक दल काफी मजबूत छैक । ओकरासँ लोहा लेब एतेक आसान नहि छैक आब । एक भास्कर नहि, बहुत रास भास्करकेँ जन्म लेबय पड़तैक, सभ स्तरपर संघर्ष जारी करऽ पड़तैक ।

भास्कर अवाक् सुनैत रहि गेल । सिनहा साहबक नव रूप देखि रहल छल ओ । सिनहा साहब जेना कतहु भसिया गेलथिन–"हमहूँ बहुत आदर्श, बहुत स्वप्न लऽ आयल रही भास्कर ! सभक नीक ...सभक उत्कर्ष चाहैत रही । गरीबी देखल छल...अनीति-अन्यायक स्वयम् शिकार भऽ चुकल रही । अपन मेहनतिक बलपर जिनगीमे किछु हासिल कयने रही । मुदा आब लगैत अछि किछुओ हासिल नहि भेल । सभटा अनीति-अनाचारक हिस्सा बनिकऽ रहि गेल छी...ओही तंत्रक एकटा स्तंभ बनल छी । तमशगीरो तऽ ओतबे उत्तरदायी होइत अछि कोनो भ्रष्टाचारक जतबा भ्रष्टाचार करऽवला । हमरालोकनि वैह तमशगीर छी । स्वयम् नहि करै छी किछु, मुदा जे होइ छैक तकरा बैसल देखैत छी । हम तेँ कहने रही जे अहाँकेँ अहूमे सफल भेलासँ दिक्कति हैत । आइ लगैत अछि अर्थहीन छल हमर ओ बात । दिक्कति कतऽ नहि छैक ? अहाँ अही ठामसँ अपन यात्रा प्रारम्भ करू... शुभास्ते सन्तु पन्थानः ...।

भास्कर गोड़ लागिकऽ ओही राति बिदा भेल छल– घरमे श्रेष्ठ क्यो नहि रहलाह– बाप-भाइ दूनू संगे जरि मरलाह । माय काशीमे बैसल अछि– संन्यासिनी भऽ गेल । अपने श्रेष्ठ छी...सत्पुरुष छी...अपने आशीर्वाद दिअ हमरा जे सही बाट चुनि सकी आ सभदिन ओइ बाटपर चलबाक साहस बनल रहय ।

आरती छोड़ऽ आयल रहैक ट्रेनमे । प्लेटफार्मपर गुमसुम ठाढ़ि रहलैक । ओ सीटपर बैसियो गेल, हरियर बत्ती भऽ गेलैक, तैयो ओकर खिड़की लग ठाढ़ि रहलैक । भास्करे कहलकै– किछु कहब नहि आरती ?

आरती कहलकै– कहबा लेल की रहि गेल अछि आब ?

गाड़ी खुजलैक तऽ हाथ हिलबैत आरतीक आँखिमे नोर छलैक । भास्कर नहि देखि सकलैक ।

गामक स्टेशन एकदम सुन्न छलैक । पहलेजेघाटमे सूति रहल छल । दरभंगासँ गाड़ी खुजलैक तऽ निन्न टूटल रहैक । बाट भरि मुर्दा जकाँ सूतल रहल । पटने बाटे घुरल छल । साँझखन पहुँचल रहय पटना । तीन घंटा समय

छलैक । आरतीसँ भेंट कऽ अयलैक । सिनहा साहब नहि छलथिन । कतहु दौरापर गेल छलथिन ।

आरती इन्टरव्यूक गप्प खोदि-खोदि कऽ पुछैत रहलैक । भास्कर जानि-बूझि कऽ अनठायल-पनठायल उत्तर दैत रहलैक जे खूब बढ़ियाँ नहि भेल । बहुत रास जवाब नहि देलियैक ।

आरती कनिओ हताश नहि भेलैक-"सभ प्रश्नक जबाव के दैत छैक ? अहाँकेँ अबस्से हैत ।"

भास्करक अपनो मोनमे आशा छलैक । इन्टरव्यू नीक भेल छलैक । आयोगक सभ सदस्यक आकृति संतुष्ट सन लगलैक । ओ अपन उत्तरसँ पूर्ण सन्तुष्ट छल । यदि चुनि लेल जयतैक तऽ ओकरा ओतेक आश्चर्य नहि हेतैक ।

आश्चर्य ओकरा आरतीपर भऽ रहल छलैक । अइ बेर एक्को बेर बेबी फादर नहि कहि रहल छलैक । हरदम गुमसुम आ उदास ।

भास्कर टोकलकै-'हमरासँ कोनो अपराध भेल आरती ?'

आरती आश्चर्यसँ मुँह देखऽ लगलैक । भास्कर कहलकै-'दुइए-तीन घंटा लेल छी आयल । ने एक्को बेर बेबी फादर कहलहुँ, ने एक्को बेर हँसलहुँ । अहाँ तऽ एकदम अनचिन्हार सन लगैत छी ।'

आरती हँसबाक चेष्टा करैत कहलकै- अनचिन्हार तऽ भैये जायब भास्कर, दुइए-तीन घण्टा लेल आयल छी अहाँ । आइ जायब तऽ फेर नहि जानि कहिआ भेंट हैत । चाहे हाकिम बनब...कहाँ-कहाँ पोस्टिंग हैत, नै तऽ गामपर अपन खेती देखब । आरती तऽ दुनू स्थितिमे अनचिन्हार भैये जयतीह ।

भास्कर दृढ़तापूर्वक कहलकै- किन्हु ने आरती ! अनचिन्हार अहाँ भैये ने सकैत छी । अहाँ तऽ सभ दिन स्मरण रहब- नितान्त आत्मीय आ अप्पन रहब ।

आरतीक आँखिमे कृतज्ञता छलैक आ भास्करक आँखिमे तरलता । नहि जानि किएक आरतीक अनचिन्हार भऽ जयबाक गप्प ओकरा भीतर तक मथि देने छलैक आ बहुत रास नोर बहरेबा लेल जबर्दस्ती कऽ रहल छलैक । ओकरा सभकेँ सप्रयास भीतरेमे नुकबैत कहलकै भास्कर-"हम एम.ए. अबस्स करब आरती ! परीक्षाक बाद अपन नोट्स पठबा देब । एहि युनिभरसिटीमे तऽ नहि, आन ठामसँ प्राइवेट दऽ देबै-एम.ए. कहुना पास कैये जायब । एकटा पुच्छड़ लागि जायत ।"

भास्करक हँसीमे आरती संग नहि देलकै । ओकर आँखिक तरलता भरिसक देखि लेने छलैक आरती । ओकर आँखिक कृतज्ञ-भाव घनीभूत भऽ गेलैक ।

ओकरा चुप्प देखि भास्कर टोकलकै-"कोन सोचमे पड़ि गेलहुँ ! आब हमरासँ कोन डर ? जहिआ छल, तहिओ अपन नोट हमरा दऽ दैत छलहुँ । एक्कोटा लेक्चर छुटए नहि दैत छलहुँ । आब तऽ उदारतापूर्वक दान दिअ । कोनो खतरा नहि अछि हमरासँ ।"

आरती हँसलैक पहिल बेर...। एतेक कालमे पहिल बेर । समय कम छैक । भास्करकेँ जयबाक छैक । आरती कहलकै-"मँगनीमे मान दऽ रहल छी अहाँ । अहाँकेँ हमर नोटक काज पड़त ? अहाँ तऽ आइयो, अही युनिभर्सिटीसँ अही बैचमे टौप कऽ सकैत छी । ई बात हमरे नहि, युनिभरसिटीक सभ टीचर आ पढ़ऽवला विद्यार्थीकेँ बूझल छैक ।''

भास्करकेँ चुप्प देखि फेर हँसैत कहलकै- चिन्ता नहि करू । नोट्स अबस्स भेटि जायत ।

बिदा करबाकाल हँसबाक ई चेष्टा जारी रखने छलैक । जेटीपर ठाढ़ भास्करक आँखिमे नोरे-नोर छलैक ।

गामक स्टेशनक प्लैटफार्मपर ठाढ़ भास्करकेँ ई सभटा मोन पड़ि रहल छलैक । प्लेटफार्म सुन्न छलैक, एक्कोटा लोक नहि छलैक, तकर चिन्ता ओकरा नहि भेलैक, ओ तऽ किछु आर सोचैत ठाढ़ रहि गेल छल ।

स्टेशनमास्टरक कोठली सेहो भीतरसँ बन्द छलैक । गाड़ी जाइत देरी एक टा प्राणी स्टेशनपर नहि बँचलैक । पानक दोकान, चाहक दोकान, सभ बन्द छलैक । पैटमैन सेहो बड़ा बाबूक संग कोठलीक भीतरे बन्द छलैक ।

अपन सूटकेस उठा भास्कर गाम दिस बिदा भेल । बाटो एकदम सुन्न छलैक । सभटा लोक एना कोना बिला गेलैक ? खेत-पथार, दोकान-दरबज्जा सभ सुन्न किएक छलैक ? आब भास्करकेँ चिन्ता होबऽ लगलैक । ककरोसँ किछु पुछितैक से लोके ने अभरि रहल छलैक कोनो ।

पहिले गाम छलैक रानीहाट । एकदम भम्ह पड़ैत । दोकान उजड़ल, जराओल । घरक कोठली-दरबज्जा बन्द । भास्करकेँ कनी-कनी अर्थ लागऽ लगलैक । अखबारमे पढ़ने रहैक । जमशेदपुरमे भारी दंगा भेल छलैक । बहुत लोक मारल गेल छलैक । मुदा ओकर इलाकामे कोनो प्रतिक्रिया हेतैक से ओ नहि सोचने

छल । मुदा आब सोचबाक अवसर नहि छलैक । बीच रानीहाटमे पहुँचि गेल छल ओ । पाछाँ घुरबा आ आगू बढ़ब दूनू एक्के रंग छलैक । रानीहाटक बाद कोनो खतरा नहि...सभ अपने बस्ती छैक ।

बस्ती तऽ रानियोहाट अपने छैक । एतुक्का लोक अपन छैक...समाज अपन छैक । ओकरा जुम्मन चाचाक पछिला बेर कहल गेल गप्प मोन पड़लैक । तहिया ओकरा अविश्वास भेल रहैक । आइ अपने आँखिसँ देखि रहल अछि ।

भास्कर डेराइत नहि अछि, आगू बढ़ल जाइत अछि । किछुए दूर जा पबैत अछि । एकटा घरक दरबज्जा खुजैत छैक आ भास्करकेँ भीतर खीचि लैत छैक दूटा हाथ । भीतर अबितहिँ भास्कर अकचका गेल । सौंसे घर भरल छलैक । लाठी-गड़ाँस आ मनुखसँ । चिन्हार-अनचिन्हार लोक सब गजल । एक गोटे भास्करकेँ कहलकै—"कतऽ बढ़ल जाइत रही ओम्हर ? खाली वैह सभ अछि ओइ दिस । किछु बूझल नहि अछि ?"

भास्कर अवाक् छल । ई की सभ भऽ रहल छलैक ? ओकरा गाम लग, ओकर अपन लोकक बीच ई कोन खेल पसरल छैक ? एतबे कहलकै— हमरा जाय दिअऽ, किछु ने हैत हमरा । सभ क्यो चीन्हैत अछि ।

ओ आदमी रोकलकै—'सभ चीन्हैत अछि, तैं तँ बेशी खतरा अछि । अनचिन्हार रहितहुँ तँ धोखा-धोखीमे बचिकऽ निकलियो जैतहुँ । चुपचाप बैसल रहू अइ घरमे । बाट ठीक हेतैक तखन जायब ।'

ओ भोरक उतरल दुपहरिया होमऽ लगलैक । भास्कर ओही घरमे बन्द रहल । गोड़ पचीसेक लोक छलैक । सभ कठमस्त सभ । शिकारक ताकमे रहैक सभ । अभरि गेलैक भास्कर । ओकर सभक मोन छोट भऽ गेलैक । एक गोटे बजबो कयलैक— एक्कोटा दढ़ियल बहराये ने रहल छौ ।

भास्करकेँ घृणा होमऽ लगलैक ओकर सभक गप्प सुनि-सुनि । झूठ-सच किदन-किदन बाजि रहल छलैक ओ सभ । भास्कर कतबो जिद कयलकै, बाहर जाय नै देलकै । कहलकै—तीनटा हिन्दूकेँ मारि चुकल भोरसँ । आब चारिम बनऽ लेल अहाँकेँ नहि जाय देब । चारिक बदला चालीस । हमहूँ सभ छोड़बनि नै । एक-एकटाकेँ गामसँ उजाड़ि देबनि । काटि-काटि कऽ आधा कऽ देबनि ।

भास्कर छटपटाकऽ रहि गेल । मुदा बेशी छटपटा उठलैक किरण । भोरे पैटमैन आ बड़ा बाबू देखने रहैक उतरैत । से खबरि नहि जानि कोना रामचन्द्रपुर

हवेली पहुँचि गेलैक । किरणकेँ कहलकै लोक । मुदा भास्कर नहि पहुँचलैक । किरण बताहि होमऽ लागलि । देवानजीकेँ कहलकनि— ठकनाकेँ कहलकै । सभतरि ताकि-हेरि घुरि अयलैक । किरणकेँ कोनो होश नहि रहलैक । अपने बाटपर बहरा गेलि । सुधा पाछाँ-पाछाँ दौड़लैक— एहन अवस्थामे अहाँ कोना बहरायब ? चलू, घर चलू ! लोक सभ ताकिए रहल छनि ।

लोकक तकबापर विश्वास नहि भेलैक किरणकेँ । आशंकासँ करेजा ततेक जोर धड़कि रहल छलैक जेना छाती फाटि जयतैक ! कहलकै—"अहाँ खाली राजाकेँ पकड़ि कऽ रखबै । हमरा जाय दिअऽ । राजा ने बहराय किम्हरो ।

सड़कपर आबि दौड़ऽ लगलैक किरण । देवानजी किछु दूर संग अयलथिन । बूढ़ लोक थाकि कऽ बैसि गेलथिन । ठकना, सुबधा आ जे भेटलनि सभकेँ पाछाँ दौड़ा देलथिन । आरो-आरो लोक जे एना जाइत देखलकै किरणकेँ, संग धऽ लेलकै । सभक हाथमे लाठी-भाला सेहो छलैक । किरण से सभ किछु नहि देखलकै । ओ तऽ खाली बताहि जकाँ दौड़ि रहल छलि । देह हल्लुक छलैक, मुदा पैर भारी छलैक । पूर समय । पेट काफी पैघ सन निकलल छलैक । चलबोमे असुविधा छलैक । दौड़बामे तऽ आरो कष्ट । मुदा ओकर ध्यान कथूपर नहि छलैक । ओकर सर-संसारे उजड़ि रहल छलैक । बताहि जकाँ दौड़ि रहल छलैक । बेस पैघ सन हसेड़ी तैयार भऽ गेलैक ओकर पाछाँ ।

उठैत-बैसैत, कुहरैत-हकमैत रानीहाट तक पहुँचि गेल किरण । लोक सभ पकड़ैत-पकड़ैत रहि गेलैक मुदा ओ नहि मानलकै । कानऽ लगैक—"जाय दिअऽ हमरा । हमर दुनियाँ उजड़ि गेल तऽ हमहीं जीबिकऽ की करब ?" लोक सब छोड़ि दैक । जाहि कनियाँक आइ धरि गामक लोक मुँह नहि देखने रहैक, बोलो नहि सुनने छलैक, से आइ सभक सामनेसँ दौड़ल बताहि बनलि जा रहलि छलैक आ ओकरा रोकि लेबाक सामर्थ्य ककरोमे नहि छलैक ।

अपने सामर्थ्य जवाब दऽ गेलैक । हाट लग पहुँचैत-पहुँचैत सड़कपर ओंघरा गेलि । खसिकऽ छटपटाय लागलि । कथुक होश नहि रहलैक । रहि-रहिकऽ तीव्र चीत्कार उठऽ लगलैक ।

ओ चीत्कार ओहू कोठलीमे पहुँचलैक, जाहिमे भास्कर बन्द छल । कोनो आशंकासँ चौकन्ना होइत दरबज्जा खोलि बाहर देखलक । सड़कपर बड़ भीड़ छलैक— बड़का हसेडी आ कोनो स्त्रीक तीव्र आर्त्तनाद पसरि रहल छलैक । सड़कपर बलात्कार कऽ देलकै भरिसक...।

बीसो-पचीसो नुकायल लोक लाठी-गँड़ास लऽ दौड़ल । भारी काण्ड भऽ जइतैक । मुदा किछु लोक चीन्हि लेलकै आ हाथ रोकि देलकै । आपसेमे भिड़न्त बचि गेलैक ।

पाछाँ-पाछाँ भास्कर बहरायल । ओ सोझे घर जाय चाहैत छल । बड़ विलम्ब भऽ चुकल छलैक । मुदा स्त्रीक आर्त्तनाद ओकर पैरकेँ जबर्दस्ती ओम्हरे घीचि लेलकै । कहुना भीड़ हँटबैत आगू पहुँचल । किरणकेँ ओना अर्धनग्न सड़कपर छटपटाइत...चीत्कार करैत देखि हाथ-पैर सुन्न भऽ गेलैक ।

आपसमे सभ गलगुल कऽ रहल छलैक-"हिनका दर्द शुरू भऽ गेल छनि । आब कोन उपाय हेतनि ? जल्दी किछु करै जैयनु । छटपटा कऽ मरि जयतीह एना तऽ ।"

भास्करकेँ देखि ठकना-सुबधा दौड़लैक-"नहि मानलथिन कनियाँ । सभ रोकैत-रोकैत हारि गेलनि । क्यो कहि देलकनि जे अहाँ बलू भोरका गाड़ीसँ अयलियैक आ निपत्ता छियैक । एहिना उधबा उठबै छैक । कहै छै बीसटा खून भऽ गेल । बीसटा चुहियो ने मरल छैक कतहु ।" मलिकाइनक हालति देखि ठकना तामसे प्रचण्ड भऽ गेल छल । ओ हतबुद्धि ठाढ़ छल । मालिककेँ देखि किछु भरोस भेलैक । मुदा भास्करक अपने बुद्धि हेरा गेल छलैक । किछु फुरिए ने रहल छैक।

तावत एकटा दरबज्जा खुजलैक आ एकटा दाढ़ीवला दौड़लैक ओम्हर । भास्कर डेरा गेल । ओ बीसो-पचीसो भोरेसँ दाढ़ीबलाक ताकमे छल । कहीं काण्ड ने कऽ दैक कोनो ! मुदा ओ दौड़ले चल अयलैक-"ले चलू...हिनका एना सड़कपर कैलै छोड़ने छिअनि ? जल्दी करू । लगाउ हाथ सभ क्यो ।"

उठा-पुठाकऽ ओ दाढ़ीवला किरणकेँ घरक भीतर लऽ गेलैक । चौखटिएपर ओकर घरक स्त्रिगण सभ डेरायल-सहमल ठाढ़ छलैक । किरणकेँ देखितहि ओकरा सभ मिलि भीतर लऽ गेलैक ।

जुम्मन अपने घरसँ बहरैल-"की बात छै हजूर...अहाँ अइ भीड़मे...अहाँ कैसे फँसि गेली... के छथऽ ई दाइ ?...

भास्कर कृतज्ञ भावसँ कहलकै- अहींक पुतहु छथि जुम्मान काका !

तावत नेनाक कानब भीतरसँ सुनाइ पड़ऽ लगलैक । भास्करक चेहरापर प्रसन्नता आबि गेलैक । भीड़ोक लोकक चेहरापर प्रसन्नता आबि गेलैक ।

जुम्मन बाहर अयलैक आ दुनू हाथ ऊपर उठा कहलकै-'खोदा मियाँकेँ रहमत छनि हजूर ! रानीहाटमे फेनो रानी माँ आयल छथि । बेटी भेल अछि हजूर... निकालू बुढ़बा जुम्मनकेँ बख्शीश...।

भास्करक आँखिमे नोर आबि गेलैक । जुम्मन मियाँ देखलकै । ओकरो आँखिमे किछु झलफला उठलैक-"मिल गेल हजूर...बक्शीश हमरा मिल गेल । खोदा बिटिया आ हमर रानी माँकेँ खूब लम्बा उमिर देतैक...किच्छो अहू बुढ़बाक उमिर से काटि के...।

भीड़ पतराय लागल छलैक । जुम्मन ओकरा सभक बीच आबि कहलकै-जा, आइ सभ । खोदा मियाँ बड़ा अलबेला खेलाड़ छथ । देखऽ ने...आगिमे फूल खिला देलनि...रानीहाटकेँ रानी माँ घुरि अयली आइ...सभ से कह दई जे अपन दरबज्जा-खिड़की खोलि के स्वागत करतनि ।

बुढ़बा जुम्मन दिस ककरो ताकल नहि गेलैक । लाजे सभ घुरि गेल अपन-अपन घर दिस । ठकना आ सुबधा पालकी लाबऽ गाम दिस दौड़ल । कनियाँकेँ लऽ जेतनि । भास्कर आँखिमे नोर लेने ठाढ़ छल ।

भरि गाम भास्करकेँ बिदा करऽ जमा भेल छलैक । क्यो ने बाँचल छलैक- छोटका-बड़का सभ ।

पहिने अपने देयाद सभ अयलथिन-"हमरा लोकनिक बातकेँ मोनमे नहि रखिहऽ भास्कर ! हमरालोकनि छी संकुचित विचारक...अपन घर-गृहस्थीमे ओझरायल लोक । तोरा सन उच्च विचार हमरा लोकनिक कोना हैत ? बिसरि जैहऽ सभटा । अपन परिवार...अपन घरक लोक सभकेँ देखिहऽ...कतेक गौरवक बात अछि हमरा लोकनिक लेल ।

भास्करकेँ हिनकालोकनिक स्वार्थी गप्प ओइ दिन ओतेक अधलाह नहि लागल रहैक, जतेक आइ लगलैक । शुद्ध मोनसँ आशीर्वाद देबऽ नहि आयल छलथिन क्यो । अप्पन सिफारिश शुरू कऽ देने छलथिन- अपन घरकेँ देखिअहक...

भास्करकेँ हँसी लगलैक- अखन ट्रेनिंगो ज्वाइन नहि कयने अछि...आ सिफारिश शुरू भऽ गेलैक ।

गरिबहाक स्नेह ओकरा विगलित कऽ देलकै । सब टोलक बुझनुक लोक सभ अयलैक–"हमर सभक गल्ती-सल्ती क्षमा कऽ देब मालिक ! अहाँक बात नहि कऽ सकली हमरा सभ...साहसे ने हय हमरा सभमे । अहाँक संग चलिती तऽ भाग बदलि जाइत हमरा आरके, मुदा हमरा आरक पयर तऽ बन्हायल अछि । अहाँ कतबो कहली ई बन्हन नै कटल हमरा आर से । नै जानि, आब की होत ।

भास्कर सभकेँ सान्त्वना देलकै, बोल-भरोस देलकै, किछु ने हेतौ भाइ ! तोरा हाथमे ताकति छौक, तोँ अप्पन बन्हन काटि सकै छैं । मोनमे साहसो औतौक । बेशी दूर नै छैक ओ दिन ।

बड़कहबा सभ सेहो अयलैक–"हमरा आर अहाँकेँ बकलेल पागल बुझली मालिक ! अहाँ तऽ भारी विद्यामान हती...एते गो हाकिम बनि गेली...गरिबहो सभकेँ ध्यान रखबैक मालिक...

भास्कर ओकरा सभकेँ स्नेहपूर्वक बिदा कयलकै । मोन कोनादन करऽ लगलैक– मालिक शब्द एकरा सभक जीहसँ सटि गेल छैक । कहिओ छुटतैक की नहि...?

आरतिए लिखने छलैक । लिखऽसँ पहिने तारसँ बधाइ देने छलैक । पत्रमे आग्रहपूर्वक लिखने छलैक–"अहाँ ज्वाइन अबस्स कऽ लेब । कोनो इतस्ततःक काज नहि छैक । अधिकार तऽ नै अछि मुदा तैयो कहै छी जे सप्पत ।"

जयबाक तैयारी करहे पड़लैक । मायकेँ चिट्ठी देलकै । किरण बड़ कमजोर छलैक । तीन मासक भेलैक नेन्ना, मुदा अखनो कमजोरी छैक । शोणित कम छैक देहमे । ओकर स्वास्थ्य एकदम चौपट भऽ गेल छैक । मुदा मोनमे बड़ साहस छैक । जहिए खबरि अयलैक, तहिए हँसिकऽ कहलकै– हमर चिन्ता नहि करू । ठीक छी हम । देखू, केहन भागमन्त बेटी आयल अछि ! पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि देने रही अहाँ । गामक दुनियाँमे घुरि आयल रही । ई फेर एक बेर अहाँकेँ ओइ दुनियाँमे वापस पठा रहल अछि जकरा अहाँ अनुपयुक्त बूझि त्यागि देने रहियैक । हमर बेटीकेँ अइ सौभाग्यसँ वँचित नहि करियौक...हमरे सप्पत ।

किरणक सप्पत । आरतीक सप्पत । दुनूमे ककरो तोड़बाक साहस ओकरा नहि छलैक । जाय तऽ पड़बे करतैक ।

माय अयलैक । भौजी सेहो अयलथिन । बड़ प्रसन्न छलैक माय– हम की जाने गेलियै जे की बनल छह । मुदा जा अबस्स । ओतऽ सभ कहलक जे बेटा बड़का हाकिम भेल छथि ।

मायकेँ ओ कहऽ चाहलकै जे हाकिम बनऽ ओ नहि चाहैत अछि । कहिओ ने चाहलक अछि । ओ तऽ अपन कमाइ...अपन इमानदारीक कमाइसँ घर बना रहऽ चाहैत अछि...रुक्ख-सुक्ख खाकऽ जीवऽ चाहैत अछि । गाममे से संभव नहि छैक । फूसोक घरमे वस्तुक अम्बार रहैत छैक । किछु करऽ चाहैत अछि तऽ लोक करऽ नहि दैत छैक । कतबो लुटबैत अछि...बँटैत अछि–कोनो कमी नहि होइत छैक । बैसिकऽ खयनाइ, पुरखाक अरजल सम्पत्ति खयनाइ ओकरा नीक नहि लगैत छैक । ओइ खेतमे ओ मेहनति करऽ चाहलक, प्रत्येक मजदूरकेँ ओइ खेतक उपजमे हिस्सा देबऽ चाहलक, तऽ गाममे बिरड़ो मचि गेलैक । एतऽ किछु ने करऽ देलकै ओकरा लोक ।

ओ जायत तेँ । देखतैक किछुओ दिन कमसँ कम जे ओतऽ किछु कयल जा सकैत अछि वा नहि ।

माय कहलकै– एतुक्का चिन्ता नहि करऽ तोँ । जा धरि कनियाँ बच्चाकेँ लऽ नै जैबहुन, ताधरि नहि घुरब काशी हमरालोकनि ।

भास्कर कहलकै–"काशी फेर किएक जयबैं माय ? हमरोलोकनि चल जायब–तोँहू दुनू गोटे चलि जयबैं...तखन के रहतौक अइ ठाम ?"

माय कहलकै– अपने देखबऽ आबि-आबिकऽ । तोरे तऽ छऽ सभटा । हमरा लोकनिक मोन लागि गेल अछि विश्वनाथक शरणमे । फेर अइ मायामे घुरि आयल छी । अहीमे नहि लपटा दैह आब । जा धरि तोँ नै छऽ...भार हम्मर । निश्चिन्तसँ जा । तोँ घुरि अयबऽ...तखन तोँ जानह । गाममे नहि रहबऽ क्यो– तऽ इएह ब्रह्माक कनियाँ अछि, एकरे दिअहक सभटा भार । सभ देखतह सुनतह । रक्षा करतह ।

सुधा कानऽ लगलैक– हमरा नहि एतेक मान देथु । हम अभागलि कोन जोगरक छी ! हिनके देल खाइ छी...हिनके दयासँ नेन्ना पढ़ै अछि...अपन शोणितो चढ़ाकऽ हैत तऽ रक्षा करबनि हम । हिनकर सभक भारी कर्ज छनि हमरा ऊपर । एकटा ओ छलाह जे हिनकर सभ-किछु डाहि देलथिन– एकटा ई सभ छथि...

–"नै करू ओकर चर्चा कनियाँ ! ओइ बातकेँ फेर नै दोहराउ अहाँ । सभटा बिसरि गेल छी हम । बाबाक शरणमे बड़ शान्ति अछि । घुरि जायब हुनके शरणमे फेर । नहि दोहरायब फेर किछुओ हमरा सामने...

सुधा डरे चुप्प भऽ गेल । आशा चौधराइनक उत्तेजना आस्ते-आस्ते कमि गेलनि । राजा बाबी लग आबि कहलकनि– अहाँ कहाँ चल गेल रही बाबी ? माय एकटा आर बौआ अनने छैक...एतनीटाकेँ । हमर बहिन हैत, अहाँकेँ के हैत बाबी... ?

बाबी हँसि कऽ पुछलथिन– तोँ हमर के हेबैँ ?

राजा झट उत्तर देलकनि– पोता !

बाबी फेर पुछलथिन– तऽ तोहर बहिन के भेल हमर ?

राजा कने रुकल मुदा कनिए काल ! झट बाजि उठल– पोती !

आ लागल अपन बाबीक हाथ पकड़ि घीचऽ–चलू ने बाबी ! देखब नहि अपन पोतीकेँ ! बड़ सुन्नर छैक । काकी–मौसी चलू ने ! देखबै अहूँ । अहूँसँ बेसी सुन्दर छैक ।

रम्भा हँसलीह । बड़ कम हँसैत छथि आब । कहिआ ने हँसी बिला गेलनि । गुमसुम आ शान्त रहैत छथि हरदम । अपन सासुक संग बाबा विश्वनाथक सेवामे लागल रहैत छथि, मुदा मोन शान्त नहि होइत छनि । सासु नहि बुझैत छथिन ई बात । ओ तऽ बाबामे लीन भऽ गेल छथि ।

कोठलीमे जाकऽ पोतीमे सेहो लीन भऽ गेलीह आशा चौधराइन । रम्मो कोरामे लेलकै । किरणक हालति देखि दुनू अवाक् रहि गेलीह । सुधा कहलकनि– ''हिनके लोकनिक आशीर्वादसँ बाँचि गेलीह, सैह बुझथु । भगवान हमरो लाज बचा लेलनि, बड़का जिम्मेदारी दऽ गेल रहथि ।''

आशा चौधराइनक आँखिमे कृतज्ञता छलनि ।

भास्कर निश्चिन्त मोने ट्रेनिंगपर गेल ।

ब्रह्मा एकदम नकारि देलकै ।

दादाक आँखि रँगि गेलैक । ब्रह्मापर ओकर कोनो असरि नहि भेलैक । ओ अपन निर्णय दऽ चुकल छलैक–आब बस्स । आब नै पार लागत हमरासँ ?

ओ थाकि गेल छल, उबिया गेल छल निरन्तर हत्या आ रक्तपातसँ । ओकर मोनमे प्रश्न ठाढ़ होमऽ लागल छलैक । प्रश्न मना छलैक दादा लग । ओकरा खाली अपन आज्ञाक पालन चाहिऐक–बिना नाकर–नुकुर आ अविलम्ब । से नहि भेल तऽ दादा उग्र भऽ जाइत छलैक, किछुओ कऽदऽ सकैत छलैक । ब्रह्मा जनैत छल ई बात । मुदा नहि डेरायल तैयो । एकदम नकारि देलकै– नै...आब नहि हैत हमरासँ ई अकारण निरन्तर हत्या । अइ उद्देश्यहीन हिंसासँ ऊबि गेल छी हम । हमरा क्षमा करू दादा आब, आर संग नहि दऽ सकब अहाँक ।

बड़ संग देलकै ब्रह्मा । निरन्तर पाँच वर्षसँ संग दऽ रहल छलैक । दादाक आज्ञा ओकरा लेल ईश्वरक आदेश छलैक । आँखि मूनिकऽ मानैत चल गेलैक । पाँच वर्ष धरि मानैत रहलैक ।

एकटा फोटो दैक हाथमे आ कहैक–''नीक जकाँ चीन्हि लिऔ एकरा । हमरा लोकनिक अगिला शिकार आ ई राखू पता । धोखा नहि हैबाक चाही । काल्हि भोरे ।

दादाक हाथसँ रिवाल्वर लऽ लैत छल ब्रह्मा । ओकर नामक संग हत्याक एकटा आर अपराध जुटि जाइत छलैक ।

गामसँ दू–दू टा हत्या कऽ भागल छल ओ । जिविते पलंगक संग बान्हि देने छलैक दुनूकेँ । मुँहपर पट्टी बान्हि देने रहैक आ किरासन छीटि देने रहैक । पहिने बन्हलकै सचिनकेँ । बड़ जोर मारलकै मुदा ब्रह्मापर खून सवार रहैक । महेन्द्रनाथ चौधरी लगले देह–हाथ नेरा देलकै । दुनू घरक दरबज्जा नीक जकाँ बन्द कऽ देलकै । पहिने घरमे सलाइ खड़रिकऽ फेंकि देलकै । फेर दरबज्जामे आगि लगा देलकै...सभटा खिड़कीमे आगि लगा देलकै । खपरैलपर एकटा जरैत ऊक फेंकि देलकै आ खाली पछबरिया कोठामे पड़ाइत–पड़ाइत आगि लगा देलकै । पछुआर दने भगैत काल चरबाह सभ रोकलकै–'के हय... के भागल जाइ हय...ब्रह्मा पड़ाइते रहल...। अपन आँगन गेल । सुधाकेँ कहलकै सभटा आ फेर पड़ायल ।

पड़ाइत–पड़ाइत दिन बितलैक, सप्ताह बितलैक । मासो बीति गेलैक । कतौ चैन नहि भेटलैक । पुलिस शिकारी कुकुर जकाँ पाछाँ पड़ल छलैक । भूखल–पिआसल...थाकल आ ठेहिआयल पड़ाइत ब्रह्मा पटना आबि गेल । दादाक कार्ड छलैक संगमे । बड़ मस्किलसँ पता लगलैक । एकदम खोहमे रहैत छलैक दादा–सेहो भारी पहरापर । पहिने जाये ने दैक क्यो । कार्ड देखौलोपर नहि । दादाकेँ खबरि भेलैक तऽ स्वयम् बजबा लेलकै ।

खूब स्वागत कयलकै । भोजन करौलकै, नव–वस्त्रक इन्तजाम करा देलकै । सूतऽ लेल नीक बिछौन भेटलैक । प्रात भेने सुनलकै ओकर सभटा कथा । सुनिकऽ प्रसन्न भऽ गेलैक–''बड़ नीक काज कयलैं तोँ ।'' अपन मायक अपमानक बदला लेलैं तोँ...हमरा एहने बहादुर आ जिन्दादिल नौजवान सभक काज अछि ।''

ब्रह्मा दीक्षित भऽ गेल । ओकर प्रशिक्षण शुरू भऽ गेलैक । बन्दूक रिवाल्वर बम सब चलौनाइ सिखलक । दादा अपने सभ सिखबैत छलैक ई सभ ।

एक दिन एकटा फोटो देलकै बामा हाथमे आ दहिनामे रिवाल्वर । एकरा

नीक जकाँ चीन्हि ले । तोहर पहिल शिकार । आइए राति काज भऽ जयबाक चाही ।

ब्रह्मा अज्ञाक पालन कयलकै । दादा प्रसन्न भऽ उठलैक–"आइ तोहर नाम क्रान्तिक पोथीमे अग्रिम पन्नामे लिखा गेलौक । नव समाजक निर्माण लेल, एहन–एहन कतेको पाथर हँटबऽ पड़तौक बाटसँ । ढेंग सभ पड़ल भेटतौक बाटमे । ओंघरौने चल ।

ब्रह्मा दनादन ओंघरौने गेल । जे दादा कहलकै–से कयने गेल । कहिओ कोनो प्रश्न नहि, कोनो निषेध नहि, अस्वीकार नहि...। नव समाजक स्वप्नमे लीन छल ब्रह्मा । आर किछु ने देखाइत छलैक ओकरा । खाली दादाक देखाओल शिकार... बस...। ओकर नामे लिखल हत्याक सूची पैघ होइत गेलैक । ओ दादाक आँखिसँ देखैत छल...हुनके दिमागसँ सोचैत छल । अपन सोचबा-बुझबाक अवसरे नहि भेटैक । आज्ञा अबिलम्ब पूर्ण हैबाक चाही ।

आज्ञापलन ब्रह्मा करैत गेल, मुदा आस्ते-आस्ते ओकर मोनमे प्रश्न उठऽ लगलैक । ई उद्देश्यहीन हत्या आखिर ककरा लेल–कथीक लेल ? दादा की चाहैत छैक ? कोन नव समाजक कल्पना छैक ओकर जे एतेक रास निरपराध हत्यापर जीवित छैक ? पहिल बेर दबल स्वरमे शंका उठलैक तऽ डाँटि देलकै दादा– निरपराध हत्या ? के कहैत छौक जे ई सभ दोषी नहि अछि ? सभ एकसँ एक बढ़िकऽ पाखण्डी छौक...समाजद्रोही आ देशद्रोही छौक । एकरा मारलासँ पुण्य होइत छैक ब्रह्मा ! जकर गाममे खून कयने छैं तेहने अपराधी आ पाखण्डी सभ छलौक ई सभ । एकरा मारलासँ बड़ पुण्य भेलौक ।

ब्रह्मा चुप्प लगा गेल । ओइ दिनुका बाद फेर आपत्ति नहि कयलकै । शिकारक संख्या बढ़िते गेलैक । कोनो सेठ...कोनो घूसखोर अफसर...कोनो अत्याचारी... कोनो कारोबारी ।

ओइ दिन एकदम नकारि गेलैक ब्रह्मा । दादाक रंगल आँखि कोनो काज नै कयलकै । ब्रह्मा फैसला कऽ चुकल छल– आब आर नहि...बस्स–आब बहुत भेल ।

ओ फोटो कोनो डाक्टरक छलैक । ब्रह्मा कहलकै– एना किएक दादा ? ई डाक्टर कोना आबि गेल अहाँक लिस्टमे ? ई कथीमे बाधक अछि ? ई तऽ मानवताक सेवा करैत अछि ।

दादा बिगड़ि उठलैक–क्यो ककरो सेवा नहि करैत अछि, खाली अपन सेवा करैत अछि । एकर तिजोरी नोटसँ भरल छैक । एकरामे आ कोनो सेठ-साहुकारमे कोनो अन्तर नहि छैक । दादा क्रोधित भऽ उठलैक–"एना प्रश्न किएक उठि रहल छौक तोरा मोनमे ? हमरापर विश्वास नहि छौक ?

ब्रह्मा झट कहलकै–अविश्वास नै, दादा ! अहाँ अबस्से किछु सोचिकऽ कयने हैब । करैत छी । मुदा हमरा तऽ कोनो बाट सुझाइ नहि पड़ि रहल अछि । ततेक आगाँ बढ़ि आयल छी अपन पुरना बाट छोड़िकऽ जे घुरिकऽ ओइ बाटपर गेनाइयो सम्भव नहि अछि । हमर मदति करू दादा ! ई निरन्तर हत्या आ रक्तपातक खेल बन्द करू आब । बस्स, बहुत भेल । हमरा मुक्त करू । प्राण छटपटा रहल अछि हमर ।

दादाक आँखि रँगि गेलैक । ब्रह्मा तैयो अड़ले रहल । दादा हारि मानि लेलकै–बेस...तऽ जाउ अहाँ । हमरा दिससँ कोनो रोक नहि । मुदा हम जनैत छी...घुरिकऽ अयबे करब अहाँ । अन्यत्र क्यो नहि देत एहन सुरक्षित स्थान आ स्नेह । दादाक दरबज्जा अहाँ लेल सदिखन खूजल रहत ।" ब्रह्मा प्रसन्न भऽ दादाकेँ धन्यवाद देलकै आ जयबाक तैयारी करऽ लागल । किछुए कालमे अपन झोरा-झपटा लऽकऽ विदा भऽ गेल ।

दादा ओकरा जाइत देखलकै आ बुदबुदा उठलैक–'अनफारचुनेट...अपन मृत्युक अपने वरण करऽ जा रहल अछि । एकरा लेल हमरा दुख रहत ।

कनिए कालमे एकटा दोसर युवक अयलैक । दादा कहकै–ब्रह्मा चल गेल। किछु बेशीए बात जानि गेल अछि हमरा सभक । एकर व्यवस्था अहाँक हाथ । अज्ञानक नाश अवश्यम्भावी छैक ।

भोरमे एकटा लाश गंगाक कछेरमे पड़ल छलैक...शहरक एकदम आखिरी छोरपर । पुलिसक गाड़ी उठाकऽ लऽ गेलैक । अस्पताल लऽ गेलैक । पोस्टमार्टम भेलैक । छातीमे गोली लागल छलैक ।

मुइल व्यक्तिक कोनो पता-ठेकाना नहि लगलैक । जरा देबा लेल सरकारी व्यवस्था भेलैक । असहृदय आ अनचिन्हार डोम सभ आधा-छीधा जरा गंगाजीमे भसिया देलकै ।

भास्करो पाँच वर्ष धरि औनाइते रहल...एक ठामसँ दोसर ठाम फेंकाइत रहल, कतहु टिकि नै सकल । जतहि चेष्टा करय...लगैक जे आब किछु कऽ सकत, वर्त्तमान रुग्ण आ भ्रष्ट पद्धतिकेँ बदलि सकत, राताराती बदली भऽ जाइक ।

एस.डी.ओ. आ डी.एम. क बदली टुटपुजिया नेता आ एम.एल.ए., एम.एल.सी. करैत छैक । कर्मिक विभागमे हमला करैत छैक पहिने–'केहन अयोग्य आ नाखरुस

लोककेँ दऽ देलिये हमर सबडिवीजनमे । सभटाकेँ चौपट कऽ देत । मुख्यमंत्रीजीसँ गप्प भऽ गेल...अहाँ कागत बढ़बियौक ।

धौंस लहलैक तऽ लहलैक, ने तऽ कोनो मंत्री वा बेसी चलता-पुर्जा रहल तऽ मुख्यमंत्रीसँ दवाब । एस.डी.ओ., डी.एम., कमिश्नर, विभागीय सचिव सभ घुमैत रहैत छथि...राताराती बदलि जाइत छथि ।

जगह बदलैत-बदलैत भास्कर थाकि जाइत अछि ।

किछुओ होमऽवला नहि लगैत छैक । ओकर एकटा सहयोगी कहलैक एक दिन–सुन, तों नाहक फेरामे पड़ैत छैं । हमरे जकाँ ज्वाइन करैत देरी तीन टा खोली बना ले । जे कोनो फाइल अबैत छौ, अही तीनू खोलीमे बाँटि ले– अखन... अखन नहि...कखनो नहि । जाहि केसमे जोर छैक, पैरबी छैक–तकरा अविलम्ब कर। जाहिमे नहि छैक तकरा किम्हरो फेकि दहिक, तेना फेकहिक जे कहिओ नहि भेटैक । जाहिमे पैरवीकारकेँ पूरा दाम नहि भेटल छैक वा किछु आर अयबाक संभावना छैक, ताहिमे किछु पूछिकऽ घुरा दहिक । मतलब अखन नहि । खिस्से खतम । कहिओ कोनो समस्या नहि हेतौक ।"

ओकर सुझावपर भास्करकेँ हँसी लगैत छैक । मानबाक कोनो प्रश्ने नहि छैक । भास्करक लेल ओहन समझौता असंभव छैक ।

शुरूएसँ संघर्ष भऽ गेलैक । ट्रेनिंग कहुना समाप्त भेलैक । पोस्टिंग भेलैक । किरण आबि गेलैक राजा आ मुन्नीक संग । जुम्मन काकाक रानी माँ पैघ भऽ रहलैक अछि । बाजियो लैत छैक किछु-किछु । राजाक देह घिचा रहल छैक। खूब लम्बा हैतैक बापे जकाँ । किरणोक स्वास्थ्य ठीक भऽ गेल छलैक— लाली घुरि आयल छलैक । एक संग रहबाक योजनासँ सभ अत्यन्त आह्लादित छैक ।

अही घरक कल्पना कयने छल भास्कर । अपन मेहनतिक कमाइ, छोटछीन घर आ छोटछीन परिवार । घर भेटल छैक–पैघे सन घर । भास्करक मोनक अशान्ति ओहिना छैक ।

हवेलीक बाप छलैक ई तऽ ! नौकर चाकर-अर्दली-किरानीक ढेर । कतबो मना करैक, नहि मानलकै क्यो । हुजूर...सर...सुनैत-सुनैत मोन पगला उठैक भास्करक। एकदम रटल सुग्गा सभक स्वर– जी हुजूर..."बड़ा साहब कोठी पर याद किए हैं।"

भास्करक देह जरि गेलैक । कोठी । नबाब मरि गेलाह– नाति छोड़ि गेलाह । कलक्टर साहब छथि, तेँ निवास नहि कहौतनि । बड़की टा बोर्ड चमकैत

छनि दिनराति— कलक्टर कोठी । अबैत-जाइत ओ बोर्ड देखिकऽ ओकर आत्मा विद्रोह कऽ उठैत छै आ मोन होइ छै जे सभटा शीशा फोड़िकऽ ओ बोर्ड चकनाचूर कऽ दैक ।

फेर अपनो चार्ज भेटैत छैक जिलाक । नव-नव बहुत रास जिला बनैत छैक, सब-डिवीजन सभ जिला बनि जाइत छैक आ एस.डी.ओ. सभ जिलाधीश बनि जाइत छथि । भास्करक डेरामे सेहो चमकऽ लगैत छैक–कलक्टर कोठी । ओइ बोर्डकेँ हँटबऽमे ओकरा भारी संघर्ष करऽ पड़ैत छैक । ओकर सम्पूर्ण आफिस ओकरा आश्चर्यसँ देखैत छैक ।

आश्चर्य ओकरा अपनो होइत छैक जे सभटा जनैत किएक आबि गेल रहय ऐ काजमे । बड़का-बड़का पार्टी, राजधानीक फाइव स्टार, थ्री स्टार होटल । मुफ्तक शराब । देश-भ्रमण । मौका भेल तऽ विदेशो घुमब । सेमिनार-कनफ्रेंस । एहि सभमे जकरा मोन लगैत छैक ओकरे लेल ठीक छैक ई सभ । एहन-एहन पार्टी भास्करकेँ एकदम असह्य भऽ उठैत छैक । सभक हाथमे गिलास । भास्करो अपन गिलासमे कोका वा शुद्ध जल लऽ लैत अछि–चियर्स ।

ओकर आगाँ-पाछाँक बहुत रास परिचित सभ छैक कम्पीट कयने । बराबरि भेटो होइत छैक । ओकर सभक परिवर्तित रूप देखिकऽ ओ चकित रहि जाइत अछि । ओ छौंड़ा जे कालेजमे भास्करे सन रहय...वा ओकरोमे बेशी पढ़ाकू आ परहेजी रहय, से सभ अपन रूप बदलि लेने अछि । एक गोटेकेँ भास्कर टोकलकै–'तोहूँ शुरू कऽ देलैं ई सभ ?'

भास्करसँ अइ प्रश्नक अपेक्षा नहि छलैक भरिसक । सकपका गेलैक । फेर सम्हरैत कहलकै–"की करबै भाइ ! चीफ सेक्रेटरी अपने सर्व करैत छलथिन, नै कोना कहितियनि...इट इज ए क्वेश्चन आफ सोसाइटी मैनर्स–"

अइ तथाकथित उच्चवर्गक अइ तथाकथित मेनर्ससँ ओकरा वितृष्णा होइत छैक । अहाँ तक संभव होइत छैक, किरण आ अपन धीयापुताकेँ एहन-एहन पार्टी आ जुटानसँ फराके रखैत छैक । अइ वर्गक महिला सभक जुटान तऽ आर विचित्र। सभ अपन आभिजात्यक प्रदर्शनमे अयस्याँत...अपन-अपन मन्दबुद्धि धीयापुताक चामत्कारिक प्रतिभाक प्रदर्शनमे अपस्याँत...नर्सरी राइम...सँ लऽकऽ सिनेमाक गीत धरि । आत्ममुग्ध...आ प्रदर्शनक आकांक्षी...।

कौखन किरण आ राजा लेल ओकरा बड़ चिन्ता होइत छैक । मुन्नी अखन छोट छैक...ओकर समस्या नहि छैक अखन । मुदा निरन्तर स्थानान्तरणसँ राजाक

शिक्षापर बड़ असरि पड़ि रहल छैक । एकसरि पड़लि-पड़लि किरण कुम्हला रहल छलैक । भास्कर स्वयम्कें दोषी अनुभव करैत अछि ।

राजा लेल निर्णय लऽ लेलक ओ । किरण कानऽ लगलैक—एतेक अन्याय नहि करू हमरा संग । वैह टा तऽ एकटा आनन्दक वस्तु अछि अहाँक अइ अप्रिय आ अनिच्छित वातावरणमे । ओहो चल जायत तऽ कोना रहब हम ? अहाँकें अपना रहि हैत ? राजा रहि सकत ? दिनभरि केहन प्रतीक्षामे रहैत अछि अहाँक घुरबाक ? एहन अन्याय नहि करू हमरा सभपर ।"

भास्कर मनबैत-मनबैत मना लेलकै । राजाक भविष्य आ ओकर पढ़ाइक समस्या दऽ कहलकै । अपन नेनपन आ एकसर रहबाक खिस्सा कहलकै । कनैत किरण मानि गेलैक ।

राजाकें लऽ पटना गेल भास्कर । फादर मर्फी देखिकऽ लगले चीन्हि गेलथिन । भास्कर राजाकें देखबैत कहलकनि— हमर बेटा...अभिताभ चौधरी, अहाँक लग देबऽ आयल छी...एकरा राखि लिऔ ।

—वेलकम माइ सन ! टू मी इट विल अपियर एज इफ यू हैव कम बैक टु स्कूल एगेन...।

फादर एकदम बूढ़ भऽ गेल छलथिन । दाढ़ी एकदम उज्जर भऽ गेल छलनि । आँखिपर चश्मा छलनि । भास्करक लेल हुनकर स्नेह छलकि रहल छलनि । बहुत रास गप्प पुछलथिन । भास्कर कहलकनि सभटा । फादरक आकृतिपर गर्व-मिश्रित स्नेह छलनि— आइ एम प्राउड आफ यू माइ सन—

राजाकें स्कूल बड़ नीक लागि रहल छलैक । फैल— खूब साफ । एकटा प्रतिमा लग ओकर दृष्टि बेर-बेर अँटकि जाइत छलैक । नहि रहल गेलैक तऽ पुछिए देलकनि—"ई के छथि पप्पा ? हिनका एना के टाँगि देने छनि ?

फादर मर्फी भास्कर दिस तकलथिन । हुनकर वृद्ध आकृतिपर बालसुलभ हँसी छलनि ।

भास्कर निश्चिन्त घुरि आयल । यद्यपि अबैत काल फादर मर्फी कहलथिन—थिंग्स हैव चेन्ज्ड वेरी फास्ट भास्कर ! वी आर ट्राइंग आवर बेस्ट टू एडजस्ट...

फादरो सैह कयलथिन । मुदा ई समझौता भास्कर नहि कऽ पबैत अछि । प्रतिदिन ओकरा औनाहटि आ टकराहटि होइत छैक । सभ दिन ओ चाहैत अछि जे जतेक लोक भेंट करऽ आयल छैक तकरा सुनय पहिने...ओकरा सभसँ भेंट करय

पहिने । मुदा दसटा-पाँचटा टोपीवला पैरवीकार चकचक खादी पहिरि भोरेसँ बाट छेकने रहैत छैक...। भास्करक मोन तरंगि जाइत छैक । ओही तरंगमे किछु कहि दैत छैक वा ककरो नहि सुनैत छैक पैरवी, तऽ शिकायत जाय लगैत छैक— पटना आ फेर एकटा अप्रत्याशित स्थानान्तरण ।

आरतीक चिट्ठी अबैत रहैत छैक । छोट सन्तुलित चिट्ठी । जानि-बूझिकऽ ओहो पैघ पत्र नहि लिखैत छैक, बेशी पत्र नहि लिखैत छैक । किरणक आँखिमे आरतीक नाम देखितहिँ स्पष्ट शंकालु चमक आबि जाइत छैक । भास्कर ओइ चमककें नीक जकाँ चीन्हि गेल छैक ।

आरतियो ओकर विवशता बूझि गेल छैक भरिसक । काजक अतिरिक्त किछुओ फाजिल नहि लिखैत छैक । ओ पत्र भास्कर किरणोकें देखा दैत छैक । किरणक आँखिक ओ शंकालु चमक क्रमशः बिला जाइत छैक ।

अपन वचन निभौने छलैक आरती । परीक्षाक बादे अपन सभटा नोट्स पठा देने छलैक । ओकर रिजल्ट बहुत बादमे भेलैक । ओकर नाम प्रथम श्रेणीमे प्रथम देखि भास्करक आँखिमे नोर आबि गेलैक । आरतीकें पैघ सन चिट्ठी लिखलकै—"आइ अहाँक रिजल्ट देखि आँखिमे नोर आबि गेल आरती ! कतेक संकुचित आ कमजोर छी हम । हम्मर नाम ओइ स्थानपर पढ़िकऽ अहाँ अपने अखबार लेने हँसैत अबैत छलहुँ । मात्र हमरा हँसैत देखबा लेल ।

सभ लोक मुदा अहीं सन नहि होइत अछि । एतऽ जकर हमरासँ प्रतियोगिता छैक वा नहि छैक...सेहो हमरा छल-बलसँ कहुना हरा ठेलिकऽ आगू बढ़ि जाय लेल तैयार अछि । जे आगूओ अछि हमरासँ सेहो हमर क्रिया-कलापमे अनावश्यक रुचि रखैत अछि आ विद्रूप करैत रस लैत अछि । एकरा सभक लेल हम पागल आ बताह छी— आदर्शवादी सनकी । प्रशासन लेल एकदम अनुपयुक्त आ अक्षम छी । प्रशासनमे 'टैक्ट' चाही, डिप्लोमेसी चाही, नेतृत्वक क्षमता चाही—खोखला आदर्श नहि । सत्य आ सिद्धान्त नहि— व्यवहारपरक चालाक बुद्धि । उदार चारित्रिक क्षमता आ मानवीय संस्पर्श नहि...कुटिल स्वार्थपूर्ण चतुरता आ पदलोभी अवसरवादी चाटुकारिता । एतबे दिनमे लगैत अछि जेना कहाँ आबि गेलहुँ हम ! ट्रेनिंग समाप्त कऽ प्रारम्भे कयने छी कैरियर...आ लागि रहल अछि जेना गलत ट्रैकपर आबि गेल होइ...''

जेना-जेना समय बितलैक ई अनुभव आर गाढ़ होइत गेलैक । ओकरा सम्बन्धमे विभागमे तरह-तरहक खिस्सा भरि गेलैक, जेना ओकर सनकी स्वभावसँ

तंग आबि ओकर पत्नी दू बेर आत्महत्याक कोशिश कऽ चुकल छैक, जेना आफिसमे आबि चपरासीकेँ पहिने वैह सलामी ठोकैत छैक...जेना ओकर आफिसमे हरदम साधु-महात्मा सभ बैसल रहैत छैक...जेना प्रशासनक कोनो काजसँ ओकरा मतलब नहि रहैत छैक, जतऽ जाइत अछि एकटा गोष्ठी बना लैत अछि जाहिमे सभ दिन सत्य, समानता आ मनुष्यत्वपर ओकर प्रवचन होइत छैक...आदि-आदि। भास्करकेँ सभटा सुनल छैक, मुदा एकर प्रतिवाद करबाक ने इच्छा छैक ने लूरि। खिस्सा पसरल जाइत छैक आ ओकर विरक्त मौनकेँ स्वीकृति रूपमे प्रचारित कयल जाइत छै-जिला स्तरसँ मुख्यमंत्री धरि। दबल मुहेँ विपक्षी दल आ विक्षुब्ध सरकारी दल इहो बजैत सुनल जाइत अछि-अपन जातिक छनि, तेँ मुख्यमंत्री एहन अयोग्य अफसरकेँ बर्दाश्त करैत छथिन। तेँ ओकरा साहस होइत छैक जे जनताक प्रतिनिधिक एम.एल.ए., एम.एल.सी. आ कोनो नेताक अपमान कऽ सकय। छोटभैया नेता आ सरकारी पक्षक वक्ता सभ सौंसे कहि अबैत छथिन- 'एहन-एहन दू-चारि टा अफसर देब आर, तऽ गुजर कोना हैत हमरा सभक? लोकक काज नहि करा सकबैक...तऽ किएक पूछत लोक? पठबियौ कोनो ढंगक लोककेँ...हटाउ अइ पगला बगुलाभगतकेँ। कम्बल ओढ़िकऽ घी पीबैत अछि आ ऊपरसँ आदर्श झाड़ैत अछि।'

भास्कर बोरिया-बिस्तर बान्हिकऽ तैयार रहैत अछि। एक ठामसँ दोसर ठाम। एक जिलासँ दोसर जिला करैत-करैत पाँच वर्ष बीति जाइत छैक। भास्कर ओहिना 'मिस फिट' बनल रहि जाइत अछि प्रशासनिक यंत्रमे।

पोथी कीनैत अछि आ पढ़ि जाइत अछि। इएह क्रम एकटा सान्त्वना दैत छैक। प्राइवेटसँ एम.ए.क परीक्षा दऽ दैत अछि आ राजाकेँ दऽ अबैत छैक फादर मर्फीक संरक्षणमे। भास्करक मोनमे फेर कोनो संकल्प जनमिकऽ मजबूत होबऽ लगैत छैक।

मुन्नी पाँच वर्षसँ ऊपरक भऽ गेलैक। राजाक डेरापर नहि रहलासँ बड़ उदास लगैत छैक ओकरा। किरण तऽ बताहि सन भऽ जाइत छैक। भास्कर बुझबैत छैक...राजा पैघ भेल, आइ स्कूलमे अछि...फेर कालेजमे पढ़त। ओ आब कोना रहत सभदिन अहाँक संग? मुन्नीकेँ देखियौ...अनमन अहींसन भेल जाइत अछि।

किरण उदास भेल कहैत छैक- सैह ने अदृष्ट छैक! बपमुँही बेटी होइत तऽ भागमन्त होइत। नहि जानि केहन कपार लऽ जनमल छथि अइ अभगलीक कोखिसँ!"

भास्कर चौंकल-"की बाजि रहल छी अहाँ किरण? अहाँ अभगली किएक छी...कोन दुख आ अभाव अछि अहाँकेँ...?

किरण ओहिना उदास स्वरमे कहलकै-"हमरा सन अभगली के हैत आर? भरल-पूरल हवेलीमे आयल रही, सभटा जरिकऽ सुड्डाह भऽ गेल। धन गेल-समाङ गेल। अहाँ सन स्वामी भेटल- लाखमे एक। एतेक पैघ ओहदा भेटल, जकरा लेल तरसैत अछि लोक...जकरासँ ईर्ष्या रखैत अछि लोक। सोन सन-सन बेटा-बेटी भेल। मुदा स्वामीकेँ सुखी नहि देखि सकलौं कहियो। अहाँक चेहरापर हँसी देखबा लेल तरसि गेलहुँ। अहाँ जे चाहैत छी...जे अहाँक मोनमे अछि, से नहि कऽ पबैत छी अहाँ। सभक मुँह देखि कमजोर भऽ जाइत छी अहाँ...अनिच्छापूर्वक ई बोझ ऊघने जाइत छी..." बजैत-बजैत कानऽ लगलैक किरण।

भास्कर ओकर पीठपर स्नेहसँ हाथ फेरैत कहलकै-"अहाँ लोकनि हमर कमजोरी नहि छी किरण! शक्ति छी हमर। अहाँ लेल नहि रुकल छी हम। जहिआ लागत जे आर बेसी टिकब आब सम्भव नहि...विदा भऽ जायब। अहाँ तऽ चिर-संगिनी, शक्तिक मूल स्रोत छी हमर। फेर कहिओ ने सोचब जे अहाँ अभागलि छी। बड़ कष्ट भेल हमरा अहाँक बात सुनिकऽ। अभागल सभक कष्ट दूर होइ-ओकरा सामर्थ्य भेटै...सैह तऽ लड़ाइ अछि हमर। अपने घरमे, हमरा चलते क्यो अपन भाग्य कोसऽ लागत तऽ अनकर भाग्य लेल कोना लड़ि सकब हम?

-सैह तऽ कहै छी हम। हमर सब बात अहाँक लेल दुखक कारण भऽ जाइत अछि। केहन भाग अछि हमर...

भास्कर ओकर मुँहपर हाथ राखि दैत छैक- "फेर वैह बात! अभाग हेतैक अहाँक दुश्मनक। अहाँ हँसू-बाजू-गाउ। आ मुन्नी! हमर कोरामे आ। एकटा गीत सुना माँकेँ। खुशीवला गीत। माँ सेहो गौथुन। तोरा संग हमहूँ गायब।" मुन्नीकेँ पप्पाक अइ अप्रत्याशित दुलारक कोनो अर्थ नहि लगैत छैक। पप्पाक कोरामे आबि मुलुर-मुलुर मुँह ताकऽ लगैत छैक,-कोन गीत गाउ पप्पा...? "माँ तोंही शुरू कर ने!" भास्करो जिद्द कऽ दैत छैक-सत्ते किरण! आइ अहीं शुरू करू। बड़ दिन भऽ गेल अहाँक गीत सुनना। गाममे कोना नहुँए-नहुँए गाबि सुनबैत छलहुँ- भरि-भरि राति। गाउ ने किरण...

किरणक आँखिसँ नोर भट-भट खसऽ लगलैक-"आब की मोनो अछि ओ सभ गीत...! नहि जानि कहिया बिसरि गेल। एक्को पाँती ने रहल मोन।

-"हम मोन पाड़ि दैत छी किरण!" भास्कर झूठ-मूठ मोन पाड़ैत कहलकै-

आजि रजनि बड़ भागिनी लेख्यहुँ

पेख्यहुँ पिया-मुख चन्दा।

मुन्नी बीचेमे बजलैक– ई कोन गीत भेलैक पप्पा ! अहाँ तऽ फकरा पढ़ै छी । किरण हँसलैक । बेटीक पकठोसल गप्पपर ओकर उदासी– ओकर नोर सभ बिला गेलैक ।

मुन्नी बापक कोरासँ माइक कोरामे आबि गेल–"नै अबै छनि गीत गाबऽ पप्पाकेँ । तोही गा ने ! नै गेबैं तऽ खिस्सा कह । कहिओ ने कहै छैं खिस्सा । किरण दुलारसँ कहलकै– ''पप्पा लग जो । वैह कहथुन तोरा । बड़ खिस्सा अबैत छनि हुनका ।''

मुन्नी फेर मायक कोरासँ बापक कोरामे आबि गेल– सत्ते पप्पा ? हमरा तऽ कहियो ने कहै छी कोनो खिस्सा... ?

भास्कर मुन्नीकेँ छातीसँ सटा लेलकै– अपन संघर्षमे... अपन समस्यामे ततेक व्यस्त आ केन्द्रित भऽ गेल अछि ओ जे मोने ने रहलैक जे एकटा बेटी छैक, ओकरा पप्पा चाहिऐक... खिस्सा चाहिऐक । किरण ठीके कहै छलैक ।

मुन्नी छातीसँ मूड़ी अलगा कहलकै– ''कहू ने खिस्सा पप्पा !''

भास्कर कहऽ लगलैक । कठरी बाबाजीक खिस्सा ।

बाबी फेर जीबि उठलैक... हवेलीक ओ घर... बाबीक देहसँ सटल भास्कर आ चोरबाकेँ टोकैत कठरी बाबाजी– ''के तोँ थिका हौ ? के थिका ? कहाँ जाइ छऽ ? हमरा नै कहै छऽ ?'' भास्कर कहने जाइत छैक विभोर...

मुन्नी सूति रहैत छैक । ओकरा आस्तेसँ कात कऽ दैत छैक भास्कर । किरण जागि रहल छैक । ओकरा समीप घीचि लैत छैक । छातीसँ लागलि सिसकी सुनै छैक ओकर... ।

–''कानि रहल छी ?''

–''नै तऽ !'' किरणक सिसकी बन्द भऽ जाइत छैक ।

भास्करक बन्हन शिथिल होमऽ लगलैक– "हमरासँ कोनो अपराध भेल ? कहिओ उपेक्षा कयलहुँ अहाँक हम ? बाजू किरण...एना कानू नहि...।''

किरण सम्हरि गेल छलैक– ''उपेक्षा नहि । ओ अहाँ ककरो कैये ने सकैत छियैक, अपन दुश्मनोक नहि । मुदा उष्णता... कहाँ हेरा गेल हमर–अहाँक सम्बन्धक ओ उष्णता आ आवेग... ।

भास्कर हँसलैक– समय लऽ गेल । ओ उष्णता आ आवेग कतऽसँ औत आब ? हमरा लोकनि प्रौढ़ भऽ रहल छी ।

किरण हँसलैक– 'सुकुर जे बूढ़ा-बूढ़ी नहि कहलहुँ । पचीसमे बरखमे सभ सुख-मनोरथ सठि गेल... ।

भास्करक चेहरापर बहुत दिनुका बाद एकटा दुष्ट हँसी पसरि गेलैक– की-की सुख-मनोरथ रहि गेल... कने सुनी तऽ... ?

किरण कहलकै किछु नहि । बाँहिक बन्हन मजगूत भऽ गेलैक । ओकर सिहरनसँ भास्करक सम्पूर्ण शरीर गनगना उठलैक । किरणक सम्पूर्ण शरीर ताल-लय युक्त तरंगमे थिरकि रहल छलैक ।

आवेग समाप्तो भेलापर वैह उष्णता, ओहने गर्मी । भास्कर फुसफुसाकऽ किरणक कानमे कहलकै– देखलिऐ किरण...हेरायल किछुओ ने रहैत छैक– ने तऽ सम्बन्धक उष्णता, ने प्रगाढ़ता । खाली समयक खोल तरमे नुकायल रहैत छैक । कोनो एकटा आत्मीय क्षणमे अनायास उघरि जाइत छैक सभ-किछु । अहाँ तऽ ओहिना छी किरण... बल्कि ओहूसँ नीक... ।

किरण पुनः एकटा उन्मादक आवेगक संग लपटि गेलैक– ''अहूँ तऽ बुढ़ारीमे भारी निर्लज्ज भऽ गेल छी ।''

आवेग शिथिल भेलापर आँखि मुना गेलैक किरणक । भोर धरि सूतलि रहल । जागलि तऽ भास्करकेँ बिछौनपर बैसल देखलकै । डर जकाँ भेलैक– एना किऐक बैसल छथि ?

किरणक पुछबासँ पहिने भास्कर स्वयम् कहलकै– ''हम निर्णय कऽ लेलहुँ किरण ! रातिए निर्णय कऽ लेलहुँ । आब आर टारलासँ नहि चलत काज । राति लागल जेना बहुत-किछु छीनि लेलक अछि ई नौकरी । अइ नौकरीक सङ्ग रहब तऽ नहि जानि आर की-की छिना जायत । ओइसँ पहिने हमहीं एकरा छोड़ि देबैक । अहाँ की कहै छी किरण....

किरण किछु नहि कहलकै, मुदा भास्करकेँ बुझबामे आपत्ति नहि रहलैक जे ओ ओकर संग छैक । ओ उत्साहित भऽ उठल । फेर शिकायत गेल छैक । कोनो स्थानान्तरण आदेश बाटेमे हेतैक ।

आदेश भेटलैक । भास्कर प्रस्तुत छल । ओकरे संग अपन बड़का पत्र, त्यागपत्र पठा देलकै, जकर एक प्रति प्रेसकेँ पठबा देलकै । प्राते भेने अखबारमे सनसनी छलैक । प्रान्तक सभ अखबारमे मुखपृष्ठपर न्यूज । देशक आनो अखबार

देलकै न्यूज । एकटा भारी हंगामा आ विवाद ठाढ़ भऽ गेलैक । ककरो-ककरो ई एकटा पैघ साहसिक डेग लगलैक, तऽ ककरो स्पष्ट पब्लिसिटी स्टण्ट । भास्करकें ओइ टीका-टिप्पणीमे रुचि नहि छलैक । ओ निर्णय कऽ चुकल छल ।

जहिआ चार्ज दऽ विदा भऽ रहल छल... किरणकें पूछि लेलकै– "अहाँकें कोनो अफसोच तऽ नहि भऽ रहल अछि किरण ?"

किरण आश्चर्यसँ पुछलकै– कथीक अफसोच ?

भास्कर ओकर मोनक थाह लैत कहलकै– "ई बंगला छुटबाक अफसोच । हवेली छूटल... बंगलीमे अयलहुँ । आब एतऽसँ मास्टरक खोपड़ीमे चलब... ।

किरण पूर्ण उत्साहसँ कहलकै– हमरा लेल तऽ जतऽ अहाँ, सैह सभसँ नीक स्थान । जतऽ अहाँक ठोरपर हँसी, से स्थान हमरा लेल स्वर्ग...

भास्कर कृतज्ञतासँ कहलकै– अहाँक ई उपकार मोन रहत किरण... चिरदिन मोन रहत ।

विदा करबा लेल एक पतिआनीसँ ठाढ़ सम्पूर्ण स्टाफ हाथ जोड़ने छलैक । सभक आँखि भीजल छलैक । ककरो आँखिमे विद्रूप वा निष्कृति भेटबाक भाव नहि । एकाएक की भऽ गेलैक एकरा सभकें ?

पटनामे डेरा भेटैत देरी किरण जिद्द धऽ लेलकै– "राजाकें लऽ अनियौक डेरामे आब । ओकरा बिना मोन नै लगैत अछि एक्को क्षण । आब कोन बदलीक डर अछि ? अपन डेरा अछि, तखन किएक रहत नेन्ना होस्टलमे ?"

भास्कर बड़ मुस्किलसँ बुझौलकै ओकरा– "कमसँ कम किछु दिन रुकि जाउ । ओतऽ बड़ नीक लोकक संरक्षणमे अछि– देवता सन लोक । हमरा मानितो बड़ छलाह फादर मर्फी । राजाकें अपन बेटा जकाँ मानैत हेथिन, अहाँ निश्चिन्त रहू । नै मोन लगतैक ओकर तऽ लऽ अनबै डेरामे । शनि रवि कऽ तऽ ओनाहो अयबे करत, फादरसँ अनुमति लऽकऽ ।

आरती सेहो आयल रहैक ओकर डेरा देखऽ । एकसरे । सिनहा साहब कतहु बाहर गेल छलथिन । आरतीकें देखि किरणक आँखिमे वैह चमक फेर स्पष्ट भऽ उठलैक । आरती नहि देखलकै, मुदा भास्कर स्पष्ट देखि लेलकै ।

ओ झट परिचय करा देलकै आ आरतीसँ कहलकै– "किरण अहाँक बड़ आभारी छथि । अहीं द्वारे आइ पटनामे आबि सकल छी । अहाँ नोट पठा तगेदा नहि करितहुँ तऽ नहि पार लगैत हमरा बुते एम.ए. कयनाइ ।"

आरतीक बाजऽसँ पहिने किरण कहलकै– "सत्ते अहाँक बड़ उपकार अछि । ओइ काजमे हिनकर एकदम मोन नहि लगैत छलनि ।"

–"सभ काजक सैह हाल छैक । हम अपनेक नाम लऽ सकैत छी– "पैघ छी अहाँसँ ?"

किरण हड़बड़ा कऽ कहलकै– हमर भाग... । हिनका छोड़ि आर क्यो तऽ नहि बजबै अछि नाम लऽकऽ । आब तऽ इहो अहाँ, हे, ऐ सऽ काज चलबऽ लगलाह अछि । किछु दिनमे राजा-माय, मुन्नी-माय कहि सोर पाड़ऽ लगताह...

आरती हँसलैक । किरणकें मोने-मोन ईर्ष्या भेलैक । ओकरासँ कतेक नव...कतेक जवान लागि रहल छलैक आरती ! ओ वयसमे छोट भैयोकऽ ओकर जेठ बहीन सन लागि रहल छलैक ।

किछु काल गप्प-सप्पक बाद चलबा काल आरती आग्रह कयलकै– एक दिन आउ भास्कर संगे हमर डेरा... पप्पोसँ भेंट भऽ जायत । अबस्स अनबनि भास्कर !

भास्कर मूड़ी डोला अपन स्वीकृति देलकै । जाइत-जाइत आरती फेर कहलकै– पटना युनिभरसिटीमे नहि भेल अहाँक तकर दुख अछि हमरा...। जगह ओतहु छलैक । मुदा आइ-काल्हि तऽ सभ ठाम वैह हाल छैक । पैरबी आ प्रभाव नै तऽ अहाँ सन रिजल्टवलाकें किएक दोसर युनिभरसिटीमे जाय पड़ितै ।

भास्कर ओकर बात कटैत कहलकै– "एक्के बात छैक । मतलब पढ़ाबऽसँ छैक । आ नीक विद्यार्थीसँ कठिन छैक कमजोर आ औसत विद्यार्थीकें पढ़ौनाइ ।

आरती कहलकै– अहाँ कोन दुनियाँमे रहै छी भास्कर ? आइ-काल्हि पढ़बा लेल के कालेज अबैत अछि ? एक सत्रमे कालेज खुजले कतेक दिन रहैत छैक ? नाम लिखा जाइ छैक आ परीक्षा आगू-पाछू होइत रहैत छैक । हम प्रीमियर युनिभरसिटीक गप्प कहि रहल छी, ताहीसँ आन-आन युनिभरसिटीक हाल बूझि लिअऽ । खैर, से तऽ अपने देखि लेबैक । अखबारमे तऽ बड़ पढ़ने हैब– आब असली नजारा सेहो देखि लिऔक ।

नजारा वास्तवमे बड़ खराब छलैक । पहिले दिनसँ आफत शुरू भऽ गेलैक भास्करक लेल । जिम्हरे जाय, जही क्लास लग दने जाय... ओकरापर रनिंग

कमेण्टरी शुरू भऽ जाइ–

—बड़ा बौड़म प्रोफेसर हौ रे ! कलक्टरी छोड़ि के मास्टरी करे आयल हौ...

—बड़ी गीता रामायण पढ़ौतउ रे बाउ... चेति ले अभी से । अंगरेजी के प्रोफेसर पर नहि जो... बड़का गो पण्डीजी हौ–

—माथा किछु खराब हइ रे... दू बेर काँके रिटर्न हौ–

—पागल से अलगे रहिऐ रे भाइ... काटियौ लै छै ।

कमेण्टरीक संग ठहाका । पिहकारी । अभद्र हँसी । बाट चलब मस्किल कऽ देलकै भास्करक । ओकर छात्र सभ अपन गुरुक स्वागत लेल पूर्णरूपसँ तैयार छलैक– पूरा विवरणक संग ।

सहकर्मी प्राध्यापक लोकनिक प्रतिक्रिया आर खराब छलैक । जाइत-अबैत स्टाफरूम वा बाट-घाटमे भास्कर सुनि लैत छलैक ।

—बड़का इमेज लऽकऽ आयल छथि ! आइ.ए.एस.कें लात मारि प्राध्यापक । तकरे रोब देखबऽ चाहैत छथि हमरालोकनिपर ।

—मुदा वर्मा साहब ! हमरा कोनो अर्थ नहि लगैत अछि । कोनो सज्ञान मनुक्ख कलक्टरी छोड़ि प्रोफेसरीमे आबि सकैत अछि ?

—कोनो भितरिया बात हेतैक तिवारीजी ! जरूर कोनो अभियोग छल हेतैक– खूब गम्भीर अभियोग । बचबा लेल भागि पड़ायल अछि ।

—नै यौ ! अनेरो बतंगड़ करै छी अहाँ लोकनि । एक्सेपसनल मेरिट छैक । अखबारमे ओतेक हंगामा भेल रहैक एकर त्यागपत्रपर ! सभटा बिसरि गेल, हालेके तऽ बात छैक ।'' प्रोफेसर लाल कहलथिन ।

हुनका श्रीवास्तव लुलुआ लेलकनि– खाक एक्सेपसनल मेरिट ! टौपरसँ कम के अछि आब कालेजमे ? ढौये ढाकी तऽ फस्ट क्लास होइ छै आब । एम.ए. सेहो पटना विश्वविद्यालयसँ नहि छथि । हमरा लोकनिक मेरिट कतऽ हिनकासँ दब्ब अछि ।

भास्कर सभटा सुनिकऽ अनठा दैत छैक । कालेजक स्टाफरूमक वातावरण आ ओकर गप्प ओकरा कने कोनादन लगैत छैक । मुदा ओ जल्दी कोनो प्रतिक्रिया नहि देखबैत अछि । पछिला प्रयासक कटु अनुभव ओकरा बान्हि देने छलैक । ओ

चुपचाप सभटा सहि जाइत छल । ककरो तऽ ने कहै छलै, किरणोकें नहि । आस लगौने रहै अछि जे ई सभ उत्पात, उपद्रव शान्त भऽ जयतैक । मुदा दिनानुदिन ओकर मात्रा बढ़ल जाइत छैक । भास्करक मानसिक तनाव बढ़ऽ लगैत छैक ।

किरण बूझि जाइत छैक । एक दिन बहटारबा लेल जिद कऽकऽ ओकरा आरतीक डेरा लऽ जाइत छैक । भास्करकें बड़ आश्चर्य होइत छैक । सिनहा साहब किरणकें बड़ पसिन्द करै छथिन, बेटी बना लैत छथिन ।

किरणो आरतीक संग बेशी घनिष्ठ भऽ जाइत अछि । उपराग दैत छैक– अहाँ तऽ बस्स बीध कऽ निपत्ता भऽ गेलहुँ ? दोबारा खोजो-खबरि नहि ।

भास्करक आश्चर्य आरो बढ़ि जाइत छैक । किरण रहस्यमयी बनि जाइत छैक । आँखिमे ओ शंकालु चमक आ ठोरपर निमंत्रण ।

आरती आबऽ-जाय लगैत छैक– बेशी-बेशी काल रूकऽ लगै छै । भास्करक संग ओकर घण्टो बहस चलैत छैक, अंग्रेजीमे बेशीकाल । किछु नहि बूझि अकच्छ भऽ किरण ओतऽसँ उठि जाइत अछि । धीयो-पुताक संग किरण एकदम घुलि-मिलि गेल छैक । मुन्नी आण्टी-आण्टी कहैत रहैत छैक आ राजा जहिआ होस्टलसँ डेरामे आबि जाइत छैक ओकर संग एकदम बच्चा बनि जाइत छैक आरती । दिन भरि दुनूक अंग्रेजीमे बकर-बकर । शुरू-शुरूमे बड़ नीक लगलै किरणकें, बेटा फटाफट अंग्रेजी बजैत छलैक । फेर ओकरा सभटा अति लागल लगलै– एना किएक बैसलि रहैत छैक आरती भरि-भरि दिन । बेशी-बेशी राति धरि । आबऽ-जायक निमंत्रण देने छलैक । अड्डा मारिकऽ जमि जाय नहि कहने छलैक ।

एकदिन भास्कर लग उगलि देलकै किरण— ''ई तऽ बेस कयलनि अहाँक दोस्त ! नोत देलियनि तऽ अड्डा मारऽ लगलीह । एतेक किएक अबै जाइ छथि अहाँक आरती ?

किरणक बातक भंगिमापर बड़ तामस भेलैक भास्करकें । डाँटि लेलकै– ''पहिनहुँ मना कऽ चुकल छी अहाँकें... आरती लेल छोट बात ने सोचू ने बाजू... ओ बड़ उच्च विचारक छथि, सुनती तऽ बड़ दुख हेतनि हुनका ।''

किरण ओकर डाँटबकें दोसरे अर्थमे लेलकै– ''हुनका अधलाह लगतनि तकर बड़ चिन्ता अछि अहाँकें ! मुदा एना कुमारि लड़की भऽकऽ एतेक राति धरि अड्डा मारने रहैत छथि, से अधलाह नहि लगै अछि । बापोकें कोना आँखि निपट्ट भेल छनि से नहि जानि । एहन अजग्गि बेटी... !

भास्करक पित्त लहरि उठलैक– चुप्प रहू किरण ! अहाँ सभटा मर्यादा तोड़ने जा रहल छी । अपनासँ श्रेष्ठ लेल कोना बाजी, सेहो बिसरि गेल अहाँकेँ ?

किरण सोहो सुरमे बजैत रहलैक– आब तऽ हम बनबे करब असभ्य, अलूरि । कोनो ज्ञान अछि हमरा लोकनिकेँ ! मूर्ख जाहिल छी हम सभ ।

भास्कर नरम भऽ उठलैक– अनेरो हमरा तामस चढ़ा दैत छी किरण ! हमर से मतलब नहि छल । अहाँ बुधियारि आ सुसभ्य छी, मुदा नहि जानि अहाँकेँ की भऽ जाइ अछि आरती बेरमे ? सभटा ज्ञान हेरा जाइए अहाँक ।

किरण उग्रतासँ कहलकै– हम कहू जे की भ' जाइ-ए... ?

भास्कर मुँह ताकऽ लगलैक । किरण स्पष्ट कहलकै– सौतिया डाह ।

"किरण !" ततेक जोरसँ चिचिआयल भास्कर जे सौसेँ डेरा गनगना उठलैक । दोसर कोठलीसँ आरती दौड़ल अयलैक, राजा आ मुन्नी सेहो भागल अयलैक ।

–"की भेल भास्कर ?" आरतीक स्वरमे चिन्ता छलैक ।

किछु कहि नहि भेलैक । चुप्पे रहल भास्कर । धीया-पुता लग आ आरतियो लग अपन एहन उत्तेजनापर लाज भेलैक ।

किरण चुपचाप उठिकऽ दोसर कोठली चलि गेलैक । आरतीकेँ किछु सन्देह भेलैक मुदा । किछु पुछलकै नै फेर । ओइ दिन जे गेलैक से फेर नहि अयलैक कहिओ । तीन-चारि रवि बीति गेलैक । भास्कर चुप्प छलैक मुदा राजा-मुन्नी जिद्द मारने छलैक– "आरती मौसी लग चल ने माय... किएक ने अबै छथि एतेक दिनसँ ?

आइ दूनू नेनाक प्रश्नक उत्तर क्यो नहि दैत छैक । ओकर सभक जिद्द बढ़ले जाइ छैक । राजा तऽ साफ कहि दैत छैक– "आरती मौसी नहि औथुन तऽ हमहूँ ने अयबौक रविदिन कऽ । दोस्ते सभक संग किम्हरो घूमि आयब..."

किरणक करेजा फाटऽ लगलैक । ओकर अपन बेटा ओकरा नहि चाहैत छैक । ओकरा आरती मौसी चाहिऐक । खाली वैह टा फालतू अछि अइ घरमे । ओकरा क्यो ने चाहैत छैक ।

भास्करक चुप्पी ओकरा आरो कष्ट दैत छैक । ओइ दिन कने कहि देलकै तामसमे अण्ट-शण्ट तकर एतेक मान ! आ ओइ महारानीकेँ सेहो बड़का रोष लागि गेलनि ! ओइ दिनसँ निपत्ता भेल छथि । गेल छथि तऽ गेल रहथु । हम नहि जैबनि नेहोरा करऽ ?

नेहोरा कयलकै किरण । टेलीफोनेपर कानऽ लगलैक– जल्दी आउ आरती ! अन्हेर भऽ गेल ।

आरती किछु बुझबे नहि कयलकै– "की बात छैक ? की अन्हेर भऽ गेल ?

किरणकेँ बाजल नहि जाइत छैक, कनैत-कनैत बेहाल छैक– "हमरा एना नै छोड़ू एकसर । बचा लिअनु हुनका... जल्दी आउ । अस्पतालमे पड़ल छथि बेहोश । पेटमे छूरा मारने छनि ।

आरतीक हाथसँ रिसीवर खसि पड़ैत छैक । गाड़ी निकालि पागल जकाँ हँकैत अछि । एक्सीडेण्ट होइत-होइत बँचैत छैक । गाड़ी अस्पतलाक पोर्टिकोमे छोड़ि दौड़ऽ लगैत अछि आरती ।

ओइ दिनुका बाद कहिओ भेँट नहि छलैक । तमसायल नहि छल ओ, मुदा ओकरा किछु सन्देह भेल छलैक । लागल छलै जेना ओकर बेशी अयनाइ-गेनाइ भास्करक सुखी दाम्पत्यमे दरारि आनि सकैत छैक । ओ नहि गेल छलि तहिआसँ । ने क्यो बजबऽ आयल छलैक । टेलीफोनो नहि अयलैक कहिओ ।

अजुका टेलीफोन सुनि बताहि भऽ गेल आरती । कथुक होश नहि रहलैक । की पहिरने छल.... मुँह केहन छलैक... तकरो होश नहि रहलैक । गाड़ीकेँ बिहाड़ि जकाँ हँकैत अस्पताल पहुँचलि छल ।

बाहर बरण्डामे किरण छलैक, बैंचपर बगलमे बैसल मुन्नी छलैक । एकाध टा अनचिन्हार लोक । आरतीकेँ देखितहिँ चीत्कार कऽ उठलैक किरण । दौड़िकऽ लपटि गेलैक– "अहाँ कहिअनु आरती ! एतेक टा दण्ड हमरा नहि देताह । हमर अपराध एहन नहि छल जकर एतेक टा दण्ड दऽ देता हमरा । अहाँ कहिअनु आरती, अहाँक बात मानताह । हमर नहि सुनै अछि क्यो, देखहो ने दैत अछि ।

आपरेशन थियेटरमे छलैक भास्कर । बाहर टहलैत लोक ओकरे कालेजक छलैक । खबरि सुनि आयल छलैक । मुदा ककरो ठीकसँ बुझल नहि छलैक । ड्यूटी रूमसँ पता लगलैक जे एकटा रिक्शावला बेहोश उठाकऽ अनने छलैक । संगक प्रोफेसर पड़ा गेल छलथिन आ अगल-बगलसँ क्यो संग आबऽ लेल तैयार नहि भेल छलैक । कतेको गाड़ी अयलैक आ चल गेलैक । क्यो तैयार नहि भेलैक

छटपटाइत भास्करकेँ अस्पताल लऽ चलबा लेल । एकटा रिक्शावला एकसरे पहुँचा गेलैक– नामो ने बूझल छलैक ओकरा ।

गलगुल भऽ गेल छलैक घटनास्थल लग । कालेज तक खबरि गेलैक । किछु प्रोफेसर सर्जिकल ब्लौकक इमरजेन्सी विभागसँ पता कयलथिन । भास्करकेँ देखलथिन । किरणकेँ खबरि देलथिन । भास्करकेँ कोनो होश नहि छलैक ।

अस्पताल पहुँचैत-पहुँचैत किरण अर्धमृत भऽ गेल छल । भास्करकेँ देखियो नहि सकलैक । हालति बड़ खराब रहैक । लऽ गेलैक आपरेशन थियेटरमे । बरण्डापर मुन्नीकेँ कोरामे लेने बौआइत किरणकेँ आरती मोन पड़लैक ।

आरतीक आबि गेलासँ किछु साहस भेलैक ओकरा । किछु कालमे सिनहा साहब सेहो आबि गेलिथन । सभटा व्यवस्था भऽ गेलैक । बड़का-बड़का डाक्टर आबिकऽ देखऽ लगलथिन । मुदा किरण नहि देखि सकलै ओकरा अखन तक । सिनहा साहबक नेहोरा करऽ लगलैक– ''कने देखा दिअऽ हमरा दूरेसँ, किछु ने बाजब हम, कनबो ने करब... कहिऔ डक्टरबा सभकेँ असली बात कहत, क्यो नहि किछु कहैए ।''

सिनहा साहब ओकर पीठ थपथपा देलथिन– ''शान्त रहू बेटी ! सभटा कोशिश भऽ रहल छैक । बाँकी भगवानक हाथ ?''

किरणकेँ राजा मोन पड़लैक । सिनहा साहेबकेँ हाथ जोड़ऽ लगलनि– नेहोरा करै छी, कने हमर बेटाकेँ बजबा दिअऽ स्कूलसँ... कहिऔ जे ओकर बापकेँ पेटमे...

–बताहि भेल छी अहाँ ? नेन्ना अछि अखन । ओ आबिकऽ की करत ? स्कूल फोन कऽ दैत छिअनि फादरकेँ । भोरमे लऽ अनथिन ।

भोरे ? किरणक मोनमे कने आशा जगलैक । भोरखन अपन बापसँ भेंट करऽ आओत राजा । सिनहा साहब ठकि नहि रहल छथिन । भास्कर बँचि जयतैक...

बँचि जयतैक तऽ माफी मांगि लेतैक किरण । फेर नहि करतैक कहिओ अविश्वास । केहन भऽ गेल छलैक ओइ दिनक बाद भास्कर । ने ककरोसँ हँसब, ने बाजब, जेना बड़ पैघ मानसिक यातनामे होइ । किरण बुझैत छलैक ओकर कष्ट । जे सम्पूर्ण समाज आ मानव समुदायकेँ जीतऽ चाहैत छल, तकरेपर सन्देह भेलैक । से क्यो आन नहि कयलकै । अपन स्त्री...ओकर किरण ? जकरापर ओकरा अत्यन्त विश्वास आ गर्व छलैक । ओकर दृष्टिमे किरण छोट बनि गेल छल । से जनैत छल किरण, मुदा ओहो जिदपर अड़ल छल । मानिनीक मान ओकर कर्त्तव्य आ विवेकपर हावी भऽ गेल छलैक ।

मान कऽ बैसलैक भास्करो । घण्टोसँ अस्पतालमे बेहोश पड़ल छैक । किरणक चीत्कार, आरतीक मौन रुदन आ मुन्नीक निश्च्छल आँखिक पुकार– किछु ने सुनि रहल छलैक ओ । कनैत-कनैत बेहाल छलैक मुन्नी– पप्पा लग जायब माँ ! पप्पा लग जायब ।

ओकरे लग जयबा लेल तऽ किरणो कानि रहल छलैक मुदा क्यो जाय नहि दऽ रहल छैक । भास्करकेँ भीतर बन्द रखने छैक, देखहो नहि दैत छैक ।

सिनहा साहबकेँ सभटा हाल कहलकनि प्रोफेसर सभ । किरणकेँ जानि-बूझिकऽ नहि कहने छलैक । एकटा छौड़ाकेँ परीक्षासँ निकालि देने छलैक भास्कर । चोरि करैत पकड़ने छलैक । छौंड़बा जिदपर अड़ल छलैक- ''हम नै निकलब । चोरि तऽ सभदिनसँ करैत आयल छी । सभ परीक्षा तऽ चोरिएसँ पास कयने छी । तखन आइ किएक ने करऽ देब चोरी ? अहूँ परीक्षामे घूमि जाउ, देखियौ सभ रूममे जे चोरी भऽ रहल छैक वा नहि ? असगर अहींक रूममे किएक हेतैक स्पेशल कड़ाइ ?...

भास्कर नहि सुनलकै । निकालि देलकै परीक्षासँ । जाइत-जाइत धमकी देलकै ओ छौंड़बा । भास्कर तकर परबाहि नहि कयलकै ।

प्राध्यापक सभ आ प्रिंसिपल मना कयने छलथिन । एकसर नहि जाय देने छलथिन । एकटा प्रोफेसरकेँ संग कऽ देलथिन । मुदा बोरिंग कनाल रोड लग छौंड़बा अकस्मात् झपटलकै किछु गुण्डा सभक संग आ पूरा चक्कू भास्करक पेटमे घोपि पड़ा गेलैक । संगक प्रोफेसर डरे पड़ा गेलथिन आ बड़ी काल धरि ओ सड़कपर ओहिना छटपटाइत रहल । शोणित बड़ निकलि गेलैक ।

सिनहा साहब चिन्तामे डूबि गेलाह । किछु कहलथिन नहि ककरो, मुदा आशंकासँ भितरे-भीतर सिहरि गेलाह । बेटी दिस देखलनि । आपरेशन थियेटरक बन्द दरबज्जापर टकटकी लगौने छलनि । किरणकेँ देखलथिन— विह्वल आतुर प्रतीक्षामे छलैक आशावर्धक समाचारक । बन्द दरबज्जे दिस ओकरो टकटकी छलैक । ओहो ओम्हरे टकटकी लगाकऽ बैसि गेलाह ।

भोर हैबामे बेसी विलम्ब नहि छैक ।

भास्कर बेडपर आबि गेल अछि । होश नहि भेलैक अछि । पेटपर बड़का

पट्टी छैक । खून चढ़ि रहल छैक । तखनेसँ टप-टप-टप ठोपे-ठोपे शोणित चूबि रहल छैक ट्यूबसँ । बाँहिक नसमे सीरिंज घोपल छैक । बेडक एक कात किरण आ दोसर कात आरती बैसल छैक । सिनहा साहब चल गेलथिन । नहि जा रहल छलथिन, मुदा आरती जोर दऽकऽ मुन्नीकेँ लऽकऽ पठा देलकनि । मुन्नी सूति गेल छलैक । ओकरा अस्पतालमे राखब ठीक नै होइतैक ।

ओना सभ व्यवस्था छैक । पेइंग वार्डमे अछि । सिनहा साहबकेँ एक बेर डर भेलनि जे होशमे आओत तऽ बिगड़त भास्कर— 'ई स्पेशल ट्रीटमेण्ट किएक ? जेनरल वार्ड नीक रहैत ।' मुदा ओ दोसरे आशंकासँ त्रस्त छलाह । कोनो तरहक खतरा नहि चाहैत छलाह । अपना भरि सब कोशिश भऽ रहल छलैक ।

कोशिश बहुतो लोक कयने छलैक- ने किरण गेलैक, ने आरती । ने एक्को बुन्द जल गेलैक अछि तखनसँ दूनुक मुँहमे । जखन आपरेशन रूमसँ वार्डमे अनलकै, दुनू दूनू कात बैसि गेलैक आ तखनसँ ओहिना बैसल छैक- एकटक भास्करक मुँह देखैत ।

लगैत छैक जेना सूतल होइ भास्कर ! मुँहक रंगति कनिओ मलिन नहि भेल छै.... ओहिना चमकैत आकृति । खाली आँखि बन्द छैक । हाथमे सीरिंज घोपल छैक जाहिपर लिकोप्लास्ट साटल छैक । हाथकेँ स्थिर कऽ किरण पकड़ने छैक । टप-टप-टप । स्वर नै होइत छैक कोनो । खाली ठोपे-ठोपे ट्यूबमे खसैत देखैत छैक आरती । राति भरि देखैत बैसल छै- कतहु कोनो गड़बड़ी ने होइ ।

भास्करक मुँहसँ किछु शब्द बहराय लगैत छैक...लगैत छैक जेना किछु बाजि रहल होइ । मुदा किछुओ स्पष्ट नहि होइत छैक । किरण मुँह लग कान सटा लैत अछि- केहन मोन अछि ? कोनो जवाब नहि दऽ होइत छैक जेना ! दृष्टिमे बड़ बैचनी आबि जाइत छैक, जेना भीतरसँ कष्ट भऽ रहल होइ । आरती लग घुसकि कहै छैक— किछु कहब ?

स्वर चीन्हि जाइत छैक जेना ! आस्तेसँ मूड़ी हिलबै छैक । बजबामे बड़ कष्ट होइ जेना ! ठोर थरथराइ छै...। किरण विह्वल होइत कहै छै— नै बाजू...नै बाजू किछुओ— डाक्टर मना कयने अछि ।'' भास्करक ठोरपर पीड़ासँ घनीभूत हँसी पसरि जाइत छैक- ''किरण ! बाजऽ दिअऽ हमरा...समय बड़ थोड़ अछि.... आरती अहूँ लग आउ, सुनि लिअऽ दूनू गोटे... आह....बड़ कष्ट अछि किरण...! क्यो आरीसँ चीरि देलक अछि जेना आर-पार ।''

—''नै-नै...'' किरण जोरसँ कानऽ लगलैक- ''एना नै बाजू...। हमरा एतेक

पैघ दण्ड नहि दिअऽ... अज्ञानी छी हम ।'' ओहने घनीभूत पीड़ामे ठोर हँसलैक फेर— बताहि ! अहाँकेँ दण्ड देब ? मुदा बेर आबि गेल अछि । बिन कहने प्राण नै छूटत हमर...सुनि लिअऽ अहाँ दूनू गोटे... ।

आरतीक आँखिसँ टपटप नोर टघरऽ लगैत छैक- कहू ने भास्कर...हम छी... अहाँक लगेमे छी...किरणो छथि... ।

भास्कर जेना बजबाक शक्ति जमा करऽ लगैत अछि ।

बड़ मस्किलसँ शब्द बहराइत छैक- ''हम हारल नहि छी किरण...आरती, हम हारल नहि छी ! अन्हार बड़ बेसी छैक....ओइमे डूबि रहल छी हम...मुदा हारल नहि छी...लड़ाइ जारी रहय ! कहबै राजाकेँ... नेन्ना अछि अखन...भरिसक बिसरि जाय ! मुदा ई भार रहल दुनू पर....ओकरा बिसरऽ नहि देबै ! कहबैक ओकरा- जे ओकर बाप के चक्कू घोपिकऽ मरि देने रहैक, मुदा ओकर बाप चोर आ बदमाश नहि छलैक...ओ अन्याय आ अनीतिसँ लड़ऽ चाहैत छलैक ! लड़ैत-लड़ैत मारल गेलैक मुदा हारलैक नहि...।''

हकमऽ लगलै भास्कर । साँस घरघरा उठलैक, तैयो जेना झोंकमे होइ ! किरण आ आरती ओकरा शान्त कऽकऽ पाड़ि देबऽ चाहैत छलैक मुदा ओ नै मानलकै- राजाकेँ अबस्स कहबै किरण... ओकरा बिसरऽ नै देबै.. अहूँ हारब नहि... कानब नहि आरती अहाँ ! किरणक संग देबैक...राजाक संग ।...

दूनू एक्के बेर बजलैक- ''अबस्स देबै...अहाँ चुप्प भऽ जाउ आब ।''

फेर घनीभूत पीड़ाक बीच वैह मोहक हँसी- चुप्पे भऽ रहल छी आब... मुदा खिस्सा खतम नहि भऽ जाय.... कहैत रहबैक आरती राजाकेँ...मुन्नीकेँ... । अपन सभ सन्तानकेँ कहबैक....।

फेर प्रलाप शुरू भऽ गेलैक । शून्यमे तकैत बड़बड़ाय लगलैक....बाबी तोँ किम्हरसँ आबि गेलैं बाबी....तोहर खिस्सा खतम नै होबऽ देलियौ बाबी...खिस्सा चलैत रहतौक । आरती कहलक अछि, किरण कहलक अछि मुदा एकटा बात तोँ झूठ कहने छलैं । कठरी बाबाजीक देह काठक नै छलै...ओइमे चक्कू घप्पसँ घोपा जाइ छैक...चोरबा सभ आर जोरगर भऽ गेल छै बाबी...ओकरा हाथमे चक्कू सेहो छैक...नग्र छोड़िक पड़ाइ नै छै आब...सभ बाटपर छिड़िआ जाइ छै, सभ बाटपर एक-एकटा कठरी बाबाजी बैसाबऽ पड़तौक ।

उत्तेजना शान्त भऽ गेलैक । देह शिथिल भऽ गेलैक । आरती नाड़ी

देखलकै आ चिचिया उठलैक— नर्स...

किरण देहपर पछाड़ खाकऽ खसलैक । भोर भऽ गेल छलैक । फादर अपने संग राजाकेँ लेने आयल छलथिन । कोठलीमे पैसिते राजाकेँ जोरसँ सटा लेलथिन अपना देहमे...ओह-नो... !

आ ठेहुनियाँ दऽकऽ बेड लग बैसि गेलथिन, आ राजोकेँ बैसा लेलथिन । गराँक क्रास छूबि प्रार्थना कयलथिन । राजा कानऽ लागल । फादर ओकर माथपर हाथ रखैत कहलथिन— डोन्ट क्राइ चाइल्ड ! योर फादर वाज ए होली मैन, प्रे फार हिम...।

राजा फादरक संग प्रार्थनाक मुद्रामे बैसि गेल । आरती कानि रहल छलैक । भास्कर कहने छलैक कानब नहि आरती –कानब नहि- 'व्हेन आइ एम डेड, सिंग नो सैड सौंग फोर मी डियरेस्ट...गुड बाइ बेबी फादर...।

किरण अपन स्वामीक छातीपर बेहोश पड़लि छलि ।

इजोत कोठलीमे पैसि रहल छलैक ।

हवेली नहि छैक आब ! कहिया ने जरि गेलैक ।

रामचन्द्रपुरमे एकटा फूसक घर छैक । चारिटा स्त्री आ दूटा नेन्ना रहै छै ओइमे । सरबन पैघ भऽ रहल छैक...हाइ स्कूलमे पढ़ि रहल छैक । मुन्नी छोट छैक। खिस्सा कहबा लेल बड़ जिद्द करैत छैक । किरण अपनेसँ खिस्सा कहैत छैक– कठरी बाबाजीवला खिस्सा । चोरकेँ टोकारा दैत रहैत छैक ।

पटनामे अपन स्कूलमे राजा ईसाक मूर्ति लग घण्टो ठाढ़ रहैत अछि । अप्पन पप्पा सन लगै छैक ओ मुँह ओकरा । फादर मर्फीसँ पुछैत छैक- ''ईसाकेँ एना सलीबपर के ठोकि देने छनि ?

फादर कहै छथिन- वी हैव डन इट माइ चाइल्ड ! वी हैव आलवेज हैंगड दोज हू ट्राइड टु टेल अस द टुथ....

ह्वाइ फादर....? किएक ?

तलाश जारी छैक । ई खिस्सा चलैत रहतैक ।

●

परिशिष्ट

अभिशप्त

किछु लेखकक दिससँ

अभिशप्त हमर पहिल उपन्यास थिक । 1970 मे 'मिथिला मिहर'मे धारावाहिक प्रकाशित भेल छल आ आइ लगभग आठ वर्षक बाद पुस्तकाकार प्रकाशित भऽ रहल अछि ।

हमरा लग रहब ? (हमर पहिल पुस्तकाकार प्रकाशित उपन्यास)क भूमिकामे हम लिखि चुकल छी जे एहि उपन्यासक प्रेरणा हमरा अपन बाबीसँ सुनल खिस्सासँ भेटल अछि । एक टा भिखारिकेँ एक टा शाप रहैक जे एक गाम भीख माङ्य तैयो एक तामा चाउर आ सात गाम भीख माङ्य तैयो एक्के तामा चाउर । पैघ भेलापर नेनामे सुनल एहि खिस्साक अर्थ लागल । भिखारिक ओ शाप समस्त निम्नमध्यवर्गीय नोकरीपेशा लोकक शाप छलैक– एक सय कमाय तैयो वैह हाल, सात सय कमाय तैयो वैह हाल । खाली अर्थे नहि लागल, स्वयं अनुभवो भेल– पिताक संघर्षरत निजगीमे आ अपन नोकरीक प्रारम्भेमे । आइयो होइत अछि ।

आइ दादा (पिता) नहि छथि । हमर कथा-संग्रह **नव घर उठय : पुरान घर खसय** हमर छात्रावस्थेमे उत्साहपूर्वक प्रकाशित करौने छलाह– 'पिता'मे हम लिखि चुकल छी जे ओ हमर समस्त लेखकीय आ व्यक्ति-सामर्थ्यक बिन्दु छलाह । ओ आइ नहि छथि, मुदा माय अछि । दादा जकाँ हमर रचना पढ़ि ओ आनन्दित नहि भऽ सकैत अछि, मुदा बिनपढ़ने जे ओ गद्‌गद् होइत अछि हमर कोनो नवीन प्रकाशनपर, से आन ककरो लेल संभव नहि छैक । तेँ पुस्तकक प्रकाशनक दिनमे मोन पड़ैत अछि माय । ईहो मध्यवर्गीय नोरकीपेशा लोकक नियति जे मायो संग नहि रहैत अछि । आ मोन पड़ैत छथि स्नेही भीम भाइ जनिकर सहयोग अविस्मरणीय रहल ।

पटना
6-3-78

–प्रभास कुमार चौधरी

किछु लेखकक नाम

कोनो विसंजोगेँ यदि हमरा लिखनाइ छुटि जायत तऽ सन्तोष रहत जे प्रभास लिखै-ए । जकर आगू बाट नहि होइ सैह तोर मंजिल ।

–ललित (16.11.64)

कथा बड़ पसिन्न पड़ल । मुदा भविष्यमे पहिने अपन कथा मैथिलीमे छपा लैह, तखन हिन्दीमे छपाबह ।

–मायानन्द (24.2.63)

पूर्वमे अहाँक रचनासँ परिचित छलहुँ, मुदा जखन व्यक्ति प्रभाससँ भेँट भेल तऽ आर सन्तोष भेल । चारित्रिक दृढ़ता एवं कर्मठताक उद्बोध जकरामे नहि छैक, ओ हमरा ओतेक प्रभावित नहि कऽ सकैछ । आ जतऽ ई देखै छिऐ, सन्तोष होइछ । आशीर्वाद दैत छी ।

–धीरेन्द्र (12.11.63)

हमरा ई ईर्ष्या भेल जे हम किएक ने लिखलहुँ ई ! जावत एहन उपन्यास नहि भऽ जाय किछु मैथिलीमे, तावत हिन्दी आ आन भारतीय भाषाक समकक्ष हैबाक जे दावा हमसभ करै छी से अनेरे ने ! एहन उपन्यासपर जऽ हम गर्व करी तऽ से वस्तुतः उचित हैत ।

–राजमोहन झा (8.7.70)

'अभिशप्त' ले' बधाइ । आधुनिक मध्यवर्गीय लोकक नियतिकेँ बड़ नीक जकाँ राखि सकलहुँ अछि, ताहूमे मानवीय करुण सहानुभूति एकरा आर उदात्त बना देलक अछि ।... अहाँ आधुनिक मैथिली लेखकमे एक गोट मूर्धन्य नाम छी । प्रभास कुमार चौधरीसँ मैथिलीक पाठक विश्वक कोनो कथासँ– श्रेष्ठसँ श्रेष्ठ कथासँ नीक कथाक आशा रखैत अछि । हमहूँ रखैत छी ।

–जीवकान्त (11.8.70)

'अभिशप्त'सँ उपजल मानसिक प्रसन्नताकेँ मोनमे नुकाकऽ राखऽ चाहैत छलहुँ, मुदा नहि राखि सकलहुँ । बड़ नीक भऽ रहल अछि । भोगल वा अनुभूत यथार्थ मोनकेँ छुबैत अछि ।

–उपेन्द्र दोषी (26.7.70)

औचित्य : लेखकीय

युगपुरुष 'मिथिला मिहिर'क उपन्यास-विशेषांकमे १९७१ मे प्रकाशित भेल छल । आइ लगभग सात वर्षक बाद पुस्तकाकार प्रकाशित भऽ रहल अछि ।

अइ सात वर्षमे यद्यपि देशमे अनेक परिवर्तन भेल अछि मुदा 'युगपुरुष'क कथ्य आइयो सामयिक अछि । आजुक उपन्यासमे कथानकक नहि, कथ्यक महत्त्व होइत छैक । आइ केन्द्रमे कांग्रेसक शासन नहि अछि, प्रान्तो सभमे जहाँ-तहाँ कांग्रेसक विकल्प रूपमे संविद सरकार अछि । केन्द्रमे जनता पार्टीक शासन अछि आ अधिकांश प्रान्तोमे ओकरे शासन छैक । कांग्रेस दोबारा विघटित भऽ चुकल अछि । मुदा आइयो कोनो रत्नेश्वर झा उर्फ रतना चरित्रहीनता आ उद्दण्डताक बाट चलैत, आतंकित करैत, पंचायत, विधानसभा आ संसद दिश अग्रसर अछि आ कोनो विवेकशील शंकर विश्वविद्यालयक उच्चतम डिग्री लेने बाटे-घाटे बौआइत डेग-डेगपर उपेक्षित आ अपमानित भऽ रहल अछि । 'युगपुरुष'क अन्तिम पाँतीमे शंकर द्वारा अनधुन पाथर फेकबामे जे क्रांतिक बीज छलैक, से अंकुरित आ प्रस्फुटित भेलैक । देशमे भ्रष्टाचार, महगी, बेरोजगारीक खिलाफ पैघ असन्तोष जन्म लेलकैक आ परिवर्तनक आकांक्षा बलवती भेलैक । मुदा परिवर्तनक बाद जे उपलब्ध भेलैक सेहो ओहिना निराशाजनक आ अपमानजनक छैक । फेर कोनो शंकरकेँ अनधुन पाथर फेकबा लेल विवश होबऽ पड़तैक ।

स्नेहपूर्ण सहयोगक लेल भीमभाइक अत्यन्त आभारी छियनि ।

पटना
14-4-78

–प्रभास कुमार चौधरी

औचित्य : पाठकीय

'युगपुरुष' पढ़लाक पश्चात् पुनः एक बेर अहाँकेँ पत्र लिखबाक लेल वाध्य भेलहुँ । वस्तुतः रतनाक चरित्र एक्के सँग घृणा, क्रोध, सहानुभूति, आशंका उत्पन्न करैछ । हमरा जनैत पहिल बेर तथाकथित उच्चवर्गसँ रतना एहन पात्र कोनो

मैथिली उपन्यासमे लेल गेल अछि । सोम दिन 'मिहिर' भेटल आ एक्के बैसकमे पढ़ि गेलहुँ । कोनो उपन्यास हाथमे लऽकऽ अन्त धरि पढ़ि लेल जाय, हमरा जनैत उपन्यासक सफलताक सभसँ पैघ मापदण्ड ।

ज्ञानचन्द
गया, 16-9-71

पुरहिया महीस जकाँ साले-साल पोथी प्रकाशित केने क्यो प्रसिद्धि नहि पाबि सकैत अछि । पढ़निहार पढ़िकऽ देखौक 'अभिशप्त' आ 'युगपुरुष' आ तखन पकड़ौ तराजूक डंटा जे कोन पलड़ा भारी आ कोन पलड़ा झूस ।

लक्ष्मण झा 'सागर'
1-9-73

उपन्यास छोट होइतहुँ बड़ बेशी समस्याकेँ अपना अन्तर्गत नुकौने अछि । समाजक वर्तमान स्थितिकेँ जाहि सरल भाषामे जतेक रोचक ढंगे राखल गेल अछि एहि उपन्यासमे, से अति प्रशंसनीय । वस्तुत: 'युगपुरुष'क प्रकाशनसँ मैथिलीक जे सेवा भेल अछि तकर मोल नहि आँकल जा सकैत अछि ।

तारानन्द झा 'तरुण'
सहर्षा, 30-10-71

उपन्यास बहुत अंशमे Convincing अछि । आजुक शिक्षित युवकक यथार्थ स्थिति, कॉलेज-जीवनक आ शैशवकालक स्वाभाविक वर्णन सभ मिलि एक टा स्वस्थ निष्कर्षक जन्म दैत अछि ।

ललितेश मिश्र
15-9-71

प्रभास कुमार चौधरी, मानऽ पड़ैछ, माँजल उपन्यासकार भऽ गेल छथि । 'युगपुरुष'क क्षेत्र टाल्सटायक उपन्यास जकाँ विस्तृत छैक मुदा तैसे पेजमे लेखक बान्हल शैलीमे चारि सय पेजक जिनगीक वर्णन कहि दैत अछि । एण्टी हीरोइज्मकेँ लेखक नीक जकाँ उपन्यासमे निभौने छथि । ग्राहम ग्रीनक उपन्यास 'इंगलैण्ड मेड मी' वा 'द हर्ट आफ दऽ मैटर' एहि गुणकेँ पकड़ने अछि । मुदा दार्शनिकता आ भौतिकताक भोगल यथार्थ एहि उपन्यासक फिक्शनल क्वालिटीकेँ हानि नहि पहुँचा सकलैक अछि । ओकरा उपन्यासमे लोकप्रिय स्तरक संग आरो वस्तु भेटैत छैक आ पाठक ओकरा सोचैत अछि । प्रभास कुमार कतहु-कतहु बड़ स्वाभाविक छथि जेना रतनाक चरित्र बड़ सशक्त ढंगे बुनल गेल अछि मुदा रतनाक बौद्धिक बतहपनीमे लेखकक सार्त्र आ कामू स्पष्ट भऽ जाइत अछि ।

'युगपुरुष'क रूपक तुलना टी.एस. इलियटक 'द वेस्टलैण्ड'सँ कयल जा सकैत अछि । प्रभासजीक उपन्यास उपन्यास-यात्राक सम्पूर्ण कलाकेँ पचौने अछि । लेखक खूब अध्ययनशील जानि पड़ैत छथि । ओ राजकमल जकाँ शराब आ औतरमे पैसि नहि किछु निकालैत छथि । रोजी हुनका केवल मनुक्ख बुझैत छनि आ तैँ ओ दयाक पात्र भेलाह, भरि राति सूतैक जगह भेटलनि । लेखक सामाजिक दृष्टिसँ जागरूक छथि ।

उपन्यासक शुरुआत 'मार्शल प्रू'क ढंगमे भेलैक अछि । लेखकक तकनीक (युगपुरुषक संदर्भमे) 'रिमेम्बरेन्स आफ दऽ थिंग्स पास्ट'सँ प्रभावित भेल अछि । उपन्यास शुरू होइत अछि बच्चाक संस्मरणसँ आ कहैत अछि रतना सन बदमाश व्यक्तिक सफलताक कथा— मुखिया भऽ गेनाइ, अपन पहिलुका स्त्रीकेँ चीन्हिकऽ जे दोबारा घूरन मिश्रसँ बिआहलि अछि, चिन्हबासँ नकारब आ शंकरकेँ नौकरी नहि भेटैक निराशाक कथा । शंकर नौकरी भेटैक आशा-निराशामे पेण्डुलम जकाँ झूलैत अछि । पेण्डुलम बड़ सटीक उपमा अछि । सबसँ नाटकीय लगैछ फेकनाइ पाथरक टुकड़ा बिजलीक खम्भापर । ई शंकरक क्षोभ, संघर्ष आ निराशाकेँ स्पष्ट करैत अछि। अनधुन शब्द उपन्यासक संवेदनशीलता— कथा दिमागमे घुमा दैत अछि । एहि शब्दक मनोवैज्ञानिक महत्त्व अछि । उपन्यासक अन्त पाठककेँ किछु सोचऽ लेल छोड़ि दैत छैक । कतहु अंत छैक खसैत जिनगीक महत्त्वक ? ई मैथिली भाषाक एक टा उत्कृष्ट उपन्यास अछि ।

आलोक सरोज झा
16-9-71

युगपुरुष : नवतुरिया मण्डल (राँची)-गोष्ठीमे

(ति. २०-९-७१, आयोजक- उपेन्द्र दोषी, अध्यक्षता- सुमन वात्स्यायन । 'मिथिला मिहिर'केँ प्रेषित-अप्रकाशित गोष्ठी-समाचारक किछु अंश)

मौलिक रूपे प्रत्येक व्यक्ति समान होइत अछि, से रोजीक चरित्रसँ नीक जकाँ स्पष्ट भेल अछि । अपन देह बेचिकऽ पाइ कमायबाली रोजी अपन बहीनकेँ ओइ परिवेशसँ फराक राखि राँचीमे पढ़बैत अछि । बापक खोराकी जुटबैत अछि । शंकर-सन असहाय लोककेँ चीन्हैत अछि । रघू झा सेहो खूब जमल छथि । अन्त

बड़ प्रभावशाली अछि । बम्मापर पाथर मारब कुम्भकरण महंथलोकनिकेँ चेतौनी थिक ।

उदयचन्द्र झा 'विनोद'

ई लेखकक अन्तर्व्यथाक सफल वर्णनात्मक लेख थिक । शंकरक आदर्श अस्तव्यस्तताक छैक, जखन कि रतना वस्तुवादी अछि । प्रभासजी एहि उपन्यासमे सूक्ष्म हास्यक बड़ नीक प्रयोग कयलनि अछि ।

रविकान्त झा 'रवि'

'युगपुरुष' कुण्ठित युवकक मोनोलोग थिक ।... वर्तमान घटनाचक्रसँ प्रभावित ई उपन्यास पाठकमे एकटा अन्तर्द्वन्द्व जनमा दैत अछि ।

उपेन्द्र दोषी

रतनाक चरित्र सही रूपे व्यक्त भेल अछि जेहन एकटा लफंदर छौंड़ाक हैबाक चाही ।

श्रीमती शशि झा

स्मृति-आभार

हमरा लग रहब ? हमर तेसर औपन्यासिक कृति थिक । पुस्तकाकार पहिल इएह प्रकाशित भऽ रहल अछि, मुदा एहिसँ पूर्व 'अभिशप्त' (1970; 'मिथिला मिहिर' मे धारावाहिक) आ 'युगपुरुष' (1971 : मिथिला मिहिर'क उपन्यास-अंक) प्रकाशित भऽ चुकल अछि ।

एकर प्रकाशन लेल हम मैथिली अकादमीक, मुख्यत: अकादमीक अध्यक्ष प श्री श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारजीक आभारी छियनि जनिक प्रेरणा आ प्रोत्साहनसँ ई लिखल गेल । यदि मोहन भारद्वाजजी एकरा सम्पूर्ण कऽ लेबाक नियमित रूपेँ तगेदा नहि करितथि तँ समयपर पाण्डुलिपि अकादमीकेँ दऽ सकब संभव नहि होइत आ अनुज 'प्रकाश'क सहयोगक बिना प्रेसकॉपी तैयारे नहि भऽ सकैत ।

पहिल उपन्यासक प्रेरणा बाबीक एकटा खिस्सासँ भेटल छल— एकटा भिखारिक खिस्सासँ । एक गाम माङथि तैयो एक तामा, सात गाम माङथि तैयो एक्कें तामा । पैघ भेलापर नेनपनमे सुनल ओइ खिस्साक अर्थ लागल । भिखारिक ओ शाप समस्त नौकरी-पेशा मध्यवर्गीय लोकक छलैक— एक सय कमाय तैयो, सात सय कमाय तैयो । सुग्गी रानीक खिस्सा 'दादा' (बाबूजी) कहैत छलाह । हमरो कहने छलाह, हमरासँ छोट भाइ-बहिनकेँ सेहो कहैत छलथिन । हुनको ई खिस्सा बाबिए कहने छलनि । परम्परासँ आबि रहल इहो खिस्सा बेर-बेर हमरा सोचबा लेल बाध्य करैत रहल अछि । रूसल जाइत सुग्गी रानी (पहिल भाग) आ चारूकातसँ लपकैत लोक–'हमरा लग रहब ?' (दोसर भाग) । ई कथा, ई परिस्थिति हमरा सभ दिन बड़ नव आ शाश्वत लगैत अछि ।

आइ, उपन्यासक प्रकाशनक दिनमे, 'बाबी' मोन पड़ैत अछि, 'दादा' मोन पड़ैत छथि, आ मोन पड़ैत छथि ओ सभ गोटे जे कोनो-ने-कोनो रूपमे एकर लेखन-प्रकाशनमे सहायक भेल छथि ।

पटना **प्रभास कुमार चौधरी**
20-11-77

नवारम्भ

प्रकाशकीय

हमरालोकनि एक नवीन दिशा दिस डेग उठयबाक साहस कयलहुँ अछि। हमरालोकनिक ई नवारम्भ थिक। ई शुभारम्भ सिद्ध हो, ताहि हेतु अपनेलोकनिक सहयोगक आकांक्षा अछि।

मैथिली साहित्यक प्रगतिमे प्रमुख बाधक तत्त्वमे नीक-नीक रचनाक अप्रकाशित रहि जायब सेहो थिक। प्रतिभाशाली लेखकक क्षमता, प्रकाशनक समस्याक कारणेँ, कुंठित भऽ जाइत छैक। की एहि दिशामे किछु करब आ बढ़ब आइयो पाथरपर दूबि उगयबे थिक ? एहि स्थितिमे एम्हर सुधार आयल अछि, से हमरालोकनिक विश्वास अछि। एहि विश्वासक आधार थिक अपनेलोकनिक मैथिलीक प्रति झुकाव, अध्ययनशीलता तथा प्रांजल रुचि। लगैत अछि जे नीक, स्तरीय आ सुरुचिपूर्ण साहित्य जँ ढंगसँ प्रकाशित कयल जाय तँ ओकरा बजार भेटतैक।

एही क्रममे श्री प्रभास कुमार चौधरीक नवीनतम उपन्यास 'नवारम्भ'सँ हम शुभारम्भ कऽ रहल छी। प्रभासजीक नाम आधुनिक मैथिली कथा साहित्यमे ततबा विख्यात भऽ गेल अछि जे हिनक विषयमे किछु कहब अनावश्यक थिक। एहिसँ पहिने हिनक तीन टा उपन्यास प्रकाशित भऽ समादृत भऽ चुकल अछि। एहन प्रसिद्ध लेखकक चारिम आ टटका उपन्यास 'नवारम्भ' अत्यन्त रोचक अछि। जँ एहि दिशामे हमरालोकनिक प्रयास सफल होयत तँ एहिना आनोआन स्तरीय कृतिक संग अपनेलोकनिक सेवामे उपस्थित होइत रहब।

श्री प्रभासजी अपन मूल्यवान कृति, बिना कोनो तारतम्यक, प्रकाशनक लेल दऽ देलनि, से हुनक उदारताक परिचायक थिक। एहि लेल हुनका प्रति जतेक आभार प्रकट करब से थोड़ होयत।

एकर मूल प्रेरक थिकाह पण्डित श्री कपिलेश्वर झाजी। हुनक प्रेरणा आ प्रोत्साहन जँ नहि भेटल रहैत तँ ई यज्ञ नहि शुरू होइत। हुनक आत्मीयताक सम्मुख कृतज्ञता प्रकट करब धृष्टता होयत। एहि कार्यमे जे आत्मीय मार्गदर्शन श्री भीमनाथ झाजीसँ प्राप्त भेल अछि, तकर कृतज्ञता-ज्ञापन करबामे शब्द अक्षम अछि।

श्री अमरनाथ झाक आत्मीय सहयोग विसरऽवला नहि थिक। हुनक सौजन्यक लेल आभारी छी। मुरलीधर प्रेसक व्यवस्थापक श्री देवेन्द्र झाक तत्परतासँ पोथी एहन सुन्दर आ एतेक शीघ्र छपि सकल अछि। हुनको प्रति आभार प्रकट करब कर्तव्य थिक।

पुस्तक अपनेलोकनिक हाथमे अछि। एकरा अपनाबी, से निवेदन।

राजेन्द्रनाथ झा
हितनाथ झा

लेखकीय

अपन चारिम औपन्यासिक कृतिक संग पाठकक समक्ष उपस्थित होइत हर्षमिश्रित सन्तोष भऽ रहल अछि। पन्द्रह मासमे (नवम्बर 1977 सँ जनवरी' 79 धरि) चारि टा उपन्यास पुस्तकाकार छपि गेनाइ अविश्वसनीय सन लगैत अछि। हमर रचनाकारक लेल दू वर्षमे दू टा उपन्यास (हमरा लग रहब ? –1977, नवारम्भ–1978) लिखि लेब सन्तोषक विषय थिक आ ई सन्तोष आर बढ़ि जायत यदि ई कृति पाठकक स्वीकृति आ प्रशंसा प्राप्त कऽ सकत। 'हमरा लग रहब ?' केँ पाठक-समीक्षकक पैघ वर्ग स्वीकृति-समर्थन देलक। अभिशप्त (1970) आ युगपुरुष (1971) पूर्वक रचना थिक, यद्यपि एकर पुस्तकाकार प्रकाशन 1978 मे संभव भेलैक। धारावाही प्रकाशन-कालसँ पुस्तकाकार प्रकाशन धरि ईहो दुनू उपन्यास पाठक-समीक्षकक ध्यान आकर्षित कयलक, हमरा नव रचनाक संग उपस्थित होयबाक साहस देलक।

अपन चारू उपन्यासमे विविधता राखब हमर प्रयास रहल अछि। 'अभिशप्त' मे निम्न-मध्यवर्गीय लोकक अभिशप्त सम्बन्धक कथा कहबाक प्रयास कयल तँ 'युगपुरुष'मे बेकार आ असन्तुष्ट युवापीढ़ीक मोनमे सुनगि रहल विद्रोह दिस संकेत करबाक कोशिश छल। 'हमरा लग रहब ?' मे सुग्गीरानीक कथाक माध्यमसँ नारीक परवशता आ शोषणक कथाक संग आ प्रणव मुनेसर पासवानक माध्यमसँ दू टा मूल्यक, आदर्श आ स्वार्थक संघर्षक कथा, संघर्षक निरन्तरताक कथा कहबाक कोशिश छलैक।

आ आइ अपनेलोकनिक समक्ष राखि रहल छी– नवारम्भ। प्राचीन गौरव आ परम्परा तथा ओकर ध्वस्त समाधिपर उपजल एक टा लज्जास्पद सभ्यताक बीच

एकटा नवचेतनाक स्फुरणक कथा, एकटा नवारम्भ । 'उत्तरकाण्ड' कथा मिथिला मिहिरमे छपल छल आ अधिकांश पाठक ओकरा पसिन्द कयने छलाह । 'नवारम्भ' एकांकी आकाशवाणी, पटनासँ प्रसारित भेल छल आ ओकरो श्रोता आ समीक्षक द्वारा मान्यता भेटल छलैक । एहि दुनू रचनाक मूल कथ्यकेँ आगू बढ़बैत एक टा उपन्यास लिखबाक प्रबल इच्छा छल, जे आइ कतेक वर्षक बाद संभव भऽ सकल अछि । उपन्यास यदि अपनेलोकनिक अपेक्षाकेँ पूर्ण कऽ सकत तँ हमर सन्तोष उपलब्धिक सीमाकेँ छूबि सकत ।

एहि पुस्तकक प्रकाशन लेल नवयुवक प्रकाशक राजेन्द्रजी आ हितनाथजीकेँ जतेक धन्यवाद देल जाइनि, थोड़ होयतनि । मैथिली प्रकाशनक क्षेत्रमे ई दुनू गोटे अपन संकल्प आ सामर्थ्यक बलेँ नव कीर्तिमान स्थापित कऽ सकथि, सैह शुभकामना अछि ।

आदरणीय कपिलेश्वर भाइ आ भीम भाइक प्रति कृतज्ञता ज्ञापनक औपचारिकता करब कृतघ्नता होयत । वस्तुतः ई पुस्तक दुनू नवयुवक प्रकाशक आ एहि दुनू आत्मीय लोकक सद्भावना, कर्मठता आ तत्परताक परिणाम थिक ।

आइ पुस्तक प्रकाशनक तिथिपर बाबी आ दादा फेर एक बेर मोन पड़ैत छथि । व्यक्ति प्रभास लेल आइ ओ नहि छथि, मुदा रचनाकार प्रभासक लेल दुनूक मृत्यु असम्भव छनि । आदरणीय बड़का काका छथि– विद्वान, निरभिमान आ संन्यासी बड़का काका । ई पोथी हुनके समर्पित आ अर्पित अपन गामक माँटि-पानि आ ओकर समस्त लोककेँ जकर छवि आ स्मृति बेर-बेर हमर कलमक सामर्थ्य बनल अछि ।

–प्रभास कुमार चौधरी

अन्तमे

पुरना घरक बड़ेरीसभ जखन एकाएकी कड़कड़ाय लागल, चरमराकऽ लटकऽ लागल जखन बेराबेरी चारसभ, कोड़ोसभ कोकनि गेल आ ढील भऽ गेल बन्धन– कि तखने एकाएक न्योँ पड़ि गेलै एक नव घरक । न्योँ पड़लै कि बनिकऽ तैयार ! से तेहन जे टकटकी लगले रहि गेलै लोकक ओकर गढ़निपर । वाह रे ! केहन दिव्य ! केहन सोहनगर !

कथा-भूमिपर नव घर उठौनिहार प्रभास कुमार चौधरीक कथाकार मुदा

कहियो नहि चाहलक जे पुरान घर खसि पड़ै । पुरान घर, अप्पन पुरान घर– समस्त उत्थान-पतनकेँ आङनमे संजोगने पुरान घर, सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक परिवर्तनशील वातावरणमे जन्म लऽकऽ बढ़ैत भीषण विषमताक लीलास्थली पुरान घर कथाकार प्रभासकेँ बड़ प्रिय । अपन पुरान घरक एक-एक कोड़ो-बातीसँ प्रभासकेँ घनिष्ठता, एक-एक व्यक्तिसँ आत्मीयता, एक-एक परिस्थितिसँ लागि ।

संवेदनशील एहन जे ककरो हृदयक गहनतम खोहमे उठैत टीसकेँ लप दऽ ई धऽ लेताह । पारखी एहन जे मामूलीसँ मामूली बुझल जायवला घटनाक मूलमे मटकी मारिते ई पहुँचि जयता ! शिल्पी एहन जे कथाकेँ चुम्बक बना देता ई ! जहाँ देखि लेब कि सटि जायब !

मध्यवित्त परिवारक फोटोस्टेट कॉपी थिक प्रभासक कथा– सामाजिक अत्याचार, पारिवारिक कटुता, वर्ग-संघर्ष, सम्बन्धक टूटनकेँ एतेक सशक्त अभिव्यक्ति भेटब, वास्तवमे दुर्लभ वस्तु थिक । समसामयिक बोधकेँ मिथिलाक सोन्हगर माटिमे सानि जे स्वरूप ठाढ़ कयलनि अछि प्रभास, से ने कोनो देवताक थिक, ने कोनो जानवरक– ओ थिक एनमेन हमर, अहाँक, हुनक । अपन, अपन समाजक संगति-विसंगतिक प्रतिच्छवि देखा देब हिनक कौशल थिकनि आ हिनक कथाक खास विशेषता ।

प्रभासक कथा समस्त विशेषता हिनक उपन्यासो सभमे समाहित भऽ गेल अछि– आर सशक्त भऽकऽ । **अभिशप्त** आ **युगपुरुष** (मिथिला-मिहिरमे क्रमशः 1970 आ 1971 मे पूर्वप्रकाशित) तथा **हमरा लग रहब ?** (1977) जे पढ़लक अछि, से मुग्ध भेने बिना नहि रहि सकल अछि । एहन कृती लेखकक चारिम उपन्यास थिक **नवारम्भ** । कहऽ नहि पड़त जे एहि उपन्यासमे प्रभासक प्रौढ़ प्रतिभा पुंजीभूत भऽ किछु 'विशिष्ट' प्रदान कयलक अछि । की 'नवारम्भ'केँ एक नवीन उपन्यास-दिशा दिस यात्राक शुभारम्भ नहि मानल जाय ?

–भीमनाथ

राजा पोखरि मे कतेक मछरी ?

सम्पादकीय

कथा-दिशा अपन अस्तित्वक एक वर्ष (नव नाम सँ) पूर कयलक आ दोसर वर्षमे प्रवेश कयने अछि । सितम्बर 80 सँ अप्रैल 81 धरि एकर आठटा अंक प्रकाशित भेल आ एहि संयुक्तांकमे छौ टा अंक सम्मिलित अछि— मइ 81 सँ अक्टूबर 81 धरि । संयुक्तांक अगस्त मास लेल घोषित छल, मुदा किछु कारणवश एकर प्रकाशनमे बेशी विलम्ब भेल । स्नेही पाठकलोकनिसँ एहि अतिरिक्त विलम्बक हेतु हमरालोकनि क्षमाप्रार्थी छी । घोषणानुसार एहि संयुक्तांकमे एकटा विशेष उपहार देल जा रहल अछि ।

प्रभास कुमार चौधरीक सम्पूर्ण उपन्यास '**राजा पोखरि मे कतेक मछरी ?**'क उपहारक संग कथादिशाक पुरान ग्राहक लोकनिसँ निवेदन जे नवीन वर्षक शुल्क अविलम्ब पठाबथि । मैथिली साहित्य-प्रेमी लोकनिसँ निवेदन जे एकर ग्राहक बनथि-बनाबथि । मैथिलीक ई एकमात्र कथा पत्रिका अपन अस्तित्व बनौने राखि सकय आ नव-नव उपहारक संग उपस्थित भऽ सकय, तकरा लेल समस्त मैथिल समाज आ सुधी पाठकक सहयोग नितान्त आवश्यक ।

हमरा लोकनि एक बेर फेर दोहरबैत छी जे आर्थिक समस्याक संग नीक रचना उपलब्ध नहि भऽ सकबाक समस्या सेहो बेर-बेर पत्रिकाक नियमित प्रकाशनमे बाधक होइत रहल अछि । मैथिलीक नव-पुरान कथाकार लोकनिसँ अनुरोध जे अपन नवीनतम रचना हमरा सभकेँ उपलब्ध कराबथि ।

एहि अंकक उपहार ई सम्पूर्ण उपन्यास 'राजा पोखरि मे कतेक मछरी ?' केहन लागल, से अवश्य लिखी । कथा-दिशाक हेतु सुधी पाठकक सम्मति मार्ग-दर्शकक काज करत ।

●

प्रभास कुमार चौधरी

गाम : पिण्डारुच (दरभंगा)

पिता : सुरेन्द्र चौधरी

माता : काली चौधरी

पत्नी : ज्योत्स्ना चौधरी

पुत्रा : शान्तनु प्रभास, वत्स विनीत

पुत्री : डॉ. वन्दना, अर्चना, अपर्णा, भावना

शिक्षा : एम.ए. (राजनीति विज्ञान एवं इतिहास)

वृत्ति : भारतीय जीवन बीमा निगम
सेवामे विभिन्न वरिष्ठ प्रशासनिक पदपर
1966 सँ अन्तिम दिन धरि ।

लेखन : प्रथम प्रकाशन
– 'धरती कुहरि उठल' – कथा
(वैदेही, मार्च 1956)

कथासंग्रह : नव घर उठय पुरान
घर खसय – 1964
कथा-प्रभास – 1988
प्रभासक कथा – 1989
दिदवल – 2004

उपन्यास : अभिशप्त – 1970
युगपुरुष – 1971
हमरा लग रहब ? – 1977
नवारम्भ – 1979
राजा पोखरिमे कतेक मछरी ?
–1981

विविध निबन्ध : मन्दाकिनी – 2004

सम्पादन : अनामा, कथादिशा, प्रवासी

पुरस्कार : वैदेही पुरस्कार – 1982
साहित्य अकादेमी पुरस्कार – 1990

आवरण-सज्जा : श्यामाकान्त प्रधान



प्रभास कुमार चौधरी
(02.01.1941–22.02.1998)